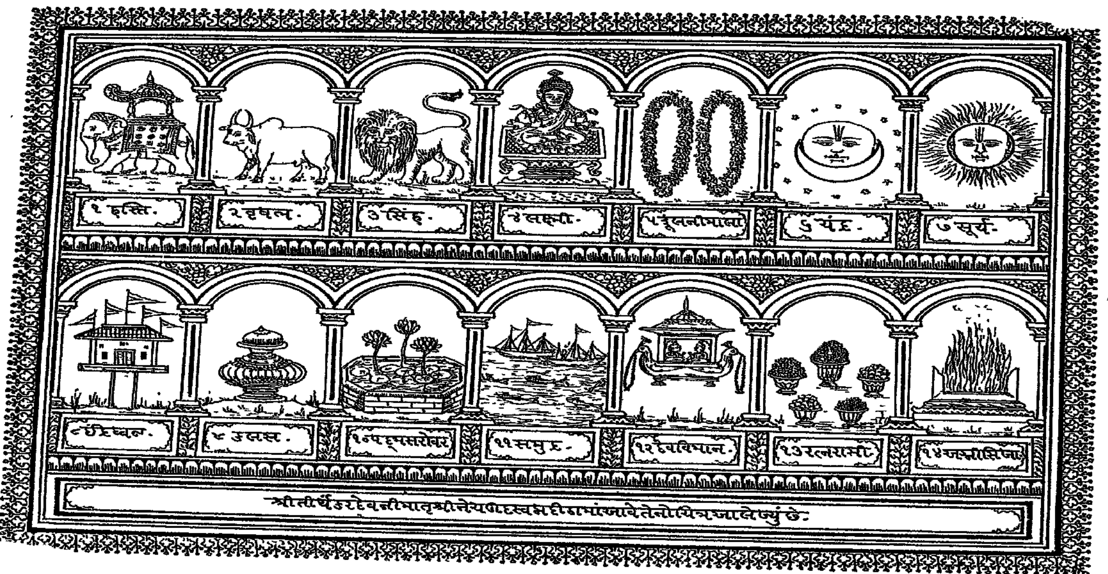


श्रीतीर्थंकरदेवनीमातृश्रीनेचउदस्वप्नदीठामांआवेतेनोचित्रआलेख्युंछे.

# प्रस्तावनाः

ज्ञाननी वृद्धि ज्ञानीओपर आधार राखेछे अने ज्ञानीओनी वृद्धि ज्ञानउपर आधार राखे छे. ज्ञान अने ज्ञानीओनो परस्पर कारण कार्यभाव संबंध छे. हरेक गाममां, शेहेरमां, प्रांतमां अथवा देशमां एक ज्ञानी रहेतो होय, तेना उपदेशथी बीजा केटलाएकने ज्ञान थायछे. अने जेटलाने ज्ञान थाय छे, तेओ बधा ज्ञानीओ कहेवाय छे, जेवारे ज्ञानीथी ज्ञाननो प्रसार थायछे, तेवारे ज्ञानी ज्ञाननुं कारण छे; अने ज्ञान ज्ञानीनो कार्य छे. अने जेवारे ज्ञानना प्रसारथी ज्ञानीओनी वृद्धि थायछे, तेवारे ज्ञान ज्ञानीओनुं कारण छे, अने ज्ञानी ज्ञाननो कार्य छे. यद्यपि ज्ञान अने ज्ञानीनो गुणगुणी भाव संबंध होवाथी परस्पर कार्यकारणभावमां शंका उत्पन्न थाय, केमके ज्ञान अने ज्ञानी अभेद छे, तेथी कार्य कारणता संभवे नही; तथापि कर्मसहित जीवने ज्ञानरूप गुण उत्पत्तिवान छे, तेथी कार्यता संभवे छे; अने ज्ञानीने कारणता संभवे छे, अने ज्ञानथी ज्ञानीपणुं थाय छे, तेथी ज्ञानी कार्य छे, अने ज्ञान कारण छे, एमज विद्या अने विद्वानो तथा धर्म अने धर्मी वगेरेना पण परस्पर कार्यकारणभाव संबंध जाणी लेवा.

हरेक वस्तु सिद्ध थवामां तेना साधनोनी अपेक्षाछे. जेवारे ज्ञानरूप वस्तु सिद्ध करवी होय तेवारे तेना साधनो व्याकरण, कोश, काव्य, ज्योतिष, न्याय, धर्म, अने अन्य दर्शनविषयक नाना प्रकारना शास्त्रो, तेमज जे तेते शास्त्रोनुं अध्ययन करवानो विधि, तथा श्रवण मननादिकनी आवश्यकता छे.

प्राचीन कालमां विद्वानोनी स्मरणशक्ति अति उत्कृष्ट होवाथी, तेओ हरेक विषयनी प्रक्रिया शृंखलाबद्ध कंठाग्र राखता हता; अर्थात् मोटा सूत्रो प्रमुख द्वादशांगीलगण मुख पाठ करी राखता हता. ते समयने विषे जोपण देवनागरीआदिक लीपीओ विद्यमान हती, तो पण ग्रंथो लखी राखवानी घणी जरूर पडती नही; केमके ते कालमानज तेवुं हतु. पछी जेमजेम मनुष्योनी स्मरण शक्ति ओछी थती गइ, तेमतेम ज्ञाननी न्यूनता थवा लागी, तेथी कोइ एक समये केटलाएक विद्वानो एकठा थइने ग्रंथो लखवा अथवा लखाववानो प्रारंभ कर्यो. ते चाल चालु थया पछी तेसमयना श्रेष्ठ पुरुषोए लहीआओ पाशेथी अनेक ग्रंथो लखावीने तेना मोटा मोटा ज्ञानभंडाराओ कराव्या छे; ते अद्यापि दीठामां आवे छे.

प्रथम जेवारे ग्रंथो लखवानी रीत चालु थइ, तेवारे कागद बनाववानी कला प्रसिद्ध थइ नहोती, तेथी तालपत्र प्रमुख उपर अक्षरो कोतरीने ग्रंथो लखी राखता ह

ता, तेवा तालपत्र उपर लखेला ग्रंथो जोइने आश्चर्य उत्पन्न थया विना रहेतो नथी केमके तालपत्र उपर ग्रंथ लखतां मोटी मेहनत पडे छे. पछी केटलाएक काले का गदनी कला प्रसिद्ध थइ त्यारथी इयाइवमे कागद उपर ग्रंथो लखवा लाग्या.

यद्यपि कागद प्रमुख वस्तुओ अनादिसिद्धछे, तथापि कोइ काले कोइ क्षेत्रमां विछेद थती जणायछे, ते सूक्ष्म विषय पडतो मूकीने अमे इहां बाह्य विषयज ग्रहण करी लख्युंछे. ग्रंथो लखतां लहीआने मोटी महेनत पडे छे. एक ग्रंथ घणा काले लखाइने तैयार थाय तेवारे जो घणा ग्रंथो लखाववा होय तो घणोज प्रयास पडे. जेवारे जेवारे कोइ राजा प्रमुखने ज्ञानना भंमारो कराववानी इछा थती, तेवारे शेकडो लहीआ बेशाडीने केटलाएक वर्षो सुधी लखवानुं काम चालु राखता, तेवारे ते भंमाराओ पूरा थता हता. ते वचमां कोइ विघ्न आवीने पडे तो ते काम अधुरुं रही जाय. मनुष्यायु अल्प छे तेमां कोइ मोटा कामनो आरंभ कर्यो तो ते पूर्ण थयाथी महान पुण्यरूप प्रारब्धनुं फल जाणवुं. तेम छतां तेवां कामो माथे उपाडीने अनेक ग्रंथो लखि राख्याथी आजना कालमां ज्ञाननुं कायमपणु देखाय छे. जो पण वर्त्तमान समयमां ज्ञाननी न्यूनता दीठामां आवेछे, तो पण गत समयमां श्रेष्ठ पुरुषोए ज्ञाननी रक्षाना साधनो करी राख्याछे, तेथी ज्ञाननो नाश न थतां कोइएक काले वृद्धि थवानो पण संभव छे. पण कालांतरे हरेक वस्तुनी न्यूनता तेनां साधनोनी न्यूनताने लीधे थाय छे, जे वखते स्मरणशक्तिरूप मुख्य साधननी प्रौढता हती, ते वखते ज्ञाननी अति वृद्धि थइ हती, अने जेवारे ते साधननी न्यूनता थवा लागी तेवारे ज्ञान पण घटवा लाग्युं, एटले तालपत्र उपर लखवानी चाल पडी तेवारे ग्रंथो घणा लखायाथी फरी ज्ञाननी वृद्धि थइ, पण तेम करतां लखनाराने महेनत घणी थवा लागी तेथी तालपत्र उपर लखवानी चाल ओछी थवाथी कांइक न्यूनता थइ; तेवा समयमां कागलो नीकल्याथी फरी ग्रंथो घणा लखाइने तेओना भंमारा थया, तेथी वली ज्ञाननी वृद्धि थइ. ते पण कालांतरे लखवानी महेनतने लीधे ते व्यापार ढंढो थवा लाग्यो, ते आ समय जाणवो.

एवा वखतमां वर्त्तमान कालाश्रित युक्तिपूर्वक ज्ञानरक्षा अथवा वृद्धिनां जे जे साधनो होय, तेओनुं ग्रहण करीने तेना उपयोगवडे ए शुभ कृत्य करवामां कांइ पण प्रमाद करवो नही. चालता समयमां ज्ञानवृद्धिनुं सर्वोत्कृष्ट साधन मुद्रायंत्रकला छे: ए कलानो मूल पायो जोपण युरोप देशमां अन्य धर्मीओना हाथथी पड्यो छे, तो पण ते सर्व लोकोने अति उपयोगी होवाथी तेनो तिरस्कार न करतां, सर्व ज्ञाननी वृद्धिनी इछा करनारा मनुष्योये अंगिकार करवो जोयें. हरेक सर्वोपयोगी वस्तुनो उत्पत्ति गमे त्यां थई होय, तोपण तेने निर्पक्षपातथी ग्रहण करी लेवी ए नीति छे.

माटे पुस्तक मुद्रित करवानी अति उत्कृष्ट अने सहुथी सहेली रीतने न ग्रहण करवा ने लीधे ज्ञानेनी न्यूनता रूप महा हानी करी लेवी नही. पण जेम बने तेम ज्ञाननी वृद्धिनां साधनोने उपयोगमां आणीने ते उद्योगनो आरंभ करवो, तेमां कांईदोष नथी पण महोटो पुण्यानुबंधी पुण्य छे. केमके सूक्ष्म दृष्टियें विचार करीए तो एथी ज्ञाननो विनय थाय छे; कारण के महोटा श्रमेथी परोपकार बुद्धिथी पूर्वाचार्योये जे ग्रंथो करेला छे; तेने अपमान आपी कोईने उपयोगमां पण न आवे, एवी रीतें छाना राखी मूकवा करतां ते ग्रंथो प्रसिद्ध करी तेनो लाभ हरेक प्राणीने आपवो ए करतां बीजुं वधारे रुडुं काम कोई पण जणातुं नथी. मारा विचार प्रमाणे तो जे ते प्रकारे ग्रंथो छपावीने प्रसिद्ध करवा जोयें. जेथी अनेक भव्य जीवो ज्ञानने पामे. अने ज्ञाननी वृद्धि थाय केमके एक वखत छपाइ गयेलो ग्रंथ हमेश कायम रहे छे; तेनो घणा काल सुधी विछेद थतो नथी. कारणके जे ग्रंथनी घणी प्रतो प्रसिद्ध थईहोय, ते बधी घणा काल सुधी नाश थाय नही. तेम छतां जे अल्प बुद्धिवाला, अविचारिओ, ए कृत्यनो धिक्कार करे छे तेओ मूर्ख, ज्ञानना द्वेषी, अने अज्ञानी जाणवा. एवा मनुष्योनी कांई पण परवान करतां में आ मोटुं पुस्तक छापवानो आरंभ करीने तेनो पहेलो भाग समाप्त कर्यो छे, अने बाकीना त्रण भाग पण ज्ञानीनी कृपाथी कोई विघ्न न पडतां समाप्त थाओ. तथास्तुः

---

## सूचना.

हरेक ग्रंथनी रचना करतां अथवा शोधन करतां दृष्टिदोष अने बुद्धि दोष रहे एवो नियम छे. एविषे कोइ पण गर्व करी शके नही. माटे हुं सर्व सज्जनोने विनंती करुं छुं के आ जे पहेलो भाग छपाइ तैयार थयो छे, तेमां कांइ भूलचूक रही होय तो क्षमा करवी. ए पुस्तक उतावलेथी छापीने प्रसिद्ध करवाना उद्योगने लीधे फुरसुत नही मल्याथी आ पहेलो भाग फरीथी वंचायो नही, माटे एनुं शुद्धिपत्र कर्युं नथी पण आ पुस्तकना बधा भाग समाप्त थया पछी शुद्धिपत्र करीश.

आनंदघनजीनी चोवीसीना आठमां श्री चंद्रप्रभजिनना स्तवननी पहेली गाथामां (सेवे सुरनरइंद) ए पद भूलथी नखायो नथी तेमज बीजा ग्रंथोमां कोइ ठेकाणे कानो कोईठेकाणे मात्रा कोइ ठेकाणे अक्षर कोइ ठेकाणे शून्य कोइ ठेकाणे ह्रस्व दीर्घनी चूको थइहसे अथवा आगल पाछल अक्षरो थइ गयाहसे ते कोइ महारी नजर चूकथी कोइ करेकशन करनारनी चूकथी कोइ उतावले वांचवाथी कोइ बुद्धि दोषथी चूको थइ गयली छे तेमज हुं अल्प बुद्धि छतां ग्रंथ शोधन करता कोइ ठेकाणे आगलनी लखेली प्रतो

ने अनुसारें लखत दोष थकी आग्रंथमां पण तेमजदोष रह्हीगयो हसे अथवा अनाजो गथी अज्ञानथी भ्रांतिथी ओछो अधिको अयुक्त लखाणो हसे ते बहु श्रुत गीतार्थ वांचना रायें महारो अपराध क्षमा करी उपकार बुद्धियें अशुद्धटाली सुधारीने वांचवुं केमके हुंअल्पबुधिवंत छता कोइ गुरु गम्यनुं साह्य पण नहतु तेथी पूर्वोक्त प्रकारें जे कांइ अशु द्ध दोष महाराथी थयो होय तेहतुं मिछाडुक्कडं.

आपुस्तकमां जे जे ग्रंथो नाख्याछे तेघणु करीने सुविहित गीतार्थ पूर्वाचार्योना करे लाछे तेथी हुं एवी आशाराखुंछुं जे संविज्ञपक्षी शुद्ध धर्मनारागी मार्गानुसारी सज्जनो आ सर्वोत्कृष्ट ग्रंथोने वांचवा जणवानो अभ्यास करवाने चुकशे नही.

जेम धूलनी आकाश गमन करवानी शक्ति नथी तथापि पवन तेने खेंची उंचो लेइ जायछे तेम महारामां आ पुस्तकमां दाखल करेला सर्वोत्कृष्ट ग्रंथो छापी प्रसिद्ध करवा नी शक्ति नछता ए ग्रंथोनी महत्वतायेंज मने छापी प्रसिद्ध करवानो उद्योग करवाने प्रव र्त्ताव्योछे. आ पुस्तक प्रसिद्ध करवाविषे जे जे श्रेष्ठ पुरुषोए पोतानी उदारता युक्त आ श्रय आप्यो छे तेओना नामनी टीप छेलाजागमां उपकारपूर्वक प्रसिद्ध करवामांआवशे.

---

## आ ग्रंथो छापी प्रसिद्ध करवावास्ते शेठ केशवजी नायक तथा मुनि महिमा सागरजियें आपेली मदतविषे



प्रत्येक पुरुषनी परीक्षा तेना अंतःकरणना परिणामोथी तथा तज्जन्य क्रियाथी थायछे. मूर्ख पुरुषना अंतःकरणना परिणामो अने तज्जन्य कृत्यो एवा होयछे के जेथी पाप कर्मज बंधाय छे, अने बुद्धिमान पुरुषना अंतःकरणना परिणामो तथा तज्जन्य कृत्यो एवां होयछे के जेथी पुण्य कर्मज बंधाय छे. जेमके, जे पुरुष शुभकार्यनेविषे विघ्न करवानी इछा तथा उद्योग करेछे, ते मूर्ख जाणवो; अने जे पुरुष शुभकार्यनेविषे निर्विघ्नता तथा उत्तेजन आपे छे, ते बुद्धिमान जाणवो. एवो सर्व शास्त्रोनो सिद्धांत छे, ते आ महान् पुस्तक छपाववाना आरंभने पूर्वे श्रेष्ठ पुरुषोनी सहायता मेलववाना समये प्रत्यक्ष प्रमाण वडे में जाणी लीधो छे.

जेवारे में आ पुस्तक छपाववानी सहायता लेवानो आरंभ कर्यो, तेवारे केटलाएक पुरु षोएतो पोतानुं आचरण उक्त मूर्ख पुरुषनी पठे कर्युं. अने केटलाएक पुरुषोनुं आचरण उक्त बुद्धिमान पुरुषनी पठे थयुं छे. तेथी मूर्ख अने बुद्धिमान पुरुषनी परिक्षा सारी रीते अनुभव सहित करी लीधी. तेओमांना मूर्ख पुरुषोनुं नाम माराथी प्रसिद्ध करा

तुं नथी, केमके तेथी तेओने मातुं लागे, अने वली उष्टस्वजाववानुं वधारे विघ्न करवानो उद्योग करे, तेथी आ मारा श्रेष्ठ काममां कदाच हरकत पडे, एवा जयथी एविषे मौन्य धारण करीने जेओ पुण्यवान प्रजाविक पुरुषोए आ महाउत्कृष्ठ ज्ञानवृद्धिरूप कार्यने उत्तेजन आप्युं बे, तेओमांना मुख्य आगेवान तो आपणा श्रावक जाईयोनी मंडली मां अंजन शिलाका जेवा महोटा कार्यो करी देशोदेशने विषे प्रख्याति पामेला शेठ केशवजी नायक बे. यद्यपि आ ज्ञानवृद्धिरूपकार्यमां उव्य खरचवुं तेनां आगल पर मार्थे विचरता अंजनशिलाकारूप कार्य यत्किंचित मात्र बे. तथापि लोकोपचारे एम ल खवामां कांई दूषण नथी. तथा जे संविज्ञपक्षी शुद्धश्रद्धावंत मार्गानुसारी, गीतार्थना रागी हता, जेमणे आ पुस्तकमां दाखल करेला ग्रंथो वांचवा जणवानो महोटो उद्यम करे लो हतो, अने गीतार्थोना करेला अपूर्व अपूर्व ग्रंथोनो शोध करवानीज रटना जेमना मनमां अहर्निश लागी रही हती; एहवा वणारशी विनयसागरजीना शिष्य मुनी महि मासागरजी अने सुमतिसागरजी ए उत्तम पुरुषो बे के जेओए आ सर्वोत्कृष्ट ज्ञानवृ द्धिरूप कार्यमां उव्यनी मोटी मदत करी बे. एओनुं नामस्मरण तो विद्वान पुरुषो घणे ठेकाणे करी राखशे, पण साक्षात् मुखाकृतिदर्शनस्मरण क्वचित दीठामां आ वशे. ते घणा कालसुधी कायम रहे एवा हेतुथी ए बन्ने श्रेष्ठ पुरुषोनां मुखनी प्रतिमां दरेक पुस्तकना बेला जागमां दाखल करीस. केमके एमनी महोटी साह्यता मली तेवारेज आ ज्ञानवृद्धिरूप कामनो आरंज महाराथी थयो माटे एहवा पुण्यवान पुरुषनुं दर्शन करवा थी पण पुण्यनो संजव बे. एवा शास्त्रना वाक्य प्रमाणे एमनी मुखाकृति सर्वोपयोगी होवाथी बधा मान्य करशे एवी हुं आशाराखुं बुं. एज कारणने लीधे शेठ केशवजी नायकना मुखनी आकृतिवालुं मुंबईना बाहेरकोटमांना जात बजारनी पासे मुखस्म रणस्थंज कर्युं बे. पण ते चिरकाल स्थायी कहेवाय नही. अने पुस्तकांतरगत मुखस्मरण चिरकाले स्थायी बे. ते आ पुस्तकमां मोटा उपकारसार्थे गुंथन करिस. आवा उत्तम कामोने उत्तेजन आपनारा उत्तम पुरुषोनी स्तुति करवी एम श्री विनयविजयजी उ पाध्याये शांतसुधारस ग्रंथमां चउदमी प्रमोद जावना जाववाने अधिकारे कर्युं बे.

एवाज पुण्यप्रजाविक पुरुषोनी पंक्तिने विषे सुशोजित जट्टारक श्री विवेकसागरसूरि तथा श्री सूरतना मुनि हुक्कमचंदजी महाराज एओए आ ज्ञानवर्द्धक कृत्यमां मोटी उदारता करी घणो उत्कृष्ट आश्रय अपाव्योबे तेथी मोटो उपकार मानीने नामस्मर ण गुंथन करुं बुं. तेमज मुनी मूलचंदजी महाराज श्री अमदावादवालायें पण आ सर्वोत्कृष्ट कामने मदत करवामां कसुर राखी नथी तथा मुनि नीतिविजयजीनो पण तेवीज रीतें आ काममां उदेश बे.

श्री मुंबइना श्रावक मंडलमाना शेठ येलाभाइ पदमशी, शेठ वर्द्धमान पुनशी, शेठ भोजराज देशल, शेठ परबत लधा, शा० जादवजी परबत, शा भोजराज नरपाल, शा मुलजी देवजी, एओए आ पुस्तकने पोतानी उदारतासहित मोटो आश्रय आपेआथी पुण्य प्रभावना दर्शनार्थ नामस्मरण गुंथन करुं छुं.

श्री अहमदाबादवाला शेठ दलपतभाई भगुभाई, शेठ मयाभाइ प्रेमाभाई एओनी ज्ञानवृद्धिविषे उत्सुकता जोईने आ पुस्तकनी साथे नामस्मरण गुंथन करुं छुं.

श्री भरुचवाला शेठ अनुपचंद मलुकचंद, तथा साणदवाला शेठ शाकलचंद हुकम चंद एओए पण पोतानी पुण्य प्रभावना सूचक उदारतायुक्त ज्ञानवृद्धिनेविषे उत्कंठा बतावी छे, ते जोइने मोटा उपकारसाथेंनामस्मरण गुंथन करुं छुं.

बीजा पण जेओए स्वशक्त्यनुसार उदारतायुक्त आपुस्तकने आश्रय आप्यो छे, ते ओनुं नामस्मरणार्थ लिस्ट पुस्तकना अंतनेविषे गुंथन कखामां आवशे.

---

## विज्ञापना.

सर्व जैनधर्माचार्य, उपाध्याय, साधु, अने समस्त श्रावकश्राविका मलि चतुर्विध संघ एओने अनुक्रमे यथायोग्यरीतें अति नम्रतापूर्वक हुं दासानुदास अने चरणकिंकर विनंति करूंछुं के जेम पंगु मेरुपर्वतनी शिखरपर गमन करवानी इछा करे, अथवा अतारु पुरुष नौकादिकनी सहायता विना समुद्रनो पार लेवा चाहे, जेम कंगाल पुरुष पृथ्वीनुं राज्य संपादन करवानी अभिलाषा धरे, तेम में मारी अल्पमति छतां आ महा दुस्तर कृत्यनो आरंभ कर्योछे, ते आप सर्व जिनधर्मस्तंभना अनुग्रहथी संपूर्ण थाय तो हुं कृतकृत्य थाउं मारी बुद्धिनी एवी शक्ति नथी के हुं स्वतंत्र पूर्वाचार्य रचित ग्रंथोनुं यथार्थ शोधन करी शकुं. तो पण स्वमति अनुसार जेटलुं बन्युं तेटलुं लक्ष राखीने शुद्धतानो उद्योग कर्योछे. तेम छतां आ प्रथमावृत्ति होवाथी अने अति त्वराथी छापवानुं काम चलाव्याथी केटलाएक दृष्टिदोष अने बुद्धिदोष रहीगया हशे, तेनुं अवलोकन करीने सर्व श्रेष्ठ पुरुषो क्षमापूर्वक सुधारीने वांचशे, एवी मारी पूर्ण आशा छे. केमके, जेम बालक पोताना जननी तथा जनकनी आगल जो पण बोबडुं तोतडुं बोले, तोपण तेओ क्षमा करी सुधारी लेईने आनंदयुक्त मुखमुद्रा वडे अधिक प्रेमदर्शावे छे. तेमज मारा आकृत्यमां कोइ प्रकारनी न्यूनता जोईने पूर्वोक्त उत्तम पुरुषो मारीउपर क्षमा करीने पुत्रवत् प्रेम दर्शाववो एवी मारी विज्ञापना छे.

---

श्री

## प्रकरणरत्नाकर नामना पुस्तकना प्रथम भागमाहेला प्रकरणोनी स्थूल विषयानुक्रमणिका प्रारंभः

॥ प्रथम श्रीमद्यशोविजयजी उपाध्यायकृत श्रीमंधरस्वामीनी वीनतिरूप साडात्रणसो गाथाना स्तवन माहेला स्थूल विषयोनी अनुक्रमणिका.

॥ बीजोग्रंथदेवचंद्रजीकृत आगमसारतेनी अनुक्रमणिका ॥



॥ त्रीजोग्रंथदेवचंद्रजीकृत नयचक्रसार तेनीअनुक्रमणिका ॥

## ॥ चोथोग्रंथ आनंदघनजीकृत चोवीसी तेना बालबोधनी अनुक्रमणिका ॥



## ॥ पांचमो ग्रंथ द्रव्यगुणपर्यायनोरासतेनी अनुक्रमणिका ॥

॥ छठो ग्रंथ योगदृष्टिनो स्वाध्याय बालबोध सहित तेनीअनुक्रमणिका ॥





॥ सातमो ग्रंथ उपमितिनवप्रपंच तेनी स्थूलविषयानुक्रमणिका. ॥



## ॥ आठमो ग्रंथ अध्यात्मसार तेनी संक्षेपथी अनुक्रमणिका. ॥

## नवमो ग्रंथ तत्वानु बोधनी अनुक्रमणिका



## दशमो ग्रंथ समाधिशतक तेनी अनुक्रमणिका.



## अग्यारमों ग्रंथ समताशतक तेनी अनुक्रमणिका.

## वारमो ग्रंथ दिग्पट चोराशी बोल तेनी अनुक्रमणिका.



## तेरमोग्रंथ श्रीचिंतामणि पार्श्वनाथ जिनस्तोत्र कोइ महापंडित रचित



## चौदमो ग्रंथ श्रीपार्श्वनाथाष्टक मलुकचंद रचित.

श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः

अथ

# श्रीमद्यशोविजयजी उपाध्यायकृत साडात्रणसोगाथानुं स्तवन अर्थसहित प्रारंभः

प्रथम अर्थ कर्तानुं मंगलाचरण.

पार्श्वनाथपदद्वंद्वं, नत्वा सीमंधरप्रभुम्
स्तवस्य वार्त्तिकं कुर्वे, स्वपरानुग्रहाय वै. १

हवे अर्थकर्तानी सूचना.

एस्तवन माहेली गाथाओना अर्थ अन्वयकरी कहीशुं पण पाधरो नही कहेवाय माटे पद आगल पाछल जोडीने पोतानी बुद्धीयें विचारी जोशो तो खरोअर्थबेशसे

ढालपेहेली:–एछडिकिहांराखी; ए देशी

श्रीसीमंधरसाहिबआगें ॥ विनतडीएककीजें ॥
मारगशुद्धमयाकरीमुजने ॥ मोहनमूरतिदीजेंरे ॥
जिनजी, वीनतडीअवधारो ॥ १ ॥ एआंकणी

अर्थ ॥ श्रीके० चोत्रीशअतिशय अने प्रातिहार्यादिक बाह्यलक्ष्मी तथाकेवलज्ञानादिक अभ्यंतरलक्ष्मी तेणेकरीयुक्त एहवासीमंधरनामेसाहिब तेआगलएकज शुद्ध मार्ग ओलखवारूप अद्वितीयवीनतिकरीयें तेमाहराऊपर मयाके० कृपाकरीने शुद्ध मार्गजे रत्नत्रयरूपमोक्षमार्ग अथवाअनेकदर्शनी वितत्थसंवादी; तथा विपरीतभाषणकरनारा स्वदर्शनीने; साचूंमानवुं ते अशुद्धमार्गकहीयें तेसर्वेऊवेखीने स्याद्वादसे लीयें जैनमार्ग ओलखवोते शुद्धमार्गकहीयें तेशुद्धमार्गसेवी अनेकभव्यजीव स्वसंपदाभोगीथया एहवो शुद्धमार्गते हे मोहनमूरतिके० वल्लभमूरति मुजनेदीजेके० मुजनेद्यो आपो एवीनती करीयेंछैयें माटे हे रागद्वेषनाजीतणहार जिनजी तेअमारीवीनतीअवधारोके० केवलज्ञानेकरीजाणो ॥ १ ॥ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

चालेसूत्रविरुद्धाचारें ॥ भापेसूत्रविरुद्ध ॥ एककहेंअमे
मारगराखूं ॥ तेकेममानूंशुद्धरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ केइकप्राणीसूत्रथी विरुद्धआचारेंचालेछे, तथा भापेके० परूपणाकरेछे तेपणसूत्रविरुद्ध; वलीलोकनेकहेशेजे अमेमार्गराखीयेंछैयें जोअमेछैयेंतोमार्गचालेछे एहवुंबोलेछे माटेहेप्रभु तेवातने अमेंशुद्धकेमकरीमानियें इहांसूत्रतेशुं तेलिखेछे ११ अंग १२ उपांग १० पयन्ना ६ छेद ४ मूलसूत्र १ नंदी १ अनुयोगद्वार एवं ४५ आगमजाणवा यतः 'एकारसतहबारस ॥ अंगूवंगाणिदसपयन्नाणी ॥ छब्वेयाचउमूला ॥ नंदीअणुउगपणयाला ॥ १ ॥ तथा तेनीभाष्य चूर्णि निर्युक्ति वृत्ति अने मूल सूत्र वलीए पंचांगीने सम्मतजे पूर्वाचार्यप्रणीत धर्मरत्नादिप्रकरण तथा जेनंदीसूत्रगतपयन्ना अने हरीभद्रसूरि उमास्वातिवाचक प्रमुखकृतग्रंथादिक तेसवेंसूत्रमांहे जआवे केमके दुर्भिक्षपड्यातेकालें सूत्रविसराहता तेमांहे जेटलासांभर्या तेसूत्र लिख्या अनेजे अर्थसांभर्या तेहना प्रकरणप्रमुखबांध्या तेपणसूत्रानुजायी माटेसूत्रजकहीयें तोतेथीविरुद्धकरेछे तथाबोलेछे तेवुंबोलताने शुद्धकेममानुं ॥ २ ॥

आलंबनकूडादेखाडी ॥ मुगधलोकनेपाडे ॥ आणाभंग
तिलकतेकालूं ॥ थापेआपनिलाडेरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवेतेविपरीतचालतां कोईककहेशे जे आंमकांचालोछो तेहने पाछोजवाबआपतां कुडाके० खोटाआलंबनदेखाडे जे आपंचमकालें संघयणधृतिप्रमुखपूर्वपुरुषजेहवाकिहांछे एमकहिने मुगधके० मुरखलोकने पाडेके० अज्ञानमार्गेपाडेछे एहवापुरुष ते आणाके० जिनाज्ञा तेहनोजेभंग तद्रूपजेकालुंतिलक तेपोतानेकपालेंथापेछे एटलेजिनाज्ञालोपेछे तिवारेकोइकबोल्युं जे आज्ञाभंगनुंदूषणदीधूंतेखरुं पण सर्वथा विधितोकोईकरीशकेनही ॥ ३ ॥ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁

विधिजोतांकलियुगमांहोवे ॥ तिरथनोउछेद ॥ जिमचाले
तिमचलवेजइयें ॥ एहधरेमतिभेदरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ अनेविधिजोतांतो कलियुगके० अन्यतिर्थीएहनेकलियुगकहेछे अनेजैन पांचमोआरोकहेछे तेकलियुगमांतीर्थनोउछेदथाय केमके तमेअवधिनीतोनाकहोछो अने विधियेंतोथायनही तेथीतीर्थविछेदजाय माटेजेमचाले तेमचलाव्याजैयें एटले

झझीचापाचिंपीकरीयेंनही नरमगरमचलावियें एरीते कोइकपोतानी मतिनाभेदएम जथरीरह्यांछे ॥ ४ ॥

इमन्नांषितेमारगलोपे ॥ सूत्रक्रियासविपीसी ॥ आचरणासू
द्धीआचारियें ॥ जोइयोगनीवीसीरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ एह्वावचनबोलीने जेविधिमार्गनेलोपेछे तेप्राणीयेंसूत्रक्रियासर्वे पीसीके० दलीनाखी तेमाटे आचरणाके० क्रियातेशुद्धआदरीयें तेश्रीहरीनद्रसूरियें योगनीवी सवीसीकरेलीछे तेमाहेली सत्तरमीवीसीमांहेकह्युंछे यतः ॥ तिन्नस्सुत्तेआइ ॥ विणा लंबगंजस्सएमेव ॥ सुत्तकिरियाइनासो ॥ एसोअसमंजस्सविहाणो ॥ १ ॥ एगाथा जोइने ॥ ५ ॥

पंचमेंआरेजिमविषमारे ॥ अवधिदोषतिमलागे ॥ इमनुपदेश
पदादिकदेखी ॥ विधिरसितुजनजागेरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ पांचमांआरामांहेजेमविषमारेछे तेमपांचमांआरामांहे अविधिदोषपण लागेछेएटलेएन्नावजे पांचमांआरामांपांचविषकह्याछे तेपणजीवने अलत्यप्रवृत्तिनाहे तुछे यतः ॥ १ दुस्समं २ हुंमा सप्पिणि ॥ ३ दाहिणपासम्मि ४ न्नासगहुजोउ ५ तद्दकणपरकीजीवा ॥ पंचविहपंचमेअरए ॥ १ ॥ एगाथासुयणासीत्तरीनीछे एजिम पांचविषकह्यां ते मारेछे तिमपांचमेंआरे जेअविधि दोषलागे तेपणमारेजछे अथवा चोथेआरे जिमविषखाधुंमारे तेम पांचमेआरेपण विषखाधुंमारे तिमअविधिदोषप ण जेम चोथाआरामांहेलागे तेमपांचमेंआरेपणलागे यतः "मारेइविसज्जुत्तं ॥ ज हाचउत्थारएतहादुसमं ॥ तहअविहिदोषझणीउं ॥ धम्मोवियदुग्गाइहेऊ ॥ १ ॥ इतिहितोपदेशमालायां एमउपदेशपदादिकग्रंथमांहेपाठदेखीने विधिनोरसियो जन के० लोकहोयते जागेके० विधिकरवानेसावधानथाय ॥ ६ ॥

कोइकहेजिमबहुजनचाले ॥ तिमचलियेंसीचर्चा ॥ मारगमहा
जनचालेंन्नाष्यो ॥ तेहमांलहीयेंअर्चारे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वलीकेटलाकतोएमकहेछे के जेमबहुजनके० घणालोकचाले तेरीतेचा लीयें केमके जेघणाकरताहसे तेरुडुजकरताहसे तोजाझीचर्चासीकरोछो अमेंपोतानी मतियेंकरताहुइयें तोजलेचर्चाकरो कारणके मार्गतोतेहनेजकहीयें के जेमार्गें महा

जनके० महोटालोकना समुदायचालेछे तेहनीचाल तेनेमार्गकहीयें इम भाष्योके० ग्रंथमांहेंकह्योछे यतः ॥ महाजनोयेनगतः सपंथाइति तोतेमहाजननीचालेंचालतां थका लहीयेके० पामीयें अर्चाके० पुजा इति ॥ ७ ॥

एपणबोलमृषामनधरीयें ॥ बहुजनमतआदरतां ॥ छेहनआवे बहुलअनारय ॥ मिथ्यामतमांफिरतांरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हवेउत्तरआपेछे के एबोलजेकह्यो तेपणमृषाके० जूठो चित्तमांहेंधारीयें तेहनोहेतुकहेछे एटले बहुजनमतआदरतांके० घणालोकनोमतआदरतां तो बहुल अनारयके० घणाजनतोअनार्यछे तेहनो छेहके० पारपामीयेंनही मिथ्यामतमांहेफि रतांके० अनार्यछे तेसर्वेमिथ्यामतिछे माटे तेमांहेनमतांपारनपामीयें इतिजाव॥८॥

थोडाआर्यअनारयजनथी ॥ जैनआर्यमांथोडा ॥ तेमांपणपरि णतजनथोडा ॥ श्रमणअलपबहुमोडारे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ थोडाआरियअनारयजनथीके० अनार्यलोकथी आर्यलोकथोडाछे केम के बत्रीसहजारदेशमांहें आर्यदेशतोसाडीपचवीसजछे तेवलीआर्यदेशमांपण जैनना मधरावे एहवालोकथोडाछे वलीजैननामधरावे तेमांहेपण परिणतके० जैनवासना येंपरणम्याहोय एहवाश्रद्धावंत स्याद्वादसैलीनाजाणथोडा वलीतेपरिणतजनमांहे पण श्रमणके० मुनीराज तेअलपके० घणाथोडा अने बहुमोडाके० मात्र मस्तक मुंडनकराव्युं पणगुणविनाना एहवालोक बहुजाणवां ॥ ए ॥

नद्रबाहुगुरुवदनवचनए ॥ आवश्यकमांलहियें ॥ आणाशु द्धमहाजनजाणी ॥ तेहनीसंगेरहियेंरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ नद्रबाहुस्वामीनामुखनो एवक्षमाणवचनछे ते आवश्यकसूत्रमांहेंकह्युंछे तिहांथी लहियेंके० पामीयें जे आज्ञाशुद्धतेहिज महाजन एटलें जिनाज्ञापालेतेहि जसंघएहवुंजाणीनें तेवा महाजननीपासें वसीयें गाथा ॥ "एगोयसाहुएगो; यसाहु णीसावउवसठ्ठीवा; आणायुत्तोसंघो, सेसोपुणअठ्ठिसंघाउ" ॥ १ ॥ इतिआवश्यक वचनात् ॥ १० ॥

अग्यानीनविहोवेमहाजन ॥ जोपणचलवेटोलुं ॥ धर्मदासग णिवचनविचारी ॥ मननविकीजेभोलुंरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ पणजेअज्ञानीनोसमुदायहोय अनेजो ते टोळुंके० गछनेचलावे तोहेपण तेहने महाजन न कहीयें एहवुं धर्मदाशगणीनो वचनविचारीने मनने नोखूंलकरीयें एटले अज्ञाने धमाधम नकरीयें यतः "जजयईअगीयछो" इतिवचनात् ॥ ११ ॥

अज्ञानीनिजछंदेचाले ॥ तसनिश्रायेंविहारी ॥ अग्यानीजो

गछनेचलवे ॥ तेतोअनंतसंसारीरे ॥ जिन १ ॥ वी० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जेअज्ञानीपुरुष ते निजछंदेके० पोताना अभिप्रायेंचाले तथा ते अज्ञानीनीनिश्रायें जे विहारीके० विचरे तेपण अज्ञानीजहोय तो एहवो अज्ञानी अगीतार्थ थको जे गछनेचलावे तेतोअनंतसंसारी जाणवो यतःजंजयइअग्गियछो॥जंच अग्गियछनिस्सियोजयई; वट्टावेइयगछं,अणंतसंसारउहोई॥इत्युपदेशमालायां॥१२॥

खंमखंमपंमितजेहोवे ॥ तेनविकहीयेंनाणी ॥ निश्चितसमय

लहेतेनाणी ॥ समतिनिसहिनाणीरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ जे खंमखंमपंमितके० ग्रंथग्रंथमांहेथी थोमीथोमी वातसीखीने पंमितपणो जेहनेहोय तेपुरुषनेज्ञानीनकहियें यतः "जोसुत्तमंछमुनयं ॥ समहीजंतेगुरुकम्मविहीणो; नोजनईसोनाणी; अछमयघाणमूढमणो" ॥ १ ॥ इतिआवश्यकमहाभाष्ये माटे निश्चितसमयके० निश्चेंसिद्धांतनीवातने लहेके० जाणे ते नाणीके० ग्यानीकहीयें एटले गुरुक्रमागत निश्चयव्यवहारसहीत स्याद्वादसैलीयें ज्ञानथयुंहोय तें सिद्धांतनिश्चित ज्ञानकहियें एवात समतिनीके० समतितर्कशास्त्रनी सहिनाणीके० नीसानीछे गाथा ॥ "जोनिछयसमयखूं ॥ सववहारसमयमासज्ज ॥ गुरुपारतंतजुत्त; नयनिउणोगाहणाकुसलो" इति ॥ १२ ॥

जिमजिमबहुश्रुतबहुजनसंमत ॥ बहुशिष्येंपरवरिउ ॥ तिमतिम

जिनशासननोवयरी ॥ जोनविनिश्चयदरीउरे ॥ जिन० वी० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ जिमजिम बहुश्रुतके० घणोभण्यो अने बहुजनसमतके० घणालोकने मानवायोग्यथयो वलीबहुशिष्येंपरवर्योके० घणाचेलाचांटिकर्या तिमतिम जिनशासननोवयरीके० सिद्धांतनोशत्रुजाणवो जो निश्चयज्ञाननो दरिउके० समुद्रनहोयतो. अनेजे निश्चेंज्ञानीहोय तेहनेतोसर्वलेखेछे यदुक्तं ॥ जहजहबहुसुअसमउ ॥ सीसगुण

संपरिवुडोय ॥ अविणीडिउंअसमए ॥ तह्तह्सि-ढंतपभिणीउं ॥ इत्युपदेशमालायां तथा पंचवस्तुकेपिच ॥ १४ ॥

कोईकह्देलोचादिककष्टे ॥ मारगभिक्षावृत्ति ॥ तेमिथ्यानवि
मारगह्रोवे ॥ जनमननीअनुवृत्तिरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ केटलाएकतोएमजकहेछे जे लोचादिककष्टेके० लोचकराववा उघाडे पगे तथा उघाडेमाथें हिंमवुं इत्यादिककष्टकरवेकरीने मारगके० मुनीमारगजाणवो वलीभिक्षायें वृत्तिके० आजीविकाकरवी ते मार्गछे एहवुंजेकहेछे तेमिथ्याके० खो टुंकहेछे एरीते मार्गनहोय केमके आत्मार्थविना जनमननीअनुवृत्तिके० लोकनाम ननीअनुजायीयें प्रवर्त्ततांमार्गनहोय इतिभाव गाथा ॥ कठंकरेइतिवं ॥ धम्मंधारेइ झणाणुंवित्तीए ॥ सोपवयणमग्गस्स; ॥ वेरीनूंउंअहाबंदो " ॥ १ ॥ १५ ॥

जोकष्टेमुनिमारगपावे ॥ बलदथाएतोसारो ॥ भारवहेजेता
वडेभमतो ॥ खमतोगाढप्रहारोरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ जोएरीते प्रभुनीआज्ञाविना कष्टकरतां मुनीनोमारग पामे तो तीर्यंच बलद तथा उपलक्षणथी बीजा ढोर पण लइयें तेगोरज साराके० भलाथाय केमके बलदऊ पर जेटलोभार भरीयें तेटलो सुखेदुखेपणवहे निरवाहकरे वली तावडेके० तडकेभम तोथको गाढके० आकरा कोरडा प्राणाप्रमुखनाप्रहारने खमतोके० सहनकरेछे॥१६॥

लहेपापअनुबंधीपापें ॥ बलहरणीजनभिक्षा ॥ पूरवभवव्र
तखंडनफलए ॥ पंचवस्तुनीशिक्षारे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ माटेतेप्राणी वर्त्तमानकालेंपण असुभ अनेअनागतकालेपणअसुभ तेपा पानुबंधीपापकहीयें तेणेकरीने लहेके० पामे बलहरणीके० वीर्यनेहणे एहवी जि नभिक्षाके० लोकनीभिक्षापामे एटलेसंयमयोगसाधीनसके तेबलहरणीभिक्षाकहीयें एपूरवभवके० पाछलाभवें वृतखंडनकरयाहोय तेहनाफलछे तेपापानुबंधीपापें बलह रणीभिक्षापामें एमपंचवस्तुग्रंथ श्रीहरीभद्रसूरीकृतछे तेमांहेकह्युंछे गाथा ॥ "चारि त्तविहिणस्स ॥ अभसंगयरसअकलुसभावस्स ॥ आणाणिणोयजापुण ॥ सापभि सिक्षाजिनवरेहिं" ॥ ॥ १ ॥ " भिरकंअमंतिआरं ॥ भंसंगयाअपरिसुद्धपरिणामा ॥ दीणासंसारफलं ॥ पावाउकुत्तमेयंतु" ॥ १ ॥ इतिकाउणसुदणी ॥ वाम्भीयाफेहिंदुक

गहणंमि ॥ मायाएकेइपाणी ॥ तेसीएयारिसंचहोई ॥ ३ ॥ चेइकणघरवासं ॥ त
स्सफलंचेवमहापरतंता ॥ नगिहिनयपवइया ॥ संसारपवट्टगाजणिया ॥४॥ ॥ १७॥

कोइकहेअमेंलिंगेतरसुं ॥ जैनलिंगछेवारु ॥ तेमिथ्यानविगु
णविणुंतरियें ॥ भुजविणनतरेतारुरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ हवे कोईकहेशेजे द्रव्यलिंगतेहिजप्रमाणछे एटले लिंगजेउंगोमुहपति
तेथी तरीसंसार पारपामीसुं केमकेजैननोलिंगते वारुके० सुंदरछेतेनेगुरुउत्तरकहेछे
केतेमिथ्याके० खोटुछे कारणके गुणविना एकलोमात्रलिंगधारणकरेथी तरायनही
तेहनोदृष्टांत जेम तारुपुरुषते भुजाविनानदिप्रमुखतरीशकेनही ॥ यदुक्तं ॥ वंदनाव
श्यके ॥ शिष्यवचनं ॥ “सुविहियडविहीयंवा; नाहंजाणामियंखुडमत्थो; लिंगंतुपू
ययामि ॥ तिगरणसुधेजावेण” ॥ १ ॥ प्रत्युत्तर ॥ “माहुजइतेलिंगपमाण ॥ वंदाहि
निन्हएतुमेसंवे ॥ एअवंदमाणस्स ॥ लिंगमविअप्पमाणंते ॥ इत्यादि ॥ १८ ॥

कुटलिंगजिमप्रगटविडंबक ॥ जाणीनमतदोष ॥ निद्धंधसजा
णीनेनमतां ॥ तिमजकह्योतसपोषरे ॥ जिन ० वी० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ जेम विडंबकजे नाटकीआ प्रमुख तेहनो जे कुटलिंगके० खोटोवेश
तेप्रगट पणेंजाणीनें एटलेकोइकनाटकीयो साधुनोवेषलाव्यो तेखोटोवेशछे एमजा
णताथकां जोतेहनेनमीयेंतोदोषलागे तथालोकहासीप्रमुखपणकरे तेमाटे निद्धंधस
जेप्रवचनोपघातक निरपेक्ष केवललिंगधारी पासत्थादिकजाणीने तेहनेनमीयें तो
तिमजके० ते पूर्वोक्तनाटकीयासाधुनीपरे तसपोषके० तेदोषनोपोषकह्योछे यदुक्तं ॥
“जहवेलंबुगलिंग ॥ जाणंतस्सनमउहवइदोसो ॥ निद्धंधसुत्तिनांउणं ॥ वंदमाणेधुवो
दोसो ॥ १ ॥ इति वंदनावश्यके ॥ एरीतेआचार्यें लिंगअप्रमाणकह्युं ॥ १९ ॥

शिष्यकहेजिमजिनप्रतिमाने ॥ जिनवरथापीनमियें ॥ साधुवेस
थापीअतिसुंदर ॥ तिमअसाधुनेनमियेंरे ॥ जिन० वी० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ तेवारें शिष्यबोल्युं जे जिमजिनेश्वरनीप्रतिमामांहे ज्ञानादिकगुणनथी अ
नेतेहनेतीर्थंकरनीबुद्धीयें नमस्कारकरतां महोटोलाभथायछे महोटीनिर्ज्जराथायछे
यथाआवश्यके शिष्यवचनंः- ॥ तित्थयरगुणापडिमा ॥ सुनत्थिनिस्संसयंवियाणंतो ॥
तित्थयरूत्तिनमंतो ॥ सोपावईनिज्जरंवीउलं ॥ १ ॥ इति ॥ तेमअतिसुंदर एहवो सा

धुवेसथापी असाधुनेपणनमियें एटले गुणविनानीजिमजिनप्रतिमाछे तेह्नेनमतां निर्जराथाय तेमपासत्थादिकमांजोसाधुनोगुणनथी तोपणसाधुनोवेषतोछे माटेजोपो तानुंमनशुद्धछे तो तेह्वानेनमतांलाजनथाय कारणके लाजअथवाखोट तेतो पोता नाअध्यवसायआश्रीछे उक्तंच ॥ लिंगंजिणपन्नत्तं ॥ एवनमंतस्सनिज्जराविउला; जं इविगुणविप्पहिणं, वंदइअज्झप्पसोहिए ॥ १ ॥ इतिशिष्यवचनं ॥ २० ॥ ❀ ❀

भद्रबाहुगुरुबोलेप्रतिमा ॥ गुणवंतिनहीदुष्ट ॥ लिंगमांहेवे
वानादीसे ॥ तेतोमानिअदुष्टरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ ह्वेआचार्य उत्तरआपेछे जे श्रीभद्रबाहुगुरु आवश्यकमां एमकहेछे के प्रतिमा गुणवंतिनथी तेमदुष्टपणनथी माटे तेह्ने गुणवंतिमानियें एटले अदुष्ट पणानो आरोपकरियेंतोथाय अनेलिंगमांहेतो गुणतथादोष एबेवानादेखायछे तेतुंहे अदुष्टके० गुणवंत शिष्यमान इतिगाथार्थ । ह्वेएनुनावार्थकहेछे जे जिनप्रतिमामां हेगुणनथी तेमदोषपणनथी माटेपोताना अध्यवसायनीशुद्धीयें नमतांलाजनथाय इ हाकोइकहेसेजे परिणामेलाजथायछे तेवारें प्रतिमानुंसुंकामछे तेह्नेकहीयें जे शुद्ध परिणामनोहेतुते प्रतिमाजछे तेवारेतेकहेशे जे साधुनोवेषतेपण शुद्धपरिणामनोहे तुछे तेह्नेकहेवुंजे साधुवेषपुरुषपणुं ते प्रतिमाने बराबरनथाय केमके प्रतिमा ह जारोगमेजोइयें पणसर्वएकाकारछे सावद्यक्रिया नथीकरती तेमनिरवद्यक्रियापण न थीकरती अनेसाधुलिंग तो कोइकस्थानकें सावद्यकर्मकरतोदेखीयें तथाकोइकस्था नकें निरवद्य शुद्ध चारित्रपालतोदेखीयें माटेबराबरनथाय अनेजिनप्रतिमामांहे जि नगुणनो आरोपकरीने परिणामकरतां निर्जराथाय पण पासत्थादिकने वंदनाकरतां कोनागुणशंभारीश तेवारेतेबोल्यो जे बीजा रुडासाधुना गुण आरोपकरीने परिणाम करिसुं तेह्नेकहेछेजे निरगुणीनेविषे गुणनोआरोपथायनही अने जो गुणनुं आरोप करीयें तो विपर्याशथाय अनेजेविपर्याश तेतोकर्मबंधनुंहेतुछे तेमाटेजिहांगुण त था दोषनहोय तिहांआरोपथाय पणअन्यथाआरोपनथाय यदुक्तं वंदनावश्यके ॥ संतातिच्छयरगुणा ॥ तिच्छयरेतेसिमंतुअज्झप्पं ॥ नयसावज्जाकिरिया ॥ इयरेसुधु वासमणुमन्ना ॥ १ ॥ चो० ॥ "जइसावज्जाकिरिया ॥ नच्छियपडिमासुएवमियरा वि ॥ तयभावेनच्छीफलं ॥ अहहोईअहेउयहोई ॥ २ ॥ आचा०कामंउन्नयाभावो ॥ तहविफलंअच्छिमणविसुद्धीए ॥ तिपुणमणविसुद्धीए ॥ कारणंहूंतिपडिमाउ ॥ ३ ॥ "जइवीयपडिमाउगुणा ॥ मुणीगुणसंकप्पकारणंलिंगं ॥ उभयमविअच्छिलिंगे । नयप

न्मिमासूलयंअभि ॥ ४ ॥ नियमाजिएसुअगुणा ॥ पन्मिमासुदस्सजेमएकुणइ ॥ अ गुणोतवियाणंतो ॥ कंनमउमएगुएकाउ ॥ ५ ॥ इत्यादिवलीएहनोविचार वृहत्वृ त्तिथीविचारजो ॥ २१ ॥

कोइकहेजिनआगेमांगी ॥ मुक्तिमारगअमेलेसुं ॥ निरगुणनेप
णसाहेबतारे ॥ तसनक्तिगहगहिसुंरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ हवेकोइकएमकहेछे जे जिनेश्वरआगलें मुक्तिमार्गअमेमांगीलेसुं केमके निरगुणनेपण साहेबतारशे तथातेहनीनक्तिमां गहगहिसुंके० हरखपामिसुं इतिगाथा थी नावार्थतोएमछे जे केटलाकएमकहेछे जे आनवमांतोशक्तिनथी पणजन्मांतरेबो धबीजनी सामग्रीपामिसुं तिवारेंकरिसुं एहवोप्रछुंपासेमांगीलइयेंछैयें इतिनावः ॥२२॥

पामीबोधनपालेमूरख ॥ मांगेबोधविचालें ॥ लहियेंतेहकहो
कुणमूलें ॥ बोल्युंउपदेशमालेंरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ तेहनेउत्तरकहेछे जे आनवमां बोधके० बोधबीजनी सामग्रीपामीने पणजे मूरखके० अज्ञानी संयमअनुष्ठानतोपालतोनथी अने विचालेंके० विचमां बोधमांगेजे आगलेपालिसुं तो तेहके० तेबोधबीज कहो कुणमूलेके० सेमूले लहि येंके० पामीयेंएटले एनावजे कोइकवस्तुलेवाजइयें तेवस्तुजोपाशेइव्यहोयतोजके अने इव्यनहोयतोस्यामूलेजके, तेमआनवमांहेजो संयमादिकपाल्याहोयतो आ वतेनवेंपणबोधबीजनीसामग्रीमिले पणनपाल्याहोयतो सेमूलेपामे अर्थात् बोध सामग्रीनजपामे एमउपदेशमालामध्येकह्युंछे यतः ॥ "लद्धिल्लियंचबोहिं ॥ अकरि तोणागयंचपछिंतो ॥ अन्नंदाइंबोहिं ॥ लप्रिहिकयरेणमुल्लेण ॥ १ ॥ इत्युपदेश मालायां आवश्यकनिर्युक्तौ तथा चतुर्विंशतिस्तवाध्ययनेपिच ॥ २३ ॥

आणापालेसाहेबतूसे ॥ सकलआपदाकापे ॥ आणाकारी
जेजनमागे ॥ तसजसलीलाआपेरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे आज्ञापालतायका साहेबके० परमेश्वरतूष्टमानथाय अनेसमस्त आपदानेकापे माटेआज्ञाकारीजे जनके० लोक तेमांगे एटलेआनवमांहे प्रनुआज्ञापा ले नेतेप्राणीजेमागे तसके० तेप्राणीने जशनीलीलाआपे एटलेप्रनुआज्ञाथी जशली लापामें ॥२४ ॥ एप्रथमढालमांहे एमकह्युंजे अमेनिर्गुणीथकां प्रनुपासेथीमांगीलेसुं एवुंबोलनारनेसीखामणदिधी ॥ २४ ॥

(ढालबीजोआदरजीवक्षमागुणआदर एदेशी).

कोइकहेअमेगुरुथीतरसुं ॥ जिमनावाथीलोहारे ॥ तेमि
थ्यानलहेसहवासें ॥ काचपाचनीसोहारे ॥ १ ॥ श्रीसी
मंधरसाहेबसुणजो ॥ भरतखेत्रनीवातोरे ॥ लहुंदेवके
वलरतिइणेयुगें ॥ हुंतोतुजगुणरातोरे ॥ श्रीसी० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवेबीजाढालमां जे एमकहेछेके अमेनिर्गुणीथकाज गुरुथीतरीसुं तेम नेसीखामण देवासंबंधीआव्योबीजोढालतेकहेछे कोइकतोएमकहेछे जे अमारामां तोगुणनथी पण अमारागुरुगुणवंतछे तोतेथीजसंसारसमुद्रतरी पारपामिसुं जेम नावाके०जिहाजतरेछे तेमांहे लोहाके० लोखंमनाखीलाजमध्याहोय तेपणतरेछे एह ष्टांते तरिसुं. यतः"संबंजंपेइजणो ॥ उत्तमसगेणउत्तमोहोइ ॥ लोहोकछविलग्गो ॥ संजोगेसायरंतरई ॥१ ॥ इतिपाठात् तेहनेउत्तर जेएरीतनाबोलनारा तेपण मिथ्या के० खोटुंकहेछे केमकेसारागुरुने सहवासेके० मात्रभेलावसवाथीज नलहेके० नपामे, जेम काच ते पाचके०पानानीसोभापामेनही उक्तंच ॥ मणिर्लुठतिपादाग्रे ॥ काचःशिरसिधार्यते ॥ परीक्षककरेप्राप्ते ॥ काचःकाचोमणिर्मणिः ॥ १ ॥ तथाउघनिर्युक्तावपि ॥ सुचिरंपिअछमाणो ॥वेरुलिउकायमणीयउ ॥ मीसोनउवेइकायभावं ॥ पाहणगुणेणनियएणं ॥ १ ॥ माटेहेश्रीसीमंधरसाहेबआभरतखेत्रनी वातोके० चरित्र तेसुणजोके० सांभलजो हेदेव हेआत्मगुणरमणि इणेयुगेंके० आविषमकाल पंचमआरो हुंडावसर्प्पिणीनेंविषे केवलके० निकेवल जेहुं रतिलहुंके० सातापामुं ते तुजगुणरातोके० तमारागुणनेविषे तत्परथको एटलेतुमारागुणनोरंगछे एटलीजसाताछे बाकीमतभेदकदाग्रहदेखी तोकांइंपणशातानोकारणनथी इतिभाव ॥ २ ॥

कोइकहेजेगछथीनटल्या ॥ तेनिरगुणपणसाधोरे ॥ नातिमांहे
निरगुणपणगणीयें ॥ जशानहींनातिबाधोरे ॥ श्रीसी० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवेकेटलाएकएमकहेछेके जे गछथीबाहिरनिकल्यानथी छनेआचार्यनासंघाडामांहे रह्याछे तेजोनिर्गुणछे तोपणते गछमांरह्यामाटे साधोके० साधुकहियें तेहनोदृष्टांतकहेछे जेम न्यातिनासर्वलोक उत्तमहोय अनेतेमांहेकोइकनिर्गुणहोय पणतेहनेजिहांलगें न्यातिबाहरकर्योनहोय तिहांलगेतेन्यातिमांहेजगणाय

छे जशके० जेगुणरहितपुरुषनो नातिबाधोके० नातीनोबाधक नहीके० नथी एटले तेपुरुषनोजिमनातिमांहेबाधकनथी तेमसाधुपणगछमांहेछे माटेरुमोजाणवो ॥ ३ ॥

गुणअवगुणइमसरिषाकरतो ॥ तेजिनशासनवैरीरे ॥ निर
गुणजोनिजछंदेचाले ॥ तोगछथाएस्वैरीरे ॥ श्रीसी० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवे पूर्वोक्तकहेनारने सीखामणआपेछे के जोएरीते गुण अने अवगुण नेसरिषाकरे तेजिनशासननोवैरीजाणवो तेहनोहेतुदेखाडेछे के तेगछमांहेरह्योजेनि र्गुणपुरुष तेजो० निजके० पोतानेछंदेचाले तो गछथायस्वैरीके० तेसर्वगछस्वछाचा रीथाय केमके एकनेहीणोदेखीने बीजापणहीणाचारीथाय ॥ इतिभावः ॥ ४ ॥

निरगुणनोगुरुपक्षकरेजे ॥ तसगछत्यजवोदाख्योरे ॥ तेजि
नवरमारगनोघातक ॥ गछाचारेंभाख्योरे ॥ श्रीसी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वली जेनिर्गुणहोय तेनोपक्षपातजेगुरुकरे तो तेगुरुनोगछबीजासाधुयें त्यजवोके० छांमवो एमदाख्योके० कह्योछे एटलेतेगछमांरहेवुंनही अनेतेगुरुजिनेश्व रनामार्गनोघातकरनारजाणवो एरीतेगछाचारपयन्नामध्येकह्योछे यतः जहनछीगु णाणपरको ॥ गणीकुसीलोकुसीलपरकधरो ॥ सोयअगछोगछो ॥ संजमकांमीहिं मुत्तवो ॥ १ ॥ जहनछीसारणावारणाय ॥ चोयणायसगछंमि ॥ सोयअगछोगछो ॥ संयमकामीहिंमुत्तवो ॥ २ ॥ इतिगछाचारे ॥ ५ ॥ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁

विषमकालमांनिरगुणगछें ॥ कारणथीजोवसीयेंरे ॥ द्रव्य
थकीव्यवहारेंचलीयें ॥ भावेंनविउल्लसीयेंरे ॥ श्रीसी० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ यद्यपि विषमकालमां एटले पांचमा आरामां पोतानी मनोबल श क्तिनेअभावें निरगुणगछे एटले गुणरहित गछनेविषे जो कोइकारणे वसवुंपडे तो द्रव्यथकी एटले बाह्यथी तो ते गछने व्यवहारें चलियेंके० प्रवृत्तियें पण भावथकी उल्लासपामियेंनही एटले अंतरथी हरषीयेंनही पण जो शुद्धाचारीनी संगतमिले तो निरगुण गछने तुरत छोमी आपियें यतः गीयछोगुणयुत्तो ॥ निग्गुणगछंमिसं वसित्ताय ॥ नोनिग्गुणाणपरकं ॥ कुणइसोगुणहरसरिछो ॥ इत्युपदेशपदे ॥ ६ ॥

जिमकुवृष्टिथीनगरलोकने ॥ घहेलादेखीराजारे ॥ मंत्रिसहि
तघहेलाहोईबेठा ॥ पणमनमांहेंताजारे ॥ श्रीसी० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जेम घहेलापणानीकरनारी कुवृष्टिथयी ते कुवृष्टीनुं पाणी ते नगरना सर्वलोकपानकरीने घहेला थया मात्र एक राजा अने प्रधान ए बेजणे पाणी पी धुंनही माटे माह्यारह्या पछे ते बेहुने विष सदृशाचारी घहेला लोकोए मारवानो उपाय कर्यो तेवारें राजा पोताना जीववाना उपायने माटे प्रधान सहित पोते घहेलाथयी बेरा पण मनमांतो ताजाके० माह्याछे एमजाणेछे जे सारीवृष्टीथा थ तो सहु माह्याथइयें एम एदृष्टांतें इहांपणजाणवुं जे नीरगुणगछमांवसे तथा ते हनीपेठेंचाले तोपणमनमां तो एमजाणेजे सुविहित मलेतो तेहने संगेरहुं अनेशु द्धाचारीथाउं इतिन्नाव ॥ ७ ॥ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁

इमउपदेशपदेएन्नाष्युं ॥ तिहांमारगअनुसारिरे ॥ जाणीने
न्नावेंआदरीयें ॥ कल्पन्नाष्यनिरधारिरे ॥ श्रीसी० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ एरीते श्रीहरीन्नद्रसूरिकृत उपदेशपदनामाग्रंथमां न्नाष्युंछे गीयछोगु णयुत्तो इत्यादि पूर्वोक्त गाथाजाणवी तथा एमकह्युंजे इव्ययकी व्यवहारेचालीयें पण न्नावथी उल्लासपामीयेंनही तोपण तिहांके० तेगछमां जो कदाचित् सर्व क्रि याव्यवहारमां सावधाननहोय पण जो मार्गानुसारी शुद्धपरुपकहोय अने गुणप क्षपातिहोय तेवा मार्गानुसारी जाणीने तेहने न्नावथी पण अंगीकारकरीयें एहवुं वृहत्कल्पन्नाष्यमां कह्युंछे यतः सिढिलोअणायारकउ ॥ चोयंणपमिचोयणाइगुणही णो ॥ गुणपरककरोगछो ॥ सीलेयव्वोविन्नावेण ॥ १ ॥ इति ॥ ८ ॥ ❁ ❁

ज्ञानादिकगुणवंतपरस्पर ॥ उपगारेंआदरवोरे ॥ पंचवस्तु
मांगछसुगुणने ॥ अवरकह्योछेत्यजवोरे श्री॥ सी० ॥ ए ॥

अर्थ॥ वली परस्परके० माहोमांहे ज्ञानादिकगुणवंतके० ज्ञानदर्शन चारित्रगुण वंतहोय वली उपगारेके० उपकारीहोय एटले माहोमांहे कोइनो ज्ञानउपकार को इनो दर्शनउपकार इत्यादिक उपकारवंतहोय तो आदरवो एम श्रीहरिन्नद्रसूरिकृत पंचवस्तुग्रंथमां कह्युंछे यतः मुत्तुणमिहुवयारं ॥ अन्नून्नगुणादिन्नावसंबंधं ॥ उत्तम ढछत्तुल्लो ॥ वासोउणगछवासोत्ति ॥ १ ॥ तेमाटे सुगुण जे गुणवंतहोय तेणे पू र्वोक्त ज्ञानादिकना उपकारीगछविना अवरके० बीजोजेगछ ते त्यजवोकह्योछे ॥ए॥

जेनिरगुणगुणरत्नाकरने ॥ आपसरिषादाखेरे ॥ समकित
साररहिततेजाणो ॥ धर्मदासगणीन्नाखेरे श्रीसी० ॥ १० ॥

अर्थ॥ वली जे पोते निर्गुणछतां बीजा जे गुणना रत्नाकरके० समुद्रहोय तेहने आपके० पोतासरीषा दाखेके० कहे एटले एमकहेजे अमारामां तथा एह्मां शो फेरछे एम गुणी अवगुणीने सरिषाकरे तो ते प्राणी सारके० प्रधान एहवो जे स मकित तेथी रहितजाणवो एरीतें उपदेशमालामध्ये धर्मदाशगणियें कह्युंछे यतः गुणहीणोगुणरयणा ॥ थरेसुजोकुणईतुल्लमप्पाणं ॥ सुत्तवस्सीणोयंहीलई॥ सम्मत्तं कोमलंतस्स ॥ १ ॥ १० ॥ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

कोइकहेजेबकुसकुशीला ॥ मूलोत्तरपडिसेवीरे ॥ भगवई
अंगेभाष्यातेथी ॥ अंतवातनविलेवीरे ॥ श्रीसी०॥ ११ ॥

अर्थ ॥ एरीतें ग्रंथकारना केवाप्रमाणे सर्वथागुणवंतहोय तोजआदरवो एमछे खुं तेउपर शिष्यप्रश्नकरेछे के कोईक एमकहेछे जे बकुसकुशीलाके० बकुसचारित्री या तथा कुशीलचारित्रीया ए मूलउत्तरगुणना प्रतिसेवीकह्याछे पडिसेवीके० प्रतिकू लपणेसेववुं दोषलगाडवो एटले ए भावजे १ पुलाक २ बकुस ३ कुशील ४ निग्रंथ ५ सनातक ए पांच निग्रंथ कह्याछे तेमां बकुसचारित्रीया ते उत्तर गुणना एटलेमात्र दशविध पच्चखाणनाज प्रतिसेवीहोय तथा कुशीलचारित्रीया ते मूल गुणना तथा उत्तरगुणना प्रतिसेवि होय यद्यपि मूलुत्तरपडिसेवी इहां सामान्ये कह्या तो पण अर्थपूर्वोक्तरीतेकरवो केमके पंचनिग्रंथीप्रकरण तथा भगवतीसूत्रमां एरीते छे तेरीते अमेंपण अर्थ लिख्योछे यदुक्तं पंचनिग्रंथीप्रकरणे ॥ यतःमूलुत्तरगुणविस या ॥ पडिसेवासेवएकुशीलोय ॥ उत्तरगुणेसुबउसो ॥ सेसापडिसेवणारहिया॥ १ ॥ वलीभगवतीअंगे भाष्याके० कह्याछे तथाचतत्पाठः बउसेणंपुच्छा गोयमा पडिसेवए होज्ञा यदि पडिसेवएहोज्ञा किंमूलगुणपडिसेवएहोज्ञा उत्तर० ॥ गोयमानो मूलगुण पडिसेवएहोज्ञा उत्तरगुण पडिसेवएहोज्ञा इत्यादि तथा पडिसेवणाकुशीलेजहापुलाए एटलेपुलाकनेमूलगुण पडिसेवएहोज्ञा उत्तरगुणपडिसेवएहोज्ञा एमकह्युंछे माटे कुशी ल पण मूलोत्तरगुणना पडिसेवीथया इतिभगवतिसूत्रेसतक ( २५ ) मेंउद्देसे ६ है कह्युंछे तेथी एम छेखुं जे मूलगुणना प्रतिसेवीथाय तिहांलगे चारित्रीयाकह्यां तेथी अमने दोषलागतांछतां पण अमारुंचारित्रकांईजातुनथी माटे वातनो अंतलेवोनही झांझुंअमने बोलावी अंतसुंलिओछो इतिशिष्यवचनं ॥ ११ ॥ ❀ ❀ ❀

तेमिथ्यानिःकारणसेवा ॥ चरणघातीनीभाषीरे ॥ मुनीनेते
हनेसंभवमात्रें ॥ उत्तमगुणसाखीरे ॥ श्रीसी० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवेगुरुकहेछे के एम जगवति सूत्रनी साखआपीने जेमतेम प्रतिकुल सेवावालाने जे चारित्र वरावेछे ते मिथ्याके० खोटुंकहेछे केमके निःकारणसेवाके० कारणविनाजे प्रतिकुलपणेसेवा अपवादरूप तेहनेमुख्य करीने जे प्रतिसेवाकरे ते प्रतिसेवाती चरणघातीनीजाषीके० चारित्रनेघातकरनारीकहीछे यतः संघरणंमि असुद्धं ॥ दोएहविगिएहंतदिंतगाएहियं ॥ आउरदिठंतेणं तंचेवहियंअसंघरणे ॥ १ ॥ इतिवृहत्कल्पजाष्ये तेप्रतिसेवामुनीने तेहनेके० तेमुनीने संजवमात्रेंके० लागवारूप संजव पण उपयोगपूर्वक प्रतिसेवाकरेनही कदाचित उपयोगपूर्वककरेतो तेअपवादें करे पण उत्सर्गेनहीकरे एपणसंजवजकहीयें तिहांसत्तमगाणु साखीके० गाणानामा प्रकरणमांसातमेगाणेकहुंछे ते गाणाप्रकरण माराहाथमां प्राप्तथयुंनथी पणमारागु रुनेवचनेजाणुंछुं के गाणाप्रकरणछे अन्यथा इहांकोइक गणांगसूत्रकहेछे पणतेगाणां गमध्ये एपाठजमतोनथी ते माटेगुरुवचनसत्य इतिज्ञेयं ॥ १२ ॥ ❀ ❀

पडिसेवावचनेतेजाणो ॥ अतिचारबहुलाईरे ॥ जावबहु लतायेंतेटाले ॥ पंचवस्तुमुनिध्याईरे ॥ श्रीसी० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवे तिहां पंचवस्तुनी साखलखियेंछैयें गाथा ॥ तेउपडिसेवणाए ॥ अणु लोमाहोतिविअडणाए॥अपडिसेवणाविअडणाए ॥ इअंचउरोजवंजंगा ॥१॥ व्याख्या तेतुदोषाः प्रतिसेवनया आसेवनारूपया अनुलोमा जवंत्यनुकूलाजवंतिविकटनयालो चनयाच प्रतिसेवनायां आलोचनायांच पदद्वयेचत्वारोजंगाजवंति तद्यथा प्रतिसेवन या अनुलोमाविकटनयाच १ तथा प्रतिसेवनया नविकटनया २ तथा नप्रतिसेवनया विकटनया ३ तथा नप्रतिसेवनयानविकटनयेति ४ गाथार्थ तेचेवतत्यनवरं ॥ पाय छित्तंतिआहसमयंणू ॥ जम्हासइसुहजोगो ॥ कम्मरकयकारणंजणीउं ॥ २ ॥ व्याख्या तेएवनवरंकेवलं समुदानिकाअतिचाराश्चिंत्यमानाः संतः तत्रकायिकादीर्यपथिकायां प्रायश्चित्तमित्येवमाहुःसमयज्ञाः सिद्धांतविधः किमितिअस्मात् सदासर्वकालमेवसुज योगः कुसलव्यापारः कर्मक्षयकारणंजणीतस्तीर्थंकर गणधरै रितिगाथार्थः ॥ ततः कि मित्याहगाथा॥ सुहजोगोयअयंजं॥चरणाराहणनिमित्तमणुअंपि॥ माहोज्जकिंचिखलि यं ॥ पेहेइतउवउत्तोवी॥३॥व्याख्या सुजयोगश्चायंसमुदानिकातिचारचिंतनरूपःकथ मित्याह यश्चस्माच्चरणाराधननिमित्तमखिलितचारित्रपालनार्थं मएवपिसुक्ष्मपिमानू तकिंचित्स्खलितंप्रेक्ष्यतेपर्यालोचनय्यतिततः उपयुक्तोपिनिद्राग्रहणकाले॥इतिगाथा र्थ आतेकाणे एजअर्थनी सूचक गाथा ज्ञानविमलसूरियें टबामांलखीछे तेकहेछे गा

था ॥ सद्याविपयपडिसेवा ॥ उक्कडभावेणहोइसासद्धिला ॥ अइयारबाहुलत्तं ॥ पडिसेवा बियपयसेढी॥१॥ एगाथापणरुडीछे एटेकाणे एह्वीगाथाजोइयें पणएगाथा पंचवस्तु ग्रंथमां जडीनही माटेअमेलखीनही तथामूलगुण उत्तरगुणना प्रतिकूलपणेसेवीहो य ते पडिसेवा वचनेके० प्रतिसेवा शब्देंकरी जाणोके० जाणवी एटलेमूलगुणमां तथा उत्तरगुणमां अतिचार घणालागे ते अतिचार नावनी तीव्रतायें करीनें टाले एम पंचवस्तुग्रंथमां मुनीध्यायीके० मुनीराजे अतिचारनी बहुलताध्यायी नावीछे ॥१३॥

सहसादोषलगेतेबूटे ॥ संयतनेततकालेंरे ॥ पछितेंआ
कुट्टियेंकीधुं ॥ प्रथमअंगनीनालेंरे ॥ श्रीसी० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ सहसाके० सहसात्कारें अनाजोगथकी जे दोषलागे ते बुटे एटलेतद्नव वेदवायोग्य कर्मबांध्युंहोय ते बुटे संयतनेमुनिराजने तत्कालेंके० तेजनवमांबुटे इ तिनाव श्रीआचारांगे पंचमाध्ययने चतुर्थोद्देशके गाथा॥एगयागुणसमित्त॥सरीयतो कायसंफासमणुचिन्नं ॥ एगतयापाणाउद्दायंति ॥ इहलोगवेदणवेजावडीअ ॥ अस्या र्थलेशः कदाचित् गुणसमीत्तके० गुणसहित अप्रमतमुनी चालताथकां कायसंफास के० कायस्पर्शथयाथी कोइजीवहणाणो ॥ तेवारे इहलोके वेदनानोजे वेद्यके० अनु नव तेहने आवडिअंके० पाम्युं एटले आनवें नोगववायोग्य कर्मबंधाय तथा आकु ट्टियेंके० विनाप्रयोजने कारणविना पापकर्म कर्युं तेकर्म पछितेके० दशप्रकारनुं प्रा यश्चित्तछे तेमांहरकोय प्रायश्चित्त आवे एमप्रथमअंगनी नालीके० आचारांगनी नला मणछे पांचमांअध्ययननाचोथाउद्देसामां जंआउट्टीकयंकम्मं ॥ तंपरिन्नायविवेगमेति इति एतस्यैकदेसः जंआउट्टिइत्यादियत्तुपुनःकर्माकुटयाकृतमागमोक्तकारणमंतरेणो पेत्यप्राण्युपमर्दनेनविहितंतत् परिज्ञायज्ञपरिज्ञयाविवेकमेतिविविच्यतेअनेनेतिविवेकः प्रायश्चित्तदशविधंतस्यान्यतरं नेदमुपैतितद्विवेकं वाअनावाख्यमुपैतितितत्करोतिये नकर्मणोअनावोनवतिति तेकारणमाटेपापजाणीने सेववुंतेहनोमहादोषछेइतिनावः

पायछित्तादिकनावनराखे ॥ दोषकरीनिःसूकोरे ॥ निध्वं
धससेढीथीहेठो ॥ तेमारगथीचूकोरे ॥ श्रीसी० ॥ १५ ॥

अर्थ॥ माटेतेअतिचारसेवीने पण पायछित्तादिकके० विशुद्धथाय तेवुंगुरुआदिक पासेंथीप्रायश्चित्तप्रमुख लेवानो अनिप्राय राखेज नही तो तेप्राणीदोषकरीने पणनिः सूकोके० निर्दयीजाणवो यतःजोचयइउत्तरगुणे ॥ मूलगुणेविअचिरेणसोचयई ॥ जह

जइकुणइपमायं पीक्षीक्षस्तइतइकसाएहिं ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां तथातेप्राणी निद्धंधसके० गतधर्माछे एटलेप्रवचनरूप धर्मनी हाणीथाय तेहनी अपेक्षाराखेनहीते जीव सेढीथीहेठगेके० गुणश्रेणीथकी अधोवर्त्ति अथवा संयमश्रेणीथकी हेठेजाणवो वली तेप्राणी साधुनामार्गेथी चूक्योएमजाणवो यतःअइयारंजोनिसेवि ॥ तापा यच्छित्तंनगिएहइ॥अणुज्जुउयतन्नावो ॥ निधम्मोसोगणीक्षासु ॥ १ ॥ इतिश्रीहरिन्नइ सूरीकृतसंबोधप्रकरणे ॥ १५ ॥ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

कोईकहेजेपातिककीधां॥ पमिकमतांबूटीजेंरे ॥ तेमिथ्याफ
लपमिकमणानुं ॥ अपुणकरणथीलीजेरे ॥ श्रीसी० ॥१६॥

अर्थ ॥ वलीकेटलाक एमकहेछेकेजे पाप कस्याहोय तेसर्वपापथी पडिकमतांके० पडिकमणुकरतांबुटीयें यतःआणाणउकयंपावं ॥ पडिकमणाक्षविसुज्झइ ॥ इति वचनात् ॥ पडिकमणंपापहरणंइतिलोकोक्ति एमकहेछेते मिथ्याके०खोटुंकहेछे केमके फलपडिकमणानुंके० पडिकमणानुंजेफलतेतो अपुणकरणथी लीजेके० फरीअण करवाथी पामीयें एटलेपापनेपडिकमीने फरीपापनहीकरे तोजपडिकमणानुंफलपामे इतिन्नावयतःपुणपावस्सअकरणे ॥ पडिकमणंहोइन्नावसारंच ॥ पुणपावाणंकरणं ॥ नरुबदवंपडिक्कमई ॥ १ ॥ इतिवचनात् ॥ १६ ॥ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

मिथ्यादुक्कडदेईपातिक ॥ तेन्नावेजेसेवेरे ॥ आवश्य
कसांखेतेपरगट ॥ मायामोसनेसेवेरे ॥ श्रीसी० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ माटेजे मिथ्यादुक्कडके०मिच्छामीडुक्कडंदेइने वलीतेहिजपापन्नावेंकरीनेसेवे छे तेप्राणी प्रत्यक्षपणें आवश्यकनीसाखे मायामृषानेसेवेछे स्यामाटेजेगुरुआदिकने राजीकरवानेअर्थें मिछामिडुक्कडंदिएछे पणपरमार्थें सुन्यछे यतः जंडुक्कडंतिमिछा॥तं चेवनिसेवईपुणोपावं॥पच्चरकमुसावाई॥मायानियडीपसंगोय ॥१॥ इत्यावश्यके॥१७॥

मूलपदेंपमिकमणुंन्नाष्युं ॥ पापतणुंअणकरवुंरे ॥ सक्ति
न्नावतणेअन्यासें ॥ तेजसअर्थेंवरवुंरे ॥ श्रीसी० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ मूलपदेंके० उत्सर्गेमार्गें अथवा प्रथमथी पडिकमणु नाष्युंके० कह्युंछे के मकह्युंछे तेकहेछे के जे पापतणुंअणकरवुंके० पापनुजेनकरवुं तेनु नामपडिकमणु कहीयें यतः जइयपडिक्कमियवं ॥ अवस्सकाउणपावयंकम्मं ॥ तंचेवनकायवं ॥ तो

होइपएपडिकंतो ॥ १ ॥ इतिआवश्यके पएके० उत्सर्गपदें अथवा पएके० प्रथमथी पडिक्म्याइति तेमाटे शक्तिके० शक्तिमाफकजावेकरीने अन्यासकरे एटलेशक्तिजावथी अन्यासकरे तेपए जशके० जेहनेअर्थें पापअणकरवाने अर्थें वरवुंके० आदरवुं एटले शक्तिअन्यासकरे तेपएपढेपापनकरे इतिजाव अथवा परमार्थें जशतेमोक्ष तेने अर्थें वरवुंके० आदरवुं अनेकर्तानुंनामपएजशविजयढे तेपए सुचव्युं ॥ १७ ॥

ढालत्रीजो, तुंगीयागिरिशिखरसोहेएदेशी

देवतुजसिद्धांतमीठो ॥ एकमनेधरिएं ॥ दुष्टआलं
बननिहाली ॥ कहोकेमतरिएं ॥ देवतुज० ॥ १ ॥

॥ अर्थ ॥हवे त्रीजोढालकहेढे एने बीजाढालसाथेंएसंबंधढे जे बीजाढालमां एम कह्युंकेपापनकरवुं तेपडिकमणु माटे त्रीजाढालमांकहेढे के पाप सीरीतें नथाय जो हीएाआलंबननहोय तोपापनथायतेकहेढेजे हेदेव हेपरमानंदविलासी तुजसिद्धांतके० ताहारोजे आगम स्याद्वादसैलीरूप ते मुजने अत्यंत मीठो लागेढे इतिजाव ते एक मनेधरिएंके० एकाग्रचित्तेंकरी धरीराखीयें अने दुष्टजे हिणआलंबन ते नेहालीके० जोइने एटले कोइकें कोइकारएो कांइविपरीत अंगीकार कर्युंहोय ते पोतेधारीराखे तो ते धारीने हेसज्ञानपुरषो तमेकहो जे केमके० केवीरीतें संसारसमुद्रतरीयें ॥ १ ॥

दुष्टआलंबनधरेजे ॥ नग्नपरिणामि ॥ तेहआव
श्यकेंनांख्या ॥ त्यजेमुनीनामि ॥ देवतुज० ॥ २ ॥

॥ अर्थ ॥ माटे डुष्टके० दूषणसहित जे अपवादेंसाधनहोय ते जेकोइचित्तमांधरे तेतो नग्नपरिणामिके० संयमक्रियाथी नागाढेपरिणाम जेहना एहवा जे लिंगीहोय तेहने आवश्यकनेविषे नांख्याके०कह्याढे सुंकह्याढे के मुनीनामिके मुनीनामनाधणी एटले जे मुनीश्वरहोय ते तेवालिंगीने त्यजे के० ढांमे ॥ २ ॥

नियतवासविहारचेईय ॥ नक्तिनोधंधो ॥ मूढअ
ज्ञालानयापे ॥ विगयपडिबंधो ॥ देव० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवे डुष्टआलंबन देखाडवामाटे द्वारबांधेढे ते एकनियतवासविहारके० नित्यवासेविचरवुं एटलेनित्यवासकल्पइतिजाव एकस्थानकेंरहेवुं एमकेइकथापेढे बीजो चेइयनक्तिनोधंधो एटले चैत्यजेदेहेरुं तथा जिनप्रतिमा तेहनोधंधो जे कार्य

व्यग्रता ते साधुनेकरवो एटलेजिनपूजादिक करवी इतिन्नाव वलीत्रीजो मूढके० मूर्ख ते अज्ञालाजथापेके० आर्यानोलाजथापेछे एटले साधवीवोहोरीलावे ते साधुने खपे एमथापेछे चोथो विगयजे दुधदहीप्रमुख अने कडाविगयनेविषे पडिबंधोके० प्रतिबंध आसंग एटलेविगयनालोलपि तेएमकहेछे के विगयखाता दोषनथी यतः नीआवासविहारं॥चेइयन्नत्तिंचअज्जीयालाजं॥विगईसुअपडिबद्धं॥ निद्दोसंचोइयाबिंति

कहेउग्रविहारन्नागा ॥ संगमआयरिउ ॥ नियतवा
सन्नजेबहुश्रुत ॥ सुणिउगुणदरिउ ॥ देव० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेउग्रविहाररूप द्वार दृष्टांतेकरी देखाडेछे जेकोईक एमकहेछे के उग्रविहारथी थाकायकां संगमआयरिउके० संगमाचार्य नियतवासन्नजेके० नित्यवासीपणोन्न ज्युंछे तेसंगमाचार्य बहुश्रुतके० ज्ञानी पुरुषहता एवुंअमे सुणिउके० आगममांहेसांन्नल्युंछे एटले गुणसमुद्र तथाबहुश्रुत एवासंगमाचार्यें नित्यवासकबुलकर्यो तेथीअमे पणजाणीयें छैयें जे एकगामेरेहेतांदोष देखातो नथी एमकहीने नित्यवास थापेछे यतः संगमथेरायरिउ ॥ सुठुतवस्सीतहेवगीयत्थो ॥ पेहित्तागुणदोसं ॥ नियावासंपवन्नोक ॥ १ ॥ इतिवंदनकनिर्युक्तौ ॥ ४ ॥

नजाणेतेखीणजंघा ॥ बलथिविरतेहो ॥गोचरी
नान्नागकल्पी ॥ बहुरह्योजेहो ॥ देव० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ एरीतेजेकहेछे तेनेउत्तर करेछे के जे एमकहेछे तेपुरुषनजाणेके० नथीजाणता एटले नथी गणता जे खीणके० ठेलुथयुंहतुं जंघाबलके० जंघानुबल एटले हिंडवानीशक्तिहतीनही वली थिविरके० घडपणहतुंएवा तेहोके० तेसंगमाचार्यहता तथाउपलक्षणथी दुर्भिक्षहतो शिष्यनेविहारकराव्युंहतुं वलीतेअप्रतिबंधपणे रह्याहता तेपणगोचरीनान्नाग गाममांकल्पीनेरह्याहता एटले एकघरआहारनलेता एवोथकोबहुरह्योके० घणुएकगामे रह्यो जेहोके० जेसंगमाचार्य यतः उमेसीसपवासं ॥ अप्पडिबंधअजंगमत्तंच ॥ नगणंतिएगखित्ते ॥ गणंतिवासंनियवासी ॥ १ ॥ एटले नित्यवास नकरवो इतिन्नाव तेसंगमाचार्यनुं कथानक आवश्यकसूत्रथी जाणवुं ॥ ५ ॥

चैत्यपूजामुक्तिमारग ॥ साधुनेकरवी ॥ जिणे
कीधीवयरमुनिवर ॥ चैत्यवासठवी ॥ देव० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवे चैत्यपूजाके० प्रनुपूजाते मोक्षनुमार्गछे तेमाटे साधुनेकरवी केमके अमेनकरीयें तो एदेरासरनी संनालकोणकरे जोमूकीआपीयें तोविछेदजाय तेमाटे अमे असंयमअंगीकारकर्युंछे तेउपरदृष्टांतदेखाडेछे के जिणेके० जेकारणमाटे श्रीवयरस्वामीआचार्यें पूजानक्तिकरीछे चैत्यवासके० देहरानेविषे पुष्पादिक ढवीके० थापीने प्रनुनक्तिकरीछे माटे निर्दोषछेइतिनाव यतः चइयपूयाकिंवयर ॥ सामीणा मुणियपुव्वसारेणं ॥ नकयापुरियाइतया ॥ तउमुक्खंगसाहुणं ॥ १ ॥ इत्यावश्यके एक पुष्पादिकलाव्या एटलूंजदेखेछे पण आवाकारणहता ते देखतानथी ॥ ६ ॥

तीर्थउन्नतिअन्यशासन ॥ मलिनताटाणे ॥ पूर्वअ
विचितपुष्पमहिमा ॥ तेहनविजाणे ॥ देव० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जे तिहांतो तीर्थके० जिनशासननी उन्नतिथतिहतीवली अन्यशासनके० अन्यतीर्थिनी मलिनताके० मेलाशकरवाने टाणेके० अवशरे तेपण पूर्वअविचित के० पूर्वेंपुष्पकतारीनेलाकव्याहतां एवा फूलहता तेहनो महिमाके० महात्म्यहतु ते नवीजाणेके० एहवीवातनी जेने खबरनथी तेजूलेछे एवयरस्वामीनुचरित्रआव श्यकथीजाणवुं यतः ॥ उन्नावणापरोसिं ॥ सतिन्नकञ्आवणंचवन्नजं ॥ नगणंतिगणे माणा ॥ पुव्वञ्चियपुप्फमहिमंच ॥ ५ ॥ इत्यावश्यके ॥ ७ ॥

चैत्यपूजाकरतसंयत ॥ देवन्नोईकह्यो ॥ शुन्नमनेप
णमार्गनाशि ॥ महानिशीथेंलह्यो ॥ देव० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ चैत्यके० जिनप्रतिमातेनीपूजाकरतांथकां संयतके० ड्व्यलिंगीसाधुते देवन्नोइके० देवनाड्व्यनोनोगवनारो कह्योछे एटलेसंयतनेपूजाकरतां देवड्व्यनीसं कारहेनही माटेदेवड्व्यनोनोगीकहीयें जिनपूजाकरुं एवापरिणामते शुन्नमनकहीयें पण एवीकरणीकरतोथको मार्ग जे जैनमार्गतेनोनाशकरेछे एटलेउन्मार्गें प्रवर्तेछे एरीतेमाहानिशीथसूत्रमां कह्युंछे तथाचतत्सूत्रं एवंचणे गोयमा केइअमूणियस समय सप्नावे उसन्नविहारीणीयवासीणो अदिठपरलोगपञ्चवायसयंमती इढीरससायगारवा इमुच्छिएरागदोसमोहाहंकारसमीकाराइसुपडीबद्धोकलिणी संयमसधम्मंपरम्मुहेनिद्दय निसनिग्घिणअकलुणनिक्किवे पावयरणेक्कनिविठ्ठबुद्धी एगंतेणंअइचंदरोदकूरान्निगाहि उमिल्लदिठीणो कयसवसावञ्जजोगपञ्चरवाए विप्पमुक्कासेससंसारंन परिगाहे तिविहे णंपडिवन्न सामाइएयदवताए नन्नावत्ताएनाम मेतमुंमे अणगारे महव्वयधारी समणे

नविताणं एवंमन्नमाणेसव्वहाओमग्गं पवत्तंतितहाकिल अम्हे अरहंताणं नगवंताणं गंधमल्लयं दीवसमज्जणोवल्लेवणे विचित्तवत्थवल्लीधूवाइ एहिंपूयासक्कारेहिं अणुदीय अमक्कावणं पकुवाणा तित्थूत्थपणंकरेमो तंचणोणं तहत्ति गोयम्मासमणुजाणेज्जा सेन्नयवंकेणंअठेणं एवंवुच्चईजहाणं तंचणोणं तहत्तिसमणुजाणिज्जा गोयमातिय ह्राणुसारेणंअसंयमबाहुल्लेणंचमूलकंमासयं थूलंकंमासव्वाओय अज्ञवसायं पडुच्चा थूलोयरसूहासूह कम्मपयडिबंधोसव्वसावज्जविरयाणांचवयजंगो वएनंगेणंच आ णाईकम्मो आणाईकम्मेणंतु उमग्घागामित्तं उमग्घागामितेणंच समग्घपल्लोयणं उम ग्घपवत्तणं समग्घविप्पलोयणेणंच जईणंमहतिआसायणा तउअणंत संसारोहिंम णंएएणं अठेयंगोयम्माणोणंतं तहतिसमणुजाणिज्जा ॥ इत्यादिकमहानिशीथेतृती याध्ययने अथवा महानिशीथेपंचमाध्ययनेपणपाठछे यथा सेन्नयवंजेणंकेई साहु वा साहूणीवा निग्घांथे अणगारे दव्वत्थयंकुज्जासेणंकिमालाविज्जा गोयम्मा जेणं केईसाहूवासाहूणीवा निग्घांथे अणगारे दव्वत्थयंकुज्जासेणं अजएवा देवनोएइवादेव ह्वगेईवाजावणं उमग्घपयईएवाडरुज्ज्ञायसीलेईवाकुसीईवाआलवेज्जा॥इत्यादि ॥ ८ ॥

पुष्टकारणविनामुनिनवि ॥ द्रव्यअधिकारी ॥ चैत्य
पूजायेंनपामे ॥ फलअनधिकारी ॥ देव० ॥ ए ॥

अर्थ॥माटे कोइशासननोउद्योतप्रमुख मोहोटापुष्टकारणविना मुनीश्वरते द्रव्यअ धिकारीके०द्रव्यस्तवनाअधिकारी नविके०नहोय जेकारणमाटे चैत्यपूजाकरतासर्वफ लनपामे केमके अनधिकारीके० जेहनोजेहनेअधिकारनहीं अनेते करेतो तेहनो फ ल नपामे अन्यथा अधिकारीतोफलपामे यतः अकसिणपवत्तगाणं ॥ विरयाविरया णएसखलुजुत्तो संसारपयणुकरणो ॥ दव्वत्थएकूवदिठंतो ॥ १ ॥ इतिवचनात् ॥ ते माटेमुनीनेनकरवी कसीणसंयमविउपुप्फाइयंनइछंति॥इतिवचनात्॥अनेवयरस्वामी तो कारणे प्रवर्त्या माटेतेने तोफलवंतजछे ॥ ए ॥

मार्गअन्नियपुत्तअज्ञा ॥ लाजथीलागा ॥ कहे
निजलाजेंअतृप्ता ॥ गोचरीनागा ॥ देव०॥१०॥

अर्थ ॥ कोइकप्राणी निजलाजेंअतृप्ताके० पोतानेलाजे अतृप्तयका तथा अज्ञा लाजथीलागाके० आर्यानें लाजें लग्नछेगृहछे वली गोचरीनागाके० गोचरीनाआल सुछे तेहने कोइकप्रेरणाकरेजे आर्यानोआएयो अहारकिमकरोछो तिवारें इमकहेजे

मार्गेअन्नियपुत्तके० अर्णिकापुत्रनेमार्गें एटले ए न्नावजे अर्णिकापुत्रेंसाधवीनोआण्यो आहारलीधोछे तेमार्गें असेपणलइयेंछैयें जोदोषहोयतो तेअरणीकापुत्रकेमलीये माटे आर्यानो अण्योआहारनिर्दोषछे परवचनंआवश्यके ॥ यतः अज्ञियलान्नेगिद्धा ॥ सएणलान्नेणजेअसंतुघः ॥ निरकायरियाजग्गा ॥ अन्नियपुत्तंचवइसंति ॥ १ ॥१०॥

नजाणेगतशिष्यअवमे ॥ थिविरबलहीणो ॥ सुगुण

परिचितसंयतिकृत ॥ पिंम्मविधिलीणो ॥ देव० ॥ ११॥

अर्थ ॥ हवेजेंएमकहेछे तेहनेतपकोदेतांसद्गुनेउपदेशदीएछे के जे अरणीका पुत्रनो दृष्टांत आपेछेते नजाणेके० नथीजाणता जें तेअरणीकापुत्र आर्यानोआण्यो आहारलेता पण कहेवाहता जें गत शिष्यके० शिष्यनोसमुदायपाशेनहतो वली अवमे के० डुकालहतो एटले एनावजें डुकाल जाणी शिष्यनेविहार कराव्यो हतो वली पोता नीपण थिविरके० वृद्धावस्थाहति तथा बलहीणोके० शक्तिहीणहता गोचरीयेंफर वाने असमर्थहता तथाआर्याजेंपुष्पचेलानामेसाधवी तेपण नलागुंणनीपरिचयवान हती तेसंयतिके० साधवी तेणेकृतके० कस्यो एटले आण्यो एवोजें पिंडके०आहार तेवली विधिके० विधिसहित लीणोके० लीधोछे तेकारणतोकोइगणतानथी अने केवल आर्यालान्न गवेषेछे यतः ॥ अन्नियपुत्तायरिउं ॥ नत्तंपाणंचपुप्फचूलाए ॥ उवणियंन्नुजंतो तेणेवन्नवेणअंतघडो ॥ १ ॥ गयसीसगणउमे निरकायरियाअपच्चले थेरं नगणंतिसहाविसढा अज्ञियलान्नंगवेसंतो ॥ २ ॥ तो सहाविके० सखाइशि ष्यादिकछतांपण सवसुरख एमकहेछे इतिन्नाव ॥ ११ ॥

विगयलेवीनित्यसूजे ॥ लष्टपुष्टन्नणे ॥ अंन्यथा

किमदोषएहनो ॥ उदायननगणे ॥ देव० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवे केइक एमकहेछे जे विगयवावरवी निरंतरकल्पे एमपोते लष्टपुष्ट का न्नणेके० कहेछे एटले निरंतरविगय वावरतांदोषनथी एवुंबोलनार ने कोइक रुडासाधु तपको आपे के न्नाई विगयतो साधुने निरंतरलेवीकल्पेनही यतः विगई विगईन्नीयो ॥ विगईगयंजोन्नुंजईसाहु ॥ विगतीविगतीसहावा ॥ विगतीवीगतीब लानेई ॥ ॥ इतिवचनात् एमकहे तेहनेपाछो आवीरीतेउत्तरआपे जे अन्यथाके० जोविगयवावरतां दोषहोयतो तेउदायनराजऋषीयें केमगण्योनही एटलेएन्नाव जे

विगयलेतांदोपदोयतो उदायनऋषियें केमवावरीहती यतः नत्तंवापाणंवा ज्ञुतूणंला वलवियमविसुद्धं॥तोअव ज्ञपडिउन्नं॥उदायनरिसिववईसंति॥१॥इत्यावश्यके॥१२॥

उदायनराजर्षितनुनवि ॥ सीतलुक्खसहे ॥ तेह
व्रजमांविगयसेवे ॥ सूंतेनलहे ॥ देव० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवे उत्तरकहेछे जे उदायनराजऋषीना तनुके० शरीरनेविषे शीतके० टाढुं अने लुक्खके० लुखुं तेनविके०नथी सहेवातु एटले राजवीथकां दिक्षालीधीछे अनेरोगीष्टशरीरछे तेमाटे सहनथीथातुं इतिनाव माटेउदायनऋषियें व्रजमांके० श्रीगोकुलमां विगयवावरीछे एहवूं विगयवावरवानुंकारणते मुढ नलहेके० सुंनथी जाणता एके कोइकारणेविगयवावरी एटले ते श्रोतुंलेइने पोते वावरनार उजमाल थयाछे यतः सीयलुखकाणुचीयं ॥ वएसुविगईगएणजावित्तं ॥ हृष्ठविनणंतिसढा॥ किमासिकहायणोनमुणी॥ एकथाउसर्वे आवश्यकवृहतवृत्तियें वंदनावश्यकेछे॥१३॥

लोकआलंबनेनरिउ ॥ जनअसंयतने ॥ तेह
जगमांकांइदेखे ॥ धरेतेहमने ॥ देव० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एम लोकके० मनुष्यलोकतो आलंबनेनखोछे बाल वृध सूत्र अर्थ द्व्यादिक आपद प्रमुख आलंबनकरे जेमहुंबालकछुं अथवावृध्दछुं तेमज सूत्रनणुं छुं अर्थनणुछुं आद्व्यदोहिलुंछे अथवाआक्षेत्रनातुंछे दमणाउनिक्षादिकछे तथाहुं आजारीछुं इत्यादिकनिश्रापदकरीने पछेआलंबनखोले यतः सुत्तछबालवुढे असहुंद व्वाइआवइओय ॥ निस्साणपयंकाउं ॥ संथरमाणाविसीयंति ॥ १ ॥ इत्यावश्यकेए मअसंयतनेआलंबनेजेनखोछे तेहवाअयत्नायेंचालवानीइछाकरनारजननेआलंबनघ णाछे तेप्राणीजगतमां जेकाइ नियतवासादिकदेखेते मनेके० मनमांहे धरेके० धारी राखे पछेकोइपुछेतिवारें तेहष्टांतदेखाडे इतिनावः यतः आलंबणाणलोगो॥ नरिओ जीवस्सअक्षउकामे जंजंपिछईलोए ॥ तंतंआलंबणंकुणइ ॥ १ ॥ इत्यादि ॥॥१४॥

शिथिलआलंबनगहेमुनी ॥ मंदसंवेगी ॥ संयता
लंबनसुजसगुण ॥ तीव्रसंवेगी ॥ देव० ॥ १५ ॥

अर्थ तेमाटेजे मंदसंवेगीके० अल्पसंवेगवंतमुनीहोय तेशिथिलविहारीना ओल लीएछे जेममथुरामां मंगुआचार्य सुगालमां पण एकगमेरह्या प्रतिबंधतज्योनहीपा

सत्याश्रया तेमाटे एमकरतांपण प्रभुयेंधर्मदीगे एमजणायछे ॥ गाथा ॥ जेजब जाजइया बहुसुआचरणमंदसंघणं ॥ इत्यावश्यके तथा तीव्रसंवेगीके० आकरावैराग्यवंततेतो संयतालंबनके० संयतमुनीराज तेहुनो आलंबनकरें जे अमुक मुनीराजें भिक्षुकप्रतिमावही तथाअमुकमुनीराजेंउपसर्गपरिसहसहनकस्या तोहुंपणतेवा सहनकरुं अथवातपकरुं एवीरीतेंकरतां सुजसगुणके०जसाजसनोगुणवधारे॥ गाथा जेजबजयाजइया ॥ बहुसुआचरणकरणमाउत्ता ॥ जंतेसमायरंती ॥ आलंबण तीव्वसह्वाणं ॥ १ ॥ इत्यावश्यके एढालमांघणुंवंदनकनिर्युक्तिनोअधिकारछे एत्रीजाढालमांएमकह्युंजे हीणाआलंबनलेइने पोतेहीणाचारीथाय पछेजेपोतेंहीणाचारी होय तेशुद्धाचारीना छिद्रकाढे तेवातचोथाढालमांकहेछे ॥ १५ ॥

ढालचोथोप्रभुपार्श्वनुं मुखडुंजोतांनवजवनापातिकखोतां एदेशी

सुणजोसीमंधरस्वामी ॥ वलीएककहुंसिरनामी॥
मारगकरतानेप्रेरे ॥ दूर्जनजेदूषणहेरे ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवे हेश्रीमंधरसाहेबतुमे सुणजोके० अवधारजो वलीके० पूर्वेकही ते थीबीजिवात एकहुंतुं सिरनामीके० मस्तकवडेतुमने नमस्कारकरीने जेशुद्धमार्गना करताके० पालता एवाने प्रेरेके० उदीरे एवाजे दुर्जनके० खलपुरुषछिद्रान्वेषीछे ते दूषणहेरेके० पारका अछता दूषणजूए ॥ १ ॥

कहेनिजसांखेव्रतपालो ॥ पणधर्मदेशनाटालो ॥
जनमेल्यानुंसुंकाम ॥ बहुबोल्युंनिदाठाम ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवे तेएमकहेछे जेपोतानीसाखेंव्रतपालो अनेधर्मकरो पण लोकनेभेलाकरीने धर्मदेशना आपवानुंसुंकामछे माटे एवातनेटालो एमउपदेशकरी लोकनेभेलाकस्यानुंसुंकामछे केमकेघणुंबोलतां कोइअवशरें निंदानुंस्थानकपणथाय ॥ २ ॥

एमकहेतांमारगगोपे ॥ खोटुंदूषणआरोपे ॥
जेनिर्ग्रंथमारगबोले ॥ तेकह्योदीपनेतोले॥३॥

अर्थ ॥ एवीरीतना बोलनाराते मार्गगोपेके० शुद्धमार्गने उलवेछे खोटुंदूषणके० खोटादूषणनोआरोपकरेछे केमके जेप्राणी निर्ग्रंथके० कोइनोजयनराखे अनेशुद्धमा

गैनाथे ते दीपनेतोले शास्त्रमां कह्योछे उक्तंच ॥ जोसम्मंजिणमग्गं ॥ पयासएनि प्पएणिरासेसो ॥ सोनवाणजणाणं ॥ दीवसमोनवरसमुद्दंमि ॥ १ ॥ इति ॥ ३ ॥

अज्ञानीगारवरसिया ॥ जेजनछेकुमतेंग्रसीया ॥
तेहनोकुणटालणहार ॥ वणधर्मदेशनासार ॥४॥

अर्थ ॥ जे अज्ञानिके० मिथ्याज्ञानीहोय अथवा गारवरसियाके० रुद्धिगारव रस गारव सातागारव मांहेमग्नथयाहोय वली जेप्राणी कुमतिग्रसियाके० कदाग्रहेंकुश्र द्धायें ग्रसायीरह्यांछे एटलेअन्यदर्शनना ग्रहणकरनाराछे इत्यादिकनी कुमतिते सार के० प्रधानएहवीजे धर्मदेशना तेदीधाविनातेओनी कुमतीने बीजो कुणटालणहार छे अने सारधर्मदेशनाविना कुमार्गसुमार्गनी शीखबरपडे ॥ ४ ॥

गीतारथजयणावंत ॥ नवनीरुजेहमहंत ॥ तस
वयणेलोकेंतरीयें ॥ जेमप्रवहणथीनरदरीयें ॥५॥

अर्थ ॥ हवे ते देशनाकेवापुरुषआपे तेकहेछे जे गीतार्थहोय गाथा ॥ गीयंनण इसुत्तं ॥ अत्थोतस्सेवहोइवरकाणं ॥ उनएणयसंजुत्तो ॥ सोगीयत्थोमुणेयव्वो ॥ १ ॥ त थाजयणावंत एटले छकायनारक्षकहोय वली नवनीरुके० संसारनीबीकराखनारहो य केरखेखोटुंबोलीयेंतो संसारवधे अने महंतके० महोटाहोय एटलेगुणेगिरुआहो य तेवाउत्तमपुरुषोनावचनथकी लोकमांथीतरीयें जेमनरसमुद्रमां प्रवहणके० जहा जथी पारपामीयें तेमगीतार्थनी देशनायें संसारसमुद्रथीतरीयें ॥ ५ ॥

बीजातोबोलीबोले ॥ सुंकीजेनिर्गुणटोले ॥ ना
पाकुशीलनोलेखो ॥ जनमहानसीथेंदेखो ॥६॥

अर्थ ॥ हवे जे गीतार्थविनामाहीमाहीवातोकरेछे तेनें सीखामण आपेछेके गीता र्थविना जेबीजा तेतोबोलीनेके० देशनाप्रमुखआपीने श्रोतानेसंसारसमुद्रमां बोळे के० बुमाडेछे माटेएवा निर्गुणटोलानेसुंकरीयें गीतार्थविनाघणुंटोलुंमल्युंहोय पणते शाकामनु केमके जेअगीतार्थछे तेघणुबोले उन्मार्गपरुपेतोतेहने नापा कुशीलने ले खेजाणवा ते जनके० हेजन हेलोकएमलौकीकनाषाएकवचनमाटेएमकहेवुंजे हेलो को एवातमहानिशीथसूत्रमां देखोके० उक्तं यथा कुसीलोसन्नपासछे ॥ सछंदेसवले तहादिट्ठी ॥ एवइमेपंच ॥ गोयमाननिरिक्खए ॥ १ ॥ पंचेएसुमहापावे ॥ जोनवजीज्ज

गोयमा ॥ सलावाइकुसीलेहिं ॥नमीहिसोसुमईजहा ॥ इतिमहानिशीथे ॥ एमां एम कह्युंजे पासत्थादिकपांचनेजेनवरजे तेमां संलापकुशीलादिकदोषआवे अनेतेदोषथीसु मतिनीपरेंसंसारनमें तथा ॥ तहाजिप्पाकुसीलें सेंणं अणेगहा तित्त कडुअ कसाय महुराइं लवणाइं रसाइं असायंते अदिठासुयाइं इयपरलोगोनयविरुद्धाइं सदोसाइं मयारजयारुच्चारणाइं अवसंप्पस्काणं संतानिर्जग्गाइं वालणंते असमयन्नधम्मदेस णावत्तणाणय जिप्पा कुसीलेणे एसेनयवं किंनासाए विनासाए कुसीलत्तंनवइ गोयमा नवइसेनयवं जइएवं ताधम्मदेसणंनकायव्वं गोयमा सावज्जाणंच झाणं वयणाणंजो नजाणइ विसेसं वुत्तुपितस्सनखमंकिं मंगपुणदेशणंकाक इतिमहानिशीथे ॥ ६ ॥

जनमेलननीनहीईहा ॥ मुनीनाषेमारगनीरीहा ॥
जोबहुजनसुणवाआवे ॥ तोलाननधर्मनोपावे ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जनमेलनके० लोकनेलाकरवानी नहीईहाके० इच्छातोनथी पणधर्मनी प्राप्तिजाणीने लोकआवीबेसेछे तेनेमुनीश्वर जैनमार्गनाषे पण निरीहके० निरीह थकाकहे पणकोडीमात्रनीआशानराखे अनेयशतथा माननी इच्छानराखे एरीतेंधर्म देशनादेता कदाचित् घणालोक सांनलवाआवे तोधर्मनोलानघणोथाय घणालोक धर्मपामे संसारतरे ॥ ७ ॥ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

तेहनेजोमारगनन्नाषे ॥ तोअंतरायफलचाखे ॥
मुनिशक्तिछतीनविगोपे ॥ वारेतेहनेश्रुतकोपे ॥८॥

अर्थ॥तथाजेलोकधर्मसांनलवाआव्या तेहनेधर्ममारग नन्नाषेके० नसंनलावे तो ते मुनीयें ज्ञाननोअंतरायकर्यो तथा विघ्न कर्यो तेहनाफल चाखेके० नोगवे एटले ज्ञानावरणीकर्मबांधे गाथा ॥ अन्नाणीवरकाणंकरेइ ॥ जोतस्सहोइपावफलं ॥ नाणीविज्ञोनन्नासइ ॥ सोलहएनाणविग्घखु ॥ १ ॥ इतिहितोपदेशमालायां तेमाटे मुनीमां जोदेशनाआपवानी छतिशक्तिहोय तोगोपवेनही अथवा देशनाआपतोथ को थाकेनही तथा धर्मदेशनादेताथकाने जे वारेछे नाकहेछे तेप्राणीने श्रुतकोपेके० नवांतरेज्ञानावरणीबांध्युंहोय ते उदयथाय अज्ञानपणुआवे एटले श्रुतकोप्युं ॥८॥

नविनिंदामारगकहेतां ॥ समपरिणामेंगहगहतां ॥
मुनीअहचरितमनरंगे ॥ जोईलीजेंबीजेअंगे ॥ ए ॥

अर्थ ॥ एटलेशुद्धमार्गकहेतांनिंदानथी केमके देशनातेज्ञाननोहेतुछे समपरिणामेंके० रागद्वेषरहितपणे एटलेकोइऊपररागद्वेषनकरे अनेकोइनु नामलेइ तेनाअवर्णवाद नबोले एरीते गद्गदतांके० हरषपामीनाषें एमआर्द्रकुमारनुंचरित्र बीजुंग्रंथश्रीसुयगडांगसूत्रना बीजाश्रुतस्कंदे छठाअध्ययने जोइलेजो ॥यथा ॥ इमंवयंतंतुमंपाउकुव्वंपावाईणो गरिहसिसव्वमेवपावाईणो ॥ पुढोपुढोकिट्टयंता ॥ सयंसयंदिट्ठी करेतिपाउं ॥ १ ॥ तेअन्नमन्नस्सगरहमाणा ॥ अरकंतिउसमणामाहणाय ॥ सतोयअत्थीअसतो ॥ अनत्थीगरहामोदिट्ठीनगरहामो ॥ किंचिकिंचिनाकिंचि ॥ रूवेणमभिधारयामोसदिट्ठिमग्गंतुकरेमिपाउं इत्यादिकअधिकार मननेरंगेकरीनेजोजो ॥ ९ ॥

कोईनाषेंनवीसमजावो ॥ श्रावकनेगूढाभावो ॥
तेजुठकह्यालछ्छा ॥ श्रावकसूत्रेंगहियछा ॥ १० ॥

अर्थ ॥ वलीकोइकएमकहेछे जे श्रावकने गूढाभावोके० सुक्ष्मअर्थसुंसमजावोछो एनहीसमजावो जोतमेसमजावशोतो सर्वनेपूछताफिरशे सामाआपणाछिद्रजोशे एवीरीते जेकहेछे तेजुठुंकहेछे केमके श्रावकनेतो श्रीभगवतिसूत्रमध्येलछ्छा गहियछा पुछीयछा अभिगयछा विणिछियछा इत्यादिकपाठकह्योछे माटेजोश्रावकनेगूढअर्थनसमजाव्याहोय तोएपाठकेमकह्योछे इतिभाव ॥ १० ॥ ❀ ❀ ❀

कहेकोईनवीसिजोभी ॥ श्रुतमांनहीकांईखोभी ॥ तेमि
थ्याजुठतभावा ॥ श्रुतजलधिप्रवेशेंनावा ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ वलीकेटलाक असमंजस एमबोलेछे के नवीसीजोडीके० नवाग्रंथ अथवा स्तवन सज्झाय जोडवानुं सुंकामछे केमके श्रुतके० सिद्धांतमांतोकांइखोडनथी एटले सिद्धांतमांछे तेकरतांतमे अधिकशुंकहेसो एवुकहेछे तेपण मिथ्याके० खोटुकहेछे कारणके सिद्धांतमांथी उद्धरीनेजेग्रंथकर्याछे तेभावछे ते श्रुतजलधिके० श्रुतरूपसमुद्रमां प्रवेशकरवाने नावाशरिखाछे एटलेसमुद्रमां जोनावाहोय तोप्रवेशथाय तेमज सिद्धांतरूपसमुद्रमांपण जो एग्रंथप्रकरणरूपीनावडाहोय तोजप्रवेशथाय ११

पूरवसूरीयेंकीधी ॥ तेणेजोनविकरवीसिद्धी ॥
तोसर्वेंकीधोधर्म ॥ नवीकरवोजोयोमर्म॥१२॥

अर्थ ॥ एवुंसांभली वली प्रतिवादीबोल्याके तो पूर्वाचार्येंजे जोडीकीधीछे तेहजभणो तेणेके० तेमाटे जोनवीकरवीसिद्धिके० नवीजोडीनकरवी एमवात सिद्धथयी

एटलेनवाप्रकरणप्रमुखजोडवानही एमसिद्धथयुं एवुंबोलनारने उत्तरकहेछेके तो पू र्वेसर्वेउत्तमजीवोथया तेणेसर्वेधर्मकर्याछे तेमाटे तमेवलीधर्म शुंकरवाकरोछो तमने पणनकरवो केमके पूर्वाचार्येजोडीकरीछे माटेआपणनेनकरवी तोपूर्वेधर्मपणघणाजी वेंकर्योछे माटेआपणनेनकरवो ए मर्मके० एनाव ॥ १२ ॥ ❀ ❀ ❀

पूरवबुधनेबहुमाने ॥ निजशक्तिमारगग्याने ॥ गुरु
कुलवासीनेजोमी ॥ युगतिएहमांनहीखोमी ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ माटे जोग्रंथनोजोडनार आवोथयोनेनवाग्रंथजोडे तोतेमांकांइदोषनथी पूरवबुधनेबहुमानेके० पूर्वपंडितगीतार्थथया तेहनुबहुमानकरेजेपूर्वाचार्यआगलेंहुंते शाहीसांबमांबुं पणतेनुवचनखंडेनहीतथापोतानी शक्तिप्रमाणेयोजनाकरे पण अ धिकयोजनानकरे जोअधिकयोजनाकरे तोकोइकछेकाणेखोटुंआवीजाय माटे शक्तिप्र माणेजोडे वलीमारगग्यानेके० जैनमार्गनुंज्ञानचोखुंनिर्मलहोयतोजोडे वली गुरुकुल वासीहोय तेसंप्रदायशुद्धजाणे तेवारेयथार्थजोडाय एवापुरुषेंजोडवुं युक्त घटमा नछे एहमांकांइखोडीके० हाणीनथी ॥ १३ ॥ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

एमश्रुतनोनहीउछेद ॥ एतोएकदेशनोनेद ॥
एअर्थेसुणिउल्लासें ॥ नविवरतेश्रुतअन्यासें ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एरीते नवीजोडीकरतां श्रुतज्ञाननो उछेदनथीथातो पणश्रुतवृद्धिथायछे एतोएकदेशेंनेदछे एटले ग्रंथनामेनेदछे पण आत्यंतिकनेदनथी वली एग्रंथनोजे अर्थके० नावते उल्लासेंके० हरषे सांनलीने नव्यप्राणीते श्रुतज्ञानजाणवाना अन्या समांवर्त्ते केमके तेहनामनमांहे एमउपजेके आग्रंथमां आटलीवातकहीछे तोसि द्धांतमांतोघणासूक्ष्मनावकह्याहशे तेसारुंवधारेजाणवानो अन्यासकरे माटेनवीजो डीकरवी ते सिद्धांतनीवृद्धिकरेछे पण उछेदकरतीनथी इतिनावः ॥ १४ ॥

इहांदूषणएककहाय ॥ जेखलनेपीमाथाय ॥ तोपण
एनवीगेमीजें ॥ जोसज्जननेसुखदीजें ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ इहांएकदूषणकहेवायछे तेआंवीरीतेके पंडितलोकजेग्रंथकरेछे तेथीपंडित नोयशवादबोलायछे तेजेखललोकहोयतेथीखमातुंनथी माटे ते खललोकोने पीडा थायछे तोपणएनवीजोडीकरवी ते नवीछोडीजेके० नमूकीयें जोसज्जनपुरुषने सुखआ पीयें तोनवाग्रंथजोडताजजइयें पणथाकियेंनहीइत्यादिनावः ॥ १५ ॥

तेपुण्येहोसेतोष ॥ तेहनेपणइमनहीदोष ॥ उज
मतांहीयम्हेहीसी ॥ जोइलीजैंपेहेलीवीसी ॥१६॥

अर्थ ॥ ते नवाग्रंथजोडतां पुण्यथाशे तेपुण्येकरीने सज्जनलोकोने संतोषउपज
शे इहां सज्जनपदबाहीरथीलीजीयें तथा तेहनेपणके० तेखललोकोनेपण एमदोष
नथी एटलेतेनेपणपीडानथाय केवीरीतेनथायके जो उजमतांके० उद्यमकरीने हीय
डेहीसीके० हीयामांहरषपामीने एअर्थ प्रथमवीसीमां हरिनइसूरियेंकह्युंछे तेजोइ
लेजो यतः इक्कोपुणहोइदोसो ॥ जंजायइखलजणस्सपिडत्ति ॥ तहविपयट्टोइहं ॥ दिट्ठ
सुयणाणअइतोसं ॥ १ ॥ तत्तोचियजंकुसलं ॥ तत्तोतिसिंपिहोइनहुपीडा ॥ सुद्धास
यापवित्ति ॥ सव्वेनिद्दोसियाजणिया ॥ २ ॥ १६ ॥

कहेकोईकजूदीरीतें ॥ मुनिनिद्रानांजेनीतें ॥ तेजू
ठुंशुभमतिईहे ॥ मुनिअंतरायथीबीहे ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ वलीकोईकतो जूदीजरीतेंकहेछे जें देशनादेवानीनाकहीयेंछैयें तेहनोआ
शय एछेजें मुनीदेशनादेतां अमारीनीद्रानांगोछो कारणकेतमे एवोमार्गपरुपोजेथकी
अमनेनिद्राकोइआपेनही ते नीतीके०बीकनेमाटे देशनादेवानी नाकहीयेंछैयें तेजूठुं
के०एमबोलनारापण खोटुंकहेछे केमके जेयथार्थदेशनाआपनारमुनिछे तेशुभमति
ने ईहेके० वांछेछे एटले उत्तरोत्तर शुभ अध्यवसायराखनाराछे तो ते एहवा मुनि
राज तो अंतरायथीबीहेछे के जोकोईने अंतरायपाडीसुं तोपोतानेअंतरायकर्मबंधासे
तो एवामुनीबीजानी निद्राकेमभांजे इतिभावः ॥ १७ ॥

जेजनछेअतिपरणामी ॥ वलीजेहनहीपरणामी ॥
तेहनेनितेसमजावे ॥ गुरुकल्पवचनमनभावे ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ माटे जे लोक अतिपरणामीछे एटले एकनिश्चैमार्गेज आदरयोछे तेपोतें
जआतवनमां आगलकेहेशे जे भेदलवजाणतांकेइमारगतजे ॥ होयअतिपरणतिप
रसमयथितिभजे ॥ वली केटलाकलोकते नहीपरणामीके० केवल व्यवहारनेज आ
दरेछे तेक्रियाव्यवहारमांराता पणनिश्चैमार्गेजाणताजनथी तेपण पोतेजआतवन
मांआगलकेहेसे केइनवीभेदजाणेअपरिणतमती ॥ शुद्धनयअतिहिंगंभीरछेतेवती ॥
एवचनथीतो एमजाणीयेंछैयेंजे अतिपरणतिते निश्चयवादी अने अपरणतिते व्यव
हारवादी तथा विशेषावश्यकमध्ये तो वृत्तिकारेंएमलख्युंछे जे इहशिष्यास्त्रिविधास्त

द्यथा अपरिणामा अतिपरिणामाः परिणामाश्चेति तत्राऽविपुलमतयोऽगीतार्था अपरि णतजिनमतरहस्या अपरिणामाः अतिपरिणामा अतिव्याप्तापवादद्दृष्टयोऽतिपरिणा माःसम्यक्परिणतजिनवचनास्तुमध्यस्थवृत्तयःपरिणामाः तत्रयेअपरिणामास्तेनया नांयः स्वस्वआत्मीयआत्मीयविषयो ज्ञानमेवश्रेयः क्रियावाश्रेय इत्यादिक स्तमश्रद्धा नाः येत्वतिपरिणामाः तेपियदेवैकेननये क्रियादिकं वस्तुप्रोक्तं तदेतन्मात्रं प्रमाणत या गृह्णंत इत्यादिकलिख्युंछे इहांतो पूर्वोक्तअर्थपणलागेछे तथा महाभाष्योक्तअर्थ पणलागेछे वलीविशेषे बहुश्रुतकहेतेखरू इतिभावः एहवाअतिपरिणामी तथा नही परिणामी जे लोकछे तेहने नितेके० न्यायमार्गे स्याद्वादमार्गेदेखाडी गुरूसमजावेछे अथवा नितेके० निरंतरदेशनायेंकरीसमजावेछे तेकोणसमजावेछे गुरूके०गुरूसमजा वेछे एमंबृहत्कल्पभाष्यमांवचनछे ते मनमांभावीनेंकहेछे यतः अइपरिणइअपरिणई॥ इएहंविमग्गंजणोपणासंति ॥ तंम्हादेसणमाइस्कई॥सुद्दगुरूमग्गरकहा ॥ १ ॥ १७ ॥

खलवयणगणेकुणसूरा ॥ जेकाढेपयमांपूरा ॥ तुज
सेवामांजोरहीयें ॥ तोप्रभुजशलीलालहीयें ॥ १९॥

अर्थ ॥ तेमाटे खललोकनावचनजेखूरवीरनी देशनाप्रमुखनेविषेछे तेहनेकुणग णेके० कोणखात्रमांआणे एटलेखूरवीरतेनेगणतीमांआणताजनथीजे खलपुरुषछे ते पयके० दूधमांथीपण पूराकाढेछे माटेजेदेशनातेगुणकारीछे तेहनेअहितकारी कहेछे तो हे प्रभुजी तेहनावचन लेखामांगणीयेंनही अने तुजसेवामांरहीयेंके० त मारीआज्ञापालीयें एटलेतमारीआज्ञाएवीरीतेंछे जे देशनाआपतां लाभजथायछे माटेदेशनाआपवी एतमारीसेवाछे तेसेवामांजोरहियें तो जशलीलापामीयें प्रभुपद संबोधनकरी आगलसंबंधकर्योछे अथवा प्रभुतानोयशतेहनीलीलापामीयें इतिभावः ॥ १९ ॥ एचोथाढालनेविषेखललोकें गुणवंतनेदूषणदीधा तेहनासमाधानकर्या ह वे पांचमांढालमां खललोकनिर्गुणीछतां पोताना आत्माने गुणीकरीमानेछे तेनेदोष दीयेछे तेसंबंधेपांचमोढालकहेछे ॥ १९ ॥ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁

ढालपांचमो रागरामग्री मंत्रीकहेएकराजसभामां एदेशी

विषमकालनेजोरेंकेई ॥ उठ्याजममलधारीरे ॥ गुरुगछछांमी
मारगलोपी ॥ कहेअमेंउग्रविहारीरे ॥ १ ॥ श्रीजिनतुंआलं
बनजगने ॥ तुजविणकवणआधारोरे ॥ भगतलोकनेकुम
तिजलधिथी ॥ बांहिग्रहिनेतारोरे ॥ श्रीजिन० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ विषमकालनेजोरेंके० पांचमोआरो हुंमाअवसर्पिणीनेजोरें केटलाएक
उत्थाके० प्रगटथया जडके० मूर्ख वली मलधारीके० बाह्यशरीरेपणमेला अनेअंत
रंगपापमेलेकरी मलीनथयेला माटेमेलनाधरनाराकह्या एटलेएनावजे एढालप्राएं
ढुंढीआ लुंकाआश्रीछे पछेंबीजाजीवोनेपणशीखामणदाखलछेहवेते ढुंढीआओने
मायेगुरुनथी माटे एमकह्युंजेउत्थाजडमलधारी उक्तंचवंगचूलिकायां श्रुतहीलनाअ
ध्ययने विक्कमकालाउपन्नरसय ॥ पणहत्तरीवासेंसुगएसुकोहुंडी ॥ अपरिगाहिवंतरी
पहावाउनारहेवासे ॥ १ ॥ सूयहीलणाजिणपडिमानत्तिनि ॥ सेहकारयासछंदा
चारादुमेहा ॥ मलिणाडुगाइगमिणिवहवे ॥ निस्कायरासमुप्पजिहातित्तिः एटले
गुरुने तथागछनेछांडी मारगलोपीके० उन्मार्गेपरूपीने तथा तेमने कोइपुछे तेनेएमउ
त्तरआपे जे अमे उग्रविहारना करनारछुं तथा अमेअद्भुतमार्गेपाम्याछैयें माटे श्री
जिनके० बाह्यअभ्यंतरलक्ष्मीयुक्त एहवाहेजिनराजतुंज जगत्रने आलंबनके०
आधारछे पण हे प्रछुतमाराविना बीजोकोणआधारछे तमेतमाराजक्तिनाकरनारा
जे जक्तलोकछे तेहने कुमतिरूप जलधिके० समुद्र तेथकी बाहियहीने तारोके०
पारउतारो एटले नवनवाकदाग्रहउपजतावारो ॥ २ ॥ ❀ ❀ ❀ ❀

गीतारथविणनूलानमतां ॥ कष्टकरेअभिमानेरे ॥ प्रायें
गंठीलगेंनवीआव्या ॥ तेखूताअज्ञानेरे ॥ श्रीजिन० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवेते मूर्खलोक गीतार्थविनानूलाजनमेछे अहंकारेंकरीजेपोतानोएकम
तपकड्यो तेहनाअभिमानेकरी कष्टकरता लोचभिक्षा उघाडुंमाथुं उघाडापग इत्या
दिककष्टकरता फरेछे पणप्रायें एमजाणीयेंछैयेंजे तेलोक गंठीलगेंपणआव्यानथी ए
टलेगंठीभेदपणनथीकर्यो तोसमकेतनीवाततोवेगलीछे तेप्राणीअज्ञानने विषेजखूता
छे केमके गुरुआणाविनाछेमाटेइतिभावः ॥ ३ ॥ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

तेहकहेगुरुगछगीतारथ ॥ प्रतिबंधेसुंकीजेंरे ॥ दर्शन
ज्ञानचरितआदरियें ॥ आपेंआपतरीजेंरे ॥ श्री० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वलीते पोतानुंएकाकीपणुं थापवामाटे एमकहेछे जे गुरुनोप्रतिबंध गी
तार्थनोप्रतिबंध तथागछनोप्रतिबंध तेप्रतिबंधेसुंकरियें केमके प्रतिबंधतेतो दुःखनोहे
तुछे माटेप्रतिबंधकोइसाथेनकरवो मात्र दर्शन ज्ञान चारित्र ए रत्नत्रयी आदरीयें
बीजोकोइकोइने तारणहारनथी आपेआपतरीजेके० पोतेपोतानीमेलेतरीयें यतः
अप्पानईवेयरणी ॥ अप्पामेकुमसामलि इतिवचनात् ॥ ४ ॥ ❀ ❀ ❀

नवीजाणेतेप्रथमअंगमां ॥ आदिगुरुकुलवासोरे ॥ कह्यो
नतेविणचरणविचारो ॥ पंचाशकनयखासोरे ॥ श्री० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेएनेउत्तरआपेछे के ते एमनथी जाणताजे प्रथमअंगमां श्रीआचारांगसूत्रनी आदिके० धुरें गुरुकुलवासोके० गुरुकुलवासकह्योछे यतः सूयंमेआउसंतेणं ॥ जगवयाएवमस्कायं एमएसूत्रमांहेकह्युंजे सूयंके० सांजल्युं मेके०. मेंएमसुधर्मास्वामी जंबूप्रतेंकहेछे के मे सांजल्युंछे साक्षात् पणकरणघाटेंनही आउसंतेणं के० आमृशता जगवानवीरना चरणउपासतायकां सांजल्युं एवचनेकरीने सुधर्मास्वामीयें एमबताव्युं जे गुरुकुलवासेंवसवुं इतिजाव नके० नही तेविणके० तेगुरुकुलवासविना चरणके० चारित्र एम विचारोके० चिंतनकरो एटलेएजावजे गुरुकुलवासविनाचारित्रनहोय एमपंचाशकमांहे श्रीहरिजद्रसूरियें खासोके० उत्तम नयके० न्यायकह्योछे यतः दंसणनाणचरित्तं ॥ गुरुकुलवासंमिसंगयंजणियं ॥ अगुरुकुलवासियाणं ॥ डुप्पडिलंजंखुत्तिएवमवि ॥ १ ॥ तथा सिद्धांतमांपणपिंमविशुद्धें चारित्रनी शुद्धीकेवायछे तेपिंमविशुद्धीतो जो गुरुकुलवासहोयतोथाय तेमाटे गुरुवासविना चारित्रनहीं यतः पिंमंअसोहयंतो ॥ अचरित्तीइबसंसउनबी ॥ चारित्तंमिअसंते ॥ सवादिस्कानिरछिया ॥ ११ ॥ इति ॥ ५ ॥

नित्यैंगुरुकुलवासेंवसवुं ॥ उत्तराध्ययनेजाख्युंरे ॥ तेहनेअप
मानेवलीतेहमां ॥ पापश्रमणपणुंदाख्युंरे ॥ श्री जिन० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वली निरंतरगुरुकुलवासें वसवुं एम श्रीउत्तराध्ययनसूत्रनाइग्यारमांअध्ययनेकहुंछे यतःवसेगुरुकुलेनिच्चं ॥ जोगवउवंहाणवं ॥ पियंकरेपियंवाई ॥ सेसिस्कंलद्धुमरीहई ॥ १ ॥ इति वली तेहनेके० तेगुरुनेअपमानेके० अवज्ञाकरेतोतेहनेवलीतेहमांके० तेउत्तराध्ययनना सत्तरमांपापश्रमणियअध्ययनमध्येज पापश्रमणपणुंदेखाड्युंछे एटलेगुरुआदिकनी निंदाकरतोहोयतो तेहनेपापश्रमणकहीयें यतः आयरियउवज्झायाणं ॥ सम्मंनपडितप्पई ॥ अप्पडिपूयएथंधे ॥ पावश्रमणित्तिवुच्चई ॥ १ ॥ तेमाटेगुरुकुलेरहेवुं

दसवैकालिकगुरुशुश्रूषा ॥ तसनिंदाफलदाख्यारे ॥ आवंतिमां
छहसमसदगुरु ॥ मुनीकुलमछसमजाख्यारे ॥ श्रीजिन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वलीदशवैकालिकसूत्रनेविषे नवमाध्ययने गुरुनी शुश्रूषाके० सेवाकरवी तेसेवाना फल घणाकह्यांछे काव्य आयरियग्गिमिवाहियग्गी ॥ सुस्सूसमाणोपडि

जागरेज्जा ॥ आलोइयंगीयमेवनच्चा ॥ जोढंदमाराह्यइसपुज्जो १ इत्यादिक आखो त्रीजोउद्देशोजाणवो वली तसनिंदाके० तेगुरुनी निंदाना फलपण तेदसवैकालिक मांहेज नवमाध्ययनना पेहेलाउद्देशामां कह्याछे काव्यं आसीविसोआविपरंसुरु ठो॥किंजीवनासाउपरंतुकुज्जा ॥ आयरियपायापुणअप्पसन्ना॥अबोहिआसायणनत्थि मोरको ॥ १ ॥ इत्यादिकसंपूर्ण प्रथमउद्देशोइहांजाणवो वली आवंतिमांके० आचा रांगमां पांचमांअध्ययनना पांचमाउद्देशामध्ये सदगुरुनेद्रहसमानकह्योछे तथा मुनी नाकुलके० समूह तेमज्ञसमानकह्याछे तथाचतत्सूत्रं सेबेमि तंजहा अविहरएप डीपुन्नेचिठंति समंसिभोमे उवसंतरएसाररकमाणे सेचिठंति इत्यादिक एनी वृत्तिनो विचेथीएकदेशलखीयेंछैयें इहपुनः प्रथमभंगपतितेनोभयसद्भाविनाधिकार स्तथाचू तस्यैवायंन्हदहष्टांतः सचन्हदोनिर्मलजलस्यप्रतिपूर्णोजलजैः सर्वर्तुजैरुपशोभितःस मे भूजागे विद्यमानोदकनिर्गमप्रवेशो नित्यमेवतिष्ठति नकदाचिद्दोषमुपयातिसुखोत्ता रावतारः समन्वितउपशांतमपगतरजःकालुष्यापादकं यस्यस तथानानाविधांसुयाद सान् गणान्सह्वायादोगणैरात्मानमारक्षन्प्रतिपालयन्सारक्षन् तिष्ठत्येषांक्रियाप्र कृतैवयथावासो न्हदस्तथाचार्योपीति दर्शयतिसेचिठइ इत्यादिसआचार्यः प्रथमभंग पतितःपंचविधाचारसमन्वितो अष्टविधाचार्यसंपदुपेतःषट्त्रिंशद्गुणगणाधारो न्हदक ल्पोनिर्मलज्ञानप्रतिपूर्णः समेभूजागइतिसंसक्तादिदोषरहिते सुखविहारक्षेत्रेसमोवा ज्ञानदर्शनचारित्राख्योमोक्षमार्ग उपशमवतांतत्रतिष्ठतिसमध्यास्तेकिंभूत उपशांतमो हनीयइतिकिंकुर्वन् जीवनिकायान् रक्षन् स्वतः परतश्चसदुपदेशदानतोनरकादिपाता देतिस्रोतोमध्यग इत्यनेन प्रथमभंगपतितं स्थविराचार्यमाहतस्यहिश्रुतार्थदानग्रहण सद्भावात्स्रोतोमध्यगतत्वं सचकिंभूतःस्यादित्याहइत्यादिक ॥७॥

गुरुदृष्टिअनुसारेंरहेता ॥ लहेप्रवादप्रवादेंरे॥ एपणअर्थ
तिहांमनधरियें ॥ बहुगुणसुगुरुप्रसादेंरे॥श्रीजिन०॥ ८ ॥

अर्थ ॥ वलीगुरुदृष्टिके० गुरुनामुखआगल रहेतां तथा अनुसारेंके० गुरुनेअनु जायीरहेतां लहेप्रवादप्रवादेंके० प्रकृष्टजेवाद तेनेप्रवादकहियें तेप्रवादेंकरीने प्रवाद जाणे एटलेप्रवादतेआचार्यपरंपरानोउपदेश तद्रूपप्रवादेंकरीने सर्वज्ञउपदेशरूपप्रवा दनेजाणे अथवा प्रवादजे सर्वज्ञवाक्य तेणेकरीने अथवा प्रवादजे अन्यतीर्थिंउना वाक्य तेप्रतेपरिक्षाकरीनेजाणे एरीतगुरुपासेरहेतांज्ञान अंगीकारकरे इत्यादिक एअर्थ पणतिहांके० तेआचारांगना पाचमांअध्ययनना छठाउद्देशामां कह्युंछे तेमनमां धरि

यें तत्सूत्रंआणाणाए एगे सोवट्ठाणे अणाणाए एगे ॥ निरूवट्ठाणे एयं ॥ तेमाहो उएयंकुसलस्सदंसणं ॥ तद्दिट्ठिए तमोत्तीए तप्पूरकारें तस्सन्नितवेसणे अनिन्नू य अदरकं अणन्निनूए पहू निरालंबणयाए जे महंअवहिमणे पवायेणपवायंजाणे ज्जा सहसंमुइयाए परवागरणेणं अन्नेसिं वाअंतिएसोच्चा निद्देसं नातिवत्तेज्जा मेहा वी सुपमीलेहिय सवतोसवआएसममेव समभिजाणीज्जाइत्यादिक एहनोअर्थटीका मांतोबहुछे पणआंइ शब्दार्थमात्रलिखीयें छैयें अणाणाएके० प्रभुआज्ञारहित एगेके० केटलाक सोवट्ठाणेंके० धर्ममांसदाउद्यमवंतथया तथा केटलाक अणाणाएके० अ नाज्ञायेंनिरूवट्ठाणेके० सदअनुष्ठाननाउद्यमरहीत एयंके० एबेकुमार्गने सदमार्गनाउ द्यमनुंआलसजाणवुं हवेफरिगुरुशिष्यनेकहेछे तुंजने ए बे मांहेजो एवंकुसलस्सदं सणंके० एतीर्थंकरनोदर्शनअभिप्रायछे तद्दिट्ठिएके० विनितशिष्यें तेआचार्यनीदृष्टी येंवर्त्तवुं तमोत्तिएके० तेआचार्यनीमुक्तियेंवर्त्तवुं तप्पुरकारेके० तेआचार्यनी आज्ञा आगलकरीनेवर्त्ते तस्सन्निके० तेओनीसंज्ञाजाणे चित्तनोअभिप्रायजाणे तन्निवेसणे के० सदागुरुकुलवासेंवसे एहवोशिष्यकेवागुणनेपामे तेकहेछे अभिनूयके० परिस हउपसर्गनेजीतीने अदरकंके० घातिकर्मनेउछेदे हेशिष्यवली अणन्निनूएके० परिस होपसर्गनेअणजित्योथको पहुके० समर्थहोय निरालंबणयाएके० मातापितालज्जा नादिकना आलंबनरहितपणे विचरवानेकोणसमर्थहोय तेकहेछे जेके० जेकोइपु रुष महंके० माहराअभिप्रायथकी अवहिमणेके० मनबाहेरनथीनिकल्युंजेहनुं एटले सर्वज्ञउपदेशेंवर्त्तछे इतिभावः तेसर्वज्ञउपदेशकेमजाणीयेंतेउपरेंकहेछे पवाएणंपवायं जाणेज्जा एअर्थलहेप्रवादप्रवादेंएमकह्युंतिहांकयोछे तेजाणवुं हवेपूर्वोक्तजेप्रवादते त्रणप्रकारेजाणे तेकहेछे सहसंमुइयाएके० पोतानीमतिअवध्यादिकमते अथवा प रवागरणेणंके० सिद्धांतेकरीने वाके० अथवा अनेसिंके० अन्यआचार्यादिकतेहने वाअंतिएसोच्चाके० समीपेंसांभलीने यथार्थजाणीने निद्देसंनातिवत्तेज्जाके० तीर्थंकरना उपदेशनेउलगेनही केमकेजे मेहावीके० पंडित सुपडिलेहियके० भलेप्रकारेंजोईने सवतोसवआएके० सर्वप्रकारें द्रव्यक्षेत्रेंकालभावें सर्वपणे स्वदर्शन परदर्शनप्रतें सम मेवके० सम्यक्रीते समभिजाणीज्जाके० जाणीनेनिराकरणकरे इत्यादिकबहुअधिका रछे तेमाटे बहुगुणसुगुरुप्रसादेके० गुरुआदिकनापसायथी घणागुणथाय॥ पुज्जाजस्स पसियंति ॥ संबुद्धापुवसंथया ॥ पसन्नालाभइस्संति॥विउलंअट्ठियंसुयं ॥ १ ॥ इत्युत्त राध्ययनेप्रथमाध्ययने इहांसूत्रआलावोविषमहतोमाटेअर्थकह्योछे ॥ ८ ॥

विनयवधेगुरुपासेंवसतां ॥ जेजिनशासनमूलोरे ॥ दर्शन
निर्मलउचितप्रवृत्ति ॥ सुन्नरागेंअनुकूलोरे ॥ श्रीजिन०॥ए॥

अर्थ ॥ वली गुरुपासेवसतां विनयवधे अने जेविनयते जिनशासननुं मूल छे य तः एवंधम्मस्स विनउमूलंपरमोसेमोरकोइति दसवैकालिक नवमाध्ययनना बीजा उद्देशकेंकह्यो तथा विनयफलंशुश्रूषा गुरुशुश्रूषाफलंश्रुतज्ञानं ॥ ज्ञानस्यफलंविर ति विरतिफलंचाश्रवनिरोधः ॥ १ ॥ आश्रवनिरोधाद्भवसंततिक्षयः ॥ संतति क्षयान्मोक्षः॥ तस्मात्कल्याणानां सर्वेषांनाजनंविनयः॥१ इतिप्रशमरतौ वली गुरुकु लवासेंदर्शनश्रद्धानिर्मलथाय उक्तंच सव्वगुणमूलनूउं ॥ नणीउंआयारपढमसूत्तेजं॥ गुरुकुलवासोवस्सं ॥ वसिक्काउत्तडचरणथी ॥ १ ॥ इतिधर्मरत्नवचनात् तथा उचित के० योग्यप्रवृत्तिथाय तेपणसुजरागेंके० जलारागसहितप्रवृत्तिकरे तेपण अनुकूल के० सन्मुखन्नावपणेकरे पणवेवनीपेठेनकरे ॥ ए ॥

वैयावच्चेंपातिकत्रूटे ॥ खंतादिकगुणसक्तीरे ॥ हितोपदेशें
सुविहितसंगे ॥ ब्रह्मचर्यनीगुप्तिरे ॥ श्रीजिन० ॥ १० ॥

अर्थ॥गुरुनोवैयावच्चकरतांथकां पातिकके०पापकर्मत्रूटे यतः वैयावच्चेणंनंते जीवे किंजणइवेयावच्चेणंतित्थयरनाम गोयं कम्मंनिबंधइ इतिउत्तराध्ययन उगणत्रीसमाध्य यनेकह्यो वलीगुरुआदिकपासेरहेतां खंतादिकके० क्षमाप्रमुखगुणनीशक्तिवधे तथा गुरुपासेंरहेतोथको हितोपदेशसांनले तेणेकरी तथासुविहितनासंगेकरीने ब्रह्म चर्यनीगुप्तिके० नववाडोनलीरीतेंपाले तेगुप्तिपणवाधे ॥ १० ॥

मनवाधेमृदुबुद्धीकेरा ॥ मारगन्नेदनहोवेरे ॥ बहुगुणजाणे
एअधिकारें ॥ धर्मरयणजेजोवेरे ॥ श्रीजिन० ॥ ११ ॥

अर्थ तथा मृडुबुद्धीकेराके० जे ऋजुमतिनाधणीहोयतेहना मनवाधेके० चित्त मांहे उल्लासवधे कारणके० जेन्नोलालोकहोयतेगुरुसाथेदेखीने हरषपामे अने गुरु थीजूदादेखीने नडकीजाय तथा मारगनोन्नेदनथाय अनेजे एकाकीमार्गपरुपे तेघणो अपवादपरुपे अनेगीतार्थघणोउत्सर्गपरुपे एवीरीते जूदीजूदी परुपणा सांनलीने जो कपणन्निन्नमार्गसमजे तेथीधर्ममार्गनोन्नेदथाय अनेगुरुसाथें नेलारहेताथकांनथाय इत्यादिक गुरुकुलवासमाहेबहुके० घणागुणजाणे एअधिकारेंके० एगुरुकुलवासना

अधिकारनेविषेथमेरत्नग्रंथजेप्राणीछुए तेजाणे एटले एग्रंथमांगुरुकुलवासेरहेतां घणागुणछेतेविस्तारेंकह्युंछे इतिजावः ॥ ११ ॥

नाणतणोसंनागीहोवे ॥ थिरमनदर्शनचरित्तेरे ॥ नत्यजे
गुरुकहियेंएबुधनाष्युं॥आवश्यकनिर्युक्तेरे॥श्रीजिन०॥१२॥

अर्थ ॥ वली तेजीव गुरुपासेथीज्ञानजणेमाटे नाणके० ज्ञाननोसंविजागीथाय तेमज दर्शनेनेविषे तथाचरित्तेके० चारित्रनेविषेपण तेहनोमनथिररहे तेप्राणीगुरु के० गुरुआदिकने कहियेंके० कोइकाले नत्यजेके० नछांडे एरीते बुधनाष्युंके० पं डितलोकेंकह्यो एटले नद्रबाहुस्वामी चउदपूर्वधर तेणेआवश्यकनिर्युक्तिनेविषे एमक ह्योछे यतः नाणस्सहोइनागी ॥ थिरयरउदंसणोचरित्तेय ॥ धन्नाआवकहाएगुरु ॥ कुलवासंनमुंचंति ॥ १ ॥ इति ॥ १२ ॥

नौतप्रतेंजेमबाणेहणता ॥ पगअणफरसीसबरारे ॥ गुरुछांमि
आहारतणोखप ॥ करतातेममुनिनिवरारे ॥ श्रीजिन० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ तथा नौतके० बौधप्रतेंजेम बाणेकरीनेहणता पिछुंलेवानेमाटे पणपग अणफरसीने एटले पगफरसतांपापलागे तेमाटेसबराके० सबरानामेराजानीपेरेजे गुरुकुलवासछांडीने आहारनोखपकरतां एटले शुद्धमानआहारखोलताजेमुनी तेहने निवराजाणवा एटले नकामाजाणवा इतिगाथार्थ जावार्थतोकथाथीजाणीयें तद्यथा कोइकसन्निवेशनेविषे सबरनामेराजा तेबौधनोनक्तिवंतहतो तेनाघरेंबौधनोगुरुआ व्यो तेणेपोतानामाथाउपर अति अद्भुत शोजावंत मोरनापीछनुंछत्रधारणकर्युंहतुं रा जायेंघणोआदरसत्कारआपी आसनेबेसाड्यो पछेतेनुंछत्र मोरनाचंदेकरीझगझगाट करतुं राजानीराणीयेंदीठुं पछेकुंतूहलपामतीथकी राणीयेंतेछत्रमांग्युं केमके तेदेशमां मोरनहता तेथीअचरजनेमाटे तेछत्रबौधनागुरुयेंआप्युंनही अने उवीनेपोतानेठेका णेजतोरह्यो पछेराणीयेंजोजनकीधुनही तेवारेराजायेंपुछ्युंके शावास्तेजोजनकरतीन थी राणीबोलीके एछत्रआवेतोजोजनकरुं पछेराजायें तेछत्रगुरुपासेथीमांग्युं गुरुयें आप्युंनही फरीवारंवारमांग्युं पणगुरुआपेनही पछेस्नेहरागअतिउर्धरछे माटेराणीना स्नेहें राजायेंपोताना सुजटोनेहुकमकर्यो जे बलात्कारेंपण एपीछनुंछत्र लेइआवो ते वारें सुजटोबोल्याजे एपोतेजीवतांतोछत्रआपशेनही माटेतमारोहुकमहोयतो कोइक प्रहारकरी बलात्कारेंलावियें तेवारेंराजाबोल्योजे गुरुनीआशातनानथाय माटे गु

रुनापादस्पर्शकरसोनहीं पणदूरजारहिबाएणनारवीने चेष्टारहितकरीछत्रलेइआवो प एपादस्पर्शकरसोतो गुरुनीअवज्ञाथासे तेनुमोहोटुंपापलागसे एदृष्टांते जेमशबर राजागुरुनोनासकरतां तथा पादस्पर्शकरतांवारतोहतो एहवोजविवेकगुरुकुलवासत जीने जेशुद्धआहारगवेषेछे तेहनेपणजाणवो यतः सुद्धंगईसुजुत्तो ॥ गुरुकुलवागा इणोहविन्नेउ ॥ सबरससरक्कपिछ ॥ छघायपायाछिवणतुल्लो॥१॥ इतिधर्मरत्न ॥१३॥

गुरुकुलवासेंज्ञानादिकगुण ॥ वाचंयमनेवाधेरे ॥ तोआहार तणोपणदूषण ॥ खपकरतांनविबाधेरे ॥ श्रीजिन० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ वली गुरुकुलवासेंवसतांथकां ज्ञानदर्शनचारित्रना गुणते दिनदिनप्रतेंवधे वाचना पृछनादिकेकरी वाचंयमनेके० मुनिराजने वाधे हवेपाछलाबेपदनोअर्थअन्व यकरीकहीयेंछैयें तेज्ञानादिकगुणनी वृद्धीथायतो आहारनोखपकरतांपण दूषणन वाधे इत्यन्वयः एटले ग्यानध्याननी लेहेरमांबेगाथकां कोइकद्व्यानुयोगमां अ त्यंतमग्नथयाछे एवोमां गोचरीयेंनिकल्याथकां कोइकस्थानकें सूक्ष्मदोषदेखीने चिंत वनकरे जेध्याननीलेहेर हजीचित्तमां अंतरवासनायेंछे अनेघणायेरफरवाजइसतो तेले हेरकरीआवशेनहीं एहवुंविचारी कांइकदूषणसहित आहारलीये तोपणतेहनेबाधन करे एटलेकर्मबंधननोहेतुनथाय यतः अहागडाइभुंजंता ॥ अन्नमन्नेणकम्मुणो ॥ उव लित्तेवियाणिज्जा॥अणुवलित्तेतिवापुणो ॥१॥इत्यादिकसुयगडांगसूत्रेअध्ययन २१मां मध्ये कह्योछे तथा गुरुकुलवासवसतां मुणीणोवट्टंतीनाणपमुहेहिं ॥ जइएसणा इदोसस्स ॥ लवमविमन्निजएसुगुणं ॥ १ ॥ इतिनावः तथाअपवादें गाढग्लानादि कनाकार्यें अणसरते गछमांरह्या गुरुआणावर्त्तिने असद्नावेंवर्त्ततानेआतुरदृष्टांते आधाकर्मादिक आहारतेपण निर्दोषजाणवो तथाचागमः संथरणंमिअसुद्धं ॥ दु न्हविगिन्हतांदेतयाणहियं ॥ आउरदिठ्ठंतेणं ॥ तंचेवहीयंअसंथरणे ॥ १ ॥ तद्यथा॥ जाजयमाणस्सनवे ॥ विराहणासुत्तविहिसमग्गस्सः साहोइनिज्जरफला ॥ अजछवि सोहिजुत्तस्सत्ति ॥ २ ॥ उत्तराध्ययने एरीतेदूषणसहितआहारतेपणबाधनकरे॥१४॥

धर्मरतनउपदेशपदादिक ॥ जाणीगुरुआदरवोरे ॥ गछक ह्योतेहनोपरिवारो ॥ तेपणनितअनुंसरवोरे ॥ श्रीजिन०॥ १५ ॥

अर्थ ॥ तथाधर्मरत्न अनेउपदेशपद प्रमुखग्रंथजोइने एग्रंथोमांगुरुकुलवासना अधिकारघणाछे माटेतेमांथीजाणीने गुरुआदरवो वलीगछते कोनेकहीयेंतेकहेछे

तेह्नोपरिवारोके० एह्वासुविह्तिसाधुनो परिवारतेह्नेगछकहीयें यतः गुरुपरिवारोगछो इत्यादिकपंचवस्तुवचनात् माटेतेगछपण निरंतरअंगीकारकरवो अनुसरवो इति यतः गुरुगुणजुत्तोगछो ॥ संविगासाहुसमवाउ ॥ मुरकमग्गछिणांसोय ॥ अणुसरियवोपयत्तेण ॥ इत्यादि ॥ १५ ॥

सारणवारणप्रमुखलहीने ॥ मुक्तिमारगआराधेरे ॥ सुजवीरय
तिहांसुविहितकिरिया ॥ देखादेखेंवाधेरे ॥ श्रीजिन० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ वलीसारणके० विसर्युंहोयतेसंजारीआपे अनेवारणके० पापकरणीकरतानेवारे तथाप्रमुखशब्देंकरीचोयणा प्रतिचोयणापणलेवी तेपणजेगछमांरहे तेहनेथाय पछेतेसारणादिक लहीनेके० पामीने मुक्तिमारगआराधेके० मोक्षमार्गसाधे यतः गुरुपरिवारोगछो ॥ तछवसंताणनिज्जराविउला ॥ विणयाउतहासारण॥ माइहिंनदोसपडिपत्ति ॥१॥ इतिपंचवस्तुके तथाश्रीधर्मरत्नप्रकरणनीवृत्तिमध्येकह्युंछेके सुजवीरयके० जलोवीर्योल्लासबांधे वलीसुविहितकिरियाके० आत्माअर्थिगीतार्थनी क्रियाव्यवहार तेदेखादेखीयें वधे एटले साधुउनासमूह्ने क्रियातपजपादिक करतां देखीने पोतानेपण करवानुंमनथाय तेह्थीवधारोथाय ॥ १६ ॥

जलधीतणोसंखोजअसहता ॥ जेमनीकलतामीनोरे ॥ गछसार
रणादिकअणसहता ॥ तिममुनीदुखियादीनोरे ॥ श्रीजिन० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ जेमजलधीके० समुद्रनो संखोजके०कल्लोलप्रमुखनीजे क्षोजना तेह्ने असहताके० जेवारेंसहीसकेनही तेवारें जेम मीनके० मछहोयतेसमुद्रमांथीबाहारनीकले तोदुःखीथाय तेमगछमांरहेताथका गुरुआदिकजेसारणादिककरे तेसहनकरवीपडे अनेजेवारें नसह्वाय तेवारेंगछथीबाहारनिकले तोतेसमुद्रमांथीनिकलेला मछनीपरेदुःखीथाय दीनथाय केमके गत्यंतरेदुर्गतिर्येंजाय माटेदुःखीदीनजथाय इतिजावः यतः जह्जलनिहिकल्लोल ॥ खोजमसहंतायबाहिरंपत्ता ॥ मीणाअसुणियमूणीणो ॥ सारणपमुहाइअसहंता ॥ १ ॥ इतिआचारांगपंचमाध्ययनेचतुर्थोदेशकवृत्तौ यथा ॥ जह्सायरंमिमीणा ॥ संखोहंसायरस्सअसहंता ॥ णितितउंसुहकामी ॥ णिगायमित्ताविणस्संति ॥ १ ॥ एवंगछसमुद्दे ॥ सारणवीइहाचोइयासंता॥ णिंतितउंसुहका ॥मीणावजहाविणस्संति ॥१॥ इत्यादिकउघनिर्युक्तिवचनात् ॥ १७॥

काकनर्मदातटजेममूकी ॥ मृगतृष्णाजलेंजातारे ॥ दुखपा
म्यातेमगछतजीने ॥ आपमतिमुनीथातारे ॥ श्रीजिन० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ वलीदृष्टांतकेहेछे जेमनमेदानदीना किनाराऊपररहेनारा काकपक्षीजेका गडा ते तटके० नदीनोकांठोमूकीने तेनदीनाकांठाथीदूरपाणीजेवीजाकडदेखाय पण पाणीहोयनही तेभ्रांतरूपपाणी तेनेमृगतृस्राजलकहीयें तेजलनीभ्रांतियेंदोडता एवाजे कागडा तेजेमदुःखपामे तेवीरीते सुविहितना समुदायनोगछतजीने जे आपमतिके० स्वेछाचारीमुनी थवाजाय तेकागडानीपेठेदुःखपामे ॥ १८ ॥

पालविनाजेमपाणीनरहे ॥ जीवविनाजेमकायारे ॥ गीता
रथविणतेममुनीनरहे ॥ जूठकष्टनीमायारे ॥ श्रीजिन० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ माटे जेम सरोवरादिकनुंपाणी ते पाल बांध्याविना रहेनही तथा जेम जीवविना काया नरहे तेम जेमुनिराजछे तेगीतार्थविना रहेनही गीयछस्सविहारो॥ बीउंगीयछमीसिउनणीउ॥इत्यादिवचनात् माटेजे गीतार्थविना जेटला कष्टकरे ते सर्व अज्ञानमां नले अने जेअज्ञान तेमिथ्यात्वछे ते मायाके० कपटविना होयनही ॥१९॥

अंधप्रतेंजेमनिर्मललोचन ॥ मारगमांलेईजायरे ॥ तेमगीता
रथमूरखमुनिने ॥ दृढआलंबनथायरे ॥ श्रीजिन० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ वलीदृष्टांत कहेछे जेम आंधलाने निर्मलआंखनो धणी ते कांटा प्रमु खेंरहित एहवा उत्तममार्गे लेइजइने स्थानकें पोहोचाडे तेम गीतार्थ जेछे ते जो कदाचित् मूर्खमुनि होयतो तेने पण दृढके० जबरदस्तआधारभूतथायछे॥ २० ॥

समभाषीगीतारथनाणी ॥ आगममांहेंलहियेंरे॥ आतमअरथी
शुभमतिसज्जन ॥ कहोतेविणकेमरहियेंरे ॥ श्रीजिन० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ वली समभाषीके० स्याद्वादवचनना भाषीहोय अथवा समभाषीके० ग रीबने तथा मातबरने रागद्वेषरहितपणे देशना आपे तथा गीतार्थ होय नाणीके० सम्यग्ज्ञानीहोय आगममांहेथी एहवा गीतार्थ लहियेंके० पामीयेंछयें वली आतम अरथीके० पोतानुं आत्मस्वरूप साधवाने उजमालथया तथा शुभमतिके० भलीम तिना धणी एटले जेमांकुमति कदाग्रहहोयनही वली सज्जनके० उत्तमगुणवंत भलीसीखामणना आपनारा एहवा गीतार्थविना इहां सर्वपदसंबोधने बोलावीयें हेआत्मार्थि हेशुभमति हेसज्जन तमेकहोके ते एहवा गुरुगीतार्थ पुरुषविनाकहो केमरहीयेंके० सीरीतेरहीशकीयें ॥ २१ ॥

लोचनआलंबनजिनशासन ॥ गीतारथछेमेढीरे ॥ तेविणमु
नीचढतीसंयमनी ॥ आरोहेकेमसेढीरे ॥ श्रीजिन० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ वली गीतार्थ तेग्यानरूप लोचनना आपनारा माटेगीतार्थने जिनशा सननेविषे लोचन कहियें तथा दुर्गतिनेविषे पडताप्राणीने आधारथाय माटेगीता र्थने जिनशासननेविषे आलंबनकहीयें वली गीतार्थते मेढीबराबरछे एटले जे खेत खलाना विचमां स्तंजरोपीनेअन्नउपरें फेरवेछे तेने मेढीकहीयें उपलक्षणथी स्तंज नूत कहीयें जेहने आधारें घरमालप्रमुख रहेछे तथा यानकहीये जेहने आधारे म हाअटवीनो विहामणोमार्ग होय तोपणपारपामीयें यतः मेढीआलंबणंखचं॥ दिठि जाणंसुउत्तमं ॥ गीयछंगुरुगुणाइणं ॥ सम्मंजाणसुगोयमा ॥ १ ॥ माटेते गीतार्थवि ना मुनिराजते संयमनी सेढीके० श्रेणी केम आरोहे एटलेकेमचढे अने उत्तरो त्तर शुनाध्यवसायें केमवधे एसंयमश्रेणीनो अधिकारते संयमश्रेणीनुंस्तवन अमा रागुरुश्रीउत्तमविजयजीकृतछे तेथी विस्तारेंजाणवुं तथापंचसंग्रहथीजाणवुं ॥११॥

गीतारथनेंमारगपूछी॥ छांमीजेंउन्मादोरे ॥ पालेकिरिया
तेतुजनक्ति ॥ पामेजगजशवादोरे ॥ श्रीजिन० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ तेगीतार्थनें मार्ग पूछीने उन्माद जेस्वेछाचारीनुं मदोन्मत्तपणुं तेछांमवुं एरीतेतमारीआणासहितचाले तेजतमारीनक्तिजाणवी तेतमारीनक्तिकरीने जे क्रिया पाले एटले एनावके तमारीएआज्ञाछे जेज्ञानसहित क्रियापाले तेप्राणीजगतनेविषे जशवादपामे ॥ १२ ॥

ढालछठोरासुडानीदेशीअथवाहितसिक्षाछत्रीशीनीएदेशी

प्रथमज्ञाननेपछेंअहिंसा ॥ दसवैकालिकसाखिरे॥ ज्ञानवंतते
कारणनजियें ॥ तुजआणामनराखिरे ॥ साहेबसुणयोरे ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवे आगला ढालमां ज्ञानसहितक्रियाकरता संयमश्रेणीआरोहे एमक ह्युं तेमांज्ञानपूर्वकक्रियाकरे तोलेखेछे माटे आढालमांज्ञानवर्णवेछे जेप्रथमज्ञान हो यतो पछे अहिंसाके० दयापलीशकेछे एमश्रीदशवैकालिकसूत्रमां कह्युंछे यतः पढ मंनाणंतउदया एवंचिठइसव्वसंजए तेकारणेज्ञानवंतने नजीयेंके० सेवीयें पणहेपर मेश्वर तमारीआज्ञा ते मनराखिके० चित्तमांराखीने एटलेएनावजे ज्ञानवंतने नजी यें पण साध्यमां एमराखीयेंजे ज्ञानक्रियाभ्यांमोक्षः नाणकिरियाहिंमुरकोइतिनाष्यवच

नात् माटे स्याद्वादद्रष्टीयें ज्ञाननीसेवाकरीयें देसादेवसुणयोके० सांजल्यानी पेरेसां जलजो अन्यथा परमेश्वर केवलज्ञानी तेतो सर्वना जाव देखीरह्याछे तेह्नेशुंसांज लवुंछे पणजक्तिवंत प्राणीउपचारेकहेछे के देसादेव सांजलजो ॥ १ ॥

द्रव्यखेत्रनेकालनजाणे ॥ जावपुरुषपमिसेवरे ॥ नविउ
त्सर्गलहेअपवादह ॥ अगीतारथनितमेवरे ॥ सा०॥ २ ॥

अर्थ ॥ वलीजे अगीतार्थछे ते १ द्रव्यनजाणे २ क्षेत्र नजाणे ३ कालनजाणे अने ४ जावपण नजाणे तथा ५ योग्यछेके अयोग्यछे एह्वा पुरुषने पण नजाणे तथा पडिसेवके० ६ पापनीसेवाने नजाणे जे एणेस्ववशें पापकर्युं के अथवा एणे प रवशें पापकर्युं तेअगीतार्थी नजाणे वली ७ छतिशक्तियें जेमसिद्धांतमां मार्गकह्यो तेमज करवुं तेह्नेउत्सर्गमार्गकहीयें तेपण नजाणे ८ तथारोगादिक कारणे अल्प सेवे ते अपवादमार्गनेपण नजाणे एवातो नितमेवके० निरंतरपणे जेअगीतार्थछे तेनजाणे यतः उपदेशमालायां ॥ दव्वंखित्तंकालं ॥ जावंपुरीसपडिसेवणाउय ॥ नवि जाणईअगीउ ॥ उस्सग्गयवाइयंचेव ॥ १ ॥ २ ॥ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁

सचित्तअचित्तमिश्रनवीजाणे ॥ कल्पअकल्पविचाररे ॥ योग्य
नजाणेनिजनिजठामें ॥ द्रव्ययथास्थितसाररे ॥ सा० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ ह्वेप्रथमगाथाविस्तारतां एहिज द्वारमांप्रथमद्रव्य द्वारकहेछे तेमांद्रव्यथी अगीतार्थसुं नजाणे तेकहेछे सचित्तवस्तु तथा अचित्तवस्तु तथामिश्रवस्तुने जाणे नही वलीकल्पनीखबरनपडे जे आवस्तुकल्पेछे वानथीकल्पति अकल्पछे तेविचार अ गीतार्थी नजाणे वलीयोग्यतानी खबरनपडे निजनिजठामेके० पोतपोताने स्थान कें योग्यता नजाणे जे आबालने योग्य के ग्लाननेयोग्य इत्यादिक नजाणे एरीतें यथास्थितके० जेद्रव्य जेमहोयतेवीजरीते तेह्नी अगीतार्थनेखबरपडेनही यथा स्थितद्रव्य केवुंछे सारके० प्रधानछे यडुक्तं ॥ जहठियदव्वंनयाणइ ॥ सचित्ताचित्त मीसगंचेव ॥ कप्पाकप्पंचतहा ॥ जोग्गंवाजस्सजंहोई ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां २

खेत्रनजाणेतेहयथास्थित ॥ जनपदअध्वविशेषरे ॥ सुभि
क्षदुर्भिक्षकल्पनजाणे ॥ कालविचारअशेषरे ॥ सा०॥४॥

अर्थ ॥ ह्वेक्षेत्रद्वार कहेछेअगीतार्थी यथास्थितके०जेवुंक्षेत्रहोय तेह्वुंक्षेत्रनस मजे के आजडकक्षेत्रछे के अनडकछे इति तथा जनपदके० लोकेव्याप्त देशनेविषे

विहारकरतां आवीविधियें करवुं अथवा मगधादिकदेशें आवीविधियेंकरवुं इत्यादिक नजाणे वलीअध्वविशेषके०दूरदेसेंअटवीप्रमुखें आवीरीते विहारकरवुं इत्यादिक वा तो अगीतार्थ नजाणे हवेकालद्वारकहेछे जे सुभिक्षमां कल्पनजाणे जे सुभिक्षमां आरीतेविचरवुं वलीदुर्भिक्षमां पणकल्पके०योग्यनजाणे जेदुर्भिक्षमांआवीवस्तु होय तोज लीजीयें इत्यादिक वातो कालना विचारनीते अशेषके० समस्तप्रकारेंअगी तार्थनजाणेइतिभावः यतः जहठियेखित्तंनजाणई ॥अद्धाणेजणवएयजंभणीयं॥ का लंपियनविजाणइ ॥ सुभिक्खदुभिक्खजंकप्पं ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां ॥ ४ ॥

भावहिठगिलाणनजाणे ॥ गाढअगाढहकल्पेरे ॥ खमतो अखमतोजननलहे ॥ वस्तुअवस्तुअनल्परे ॥ सा०॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेभावद्वारकहेछे जे भावके० भावना विचारनेविषे हिठके० निरोगीने तथा गिलाणके० रोगाक्रांतने नजाणे एटले निरोगीने आदेवुं तथा रोगीने आव स्तुदेवी तेवातो अगीतार्थनजाणे अने गाढकल्पके० आकरेकारणेंआरीतें करवुं त था अगाढकल्पके० स्वभावसेहेजरीतेंतो आप्रमाणे वर्त्तवुं एअगीतार्थनजाणे हवेपु रुषद्वार केहेछे खमतोके० आपुरुषसामर्थ्यवानशरीरें कठोरछेमाटेखमीसकशे तथा अखमतोके० आपुरुषनुं सुकुमारशरीरछे ते नहीखमीशके एहवा जनके० प्राणीने ते अगीतार्थ ओलखेनही वली वस्तुके० आचार्यादिक अवस्तुके० सामान्यसाधुने ते अगीतार्थ नओलखे जेपदस्थनेआमघटे तथा सामान्यनेआमघटे माटे अनल्पके० इत्यादिकबहुप्रकार तेनजाणे यतः भावेहिठगिलाणं ॥ नविजाणइगाढगाढकप्पंच ॥ सहुअसहुपुरिसवत्थु ॥ वत्थुमवत्थुचनविजाणइ ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां ॥ ५ ॥

जेआकुट्टीप्रमादेंदर्पें ॥ पडिसेवावलिकल्पेरे ॥ नविजाणे तेतासयथास्थित ॥ पायेछित्तविकल्पेरे ॥ सा० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवे प्रतिसेवानामेंद्वार कहेछे जे निषेधआचरण तेहने प्रतिसेवा कही यें तेहना चारप्रकारछे तेमां प्रथम आकुट्टीके० जाणीने पापसेववुं तेपण कारण विना सेववुं बीजो कंदर्प्पादिकने वशथका जेपापसेवे तेप्रमाद कहियें त्रीजो धावनव लानादिके करीजे पापलागुं तेदर्प्पकहीयें चोथो आगमोक्तकारणेकरीनिषेधाचरण कखुं तेकल्पकहीयें एचारेभेद पडिसेवाना जाणवा ॥ यतः पडिसेवणाचउहा ॥ आ उट्टिपमायदप्पकप्पेसु ॥ नविजाणइअग्गिउ ॥ पछित्तंचेवजंतछ ॥ १ ॥ इत्युपदेशमा

लायांतह्नरूणगाथा आउट्टिआउविञ्चा ॥ दप्पोपुणहोइवग्गणाईउं ॥ कंदप्पाइयप माउं ॥ कप्पोपुणकारणेजणिउं ॥ १ इत्याचारांगवृत्तौ एणाथानोअर्थकहेले आउट्टि तेजाणीनेपापकरवुं दर्प्पतेधावनवलानादिक सोत्कर्षपणेनिपजे कंदर्प्पते प्रमादवशें जाणवुं अने जे ज्ञानादिकने अवलंबनेहेतेआचरवुंतेकारणे जाणवुं एचारप्रकारनुं जेपाप तेपापनुं यथास्थितके० जेह्ने जेवुंघटे तेवुं प्रायश्चित्तनुं विकल्प जे आप्रा यश्चित्तवालाने आवुं तपदेवुं इत्यादिक वातोते अगीतार्थ नजाणे ॥ ६ ॥

नयणरहितजेमअनिपुणदेशें ॥ पंथनछजेमसत्थरे ॥ जा

णेढुंगमेपोचावुं ॥ पणनहीतेहसमत्थरे ॥ सा० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जेम कोइकनयणरहितके० अंधपुरुषहोय अनेवली अनिपुणदेशेंके० मार्गनोअजाणछे ते अंधपुरुष एवामार्गनेविषे पंथनछजेमसत्नके० जेममार्गमां कोइकसाथनष्टएटलेजूलोपडचोहोय ते साथने आंधलोजाणे जेढुं ठेकाणे पोचाडुं पणपोचाडवाने समर्थनथाय यतः जहनामकोपुरिसो ॥ नयणविहुणोअदेसकुलोय॥ कंतराभविन्नीमे ॥ नग्गपणठसत्नस्स ॥ १ ॥ इछइयदेसियत्तं ॥ किंसोउसम्मछुदेसि यतस्स ॥ डुग्गईययाणंतो ॥ नयणविहुणोकहंदेसे ॥ २ ॥ ॥ ७ ॥

अगीतार्थतेमजाणेगरवें ॥ ढुंचलवुंसविगछरे ॥ पणतस

पासेगुणगणग्रासे ॥ होईगलागलमछरे ॥ सा० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ तेपूर्वोक्तअंधपुरुपनीरीतें अगीतार्थ पण तेमगर्वें अहंकारेकरी एम जा णेजे ढुं वधोगछचलावुंतु पण तेनीपासे रेहेताथकां गुणगणके० गुणनाजेसमूहते ग्रासेके० घसाइजाय एटले अगीतार्थने संगें गुणनो नाशथाय यतः एवमगीयछोवि हु ॥ जिणवयपईवचरकुपरिहीणो॥दव्वाइअयाणंतो ॥ उस्सग्गववाइयंचेव ॥१ ॥ कह सोजयउअगीउं ॥ कहवाकुणाउअगीयनिस्साए ॥ कहवाकरेउगछं ॥ सबालवुढाउ लंसोउ ॥ २ ॥ इत्युपदेशमालायां अगीतार्थने पासे वसतां मछगलागलथायके० मो होटामछ नानामछनेगलीजाय एम धींगामस्तिनी वातथाय पणमार्गनीरीतनरहे॥८॥

पछित्तेअतिमात्रदिएजे ॥ अपछित्तेपछित्तरे ॥ आसाय

णतससूत्रेबोली ॥ आसायणमिछत्तरे ॥ सा० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ वली अगीतार्थहोयतेवगरसमजणे पछित्तेके० प्रायश्चित्त जेटलूं आवेते करतां उलटो अतिमात्रके० अधिकुं दिएके० आपे अने जेहने अपछित्तेके० प्राय

श्चित्त नआवतुंहोय तेहने पच्छित्तके० प्रायश्चित्तआपे एटलेथोडाप्रायश्चित्तवालाने घणुंआपे अने मूलगुजेने प्रायश्चित्तलागतुंजनहोय तेने केहेशे जे तमने प्रायश्चित्त लागुं इत्यादिक असमंजसकरे एमकरनारने सूत्रनेविषे आसायणबोलीके० जिनाज्ञानीविराधनाकरी माटे विराधक कह्योछे अनेआसायणके० जिनाज्ञानीनीविराधना तेहिज मिछत्तके० मिथ्यात्व जाणवुं तथा तेमिथ्यात्वनिमित्तेज संसार वधारे यतः सुत्तेयइमंजणियं ॥ अपछित्तेयदेइपछित्तं ॥ पछितेअइमत्तं ॥ आसायणतस्समहइउ ॥ १ ॥ आसाएमिछत्तं ॥ आसायणवज्जणायसम्मत्तं ॥ आसायणानिमित्तं ॥ कुवईदीहंचसंसारं ॥ २ ॥ इत्युपदेशमालायां ॥ ए ॥

तवसीअबहुश्रुतविचरंतो ॥ करीदोषनीश्रेणिरे ॥ नवि
जाणेतेकारणतेहने ॥ केमवाधेगुणश्रेणिरे ॥ सा०॥१०॥

अर्थ ॥ तवसीके० तपश्चर्याकरतो तथा अबहुश्रुतके० अगीतार्थथको विचरंतो के० विहारकरतोथको करीदोषनीश्रेणिके० अनेकदोषनी श्रेणीनेकरतो एटले अनेक अपराधपद करतोथको पण नविजाणेके० नजाणे एटले पोताना दोषनी पोताने खबर नपडे तेकारणके० ते हेतुयें तेअगीतार्थ कष्ट करताने गुण श्रेणीनीवृद्धि केमवधे अर्थातनवधे तेटलीज रहे यदुक्तं अबहुस्सुउतवस्सी॥विहरिउकामोअ जाणिउणपहं॥अवराहपयसयाइ॥काऊणविजोनयाणेइ॥१॥ देसअराइयसो॥हिवयाइयारेवजोनयाणेइ ॥ अविसुद्धस्सनवढ्ढई ॥ गुणसेढीतत्तिआठाइ ॥१॥ इत्युपदेशमालायां ॥१०॥

मार्गमात्रजाणेजेमपंथी ॥ अलहीतासविसेसरे ॥ लिंगा
चारमात्रतेजाणे ॥ पामेमूढकलेशरे ॥ सा० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ जेम कोइक पंथीहोय तेहने कोइमाह्योपुरुष मार्ग बतावे तोपण विशेष मार्गनी तेने खबरनपडे केमके पोतेमाह्योनथी माटे मावोजमणो मार्गजेमन जाणे एकसामान्यप्रकारें मार्गमात्रजाणे तासके० तेमार्गनीमाबीजमणी बाजुं ते अलहीके० अजाणतो क्लेशपामे तेमज लिंगके० साधुवेष ने आचारके० साधुनी क्रिया ते लिंगाचारमात्र जाणे एटलेमात्र एकसूत्रनाज अक्षरमान्यकरी क्रियादिक करतो पण मार्गनेअजाणतो एहवोजे मूढके० मूर्ख अगीतार्थ तेक्लेशनेपामे संसार वधारे यतः जहदायंमिविपहे ॥ तस्सविसेसेपहस्सयाणंतो ॥ पहिउकिलिस्सइच्चियतह ॥ लिंगायारसुअमित्तो ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां ॥ ११ ॥

भेदलह्याविणनानापरिणति ॥ मुनीमननीगतबोधरे ॥ खिण
राताखिणताताथाता ॥ अंतेंउपाईविरोधरे ॥ सा० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ गतबोधके० गयुंछे बोधज्ञान जेथकी एटले मूर्ख जेहोयते मुनीश्वरोना मननी नानापरिणतिके० विचित्रप्रकारनी परिणतीउंना जे भेदके०प्रकार ते लह्या विणके० जाण्याविना एटलेजेमूर्खमुनीउंहोयते बीजामुनीउंनी विचित्रपरिणति अ जाणताथका क्षणेकमां राताथाय एटले अंतःकरणमां क्रोधदीप्तथाय तथा क्षणेकमां ताता थाय एटले बाह्यपणे क्रोधदीप्त थाय एवा मूर्खोने एमथातांथकां अथवाराता के० रागीथाय परस्परें क्रीडाकरे तथा ताताके०तपीजाय कषायमयीथईजाय अने अंतेके० छेवट विरोधने उपाईके० उपजावे एटले तेमूर्ख माहोमांहे वढीमरे॥१२॥

पथ्थरसमपामरआदरतां ॥ मणिसमबुधजिनछंडिरे ॥ भेद
लह्याविणआगमथितिनो ॥ तेपामेंबहुखोभिरे ॥ सा० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ मणिरत्नसमान जेबुधजनके० पंडितलोक तेहने छंडीने पथरसमके० पथ्थरासमानजे पामरके० मूर्खजन तेहनेज आदरतांके० अंगीकारकरे तेप्राणी ते मूर्खपासेरहेताथकां आगमनीजे उत्सर्ग अपवादादिरूप थितिके० मर्यादा तेनो भेदके० प्रकार तेअणलेहताथका तेआदरनारापुरुष घणी खोडीपामे एटलेसंयमरू पशरीर आखुं नरहे जूरखंभितथाय इतिभावः ॥ १३ ॥

ज्ञानभक्तिभांजीअणलहेतां ॥ ज्ञानतणोउपचाररे ॥ आरा
सारेंमारगलोपे ॥ चरणकरणनोसाररे ॥ सा० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एवा जे मूर्खहोयते ज्ञाननी भक्तिनेतो भांजे एटलेखंभितकरे तथा अ णलहेताके० अणआराधता ज्ञानतणोके० ज्ञाननोजे उपचारके० विनय तेनेअण जाणता तेप्राणी आरासारेके०जेपांचमोआरो तेनेअनुसारें मारगलोपेके०भलामार्गने लोपेछे एटले मूर्खनेआदरतां ज्ञानभक्तिने भांजता ज्ञाननो उपचार अणलहेता जे पुरुष होय तेपांचमां आराप्रमाणे चारित्रने पाले कांतो एकलाजउत्सर्ग मार्गे चाले अथवाकालदोषकाढी उत्सर्गमार्गबीलकुल मूकीज आपे पण सारके०प्रधान एवोजे चरणसित्तरि तथा करणसित्तरिनोमार्गतेनेपांचमांआराने अनुसारे तेमूर्ख लोपेछे ए रीतेअमनेभास्यो तेरीते लख्योछे वलीएगाथानो अर्थ पंडितलोकोने सुजेतेखरो॥१४॥

उत्कर्षितेहनेद्येशिक्षा ॥ उदासीनजेसाररे ॥ पुरुषवचन
तेहनेतेबोले ॥ अंगकहेआचाररे ॥ सा० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ वली उत्कर्षिके० उत्कृष्टाचारिक्रियाहोय तथा उदासीनके० बेपरवाइ होय सारके० उत्तमहोय तेवा साधुजो तेउने प्रमादसंकलितादिकदेखी शिक्षाआपे तेवारेंते जे एकाकीगच्छथी निकल्या होय तेपाछो शिक्षा आपनारसाधुने पुरुष वचन के० कठोरवचनकहे जेमुजने सर्व लोकमां केम तिरस्कार कर्यो मेंछुंमाछुंकर्युं छे बीजातो एरीते करेजछे तोधिक्कारपडो माराजीवितने इत्यादिकबोले एमश्रीआचारांगमध्ये कह्युंछे तथाचतत्पाठः वयसावएगेचु ॥ इयाकुप्पंतिमाणवाउ ॥ एयमाणेयनवरेमह ॥ यामोहेणमुज्झइ ॥ १ ॥ इति एमवचनमात्रेंज गच्छनेछांडि एकला रही अकार्य सेवे इतिभावः ॥ १५ ॥

अमसरिखाहोजोतुमेजाणो ॥ नहीतोस्यातुमबोलरे ॥
एमभाषीजात्यादिकदूषण ॥ काढेतेहनिटोलरे ॥ सा० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ पछे ते मूर्खमुनी शिक्षा आपनारने पाछा एवाजवाब आपे के जो अम सरिखा तमेहता तोजाणत एटलेएभावजे अमारे गोचरीपाणीप्रमुख लाववा पडे तेतमनेकरवुं पडतुहोय तो तमेजाणो नहीतो बेग मोटाई करो एटलुज तमारामांछे पणकांइ नलिवारनही जोअमारी पेरेंचालो तोतमेजे अमने शिक्षाआपोते खरी नहीतो तमारा बोलशा एटले तमारुं बोलवुं सर्व फोकटछे एमभाषीके० एम कहीने जात्यादिकना दूषणकाढे एटलेएम कहेजे तमे हीणजातिना उपज्याछो तमारुं कुलकेवुंछे इत्यादिक बोले तेहनिटोलके० तेपुरुषने निटोलजाणवा पण ते सज्जनउत्तमपुरुषमां नगणाय ॥ १६ ॥

पासत्थादिकदूषणकाढी ॥ हिलेज्ञानीतेहरे ॥ यथाछं
दताविणगुरुआणा ॥ नविजाणेनिजरेहरे ॥ सा० ॥ १७ ॥

अर्थ वली ते मूर्खप्राणी शिखामणना आपनारने उलटा पासत्थादिक दूषण काढीने हिलेके० हिलनाकरे एटलेएम कहेजे तममांशा गुणछे तमे पासत्थाउशना छो एम कहीने ज्ञानीके० पंडितगीतार्थनी हिलनाकरे एबेपदनोएकठोअर्थछे एमविणगुरुआणाके० गुरुआज्ञा पाल्याविना यथाछंदताके० आपछंदे आचरणकरवानी एवी जे निजके० पोतानी रेहाके० रेखाछे एटले हीणाआचरणनी मर्यादापोतानी

छे तेनी पोतानेज नजाणेके० खबरनपडे एटले ज्ञानीना अछता दूषण काढे अने पोताना छतादूषणहोय ते ढवेखे इतिभावः ॥ १७ ॥

ज्ञानीथीतेमअलगारहेता ॥ हंसथकीजेमकाकरे ॥ भेदविन
यनाबावनभाख्या ॥ नलहेतसपरिपाकरे ॥ सा० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे ज्ञानीके० जे गीतार्थ गुरुआदिक तेथकीअलगा रेहेताथका के वा देखाय जेमराजहंसथकी कागडो जूदो देखाइरहे तेवोतेसाधु देखाय तथा वि नयना बावनभेद शास्त्रमां कह्याछे तथाहि १ अरिहंत २ सिद्ध ३ नागेंद्रचंद्रादिक तेकुल ४ कोटिकादिक ते गण ५ चतुर्विधसंघ ६ क्रियातेअस्तिवादरूप ७ खंत्यादि कधर्म ८ मत्यादिकज्ञान ए मत्यादिकज्ञानवंत ते ज्ञानी १० आचार्य ११ स्थविर ते सिदातासाधुनेथिरकरे १२ उपाध्याय १३ केटलाकसाधुना समुदायनाअधिप तितेगणी एतेरनोचारचारभेदेविनयकरवो १ अनासतना तेजात्यादिक दूषणकाढी ने हीलनानकरे २ भक्तितेउचितउपचाररूप ३ बहुमानते अंतरप्रीतिप्रतिबंधरूप ४ वर्ण संजवलनाते यशबोलवा एरीतेतेरनेचारेगुणता बावनभेदथाय इतिप्रवचन सारोद्धारे पांसठमेद्धारे एअधिकारजोजो उपलक्षणथी बावनकह्या तेमज ए१ भेद समवायांगे तथा पिस्तालीसभेद तथा दशभेद इत्यादिक अनेकभेद ग्रंथांतरथीजा णवा तेसर्वभेदनुं शीखवुं तथातेरीतेप्रवर्त्तवुं तेने परिपाक कहीयें तेपरिपाकने नल हेके० एकाकी साधुनपामे केमके एकाकीविहारकरनार कोनापासेथीशीखे तथा के नोविनयकरे ॥ इतिभावः ॥ १८ ॥

सर्वउद्यमेंपणतसबहुफल ॥ पडेकष्टअन्नाणरे ॥ सूत्रअ
भिन्नतणेअनुसारें ॥ उपदेशमालावाणिरे ॥ सा० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ सर्वक्रियाअनुष्ठाननोउद्यम तेनोजे बहुफलके० घणुंफल स्वर्गादिक ते पडेकष्टअन्नाणरेके० अज्ञानकष्टमांपडे एटलेनिर्ज्जरानथाय संसारपरित्तनथाय कोनेनथायतेकेहेछे जे अविवृतार्थ विशिष्टव्याख्यानरहित एहवुंजेसूत्र तेहनेअभिन्न सूत्रकहीयें तेअभिन्नसूत्रनेअनुसारें क्रियाप्रमुख अनुष्ठानकरे तेअज्ञानकष्टमांपडे इति योगः जेटीकाप्रमुखविना विशेषप्रतिपत्तिकेम थाय अन्यथाअनुयोगनुंकथन निरर्थकथा य एउपदेशमालानीवाणीछे यदुक्तंतत्सूत्रे अपरिछियसुयणिहसस्स ॥ केवलमभिन्नसु त्तचारित्तस्स ॥ सवुज्जमेणविकयं ॥ अन्नाणतवेबहुपडइ ॥ १ ॥ अर्थ॥अपरिछियके० नथीजाण्यो सुयणिहसस्सके० श्रुतरहस्यजेणे शेपंसुगमं ॥ १९ ॥ ❁ ❁

तेतोऋजुन्नावेएकाकी ॥ चालेतेहनेजुत्तरे ॥ वाम्यकुवा
सनजेअकुवासन ॥ देशाराधकउत्तरे ॥ सा० ॥ २०॥

अर्थ ॥ हवे ज्ञानीथी अलगा किवारे थवुं तथा शा कारणे एकाकी रेहेवुंपडे ते असेवादिकारण घणाछे यतः असिवेउमोयरिए॥ रागन्नएरुकनियउत्तमठेय ॥ फिडियगिलाणेअइसेस ॥ देवयाचेवआयरिए ॥ १ ॥ एमकारणोनाअर्थविस्तारेंलख्याछे पणअहींलखताग्रंथवधे माटेलखतानथी पणएक अशिवकारणलखीयेंछैयें जे साधु बारवर्ष आगलथी ज्ञानादिक अतिशयेंकरी खबरराखे जेअमुकवर्षेअशिवथासे अने कदाचित बारवर्ष अगाउ उपयोगनरह्यो होयतो इग्यारे तेनही तो दशवर्ष अगाउ एमयावत् एकवर्षअगाउपण उपयोगराखे तेपणउपयोगनरह्योहोयतो ज्यारें अशिवजाणेतेवारे साधुथीविहारकरे तेमांकोइक ग्लानसाधु होय तेविहारकरीशकेनही तेवारे एवाकारणेएकला ज्ञानीविना पणहोय तेमांपण १ साधुन्नइक अनेगृहस्थ प्रांत २ तथा साधुप्रांतअनेगृहस्थन्नइक ३ तथासाधुन्नइकअनेगृहस्थपणन्नइक ४ तथासाधुप्रांतअनेगृहस्थपणप्रांत एमचोन्नंगीथाय इत्यादिकसर्वेउघनिर्युक्तिमांविस्तारछे तेजोजो हवेअक्षरार्थलिखेछे जेसाधुऋजुन्नावेके०न्नइकथकां पूर्वोक्तरीते एकाकीचाले के० रह्याहोय तेहने जुत्तके० कोइकपूर्वोक्तरीते एकाकीपणोयुक्तछे पणअन्यथानही इतिन्नावः वलीबेप्रकारनाघटचाल्याछे एकन्नावित बीजोअन्नावित तेमांअन्नाविततेन वाघट अनेन्नाविततनाबेन्नेद एकशुन्नइव्येंन्नावित बीजाअशुन्नइव्येंन्नावित तेवलीएकेक नाबेबेन्नेद एकवाम्य बीजो अवाम्य जेवाम्यतेवासनाटालीशकीयें अने जे अवाम्यते वासनाटालीनशकीयें तेहमांकुवासनावमवायोग्यहोयतेरुडाजाणवा एवाम्यकुवासन एटलापदनोअर्थथयो अनेजेअकुवासनाके० कुवासनायेंवास्याजनथी एवानवा घट के०घडाछे तेपणरुडा एमविशेषावश्यकमांछे अथवा वाम्य अवाम्य घटनीन्नावना नंदिसूत्रनी वृत्तिथी जाणवी उक्तंच पयइन्निन्नन्नावा ॥ कुवासन्णावासियाविनोइछा॥ वक्कुनइणोसुकंवा ॥ तेदेसाराहगाउत्ता ॥ १ ॥ एवादेशाराधकयुक्तहोयते पूर्वोक्तकारणेंएकाकीपणे गीतार्थविनारहे इतिन्नावः ॥ २० ॥

अज्ञानीगुरुतणेनियोगें ॥ अथवाशुन्नपरिणामरे ॥ कम्म
पयमीसांखेसुदृष्टि ॥ कहियेंएहनोठामरे ॥ सा० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ वली अज्ञानी अगीतार्थेने गुरुतणेनियोगें आज्ञा परवशें थकां पण ऋजुमार्गेवर्त्ते छे अथवा शुन्नपरिणामवंतछे गुणनो रुचीवंतछे तो कम्मपयडीनीसांखे

तेने सुद्दष्टीवंत कहियें एनो स्थानक सम्यक् दृष्टीगुणठाणो जाणवो ॥ २१ ॥ एगाथानुं अर्थ ज्ञानविमलसूरिना करेलाटबा उपरथीलिख्युंछे ॥ २१ ॥

जेतोहठथीगुरुनेछांमि ॥ नग्नचरणपरिणामरे सर्वउद्य मेंपिणतसनिश्चय ॥ कांइनआवेठामरे ॥ सा० ॥ २२॥

अर्थ ॥ जेतोके० जेवली नग्नचरणपरिणामके० जेहना चारित्रना परिणाम नां गाछे एहवोथको हठकदाग्रहथकी गुरुने छांमीने सर्वप्रकारें निन्हवादिकनीपरें उद्यमें के० कष्टउद्यमकरेछे पण तसके० तेना कष्टप्रमुखसर्व निश्चयकरीने कोइनआवेठामके० कांइलेखे नलागे यतः आणाएतवो आणाइ ॥ संजमोतह्यघणमाणाए ॥ आणार हिउधम्मो ॥ पलालपुलुव्वपडिहाइ ॥ १ ॥ इतिसंबोधसित्तरीमध्येकह्योछे ॥ २२ ॥

आणारुचीविणचरणनिषेधें ॥ पंचाशकेंहरिभद्दरे ॥ व्यव हारेंतोथोडुंलेखे ॥ जेहसक्कारेंसद्दरे ॥ सा० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ जेने परमेश्वरनी आज्ञानीज रुचीछे तेतोचारित्रनेयोग्यछे पण एवीआज्ञा रुचीविना चरणनिषेधेंके० चारित्रनीनाकहीछे शामाटे जे आज्ञारुचीनथी तोबीजोक. ष्टअनुष्ठानकोनी आज्ञायेंकरेछे यतः आणारुइस्सचरणं॥तक्षंगेजाणकिंनभग्गंति॥ आ णंचअइक्कंतो ॥ कस्साएसाकुणइसेसं ॥१॥ इतिते जेआज्ञासहितकरेछे तेचारित्र अने आज्ञाविना पंचाशकनेविषे हरिभद्रसूरिचारित्रने निषेधेछे व्यवहारेंतोके० शुद्धसमाचा रीसहीत व्यवहारपालेतो पोतानी शक्तिप्रमाणें थोडुंकरे तोपण लेखामांछे एटले. आज्ञासहित थोडुंकरे तेलेखेछेशामाटे जेथोडुंपणअनुष्ठानते सक्कारेंके० सत्यकरे अ ने सद्दके० शब्दते आगमकहियें केमके चारप्रमाण कह्यांछे तेमां आगमप्रमाणने शब्दप्रमाणकरी बोलाव्युंछे माटे आगम सत्कारेतोथोडो व्यवहार पण प्रमाणछे अ नेबीजुंघणुंकष्ट तेनिष्फलछे ॥ २३ ॥

शिष्यकेहेजोगुरुअज्ञानी ॥ भजतांगुणनिधिजाणीरे ॥ जोसु वासनातोकिमत्यजतां ॥ तेनेअवगुणजाणीरे ॥ सा० ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ हवेइहांशिष्यकहेछे के जोगुरुअज्ञानीछे तोपणतेहने भजतांके० सेव तांथकागुणनिधिजाणवो जोसुवासनाछे तोकेवाप्रकारे तेहने अवगुणीजाणीनेत्य जीयें ॥ २४ ॥ एगाथानोअर्थ ज्ञानविमलसूरिना टबामांथीलख्योछे

गुरुबोलेशुन्नवासनकहियें ॥ पन्नवणिज्जसुन्नावरे ॥ तेआ
यत्तपणेंछेआयें ॥ जशमनेन्नड्कन्नावरे ॥ सा० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ गुरु कहे हे शिष्य जे शुन्नवासना ते पन्नवणिज्ज स्वन्नावछे एटले जे स मजाव्योसमजे एवो जेनो स्वन्नावछे तो एवोजेहोय तेतो आयेंके० प्रथम गुरुने आयत्त पणेके० वशवर्तियें होय वली जशमनेके० जेहना मननेविषे नड्कन्नावछे ते शिष्य आज्ञारुची जाणीयें ॥ १५ ॥ एगाथानोअर्थ ज्ञानविमलसूरिनाटबाऊपरथी लख्युंछे

सूधुंमानीसूधुंयातां ॥ चउन्नंगीआचाररे ॥ गुरुकहणेंते
हमांफलजाणी ॥ लहीयेंसुजशअपाररे ॥ सा० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ एक सूधुंमाने अने सूधुंकरे बीजो सूधुंमाने अने असूधुंकरे त्रीजो अ सूधुंमाने अने असूधुंकरे चोथो असूधुंमाने अने सूधुंकरे इत्यादिक शब्दें चउन्नंगी आचारांगादिक सूत्रमां कह्युंछे तेमांअशुद्धन्नावेन्नांगा त्याजछे अने शुद्धन्नावेन्नांगा ते ग्राह्यछे ते न्नांगामा फलहोय एम जाणीने गुरुसेवामां रहीयें तो अपारके० घणो सुजश लहीयें ॥ १५ ॥ एगाथानो अर्थ ज्ञानविमलसूरिनाटबाऊपरथीलख्युंछे ॥

ढालसातमीराजगीतानीदेशीअथवासुरतिमहिनानी

कोइकहेगुरुगछगीतारथसारथशुद्ध ॥ मानुपणनविदि
सेजोतांकोईविबुद्ध ॥ निपुणसहायविनाकह्योसूत्रेंएक
विहार ॥ तेहथीएकाकीरहेतांनहीदोषलगार ॥ १ ॥

अर्थ ॥ पूर्वलाढालमां गीतार्थ वर्णव्या हवे एवा गीतार्थ गुरुपाशे वसवुं तेआढा लमांकहेछे कोइक आगमना रहस्यने अजाणतोथको आगमनोशरणकरी बोलेछे जे गुरुके० गुरुआदिक गछके० सुविहितनोसमुदाय वली गीतार्थनो सारथके० स मुदाय संघसार्थौतुदेहिनां इतिसामान्यकांडवचनात् एवा शुद्धके० पवित्र ते गुरुगछ गीतार्थ सर्वने मानुके० अंगीकारकरुंबु पण ते जोतांथका कोइविबुद्धके० कोइमा ह्यापंडित नविदिसेके०देखतानथी अमारी नजरमां कोइआवतानथी निपुणसहाय के० माह्यानीसखाइनमले तोतेविना सूत्रेंके० उत्तराध्ययनसूत्रनेविषे कह्योछे जे ए कविहारके० एकलाविहारकरीयें उक्तंचकाव्ये ॥ नवालनिज्जानिउणंसहायं ॥ गुणा हियंवागुणउसमंवा ॥ इक्कोविपावाइविवज्जयंतो ॥ विहरिज्जकामेसुअसज्जमाणो ॥ १ एम तेसूत्रमां एकाकीविहारनी आज्ञाछे माटे एकाकीरहेताथकाजगारदोषनथी॥१॥

अणदेखंताआपमांतेसविगुणनोयोग ॥ किमजाणेपरमां
व्रतगुणनोमूलवियोग ॥ छेददोषतांईनवीकह्याप्रवचनेमु
निदुःशील ॥ दोषलवेंपणथिरपरिणामीबकुसकुशील ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवे तेने उत्तर आपेछे जे एमकहेछे तेप्राणी आपमांके० पोतामांसर्वे गुणनो योगके० संयोगने अणदेखतोथको एटले एनावजे पोते सर्वेगुणीतो थयो नथी तोपोतेदोषवंतथको केवीरीते परमांके० बीजामां व्रतगुणनोमूलवियोगके० व्रतना गुणमूलथी नथी एमशीरीतेंजाणें केमके गुरुआदिकमांतो कांइक गुण हशे ज तोदोषनोलेश देखीने गुरुने मूकाय नही गाथा ॥ इयनावियपरिमह्या ॥ मश ह्यानियगुरुनमुंचंति ॥ सव्वगुणसंपउगं ॥ अप्पाणंमिविअपिछंता ॥ १ ॥ इतिधर्मरत्न प्रकरणे तथा छेददोषतांइके० दसप्रकारना प्रायश्चित्तमां सातमो छेददोषलागे तिहां लगें प्रवचनेके० सिद्धांतनेविषे मुनीने दुःशीलके० कुशीलिया हीणानथीकह्या यतः छेयस्सजावदाणं ॥ तायंमेगंपिनोअइक्कमइ ॥ एगंअइक्कमंतो ॥ अइक्कमेपंचमूलेणं ॥ १ इतिवचनात् अने थोडो दोष देखीने गुरुने नही आदरेतो सर्वनो त्यागकरवो पड शे तेकहेछे जे पांचप्रकारना निग्रंथ अने चउदप्रकारनी अभ्यंतरगंठी तथा नवप्र कारनी बाह्यगंठी तेथी मूकाणा ते निग्रंथ कहीयें यतः गंछोमिछत्ताई ॥ घणाईउअं तरोयववओय ॥ दुविहाउतउजे ॥ निग्गंछंतितेहुंतिनिग्गंथा ॥ १ ॥ मिछत्तंवेयतियं हा साइछक्कयंचनायव्वं ॥ कोहाईणचउक्कं ॥ चउदसअभितरागंथी ॥ २ ॥ धणधन्नखित्तकुवयं ॥ वछु दुपय कणय रूप चउचरणा ॥ नवबाहिरयागंथी एवंतेहुंतिपुणपंच ॥ ३ ॥ सुगमं नवरं चउचरणाके० चौपदइति १ पुलाग २ बकुस ३ कुशील ४ निग्रंथ ५ सनात क एनालक्षण जगवतिसूत्रना शतक २५ में उद्देशेछेजोजो एपांच कह्या तेमां १ पुलाग २ निग्रंथ ३ सनातक एत्रणतो प्रतिसेवारहित जाणवा अने बकुस तथा कुशील ए बेहुने प्रतिसेवाछे गाथा ॥ मूलुत्तरगुणविषया ॥ पडिसेवासेवएकुशिलोय ॥ उत्तरगुणेसुबहुसो ॥ सेसापडिसेवणारहिया ॥ ४ तेमांपणनिग्रंथ तथा सनातकतो श्रेणीविछेदगइ तेमांगया तथा पुलागपणलब्धिविछेदगइ तेमाटे एत्रण जंबुस्वामी साथे विछेदगयां तेहेतुयें बकुस तथा कुशील एबेहुथी तीर्थ चालेछे यतः निग्गंथ सिणायाणं ॥ पुलागसहियाणतिएहवुछेउ ॥ समणाबहुसकुशीला जातिछंतावहो हिंति ॥ ५ जेमाटेते छगसातमां गुणगणावंतहोय ते अंतरमुहूर्त्त अवश्यपराव र्त्तथाय तेवारे छठेगुणगणेआवे तिहांअवश्य प्रमत्तदोषनो लवमात्र देखीने गुरुनो

त्याग केमथाय अनेते त्यागकरीशतो जगतमां आजनाकालेंनिर्दोष कोइ नहीलाने तेमाटे लवमात्र दोषलागते पण बकुस तथाकुशील एबेहु जातिनामुनी तेथिरपरिणामी एटलेतेह्ना परिणाम अतिउन्मार्गे नथीचालता अथवा थिरपरिणामीके० एवेमुनी थिरपरिणामेछे एटले पंचमआरानाछेमालगे एहिजछे माटे नवंदाए इतिजावः एह्नोविस्तार धर्मरत्नग्रंथनीवृत्तिथीजाणवो ॥ २ ॥

ज्ञानादिकगुणपणगुरुवादिकमांहेजोय ॥ सर्वप्रकारें
निर्गुणनविआदरवोहोय ॥ तेछंमेगीतारथजेजाणेवि
धिसर्व ॥ ग्लानौषधदृष्टांतेमूढधरेमनगर्व ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे ज्ञानादिकके० ज्ञानदर्शनचारित्रमांहेलोह्रकोइ उत्कृष्टगुण पणगुरु आदिकमां जोइयें पण सर्वप्रकारेंके० सर्वथानिर्गुणहोयतो न आदरीयें माटेजेगीतार्थहोय तथा जे प्राणी उत्सर्गअपवादप्रमुखनी सर्वविधि जाणता होयते छंमेके० गछनेपण निर्गुण जाणीने छंमे तेउपरदृष्टांत केहेछे ग्लानौषधके०जेमरोगीनेऔषध तेजिहांलगें रोग तिहांलगें औषध तेमजिहांलगे अगीतार्थ तिहांलगें औषधसदृशगछ अनेज्यारेनिरोगीसदृशगीतार्थ थयो तेवारें औषधरूपगछनुं कामनही तेमाटे मूढके० जेमूर्खछे तेअहंकारमनमांधरीने गछबाहिरनिकलेछे इहांकोइबीजीरीते एदृष्टांत जोडे छे जेमग्लाननेऔषधआपे अनेअहारनआपे माटेरोगीनेछांमयोनकेवाय पणसामो रोगीनेउपकारकर्यो कहेवाय तेमजगीतार्थगछछांमे तेछांम्योनकहीयें पणउलटोगछने उपकारकर्यो एमकहीयें यतः नाणाइगुणविउत्तं ॥ जोचयइगुरुगणंचगीयछो ॥ अणुकंपेइतमेवय ॥ आउरजेसज्जमिवत्तीए ॥ १ ॥ इतिवचनात् एवेव्याख्याछे माटेजेगीतार्थनी दृष्टीमांतेरे तेखरो इतिभावः ॥ ३ ॥

तेकारणगीतारथनेछेएकविहार ॥ अगीतारथनेसर्व
प्रकारेंतेनहीसार ॥ पापवरजतोकामअसजतोत्रां
घ्योजेह ॥ उत्तराध्ययनेगीतारथएकाकीतेह ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ तेकारणके० पूर्वेकह्युंतेकारणे गीतार्थनेज एकाकी विहारनी आज्ञाछे यतः गीयछोयविहारो ॥ बीउगीयछनिस्सिउउत्तणिउ ॥ इत्तोतइयविहारो ॥ नाणुन्नाउजिणं देहिं ॥ १ ॥ इतिआवश्यकनिर्युक्तौ अने अगीतारथके० मूर्खने सर्वथा जेएकलो वि

हारकरवोते सारके० प्रधान नथी रुडोनथी इतिन्नावः तथा पापनेवर्जतो कामनेअस जतोएटले कामक्रीडामां जे तत्परनही नांष्योजेहके० जेनांष्योछेउत्तराध्ययननामेंसि द्धांतमां गीतार्थहोय गुणीहोय तेएकाकीरहे तेकाव्यपूर्वेलख्युंछे नवालनिज्ञानिउणं सहायंश्त्यादि विचारीजोजो ॥ ४ ॥

पापतणोपरिवर्जननेवलिकामअसंग ॥ अज्ञानीनेन
वीहुएतेनविजाणेन्नंग॥ अज्ञानीशुंकरशेशुंलेशेशुन्न
पाप ॥ दशवैकालिकवयणेपंचाशकआलाप ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ जेएकाकी होयते पापनुंवर्जन केमकरे वलीकामके० कंदर्पनासंगनो जे त्यागकरवो ते एकाकी मूर्खने केमहोय माटे एविचार अज्ञानीने नहोय तेअज्ञानी ने तेनान्नांगानी खबरनपडे के आ अवसरे शुद्धजलेवुं केआअवसरे अशुद्धआहार होय तोपणलीजीयें श्त्यादि न्नांगानी खबरनपडे वली अज्ञानीपुरुषहसे तेजीवअ जीवादिक जाण्याविनाशुंकरशे एटलेसंयमानुष्ठानशुंकरशे तथा शुन्नके० पुण्यअने पाप ते प्रते अज्ञानीशुंजाणशे.ते दशवैकालिकवयणेके० दशवैकालकिसूत्रनावचन थकी यडुक्तं तत्र अन्नाणीकिंकाहि किंवानाहीछेयपावगं श्त्यादिचतुर्थाध्ययने तथा पंचाशकग्रंथमांपण एवोज आलापके० आलावोछे एटलेवचनछे ॥ ५ ॥

एकविहारेंदेखोआचारेंसंवाद ॥ बहुक्रोधादिकदूषण
वलीअज्ञानप्रमाद ॥ वलियविशेषेवारयोछेअव्यक्त
विहार ॥ पंखीपोतदृष्टांतेजाणोप्रवचनसार ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वलीएकाकीविहारकरे तेहनो आचारेंके० आचारांगनेविषे संवादके० वचनछे तेकहेछे जे तेआचारांगनापांचमांअध्ययनना प्रथम उद्देशानेविषे देखोके० जुउ एकविहारीनें बहुक्रोधआदिशब्देंमान प्रमुखपणलेवा यथा इममेगेसिंएगचरिया न्नवति बहुकोहे बहुमाणे बहुमाए बहुलोन्ने बहुरते बहुनमे बहुसते बहुसंकप्पे आसवसक्कीपलिउछन्ने एमांविषमपदनोअर्थलखियेंछेयें बहुरतेके० बहुपाप बहु नमेके० बहुवेषनाकरनारा नाटक्रियानीपेरें न्नोगनेअर्थें तथा बहुसतेके० अनेक प्रकारेंशठ तथा बहुसंकल्पउपजे आसवके० आश्रवजेहिंसाप्रमुख तेहनो स क्किके० सक्त एटलेसंगी अने पलिउछन्नेके० पलितएटलेकर्मेंकरीअविछन्न एटले

ढाक्योऽति वलीबीजादोषकेहेछे अज्ञानप्रमादथाय एटलेएनावजे एजआलावेप दछे उन्नियवादंपवयमाणे मामेकेऽअदक्कु अन्नाण पमायदोसेणं इति उन्नियवा दंपवयमाणेके० अमें संयमचारित्रमां उजमालथयाछैयें एमबोलता मामेकेऽअदक्कु के० आश्रवमांप्रवर्त्ततांथकाजाणेमुजनेकोइदेखतोनथी एम अन्नाणपमायदोसेणंके० अज्ञानप्रमाददोषे सहितप्रवर्त्तें तेनेवलीविशेषेंकरीने आचारांगमां अव्यक्तविहारवा ळोछे अव्यक्तके० वयपणपूरीनही अनेश्रुतपणपूरोनही तेहनेअव्यक्तकहीयें आचा रांगपंचमाध्ययननेउद्देशेचोथेकह्युंछे यथा॥गामाणुगामंडुइज्जमाणस्स डुज्जातं डुपरक्क तंनवति अवियत्तस्सनिरकुणो एहनोअर्थ ॥ गामाणुगामं डुइज्जमाणस्सके० एकाकी विचरताने डुज्जातंके० डुष्टगमनछे अर्हनकमुनीनीपेरे डुपरक्कतंके० डुष्टपरआक्रांतछे थुलिजद्रनीईर्षावंतसिंहगुंफावासिमुनीने जेमकोस्यायेंआक्रम्या तेम सर्वमुनीने नहोय तेमाटेविशेषणकरेछे अवियत्तस्सनिरकुणोके०अव्यक्तनिक्कुने एटलेअव्यक्तनिक्कु बेप्र कारनाछे एकश्रुतअव्यक्त बीजोवयअव्यक्त जेआचारप्रकल्पनजण्याहोय अनेगछमांर ह्याहोय तेश्रुतअव्यक्तकहीयें तथागछथीनिकल्या ते नवमांपूर्वनी त्रीजीवस्तुनजण्याहो यतेगछनिरगतअव्यक्तकहीयें गछमां रह्याथका सोळवर्षनाथाय तिहांलगें वयअव्यक्त कहीयें अनेजे गछनिरगतते त्रीसवर्षनाथाय त्यांलगे वयअव्यक्तकहीयेंइतिइहांचोजंगी छे१ श्रुतअव्यक्त अने वयअव्यक्तहोय तेतोएकाकीविहारकरेज नही केमके संयमात्म विराधनाथाय माटे नकरे २श्रुतअव्यक्त अनेवयव्यक्त तेपणअगीतार्थ माटे संयमा त्मविराधनाथाय माटेएकाकीविहार नकल्पे ३श्रुतव्यक्त अनेवयथीअव्यक्त तेहनेपण नकल्पे बाळपणाथकीकुलिंगी तथागृहस्थने पराजवनुस्थानकहोयतेमाटे ४ श्रुतव्य क्तथावयव्यक्त तेहनेपणएकमल्लप्रतिमाप्रमुखकारणें एकाकीपणेविचरवानी आज्ञा छे पणकारणविना नही इत्यादिक बहुवातछे तेआचारांगवृत्तिथीजाणवी एटलाजमाटे आस्तवननी मूळगाथामां विशेषपदमूक्युंछे माटे अव्यक्तने तोविशेषेंकरी सर्वथावाख्यो तथाव्यक्तनेपणकारणविनावाख्योछे तोअव्यक्तनेवाख्योतेनुंशुंकेहवुं तेपंखीपोतदृष्टांतेंक रीजाणवुं जेमपंखीनो पोतके० बाळक तेने पांखआवीनहोय अने उडवाजाय तो बीजा ढंकप्रमुख जनावर तेने उपद्रवकरे तेम अव्यक्तअगीतार्थ बाळक होय तेहने परदर्शनी उपद्रवकरे जाणोप्रवचनसारके०एजैनागमनो सार जाणवो यतःकाव्यं ज हादियापोयमपरक्कजायं ॥ सवासयापंविउमणं मणागं ॥ तमचाइयातरुणपमत्तजाइं ॥ ढंकाइअवत्तगमंहरेज्जा ॥ १ ॥ माटे जेमपंखीपोताना बाळकने सूंनामूकतानथी तेम मूर्खनेगीतार्थ एकलानमूके इतिजावः॥ ६ ॥

एकाकिनेस्त्रीरिपुश्वानतणोउपघात ॥ निद्रानिनविशु
द्धिमहाव्रतनोपणघात ॥ एकाकिसछंदपणेनविपामे
धर्म ॥ नविपामेपृछादिकविणतेप्रवचनमर्म ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जे एकाकीविहारकरे तेने स्त्रीनो तथा रिपुके० शत्रूनो अने श्वानके० कुतरानो उपघातथाय तथा निद्रा पण दोषसहित लीयेतो तेनेकोणनिषेधकरे माटे निद्रानी शुद्धी पण नरहे तथा महाव्रतनो पण अनुक्रमें घातथाय गाथा ॥ उछ पसुसाणसावय ॥ इछिनिरकाइदोसउझलिउ ॥ वयगाइधम्ममाइ ॥ तम्हारम्मोनए गागी ॥ १ ॥ इतिपिंडनिर्युक्तौ तथा एगाणियस्सदोसा ॥ इछिसाणेतहवपडिणीएय निरकविसोहिमहव्वय ॥ तम्हासबिइझएगमणं ॥ १ ॥ इतिधर्मरत्नवृत्तौ जेएकाकी विहारकरे तेस्वछंदपणेविचरे पोतानेमते ऊपज्युं ते खरुं पण गुरुआज्ञानीअपेक्षा नरहे तेमाटेजे स्वमति कल्पनावंत तेधर्म नपामे यतः इक्कस्सकउधम्मो ॥ सछंदम इगईपयारस्स ॥ इत्युपदेशमालायां तथा जे एकाकीहोयते पृछाके० वांचनापृछना दिकतेपण गुरुविनानपामे अने तेविना प्रवचनके० सिद्धांत तेनो मर्म जे रहस्यते केमपामे ॥ यतः कत्तोसूत्तछागम ॥ पडिपुछणमोयणावइक्कस्स ॥ विणउवेयावच्चं आराहणावमरणंते ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां ॥ ७ ॥

सुमतिगुपतिपणनधरेएकाकीनिःशंक ॥ भावपराव
र्तेआलंबनधरेसपंक ॥ जुदाजुदाथातांथविरकल्प
नोभेद ॥ भोलाएमनलोकनाथाएधर्मउछेद ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ सुमतिके० इर्यासुमतिप्रमुखपांचसुमति तथामनादित्रणगुप्ति तेपण न धरेके०नपामीशके केमके जेएकाकीविहार करनारहोयतेनिःशंकहोय कोइनीशंकान राखे एटलेअकार्य करवानुंचित्तथायतो कोइनीशंका नधरे सुखेअकार्यकरे गाथा ॥ पिछिजंसणमिक्को ॥ पइन्नपमयाजणाउनिच्चनयं ॥ काउमाणोविअकज्जं ॥ नतरइ काऊणबहुमझे ॥ इत्युपदेशमालायां तथा चित्तनाअभिप्रायतेभावकहीयें तेभावनुंजे परावर्त्तके० पलटाववुं तेणेकरी जेवापोतानाअभिप्रायथाय तेवुंकांइक आलंबनपा मीने तत्काल तेआलंबन धरेके० अंगीकारकरे तेआलंबन केहवुंहोयतेकहेछे. सपं कके० मेलुहोय एटलेएभावजे चित्तनाअध्यवसायतो क्षणेक्षणेपलटायछे तेचित्तना

अभिप्राय कोइक अवसरें हीणथाय अने निमित्तपणतेवुंज मले तेवारें पोतेपणतेवो जथाय यतः एगयिवसेणवद्धुआ ॥ सुहायअसुहायजीवपरिणामा ॥ इक्कोयसुहपरि णउं चइअआलंबणंलहुं ॥ १ ॥ आलंबनहिणुपामीने चइअके० संयमनेछांडे इत्यु पदेशमालायां वली एकजणेएकलो विहारकीधो एटले बीजाने पणएकला विच रवानुंमनथाय तेमज त्रीजो तथा चोथो इत्यादिक जूदाजूदाथातां एटलेअवस्था नरहे तथा थिवरकल्पनोभेदथाय एटले आपमतें कोइक क्रिया एकरीतेकरे कोइकबी जीरीतेंकरे एमभिन्नभिन्नथाय तेथीलोकनामन भोलाय जे अमुकसाधुकरेछेतेखरुंछे केअमुकसाधुकरेछेतेखरुंछे इत्यादिकविकल्प लोकने उपजे तेथी धर्मनो उच्छेदथाय कोइकपरप्रतित रेहेनही तेवारें लोकमूलगोधर्मजमूकीआपे गाथा ॥ सव्वजिणपडि कुठं ॥ अणवञाथेरकप्पभेउथ ॥ इत्युपदेशमालायां ॥ ७ ॥

टोलेपणजोभोलेंअंधप्रवाहनिपांत ॥ आणाविणनविसं
घछेअस्थितणोसंघात ॥ तोगीतारथउध्दरेजेमहरीजल
थीवेद ॥ अगीतारथनविजाणेतेसविविधिनोभेद ॥ ए ॥

अर्थ ॥ वली टोले पण जोभोलेंके० कदाचित टोलुंहोय नेजोभोलुंहोय तेमां कोइगीतार्थनहोय तो तेटोलामां वसवुंतेपण अंधप्रवाहनिपांतके० आंधलानीज श्रेणीमांपडवुंथयुं एमजाणवुं कारणके आणाविनासंघनकहीयें नहितो अस्थितणो संघातके० हाडकानो समूहजाणवो यतः एगोसाहुएगोय ॥ साहुणीसावउवसड्ढी वा ॥ आणाजुत्तोसंघो ॥ सेसोपुणअट्ठिसंघाउ ॥ १ ॥ एमसंबोधसित्तरीमांकह्युंछे ते माटेजेगीतार्थहोय तेजसंसारसमुद्रमांथी भव्यजीवने उध्दरेके० उध्दारकरे जेम हरीजलथीवेदके० जेरीते श्रीकृष्णेसमुद्रमांथी वेदउध्दर्या एदृष्टांते तेनी कथाकहेछे. शंखनामे दैत्यउपज्यो ते ब्रह्मापासे वेदभणवाबेठो एवामां ब्रह्माने बगासुंआव्युं ते बगासुं बमहीनेपुरुंथाय त्यारेंब्रह्मानुं मुखमोकलुदेखी शंखदैत्यें विचार्युं जे वेदभण तां किवारें पारपारपामीशुं माटे ब्रह्मान।पेटमांप्रवेशकरी वेदलेइजाउं एमविचारी पे टमांपेसीने वेद लेइगयो नेसमुद्रमां पातालमां जइपेठो पछे श्रीकृष्णप्रमुखें विचार्युं जे ब्रह्मा तो भूतसरिखा केम देखायछे एम विचार करतां श्रीकृष्णेजाण्युं जे शंखदै त्य चारेवेद लइगयोछे हवेंहुं लेइआवुं एम विचारकरी मत्स्यावतारधरी शंखासुरना भवनमांगयो त्यांबालकनुंरूपधरी तेनीस्त्रीपासेबेठो तेस्त्रीयेंजाण्युंजे आपणे मनोहर बालक पाम्या पछेतेनेरमाडवाबेठी एटलामां शंखासुरनापेटमां चारेवेद वातोकरवा

लागाजे आपणीबाहारकरवा वाकुरजीआव्याछे तेवात सांजली शंखासुरे जाण्युंजे अनर्थथयो पछेस्त्रीने कह्युंजे बालकमूकीद्यो पणस्त्रीयेंनमूक्युं तारेंबालकने मारवादो ड्यो तेथीस्त्रीयेंबालकनेमूकीदीधुं पछेतेबालकें तेदैत्यसाथेंयुद्धकरीमत्स्यरूपेंथइ दैत्यने मारी तेनापेटमांथी चारवेद लइ श्रीक्रुभपाणीमांथीबहारआव्या तेमाटे प्रथम मत्स्यावतारलीधो एअधिकार शिवमार्गनाशासने दशावतारग्रंथमध्येकह्युंछे इहांदृष्टांते लख्युंछे वलीजे अगीतार्थहोयते उत्सर्गे अपवादादिक सर्वेविधिउना नेदनजाणे माटे अगीतार्थनेएकलो विहारनहोय ॥ इतिनावः ॥ ए ॥

कारणथीएकाकीपणुंपणनाष्युंतास॥ विषमकालमांतो
पणरुडोन्नेलोवास ॥ पंचकल्पनाष्येंनण्युंआतमरक्ष
णएम ॥ शालिएरंमतणेएमन्नांगेलहिएखेम ॥ १० ॥

अर्थ ॥ वली कोइ केहेशेजे श्रीउत्तराध्ययनमध्ये एकाकीपणानी हाकेम कही यथा इक्कोविपावाइविवज्जयंतो ॥ विहरिज्जकामेसुअसज्जमाणो ॥ इतिवचनात् ॥ तेने उत्तर जेगीतार्थहोय तासके० तेने कोइककारणथीएकाकीपणुं पण नाष्युंके० कह्युंछे यथातिहांज काव्य नवालनिज्जानिउणंसहायं ॥ गुणाहियंवागुणउसमंवा ॥ इतिवचनात् तो पणविषमकालमांके० आपांचमाआरामां हुंमाअवसर्पिणीकालमां रुडोन्नेलोवासके० न्नेलावसवुंतेजरुडुं पणएकाकी वसवुं रुडुंनही एमपंचकल्पना ष्यनेविषेकह्युंछे आतमरक्षणएमके० जेसंयमरूपआत्मा तेनी रक्षातेएमज थाय अथवा आत्मानेशरीर अन्नेदछेमाटे आतमके० शरीरनी रक्षापण एमके० एमजन्नेलावशताथकांहोय इहां शालितथाएरंमनीचोन्नंगीछे १ शालिनोवृक्षअनेशालिनीवाडी २ शालिनोवृक्षअनेएरंमनीवाडी ३एरंमनोवृक्षअनेशालिनीवाडी ४ एरंमवृक्षअने एरंमनीवाडी एचोन्नंगीमांथी शालितथाएरंमना त्रणन्नांगे वसतांतो खेमके० कल्याणछे इतिअक्षरार्थः ॥ न्नावार्थतोएछेजे शालि सरिखागीतार्थ एटले आचार्य अने एरंमसरिखा मूर्ख तेनीचोन्नंगीदेखाडेछे १ गीतार्थआचार्य अने जेगीतार्थनो परिवारते वामी पणगीतार्थनी २ गीतार्थआचार्य अने मूर्खपरिवारनीवामी ३ मूर्खआचार्यअने गीतार्थनापरिवारनीवामी एत्रणन्नांगालगेकोइरीते आज्ञाछे पणमूर्खआचार्य अनेमूर्खपरिवारएन्नांगोतो सर्वथाजनिषेधछे यतःजह्वयपंचकुशीला ॥ गणीवायगथविरपवत्तनिग्गंथा ॥ तेणएरंमसमाणं ॥ चउछन्नंगीएनायव्वो ॥ १ ॥ इति॥ १० ॥

एकाकीपासत्थोसछंदोगतयोग ॥ गणवासीउसन्नो बहुदूषणसंयोग ॥ गछवासीअणुजोगीगुरुसेवीवलि होय॥अनियतवासीआउतोबहुगुणएमजोय॥११॥

अर्थ ॥ १ एकाकी केवलधर्मबंधुरहित ते पासछो २ ज्ञानादिकपाश्वैवर्त्तिस्व छंदो ३ गुरुआज्ञाविकल एटलामाटे गतयोगकहिये ४ गणवासीके०स्थानकवासी तदैकत्रविहार नित्यवासीत्यर्थः ५ अवसन्न तेआवश्यकादिकें शिथिलमनपरिणामी तेउसन्नो एपांचपद ते बहुदूषणसंयोगीहोय तेकिवारेंकोइकने एकपद किवारें बेपद किवारें त्रणपद किवारें चारपद अथवा पांचपदना संयोगीथाय जेमएकपदस्थानक वधे तेमदोषवृद्धिपण जाणवी एवं २६ जेदथाय इत्यादिकअनेकप्रकारेंदोषवृद्धिथा य यतः एगागीपासछो ॥ सछंदो ४ गणवासीयउसन्नो ॥ जुगमाइसंयोगा ॥ जह बहुआतह्गुरुहुंति॥ १ ॥ इत्युपेदशमालायां एनाद्विकादिसंयोगकरतां २६ जेदथाय तेमांद्विकसंयोगी १० तथात्रिकसंयोगी १० चतुःसंयोगी ५ पंचसंयोगी १ एवं २६ जंगादोषवृद्धीनाजाणवा तेमज २६ गुणवृद्धिना जाणवा ते देखाडेछे १गछगत २ अ णुयोगी ३ गुरुसेवी ४ अनियतवासी ५ आयुक्त एहनापणएमज छवीसजेद गुणवृ द्धिनाथाय जेमजेमगुणवधे तेमतेमविशेष आराधकथाय अनेदोषवृद्धियें विराधकप णुंवधे तथागुणवृद्धियें आराधकपणुंवधे तेमां दोषवृद्धिना २६ जांगालिखियेंछैयें

द्विकसंयोगी १० जांगा १ एकाकी–पासत्थो २ एकाकी–सछंदो ३ एकाकी– गणवासी ४ एकाकी–उसन्नो ५ पासत्थो–सछंदो ६ पासत्थो–गणवासी ७ पा सत्थो–उसन्नो ८ सछंदो–गणवासी ए सछंदो–उसन्नो १० गणवासी–उसन्नो

त्रिकसंयोगीजांगा १० लिखेछे १ एकाकी–पासत्थो–सछंदो २एकाकी–पासत्थो– गणवासी ३ एकाकी–पासत्थो–उसन्नो ४ एकाकी–सछंदो–गणवासी ५ एकाकी– सछंदो–उसन्नो ६ एकाकी–गणवासी–उसन्नो ७ पासत्थो–सछंदो–गणवासी ८पास त्थो–सछंदो–उसन्नो एपासत्थो–गणवासी–उसन्नो १०सछंदो–गणवासी–उसन्नो

चतुसंःयोगीजांगा ५ लिखेछे १ एकाकी–पासत्थो–सछंदो–गणवासी २ एका की–पासत्थो–सछंदो–उसन्नो ३ एकाकी–पासत्थो–गणवासी–उसन्नो ४ एका की–सछंदो–गणवासी–उसन्नो ५ पासत्थो–सछंदो–गणवासी–उसन्नो

तथापंचसंयोगी १ जांगोथयो एवं २६ थाय तेद्विकसंयोगीथी त्रिकसंयोगीदूषणे जारी तेथीचतुःसंयोगीदूषणेजारी चतुःसंयोगीथीपंचसंयोगीदूषणेजारी हवेदोषनेव्याप्ति

रेके गुणवृद्धिपणोदेखाडेछे १ गछवासीके० गछमांवसे २ अणुउंगीके० अर्थधारे ३ गुरुसेवीके० गुरुवादिकनीसेवाकरे ४ अनियतवासीके० उग्रविहारी ५ आयुक्तते आउत्तोके० उपयोगीहोय एपांचपदमां जेमजेमएकेकापदनीवृद्धिथाय तेमतेम विशे षआराधकथाय यतः १ गछगउे २ अणुउंगी ॥ ३ गुरुसेवी ४ अनियतवासी ५ आ उत्तो ॥ संजोएणपयाणं ॥ संयमआराहगाजणिया ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां ॥ ११ ॥

दोषहाणीगुणवृद्धिजयणाजाषेंसूरि॥ तेशुजपरिवारेंहुये
विघ्नटलेसविदूरि ॥ देवफलेजोअंगणेतुऊकरुणासुरवे
लि ॥ शुजपरिवारेंलहियेंतोसुखजसरंगरेलि ॥ १२॥

अर्थ ॥ एम दोषनी हाणीथाय तथागुणनीवृद्धिथाय अनेजयणाके० जतनाथाय एटले बहुलाज अल्पदोषेंप्रवृत्तिथाय तेएहवागुण किवारेआवे तेहनोउत्तर जाषेंसूरि के० आचार्यजाषेछे के जे शुजपरिवारेंहोयके० एवागुणतोपरिवारशुजहोय तिवारे आवे तथाविघ्नसर्वेदूरटले तेमाटेहेदेव तुऊके० तमारीकरुणारूपजे सुरवेलीके० कल्पवृक्षनीवेलडी ते मारोआत्मरूपजेआंगणुं तिहांजोसफलीथाय तोतेशुजपरिवा रपामियें एटलाजमाटे उपदेशमालाना करतायेंकह्युंछे यतः सीहगुरुसुसिस्साणं ॥ जद्दंगुरुवयणसद्दहंताणं ॥ वयरोकिरदाहीवा ॥ यणत्तिनविकोवियंवयणं ॥ १ ॥ ते माटेशुजपरिवारपामवोडुष्करछे तेशुजपरिवारेंकरी सुखयशनी रंगरेलपामियें एट ले सेहेजानंदस्वरूपनारंगनीरेल तेहनोप्रवाहपामीयें एसातमांढालमां कह्युंजेहेदेव तमारीकरुणारूप सुरवेलीजोफलेतो सुखयशपामियें तेमाटे हवे आठमांढालमां क रुणा विशेषजे दया तेहनुं स्वरूप केहेशे ॥ १२ ॥

ढालआठमो प्रचुचित्तधरीनेअवधारोमुऊवातएदेशी

कोइकहेसिद्धांतमांजी ॥ धर्मअहिंसासार ॥ आदरियेंतेएकलीजी ॥
त्यजीयेंबहुउपचार ॥ मनमोहनजिनजी ॥ तुजवयणेमुऊरंग ॥ १ ॥

अर्थ॥वलीकोइकएमकहेछे के सिद्धांतसूत्रनेविषेएमकह्युंछे जे धर्मअहिंसाके० दया तेजसारके० प्रधानछे नहिअहिंसासमोधम्मोइतिवचनात् माटेएकलीअहिंसाजआ दरीयें बीजा बहुके० अनेक उपचारके० उपायने त्यजीयेंके० मूकीदइयें एमकहेछे माटे हेमनमोहनजिनजी अथवामननेमोहनाउपजावणहार एवाजेजिनेश्वरतेनोसं बोधनकरियें जेहेमनमोहनजिनजी तुऊवयणेके० तमारावचननेविषेमुऊनेरंगछेरीजछे

नविजाणेतेसर्वेत्यजीने ॥ एकअहिंसारंग ॥ केवल
लौकिकनीतिहोवे ॥ लोकोत्तरपंथभंग ॥ मन० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ तेहनेउत्तरआपेछे के तेअज्ञानीनथीजाणता नथीसमजता जे सर्वपूजा प्रभावना सामिवत्सलप्रमुखकरणीत्यजीने मात्रएकअहिंसानेविषेज रंगके० रीजक रेछे तेथी केवल लौकिकके० व्यवहारनितीकरीने एटलेलौकिकव्यवहारमां एकद यादयापोकारे तेसारीलागे पण लोकोत्तरमार्गेजे जिनमार्गतेहनोभंगथायछे एटले एकलीदयामांजिनशासननथी पणजिनआज्ञामांशासनप्रवर्त्तेछे एकलीदयायेंतो पडि कमणापोसहप्रमुखपणनकरीशके तोपूजाप्रभावनानीवातो वेगलीरही इतिभावः॥२॥

वनमांवसतांबालतपस्वी ॥ गुरुनिश्राविणसाध ॥ एक
अहिंसायेंतेराचे ॥ नलहेमर्मअगाध ॥ मन० ॥ ३ ॥

अर्थ॥ एकतोबालतपस्वी जे अज्ञानतपस्वीतेपणवनमांवसतो एटले घोरकष्टनोकर णहार तथा बीजो गुरुनिश्राविणके० गुरुआणाविना एबेहु एकअहिंसायेंतेराचेके० एकअहिंसामुखेकहे एटलेबाह्यजीवनीरक्षाकरवी एटलामांजरीजछे पणतेअहिंसा नो अगाधके० ऊंडोमर्मछे तेमूढ नजाणे एटलेस्वआत्माहणायतेहिंसा अनेस्वआ त्मानहणायतेअहिंसा एहवामर्मनीतेनेखबरनथी ॥ ३ ॥

जीवादिकजेमबालतपस्वी ॥ अणजाणंतोमूढ ॥ गुरुलघुभा
वतथाअणलहेतो ॥ गुरुवर्जितमुनिगूढ ॥ मन० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेकोइकहेशेजे बालतपस्वी तथासाधुएबराबरकेमथाय तेनेकहेछे के जेमबालतपस्वी तेजीवअजीवपुन्यपापप्रमुखनुंयथार्थस्वरूप तेमूढ अणजाणंतोके० अणसमजतोथको जेमतेहोय तथाके० तेमज गुरुलघुभावअणलहेतोके० हलकाभा रे लाभखोटने अणजाणतोजे आवुंप्रायश्चित्तकरवुं तेकरतांबीजीकरणीमांथयपिप्रा यश्चित्तछे तोपणलाभघणोछे इत्यादिकवातोथीअणसमजुछे जेमाटेगुरुवर्जितमुनिके० गुरुयेंकरीरहितएहवाजेमुनिते गूढके० गुप्तरहस्यजेहोय तेवागुरुअनेलघुभावनेनल हेइतिभावः एरीतेंगूढशब्दगुरुलघुभावनेजोडीयें ॥ ४ ॥

भावमोचकपरिणामसरिखो ॥ तेहनोशुभउदेश ॥ आ
णारहितपणेजाणीजे ॥ जोइपदउपदेस ॥ मन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ नावमोचकपरिणामके० बौद्धादिकनापरिणामसरिखोछे एटलेबौद्धादिक एममानेछे के जेदुःखीहोयतेनेमारीयें तोदोषनलागे कारणके तेनेमारतानथी पण उलटोदुःखथीमूकावियेंछैयें एरीतेमातुंकृतकरीने तेनेरुडुंमानेछे तेसरिखो तेह्नोके० ते ढुंढकादिकअज्ञानीनो अनउद्देशके० शुद्धप्रवर्तनजाणवो एटलेयद्यपितेओनीअहिंसाद्रव्यथीछे पणपरिणामे हिंसाजजाणवी तिहां हेतुकहेछे जे आणारहितपणेजाणीजेएटले आज्ञारहितमाटे यतः आणाएतवोआणाए ॥ संयमोतह्यदाणमाणाए ॥ आणारहिउंधम्मो ॥ पलालपुलुव्वपडिहाइ ॥ १ ॥ इतिवचनात् ए अर्थउपदेशपदग्रंथमांजोइने जाणीजेके० जाणीयें यतः जंअन्नाणीमूढो ॥ जंचअगीयब्बनिस्सिउविहरे ॥ सोसुगायकम्मसरिसो ॥ पावयबंधेविलिप्पंति ॥ १ ॥ ५ ॥

एकवचनझालीनेछंडे ॥ बीजालौकिकनीति ॥ सकल
वचननिजठामेजोडे ॥ एलोकोत्तरनीति ॥ मन० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ एगाथानोअन्वयकरीअर्थ करेछे जेएकलौकिकवचनझालीने बीजासर्वनीतिनावचनछांडेछे इत्यन्वयः तेलौकिकवचनएजेकोइनेनहणवो तेउपरआगमनापाठदेखाडेछेजे सव्वेपाणा सव्वेभूआ सव्वेजीवा सव्वेसत्ता नहंतव्वा इत्यादिकआगमनुंएहवुं वचनछे अनेयद्यपिलोकपणप्रौढमार्गेएम केहेछे जेकोइनेनमारवो तेमाटे एवचननेलौकिकवचन कहीयें तेलौकिकवचनपकडीने बीजासर्वे नीतिवचनके० लौकिकथीबीजा जेलोकोत्तरवचन दानदेवपूजासामीवात्सल्यप्रमुख ते नीतिवचन कहीयें तेसर्वछांडिदियेछे पणतेसर्वखोटुंकरेछे केमके जे सकलवचननिजठामेजोडेके० समस्तसिद्धांतनावचनजेछे तेने ठेकाणेजोडे तेलोकोत्तरनीतिजाणवी सकलवचनएपदबीजीवारजोडवुं एटलेएनावजे गुणठाणामाफक सद्धसद्धनीहदप्रमाणे समस्तसिद्धांतनावचनजोडे जे आवचनतेमुनिराजनेजआश्रीछे अनेआवचनतेगृहस्थनेआश्रीछे तेअपेक्षाउजैनशासनमांघणीछे तेपोतपोतानीअपेक्षाप्रमाणेजोडे एलोकोत्तरनीति तेजिनशासननीनीतिछे

जिनशासनछेएकक्रियामां ॥ अन्यक्रियासंबंध ॥ जेमभा
षीजेत्रिविधअहिंसा ॥ हेतुस्वरूपअनुबंध ॥ मन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ तथाजिनशासनते एकक्रियामां अन्यक्रियासंबंधछे जेमाटे जेहिंसातेज अहिंसा अने जेअहिंसातेजहिंसा अनेजेतपस्या तेज जो निस्पृहिपणुनथी तोअतपस्याछे भोगीछे अनेभोगीछतांनिस्पृहिपणुछे तो तेतपस्वीछे इत्यादिकजिनशासन

मां एकांतनथी स्याद्वादछे यतः अविद्यायापिहियाहिंसा हिंसाफलनाजनंनवत्ये कः कृत्वाप्यपरोहिंसां हिंसाफलनाजनं नस्यात् ॥ १ ॥ इतिअहिंसाष्टकवचनात् ॥ ते वलीहिंसातथाअहिंसा अनेकनेदें आगलीगाथामांदेखाडेछे जेमनाषीजेके० जिन शासनमांकहीयेछेयें त्रिविधअहिंसाके० त्रणप्रकारनीअहिंसा तेदेखाडेछे १ हेतुअ हिंसा २ स्वरूपअहिंसा ३ अनुबंधअहिंसा एविवरीदेखाडेछे ॥ ७ ॥

हेतुअहिंसाजयणारूपें ॥ जंतुअघातस्वरूप ॥ फलरू
पेजेंतेहपरिणमे ॥ तेअनुबंधस्वरूप ॥ मन० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ तेमांपेलीहेतुअहिंसाते यतनाकरवी केमके जे जीवयतनाकरवीतेअहिं सानोहेतुछे माटेहेतुअहिंसाकहीयें बीजी जे जंतुअघातके० जीवनेमारवोनही प्रा णवियोगनकरवो तेहनुं नाम स्वरूपअहिंसाकहीयें त्रीजी स्वर्गापवर्गादिकफलरूपेंजे अहिंसापरिणमे तेअनुबंधअहिंसानुंस्वरूपजाणवुं ॥ ८ ॥

हेतुस्वरूपअहिंसाआपे ॥ शुनफलविणअनुबंध॥ दृढ
अज्ञानथकीतेआपे ॥ हिंसानोअनुबंध ॥ मन०॥ ए॥

अर्थ ॥ हवेत्रणेअहिंसानाफलकहेछे जेहेतुअहिंसातथास्वरूपअहिंसा एबेअहिं साते शुनफलके० पुण्यफलआपे विणअनुबंधके०अनुबंधविना एटलेहेतुतथास्वरूप अहिंसाथीपुण्यबंधाय ते देवताप्रमुखनोनवपामे पण आगलेंसंलग्न पुण्यपरंपरानचाले माटेपापानुबंधीपुण्यबंधाय जेम अहिंसानात्रणनेद तेम हिंसानपणत्रणनेदछे ते कहेछे १ हेतुहिंसा २ स्वरूपहिंसा ३ अनुबंधहिंसा एत्रणमांहिंसानुं अनुबंधके० फलतेपणजेहिंसानुंजआपे तेनोहेतुकहेछेके दृढअज्ञानथकीके० आकरेअज्ञानेकरी ने एटलेएनावजेहेतुथीजोइयेंतोअहिंसा तथास्वरूपथीजोइयेंतोपणअहिंसा अने अ नुबंधेजोइयेंतो हिंसाछे तोतेहिंसाथीपण संसारवधे अने अज्ञानअहिंसाथीपणसंसार वधे तेमाटेजेमां अनुबंधअहिंसाहोयते आदरवी इतिनावः ॥ ए ॥

निन्हवप्रमुखतणीजेमकिरिया ॥ जेहअहिंसारूप ॥ सुर
दुरगतिदेइतेपाडे ॥ दुत्तरनवजलकूप ॥ मन० ॥ १० ॥

अर्थ जेम जमालीप्रमुखनिन्हव सर्वेजैनलिंगेहता तथाक्रियापणजैननीकरताह ता तेश्रीनगवतिमांजमालीनुंमहासंयमवखाण्युं पणजे अहिंसारूपके० तेक्रियासर्वे

हेतुअहिंसा तथास्वरूपअहिंसारूपहती पणते सुरडुरगतिदेइके० देवतानीडुरगति एटले किल्विपियाप्रमुखदेवतानीडुर्गतिआपीने पडे पाडेके० नाखे डुत्तरजवजलकू पके० डुःखेंतरायएवोसंसाररूपजलनोकुवो तेमांनाखे इति ॥ १० ॥

दुर्व्वलनग्नमासउपवासी ॥ जोछेमायारंग ॥ तोपण
गरत्नअनंतालेशे ॥ बोलेबीजुंअंग ॥ मन० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ तेऊपर सांख देखामेछे जेम कोइक शरीरेंडुर्बल थयोहोय तथानग्नके० नागोरहेतोहोय अनेमासखमणनोपारणुंकरतोहोय एवोहोय अनेमायारंगके० मा यावंतहोय एटलेअज्ञानकष्टकरेछे एवोछे तोपण अनंतिवारगर्जमांउपजसे एटलेअ नंताजवकरसे एमबीजुंअंगजेसुयगडांगसूत्रतेबोलेछे यत. जइवियणिगिणेकिसे ॥ चरे जइविछुंजियमासमंतसो ॥ जेइहमायातिमङाति ॥ आगंतागप्रायणंतसो १ ॥ इति द्वितीयाध्ययने एटले एनीदया कोइलेखामां नावे ॥ ११ ॥

निंदितआचारेंजिनशासन॥ जेहनेहीलेलोक ॥ मायापे
हेलीतसअज्ञाने ॥ सर्वअहिंसाफोक मन० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ ते निंदितआचारें लोक जिनशासन हीले एटलेजे प्राणीदयामानेछे अ नेअज्ञानकष्टकरेछे तेप्राणीनेपूर्वाचार्यना जीतनीखबरनथी केजितव्यवहारें लोकनिं दानकरें अनेपोतानीमतियेंप्रवर्त्ते तेनाआचरणनी लोकनिंदाकरे तेवारेजिनशासननी पणनिंदाथाय के जुउआवालोक जिनशासनमांछे माटे जिनशासनपण डुगंछाकर वायोग्यछे तेवारेंजिनशासननी हिनतानुं कारणथाय माटे तसके० तेप्राणीने अज्ञा नथयुं तेअज्ञानेकरीने मायापेहेलीके० प्रथममायाथयीज अनेज्यांमायाछेरी त्यांस र्वअहिंसाते फोकके० खोटीनिःफलजाणवी जेमाटे अज्ञानीनीदयाते हिंसाजजाण वी यतः मासेमासेयजोबालो ॥ कुसग्गेणंतुभुंजएनसो ॥ सुअरकायस्सथमस्स ॥ क लिअग्घइसोलसिं ॥ १ ॥ इत्युत्तराध्ययनवचनात् ॥ १२ ॥

स्वरूपथीनिरवद्यतथाजे ॥ छेकिरियासावद्य ॥ ज्ञानश
क्तिथीतेहअहिंसा ॥ दिएअनुबंधेसद्य ॥ मन० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ आगलीगाथामां दयापालेने फलहिंसानुं आपे एम कह्युं हवे जेकथंचित् हिंसाथाय तेपण अहिंसानुंफलआपे तेकहेछे जे स्वरूपथीके० परमार्थेतोनिरवद्यछे

निःपापछे अनेक्रियासावद्यके० देखीतियद्यपिसावद्यछे तोपण तेजेस्वरूपथी हिंसाछे तेज्ञानशक्तियेंकरी दिएअनुबंधेके० अनुबंधआपे अहिंसाके० दया सद्यके० तत्काल एटलेएन्नावजेस्वरूपहिंसाजे दानविहारप्रमुख तेमुनिप्रमुखनीछे तेअनुबंधेअहिंसानुंज फलआपे यतःनगवत्यांगे अणगारस्सणंनंतेनावि अप्पाणोपुरउडुदुउज्जुगमायाएपेहा एरीयंरीयमाणस्स पायस्सअहेकुक्कुम्मपोएवावट्टपोतेवाकुलिंगछाएवा पारियावज्जेज्जा॥ तस्सणंनंतेकिंइरियावहियाकिरियाकज्जइसंपराइयाजावकज्जत्ति गोयमाणोसंपराइया जावकज्जति इरियावहिया जावकज्जइ सेकेणठेणं जाववुच्चइ जहासत्तमसएसंवुडुदेसए जावअठोनिखित्तो ॥ इतिअढारमांशतकनाआठमांउदेशमांछे ॥ १३ ॥

जिनपूजाअपवादपदादिक॥शीलव्रतादिकजेम॥पुण्यअनु
त्तरमुनीनेआपी॥ दिएशिवपदबहुखेम॥ मन० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ वलीजेमपूर्वेंमुनीनेहिंसा स्वरूपथी हती तेअनुबंधेअहिंसाकही तेमजजिनपूजा तथाअपवादपदादिकें वर्त्ततामुनी वलीशीलव्रतादिक जेममुनीने अनुत्तरके० उत्कृष्टपुण्यआपीने एटलेएजिनपूजादिकरणी यद्यपिकिंचितमात्र स्वरूपथीसावद्यछे अनेशीलव्रतादिकते स्वरूपथीनिरवद्यछे पणएबेहुनेदवालाने अनुबंधे अहिंसानुज फल आपे तेमाटे एमकह्युंजे अनुत्तरपुण्यआपीने दिएके० आपे शिवपदके० मोक्षपद जे बहुखेमके० घणुक्षेमछेजिहां एटलेपरंपरायें सर्वसिद्धनु देनारछे ॥ १४ ॥

एहनेदविणएकअहिंसा ॥ नविहोवे थिरथंन ॥ यावत
योगक्रियाछेतावत ॥ बोल्योछेआरंन ॥ मन० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ एप्रकारे १ हेतु २ स्वरूप ३ अनुबंध एत्रणनेदेंहिंसा तथाएत्रणनेदें अहिंसाते जाण्याविना एकलीजअहिंसासामान्यप्रकारें माने ते नविहोवेके० नहोय थिरथंनके० थिरनावे एटलेएकअहिंसाठेरेनही शामाटेके यावतयोगक्रियाछेके० ज्यांलगे मन वचन कायानायोगनीक्रियातेचलनक्रियाछे तावतके० तिहां लगें बोल्योछे के० कह्योछे आरंनके० कर्मबंध एटलेपोतापोताना गुणठाणानीमर्यादा माफक तेरमां गुणठाणालगें कर्मबंधछे अन्यथाइरियापथिकबंध बेसमयनी स्थितिनो केमक ह्योछे तेमाटे एकली अहिंसाकेवीतेकामनावे पणतेनानेदसमजे तो सर्वेठेकाणेजोडे

लागेपणलगवेनहिहिंसा ॥ मुनीएमायावाणि ॥ शुनकि
रियालागीजेआवे ॥ तेमांतोनहीहाणि ॥ मन० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ इहां कोइक एम कहेछे जे मुनिके० मुनिराजने विहारादिक करतां हिंसा लागेछे पण लगावेनहीएटलेहाथेकरी जाणीने हिंसाकरेनही एमजेकहेछे ते माया वाणिके० कपटनुं वचनछे एटलेमारीमातावंध्या तेनीपरे मायगाळीवातबोलेछे पण शुभक्रिया जे विहारपडिलेहण नदीउतरवी इत्यादिक करतां जे हिंसा लागी आवे छे तेपोतानीमेलेज लागेछे एमकेम कहेवाय केमके जे नदीउतरवी विहारकरवो ते अजाण्योथतो नथी तेतो पोतेजाणेजछे जे नदीप्रमुख उतरतां हिंसाथशे तोपण उतरेछे प्रभुनी आज्ञाछे तेमाटे जेहिंसा शुभक्रियाकरतां लागीआवेछे तेमां हाणीके० दोष लागतो नथी ॥ १५ ॥

हिंसामात्रविनाजोमुनीने ॥ होयअहिंसकभाव ॥ सूक्ष्मएकेंद्रिनेहोवे ॥ तोतेशुद्धस्वभाव ॥ मन० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ हिंसामात्रविनाके० एक हिंसाज देखीति नकरी एटले देखातो कोइ जीव नमार्यो एटला मात्रथीज जो मुनीनेके० साधुने होयअहिंसकभावके० अहिंसकपणुं थायतो सूक्ष्मएकेंद्रिनेके० लोकव्यापी पांचथावरनासूक्ष्मएकेंद्रिजीवोनेपण शुद्धस्वभाव होवो जोइयें केमके सूक्ष्मएकेंद्रिय जीवतेहिंसानामेज नथीकरता माटे तेतमारे लेखे अहिंसक थया अने जे अहिंसकभावेंपरिणम्यो तेतो शुद्धस्वभावि निरावर्णथाय पण तेएकेंद्रितो कोए निरावरणथता देखातानथी तेमाटे मात्रहिंसाने अणकरवेज अहिंसकनथाय जमालीनीपरें अविद्यायापिहियाहिंसा ॥ हिंसाफलभाजनंभवत्येकइतिअहिंसाष्टकवचनात् ॥ १७ ॥

भावेंजेहअहिंसामाने ॥ तेसविजोडेठाम ॥ उत्सर्गेंअपवादेंवाणी ॥ जिननीजाणेजाम ॥ मन० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे जेप्राणी द्रव्यभावप्रमुख भेदेकरी अनेक प्रकारनी अहिंसाछे ते मांपण भावेंके० परिणामें जेप्राणी अहिंसामाने तेके० तेप्राणी सविजोडेठामके० सर्व जिनवाणी पोतपोताने ठेकाणेजोडे तेप्राणीथी आगमवचन एकपण दुषायनही ते भावथी अहिंसामानीने सर्वआलावाठेकाणे केवारे जोडे जेवारे उत्सर्गेंअपवादेंवाणीके० उत्सर्गवचन तथा अपवादवचन एबेहुयेंकरीने जिनेश्वरनी वाणीजाणे एटले एभावजे उत्सर्गमार्गें अहिंसा मुनिराजनें कही आचारांगप्रमुखनेविषे तथासाधवीप्रमुख पाणीमां वेहेती जाणेतो काढे तथा एकमहिना मध्ये बेनदीउतरवी इत्या

दिक अपवाद आज्ञा पण प्रत्युयेंकरीछे तोए सर्वउत्सर्ग अपवाद जावजाणे तेसर्व व
चन गामेजोमे पण मूर्ख खुंजाणे ॥ १८ ॥

कोइकहेउत्सर्गेआणा ॥ छांदोछेअपवाद ॥ तेमिथ्या
अणपामेंअर्थे ॥ साधारणविधिवाद ॥ मन० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ इहां कोइक एमकहेछेजे उत्सर्गमार्गेचालवुं तेज आज्ञाछे पण अपवाद ते छांदोछे एटलेपोतानीमतिकल्पनाछे पणजिनाज्ञा नथी एमकहेछे ते मिथ्याके० खोटुछे अणपामेंअर्थेके० अर्थजाण्याविना एमकहेछे तेनुं कारण के जे विधिवाद होयतेसाधारणजहोय एटले एमजाणवुंजे उत्सर्ग ने अपवाद एवेहु विधिवादछे ते सर्वजीवने साधारणछे पण एकजीवआश्रयीनथीकह्युंतेमाटे अपवाद पण आज्ञाछे पणछांदो एटले स्वमतिकल्पनानथी ॥ १९ ॥

मुख्यपणेजेमभावेआणा ॥ तेमतसकारणंतेह ॥ कार्यइ
छतोकारणइछे ॥ एहेशुभमतिरेह ॥ मन० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ वली एजकहेछेके जंबूद्वीपपन्नतिनीवृत्तिमध्ये एमकह्युंछे के जेअपवाद तेकारण अने उत्सर्ग तेकार्य तेमाटे कहेछेजे मुख्यपणे जेमभावेआणाके० उत्सर्गे आज्ञानाछे एटले भावते कार्यकहीयें अने जे कार्य तेउत्सर्गकहीयें तेमाटे जेम उत्सर्गे आज्ञाछे तेमतसकारणतेहके० तेमजते उत्सर्गनुंजेकारण तेअपवादछे तेनीपणआज्ञाछे केमके जेकार्यने इछतोथको कारणपण इछे अनेजो कारणठेरेतो कार्यपणठेरे जोकारणनहीतो कार्यकिहांथीआवे एरीतेमाने तेनेजशुभमतिनी रेखा जाणवी ॥ अथवाएगाथानोअर्थबीजीरीतेकरीयेंछैयें जे इहांढुंढकलोकएमकहेछे जेअ मारेतोभावनिक्षेपतेवंदनाकरवायोग्यछे पण नामतथास्थापनाअनेद्रव्य ए त्रणनिक्षे पावंदनायोग्यनथी एमकहेछे तेनेशीखामण दीएछे जेमुख्यपणे जेमभावेआणाके०भा वनिक्षेपेआज्ञाछे एटलेभावनिक्षेपोवांदवायोग्यछे तेमतसकारणके० तेमजतेभावना कारणजेनामादित्रणनिक्षेपातेपण वांदवायोग्यछे केमके जेकार्यनेइछशो तेकारणने इछशो अनेकारण मान्याविना कार्यनेपामशोज नही एजशुभमतिनी रेखाछे एटले जे भावनिक्षेपोमानशोतेने नामस्थापनादिकपण मानवाजोइयें जोनामादिकनहीमाने तोभावनिक्षेपोपण नहीमनायो एमथयुं ॥ २० ॥

कल्पेंवचनकह्युंअपवादें ॥ तेआणानुंमूल ॥ मिश्रप
क्षतेमुनीनेनघटे ॥ तेहनहीअनुकूल ॥ मन० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ पंचकल्पमांहे एहवुंवचनकह्युंछे के अपवादमार्गेते जिनाज्ञानुंमूलछे यतः अववाउववहारो॥ आणामूलंजउनवेतिबं॥ इतिवचनात् माटे मुनीनेतो ते मिश्र पक्षघटेनहीं रुडोनथी तेअनुकूलनथी केमके गुणस्थानादिक क्रियायेंमिश्रपक्षतान थी तेहिजआगलीगाथामांदेखाडेछे ॥ २१ ॥

अपुनर्बंधकथी मांम्हिनें ॥ जावचरमगुणठाण ॥ भावअ
पेक्षायेंजिनआणा ॥ मारगभाषेजाण ॥ मन० ॥ २२ ॥

अर्थ॥ फरीबंधनथी करवो तेने अपुनर्बंधककहीयेते अपुनर्बंधकजेचोथोगुणठाणो तिहांथी मांम्हिने जावचरमके० छेलाअयोगी केवली चउदमां गुणठाणालगें इहांअपु नर्बंधकशब्दें चोथोगुणठाणो जाणीयेंछैयें जेकारणे अंतःकोडाकोडी स्थितिकरीने कदा पिफरी मिथ्यात्वगुणठाणेआवेतोपण सितेरकोडाकोडीनीस्थितिफरी नबांधे तेमाटे अपुनर्बंधककहीयें तथा उपाध्यायजीयेंपण सवासोगाथाना तवनमध्ये एवीगाथाक हीछेके जेजेअंशेरेनिरूपाधिकपणुं ॥ तेतेजाणोरेधर्म ॥ सम्यक्दृष्टीरेगुणठाणाथकी॥ जावलहेशिवशर्म ॥ १ ॥ एगाथाने अनुमानेपण एमजणायछे पछेतो अपुनर्बंधकनो अर्थ बहुश्रुतकहे तेप्रमाण तथाउपाध्यायजीयेंस्वकृतअध्यात्मसारग्रंथमांपण कह्युंछे जे अपुनर्बंधकायावत् गुणस्थानंचतुर्दशं ॥ इत्यादिथी स्पष्टजणायछे केचोथागुण ठाणाथी चउदमांलगें जिनआणाके० जिनेश्वरनी आज्ञाछे अने जाणपुरुषते एनेज मार्ग कहेछे तेसर्वभाव भावनीअपेक्षायें जाणवा अन्यथाचोथागुणठाणाप्रमुखने विषे तोमहाविभावमांवेठोछे पण भावनीअपेक्षायें जिनआणाछे इतिभावः ॥ २२ ॥

एकअहिंसामांजेआणा ॥ भाषेपूरवसूरि ॥ तेएकांतम
तिनविग्रहियें ॥ तिहांनयविधिछेभूरि ॥ मन० ॥ २३ ॥

अर्थ॥तथाशास्त्रमां एकली अहिंसानी आज्ञानाछे जेम सव्वेजीवानहंतव्वाइतिआ चारांगादिकवचनथी एमपूर्वाचार्य यद्यपिकहेछे तथापि एपाठ एकांतमतिके० एकां तपक्षे नविग्रहियेंके० अंगीकारनकरीयें तेमजतेअहिंसापण स्याद्वादमतें अंगीकार क रीयें जेम मुनिराज नवकोटीपच्चख्खाण करीने नदीउतरेछे अनेपच्चख्खाण करती वखते नदीमोकलीतो राखीनथी तोते पच्चख्खाण स्याद्वादीछेपणएकांते नथी एम जाणवुं तेमाटे इहां नयविधिछेभूरिके० तेअहिंसानेविषे नयनोविधिघणोछे तेतो जेनयनीवात समजे तेजाणे एटलेअहिंसाते अनेकप्रकारनीछे ॥ २३ ॥

आतमभावहिंसनथीहिंसा ॥ सघलाएपापस्थान ॥ तेहथ
कीविपरीतअहिंसा ॥ तासविरहनुंध्यान ॥ मन० ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ वलीतेजवात देखाडेछे आतमभावहिंसनथीके० जेकरणीकरतां पोतानोआत्मभाव हणाणो तो तेमां हिंसाके० हिंसालागे तथाआत्मभावहणाताथकाअढारे पापस्थानकलागे अने तेहथकीके०ते आत्मभावहणायाथकी विपरीतके० आत्मभावजिहां नहणाय ते अहिंसाके० दयाकहीयें तासके० तेपापस्थानकना विरहनुंध्यानएवीएभावअहिंसाछे एपदअहिंसानुंविशेषणछे ॥ २४ ॥

तसउपायजेजेआगममां ॥ बहुविधछेव्यवहार ॥ तेनिःशे
षअहिंसाकहियें ॥ कारणफलउपचार ॥ मन० ॥ २५ ॥

अर्थ ॥ तसके० तेआत्मभाव नहणवाना उपायके० प्रकार जेजे आगममांके० सिद्धांतमां कह्याछे एवाव्यवहारते बहुविधछेके० अनेकप्रकारनाछे दान देवपूजा परिकमणा पोसहइत्यादिकअनेकछे अने लोकपरनी मूलगाथानोपाठ बिहुविधहोयतो एमअर्थकरीयें जे उत्सर्ग तथा अपवाद एबेप्रकाररूप व्यवहारछे तेनिःशेषके० समस्त जेटला आत्मानहणाववाना प्रकारछेतेअहिंसाकहियें एटलेएभावजे अपवादपणआत्मा नहणाववानोकारणछे तथादान देवपूजाप्रमुखपण आत्मानहणाववानाकारणछे तेने अहिंसाकहीयें एमस्तवनकरनारे तेराव्युं तेवारे अपवादने छांडोछे अनेउत्सर्ग तेआज्ञाछे एरीतेपूर्वे प्रतिवादियें कह्युंहतुं तेदूरकर्युंइतिभावः॥ इहांकोइकहेशेजे एअपवादप्रमुख अनेकआत्माने नहणवानाकारणने अहिंसा केवीरीते कहीयें तेने कहेछे के कारणनेविषे फलउपचारके० कार्यनोउपचार करीयें छैयें यथातंडुलान् वर्षतिपर्जन्यइतिन्यायात् ॥ २५ ॥

जीवअजीवविषयछेहिंसा ॥ नैगमनयमत्तजुत्त ॥ संग्रह
व्यवहारेंषटकायें ॥ प्रतिजीवेंऋजुसूत्त ॥ मन० ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ हवे पूर्वें कह्युंहतुंजे अहिंसामां नयनाप्रकार घणाछे तेदेखाडेछे तेमां प्रथमनैगमनयआश्रीजीवनेविषे तथा अजीवनेविषे हिंसाकहेछे तेनैगमनय एमकहेछेजे जेमलोकमां अमुके जीव हण्यो तेमज अमुके अजीवघटनेहण्यो घटनोविनाशकर्यो इत्यादिकहिंसाशब्द सघले प्रवर्त्तेछे तथा संग्रहनय अनेव्यवहारनयएबेहुनयनेमते

छकायनेविषे हिंसामाने पणजे अजीवनीहिंसा तेने हिंसामानतानथी इहांसंग्रहनय नावेनेदछे एकदेशग्राहीसंग्रह बीजोसर्वग्राहीसंग्रह तेमांसर्वग्राहीसंग्रहतो नैगमन यमां नल्यो माटे देशग्राहीसंग्रह इहांलीधोछे हिंसाशब्द अजीवमां प्रवर्त्ततो लीधोन थी तेमाटे देशग्राहीसंग्रह तथा व्यवहारनय तोजेरीतें लोकमाने तेरीतें एबेनयपण माने मांटे लोकपण छकायने हिंसामानेछे तेमएबेनयवादी पणकहेछे तथा ऋजुसूत्र नयवालो प्रतिजीवेंके० जीवजीवप्रतें भिन्नभिन्न हिंसामानेछे एमउघनिर्युक्तिनीवृत्ति मध्येकह्युंछे तेआगलएज गाथामां कहेछे तथाचतदेशःतत्रनैगमस्य जीवेष्वजीवेषुहिं सा तथावक्तारोलोकेदृष्टाः यदुतजीवोनेनहिंसितोविनाशितस्तथा घटोनेनहिंसितो विनाशितः ततश्चसर्वत्रहिंसाशब्दानुवर्तनात् जीवेष्वजीवेषुचहिंसानैगमस्यअहिंसा प्येवमेवेति संग्रहव्यवहारयोःषट्सुजीवनिकायेषु हिंसासंग्रहश्चात्रदेशग्राहीइष्टव्यःसा मान्यरूपश्चनैगमातंर्गवि व्यवहारश्चस्थूलविशेषग्राही लोकव्यवहारपरश्चायंतथा चलोकोबाहुल्येनषट्स्वेवजीवनिकायेषुहिंसासंग्रहश्चात्र देशग्राहीमिछतितिऋजुसूत्रश्च प्रत्येकंप्रत्येकं जीवेजीवेहिंसां व्यतिरिक्तामिछतीति हवेशब्दार्थलखीयेंछैयेंजीवअजीवने विषे नैगमनयने मतेहिंसाकेहेवी एजुक्तके०युक्तछे अनेसंग्रहतथा व्यवहारनयनेमते छकायनेविषेज हिंसामानेछे तथाऋजुसूत्रनेमते जीवजीवप्रतेहिंसाजूदीजुदीमानवी

आत्मरूपशब्दनयतिने ॥ मानेएमअहिंस ॥ उघवृत्ति
जोइनेलहियें ॥ सुखजशलीलप्रसंस ॥ मन० ॥ २५ ॥

अर्थ ॥ आत्मरूपके० आत्मातेजस्वरूपछे माटे हिंसाअथवाअहिंसाते आत्मारूप मानेछे शब्दनयतिनेके० सब्दछेप्रधान जेने एवात्रणनय १ शब्द २ समभिरूढ ३ एवंभूत एत्रणनयमानेछे जेपोतानो आत्मा प्रमादीथयो तिवारे आत्मातेहिंसा अने तेजआ त्मा जेवारे अप्रमादीथयो तेवारें आत्मा तेज अहिंसा यतःआयाचेवअहिंसा ॥ आआहिंसतिनिछउएसो ॥ जोहोइअप्पमत्तो ॥ हिंसउअहिंसउइयरो ॥ १ ॥ इति उघनिर्युक्तिवचनात् पाछलात्रणनयनिश्चयना घरनाछे माटे उघनिर्युक्तिनिवृत्तिनोपाठ पणएमछे यथा॥शब्दसमभिरूढैवंभूताश्चनयाआत्मैवहिंसामिछंतीति ए जेमहिंसा सा तनये फलावी तेमजअहिंसाके० अहिंसापण फलावियें अहिंसाप्येवमेवेतिउघनि र्युक्तिवृत्तिवचनात् ए हिंसानातथाअहिंसानासर्वप्रकार ते उघनिर्युक्तिनीवृत्ति जोइने सु ख जशनीलीलातथा रुडीप्रशंसाते लहियेंके० पामिये एटलेयथार्थ जाणवाथीएट लावाना पामियें ॥ २४ ॥

ढालनवमोचैत्रिपुनमअनुक्रमेंएदेशी

कोइकसूत्रजआदरे ॥ अर्थनमानेसार ॥ जिनजी॥ आपमतिअ
वळुंकरे ॥ भूलातेहगमार॥जिनजी ॥ तुजवयणेंमनराखीयें ॥ १॥

अर्थ ॥ आठमांढालने अंतेसातनयेंकरी हिंसाफलावी तेनयेंकरी हिंसातो तेवारे समजाय जेवारे सूत्रोनी टीका चूर्णितथाजाष्य अनेनिर्युक्ति मानीये तो समजाय पणकेवलसूत्रनो मूलपाठ वांचवाथी नसमजाय केमके जेसूत्रहोय तेसूचनामात्र होय माटेजे अर्थनेनथीमानता तेने शिक्षादेवा सारुं नवमांढालनेआठमांढालसा थेंसंबंधीकरी कहेछे जे कोइकके० जेढुंढक लुंपाक नामनदेवायोग्य माटेकोइक एवुं नामकह्युं ते सूत्रजआदरेके० केवलसूत्रजमानेछे इहां एवकारते वृत्त्यादिकनिषे धवाचकछे तथाअर्थके० टीकाप्रमुखतेनथीमानता जिनजीके० हेरागद्वेषनाजीतण हारहेवीतराग तेकेवाछे आपमतिके० स्वछंदेंचालणहारछे पणआगमानुयायी चाल तानथी अवळुंकरेके० जेटळुंकार्यकरेतेटलुं अवळुंकरेछे माटे तेमूर्खगमार भूलाज मेछे कारणके सूत्रतोगणधरनारच्या अने अर्थतो तीर्थंकरनोकह्यो यतः अत्थंजासइ अरहा ॥ सुत्तंगत्थंतिगणहरानिउणं॥ इतिवचनात् तेमाटे अर्थनी नाकेतां तीर्थंकर नीआशातनाकरेछे माटे अवलुंकरेछे माटे हेप्रजुतमारेवचने मनराखीयें ॥ १ ॥

प्रतिमालोपेपापीआ ॥ योगअनेउपधान ॥ जि० ॥ गुरुनो
वासनसिरधरे ॥ मायाविअज्ञान ॥ जि० ॥ तुज० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ वली तेलोक प्रतिमाने लोपेछे एटले प्रतिमाउथापेछे पणकेवाछे जेपा पीआके० पापीछे शामाटे जेश्रीसमवायांग तथाजगवति तथाज्ञाता अनेउपासक रायपश्रेणी जीवाजिगम जंबूद्वीपपन्नत्ति प्रमुखनेविषेसाक्षात्प्रतिमाकहीछे तेनेलोपी उत्सूत्रबोलेछे अनेजे उत्सूत्रबोलवुं तेश्रीजगवतिसूत्रमां पापकही बोलाव्युंछे तेमाटे पापीयाकह्या तेप्रतिमानोअधिकारतो उपाध्यायजीयें ढुंढीना स्तवनमध्ये कह्योछे मा टे इहांनथीकह्यो वली योगवहेवा तेने लोपेछे कारणके श्रीनंदिसूत्र तथाअनुयोग द्वारसूत्र अनेउत्तराध्ययन ठाणांगप्रमुखसूत्रनेविषे योगपणकह्याछे तेपणउत्सूत्रबोली लोपेछे उपलक्षणथी श्रावकने सूत्रजणावे तेपण निशीथ तथा ठाणांग सुयगडांग व्यवहार उपासकप्रमुखमां नाकहीछे तेवातोपण ढुंढिनास्तवनमां आणीछे तेथीअहीं नथीकहेता माटे पापीछे वली उपधानलोपेछे केमके श्रीमहानिशीथप्रमुखसूत्रमां

उपधानकह्याछे तेलोप्यामाटे पापीकह्या वली गुरुनोवास मस्तकनेविषे नधरे एट लेएनावजे समवायांगसूत्र तथाश्री अनुयोग द्वारसूत्रप्रमुखनेलेखे तथा आवश्यकनि र्युक्तिप्रमाणछे तेमां गुरुनोवास कह्योछे तेलोप्यो माटेपापीकहिये वलीमायावीछे क पटेकरी लोकने नरममांनाखेछे अक्षरार्थ मरडवो तेवक्रता अनेजे वक्रताते माया व ली अज्ञाने नथाछे केमके व्याकरणादिकनणाविना सूत्रवांचेछे तेनघटे· यतः अट्ठकेरिसकंपुणाइं॥सच्चंतुभासियव्वंजंतंदव्वेहिं पज्जवेहियगुणेहिं॥कम्मेहिंबहुविहेहिं॥ सिप्पेहिं आगमहियनामस्कायनिवाउवसगतद्धियसमाससंधिपद हेउ जोगीय उणा दिकिरिया विहाण धातु सरविभत्ति वन्नजुत्तं तेकल्लंदशविहंपिसच्चं जहभणियं तहय कमुणाहोइदुवालसविहायहोइभासावयणंपियहोइसोलसविहं इत्यादि प्रश्नव्याकरण सूत्रमध्येपाठछे माटेजेजाणेतेज्ञानीअन्यथा अज्ञानीकहियें ॥ २ ॥

आचरणातेहनीनवी ॥ केतिकहीयेंदेव॥जि० ॥ नित
त्रुटेंबेसांधता ॥ गुरुविणतेहनीटेव ॥ जि० तुऊ० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ तेढुंढीआनी आचरणाजे बाह्यक्रिया तेसर्व नवीजछे मुखबांधीबाहेरनि कलवुं मांमो राखवोजनही विपाकसूत्रने विरोधी तथा भगवति दशवैकालिक प्रश्न व्याकरणादिकसूत्रथकी विरोधी आचारणा तेहनीकेतिके०केटलीकहीयें एटले घणीछे माटेहेदेव हेआत्माराम हेपरमानंदविलासी वलीतेने निरंतर सांधताथकात्रुटेछे ए टले लोक उखाणोछे जे नवसांधे ने तेरत्रुटे तेउखाणो एनेघरेंछे वलीपूजामां हिंसाब तावे अने पोतेंमरे तेवारेच्छुंकरीयें तथा पोतानेवांदवा आवे तथादीक्षामहोत्सवकरे तेंमां हिंसाथायके नथाय इत्यादिक बहुअधिकारछे पणकेटलोलखाय एमएकवात सांधवागयो एटले गामगामथी त्रुटीगयुं जेमाटे गुरुविना तेनीखराबटेवपडीगयीछे जोगुरुपरंपरागत होयतो कांइअटकेनही किवारें खलायनही संप्रदायविना गामगा मअटकेछे एटले एभावजे नगुराछे माथेकोइनिकल्यो तेवारेपणगुरुनहतो ॥ ३ ॥

वृत्तिप्रमुखजोइकरी ॥ भाषेआगमआप ॥ जि० ॥ तेहज
मूढाउलवे ॥ जेमकुपुत्रनिजबाप ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वृत्तिके० टीका अने प्रमुखशब्दें चूर्णिनिर्युक्ति आदिलेवा तेजोइकरीने आ पके० पोतेआगमने भाषे एटले वृत्तिप्रमुखछानीराखी तेना भावजोइ आगमनोअर्थ ठीकबेशाडे पछेलोकआगले एकलुं सूत्रवांचे एमतेअज्ञानी टीकाप्रमुखनेउलवे कोइपु

छेजेटीकानिर्युक्तिमानोछो तेवारें कहेशोजेनथी मानता जेम कुपुत्रहोयते पोताना बाप ने उलवे एटले बापहोएसादो अनेपोतेहोए छेल पछेकोइपुछेजे आतमारा शासगा छे तेवारें आडोअवलोजवाबआपे तेमटीकाप्रमुखनो उपकार अनेतेनेज नमाने॥४॥

वृत्त्यादिकअणमानता ॥ सूत्रविराधेदीन ॥जि०॥ सूत्रअरथ
तदुन्नयथकी ॥ प्रत्यनीककह्यातीन ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥५॥

अर्थ ॥ वली वृत्त्यादिकके०वृत्तिचूर्णिन्नाष्यने अनुसारें प्रकरणचरित्रादिकनेअण मानताथका तेदीनके०न्नावदयाकरवायोग्य सूत्रनेज विराधेछे सूत्रनीज आशातनाक रेछे श्रीसमवायांगसूत्रें तथानंदिसूत्रेंकह्युंछे आयरेणंपरित्तावायणासंखिज्जाअणुउगा थारासंखेज्जावेढासंखेज्जासिलोगा संखेज्जाउ निज्जुत्तीउसंखेज्जाउ पडिवत्तिउसंखेज्जा उ संघेयणीउ इत्यादिककह्यांछे तेमानेनही तेवारें सूत्रनेविराधेजछे वली१ सूत्रप्रत्यनी क २ अर्थप्रत्यनीक ३ तदुन्नयप्रत्यनीक एश्रीगणांगसूत्रेंकह्याछे यतः सुयंपडुच्चतउ पडिणीयापंतसुत्तपडिणीए अछपणिए तदुन्नयपडिणीए एत्रीजागणाना चोथाउद्दे शेंकह्युंछे एमज न्नगवतिसूत्रना आठमांशतकना आठमांउद्देशामांकह्युंछे तो अर्थप्र त्यनीकतेनिर्युक्त्यादिकजेनथीमानता तेनेकहीयें तेशिवायअर्थप्रत्यनीक तथातदुन्नय प्रत्यनीक तेबीजाकोनेकहीयें तेबतावो ॥ ५ ॥

अक्षरअर्थजएकलो ॥ जोआदरताखेम ॥ जि० ॥ न्नगव
इअंगेन्नाषिउ ॥ त्रिविधअर्थतोकेम ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जोकेवल एकलो अक्षरार्थ मानीयें एटले जेटलुं सूत्र तेटलुंज शब्दार्थ आदरीयें मानीयें अनेतेम मानता तमने खेमके० कुशलछे तोन्नगवतिसूत्रमांत्रिविध के० त्रणप्रकारें व्याख्यान अर्थ कहेवो कह्युंछे तेकेमघटे तथा अनुयोगद्वारें बे प्र कारें अनुगमकह्योछे सुत्ताणुगमेय निज्जुत्तिअणुगमेय तथानिज्जुत्तिअणुगमेतविहेप न्नतेउवगाय निज्जुत्ति अणुगमेइत्यादिक तथाउद्देसे निद्देसे निग्गमे खेत्तकालपुरिसेय एगाथाअनुयोगद्वारमांछे तेनाअर्थकेमकरशोइतिन्नावः ॥ ६ ॥

सूत्रअरथपेहेलोबीजो ॥ निज्जुत्तीयेमीस ॥ जि० ॥ निरवि
शेषत्रीजोवली ॥ इमन्नाषेजगदीश ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ तेजत्रणप्रकारनुं व्याख्यानदेखाडेछे प्रथम सूत्रनो शब्दार्थ शिष्यनेदेवो जेम नमोके० नमस्कारथाउ अरिहंताणंके० अरिहंत रागद्वेषरूपशत्रुहण्या माटे ते

शब्दार्थअवलिरीते आवड्यो तेवारें बीजोके० बीजीवार अर्थकहे ते निर्युक्तियेंमीस के० निर्युक्तिसहित अर्थ कहे हेशिष्य ते अरिहंतचारप्रकारनाछे नाम स्थापना द्रव्य अनेभाव नेदें यतः नामजिणाजिणनामा "ठवणजिणापुणजिणंदपडिमाउ ॥ दव्वजिणाजिणजीवा ॥ भावजिणासमवसरणत्था ॥ १ ॥ इत्यादिक एम बीजीवार अर्थआवड्यो पछे त्रीजीवार फरी एजपदनो अर्थ निरविशेषके० समस्तरीतें कहे एटलेसंगेप्रसंगे सर्वकहे नैगमादिकनयपण शक्तिहोय तोफलावे तेना साधनकहे उदाहरण जे अरिहंतने नमस्कारनुं फलकहे इत्यादिक एटले एभावजे प्रथम अर्थमां टीकाचूर्णि अनेबीजाअर्थमां निर्युक्ति तथात्रीजाअर्थमां भाष्यआव्युं एम हेजगदीशतुं भाषेके० भगवतिनाशतक २५ मांना त्रीजा उदेशामां कहेले सुत्तथोखलुपढमो बीउनिर्युक्तिमीसउभणीउ ॥ तइउयनिरविसेसोए ॥ सविहिहोइअणुउगो ॥ १ ॥ एगाथा नंदिसूत्रमध्येपणछें तेमाटेअर्थप्रमाणकरेतो खेमथाय ॥ ७ ॥

छायानरचालेंचले ॥ रहेथितितसजेम ॥ जि० ॥ सूत्रअ
रथचालेचले ॥ रहेथितितसतेम ॥ जि० ॥ तुऊ०॥ ८ ॥

अर्थ॥ जेमनरके० पुरुषनीछाया तेजेवारें पुरुष चाले तेवारे छायेडी पण चाले अने रहेके० पुरुषउभोरहे तेवारे तसके० तेछायानीपण स्थितिके० रहेवुं थाय जेम ए तेम सूत्रअने अर्थमांपण एमज भाववुं सूत्रनीचाले अर्थ चलेके० चाले रहेके० सूत्ररहे तेवारें तसके० ते अर्थनुंपण थतिके० रहेवुंथाय ॥ ८ ॥

अर्थकहेविधिवारणा ॥ उभयसूत्रजेमठाण ॥ जि० ॥ तेम
प्रमाणसामान्यथी॥ नविप्रमाणअप्रमाण ॥ जि०॥तुऊ०॥ ए॥

अर्थ ॥ वली अर्थके० टीकाप्रमुखहोय तेजसमजावे अनेविधिके० विधिवाद तथा वारणाके० निषेधसूत्र तथा उभयसूत्रके० विधिसूत्र तथानिषेधसूत्र एबेहु सूत्रजेमठाणके० ठाणांगसूत्रमध्येकह्याछे यथा ॥ नोकप्पइनिग्गंथाणवानिग्गंथिणवाइमाउ ॥ उद्दिठाउगणियाउवचितजिताउपंचमहणवाउमहानदिउ अंतोमासस्स डखुत्तोवा तिखुत्तोवाउत्तरिएसं तरित्तएवा तंगंगाजऊणासरस्सइ एरावतिमही इति एरीतें निषेधकरीने वली भगताज सूत्रमांआज्ञाकरी यथा पंचहिंठाणेकप्पंतितंभयंसिवाडु निरकंशिवापवहे जंचणंकोइतेदउग्घंसिवाएज्जमाणं सिमहत्तावायणारितेहिइति एबे सूत्रकंह्यां एकविधिनुं एकनिषेधनुं एवेमांकेह्युंसूत्रप्रमाणकरियें अनेकेह्युंसूत्र अप्रमा

एकरियें इहां एके अप्रमाण नथायइतिनावः हवे पळवाडाना बेपदनो अर्थकहेळे तेमके० तेरीतेजेम ठाणांगमध्ये बेहुसूत्र देखाड्या तेम सामान्यप्रमाण जेसूत्रळे ते सूत्रथी नविप्रमाणअप्रमाणके० इहांसामान्यपदळे तेमाटेजाणियेंछैयें जेविशेषपद बाहारथीलावीयें तेवारेएम अर्थथाय जेविशेषप्रमाण तेटीकाप्रमुख तेनविअप्रमा णके० अप्रमाणनथी एटलेएनावजे प्रमाण बेप्रकारना एकसामान्यप्रमाण बीजुं विशेषप्रमाण तेमां सामान्यप्रमाण तेसूत्रकहीयें जेमां सामान्यपणे सूचनामात्रें कह्युं होय अने विशेषप्रमाणते अर्थटीकाप्रमुखनेकहीयें जेमां विस्तारीनेकह्युंळे एबेप्रमाणळे तेमां सामान्यप्रमाणखरुं अने विशेषप्रमाणखोटुं एम नकेहेवाय सा मान्यप्रमाणथी विशेषप्रमाण तेअप्रमाण केमथाय इतिनावः ॥ ए ॥

अंधपंगुजेमबेमळे ॥ चालेइच्छितठाण ॥ जि० ॥ सूत्रअरथ
तेमजाणीयें ॥ कल्पनाष्यनिवाण ॥ जि०॥ तुऊ० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ जेम अंध लोचनहीन अनेपंगुके० चरणहीन एबेमलीने चालेइच्छितठा णके० वांछितस्थानकनेविषे चाले तेमसूत्र तथाअर्थजे टीकाप्रमुख मलीने यथार्थ स्थानकेंअर्थ जोडीशकीयें एमकल्पनाष्यनीवाणीळे ॥ १० ॥

विधिउद्यमनयवर्णना ॥ उत्सर्गहअपवाद ॥ जि० ॥ तदुनय
अर्थेजाणीयें ॥ सूत्रनेदअविवाद ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ वली १ विधिसूत्र २ उद्यमसूत्र ३ नयसूत्र ४ वर्णवसूत्र ५ उत्सर्गसू त्र ६ अपवादसूत्र ७ तदुनयसूत्र एसर्वसूत्रनानेदनीखबर अर्थथीजणायें नहीतो शीखबरपडेजे आसूत्रते शीअपेक्षायुंळे यथा ॥ संपत्तेनिरकुकालंमि ॥ असंनंतोअ मुच्छिउ इम्मेणकम्मजोगेणं॥ नत्तंपाणंगवेसए ॥१॥ एदशवैकालिकनापांचमांअध्ययने कह्युं इत्यादिकविधिसूत्रकहीयें तथा डुमपत्तयपंडुयए॥ जहानिवडइरायगणाणअच्च ए एवंमणुआणजीवियंसमया॥ गोयमामायमायए॥ इत्युत्तराध्ययननेदशमाध्ययनेकह्युं इत्यादिकउद्यमसूत्रकहीयें अने नरकनेविषे मांसरुधिरादिकवर्णवीकहेवा यथा॥उत्त राध्ययनेमृगापुत्रअध्ययनमां तथा सुयगडांगना नरकविनत्तिअध्ययनमां तेपरमार्थें मांसादिक नथी पणनयसूत्रळे यतः नरएसुमंसरुहिराइ ॥ वजंपसिद्धिमित्तेणं॥ नय हेउइहरतेसिं ॥ विउव्वियपावउनतयं ॥ १ ॥ इत्यादिक नयसूत्र यथा ऋद्धित्थमिय समिद्धाइत्यादिकउववाइ ज्ञाताधर्मकथाप्रमुखनेविषे प्रायेंसूत्रळे तेवर्णवसूत्रळे वली

इच्चेसिंठन्हजीवनिकायाणं मेवसयंदंडसमारंभेज्जा इत्यादिक छजीवनिकायना रक्षक प्रमुखआचारांगादिकसूत्रनेविषे तेउत्सर्गसूत्रजाणवा तथाछेदग्रंथतेप्रायें अपवादसूत्रछे अथवा नयालभिज्जानिउणंसहायंगुणाहियं वागुणउंसमंवा ॥ इकोविपावाइ विवज्जयंते विहरिज्जकम्मेसुसज्जमाणो इत्यादिक अपवादसूत्रजाणवा तथा जे मां उत्सर्ग अने अपवादसाथेकहेवाय तेतदुभयसूत्रकहीयें जेम अछ्झाणाजावे समंअहिआसियव्वउवाहि ॥ तझावंमिउविहिणा ॥ पडियारपवत्तणंनेयं ॥ १ ॥ इत्यादिकअनेकप्रकारना स्वसमय परसमय निश्चय व्यवहार ज्ञानक्रियादिक नानाप्रकारें नयमतनाप्रकाशक सूत्रनाजेभेद तेअविवादपणेके० जेमांझगडोनथछे एरीतें स्वस्थानकें अर्थथीजोडाय ॥ ११ ॥

एहभेदजाण्याविना ॥ कंखामोहलहंत ॥ जि० ॥ भंगंतर
प्रमुखेंकरी ॥ भाष्युंभगवइतंत ॥ जि० ॥ तुझ० ॥ १२ ॥

अर्थ॥तोएपूर्वोक्तभेद जाण्याविना भंगंतरप्रमुखेकरीने कंखामोहके० मिथ्यात्वमोहनीने लहंतके० वेदे एमभगवतिसूत्रमां तंतके० निश्चेंभाष्युंछे एटले एभावजेसूत्रतो विविध आशयनाहोय तेआशयनीजेवारेंमालमपडे तेवारें मनमां शंकाउपजेकेआख रुं के आखरुंएवीशंकाथाय अनेजेशंका तेमिथ्यामोहनीथाय तथाचोक्तंभगवत्यांगे प्रथमशतके तृतीयउद्देशके अछिणंभंतेसमणाविनिग्गंथाकंखामोहणिज्जंकम्मंवेदेति हंता अछिकहणंभंतेसमणाविणिग्गंथा कंखामोहणिज्जंकम्मंवेदेतिगोयमा तेहिंतेहिंनाणंतरेहिंदंसणंतरेहिं चरित्तंतरेहिं लिंगंतरेहिं पवयणंतरेहिं पावयणंतरेहिं कप्पंतरेहिंमग्गंतरेहिं मतंतरेहिं भंगंतरेहिं णयंतरेहिं णियमंतरेहिं पमाहिंणंतरेहिं संकित्ता कंखित्ता वितिगिछिता भेयसमावन्ना कलुसमावणा एवंखलुसमणा निग्गंथाकंखामोहणिज्जं कम्मंवेदेतिइति एनासमाधान भगवतिनीवृत्तिथी जोइलेजो तेमाटेटीकाप्रमुख अर्थ जाण्याथीज सर्वसमाधानथाय आम्नायपामियें पण केवल सूत्रेंज नपामियें इहां भंगंतरप्रमुखेकह्युं तेमध्यग्रहणेआद्यंतयोर्ग्रहणमितिन्यायात् णाणंतरेहिं पदपणलेवा॥१२

परिवासितवारीकरी ॥ लेपनअशनअशेष ॥ जि० ॥ कारण
थीअतिआदरया ॥ पंचकल्पउपदेश ॥ जि० ॥ तुझ० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ परिवासितके० रात्रें वासीराखवुं तेवारीकरीके० वारीने एटले मुनीने संनिधिमात्र पणराखवुं ते रात्रें नघटे एहवुं छतेकहेछे लेपनके० विलेपन अथवा कु

सुमवासिततेलप्रमुख अने अशनके० आहारतथा अशेषशब्दें प्रमुख जेवा तेवारीने वली कारणथी अतिके० अत्यंतकारणे आदस्यांके० तेमुनीयें अंगीकारकस्यां एटले वासीराख वानी मुनीने आज्ञाकरी तेपंचकल्पग्रंथनो उपदेशछे उपलक्षणथी निशीथनेविषे पण कह्युंछे यतः ननुउषधादिसंनिधिः क्रियतेनवा उच्यते उत्सर्गेणनकल्पते कारणेतुनवत्थ पि तथाहिवोछिन्नमंडवनामयछडुज्जोयणन्यंतरउंगामघोसाइनछितछतुरिएकज्जेनल प्नइअउंतछछिन्नमंडबेउंसहगणेपरिवासिज्जाइइतिनिशीथे तेमाटे एकारणादिक प्रका रतेटीकाप्रमुखविना जणायनही ॥ १३ ॥

वर्षागमननिवारीउ ॥ कारणेंजाण्युंतेह ॥ जि० ॥ ठाणंगे
श्रमणीतणुं ॥ अवलंबादिकजेह ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ वर्षागमनके० चोमासानेकाले विहारकरवानुं निवार्युंछे श्रीठाणांगना बीजाउद्देशामध्ये यतः णोकप्पतिनिग्गंथाणंवानिग्गंथीणंवा पढमपाउसंमिगामाणुगा मंडुत्ति जित्तएइति तथा कारणेजाण्युंतेहके० तेजवर्षाकालमां कारणथी विहारकर वानी आज्ञाकरी तेपणठाणांगसूत्रना पांचमा ठाणाना बीजा उद्देशामांकह्युंछे यतः पंचहिठाणेहिकप्पंतितंजयंसिवा डुन्निरकंवा जावमहतावाआणारिएहिं इतितथात त्रैववासावासंपज्जोसवियाणं नोकप्पति निग्गंथाणवा निग्गंथीणवागामाणुगामेडु इज्जितंएवंपंचहिठाणेहिं कप्पतितं णाणठयाए दंसणठयाए चरित्तठयाए आयरिय उवज्झाएवा संविसुज्जेज्जाआयरियउवज्झायाणंवा वहिता वैयावच्चकरणयाएइति व लीएजश्रीठाणांगनेविषे श्रमणीके० साधवीने अवलंबनके० आलंबेतो प्रभुनी आ ज्ञा अतिक्रमेनही यतः पंचहिठाणेहिंसमणेनिग्गंथे निग्गंथि गेन्हमाणेवा अवलंव माणेवा णातिक्कमतितंनिग्गंथिचणं अन्नयरे पसुजातितेवा परिकजातिएवा उच्छातेज्जा तत्थनिग्गंथे निग्गंथि गेन्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णातिक्कमतिनिग्गंथे निग्गंथि डुग्गंसिवा विसमंसिवा परकलमाणिंवा पवडमाणिंवा गेन्हमाणेवा अवलंबमाणे वा णातिक्कमतिनिग्गंथे निग्गंथि सेयंसिवा पंकंसिवा पणगंसिवा उदगंसिवा उक्कु माणिवा उवुज्जमाणिवा गेन्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णातिक्कमति निग्गंथे नि ग्गंथि णावंआरुहमाणेवा उरुंनमाणेवा जावणातिक्कम निरकत्तइत्तं जरकतिउंजा वजत्तपाणपडियाइरिकतं निग्गंथे निग्गंथि गेन्हमाणेवा अवलंबमाणेवाणातिक्कमति इत्यादि एउपलक्षणथी साधुसाधवी एकस्थानके नेलावसे एवापणआलावा श्रीठाणांगमध्येछे तेकेटलाक लखाय अने वलीनवमेठाणे ब्रह्मचेराकह्या तेमांस्त्री

नाअंगोपांग जोवानही तथा नीतने आंतरे वसवुंनही एमकह्युं तेवाततो प्रसिद्ध छे माटे प्रतिपक्षीआलावो उपाध्यायजीयें संनाख्योनही तेथी अमे लख्यो पण नही तो वृत्यादिकविना केम बंधबेशेइतिनावः ॥ १४ ॥

आधाकर्मादिकनही ॥ बंधतणोएकंत ॥ जिन० ॥ सुयग
मेंतेकेमघटे ॥ विणवृत्यादिकतंत॥ जिन० ॥ तुज०॥ १५ ॥

अर्थ ॥ आधाकर्मी आहारकरवो ते नहीके० नथीकह्यो बंधतणो एकंतके० कर्मबंधनो एकांतनथी एटले एनावजे आधाकर्मी आहारकरतां कर्मबंधाय पणखरुं अनेवली नबंधाय एम पण कह्युं श्रीसुयगडांगसूत्रमध्ये तेकेमघटे यतः आहागडा इत्तुंजंति अणमणेसकम्मुणा उवलित्तेवियाणिज्जा अणुवलित्तेतिवापुणो ॥ १ ॥ एते हिंदोहिंगणेहिं ववहारोणविज्जइ॥ एतेहिंदेहिंगणेहिं आणायारं तुजाणए ॥ २ ॥ एसुयगडांगना २१ मांअध्ययनेछे माटेएवीवातोते टीकाप्रमुखविनाकेम सूत्रस्पष्टथाय

विहरमानगणधरपिता ॥ जिनजनकादिकजेह ॥ जिन० ॥ क्रम
वलीआवश्यकतणो ॥ सूत्रमात्रनहीतेह॥ जिन०॥ तुज०॥१६॥

अर्थ ॥ वली विहरमानके० विचरता वीसतीर्थंकर तथा तेओनागणधर अने तेओना पिता उपलक्षणथी माता लंछन नगरी विजय परिवार केवलीप्रमुख तेसूत्रमां जडेनही अथवा जेम वीस वेहरमानना गणधर तेमज उपलक्षणथी ऋषभादिकना गणधरपण सर्वसूत्रमां नथी तथागणधरोना पिताप्रमुख सूत्रमात्रेनथी तथा जिनके० चोवीसतीर्थंकरना मातापिता उपलक्षणथी बीजोपणपरिवार तेसर्वे सूत्रमां नथी ते आवश्यकादिक माने तोज जडे वली आवश्यकजे उजयटंक पडिकमणुंकरवुं तेहनोजे क्रमके० अनुक्रम ते जे अमुक पछे अमुक कहेवुं इत्यादिक सूत्रमात्रनहीके० मात्रएकलासूत्रमां नलाने एवी घणीवातोछे तेकेटलीलखाय पण प्रकरण निर्युक्त्यादिकमाने तोपारपडे नहीतो गोथांज खाय ॥ १६ ॥

अर्थविनाकेमपामियें ॥ नावसकलअनिबद्ध ॥ जि० ॥ गुरु
मुखवाणीधारतां ॥ होवेसर्वेसुबद्ध ॥ जि० ॥ तुज० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ वली अर्थके० टीकाप्रमुखविना केमपामियें सकलके० समस्त अनिबद्ध के० अणीबद्ध तेदूरथी ते छेडालगें सर्ववात केमजडे सूत्रमांतोलगारेक नाम मात्र

कहे संपूर्णतो टीकाप्रमुखमां लाने अथवा अनिबद्धके० सूत्रमांनथी बंधाणा एवा नावतो घणा रह्याछे अत्यंत थावरमांथी आवीजेम मरुदेवाजी मोक्षेंगया इत्यादिक वगरबांध्या पांचसो आदेशछे तेसर्वे केवल सूत्रेज केवीरीते गम्यमान थाय तेमाटे गुरुआदिकना मुखनी वाणी सांनलीयें जे संप्रदायिक होय तेधारताथकां होवेसर्वेसुबद्धके० सर्वसुबद्धथाय सुयुक्तिवंतथाय ॥ १७ ॥

पुस्तकअर्थपरंपरा॥सघलीजेहनेहाथ ॥ जि० ॥ तेसुवि
हितअणमानतां ॥ केमरहेसेनिजआथ॥जि०॥तुऊ०॥१८॥

अर्थ ॥ पुस्तक जेअंगोपांगादिक अक्षरन्यासरूप अर्थटीकाप्रमुख जेगुरुसंप्रदायनी परंपरा तेसर्वेजेने हाथेछे एवाजे सुविहित शुद्धमार्गना परुपनार तेहने अणमानतां एटले अंगीकार कर्याविना केम रहेशे निजआथके० पोतानी समकितरूप जे लक्ष्मी तेशीरीते रहेशे ॥ १८ ॥

सदगुरुपासेशिखतां॥ अर्थमांहेनविरोध॥जि० ॥ हेतुवाद
आगमप्रतें ॥ जाणेजेहसुबोध ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे स्वछंदापणुं टालीने सद्गुरुपासे विनयादिकेंकरीने सूत्रना अर्थ जे टीकाप्रमुख तेधारताथकां तेमां कांइविरोधनथी एटले तेमूर्खलोक एमजाणेछेजे सूत्रमां विरोधनथी अने अर्थमां विरोधछे पण गुरुमुखे शीखताथकां कांइ विरोध छेजनही तथा एरीते गुरुपासें धारतां हेतुवाद कहेतां कारणनिमित्तवाद एहवो आगमजे सिद्धांत तेनेजाणे जेथकीसुबोधके० नलोबोधथाय ॥ १९ ॥

अर्थेमतनेदादिकें ॥ जेहविरोधगणंत ॥ जि० ॥ तेसूत्रे
पणदेखशे ॥ जोजोशेएकंत ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ वली अर्थेके० टीकाप्रमुखनेविषे मतनेदादिकेंके० कोइमतनेदें कोइ वाचनांतरनेदें नेदपणुं देखीने जे विरोध गणेछे अने कहेछेजे टीकाप्रमुख विरोधीछे मलतानथी तोकेम मानीयें तेहने कहेछेके जेप्राणी टीकाप्रमुखमां विरोधपणुं जोशे तेसूत्रमांपण विरोधपणुं देखशे जोएकांते निश्चेकरी जोशे तो सूत्रमां पणघणो विरोधछे तेकेम नथीजोता इतिनावः ॥ २० ॥

संहरताजाणेनही॥ वीरकहेएमकल्प ॥ जि० ॥ संहरतां
पणनाणनो ॥ प्रथमअंगछेजल्प॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ हवे तेज सूत्रना विरोधिपणाने देखाडेछे जे देवानंदानी कुखथी लेइने त्रिसलादेवीने कुखे संह्रताके० संह्रया तेसंह्रता वीरस्वामीयें जाण्युंनही एमश्री कल्पसूत्रमां कह्युंछे यथा ॥ साहरिजिस्सामित्तिजाणइ ॥ साहरिज्जमाणेनजाणइ साहरीएमतिजाणइ इतिपागत् तथा वीरस्वामीने हरणगमेषीये संह्रया तेअवसरे प्रथमअंगजे श्रीआचारांगतेमां ज्ञाननो जल्पके० शब्दछे एटले एनावजे संह्रताथ का प्रज्जुयेंजाण्युं एमकह्युंछे तथाचतत्सूत्रंसाहरिज्जिस्सामित्तिजाणइ साहरिमित्तिजाण इ साहरिज्जमाणेविजाणइ सेसमणाउसोइतिपंचदशेनावनाध्ययने इतिविरोधः२१॥

ऋषनकूटअडजोयणो ॥ जंबूपन्नत्तिसार ॥ जि० ॥ बारव

लीपागंतरें ॥ मूलकहेविस्तार ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ वली ऋषनकूटनुं आठयोजन मूलविस्तारछे एमजंबूद्वीपपन्नत्तिसूत्रमां कह्युंछे यतः एछणंउसनकूडेनामकूडेपन्नते अछजोयणाइंउछं उच्चत्तेणं दोजोयणाइं उव्वेहेणंमूलेअछजोयणाइंविरकंत्तेणंमज्झेछजोयणाइंविरकंत्तेणं उवरिचत्तारिजोयणाइं विरकंत्तेणंइत्यादिक जंबूद्वीपपन्नत्तिनोपाठछे सारके० प्रधान एहवी जंबूद्वीपपन्नत्तिकहे छे गाथानोअर्थअन्वयकरी करियें एटले एकपाठतो ए कह्यो वली एज जंबूद्वीप पन्नत्तिमां पागंतरे बीजोपाठछे तेमां बारजोजन मूलेविस्तार कह्योछे तेकेम मले एकज सूत्रमां बेपाठशा सर्वज्ञना ज्ञानमांफेरनथी तोसंदिग्धवचन केमहोय इति नावः तथाचतत्पाठः मूलेबारजोयणाइंविरकंत्तेणं मज्झेअछजोयणाइंविरकंत्तेणं उप्पिं चत्तारिजोयणाइंविरकंत्तेणंइत्यादिकपाठजोजो केवलसूत्र मेलवी आपजो ॥ २२ ॥

सत्तावनसयमल्लिनें ॥ मणनाणीसमवाय ॥ जि० ॥आठस

याज्ञाताकहे ॥ एतोअवरउपाय ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ श्रीमल्लिनाथस्वामीनें सत्तावनसो मनपर्यवज्ञानी श्रीसमवायांगसूत्रमध्ये कह्यांछे यतः मल्लिस्सणंअरहंतोसत्तावन्नंमणपज्जवन्नाणीसयाहोछाइति ॥ तथा श्री ज्ञातासूत्रमध्ये मल्लिनाथस्वामीनेज आठसो मनपर्यवज्ञानी कह्याछे यथा अछस यामणपज्जवनाणीणं एम श्रीसमवायांगसूत्र तथाज्ञातासूत्र मल्युंनहीएविरोध एतो अवरउपायके० एमेलववानो उपायतो अन्यजछे तेतो गीतार्थज्ञानीजाणे॥ २३ ॥

उत्तराध्ययनेस्थितिकही॥ अंतरमुहूर्त्तजघन्य॥जि०॥वेदनी

यनीवारते ॥ पन्नवणामांअन्य ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ तथा श्रीउत्तराध्ययनसूत्रमध्ये वेदनी कर्मनी स्थिति जघन्य अंतरमुहूर्त्त कहीछे यतः उदहिसरिनामाणं तीसइकोडिकोडिउ उक्कोसियाठिइहोइ॥ अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१॥ आवरणिज्जाणदुण्हंपि॥ पिवेयणिज्जेतहेवय॥अंतराएयकम्मंमिठिइएसा वियाहिया ॥२॥ इत्युत्तराध्ययनअध्ययन ३३ मांमध्ये कह्युंछे वली तेजवेदनी कर्मनीबा रमुहूर्त्तजघन्यस्थिति श्रीपन्नवणासूत्रमध्येकहीछे यथा ॥ सायावेयणिज्जस्स ॥ इरिया वहियबंधगंपडुच्च॥जहण्णंमणुक्कोसेणं॥दोसमयासंपराइय॥बंधगंपडुच्चजहण्णेणं ॥ बार समुहुत्ताउक्कोसेणं॥पण्णरससागरो॥वमकोडाकोडिउ॥इत्यादिपन्नवणामध्येकह्युं तोतेउ त्तराध्ययननीसाथेमल्युंनही माटे विरोध तेतोअन्यके० जुदीजवातछे ॥ २४ ॥

अनुजोगधारेकह्या ॥ जघननिखेपाचार ॥ जि० ॥ जीवा
दिकतोनविघटे ॥ द्रव्यन्नेदआधार ॥ जि० तुज० ॥ २५ ॥

अर्थ ॥ वली श्रीअनुयोगद्वारसूत्रनेविषे एम कह्युंछे के जेवस्तुना जेटला निखेपा करवाना तारीबुद्धीथाय तेवस्तुना तेटला निखेपातुं तिहांकरजे पण कदाचित घणा निखेपा तुं नजाणे तिहांपण चारनिखेपातो अवश्यकरजे एटले एमआव्युंजे जघन्य थीचारनिखेपातो सर्वत्रकरवा पणचारथीउंछातोहोयजनही १ नाम २ स्थापना ३ द्रव्य ४ नाव एचार अवश्यकरवा यतः जछयजंजाणिज्जा निरकेवंनिरकेवेनिरवसेसं ॥ जछवियनजाणिज्जा ॥ चउक्कयंनिरकेवेतछ ॥ १ ॥ इत्यनुयोगद्वारसूत्रे तेवारे जीवादि कशब्दनानिखेपा नविघटेके० घटेनही शामाटे जे द्रव्यनिखेपो नेदआधारके० निन्न आधारेथाय केमके जेनावनुंकारण तेद्रव्य तेवारे जीवनो द्रव्यनिक्षेपो केमथाय जेनावजीवथावानुं कारणहोय तेद्रव्यजीव कहेवाय तेतोज्ञानादिक गुणेहीणतो जी वहोयनही दव्वंपज्जवविउयं ॥ दव्वविउयायपज्जवानछि॥इतिवचनात् तेमाटे मंमूख नी जटाना नारनीपरें समस्तधर्मेरहित कोइपदार्थजनथी तोएद्रव्यनिक्षेप जीवादिक मांशून्यछेआदिशब्दथी बीजापणजीवादिकलीजीयें जेमद्रव्यदेवमुनिराजनेकहियेंतेमद्र व्यजीवकोनेकहेशोतेनासमाधानतोपंचांगीप्रमुखथीनीकले अत्रार्थेतत्त्वार्थवृत्तिजोजो

एमबहुवचननयंतरें ॥ कोइवाचनान्नेद ॥ जि० ॥ एमअर्थें
पणजाणीयें ॥ नविधरीयेंमनखेद ॥ जि० ॥ तुज० ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ एरीते बहुके० घणा सइकडोगमेवचनविरोधलागे अल्पबुद्धीवालाने ए वापाठ सूत्रमध्येछे तेकोइ स्थानकें नयनेदनेदेंव्याख्याहोय अने कोइस्थानकें वा

चनाभेदके० वल्लभी तथा मथुरी एवे वाचना थइ तेथीभेदथयो एमउपलक्षणथीमतां तर प्रमुख लिपिदोष पणलइये एवीरीते जेमसूत्रमांभेदछे तेमज अर्थंके० टीकाप्र मुखनेविषेपण नयांतरेकरी वाचनांतरेकरी कोइस्थानके भेदआवे तेमाटे टीकाप्रमु ख देखीने मनमांखेदनधरीयें सूत्रतथाअर्थबराबरछे ॥ १६ ॥

अर्थकारथीआजना ॥ अधिकाशुभमतिकोण ॥ जि० ॥ तोले
अमियतणेनहि ॥ आवेकहियेंलूण ॥ जि० ॥ तुज० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ अर्थकारके० जेनिर्युक्तिकार टीकाकार तेथकी आजनाजेआधुनिकमां अधिकाशुभमतिनाधणी कोणथया एटले एभावजे समुद्रजेवीबुद्धीनाधणी टीकाका रतथाचौदपूर्वनाधणीनिर्युक्तिकार तेथी शुभमतिकोणथया एटले शुभमतिनहीज थ याइतिभावः लोकमांउखाणोछे जेखांडना खानार तेरीतना एशुभमतिजाणवा पण कोइकाले लूणजेनीमक तेअमृतने तोले आवेनही ॥ १७ ॥

राजासरिखुंसूत्रछे ॥ मंत्रीसरिखोअर्थ ॥ जि० ॥ एमांएके
हेलीत ॥ दियेसंसारअनर्थ ॥ जि० ॥ तुज० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे राजासरिखुंके० चक्रवर्ति बराबरसूत्रछे अने मंत्रीसरिखो अर्थछे एटले राजानोआशय मंत्री जाणे तेम सूत्रनोआशय अर्थकारकहे बीजो कोइसूत्र नोआशय जाणेनही एमांके० एवेहुमांथी एकेहेलीउके० एकने निंदताथकां दिये संसारअनर्थके० संसारनोअनर्थआपे भवपरंपरावधारे ॥ १८ ॥

जेसमतोलेंआचरे ॥ सूत्रअर्थसुंप्रीति ॥ जि० ॥ तेतुजक
रुणायेंवरे ॥ सुखजशनिर्मलनीति ॥ जि० ॥ तुज० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ माटेजे आत्मार्थिप्राणीते सूत्र तथाअर्थ बेहुने समतोलें सरिखीरीतें अंगीकारकरे प्रीतिराखे अवज्ञानकरे तन्मयकरीजाणेतेप्राणीहेप्रभुतमारीकरुणाके० दयायेंकरीने सुखंतेनिराबाधपणुं अनेजशकीर्त्ति तथानिर्मलजे नीतिके० न्याय ते वरेके० पामे ॥ १९ ॥ हवे दशमो ढालकहेछे तेने नवमां ढालसाथेए संबंधछे जेपूर्वढालमां सूत्र तथाअर्थमां एकनी हीलनाकरेतो तेनेसंसार वधेएम कह्युं तेसू त्रतथाअर्थ तो ज्ञानस्वरूपछे वास्तेएदशमांढालमांज्ञाननुंवरणनकरेछे ॥

ढाळदशमोआपबंदेखबीलाबलवरेएदेशीछे

ज्ञानविनाजेजीवनेरे ॥ क्रियामांछेदोषरे॥ कर्मबंधछेतेहथी
रे ॥ नहिसमसुखसंतोषरे ॥ १ ॥ प्रभुतुझवाणीमीठडीरे॥
मुझमनसंदेहजसुहायरे ॥ अमीयसमीमनधारतारे ॥ पाप
तापसविजायरे॥ प्रभुतुझवाणीमीठडीरे ॥ २ ॥ एआंकणी

अर्थ ॥ ज्ञानविना जेजीव केवलक्रियारुचिछे तेमां घणादोषनी उत्पत्तिछे तेअ ज्ञानक्रियाथी कर्मबंधजथायछे पणसमसुखसंतोषके० समतानासुख जेमां परभाव नीईहानही एहवो जेसंतोषते अज्ञानी क्रियाकरतोहोय तेहने थातो नथी यतः ना णगुणेहिंविहिणा ॥ किरियासंसारवद्धणीभणिया धम्मरुइएहवमित्ता नाणसमेयास याहुज्जा॥१॥ एयोगनी वीसीमध्ये कह्युंमाटे हेस्वामी तमारीवाणी घणीज मीठीलागेछे मारामनमांसेहेज सोहायछे पणकोइना बलात्कारथीनही तेअमृतसरिखीतमारीवाणी नेमनमांधारताथका पापरूप तापके० उष्णता तेसर्वमटीजायनेशीतलताथाय ॥२॥

लोकपंतिकिरियाकरेरे ॥ मनमेलेअन्नाणरे॥भवइच्छानाजो
रथीरे ॥ विणशिवसुखविन्नाणरे ॥ प्रभु० ॥मुझ० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ लोकपंतिके० लोकनी हारमां लोकानुजायी क्रियाकरे मनमेलेके० शुद्ध अध्यवसायविना अन्नाणके० अज्ञानीजीवते भवजे संसार तेनीइच्छाना जोर थकी एटले बहुलसंसारीजीवछे शिवसुखना विज्ञानविना एटले जेक्रियाकरे तेपण ज्ञानविना उपशमानप्रतिष्ठानेअर्थेकरे ॥ ३ ॥

कामकुंभसमधर्मनुंरे ॥ मूलकरीएमतुच्छरे ॥ जनरंजनकेवल
लहेरे ॥ नलहेशिवतरुगुच्छरे ॥ प्रभु० ॥ मुझ० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ कामकुंभ सरिखो मोक्षसुखनोआपनार एवोजेधर्म तेनुंउपशमादिक तुच्छ मूलकरीने तेप्राणीकेवल जनरंजनके० लोक रीजे एटलुंज फलपामे पणअज्ञानक्रि याथी मोक्षरूपजेवृक्ष तेनो गुच्छके० गुच्छो उपलक्षणथी फललीजीयें तेनपामे ॥४॥

करुणानकरेदीननीरे ॥ विणपणिहाणसनेहरे ॥ द्वेषधर
तातेदुःसुंरे ॥ देगआवेतेहरे ॥ प्रभु० ॥ मुझ० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवे षोडशकमां पांचगुण आशयविशेष देखाडेचाळे यथात्तृतीयषोमश के १ प्रणिधि २ प्रवृत्ति ३ विघ्नजय ४ सिद्धि ५ विनियोग नेदतःप्रायधर्मज्ञैरा ख्यातःशुनाशयःपंचधा त्रिविधौ एपांचनेद अन्वयरीतें श्रीहरिनद्रसूरियें देखाडेचाळे ते श्रीजशोविजयउपाध्यायजी व्यतिरेकें देखाडेले तेमां प्रथमप्रणिधाननामाआ शयकहेले जेहीनके० पोतायकी हीणगुणीले एटले हीणगुणगणेवर्त्ते तेहनी करु णानकरे विणपणिहाणसनेहके० प्रणिधाननामाआशयविशेषना सनेहविना हीन नीकरुणानकरे वलीहीनगुणी ऊपरद्वेषकरतायकां जेएमांशागुणले इत्यादिक द्वेषध रतां तेपोतेंज हेगआवे ॥ ५ ॥

एककाजमांनविधरेरे ॥ विणप्रवृत्तिथिरनावरे ॥ जिहांतिहांमो
होडुंघालतांरे ॥ धारेढोरस्वनावरे ॥ प्रनु० ॥ मुऊ० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवे प्रवृत्तिनामाआशय वखाणेले विणप्रवृत्तिके० प्रवृत्तिनामागुणवि ना एककाजमांके० एकजेधर्मकार्यमांमंड्युं तेमां नविधरेके० नराखे थिरनावके० थि रतानाव एटलेएककाजमां थिरनही अने प्रारंनितकार्यमां तेवोप्रयत्ननही एमपण समजवुं जिहांतिहां मुखघालतो एटले जेधर्मस्थानक मांम्युंले तेमूकीने अकालें फलवांळे अनेअकालेंफल वांछवुंते तत्वथीआर्त्तध्यानले तेवारे जिहांतिहां मोहोळुं घालतां ढोरनोस्वनावधरेले जे खावा मूक्युंहोय तेमूकीने बीजामां मुखघाले ॥ ६ ॥

विनाविघनजयसाधुनेरे ॥ नविअविछिन्नप्रयाणरे ॥ किरियाथी
शिवपुरीहोयरे ॥ केमजाणेअन्नाणरे ॥ प्रनु० ॥ मुऊ० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवेत्रीजो विघ्नजय बतावेले विघनके० अंतराय तेनो जयके० जीतवुं तेविघ्नजयनामागुणविना साधुने मात्रक्रियायेंकरी अविछिन्नप्रयाणकेमथाय एटले मोक्षमार्गे अविछिनपणे केमसधाये माटेविघ्नजयविना साधुनेक्रियाथी अविछिनप्रया णे शीवपुरनहोय एवातो अज्ञानी केमजाणे हवेविघ्न तथाविघ्ननोजयदेखाडेले ॥७॥

शीततापमुखविघनलेरे ॥ बाहेरअंतरव्याधिरे ॥ मिथ्यादर्श
नएहनीरे ॥ मात्रामृदुमध्याधिरे ॥ प्रनु० ॥ मुऊ० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ तेविघ्नना नेदत्रणले १ हीनविघ्न २ मध्यमविघ्न ३ उत्कृष्टविघ्न एमां ही नविघ्नते जेधर्मकरतां शीतके० टाढवाए तथातापके० तडकोलागे तेधर्ममां विघ्नले

तथा बाह्यव्याधिके० रोगज्वरकासश्वासप्रमुख जे शरीरना रोगते मध्यमविघ्नक हियें जेमाटे टाहाड तथातडका करतां शरीरना रोगतेविशेषविघ्नकरे तथात्रीजोउ त्कृष्टोविघ्नतेअंतरव्याधि मिथ्यादर्शनके० मिथ्यात्वमोहनीय ए उत्कृष्टो धर्ममां विघ्नछे जेमाटे धर्मकरतां जो मिथ्यादर्शननो उदयथयी जायतो धर्ममां महोटुंविघ्नथाय ए विघ्नपूर्वें जेबेविघ्नकह्यां तेकरतांएआकरुं विघ्नछे माटे उत्कृष्टोविघ्नकह्यो जेममार्गमां चालतां जघन्यमध्यम अनेउत्कृष्टो एत्रणविघ्नछे मार्गमांकांटालागेते जघन्यविघ्न मार्ग मां ज्वरप्रमुखतेमध्यमविघ्न मार्गमां दिगमूढथायतेउत्कृष्टोविघ्न तेमधर्ममांपण पूर्वो क्तत्रणविघ्नजाणवा तेनोमात्राके० प्रमाणकहेछे मृडके० हीन मध्यके० मध्यम अनेअ धिके० उत्कृष्टोएमअनुक्रमे जोडवा॥एतोविघ्नदेखाड्यो हवेविघ्नजय अनुक्रमेंदेखाडेछे

आसनअशनजयादिकेंरे ॥ गुरुयोगेंजयतासरे ॥ विघनजो

रएनविटलेंरे ॥ वगरज्ञानअभ्यासरे ॥ प्रभु० ॥ मुऊ० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ आसनके० वीरासनादिकेकरी पूर्वोक्त शीततापादिक विघ्ननो जयकरे त थाअशनएटले आहारेंकरी पूर्वोक्त ज्वरप्रमुखविघ्ननोजयकरे तथा गुरुयोगेंकरी पू र्वोक्त मिथ्यादर्शनरूपविघ्ननो जयकरे केमके गुरुयोगें समकितपामेज एविघ्ननुंजोर तेज्ञानाभ्यासविना टलेनही माटेज्ञानाभ्यासें परिणाम दृढराखे शीततापप्रमुखमां चलेनही अनेज्वरप्रमुखमां कृतकर्मअहियासे एटले एमजाणे जेमाराउदयआव्यां कर्मनोगववुं तथा मिथ्यात्वनेजोरे ज्ञानेसम्यक्जिनवचनजावे ॥ ए ॥

विनयअधिकगुणसाधुनोरे ॥ मध्यमनोउपगाररे ॥ सिद्धिवि

नाहोवेनहीरे ॥ कृपाहीननीसाररे ॥ प्रभु० ॥ मुऊ० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हवे सिद्धिनामाआशय वखाणेछे जेपोताथकी अधिकगुणवंतासाधुनो विनय तेसिद्धिनामाआशयविशेष आव्याविना होयनही तथा मध्यमके० मध्यमगु णवंताहोय तेनं उपगारकरे तेपण सिद्धियोगविना होयनही अने हीननीके० पोता थी हीनगुणी तेनी सारके० प्रधान कृपाके० दयातेपण सिद्धियोगविनानहोय॥१०॥

विणविनियोगनसंभवेरे ॥ परनेधर्मेंयोगरे ॥ तेहविनाज

नमांतरेरे ॥ नहिसंततिसंयोगरे ॥ प्रभु० ॥ मुऊ० ॥११॥

अर्थ ॥ हवे विनियोगनामापांचमोआशयवखाणेछे विनियोगनामागुणविना पर जीवने जेधर्मेंजोडवुं तेयोग नसंभवेके० नहोय तेविनाके० तेहविनियोगविना जनमां

तरेंके० परजवनेविषे संततिके० परंपरानो संयोगते नहीके० नहोय एटले सिद्धनुं कार्यतेविनियोगछे तेयावत् सर्वसंवरथाय तिहांलगे धर्मपरंपरात्रूटेनही अनेजोविनि योगनामागुण नथयोहोय तोत्रूटीजाय एसर्वेगुणतेज्ञानविनानहोय ॥ ११ ॥

किरयामांखेदेकरीरे ॥ दढतामननीनाहिरे ॥ मुख्यहेतुतेधर्म नोरे ॥ जेमपाणीकृषिमांहिरे ॥ प्रनु० ॥ मुऊ० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवे परमेश्वरनी वाणीमीठीछे तेवाणी स्तवनाद्वारें प्रनुनी स्तवनाकरे तेप्रनुनी स्तवनातो प्रनुजीनुं ध्यानकरियें एटलेते वीतरागनी स्तवनाजथयी तेप्र नुनुंध्यान बेजेदेछे एकसालंबन बीजुनिरालंबन तेमां सालंबनते चक्षुप्रमुखेंकरी जिनप्रतिमादिकनुंआलंबकरीने समवसरणस्थजिनस्वरूपनुं ध्यानकरवुं ते तथा वीतरागना शुद्धनिरावर्ण आत्मप्रदेश समुदायने केवलज्ञानादिकस्वजावनुं ध्यान करवुं तेनिरालंबनध्यानकहियें शुद्धपरमात्मगुणध्याननिरालंबन इतिवचनात् हवे इहांतो सालंबनध्याननी वातछे सालंबन केम थायतेकहेछे जेजूदाजूदा जीवनी अपेक्षायें आठचित्तनो त्यागकरेथके ध्यानथाय तेआठचित्तनानामकहेछे यडुक्तं चतुर्दशेषोडशके १ खेदो २ द्वेग ३ क्षेपो ४ त्थान ५ त्रांत्य ६ न्यमु ७ द्रुगा ८ संगैः॥युक्तानिहिचित्तानिप्रबंधतोवर्जयेन्मतिमान् ॥ १ ॥ ए आठचित्तने दोषेकरीने ध्यानकरीशकेनही तेमां प्रथम खेदनामा दोषकहेछे खेदके० थाक जेम पंथेहिंम तांथाके तेनीपेरे खेददोषेकरी क्रियामां मननी दढताके० एकाग्रपणुं तेनहोय एटलेक्रियामां प्रणिधाननरहे अनेजे प्रणिधान ते धर्मनोमुख्यहेतुछे जेम करशणमां पाणीते मुख्यहेतुछे तेमक्रियामां प्रणिधानते मुख्यहेतुछे ॥ १२ ॥

बेठापणजेऊपजेरे ॥ किरियामांउद्वेगरे ॥ योगद्वेषथीते क्रियारे ॥ राजवेठसमवेगरे ॥ प्रनु० ॥ मुऊ० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवे उद्वेगनामा बीजो दोषवखाणेछे खेदविनापण बेठाथकां उद्वेगथा य तेनीपेरे उद्वेगदोषमां पणजाणवुं बेठाथका पणजेक्रिया करे तेमां उद्वेगऊपजे तोतेक्रियाकरतां तेप्राणीने सुखजेचित्तनीप्रसन्नता तेकेमउपजे जेवारे क्रियामां उ द्वेगथयो तेवारे द्वेषउपनो तेद्वेषथी राजानी वेठनीपेरें कथंचित्क्रियाकरे वेगके० उतावलोकरे एवीरीतें राजवेठनी पेरेंकरे तेने जन्मांतरे योगीनाकुलने विषेजन्मपण नहोय एअर्थषोडशकमांजोइलेजो ॥ १३ ॥

भ्रमथीजेहनसांभरेरे ॥ कांइअकृतकृतकाजरे ॥ तेहथीशुभ
किरियाथकीरे॥ अर्थविरोधिअकाजरे॥प्रभु०॥मुज०॥१४॥

अर्थ ॥ हवे यद्यपि षोडशकमां भ्रांतिनामा पांचमो दोषकह्योछे तथापि उपाध्यायजीयेंइहांत्रीजोभ्रांतिनामा दोषवरणव्योछे एमअनानुपूर्वीपण व्याख्यानुंअंगछे हवे भ्रांतीनो अर्थकहेछे भ्रांतिके० वस्तु अन्यहोय तिहांअन्यजाणे जेम शुक्तिकानेविषे रजतनी भ्रांतिथाय तद्वत् भ्रमेकरी जेवस्तु सांभरेनही जेमेंकयुं अथवाधर्मेकृत नथीकयुं उपलक्षणथी मेंउच्चर्यो के पाठनथीउच्चर्यो इत्यादि तेशुभक्रियाथकी पण अर्थविरोधि एवुंजे अकाजके० इष्टफलरूपजेकार्य ते नथाय तेनेअकाजकहियें।।१४॥

शांतवाहिताविणहोवेरे ॥ जेयोगेउत्थानरे ॥ त्यागयोगछे
तेहथीरे ॥ अणछंमातुंध्यानरे ॥ प्रभु० ॥मुज० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवे उत्थाननामाचोथो दोषवरणवेछे उत्थानके० चित्तनी अप्रशांतता तथा मनप्रमुखनी उत्सुकताथकी जेम कोइक पुरुष मदिराप्रमुखेंकरी मदावष्टब्धथयो होय तेनीपेरें जेयोगने उत्थानदोषेकरीने शांतवाहिताविणहोयके० शांतवाहिता न होय एटले जेक्रियाकरे तेमांउद्वेगरहे पण ठरणनहोय तेक्रियाकेवीछे के त्यागयोग के० त्यागवायोग्यछे पणतेहथीके० तेत्यागयोगक्रियाथी अणछंमातुं ध्यानके० छंमातुं तजातुंनथी एवुंध्यानछे जेम कोइक प्राणीयें दीक्षालीधीहोय अने सर्वथामूलोत्तर गुण निर्वाहकरवा असमर्थछे तेप्राणीनेविधिपूर्वक जेमश्रावकाचार ग्रहवानोउपदेशआपीयें ते लिंग त्यजवायोग्यछे पणलोकनी निंदाप्रमुखेंअणछंमातुंछे उक्तंचउपदेशमालायां ॥ जइनतरसिधारेउं ॥ मूलगुणभरंसउत्तरगुणंच ॥ मोत्तूणंतोतिभूमिं ॥ सुसावगत्तंवरतरागं ॥ १ ॥ १५ ॥

विचेविचेवीजाकाजमांरे ॥ जाएमनतेखेपरे ॥ ऊखणताजि
मशालिनुंरे फलनहीतिहांनिर्लेपरे॥प्रभु०॥मुज०॥ १६॥

अर्थ ॥ हवे पांचमो क्षेपनामादोषकहेछे जेक्रियामांमीहोय तेक्रियामां विचेंविचें बीजाकार्यमां मनजाय तेखेपकहियें ऊखणताके० उपाडीऊपाडीने वारंवार एवीजे शालितेनुं निर्लेपके० चोखुंफल नहीके० नथाय एटले एभावजे एकवार शालि उखेडीने वावेतो फलथाय पणवारंवारउखेडीने वावेतो फलनथाय तेमइहांवारंवार प्रारंभित क्रियामूकीने अन्यक्रियामांमनजाय तेफलनपामे ॥ १६ ॥

एकजठामेंरंगथीरे ॥ किरियामांआसंगरे ॥ तेहजगुणठा
णेथितिरे ॥ तेहथीफलनहीचंगरे ॥ प्रभु० ॥ मुझ० ॥१७॥

अर्थ ॥ हवे आसंगनामाछगो दोषकहेछे आसंगके० जेक्रियाकरतोहोय तेमां इदमेवसुंदरं एहवो जेरंग तेआसंगनामादोषकहीयें जोपणतेअनुष्ठानशास्त्रोक्तछे तो पण तेमां रंगनुंजे घरछे तेदोषरूपछे तेहजगुणठाणेथितिके० तेवेनेतेवेजगुणठाणेरहे पण आगल गुणठाणो वधेनही जेमश्रीमहावीरऊपरें गौतमस्वामीने भक्तिरागहतो तेथीतेजगुणठाणे स्थितिरही पणमोहनी कर्मनुंउन्मूलकरीने केवल ज्ञानरूपजेफलते चंगके०मनोहर नथयुं माटे आसंगते दोषता जाणवी एअर्थषोडशकवृत्तिमांजोजो॥१७

मांमीकिरियाअवगणीरे॥वीजेठामेहर्षरे॥ इष्टअर्थमां
जाणीयेंरे ॥ अंगारानोवर्षरे॥ प्रभु० ॥ मुझ० ॥ १८॥

अर्थ ॥ हवे अन्यमुद्नामा सातमो दोषकहेछे जेप्रारंभितकार्यथकी अन्यस्थानकें हर्ष तेअन्यमुद्दोष जेमांमीकिरियाके० जेक्रियाकरेछे ते अवगणीके० तेनो आदरमूकीने बीजेगमेंहर्षके० बीजीक्रियामां हर्षराखे एटले चैत्यवंदनकरतोहोयने सामायकमां हर्षकरे तेप्राणीने इष्टअर्थके० वांछितअर्थमां अंगारानोवर्षके० अंगारानो वरशादवरसेछे एटलेमांमेलीक्रियामांजे अनादरछे तेसर्वदोषनुंमूलछे ॥ १८ ॥

रोगहोएसमजणविनारे ॥ पीडाभंगसुरूपरे॥ शुद्धक्रिया
उछेदथीरे॥ तेहवंध्यफलरूपरे॥ प्रभु० ॥ मुझ० ॥ १९॥

अर्थ॥ हवे आठमो रोगनामादोष कहेछे तेपीडाभंगसुरूपके० पीडासुरूप अथवा भंगसुरूप एसमजणविनाजेपदछे तेशुद्धक्रियाने जोडीयें तेवारेएवो अर्थथायजे समजणविनाशुद्धक्रियानो उछेदकरे पण अशुद्धक्रियाकरेखरो तेवारे शुद्धक्रियाने पीडाथयी अथवा शुद्धक्रियानोभंगथयो एवे अर्थेरोगनाथया एटले रोग दोषथके शुद्धक्रियानो उछेदते विनाशकरे तेवंध्यफलके० तेअशुद्धक्रिया वांझियाफलरूपथाय॥

मानहानीथीदुःखदिएरे ॥ अंगविनाजेमभोगरे॥ शांतोदात्त
पणाविनारे॥ तेमकिरियानोयोगरे॥ प्रभु० ॥ मुझ० ॥ २०॥

अर्थ॥ एऊपर कह्याआठेदोष रहित जेहोय तेने शांतादिकगुणआवे माटे एक शांतबीजोउदात्त एवेगुणवखाणेछे तेमानीपुरुषने जेममाननी हाणीथाय एटले दुःख

उपजे तथाअंगविनाके० अंगोपांगेहीन होय अनेभोगनी सामग्रीस्त्रीप्रमुख मली होय तेजेम चित्तने दुःखआपे अथवाजेम भोगनी सामग्री मलीहोय तोपण मान हानीथीके० प्रमाणहीन अधिका उंडा भोगवे तो दुःखआपे तथाअंगविना पणदुःख थाय तेम शांतअनेउदात्त एबेगुण आव्याविना क्रियानो योगपणएवो जाणवो॥२०॥

शांततेकषायअभावथीरे॥ जेउदात्ततेगंभीररे॥ किरियादोष
त्यजीलहेरे ॥ तेसुखजशभरधीररे ॥ प्रभु० ॥ मुझ० ॥२१॥

अर्थ ॥ शांततेकहियेंजे कषायनोअभाव अनेउदात्ततेगंभीरहोय एवाप्राणी जेहो यते क्रियामां लागता दोषत्यजीने लहेके० पामे ते धीरके० धीरपुरुष सुखनोअने यशनो भरके० समूहपामे ॥२१॥ हवेएढालमांशांत तथा उदात्तगुणवखाण्या तेशांत उदात्तगुणतो धर्मरूपछे तेधर्मरूपरत्ननी योग्यताकोनेहोय तेदुहामांकहेछे ॥

दोहा ॥ एकवीसगुणपरिणमे ॥ जासचित्तनितमेव ॥
धरमरतननीयोग्यता ॥ तासकहेतूंदेव ॥ १ ॥

अर्थ ॥ जेनाचित्तमां नितमेवके० निरंतर एकवीसगुणपरिणम्याहोय तेजीवने धर्मजे देशविरति सर्वविरतिरूपरत्न तेनी योग्यताहोय एम हेदेव तमेकह्योछो ए एक वीसगुण द्रव्यश्रावकनाछे तेसंक्षेपेकहेछे ॥ विस्तारेंआगलकेशो

१ खुद्दनही २ वलीरूपनिधि ॥ ३ सोम्म ४ जनप्रियधन्य॥
५ क्रूरनही ६ भीरुवली ॥ ७ असठ ८ सारदखिन्न ॥ २ ॥

अर्थ ॥ १ क्षुद्रमतिनहोय एटले गंभीरहोय २ रूपनोनिधानहोय एटले पंचें द्रिय स्पष्टहोय ३ सोम्य होय तेस्वभावेंअपापकर्मीहोय ४ जनप्रियके० लोकने वल्लभहोय तेसदासर्वदासदाचारीहोय धन्यके० एप्रशंसाकरवायोग्यछे ५ क्रूरनही के० अक्लिष्टचित्तहोय एटलेसंक्लेशपरिणामीनहोय ६ आलोकपरलोकनाअपायथी भीरुके० बीहीतोरहे ७ असठ एटलेपरनेठगेनही ८ सारके० प्रधान दखिन्नके० दाक्षिण्यगुणवंतहोय एटले परनीप्रार्थनानोभंगनकरे ॥ २ ॥

९ लज्जालुअ १० दयालुअ॥ ११सोमदिठ्ठिमज्झथ्थ ॥१२ गुण
रागी १३ सतकथ १४ सुपख्ख १५ दीरघदरशिअथ्थ॥३॥

अर्थ ॥ ९ लज्जालुअके० स्वकुलादिकनी लज्जावंत एटलेअकार्यवर्जक १० दया लुअके० प्राणीमात्रनी अनुकंपावंत ११ सोम्यदृष्टीते यथावस्थितविचारनी दृष्टीछे

दूरदोषत्यागीते सोम्यदृष्टिकहियेंतेज मञ्चकेण मध्यस्थ राग द्वेष रहित एटले सो
म्यदृष्टि अने मध्यस्थ एपदे एकज गुण कहियें १२ गुणरागी तेगुणीजीवनो पक्ष
पाती होय १३ सतकथ ते जली कथानो कहेनार एटले धर्मकथावाहालीछे जेने
१४ सुपरकके० सुशील अनुकूल परिवारयुक्त होय १५ दीरघदरसीके० अनागतका
ल विचारीने परिणाम सुंदरकार्यकारी होय अछकेण्ए अर्थछे ॥ ३ ॥

१६ विशेषज्ञ १७ वृद्धानुगत ॥ १८ विनयवंत १९ कृतजाण ॥
२० परहितकारी २१ लब्धलख्ख॥गुणएकवीसप्रमाण ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ १६ विशेषज्ञके० पक्षपातरहितपणे गुणदोष विशेषनो जाण १७वृद्धा
नुगतके० परिणतमतिपुरुषने सेवनारोहोय १८ विनयवंतके० गुणाधिक पुरुषनेवि
षे गौरवकर्त्ता १९ कृतजाणके० कस्यागुणनोजाण २० परहितकारीके० निर्लोभी
थको परोपकारकरे एटले जेदाक्षिण्यगुण तेपरनो प्राथ्यौं उपकारकरे अने परहित
कारी तेपोताथी उपकारकरे एटलो आठमां गुणथी वीसमां गुणमां विशेषजा
णवो. २१ लब्धलक्षगुणते धर्माधिकारी तेहनोजावार्थ लब्धइवप्राप्तइवलक्षयोल
क्षणीयोधर्मानुष्ठानव्यवहारोयेनसलब्धलक्ष्यःसुशिक्षणीयइति एएकवीसगुणसंपन्न
जेजीव तेधर्मरत्नने योग्यहोय ॥ ४ ॥

खुद्दनहींतेजेहमने ॥ अतिगंजीरउदार ॥ न
करेजनउतावलो ॥ निजपरनोउपगार ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेए एकवीसगुण अर्थ विस्तारें कहेछे खुद्दनहींतेके० अक्षुद्रतेनेकहियें
जेनुं मन अतिगंजीरहोय उदारहोय तुच्छन होय केमकेजे उतावलो मनुष्यहोय
ते पोताने तथा परने उपकार करीशकेनही एटले गंजीर होयते पोताने तथा
परने उपकार करे पण उतावलो होयते नकरीशके एप्रथमअक्षुद्रगुण ॥५॥

शुजसंघयणीरूपनिधि ॥ पुरणअंगउपंग ॥
तेसमरथसेजेंधरे ॥ धर्मप्रजावनचंग ॥ ६ ॥

अर्थ॥शुजके०उत्तम संघयणवंतहोय रूपनुं निधानहोय संपूर्ण अंगोपांगहोय पं
चेंद्रिय परवडाहोय ते धर्मकरणी करवाने सेहेजे समर्थहोय ते धर्मनी प्रजावनाकरे
इहां नंदिखेण तथा हरीकेशीप्रमुख साथेविरोध न गणवो केमकेतेपणसंपूर्ण अवय
ववंतहता तथा आवचनते प्रायिकछे जोशेषबीजागुणयुक्तहोयतोरूपनुंप्रयोजन नथी

पापकर्मवरतेनही॥ प्रकृतिसोम्यजगमित्त॥
सेवनीकहोवेसुखे ॥ परनेप्रसमनिमित्त॥७॥

अर्थ॥पापकर्म तेआक्रोश वध हिंसा चोरीप्रमुखनेविषेनप्रवर्ते आजीविका प्रमुख कारण टालीने सेहेजे सोम्यस्वनाव अबीहामणो सर्वजगतनेविषे मित्रताहोयएवापुरुषने सुखेलोक सेवीशके परने प्रसमके० समतानुं कारणहोय एत्रीजो गुणथयो ॥७॥

जनविरुद्धसेवेनही ॥ जनप्रियधर्मेसूर ॥ मलि
नन्नावमनथीतजी ॥ करीशकेअक्रूर ॥ ८ ॥

अर्थ जनशब्देलोककहियें तेलोकमांइहलोक तथा परलोक अने उनयलोक पण आवे एटले एन्नावजे इहलोक विरुद्ध नसेवे यडुक्तं सव्वस्सचेवनिंदा ॥ विसेसउतहय गुणसमिद्धाणं ॥ उज्जुधम्मकरणहसणं ॥ रीढाजणपूयणिज्जाणं ॥ १ ॥ बहुजणविरुद्धसंगो ॥ देसाचारलंघणंतहय ॥ उव्वणन्नोगोयतहा ॥ दाणाइविपयडमनेउ ॥ २॥ साहुवसणंमित्तो॥ सोसइसामडंमिअपडिआरोअ ॥ एमाइयाइइबं ॥ लोगविरुद्धाइंनियाणंति॥३॥तथा परलोकविरुद्धजेखरकर्मादि तेपन्नरकर्मादिकतथा उनयलोकविरुद्ध प्रते द्यूतादिक सात व्यसन नसेवे तोज जनप्रियके० लोकने प्रिय तथा धर्मे सूरके० धर्मनोअधिकारीहोय ए चोथो गुणकह्यो मलिनन्नाव मनथी तजीने धर्मकरीशके एटलुं धर्मपद बाहारथी लेवुं तेअक्रूर कहियें केमके लोकप्रिय तथा अक्रूरगुणनुं लक्षण धर्मरत्नप्रकरणमध्ये एमज वखाणुंछे यथा ॥ इहपरलोयविरुद्धं ॥ नसेवए दाणविणयशीलढ्ढो ॥ लोयप्पिउजणाणं ॥ जणेइधम्मंमिबहुमाणं ॥ १ ॥ कूरोकिलिट्ठन्नावो॥ सम्मंधम्मंनसाहिउत्तरइ ॥ इयसोनइबजोगो ॥ जोगोपुणहोइअक्रूरो॥२॥ ए गाथानेअनुसारें अर्थकखोछे वली बुद्धिअविरुद्धपणे सुजेतोविशेषकरजोएपांचमोगुण

इहपरलोकअपायथी ॥ बीहेन्नीरुकजेह ॥ अप
यशथीवलीधर्मनो ॥ अधिकारीछेतेह ॥ ए ॥

अर्थ ॥ इहलोक तथा परलोकना अपायथीके० कष्टथी बीहे तथा अपयशथी बीहे तेन्नीरुकहियें तेपुरुष धर्मनो अधिकारीजाणवो एछठो गुणकह्यो ॥ए॥

असठनवंचेपरप्रतें ॥ लहेकिर्त्तिविश्वास ॥ न्ना
वसारउद्यमकरे ॥ धर्मठमतेखास ॥ १० ॥

अर्थ ॥ असठके० मायावी नही एवो गुणवंत तेपरने वंचेके० ठगेनही तिवारे लोकमां कीर्त्तिपामे प्रशंसवायोग्यहोय अने लोकपण तेनो विश्वासकरे वली नाव सारके० पोतानुचित्त रीजवे पण परनुं चित्तरिजववामाटे नकरे तथाचोक्तं नूयांसो नूरिलोकःस्यात् चमत्कारकरानराः ॥ रंजयंतिस्वचित्तंये नूतलेतेतुपंचषाः ॥ १ ॥ इत्यादिक तथा धर्मगमनेविषे खासके० रुडो उद्यमकरे ॥ एसातमोगुण ॥ १० ॥

निजकारयगंभीकरी ॥ करेअन्यउपकार ॥ सुद
खिन्नजनसर्वने ॥ उपादेयव्यवहार ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ वली जेपोतानुं कार्य गंभी एटले पडतुंमूकीने पण परउपकारकरे जेजे इहलोक परलोकनेविषे हितकारीछे तेवाउपकारकरे पण पापहेतुयें नप्रवर्त्तें ते सुदाक्षिणनामाआठमोगुण कहियें तेजन सर्वलोकने उपादेयव्यवहारके० आदेयवाक्यव्यवहारहोय व्यवहारते वाक्यव्यवहार ॥ ११ ॥

अंगीकृतनत्यजेत्यजे ॥ लज्जालुअकाज ॥
धरेदयालुधर्मनी ॥ दयामूलनीलाज ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ धर्मकार्य जेअंगीकारकर्युं होय तेनत्यजे अने अकाजके० जेअकार्यहोय ते त्यजे तेने लज्जालु नामेंनवमुगुण कहियेंतथा दसमुंदयालु तेने कहियेंजे दयामूल धर्मछे तेनी लाज धरे एटले दयामूलधर्मनलोपे ॥ १२ ॥

धर्ममर्मअवितत्थलहे ॥ सोमदिठिमझत्थ ॥ गु
णसंयोगकरेसदा ॥ वरजेदोषअणत्थ ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवे मध्यस्थ सोमदृष्टीनामा इग्यारमो गुणवखाणेछे मध्यस्थते को इ दर्शनउपरें पक्षपातनथी तथा सोमदिठीके० द्वेषरहित दृष्टिदर्शन छेजेने तेम ध्यस्थ सोमदृष्टिकहियें तथा धर्मनो जेमर्म तेअवितत्थके० यथार्थ लहे जाणे एटले सद्गुण निर्गुण अल्पगुण बहुगुण तथासर्व पारखंमीनिरुपित जेधर्म ते कनक परिक्षक पुरुषनीपेरें जाणे अनेजेज्ञानादिकगुण तेनो सदासंबंधकरतोरहे तथाअनर्थनाकरनारादोष तेसर्ववर्जे तेइग्यारमोगुण ॥ १३ ॥

गुणरागीगुणसंग्रहे ॥ दूसेनगुणअनंत ॥ उ
वेखेनिर्गुणसदा ॥ बहुमानेगुणवंत ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ गुणनो रागीहोय धर्मऊपरें रागधरे तथा गुणनो संग्रहकरे नवागुण अंगेआणे गुणअनंतके० घणागुणवंतने दूसेनके० दुःखवेनही एटले एनावजे गुणघ णाहोय अने कदाचित् कोइक दोषहोय तोपण तेने दुःखवेनही यतः नूरिगुणावि रलचिय ॥ इक्कगुणोविहुजणोनसवत्र ॥ निद्दोसाणविनद्दं ॥ पसंसिमोथेवदोसेवि ॥ १ इत्यादि तथा निर्गुणने उवेखेके० दुखवेनही तेमजस्तवे पणनही अनेगुणवंत जे दे शविरतिसर्वविरतिवंत तेनो बहुमानकरे जे धन्यए धन्यएनो अवतार इत्यादिकगुण रागीनामा बारमोगुणथयो ॥ १४ ॥

अशुभकथाकलुषितमति ॥ नासेरतनविवेक ॥
धर्म्मार्थिसतकथाहुए ॥ धर्मनिदानविवेक ॥१५॥

अर्थ ॥ अशुभकथाजे स्त्रियादिकनीकथा तेणेकरीने कलुषितमति थईछे जेहनी तेप्राणीने विवेकरूपरत्न सदसद्वस्तुनुं जेपरिज्ञान तद्रूपरत्न नासे तेमाटे धर्मार्थिथ को सत्कथकहोय तीर्थंकर गणधर महर्षिप्रमुखनाचरित्रकहे जेधर्मार्थि तेधर्मनो अर्थियको ए सत्कथाजधर्मनुंनिदानछे विवेकके० विभागछे जेअशुभकथानो त्या ग अने शुभकथाकरवी एतेरमोगुण ॥ १५ ॥

धर्मशीलअनुकूलयश ॥ सदाचारपरिवार ॥
धर्मसुपक्खविघनेरहित ॥ करीशकेतेसार ॥१६॥

अर्थ ॥ हवे सुपक्षयुक्तनामा चवदमोगुणकहेछे ते जेनोपरिवारने धर्मकरवानो आचारछे अनुकूलके० धर्ममांविघ्ननकरे तथा यशवंत अने सदाचारीपरिवारहोय एवो सुपक्षगुणवंत विघ्नेरहितहोय तेपुरुष सारके० प्रधानएवोजे धर्मते प्रतेकरीशके ॥ १६ ॥

मांम्हेसविपरिणामहित ॥ दीरघदर्शीकाम ॥
लहेदोषगुणवस्तुना ॥ विशेषज्ञगुणधाम ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ हवे दीर्घदर्शिनामा पन्नरमो गुणकहेछे तेजे कामके० कार्यमांम्हे तेपरि णामे हितकारीजहोय उपलक्षणथी तेमां लाभघणोहोय अनेक्लेश अल्पहोय बहु लोकने प्रशंसनीकहोय यतः आढवइदीहदंसी ॥ सयलंपरिणामसुंदरंकज्जं ॥ बहुला नमप्पकेसं ॥ सलाहणिज्जंबहुजणाणं ॥ १ ॥ इतिधर्मरत्नप्रकरणे हवेविशेषज्ञनामा सोल मोगुणवखाणेछे जे लहेके० जाणेवस्तुना गुणदोष एटले एअर्थजेपक्षपातविना व

स्तुना गुणदोप सर्वने जाणे जोपक्षपातहोय तोगुणमां दोषकाढे अनेदोषमां गुण काढे पण मध्यस्थबुद्धीने यथास्थितजाणे एवोविशेषज्ञ तेगुणनुं धामके० घरहोय

वृद्धानुगतसुसंगते ॥ होवेपरिणतबुद्धि ॥ विनयवं
तनियमांकरे ॥ ज्ञानादिकनीशुद्धि ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ हवे वृद्धानुगतनामा सत्तरमो गुणकहेछे तेजे परिणतबुद्धिवान परिपाकबुद्धीनो धणीहोय तेपापना आचारनेविषे नजप्रवृत्ते अनेगुणवंतजे वृद्ध होयतेने अनुगतके० अनुजायीयें प्रवर्ते एटले वृद्धनी संगतकरवी तेसुसंगतकहियें तेसुसंगते करी पोते पण परिणतबुद्धीवालो थाय परीपक्वबुद्धिवानथाय यतः वुढ्ढोपरिणयबुद्धी॥ पावायारेपवत्तइनेवं॥वुढ्ढाणुगोविएवं॥संसग्गिकयागुणाजेणं इति हवेविनयनामा अढारमो गुणकहेछे तेविनयवंतप्राणी नियमाके० निश्चेंज्ञानादिकनीशुद्धिकरे एटले एनावजे सर्वज्ञानादिकगुणनुं तथा मोक्षनुंमूलतेविनयछे माटे विनयगुणजोइये यतः विणउसव्वगुणाणं॥मूलंसन्नाणदंसणाईणं॥मुक्खस्सयतेमूलं तेणविणीउइहंपसत्थो ॥ ८

गुणजोमेगुरुआदरें ॥ तत्वबुद्धिकृतजाण ॥ पर
हितकारीपरप्रतें ॥ थापेमार्गसुजाण ॥ १ए ॥

अर्थ ॥ हवेकृतज्ञनामाओगणीसमोगुणकहेछे तेजेगुणनेविषे तथा धर्मनेविषे बीजानेजोडे तथा धर्मगुरुऊपरे घणोआदरकरे तथा जेनें तत्व ग्रहवानी बुद्धिहोय तेने कृतजाणके० कृतज्ञ कहियें हवे वीसमो परहितकारीनामा गुणकहेछे जे परप्रतें धर्ममार्गेंथापे अने सुजाणके० माह्योहोय वलीजेणेधर्ममार्गजाण्योछे एटले गीतार्थछे केमके जोअगीतार्थहोयअनेतेपरनेहितकरवा चाहे तोपण अहितथाय यतः किंएत्तोकष्टयरं॥जंसंममनायसमयसप्भावो॥अन्नंतुदेसणाए॥कष्टयरांगंमिपाडेइ

शीखेलखेसुखेंसकल ॥ लब्धलक्षशुभकाज॥ ए
मएकवीसगुणेवर्यो ॥ लहेधर्मनुंराज ॥ २० ॥

अर्थ ॥ हवे लब्धलक्षनामा एकवीसमो गुणकहेछे तेजे शीखेके० थोडाकालमां आगमादिक जणे तथा लखेके० जाणे सुखेंके० अनायासें वगरप्रयासें सकलके० समस्त शुभकाजजे धर्मनाकार्य तेने लब्धलक्षकहियें यतः लक्खेइलद्धलक्खो ॥ सुहेणसयलंपिधम्मकरणिज्जं ॥ दक्खोसुसासणिज्जो ॥ तुरियंचसुसिक्खिउहोइ ॥ इतिधर्मरत्नप्रकरणे एरीते एकवीसगुणे करीविराजित होयते धर्मनुंराज्य लहेके० पामेइति

पूरणगुणउत्तमकह्यो॥ मध्यमपादेंहीन ॥ अ
र्द्धहीनजघन्यजन॥ अपरदरिद्रीदीन॥ ३१ ॥

अर्थ ॥ एपूर्णएकवीसगुणे सहितहोय तेउत्तमकहियें अने पादेंके० चोथेनागेंही नहोय तेमध्यम कहियें तथा अर्द्धगुणेहीनहोय तेजघन्यकहियें अपरके० एअर्द्ध थकी हीनगुणी होयते दरिद्र दीनजाणवा केमके दरिद्री होयते पोतानाउदरजर वानी चिंतायें व्याकुलपणेकरी रत्नना क्रयविक्रयनी चिंतानकरीशके तेम हीनगुणीते धर्मरत्ननोमनोरथ पणनकरीशके यतः पायद्धगुणविहिणा ॥ एएसिंमझिमावरानेया॥ इत्तोपरेणहीणा ॥ दरिद्दपायामुणेयव्वा ॥ १ ॥ ३१ ॥

अरजेवरजीपापने ॥ एहधर्मसामान्य ॥ प्रनुतु
जक्तिजशलहे ॥ तेहहोएजनमान्य ॥ ३२ ॥

अर्थ ॥ जे पापने वर्जिने एसामान्यधर्म जेश्रावकधर्म तेने अरजेके० उपार्जे ते प्राणी हेप्रनु तारी जक्तिकरीने जशलहेके० जशप्रतिष्ठापामे एटले एवागुणवंतहोय तेतारी जक्तिकरेज तथा तेप्राणी सर्वलोकने मान्यहोय ॥ ३२ ॥ ए एकवीस गुणेस हितहोयते जावश्रावकपणुंपामे माटे जावश्रावकना गुणवर्णवानेबारमोढालकहेछे

ढालबारमोचोपाइनीदेशीछे

एकवीसगुणजेणेलह्या ॥ जेनिजमर्यादामांरह्या ॥ तेह
जावश्रावकनालहे ॥ तसलक्षणएतुंप्रनुकहे ॥ १ ॥

अर्थ ॥ ए एकवीसगुणने जेपाम्याहोय वलीजे पोतानी मर्यादामां रह्याहोय आ चारशीलमांरह्याहोय तेजप्राणीजाव श्रावकप णुपामे एटले एजावजे पूर्वे इव्यश्रा वक थयीनेउत्तरकालें जावश्रावकथाय ते जावश्रावकना लक्षण एप्रमाणेहेप्रनुवीत रागपरमेश्वर तमेकह्याछे तेपरमाणे आगल कहियेछैयें ॥ १ ॥

कृतव्रतकर्माशीलाधार ॥ गुणवंतोनेंरुजुव्यवहार ॥ गु
रुसेवीनेप्रवचनदक्ष ॥ श्रावकजावेंएप्रत्यक्ष ॥ २ ॥

अर्थ ॥ इहां मार्गानुसारीना पांत्रीस गुणज्ञानविमलसूरीयें लख्याछे पण विशेष शब्दार्थादिकमां प्रयोजननथी तथाएनुंमूल धर्मरत्नप्रकरणकयुंछे तेमांपणनथीकह्या माटे अमेलख्यानथी १ कयुंछे व्रतरूपकार्यजेणे तेकृतव्रतकर्माकहियें २ शीलवं

तहोय ३ विवक्षितगुणवंतहोय ४ ऋजुव्यवहार एटले सरलमनहोय ५ गुरुनीशुश्रूषा करे सेवाकरे ५ प्रवचनके० आगममांकुशलहोय माह्योहोय एछलक्षण जेमां होय तेप्रत्यक्षपणे नावश्रावक कहियें यतः कयवयकम्मोतह्य ॥ शीलवंचगुणवंच ऋजुववहारी ॥ गुरुसुस्सूसोपवयण ॥ कुसलोखलुसावगोनावे ॥१ ॥२॥

श्रवणजाणणाग्रहणउदार ॥ पडिसेवाएचारप्रकार ॥ प्रथ
मनेदनामनधारीयें ॥ अर्थतासइम अवतारीयें ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवे उपरना ठ लक्षणमांथी प्रथमकृतव्रतकर्मानामें लक्षणना चारनेद ठे १ श्रवणके० सांनलवुं २ जाणणाके० जाणवुं ३ ग्रहणके० अंगीकारकरवुं उदारके० विस्तारपणे ४ पडिसेवाके० सम्यक्पालवुं एचारनेदकह्या एप्रथमनेदजेकृतव्रतकर्मानामे तेनाअवधारीयें तासके० तेनाअर्थ एम अवतारीयेंके० उतारीयें ॥ ३ ॥

बहुमानेनिसुणेगियथ्थ॥पासेंनंगादिकबहुअथ्थ ॥
जाणेगुरुपासेंव्रतग्रहे ॥पालेउपसर्गादिकसहे ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ इहां बहुमान कह्युंपण विनयतथाबहुमान बने लेवा यतः विणयबहुमाणसारं ॥ गीयह्नाउकरेइवयसवणं इतिवचनात् गीयह्नपासेके० गीतार्थपासेथीजे निसुणेके० सांनले तेविनय तथा बहुमानसहित सांनले इहांचोनंगीकहेठे १ कोइकधूर्तमां वंदनादिक बाह्य विनयतोहोय पणनारीकर्मिमाटेबहुमान अंतरप्रीति न होय २ कोइकमां बहुमानहोय पण विनयकरवानी शक्तिनहोयतेग्लानादिक जाणवा ३ कोइक आसन्नसिद्धियाजीवमां विनय तथा बहुमान बेहुहोय ४ कोइकआकरापापकर्मीमां विनय तथा बहुमान एके नहोय इहां व्रतसांनलवाने कह्युं पण उपलक्षणथी सर्वशास्त्र सांनले सूत्रतेगीत अने तेनुं व्याख्यानतेअर्थ अने जेअर्थसहित तेगीतार्थ यतः गीयंनन्नइसुत्तं ॥ अह्नोतस्सेवहोइवरकाणं ॥ गीएणयअह्नेणय संजुत्तोहोइगीयह्नो ॥ १ ॥ एटले गीतार्थपासे सांनलीने एपहेलोनेद नंगादिक बहुअर्थ जाणेके० व्रतनानांगाप्रमुखबहुअर्थसमजे जेम पञ्चरकाणना ४ए नंगाने त्रकालनागणियें तेवारे १४७ नंगाथाय वली व्रतआश्रीगणियें तेवारे एकव्रते ६ बेव्रते ४० त्रणव्रते ३४२ इत्यादिक यावत्बारव्रते १३०४१२०७२०० नंगाथाय अत्रगाथा ॥ तेरसकोडीसयाइ ॥ चुन्नसीकोडीउबारसयलरका ॥ सगसीइसहसदोसय ॥ सवगंबन्ननंगीए॥१॥ नवनंगीयेंएकव्रते एं बेव्रते एए यावत्बारव्रते एएएएएएएएएएएए

अने एकवीसनंगीकरियेंतेवारें बारेव्रते १३८५५००३६३१०४९३१५ थाय ४९नं गेवारेव्रते ३४४-१४०६३४९९९९९९९९९९९९ नांगाथाय १४७ नांगायेंबारेव्रते ११०४४३६०७७१९६११५३३३५६९५७६९५ नांगाथाय सर्वअक्षरसंचारणायें जाणवाइत्यादिक नांगानु ज्ञानकरें आदिशब्दें व्रतनाअतिचारजाणे एवीजो नेदविस्तारें धर्मरत्नप्रकरणथी जाणवो पठेगुरुपासेथीव्रतअंगीकारकरे आणंदादिकश्रावकनीपेरें इत्वरतेचोमासाप्रमुखना अथवा यावत्कथिकते जावजीवना एत्रीजोनेदथयो अने पालेके० सम्यक्पाले तथा उपसर्गादिक जेआवे तेसर्वेसहे कामदेव श्रावकनीपेरें एचोथोनेद कह्यो एकृतव्रतकर्मीना चारनेदवखाण्या ॥ ४ ॥

सेवेआयतणाउद्देश ॥ परग्रहतजेअणुप्रडवेस ॥ वचन
विकारत्यजेशिशुलील ॥ मधुरनणेएषटविधशील ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेबीजुशीलव्रतनामालक्षणना ढनेदकहेठे सेवेआयतणाके० साधर्मिकने मलवानुं स्थान सेवे यतः जछसाहम्मियाबहवे॥ शीलवंताबहुसुया॥ चरित्तायारसंपन्ना ॥ आययणंतंवियाणाहि ॥ १ ॥ तेवो उद्देशके० स्थानक सेवे पण निल्लनी पालीप्रमुखसेवेनही एपेलोनेद वली परगृहतजेके० पारका घरमांपेसतो नफरे केमके कांइवस्तु खोवाय तेवारेंतेनाऊपर शंकाआवे पण कारणे कोइना घरमाजाय तेवात जूदीछे ए बीजोनेद तथा अणुप्रडवेसके० उद्भटवेसनपेरे जेथकी लांवीआ गोलीआ आदमीमां गणाय तेनकरे एत्रीजो नेद वली वचनविकार त्यजेके० जेथकी रागद्वेष वधे एवा विकारना वचनबोलेनही एचोथो नेद अनेशिशुलीलके० बालक्रीडा जुगटुं रमवुं इत्यादिक त्यजे एपांचमोनेद वली मधुरनणेके० मीठुंबोले गमेतेवुं कार्यपडे तोपण हेलोम्यहेसुंदर आकामकरशो एमकहे एठ नेद शीलवंतनामागुणना जाणवा ॥ ५ ॥ हवे एजठ नेद विस्तारीदेखाडेठे ॥

आयतनेसेवेगुणपोष ॥ परगृहगमनेवाधेदोष ॥ उद्भट
वेषनशोनालाग ॥ वचनविकारेंजागेराग ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ आयतनके० जेसाधर्मिना स्थानक तेसेवताथका गुणनी पुष्टिथाय गाथा॥ आययणसेवणाउ ॥ दोसाजिअंतिवड्ढइगुणोहोइइतिवचनात् ॥ वली परगृहगमनेके० पारकेघेरजातां वाधेदोषके० दोषवधे यतः परगियगमणंपिकलंकपंकमूलंसुशीलाणंइतिवचनात् ॥ वली उद्भटवेषतेशोनालायेकनही गाथा ॥ सहइपसंतोधम्मीउप्रड

वेसोनसुंदरेतस्सइतिवचनात् ॥ सहइके० शोचेप्रशांतधर्मीइति तथा वचनना वि कारेकरीने रागजागे माटे विकारना वचन कहेनही यतः सवियारजंपियाइ ॥ मूण मूइरंतिरागग्गिइतिवाक्यात्तेमाटेकहे यतः जंसुणमाणस्सकहंसुहुयरंजलइमाणसे मयणो॥समणएसावयेणविनसाकहाहोइकहियव्वा ॥ इतिवचनात् ॥ ६ ॥

मोहतणोशिशुलीलालिंग ॥ अनर्थदंडअछेएचंग ॥ क
ठिणवचननुंजल्पनजेह ॥ धर्मीनेनहिसम्मततेह॥ ७॥

अर्थ ॥ जे शिशुलीलके० बालक्रीडा ते मोहतणोके० मोहनुंलिंगछे वली के वीछे अनर्थदंडछे तेजीवने चंगके० मनोहर लागेछे यतः बालिसजणकिलाविहु ॥ मूलंमोहस्सणछदंडाउ ॥ इतिवचनात् हवे छहोभेद कहेछे ते कठिणवचननुं जेबो लवुं ते धर्म्मिजीवने सम्मतके० मान्यनही यतः फरुसनवणाजियोगो ॥ नसम्म तंसुद्धधम्मिणंइतिवचनात् एछभेदेकरी बीजो शीलवंतनामाभेद संपूर्णथयो ॥ ७ ॥

उद्यमकरेसदासझाय॥ करणविनयमांसर्वउपाय ॥ अन
भिनिवेशीरुचिजिनआण॥ धरेपंचगुणएहप्रमाण॥ ८॥

अर्थ ॥ हवे गुणवंतनामाभावश्रावकनुं त्रीजुं लक्षणकहेछे तेमां यद्यपि औदा र्य धैर्य गांभीर्य प्रियबोलवुं इत्यादिक अनेक गुणछे तोपण पांचगुणेकरी गुणवंत गीतार्थेकह्याछे १ सझायके० भणवा वाचवा पूछनादिकनो उद्यमकरे २ करणके० अनुष्ठानक्रियाकरे ३ विनयमांके० गुरुआदिक आवे अभ्युत्थानादिककरे सदाउजमा लथको जेजेविनयनाप्रकारछे तेते सर्वकरे ४ अनभिनिवेशीके० कदाग्रहीनहोय इह लोक साधवामां कदाग्रहनकरे ५ रुचिके० आकरी श्रद्धा जिनआणके० जैनागम नेविषे होय एपांचगुणधरे तेगुणवंतकहियें ते प्रमाणके० मान्यछे ॥ ८ ॥

सझायेंधारेवैराग॥ तपनियमादिककरणेराग ॥ विनयप्र
युंजेगुणनिधितणो ॥ जेममनवाधेआदरघणो ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ हवे एपांचेना फलकहेछे प्रथम सझायकरता जीवने वैरागवधे तथा अनुष्ठानमां सावधानथको जीव तप तथा नियममां उद्यमवंतहोय जेतपते बारभे दे प्रसिद्धछे अने नियमते साधुने विश्रामण उत्तरपारणालोचकराव्योहोय तेने घृ तप्रमुखनुं दानदेवुं यतः पहसंनगिलाणेसुंय ॥ आगमगाहिसुतहयकयलोए ॥ उत्त

रपारणगंमिय ॥ दाणेसुबहुफलंहोइ ॥ १ ॥ इति तथा गुरुवंदना चैत्यवंदना पूजा प्रमुखपणए गुणमां लेवा ३ तथा गुणनुं निधानपुरुषतेनोविनय प्रयुंजेके० करे गुणवंत आवे तेवारे उनोथाय सामोजाय मस्तके अंजलीकरे आसनआपे गुरुवें गपठी बेसे सेवाकरे जायतेवारे वोलावाजाय इत्यादिक विनयकरे तेविनयवंत देखीने तेनाउपर गुरुनो घणो आदरवधे आम्नायादिकगुरुतेनेआपे ॥ ए ॥

अनभिनिवेशीअवितत्थगणे ॥ गीतारथभाषीतजेसुणे ॥
सद्दहणायेंसुणवाचाह ॥ समकितनोमोटोउबाह ॥ १० ॥

अर्थ ॥ अनभिनिवेशीजेहोय तेने अवितह्रके० यथार्थ माने अनेगीतार्थ जेबोले गीतार्थकहेतेयथार्थजाणे तथा गीतार्थपासें सांजले श्रद्धापूर्वक सांजलवाने वांछे उपलक्षणथी श्रद्धायेंइच्छापूर्वकअनुष्ठानकरे एवी श्रद्धाविनासमकितनी शुद्धिक्यांथी थाय यतः सवणकरणेसुइच्छा ॥ होइरुलहहाणंसंजुत्ता एइएविणाकत्तो ॥ सुद्धिसम्मत्तरयणस्स ॥ १ ॥ इतिएसमकेतनो मोहोटो उछाहके० हर्षछे ॥ १० ॥

अवितथकथनअवंचकक्रिया ॥ पातिकप्रकटनमैत्रीप्रिया ॥
बोधबीजसद्भावेंसार ॥ चारभेदएऋजुविवहार ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ हवे भावश्रावकनुं चोथुंऋजुव्यवहारनामा लक्षण चारभेदेकरी कहेछे १ अवितथकथनते यथार्थबोले धर्म व्यवहारमां परने जगवाने माटे धर्मने अधर्मनकहे अधर्मने धर्मनकहे क्रयविक्रयव्यवहारमां लेवेदेवे जूठुं नबोले तथा साक्षीव्यवहारमां राजदरबारें पण खोटीसाहेदी नपूरे तथा धर्मनी हांसीथाय एवुं पणनबोले ए प्रथमभेद २ अवंचकक्रियाके० बीजाने कष्टउपजे एवीक्रिया नकरे सारीवस्तुमांखराबवस्तुभेलीनआपे अथवा ताकडीप्रमुखतोलमां अधिकुंओछुं आपीलेइने परने जगेनही तथा आजवमां पणवचनक्रियाते केवलपापजछेएमदेखतो परने जगवाथी निवृत्ते यद्यपिअवंचकक्रियाते पोतानो आत्माठगायनही ईहां योगअवंचक क्रियाअवंचक फल अवंचक इत्यादिकपूर्वेना टबामां अर्थलख्योछे पण धर्मरत्नग्रंथमां एरीतेंनथी माटे अमे नथीलिख्यो ३ कोइक पापकरतोहोय तेने प्रकटनके०अपाय कही देखाडे जेहे भइ पापकरतां अनर्थथाय इत्यादिक कहे पणतेने उवेखेनही ४ मैत्रीप्रियाके० निष्कपटपणे मित्राइकरे ते साचेभावेंकरे पण खोटेभावें नकरे माटे एमकह्युंजे सारबोधबीजपामे एचारभेदेंकरी ऋजुके० सरलतानो व्यवहारकहियें अने एचारेबोलथी विपरीतकरे तोबोधबीजजाय एम धर्मरत्न प्रकरणमांकह्युंछे॥ ११ ॥

गुरुसेवीचउविहसेवना ॥ कारणसंपादनभावना ॥ से
वेअवसरेगुरुनेतेह ॥ ध्याननयोगनोनकरेछेह ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवे भावश्रावकनुं पांचमुं लक्षण गुरुशुश्रुषानामेकहेछे ते गुरुसेवा चउवि हके० चारप्रकारेछे १ गुरुनीसेवनाकरे २ कारणके० बीजापासे गुरुनी सेवाकरावे ३ संपादनके० गुर्वादिकनें औषधादिकनुं देवुंकरे ४ भावनाके० गुर्वादिकनो बहुमानकरे तथा गुरुना परिवारनो बहुमानकरे इहां गुरुतेधर्मगुरुलेवा पणमातापितादिकगुरुनलेवा यतः धर्मज्ञोधर्मकर्त्ताच सदाधर्मप्रवर्त्तकः ॥ सत्वेन्योधर्मशास्त्राणां देशिकोगुरुरुच्यते ॥ हवे एचारेभेदनो अर्थकहेछे १ अवसरपामीने गुरुनीसेवाकरे पणवगरअवसरें न करे तेकहेछे जे ध्यानके० धर्मध्यानादिकयोग तेप्रत्युपेक्षणा आवश्यकादिक तेनो न करेछेहके० छेद नकरे एटले व्याघातनकरे जीर्णशेठनीपेरें ॥ १२ ॥

तिहांप्रवर्त्तावेपरप्रतें ॥ गुरुगुणभाषेनिजपरछतें ॥ संपादे
औषधमुखवली ॥ गुरुभावेंचालेअविचली ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ २ वली ते परप्रतेंके० बीजाने गुरुसेवानेविषें प्रवर्त्तावे तेनाआगल गुरु गुण भाषीके० वर्णनकरीने एटले एभावजे पोते गुर्वादिकना गुण वर्णनकरे तेथी प्रमादीहोय तेपणगुरुसेवामां प्रवर्त्तेंइतिभावः ३ तथा निजके० पोताथी अने परछतें के० परथकीसंपादेके० आपेअपावे औषधमुखवलीके० औषधप्रमुख तेमां एकद्रव्यते औषध अथवा बाह्यउपयोगी तेऔषध अने अनेक द्रव्यसंयोग अथवा शरीरमां भोगववा योग्य तेभैषज वली प्रमुखशब्दें जेसंयमोपकारिवस्तु जोइयें ते आपे अथ वां अपावे ४ गुरुभावेंचालेके० गुरुने अभिप्रायें चाले गुरुनो बहुमानकरे तथा गुरु ने अनुजायीचाले अविचलीके० अविचलथको ॥ १३ ॥

सूत्रअर्थउस्सग्गववाय ॥ भावेंव्यवहारेंसोपाय ॥ निपु
णपणुंपाम्योछेजेह ॥ प्रवचनदक्षकहिजेतेह ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ हवे भावश्रावकनो प्रवचनदक्षनामा छठुंलक्षण वखाणेछे ते छभेदेंछे ते माटे श्रावकपण छभेदें जाणवो तेकहेछे १ सूत्रनेविषेकुशल २ अर्थनेविषे कुशल ३ उत्सर्गनेविषे तेसामान्यसूत्रनेविषे कुशल ४ ववायके० अपवाद एटले विशेषसू त्रनेविषे कुशल ५ भावेंके० विधिपूर्वक धर्मानुष्ठाननेविषे कुशल ६ व्यवहारेंके०

गीतार्थनीआचरणारूपजेजितव्यवहार तेनेविषे कुशल सोपायके० उद्यमसहित निपूणके० कुशलपणुंपाम्योछे एवो जें पुरुष तेनेप्रवचनदक्षकहियें ॥ १४ ॥

उचितसूत्रगुरुपासेंभणे ॥ अर्थसुतीर्थेतेहनोसुणे ॥ विषय
विभागलहेअविवाद ॥ वलीउत्सर्गतथाअपवाद ॥ १५॥

अर्थ ॥ हवे एछभेद विस्तारीकहेछे १ उचितसूत्रके० श्रावकनेयोग्यसूत्र चौसरणादिक प्रवचनमाताथी मांडीने छजीवणीयाअध्ययनपर्यंतभणे उक्तंच ॥ पवयणमाइछजीवणियंताउभयवियरस्स ॥ अस्यार्थः ग्रहण शिक्षा तत्रप्रकृता उभयतःसूत्रतो अर्थतश्चेतरस्यश्रावकस्येति एरीतें सूत्रभणेउपलक्षणथी पंचसंग्रह कम्मपयडीप्रमुख ग्रंथनासमूह तेपोतानीबुद्धीनेअनुसारेजणे २ अर्थके० तेसूत्रनोअर्थ ते सुतीर्थेके० संविज्ञ गुरुपासेथी सांभले ३-४ हवेउत्सर्गतथाअपवाद एबेभेदसाथेंकहेछे अविवादके० विवादरहितपणे विषयविभागलहेके० पोतपोतानेठेकाणेजाणे उत्सर्गनेउत्सर्गगमेजाणे अपवादने अपवादगमे जाणे पण एकलो उत्सर्गज नआलंबे अथवा एकलो अपवादज नआलंबे जेअवसरें जेकरवुंघटे तेअवसरें ते करे एटले लाभालाभ जोइ कार्यकरे एसर्वेचारभेद कह्या ॥ १५ ॥

पक्षपातविधिमांहेधरे ॥ देशकालमुखजेमअनुसरे ॥ जाणे
गीतारथव्यवहार ॥ तेमसविप्रवचनकुशलउदार ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ ५ देववंदनादिक विधिनेविषे पक्षपातके० बहुमानहोय तथा बीजो कोइ विधिकरतोहोय तेहनोपण बहुमानकरे विधिसामग्रीना अभावें पण विधिआराधवानो मनोरथ मूकेनही इत्यादिक उपलक्षणथी जाणवुं ६ हवे व्यवहारकुशलनामा छठोभेदवखाणेछे तेजेम देशकालप्रमुखहोय तेने अनुसरे एटले एभाव जे देशतेसुस्थित दुस्थितादि तथाकालते सुकाल दुष्कालादिक प्रमुखशब्दें द्रव्यसुलभ दुर्लभादिभावथी हृष्ट ग्लानादिक तेसर्वेने पोतपोतानीहदेजाणे गीतार्थनो व्यवहार सर्वेपोतेजाणे एटले एभावजे उत्सर्गेअपवादना जाणजेगीतार्थ तेणे आचर्योजे व्यवहार तेपोतानी मतें दुषवेनही पण तेसर्वव्यवहार तेमज अंगीकारकरे एछप्रकारनो प्रवचनकुशल ते उदारके० प्रधानकहियें ए छलक्षण भावश्रावकना जाणवा ॥१६॥

किरियागतएषटविधलिंग ॥ भाषेतुंजिनराजअभंग ॥
एविधिश्रावकजेआचरे ॥ सुखजशलीलातेआदरे ॥१७॥

अर्थ ॥ पटविधलिंगके० एहप्रकारना लिंग ते किरियागतके० क्रियाथी उंलखाय जेम धूम्रथी अग्निउंलखाय तेनीपेरें एम हेजिनराज सामान्यकेवलीमां राजासरिखातुं जाषेके० कहेछे अनंगके० समस्तपणे एविधिजे श्रावक आचरेते सुख तथायश तेनी जेलीला तेने आदरेके० पामे॥ १७ ॥ इहांशिष्यप्रश्न पूछेछे जेहेस्वामी बीजा वली कांइलिंगछे केतुमेएहलिंगक्रियागत कह्या तेटलाजछे तेने गुरुउत्तरआपेछे जेजावगतलिंग जूदाछे ते तेरमां ढालमां कहेछे एसंबंधेआव्यो ढालतेकहेछे ॥

ढालतेरमो ठहीजावनामनधरो एदेशी

जावश्रावकनाजाषियें ॥ हवेसत्तरजावगततेहोरे॥
नेहोरे ॥ प्रजुतुऊवचनेअविचलहोजोए ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवे जावश्रावकनालिंग गणतियें सत्तरछे तेजावगतछे तेकहियेंछैयें माटे हेप्रजु हेस्वयंबुद्ध तारा वचननेविषे चलेनही एवो मुजने स्नेहहोजो ॥ १ ॥

इबीचंचलचित्तथी ॥ जेवाटनरकनीमोटी
रे ॥ खोटीरे ॥ गंमेएगुणधुरेंगुणोए ॥ २॥

अर्थ ॥ यतः १ इत्थि २ दिय ३ ॥ ४ संसारछ ५ विषय ६ आरंज ७ गेह ८ दंसणउ॥ए गरुरिगाइपवाहे॥१० पुरस्सरंआगमपविति ॥१॥ ११ दाणाईजहासत्ति॥पवत्तणा १२विहर १३ रत्नडुठेय॥ १४ मश्रछ १५ संबद्धे॥१६ परत्थकामोवजोगीव ॥ २ १७ विसाइवगिहवासं पालइसत्तरसपयंनिबद्धंतु॥ जावगयजावसावग लखणमेयंसमासेणं ॥ ३ ॥ एसत्तरगुणकह्या तेमां पेहेलो लक्षणकहेछे इहां इह्लाचंचल चित्तथी एवुं लिपिदोषे घणीपरतोमां लखायुंछे तेथी पूर्वटबाकारें इह्ला एवो अर्थकर्योछे पण तेनिर्मूलछे माटेउवेष्योछे अत्रार्थे धर्मरत्नग्रंथजोइनेनिश्चयकरवो इबी के० स्त्री केहेवीछे जेचित्तथी चंचलके० चपलछे एटले अन्यअन्य पुरुषनी इह्लाकरनारीछे वलीवाटनरकनी मोटेके० मोटीनरकनी वाटछे एटले नरकेंजवानोमार्गछे तेखोटीरेके० हीणीवाटछे माटेस्त्रीने एवीजाणीने मूके एगुणधूरेंगुणोके० पहेलोसंख्यामांगणो ॥ २ ॥

इंद्रियचपलतुरंगने ॥ जेरूंधेज्ञाननीराशिरे ॥
पाशेरे ॥ तेबीजोगुणश्रावकधरेए ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवे इंद्रिय जेपांचशास्त्रोक्तस्वरूप तद्रूपजे चपलके० शीघ्रगामीपणामाटे डुर्गतीने सन्मुखचालता एहवाजे तुरंगके० घोडा तेने जे ज्ञानरूप राशिके० राशडीयें

करीने रूंधेके० रोंकीराखे एबीजोगुणते श्रावकपोतापाशेंधरे॥यतः इंदियचवलतुरंगे॥ दुग्गइमग्गाणुंधाविरेनिच्चं ॥ नावियनवस्सरूवो ॥ रुनइसन्नाणरस्सीहिं ॥ १ ॥ ३ ॥

क्लेशातणुंकारणघणुं ॥ जेअर्थअसारजजाणे
रे॥ आणेरे॥ तेत्रीजोगुणनिजसंनिधिए॥४॥

अर्थ ॥ जे घणुंके० अत्यंत क्लेशनुंकारण एवोजे अर्थके० द्रव्य तेने असारज जाणे एत्रीजोगुण निजसंनिधिके० पोतानीपासे आणेके० लावे ॥ ४ ॥

नवविडंबनामयअछे ॥ वलीदुःखरूपीदुःखहेतो
रे ॥ चेतोरे ॥ एमचोथोगणअंगीकरए ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ नवके० जेसंसार तेकहेवोछे जेविटंबनामयीछे वली जन्म जरा मरण रोगशोकादिक दुःखरूपीछे वली जन्मांतरें नरकादिक दुःखनोहेतुछे एम दुःखनीज परंपराथापे तेचेतोके० जाणो एचोथोगुणश्रावकअंगीकारकरे ॥ ५ ॥

खणिसुखविषयविषोपमा ॥ एमजाणीनवीबहुइ
हेरे ॥ बीहेरे ॥ तेथीपंचमगुणवरचोए ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवे विषयकहेवाछे जे क्षणिकमात्र सुखछे तेपण विषोपमाके० काल कूटसरिखाछे परिणामें दारुणछे एवाविषयजाणीने तेने बहुके० अत्यंतपणे नवी इहेके० नवांछे अनेतेविषयने असारजाणेछे माटे तेथी बीहेके० बीतोरहे एपंचम गुणनेवरचोथको शोभे ॥ ६ ॥

तीव्रारंभतजेसदा ॥ गुणछठानोसंभागीरे ॥
रागीरे ॥ निरारंभजननोघणुंए ॥ ७ ॥

अर्थ हवे तीव्रारंभके० घणाप्राणीने पीडाकारीजे खरकर्मादिक व्यापार तेने स दातजे कदाचित्करे तोसशोकथकोकरे पण निःशोकथको नकरे तेछठागुणनो संभा गीके० भजनारोथाय यद्यपिअणचालतेकांइकआरंभ पोतेंसशोक थकोकरेछे पणरा गीतोनिरारंभके० आरंभरहितजे जनके० लोकतेमुनिराजनोहोयघणोके० अत्यंतहोय

मानेसत्तमगुणवरचो ॥ जनपासस्दशागृहवासो
रे ॥ अभ्यासोरे ॥ मोहजितवानोकरेए ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हवे सातमो गेहनामा गुणवखाणेछेते सातमो गुणवरचोथको मानेके० जा

ए ते जनके० प्राणी पाससहसके० बंधनसरिखो घरवाशने माने जेम पक्षी पासमां पड्यो उडीनशके अने पोताना आत्माने दुःखीमाने एम गृह्मातापितादिकसंबंधेदी क्षा लेइनशके पण दुःखमाने अनेतेंप्राणी अन्यासतो मोहने जीतवानोज करे ॥८॥

अठमदंसणगुणनरयो ॥ बहुनांतेंकरेगुरुनक्ति
रे ॥ शक्तिरे ॥ निजसद्दहणानीफोरवेए ॥ ए ॥

अर्थ ॥ आठमो दर्शननामा गुणेनस्रोयको गुरुजेधर्माचार्य जेनाथी समकित पा म्योतेगुरुनी नक्ति बहुनांतेंकरे अने पोतानी श्रद्धानी शक्तिफोरवे एटले एनावजे अ स्तिक्यनावसहितअने अतिचाररहित दर्शननेधरतो शक्तियेंप्रनावना तथा वर्णवाद बुद्धिवंतकरे यतः अत्थिकनावकलिउं पनावणावन्नवायमाइहिं ॥ गुरुनत्तिजुउधीमं ॥ धरेइइयदंसणंविमलं ॥ १ ॥ ए ॥

लोकसन्नाह्विपरिहरे ॥ जाणेगाम्मरिउपरिवाहो
रे ॥ लाहोरे ॥ एमनवमागुणनोसंपजेए ॥ १० ॥

अर्थ हवे गाम्मरीकप्रवाहनामानवमोनेदवखाणेछे लोकसन्नाहके० लोकअविचा रित रमणीकतेने परिहरेके० त्यजे अने लोकनीचाल तेगाम्मरीयाप्रवाहजेवीछे जेम एकगाम्मरनेपछवाडे बीजुंगाम्मर चाले उपलक्षणथकी कीडीनो मंकोडानो प्रवाहपण केहेवुंतेजेम अविचारितछे तेम लोकनोप्रवाहपण तेवोछे तेमाटे वर्जे एम नवमागुण नोलाहोनीपजे ॥ १० ॥

आगमनेंआगलकरे ॥ तेविणकुणमारगसाखीरे॥
नाषीरे ॥ एमकिरियादशमागुणथकीए ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ हवेदशमो आगमनामानेद वखाणेछे जेकार्यकरेते आगमने आगलक रीनेकरे एम विचारेजे आगमविना जेपरलोकसाधवानोमार्ग तेनो कोणसाखी एटले वीतरागनाआगममांज एवामार्ग होय नाषीके० एवुं कहीने एरीतनी क्रिया करे एटले एनावजे देववंदन गुरुवंदन प्रत्याख्यान प्रतिक्रमणादिरूपक्रिया जिनाग मतथ्य जाणीने आगमोक्तक्रियाकरे एदेववंदनादिक क्रियानोविस्तारधर्मरत्नमां जोइ लेजो एदशमागुणथकी क्रियापामे ॥ ११ ॥

आपअबाधायेंकरे ॥ दानादिकचारशक्तिरे ॥
व्यक्तिरे ॥ एमआवेगुणइग्यारमोए ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवे दानादिक यथाशक्तियेंकरे एइग्यारमोनेदकहेले आपंअबाधायेंके० पोताने पीडा नउपजेतेम दानादिकचारेकरे जोइव्यपात्रहोय तो देतोथको थाकेज नही अने जोअल्पइव्यवानहोय तो अतिउदार नथाय उक्तंच ॥ लानोवियदाएों लानोवियन्नोयएों ॥ लानोवियपरिन्नावे लानोवियनिधिकरेसिया इत्यादि एमथोडे कालेंघणुआपीशके तेमज शील तप नावनानेविषेपण यथाशक्तिप्रवर्तें एमव्यक्तिके० प्रगटपणेइग्यारमोगुण श्रावकनेआवे ॥ १२ ॥

चिंतामणिसरिखोलही ॥ नविमुग्धहस्योपणलाजे
रे ॥ गाजेरे ॥ निजधर्मेंएगुणबारमोए ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवे विहिकनामाबारमोगुणकहेले चिंतामणिरत्न सरिखो पोतानोधर्मल हीके० पामीने जोमुग्धके० मूर्खलोक तेणे हंस्योथको पण नविलाजेके०. नलाजे एटले धर्मकरणी करतो लाजेनही गाजेरेके० उत्सुकहोय हर्षवंतहोय निजधर्मेंके० पोतानाधर्मनेविषे एबारमो गुणजाणवो यद्यपि धर्मरत्नग्रंथमांचिंतामणिरत्नसरिखी क्रियाकरतोनलाजे एमकह्युंले तोइहांचिंतामणिरत्नसरिखोधर्मकह्यो तेमांकांइविरुद्धन थीकेमकेक्रियाने धर्मकांइजूदोनथी ॥ १३ ॥

धनन्नवनादिकन्नावमां ॥ जेनविरागीनविद्वेषी
रे ॥ समपेषीरे ॥ तेविलसेगुणतेरमेंए ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ हवे तेरमोअरक्तद्विष्टनामान्नेद वखाणेले शरीरनीस्थिति हेतुले धनन्नव नआदिशब्दथी स्वजन आहार घर क्षेत्र कलत्र वस्त्र शस्त्र यान वाहन इत्यादिक लेवातेपदार्थमां रहेतोथको पण नविरागी नविद्वेषीके० रागद्वेषरहितनीपेरें होय एटले मंदआदरहोय अन्यथारागद्वेषरहिततो उपलेगुणगाणे होय ते इहांकेमघटे अने समपेषीके० मध्यन्नावनो जोनारो होय जेमाटे नावश्रावक एमन्नावे यतः नेयइ लकोइसयणो नसरीरंनेयन्नोगउवन्नोगा ॥ जीवोअन्नन्नवगइ गछइसव्वंपिमोचूणंइत्या दिअविनितलोक उपरद्वेषपण नकरे तेश्रावक तेरमागुणने विलसे ॥ १४ ॥

रागद्वेषमध्यस्थनो ॥ समगुणचउदमेनवांधेरे ॥
साधेरे ॥ तेहठगंडीमारगन्नलोए ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवे चउदमो मध्यस्थनामागुण वखाणेले रागद्वेषमध्यस्थनोके० राग द्वेषमां तणायनही तेमां मध्यस्थपणुंराखे एरागद्वेषमध्यस्थनो समगुणकहियें एट ले एन्नावजे परमार्थविचारकरे जे मेंमतलीधोतेकेम मूकुं अथवा अमुक मारु मत

खंमेछे तेने खंडुएवो रागद्वेषनकरे तेप्राणी चौदमांगुणनेविषे बाधानपामे एटले स मगुणपीडायेनही तेप्राणीपोतानो हठके० कदाग्रहछांमीने नलोमार्गसाधे एटले परने तथापोताने हितवांछकथको कदाग्रहमूकी मध्यस्थगीतार्थगुरुने वचने प्रवर्त्ते प्रदेशी राजानीपेरें एटले तेरमांगुणमां धननवनादिकमां मंदआदरहोय अनेचौदमांगुणमां धर्ममां कदाग्रहमूके सम्यक्अंगीकार करे ॥ १५ ॥

क्षणनंगुरताजावतो ॥ गुणपन्नरमेंसेवंतोरे ॥
संतोरे ॥ नधनादिसंगतिकरेए ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ हवे असंबंधनामापन्नरमो नेदवखाणेछे क्षणनंगुरताजावतोके० सर्वप दार्थ क्षणनंगुरछे अनित्यछे तन धन स्वजन जीवित इव्यप्रमुख एसर्वेअनित्यछे एम विचारतो पन्नरमां गुणने सेवतोके० सेवे अने संतोके० सज्जनपुरुषोने नधनादिसं गतिकरेके० धनप्रमुखनी संगतनकरे एमविचारे यतः विज्ञाडपर्यंचउप्पयंच ॥ खित्तं गीहंधणधन्नंचसवंस ॥ कम्मप्पबीउअवसोपयाइं ॥ परंनवंसुदरपावगंवा ॥ १ ॥ १६॥

नावविरतिसेवेमनें ॥ नोगादिकपरअनुरोधेरे ॥
बोधेरे ॥ एमउल्लसेगुणसोलमेंए ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ हवे सोलमो परार्थकामोपनोगीनामा नेदकहेछे नव जेसंसारनेविषे विर क्तमनथको नोगादिकने सेवे तेपण परअनुरोधेके० परनादाक्षिणादिकेंसेवे बोधेरेके० एवाउदाशीनज्ञानेकरी सोलमोगुणउल्लासपामे ॥ १७ ॥

आजकालएछांमिसु ॥ एमवेश्यापरेंनिसनेहोरे॥
गेहोरे ॥ परमानेगुणसत्तरमेंए ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ हवे सत्तरमो वेश्यानीपेरें घरवासपाले एनेदवखाणेछे जेए घरवासछेते आज छांमिसु अथवा काले छांमिसुं एम वेश्यानीपेरें निस्नेहीरहे जेमवेश्यानिरधन देखी विचारे जे हवे आज अथवा काले छांमुडुं एमविचारे तेम गृहस्थपण आ स्थाप्रमुखविना घरमांवसे पणघरने परकरीमाने एसत्तरमेगुणे देशविरतिना अनेक नेदछे माटे नानाजिप्रायेवंतहोय तेमाटे पुनरुक्तदोषकोई नेदमांनजाणवुं ॥ १८ ॥

एगुणवृंदेजेनरच्या ॥ तेश्रावककहियेंनावेंरे॥
पावेरे ॥ सुजशपूरतुक्रनक्तिथीए ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ एगुणना वृंदके० समूह तेणेकरी जेनरच्याछे ते नावेंके० नावथी

श्रावककहियें यतः इयसत्तरसगुणजुत्तो ॥ जिणागमेनावसावगोनणीयो ॥ इति वचनात् ते पावेके० पामे सुजशपूरके० नलाजशनो पूरपामे तुऊनक्तिथीके० हे वीतराग हेचिदानंदस्वरूपी तारी नक्तिथकी पामे एटले तारीआज्ञायें नावश्रावकप णुंपालवुं तेतारी नक्तिजळे ॥१९॥ एतेरमांढालमध्ये नावश्रावकनुं लक्षणकह्युं ते नावश्रावकजे होय ते ड्व्यसाधु कहियें अनेजेड्व्यसाधु होयते नाव साधुपणुंपामे तेमाटे हवे नावसाधुनालक्षण चउदमां ढालमां कहेळे ॥

ढाल चौदमो नीदेशी

तेनावसाधुपणुंलहे॥ जेनावश्रावकसार॥ तेहनालक्षणसातळे॥
सविजाणेहोतुंगुणनंडार ॥ साहेबजीसाचीताहरीवाणी ॥ १ ॥

अर्थ जे सारके० प्रधाननावश्रावकपूर्वेकह्या तेनावसाधुपणुंपामे तेनावली सा तलक्षणळे ते हेज्ञानदर्शनचारित्रवीर्य सुखदान लाननोग उपनोगादिक गुणनाजं मार एवाहेपरमेश्वर तमेसर्व जाणोळो केवलज्ञान केवलदर्शनेकरी षट्ड्व्यनुं नास नथायळे तेमाटे हेसाहेबजी तमारी वाणीते साचीळे सत्यळे एटले एनावजे आचा र्यपरंपरा तथा जितआचार तथाप्रकरणादिकमां जेनावकह्याळे तेतमारीज वाणीळे पणकोइनी कल्पित नथी ॥ १ ॥

किरियामारगअनुसारणी॥ श्रद्धाप्रवरअविवाद ॥ ऋजुनावे
पन्नवणिज्जता ॥ किरियामांहोनित्यंअप्रमाद ॥ सा० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवे सातलक्षणकहेळे सर्वक्रिया प्रत्युपेक्षणादि तेमार्गानुसारणी जे मो क्षमार्गने अनुजायीचेष्टाहोय तेप्रथमलक्षण तथाधर्मनेविषे श्रद्धाके० करवानीइज्ञा प्रवरके० प्रधान अविवादके० विवादरहित तेबीजुंलक्षण अनेपन्नवणिज्जताके० प्र ज्ञापनीयपणुं एटले परुपणाकरवी ते ऋजुनावेंके० सरलनावें एटले तेनी परुपणा तेअसदनिनिवेश कदाग्रहेंनहोय एत्रीजुंलक्षण वली क्रियाजे शुनहितअनुष्ठान तेनेविषेंनिरंतर अप्रमादीहोय पणशिथिलनहोये एचोथुंलक्षण ॥ २ ॥

निजशक्तिसारुंकाजनो ॥ आरंनगुणअनुराग ॥ आराध
नागुरुआणनी॥ जेहथीलहियेंहोनवजलताग ॥ सा० ॥३॥

अर्थ ॥ तथा पोतानी शक्तिप्रमाणें तपसंयमादिक कार्यनो प्रारंनकरे पणशक्ति ने उलंघी तपस्याप्रमुख नकरे एपांचमुं लक्षण अने गुणअनुरागके० गुणीनो पक्ष

पातहोय एवडुंलक्षण तथा गुरुआज्ञानुं आराधवुं तथा गुरुना आदेशें वर्त्तवुं गुरु नीआणाथी संसारसमुद्रनो पारलहियेंके० पामियें एसातमुं लक्षण॥ ३ ॥

मार्गसमयनीथितितथा ॥ संविग्नबुधनीनीति ॥ एदोई
अनुसारेक्रिया ॥ जेपालेहोतेनलेहनीति ॥ सा० ॥ ४॥

अर्थ ॥ हवे ऊपरकहेला सातभेदमांथी मार्गानुसारणीक्रिया नामें प्रथमभेदव खाणेछे मार्गके० समयनीस्थिति एटले आगमनी मर्यादा तेआगम केने कहियें उक्तंच आगमोह्याप्तवचन माप्तंदोषक्षयाद्विदुः ॥ वीतरागोनृतंवाक्यं नब्रूयाद्धेत्वसंभवा त् तेआगमनी स्थिति उत्सर्गेअपवादरूप शुद्ध संयमनो उपाय तेमार्ग कहियें अ थवाजे संविग्नबुधनीनीतिके० संविग्न जेमोक्षाभिलाषी अनेबुध तेगीतार्थ इहां ब हुपदअधिकुंकहियें तेवारे एमकहेवुंजे संविग्न बहुगीतार्थनी नीतिके० जेआचरण क्रियारूप तेनेपण मार्गकहियें एदोईके० बेअर्थ मार्गनाकह्या तेवामार्गने अनुसार णीजेक्रिया आगमनी अबाधायें संविग्न व्यवहाररूप तेमार्गानुसारणीक्रिया कहियें एवी क्रियाजेपालेते नीतिके० संसारनीबीक नलहेके० कदापि नपामे इतिगाथार्थ ह वे संविग्न गीतार्थनीनीति एनापदभेदकरियेंछैयें संविग्नपदकह्युं तेअसंविग्नपणुं टाल वामाटेकह्युं तोतेघणां असंविग्नमलीने जेआचर्युहोय तोपण प्रमाण नथाय य द्व्यवहारः जंजीयमसोहिकरं पासत्थपमत्तसंजयाईहिं ॥ बहुएहिंविआयरियं ॥ नपमाणंसुद्धचरणाणं ॥ १ ॥ इहां बहुगीतार्थपदमूक्यूं तेनुं कारण एजे एकगीता र्थें आचर्युंहोय तेकदाचित् अनाभोगें अनवबोधादिककारणे विपरीतपणे आचर्युं होय तेपण प्रमाण नथाय तेमाटे बहुगीतार्थपद मूक्युं तोते बहुगीतार्थ जेआच रेते अवितथहोय इहांकोइ प्रश्नकरे जेआगम मार्ग कहेवो तेतोयुक्तछे पण बहुज नाचरणकेहेवुं युक्तनथी केमके घणालोकोयें तोलौकिकमार्ग आचर्योहोय माटे आगमतेतोप्रमाण पण घणालोकोनुं आचरण प्रमाण नही वली आगमते ज्येष्ठछे अने बहुजनआचरणते अनुज्येष्ठछे अने लौकिकमां पण ज्येष्ठनेमूकी अनुज्येष्ठनुं पूजन युक्तनथी तेमज आगमतो केवलीपण अप्रमाण नकरे यतः ओहोसुउवउ त्तो ॥ सुअनाणीजइविगिएहइअसुद्धं ॥ तंकेवलिविभुंजईअ ॥ पमाणंसुअंजवेइहरा॥१॥ तथा आगमछतां जोआचरणा प्रमाणकरियेंतो आगमनीलघुता थाय हवे गुरुउ त्तर कहेछे जे संविग्नगीतार्थछे तेआगमनी अपेक्षाविना आचरेजनही तेशुंआचरे नही तथाशुंआचरे तेकहेछे यतः दोसाजेणनिरुब्भंति जेणखिज्जंतिपुव्वकम्माइं॥ सो

सोमुक्कोवाउं ॥ रोगावव्वासुसमणंच ॥ १ ॥ इत्यादिक आगमवचनसंचारी द्रव्य खेत्र काल भाव पुरुषादिकउचितजोइ संयमने वृद्धीकारीज आचरे तेवीजासंविझगीतार्थ पणअंगीकारकरें तेमार्गकहियें अने बीजा बहुलोके आचर्युं तेतो असंविझ अगीतार्थमाटे अप्रमाणछे वलीआचरणा प्रमाणकरतां आगमतो अत्यंत प्रतिष्ठा पामेछे श्रीठाणांगसूत्रमां पांचप्रकारना व्यवहार प्ररूप्याछे उक्तंच पंचविहे ववहारे पन्नते तंजहा आगमविवहारे सुयववहारे आणाववहारे धारणाववहारे जियववहारे इहां जितअने आचरणा तेएकजअर्थछे तेमाटेआचारणा मानता अत्यंतपणे आगममान्युं तो आगमअविरोध जेआचरणा तेप्रमाणजछे ॥ ४ ॥

सूत्रेभण्युंपणअन्यथा ॥ जुदुंजबहुगुणजाण ॥ संविझवि
बुधेआचर्युं ॥ कांइदिसेहोकालादिप्रमाण ॥ सा० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वली एज वातकहेछे सूत्रेभण्युंके० आगमनेविषे कह्युंछे तोपण अन्यथा के० हेरफेरकरीने बहुगुणजाणके० तेमां घणोगुणजाणीने संविझगीतार्थलोकें जे आचरणकर्युं तेवी केटलीकवातो दीसेछे पणतेद्युंजाणी आचर्युं तेकहेछेजे कालादि प्रमाणके० दुःखमादिकालप्रमुखनुं प्रमाण विचारीने आचर्युं ॥ ५ ॥

कल्पनुंधरवुंझोलिका ॥ भाजनेदवरकदान ॥ तिथिप
जूसणनीपालटी॥भोजनविधिहोइत्यादिप्रमाण सा० ॥ ६

अर्थ॥ वलीतेज देखाडेछे कल्पनुंधरवुंके० पूर्वेकल्पजेकपडोतेकारणे उढता तथा गोचरीप्रमुखनेविषे वालीने खंदेमूकी चालतां एआगमनो आचारहतो अने हवेतो गोचरीप्रमुखनेविषे पांगरीनेजावुं तथा चोलपटप्रमुख पणसमजवा पूर्वे कुणीयेंराखवा हमणाकंदोरे राखियेंछैयें तथापूर्वेझोलिकाके० झोली मुठीयेंझाली ग्रंथी कुणीयें ढुंकडीबांधता अने हमणा हाथमां झालियेंछैयें उपलक्षणथी उपग्रहिक कटासणु संथारीउं दंडासणादिकलेवा तथा तरपणीप्रमुखनेविषे दोरादेवा एम सीकीदोरानीं झोलीना आधारविशेष इत्यादिक वली पात्रेंलेपदेवा तथा पजूसणनी तिथीजे पांचम तेनीचोथकरी उपलक्षणथी चोमासापुनमनाटाली चउदशनाकया तथा भोजनविधिप्रमुख शास्त्रोक्तविनापण आचरितप्रमाणछे भोजनविधिते मांडलीयेंबेसवुं वेचीदेवुंइत्यादिक तथाचव्यवहारभाष्ये ॥ सव्वपरिणाव्वकाय ॥ संयमोपिंडउत्तरज्झाए ॥ रुरुकेवसहेगोवे जोहेसाहीयपुरकरिणी ॥ १ ॥ एनोलेशथी अर्थकरे छे जेपूर्वें शास्त्रपरिज्ञाअध्ययन सूत्रार्थेभणेके साधुने उगमणकरताहता अने ह

मणा दशवैकालिकनुं चोथुंअध्ययन भणेथके उठावणाथायछे तथा पूर्वे पिंडेष णाध्ययनभण्यापछी उतराध्ययन भणावता हमणा वगरभणेपण भणावियेंछैयें ति हांदृष्टांतकहेछे पूर्वेकल्पवृक्षहता हमणा आंबाप्रमुखें कामचालेछे पूर्वे अतुल्यबल धवल वृषभहता हमणा धुसरेंज कामचालेछे पूर्वे गोपजे करषणी तेचक्रवर्तिने तेजदिवसें धान्य नीपजावीदेताहता आजतेविनापणकामचालेछे तथापूर्वे सह स्रयोधीहता हमणा अल्पपराक्रमीसुभटोथी पणशत्रूनोपराजयकरी राज्यपालेछे ते म साधुहमणा जितव्यवहारेंपण संयमपालेछे तथा षटमासनुं प्रायश्चित्तहोय तेने हमणा पांच उपवासकह्याछे तथापूर्वेंमहोटी पुष्करणीउंहती हमणा नानीछे तेथी कामचालेछे इत्यादिकदृष्टांते जितव्यवहारपण जाणवो अथवा किंबहुना जंसव्वहान॥ सुत्ते पडिसिद्धंतेयजीयववहे॥ उत्तंसव्वंपिपमाणं चारित्तधणाणभणियंच॥ १॥ अवलं बिऊणकज्जं जंकिंचिसमायरंतिगीयत्था॥ थोवावराहबहुगुणं सव्वेसिंतंपमाणंतु॥ २॥ इत्यादिक जेम आर्यरक्षितजीयें आचर्युं तेडुर्बलिकापुष्पमित्रजीयें अंगीकारकर्युं ते मज सुविहीते जेआचर्युं ते सर्वेकबूलकरे॥ ६॥

व्यवहारपांचेभाषीया॥ अनुक्रमेंजेहप्रधान॥ आजतो
तेमांजीतछे॥ तेतजियेंहोकेमविगरनिदान॥ सा०॥ ७॥

अर्थ॥ तेमाटेज कहेछे जे पांचव्यवहार कह्याछे तथा अनुक्रमें जे प्रधानहोय ते आदरवो यडुक्तं किंत्तिविहेणंभंतेववहारेपण्णत्ते गोयमा पंचविहे ववहारेपन्नत्ते तंज हा आगमे सुए आणाधारणाजीए जहासेतत्थआगमेसिया आगमेणंववहारंपट्ठवेज्जा णोयसेतत्थआगमेसिया जहासेतत्थसुएसिया सुएणंववहारंपट्ठवेज्जा २ णोयसेतत्थसु एसिया जहासेतत्थआणासिया आणाएववहारंपट्ठवेज्जा ३ णोयसेतत्थआणासियाज हासेतत्थधारणासिया धारणाएववहारंपट्ठवेज्जा ४ णोयसेतत्थधारणासिया जहासेत त्थजीएसिया जीएणंववहारंपट्ठवेज्जा ५ इच्चेतेहिंपंचहिंववहारंपट्ठवेज्जा तं आगमेणंसु एणं आणाए धारणाए जीएणं जहाजहासेआगमेसुएआणाधारणाजीएतहातहाव व हारंपट्ठवेज्जा सेकिंमाहुभंतेआगमबलियासमणानिग्गंथाइच्चेयंपंचविहंववहारंजहाज हाजहिंजहिंतहातहा तहिंतहिं अणस्सितोवस्सयंसमंववहारमाणे णिग्गंथे आणाए आराहएभवइइतिभगवतिसूत्रेशतकआठमें उद्देशेआठमेंकह्युंछे आजतो तेपांचव्यव हारमां जितव्यवहारमुख्यछे, जितव्यवहारेंज कामचालेछे तेजातव्यवहार विगरनिदान के० कोइपणकारणविनाकेमत्यजियें एटले जितव्यवहार जेआचार्येंबांध्यो तेप्रमाणछे॥

श्रावकममत्वअशुद्धवली ॥ उपकरणवसतिआहार ॥ सुखशी
लजेजनआचरे ॥ नविधरियेंहोतेचित्तलगार ॥ सा० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवेएवीआचरणातेअप्रमाणछे केमके० सिद्धांतमां नाकहीछे जेश्रावक
नुंममत्वनकरवुं यतः गामेवा कुलेवा नगरेवा देशेवा ममत्वनावंनकरेंचिकुज्जा इत्या
दि श्रावकनुं ममत्वकरे तेअप्रमाणछे तथा अशुद्धमान उपगरण वसति आहारप्र
मुख लेवानी आगममां नाकहीछे अने जो लीयेतो तेआचार अप्रमाणछे यतः आग
मे पिंडसिज्जंचवत्थंच चउत्थंपायमेवय ॥ अकप्पियंनइच्छिज्जा पडिगाहेज्जकप्पियं ॥ १ ॥
इतिउपलक्षणथी वस्त्रपात्रादिकपण एमजाणवामाटे सुखशील लोकें जेआचर्युं एटले
पोताना शरीरनी शोजानेअर्थें जेआचर्या तेअप्रमाण बाकी दुर्निक्षादिक कारणे
तोकांइ अशुद्ध लीयें तोपण निर्दोषछे यतः पिंडनिर्युक्तौ ॥ एसोआहारविहि ॥ जहजणी
उसव्वनावदंसीहिं ॥ धम्मावस्सगजोगा जेणनहायंतितंकुज्जा ॥ १ ॥ तथा कारणपडिसे
वापुण नावेअणासेवणत्तिदिठ्ठवा ॥ आणाइतिइनावे सोसुद्धोमुरकहेउत्ति ॥ २ ॥ इत्यादिव
लीउववाइसूत्रे शुद्धेसणीए एवा अनिग्रह मुनियेंकर्या तेथी जाणियेंछैयेंजे पूर्वें अशु
द्धपणकोइक कारणे लेतादीसेछे एअपवादतो प्रमाणछे पणसुखशीललोकेंजे आचर्युं
ते चित्तमां लगार पणनधरियें एटलेए नावजे दुःप्रसहआचार्यलगें तो चारित्रसिद्धां
तमां सांजलियेंछैये अनेजो मार्गानुसारीक्रिया कहि तेरीतेंयत्नकरताहोयतेनेचारित्री
या नमानियें तो एथी बीजा चारित्रीया तोदेखातानथी तेवारे चारित्रविछेदगयो एम
ठर्युं तोतेचारित्रविना तीर्थपण विछेदगयुं एमठर्युं एम करतातो आगम विरुद्ध
थायछे यतः व्यवहारनाष्ये जोजणइनत्थिधम्मो तयसामाइयं नचेवयवयाइं ॥ सो
समणसंघबज्झो कायव्वोसमणसंघेण ॥ १ ॥ इत्यादिवचने तोमार्गानुसारीक्रियानो
करनार तेनावसाधुछे एम ठर्युं एप्रथमक्रियानामाजेदथयो ॥ ७ ॥

विधिसेवनाअवितृप्तिशुन ॥ देशनाखलितविशुद्धि ॥ श्रद्धा
धर्मइछाघणी ॥ चउनेदेंहोएमजाणेसुबुद्धि ॥ सा० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ हवे बीजुंलिंग श्रद्धाप्रवरनामाकहेछे तेना नेदचारछे तेकहेछे १ विधिसे
वना २ अवितृप्तिके० अतृप्ति ३ शुनदेशनाके० शुद्धदेशना ४ खलित परिशुद्धिनामा
चोथुंलिंग ते श्रद्धाप्रवरनोअर्थकहेछे श्रद्धाके० धर्मनीइछा घणीके० अत्यंतहोय पण
बालकने रत्नग्रहवानी अनिलाषानी पेरें सामान्यपणे विषयप्रतिनास मात्रनहोयत्ते
एम उपरकहेला चारनेदेंएलिंगहोय तेजाणे सुबुद्धिके० बुद्धिवंतहोय तेजाणे ॥ ए ॥

दृढरागछेशुभनोज्यमां ॥ जेमसेवतायेंविरुद्धि ॥ आपदा
मांरसजाणने ॥ तेममुनीनेंहोचरणेतेशुद्धि ॥ सा० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हवे एअठ्ठप्रवरनाचारजेदमां प्रथम विधिसेवनामेंजेदओलखावेछे जे शक्तिवंतहोयतेश्रद्धावंतथको विधिप्रधानशक्तिवंतप्रत्युपेक्षणादिक क्रियाकरे अने जे शक्तिरहित होयते द्रव्य क्षेत्र काल तथा जावेंकरी जोतादृशक्रियाकरी नशके तो पणप्रतिबंधत्ते विधिअनुष्ठाननेविषेज होय यतः विहिसारंचियसेवइ सद्धालूसत्तिमं अणुठाणं ॥ दव्वाइदोसनिहउवि ॥ परकवायंवहइतंमि ॥ १ ॥ इहां कोइपुरुजे शक्ति रहितजे होय तेअनुष्ठान नकरे अनेविधिअनुष्ठानमां पक्षपातिकेमहोय तेनेअन्वय सहित गाथानाअर्थथीकहेछे जेमकोइक पुरुषहोय तेडुकाल अथवादरिद्रपणुंपाम्यो तोतेपुरुष गोआर अरणीपत्र तथावृक्षनीछालप्रमुखखाइने दिवसव्यतिक्रमे पणतेवा जोजनमां लंपटायनही केमके पोते उत्तम आहारनो स्वादजाणेछे तेथी तेनोराग तो उत्तमजोजनमांज होयछे जे उत्तमजोजन केवारेंमलशे तेमलेतो वावरियें एवो अत्यंतरागहोय हवे अक्षरार्थ करेछे जे शुजजोज्यमां दृढरागछे तथा रसनो जाणते केमजे पूर्वेंषटरस वावर्याछे तेस्वादनो जाणछे तेआपदामांके० डुकालादिक आप दामां विरुद्धसेवतो एटले कुधान्य खातोथको पण तेनोराग सुधान्यमां होय एदृष्टांतें मुनीनेपण चारित्रनी शुद्धि जाणवी एटले यद्यपिद्रव्यखेत्रादिक कारणपामी ने विरुद्ध सेवे तोपण शुद्धचारित्रनो रसीउछे तेथी जावचारित्रने उलंगेनहीतेनेजावथी चारित्री याज कहियें संगमाचार्यनी पेरें इत्यादिक बहुवक्तव्यताछे इतिप्रथमजेदः ॥ १० ॥

जेमतृप्तिजगपामेनही ॥ धनहीनलेतोरत्न ॥ तपविनय
वेयावचप्रमुख ॥ तेमकरतोहोमुनिवरबहुयत्न ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ हवे अतृप्तिनामा बीजुं लक्षणकहेछे जेम धनहीनके० दरिद्रीहोय तेने रत्ननो ढगलोमल्यो तेवारें तेरत्नलेतां जगतमां तृप्तिके० संतोषपामेज नही तेम मुनीपण तप विनय वेयावच्च तथा प्रमुखशब्दें ज्ञानचारित्र तेहनेविषे घणोयत्नकरे यत्नकरतो थाकेजनही तृप्तिपामेजनही तेमां तपकरतांथकांतो निर्ज्जराथाय तथाशा स्त्रदीपे तेप्रसिद्धछे तथा विनयनो अधिकार उत्तराध्ययनना पेहेलाअध्ययनथी जा णवो अने वैयावच्चपण निर्ज्जराने अर्थें अनेकप्रकारनुंकरे तेप्रश्नव्याकरणसूत्रथी जोजो तथा ज्ञानजणतांपण नवनवोवैरागउपजे यतः जहजहसुयमवगाहइ अइ

सयरसपसरसंजुयमज्झं ॥ तद्दतद्दपज्जाइमुणी नवनवसंवेगसड्ढाइ ॥ १ ॥ इत्यादि त था चारित्रमांपण विशुद्ध विशुद्धंतर संयमस्थानक पामवानेसर्वअनुष्ठानकरे उत्तरो त्तरसंयमकंडकआरोहतां अप्रमादपणे केवल ज्ञाननालाभ नपणीथायज यतः जोगे जिण सासणंमिडुक्खक्कयापउजंति ॥ इक्किक्कंमिअणंता वट्टंताकेवलीजाया ॥ २ ॥ इत्यादिबीजोभेदकह्यो ॥ ११ ॥

गुरुनीअनुज्ञालेइने ॥ जाणतोपात्रकुपात्र ॥ तेमदेश
नाशुद्धिदिए ॥ जेमदीपेहोनिजसंयमगात्र ॥ सा० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवे शुद्धदेशनानामा त्रीजुंलक्षण कहेछे गुरुनी अनुज्ञाके० आज्ञालेइ तेमज शुद्धिदेशनाआपे तेपण पात्रकुपात्रने जाणतोथको जेमसंयमरूप गात्रके० शरीर ते दीपेके० शोभे निजके० पोतानुं संयमरूपगात्र शोभेइत्यक्षरार्थ एटले एना वजे सद्गुरुपासेंथी सिद्धांतनो सारजाणी गीतार्थथयोहोय तोपण गुरुनी आज्ञाले इने पण पोतानीमेलेनही पोतेधन्यथको मध्यस्थपणे सद्भूतदेशनाआपे पणपात्रकु पात्रओलखीने देशनाआपे तेपात्रना त्रणभेदछे १ बाल २ मध्यम ३ बुद्ध यतः बा लःपश्यतिलिंगं मध्यमबुद्धिर्विचारयेत्वृत्तं॥आगमतत्वंतुबुधः परीक्षतेसर्वयत्नेन ॥१॥ इत्यादिक तेनीदेशनानीविधि बीजाषोडशकथकी जाणवी इहां विस्तारथाय माटे न थीलखता तेमाटे जेपात्रने जेमउपगारथाय तेमतेपात्रने देशनाआपे अन्यथा संसा रवधारे इत्यादिक त्रीजुंलक्षण एत्रीजालक्षणमां पात्रापात्रविचार प्रमुखनी चर्चाघ णीछे तेधर्मरत्नग्रंथथी जोजो जेम पोतानुंसंयमगात्रशोभे ॥ १२ ॥

जेकदाचितलागेव्रतें ॥ अतिचारपंककलंक ॥ आलोयणें
तेशोधतां ॥ मुनिधरेहोश्रद्धानिःशंक ॥ सा० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवे खलितपरिशुद्धीनामा चोथुंलक्षणकहेछे तेजे कदाचित व्रतपालतां थकां कोइअतिचाररूप पंकके० कचरो तद्रूपकलंक जोव्रतने विषेलागे तेपण अना भोगेकरी अतिचारलागे १ प्रमाद २ दर्प्प ३ कल्प एत्रणरीतेलागे अने चोथो आकु ट्टियेंतोप्रायेंचारित्रीयाने संभवेजनही तेआकुट्टिप्रमुखनुं स्वरूपएछे यतः आउट्टिया उविच्चा दप्पोपुणहोइवग्गणाईउ ॥ विगहाईउपमाउ कप्पोपुणकारणेकरणं ॥ १ ॥ उपलक्षणथी अनेकप्रकारनी प्रतिसेवाछे तेसर्वेएमांसमाय तेप्रायश्चित्तादिकलेइने शु द्धथाय एरीते करतोमुनिराज निःशंकपणेश्रद्धाधारे एचोथोभेदथयो ॥ १३ ॥

श्रद्धाथकीजेसर्वलहे ॥ गंनीरआगमनाव ॥ गुरुवचनपेन्न
वणिऊते ॥ आराधकहोहोवेसरलस्वन्नाव॥ सा० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ हवे बीजालक्षणनो उपसंहारकरतांत्रीजुंलक्षण कहेले आरवीगाथानोअ
र्थ नेलोलिखियेंलैयें १ विधि २ उद्यम ३ नय ४ वर्णव ५ उत्सर्ग ६ अपवाद ७ तडु
नय इत्यादिक आगमना जेगंनीरन्नावले तेश्रद्धाथकी सर्वे जाणे जोएसर्वन्नाव नजा
णेतो जमालीनीपेरेंमिथ्यात्वी थइजाय एबीजालक्षणनो उपसंहारथयो हवे त्रीजुंल
क्षणकहेले जेएवा नावनाजाणहोय तेगुरुनेवचने पन्नवणिज्जके० प्रज्ञापनीय एटले
परुपवायोग्य पदार्थनो सरलस्वन्नावें उपदेश करतोथको आराधकहोय एत्रीजुंलक्षण

षटकायघातप्रमत्तने ॥ पडिलेहणादिकयोग ॥ जाणीप्रमादी
नविहोए ॥ किरियामांहोमुनिशुन्नसंयोग ॥ सा० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवेक्रियानेविषेअप्रमादनामा चोथुंलक्षणकहेले प्रमत्तके० प्रमादीने प
डिलहणादिकयोगवंतनेपृथिव्यादिक लकायनो घातथायले एटलेएन्नावजे उपयोगवि
ना प्रमादीथको पडिलेहणादिककरतो लकायनो विराधकथाय अनेउपयोगेंकरेतो
आराधकथाय यतः पडिलेहणंकुणंतोमिहो कहंकुणइजणवयकहंवा ॥ देइयपच्च
रकाणं वाएइसयपडीछइवा ॥ १ ॥ पुढवीआउक्काए तेऊवाऊवणस्सइतसाणं ॥
पडिलेहणापमत्तो लन्हंपिविराहउंहोइ ॥ २ ॥ पुढवीआउक्काए ॥ तेऊवाऊव
णसइतस्साणं ॥ पडिलेहणाआउत्तो लन्हंपिआराहउंहोइ ॥ ३ ॥ इत्युत्तराध्यन
लवीसमेंअध्ययने माटे एवुंजाणीपडिलेहणादिकयोगमांप्रमादी नहोय प्रमादकरतां
जैनदिक्षावंत पणसंसारन्नमे आर्यमंगुनीपेरें माटे क्रियामां मुनिराजतेशुन्नसंयोग
के० नलायोगवंत होय नलीक्रियानो संयोगकरे आगममां अनेकप्रकारनी क्रियाक
हीले तेसर्वेनलीरीतेंकरे एचोथुंलिंग ॥ १५ ॥

जेमगुरुआर्यमहागिरी ॥ तेमउऊमेबलवंत ॥ बलअविषय
नवीउऊमें ॥ शिवन्नूतिहोजेमगुरुहीलंत ॥ सा० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ हवे शक्तिअनुष्ठाननामा पांचमुंलक्षणकहेले तेजेम गुरुश्रीआर्यमहागिरि
जीयें उद्यमकर्यो तेमबलवंतथको उजमेके० उजमालथाय एटले एन्नावजे संघयणी
धृतिप्रमाणे निरवाहीशके तेक्रियानेजसुसाधुप्रारंन्ने पणप्रतिज्ञान्नंगथाय तेवुंप्रारंन्नेन

ही बलअविषयके० जेक्रियामां पोतानुं बलनचाले तेमांउद्यमनकरे अने करेतोउलटी खोटआवे यतः सोहुतवोकायव्वो जेणमणोमंगुलंनचिंतेइ ॥ जेणनइंदियहाणी जेण यजोगानहायंति ॥ १ ॥ इति जेमशिवभूतियें शक्तिउल्लंघनकरी गुरुवचन लोपीने गुरुनी निंदाकरवालागो तेरीतेंउत्तमसाधुनकरे इहांआर्यमहागिरी तथाशिवभूतीनो अधिकार धर्मरत्नग्रंथमांलख्योछे तेथीजाणवो ॥ १६ ॥

गुणवंतनीसंगतिकरे ॥ चित्तधरतगुणअनुराग ॥ गुणलेश

पणपरनुंग्रहे ॥ निजदेखेदोअवगुणवडभाग ॥ सा०॥ १७॥

अर्थ ॥ हवे छठोगुणानुरागनामा भावसाधुनुं लिंग कहेछे जे एवा चारित्रीयाहो य तेगुणवंतनीज संगतकरे अने पोताना चित्तनेविषे गुणनोज अनुरागके० रागधरे यतः वयसमणधम्मसंयम वेयावच्चंचबंभगुत्तीउ ॥ नाणाइतियंतव कोहाइति ग्गहाचरणमेयं ॥ १ ॥ एचरणसित्तरीकही तथा पिंडविसोहिसमइ भावणपडि माउइंदियनिरोहो ॥ पडिलेहणागुत्तिउ अभिग्गहाचेवकरणंतु ॥ १ ॥ एकरणसित्तरी इत्यादिक गुणनोरागधरे अनेबीजामां गुणनो लेशहोय तेपण स्तवे श्रीकृष्ण जेम कालाकुतराना दांतवखाण्या तेनीपेरें तथानिजके० पोतानाअवगुण देखे वडभागके० मोहोटा भागनोधणी जेमबेश्रावककालादेहरामां पेठा तेम पोताना अवगुणदेखे॥ १७

गुरुचरणसेवारत्तहोइ ॥ आराधतोगुरुआण ॥ आचार

सर्वनोमूलगुरु ॥ तेजाणेहोचतुरसुजाण ॥ सा०॥ १८ ॥

अर्थ ॥ हवेगुरुआणाआराधननामा सातमुंलक्षणकहेछे इहांकोइपुछेजे भावसा धुनालिंग शास्त्रांतरमांतोछकह्याछे यतः मग्गाणुसारीसद्धो पन्नवणिज्जोकिरियावरो चेव॥गुणरागी सक्कारंभ संगउतहयचारित्ती ॥ १ ॥ एरीते छगुणकह्याछे तोतमे सात मोगुणकहांथकी कहोछो तेनेउत्तरकहेछेजे चौदसेंचुमालीस प्रकरणरूप प्रसादनेविषे सूत्रधारसरिखा श्रीहरिभद्रसूरि तेणेउपदेशपदनामा ग्रंथनेविषे सातमुंलिंगपणकह्युं छे तथाचतत्सूत्रं एयंचअविकलकरणंमि ॥ मस्सनिसेसमेवधन्नस्स ॥ गुरुतद्दगुरुआणा संपा॥ डपंचगमामेहलिंगं॥ इत्यलंविस्तरेण माटे सातकहियेंछैयें हवेसातमांलक्षणनुं स्वरूपकहेछे गुरुजेछत्रीसछत्रीसीगुणे विराजमान तेनाचरणनी सेवानेविषे रक्तहोय तथा गुरुआदिकनी आज्ञाआराधतोथको वलीते साधुएम जाणेजे सर्वआचारनुं मूलतेगुरुछे गुरुथीसर्व प्रगटथाय तेचतुरसुजाण एमजाणे एसातमोगुणकह्यो ॥ १८॥

एसातगुणलक्षणवरयो ॥ जेनावसाधुउदार ॥ तेवरेसुख
जशसंपदा ॥ तुजचरणेहोजशभक्तिअपार ॥ सा० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ एसातलक्षणनेगुणेकरीवखोयको एवोजेभावसाधु उदारके० प्रधान ते सुखजशनी संपदा नेवरेके० पामे एटले उत्कृष्टजे मोक्षसुखतेनेतो तेवरेजेहेसर्वज्ञ केवलज्ञानभास्कर तमारा चरणनेविषे जशके०जेने अपारभक्तिहोय तेवरे॥१९॥ एढालमां प्रथमथीमांमीने जेटली वात टबामां लखीछे तेसर्वधर्मरत्नसूत्रवृत्तीथील खीछे पण तेग्रंथमां विस्तारघणोछे तेजोइलेजो एचउदमां ढालमां साधुना लक्षण कह्या तेलक्षण कहेता मुनिराजऊपर बहुमानउपनुं तेवहुमानना हर्षकरी पन्नर मां ढालमध्ये साधुना गुण वर्णन करेछे एसंबंधेपन्नरमोढालकहेछे ॥

ढालपन्नरमोआजमारेएकादशीरेनिणदलमौनकरीसुखरहीयेंएदेशीछे

धन्यतेमुनिवरारे ॥ जेचालेसमभावें ॥ भवसायर
लीलातरे ॥ संयमकिरियानावें ॥ धन्य० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ जे मुनीमांप्रधानसरिखा समभावे चालनारा रागद्वेषरहितपणेविचरे ते मुनिराजनेधन्यछे तेमुनिसंयम जेचारित्र तेनी जेक्रियातद्रूप नावेंके० नावायेंकरीने भवसायरके० संसारसमुद्रनो लीलायेंके० सेहेजमां पारउतरेछे ॥ १ ॥

भोगपंकतजीऊपरबेठा ॥ पंकजपरेंजेन्यारा ॥ सिंहपरें
निजविक्रमशूरा ॥ त्रिभुवनजनआधारा ॥ धन्य० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ भोग जेपंचेंद्रीना विषय तद्रूपजे पंकके० कचरो तेतजीने ऊपरबेठाके० अलगारह्या अने पंकजके० कमलनीपेरें जेन्याराछे एटलेकमल तेकचराथी उपनो अने कचराथी न्यारोरहे तेम मुनिराजपण भोगरूप कचरामांउपना अने तेभोगढां मीने अलगा रह्या इतिभावः वली सिंहनीपेरें पोतानो विक्रमके० पराक्रम फोरववा ने शूरवीरछे वलीस्वर्ग मृत्युने पातालरूप जेत्रणभुवननालोकने आधाररूपछे ॥ २ ॥

ज्ञानवंतज्ञानीसुंमलता ॥ तनमनवचनेसाचा ॥ द्रव्यभा
वसुधाजेभाषे ॥ साचीजिननीवाचा ॥ धन्य० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवे स्याद्वादशैली देखाडताथकां मुनिराजनुं वर्णनकरेछे पोतेज्ञानवं तछे तथा ज्ञानीपुरुषसाथें मलीरहेछे पणखेदधरतानथी वली तनके० काया अनेम

न तथावचनेकरीसाचाछे पण जूठीप्रवृत्तिनथी वली जेमुनिद्रव्यथी तथा नावथी स्रु धानापेके० सत्यबोले एटले द्रव्यते षट्द्रव्यादिक अने नावते तेनापर्याय अथवा द्रव्यथी बाह्यवस्तु अने नावथी अन्यंतरवस्तु तेसत्यकहे इत्यादिक अनेकप्रकार ते जिनेश्वरनी वाणीकहियें तेनेसाचीकहे एटले शुद्ध परुपकहोय इतिनावः ॥ ३ ॥

मूलउत्तरगुणसंग्रहकरता ॥ त्यजतानिक्षादोषो ॥ पग

पगव्रतदूषणपरिहरता ॥ करतासंयमपोषो ॥ धन्य० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ मूलगुणजे पंचमहाव्रतादिक अने उत्तरगुणपिंमविशुध्यादिक तेनो संग्रह करताके० राखता वली निक्षा जेगोचरी तेना बेतालीसदोष तेने त्यजताके० गंडता पगपगके० कणेकणे व्रतना दूषणजे अतिचार तेने परिहरताथका एरीते संयमने पोषेके० पुष्टकरतारहेछे ॥ ४ ॥

मोहप्रतेंहणतानितआगम ॥ नणतासदगुरुपासें ॥ दूषम

कालेंपणगुणवंता ॥ वरतेंशुनअन्यासें ॥ धन्य० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ तथा शुनअध्यवसायेंकरी मोहरूप शत्रूने हणता तथा नितके० निरंतर आगमके० सिद्धांतने सद्गुरु पाशेथीनणता एवाविषमकालें पंचमआरेंपण गुणवंता पुरुषछे ते रुडेअन्यासेवर्त्तेछे एटले पूर्वार्द्धमांज्ञानकह्युं अनेपश्चिमार्द्धमांक्रियाकही

बहुगुणठाणुंनवअडवी ॥ उलंघणजेणेलहियुं ॥ तससो

नागसकलमुखएके ॥ केमकरिजाएकहियुं ॥ धन्य० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ प्रमत्तनामा बहुंगुणठाणुं तेकहेवुंछे जे नवअडवी उलंघणके० संसार रूपअटवीनो पारपमाडनारुंछे ते जेणे लहियुंके० जेपुरुषेपाम्युं यतः नवाटवीलंघन तुल्यमेतत् प्रमत्तनामक्रिययासमेतं ॥ गुण्यंगुणस्थानमसंख्यवृध्या प्रमादहानैःप्रवरंप्रनाह्या ॥ १ ॥ तेमुनिराजनुं समस्तसौनाग्य तेएकेमुखे शीरीते कह्युंजाय ॥ ६ ॥

गुणठाणानीपरिणतिजेहनी ॥ नहीपेनवजंजाले ॥ रहे

शोलडीढांकीराखी ॥ केतोकालपराले ॥ धन्य० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जेपुरुषने गुणठाणानी परिणतिथयीहोय एटलेगुणठाणोपरणम्युंहोय तेनी परिणति नवजंजालेके० संसारविटंबनामां ढीपेनहीके० ढानीरहेनही तेपुरुष संसारमां

रह्योथको पण उदासीनज देखाय केनीपेरें जेमछोलडीने पराळे करीढांकीराखीहोय तेकेटलोकाळरहे आगळजातां अंकुराफूटे तेवारें प्रगटथाय पण ज्ञानीनरहे ॥ ७ ॥

तेह्वागुणधरवाअणधीरा ॥ जोपणसूधुंन्नाषी ॥ जिनशा
सनशोन्नावेतेपण ॥ सुधासंवेगपाषी ॥ धन्य० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ तेमुनिराजना पूर्वोक्तगुण धरवाने जेअणधीराके० असमर्थहोयएटले एह्वा गुणजेसाधुधरीशकेनही तोपणजे सूधुंन्नाषीके० शुद्धपरुपकहोय अनेदेशना प्रमुखगुणेकरीने जिनशासनने शोन्नावे तेपण सुधाके० शुद्धसंवेग पक्षीकहियें यतः संविग्गपक्खियाणं लरकणमेयंसमासउन्नणियं ॥ उसन्नचरणकरणा विजेणकम्मं विसोहंति ॥ १ ॥ सुद्धंसुसाहुधम्मं कहेइनिंदइयनियमायारं ॥ सुतवस्सियाण पुरउ होइउसव्वोमराइणिउ ॥ २ ॥ इत्याद्युपदेशमालायां ॥ ८ ॥

सद्दहणाअनुमोदनकारण ॥ गुणथीसंयमकिरिया ॥ व्यव
हारेंरहियातेफरशे ॥ जेनिश्चयनयदरिया ॥ धन्य० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ सद्दहणाके० तत्वश्रद्धा अनुमोदनके० गुणवंतनी प्रशंसाकरवी तथा कारणके० मोक्षसाध्यनासाधन इत्यादिक गुणथीके० पूर्वोक्त गुणेकरीने जे व्यवहार मार्गेरह्या एवाजेपुरुष तेणे फरशेके० संयमक्रिया फरसीज एमजाणवुं केमकेजे निश्चय नयरूपमतना समुद्रछे यतः सद्दहणाजाणणाणु मोयणकारणगुणापरेशिंजे णिच्छयववहारविऊ तेसिंकिरियाजवेन्नावा ॥ १ ॥ इतिसंमतिवृत्तौ ॥ ए ॥

दुःकरकारथकीपणअधिका ॥ ज्ञानगुणेंइमतेहो ॥ धर्मदा
सगणीवचनेलहियें ॥ जेहनेप्रवचननेहो ॥ धन्य० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ डुःकरकारथकीके० डुःखेथाय एवा कष्टना करनाराहोय अने अल्पआगमना धणीहोय तो शोकामआवे तथा कष्टादिक थोडुंउंहोय अने ज्ञानीपुरुषहोय तोतेज्ञानगुणेकरी कष्टनाकरनारथी अधिकाकह्याछे एम धर्मदास गणीयें उपदेशमालामध्ये कह्युंछे यतः नाणाहिउवरतरं हीणोविहुपवयणंपन्नावंतो ॥ नयडुक्करंकरंतो सुठुविअप्पागमोपुरिसो इतिवचनात् तेधर्मदासगणी केहेवाछे जेने प्रवचनके० आगमनेविषे घणोस्नेहहतो ॥ १० ॥

सुविदितगछकिरियानोधोरी ॥ श्रीहरिन्नद्रकहाय ॥ एह
न्नावधरतोतेकारण ॥ मुजमनतेहसुहाय ॥ धन्य० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ सुविहितके० जलाआचारवंत गच्छछेजेहनो तथा वली क्रियावंतमां धोरीसमान एवा श्रीहरिनद्रसूरि १४४४ ग्रंथनाकर्त्ता शास्त्रकारेंकह्याछेते एहनावके० एसंवेगपक्षीना नावने धरनारहता तेकारणे माराचित्तमांपण तेसुहायछे गमेछे एटले तेसंवेगपक्षी शुद्धपरुपक यथाशक्तियें क्रियावंतहतामाटेमारा मनमांते घणागमेछे ११

संयमठाणविचारीजोता ॥ जोनलहेनिजसाखें ॥ तोजू
ठुंबोलीनेदुरमती ॥ शुंसाधेगुणपाखे ॥ धन्य० ॥१२॥

अर्थ ॥ वली संयमठाणके० संयमनास्थानक असंख्याताछे तेविचारीजोताके० विचारतां जोपोतानी साखें नलहेके० नदेखे संयमनीवाततो मोहोटीछे तेआगमने मेले जुएतो पोतामां कहांथीदेखे तो जूठुंबोलीने संयमविना संयमीनाम धरावीने दुरमतिके० हेडष्टमतीनाधणी गुणपाखेके० गुणविना शुंसाधेछे ठालीमेनतकांकरेछे यतः असंजएसंजमणमाणे पावसमणेत्तिवुच्चइइत्युत्तराध्ययनवचनात् ॥ १२ ॥

नविमायाधर्मेंनविकेहेवुं॥परजननीअनुवृत्ति॥धर्मवचनआ
गममांकहियें ॥ कपटरहितमनवृत्ति ॥ धन्य० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ नविमायाधर्मेंके० धर्मनेविषे मायानथी एटले मायाकरतां धर्मनहोय वली परजननी अनुवृत्तिके० परनाअनुजायीपणे अथवा परने अवर्जननेअर्थें न विकेहेवुंके० धर्मदेशनाप्रमुख धर्मवचन नकेहेवुं एम आगमजेउपदेशमाला तेमांकहियेंके० वक्रोक्तियेंकहियेंछेयें एटले कह्युंछे यतः धम्मंमिनछिमाया नयकवमंअणुअत्तियंचेव ॥ कुडपागडमकडिल्लं धम्मवयणमुज्जुयंजाण ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां तेधर्मवचनकेवुंछे जे कपटरहित सरलमननीवृत्तिहोय एरीते धर्मवचनकहे १३

संयमविणसंयततायापे ॥ पापश्रमणतेनाख्यो ॥ उत्तराध्य
यनेसरलस्वनावे ॥ शुद्धपरुपकदाख्यो ॥ धन्य० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ वली पोतामांसंयम नहोय अने संयततायापे एटले साधुपणुं ठेरावे जेअमे साधुछैयें तेमुनीने पापसाधु कह्योछे तेमाटे सरलके० ऋजुस्वनावनोधणी ते ऋजुस्वनावेंकरीने शुद्धपरुपक कह्योछे एटलेसरलस्वनावीहोय तेशुद्धकहे मांटे होय तेवुंज केहेवुं यतः समंहमाणिपाणाणि बीयाणीहरियाणिय ॥ असंजएसंजयमन्नमाणे पावसमणतिवुच्चइ ॥ १ ॥ इत्युत्तराध्ययनेसतरमेंअध्ययनें ॥ १४ ॥

एकबालपणकिरियानयेंते ॥ ज्ञाननयेंनविबाला ॥ सेवायो
ग्यसुसंयतनेते ॥ बोलेऊपदेसमाला ॥ धन्य० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ एकबालके० कोइक बालछे पणकिरियानयें के० क्रियामां शिथिलछे एटलेक्रियानयेंबालछे पणज्ञाननयेंनी अपेक्षायेंतो बालनथी के० गीतार्थछुद्धनाषीछे तेगीतार्थ सुसंयतके० जलाक्रियावंतसाधुनेपण सेववायोग्यछे एटलेक्रियावंतमुनि ते क्रियारहितगीतार्थनो वैयावच्चकरे एमउपदेशमालामध्येबोल्युंछे यतः हीणस्सविसुद्ध परुवयस्सनाणाहियस्सकायव्वं॥ जणचित्तगाहणत्थं करितिलिंगावसेसेवि ॥ १ ॥ १५ ॥

किरियानयेंपणएकबालते ॥ जेलिंगीमुनिरागी॥ ज्ञानयो
गमांजशमनवरते ॥ तेकिरियासोजागी ॥ धन्य० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ जेक्रियानयनीअपेक्षायें बालछे एटले क्रियावंतनथी शिथिलक्रियावंत छे एवाजे लिंगीके० केवलसाधुनुंलिंगमात्र राखेछे पणजो मुनिरागीके० गुणवंतमुनी नारागीछे एटले पोते गुणवंतनथी पण गुणीनारागीछे तेकेवारेपोतेपणज्ञानीथाय तेमाटे केहेछे जे ज्ञानयोगमां जशमनवरतेके० एरीते जेनुंमन ज्ञानयोगमां वर्त्तेछे तेनी अल्पक्रियापण सोजागीके० सोजाग्यवंतजाणवी इहां अल्पक्रिया एवो अर्थ करियें तोपूर्वापरसंबंधमले एटले एजावजे पोतेअल्पक्रियावंत होय पणमुनिनो रागीछे तोएरीते ज्ञानयोगमांवर्त्ततां अल्पक्रियापणसोजाग्यवंती जाणवी ॥ १६ ॥

बालादिकअनुकूलक्रियाथी ॥ आपेंइछायोगी॥ अध्यात्म
मुखयोगअज्यासें ॥ केमनवकहियेंयोगी ॥ धन्य० ॥ १७॥

अर्थ ॥ आपेंके० पोते इछायोगीथकोरहे एटले योगत्रणप्रकारना कह्याछे १ इछा योग २ शास्त्रयोग ३ सामर्थ्ययोग तथापुनः श्रद्धानो विकलो २ वाक्याविकलं ३ श क्यतिक्रम इतियोगनिर्णये एत्रण योगमां प्रथम इछायोगते श्रद्धाअविकलथकां आपेंके० पोते श्रद्धावंत अने क्रियावंतहोय तो तेक्रियाथी बालादिकअनुकूलके० बालजीवमार्गना रागीथाय एटलामांएवडोगुणछे तो अध्यात्ममुखके० अध्यात्मप्रमुख योगसाधनग्रंथोनो अज्यासकरे एटले अहोरात्री अध्यात्ममां मग्नरेहे तेपुरुषने योगीश्वर केम नकहियें एटले श्रद्धावंतथकोक्रियाकरतो बालजीवने उपकारीथायछे अनेसाधु केहेवायछे तोअध्यात्ममां मग्नरेहेतां साधुमुनीनेयोगी केम नकहियें ॥ १७ ॥

उचितक्रियानिजशक्तिछंडि ॥ जेअतिवेगेचढतो ॥ तेनवथि
तिपरिपाकथयाविण ॥ जगमांदिसेपडतो॥ धन्य०॥ १८ ॥

अर्थ ॥ वली अध्यात्ममार्गे पणपोतानी उचितशक्तियें क्रियाकरतो साधे अने यथाशक्ति क्रियामूकीने शक्तिउल्लंघनकरे तोतेने गुण नथाय माटे जेटली पोतानी शक्तिहोय तेटलीज क्रियाकरवी एनुंनाम उचितक्रियाकहियें तेरीतेनकरे अनेजे अतिवेगेचढतोके० शक्तिथी अधिककरे एटले एनावजे शक्तिने अजावें उपवास छठप्रमुखकरे अथवा आतापना लेवाजाय इत्यादिक कामकरतो तेप्राणीपण नवस्थिति परिपाक थयाविना जगतमां पडतादेखियेंछैयें एटले एनावजे शक्तिउल्लंघनकरीने अधिककरवाजाय अने नवस्थितिं पाकीनथी तेथीपरिणामे टकेजनही परिणाम पडताजहोय शुकमालिकाप्रमुखनीपेरें इतिजावः ॥ १८ ॥

माचेमोटाईमांजेमुनी ॥ चलवेम्हाकम्माला ॥ शुद्धपरुपणगु
णविणनघटे ॥ तसनवअरहटमाला ॥ धन्य० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ वलीजे मुनी पोतानी मोटाइमां माचेके० रीजपामे एटले थोडीक्रियाप्रमुख आवडीहोय तेमां मगनरहे जेअमे समजुछैयें तथा म्हाकम्मालचलावे एटलेलोकमां आडंबरघणोदेखाडे पणशुद्ध परुपकगुणविना तेनी नवके०संसाररूपअरहटनी माला ते घटेनही उठीथायनही एटलेशुद्धपरुपकगुणविनासंसार उछोनथाय॥१९॥

निजगणसंचेमननविखंचे॥ ग्रंथनणीजनवंचे ॥ लुंचेके
शनमुंचेमाया ॥ तोव्रतनरहेपंचे ॥ धन्य० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ निजगणके० पोतानोजे गछसमुदाय तेने संचेके० नलाकरे जेअमारा श्रावकश्राविका साधुसाधवी इत्यादिक उपर ममत्वकरे मन नवीखंचेके० पोतानुं मन हीणीप्रवृत्तिथी खेंचीराखेज नही ग्रंथनणीके० इव्यनेअर्थे जनवंचेके० लोकनेठगे अथवा ग्रंथके० सिद्धांतशास्त्र नणीके० अध्ययनकरीने लोकनेठगे उत्सूत्रपरुपणाकरी लोकने छुंतियेंलेइजाय एरीतेंजे लुंचेकेशके०मस्तकेंकेशनुं लोचकरे अने नमुंचेमायाके० मायाकपट मूकेनही तोतेंप्राणीना पांचमहाव्रतमां एके नरहे॥२०

योगग्रंथनानावनजाणे ॥ जाणेतोनप्रकाशे ॥ फोकट
मोटाइमनराखे ॥ तसगुणदूरेंनासे ॥ धन्य० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ जेथकी आत्मस्वरूपसधाय एवाजे योगग्रंथके० परमार्थनाशास्त्र तेना भावके० रहस्यने नजाणेके० उलखेनही समजेनही अनेकदाचितजाणे तोप्रकाशेन ही भव्यजीवने तेग्रंथोनीवातो कहेनही कारणकेजो तेवीवातोकहे तोपोताने तेम ज करवुंपडे वली फोकट मोटाइके० मिथ्याअभिमानराखे जेअमेमोटाछैयें अमा रा जेवोकोइनथी एवो अहंकारराखे तसगुणके० तेप्राणीमां जोकोइगुणहोयतो तेप णदूरनासीजाय एमछता गुणपणजायतो अणछतानुंकेहेवुंजशुं ॥ २१ ॥

मेलेवेशेंमहियलम्हाले ॥ बकपरेंनीचोचाले ॥ ज्ञानविना
जगधंधेघाले ॥ तेकेममारगचाले ॥ धन्य० ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ मेलेवेशेंके० वस्त्रादिकमलीनराखे अने महियलके० पृथ्वीनेविषे म्हाले के० मलपतांफरे वली बगलानीपेरें नीचुंजोइनेचाले जेथी लोकजाणे ईर्याजूयेछे एवाहोय अनेजो ज्ञानीहोयतो सर्वलेखेछे पणज्ञानविना एटले अज्ञानीथका जगत ने धंधेके० क्लेशमां घालताफरे एटले एवीकष्टक्रियाकरनारनावचन लोकमाने अनेते पोतेंतो ज्ञानविनानोछे माटेअशुद्धपरुपे तेवारे लोकनेपण अज्ञानउपदेशलागेमाटे जगतने कदाग्रहरूपक्लेशमां नाख्युंज इतिभाव तो एवा अज्ञानीथकी जैनमार्ग केम चाले यतः मासेमासेयजोवालो कुसंगेणतुभुंजए ॥ नसोसुअरकायस्सधम्मस्सकलि अग्घइसोलसिं ॥ १ ॥ तथाअन्नाणीकिंकाहिइत्यादिवचनात् ॥ २२ ॥

परपरिणतिपोतानीमाने ॥ वरतेआरतध्याने ॥ बंधमोक्ष
कारणनपीछाने ॥ तेपहिलेगुणठाणे ॥ धन्य० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ परपरिणतिके० पारकी समजाणते पोतानीकरी माने एटले परअज्ञानी नी मतेचाले अथवा परपरिणतिके० पुद्गलशरीर वस्त्रपात्रादिकनाजे परिणमन ते अज्ञानेकरीने तन्मयपणेपरिणमतो सर्वपोतानीज परिणतिमाने अथवा परजे स्व व्यतिरिक्त लोकनाघर तेनाजे परिणमनके० घरव्यापारनुं चिंतववुं तेपोतानु करी माने अनेतेथी आर्तध्याननोविकल्पकरे यतः सयंगेहंपरिवज्ज परगेहंसिवावडे इत्यु त्तराध्ययनवचनात् माटेपोतानुंघर मुकी परघरनी चिंताकरेतो पापश्रमणकह्योछे इतिभावः अने बंधमोक्षकारणके० बंधनाकारणजे मिथ्यात्व अविरतिकषाययोगप्र मादप्रमुखजेबंधना हेतु ते नपीछानेके० नजाणे मोक्षनाकारण जे कषायादिकनो अभाव अथवा ज्ञानक्रियाप्रमुख एटले नाणकिरियाहिंमुक्खोइतिवचनात् ॥ इत्यादि

कर्मोक्षनां हेतुछे तेपण नथीजानेके० नजाणे एवाअज्ञानीप्राणी तेगमेतेटला कष्टादिककरो तोपण अज्ञानीछेमाटे पेहेलेगुणगणेजाणवा यदुक्तं ॥ नाणेणविणाचरणं पढमगुणगणपुवीकरं इत्युपदेशमालावृत्तौ ॥ १३ ॥ ॥

किरियालवपणजेज्ञानिनो ॥ दृष्टिथिरादिकलागे ॥ तेथी
सुजशलहिजेंसाहिब ॥ सीमंधरतुझरागे ॥ धन्य० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे ज्ञानिनोके० ज्ञानवंतनो क्रियानोलवके० एकअंशमात्र पण जे पांचमी थिरानामादृष्टि तिहांलागतोहोय एटले सम्यक्तसहितहोय आदिशब्दथी कांताप्रना परा एत्रणदृष्टिलइयें तेथीके० तेज्ञानसहित क्रियानाअंशथी हेसाहेब सुजशलहिजेके० नलोजशपामियें मोक्षरूपउत्कृष्टोजशपामियें पणते हेश्रीमंधरपरमात्मा तुझरागेके० तारे स्नेहेकरीने पामियें ॥ १४ ॥ एपन्नरमांढालनी कोइकगाथामां ज्ञाननीमुख्यताकरी कोइकगाथामां चारित्रनी मुख्यताकरी तथा कोइक गाथामां बेहुनो स्याद्वादकह्यो तेसांनली कोइकशिष्यने व्यामोहउपजे जेतेवारेस्थित पक्षते शोहशे तेशंका टालवाने सोलमां ढालमां स्याद्वादमार्गनो स्थितपक्ष देखाडेछे

ढालसोलमोसफलसंसारअवतारएहुंगुणुं एदेशी

स्वामीसीमंधरातुंनलेंध्याइयें ॥ आपणोआतमाजे
मप्रकटपाईयें ॥ द्रव्यगुणपज्जवातुझयथानिर्मला ॥
तेममुझशक्तिथीजईविन्नवसामला ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हेसीमंधरसाहेब तुझने मनमांध्यायियें एज नलेंके० नलुंछे जेम तमारा ध्यानथी आपणोके० पोतानो आत्मातेप्रगटपामियें तमारा ध्यानथी ज्ञानीथयीयें तेज्ञाने पोतानो आत्मा आवरणरहित थयो तेवारे आत्मनाव पाम्याज इतिनावः तेवारेयथाके० जेम १ द्रव्य २ गुण ३ पर्याय ते तुझके० तमारानिर्मलछे एत्रणना लक्षणकहेछे यथा गुणाणमासउदव्वं एगदव्वसियागुणा ॥ लक्कणंपज्जवाणंतु उनउनिस्सियानवे ॥ १ ॥ इत्युत्तराध्ययन मोक्षमार्गाध्ययन २०में अथवा गुणपर्यायनुं नाजनतेद्रव्य सहनाविधर्म तेगुण क्रमनावी तेपर्याय इत्यादिक व्याख्यान ग्रंथांतरथी जाणवुं एरीतें जेमतमारुंआत्मद्रव्य असंख्यातप्रदेशरूप तथा तमारा ज्ञानदर्शनचारित्रादिक अनंतगुण तथा तेमांसमयसमय उत्पादव्ययपणानु परणमवुं तथा अनंतअगुरुलघुप्रमुख जेपर्याय तेसर्वेनिर्मल थया निरावरणथया तेरीतें मारे

पण शक्तिथीके० यद्यपि व्यक्तिथीनथी तोपणशक्तियेंछेते जडविके० यद्यपि नवके० संसारनेविषे सामलाके० मेलाछे एटले आवरणसहितछे एटलोफेरछे ॥ १ ॥

चारछेचेतनानीदिशाअवितथा ॥ बहुशयनशय
नजागरणचोथीतथा ॥ मिछअविरत्तसुयततेरमें
तेहनी ॥ आदिगुणठाणेनयचक्रमांहेंमुणी ॥ २ ॥

अर्थ तेमाटे चेतनानीअवस्था वर्णवेछे चेतनानी अवितथाके० साचीदिशा चार छे तेदेखाडेछे १ बहुशयनके० घोरनिद्रारूपतेपहेली २ शयनके० चक्षुमिचवारूपबी जी ३ जागरणके० कांइक जागवारूपत्रीजी ४ चोथीतथाके० पूर्वेंकही तेमज एटले बहुजागरणरूप इतिभावः हवेएचारअवस्थानेगुणठाणे फलावेछे आदिगुणठाणेएप द सर्वत्रजोडियें एटले बहुशयननी आदि मिछके० मिथ्यात्वगुणठाणो अनेबीजीश यनअवस्थानीआदि तेअविरतिसम्यक्दृष्टीगुणठाणो तथात्रीजी जागरणअवस्थानी आदि तेसुयतके० अप्रमत्तसातमो गुणठाणो ४ बहुजागरणअवस्थानीआदि तेसं योगीकेवलीनामातेरमोगुणठाणोछे तेहनीके० तेअवस्थानी आदिगुणठाणते प्रथम धुरगुणठाणा एरीतेजोडजो एटले एअर्थ जेबहुशयनदिशाते १–२–३ गुणठाणेक हेवी अने शयनदिशाते ४–५–६ एत्रण गुणठाणेकहेवी अने जागरणदिशाते ७–८–९–१०–११–१२ एछ गुणठाणेकहेवी अने बहुजागरणते १३–१४ एबे गुणठाणे कहेवी एरीते अमने सुज्यो तेवोअर्थलख्यो वलीजे बहुश्रुतहोय तेणे नय चक्रग्रंथजोयी यथार्थकरवुं स्तवनकरतायेंतो नयचक्रमांमुणीके०नयचक्रमांगुणठाणा नीआदिजाणीएमकह्युं तेनयचक्रग्रंथहमणाअमारीपासेनथी माटे विचारजो ॥ २ ॥

भावसंयोगजाकर्मउदयागता ॥ करमनविजीवन
विमूलतेनविछता ॥ खडीयथीभितिमांजेमहोएश्वे
तता॥भीतिनवीखडीयनवीतेहभ्रमसंगता ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ भावपदार्थजे संयोगसंबंधथीउपना कर्म्मनेउदयेंआव्यातेभाव कर्मनथी जीवनथी मूलथी तेछतापणेनथी जेम भीतिके०भीतमांहे खडीयके० ते खटीकाथ की श्वेतताके० धवलताथायछे तो तेधवलतामां भीतिनथी अनेखडीपणनथी अ न्योन्येभिन्नछे पण भ्रमेंकरी संगति ऐक्यतामिलतिथायछे ॥३॥ आगाथानुंअर्थ ज्ञान विमलसूरिनाटबाऊपरथी लिख्युंछे ॥

देहनविवचननविजीवनविचित्तछे ॥ कर्मनविरा
गनविद्वेषनविचित्तछे ॥ पुद्गलिभावपुद्गलपणेप
रिणमें ॥ द्रव्यनविजूजूजूएकहोवेकिमे ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ देहके० शरीरनथी ऐक्यतापणे वचनकायिकवाचिकयोगनथी जीवनथी चित्तनथी कर्मनथी रागनथी द्वेषनथी विचित्तछेके० विचित्रताअनेकजातिछे एसर्व पुद्गलिकभावछे तेपुद्गलपणेपरिणमे केमके पुद्गलनुं अनेकप्रकारें परिणमनधर्मछे पूरणगलणधर्माणः पुद्गलनुंलक्षणछे तेमाटे जीवादिकजेद्रव्यछे तेसर्वेथकीजूदोजूदो छे तेएककेमहोयनही उपचारेंएककहियें॥४॥ आगाथानुंअर्थ ज्ञानवि० टबा०लि०

पंथीजनलुंटतांचोरनेजेमभणे ॥ वाटेंकोलुंटि
येंतेमजमूढागिणे ॥ एकक्षेत्रेमल्याअणुतणी
देखतो॥विकृतिएजीवनीप्रकृतिउवेषतो ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ जेम पंथीलोकने लुंटतांथका चोरने कोके० कोइक पुरुषएमकहे जे वाटेलुंटेछे पणतेचोर वाटनेलुंटतानथीपण वाटजे मार्गतेने विषेरह्याजेलोक तेलुंटायछे पण लक्षणे एमकहेछेजे वाटलुंटी तेमज मूढाके०मूर्खतेशरीर आत्माप्रमुखने एककरी गणेछे शामाटेजे एकक्षेत्रेमल्याके० जेक्षेत्रे आत्मा तेजआकाशप्रदेशेमल्या परस्परसं बंधथयो एवाजे अणुतणीके० परमाणुनी विकृतिके० विकारने देखतोके० देखीने मूर्ख एमगणेछे अने जीवनीप्रकृतिजेस्वभाव तेने उवेषतोके० लेखामां अणगणतो थको जीवते शरीरादिकने एकपणेगणेछे पणएम जाणतोनथीजे पुद्गलतेजडछे अ चेतनछे अनेआत्मातो ज्ञानस्वरूपीछे तेएक केमथाय इतिभावः ॥ ५ ॥

देहकर्मादिसविकाजपुद्गलतणा ॥ जीवनातेव्यव
हारमानेघणा ॥ सयलगुणठाणजीअठाणसंयोग
थी ॥ शुद्धपरिणामविणजीवकार्यनथी ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे देहके० शरीर तथा ज्ञानावरणादिकर्म अने आदिशब्दथी घरबार प्रमुख एसर्व पुद्गलनाकार्यछे पुद्गलथी नीपनाछे तेपुद्गलनाकार्यने जीवनाकार्यकहीवो लावेछे तेव्यवहारमानेघणाके० तेव्यवहारनयथी जीवनाकार्यकहियें पणनिश्चयनय तोसर्व पुद्गलस्वरूपछे सयलगुणठाणके० समस्तमिथ्यात्वादिकगुणस्थानक तथा जी अठाणके० समस्तएकेंद्रियादिकजीवस्थानक इत्यादिक सर्वप्रकारते संयोगथीके० पु

ञ्जनकर्मादिकना संयोगथीजाणवा पणएआत्मस्वरूपनही केमके शुद्धपरिणामके० समस्तउपाधिरहित जेनाप्रदेशनेविषे एक अणुमात्रपण जेलतथी एवुंजे शुद्धस्वरूप तेविना जीवकार्यनथीके० जीवरूपकार्यनथी ॥ ६ ॥

नाणदंसणचरणशुद्धपरिणामजे ॥ तंतजोतानछे
जीवथीनिन्नते ॥ रत्नजेमज्योतिथीकाजकारण
पणे ॥ रहितएमएकतासहजनाणीमुणे ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ ज्ञानदर्शन तथा चारित्र इत्यादिक अनंतजे शुद्धआत्मानापरिणाम छे ते तंतके० नियतपणाथीजोयियेंतो कांइजीवथकी निन्ननथी केमके ज्ञानादिक गुण जोनिन्नहोय तो आत्मानिर्गुणजडपणे मानवोजोयियें तेतोनथी माटेजीवथी ज्ञानादिक गुणनिन्ननथी जेम स्फाटिकरत्नप्रमुख पोतानी ज्योतीथी निन्ननथी शामाटे जे काजकारणपणे कहेतां कांइपूरवतुंनथी केमके जो रत्नथीज्योतिथयी एमकहियें तो जोतिविना रत्नहतुजनही माटेरत्नथी ज्योतिथयी एम कहेवायनही तथा ज्योतिथी रत्नथयुंएमपण नकहेवाय केमके रत्नविनाज्योतिपण किहांहती तेमाटे कार्य कारणपणेरहितछे एमके० एरीते आत्मा तथाआत्मगुण ते निन्ननथी सहजस्वनावें जअनेदछे ऐक्यताछे एवात नाणीमुणेके० जेज्ञानीहोयतेजाणे पणमूर्ख समजेनही०

अंशपणनविघटेपूरणद्रव्यना ॥ द्रव्यपणकेमकहुं
द्रव्यनागुणविना॥ अकलनेअलखएमजीवअति
तंतथी ॥ प्रथमअंगेवंदिनेअपदनेपदनथी ॥ ८ ॥

अर्थ॥ संपूर्णद्रव्यना जेअंश केहेवा तेपणयुक्तनथी केमके जेवारेंअंशकहीयेंतेवारें द्रव्यपणशानुं एगंनिच्चंनिरवयवं अक्रियंसवगंचसामन्नं इतिमहानाष्यवचनात् जेद्रव्य ते सामान्यछे अने जेसामान्यते निरवयवछे तथा द्रव्यपणकेम कहुंद्रव्यनागुणविना के०द्रव्यसंबंधी जेगुणतेविना द्रव्यपण केमकेवाय कारणके गुणाणमासउदव्वंइत्युत्तराध्ययने २८ में अध्ययने द्रव्यलक्षणंतथागुणपर्यायवत्द्रव्यं इतितत्वार्थवचनात् तथा पर्यायनयवालानीयुक्तियेंतो द्रव्यछेजनही परमार्थें पर्यायजस्वतंत्रछे यथाउत्फण विफण कुंडलितादि अवस्थाथी निन्न सर्पद्रव्यते शीवस्तुछे तो उत्फणविफणादिक द्रव्यनातोकहेवायजोद्रव्य ठरेतो तेमाटे द्रव्यनथीतो द्रव्यना गुणकहांथकीहोय जेम गाम नहोय तोतेगामनी सीमकहांथकी इत्यादिवत् महानाष्यमांजोजो एटले एना वजे अंशपण नकहुं अनेद्रव्यपण नकेहेवाय युक्तियेंतोएम आव्युं अने आग

ममांतो अंशसहित पणद्रव्यकहियें एमछे गुणपर्यायवत्द्रव्यं एजवचन सुचवेछे ते माटे अकलके० कल्योनजाय अनेअलखके० लख्योनजाय एरीतनो जीवके० आत्मा ते अतितंतथीके० अत्यंतपणे निश्चेथकीजाणवो एटले कांइकेहेवायनही यतः वरका तरएसव्वो॥ सराणीयहंतितक्काजछनविज्जति॥ मतितछगाहेयाउएअपइहाणस्सखेयन्ने सेणदीहेणहस्सेनवट्टेनतंसेनचउरंसेनपरिमंडलेनकिन्हेननीलेनलोहिएनहालिद्देनसु किल्लेनसुरनिगंधे नदुरनिगंधे नतित्ते नकडुवे नकसाये नअंबिले नमहुरे नकक्कडे नमउए नगुरुए नलहुए नसीए नउन्हे नतिन्हे नलुक्के नकाउ नरूहे नसंगे नइत्थी नपुरिसे नअन्नहा परिन्ने सन्नेउवमानिविज्जये अरूवीसत्ताअपयस्सपयंनत्थि ॥ इत्या दिकआचारांगपंचमाध्ययने उद्देशेछठेकह्युंछे तेमाहेलाविषमपदोनो अर्थकरियेंछैयें वरकातके० मोक्षतेनेविषे रएके० राता सवेसराके० तेमोक्षस्वरूपकेहेवुंछे तेकहेछे सर्व स्वर निवृत्याछे एटले कोइशब्देंवाच्यनथी तक्काके० विचारजे आमहशे केआमहशे ते केहेवाय नही मतिजे उत्पातकीप्रमुख तेनो ग्राहजेनेविषेनथी तेपण उएके० एकलुं छे पणकर्मकलंकसहित नथी अपइहाणस्सके० उदारिकादिकशरीरनुंप्रतिष्ठाननथी तथाखेअन्नेके० लोकालोकनुंज्ञायकछे तथा नकाउके० कायनथी नरूहेके० सं सारमांउगवुंनथी अन्नहाके० नपुंसकनथी परिन्नेके० समस्तप्रकारेजाणछे सन्नेके० सम्यक्जाणेछे तथा अपयस्सपयंनत्थिके० अवस्थाविशेषजे पदतेनथी जेने तेअपद कहियें एटले अपदते सिद्ध नेपदके० जेअभिध्यानतेनथी एटले सिद्धनेकोइनामेंक हीबोलावीयें तेनथीइतिभावः ॥ ८ ॥

शुद्धताध्यानएमनिश्चयेंआपनुं ॥ तुऊसमापति
नेषधसकलपापनुं ॥ द्रव्यअनुयोगसंमतिप्रमु
खथीलही॥ भ[illegible]वैराग्यनेज्ञानधरियेंसही॥ ए॥

अर्थ ॥ शुद्धताके० शुद्धस्वरूपनुंजे ध्यानतेहिजपोतानुंनिश्चयरूपेंजाणवुं माटेहे प्रभु सर्वपापनुंसमाप्तिऔषध सर्वदोषनाशनरसायन ते एहिजछे जे शुद्धउपयो गलक्षणते अने षटद्रव्यनीविचारणारूप अनुयोग संमतिमहातर्कादिग्रंथथकीजाणी ने साहिबनीविधिसेवापूर्वक निराशंसतारूपभक्ति वैरागके० विषयविमुखता ज्ञानते शुद्धउपयोग निश्चेथकीएहीजचित्तमांधरियें कार्यसाधकताएहिजछे एटले भक्तिदशा वैराग्यदशा ज्ञानदशा एत्रणकार्यसाधकताछे तिहांचोथोगुणगणुंभक्तिमुख्ये पांचमो छगोगुणगणो वैराग्यदशामुख्ये क्षीणमोहादिकगुणगणुं ज्ञानदशामुख्ये इत्यादिक

व्यंजावेंसर्वेजाणवी मुख्यता गुणतायें एकेंत्रणेएकइत्यादिव्यक्तता ग्रंथांतरथीजाणवी ॥ ए ॥ आगाथानोअर्थ ज्ञानविमलसूरिनाटबाउपरथीलिख्योछे

जेहअहंकारममकारनुंबंधनं॥ शुद्धनयतेदहेदहनजेमइंधनं॥ शुद्धन यदीपिकामुक्तिमारगभणी ॥ शुद्धनयआथछेसाधुनेआपणी ॥१०॥

अर्थ॥जेअहंकारके० मान ममकारके० ममत्व तेनुं बंधनंके०कारण एटलेअहं कारतथा ममकारनुंमूलरागद्वेषछे तेरागद्वेषथी अहंकार तथा ममकारहोय तेरागद्वेषने दहनजेमइंधनंके०जेमअग्नि लाकडाने बालीनाखे तेनीपेरें शुद्धनयके०आत्मतत्वचिंतनरूपध्यानते दहेके०बाले एटले शुद्धध्यानथी रागद्वेषबली भस्मथाय शुद्धनयके० निश्चेनयतेमोक्षमार्गनोदीवोछे केमके मोक्षमार्गेगमनकरतां अजवालुंकरे माटेजे शुद्धनयतेज साधुने आपणीके०पोतानी आथके०संपत्तिछे यतः दीपिकाखलुनिर्वाणे निर्वाणपथदर्शिनि॥शुद्धात्मचेतनायाच साधूनामक्षयोनिधिः १॥ इतियोगनिर्णये १०॥

सकलगणिपिटकनुंसारजेणेलह्युं ॥ तेहनेपणपर मसारएहजकह्युं ॥ उघनिर्युक्तिमांएहविणनवि मिटे ॥ दुःखसविवचनएप्रथमअंगेंघटे ॥ ११ ॥

अर्थ॥गणिके० आचार्य तेनासकलके० समग्रगुणरूपरत्ननी पिटकके०पेटीएटले द्वादशांगीरूपजेगणिनीपेटी तेनो सारके०प्राधान्यपणुं तेजेणे लह्युंके० जाण्युछे एहवा समस्त द्वादशांगीनाजाणने पण परमसारके० प्रधानरहस्यपरमसारतेएजशुद्धनयपरिणमनरूपकह्युंछे एद्वादशांगीना जाणनेपण निश्चेनयज सारकह्युंछे तोबीजानीशी वात एमश्रीउघनिर्युक्तिमध्येकह्युंछे यतः परमरहस्समिसीणंसम्मत्तगणिपिडगझरियसाराणं॥परिणामियंपमाणंनिच्छयमवलंबमाणाणं॥१॥ इति तोएहविणके० एनिश्चयनयसमज्याविना दुःखके० पापते नविमिटेके० नटले तथा कोइकपरतमां एहविणनघटे एमलख्युंछे तेनविघटेके० दुःखओछुं नथाय माटे बेहुनो भावार्थएकजछे एसर्ववचन प्रथमअंगेघटेके० श्रीआचारांगसूत्रमांघटमानछे युक्तछेजे एगंजाणइसे सव्वंजाणइ जेसव्वंजाणइ सेएगं जाणइ इत्यादिपाठात् ॥ ११ ॥

शुद्धनयध्यानतेहनेसदापरिणमे॥ जेहनेशुद्धव्यव हारहीयडेरमे॥ मलिनवस्त्रेयथारागकुंकुमतणो ॥ हीनव्यवहारचित्त एहथीनविगुणो ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ एटलीवार शुद्धनयनीमुख्यतायेंवातकही हवेकोइक एमसांजलीनेएकांतनिश्चयनयजअंगीकारकरे अनेव्यवहारनय लेखामांगणेजनही तेने शिक्षाकरेछे जेपूर्वोक्तप्रकारें शुद्धनयनुंजे ध्यान तेतो तेप्राणीनेसदानिरंतरपरिणमे जेप्राणीनेशुद्धव्यवहारसंयमानुष्ठानप्रवृत्तिरूप हीयडेरमेके० हृदयनेविषेरमे तेनाऊपरदृष्टांत कहेछे जेम मेलावस्त्रनेविषे कंकुनोअथवा केसरनोरंग नलागे तेमज हीणाव्यवहारवंतनाचित्तने नविगुणोके० गुणनहोय एटले व्यवहारविनानिश्चेंपरिणमेनही ॥ १२ ॥

जेहव्यवहारसेढीप्रथमछंडता ॥ एकएआदरे
आपमतमांडतां ॥ तासउतावलेनंविटलेआ
पदा ॥ क्षुधितइछायेंउंबरनपाचेकदा ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ जेप्राणी व्यवहारश्रेणीरूपंजेअनुक्रम तेतोप्रथमछांडेछे तथा एकएआदरे के० एकलोएनिश्चय नयज आदरेछे आपमतमांडताके० पोतानुं मतदृढकरतां एकनवस्थितिऊपर दृढथयाछे पणउद्यम करतानथी तोतेनीउतावले आपदाटलेनही एटले एकलोनिश्चय पोकारवाथी संसारपरिभ्रमणरूप आपदा टलेनही जेमक्षुधितके० भूख्यानीइछायें उंबरनाफलकदापि नपाके एटले उंबरफल तेजलसेकादिकक्रियायेंपाके पणइछामात्रेंनपाकेइतिभावः ॥ १३ ॥

भावलवजेहव्यवहारगुणथीभले ॥ शुद्धनयभा
वनातेहथीनविचले ॥ शुद्धव्यवहारगुरुयोगपरिण
तपणुं ॥ तेहविणशुद्धनयमांनहितेघणुं ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ भावके० रुडाअध्यवसायनो लवके० अंशतेपण व्यवहारपडिलेहणादिकरूप गुणथी भलतोहोय एटले व्यवहारसहितहोय तो शुद्धनयभावनाके० शुभअध्यवसायनीजेभावना योजना तेतेप्राणीथी नविचलेके० खसेनही एटले शुद्धनयनीभावना तेतो तेवारे स्थिरथायके जो व्यवहारयुक्तहोयतो अन्यथा क्षणतोलो क्षणमासोयाय तेशुद्धव्यवहारतो गुरुयोगके० गुरुनासंयोगें एटले गुरुकुलवासें निर्मलव्यवहारथाय तेशुद्धव्यवहारथी परिणतपणुंके०परिपक्वपणुंहोय एटले शुद्धनयमां परिपक्व तोजेशुद्धव्यवहारवंतहोय तेहजथाय अन्यथाशुद्धव्यवहारविना शुद्धनयठरीशकेनही अने तेहविणके०तेगुरुयोगशुद्धव्यवहारविना शुद्धनयमांके०अध्यात्ममां नहीगणवुं एटले गुरुकुलवासें शुद्धव्यवहार अनेशुद्धव्यवहारेपरिपक्वपणुं निश्चयमांनिश्चलपणुंहोयइति एटले शुद्धनयमांपरिपक्वतातोहोय जोगुरुयोगव्यवहारशुद्धहोयतो॥

केइनविन्नेदजाणेअपरिणतमती ॥ शुद्धनयअति
हिगंन्नीरबेतेवती ॥ न्नेदलवजाणनांकेइमारगतजे॥
होयअतिपरिणतीपरसमयस्थितिन्नजे ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ एरीते केटलाकप्राणी अपरिणतमतीके० अपरिणामीतेने नवन्नेदजाणे के० अनेकप्रकारनी खबरनपडे इहां न्नेदते अपवाद उत्सर्ग निश्चयव्यवहारप्रमुख जाणवा तेनजाणे अपरिणतमतीशब्दें व्यवहारनयवालालीजियें तेकेमनजाणे जे शुद्धनयअतिहिगंन्नीरछेके० उपलानयतेअत्यंतगंन्नीरछे एटले एन्नावजे आगला १ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार एत्रणनय यद्यपि अपरिणतमतीजाणे पणनिश्चनय तो अतीगंन्नीर तेउपयोगरूपनयमांखबरनपडे इतिएटलेजे व्यवहारनय एकलोमा ने तेनेवबकोदीधो हवे एकलोनिश्चयनय मानेतेने छबकोदीयेछे केटलाकप्राणी न्नेदल वजाणताके० न्नेदनो अंशमात्रजाणतामार्गने तजेके० छांमीदीये एटले अंशमात्र कांइकशिख्युंसांन्नल्युंछे तेवचनजाणे तेथी महा अहंकारधरता एमजाणेजे निश्चेस्वरू पनी वातो आपणे जाणियेंछैये एवी बीजोकोणजाणेछे अने आपणे आत्मस्वरू पजाण्युं एटले क्रियानुं शुंकामछे क्रियातो ज्ञाननीदासीछे इत्यादिकवचन बोलीक्रि यानकरे अनेमार्ग छांमे एवीरीतें जे अतिपरिणामिथाय तेशुंकरे तेकहेछे जे समय जेसिद्धांत तेनी परके० उत्कृष्टीस्थिति तेमर्यादा तेनेन्नजे एटले सिद्धांतमां उत्कृष्टी स्थिति जेनिश्चयनीवातोकरवी तेन्नजेके० करे अथवा परसमयस्थितिन्नजेके० अ न्यदर्शननीस्थितिन्नजे एटले एकांतनिश्चयनयवादी दिगंबरादिक. तेपरदर्शनीकहि यें तेवारेएणेपरदर्शनिनीस्थितिन्नजी इतिन्नावः ॥ १५ ॥

तेहकारणथकीसर्वनयनविकह्या॥ कालिकश्रुतमां
हेंतीनप्रायेंलह्या ॥ देखीआवश्यकेंशुद्धनयधुरें
न्नणी॥जाणियेंऊलटीरीतिबोटिकतणी ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ तेकारणथकी निश्चेपरिणामी तेएकली परिणामनी वातोकरीने. मार्ग उपाडीनांखशे एवुंजाणीने १ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार ४ ऋजुसूत्र ५ शब्द ६ समन्निरूढ ७ एवंन्नूत ए सर्वनयनथीकह्या किहां नथीकह्यातेकहेछे कालिकश्रुत मांहेंके० आचारांगादिक कालिकश्रुतनेविषे तीनप्रायेंलह्याके० बहुलतायें १ नैग म २ संग्रह ३ व्यवहार एत्रणनयलख्याछे एवात ग्रंथकार शिष्यनेकहेछे जेदेखी

आवश्यकेके० आवश्यकनिर्युक्तिमां देखजो एटलेकालिकश्रुतमां प्रायेंत्रणनयक ह्यावे एम आवश्यकनिर्युक्तिमांकह्युंछे यतः एएहिंदिठिवाए परुवणासुत्तअत्थकहणाय इहपुणअणज्झुवगमो अहिगारोतीहिंउसन्नं ॥ १ ॥ पायसंववहारं तेहिंतेहिंउजजोएते णं परिकम्मणछंकालिय सुत्तेतदहिगारो ॥२॥ इत्यावश्यके एरीततोश्वेतांबरपक्षेछे जे पूर्वेंव्यवहार समजावीनें पछे निश्चयनीवात समजावेइति तथाहवेदिगंबरनीप्रक्रिया दूखवेछे जेशुद्धनयधूरेंके० निश्चयनयधूरेछे तेमाटे बोटिकके० दिगंबरनीरीती तेउलटीके० विपरीत जाणीयें जेमाटे पेहेलाथी निश्चयनय समजावे एटले व्यव हारमां दृष्टिवरेजनही माटे विपरीतकहिइतिनावः ॥ १६ ॥

शुद्धव्यवहारछेगछकिरियाथिति ॥ दुप्पसहजाव
तीरथकह्युंछेनीति ॥ तेहसंविज्ञगीतार्थथीसंन्न
वे ॥ अवरएरंमसमकोणजगलेखवे ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे व्यवहार तेप्रधानछे तेशुद्धविवहारतो सुविहितगछजे साधुसमु दाय तेनी क्रियानी जेस्थिति तेमांछे एटले शुद्धव्यवहारते सुविहितगछमां होय डःप्रसहनामा आचार्यजेपांचमांआराने छेडेथशे यावत्तिहांलगें नीतिके० निरंतर तीर्थकह्युंछे यतः इयसव्वोदययुगपवर सूरिणोचरणसंजुएवंदे ॥ चउरुत्तरडुसहस्स डुप्पसहतेसुहम्माइ ॥ इतिडुसमसंघस्तोत्रे तथा वासाणवीससहसा नवसयतिमा सपंचदिणपहरा ॥ इक्काघडियादोपलअरकरइगुआलजिणधम्मो ॥ इतिदीपालीकल्पे॥ तेतोर्थतो गीतारथसंविज्ञहोयतेथीज संनवे एटले नाणक्रियाहिंमुरकोइतिनाष्यवच नात् एटलेज्ञानक्रियाथी मोक्ष तेज्ञानक्रिया तोगुणछे अने जेगुणछे तेगुणीथी अने दरूपछे तेमाटेसंविज्ञशब्दें क्रियावंतआव्या अने गीतार्थशब्दें ज्ञानवंतआव्या तेसंविज्ञ गीतार्थथी जेबीजा तेएरंमासरिखाजाणवा तेने जगतनेविषे कोणलेखामांगणेछे॥१७

शास्त्रअनुसारजेनविहछेताणियें ॥ नीतितपगछ
नीतेनलीजाणियें ॥ जीतदाखेजिहांसमयसारू
बुधा ॥ नामनेठामकुमतेनहीजसमुधा ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ तेसंविज्ञगीतार्थ परमार्थेंतोतेने कहियेंजे शास्त्रने अनुसारें हठेंताणेनही शास्त्रना अक्षरदेखे एटले पोतानोकदाग्रहमूकीआपे एवीरीती तोतपगछनी नलीके० घणीउत्तमछे एटले तपगछमां पंचांगीप्रकरणादिकजे सुविहितना करयाग्रंथ तेसर्वप्र

माणछे एमजाणियें इतिनावः जिहांके० जेतपगछनेविषे बुधाके० पंमितलोक तेस मयसारूके० सिद्धांतप्रमाणे जीतदाखेके० वर्त्तमानकालनोजीतदेखाडेछे जेतपगछनो नामअने गामके०स्थानक तेकुमतेके० कदाग्रहे सुधाके० फोकट जलके० जेना नही के० नथी एटले एतपगछनोजेनामगामतेसर्वेगुणनिष्पन्नछे ॥ १७ ॥

नामनिर्ग्रंथछेप्रथमएहनुकह्युं ॥ प्रथमअडपाट
लगेंगुरुगुणेसंग्रह्युं ॥ मंत्रकोटीजपीनवमपाटेय
दा ॥ तेहकारणथयुंनामकोटिकतदा ॥ १ए ॥

अर्थ ॥ हवे तपगछना नामधुरथकी अनुक्रमे निष्पन्नछे तेकेहेछे प्रथमश्रीसुधर्मा स्वामीथी निर्ग्रंथएहवुं नामप्रथमकह्युं तेप्रथमना आठपाटलगें गुरुगुणेके० मोहोटे गुणे निस्पृहतारूपगुणेकरी संग्रह्युंके० ग्रह्युंछे पछे नवमेंपाटे सुस्थित सुप्रतिबद्धआ चार्यें कोटीवार सूरिमंत्रजपीनेरह्याबीजाआचार्येंते चारलाख तथा सवालाखमंत्रजपे एटलेसूरिमंत्रपुरोथयो अने एबेआचार्यें कोटीवारजप्यो तेकारणके० तेहेतुयें तेवारे कोटिकनाम केहेवाणुं एटलेएनामपणगुणनिष्पन्नछेपणकोइमतकदाग्रहेनथी ॥१ए॥

पंनरमेंपाटेंश्रीचंद्रसूरेंकरयुं ॥ चंद्रगछनामनिर्म
लपणेंविस्तरयुं ॥ सोलमेंपाटवनवासनिर्मम
मति ॥ नामवनवासीसामंतन्नद्रोयति ॥ २० ॥

अर्थ ॥ तेकोटिकगछ चउदपाटलगेंचाल्युं तेवारपछि पंनरमेंपाटेंश्रीवज्रसेनाचार्य ना शिष्य चारथया तेलक्षमूलनी हांमी व्यवहारीयाने घरेचडी तेवारेबीजे दीनेसुका लथशे एमकही जीवाड्या तेव्यवहारीयें तथा तेना चारपुत्रें उपकारजाणी चारित्र लीधुं तेचार शिष्यनानाम १ नागेंद्र २ चंद्र ३ विद्याधर ४ निवृत्ति एचार थया ते चारे आचार्यपदपाम्या तेमां चंद्रनामाआचार्यपन्नरमें पाटेंथया तेउथी त्रीजोचंद्रगछ एवुंनामनिर्मलपणे विस्तार पाम्युं तेपण गुणनिष्पन्नथयुं पण मतकदाग्रहे थयुंन थी पछेंसोलमेंपाटें वनमां वस्या ममत्वरहित जेनीमतिहति एवाआचार्यथया माटे वनवासीनामचोथुंकेवाणुं तेआचार्यनुंनामसामंतन्नद्र यतिके०जितेंद्रियहता॥

पाटछत्रीशमेंसर्वदेवान्निधा ॥ सूरिवडगछतिहां
नामश्रवणेसुधा ॥ वडतलेंसूरिपदआपीकंतेव
ती॥ वलीयतसबहुगुणेजेहवांध्यायती ॥ २१॥

अर्थ ॥ तथा बत्रीशमें पाटेसर्वदेवाभिधनामेसूरिथकी वडनाकाडतलें सूरि पद था प्यो माटे वडगछ बिरुदथयुं तेश्रवणनेविषे सुधाके० अमृतसमान जाणवुं एटले वड नाकाडहेठें आचार्यपदथाप्युं माटे अने वलीते आचार्यने गुणवंतयतिनो समुदाय बहुवृद्धिपाम्यो एटले साधुनोसमुदाय तेवडनीपेरेंविस्तारपाम्युं तेथीवडगछ केवाणा एनाम पणगुणनिष्पन्नछे तेमाटेवडगछनामथयुं ॥ २१ ॥

सूरिजगचंदजगसमरसचंद्रमा ॥ जेहगुरुपाटेचउअ
धिकचालीसमां ॥ तेहपाम्युंतपानामबहुतपक
री ॥ प्रगटआघाटपुरीविजयकमलावरी ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ पछे जगतचंद्रसूरिजे जगतनेविषे उपशमरसेकरी चंद्रमासरिखाथया एट ले चंद्रमाअमृतरसेंभऱ्यो तेमआचार्य ते समतारसेंभरेला मोटापाटनाधणी चउ अधिक चालीसमांके० चुम्मालीसमेंपाटेंथया तेणे श्रीआंबिलवर्द्धमानादिकबहु तप करीने प्रगटपणें आघाटके० उदयापुरनेविषे राणोजी हस्तीउपरें चडीआव ताहता तेवारें श्रीजगचंद्रसूरी वर्द्धमानतपलागटकरता दुर्बल शरीरनाधणी सन्मु खआवताहता तेवारें राणें प्रधानने पूछ्युंजे एकोण आवेछे प्रधानेंकह्युं हेमहाराज घणामोहोटा तपनाकरनारआचार्यआवेछे तेवारें राणोजी हस्तिऊपरथी हेठाउत री नमस्कारकरीने महातपा एवुंबिरुददीधुं तेवारे प्रधानेकह्युं महाराज महापद काढीनाखो नहीतरलोक महातपाने ठेकाणेमहात्माकहेशे तेमाटे महापद मकहो तेसांभली राणाजीयें तपानामदीधुं एपण गुणनिष्पन्न छठुंनामथयुं पणतपाएवुंना मकदाग्रहथीथयुंनथी तथा विजयकमलावरीके० राणाजीनी सभामां चौरासी वादीयोने जीतीने जयलक्ष्मीवऱ्या तेवारे राणे हीरलाजगचंद्रसूरिकहीबोलाव्या

एहषटनामगुणठामतपगणतणा ॥ शुद्धसद्दहणगु
णरयणएहमांघणा ॥ एहअनुगतपरंपरभणीसेव
ता ॥ ज्ञानयोगिविबुधप्रगटजगदेवता ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ एषटनामके० एपूर्वोक्तछनाम तेकेवाछे जे गुणना स्थानकछे ते तप गणतणाके० तपगछना जाणवा शुद्धसद्दहणाके० शुद्धश्रद्धावंत गुणरयणके० गुण रूपरत्न तेए तपगछमां घणाछे एटले श्रद्धावंत गुणवंतघणाछे एअनुगतपरंपरके० स्वतंत्रपरंपरा आवी एटले जेनीपरंपरामां त्रुटपडीनथी तेतुंनाम अनुगतपरंपराक हियें तेजणीके० तेमाटे सेवताके० सेवाकरतां एवाकोणछे जे ज्ञानयोगिविबुधके०

ज्ञानसंयोगवंतापंमित अनुगतपरंपरानीसेवाकरेछे इतियोगः प्रगटजगदेवताके० ए जगतनेविषे प्रगटपणे देवताजछे एटलेपंमितलोकछ्र्परंपरानीजसेवाकरे ॥ ३३ ॥

कोइकहेमुक्तिछेविणतांचीथरां ॥ कोइकहेसहजजमतांघरदहिथरां ॥
मूढएदोयतसभेदजाणेनही ॥ ज्ञानयोगेंक्रियासाधतांतेसही ॥३४॥

अर्थ ॥ हवे सर्वअधिकारकहीने छेडे निश्चयतथा व्यवहारनयफलाववातेफलावे छे कोइकव्यवहारनयवादिकहेछे जेविणतांचिथरांके० पमिलेहणा पडिकमणादिक तथा फाटात्रुटावस्त्रादिकपेहेरतां इत्यादिक कष्टकरतां मुक्तिछेके० मुक्तिपामियें तथा कोइकनिश्चयवादीएमकहेछे जे सेहेजरीतेघरनेविषे दहिथरांजमतां उपलक्षणथी प वरमोदकप्रमुखलेवा एटले निश्चयनयवालाकहेछे जेकष्टकरेंछुंथाय खुबखावुंपीवुं घे ए तत्वज्ञानथयुं एटलेसिद्धिजाणवी एवीजूदीजूदीरीतना बोलनाराते बेहु मूढके० मूर्खछे एटले तेमोक्षसाधवानो भेदके० प्रकारजाणतानथी केमके ज्ञानने संयोगेक्रियासाधतां सहीके० तेमुक्तिसत्यछे यतः नाणकिरियाहिंमुक्खोइतिभाष्यवचनात् तथा हयंनाणंकियाहिणं हयाअन्नाणउकिया ॥ पासंतोपंगुलोदड्ढो धावमाणोअअंधउ ॥ १ ॥ एवंसव्वेविनया मिछदिठिसपरकपडिवका ॥ अन्नोन्ननिस्सियाऊण हवंतिते चेवसम्मत्तं ॥ २ ॥ इत्यादिक आवश्यकनिर्युक्तिवचनात् ॥ ३४ ॥

सरलभावेंप्रभोशुद्धएमजाणतां ॥ हुंलहुंसुजशतुऊ
वचनमनआणतां ॥ पूर्वसुविहिततणाग्रंथजाणीकरी ॥
मुऊहोजोतुऊकृपाभवपयोनिधितरी ॥ ३५ ॥

अर्थ ॥ माटेहे प्रभो एमके० एरीते सरलस्वभावें करीबेहुनयसिद्धछे एरीतेजाणतां पणकपटेनही जेकहे एक अने चित्तमां बीजुंहोय एम कपटसहित नही तथा तुऊवचन मनआणतांके० पूर्वें ज्ञानक्रियाभ्यांमोक्ष एमजाणतां तथा मनआणताके० प्रतितकरतां थका सुजशके० भलोजे जशतेहुंपामुं एटले मुनिराजप्रमुख सुविहितलोक भलोजशबोले एवीस्याद्वाददृष्टि केमथयीतेकहेछे जे पूर्वसुविहिततणाके० पूर्वाचार्य श्रीहरिभद्रसूरि तथाधर्मदासगणी भाष्यकारजी उमास्वातिवाचकप्रमुखना जेग्रंथते जाणीकरीने सम्यक्ज्ञानेकरी स्याद्वाददृष्टियथी तेएवीदृष्टितो प्रभुकृपाथी थाय तेमाटेप्रभुपासे प्रार्थनाकरेछे जेभवपयोनिधिके० जेसंसारसमुद्र तेनेविषे तुऊकृपाके० तमारीदया तद्रूप तरीके० जहाज तेमुऊहोजोके० मारेथाजो एटलेसं

सारसमुद्रमां तमारी कृपारूपजहाज मारेथाजो एसोलमांढालनेऽर्थं तेस्याद्वादद्दष्टिनी सिद्धिकही एवीदृष्टि पोतानीथयी तेथीउपनोजेहर्ष तेहर्षेकरीसत्तरमांढालमां बोलेछे

ढालसतरमोकडखानीदेशीछे

आजजिनराजमुजकाजसिद्धासवे ॥ वीनतीमाह
रीचित्तधारी ॥ मार्गजोमेंलह्योतुऊकृपारसथकी
तोहुइसंपदाप्रगटसारी ॥ आज० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हेजिनराज आजके०जेदिवसें स्याद्वादद्दष्टियें उलखाणथयुं तेदिवस कवीश्वरनुं वर्त्तमानछे तेमाटेआजकह्यिं तेआजें मारा जेकार्यतेसर्वेसिद्धथया शामाटे जेमारीवीनती चित्तमांपरमेश्वरेंधारी यद्यपि परमेश्वरतो वीतरागछे कोइनी वीनती चित्तमांधरतानथी तोपण परमेश्वरनीभक्तिजनितकार्य भक्तलोकने थयुं माटेकारणे कार्योपचारकरीनेकहेछेके जोतुऊकृपारूपरसथकी मेंमार्गलह्योके०हुंमार्गपाम्यो अने तेमार्गरूप सारीके० मनोहर संपदा माहरेप्रगटथयी ॥१॥

वेगलोमतहुजेदेवमुऊमनथकी ॥ कमलनावन
थकीजेमपरागो ॥ चमकपाषाणजेमलोहनेखेंच
से ॥ मुक्तिनेसेहेजतुऊभक्तिरागो ॥ आज० ॥२॥

अर्थ ॥ माटे मारामनथकी वेगला मतथाजो एटले घटमांरेहेजो जेम कमलना वनथकी परागोके० वासना दूररेहेतीनथी एटले जेमकमलनीवासना तेकमलना वनमांरहे तेम तमेमारांचित्तमां रेहेजो चमकजातीनो कोइपत्थर विशेष ते जेम लोहने खेंचसेके० जेम लोढानेखेंचे एटले एपत्थरनो एवो सेहेजस्वभावछे जे लोढुं वेगलुंहोय तोपण तिहांथीपोतानी मेले आवीने पत्थरनेवलगे तेरीते तमाराऊपरें माहरोजेभक्तिरागछे तेस्वभावेंजमुक्तिनेखेंचशे ॥ २ ॥

तुंवसेजोप्रभोहर्षभरहीयमले ॥ तोसकलपापनाबंधत्रूटे ॥ उगते
गगनसूरयतणेमंडले ॥ दहदिशिजेमतिमिरपडलफूटे ॥ आ० ॥३॥

अर्थ ॥ हेप्रभो हर्षभर्युं जेमारुंहीयुं तेनेविषे जोतुंवसे तोसमस्तजेभवांतरे पापनाबंधकर्याछे तेत्रुटीजाय तिहांदृष्टांत केहेछे जे गगनके० आकाशनेविषे सूर्यनाविमाननुं मंडल ते उगेथके दहदिशिके० दशेदिशोनेविषे जेम तिमिरके० अंधकारना पडलजे समूहते फूटेके० नाशपामे तद्वत् पापपडल त्रूटे ॥ ३ ॥

सींचजेतुंसदाविपुलकरुणारसें॥ मुझमनेशुद्धमतिकल्पवेली॥नाण
दंसणकुसुमचरणवरमंजरी॥ मुक्तिफलआपशेतेएकेली॥आ०॥४॥

अर्थ ॥ विपुलकरुणारसेंके० विस्तारवान करुणारूपरसेंकरीने माहारामननेवि षे शुद्धमतिरूप कल्पवृक्षनीवेलीतें हेस्वामीतुंसिंचजे इतिभावः तेसिंचायका ज्ञानद र्शनरूपतो फूलआवशे तथा प्रधानचारित्ररूप मंजरीके० मांजरलागशे तेवारपछे मुक्तिरूपफलने आपशे तेएकेलीके० तेशुद्धमतिरूपकल्पवेलडी एकलीआपशे ॥४॥

लोकसन्नाथकीलोकबहुवाउलो॥ राउलोदासतेसविउवेखे॥एकतु
झआणसुंजेहराताराहे ॥ तेहनेएहनिजमित्रदेखे॥ आज०॥५॥

अर्थ ॥ लोकसंज्ञा जेगाडरियोप्रवाह तेथकी लोकबहुवाउलोके० घणोलोक घेलो थयोछे पणराउलोदासके० राजानोदास एटले तमारोदास एवोजेहुं ते सर्वगाडरियाप्रवाहनेउवेखुंछुं एटले खात्रमां आणतोनथी मात्र एक अद्वितीय तुझआणसुंजेरातारहेके० तमारी आज्ञाथी जेरंगाणाछे तेने एमारो आत्मा ते पोतानोमित्र करीजाणेछे एटले तमारीआणाथीजे बाह्यछे तेने उवेखुंछुं पण तमा री आज्ञावंतने मित्रकरीजाणुंछुं साधर्मिकसंबंधपणामाटे इतिभावः ॥ ५ ॥

आणजिनभाणतुझएकहुंशिरधरुं॥अवरनीवाणीनविकानेसुणियें॥
सर्वदर्शनतणुंमूलतुझशासनं॥तेणतेएकसुविवेकथुणियें॥आज०६॥

अर्थ ॥ हेजिनके० सामान्यकेवलीमां भाणके० सूर्यसरिखातारी एक अद्विती य आज्ञाते हुं मस्तकेंधरुं अने अवरके० बीजानीवाणीते कानेसांभलियेंनही ए टले वीतरागनी आज्ञा आदरियें पणअवरजे रागीद्वेषी तेना वचनकाने नधरियें इतिभावः सर्वदर्शनके० सम्यक्त केमके सकलनयश्रद्धायें सम्यक्त यडुक्तं महाभाष्ये यावङ्यावयणपहा तावङ्यानयाविष ॥ चेवहुंतिनयवाया कमयासम्मतंसमुदियास व्वे ॥ इतिवचनात् तेमाटे समकितनुंमूलते तुझशासनके० तमारी आज्ञाछे अथवा षटदर्शननुंमूलते तुझशासनछे एटले सर्वदर्शन तेतमाराजदर्शननाअंशछे तेमाटे त मारी आज्ञातेज एक अद्वितीय भलाविवेककरी स्तवियेंछैयें एटले सर्वदर्शननुं मूल छांडी अवरनीस्तवना कोणकरे इतिभावः ॥ ६ ॥

तुझवचनरागसुखसागरेंहुंगणुं॥सकलसुरमनुजसुखएकबिंदू॥सा
रकरजोसदादेवसेवकतणी॥तुंसुमतिकमलिनीवनदिणंदू॥आज०७॥

अर्थ ॥ तमारा वचनऊपर जेराग एटले जैनागमनोजेराग तद्रूपजे सुखसमुद्रना समूह तेआगलें समस्तदेवता तथासमस्तमनुष्य चक्रवर्त्यादिकनासुख तेएकबिंदुस मान हुंगणुंछुं० हुंमानुंछुं तेमाटे हेदेव सदासर्वदा तमारो हुंसेवकछुं तेनी सारके० संजालकरजो एटले तमारासरिखो करजो तमे सुमतिरूपजे कमलिनी तेनुं जेवन तेनेविषे दिणंदछो० सूर्यसरिखाछो एटले सूर्यजेम कमलिनीने विकस्वरकरे तेम सुम तिरूपकमलिनीने तमे विकस्वरकरो एटले तमथी सुमतिआवे इतिजावः॥ ७ ॥

ज्ञानयोगेंधरीतृप्तिनविलाजियें॥गाजियेंएकतुऊवचनरागें॥शक्तिउ

ल्लासअधिकोहुसेतुऊथकी॥ तुंसदासकलसुखहेतजागें॥आज०॥८॥

अर्थ ॥ ज्ञानयोगमां तृप्तिधरीने एटले ज्ञानमां मग्नरहीने क्रियानुष्ठान करतां लाजियेंनही पण सावधानथयीने एकतमारा वचननेरागेंकरीगाजियें एटले कोइक ज्ञानवादिक्रियानुष्ठान उथापतोहोय तेने आगमवचनेकरी गाजीनेजवाबआपियें ए रीतें प्रवर्त्तता तुऊथकीके० तमारा वचनथकी एटले तमारीआज्ञाथकी शक्तिनोउ ल्लास पणअधिकोथशे पणगलियाथयीने बेशीरहेतां वीर्योल्लासनहिवाधे उलटुंआ लशेवधसे इतिजावः एवीरीतें प्रवर्त्तनकरतां कारणद्वारे कर्त्ताने फलदेखाडेछे तुंसदा सकलके० तमे सदानिरंतर समस्तसुख जेसिद्धनासुख तेनो हेतुके० कारणते जागे के० जागतुंछो एटले ज्ञानक्रियाभ्यासें मोक्ष एप्रज्जुनुं वचनछे तेवचनथकी जव्यप्रा णी अजरामरसुखनुं जाजनथाय तेमाटे तेसिद्धनोहेतु पणतुंहिजथयो इतिजावः॥८

वमतपागछनंदनवनेसुरतरु॥हीरविजयोजयोसूरिराया॥तास

पाटेविजयसेनसूरिसरू॥ नितनमेनरपतिजासपाया॥आज०॥९॥

अर्थ ॥ श्रीजगच्चंद्रसूरियें तपाबिरुदधराव्युं एमोहोटोतपगछतद्रूप नंदनवननेवि षे सुरतरुके०कल्पवृक्षसमान श्रीहीरविजयसूरि जयोके०जयवंतोवर्त्तो सूरिरायाके० बीजाआचार्यमां राजासरिखाथया तेहुनेपाटें श्रीविजयसेनसूरि सर्वआचार्यमां ई श्वरतुल्यथया जेमनाचरणकमलने नरपतिके० पादशाह तेनिरंतर नमस्कारकरताह ता एटले एजावजेपादशाहजाहांगीरें षटदर्शनपरिक्षानेअर्थें सर्वदर्शनीनेतेडाव्या तेमां जैनदर्शनमाहेला श्रीविजयसेनसूरिगयाहता तेमणेसर्वदर्शनीनुंपराजयकर्यो तेवारें पादशाहेंकह्युंजे श्रीहीरविजयतेगुरु अने तमेसवाइ गुरुथया इतिजावः॥ ९ ॥

तासपाटेंविजयदेवसूरिसरू ॥ पाटतसगुरुविज
यसिंहधोरी ॥ जासहितसीखथीमार्गएअनुस
र्यो ॥ जेहथीसविटलीकुमतिचोरी ॥आज०॥१०॥

अर्थ ॥ वलीतेनेपाटें श्रीविजयदेवसूरिथया तथा तेमनापाटें श्रीविजयसिंहसूरि तेगछनो भारवेहेवाने वृषभसमानधोरीथया जेमनी हितसीखके० आज्ञापामीने में एसंवेगमार्ग आदर्यो एटलेएभावजे श्रीजशोविजयजीउपाध्यायें पण एउनी आज्ञा पामिने क्रियाउद्धारकर्यो तथाश्रीविजयसिंहसूरिना शिष्यअनेक हता तेमां सत्तर शिष्य सरस्वतिबिरुदधारीहता तेसर्वमां मोहोटा शिष्य पंम्दितश्रीसत्यविजयगणीहता तेमणे श्रीपूज्यनी आज्ञापामि क्रियाउद्धारकीधो तेमाटे एमकह्युंजे मार्ग एअनुसर्योके० एसंवेगमार्गआदर्यो जेआदरवाथकी तीर्थंकरअदत्त गुरुअदत्त इत्यादिक कुमतिकदाग्रहरूप चोरीटलीगयी एश्रीआचार्योनी परंपराकही ॥ १० ॥

हीरगुरुशीसअवतंसमोटोहुउ ॥ वाचकांराजकल्या
णविजयो ॥ हेमगुरुसमवडेंशब्दअनुशासने ॥
शीसतसविबुधवरलाभविजयो ॥ आज० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ हवे उपाध्यायजी पोतानीपरंपराकहेछे तेपूर्वेंकह्यांश्रीविजयसिंहसूरि तेना शीष्यसमुदायमां अवतंसके० मुकुटसमान महोटाथया वाचकांराजके० उपाध्यायोमां राजसरिखा एवा श्रीकल्याणविजय उपाध्यायथया ते शब्दअनुशासनेके० व्याकरण शास्त्रमांतो हेमगुरुसमवडेके०श्रीहेमाचार्य सरिखाथया वली तेमनाशिष्य विबुधवरके० सर्वपंडितमां शिरोमणी एवा श्रीलाभविजयगणीथया ॥ ११ ॥

शीसतसजितविजयोजयोविबुधवर ॥ नयविजयविबु
धतससुगुरुभाया ॥ रहिअकाशीमठेंजेहथीमेंभले ॥
न्यायदर्शनविपुलभावपाया ॥ आज० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ वली तेमना शिष्य एकश्रीजितविजयजीजयवंता पंम्दितोमां प्राधान्यसरिखा तथा बीजाश्रीनयविजयजी पंडितप्राधान्यथया तेश्रीजितविजयजीनारुडागुरुभाइजथया जेहथीके० तेबेहुगुरुनापसायथी हुं रहिअकाशीमठेंके० काशीना मठने विषे रहीने भलीरीतें न्यायदर्शनके०न्यायशास्त्रना भावते विपुलके० विस्तारपणेपाम्यो

जेहथीशुद्धलहियेंसकलनयनिपुण ॥ सिद्धसेनादि
कृतशास्त्रनावा॥ तेहएसुगुरुकरुणाप्रनोतुऊसुगुण॥
वयणरयणायरीमुऊनावा ॥ आज० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ जेगुरुनाप्रसादथकी श्रीसिद्धसेनदिवाकर तथा आदिशब्दथी हरिनद्रसूरि उमास्वातिवाचकप्रमुख पंमितोनाकरेलाजेशास्त्रतेमांकह्याजेनाव तेनाशुद्धलहियेंके० शुद्धरहस्यपामियें तेनावकेवाले जे सकलनयनिपुणके० समस्तजे न्याय तेमांनिपुण अथवा समस्तजेनैगमादिकनयतेमां निपुण एवाजे समति तत्वार्थ षडदर्शनसमुच्चय नयचक्रसार धर्मसंग्रहणी अनेकांतजयपताका प्रमुखग्रंथोनानाव तेना शुद्धरहस्यने हुं पाम्यो माटे एगुर्वादिकनीजे करुणाके० कृपा तेकेवीबे जेहे प्रनो तुऊके० तमारुं जे सुगुणवयणके० गुणवंतजेवचन तद्रूप रयणायरीके० समुद्रनेविषे नावाके० जहाजसरिखीबे एटले एनावजे तमारा वचनरूपसमुद्रनोपार तोपामियेंजोगुर्वादिकनी करुणारूपनावा होयतो तेमारागुरुनी कृपारूपनावा थयी ॥१३ ॥

॥ कलस ॥

इमसकलसुखकरदुरितनयहरस्वामीश्रीमंधरतणी ॥ एवीनतिजेसुणेनावेंतेलहेलीलाघणी ॥ श्रीनयविजयबुधचरणसेवकजशविजयबुधआपणी॥ रुचिशक्तिसारुंप्रगटकीधीशास्त्रमर्यादानणी ॥ १ ॥ इतिश्रीसीमंधरजिनविज्ञप्तिःसंपूर्णा॥

अर्थ ॥ हवे जेमनवोप्रासादकरावे तेनेमाथे कलशचढावे तेवारें संपूर्णथाय तेम आतवनरूपप्रासादनीपनुंतेसंपूर्णकरवामाटे कलशकहेवे एरीते सकलसुखना करनारा तथाडुरितके० पापनुं जेनयतेना हरवावाला एवा स्वामीके० नायक श्रीसीमंधरप्रनुनी एमेंविनतीकही तेजेप्राणीनक्तिनावेंकरी सांनले तेप्राणी घणीसुखलीलापामें एरीते श्रीनयविजयजीपंमितना चरणकमलनी सेवानाकरनार श्रीयशोविजयजीपंमित तेमणे पोतानी शक्तिप्रमाणे श्रद्धानावनीजे रुचिहती एटले स्याद्वादमार्गनी रुचिजेपोताना चित्तमांहतीते शास्त्रनीमर्यादायेंप्रगटकरी कहि देखाडी इति ॥१॥

इतिश्रीसीमंधरजिनस्तवनटबार्थःसमाप्तः

क्वेदंकर्त्तुर्वचःशस्तंनानाशास्त्रार्थगर्भितं ॥ क्वमेल्पविषयाप्रज्ञासुसलाग्रोपमाखलु ॥ १ ॥ यदत्रवितथंप्रोक्तंमंदबुध्यादिहेतुना ॥ तच्छोधनैःकृपांकृत्वामयिशोध्यममत्सरैः ॥ २ ॥ श्रीमद्विजयसिंहाव्हःसूरिराड्विजितेंद्रियः ॥ तस्यांतेवासीसत्यादिविजयःसान्वयःसुधीः ॥ ३ ॥ कर्पूरविजयस्तस्यशिष्योगुणगणैर्युतः ॥ तस्यापिक्षमयायुक्तःक्षमाविजयइत्यभूत् ॥ ४ ॥ जिनादिविजयस्तस्यशिष्योभूद्भूरिशिष्यकः ॥ शास्त्रज्ञःसज्ञानोधीमान् कर्मठोधर्मकर्मणि ॥ ५ ॥ उत्तमादिजयस्तस्य शिष्यःशिष्यौघसत्तमः ॥ सर्वोत्तमगुणैर्व्याप्तः कर्मशास्त्रकुशाग्रधीः ॥ ६ ॥ तस्यांह्रिपंकजेपद्मविजयोभ्रमरोपमः ॥ नन्दाग्निवसुचंद्रेब्दे १८३० तेनेदंवार्तिकंकृतं ॥ ७ ॥

इतिश्रीसीमंधरजिनस्तवनकवियशोविजयकृतसार्द्धत्रिशतगाथाप्रबंधेतस्यकविपद्मविजयकृतबालावबोध.समाप्तः

ॐश्रीसर्वज्ञायनमः

अथ

# श्रीपंडितदेवचंदजीकृतआगमसारलिख्यते

भव्यजीवनेप्रतिबोधवानिमित्तेंमोक्षमार्गनीवचनिकाकहेछे तिहांप्रथम जीवअनादिकालनो मिथ्यात्वीहतो तेकाललब्धिपामीने त्रणकरणकरेछे तेहनानाम पेहेलुं यथाप्रवृत्तिकरण बीजुंअपूर्वकरण त्रीजुंअनिवृत्तिकरण

तेमांपेहेलुं यथाप्रवृत्तिकरणकहेछे १ ज्ञानावरणी २ दर्शनावरणी ३ वेदनी ४ अंतराय एचारकर्मनी त्रीसकोडाकोडीसागरोपमनीस्थितिछे तेमांथी उगणतीस कोडाकोडीखपावे अनेएककोडाकोडीबाकीराखे तथा १ नामकर्म २ गोत्रकर्म एबे कर्मनी वीसकोडाकोडीसागरोपमनीस्थितिछे तेमांथी उगणीसखपावे अनेएककोडाकोडीराखे अने मोहनीयकर्मनीसित्तेरकोडाकोडीसागरोपमनीस्थितिछे तेमांथी उगणोत्तेरखपावे बाकीएककोडाकोडीराखे एवीरीतें एकआयुकर्म्मवर्जीने बाकीसातेकर्म्मनी एकपल्योपमना असंख्यातमाभागेंन्यून एककोडाकोडीसागरोपमनीस्थितिराखे एहवुं जेवैरागरूप उदासिपरिणामते यथाप्रवृत्तिकरणकहियें एपेहेलुंकरण सर्वसंज्ञीपंचेंद्रीजीव अनंतिवारकरेछे.

हवे बीजुंअपूर्वकरणकहेछे तेएककोडाकोडीसागरोपमनी स्थितिमांथी एकमूहूर्त्त अनेअनादिमिथ्यात्व जे अनंतानुबंधीआनीचोकडी ते खपाववाने अज्ञानहेय तेछांडवु अने ज्ञानउपादेय एटले आदरवुं एवांरूप अपूर्वकहतां पहिलाकिवारेंनाव्यो एहवोजे परिणाम ते अपूर्वकरणकहियें एबीजुंकरणते समकितयोग्यजीवनेथाय

हवेत्रीजुंअनिवृत्तिकरणकहेछे तेमुहूर्त्तरूपस्थितिखपावीने निर्मलशुद्धसमकेतपामें मिथ्यात्वनोउदयमिटे तेवारेंजीव उपशमसमकेतपामें एहवोजेपरिणामते अनिवृत्तिकरणकहियें एकरणकीधाथी गंठीभेदथयोकहियें उक्तंच आवश्यकनिर्युक्तौ "जा गंठीतापढमं गंठीसमयछेउभवेबीउं ॥ अनिअट्टिकरणंपुण समत्तपुरक्खडेजीवे" ॥१॥ ऊसरदेसंदड्ढुल्लिअंच विज्झाइवणदवोयप्पप्प ॥ मिच्छत्तस्सअणुदए उवसमसम्मंलहइ जीवो ॥ २ ॥ एममिथ्यात्वनोउदयमिटयाथी जीवसमकितपामेतेसमकितनी सद्दहणा नाबेभेदछे एक व्यवहारसमकेतसद्दहणा बीजी निश्चयसमकितसद्दहणा.

देवश्रीअरिहंत देवाधिदेव अने गुरुसुसाधु जे सूधोअर्थकहेते तथा धर्मकेवली नोपरुप्यो जे आगममां सातनय तथा एकप्रत्यक्ष बीजुंपरोक्ष एबेप्रमाण अने चारनिक्षेपेंकरीसद्दहे एहवी सद्दहणा ते व्यवहारसमकितकहियें एपुण्यनुं कारण तथा धर्मप्रगटकरवानुंकारणछे एहवीरुचि ज्ञानविनापण घणाजीवोने उपजे.

बीजोनिश्चेंसमकित तेआवीरीतेजे निश्चेंदेवत आपणोजआत्मा जीवनिष्पन्न स्वरूपी सिद्ध ते संग्रहनयनीसत्तागवेषतां तथा निश्चेंगुरुतेपण आपणोआत्माज तत्वरमणी अने निश्चेंधर्मते आपणाजीवनोस्वभावजछे एहवीसद्दहणा ते मोक्षनुंकारण छे केमकेजीवस्वरूपओलख्याविनाकर्म्मखपेनही एहवी शुद्धसद्दहणा तेनिश्चेंसमकेत

हवेज्ञाननुंस्वरूपकहेछे तेज्ञाननाबेभेदछे एकव्यवहारज्ञान बीजुंनिश्चेंज्ञान तेमांजे अन्यमतिनासर्वशास्त्रजाणवा अथवा जैनागममध्ये कह्याजे एकगणितानुयोग तेक्षेत्रमान बीजो चरणकरणानुयोग तेक्रियाविधि त्रीजोधर्मकथानुयोग एत्रणअनुयोगनोजाणवापणुं तेसर्वव्यवहारज्ञानछे अथवा अंतरउपयोगविनाजेसूत्रना अर्थ करवा ते पण व्यवहारज्ञानकहियें.

हवेनिश्चेंज्ञान ते द्रव्य तथा तेनागुण अनेपर्याय सर्वनेजाणे तेमां पांचअजीवद्रव्यछे तेहेयके० छांडवायोग्यजाणीछांडवा अने एकजीवद्रव्यतेनिश्चयनयकरी सिद्धसमान मोक्षमयी मोक्षनोजाणनार मोक्षनुंकारण मोक्षनोजावावालो मोक्षमांजरहेछे एहवोआपणोजीव अनंतगुणीअरूपीछे तेहनेजध्यावे तेनिश्चेंज्ञानकहियें

हवे एकधर्मास्तिकाय बीजोअधर्मास्तिकाय त्रीजोआकाशास्तिकाय चोथोपुद्गलास्तिकाय पांचमोजीवास्तिकाय अनेछट्ठोकाल एछद्रव्यशाश्वताछे तेनुंज्ञानकहेछे एछद्रव्यमध्ये पांचअजीवद्रव्यछे अनेएकजीवद्रव्य ते चेतनालक्षणवंतछे उपादेयछे.

हवेएछद्रव्यनागुणकहेछे पेहेलोधर्मास्तिकायनाचारगुण एकअरूपी बीजोअचेतन त्रीजोअक्रिय चोथोगतिसहायगुण अनेबीजोअधर्मास्तिकायनापण चारगुणछे एक अरूपी बीजोअचेतन त्रीजोअक्रिय चोथोस्थितिसहायगुण अने त्रीजो आकाशास्तिकायद्रव्यनाचारगुणछे एकअरूपी बीजोअचेतन त्रीजोअक्रिय चोथोअवगाहनादानगुण हवेकालद्रव्यनाचारगुणकहेछे एकअरूपी बीजोअचेतन त्रीजोअक्रिय चोथोनवापुराण वर्त्तनालक्षण हवेपुद्गलद्रव्यनाचारगुणकहेछे एकरूपी बीजोअचेतन त्रीजोसक्रिय चोथोमिलणविखरणरूपपूरणगलनगुण हवेजीवद्रव्यनाचारगुणकहेछे एकअनंतज्ञान बीजोअनंतदर्शन त्रीजो अनंतचारित्र चोथोअनंतवीर्य एछद्रव्यना गुणकह्या तेनित्यध्रुवछे ॥

हवेद्रव्यनापर्यायकहेछे धर्मास्तिकायनाचारपर्यायछे एकखंध बीजोदेश त्रीजोप्रदेश चोथो अगुरुलघु अधर्मास्तिकायनाचारपर्याय एकखंध बीजोदेश त्रीजोप्रदेश चोथोअगुरुलघु पुद्गलद्रव्यनाचारपर्याय एकवरण बीजोगंध त्रीजोरस चोथोस्पर्श अगुरुलघुसहित तथाआकाशास्तिकायनाचारपर्याय एकखंध बीजोदेश त्रीजोप्रदेश चोथोअगुरुलघु कालद्रव्यनाचारपर्याय एकअतीतकाल बीजोअनागतकाल त्रीजो वर्त्तमानकाल चोथोअगुरुलघु अनेजीवद्रव्यनाचारपर्याय एकअव्याबाध बीजोअ नवगाह त्रीजोअमूर्त्तिक चोथोअगुरुलघु एद्रव्यनापर्यायकह्या.

हवेछद्रव्यनागुणपर्यायतुंसाधर्मपणुंकहेछे अगुरुलघुपर्यायसर्वेद्रव्यमांसरिखोछे अ नेअरूपीगुणपांचद्रव्यमांछे एकपुद्गलद्रव्यमांनथी तथाअचेतनगुणपांचद्रव्यमांछे एक जीवद्रव्यमांनथी अनेसक्रियगुणजीव तथापुद्गलएबेद्रव्यमांछे बाकीचारद्रव्यमांनथी तथाचलणसहायगुणएकधर्मास्तिकायमांछे बीजापांचद्रव्यमांनथी वलीस्थिरसहाय गुण एकअधर्मास्तिकायमांछे बीजापांचद्रव्यमांनथी तथाअवगाहनागुणतेएकआका शद्रव्यमांछे बीजापांचद्रव्यमांनथी अने वर्त्तनागुणतेएककालद्रव्यमांजछे बीजापांच द्रव्यमांनथी तेमजमिलणविखरणगुणतेपुद्गलमांछे बीजाद्रव्यमांनथी तथाज्ञानचेत नागुण ते एकजीवद्रव्यमांछे पणबीजाद्रव्यमांनथी एमूलगुण कोइद्रव्यनाकोइद्रव्यमां मिलेनही एकधर्म बीजोअधर्म त्रीजोआकाश एत्रणद्रव्यना त्रणगुण तथा चारप र्यायसरिखाछे अनेत्रणगुणेकरीतो कालद्रव्यपणएसमानछे.

हवेवलीइग्यारबोलेंकरीछद्रव्यनागुणजाणवानेगाथाकहेछे "परिणामजीवमुत्ता ॥ सपएसाएगखित्तकिरिआय ॥ निच्चंकारणकत्ता सव्वगदइयरअप्पवेसा ॥ १ ॥ अर्थ ॥ निश्चेनयथीआपआपणा स्वभावेंछएद्रव्यपरिणामिछे अनेव्यवहारनय जीव तथापुद्ग ल एबेद्रव्यपरिणामीछे तथाएकधर्म बीजो अधर्म त्रीजोआकाश अनेचोथोकाल ए चारद्रव्यअपरिणामीछे तथाछद्रव्यमां एकजीवद्रव्यतेजीवछे बीजापांचद्रव्यअजीवछे तथाछद्रव्यमांएकपुद्गलमूर्त्तिवंतरूपीछे अनेपांचद्रव्यअमूर्त्तिवंतअरूपीछे छद्रव्यमां पां चद्रव्यसप्रदेशीछे अने एककालद्रव्यअप्रदेशीछे तेमां एकधर्मास्तिकाय बीजोअधर्मास्ति काय एबेद्रव्य असंख्यातप्रदेशीछे अने एकआकाशद्रव्यअनंतप्रदेशीछे जीवद्रव्यअ संख्यातप्रदेशीछे पुद्गलपरमाणुअनंतप्रदेशीछे परमाणुआअनंताछे एमपांचद्रव्यसप्र देशीछे अनेछठोकालअप्रदेशीछे.

छद्रव्यमां एकधर्मास्तिकाय बीजोअधर्मास्तिकाय त्रीजोआकाशास्तिकाय एत्रणते एकेकद्रव्यछे तथाएकजीवद्रव्य बीजोपुद्गलद्रव्य त्रीजोकालद्रव्य एत्रणद्रव्यअनेकअ

नेकछे: छद्रव्यमां एकआकाशद्रव्यक्षेत्रछे अनेबीजापांचद्रव्यक्षेत्रीछे निश्चैनयथीछद्रव्य पोतपोतानाकार्यंसदाप्रवर्त्तेछे माटेसक्रियछे अनेव्यवहारनयथी जीवतथापुद्गल एबे द्रव्यसक्रियछे तेमांपणपुद्गलसदासक्रियछे अनेजीवद्रव्यतो संसारीथकोसक्रियछे पण सिद्धअवस्थायेंथकोसंसारीक्रियाकरवाने अक्रियछे तथाबाकीनाचारद्रव्यतोअ क्रियछे निश्चयनयथी छद्रव्यनित्यछे ध्रुवछे अनेउत्पादव्ययेंकरी अनित्यपणेंपणछे त थाव्यवहारनयें जीवअनेपुद्गलएबेद्रव्यअनित्यछे बाकीनाचारद्रव्यनित्यछेयद्यपिउत्पा दव्यय ध्रुवपणोसर्वपदार्थपरिणमेछे तोपण एकधर्म बीजोअधर्म त्रीजोआकाश चो थोकाल एचारद्रव्य सदाअवस्थितछे तेमाटेनित्यकह्यां ॥

छद्रव्यमां एकजीवद्रव्यअकारणछे अनेपांचद्रव्यकारणछे केमके पांचेद्रव्यजीवने जोगमांआवेछे माटेकारणकहियें केमके धर्मास्तिकाय चालवानोसाह्यआपेछे अधर्मा स्तिकायथिररहेवानोसाह्यआपेछे आकाशास्तिकायअवकाशआपेछे पुद्गलास्तिकाय जीवनेमधुरादि सुरभिगंधादिक तथासकोमलस्पर्शादिक जोगपणेथायछे तथाकालद्र व्यते जीवने जरा बाल तारुण्यअवस्थादीएछे तथाअनादिसंसारीजीव जवस्थिति परिपाकछतां एकअंतरमुहूर्त्तकालमां सकलकर्म्मनिर्ज्जरीमोक्षपदहोचेतिहांसिद्धअवस्था यें अनंतोकालपर्यंतजीवअनंतासुखनेविलसे माटेकालद्रव्यपण जीवनेजोगथायछे पणएकजीवद्रव्यकोइनेजोगआवतोनथी माटे अकारणकह्युं अनेपांचद्रव्यजोगआवे माटेकारणकह्यां तथाघणीप्रतोमांतोसंक्षेपे एटलुंछेजे छद्रव्यमां एकजीवद्रव्यकारण छे पांचद्रव्यअकारणछे एपणवातघणीरीतेमलतीछे माटेजेबहुश्रुतकहेतेखरुं मारी धारणाप्रमाणे जीवद्रव्यकारण अने पांचद्रव्यअकारणएमसंभवेछे निश्चैनयथी छए द्रव्यकर्त्ताछे अनेव्यवहारनय एकजीवद्रव्यकर्त्ताछे बाकीपांचद्रव्यअकर्त्ताछे छद्रव्यमां एकआकाशद्रव्यसर्वव्यापीछे अनेपांचद्रव्यलोकव्यापीछे छएद्रव्यएकखेत्रमांएकठार ह्यांछे पणएकबीजासाथेमिलीजायनही एछद्रव्यनोविचारकह्यो.

हवेएकेकाद्रव्यमां एकनित्य बीजोअनित्य त्रीजोएक चोथोअनेक पांचमोसत् छठोअसत् सातमोवक्तव्य आठमोअवक्तव्य एआठआठपक्षकहेछे.

धर्मास्तिकायनाचारगुणनित्यछे तथापर्यायमांधर्मास्तिकायनोएकखंधनित्यछे बा कीनादेशप्रदेश तथा अगुरुलघुपर्यायअनित्यछे अधर्मास्तिकायनाचारगुण तथाएकलो कप्रमाणखंधनित्यछे अने एकदेश बीजोप्रदेश त्रीजोअगुरुलघु एत्रणपर्यायअनित्य छे तथा आकाशास्तिकायनाचारगुण तथालोकालोकप्रमाणखंधनित्यछे अनेएकदेश बीजोप्रदेशत्रीजोअगुरुलघु एत्रणपर्यायअनित्यछे तथाकालद्रव्यनाचारगुण नित्यछे

अनेचारपर्यायअनित्यछे पुद्गलद्रव्यनाचारगुणनित्यछे अनेचारपर्यायअनित्यछे जीव द्रव्यनाचारगुण तथा त्रणपर्यायनित्यछे अनेएकअगुरुलघुपर्यायअनित्यछे एरीतेनि त्यानित्यपक्षकह्यो.

हवेएकअनेकपक्षकहेछे एकधर्मास्तिकाय बीजोअधर्मास्तिकाय एबेद्रव्यनोखंधलो काकाशप्रमाणएकछे अनेगुणअनंताछे पर्यायअनंताछे प्रदेशअसंख्याताछे तेणेकरी अनेकछे आकाशद्रव्यनोलोकालोकप्रमाणखंधएकछे अनेगुणअनंताछे पर्यायअनंताछे प्रदेशअनंताछे माटेअनेकछे कालद्रव्यनोवर्त्तनारूपगुणएकछेअनेगुणअनंताछे पर्याय अनंताछे समयअनंताछे केमकेअतीतकालेंअनंतासमयगया अने अनागतकालें अनं तासमयआवसे तथावर्त्तमानकालेंसमयएकछे माटेअनेकपक्षछे पुद्गलद्रव्यनापरमा णुअनंताछे ते एकेकपरमाणुमां अनंतागुणपर्यायछे तेअनेकपणुंछे अनेसर्वपरमाणु मां पुद्गलपणुंतेएकजछे माटेएकछे.

जीवद्रव्यअनंताछेएकेकाजीवमां प्रदेशअसंख्याताछे तथागुणअनंताछे पर्यायअ नंताछे तेअनेकपणुंछे पणजीवितव्यपणोसर्वजीवोनो एकसरिखोछे माटे एकपणुंछे इ हांशिष्यपूछेछे जेसर्वजीवएकसरिखाछे तोमोक्षनाजीव सिद्धपरमानंदमयीदेखायछे अ नेसंसारीजीवकर्म्मवशपड्याडुःखीदेखायछे अनेतेसर्वजूदाजूदादेखायछे तेकेमतेहनेगु रुउत्तरकहेछे के निश्चयनयतोसर्वजीवसिद्धसमानछे माटेजसर्वजीवकर्म्मखपावीनेसि द्धथायछे तेथीसर्वजीवनीसत्ताएकछे.

फरिशिष्यपूछेछेके जोसर्वजीवसिद्धसमानकह्योछो तोअभव्यजीवपणसिद्धसमानछे एमठेयुं अनेतेतोमोक्षेजतानथी तेहनेउत्तर जेअभव्यनेकर्म्मचीकणाछे अनेअभव्य मांपरावर्त्तधर्मनथी तेथीसिद्धथतानथी माटेतेनोएहवोज स्वभावछे जेमोक्षेजवुंज नथी अनेभव्यजीवमांपरावर्त्तधर्मछे माटेकारणसामग्रीमिले पलटणपामे गुणश्रे णीचढी मोक्षकरीसिद्धथाय पणजीवनामुख्यआठरुचकप्रदेशजेछे तेनिश्चैनयथी भव्य तथाअभव्य सर्वनासिद्धसमानछे माटे सर्वजीवनीसत्ताएकसरिखीछे केमकेएआठप्रदे शने बिलकुलकर्मलागता नथी तेश्रीआचारांगसूत्रनी श्रीसिलंगाचार्यकृतटीकानालो कविजयाध्ययने प्रथमोद्देशकेसाखछे तिहांथीसविस्तरपणेजोवुं

हवेसत्तथाअसत्पक्षकहेछे एद्रव्य तेस्वद्रव्य स्वक्षेत्र स्वकाल अने स्वभाव पणें सत्एटलेछताछे अने परद्रव्य परक्षेत्र परकाल तथा परभाव पणे असंत् एटले अ छताछे तेनीरीतबतावावानेअर्थें छद्रव्यनो द्रव्य क्षेत्र काल भाव कहियेंछेयें

धर्मास्तिकायनोमूलगुण चलणसहायपणो ते स्वद्रव्य अधर्मास्तिकायनोमूलगुण

स्थितिसहायपणो ते स्वद्रव्य आकाशास्तिकायनोमूलगुण अवगाहपणो तेस्वद्रव्य कालद्रव्यनोमूलगुण वर्त्तनालक्षणपणो ते स्वद्रव्य तथा पुद्गलनोमूलगुण पुरणग लनपणो तेस्वद्रव्य अने जीवद्रव्यनोमूलगुणज्ञानादिकचेतनालक्षणपणो ते स्वद्रव्य एछद्रव्यनो स्वद्रव्यपणोकह्यो.

हवे स्वक्षेत्र ते द्रव्यनोप्रदेशपणोछे ते देखाडेछे तिहां एकधर्मास्तिकाय बीजोअ धर्मास्तिकाय एबेद्रव्यनो स्वक्षेत्र असंख्यातप्रदेशछे अने आकाशद्रव्यनो स्वक्षेत्र अ नंतप्रदेशछे कालद्रव्यनो स्वक्षेत्रसमयछे पुद्गलद्रव्यनो स्वक्षेत्रएकपरमाणुछे तेपर माणुअनंताछे जीवद्रव्यनो स्वक्षेत्र एकजीवनाअसंख्याताप्रदेशछे.

हवे स्वकालते छएद्रव्यमां अगुरुलघुनोजछे अने एछद्रव्यनापोतपोताना गुणप र्यायते सर्वद्रव्यनो स्वभावजाणवो एटले धर्मास्तिकायमां पोतानाज द्रव्य क्षेत्र काल भावछे पणबीजा पांचद्रव्यनानथी तथा अधर्मास्तिकायद्रव्यमध्ये पण स्वद्रव्यादि कचारछे पणबीजा पांचद्रव्यनानथी एमजआकाशास्तिकायनेविषे आकाशनाज स्व द्रव्यादिकचारछे पणबीजापांचद्रव्यनानथी कालद्रव्यमां कालनाद्रव्यादिकचारछे बी जापांचद्रव्यनानथी अने पुद्गलनाद्रव्यादिकचार ते पुद्गलमांजछे पणबीजापांचद्रव्य नानथी तथा जीवद्रव्यना स्वद्रव्यादिकचार ते जीवमांछे पणबीजा पांचद्रव्यनानथी

जेद्रव्यतेगुणपर्यायवंत द्रव्यथीअभेदपर्यायहोयतेद्रव्यकहियें तथास्वधर्मनोआ धारवंतपणो ते क्षेत्रकहियें अने उत्पादव्ययनीवर्त्तना तेकालकहियें तथाविशेषगु णपरिणति स्वभावपरिणति पर्यायप्रमुख ते स्वभावकहियें.

इहां १ भेदस्वभाव २ अभेदस्वभाव ३ भव्यस्वभाव ४ अभव्यस्वभाव ५परम स्वभाव एपांचस्वभावकहेवा तेमांद्रव्यनासर्वधर्मने पोतपोतानास्वस्वकार्यने करवेक री भेदस्वभावछे अने अवस्थानपणेअभेदस्वभावछे अणपलटणस्वभावें अभव्यस्व भावछे तथा पलटणस्वभावें भव्यस्वभावछे अने द्रव्यनासर्वधर्म तेविशेषधर्मनेअनु जायीजपरिणमे तेमाटे ते परमस्वभावकहियें एसामान्यस्वभावजाणवा एरीतेंछएद्र व्यस्वगुणेसतूछे अनेपरगुणे असतूछे.

हवे वक्तव्य तथा अवक्तव्यपक्षकहेछे एछद्रव्यमां अनंतागुणपर्यायते वक्तव्यएट लेवचनेकेहेवायोग्यछे अने अनंतागुणपर्यायतेअवक्तव्य एटले वचनेकह्याजायनही एवाछे तिहांकेवलीभगवंतें समस्तभावदीठा तेनेअनंतमेभागें जे वक्तव्य एटलेके वायोग्यहता ते कह्या वलीतेनोपणअनंतमोभाग श्रीगणधरदेवें सूत्रमां गुथ्यो तेसूत्रमांगुथ्यातेनेअसंख्यातमेभागें हमणाआगमरह्याछे ए छद्रव्यमांआठपक्षकह्या

ह्वेनित्यतथाअनित्यपक्षथीचौभंगीउपनीतेकहेछे एक जेनीआदिनथी अने अंत पणनथी तेअनादिअनंत पेहेलोभांगो अनेजेनी आदिनथी पणअंतछे तेअनादि सांतबीजोभांगो तथाजेनीआदिपणछे अनेअंतएटले छेहेडोपणछे तेसादिसांतत्रीजो भांगो वलीजेहनीआदिछे पणअंतनथी तेसादिअनंतनामेचोथोभांगोजाणवो.

ह्वेएचारभांगाद्रव्यमांफलावीदेखाडेछे जीवद्रव्यमां ज्ञानादिकगुणतेअनादिअनंतछे नित्यछे अनेभव्यजीवनेकर्मसाथेसंबंध तथा संसारीपणानीआदिनथी पणसिद्ध थायतेवारे अंतआव्यो तेथीएअनादिसांतभांगोछे अनेदेवता तथा नारकीप्रमुखना भवकरवाते सादिसांतभांगोछे अने जेजीवकर्मखपावी मोक्षगया तेनी सिद्धपणेआदिछे अने पाछोसंसारमां कोइकालेंआववुंनथी माटेअंतनथी तेथीएसादिअनंत भांगोछे एजीवद्रव्यमांचोभंगीकही जीवद्रव्यनाचारगुणअनादिअनंतछे जीवनेकर्मसाथेंसंयोगतेअनादिसांतछे केमकेकेवारेपणकर्मछूटेछे.

ह्वेधर्मास्तिकायमांचारगुण तथाखंधपणो ते अनादिअनंतछे अने अनादिसांत भांगोनथी तथा १देश २प्रदेश ३अगुरुलघु एसादिसांतभांगोछे तथासिद्धनाजीवमां धर्मास्तिकायनाजेप्रदेशरह्यांछे तेप्रदेशआश्रयीने सादिअनंतभांगोछे एवीजरीतें अधर्मास्तिकायमांपण चौभंगीजाणवी अनेआकाशद्रव्यमां गुणतथाखंधअनादिअनंतछे बीजोभांगोनथी अने १ देश २ प्रदेश तथा ३ अगुरुलघुसादिसांतछे तथासिद्धना जीवनीसाथे संबंधतेसादिअनंतछे.

पुद्गलद्रव्यमांगुणअनादिअनंतछे जीवपुद्गलनोसंबंध अभव्यने अनादिअनंतछे भव्यजीवनेअनादिसांतछे पुद्गलनाखंधसर्वेसादिसांतछे जेखंधबांध्यातेस्थितिप्रमाणे रहीखिरेछे वलीनवाबंधायछे माटेसादिअनंतभांगोपुद्गलमांनथी.

कालद्रव्यमां गुणचारअनादिअनंतछे पर्यायमां अतीतकालअनादिसांतछे अनेवर्तमानकालसादिसांतछे अनागतकालसादिअनंतछे एकालनुंस्वरूपते सर्वेउपचारथीछे एरीतेंकालद्रव्यमां चोभंगीकही.

ह्वे द्रव्यक्षेत्रकालतथा भावमांचौभंगीकहेछे जीवद्रव्यमां स्वद्रव्यथीज्ञानादिकगुणते अनादिअनंतछे स्वक्षेत्रेंजीवनाप्रदेशअसंख्याताछे तेसादिसांतछे ततोद्वर्त्तनापणे फिरेछे तेमाटे. अथवा अवगाहनामाटेसादिसांतछे पणछतिपणेतो अनादिअनंतछे स्वकालअगुरुलघुनेगुणे अनादिअनंतछे अनेअगुरुलघुगुणनो उपजवो तथाविणशवोतेसादिसांतछे तथा स्वभावगुणपर्याय तेअनादिअनंतछे अनेभेदांतरेअगुरुलघु तेसादिसांतछे.

धर्मास्तिकायमां स्वद्रव्यजेचलणसहायगुण तेअनादिअनंतछे अनेस्वखेत्रअसंख्या त प्रदेशलोकप्रमाणछे ते अवगाहनापणे सादिसांतछे स्वकालतेअगुरुलघुगुणेकरी अनादिअनंतछे अने उत्पादव्ययतेसादिसांतछे स्वभावते चारगुणअगुरुलघुअनादि अनंतछे १ खंध २ देश ३ प्रदेशतेअवगाहनानेप्रमाणे सादिसांतछे एमअधर्मास्ति कायनापणद्रव्यादिचारभांगाजाणवा तथाआकाशास्तिकायमां स्वद्रव्यअवगाहनादा नगुणतेअनादिअनंतछे अनेस्वखेत्रलोकालोकप्रमाणअनंतप्रदेशते अनादिअनंतछे स्वकालते अगुरुलघुगुणसर्वथापणेअनादिअनंतछे अनेउपजवे तथाविणसवेसादि सांतछे स्वभाव ते चारगुण तथा खंधअने अगुरुलघुते अनादिअनंतछे तथादेशप्रदे शते सादिसांतछे तेआकाशद्रव्यना बेभेदछे एकचौदराजलोकनो खंध लोकाकाश ते सादिसांतछे बीजोअलोकाकाशनो खंध तेसादिअनंतछे.

कालद्रव्यमां स्वद्रव्यजे नवपुराणवर्त्तनागुण तेअनादिअनंतछे स्वखेत्रसमयका लते सादिसांतछे केमके वर्त्तमानसमयएकछेतेमाटे. तथा स्वकालतेअनादिअनंतछे स्वभावतेगुणचार अनेअगुरुलघु अनादिअनंतछे अतीतकालअनादिसांतछे अनेवर्त्त मानकालसादिसांतछे अनागतकाल सादिअनंतछे.

पुद्गलद्रव्यमां स्वद्रव्यते द्रव्यपणे जेपूरणगलनधर्मतेअनादिअनंतछे अनेस्वखेत्र पर माणुते सादिसांतछे स्वकालस्थिति अगुरुलघुगुणते अनादिअनंतछे अगुरुलघुनोउप जवोविणशवोते सादिसांतछे स्वभावतेगुणचार अनादिअनंतछे वर्णादिपर्यायचार एट ले वर्ण गंध रस स्पर्श तेसादिसांतछे एद्रव्यादिचारमां चौभंगीकही.

हवे छद्रव्यनासंबंधआश्रीचौभंगीकहेछे तिहांप्रथमआकाशद्रव्यछे तेमांअलोका काशमांकोइद्रव्यनथी अनेलोकाकाशमां छद्रव्यछे तिहांलोकाकाशद्रव्य तथाबीजुंध र्मास्तिकायद्रव्य अनेत्रीजुंअधर्मास्तिकायद्रव्य ते अनादिअनंतसंबंधीछे जेलोकाकाश नाएकेकप्रदेशमांधर्मद्रव्यतथाअधर्मद्रव्यनोएकेकप्रदेशरह्योछे तेपण किवारे विछडसेन ही माटेअनादिअनंतसंबंधीछे आकाशखेत्रलोकसर्व अनेजीवद्रव्यनोअनादिअनंतसं बंधछे अनेसंसारीजीवकर्मसहित तथा लोकनाप्रदेशनोसादिसांतसंबंधछे लोकांतसिद्ध खेत्रनासिद्धजीवोनो आकाशप्रदेशसाथेंसादिअनंतसंबंधछे लोकाकाशअनेपुद्गलद्रव्य नोअनादिअनंतसंबंधछे आकाशप्रदेशनीसाथें पुद्गलपरमाणुनो सादिसांतसंबंधछेएम आकाशद्रव्यनीपरेधर्मास्तिकाय तथाअधर्मास्तिकायनोपण सर्वसंबंधजाणवो जीव अनेपुद्गलनासंबंधमां अभव्यजीवनेपुद्गलनोअनादिअनंतसंबंधछे केमके अभव्यजी वनाकर्मकिवारें खपशेनहीमाटे अने भव्यजीवनेकर्मनुंलागवुंअनादिकालनोछे पणते

किवारेकबुटशे माटेजव्यजीवनेपुजलसंबंधअनादिसांतछे. तथानिश्चेनयकरीढव्यस्व जावपरिणामपरिणम्याछे तेपरिणामीपणोसदाशाश्वतोछे तेमाटेअनादिअनंतछे अने जीवतथापुजलबेढ्व्यमिलिसंबंधजावपामेछे तेपरपरिणामीपणोछे तेपरपरिणामि पणोअजव्यजीवनेअनादिअनंतछे अनेजव्यजीवनेअनादिसांतछे अनेपुजलनोपरिणा मीपणो तेसत्तायेंअनादिअनंतछे अनेपुजलनोमिलवो विछडवोतेसादिसांतछे एटले जीवढ्व्यपुजलसाथेमिल्योसक्रियछे अनेपुजलकर्मथीरहित थाय तेवारेंजीवढ्व्यअ क्रियछे अनेपुजलढ्व्यसदासक्रियछे.

ह्वेएकअनेकपक्षथी निश्चेंज्ञानकहेवाने नयकेहेछे सर्वढ्व्यमांअनेकस्वजावछे तेए कवचनथीकह्याजायनही माटेमाहोमाहेंनयकरीसंक्षेपपणेकहेछे तिहांमूलनयनाबेजे दछे एकढ्व्यार्थिक बीजोपर्यायार्थिक तेमांउत्पादव्ययपर्यायगौणपणे अनेप्रधानपणे ढ्व्यनोगुणसत्तानेग्रहेतेढ्व्यार्थिकनयकहियें तेह्नादशजेदछे १ सर्वढ्व्यनित्यछे तेनित्य ढ्व्यार्थिक २ अगुरुलघु अनेक्षेत्रनीअपेक्षानकरे मूलगुणने पिंमपणेग्रहे तेएकढ्व्या र्थिक ३ ज्ञानादिकगुणेसर्वजीव एकसरिखाछे माटेसर्वनेएकजीवकहे स्वढ्व्यादिकनेग्र हे तेसत् ढ्व्यार्थिक जेमसत्लक्षणंढ्व्यं ४ ढ्व्यमांकेहेवायोग्यगुण अंगीकारकरे ते वक्तव्यढ्व्यार्थिक ५ आत्मानेअज्ञानीकहेवुं तेअशुद्धढ्व्यार्थिक ६ सर्वढ्व्यगुणपर्याय सहितछे एमकेहेवुं तेअन्वयढ्व्यार्थिक ७ सर्वजीवढ्व्यनीमूलसत्ताएकछेतेपरमढ्व्या र्थिकनय ८ सर्वजीवना आठप्रदेशनिर्मलछे तेशुद्धढ्व्यार्थिकनय ९ सर्वे जीवनाअसं ख्यातप्रदेश एकसरिखाछे तेसत्ताढ्व्यार्थिकनय १० गुणगुणीढ्व्यतेएकछे तेपरम जावग्राहकढ्व्यार्थिकजेमआत्माज्ञानरूपछेइत्यादिकएढ्व्यार्थिकनयनादशजेदकह्या.

ह्वे पर्यायार्थिकनयनाछजेदकहेछे जेपर्यायनेग्रहेतेपर्यायार्थिकनयकहियें तेनाछजे दछे १ ढ्व्यपर्यायतेजीवनेजव्यपणुं तथासिद्धपणुंकेहेवुं २ ढ्व्यव्यंजनपर्याय तेढ् व्यनुंप्रदेशमान ३ गुणपर्यायजेएकगुणथीअनेकताथाय जेमधर्माधर्मादिढ्व्य पोताना चलणसहकारादिगुणथी अनेकजीवतथापुजलने सहायकरे ४ गुणव्यंजनपर्यायजे एकगुणनाघणाजेदछे ५ स्वजावपर्यायतेअगुरुलघुपर्यायथीजाणवुं एपांचपर्यायसर्वे ढ्व्यमांछे अनेछठोविजावपर्यायतेजीवपुजलएबेढ्व्यमांछे तिहांजीवजेचारगतिना न वानवाजवकरे तेजीवमांविजावपर्याय तथापुजलमां खंधपणुंतेविजावपर्यायजाणवो.

ह्वेपर्यायनाबीजाछजेदकेहेछे१ अनादिनित्यपर्याय तेजेमपुजलढ्व्यनोमेरुप्रमुख २ सादिनित्यपर्यायतेजीवढ्व्यनोसिद्धपणुं३ अनित्यपर्यायतेसमयसमयमांढ्व्यउपजे

विणशेछे४ अशुद्धअनित्यपर्यायते जन्ममरणथायछे तेणेकरीकेवुं ५उपाधिपर्यायतेक मैसंबंध६शुद्धपर्यायजेमूलपर्यायसर्वद्रव्यनाएकसरिखाछे एपर्यायार्थिकनुंस्वरूपकह्युं.

हवेसातनयकहेछे १ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार ४ ऋजुसूत्र ५ शब्द ६ सम भिरूढ ७ एवंभूत एसातनयनानामजाणवा तेमां पहेलोनैगमनयकहेछे नथीएकग मोतेनैगमकहियें गुणनोएकअंशउपनोहोयतो नैगमनयकहियें दृष्टांत जेमकोइकमनु ष्यने पायलीलाववानोमनथयो तेवारेंजंगलमां लाकडुंलेवाचाल्यो रस्तामांकोइकम नुष्यमव्यो तेणेंपुछयुंतुंक्यांजायछे तेवारें तेणेंकह्युं जे पायलीलेवाजाउंछुं तेपायली तोहजीघडीनथी पणमनमांचिंतवी तेथइएमगण्युं तेमनैगमनय सर्वजीवनेसिद्धस मानकहे केमके सर्वजीवनाआठरुचकप्रदेशनिर्मलसिद्धरूपछे तेथीएकअंशेंसिद्धछे ते माटे सिद्धसमानसर्वजीवकह्या तेनैगमनयनात्रणभेदछे १ अतीतनैगम २ अनाग तनैगम ३ वर्त्तमाननैगम एनैगमनयकह्यो.

हवेसंग्रहनयकहेछे सत्ताग्रहेतेसंग्रह जेएकनामलीधाथी सर्वगुणपर्यायपरिवारस हितआवे तेसंग्रहनयजाणवो तेनोदृष्टांत जेमकोइकमनुष्य प्रभातें दातणकरवानेअर्थे पोतानाघरनाबारणेबेशीने चाकरपुरुषनेकह्युंजेदातणलइआवो तेवारेतेचाकरमनुष्य पाणीनुंलोटो तथारुमालअनेदातण एमसर्वचीजलइआव्यो हवेशेठेंतोएकदातण ना मलइनेमंगाव्युंहतुं पणसर्वेनोसंग्रहकरीचाकरलेइआव्यो तेमज द्रव्यएवुंनामकह्युं तो द्रव्यनागुणपर्यायसर्वेआव्या एसंग्रहनयनाबेभेदछे एकजेद्रव्य पणेसामान्यपणेबोल ताजीव तथाअजीवद्रव्यनोभेदपड्योनही तेपेहेलोसामान्यसंग्रह तथाबीजोविशेषता नेअंगीकारकरेछे जेजीवद्रव्य एमकह्युंतो अजीवसर्वेटल्या तेविशेषसंग्रह.

हवे व्यवहारनयकहेछे जेबाह्यस्वरूपदेखीनेभेदनीवेहेचणकरे अनेजेबाहेरदेखाता गुणनेज माने पण अंतरंगसत्तानमाने एटलेएनयमां आचारक्रियामुख्यछे अंतरंगप रिणामनोउपयोगनथी केमके नैगमतथासंग्रहनयतेज्ञानरूपध्याननापरिणामविना अंशतथासत्तादिछे तेमइहांकरणीमुख्यछे तेव्यवहारनयपणे जीवनी व्यवस्थाअ नेकप्रकारेंछे तिहां नैगम तथासंग्रहनयकरी सर्वजीवसत्तायें एकरूपछे पणव्यव हारनयथीजीवना बेभेदछे एकसिद्ध बीजासंसारी तेवलीसंसारी जीवनाबेभेदछे एकअयोगीचौदमां गुणठाणावाला तथाबीजासयोगी तेसयोगीनाबेभेद एककेव ली बीजोछद्मस्थ छद्मस्थनाबेभेद एक क्षीणमोही बारमांगुणठाणेवर्त्तता मोहनी यकर्मखपाव्युंते बीजाउपशांतमोह तेउपशांतमोहनावली बेभेद एकअकषायी इ ग्यारमांगुणठाणानाजीव बीजासकषाइ तेसकषायीनाबेभेदछे एकसूक्ष्मकषायीदशमां

गुणठाणानाजीव बीजाबादरकषायी तेबादरकषायीनावलीबेनेदछे एकश्रेणीप्रतिपन्न बीजाश्रेणीरहित तेश्रेणीरहितनाबेनेद एकअप्रमादी बीजाप्रमादी तेप्रमादीनाबे नेद एकसर्वविरति बीजादेशविरति देशविरतिनाबेनेद एकव्रतिपरिणामि बीजोअव्र तिपरिणामि अव्रतिनाबेनेद एकअव्रतिसमकेति बीजाअव्रतिमिथ्यात्वी तेमिथ्यात्वी नाबेनेद एकनव्य बीजाअनव्य तेनव्यनाबेनेद एकग्रंथीनेदी बीजाग्रंथीअनेदी एवीरीतेंजेजीव जेवोदेखाय तेनेतेवोमाने एव्यवहारनयछे एमजपुजलनानेदकरवा तेकहेछे पुजलद्व्यनाबेनेदछे एकपरमाणु बीजोखंध खंधनाबेनेद एकजीवनेलागा तेजीवसहित बीजाजीवरहित ते घडोप्रमुखअजीवनोखंध हवेजीवसहितखंधना बेने दछे एकसूक्ष्मखंध बीजोबादरखंध.

इहां वर्गणानोविचारलखीयेछैयें तिहां पुजलनीवर्गणाआठछे १ उदारिकवर्गणा २ वैक्रियवर्गणा ३ आहारकवर्गणा ४ तेजसवर्गणा ५ नाषावर्गणा ६ उसासवर्ग णा ७ मनोवर्गणा ८ कार्मणवर्गणा एआठवर्गणानानामकह्या बेपरमाणुनेलाथाय द्व्यणुकखंधकहेवाय त्रणपरमाणुनेलाथाय तेवारे त्र्यणुकखंधथाय एमसंख्याता परमाणुमिले संख्याताणुकखंधथाय तेमजअसंख्यातें असंख्याताणुकखंधथाय त थाअनंतापरमाणुमिले अनंताणुकखंधथाय एखंधतेसर्वजीवने अग्रहणयोग्यछे अने जेवारें अनव्यथी अनंतगुणअधिकपरमाणुनेलाथाय तेवारें उदारिकशरीरने लेवा योग्यवर्गणाथाय.

एमज उदारिकथी अनंतगुणा अधिकवर्गणामां दलनेलाथाय तेवारेंवैक्रियवर्गणा थाय वली वैक्रियथकीअनंतगुणापरमाणुमिले तेवारेंआहारकवर्गणाथाय एमसर्ववर्ग णानाएकेकथी अनंतगुणाअधिकपरमाणुमिले तेवारेंतेवर्गणाथाय एटलेपेहेलीथी बीजीवर्गणा बीजीथीत्रीजी एमसातमीमनोवर्गणाथी आठमीकार्मणवर्गणामांअनंत गुणपरमाणुअधिकछे इहां १ उदारिक २ वैक्रिय ३ आहारक ४ तेजस एचारवर्ग णाबादरछे तेमांपांचवर्ण बेगंध पांचरस आठस्पर्श एवीसगुणछे तथा १ नाषा २ उसास ३ मन ४ कार्मण एचारवर्गणासूक्ष्मछे एमांपांचवर्ण बेगंध पांचरस ४ स्पर्श एसोलगुणछे अनेएकपरमाणुमां एकवर्ण एकगंध एकरस बेस्पर्श एपांचगु णछे एमपुजलखंधनाअनेकनेदछे.

एव्यवहारनयनाबनेदछे १ शुद्धव्यवहार तेआगलागुणगणानो गेडवो अनेकपर नागुणगणानो ग्रहणकरवुं अथवाज्ञानदर्शनचारित्रगुणते निश्चेनयएकरूपछे पणते शिष्यनेसमजाववाने जूदाजूदानेदकहेवा तेशुद्धव्यवहारछे २ जीवमां अज्ञानरागद्वेष

लागांछे तेअशुद्धपणोछे माटेअशुद्धव्यवहार ३ जे पुण्यनीक्रियाकरवी तेशुनव्यव
हार ४ जेथकीजीवपापरूपअशुनकर्मकरेतेअशुनव्यवहार ५ धन घर कुटुंब प्रत्यक्ष
सर्व आपणाथी जूदाजूदाछे पणजीवेंअज्ञानपणे आपणाकरीजाण्याछे तेउपचरितव्य
वहार ६ शरीरादिकपरवस्तुयद्यपिजीवथीजूदीछे तोपणपरिणामिकनाव लोलीपणेए
कठा मिलीरह्याछे तेनेजीवआपणाकरीजाणेछेते अनुपचरित व्यवहारजाणवो एव्य
वहारनयकह्यो.

हवेरुजुसूत्रनयनो विचारकहेछे जेअतीतकालअनेअनागतकालनीअपेक्षानकरे प
ण वर्त्तमानकालें जेवस्तुजेवागुणेंपरिणमे वर्त्तेतेवस्तुने तेवेजपरिणामेमाने माटे एनय
परिणामग्राहीछे जेमकोइकजीवगृहस्थछे पण अंतरंग साधुसमानपरिणामछे तोते
जीवनेसाधुकहे अनेकोइकजीव साधुनेवेषेंछे पणमननापरिणाम विषयानिलाषसहि
तछे तोतेजीव अव्रतीजछे एमरुजुसूत्रनोमानवोछे तेरुजुसूत्रनाबेनेदछे एकसूक्ष्मरु
जुसूत्रते एमकहेजे सदाकालसर्ववस्तुमां एकवर्त्तमानसमयवर्त्तेछे एटले जे जीवगया
कालें अज्ञानीहतो अनेअनागतकालें अज्ञानीनावेंअज्ञानीथशे एमबेहुकालनीअपेक्षा
नकरे पणएकवर्तमानसमये जेजेवोतेनेतेवोकहे तेसूक्ष्मरुजुसूत्रकहियें अनेमहोटा
बाह्यपरिणामग्रहे तेस्थूलरुजुसूत्र नयजाणवो एटलेरुजुसूत्रनयकह्यो.

हवेशब्दनयकहेछे जेवस्तुगुणवंत अथवानिर्गुण तेवस्तुनेनामकहीबोलावियें जे
नाषावर्गणाथी शब्दपणेंवचनगोचरथाय तेशब्दनयजेकारणेअरूपीद्रव्यवचनथीग्रह्या
जायनही पणवचनथीकहेवातेशब्दनयकहियें इहांजेशब्दनोअर्थहोय तेपणोजे वस्तु
मांवस्तुपणेपामियें तेवारेंतेवस्तुशब्दनयकहियें जेमघटनीचेष्टानेकरतोहोयतेघट एश
ब्दनयमां व्याकरणथीनीपना अनेबीजापणसर्वशब्दलेधा तेशब्दनयनाचारनेदछे १ ना
म २ स्थापना ३ द्रव्य ४ नाव अने चारनिक्षेपानापणएहिजनामछे.

१ पहेलोनामनिक्षेपो ते आकार तथा गुणरहितवस्तुने नामकरीबोलाववो जेम
एकलाकडीनो कटकोलेइने कोइकें तेहनेजीवएवुंनामकह्यो तेनामजीवजाणवुं जेम
कालीदोरीने सापनीबुद्धियेंकरीघावहणे तेहनेसापनीहिंसालागे एनामसर्पथयो एवी
जरीतें नाम तप अथवानामसिद्ध जेमवडप्रमुखने सिद्धवड एमकहीबोलावेछे तेना
मनिक्षेपोकहियें एसूत्रसाखेंछे.

२ स्थापनानिक्षेपोकहेछे जेकोइकवस्तुमां कोइकवस्तुनोआकारदेखीने तेहनेतेव
स्तुकहे जेमचित्राम अथवाकाष्ठपाषाणनीमूर्त्ति तेनेघोडाहाथीनोआकारछे तोतेघोडा
हाथीकहेवाय तेस्थापनाजाणवी एस्थापनानिक्षेपो नामनिक्षेपेंसहितहोय जेमस्था

पनासिद्धजिनप्रतिमाप्रमुख तेसद्भावस्थापनापणहोय अनेअसद्भावस्थापनापण होय अकृत्रिमजिनप्रतिमाते नंदीश्वरद्वीपप्रमुखनेविषे अनेजेइहांनीजिनप्रतिमाते कृत्रिम तेसर्वेस्थापनाजाणवी जेम चित्रामनीस्त्रीजिहांमांमीहोय तिहांसाधुरहेनही कारणके स्थापनास्त्रीछे तेस्त्रीतुल्यजाणवी तेमजजिनप्रतिमा जिनसमानजाणवी इहां कोइक अज्ञानीजीवकहेछे जे स्थापनामांज्ञानादिगुणनथी तेथी स्थापनानेमानवी पूजवीनही तेनेउत्तरकेहेछे केस्थापनारूपस्त्रीमां स्त्रीपणानागुणनथी तोपणतेविकारनुंकारणथायछे तेमज जिनप्रतिमापणध्याननुंकारणछे अनेजेएमपुछेके हिंसाथायछे अनेभगवंतेतोदयाने धर्मकह्योछे तेहनेएमकहेवुंजे परदेशीराजाकेसीगुरुने वांदवानेअर्थेंजीजेदीवसें महोटाआडंबरथीआव्यो तेवंदनामांहिंसाथयी पणलाभकारणगणतात्रोटोनथयो बीजोमल्लिनाथजीयेंछमित्रप्रतिबोधवाने पुतलीनोदृष्टांतकह्यो ते हिंसातोघणीथयी पणतेलाभनाकारणमांगणीछे एमभावशुद्धहोय तिहांहिंसालागती नथी अथवा कोइकएमकहेछे जे अमेआपणेस्थानकेबेठानमोत्थुणंकहिसुं अमनेलाभथासेतेखरो पणभगवतीसूत्रमां भगवाननेवंदनानेअधिकारें तोतिहांजइवंदनाकरवानुंफलमहोटुंकह्युंछे तथानिक्षेपानेअधिकारें एमकह्युंजे भावनिक्षेपोएकलोथाय नही पण नामस्थापना तथाद्रव्य एत्रणमिल्याभावनिक्षेपोथाय माटेस्थापनाअवश्य मानवी हवेजेस्थापनानमाने तेनेकहियें जे चित्रामनीमूर्त्तिनेहिंसानापरिणामथीफाडे तेहनेहिंसालागेछे तेमज जिनवरनाध्याने जिनप्रतिमा पूजतांलाभथायछे एमयुक्ति कर्त्ती तथाआगमनीसांखेपणजिनप्रतिमानेजिनसमानमानेतेआराधक अनेजेजिनप्रतिमानेनमाने तेणेस्थापनानिक्षेपोउथाप्यो अनेस्थापनाउथापीतो द्रव्यतथाभावनिक्षेपो थापनाविनाथायनही माटेद्रव्यतथाभावपणउथाप्यो एमत्रणनिक्षेपाउथाप्या तेवारेंसिद्धांतउथाप्याज माटेजेजिनप्रतिमानेनहीमाने तेविराधकजाणवोतेस्थापना इतर अनेयावत्कथिक एबेभेदेछे.

३. द्रव्यनिक्षेपोकहेछे जेनोनामपणहोय तथा आकारथापनागुणपणहोय अने लक्षणहोय पणआत्मोपयोगनमिले तेद्रव्यनिक्षेपोजाणवो एटलेअज्ञानीजीव तेजीवस्वरूपनाउपयोगविनाद्रव्यजीवछे अणुवउगोदव्वं इतिअनुयोगद्वारवचनात् वलीकहुंछे जेसिद्धांतवांचतापुछतां पदअक्षरमात्राशुद्धअर्थकरेछे अनेगुरुमुखेसद्दहेछे ते पणशुद्धनिश्चे पोतानीसत्ताओलख्याविना सर्वद्रव्यनिक्षेपामांछे जेभावविनाद्रव्यपणोछे ते पुण्यबंधनुंकारणछे पणमोक्षनुंकारणनथी एटलेजेकरणीरूप कष्टतपस्याकरेछे अनेजीवअजीवपदार्थनी सत्ताओलखीनथी तेने भगवतीसूत्रमां अव्रती तथाअपच्च

खाणीकह्याछे तथाजेएकलीबाह्यकरणीकरेछे अनेपोतेसाधुकहेवायछे ते मृषावादी छे एमउत्तराध्ययनसूत्रमांकह्युंछे नमुणीरन्नवासेणं एवचनं नाणेणयमुणीहोइ ॥ ए वचनथी जेज्ञानवानतेमुनीछे अनेजेअज्ञानीतेमिथ्यात्वीछे तथाकोइक गणितानुयोग ना नरकदेवतानाबोल अथवा यतिश्रावकनो आचारजाणीनेकहेजे अमेज्ञानीछैयें ते पणज्ञानीनथी पणजेद्रव्यगुणपर्यायजाणे तेने ज्ञानीकहियें श्रीउत्तराध्ययने मोक्ष मार्गेकह्योछे गाथा एयंपंचविहणानं दव्वाणयगुणाणय ॥ पज्जवाणयसव्वेसिं ना णंनाणीहिदंसियं ॥ १ ॥ माटे वस्तुसत्ताजाण्याविना ज्ञानीसमजवुंनही अनेनवतत्वउ लखेतेसमकेति अनेएहवाज्ञानदर्शनविना जेकहेकेअमेचारित्रिआछैयें तेपणमृषावा दीछे कारणके श्रीउत्तराध्ययनसूत्रमध्येकह्योछे जे नाणंदंसणनाणं नाणेणविनान हुंतिचरणगुणा ॥ एवचनछे तेमाटे आज केटलाक ज्ञानहीन क्रियानोआडंबरदेखा डेछे तेठगछे तेहनोसंगकरवोनही एबाह्यकरणीअभव्यजीवनेपणआवे माटेएबाह्य करणीऊपर राचवोनही अनेआत्मानुंस्वरूपउलख्याविना सामायक पडिकमणा पच्च खाणकरवाते सर्वद्रव्यनिक्षेपामां पुण्याश्रयछे पणसंवरनथी श्रीभगवतीसूत्रमध्येकह्युं छे आयाखलुसामाइयं ॥ एआलावाथीजाणजो तथाजीवस्वरूपजाण्याविना तपसं यमपुण्यप्रकृति तेदेवतानाभवनुंकारणछे पुव्वतवेणंपुव्वसंयमेणंदेवलोएउववज्जंतिनो चेवणंआयत्ताभावववत्तव्वयाए एआलावोभगवतीमांकह्योछे तथाजेक्रियालोपी आ चारहीनछे अनेज्ञानहीनछे मात्रगछनीलाजें सिद्धांतभणेवांचेछे व्रतपच्चखाणकरेछे तेपणद्रव्यनिक्षेपोजाणवो एम श्रीअनुयोगद्वारमांकह्योछे इमेसमणगुणमुक्क यो गीछकायनिरणुकंपा ॥ हयाइवउद्दामा ॥ गयाइवनिरंकुसा ॥ घठ्ठामठ्ठातुप्पोठ्ठा ॥ पंडु रयाउरणाजिणाणं ॥ आणाएसछंदा ॥ विहरिऊण उभउकालंआवस्सगस्सउवठंति तं ॥ लोगुत्तरियंदव्वावस्सयं ॥ अर्थ ॥ जेनेछकायनीदयानथी घोडानीपेरेंउन्मदछे हा थीनीपेरेंनिरंकुशछे पोतानाशरीरनेधोवता मसलता उजलेकपडेशिणगारकरी गछ नाममत्वभावेंमाचतां स्वेछाचारी वीतरागनीआज्ञानांजता जेतपक्रियाकरेछे तेपण द्रव्यनिक्षेपामांछे अथवाज्योतिषवैद्यककरेछे अनेपोताने आचार्य उपाध्यायकेवरा वीने लोकपाशेंमहिमाकरेछे तेपत्रीबंधखोटारूपैयाजेवाछे घणाभवभमसे माटेअवंद निकछे एसांखउत्तराध्ययनमध्ये अनाथीमुनीना अध्ययनथकीजाणवी अनेसूत्रनाअ र्थगुरुमुखेसिख्याविना तथानयप्रमाणजाण्याविना निश्चेंआत्मानुंस्वरूप उलख्याविना निर्युक्तिविनाउपदेशआपेछे तेपोतेतोसंसारमांबुडाछे पणजे तेमनीपासेबेसेछे तेमनेप ण संसारमांबुडावेछे एमप्रश्नव्याकरणसूत्र तथा अनुयोगद्वारसूत्रमांकह्युंछे अज्झवचे

वसोजसमंइत्यादि अनेन्नगवतीसूत्रमांपणकह्युंछे सुतछोखलुपढमो बीउनिर्युत्तिमिस उन्नणिउ ॥ इत्तोतईयणुउंगो नाणुन्नाउजिणवरेहिं ॥ अनेकेटलाकएमकहेछेजे अमे सूत्रउपरअर्थकरियेछैयें तोनिर्युक्ति तथाटीकाप्रमुखनो स्योकामछे तेपणमृषावादछे केमकेश्रीप्रश्नव्याकरणमां वयणतियंलिंगतियं इत्यादिकजाण्याविना अनेनयनिक्षेप जाण्याविना जेउपदेशआपे तेमृषावादछे एमअने कसूत्रमां कह्युंछे माटेबहुश्रुतपाशें उपदेशसांजलवो श्रीउत्तराध्ययनमध्ये बहुश्रुतने मेरुनीतथासमुइनी अने कल्पवृक्षा दिसोलउपमादीधीछे एइव्यनिक्षेपोकह्यो.

४ नावनिक्षेपोंकहेछे जेनामस्थापना अने इव्यएत्रणनिक्षेपाते एकन्नावनिक्षेपा विनाअशुंडछे जे नामतथाआकार लक्षण गुणसहित वस्तुते नावनिक्षेपोजाणवो नवउंगोजावइतिवचनात् एटले पूजादान शील तप क्रिया ज्ञान एसर्वे नावनिक्षेपेसहि तलान्नकारणछे इहांकोइकहेछेजे मननापरिणामदृढकरीनेजेकरियें तेनेन्नावकहियें एमकहेछे तेजूगछे एतोसुखनीवांछायें मिथ्यात्वीपणघणाकरेछे तेगणवुंनहीं इहांसू त्रनीसांखे वीतरागनी आज्ञाहेयउपादेयनीपरीक्षाकरी अजीवतत्व तथा आश्रवतत्व अनेबंधतत्व उपर हेयके० त्यागन्नाव अने जीवनास्वगुणजे संवरनिर्जरा तथामो क्षतत्वउपरेंउपादेय परिणामतेनावकहियें एटले रूपीगुणतेइव्यनिक्षेपछे अनेअरू पीगुणतें नावनिक्षेपछे एटले मनवचनकाया लेश्यादिकसर्वेइव्यनिक्षेपामांछे अनेज्ञा नदर्शनचारित्रवीर्य ध्यानप्रमुखसर्वेगुण नावनिक्षेपामांछे एन्नावनिक्षेपो ते नामस्था पनातथाइव्य सहितहोय एटलेचारनिक्षेपाकह्या.

हवेचारनिक्षेपापदार्थउपरलगाडीदेखाडेछे नामजीवतेचेतना अथवा मांचाने ए कवाणने जीवकहीबोलावेछे तेनामनिक्षेपेजीवमूर्तिप्रमुखथापियें तेस्थापनाजीव एकें इीथीपंचेंडीपर्यंत सर्वेजीवछे पणउपयोगमिलेनहीतेइव्यजीव अनेमूर्तिमांजीवस्वरू पउलखीसमकितनाउपयोगमांछे तेन्नावजीवएमधर्मास्तिकायादिकइव्यमांपण जाण वो नामथीधर्मास्तिकायकहीबोलावो तेनामधर्मास्तिकाय धर्मास्तिकायएहवाअक्षर लिखवा अथवादृष्टांतकारणे कोइकवस्तुथापवी ते स्थापनाधर्मास्तिकाय तथा धर्मा स्तिकाय जे असंख्यातप्रदेशी धर्मइव्यछे तेइव्यधर्मास्तिकाय एधर्मास्तिकायनेजेवारें चलणसहायगुणनी अपेक्षासहितउलखियें तेन्नावधर्मास्तिकाय.

हवे कोइकनोसाधुएहवोनामछे तेनामसाधु अनेस्थापनाकरियेंतेस्थापनासाधु त थाजे पंचमहाव्रतपाले क्रियाअनुष्ठानकरे सुजतोआहारलीये पणज्ञानध्याननोजेवो

उपयोगजोइये तेवोउपयोगनहोय तेद्रव्यसाधु जेभावसंवरमोक्षनोसाधकथइ भाव साधुनीकरणीकरे तेभावनिक्षेपेसाधुकहियें.

कोइकनोअरिहंतनामछे तेनामअरिहंत अनेअरिहंतनीप्रतिमाते थापनाअरिहंत जेटलासुधीछद्मस्थअवस्थाते द्रव्यअरिहंत अनेकेवलज्ञानपाम्यापछे लोकालोकनो भावजाणेदेखे तेभावअरिहंत एमसिद्धमांपणकहेवो.

कोइजीवनोज्ञानएहवोनाम अथवाभावेंअजीवनोनाम तेनामज्ञान तथाजेज्ञानपु स्तमांलख्युंछे तेस्थापनाज्ञान जेउपयोगविनासिद्धांतनोभणवो अथवाअन्यमतिना सर्वशास्त्रभणवा तथाज्ञशरीरादिकतेसर्वद्रव्यज्ञान जेनवतत्त्वनोजाणवो तेभावज्ञान.

तथाकोइकनोतपएहवोनाम ते नामतप तथापुस्तकमां तपनीविधीनुंलखन ते थापनातप अने पुण्यरूपमासखमणादिककरवोतेद्रव्यतप जेपरवस्तुऊपरत्यागनोपरि णामते भावतप एमसंवरादिकसर्वेमांचारचारनिक्षेपाजाणवा तथाश्रीअनुयोगद्वारम ध्येकह्योछे यतः जत्थयजंजाणिज्जा निक्खेवंनिक्खिवेनिरवसेसं ॥ जत्थवियनजाणि ज्जा चोक्कयंनिक्खवेतत्थ ॥१॥ एचारनिक्षेपाकह्या एटलेशब्दनयकह्यो.

हवे छठोसमभिरूढनयकहेछे जेवस्तुनाकेटलाकगुणप्रगटथाछे अनेकेटलाकगुण प्रगटथानथी पणअवश्यप्रगटशे एहवीवस्तुनेवस्तुकहे तेवस्तुनानामांतरएककरीजाणे जेम जीव चेतन तथाआत्मा एहनोएकअर्थकहे ते समभिरूढनयकहियें एनय एकअंशऊणीवस्तुनेपूरेपूरीवस्तुकहे जेमतेरमांगुणठाणेकेवलीहोय तेहनेसिद्धकहे ए नयनाभेदबिलकुलनथी एसमभिरूढनयकह्यो.

हवेएवंभूतनयकहेछे जेवस्तुपोतानेगुणेसंपूर्णछे अनेपोतानीक्रियाकरेछे तेने ते वस्तुकहीबोलावे जेममोक्षस्थानकें जेजीवपहोतो तेने सिद्धकहे जेमपाणीथीभरेलो स्त्रीनामाथाऊपरआवतो जलधरणक्रियाकरतो तेने घडोकहेएएवंभूतनयकह्यो.

हवेसातनयनादृष्टांत श्रीअनुयोगद्वारसूत्रथी लखियेंछैयें जेमकोइकपुरुषेकोइकबी जा पुरुषनेपुछ्युं जेतमेकिहांवसोछो तेवारेंतेपुरुषेंकह्युं हुंलोकमांवसुंछुं तेवारेंअशुद्ध नैगमवालेपुछ्युं जेलोकनात्रणभेदछे १ अधोलोक २ त्रिछोलोक ३ ऊर्ध्वलोक तेमांतुं किहांरहेछे तेवारेंशुद्धनैगमेंकह्युंजे त्रिछालोकमांरहुंछुं वलीपुछ्युंजे त्रिछोलोकमांअसं ख्याताद्वीपसमुद्रछे तेमांतुंकेहाद्वीपमांरहेछे तेवारें विशुद्धनैगमेंकह्युंजे जंबुद्वीपमां रहुंछुं तेजंबुद्वीपमांखेत्रघणाछे तेमांतुंक्याखेत्रमांरहेछे तेवारें अतिशुद्धनैगमबोल्यो जे भरतक्षेत्रमांरहुंछुं तेभरतखेत्रनाछखंडछे तेमांहेलाकिहांखंडमांरहेछे तेवारेंकह्यु

जेमध्यखंडमांरहुंछुं एमक्रमेपूछता छेलेकह्युंजेआपणादेशमांरहुंछुं तेवारेंफरीपुछ्युंजे देशमांतोनगरग्रामघणाछे तोतुंकिहांरहेछे तेवारेंकह्युंजे हुंअमुकगाममांरहुंछुं तेगाममांवलीअमुकपाडो तथाअमुकघरबताव्यो तिहांसुधीनैगमनयजाणवो.

अनेसंग्रहनयवालोबोल्योजे मारापोतानाशरीरमां वसुंछुं तथाव्यवहारनयवालो बोल्योजे संथारेबेगोछुंतेटलाजबिछानामांरहुंछुं अनेऋजुसूत्रनयवालेकह्युंजे माराआत्माना असंख्याताप्रदेशमांरहुंछुं वलीशब्दनयकहेजे मारास्वभावमांरहुंछुं तेमजसमभिरूढनयकहेजे हुंमारागुणमांरहुंछुं अने एवंभूतनयवादीकहेजे ज्ञानदर्शनगुणमां वसुंछुं एदृष्टांतकह्यो तेमसर्ववस्तुमांकहेवुं

तथाकोइके प्रदेशमात्रखेत्रअंगीकारकरी पुछ्युंजे एप्रदेशकिहाद्रव्यनोछे तेवारेंनैगमनयबोल्योजेछएद्रव्यनोप्रदेशछे केमके एकआकाशप्रदेशमध्येछद्रव्यभेलाछे तेवारें संग्रहनयबोल्यो जे कालद्रव्यतोअप्रदेशीछे तेमाटे सर्वलोकमां एकसमयसरिखोछे पण ते एक आकाशद्रव्यनाप्रदेशमां जूदोनथी माटे कालविनापांचद्रव्यनो प्रदेश छे तेवारेंव्यवहारनयबोल्योके जेद्रव्यमुख्यदेखायछे तेहनोप्रदेशछे तेवारेंऋजुसूत्रनय बोल्योके जेद्रव्यनोउपयोगदेइपुछियें तेद्रव्यनोप्रदेशछे जोधर्मास्तिकायनोउपयोगदेइपुछियें तोधर्मास्तिकायनोप्रदेशछे जोअधर्मास्तिकायनोउपयोगदेइपुछियें तोअधर्मास्तिकायनोप्रदेशछे तेवारेंशब्दनयबोल्योके जे द्रव्यनोनामलइपुछियें तेद्रव्यनोप्रदेशछे हवे समभिरूढनयबोल्योजे एकआकाशप्रदेशमध्येधर्मास्तिकायनोएकप्रदेशछे अधर्मास्तिकायनोएकप्रदेशछे अनेजीवनाअनंताप्रदेशछे पुद्गलनापणअनंताप्रदेशछे तेवारेंएवंभूतनयबोल्यो के प्रदेशनेजेद्रव्यनी क्रियागुणपर्यायअंगीकारकरी देखियें तेसमयते प्रदेश तेद्रव्यनोगणियें एप्रदेशमांसातनयकह्या.

हवेजीवमां सातनयकहेछे प्रथमनैगमनय निमते जेगुणपर्यायवंत शरीरसहित तेजीव एटलेशरीरमांजेबीजा पुद्गल तथाधर्मास्तिकायादिकद्रव्यछे तेसर्वेजीवमांजगण्या तेवारेंसंग्रहनयबोल्यो जेअसंख्यातप्रदेशी तेजीव एटलेएकआकाशना प्रदेशटल्या बीजासर्वेद्रव्यएमांगण्याण्या तेवारेंव्यवहारनयबोल्यो जेविषयलेयी कामवातसंभारे ते जीव इहांधर्मास्ति अधर्मास्तिकाय आकाश तथाबीजापुंद्गलसर्वेटल्या पणपांचेंद्री तथा मन अनेलेश्या एपुंद्गलछे तेजीवमांगण्याण्या कारणके विषयादिकतोइंद्रियोलेछे ते जीवथीन्याराछेपणइहांव्यवहारनयमंते जीवभेलालीधाछे तेवारें ऋजुसूत्रनयबोल्यो जेउपयोगवंततेजीव इहांइंद्रियादिकसर्वेटल्या पणअज्ञान तथा ज्ञाननाभेदटल्या

नही हवेशब्दनयबोल्यो जे नामजीव स्थापनाजीव द्रव्यजीव भावजीव इहांजीवमां गु णनिर्गुणनोभेदपडयोनही तेवारें समभिरूढनयबोल्यो जे ज्ञानादिगुणवंततेजीव ते वारें मतिज्ञान श्रुतज्ञान इत्यादिकसाधकअवस्थानागुण तेसर्वेजीवस्वरूपमां आव्या हवेएवंभूतनयबोल्यो जे अनंतज्ञान अनंतदर्शन अनंतचारित्र शुद्धसत्तावंत तेजीव एनयेजेसिद्धअवस्थामां गुणहता तेजग्रह्या एसातनयेंजीवद्रव्यकह्यो.

हवेसातनयेंधर्मकहेछे नैगमनयबोल्योजे सर्वेधर्मछे केमके सर्वेप्राणीधर्मनेचा हेछे एनयअंशरूपधर्मने धर्मएहवुंनामकहे हवेसंग्रहनयबोल्यो जे वडेरायेंआदर्यो तेधर्म एणेअनाचारछोड्यो पणकुलाचारनेधर्मकह्युं व्यवहारनयबोल्योजे सुख नुंकारणतेधर्म एणे पुण्यकरणीनेधर्मकरीमान्यो ऋजुसूत्रनयमते जेउपयोगसहि त वैरागरूपपरिणामते धर्मकहियें एनयमां यथाप्रवृत्तिकरणनापरिणामप्रमुखसर्वेध र्ममांगण्या तेमिथ्यात्वीनेपणहोय हवेशब्दनयबोल्यो जे धर्मनुंमूलसमकितछे माटेस मकिततेजधर्म तेवारेंसमभिरूढनयबोल्यो जे जीव अजीव नवतत्व तथाद्रव्यनेओल खीने जीवसत्ताध्यावे अजीवनोत्यागकरे एहवोज्ञानदर्शन चारित्रनोशुद्धनिश्चय परि णामतेधर्म एनये साधकसिद्धनापरिणामतेधर्मपणेलीधा एवंभूतनयबोल्यो जे शुक्ल ध्यान रूपातीतनापरिणाम क्षपकश्रेणीकर्मक्षयनाकारणतेधर्म जेजीवनोमूलस्वभाव तेवस्तुधर्म जेमोक्षरूपकार्यनेकरे तेधर्म एसातेनयें धर्मकह्यो.

हवे सातनयें सिद्धपणोकहेछे नैगमनयनीमतेसर्वेजीवसिद्धछे केमके सर्वेजी वना आठरुचकप्रदेश सिद्धसमाननिर्मलछे माटे संग्रहनयकहेजे सर्वेजीवनीसत्ता सिद्धसमानछे एणेपर्यायार्थिकनयेंकरी कर्मसहितअवस्थातेटालीने द्रव्यार्थिकनयेंक री अवस्थाअंगीकारकरी तेवारेंव्यवहारनयबोल्यो जे विद्या लब्धिप्रमुखगुणेकरी सिद्धथयोतेसिद्ध एनयेबाह्यतपप्रमुख अंगीकारकर्या हवेऋजुसूत्रनयबोल्यो के जेणे पोतानाआत्मानीसिद्धपणानी सत्ताओलखी अने ध्याननोउपयोगपणतेजवर्त्तेछे तेस मयें तेजीवसिद्धजाणवो एनयेंसमकेतिजीवसिद्धसमानछे एमकह्युं हवेशब्दनयबोल्यो जेशुद्धशुक्लध्यान परिणाम नामादिकनिक्षेपेंतेसिद्ध तेवारेंसमभिरूढनयबोल्यो जे के वलज्ञान केवलदर्शन यथाख्यातचारित्र एगुणेसहित तेसिद्धजाणवा एनयें तेरमाच उदमांगुणठाणाना केवलीनेसिद्धकह्याअनेएवंभूतनयकहेछेकेजेना सकलकर्मक्षयथ या लोकनेअंतेविराजमान अष्टगुणसंपन्नतेसिद्धजाणवा एरीतेसिद्धपदेंसातनयकह्या एमसातनयमिल्यासमकेतिछे अनेजेएकनयनेगृहणकरेतेमिथ्यात्वीछे एसातेनयसिद्ध तेवचनप्रमाणछे अने एसातनयमां कोइपणनयने उथापेतेनुंवचनअप्रमाणछे.

हवेप्रमाणनोविचारकहेछे प्रमाणनाबेभेदछे एकप्रत्यक्षप्रमाण बीजुंपरोक्षप्रमाण तेमां जेजीवपोतानाउपयोगथीद्रव्यनेजाणे तेप्रत्यक्षप्रमाणकहियें जेमकेवली छ द्रव्यप्रत्यक्षप्रमाणेजाणे तथादेखे तेमाटेकेवलज्ञानतेसर्वथीप्रत्यक्षज्ञानछे अनेमनपर्यवज्ञानतेमनोवर्गणाप्रत्यक्षजाणे तथाअवधिज्ञानतेपुद्गलद्रव्यनेप्रत्यक्षजाणे माटे एबेज्ञानदेशप्रत्यक्षछे बीजुंछद्मस्थज्ञानतेसर्वपरोक्षप्रमाणछे.

हवेपरोक्षप्रमाणकहेछे मतिज्ञान अनेश्रुतज्ञानना उपयोगपरोक्षप्रमाणछे केमके जेशास्त्रनाबलथीजाणे तेपरोक्षप्रमाणकहियें तेपरोक्षप्रमाणनात्रणभेदछे १ अनुमानप्रमाण २ आगमप्रमाण ३ उपमानप्रमाण तेमां अनुमान एटले कोइक सहिनाणदेखीने जेज्ञानथाय जेम धुमाडोदेखीने अग्निनुंअनुमानथाय अनेआगमएटले शास्त्रनीसांखथीजेवातजाणियें जेम देवलोकतथानरक निगोदविगेरेनोविचारआगमथी जाणियेंछैयें तेआगमप्रमाण अने कोइकवस्तुनोदृष्टांतआपीने वस्तुनेओलखाववी तेउपमानप्रमाणजाणवो एप्रमाणकह्या हवेसत्असत्पक्षथीसप्तभंगीकहेछे.

१ स्यात्के० अनेकांतपणे सर्वअपेक्षालेइ जीवद्रव्यमां आपणोद्रव्य आपणोखेत्र आपणोकाल आपणोभाव एमआपणेगुणपर्यायेंजीवछे तेमसर्वद्रव्यआपणेगुणपर्यायेंछे तेस्यात्अस्तिनामापहेलोभांगो थयो.

२ जेजीवमां बीजापांचद्रव्यना १ द्रव्य २ खेत्र ३ काल ४ भाव तेपरद्रव्यनागुणपर्यायजीवमांनथी एटलेपरद्रव्यनागुणनोनास्तिपणोसर्वद्रव्यमांछे एस्यात्नास्तिबीजोभांगोथयो.

३ द्रव्यस्वगुणेअस्ति अनेपरगुणेनास्ति एबेभांगाएकसमयेद्रव्यमांछे जेम जेसमय शुद्धस्वगुणनीअस्तिछे तेजसमयें परगुणनीनास्तिपणछे माटेअस्तिनास्ति एबेहुभांगाछे तेस्यात्अस्तिनास्तित्रीजोभांगोथयो.

४ अस्ति अनेनास्ति एबेहुभांगा एकसमयमांछे तो वचनेकरीअस्तिएटलोबोलतां असंख्यातासमयलागें तेथीनास्तिभांगो तेंजवखतेकहेवाणोनही अने जोनास्तिभांगोकह्यो तोअस्तिपणोनाव्यो माटेएकजअस्तिकहेतांथका नास्तिपणोतेजसमयेद्रव्यमांछे तेनहीकेवाणो माटेमृषावादलागे तेमजनास्तिकहेता अस्तिनोमृषावादलागे माटेवचनेअगोचरछे एकसमयमांबेहुवचनबोल्याजायनही केमकेएकअक्षरबोलतां असंख्यातासमयलागेछे माटे वचनथीअगोचरछे तेस्यात्अवक्तव्यएचोथोभांगोकह्यो.

५ तेअवक्तव्यपणो वस्तुमांअस्तिधर्मनोपणछे माटेस्यात्अस्तिअवक्तव्यपांचमोभं

गोकह्यो ६ तेमजनास्तिधर्मनोपणअवक्तव्यपणोवस्तुमध्येछे माटेस्यात्नास्तिअवक्तव्यछठोभंगोजाणवो तेअस्तिपणोतथानास्तिपणोबेहुधर्मएकसमयेवस्तुमध्येछे पण वचनथीअवक्तव्यछे माटेस्यात्अस्तिनास्तियुगपत्अवक्तव्यएसातमोभंगोकह्यो.

हवे एसातभंगानित्य तथाअनित्यपणामांलगाडेछे १ स्यात्नित्यं २ स्यात्अनित्यं ३ स्यात्नित्यानित्यं ४ स्यात्अवक्तव्यं ५ स्यात्नित्यअवक्तव्यं ६ स्यात्अनित्यअवक्तव्यं ७स्यात्नित्यानित्यंयुगपत्अवक्तव्यं एमज एकअनेकनासातभंगाकहेवा तथा गुणपर्यायमांपणकहेवा केमकेसिद्धमध्येनयनथी तोपणसप्तभंगीतोसिद्धमांछे.

हवेसत्ताओलखावावानेत्रिभंगीयोकहेछे १ मिथ्यात्व दशातेबाधकदशा २ समकेत गुणठाणाथीमांडीने अयोगीकेवली गुणठाणासुधीसाधक दशाजाणवी ३ सर्वकर्मथी रहिततेसिद्धदशा १ ज्ञाननोजाणपणोतेजीवनोगुण २ तेनोज्ञातातेजीव ३ ज्ञेयतेसर्व द्रव्य १ ध्यानतेजीवनास्वरूपनो २ तेध्याननोध्याताजीव ३ ध्येयआत्मानोस्वरूप १ कर्त्तातेजीव २ कर्मतेएकमोक्षबीजोबंध ३ क्रियातेएकसंवरबीजीआश्रव १ कर्मतेचेतनानेकर्मबंधनापरिणाम २ कर्मनुंफलतेचेतनानेजे कर्मउदयनापरिणाम ३ ज्ञानचेतनातेजीवनोस्वगुण तेआत्मानात्रणभेदछे १ अज्ञानीजीव शरीरादिकपरवस्तुनेआत्मबुद्धीयेंकरीमाने तेपेहेलोबहिरात्मा २ जेदेहसहितजीवछे तेपणनिश्चेंसत्तागुणेसिद्धसमानछे एटलेपोतानाजीवने सिद्धसमानकरीध्यावे तेबीजोअंतरआत्माजाणवो ३ कर्मखपावीकेवलज्ञानपाम्याते अरिहंत तथासिद्ध सर्वपरमात्माजाणवा एत्रिभंगीनोविचारकह्यो एटलेआठपक्षनोविचारकह्यो.

हवेएकद्रव्यमध्ये छसामान्यगुणछेतेकहेछे पेहेलोअस्तित्वते जेछद्रव्यआपणागुण पर्यायप्रदेशेंकरीअस्तिछे तेमां धर्मअधर्म आकाश अने जीव एचारद्रव्यनो असंख्याता प्रदेशमिल्या खंधथायछे अनेपुद्गलमांखंधथवानीशक्तिछे माटेएपांचद्रव्यअस्तिकायछे अनेछठोकालद्रव्यनोसमय कोइकोइथीमिलतोनथी केमके एकसमयविणस्यापछे बीजोसमयआवेछे माटेकालअस्तिकायनथी एद्रव्यमांअस्तित्वपणोकह्यो.

२ वस्तुत्वके० वस्तुपणो कहेछे तेद्रव्य छएएकठाएकखेत्रमध्येरह्याछे एकआकाशप्रदेशमांधर्मास्तिकायनोएकप्रदेशरह्योछे तथाअधर्मास्तिकायनोपण एकप्रदेशरह्योछेअनेजीवअनंतानां अनंताप्रदेशरह्याछे पुद्गलपरमाणुअनंतारह्याछे तेसर्वेपोतानीसत्तालीधायकारह्याछे पणकोइद्रव्य कोइद्रव्यसाथेमिलीजातोनथी तेवस्तुपणो.

३ द्रव्यत्वके० द्रव्यपणोते सर्वद्रव्यपोतपोतानीक्रियाकरे एटलेधर्मास्तिकायमां

चलणगुणते सर्वप्रदेशमध्येछे सदाकालेंपुज्जल तथाजीवने चलाववारूपक्रियाकरेछे इहांकोइपुछेजे लोकांतसिद्धखेत्रमांधर्मास्तिकायछे तेसिद्धनाजीवने चलाववापणोक रतीनथी तेकेम तेनेउत्तरकहेछेजेसिद्धनाजीवअक्रियछे माटेचालतानथी पणतेखे त्रमांजेसूक्ष्मनिगोदनाजीव तथापुज्जलछे तेहनेधर्मास्तिकायचलावेछे माटेपोतानीक्रि याकरेछे तेमजअधर्मास्तिकायजीवतथापुज्जलने स्थिरराखवानीक्रियाकरेछे तथाआ काशद्रव्य ते सर्वद्रव्यनेअवगाहनारूपकार्यकरेछे इहांकोइपुछेजे अलोकाकाशमांतो बीजुंकोइद्रव्यनथी तो अलोकाकाश किहाद्रव्यनेअवगाहदानआपेछे तेनेउत्तरकहेछे जेअलोकाकाशमां अवगाहकरवानीशक्तितो लोकाकाशजेवीजछेपरंतुतिहांअवगाहनो दानलेनारद्रव्यकोइनथी माटेअवगाहदानकरतोनथी अनेपुंज्जलद्रव्यमिलवाविखर वारूपक्रियाकरेछे तथाकालद्रव्यवर्तनारूपक्रियाकरेछे अनेजीवद्रव्यज्ञानलक्षणउपयो गरूपक्रियाकरेछे एमसर्वद्रव्यपोतानेपरिणामीस्वसत्तानीक्रियाकरेछेएद्रव्यत्वपणोकह्यो

४ प्रमेयत्वंके० प्रमेयपणो जे छद्रव्यमांप्रमेयपणोछे तेनोप्रमाण केवलीपोता नाज्ञानथीकरेछे जेधर्मास्तिकायतथाअधर्मास्तिकायअने आकाशास्तिकाय एकेकद्र व्यछे अनेजीवद्रव्यअनंताछे तेहनीगणतिकहेछे संज्ञीमनुष्यसंख्याताछे असंज्ञीमनुष्य असंख्याताछे नारकीअसंख्याताछे देवताअसंख्याताछे तिर्यंचपंचेंद्रीअसंख्याताछे बें द्रीअसंख्याताछे तेंद्रीअसंख्याताछे चौरेंद्रीअसंख्याताछे तेथकीपृथ्वीकायअसंख्याता अपकायअसंख्याता तेउकायअसंख्याता वायुकायअसंख्याता प्रत्येकवनस्पतिजी वअसंख्याता तेथकीसिद्धना जीवअनंता तेथकीबादरनिगोदनाजीवअनंतगुणा एट लेबादरनिगोदतेकंदमूल आदु सूरण प्रमुख एहनेसुइने अग्रभागें अनंताजी वछे तेसिद्धना जीवथी अनंतगुणाछे अनेसूक्ष्मनिगोद सर्वथीअनंतगुणाछे तेसूक्ष्म निगोदनोविचार कहेछे जेटला लोकाकाशना प्रदेशछे तेटला गोलाछे तेएकेक गोलामां असंख्यातानिगोदछे निगोदशब्दनो अर्थएछे जे अनंताजीवनो पिंडभूतए कशरीर तेहने निगोदकहियें तेएकेकीनिगोदमध्ये अनंताजीवछे तेअतीतकालना सर्वसमय तथाअनागतकालनासर्वसमय अनेवर्त्तमानकालनोएकसमयतेनेजेलाकरी अनंतगुणाकरियें एटला एकनिगोदमांजीवछे एटले अनंताजीवछे एसंसारीजीवए केकानाअसंख्याताप्रदेशछे अने एकेकाप्रदेशे अनंतिकर्मवर्गणालागीछे ते एकेकवर्ग णामध्येअनंतापुज्जलपरमाणुछे एमअनंतापरमाणुजीवसाथेलागाछे तेथकीअनंतगु णापुज्जलपरमाणुजीवथीरहितछुटाछे. गाथा ॥ गोलायअसंखिज्जाअसंखनिगोयउ

हवइगोलो ॥ इक्किक्कमिनिगोए अनंतजीवासुणेयवा ॥ १ ॥ अर्थ ॥ लोकमांहेअ संख्यातागोलाछे एकेकागोलामध्येअसंख्यातिनिगोदछे एकेकनिगोदमांअनंताजीवछे गाथा ॥ सत्तरससमहिआ । किरइगाणुपाणमिहुंतिखुड्डजवा ॥ सगतिससयतिहुत्त र । पाणुंपुणइगमुहुत्तंमि ॥ १ ॥ अर्थ ॥ निगोदियाजीवतेमनुष्यनाएकउसासमां सत्तरजवजाजेराकरेछे अनेसडत्रीससोतिहुंतेर. श्वासोश्वासएकमुहूर्त्तमांथाय. गाथा पणसठिसहस्सपणसय ॥ छत्तिसाइगमुहुत्तखुड्डजवा ॥ आवलियाणंदोसय ॥ छप्प न्नाएगखुड्डजवे ॥ १ ॥ अर्थ निगोदनाजीवएकमुहूर्तमां ६५५३६ जवकरे अनेनि गोदनोएकजव २५६ आवलीनोछे क्षुल्लकजवनोएप्रमाणछे ॥ गाथा ॥ अत्थिअनंता जीवा जेहिंनपत्तोतसाइपरिणामो ॥ उवज्ञंतिचयंतिय पुणोवितत्थेवतत्थेव ॥ १ ॥ अर्थ ॥ निगोदमांअनंताजीवएहवाछे जेजीवत्रसपणोपहेलाकिवारेपाम्यानथीअ नंतोकालपूर्वेगयो अनेअनंतोकालजाशे पणतेजीववारंवारतिहांजउपजेछे अने ति हांजच्यवेछे. एमएकनिगोदमांअनंताजीवछे तेनिगोदनाबेभेदछे एकव्यवहारराशीनि गोद. अनेबीजो अव्यवहारराशीनिगोद तेमांजेबादरएकेंद्रीपणो नावेंत्रसपणोपा मिनेपाछानिगोदमांजाइपडथाछे तेनिगोदियाजीवने व्यवहारराशीयाकहियें अनेजेजी वकोइपणकालेनिगोदमांथीनिकल्यानथी तेजीवअव्यवहाररासीयाकहियें अनेइहां मनुष्यपणाथीजेटलाजीवकर्मखपावीने एकसमयमांमोक्षजायछे तेटलाजीवतेजस मये अव्यवहारराशी सूक्ष्मनिगोदमांथीनिकलीनेउचांआवेछे जोदशजीवमोक्षजाय तो दशजीवनिकले कोइकवेलाएजव्यजीव उछानिकलेतो तेठेकाणेएकबेअजव्यनिकले पणव्यवहारराशीमांजीवकोइवधेघटेनही एवा निगोदनाअसंख्यातालोकमांहेजगोला ते छदिशीनाआव्यापुद्गलने आहारादिपणेलेछे तेसकलगोलाकेवाय अने लोकअंतना प्रदेशेजे निगोदनागोलारह्याछे तेनेत्रणदिशीनाआहारनीफरशनाछे माटेविकलगोला कहियें एसूक्ष्मनिगोदमां पांच थावरनासूक्ष्म जीवतेसर्वलोकमांकाजलनीकुंपलीनीपरे नखायकाव्यापीरह्याछे अनेसाधारणपणोते मात्रएकवनस्पतिमांजछे पणचारथावर मांनथी एसूक्ष्मनिगोदमांअनंतोडुःखछे तेनुंउदाहरणकहेछे सातमीनरकनोआवपो तेत्रीससागरोपमनुंछे तेत्रीससागरोपमनाजेटलासमयथाय तेटलावखततेसातमीन रकमां उत्कृष्टोतेत्रीससागरोपमनेआयुषेकोइकजीवउपजे तेटलाजव्यमांजेटलोवेदन जेवनतुंडुःखथाय तेसर्वएकठोकरियें तेथीअनंतगुणोडुःखनिगोदनाजीव एकसमयमां जोगवेछे दृष्टांत जेमकोइकमनुष्यनेसाडात्रणक्रोडलोढानीसुइनेअग्निथीतपावीने कोइक

देवतासमकालेचोने तेनेजेवेदनाथाय तेथीअनंतगुणीवेदनानिगोदमध्येछेअनेजव्यजीवनेनिगोदनुंकारण तेअज्ञानदिशाछे माटेतेहनोत्यागकरो एनिगोदनोविचारकह्यो एसवेंप्रमेयनोप्रमाताआत्मा पोतानाज्ञानगुणेकरीप्रमेयनोप्रमाणकरेएप्रमेयत्वपणोकह्यो.

५ सत्वपणो तेदव्यएकसमयमांउपजे विणशेछे अनेस्थिरपणछे उत्पादव्यंयध्रुवपणोतेहिजसत्पणो उत्पादव्ययध्रुवयुक्तसत् इतितत्वार्थवचनात् तेविस्तारथी कहिदेखाडेछे जे धर्मास्तिकायनाअसंख्याताप्रदेशछे तिहांएकप्रदेशमां अगुरुलघुअसंख्यातोछे अनेबीजाप्रदेशमांअनंतो अगुरुलघुछे त्रीजाप्रदेशमां संख्यातोअगुरुलघुछे एमअसंख्याताप्रदेशमां अगुरुलघुपर्यायघटतो वधतोरहेछे तेअगुरुलघुपर्यायचलछे तेजेप्रदेशमां असंख्यातोछे. तेप्रदेशमां अनंतोथायछे अने अनंताने ठेकाणे असंख्यातोथायछे एमलोकप्रमाणअसंख्यातप्रदेशमां सरिखोसमकालें अगुरुलघुपर्यायफिरेछे तेजेप्रदेशमांअसंख्यातोफिटीने अनंतोथायछे तेप्रदेशमांअसंख्यातपणानोविनाशछे अनेअनंतपणानोउपजवोछे अनेअगुरुलघुपणे गुणध्रुवछे एमउपजवो विणसवो अनेध्रुव एत्रणेपरिणामछे.

अधर्मास्तिकायमां पणएत्रणेपरिणाम असंख्यातप्रदेशेंसदासमयसमयमां परिणमीरह्याछे तेमांपण उपजे विणशे अनेथिररहेछे एमआकाशनाअनंताप्रदेशमां पण एकसमयेंत्रणपरिणामपरिणमेछे अनेजीवनाअसंख्याताप्रदेशछे तेमध्येपणउपजे विणशे थिररहे तथापुद्गलपरमाणुमांपणसमयसमयथायछे अने कालनोवर्त्तमानसमयफिटीनेअतीतकालथायछे तो तेसमयमां वर्त्तमानपणानोविनाशछे अनेअतीतपणानोउपजवोछे कालपणेध्रुवछे एथूलथकीउत्पादव्ययध्रुवपणोकह्यो अने वस्तुगते मूलपणे ज्ञेयनेपलटवे ज्ञाननोपणतेभासनपणेपरिणमवोथाय तेपूर्वपर्यायनाभासननोव्यय अनेअभिनवज्ञेयनापर्यायभासननोउत्पाद तथाज्ञानपणानोध्रुव एरीतेसर्वगुणना धर्मनीप्रवृत्तिरूप पर्यायनोउत्पादव्यय श्रीसिद्धभगवंतमांपणथइरह्योछे. एमजधर्मास्तिकायनाप्रदेशें जेखेत्रगतअसंख्यातापुद्गलतथाजीवने पहेलेसमय चलणसहायीपणोपरिणमतोहतो अनेबीजेसमय अनंतपरमाणु तथाअनंताजीवप्रदेशने चलणसहायीथयो तेवारें असंख्याताचलणसहायनोव्यय अनेअनंताचलणसहायनोउपजवो अनेगुणपणेध्रुव एमधर्मद्रव्यमध्ये उत्पादव्ययथयोरह्योछे तेमजअधर्मादिकद्रव्यनेविषेपणजाणवुं तथावलीकार्यकारणपणे उत्पादव्यय तथाअगुरुलघुनाचलणनोउत्पादव्यय पंचास्तिकायनेविषे कहेवुं तथाकालद्रव्यतेउपचारछे तेतुंस्वरूपसर्वउपचारथीजकहेवुं एरीते सर्वद्रव्यमांसत्पणोछे जो अगुरुलघुनोभेदन

थाय तोपणप्रदेशनोमाहोमांहेनेदकहेवोथाय तेमाटेअगुरुलघुनोनेदसर्वमांहे अने जेनोउत्पादव्ययरूपसत्पणोएकहे तेद्रव्यएकहे तथा जेनोउत्पादव्ययसत्पणो जू दोतेद्रव्यपणजूदोहे एटलेसत्केण सत्वपणो कह्यो.

६ अगुरुलघुत्वपणोकहेहे जेद्रव्यनोअगुरुलघुपर्यायहे तेछप्रकारनीहानिवृद्धिकरे तेमांछप्रकारनीवृद्धिहे १ अनंतनागवृद्धि २ असंख्यातनागवृद्धि ३ संख्यातनागवृद्धि ४ संख्यातगुणवृद्धि ५ असंख्यातगुणवृद्धि ६ अनंतगुणवृद्धि हवेछप्रकारनीहानि कहेहे १ अनंतनागहानि २ असंख्यातनागहानि ३ संख्यातनागहानि ४ संख्या तगुणहानि ५ असंख्यातगुणहानि ६ अनंतगुणहानि एरीतेछप्रकारनीवृद्धि तथा छ प्रकारनीहानि तेसर्वद्रव्यमांसदासमयसमयथयीरहीहे वृद्धितेउपजवोअनेहानितेव्य यकहियें एअगुरुलघुपणोकह्यो नहीगुरुतथानहीलघु ते अगुरुलघुस्वनावकहियें एसर्वद्रव्यमध्येहे तेश्रीनगवतीसूत्रें सवदवा सवगुणा सवपएसा सवपज्जवा सवद्धा अगुरुलहुआए अगुरुलघुस्वनावनेआवरणनथी तथाआत्मामध्येजेअगुरुलघुगुण तेआत्मानासर्वप्रदेशेंक्षायकनावथये सर्वगुणसामान्यपणेपरिणमे पणअधिकाउंछा परिणमेनही तेअगुरुलघुगुणनुंप्रवर्तनजाणवुं तेअगुरुलघुगुणने गोत्रकर्म रोकेहे एअगुरुलघुस्वनावतेसर्वद्रव्यमांहे.

हवेगुणनीनावनाकहेहे तिहांजेटलाछएद्रव्यमां सरिखागुणहे तेसामान्यगुणकहि यें अनेजेगुणएकद्रव्यमांहे अनेबीजाद्रव्यमांनथी तेविशेषगुणकहियें जेगुणकोइक द्रव्यमांहे अनेकोइकद्रव्यमांनथी तेसाधारणअसाधारणगुणकहियें एमएछद्रव्यमां अनंतगुण अनंतपर्याय अनंतस्वनावसदाशाश्वताहे जेमश्रीकेवलीनगवंतेंपरूप्या ते सर्वजेरीतेंहे तेंरीतेंसद्दहणापूर्वकयथार्थउपयोगथी श्रुतज्ञानादिकथीयथार्थपणेजाण वासद्दहवा एनिश्चेंज्ञानतेमोक्षनुंकारणहे जेजीव ज्ञानपाम्यो तेजीवविरतिकरेहे तेचा रित्रकहियें ज्ञाननुंफल विरतिपणोहे तेमोक्षनुंतत्कालकारणहे.

हवेनिश्चेंचारित्र अनेव्यवहारचारित्रनोविचारकहेहे तेमांप्रथमव्यवहारचारित्रते जेप्राणातिपातविरमण प्रमुख पंचमहाव्रतरूप तेसर्वविरतिकहियेंअने स्थूलप्राणाति पात विरमणव्रतादिकश्रावकना बारव्रत तेदेशविरतिचारित्रजाणवुं एव्यवहारचारित्र सुखनुंकारणहे एवीकरणीरूपश्रावकनाबारव्रत अनेयतिनापांचमहाव्रत तेअनव्यनेप णआवेतेथी देवतानीगतिपामे पणसकामनिर्ज्जरानुं कारणनथाय इहांकोइ पुढेके मो क्षनुंकारणनथीतो एटलुंकष्ट शावास्तेकरियें तेने उत्तर जे त्यागबुद्धी. निश्चेंज्ञानसहि

तचारित्र तेमोक्षनुंकारणछे माटेनिश्चेंचारित्रसहित व्यवहारचारित्रपालवुं तेनिश्चें चारित्रकहेछे शरीर इंद्रिय विषयकषाय योग एसर्वेपरवस्तुजाणीछांडवा तथाआहार तेपुद्गलवस्तुजाणीछांडवो आत्माअणाहारीछे तेमाटेमुजने आहारकरवोघटेनही आहारतेपुद्गलछे आत्माअपुद्गलीछे तेमाटेत्यागकरवो तद्रूपजेतप तेतप निश्चेंचारित्र मांजाणवुं चारित्रकहेताचंचलतारहति थिरतानापरिणाम अनेआत्मस्वरूपनेविषे एकत्वपणेरमण तन्मयतास्वरूपविश्रांति तत्वानुभवतेचारित्रकहियें तेचारित्रनाबेभे दछे एकदेशविरति बीजीसर्वविरति तिहांदेशविरतिके० श्रावकनाबारव्रत ते बारव्रतनि श्चेंतथा व्यवहारथीकहेछे.

१ प्राणातिपातविरमणव्रत ते परजीवने आपणाजीवसरिखोजाणी सर्वेजीवनी रक्षाकरे तेव्यवहारदयाथयी माटे व्यवहारप्राणातिपात विरमणव्रतजाणवुं अनेजे आपणोजीव कर्मवशपडयोदुःखीथायछे तेआपणाजीवनेकर्मबंधनथीमूकाववुं अने आत्मगुणरक्षाकरीगुणवृद्धिकरवी तेस्वदया बंधहेतुपरिणतिनिवारी स्वरूपगुणनेप्र गटपणेकरवा जेगुणप्रगटथयोतेराखवो एटलेज्ञानेकरी मिथ्यात्वटाली आपणाजी वनेनिर्मलकरेतेनिश्चेंथी प्राणातिपात विरमणव्रतकहियें.

२ मृषावादविरमणव्रतकहेछे जूठुंवचनबिलकुलबोलवुंनही ते व्यवहारमृषावा दविरमणव्रत अने जे परपुद्गलादिकवस्तुनेआपणीकहेवी तेमृषावादवचनछे अनेजीव नेअजीवकहे तथाअजीवनेजीवकहे इत्यादिकअज्ञानभाव ते सर्वेनिश्चेंमृषावादछे अथवासिद्धांतनाअर्थ खोटाकहे एमृषावादजेणेछांड्यो तेनिश्चेंमृषावादविरमणव्रत कहियें एटलेबीजाअदत्तादानादिक व्रतजोभांजे तोतेनोमात्रचारित्रभंगथाय पणज्ञान दर्शननोभंगनथाय अनेजेणेनिश्चेंमृषावादनो भंगकर्यो तेणे समकेततथाज्ञानअने चारित्रएत्रणेनोभंगकर्यो तथाआगममां एमकह्युंछेजे एकसाधुयेंचोथोव्रतभंगकर्यो अ नेएकसाधुयें बीजोमृषावादव्रतभंगकर्यो तोजेणेचोथोव्रतभंगकर्यो तेआलोवणलेइशु द्धथायपणजेसिद्धांतनाअर्थनोमृषाउपदेशआपे तेआलोवणलीधे पणशुद्धथायनही.

३ अदत्तादानविरमणव्रतकहेछे जेपारकुं धन वस्तु छुपावे चोरीकरे ठगबाजीक रीलीये तेचोरीछे एटलेपारकीवस्तुधणीनादिधाविनालेवीनही एव्यवहारथी अदत्ता दानविरमणव्रतजाणवुं अने जेपांचइंद्रियना त्रेवीसविषय आठकर्मवर्गणाइत्यादिक परवस्तु लेवीनही तथा तेनीवांछानकरवी तेआत्मानेअग्राह्यछे माटे तेनिश्चेंथीअदत्ता दानविरमणव्रतकहियें इहांकोइपुछेजे विषयनी अनेकर्मनीवांछाकोणकरेछे तेनेउ त्तरजे पुण्यनेभलोलेवायोग्यछे ते जीवकर्मनीवांछाकरेछे जेपुण्यना ४२ भेदछे तेचार

कर्मनीशुभप्रकृतिछे एटलेजेव्यवहार अदत्तादानतोनथीलेता पणअंतरंगपुण्यादिकनी वांछाछे तेनेनिश्चेंअदत्तादानलागेछे.

४ मैथुनव्रतकहेछे जेपुरुषपरस्त्रीनोपरिहारकरे तथा जेस्त्रीपुरुषनोपरिहारकरे इहांसाधुनेस्त्रीनोसर्वथात्यागछे अनेगृहस्थनेपरणेलीस्त्रीमोकलीछे परस्त्रीनोपच्चखाण छे.तेव्यवहारथीमैथुननुंविरमणकहियें अने जेविषयनाअभिलाषनुं तथाममतातृष्णानोत्याग परभाववर्णादिक परद्रव्यनास्वामित्वादिक तेनोअभोगीपणो आत्मास्वगुणज्ञानादिकनोभोगीछे अनेएपुद्गलखंध ते अनंताजीवनीएठछेतेनेकेमभोगवे एरीते त्यागतेनिश्चेंथी मैथुन विरमणकहियें जेणेबाह्यविषयछांड्योछे अनेअंतरंगलालचछुटीनथीतोतेहनेतेमैथुननाकर्मलागेछे.

५ परिग्रहपरिमाणव्रतकहेछे परिग्रह धन धान्य दास दासी चौपद जमीन वस्त्र आभरणनोत्याग तेमांसाधुनेतोसर्वथापरिग्रहनोत्यागछे तथाश्रावकनेइछापरिमाणछे जेटलीइछाहोय तेटलो परिग्रहमोकलोराखे बीजानीव्रतिकरे एव्यवहारथीकह्यो अने जेकर्म्मेरागद्वेष अज्ञानद्रव्यज्ञानावरणीप्रमुखआठकर्म्म अनेशरीर इंद्रियनो परिहार एटलेकर्मने परजाणीछांडवो तेनिश्चेंथीपरिग्रहनोत्याग एटलेपरवस्तुनीमूर्छाछांडवी जेणेमूर्छाछोडी तेणेपरिग्रहछोड्योजछे एमजाणवुं.

६ दिशिपरिमाणव्रतकहेछे तिहांतिरछिचारदिशी पांचमीअधो छठीउर्ध्व एछदिशीनाखेत्रनो मानकरीमोकलोराखे तेव्यवहारथीदिशीपरिमाणकहियें अनेचारगतिमां भटकवुंतेकर्म्मनुंफलछे एमजाणी तेथीउदासीपणो अनेसिद्धअवस्थानुंउपादेयपणो ते निश्चेंदिशिपरिमाणव्रतकहियें.

७ भोगोपभोग परिमाणव्रतकहेछे जेएकवारभोगववुंतेभोग अनेजेवारंवार भोगववुं तेउपभोग तेनोपरिमाणकरे ते व्यवहारभोगोपभोगव्रतकहियें अने जेव्यवहारनयें कर्म्मनोकर्त्ताभोक्ताजीवछे अने निश्चेंनयतोकर्मनोकर्त्ता कर्म्मछे आत्माअनादिनोपरभावभोगीथयोछे तेथीपरभावग्राहक अनेपरभावरक्तकथयो एटले आत्मानी ज्ञायकता ग्राहकता भोग्यता रक्तता बीगडे कर्त्तापणोबीगड्यो तेवारेंपरभावकर्त्ताथयो तेपणपरभावरंगीपणें आठकर्म्मनोकर्त्ताथयोछे पणसत्तायेंतोस्वभावनोकर्त्ताछे पणउपगरण अवराणा तेथीस्वकार्यकरीशकतोनथी विभावनेकरेछे अज्ञानपणे जीवनोउपयोगभिल्योछे पणन्यारोछे पोताना ज्ञानादिकगुणनोकर्त्ताभोक्ताछे एहवोस्वरूपानुयायीपरिणामते निश्चें भोगोपभोगव्रत त्यागजाणवो.

८ अनर्थदंडविरमणव्रतकहेछे जेकामविनाजीवनोविधकरवो पारकावास्ते आरंभ प्रमुखकरवानी आज्ञाप्रमुखआपवी तेव्यवहारअनर्थदंडअनेजेशुभाशुभकर्म्मतेमिथ्यात्व अविरति कषाय योगथी बंधायछे तेनेजीवआपणाकरीजाणे एनिश्चेथी अनर्थदंड.

९ सामायकव्रतकहेछे जे मनवचनकायाना आरंभटालीने तेनेनिरारंभपणेवर्त्तावे तेव्यवहार सामायकजाणवो अनेजेजीवना ज्ञान दर्शन चारित्रगुणविचारे सर्व जीवनागुणनीसत्ता एकसमानजाणी सर्वजीवसाथे समतापरिणामेंवर्त्ते ते निश्चेथी समतारूपसामायक कहियें.

१० देशावगाशीकव्रतकहेछे जेमनवचनकायानायोग एकठोरकरी एकस्थानकेंबेसीधर्मध्यानकरवो तेव्यवहारदेशावगाशीककहियें अनेजेश्रुतज्ञानेकरीछद्रव्य उलखीनेपांचद्रव्यनोत्यागकरे अनेज्ञानवंतजीवनेध्यावे तेनिश्चे देशावगाशीकव्रतकहियें.

११ पोशहव्रतकहेछे जेचारपहोर अथवाआठपहोरसुधीसमतापरिणामे सावद्यजोगनी निरारंभपणे सिझायध्यानमांप्रवर्त्ते तेव्यवहारपोशहकहियें अनेपोतानाजीवनेज्ञानध्यानथीपोषीनेपुष्टकरे तेनिश्चेथीपोशहव्रतकहियें जीवनेपोतानास्वगुणेकरी पोषीजेतेने पोशहकहियें.

१२ अतिथिसंविभागव्रतकहेछे जेपोशहनेपारणे अथवा सदासर्वदासाधुने तथाजैनधर्मिश्रावकने पोतानीशक्तिप्रमाणे दानदेवो तेव्यवहारअतिथिसंविभागकहियें अने पोताना जीवने अथवा शिष्यनेज्ञाननुंदानते भणवो भणाववो सुणवो सुणाववो तेनिश्चेथी अतिथिसंविभागव्रतकहियें एटले श्रावकनाबारव्रतकह्या ते समकितसहित जेनिश्चेतथाव्यवहारथीबारव्रतधारे तेजीवनेंपांचमेगुणठाणे देशविरति श्रावककहियें देशके० देशथकी थोडीशी व्रतिपणोछेमाटे अनेयतिनेसर्वथीव्रतिपणोछे तेथीपांचमहाव्रतजछे साधुनेपांचमहाव्रतमांसर्वव्रतआव्या एनिश्चेत्यागरूपज्ञान ध्यान संवरनिर्ज्जरामां थिरतानापरिणाम तेनिश्चेचारित्रना एकउत्सर्ग बीजोअपवाद एबेमार्गछे तेमांजेउत्कृष्ट तीक्ष्णपरिणाम तेउत्सर्ग अनेजेउत्सर्गेराखवाने कारणरूप तेअपवाद उक्तंच संवरणंमिअसुद्धं डुन्नविगिन्हतदेतयाणहियं ॥ आउरदिठ्ठंतेणंते चेवहीयंअसंघरणे॥१॥ एटले जिहांसुधीसाधकनावने बाधकनपडे तेहांसीम जेहनीनाकही तेआदरवोनही अनेजोसाधकपरिणाम रहेतानदीठा तेवारेंजेहनीनातें आचरे तेनेअपवादमार्गकहियें जेआत्मगुणराखवाने करवो तेअपवाद अनेगुणीने रागे भक्तियेंकरवो तेप्रशस्त एवेतोसाधनछे अनेजेउदैकनेअखमवाथीकरवुं तेअति

चारछे तथासवलो अने उदैकमाटे अशक्तपणेकरवुं तेपडिवाइछे तेमध्ये अपवाद मार्गेते परिणामदृढरहे तेमआज्ञायेंकरवो.

हवेचारध्यानकहेछे १ आर्त्तध्यान २रौद्रध्यान ३ धर्मध्यान ४ शुक्लध्यान तिहां पेहेलाबेध्यानतेअशुनकहियें अनेपाछलाबेध्यानतेशुद्धछे तिहांमनमां आह्टदोह्ट ना परिणामते आर्त्तध्यानकहियें तेनाचारपायाछे १ जाइ मित्र सज्जन माता पिता स्त्री पुंत्र धन प्रमुखइष्टवस्तुनोवियोगथयाथी विलापकरे तेपेलो इष्टवियोगनामा आर्त्त ध्यान तथा २अनिष्टजेदुंभाडुःखनाकारण डुसमन दरिद्रीपणो तथा कुपुत्रादिमलवाथी मनमां डुःखचिंताउपजे तेअनिष्टसंयोग नामाआर्त्तध्यान ३ शरीरमांरोगउपनाथका डुःखकरे चिंताघणीकरे तेरोगचिंतानामाआर्त्तध्यान ४ मनमांआगलनावखतनोसो चकरे जेआवर्षमां आकामकरछुं आवतावर्षमांअमुककामकरछुंतोअमुकलाभथशे अथवा दान शील तपनुंफलमांगे जे आनवमांतपकीधोछे माटे आवतेनवें इंद्र चक्रवर्त्तिनी पदवीमले एहवी आगलानवनी वांछाछे तेअग्रशोच आर्त्तध्याननो चोथो पायोजाणवो एआर्त्तध्याननाचारनेदकह्या एतिर्यंचगतिनाकारणछे एध्याननापरिणा मतेपांचमांअथवाछठागुणठाणासुधीहोय.

२ जेकठोरपरिणामनुंचिंतवनतेरौद्रध्यान तेनाचारनेदछे १ जीवहिंसाकरीने हर षपामे अथवा बीजोकोइहिंसाकरतोहोय तेनेदेखी खुशीथाय अथवा शुद्धनी अनु मोदनाकरे तेहिंसानुबंधी रौद्रध्यान २ जुठुं बोलीनेमनमां हरषपामे केंजुओमें के वोकपटकेलव्यो माराजूठापणानी खबरकोइनेपडीनही एवोमृषावादरूप परिणाम तेमृषानुं बंधीरौद्रध्यान ३ चोरीकरी अथवाठगाइकरी मनमां खुशीथाय केमारा जेवो जोरावरकोणछे ढुंपारकोमालखाउछुं एवोपरिणामते चोरानुबंधि रौद्रध्यान ४ परिग्रह धनधान्य परिवार घणोवधवानी लालचहोय तेधनअथवा कुटुंबनेमाटे गमेतेवुंपापकरे अथवा घणोपरिग्रहमिल्याथीअहंकारकरे तेपरिग्रह रक्षणानुबंधी रौद्रध्यान एरौद्रध्याननाचारनेदकह्या एध्यान नरकगतिपमाडवानो कारणछे महा अशुनकर्मनुं कारणछे एपांचमां गुणठाणासुधीछेअने छठेगुणठाणेपण एकहिंसानु बंधी रौद्रध्याननापरिणाम कोइकजीवनेहोय.

हवेधर्मध्यानकहेछे जेव्यवहारक्रियारूप कारणतेधर्म तथाश्रुतज्ञान अनेचारित्र एउपादानपणेसाधनधर्म तथारत्नत्रयी नेदपणे तेउपादानशुद्धव्यवहार उत्सर्गा नुयायी ते अपवादधर्मजाणवो अने अनेदरत्नत्रयी तेसाधनशुद्ध निश्चेनयें उत्सर्ग धर्म अने धम्मोवत्थुसहावो जेवस्तुनोसत्तागत शुद्धपरिणामिक स्वगुणप्रवृत्ति कर्त्री

दिक अनंतानंदरूप सिद्धावस्थायेंरह्यो तेएवंभूत उत्सर्गेउपादान शुद्धधर्म तेधर्मेतुं भासन रमण एकाग्रतापणे चिंतन तन्मयतानो उपयोग एकत्वनोचिंतववो तेध र्मध्यानकहियें तेनापायाचारछे तेकहेछे.

१ आज्ञाविचयधर्मध्यानते जेवीतरागदेवनीआज्ञा साचीकरीसदहे एटलेभगवंते छद्रव्यनुंस्वरूप नयप्रमाणे निक्षेपासहीत सिद्धस्वरूप निगोदस्वरूप जेमकह्या तेम सदहे वीतरागनीआज्ञा नित्यअनित्य स्याद्वादपणे निश्चेंव्यवहारपणे माने सदहे ते आज्ञाप्रमाणे यथार्थउपयोग भासनथयो तेनेहर्षेंकरी तेउपयोगमध्ये निरधार भा सन रमण अनुभवता एकता तन्मयपणो तेआज्ञाविचयधर्मध्यानकहियें.

२ अपायविचय धर्मध्यान तेजीवमां अशुद्धपणे कर्मनायोगथी संसारीअवस्था मां अनेक अपायके० दूषणछे तेअज्ञान राग द्वेष कषाय आश्रव एमारानथी हुं एथकीन्यारोछुं हुंअनंतज्ञान दर्शन चारित्र वीर्य मयी शुद्ध बुद्ध अविनाशीछुं अज अनादि अनंत अक्षय अक्षर अनक्षर अचल अकल अमल अगम्य अनमी अरू पी अकर्मा अबंधक अनुदय अनुदीरक अयोगी अभोगी अरोगी अभेदी अवेदी अछेदी अखेदी अकषायी असखाइ अलेशी अशरीरी अणाहारी अव्याबाध अनवगा ही अगुरुलघुपरिणामी अतेंद्री अप्राणी अयोनी असंसारी अमर अपर अपरंप र अव्यापी अनाश्रित अकंप अविरुद्ध अनाश्रव अलख अशोकी असंगी अनार क लोकालोकज्ञायक एवो शुद्धचिदानंद मारोजीवछे एहवो एकाग्रतारूप ध्यानते अपायविचयधर्मध्यानजाणवो.

३ विपाकविचयधर्मध्यानकहेछे जे एहवोजीवछे तोपण कर्मवशेंदुःखीछे तेकर्म नोविपाकचिंतवे जे जीवनोज्ञानगुण तेज्ञानावरणीकर्मेंदाब्योछे अनेदर्शनावरणीक र्मेंदर्शनगुणदाब्योछे एमआठकर्मे जीवना आठगुणदाब्याछे एटलेआसंसारमांभम ताथका जीवने जेसुखदुःखछे तेसर्वकर्मनाकीधाछे माटेसुखउपनेराचवुंनही अने दुःखउपने दिलगीरथवुंनही कर्मस्वरूपनीप्रकृति स्थिति रस अनेप्रदेशनो बंध उद य उदीरणा तथासत्ता चिंतववानुं एकाग्रतापरिणाम तेविपाकविचय धर्मध्यान.

४ संस्थानविचयधर्मध्यानकहेछे ते चउदराजमानलोकनुं स्वरूपविचारे जेएलो कतेचउदराजऊंचोछे तेमध्ये सातराजअधोलोकछे विचमां अढारसोयोजन मनुष्य खेत्र त्रिछोलोकछे तेऊपर कांइकऊणो सातराज ऊर्ध्वलोकछे तेमांसर्व वैमानिक देवता वसेछे अनेऊपरें सिद्धशिलासिद्धखेत्रछे एरीतेंलोकनुंप्रमाणछे एलोकनुंसंस्थान वैशाख छे अनंतोकाल आपणाजीवें संसारमां भमता सर्वलोकने जन्ममरणकरी फरस्यो

छे एवुंजेलोकस्वरूप तथालोकनेविषे पंचास्तिकायनुं अवस्थान तथापरिणमन द्र व्यमध्ये गुणपर्यायनुं अवस्थान तेनो जे एकाग्रतायें तन्मयचिंतवणपरिणाम एह वुंजेध्यान तेसंस्थानविचयधर्मध्यानकहियें एधर्मध्यानना चारपायाकह्या एधर्मध्या न चोथागुणगणाथी मांमीने सातमां गुणगणासुधीछे.

हवेशुक्लध्यानकहेछे शुक्लके० निर्मलशुद्ध परआलंबनविना आत्मानास्वरूपने तन्मयपणेध्यावे एहवुंध्यान तेनेशुक्लध्यानकहियें तेहनापायाचारछे तेकहेछे.

१ पृथक्त्ववितर्कसप्रविचार ते पृथक्त्वके० जीवथी अजीवजूदाकरवा स्वभा व विभाव तेनेजूदापृथक्पणे विहचणकरवी स्वरूपनेविषेपण द्रव्य तथापर्यायनो पृथक्पणेध्यानकरी पर्यायतेगुणमां सक्रमावे अनेगुणते पर्यायमांसक्रमणकरे एरी तेस्वधर्मनेविषे धर्मांतरभेद तेपृथक्त्वकहियें अनेतेनो वितर्क ते जेश्रुतज्ञाने स्थितउ पयोग अनेसप्रविचार ते सविकल्पोपयोग एटलेएकचिंतव्यापछि बीजोचिंतववो तेने विचारकहियें एटलेनिर्मलविकल्पसहित पोतानीसत्तानेध्यावे तेपृथक्त्ववितर्क सप्रवि चार पेहेलो पायो एआठमांगुणगणाथीमांमी इग्यारमां गुणगणासुधीछे.

२ एकत्ववितर्क अप्रविचारनामा बीजोपायोकहेछे जेजीव आपणागुणपर्याय नीएकताकरी ध्यावे तेआवीरीतेके जीवनागुणपर्याय अने जीवते एकजछे अ ने माहारोजीव सिद्धस्वरूपएकजछे एवोएकत्वस्वरूप तन्मयपणेअनंता आत्म धर्मनोएकत्वपणेध्यान वितर्कके० श्रुतज्ञानावलंबीपणे अनेअप्रविचारके० विक ल्परहित दर्शनज्ञाननो समयांतरें कारणताविना रत्नत्रयीनो एकसमयी कारणकार्य तापणेजेध्यान वीर्यउपयोगनीएकाग्रता तेएकत्ववितर्क अप्रविचारजाणवो एपायो बारमांगुणगणेध्यावे एबेहुपायामां श्रुतज्ञानावलंबनीपणोछे पण अवधि मनपर्यव ज्ञानोपयोगेंवर्त्ततोजीव कोइध्यानकरीसकेनही एबेज्ञान परानुयायीछे माटे. एध्यान थी घनघातीया चारकर्मखपावे निर्मलकेवलज्ञानपामे पछेतेरमेंगुणगणे ध्यानंतरी का पणेछे तेरमानाअंते अनेचउदमे गुणगणे एबेपायाध्यावे.

३ सूक्ष्मक्रियाअप्रतिपातिपायोकहेछे तेसूक्ष्म मन वचन कायानायोगरुंधे शैलेशी करणकरी अयोगीथाय तेजेअप्रतिपातिनिर्मलवीर्य अचलतारूपपरिणाम तेसूक्ष्मक्रि या अप्रतिपातिध्यानजाणवुं इहांसत्तायें ८५ प्रकृतिरहीहती तेमध्ये ७२ खपावे.

४ उछिन्नक्रियानुंवृत्तिपायोकहेछे जेयोगनिरुंधकीधापछे तेरप्रकृतिखपावे अकर्मी थाय सर्वक्रियाथीरहितथाय तेसमुछिन्नक्रियानिवृत्ति शुक्लध्यानकहियें एध्यानध्याव ता शेषदलखरण रूपक्रियाउछेदे अवगाहनादेहमानमांथी त्रीजोभागघटाडे शरीरमू

की इहांथी सातराजऊपर लोकनेअंतेजाय सिद्धथाय इहांशिष्यपूछेजे चौदमेंगुणठा णेतो अक्रियछे तोसातराजऊंचोगयो एक्रियाकेमकरेछे तेनेउत्तर जे सिद्धतोअक्रि यछे परंतु पूर्वप्रेरणायें तुंबीनेदृष्टांते जीवमांचालवानोगुणछे धर्मास्तिकायमध्ये प्रेर णागुणछे तेथीकर्मरहितजीव मोक्षेजता लोकनेअंतेजाथीरहे इहांकोइपुछेजे आगल ऊंचोअलोकछे तिहांकिमजातोनथी तेनेउत्तर जेआगलधर्मास्तिकायनथी माटेन जाय वलीकोइपुछेजे तोअधोगतियें अथवातिरच्छीगतियें केमनथीजातो तेनेउत्तर जे कर्मनाभारथीरहितथयो हलुवोथयो माटेनिचो तथाफावो जिमणोनजाय कार णके प्रेरककोइनथी तथाकंपेनही केमकेअक्रियछेमाटे तथाकोइपुछेजे सिद्धनेकर्मके मलागतानथी तेनेकेहेछे जे कर्मतोजीवनेअज्ञानथी तथायोगथीलागेछे तेसिद्धना जीवने अज्ञान तथायोगनथी माटेकर्मलागेनही एचारध्याननोअधिकारकह्यो.

हवेवलीबीजाचारध्यानकहेछे १ पदस्थ २ पिंमस्थ ३ रूपस्थ ४ रूपातीत तेमां पहेलुं पदस्थध्यानकहेछे जेअरिहंतादिक पांचपरमेष्ठीना गुणसंभारे तेनोचित्तमां ध्यानकरे तेपदस्थध्यान. २ पिंडके० शरीरमांरह्योजे आपणोजीव तेमां अरिहंत सि द्ध आचार्य उपाध्याय अनेसाधुपणानागुण सर्वेछे एहवोजेध्यानतेपिंडस्थध्यान अथ वा गुणीनागुणमध्ये एकलताउपयोगकरवोतेपिंडस्थध्यान. ३ रूपमांरह्योथको पण एमारोजीव अरूपीअनंतगुणीछे जेवस्तुनोस्वरूप अतिशयावलंबीथयापछे आत्मानुं रूपएकतापणो एहवोजेध्यान तेरूपस्थध्यान एत्रणध्यानधर्मध्यानमांगणवा. ४ निरं जन निर्मल संकल्पविकल्परहित अभेद एकशुद्धसत्तारूप चिदानंद तत्वामृत असंग अखंड अनंतगुणपर्यायरूप आत्मस्वरूपनुंध्यानते रूपातीतध्यानजाणवुं इहांमार्ग णागुणठाणा नयप्रमाण मतिआदिकज्ञान क्षयोपशमभाव सर्वछांमवायोग्यथया एक सिद्धनामूलगुणनेध्यावे ते रूपातीतध्यानजाणवो एटलेमोक्षनुंकारणजेध्यान तेकह्युं.

हवेभावनाकहेछे तेमांधर्मध्याननी चारभावनाकहेछे १ मैत्रीभावनाते सर्वेजीव साथें मित्रतानोभावचिंतववो सर्वनोभलोचाहवुं पणकोइनो माठोचिंतववोनही स र्वजीवऊपरहितबुद्धिराखवीते मैत्रीभावना २ गुणवंतअने ज्ञानादिकगुणऊपरें रागते बीजीप्रमोदभावना ३ जेधर्मवंतऊपर राग अनेमिथ्यात्वीऊपर रागनही तेमद्वेषपण नही कारणके हिंसकउपरेंपण उत्तमजीवने करुणाऊपजे जोउपदेशथकी सारामा र्गेआवेतो तेने शुद्धमार्गेआणवो कदाचितमार्गेनआवे तोपणद्वेषनराखवो केम के ते अजाणछे एमसमजवुं एहवाजेपरिणाम तेमध्यस्थभावना ४ सर्वजीवने पोता नेतुल्यजाणी दयापाले कोइनेदणेनही तथाजेदुःखी अथवाधर्महीन तेहनाऊपरकरु

ण तेनाडुःखटालवानोपरिणाम तथाधर्महीन जीवदेखीने एवोचिंतवेजे एजीवकिवा रें धर्मपामशे यथार्थआत्मसाधन पामीस्वरूपधर्मने किवारेंअवलंबशे एवो परिणा मते चोथी करुणाके० दयाभावना एचारभावनाकही.

१ हवेबारभावनाकहेछे शरीर कुटुंब धन परिवार सर्वविनाशीछे जीवनोमूलधर्म अविनाशीछे एम चिंतववुंतेपहेलीअनित्यभावना २ संसारमां मरणसमये जीवनेश रणराखनारकोइनथी एकधर्मनोशरणछे एवुंचिंतववुंते बीजीअशरणभावना ३ मा राजीवेसंसारमां भमतां सर्वभवकीधाछे एसंसारथी हुंकेवारेंछुटीश एसंसारमारोनथी हुंमोक्षमयीछुं एमविचारवुं तेत्रीजीसंसारभावना ४ एमाहरोजीवएकलोछे एकलो आव्योएकलोजशे पोतानाकरेलुंकर्म एकलोभोगवशे एमचिंतववुंते चोथी एकत्वभा वना ५ आसंसारमां कोइकोइनोनथी एमचिंतववुंतेपांचमीअन्यत्वभावना ६ आश रीर अपवित्र मलमूत्रनीखाणछे रोगजराथीभर्योछे एशरीरथीहुं न्यारोछुं एमचिंतववो ते छठीअशुचिभावना ७ रागद्वेषअज्ञान मिथ्यात्वप्रमुख सर्वआश्रवछे एमचिंतववुं तेसातमी आश्रवभावना ८ ज्ञानध्यानमां वर्त्ततोजीव नवाकर्मबांधेनही ते आठमी संवरभावना ९ ज्ञानसहित क्रियातेनिर्जरानुंकारणछे तेनवमीनिर्जराभावना १० चउदराजलोकनुं स्वरूपविचारवुंते दशमी लोकस्वरूप भावना ११ संसारमांभमता जीवने समकितज्ञाननीप्राप्तिपामवीदुर्लभछे अथवा समकेतपाम्योपण चारित्र सर्व विरतिपरिणामरूपधर्म पामवोदुर्लभछे तेइग्यारमी बोधदुर्लभभावना.

१२ धर्मनाकहेणहारगुरु तथाशुद्धआगमनु सांभलवुं एहवीजोगवाइ मलविदो हेलीछे तेबारमीधर्मदुर्लभभावना एटलेबारभावनाकही एचारित्रनुंस्वरूप संपूर्णकह्युं.

एवोसमकितसहित ज्ञानचारित्र तेमोक्षनुंकारणछे तेनाउपर भव्यप्राणीयें विशेषें उद्यमकरवो अनेजोतेवुं ज्ञानचारित्रनहीपले तोपण श्रेणीकराजानीपेरें सद्दहणा शुद्धराखजो जोसमकेतशुद्धछे तोमोक्षनजीकछे समकेतविना ज्ञानध्यान क्रियासर्व निःफलछे एमआगममांकह्योछे ॥ गाथा ॥ जंसक्केतंकिरइ जंचनसक्केइतहयस द्दहइ ॥ सद्दहमाणोजीवो पावइअयरामरंठाणं ॥ १ ॥ अर्थ ॥ रेजीवतुंकरीशके तोकर अनेजोनकरीशके तोपण जेवोवीतरागेंधर्मकह्यो तेरीतेसद्दहजे सद्दहणाशुद्ध राखनारजीव अजरामर स्थानक तेमोक्षपदवीपामे.

हवेसमकितनो मार्गकहेछे १ जीव २ अजीव ३ पुण्य ४ पाप ५ आश्रव ६ संवर ७ निर्जरा ८ बंध ९ मोक्ष एनवतत्वछे तेमांमोक्षनुंकारणजीवछे अनेसंवर तथानिर्जरा एबेगुणछे एटले जीव संवर निर्जरा मोक्ष एचारउपादेयछे अनेबीजा

पांचहेयछे एहवो परिणामतेने समकेतज्ञानकहियें तेसमकेतज्ञाननजोजथाय तिहां अनुयोगद्वारमांकह्योछे ॥ गाथा ॥ नायम्मिगिन्हियव्वे अगिन्हियव्वेअइअत्थ म्मि ॥ जइयव्वमेवइयजो सोउवएसोनउंताम ॥ १ ॥ अर्थ ॥ ज्ञानथीद्रव्यजा णीने लेवायोग्यहोयतेले अनेछांडवायोग्यछांडे एवोजेउपदेश तेनयउपदेशजाणवो हवेसमकेतनी दशरुचिकहेछे.

१ निसर्गरुचि तेनिश्चयनयकरी जीवादिनवतत्वजाणे आश्रवत्यागे संवरआदरे वीतरागनाकह्याभाव जेद्रव्य तेद्रव्य खेत्र काल भावसहितजाणे नामादिचारनि क्षेपा पोतानी बुद्धीथीजाणे सद्दहे वीतरागनाभाष्याभाव तेसत्यछे एवीसद्दहणाहोय

२ उपदेशरुचि नवतत्व तथाद्रव्यने गुरुउपदेशथीजाणीसद्दहेते उपदेशरुचि

३ आज्ञारुचि ते रागद्वेषमोहजेमनागयाछे अज्ञानमिटयुंछे एहवाअरिहंतदेव तेणेजे आज्ञाकही तेनेमानेसद्दहे तेआज्ञारुचि.

४ सूत्ररुचि ते १ आचारांग २ सुयगडांग ३ ठाणांग ४ समवायांग ५ भगवती ६ ज्ञाताधर्मकथा ७ उपासकदशांग ८ अंतगडदशांग ९ अनुत्तरोववाइदशांग १० प्रश्नव्याकरण ११ विपाक एइग्यारअंग तथा बारमुंअंगदृष्टीवाद जेमांचउदपूर्वह ता तेहमणाविछेदगयाछे तथा १ उववाइ २ रायपश्रेणी ३ जीवाभिगम ४ पन्नव णा ५ जंबुद्वीपपन्नति ६ चंदपन्नति ७ सुरपन्नति ८ कप्पीआ ९ कप्पवडिंसिया १० पु प्फिआ ११ पुप्फचुलीआ १२ वन्हिदिशा एबारउपांगजाणवा अने १ व्यवहारसूत्र २ बृहत्कल्प ३ दशाश्रुतस्कंध ४ निशीथ ५ महानिशीथ ६ जितकल्प एछेद ग्रंथ तथा १ चौसरण २ संथारापयन्नो ३ तंडुलवेयालीया ४ चंदाविजय ५ गणि विजय ६ देविंदथुओ ७ वीरथुओ ८ गछाचार ९ जोतिकरंड १० आउःपच्चखाण एदशपचन्नानानाम तथा १ आवश्यक २ दशवैकालिक ३ उत्तराध्ययन ४ उघनिर्यु क्ति एचारमूलसूत्र तथा १ नंदि २ अनुयोगद्वार एपस्तालीसआगम तेमूलसूत्र त था २ निर्युक्ति ३ भाष्य ४ चूर्णि ५ टीका एपंचांगीनावचन जेजीवमाने तथाआ गमसांभलवानी तथा भणवानीजेनेघणीचाहनाहोय तेसूत्ररुचिजाणवी.

५ जेजीवगुरुमुखथी एकपदनोअर्थसांभलीने अनेकपदसद्दहे ते बीजरुची.

६ अभिगमरुचि ते जेसूत्रसिद्धांत अर्थसहितजाणे अनेअर्थविचार सांभलवानी घणीचाहनाहोय तेअभिगमरुचि.

७ जे द्रव्यनागुणपर्यायने चारप्रमाण तथासातनये करीजाणे ते विस्ताररुचि.

८ क्रियारुचि ते दर्शन ज्ञान चारित्र तप विनय सुमति गुप्तिबाह्यक्रिया सहित आत्मधर्मसाथे जेनेरुचिथणीहोय तेक्रियारुचि.

९ संक्षेपरुचि ते जे अर्थनेज्ञानमां थोडोकहेथके घणो जाणीने कुमतिमां पडेनही जिनमतमांप्रतितमाने तेसंक्षेपरुचि.

१० जेपांचअस्तिकायनुंस्वरूपजाणे श्रुतज्ञाननोस्वभाव अतरंगसत्तासद्दहेतेधर्मरुचि.

हवेसमकेतनाआठगुणकहेछे १ निसंकाते जिनागममध्येसूक्ष्मअर्थकह्या तेसाचा सद्दहे तेमांसंदेहआणेनही तथासातनयथीपणदरेनही २ निकंषागुण ते पुण्यरूपफलनीवाछनानराखे केमके जिहांइछा तिहांकर्मनोबंधछे माटे ३ निविति गछागुण ते शुभअशुभपुद्गल एकसरिखाछे तेमां पुण्यनाउदयथी शुभयोग मिल्याखुशीथइअहंकारनकरवो तथापापनाउदयथी दुःखसंयोगमिल्यादिलगीरथावुंनही ४ अमूढद्दष्ठीगुण ते जे आगममां सूक्ष्मनिगोदना तथाद्रव्यना सूक्ष्मविचारकह्याछे तेसांभलतोथकोमुंझायनही जेपोतानी धारणामांआवेतेधारीराखे अनेजेधारणामां नआवे तेनेसद्दहे ५ अववुहगुण जे एआपणाजीवमां अनंतज्ञानादिकगुणछे तेढुपाववानही शुद्धसत्ताजेवीछे तेवीकहेवी रागद्वेष अज्ञानतेकर्मनीउपाधिछे जीवएउपाधीथीन्यारोछे ६ स्थिरिकरणगुण ते आपणापरिणाम ज्ञानमांस्थिरकरवा डगाववानही अथवाकोइभव्यप्राणीधर्मथीपडतोहोय तेने साह्यदेइउपदेशआपीस्थिरकरवो ७ वात्सल्यतागुण ते जेनीसाथे ज्ञान ध्यान तप परिकमणो भेलोकरता होये अनेसद्दहणापणएकजहोय तेआपणोसाधर्मिभाइछे तेनीभक्तिकरवी अथवा सर्वजीवनाज्ञानादिगुण आपणासमानछे माटे सर्वजीवऊपरदयाकरवी अथवाबीजाजीवनापण आपणातुल्यज्ञानादिगुणछे तेजीवने पोषवायोग्यज्ञानध्याननोघणोअभ्यास करावे ८प्रभावकगुण ते भगवंतनाधर्मनीप्रभावनामहिमाकरवी अथवा पोतानेज्ञानादिगुणवधारवादानशील तप भावपूजा करीघणीमहिमाकरवी एसमकितनाआठगुण

हवेसमकेतनापांचभूषणकहेछे १ उपशमभावभूषण ते विवेकीप्राणीप्रायेंकषायनकरे अनेजोकदाचित्कषायकरेतोपण तरतमननेपाछोवाले २ आस्ताभूषण ते भगवंतना वचनऊपरशुद्धप्रतितराखें भगवंतेंजेमआगममां आज्ञाकरीतेमसद्दहे ३ दयाभावभूषण ते सर्वजीव पोतानासरिखाजाणीदयापालवी ४ संवेगभूषण जे संसारथी तथाधनथी शरीरथी उदासीपणोराखवो ५ निरवेद्यभूषण ते इंद्रियनासुखजीवेंअनंतिवारभोगव्या पणतेदुःखनाकारणछे एकचिदानंदमोक्षमयी अतींद्रियसुखनेआपणाकरीजाणे एसमकेतनापांचभूपणकह्या.

हवेछआयतनकहेछे १ निश्चेंकुगुरुतेजगवंतनावचननाखोटाअर्थकरे खोटीपरुपणाकरे २ व्यवहारकुगुरुते योगी सन्यासी ब्राह्मण अने आचारहीन वेषधारी यति तेपणछोडवा ३ निश्चेंकुदेवते जिणेश्रीवीतरागदेवनुंस्वरूपनथीजाण्युं ४ व्यवहारकुदेवते जेसरागीदेवकृष्णमाहादेव खेत्रपाल देवी पितरप्रमुख तेपणछोडवा ५ निश्चेंथीकुधर्मते जेएकांतमार्ग बाह्यकरणीऊपरराच्याछे अंतरंगज्ञाननथीओलख्योते ६ व्यवहारकुधर्मते पारकाअन्यदर्शनीनामतसर्वछांडवा एटलेकुदेव कुगुरु तथाकुधर्मनेछोडीशुद्धदेव गुरुतथाधर्मसद्दहे तेसमकेतनी सद्दहणाजाणवी समकेतनालक्षण पन्नवणासूत्रथीकहेछे गाथा ॥ परमत्थसंथवोवा सुदिट्ठपरमत्थसेवणावावि ॥ वावन्नकुदंसणा वज्जणायसमत्तसद्दहणा ॥ १ ॥ अर्थ ॥ परमार्थ छद्रव्य नवतत्वनागुणपर्याय मोक्षनुंस्वरूप एटले जे परमार्थसूक्ष्मअर्थछे तेजाणवानोघणोपरचोकरे अथवाजाणवानीघणीचाहनाराखे अनेसुदिट्ठके० नलीरीतेदीठजाण्याछे परमार्थछद्रव्यमोक्षमार्गजेणे एहवागुरुनीसेवाकरे एटलेज्ञानीगुरुधारवा अने वावन्नके० जिनमतियतिनामधरावी नेजेखेत्रपालप्रमुखने समकितविनामाने एवागुरुनोसंगवर्जे अनेकुदर्शनी जेअन्यमतितेनोसंगनकरे एवाजेपरिणामतेसमकितनीसद्दहणाजाणवी विरयासासवाओ कषायहीणामहव्वयधरावि॥ सम्मदिट्ठिविहुणा कयाविमुक्खंनपावंति॥ २॥ अर्थ॥जेसावद्यआरंनथीविरम्याछेक्रोधादिआचारकषायजीत्याछेअनेशुद्धपांचमहाव्रतपालेछे पणसमकेतविनाछे तेजीवमोक्षपामेनही.

हवेसमकिततेसीवस्तुछे तेविषेगाथाकहेछे गाथा ॥ नयजंगपमाणेहिं जो अप्पासायवायजावेणं॥ जाणइमोरकसरूवं सम्मादिट्ठिउसोनेक ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ नय तथा जंगेकरी तथाप्रमाणेकरी जेपोतानाआत्मानेजाणे ओलखेस्याद्वादआतपक्षेजाणे अने एमस्याद्वादपणेमोक्षनिकर्मावस्थानेपणजाणे परवस्तुने हेयजाणे जीवगुणउपादेयजाणे तेने समकेतिजाणवो.

हवेजीवस्वरूपध्यानकरवाने गाथाकहेछे ॥ अहंमिक्कोखलुसुद्धो निम्ममओनाणदंसणसमग्गो ॥ तम्मिदिट्ठिओतच्चित्तो सव्वेएएखयंनेमि ॥४॥ अर्थ ॥ ज्ञानीजीव एहवुंध्यानकरे के हुंएकलुं परपुद्गलथीन्यारोछुं निश्चेनयकरीशुद्धछुं अज्ञानमलथीन्यारोछुं निर्मलछुं ममताथीरहितछुं ज्ञानदर्शनथीनरयोछुं हुंमाराज्ञानस्वनावसहितछुं हुंमारागुणमांरह्योछुं चेतनागुणतेमाहरीसत्ताछे हुंमाराआत्मस्वरूपनेध्यावतो सर्वकर्मक्षयकरुंछुं॥गाथा॥ निरंजणंनिकलअयल देवअणाइअणइअणातं ॥ चेयणलरकणसिद्धसमपरमप्पासिवसंतं ॥ ५ ॥ अर्थ ॥ कर्मअंजनथीरहित निरंजनछुं कलंकरहितछुं अच

नके० पोतानास्वरूपथीकिवारेचजायमानथाउंनही परमदेवतुं जेनीआदिनथी तथा जेनोअंतनथी चेतनालक्षणवुं सिद्धसमानवुं संतसत्तामयीतुं गाथा ॥ जीवादिसद्द णं सम्मत्तंएसअधिगमोनाणं ॥ तयेवसयारमणं चरणंएसोउमुरकपहो ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जीवादिकद्रव्यजेवाछे तेवासद्दहवा तेसमकेत अनेद्रव्यजेवाछे तेहवा गुणपर्याय सहितजाणे तेज्ञानजाणवुं तेद्रव्यजाणीने अजीवनेछांमे अने जीवना स्वगुणमां स्थिरथयीनेरमे तेचारित्रकहियें एज्ञानदर्शनचारित्र शुद्धरत्नत्रयी तेमोक्षनो मार्गछे माटेएज्ञानदर्शनचारित्रनोघणोयत्नकरवो एरत्नत्रयीपामीनेप्रमादकरवोनही तिहांनिश्चेयववहारनीगाथा ॥ नच्छियमग्गोमुरको ववहारोपुन्नकारणोवुत्तो ॥ पढमो संवररूवों आसवहेउतउबीउ ॥ ७ ॥

अर्थ निश्चेनयनोमार्ग ज्ञानसत्तारूप ते मोक्षनुंकारणछे एटलेमोक्षछे अनेव्यव हारक्रियानयते पुण्यनुंकारणकह्यो पहेलो निश्चेनयसंवरछे अनेनिश्चेसंवरनिश्चेनय तेएकजछे जूदानथी बीजोव्यवहारनय तेआश्रव नवाकर्मलेवानोहेतुछे एटलेशु भपुण्यकर्मनो आश्रवथायछे अनेअशुभव्यवहारें अशुभकर्म्मनोआश्रवथायछे कोइ पुछेजे व्यवहारनय आश्रवनुंकारणछे तो अमेव्यवहारनहीआदरसुं एकनिश्चेमार्ग आदरसुं तेनेउत्तरकहेछे ॥ गाथा ॥ जइजिणमयंपवज्जह तामाववहारनच्छिएमु यह॥एक्केणविणातिथ्थं छिज्जईअन्नेणउतच्च ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ अहोभव्यप्राणी जोतमनेजिनमतनी चाहनाछे अनेजो तुमेजिनमतने इछोछो मोक्षनेचाहोछो तोनिश्चेनय अनेव्यवहारनय छांमशोनही एटलेबेहुनयमान जो व्यवहारनयचालजो अनेनिश्चेनयसद्दहजो जोतुमेव्यवहारनयउथापशो तोजिन शासनना तीर्थनोउछेदथाशे जेणेव्यवहारनय नमान्यो तेणे गुरुवंदना जिनभ क्ति तप पच्चखाण सर्वनमान्या एम जेणेआचारउथाप्यो तेणे निमित्तकारणउथा प्यो अनेनिमित्तकारणविना एकलोउपादानकारण तेसिद्धनथाय माटे निमित्तकार णरूप व्यवहारनय जरुरमानवुं अनेजो एकलोव्यवहारनय मानियें तोनिश्चेनय उ लख्याविना तत्वनुंस्वरूप जाणुंजायनही माटेतत्वमार्ग अनेमोक्षमार्ग तेनिश्चेनय विना पामियेंनही अनेतत्वज्ञानविना मोक्षनथी एटलेनिश्चेविना व्यवहारनिःफलछे अनेनिश्चेसहित व्यवहारतेप्रमाणछे तेनोदृष्टांत जेमसोनानाआभूषणमां उपधातु अथवाकिणजोमिल्योहोय तेपणउंचासोनानेजावेंलेइ राखियेंछैयें अनेजोतेकिणजो तथासोनुंजूडुंकरियें तो सहुकोइसोनानेले पण कोइकिणजोजेकुधातु तेलीयेंनही

तेम निश्चेनय सोनासमानछे माटेनिश्चेनयसहित सर्वेजलाछे अनेनिश्चेनयविना स र्वेअलेखेछे माटेआगममां निश्चेव्यवहाररूप मोक्षमार्गछे तेकह्यो.

वलीशरीरउपर मोहकरेनही तेविषे ॥ गाथा ॥ छिज्जोनिज्जोजायखउ जोई हमेहुशरीर ॥ अप्पाजावेनिम्मलो जंपावंजवतीरं ॥ ९ ॥ अर्थ॥ जव्यप्राणीएमचिंत वेजे एशरीर छीजजाउ जिजजाउ क्षयथइजाउ विणशीजाउ एमाहरुं शरीरपुजली कछे परवस्तुछे तेएकदीवसेंमूकवुंछे माटेरेप्राणी तुंआपणीआत्मानेनिर्मलपणेध्यावतो संसारथी तरीनेंकांठेपामीश॥गाथा॥एहिजअप्पासोपरमप्पा कम्मविसेसोईजायोज प्पा॥इथमेदेवज्झाज्ञलोपरमप्पावहुतुह्लेअप्पोअप्पा ॥ १० ॥ अर्थ॥ अहोजव्यजीव एहीजआपणोआत्माछे तेशुद्धब्रह्मछे पणकर्मनेवशपडयो जन्ममरणकरेछे पणएशरी रमां जेजीवछे तेदेवछे परमात्माछे माटेतुमे आपणोआत्माध्यावो तरणतारणजिहा ज एआपणोआत्माजछे एमश्रीहेमाचार्य वीतरागस्तोत्रमांकह्योछे यःपरात्मापरंज्यो तिः परमःपरमेष्ठिनां॥ आदित्यवर्णोतमसःपरस्तादामनंतियं॥ १ ॥ सर्वेयेनोदमूल्यं त समूलाःक्लेशपादपाइत्यादि ॥ अर्थ ॥ परमात्माछे परमज्योतिछे पंचपरमेष्ठीथी पणअधिकपूज्यछे केमकेपंचपरमेष्ठीतो मोक्षमार्गनादेखाडनाराछे पणमोक्षमांजवावा लोतो आपणोजीवछे अज्ञाननो मिटावनारछे सर्वकर्म्मक्लेशनो खपावनारछे एवो आत्माध्यावो एहिजपरम श्रेयनुंकारणछे शुद्धछेपरमनिर्मलछे एहवोआत्माउपादेय जाणीसद्दहे अनेजेवोपोताथी निरवाहथाय तेवोत्यागवैरागमांप्रवर्त्ते एटले धन तेपर वस्तुजाणी सुपात्रनेदानआपे अनेइंद्रियनाविकारते कर्मबंधनाकारणजाणीपरिहरे शी लपाले जेआहारछे तेपुजलीकपरवस्तुछे शरीरपुष्टीनुंकारणछे अनेशरीरपुष्टकीधाथी इं द्रियोनाविषयनोपोषथाय माटेतेपरस्वजावछे अज्ञान संसारनुंकारणछे माटेआहा रनोत्यागकरवो तेनेतपकहियें तथापूजाते जेश्रीअरिहंतदेवें मोक्षमार्गउपदेश्यो तेआपणेजाण्यो माटेआपणाउपकारीछे तेउपकारीनी बहुमानसहित जक्तिकरियें माटेश्रीअरिहंत देवाधिदेवनी पूजाकरवी एम दान शील तप पूजा सर्व जीव अजी वनुंस्वरूप उंलख्याविनाजेकरवुं तेपुण्यरूप इंद्रियसुखनुंकारणछे अनेजे जीवनेउपादेय करी वांछाविनाकरणीकरेछे तेनिर्ज्जरानुंकारणछे एमदयापण श्रीजगवतीसूत्रमां साता वेदनीकर्मनुं कारणछे एटले सम्यक्ज्ञानीने सर्वकरणीतेनिर्ज्जरारूपछे अनेज्ञानविना सर्वकरणी बंधनुंकारणछे माटेज्ञाननो घणोअन्यासकरजो एजगवंतेंसीखामणदीधीछे.

तथाज्ञाननुंकारण श्रुतज्ञानछे तेनोघणोजावराखजो श्रीठाणांगमां तथा उत्तरा ध्ययनमां तथाजगवतीमां १ वाचना २ पृछना ३ परावर्त्तना ४ अनुप्रेक्षा ५ धर्मक

था एसिज्ञाय जणवा गुणवानुंफल मोक्षकह्योछे सिज्ञायकरवाथी ज्ञानावरणी कर्मखपावे केमके वाचनाथी तीर्थधर्मप्रवर्त्ते महानिर्ज्जराथाय पुछवाथी सूत्रतथा अर्थशुद्धथाय मिथ्यात्वमोहनीयखपावे तेजेमजेम अर्थविचारपूछे तेमसमकितनि र्मलथायअने अनुप्रेक्षाते अर्थविचारतां सातकर्मनीस्थितिना रसपातलाकरे अनंतो संसारखपावीनेपातलोकरेतथाश्रुतज्ञाननीआराधनाथी अज्ञानमिटे एवाफलकह्याछे.

माटे वाचवा तथा जणवानो घणोउद्यमकरवो केमके आजपांचमांआरामां को इ केवलीनथी तथा मनपर्यवज्ञानी अनेअवधिज्ञानीपणनथी एकमात्रश्रुतज्ञान ते हिजआगमनो आराधकछे यतः कछअम्हारिसापाणी डुसमादोसदूसिया॥ हाथ णाहाकहंहुंता नहुंतोजइजिणागमो ॥ १ ॥ अर्थ ॥ हेजगवंत अमसरिखाप्राणी नी शीगतिथात जेअमेंआडुसमपंचमकालमां अवतारलीधो हाइतिखेदे अमेअनाथ हुं जो जिनराजनाकहेला आगमनहता तोआजसुंथात एटले आजआगमनोजआ धारछे माटेआगम अने आगमधर जे बहुश्रुत तेनोघणोविनयकरवो आगममांवि नयनुंफल तेसांजलवुं अनेसांजलवानुं फलज्ञानछे ज्ञाननुंफलमोक्षछे एमआगम सांजलीलेवायोग्यलेजो अयोग्यछांमजो सद्दहणाशुद्धराखजो सद्दहणाते मोक्षनुंमू लछे एइंड्रियसुखतोआजीवें अनंतिवारपाम्याछे एहवी जाति जन्म योनी कोइरही नथी जेआपणाजीवेनहीकरीहोय एजीवने संसारमांजमतां अनंतापुजल परावर्त्तमा नथया पणधर्मनी जोगवाइमलीनही तोहवेमनुष्यजव श्रावककुल निरोगशरीर पं चेंड्रीप्रगट बुद्धिनिर्मल एटलासंयोगमल्या वलीश्रीवीतरागनीवाणीनाकेहेनारा शुद्ध गुरुनी जोगवाइपामीने अहोजव्यलोको तुमेधर्मनेविषे विशेषउद्यमकरजो फिरिथीए वीजोगवाइ मिलवीडुर्लजछे माटेप्रमादकरशोनही एशरीर धन कुटुंब आयुषो सर्व चंचलछे क्षणक्षणछीजेछे माटे पांचसमवायकारणमल्या मोक्षरूपकार्य सिद्धकरवुं तेपंचसमवायनानांमकहेछे १ काल २ स्वजाव ३ नियत ४ पूर्वकृत ५ पुरुषाकार एपांचसमवायमाने तेसमकेतिछे एमांएकसमवाय उछापे तेहनेमिथ्यात्वीकहियें एम सम्मतिसूत्रमां कह्योछे गाथा ॥ कालोसहानियइ पुव्वकयंपुरिषकारणेपंच ॥ सम वाएसमत्तं एगंतेहोयमिछत्त ॥ १ ॥

अर्थ ॥ काललब्धिविना मोक्षरूपकार्य सिद्धथायनही एटलेकालसर्वनुंकारणछे जेकालें जेकार्यथवानोहोय तेकार्यतेकालेंथाय एकालसमवाय अंगीकारकरीकह्यो इहांकोइपुछेजे अजव्यजीव मोक्षकेमजतानथी तेनेउत्तरजे अजव्यनेकालमले पण अजव्यमांस्वजावनथी तेथीमोक्षजायनही केमके कालस्वजाव एबेकारणजोइये ते

वारेंफरिपुछ्युंजे नव्यजीवमांतो मोक्षेजवानोस्वनावछे तोसर्वेनव्य केममोक्षजतान थी तेनेउत्तर जे नियतके० निश्चेसमकितगुणजागे तेवारेंमोक्षपामे एटलेकाल स्वनाव नियतएत्रणकारणमान्या तेवारेंफरिपुछ्युं जे समकितआदिकारणतो श्रेणी कराजानेहता तोमोक्षकेमनथयो तेनेउत्तर जे पूर्वकृतकर्मघणाहता अथवापुरुषाकार ते उद्यमकस्योनही फरीपुछ्युंजे शालीनद्रप्रमुखें तो उद्यमघणोकीधो तेनुंउत्तरजे तेमनापूर्वकृत शुनकर्मखप्यानहता माटेपांचसमवाय मिल्याकार्यनीसिद्धिथाय ते वारेंफरिपुछ्युंजे मरुदेवामाताने तोचारकारणमिल्या पणपांचमो पुरुषाकारउद्यम काइकीधोनही तेनेउत्तर जे क्षपकश्रेणीचढवानो शुक्लध्यानरूप उद्यमकीधोछे माटे पांचसमवायमिल्या मोक्षरूपकार्य सिद्धथाय.

जेवारें केवलज्ञानेकरीसर्वद्रव्य जेमरह्याछे तेमदेखे एटले आकाशद्रव्य लोका लोकप्रमाणछे तेमांअलोकमां बीजुंद्रव्यकोइनथी लोकाकाशनाएकेकप्रदेशें धर्मास्ति काय अधर्मास्तिकायनो एकेकप्रदेशरह्योछे तथाअनंताजीवना अनंताप्रदेशरह्याछे अनंतापुद्गलपरमाणुरह्याछे कालनोसमय सर्वत्रवर्त्तेछे.

हवे छद्रव्यनीफरशनाकहेछे धर्मास्तिकायना एक प्रदेशें धर्मास्तिकायना छप्रदेश फरस्याछे तेआवीरीते के चारदिशीनाचार अनेपांचमोनीचे छठोऊपर एछप्रदेशफर स्याछे तथा एकमूलपोतेंप्रदेश एमसातप्रदेशनो संबंधछे अनेधर्मास्तिकायना एकप्रदे शने आकाशद्रव्य तथा अधर्मास्तिकायना सातसातप्रदेश फरशेछे तेएकमूलनाप्रदे शने बीजाद्रव्यनो मूलनोप्रदेशफरशे माटे सातप्रदेशनीफरशनाछे अनेधर्मास्तिकायना एकप्रदेशें जीवपुद्गलना अनंताप्रदेशनी फरसनाछे अनेलोकनेअंतेजे धर्मास्तिकायना प्रदेशछे तेने आकाशनीफरसनातो छएदिशीनीछे अनेएकमूलप्रदेशसुद्धां सातप्रदेश नीफरसनाछे अनेबीजाद्रव्यनी त्रणदिशीनीफरसनाछे एमसर्वद्रव्यनीफरशनाछे अने आकाशथी धर्म अधर्मनीअवगाहना सूक्ष्मछे धर्मअधर्मद्रव्यथीजीवनीअवगाहना सूक्ष्मछे जीवथी पुद्गलनी अवगाहना सूक्ष्मछे.

एमछद्रव्यना गुणपर्याय सामान्यस्वनाव११छे अनेविशेषस्वनावदशछे तेश्रीकेवली नगवंत ज्ञानथीजाणे दर्शनथीदेखे तेइग्यारसामान्यस्वनावकहेछे १ अस्तिस्वनाव २ नास्तिस्वनाव ३ नित्यस्वनाव ४ अनित्यस्वनाव ५ एकस्वनाव ६ अनेकस्वना व ७ नेदस्वनाव ८ अनेदस्वनाव ९ नव्यस्वनाव १० अनव्यस्वनाव ११ परमस्व नाव एइग्यारसामान्यनाव सर्वद्रव्यमांछे एसामानउपयोग दर्शनगुणथीदेखे हवेद

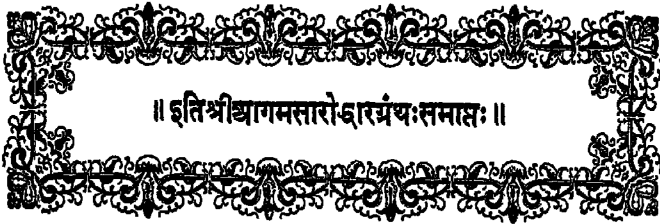
शविशेषस्वनावकहेछे १ चेतनस्वनाव २ अचेतनस्वनाव ३ मूर्तिस्वनाव ४ अमूर्ति स्वनाव ५ एकप्रदेशस्वनाव ६ अनेकप्रदेशस्वनाव ७ शुद्धस्वनाव ८ अशुद्धस्वनाव ए विनावस्वनाव १० उपचरितस्वनाव एदशविशेषस्वनाव तेकोइकद्रव्यमांकोइकस्व नावछे कोइकद्रव्यमांकोइकस्वनावनथी एज्ञानथीजाणे एटलेसिद्धनगवानलोकालोक सर्व ज्ञानोपयोगथीजाणीरह्याछे दर्शनोपयोगथीदेखीरह्याछे एह्वाअनंतगुणीअरूपी सिद्धनगवानछे तेसमान पोतानीआत्मानेजाणे उपादेयकरीध्यावे तेसमकेतजाणवो.

## ॥ दोहा ॥

अष्टकर्मवनदाहके ॥ नएसिद्धजिनचंद ॥ तासमजोअप्पागणे॥वंदेताकोइंद ॥१॥ कर्मरोगउषधसमी ॥ ग्यानसुधारसवृष्टी ॥ शिवसुखामृतसरोवरी ॥ जयजयसम्यक् दृष्टी ॥ २ ॥ एह्जिसदगुरुशीखछे ॥ एह्जिशिवपुरमाग ॥ लेजोनिजग्यानादिगुण॥ करजोपरगुणत्याग ॥ ३ ॥ ग्यानवृक्षसेवोनविक ॥ चारित्रसमकेतमूल ॥ अमरअग मपदफललहो ॥ जिनवरपदवीफूल ॥ ४ ॥ संवतसत्तरछिडुत्तरे ॥ मनसुद्धफागुणमा स ॥ मोटेकोटमरोटमे ॥ वसतांसुखचोमास ॥५॥ सुविहितखरतरगछसुथिर ॥ यु गवरजिनचंदसूर ॥ पुण्यप्रधानप्रधानगुण ॥ पाठकगुणेपंमूर ॥ ६ ॥ तासशिष्यपाठक प्रवर ॥ सुमतिसारगुणवंत ॥ सकलशास्त्रज्ञायकगुणी ॥ साधुरंगजसवंत ॥ ७ ॥ ता सशिष्यपाठकविबुध ॥ जिनमतपरमतजाण ॥ नविककमलप्रतिबोधवा ॥ राजसाग रगुरुनाण ॥ ८ ॥ ग्यानधर्मपाठकप्रवर ॥ शमदमगुणेअगाह॥राजहंसगुरुगुरुसक्ति॥ सहुजगकरेसराह ॥ए॥ तासशिष्यआगमरुचि ॥ जैनधर्मकोदास ॥ देवचंदआनंदमें॥ कीनोग्रंथप्रकाश ॥१०॥ आगमसारोद्धारएह ॥ प्राकृतसंस्कृतरूप ॥ ग्रंथकीयोदेवचं दमुनी॥ ग्यानामृतरसकूप ॥११॥ कस्योइहांसदायअति ॥ दुर्गदाससुनचित्त ॥ समजा वननिजमित्रकुं॥ कीनोग्रंथपवित्त ॥१२॥ धर्ममित्रजिनधर्मरतन ॥ नविजनसमकितवं त॥ शुद्धअमरपदउलखण ॥ ग्रंथकियोगुणवंत ॥ १३ ॥ तत्वग्यानमयग्रंथयह ॥ जो वेबालाबोध ॥ निजपरसत्तासबलिखे ॥ श्रोतालहेप्रबोध ॥ १४ ॥ ताकारणदेवचंद मुनी ॥ कीनोआगमग्रंथ ॥ नणसेगुणसेजेनविक ॥ लहेशोतेशिवपंथ ॥ १५ ॥ कथ कशुद्धश्रोतारुची ॥ मिलजोएहसंयोग ॥ तत्वग्यानश्रद्धासहित ॥ वलीकायनिरोग ॥ ॥ १६ ॥ परमागमसुंराचजो ॥ लहेसोपरमानंद ॥ धर्मरागगुरुधर्मसौ ॥ धरजोएसु खकंद ॥ १७ ॥ ग्रंथकीउमनरंगसौ ॥ सितपखफागुणमास ॥ नोमवारअरुतिजति थि ॥ सफलफलीमनआस ॥ १८ ॥

आआगमसारमां पेच १४६ नी लेन ए मीमध्ये चउदराजलोकनोखंधलोकाकाश सादिसांतछे तेआवीरीतेंजे लोकनामध्यनागेंआठरुचकप्रदेशथी मांमीनेसादिछेजिहां चउदराजलोकनोअंतआवे तिहांसांत तथा चउदराजलोकनोछेलोप्रदेशमूकीनेपछेअ लोकनीआदिलेवी पणअलोकनोअंतनथी माटेसादिअनंतकह्युंछे.

तथापेच १५३ नी पेलीलेनमां श्रीनगवतीसूत्रमांसुत्तडोखलुपढमो बीउनिज्जुत्ति मिसउनणिउ॥इत्तोतईयणुउंगो नाणुन्नाउजिणवरेहिं ॥ एवीरीतेआगमसारनी जूदी जूदीत्रणप्रतोमां लख्युंहतुंमाटेमेंपण तेमजलख्युंछे पणबीजाघणाठेकाणे एनगव तीनीसाखदीधीछेतिहांतो सुत्तडोखलुपढमो बीउनिज्जुत्तिमिसउनणिउ तइउयनिर विसेसो एसविहिहोइअणुउंगे॥एवोपाठछे तेखरोजणायछे पछेबहुश्रुतकहेतेखरुं.



॥ श्रीपरमगुरुभ्योनमः ॥

# अथश्रीदेवचंद्रजीकृतनयचक्रसारनुंबालावबोधलिख्यते

## मंगलाचरण

प्रणम्यपरमब्रह्मशुद्धानंदरसास्पदं ॥ वीरंसिद्धार्थराजेंद्रनंदनंलो कनंदनं॥ १ ॥ नत्वासुधर्मस्वाम्यादिसंघंसद्वाचकान्वयं॥ स्वगुरून् दीपचंद्राख्यपाठकान्श्रुतपाठकान्॥ नयचक्रस्यशब्दार्थकथनंलो कभाषया ॥ क्रियतेबालबोधार्थं सम्यङ्मार्गविशुद्धये ॥ ३ ॥

## प्रशस्ति

श्रीजिनागमनेविषे १ द्रव्यानुयोग २ चरणकरणानुयोग ३ गणितानुयोग ४ धर्मकथानुयोग एचारअनुयोगकह्याछे तेमां षड्द्रव्य अने नवतत्व तेनागुणपर्याय स्व भावपरिणमननेजाणवुं तेद्रव्यानुयोग एवं पंचास्तिकायनुं स्वरूपकथनरूपछे तेपंचा स्तिकायमध्ये एकआत्मानामेअस्तिकायद्रव्यछे तेआत्माअनंताछे तेनामूलबेभेद छे तेमां एकसिद्धनिष्पन्न सर्वकर्मावरणदोषरहित संपूर्णकेवलज्ञान केवलदर्शनादि गुणप्रगटरूप अखंड अमल अव्याबाधानंदमयी लोकनेअंतेविराजमान स्वरूपभो गी तेसिद्धजीवकहियें तेसिद्धतासर्वआत्मानो मूलधर्मछे तेसिद्धतानीईहाकरवाने सि द्धभगवंतनो यथार्थसिद्धपणो ओलखीने निष्पन्नसिद्धनोबहुमानकरवो अनेपोते पोतानीभूले अशुद्धचेतनपणे परिणमतां बांध्याजे ज्ञानावरणादिकर्म तेटालीने पो तानीसंपूर्णसिद्धतानी रुचिकरवी एहीजहितसिक्षाछे.

वलीबीजोभेद संसारीजीवोनोछे तेजेणे आत्मप्रदेशें स्वकर्त्तापणे कर्मपुद्गलनेग्र ह्या जेनेकर्मपुद्गलनोलोलीभावछे तेमिथ्यात्व गुणठाणाथीमांडीने अयोगीकेवली गु णठाणाना चरमसमयपर्यंत सर्वसंसारीजीवकहियें तेनावलीबेभेदछे एकअयोगी बी जासयोगी तेसयोगीनाबेभेद एकसयोगीकेवली बीजासयोगीछद्मस्थ छद्मस्थनाबेभेद एकअमोही बीजासमोही समोहीनाबेभेद एकअनुदितमोही बीजाउदितमोही उ दितमोहीनाबेभेद एकसूक्ष्ममोही बीजाबादरमोही बादरमोहीनाबेभेद एकश्रेणीवं

त बीजाश्रेणीरहित श्रेणीरहितनाबेनेद एक संयमीविरति बीजाअविरति अ विरतीनावलीबेनेद एकसमकेति बीजामिथ्यात्वी मिथ्यात्वीनाबेनेद एकग्रंथिनेदी बीजाग्रंथिअनेदी ग्रंथिअनेदिनाबेनेद एकनव्य बीजाअनव्य तेमां अनव्यजीवोनुं तो दलजएवोहोय जेश्रुतअन्यासपणकरे तथा इव्यथीपंचमहाव्रतआदरे पणआ त्मधर्मनायथार्थ श्रद्धाविनापेहेलोगुणवाणो किवारेमूकेनही माटेएजीवो तेसिद्ध पदपामवानेयोग्यनही तेअनव्यचोथेअनंतेछे.

बीजानव्य तेजेसिद्धपणानेयोग्यछे जेनेकारणयोगमिले पलटणपामे तेनव्य जीवो अनव्यथीअनंतगुणाछे तेमध्येकेइकनव्यसामग्रीयोगपामी ग्रंथिनेदकरीने स मकितपामे अनेकेटलाएकनव्यतो सामग्रीनेअनावें समकितपामेजनही नक्तंचविशे षणवत्यां सामग्गीअनावाउ ववहाररासिअप्पवेशाउ ॥ नवावितेअणंता जेसिद्धसु हंनपावंति ॥ १ ॥

पणतेनव्यजीवोमां योग्यताधर्म वतोछे तेमाटेनव्यकहियें जेजीवमिथ्यात्वतजी ने शुद्धयथार्थ आत्मपणेव्यापकरह्यो तेजमारोधर्म अनेजेथीते आत्मसत्तागतध र्मप्रगटे तेसाधनधर्मबेनेदेंछे एकवायणापुछणादि वंदननमनादि पडिलेहणप्रमार्ज्जा दि जेटलीयोगप्रवृत्तिते सर्वद्रव्यथी साधनधर्मकहियें तेनावधर्म प्रगटकरवाने जेकरे तेनेकारणरूपछे इव्यतेजेनावनुंकारण कारयासेदव्वं इतिआगमवचनात् ॥

अनेजेउपयोगादि पोतानाक्षयोपशमनावें प्रगट्याजे ज्ञानवीर्यादिगुण तेपुद्गला नुयायीपणाथीटालीने शुद्धगुणीजेश्रीअरिहंत सिद्धादिक तेनाशुद्धगुणने अनुयायी करवा अथवाआत्मस्वरूप अनंतगुणपर्यायरूपतेने अनुयायीकरवा तेनावथीसाध नधर्मजाणवो एआत्मानीपजाववानो उपायछे.

जिहांलगेंआत्मानुंशुद्धस्वरूप चिदानंदघन तेसाध्यमानथी अनेपुद्गलसुखनीआ शायें विष गरल अन्योन्य अनुष्ठान जेकरवुं ते संसारहेतुछे माटे साध्यसापेक्षपणे स्याद्वादश्रद्धायें साधनकरवुं एहिजमार्गछे अने एमार्गनीजे प्रतितरुचि ते सम्यक्त कहियें तेसम्यक्तग्रंथिनेदकथीपामियें तेग्रंथिनेदलो त्रणकरणकरेतोजछे तेत्रणकरण जीवकरे तेवारेंसम्यक्दर्शनपामे तेत्रणकरणमां पेहेलुंयथाप्रवृत्तिकरण बीजुंअपूर्वकर ण त्रीजुंअनिवृत्तिकरण एकरणसर्व संज्ञीपचेंद्रीकरे तेमांप्रथमयथाप्रवृत्तिकरणतेनव्य तथाअनव्यपणकरे कोईकजीवअनंतिवारकरे तेयथाप्रवृत्तिकरणनुं स्वरूपलखियेंछैये

सर्वकर्मनी उत्कृष्टस्थितिना बांधनारजीवने संक्लेशघणोछेमाटे यथाप्रवृत्तिकरणक रेनही नक्तंचविशेषावश्यके उक्कोसठिंलग्गइ नयणाएएसुपुव्वलद्धाए॥सव्वजहन्नविइ

विनं लघ्नइंजेणपुव्वपडिवन्नो॥१॥माटेकर्म्मनी उत्कृष्टस्थितिनो बांधनारजीव ते चारसा मायकनोलाजनपामेअनेजेजीवसातकर्म्मनी जघन्यस्थिति बांधे तेजीवतोगुणवंतजछे एरीतछेमाटेजेवारेंएककोडाकोडीसागरोपम पल्योपमने असंख्यातमेंजागेऊणी स्थिति बांधतोहोय तेयथाप्रवृत्तिकरणकरे जेजीवकर्म्मक्षपणारूपशक्तिपाम्योनहतो तेशक्तिपा म्योतेनेयथाप्रवृत्तिकरणकहियें उक्तंचजाष्ये येनअनादिसंसिद्धप्रकारेण प्रवृत्तंकर्मक्षप णंक्रियते अनेनेतिकरणं जीवपरिणामएवउच्यते अनादिकालात्कर्मक्षपणप्रवृत्तावध्य वसायविशेषो यथाप्रवृत्तिकरणमित्यर्थः

क्षयोपशमीचेतनावीर्य जेसंसारनी असारताजाणे संसार दुःखरूपकरीजाणे ते थीपरिग्रहशरीरथीखरे उद्वेगेंउदासीनता परिणामेकरीसातकर्मनीस्थिति अनेककोडा कोडीनाथोकडा असंख्याताजे सत्तामांहता तेखपावे नेकांइकऊणी एककोडाकोडीरा खे एयथाप्रवृत्तिकरण आत्माअनंतिवारकरे पणग्रंथिजेदकरीशकेनही एकरण तेगि रिनदीनेविचें आव्युं पाषाणते घंचनाघोलनारूप चालवेकरीने जेमसहेजे सुंहालो थाय अने कोइकआकारपकडे तेमजन्ममरणादिदुःखनेउद्वेगें अनाजोगथीज जववै रागें जीव यथाप्रवृत्तिकरणकरे एहिजजीवकोइकरीतें वैराग्येंविचारेजे जवभ्रमणते दुःखछे एसंयोगवियोगादि असारछे पणकांइक ज्ञानानंदादितेसारछे एहवीगवेषणाक रनारोजीव तेयथाप्रवृत्तिकरणकरीने अपूर्वकरणकरे इहांकोइपुछे जेजव्यनेतो पलटण योग्यताछे पण अजव्यजीवकेमकरे तेनुंउत्तर जेतीर्थंकरजक्तिमांजे देवतानीमहि मा तथालोकसन्मानादिकदेखीने पुंण्यनीवांछायें देवत्वराज्यादिकलाजइछायें इग्यार अंग तथाबाह्यपंचमहाव्रतादिपामे पणतेनेसम्यक्तनहोय जेपुजलाजिलाषीछे तेनेगु णस्पर्शनथाय उक्तंचमहाजाष्ये ॥ अर्हदादिविजूतिमतिशयवतींदृष्ट्वाधर्मादेवंविधस त्कारोदेवत्वराज्यादयःप्राप्यंते इत्येवंसमुत्पन्नवुद्धेरजव्यस्यापिदेवनरेंद्रादिपदेहया नि र्वाणश्रद्धारहित कष्टानुष्ठानं किंचिदंगीकुर्वतोज्ञानरूपस्यश्रुतसामायकमात्रलाजेपि सम्यक्त्वादिलाजःश्रुतस्यनजवत्येवेति ॥ एरीतेंधारवुं.

तथाअपूर्वकरण अनेअनिवृत्तिकरणनो अधिकार जेमआगमसारमां लख्योछे तेजपरमाणे इहांपणजाणवो इमत्रणकरणकरीने उपशम अथवा क्षयोपशम अथवाक्षायक सम्यक्तजेपाम्यो अने आत्मप्रदेशें वर्त्तमाने सम्यक्दर्शनगुणनो रो धक एहवोमिथ्यात्वमोह प्रकृतिनाविपाकोदयने टालवेकरीने जेसम्यक्दर्शनगुणनी प्रवृत्तिथाय तेथीयथार्थपणे निर्द्धारसहितजाणपणोप्रवर्त्तेतेजीवनेद्रव्यानुयोगें तत्व ज्ञानप्रगटे तेथीजेआत्मगुणप्रगटे तेआत्मगुणरक्षणायेंजप्रवर्त्ते एहवीस्वरूपानुयायी

आत्मगुणनीप्रवृत्ति तेहनेधर्मेकरीसद्दहे तेमाटेस्याद्वादपरिणामी पंचास्तिकायछे ते स्याद्वादरूपज्ञान तेनयज्ञानेथाय माटेनयसहितज्ञानकरवुं तेनयज्ञानप्रतिद्रव्यनेछे अनेनयनीअनंतताछे उक्तंच जावइयावयणपहा तावइयाचेवहुंतिनयवाया ॥ तेजे पूर्वापरसापेक्षनही ते कुनयकहियें अने सर्वसापेक्षपणेवर्त्ते तेसुनयकहियें तेमूलसात नयछेतेनुंस्वरूपअल्पमात्रलखियेंछैयें.

नयतेज्ञानगुणनुं प्रवर्त्तनछे जेकारणेएकद्रव्यमध्येअनंताधर्मछे तेएकसमयें श्रुतोपयोगमां आवेनही स्यामाटेजेश्रुतज्ञाननो उपयोग असंख्यातसमयेंथाय अनेवस्तुमध्येतोअनंताधर्म एकसमये परिणमतापामियें तेवारेंश्रुतज्ञान सत्यथायनही ते माटेनयेंकरीजाणे तथायद्यपिकेवलीनोउपयोग एकसमयीछे तेमाटेजाणवामां नयनुंकार्यकेवलीने पडेनही पणवचनेकहेतां केवलीनेपणनयेंकरीकहेवुंपडेकारणकेवचन तोक्रमेबोलायछे अनेवस्तुधर्मअनंताएकसमयकालेंछे तेमाटेनयेंकरीकहे वलीजिनभद्रगणीक्षमाश्रमणपूज्यकहेछे.

जीवादिद्रव्यमांजेगुणछे तेअनंतस्वभावीछे गुणनीछति तेनुंपरिणमन तेनीप्रवृत्ति तेमांजेसमयेकारणता तेसमयेजकार्यता इत्यादि अनेकपरिणतिसहितछे तेथीको इकरीतें सर्वेनुं भिन्नाभिन्नपणे ज्ञानथाय तेनयथीथाय माटेसमकितरुचिजीवने नय सहितज्ञानकरवुं जे एटलाधर्म सर्वद्रव्यमध्ये रह्याछे माटे प्रथमतो श्रीगुरुकृपाथी द्रव्य गुण पर्याय ओलखावेछे एपीठिकाकही हवेमूलसूत्रनाअर्थनुं व्याख्यानकरेछे.

श्रीवर्द्धमानमानम्य स्वपरानुग्रहायच ॥ क्रि
यतेतत्वबोधार्थं पदार्थानुगमोमया ॥ १ ॥

अर्थ ॥ श्रीके० गुणनीशोभा अतिशयशोभायेंविराजमान एहवाश्रीवर्द्धमान अरिहंत शासननानायक तेप्रतेंअत्यंतपणे नमीने नमस्कारकरीने पोतानोमानमूकी त्रणयोगसमावी गुणीनेअनुजायीचेतनातुंकरवुं तेनेनमवुंकहियें तेपण स्वके० पोताने अने परजेशिष्यअथवाश्रोतादिकने अनुग्रहके० उपकारने सारुं तत्वके०यथार्थवस्तुधर्मतेने बोधके०जाणवानेअर्थें पदार्थके० धर्मास्तिकायादिक छमूलद्रव्य तेनो अनुगमके० साचोपरुपवो ते क्रियतेके० करियेंछैयें.

जगतमांमतांतरीउ द्रव्यनेअनेकपणेकहेछे तिहांनैयायिक सोलपदार्थकहेछे वैशेषिक सातपदार्थकहेछे वेदांतिसांख्य एकपदार्थकहेछे मीमांसक पांचपदार्थकहेछे पणतेसर्वेमिथ्याछे तेएपदार्थनुं स्वरूपजाणुंनथी अनेश्रीअरिहंत सर्वज्ञप्रत्यक्षज्ञा

नी ते एकजीवअनेपांचअजीव एरीतेंद्रव्यपदार्थकहेंछे इहांकोइपुछे जेनवतत्वस्वरूप नवप दार्थकह्याछे तेकेम तेनेउत्तर जे एकजीव बीजोअजीव एबेपदार्थतोमूलछे अने शेष साततत्वतो जीवअजीवनो साधकबाधक शुद्धअशुद्ध परिणतिनीअवस्था भिन्नउंल खाववानेकह्याछे.

श्लोक द्रव्याणांचगुणानांचपर्यायाणांचलक्षणं ॥
निक्षेपनयसंयुक्तंतत्वभेदैरलंकृतम् ॥ तत्रतत्वभेदप
र्यायैर्व्याख्यातव्यजीवादेर्वस्तुनोभावःस्वरूपतत्वं

अर्थ ॥ द्रव्यना गुणना तथा पर्यायना लक्षणजेउंलखाण तेनिक्षेपेंकरी तथा नयेंकरीयुक्ततत्वनाभेदेंसहितकहेवुं तत्रके० तिहांजिनागमनेविषे तत्वजेवस्तुस्वरूप भेद तेनाजूदाजूदाभेदपर्याय तेमांरह्याजेधर्म एटलाप्रकारें व्याख्याके० अर्थनुंकहेवुं तेणेकरीने यथार्थ व्याख्यानथाय तिहांतत्वनुंलक्षणकेहेछे व्याख्यानकरवायोग्य जे जीवादिकवस्तु तेनोमूलधर्म तेवस्तुनुंस्वरूपतत्वकहियें जेमकंचननुंस्वरूप पीत गुरुस्नि ग्धतादि तथाएनुंकार्यआभरणादिक अने एहनुंफलते एहथीअनेकभोग्यवस्तुआवे एमजीवनुंस्वरूप ज्ञानदर्शनचारित्रादिअनंतगुण तथाजीवनुंकार्यसर्वभाववुंजाणवुं प्रमुखएरीतें अभेदपणेरह्याजेधर्म तेसर्ववस्तुनुंतत्वकहियें.

येनसर्वत्राविरोधेनयथार्थतयाव्याप्यव्यापकभावेनलक्ष्यतेव
स्तुस्वरूपंतल्लक्षणं तत्रद्रव्यभेदायथाजीवाअनंता.कार्यभेदे
नभावभेदाभवंति क्षेत्रकालभावभेदानामेकसमुदायित्वंद्रव्यत्वं

अर्थ ॥ हवेलक्षणकहेछे जेगुणेकरीसर्वद्रव्य स्वजातिमां अविरोधिपणे यथार्थ पणे १ अतिव्याप्ति २ अव्याप्ति असंभवादिदोषरहित वस्तुजेव्याप्य तेहनेविषे व्या पकपणेलखियें जाणियें तेनेवस्तुनुंलक्षणकहियें तेलक्षणबेप्रकारनुंछे एकलिंगबाह्य आकाररूप अने बीजुं वस्तुमांरह्योजे स्वरूपते एबेभेदछे तेमांलिंगथीतो गायनुंलक्षण जेशास्त्रसहितपणो तेबाह्यआकाररूपलक्षणछे एबाह्यलक्षणेजेउंलखाणकरे तेबाल चालछे अनेजेवस्तुनेधर्मेउंलखाय तेस्वरूपलक्षणकहियें जेमचेतनालक्षणतेजीव त थाचेतनारहिततेअजीव इत्यादिकलक्षणें लक्षणस्वरूपजाणवो एमअनेकरीतेंजाणी लेवो भेदाश्च हवेभेदनुंस्वरूपकहेछे वक्तव्य वस्त्वंशाःके०जेवस्तुकथनकरताहोय तेहना चारभेदछे तत्रद्रव्यभेदाके०तिहांद्रव्यनाभेदमूललक्षणे सरिखापणपिंडपणेजूदाछे ते

द्रव्यथीभेदकहियें यथाके० जेम सर्वजीवजीवत्वसामान्ये सरिखाछे पणजीवजीवप्रते पोतानागुणपर्यायनो पिंमपणोजूदोछे कोइनुंकोइमांमिलिजातोनथी तेमाटे जीवअनंताद्रव्यभिन्नपणे तेमजअजीवअनंताद्रव्य भिन्नपणे एमपुद्गलपरमाणुपण जडतारूपपणेसरिखा पणसर्वपरमाणुआजूदाद्रव्यछे जेकालेंपूछियें तेकालें एटलानाएटलाछे कोइकालेंघटेनही तेमनवोवधेनहीए सर्वद्रव्यथी भेदजाणवो.

हवे क्षेत्रांशाः क्षेत्रथीभेदते जेविस्तरेतोजूदोक्षेत्रअवगाहीनेरहे जेमजीवादिद्रव्यनाप्रदेश अवगाहनाधर्मेजूदाछे पणद्रव्यथीजूदापडेनही संलग्नपणेरहे गुणपर्यायसर्वप्रदेशें अनंताछे तेगुणपर्याय एकप्रदेशमूकीबीजाप्रदेशमांजायनही पर्यायविभागएकनो अनेप्रदेशनो अवगाहसरिखोछे पणतेपर्यायअनंताभिन्नछे अनेजेअनंतापर्यायमलीने एककार्यकरेतेकार्यनेगुणकहेछे श्रीवीतरागसर्वज्ञएमकहेछे एक्षेत्रथीभेदछे

एकवस्तुमां उत्पादव्ययरूप पर्यायपलटवानुंमान तेसमयकहियें जेटलोउत्पादव्ययतथाअगुरुलघुनीहानिवृद्धिने परिणमतानुंमान तेसमयकहियें अनेतेथीबीजीपरिणमनथइ तेबीजोसमय एमजेअनंतिअतीतप्रवृत्तिथइ तेवर्त्तमानप्रवृत्तिनीपरंपरारूपजाणवी अनेआगामिकआसेते कार्यरूपेंयोग्यतारूपजाणवी अतीतकालनो तथाअनागतकालनो कोइढिगलोनथीअनेपिंमरूप पंचास्तिकायनुं वर्ततोजेपरणमनतेनुंमानतेकालकहियें तेनेसमयभेदते त्रीजोकालरूपभेदकहियें ते जेपर्यायभिन्नभिन्नकार्यकरेतेकार्यभेदेंभिन्नपणोछे तेमाटेचोथोभावथीभेदकहियें हवेद्रव्यनुंलक्षणकहेछे तेक्षेत्रकाल अनेभावनाजेभेद तेसर्वनुंएकठामिलिनेपिंमपणे एकाधारपणे समुदायीपणेरहेवुं तेद्रव्यकहियें.

तत्रैकस्मिन्द्रव्येप्रतिप्रदेशो स्वस्वएककार्यकरणसामर्थ्यरूपाअनंताअविभागरूपपर्याया स्तेषांसमुदायोगुणः॥भिन्नकार्यकरणेसामर्थ्यरूपाभिन्नगुणस्यपर्यायाः एवंगुणाअप्यनंताः प्रतिगुणंप्रतिदेशंपर्यायाअविभागरुपाः अनंतास्तुल्याः प्रायीइतितेचास्तिरूपाः प्रतिवस्तुनिअनंतास्ततोनंतगुणाः सामर्थ्यपर्यायाः

अर्थ ॥ हवेगुणनुंलक्षणकहेछे तिहां गुणानामासलंदवं इतिवचनात् एकद्रव्यनेविषे स्वस्वके० पोतापोतानो एकजाणवाप्रमुख कार्यकरवानुं जेनेसामर्थ्यछे एवा अनं

तासूक्ष्म जेनो अविभागके० बीजोभेदनथाय एवाविभागनो जेसमुदाय तेनेगुणक हिये जेमएकदोरडो सोतांतणानोकह्यो तेसोतांतणा तोअविभागपणे छतापर्यायने तेदोरडाथीअनेककार्यथाय अनेकवस्तुबंधाय अने अनेकनेआधारथाय अनेकवेटण थाय तेनेसामर्थ्यपर्यायकहियें छतिरूपजेपर्याय तेतोवस्तुरूपने अने सामर्थ्यपर्याय तो प्रवर्त्तनरूप कार्यरूपछे तेछतिपर्यायनो समुदाय तेनेगुणकहियें छतिपर्यायनाअ विभाग तेयोगस्थान समयस्थानमां कह्योजछे अने भिन्नके० जुदोकार्य करवानुं जे मांसामर्थ्यहोय एवाअविभागरूप आत्मप्रदेशें वर्त्तता पर्याय तेभिन्नके० जुदागुणना पर्यायजाणवा जेम जेअविभाग परिणामालंबनरूपकार्य सामर्थ्यरूप तेनोसमुदाय ते वीर्यगुण एमज जाणवारूपसामर्थ्यछे जेमां एहवाजे अविभागपर्यायछे तेनो समुदा य ते ज्ञानगुण तेवागुण एकद्रव्यनेविषेअनंताछेतेएकगुणना प्रदेशें प्रदेशें पर्यायअ विभागरूप अनंताछे अनेसर्वप्रदेशें सरिखाछे तथापंचास्तिकायमध्ये एकअगुरुलघु पर्यायनोभेद तरतमछे तथापुद्गलपरमाणुंमध्ये कालभेदें अथवाद्रव्यभेदें वर्णादिक नापर्यायनो तरतमयोग ते थोडाघणापणोछे तेपर्यायअस्तिरूपछे सदाछताछे कोइ पर्यायद्रव्यांतरमां जातोनथी प्रदेशांतरमांपण जातोनथी तेछतिपर्यायथी सामर्थ्य पर्याय अनंतगुणाजाणवा तेकार्यरूपछे तथाचमहाभाष्ये यावंतोज्ञेयास्तावंतएव ज्ञानपर्यायाः तेचअस्तिरूपाः प्रतिवस्तुनिअनंताततोप्यनंतगुणाःसामर्थ्यपर्यायाः

तत्रद्रव्यलक्षणं उत्पादव्ययध्रुवयुक्तं सत्लक्षणंद्रव्यं ए तत्द्रव्यास्तिक पर्यायास्तिक उभयनयापेक्षयालक्षणं ॥ गुणपर्यायवत्द्रव्यं एतत्पर्यायनयापेक्षया अर्थक्रियाका रिद्रव्यं एतत्लक्षणंस्वस्वशक्तिधर्मापेक्षया धर्मास्तिका य अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय पुद्गलास्तिकाय जीवास्तिकाय कालश्चेति

अर्थ ॥ हवेवलीद्रव्यनुंमुख्यलक्षणकहेछे उत्पादके० नवापर्यायनुंउपजवुं व्य यके० पूर्वपर्यायनुंविणसवुं अनेध्रुवके० नित्यपणो एत्रीनपरिणमनपणें सर्वद्रव्यप रिणमे तेनेद्रव्यकहियें एटलेतेहिजगुणकारणकार्य भेदमेंसमकालेंपरिणमेछे कारण विना कार्यथायजनही अनेकार्यकरेनही तेकारणपणसमजवुंनही जेउपादानकार ण तेहिजकार्यथायछे तेकारणतानोव्यय अनेकार्यतानुंउपजवुं समकालेंथायछे वली

कारणपणोपण समर्थेसमर्थेनवोनवोछे अनेकार्यपणोपण समर्थेसमर्थेनवोनवोछे ते माटेकारणपणानोपणउत्पादव्ययछे अनेकार्यपणानोपण उत्पादव्ययछे अनेगुणपिंमपणें द्रव्याधारपणेध्रुवछे एवीपरिणतियेंपरिणमे ते सत्के० इतिवंतद्रव्यजाणवो एटले एलक्षणते द्रव्यास्तिकनय तथापर्यायास्तिकनय एबेजेलालेइनेकस्योछे जे ध्रुवपणो ते द्रव्यास्तिकधर्मग्रह्योछे अनेउत्पादव्यय तेपर्यायास्तिकधर्मग्रह्योछे ते माटेएलक्षणसंपूर्णछे एतत्वार्थकारकनुंवाक्यछे.

तथावलीबीजुंलक्षण तत्वार्थमांजकह्युंछे एकद्रव्यमां बह्रामां स्वकार्यगुणेवर्त्तमानतेगुण अने पर्यायते गुंणनुंकारणनूत द्रव्यनुंनिन्ननिन्नकार्यपणे परिणमे द्रव्यगुण एबेहुने स्वाश्रयीपणेपरिणमन तेबेछेजेमां तेद्रव्यकहियें एटलेगुण तथापर्यायवंत तेद्रव्यकहियें तेद्रव्यएकनाबेखंमथायजनही एमूलद्रव्यनुंलक्षणछे अनेजेघणापरमाणुना खंधनेद्रव्यमान्योछे तेउपचारेंजाणवो जेनीपरिणतिन्नणकालमध्येतेरूपनेत्यजेनही ते द्रव्यपोतानीमूलजातत्यजेनही जेनेअगुंरुलघुतुं षड्गुंण हानिवृद्धिरूपलक्षण चक्रएं कर्वोफिरे तेएकद्रव्य अनेजेने जूदोफिरे ते निन्नद्रव्यकहियें एटले धर्म अधर्मआकाश एं एक एक द्रव्यछे अनेजीव असंख्यातप्रदेशरूप एकअखंडद्रव्यछे एवा जीवसर्वलोकमध्येअनंताछे तेजीवसिद्धमांवधेछे अनेसंसारीपणामांउछाथायछे पण सर्वसंख्यामां घटता वधतानथी तथापुज्ञलपरमाणु एकआकाशप्रदेशप्रमाण एकद्रव्यछे तेवापरमाणु सर्वजीवथी तथा सर्वजीवनाप्रदेशथी पण अनंतगुणाद्रव्यछे स्कंधपणे अथवा छुटा परमाणुपणे वधेतथा घटीजाय पण परमाणुपुज्ञलपणे जेसंख्याछे तेमांवधताघटता नथी एनिश्चयनयथी लक्षण कह्युं.

हवेव्यवहारनयथीलक्षणकहेछे अर्थजे द्रव्यतेनीजे क्रियाके० प्रवृत्तितेनेकरे तेद्रव्यकहियें तेमांजीवनीशुद्धक्रिया ते ज्ञानादिकगुणनीप्रवृत्ति जेमसकलज्ञेयजाणवा माटे ज्ञानविन्नागनीप्रवृत्ति एमसर्वेगुणनुंजेकार्य जेमज्ञानगुणनुंकार्यविशेषधर्मनुंजाणवुं तथादर्शनगुणनुंकार्य सकलसामान्यस्वनावनोबोध अने चारित्रगुंणनुंकार्य तेस्वरूपनुंरमवुंइत्यादि अनेधर्मास्तिकायनुंकार्य गतिगुणेपरिणम्याजे जीवतथापुज्ञल तेने चालवानेसहकारीथाय एमसर्वद्रव्यनीसमजणजोइलेवी एलक्षण सर्वद्रव्यनाजेगुणछे तेसर्वेनास्वकार्यानुयायीप्रवृत्ति तेनेअर्थक्रियाकेहेवी हवेतेछद्रव्यछे १ धर्मास्तिकाय २ अधर्मास्तिकाय ३ आकाशास्तिकाय ४ पुज्ञलास्तिकाय ५ जीवास्तिकाय ६ काल एछद्रव्यजाणवा एथीवधारेपदार्थ कोइनथी जे नैयायिकादिक सोलपदार्थकहेछे तेमृषाछे कारणके तेप्रमाणने निन्नपदार्थकहेछे तेतोज्ञानछे तेआत्मानामा प्रमेयनोगुण

छे तेगुणीजेआत्मा तेमध्येरह्योछे तेने जिन्नपदार्थ केमकहियें बीजाप्रयोजन सिद्धां ताद्दिक तेसर्वजीवद्रव्यनी प्रवृत्तिछे ते माटे जिन्नपदार्थकेवायनही.

तथावैशेषिक १ द्रव्य २ गुण ३ कर्म ४ सामान्य ५ विशेष ६ समवाय ७ अजाव एसातपदार्थकहेछे पणतेनेकहियें जेगुणतेतो द्रव्यमांजरह्याछे तो तेनेजिन्न पदार्थकरीकहेवुं तेकेमघटे अने कर्मतेद्रव्यनुंकार्यछे तथा सामान्य अने विशेष एबे तोद्रव्यमध्ये परिणमनछे वली समवायते कारणतारूपद्रव्यनुं प्रवर्त्तनछे अने अजा वतो अछताने केवाय ते अछताने पदार्थकेवुंघटतुंनथी तेमाटेवैशेषिकमतपणमृ षाछे तेमध्येद्रव्यनवकहेछे १ पृथ्वी २ आप ३ तेज ४ वायु ५ आकाश ६ काल७ दिशि ८ आत्मा ९ मन एनवपदार्थकहेछे तेनेउत्तर जे पृथ्वी आप तेज वायुएतोआ त्माछे पणकर्मयोगें शरीरजेदें नामपड्याछे अनेदिशितोआकाशमांज मिलीगयीछे तथामन तेआत्मानेसंसारीपणाना उपयोगप्रवर्तनानो द्वारछे तेनेजिन्नद्रव्यकेमकहियें.

वलीवेदांतिसांख्य तेएकआत्माअद्वैतपणे एकजद्रव्यमानेछे तेनीपणजूलछे केम के जेशरीरछे तेतोरूपीछे अने पुद्गलद्रव्यनास्कंधछे तेकेमएकथाय तथाआत्मा अने शरीरनोआधारते आकाशछे तेसर्वप्रसिद्धछे तेजूदोमान्याविना केमचाले तेमाटेअ द्वैतपणोरह्योनही.

अनेबौद्धदर्शन तेसमयसमय ज्ञानवापणे १ आकाश २ काल ३ जीव ४ पु द्गल एचारद्रव्यमानेछे तेनेपुछीयें जेजीवपुद्गलएकक्षेत्रें केमरहेतानथी तेतोचला दिजावपामेछे माटेतेना अपेक्षाकारणरूप १ धर्मास्तिकाय २ अधर्मास्तिकाय एबेद्र व्यपण मानवाजोइयें तथाकेटलाक संसारस्थितिनोकर्त्ता एकपरमेश्वरनेमानेछे तेपण मृषाछे जेनिर्मलरागद्वेषरहित एवो परमेश्वर तेपरनासुखदुःखनो कर्त्ताकेमथाय वली कोइक इछा वलगाडेछे तेइछातो अधूरानेछे पूरानेकेमहोय तथा केटलाक परमेश्व रनी लीलाकहेछे तेलीलातो अजाण अधूरो तथा जेनेपोतानो आनंद पोतापासेनहो य तेकरे पणजे संपूर्ण चिदानंदघन तेने लीला होयजनही धर्माधर्मौविनानांगंविनां गेनमुखंकुतः॥मुखंविनानकर्तृत्वंतच्छास्तारःपरेकथं१ अनेमीमांसादिक पांचजूतकहेछे तेमांपण चारजूततोजीवपुद्गलना संबंधेउपनाछेअनेआकाशतेलोकालोकजिन्नद्रव्यछे.

तत्रपंचानांप्रदेशपिंडत्वात् अस्तिकायत्वं कालस्यप्रदेशाजा वात् अस्तिकायतानास्ति तत्रकालउपचारतैवद्रव्यंनवस्तुवृत्त्या॥

एरीतेअसत्यपरुपणानुंनिराकरणकरी आगमनीसाखे कार्यादिकनेअनुमाने द्रव्य

छ तरेछे माटेतेहिजमानवा तेमां पांचद्रव्य सप्रदेशीछे तेप्रदेशनापिंमपणामाटे अस्ति कायपणो पांचद्रव्यनेछे अने छठोकालद्रव्य तेनेप्रदेशनथी तेमाटे अस्तिकायतानथी तिहांकालते मुख्यवृत्तियेंद्रव्यनथी उपचारथी द्रव्यकेवायछे जेमवस्तुगते धर्मास्तिका यादिक द्रव्यछे तेमकालद्रव्यनथी जोएकालने पिंडरूपद्रव्यमानियेंतो एनो मानकि हांछे जोमनुष्यक्षेत्रमांकालद्रव्यमानियेंतो बाहिरनाक्षेत्रमां नवपूर्णादिक तथाउत्पा दव्यय कोणकरेछे अनेजोचौदराजलोकमां व्यापीमानियेंतो असंख्यातप्रदेश मानवा जोइयें अनेप्रदेशमानवेकरी अस्तिकायथाय अनेजोरेणुक असंख्यातामानियें तोलो कप्रदेशप्रमाण रेणुकथाय तेवारें असंख्याताकालद्रव्यथाय तेतोअनंतद्रव्यमान्योछे माटेएकालने पंचास्तिकायना वर्त्तनारूपपर्यायिने आरोपेंद्रव्यमानियें केमके अस्ति कायतानथी अनेसर्वेमांवर्त्तनाकरे एपक्षसत्यछे जे आगमनेविषे ठाणांगसूत्रनाआ लावामांछे किंजदंते अद्धासमयेतिवुच्चत्ति गोयमा जीवाचेव अजीवाचेव एटलेकाल ते जीवतथाअजीवनो वर्त्तमानपर्यायछे तेनाउत्पादव्ययरूप वर्त्तनानेकालकह्योछे ते कालने अजीवद्रव्यमांगण्यो तेनोआशयएछे जेजीववर्त्तनाथी अजीववर्त्तनाअनंतगु णीछे तेबहुलतामाटे कालने अजीवगवेष्योछे केमके कालनीवर्त्तना अजीवउपर अ नंतिछे अने जीवउपरतेथीथोडीछे माटे.

तथा विशेषावश्यकभाष्यमध्ये नपश्यतिक्षेत्रकालावसौतयोरमूर्त्तत्वात् अवधेश्च मूर्त्तिविषयत्वात् वर्त्तनारूपंतुकालंपश्यति द्रव्यपर्यायत्वात्तस्येति तथा बावीसहजा रीमध्ये तथा कालस्यवर्त्तनादिरूपत्वात् पर्यायत्वात् द्रव्योपक्रमःउपचारात् तथाजग वत्यांगे १३ तेरमांशतकमध्ये इहांपुद्गलवर्त्तनानीअपेक्षायें कालनेरूपीगवेष्योछे.

तत्रगतिपरिणतानां जीवपुद्गलानां गत्युपष्टंभहेतुधर्मा स्तिकायः सचासंख्येयप्रदेशलोकप्रदेशपरिमाणः

अर्थ ॥हवेपंचास्तिकायनुं भिन्नभिन्नलक्षणकहेछे जेगतिपरिणामीपणेपरिणम्याजी वतथापुद्गलतेनेगतिनाओथ्भानोहेतु तेधर्मास्तिकायद्रव्यकहियें तेधर्मास्तिकायअसं ख्याता प्रदेशपरिमाणछे लोकमांव्यापिछे लोकमानछे लोकनाएकएकप्रदेशेंधर्मास्तिका यनोएकएकप्रदेश तेअनंतसंबंधीपणेछे एधर्मादित्रणद्रव्य अचल अवस्थितअक्रियछे.

☞ स्थितिपरिणतानां जीवपुद्गलानां स्थित्युपष्टंभहेतुः अधर्मास्तिकायः सचासंख्येयप्रदेशलोकपरिमाणः

अर्थ ॥ स्थितिपणेपरिणम्या जेजीव तथापुद्गल तेने स्थितिना उत्पन्नानोहेतु ते अधर्मास्तिकाय द्रव्यकहियें तेपणलोकपरिमाणअसंख्यप्रदेशीछे

सर्वद्रव्याणांआधारभूतः अवगाहकस्वभावानां जीवपुद्ग लानां अवगाहोपष्टंभकः आकाशास्तिकायः सचानंतप्रदे शः लोकालोकपरिमाणः यत्रजीवादयोवर्ततेसलोकः असं ख्यप्रदेशप्रमाणः ततःपरमलोकः केवलाकाशप्रदेशव्यूह रूपःसचानंतप्रदेशप्रमाणः

अर्थ ॥ सर्वद्रव्यने आधारभूत अवगाहस्वभावी जे जीवतथापुद्गलने अवगाह नानोउत्पन्नानोहेतु तेआकाशास्तिकाय द्रव्यकहियें तेनाप्रदेश अनंताछे लोक तथा अ लोकरूपछे तेमांजेक्षेत्रेंजीव तथा पुंगल तथा धर्मास्तिकायअधर्मास्तिकायछे ते क्षे त्रनेलोककहियेंअने केवल एकलोकमात्र आकाशजजिहांछे तेनेअलोककहियें एटले जेलोक तेजीवादिद्रव्यसहित अने जीवादिकद्रव्य जिहांनथी तेनें अलोककहियें ते अलोकना प्रदेशअनंताछे अवगाहकधर्में सर्वद्रव्य एमांसमायछे.

कारणमेवतदन्त्यं सूक्ष्मोनित्यश्चभवतिपरमाणुः॥एकरसव र्णगंधोद्विस्पर्शः कार्यलिंगीच॥पूरणगलनस्वभावः पुद्गला स्तिकायःसचपरमाणुरूपः तेचलोके अनंताः एकरूपाः परमाणवःअनंताः द्व्यणुकाअप्यनंताः त्र्यणुकाअप्यनंताः एवंसंख्याताणुकास्कंधाअप्यनंताः असंख्याताणुकस्कं धाअप्यनंताः एकैकस्मिन्आकाशप्रदेशे एवंसर्वलोकेपि ज्ञेयं एवंचत्वारोस्ति याः अचेतनाः

अर्थ ॥ हवेपुंगलद्रव्यनुं स्वरूपलखियेंछैयें जेपूरणके० पूरायें वरणादिगुणेवधे गलीजाय खरिजाय वरणादिगुणघटिजाय एवोजेमांस्वभावछे तेंपुद्गलास्तिकायकहियें तेमूलद्रव्य परमाणुरूपछे तेपरमाणुनुंलक्षणकहेछे द्व्यणुकादिक जेटलास्कंधछे तेसर्व नुं अत्यंतके० मूलकारणपरमाणुछे एटलेसर्वस्कंधनुं परमाणुकारणछे पणएपरमाणु नुं कारणकोइनथी कोइनुंनीपजाव्योथयोनथी अनेकोइनेमिलवेपणथयोनथी सूक्ष्मछे एकआकाशप्रदेशनी अवगाहनातुल्य एकपरमाणुछे तोपणते एकआकाशप्रदेशमां

अनंतपरमाणुसमायछे पणपरमाणुमध्ये बीजुंद्रव्यकोइसमायनही माटे परमाणु द्रव्य सूक्ष्मछे अनेनित्यछे जेटलुं परमाणुद्रव्यछे तेखंधादिक अनेकपणेपरिणमे पणपरमाणुद्रव्यकोइ विणसीजायनही एवुंपरमाणुद्रव्यछे तेएकपरमाणुमां एकरस होय एकवर्णहोय एकगंधहोय अनेलुखोचिकणोटाढोउन्हो एचारफरसमाहेला गमे तेबेफरसहोय एवुंएकपरमाणुद्रव्यछे इहां कोइपुछेजे तेपरमाणुदेखातोनथी तोके वीरीतेमनाय तेनेउत्तर जेघटपटशरीरादिककार्यदेखायछे अहवायछे तेरूपीछेतो एह नासंबंधनुंकारण परमाणुसूक्ष्मछे माटे इंद्रियज्ञाने अहेवातोनथी परंतुरूपीछे केमके अरूपीथीरूपीकार्यथायनही तेमाटेज परमाणुरूपीछे तेथीएस्कंधपणरूपीथयाछे अ नेआकाशप्रदेश अरूपीछे तोतेनो अनंतप्रदेशीस्कंधपणअरूपीछे एमधारवुं तेपरमा णुना द्व्यणुकादिकस्कंध अनंताछे तथाजुदापरमाणु तेपणअनंताछे तेवलीखंधमां मिलेछे तोवीजाखंधमांहेथी जुदाथायछे एमखंधविखरीजायने परमाणुथाय तेनी वर्गणा अठ्यावीसप्रकारनीछे तेअठ्यावीसभेदकम्मपयडीथीजाणवा एमएकलाप रमाणु तेपणअनंता तथाबेमिलीनेखंधपाम्यातेवाखंधपण अनंता एमजसंख्याता णुकनाखंध पणअनंता तेमजअसंख्यात परमाणुमिलिखंधथाय तेपणअनंता तथा अनंतपरमाणु मल्याखंधथाय तेवाखंधपणअनंता तेएजातीनाखंध तेएकआकाश प्रदेश अवगाहे आकाशांशअवगाहे एमअसंख्याताप्रदेशअवगाहेछे पणएकवर्गणा नी अवगाहना अंगुलनेअसंख्यातमे भागेअवगाहे वधतिअवगाहेनही अनेअनंतिव र्गणामिले अंगुलहाथ गाउ योजनादिकने मानेअवगाहनाथाय एमए१ धर्मास्तिकाय २ अधर्मास्तिकाय ३ आकाशास्तिकाय ४ पुद्गलास्तिकाय एचारेद्रव्यअचेतनछे अजीवछे जाणपणारहितछे.

चेतनालक्षणोजीवः चेतनाचज्ञानदर्शनोपयोगी अनंतप र्याय परिणामिक कर्तृत्वभोक्तृत्वादिलक्षणोजीवास्तिकायः

अर्थ ॥ हवेजीवद्रव्यनुंस्वरूपकहेछे चेतनाजे बोधशक्तिछे लक्षणजेनु तेजीवक हियें जेपोतानीपरिणमन तथा परनीपरिणमन सर्वनेजाणे तेजीव तथासर्वद्रव्य तेअनंतासामान्यस्वभाव अनेअनंताविशेषस्वभाववंतछे तेमांसर्वद्रव्यनाअनंताविशे षधर्मनुं अवबोधक तेज्ञानगुणकहियें तथासामान्यविशेष स्वभाववंतवस्तुनेविषे जे सामान्यस्वभावनुं अवबोधक तेदर्शनगुणकहियें तेज्ञानदर्शनोपयोगी जेअनंतपर्याय

तेनोपरिणामी कर्त्ता भोक्तादिक अनंतिशक्तिनुंपात्र तेजीवजाणवो उक्तंच नाणंच दंसणंचेव, चरित्तंचतवोतहा ॥ वीरीयंउवउगोय एवंजीवस्सलरकणं ॥ १ ॥

चेतनालक्षण ज्ञानदर्शनचारित्रसुखवीर्यादिक अनंतगुणनुंपात्र स्वस्वरूपभोगी तथाअनवछिन्नजे स्वावस्थाप्रगटी तेनोभोक्ता अनंतास्वगुणनीजे स्वस्वकार्यशक्ति ते नोकर्त्ता भोक्ता परभावनोअकर्त्ताअभोक्ता स्वक्षेत्रव्यापी अनंतिआत्मसत्तानो ग्राहक व्यापक रमणकरनारो तेनेजीवजाणवो.

पंचास्तिकायानांपरत्वापरत्वेनवपुराणादिलिंगव्यक्तवृत्तिवर्त्तनारूपपर्यायःकालः अस्यचाप्रदेशिकत्वेनअस्तिकायत्वाभावःपंचास्तिकायांतर्भूतपर्यायरूपतैवास्य एतेपंचास्तिकायाः तत्रधर्माधर्मौलोकप्रमाणासंख्येयप्रदेशिकौ लोकप्रमाणप्रदेशएवएकजीवः एतेजीवाअप्यनंताः आकाशेहि अनंतप्रदेशप्रमाणः पुद्गलपरमाणुः स्वयंएकोप्यनेकप्रदेशबंधहेतुभूतद्रव्ययुक्तत्वात् अस्तिकायः कालस्यनुपचारेणभिन्नद्रव्यताउक्ता साचव्यवहारनयापेक्षयाआदित्यमतिपरिछेदपरिमाणःकालः समयक्षेत्रएवएपव्यवहारकालः समयावलिकादिरूपइति ॥

अर्थ ॥ हवेकालद्रव्यनुंलक्षणकहेछे जेपंचास्तिकायनेपरत्वे अपरत्वे एलिंगे तथापुद्गलस्कंधने नवपुराणपणे व्यक्तके० प्रगटछे वृत्तिके०प्रवृत्तितेनेवर्त्तनाकहियें ते वर्त्तनारूपपर्यायतेनेकालकहियें एनेप्रदेशनथीतेमाटे अस्तिकायपणोनथी एकालते पंचास्तिकायनेविषेअंतर्भूतपर्यायपरिणमनछे जातेंधर्मास्तिकायादिकनोपर्यायछे एम तत्वार्थवृत्तिनेविषेकह्योछे तिहांधर्मास्तिकाय एकद्रव्यछे असंख्यातप्रदेशीछे लोकाकाशनाप्रदेशप्रमाणछे एमअधर्मास्तिकायपण एकद्रव्यछे लोकप्रमाण असंख्यातप्रदेशी छे अनेंएकजीवद्रव्यतेपण लोकप्रमाण असंख्यातप्रदेशीछे पण स्वअवगाहना प्रमाणव्यापकछे तेजीवद्रव्यअनंताछे अकृतसदाछता अखंडद्रव्यछे सत्चिदानंदमयीछे प णपरपरिणामीथवे पुद्गलग्राहक पुद्गलभोगीथवे प्रतिसमये नवाकर्मबांधवे संसारीय थाछे तेहिज जेवारेंस्वरूपग्राहक स्वरूपभोगीथाय तेवारेंसर्वकर्मेरहितथयो परमज्ञा

नमयी परमदर्शनमयी परमानंदमयी सिद्धबुद्ध अनाहारी अशरीरी अयोगी अले शी अनाकारी एकांतिक आत्यंतिक निःप्रयासी अविनाशी स्वरूपसुखनोजोगी शुद्ध सिद्धथाय तेमाटेअहोचेतन एपरजावअजोग्य सर्वजगतनाजीवनीएव तेनोजोगव वापणोतजी स्वजावजोगीपणनो रसीयोथयी स्वस्वरूपनिरधार स्वरूपजासन स्वरू परमणीथयी पोतानाआनंदनेप्रगटकरीनें निर्मलथावुं.

तथाआकाशद्रव्य तेलोकालोकमिलि एकद्रव्यछे अनंतप्रदेशीछे अनेपुद्गलद्रव्यते परमाणुरूपछे केमकेपरमाणुअनंताछेमाटे अनंताद्रव्यछेइहांकोइपूछेजे प्रदेशनासंबंध विनापरमाणुद्रव्यने अस्तिकायकिमकह्योछे तेनेउत्तर जेपरमाणुतो एकप्रदेशीछेपणअ नंता परमाणुथीमिलवानाजेकारण तेआद्रव्यतेएयुक्तछे तेयोग्यतामाटे अस्तिकाय कह्योछे तथाकालद्रव्यने उपचारें जिन्नद्रव्यपणोकह्योछे तेव्यवहारनयनीअपेक्षायें जेमनुष्यक्षेत्रनेविषे सूर्यनीगतिनेपरिज्ञानेएटलेसमयावलिकादिरूप प्रमाणे जेमान तेने व्यवहारथीकालकहियें इति एकालमुख्यवृत्तियें तोसमयक्षेत्रमध्येछे अने मनुष्य क्षेत्रथीबाहेर जेजीवोछे तेनाआयुषापणएजक्षेत्रप्रमाणे सर्वज्ञदेवेंकह्याछे तथासूर्य नोचारतेपण जीवपुद्गलनुंजप्रवर्तनछे कारणके सूर्यतेपणजीवतथापुद्गलजछे एटले ए कालद्रव्यतेकालपणे भिन्नपिंडपणे तेथोनहीं उपचारेंजछेथो एममानवो.

इहांकोइकहेजे एकएकद्रव्यनेविषे अनेकअनेकपर्यायछे ते कोइपर्यायने द्रव्यपणो नकह्यो अने एकवर्त्तनापर्यायनेविषे द्रव्यनोआरोप शामाटेकर्यो तेनेउत्तर एवर्त्तना परिणतितेसर्वे पर्यायने सहकारीछे अनेसर्वद्रव्यनेछे तेथीमुख्यपर्यायछे माटेएने द्रव्यनोआरोपछे तेपणअनादिचालछे.

एतेपंचास्तिकायाःसामान्यविशेषधर्ममयाएवतत्रसामा
न्यतःस्वजावलक्षणं द्रव्यव्याप्यगुणपर्यायव्यापकत्वेन
परिणामिलक्षणंस्वजावः तत्र एकंनित्यंनिरवयवं अक्रियं
सर्वगतंचसामान्यंनित्यानित्य निरवयवसावयवःसक्रिय
ताहेतुःदेशगतःसर्वगतंचविशेषपदार्थगुणप्रवृत्तिकारणं
विशेषः नसामान्यविशेषरहितं नविशेषःसामान्यरहितः

अर्थ ॥ हवेएपंचास्तिकायते सामान्यविशेषधर्ममयीछे ते सामान्यनुंलक्षण वि

शेषावश्यकेंकह्योछे तिहांप्रथमथी स्वजावनुंलक्षणकहेछे जेद्रव्यनेविषेव्यापतोहोय तथागुणपर्यायमांपण व्यापकपणेसदापरिणमतोथकोपामियें तेनेसामान्यस्वजावक हियें ते सामान्यस्वजावजेहोय तेएकहोय तथानित्यअविनाशीहोय तथानिरवयव के० जेहने अविजागरूप अवयवनहोय अने सर्वगतके० सर्वमांव्यापकपणेहोय ते सामान्यस्वजावकहियें जीवादिद्रव्यनेविषे एकपणोतेपिंमपणोछे तेसर्वद्रव्यनेविषेछे सर्वगुणपर्याय पोतानेरूपेंअनेकछे पणतेसमुदायपिंमपणुंमूकीने जूदाथायजनहीं ते माटेएरीतेंजे परिणमनहोय तेसामान्यस्वजावकहियें तेसामान्यनावेजेदछे अस्तिता दिकजेसर्वपदार्थनेविषेछे तेमहासामान्यकहियें एनीश्रुतज्ञानेकरी प्रतीतथाय पणप्र त्यक्षतो अवधिदर्शन केवलदर्शनेजजणाय परोक्षेनग्रहवाय तथा वृक्ष अंब निंब जंबु प्रमुख व्यक्तिअनेकछे पणवृक्षत्वपणो सर्वमांछे एअवांतरसामान्य तेचक्षुदर्श ने तथा अचक्षुदर्शनेग्रहवाय अने अस्तित्व वस्तुत्वादिसामान्य ते अवधिदर्शन त थाकेवलदर्शने ग्रहवाय अने विशेषधर्मते ज्ञानगुणेजग्रहवाय हवे विशेषनुंलक्ष कहियेछैयें कोइकधर्मेनित्य कोइकधर्मेंअनित्य कोइकरीतेंअवयवसहित कोइकरीतें अवयवरहित अविजागपर्यायें सावयव सामर्थ्यपर्यायें निरवयव पणसक्रियताहेतु देशगतजेगुणते गुणांतरमांव्यापतानथी तेमाटेदेशगतजेगुणहोय तेआखाद्रव्यमां व्यापकजहोय तेनेसर्वगतकहियें तोएवाजेधर्म तेसर्वविशेषजाणवा पदार्थनागुणनीप्र वृत्ति तेनाजेकारणतेविशेषस्वजाव जेकार्यकरेतेगुणनेपण विशेषधर्मेजगणवो जेसा मान्यते विशेषरहितनथी अनेजेविशेषते सामान्यरहितनथी.

तेमूलसामान्यस्वजावाःषट् तेचामी १ अस्तित्वं २ वस्तुत्वं ३ द्रव्यत्वं ४ प्रमेयत्वं ५ सत्त्वं ६ अगुरुलघुत्वं तत्र १ नित्यत्वादीनां उत्तरसामान्यानां परिणामिकत्वादीनां विशेषस्वजावानामाधारजूतधर्मत्वं अस्तित्वं २ गुणपर्या याधारत्वंवस्तुत्वं ३ अर्थक्रियाकारित्वंद्रव्यत्वं अथवाउ त्पादव्ययर्योर्मध्येउत्पादपर्यायाणांजनकत्वप्रसवस्वाविर्जाव लक्षणव्ययीजूतपर्यायाणांतिरोजावव्यजावरूपायाःशक्तेरा धारत्वं द्रव्यत्वं ४ स्वपरव्यवसायिज्ञानंप्रमाणं प्रमीयते अनेनेतिप्रमाणं तेनप्रमाणेनप्रमातुंयोग्यंप्रमेयं ज्ञानेनज्ञा

यतेतद्योग्यतालंप्रमेयत्वं ५ उत्पादव्ययध्रुवयुक्तंसत्वं ६ षड्गुण हानिवृद्धिस्वजावा अगुरुलघुपर्यायास्तदाधारत्वं अगुरुलघु त्वंएतेषट्स्वजावाःसर्वद्रव्येषुपरिणमंति तेनसामान्यस्वजावाः

अर्थ ॥ तेमूलसामान्यना ढनेदछे तेसर्वद्रव्यमांव्यापकपणेछे १ अस्तित्व २ व स्तुत्व ३द्रव्यत्व ४ प्रमेयत्व ५ सत्व ६ अगुरुलघुत्व एछमूलस्वजावछे ते सर्वद्रव्य मध्ये परिणामिकपणेपरिणमेछे एधर्मनेकोइनोसहायनथी तत्रके० तिहां १ सर्वद्रव्य नेविषे उत्तरसामान्यस्वजाव नित्यत्व अनित्यत्वादिक तथाविशेषस्वजाव तेपरिणामि कत्वादिक तेनोआधारजूतधर्म तेधर्मनेतीर्थंकरदेवसामान्यस्वजाव अस्तित्वरूपकहेछे तथा २ गुणपर्यायनो आधारवंतपदार्थ तेनेवस्तुत्वकहियें अने ३ अर्थजेद्रव्य तेनीजेक्रिया जेमधर्मास्तिकायनी चलणसहायक्रिया अधर्मास्तिकायनी थिरसहायक्रि या आकाशद्रव्यनी अवगाहरूपक्रिया जीवनी उपयोगलक्षणक्रिया तथापुजलनी मिलवाविखरवारूपक्रियानो करवापणो एटलेजे पर्यायनीप्रवृत्ति तेअर्थक्रिया अनेते अर्थक्रियानो आधारीधर्म तेनेश्रीसर्वज्ञदेवें द्रव्यत्वपणोकह्योछे.

वलीद्रव्यत्वपणानुंलक्षणांतरकहेछे उत्पादपर्यायनीजे प्रसवशक्ति एटले आवि र्जावलक्षण जेशक्ति तेनाव्ययीजूतपर्यायनो तिरोजावथयो अथवा अजावथवारूप शक्तिनो जेआधारजूतधर्म तेनेद्रव्यत्वकहियें.

४ स्वके० पोतेआत्मा अनेपरके० पुजलादिकधर्मास्तिकायादिक अन्यद्रव्यतेने यथार्थपणेजाणे तेज्ञानकहियें तेज्ञानपांचजेदेंछे तेज्ञानना उपयोगमांआवे ए वीजेशक्ति तेनेप्रमेयत्वपणोकहियें तेप्रमेयपणोसर्वद्रव्यनुं मूलधर्मछे प्रमाणमांवसा व्योजेवस्तु तेने प्रमेयपणोकहियें तेसर्वद्रव्यसर्वगुणपर्यायप्रमेयछे अनेआत्मानो ज्ञानगुण तेमांप्रमाणपणो तथा प्रमेयपणो एबेधर्मछे पोतानोप्रमाणपणोते पोते जकरेछे दर्शनगुणनोप्रमाण ज्ञानगुणकरेछे केमके दर्शनगुणते विशेषछे सावयव छे जेसावयवहोय तेविशेषजहोय अने जे विशेषहोयते ज्ञानथीजजणाय दर्शनगु णते सामान्यधर्मनो ग्राहकछे तेपण प्रमाणकेवाय पणप्रमाणनाजेदकह्याछे तिहां ज्ञानजग्रह्युंछे तेनुंकारणजेदर्शनोपयोग तेव्यक्तपडतोनथी तेमाटेप्रमाणमध्ये गवेष्यो नथी तेप्रमाणना मूलबेजेदछे एकप्रत्यक्ष अने बीजोपरोक्ष स्पष्टंप्रत्यक्षं परोक्षमन्य त् इतिस्याद्वादरत्नाकरवाक्यात्.

५ उत्पादके० उपजवो व्ययके० विणसवो ध्रुवके० नित्यपणो वस्तुनाएकगुणमां

एकसमये एत्रणेपरिणमनें सदापरिणमेछे एवोजेपरिणामते सत्पणोकह्यिें अनेते सत्पणानोजावते सत्वपणोकह्यिें.

६ तथाछठो १ अनंतजागहानि २ असंख्यातजागहानि ३ संख्यातजागहानि ४ संख्यातगुणहानि ५ असंख्यातगुणहानि ६ अनंतगुणहानि एछप्रकारनीहानि तथा १ अनंतजागवृद्धि २ असंख्यातजागवृद्धि ३ संख्यातजागवृद्धि ४ संख्यातगुणवृद्धि ५ असंख्यातगुणवृद्धि ६ अनंतगुणवृद्धि एछवृद्धि एमछप्रकारनीहानि तथाछप्रकारनीवृद्धि तेअगुरुलघुपर्यायनी सर्वड्व्यने सर्वप्रदेशें परिणमेछे तेकोइकप्रदेशेंकोइसमये अनंतजागहानिपणेपरिणमे अनेकोइकसमये कोइकप्रदेशें अनंतजागवृद्धिपणे परिणमेछे एवंबारप्रकारें परिणमेछे ते अगुरुलघुपर्यायनी परिणमनशक्ति तेअगुरुलघुत्वं अगुरुलघुनोजावजाणवो तत्वार्थटीकानेविषेपांचमांअध्यायें अलोकाकाशनेअधिकारें कह्योछे एमएछस्वजाव सर्वड्व्यनेविषे परिणमेछे एछएड्व्यनोमूलस्वजावछे ड्व्यनोजिन्नपणो प्रदेशनोजिन्नपणो तेअगुरुलघुनेजेदपणे थायछे तेमाटे एछमूलसामान्यस्वजावछे एड्व्यास्तिकधर्मछे अने एनुंपरिणमनते पर्यायास्तिकधर्मछे केटलाकवादीएमकहेछेजे पर्यायनोपिंमतेड्व्यछे पणड्व्यपणोजिन्ननथी जेम धूरी पइडा कागमो १ माणली जूंहरी प्रमुख समुदायने गामोकह्यिें पण सर्वअवयवथीजिन्न गामापणोकोइदेखातोनथी तेमज ज्ञानादिकगुणथी जिन्नपणोकोइ आत्मादेखातोनथी तेने कह्यिें जे ज्ञानादिकगुणनेविषे छतिएकपिंमसमुदायता सदाअवस्थितपणो अनेड्व्यथीमिलीनजाय तथास्वक्रियावंतपणो इत्यादिकसामान्यधर्मछे छतिअस्तित्व अर्थक्रियावंततेड्व्यपणो एकपिंमपणोतेवस्तुत्व इत्यादिकते सर्वड्व्यपणोछे एटले ड्व्यास्तिक पर्यायास्तिक ए बेहुमलीनेड्व्यपणोछे उक्तंच संमतौदवापज्ञवरहिआ नपज्ञवादव्वउविउप्पत्ति एमूलसामान्यस्वजावनाछजेदकह्या.

तत्रअस्तित्वं उत्तरसामान्यस्वजावगम्यं तेचोत्तरसामान्यस्वजावाअनंताअपिवक्तव्येनत्रयोदश १ अस्तिस्वजावः २ नास्तिस्वजावः ३ नित्यस्वजावः ४ अनित्यस्वजावः ५ एकस्वजावः ६ अनेकस्वजावः ७ जेदस्वजावः ८ अजेदस्वजावः ९ जव्यस्वजावः १० अजव्यस्वजावः ११ वक्तव्यस्वजावः १२ अवक्तव्यस्वजावः १३ परमस्वजावः इत्येवरूपंवस्तुसामान्यानंतमयं

अर्थ ॥ तथावली अस्तित्व उत्तरसामान्यस्वभावकहेछे ते उत्तरसामान्यस्वभावव स्तुमध्ये अनंताछे पणतेरसामान्यस्वभाव अनेकांतजयपताकादिग्रंथे वखाण्याछे ते मांथीलेशमात्र लखियेछैयें तेनानामकपरनामूलपाठमां सुलभछे माटे लिख्यानथी तथाएनाव्याख्यानथीपणजणासे एतेर सामान्यस्वभावें परिणमतिवस्तुहोय.

स्वद्रव्यादिचतुष्टयेनव्याप्यव्यापकादिसंबंधि
स्थितानांस्वपरिणामात् परिणामांतरागमनहे
तुः वस्तुनःसद्रूपतापरिणतिः अस्तिस्वभावः

अर्थ॥तेमां १ प्रथम अस्तिस्वभावनुं लक्षणकहेछे स्वके०पोतानाद्रव्यादिकचारधर्म तेनोजेमां व्यापकपणोछे १ द्रव्यतेगुणपर्यायना समुदायनो आधारपणो २क्षेत्रतेप्रदेश रूप सर्वगुणपर्यायनी अवस्थानेराखवापणो जेजेनेराखे तेतेनुंक्षेत्रजाणवुं ३ कालते उत्पादव्यय ध्रुवपणेवर्त्तना४भावते सर्वगुणपर्यायनो कार्यधर्म तिहांजीवद्रव्यनुं १ स्व द्रव्यप्रदेशगुणनोसमुदायद्रव्यछे तेगुणपर्यायनो जनकपणो तेस्वद्रव्यअने २जीवनाअ संख्याताप्रदेशते स्वपर्यायनोस्वक्षेत्रपर्यायतेजाणवा एटले देखवादिकजेगुणनोपर्याय तेनुंजेक्षेत्र तेस्वक्षेत्र ३ पर्यायमध्ये कारणकार्यादिकनो जेउत्पादव्यय तेस्वकाल तथा ४ अतीतअनागत वर्त्तमाननुंपरिणमनतेस्वभाव तेकार्यादिकधर्म जेमज्ञानगुणनोप र्यायजाणंगपणो वेत्तापणो परिछेदकपणो विवेचनपणोइत्यादिक स्वभाव एमस्वद्रव्य स्वक्षेत्र स्वकाल स्वभाव जेपरिणामिकपणेपरिणमता तेनीअस्तिताकेवी एसर्वनीछति छेतेअस्तिस्वभावछे एअस्तिस्वभावेंद्रव्यछे तेपोतानोमूलधर्ममूकीअन्यधर्मपणे परिणम तोनथी परिणामांतरे आगमनछे एअस्तिस्वभावते सर्वद्रव्यमां पोतानागुणपर्यायनो जाणवो जेअस्तितेसद्रूपता छतारूपपणानी परिणतिलेवी सर्वद्रव्य पोतानेंधर्मेंजप रिणमें पणजेजीवद्रव्यते अजीवद्रव्यपणेनपरिणमे तथा एकजीव ते अन्यजीवपणे नपरिणमे वलीएकगुणते अन्यगुणपणेनपरिणमे ज्ञानगुणनेविषे दर्शनादिकगुण नीनास्तिताछे अनेज्ञाननाधर्मनीअस्तिताछे तथा एकगुणनापर्यायअनंताछे तेसर्वपर्या यधर्मेंसरिखाछे पण एकपर्यायनाधर्म बीजापर्यायमांनही अने बीजापर्यायनाधर्म पे लापर्यायमांनही माटेसर्व पोतानेंधर्मेंजअस्तिछे एरीतेंअस्ति नास्तिनुं ज्ञानसर्वत्रकरवुं एद्रव्यनेविषे प्रथमअस्तिस्वभावकह्यो.

अन्यजातीयद्रव्यादीनां स्वीयद्रव्यादिचतुष्टयतयाव्यवस्थि
तानांविवक्षिते परद्रव्यादिकेसर्वदैवाभावाविच्छिन्नानां अन्य
धर्माणांव्यावृत्तिरूपोभावः नास्तिस्वभावः यथाजीवेस्वीयाः
ज्ञानदर्शनादयोभावाःअस्तित्वेपरद्रव्यस्थिताः अचेतना
दयोभावानास्तित्वे साचनास्तिताद्रव्येअस्तित्वेनवर्तते घटेघ
टधर्माणां अस्तित्वं पटादिसर्वपरद्रव्याणांनास्तित्वंएवंसर्वत्र

अर्थ ॥ हवेबीजानास्तिस्वभावनुं स्वरूपलखियेंछैयें अन्यके० बीजाजेद्रव्यादिक जेद्रव्यगुणपर्याय तेनापोताना जेद्रव्यक्षेत्रकालभाव तेतेहिजद्रव्यमां सदाअवस्थंन पणेपरिणमेछे एटले विवक्षित द्रव्यादिकथी परजेबीजाद्रव्यादिकना जेधर्म ते ते मांसदाअभावपणे निरंतरअविछेदछे तेमाटेपरद्रव्यादिकना धर्मनीव्यावृत्तितापणा नोजेपरधर्म ते विवक्षितद्रव्यमांनथी एवाद्रव्यमांजेभावछे तेनास्तिस्वभावजाणवो जे मजीवनेविषे ज्ञानदर्शनादिक पोतानाजेभाव तेतोअस्तिपणेछे अनेपरद्रव्यमां र ह्याजेअचेतनादिकभाव तेनीनास्तिताछे एटलेतेधर्मजीवद्रव्यमांनथी माटे परधर्मनी नास्तिताछे पणतेनास्तिता तेद्रव्यमध्ये अस्तिपणेरहीछे जेमघटनाधर्मघटमांछे ते थीघटमां घटधर्मनोअस्तित्वपणोछे पणपटादिसर्वपरद्रव्योनो नास्तित्वपणो ते घट नेविषेरह्योछे तथाजीवमध्ये जीवज्ञानादिकगुण तेअस्तित्वपणेछे पणपुद्गलनावर्णादि क जीवमध्येनथी माटेवर्णादिकनीनास्ति ते जीवमध्येरहिछे श्रीभगवतीसूत्रेकह्युंछे हेगौतम अत्थित्तं अत्थित्तेपरिणमयी नत्थित्तं नत्थित्तेपरिणमयी तथाठाणांगसूत्रे १ सियअत्थि २ सियनत्थि ३ सियअत्थिनत्थी ४ सियअवत्तव्वं एचोभंगीकहीछे अ नेश्रीविशेषावश्यकमध्येकह्युंछेके जे वस्तुनो अस्तिनास्तिपणोजाणे तेसम्यग्ज्ञानी अ नेजेनजाणे अथवा अयथार्थपणेजाणे ते मिथ्यात्वी उक्तंच सदसदविशेषणाउ भवहेउजहछिउवलंभाउ॥नाणफलाभावाउ मिच्छादिट्ठिसअन्नाणं॥१॥ एगाथानीटीका मध्ये स्याद्वादोपलक्षितवस्तुस्याद्वादश्चसप्तभंगीपरिणामः एकैकस्मिन्द्रव्येगुणेपर्या येचसप्तसप्तभंगाभवंत्येव अतः अनंतपर्यायपरिणतेवस्तुनिअनंताः सप्तभंग्योभवंति इतिरत्नाकरावतारिकायां तेद्रव्यनेविषे गुणनेविषे पर्यायनेविषे स्वरूपेंसातभंगाहोय जेएसातभंगानो परिणामते स्याद्वादपणोकहियें.

तथाहि स्वपर्यायैःपरपर्यायैरुजयपर्यायैः सद्भावेनासद्भावेनोजयेनवार्पितोविशेषतः कुंजःअकुंजः कुंजाकुंजोवा अवक्तव्योजयरूपादिजेदोजवति सप्तजंगीप्रतिपाद्यतेइत्यर्थः उष्ठग्रीवाकपोलकुक्षिबुध्नादिजिः स्वपर्यायैःसद्भावेनार्पितः विशेषतःकुंजकुंजोजएयते सन्घटइतिप्रथमजंगोजवति एवंजीवः स्वपर्यायैः ज्ञानादिजिः अर्पितः सन्जीवः

अर्थ ॥ एसप्तजंगी परनीअपेक्षायेंनथी तेद्रव्यादिकमध्येजळे यथास्वधर्मेंपरिणमवुं एअस्तिधर्मेळे अनेपरद्रव्यनाधर्मेंनपरिणमवुं एनास्तिनुंफळळे तेमाटेएसप्तजंगी तेवस्तुधर्मेंळे तेविशेषावश्यकथी सप्तजंगीलखियेंछैयें एकविवक्षितवस्तु स्वके० पोतानेपर्यायें सद्भावके० ठतापणेळे अनेपरपर्यायेंजे अन्यद्रव्यनेपरिणमे तेनो असद्भावके० अठतापणो परिणमेळे तथाजेठता अथवाअठतापर्याय तेनोठतापणोळे कोइकपणे अठतापणोळे माटे ठताअठतापणोपण तेजकालेंळे केमके वस्तुमध्ये अनेकधर्मेळे तेसर्वेकेवलीने एकसमयें समकालेंनासेळे तेपणवचनेजंगांतरेजकहीशके अनेठद्मस्थने श्रद्धामांतोसर्वधर्म समकालेसद्दहेळे पण ठद्मस्थनोउपयोग असंख्यातसमयीळे अनुक्रमेळे पूर्वापरसापेक्षळे तेथीसप्तजंगेजासनळे जेवस्तुमांसमकालेंळे समकेतिनी श्रद्धामां समकालेळे अने केवलीनाजासनमां समकालेळे तेश्रुतज्ञानीनाजासनमां क्रमपूर्वकळे केमके जाषासर्वेक्रमेंकेवायळे तेथीअसत्यथाय तेनेजोस्यात्पदेंपरुपियेंजाणियें तोसत्यथाय माटेस्यात्पूर्वक सप्तजंगीकहियें द्रव्यगुणपर्याय स्वजावसर्वेमध्येंळे तेरीतेंसद्दहवी तेदृष्टांतेकरीकहेळे उष्ठके० होठ गाबड कांठो कपाल तलो कुक्षिपेटो बुध्न पोहोलो इत्यादिस्वपर्यायेंकरी घटठतोळे तेघटनेस्वपर्यायें ठतापणे अर्पितकरियें तेवारेंते कुंजकुंजधर्मे सन्के० ठतोळे पणअठतादिकधर्मेनी ठतिसापेक्षराखवाने स्यात्पूर्वककहेवो एटले स्यात्अस्तिघटः एप्रथमजंगोजाणवो तथाजीवादिद्रव्यनेविषे जीवनाज्ञानादिगुण तेनेपर्यायें जीवद्रव्यनेनित्यादि स्वजावेंकरीने स्यात्अस्तिजीवः एमसर्वेद्रव्यनेकहेवो यद्यपि जीवतथाअजीवनो नित्यपणो सरिखोजासे पणतेएनोतेमांनही अनेतेनोएमांनही जोपणजीवसर्व एकजातीद्रव्यळे पणएकजीवमांजे ज्ञानादिगुणळे तेबीजाजीवमांनथी माटेसर्वद्रव्य स्वधर्मेंजअस्तिळे अने परधर्मेंनास्तिळे एमस्यात्अस्तिजीव एप्रथमजंगजाणवो॰

तथापटादिगतैस्त्वक्त्राणादिभिः परपर्यायैरसद्भावेनार्पितः अविशेषितः अकुंभोभवति सर्वस्यापिघटस्यपरपर्यायैर सत्वविवक्षायामसन्घटः एवंजीवोपिमूर्त्तत्वादिपर्यायैः अ सत्जीव इतिद्वितीयोभंगः

अर्थ ॥ पटनेविषेरह्यात्वक्जे शरीरनीचामडीनेढाके लांबोपश्चराय इत्यादिपर्याय तेघटनापर्यायनथी परपर्यायछे पटनेविषेरह्याछे घटनेविषेएपर्यायनी नास्तिछे तेथी एपर्यायनो असद्भावछे तेमाटे एघटनापर्यायनथी एमसर्वपर्यायें घटनथी तेवारेंप रपर्यायना अछतापणानीविवक्षायें अछतोघटछे एमजीवपण मूर्त्तिपणादिक अचेत नादिपर्यायनो जीवमध्येअसत् अछतापणो तेथीजीवपरपर्यायेंनास्तिछे माटे स्यात् नास्ति एबीजोभांगोजाणवो केमके परपर्यायेंनी नास्तितानुं परिणमन द्रव्यनेविषेछे.

तथासर्वोघटःस्वपरोभयपर्यायैःसद्भावासद्भावाभ्यांसत्वास त्वाभ्यामर्पितोयुगपद्वक्तुमिष्टोऽवक्तव्योभवति स्वपरपर्या यसत्वासत्वाभ्यांएकैकेनाप्यसांकेतिकेनशब्देन सर्वस्यापि तस्यवक्तुमशक्यत्वादिति एवंजीवस्यापि सत्वासत्वाभ्यामे कसमयेनवक्तुमशक्यत्वात् स्यादवक्तव्योजीव इतितृतीयो भंगः एतेत्रयःसकलादेशाः सकलंजीवादिकंवस्तुग्रहणपरत्वात्

अर्थ ॥ सर्वघटादिवस्तुछे तेस्वपर्यायजे पोतानासद्भावपर्याय तेणेकरी छतापणे केवाय तथा परनेपर्यायें अछतापणकहेवाय तेवारें स्वपर्यायनोछतापणो परपर्याय नोअछतापणो एबेधर्मसमकालेंछे पणएकसमयेंकेवायनही तेमाटेएघटादिद्रव्यतेस्व द्रव्यमां स्वपर्यायनोसत्वपणो परपर्यायनोअसत्वपणो तेकोइपणएक सांकेतिकशब्दें करी केवानेसमर्थनही माटे सत्व अस्तिपणो असत्व नास्तिपणो ते एकसमयेंके वामां असमर्थछे तेथीवस्तुस्वभावनाबेधर्म तेएकसमयेंछताछे तेनोज्ञानकरवामाटे स्यात्अवक्तव्य एवचनबोल्या केमके कोइकनेएवोबोधथाय जेसर्वथीवचने अगोचरज छे तेमाटेस्यात्पददीधो स्यात्के० कथंचितपणे कोइकरीतें एकसमयेंनकेवाय माटे स्यात्अवक्तव्यएजीवछे एमसर्वद्रव्यजाणवां एत्रीजोभांगोथयो एत्रणभंगासकलादेशी छे सर्ववस्तुने संपूर्णपणेग्रहेवारूपछे जीवादिकजेवस्तु तेनेसंपूर्णग्रहेवावंतछे.

अथचत्वारोविकलादेशाः तत्रएकस्मिन्देशेस्वपर्यायसत्वेन अन्यत्रतुपरपर्यायसत्वेन संश्चअसंश्चभवति घटोऽघटश्चएवं जीवोपिस्वपर्यायैःसन् परपर्यायैः असन् इतिचतुर्थोभंगः

अर्थ ॥ हवेचारभांगाविकलादेशी कहेछे जेवस्तुनुंस्वरूपकेवो तेनाएकदेशनेजग्र हे एस्वरूपछे तिहांएकदेशनेविषे स्वपर्यायनोसत्वपणो अस्तिपणोगवेषेछे तेवारेंवस्तु सद्असत्पणेछे एटलेएघटछे अनेएघटनथी एमजीवपणस्वपर्यायेंसत् परपर्यायेंअ सत् तेमाटेएकसमयेंअस्तिनास्तिरूपछे पणकेवामांअसंख्यातसमयेंछे तेमाटेस्यात् पूर्वकछे एम स्यात् अस्तिनास्ति एचोथोभंगोजाणवो.

तथाएकस्मिन्देशेस्वपर्यायैः सद्भावेनविवक्षितः अन्यत्र तुदेशेस्वपरोभयपर्यायैःसत्वासत्वाभ्यांयुगपदसंकेतिकेनश ब्देन वक्तुंविवक्षितःसन्अवक्तव्यरूपः पंचमोभंगोभवति एवंजीवोपिचेतनत्वादिपर्यायैःसन्शेषैः अवक्तव्यइति

अर्थ॥ तथा एकदेशेंपोतानेपर्यायें स्वद्रव्यादिकें छतापणेगवेषीयें अने अन्यके० बीजादेशोनेविषे स्वपरएबेपर्यायें सत्वछतापणें तथा असत्व अछतापणें समकालें असं केतपणे नामनेअणकेवेगवेषीयें तेवारेंसत्के० अस्तिअवक्तव्यरूप भांगोउपजे अने एभांगाछतांबीजाछभांगाछे तेनीगवेषणामाटे स्यात्पदजोडीयें एटलेस्यात्अस्ति अव क्तव्य एपांचमोभांगोजाणवो जेमजीवनेविषे चेतनपणोसुखवीर्यगुणें अस्तिछे अनेना स्तिपणे अस्तिनास्ति समकालपणे वचनगोचरनावे ते स्यात्अस्तिअवक्तव्य.

तथाएकदेशेपरपर्यायैरसद्भावेनार्पितोविशेषतः अन्यै स्तुस्वपरपर्यायैःसद्भावासद्भावाभ्यांसत्वासत्वाभ्यां युगप दसंकेतिकेनशब्देनवक्तुंविवक्षितकुंभोऽसन् वक्तव्यश्चभ वति अकुंभोवक्तव्यश्चभवतीत्यर्थः देशेतस्याकुंभत्वात् देशेअवक्तव्यत्वादिति षष्ठोभंगः

अर्थ ॥ तथाएकदेशेंपरपर्याय जेनास्तिपर्याय तेने असद्भावके० अछतापणे अर्पि तकरीने मुख्यपणेगवेषीयें तेवारपछिअन्यके०बीजास्वपर्यायें अस्तिपणोतथापरपर्या यजेनास्तिपर्याय एबे सत्वके० छतापणे असत्वके० अछतापणे युगपत्समकालेक

हियें एसंकेतिक शब्दने अनावें केवामांनावे अनेतेकह्याविनाश्रोतानेज्ञानकेमथाय तेमाटेस्यातूपदते अन्यनांगानी सापेक्षतामाटे तथा सर्वधर्मनीसमकालता जणाववा माटें स्यात्नास्तिअवक्तव्य एछठोनांगोजाणवो एटलेजीवपोताने स्वगुणेतोछतापणो सर्वपर्याय समकालनोअवक्तव्यपणो एस्यात्नास्तिअवक्तव्य छठोनांगोथयो.

तथाएकदेशेस्वपर्यायैःसद्भावेनार्पितः एकस्मिन्देशे परप र्यायै रसद्भावेनार्पितः अन्यस्मिंस्तुदेशेस्वपरोभयपर्या यैः सद्भावासद्भावाभ्यां युगपदेकेनशब्देनवक्तुं विवक्षि तःसन्असन्अवक्तव्यश्चनवतिइतिसप्तमोनंगः एतेनएक स्मिन्वस्तुन्यर्पितानर्पितेनसप्तभंगीउक्ता ॥

अर्थ ॥ तथाएकदेशें स्वपर्यायनेछतापणे अर्पितकरियें अनेएकदेशें परपर्यायने अछतापणेगवेषियें अनेतेसर्वपर्याय समकालेंनेलारह्याछे पणवचनेकेवायनही ए टलेअस्तिपणोपणछे अनेनास्तिपणोपणछे एसर्वधर्म समकालेंछे पणवचनेगोचरथा यनही एअपेक्षायें स्यात्अस्ति स्यात्नास्ति स्यात्अवक्तव्य एरीतेंवस्तुनोपरिणमनछे एसातमोनांगोजाणवो एसप्तभंगी अर्पितअनर्पितपणेकही तेअर्पितएकधर्मजहोय एमएकधर्मनेविषेसप्तभंगीकहीः

तत्रजीवःस्वधर्मैर्ज्ञानादिभिःअस्तित्वेनवर्त्तमानः तेनस्यात् अस्तिरूपःप्रथमभंगः अत्रस्वधर्माअस्तिपदगृहीताः शेषा नास्तित्वादयोधर्माः अवक्तव्यधर्माश्चस्यात्पदेनसंगृहीताः

अर्थ ॥ हवेस्वरूपपणेसप्तभंगीकहेछे जेएकद्रव्यनेविषे अथवाएकगुणनेविषे एक पर्यायनेविषे एकस्वनावनेविषे सातसातनांगा सदापरिणमेछे तेरीतेंसप्तभंगीकहेछे स्याद्वादरत्नाकरावतारिकामध्येकह्योछे एकस्मिन्जीवादौ अनंतधर्मापेक्षासप्तभंगीना मानंत्यं एवचनथीजाणीलेजो अत्थिजीवे इत्यादिगाथाथीजाणजो एसुयगडांगसूत्रेंछे हवे पेलोनांगोलखियेंछैयें तिहांजीवद्रव्यपोताने स्वद्रव्यपिंडगुणपर्यायसमुदाय आ धारपणो स्वक्षेत्रअसंख्यप्रदेशें ज्ञानादिगुणनुंअवस्थान अगुरुलघुताहानिवृद्धिनोमान अनेस्वकाल तेगुणनीवर्त्तना उत्पादव्ययनीपरिणमननोभिन्नस्वभावतथाअनंतज्ञानअ नंतदर्शन अनंतचारित्र अनंतदान अनंतलाभ अनंतभोग अनंतउपभोग अनंतवी र्य अनंतअव्याबाध अरूपी अशरीरी परमक्षमा परममार्दव परमआर्जव स्वरूपनो

गीप्रमुख स्वस्वभाव एअनंतज्ञेयज्ञायकपणे जीवद्रव्यछतोछे एमजीवनोज्ञानगुण सर्व में सकलज्ञेयज्ञायकपणो स्वशक्तिधर्में अनंतअविभागें एकएकपर्यायअविभागमां स र्वेअभिलाप्य अनभिलाप्य स्वभावनोजाणगपणोछे इहांविस्तारेंलखियेंछैयें तिहांमति ज्ञानना पर्यायजूदाछे श्रुतज्ञानना अविभागजूदाछे मनपर्यायज्ञानना अविभागजू दाछे केवलज्ञानना पर्यायजूदाछे श्रीविशेषावश्यकें गणधरवादनेछेडेकह्योछे जोआव रवायोग्यवस्तुभिन्नछे तोआवरणजूदाछे तिहांक्षयोपशमनेभेदेंजाणेछे तेपरोक्ष अथ वादेशथीजाणेछे सर्वथाआवरणगयेथकेप्रत्यक्षजाणे पणकेवलज्ञानसर्वभावनोसंपू र्ण प्रत्यक्षज्ञायक तेसंपूर्णप्रगट्यो तेवारेंबीजाज्ञाननीप्रवृत्तिछे पणभिन्नपडतिनथी माटेतेकेवलज्ञाननो जाणपणोज केवायछे तथाकोइक ज्ञानगुणना अविभागसर्व एकजातीनाकहेछे तेअविभागमध्ये वरणादिकजाणवानीशक्ति अनेकप्रकारनीछे ते मांजेआवरणटले जे शक्तिप्रगटे तेशक्तिनुं मतिज्ञानादिभिन्ननामछे अनेसर्वआवर णगयाथी एककेवलज्ञानरह्युंछे छद्मस्थज्ञाननोभासछे एपणव्याख्यानछे एवोज्ञान गुणपोतानास्वपर्याय ज्ञायक परिछेदक वेतृत्वादिकेंअस्तिछे एमसर्वगुणमां स्वधर्मनी अस्तिताकेवी तेमजजेअविभागरूपपर्यायछे जेनासमूहनी एकप्रवृत्तिनेगुणकहियेंछैयें तेपणस्वकार्यकारणधर्में अस्तिछे एमछद्रव्यनुंस्वरूप स्वस्वरूपेंअस्तिछे अने अन्यछ भांगापणछेएवोसापेक्षतामाटे स्यात्पददेइनेबोलवो तेस्यात्अस्तिएप्रथमभांगापणो थयो एटले गवेष्यो जेअस्तिधर्म तेपणनास्तिपणासहितछे एटलेअस्तिकहेतांथकां नास्तिप्रमुखछभांगानीछतिछे तिहांशब्दसहित उपयोगथयो तेथीसत्यपणोथयो.

> तथान्यस्वजात्यन्यद्रव्याणां तद्धर्माणांच विजातिपरद्रव्याणां तद्धर्माणांच जीवेसर्वथैवअभावात्नास्तित्वंतेनस्यात् ना स्तिरूपोद्वितीयोभंगः अत्रपरधर्माणांनास्तित्वं नास्तिपदे नगृहीतं शेषाअस्तित्वादयः स्यात्पदेगृहीताइति

अर्थ॥ हवेबीजोभांगोकहेछे जेएकजीवनुं स्वरूप उपयोगमां आण्योछे तेजीवनेविषे अन्यजे सिद्धसंसारी जीवछेते सर्वना गुणपर्याय अस्तित्वादिप्रमुख सर्वधर्मनीनास्तिछे अने अजीवद्रव्यतथातेना जडतादिकसर्वधर्मनीनास्तिछे जेम अग्निमांदाहकपणोछे तेनीपासेबीजोअग्निनोकणिउंपड्योछे तेपणदाहकछे पणतेदाहकपणोभिन्नछे एटले तेकणीयांनोदाहकपणो तेअग्निमांनथी अने तेअग्निनोदाहकपणो तेकणीयांमांनथी तेमज एकजीवमांज्ञानादिकगुणछे तेबीजामांनथी अनेबीजाजीवमां जेज्ञानादिकगु

णछेते तेमांनथी बाकीसरिखाछे तेमाटेजाणवादिककार्यसरिखाकरे तोपणसर्वेमांपोत पोतानागुणछे पणकोइद्रव्यनागुण कोइद्रव्यमांआवतानथी तेमाटे स्वजाति अन्यद्रव्यपणो अन्यगुणपणो तथाअन्यधर्मपणो ते सर्वनीनास्तिछे एमजगुणमांपणसर्वे अन्यद्रव्यादिकनीनास्तिछे तथापर्यायनाअविभागमां पण स्वजातिअविभागकार्यता कारणतानीनास्तिछे तेमाटेपरद्रव्यपणो परक्षेत्रपणो परकालपणो परभावपणोएनी नास्तिछे एवोनास्तिपणोपण तेमांजरह्योछे तेमाटेस्यात्नास्तिपणो एभांगोपणतेमांज छे एमएकजमात्रनास्तिपणोकह्येथके अस्तिपणो तथाएककालपणोपणछे तथाजीव मांजडतागुणनीनास्तिछे एटलेजडतानीनास्तिते जीवमांजरहीछे इत्यादिकअनंताधर्म नीसापेक्षतामाटे स्यात्पदेंबोलतां सर्वधर्मनोभासनथयो एटलेसत्यताथाय तेमाटे स्यात्नास्ति एबीजोभांगोकह्यो.

केषांचिद्धर्माणां वचनगोचरत्वेन तेनस्यात्अवक्तव्य इ
तितृतीयोभंगः अवक्तव्यधर्मसापेक्षार्थेस्यात्पदग्रहणं

अर्थ ॥ हवेत्रीजोभांगोकहेछे जेवस्तुहोय तेमां केटलाकधर्मएवाछे जेवचनेकरी केवातानथी तेअवक्तव्यछे तेकेवलीनेज्ञानमांजणायछे पणवचनेकरीतेपणकहीश केनहीं तेमाटेतेवाधर्मनीअपेक्षायें वस्तुअवक्तव्यछे एटलेकहेताथकां वक्तव्यनीनाथ यीपणकेटलाकधर्मवस्तुमध्येवक्तव्यछे तेजणाववामाटे स्यात्पदग्रहणकरीने स्यात् अवक्तव्य एत्रीजोभांगोकह्यो.

अत्रअस्तिकथने असंख्येयाः नास्तिकथनेप्यसंख्येयाः
समयावस्तुनिएकसमये अस्तिनास्तिस्वभावौ समकवर्त्त
मानौ तेनस्यात्अस्तिनास्तिरूपश्चतुर्थोभंगः

अर्थ ॥ हवेचोथोभांगोकहेछे जेअस्तिएवोशब्द उच्चारकरतांपणअसंख्यातसमयथाय तथानास्तिएशब्द उच्चारकरतांपण असंख्यातसमयथाय अनेवस्तुमांतो अस्तिधर्म नास्तिधर्मएबेहुएकसमयमांछे तेबेहुसमकालेंजणाववामाटे अनेजेअस्तिते नास्तिनथा यतथाजेनास्ति तेअस्ति नथाय तेसापेक्षतामाटेस्यात्अस्तिनास्ति एचोथोभांगोजाणवो

तत्रअस्तिनास्तिभावाःसर्वेवक्तव्याएवनअवक्त
व्याइतिशंकानिवारणाय स्यात्अस्ति अवक्तव्य
इतिपंचमोभंगः स्यान्नास्तिअवक्तव्यइतिषष्ठः

अर्थ ॥ हवेपांचमोतथा छठोभांगोकहेछे तिहांस्यात्अवक्तव्य एमकेवाथी द्रव्य तेमूलधर्मेएकलो अवक्तव्यथयो तेसंदेहनिवारवाने कह्योजे स्यात्अस्तिअवक्तव्य वस्तुमांअनंताअस्तिधर्मछे पणवचनेअगोचरछे अनेअनंताधर्मवचनगोचरपणछे तेनासापेक्षतामाटे स्यात्पदयुक्तकरीने एटलेस्यात्अस्तिअवक्तव्यः एपांचमोभांगोजाणवो एमजपांचमानीरीतें स्यात्नास्तिअवक्तव्यः एछठोभांगोजाणवो.

अत्रवक्तव्याभावाः स्यात्पदेगृहीताः अत्रअस्तिभावावक्तव्यास्तथाअवक्तव्याः तथानास्तिभावावक्तव्याअवक्तव्याः एकस्मिन्वस्तुनिगुणेपर्यायेएकसमयेपरिणममाना इतिज्ञापनार्थं स्यात्अस्तिनास्तिअवक्तव्यइतिसप्तमोभंगः अत्रवक्तव्याभावास्तेस्यात्पदेसंगृहीताइति अस्तिलेनअस्तिधर्मानास्तिलेननास्तिधर्मायुगपदुभयस्वभावलेनवक्तुमशक्यलात्अवक्तव्यःस्यात्पदेचअस्त्यादीनामेवनित्यानित्याद्यनेकांतसंग्राहकं

अर्थ ॥ हवे सातमोभांगोकहेछे इहांअस्तिभावपणोवक्तव्यछे तेमजनास्तिभावपणवक्तव्यछे अने अवक्तव्यपणछे एसर्वधर्मएकसमयमां एकवस्तुमध्ये तथाएकगुणमध्ये तथाएकपर्यायमध्ये समकालेंपरिणमेछे तेजणाववामाटे अस्तिनास्तिअवक्तव्यः एसातमोभांगो इहांअस्तितेनास्तिनथाय अने नास्तितेअस्तिनथाय तथावक्तव्यते अवक्तव्यनथाय अनेअवक्तव्यते वक्तव्यनथाय तेजणाववानेअर्थे स्यात्पदग्रह्योछे इहांअस्तिपणेजेभावछे तेअस्तिधर्मे अनेनास्तिपणेजेभावछे तेनास्तिपणेग्रह्याछे बेहु समकालेछेतेमाटे एकसमय वक्तव्यके० कहेवामांअशक्यछे असमर्थछे तेथीअवक्तव्य के० अगोचरपणोछे अनेजेस्यात्पदछे तेअस्तिधर्मे नास्तिधर्मे अवक्तव्यधर्मेनोनित्यपणो अनित्यपणोप्रमुख अनेकांतनोसंग्रहकरेछे जेअस्तिधर्मेछे तेनित्यपणेपणछे तथाअनित्यपणेपणछे एकपणोछे अनेकपणोछे भेदपणोछे अभेदपणोछे इत्यादिक तेअस्तिधर्ममांअनेकांतताछे तेनेग्रहेछे केमके वस्तुनोएकगुण तेमांअस्तिपणोछे नास्तिपणोछे नित्यपणोछे अनित्यपणोछे भेदपणोछे अभेदपणोछे वक्तव्यपणोछे अवक्तव्यपणोछे भव्यपणोछे अभव्यपणोछे एअनेकांतपणो एहजस्याद्वादछे तेनुंसंकेतिकवाक्य तेस्यात्पदछे एरीतेजाणवो.

आत्मद्रव्यनेविषे स्वधर्मनीअस्तिताछे परधर्मनीनास्तिताछे स्वगुणनोपरिणमवो अनित्यछे अनेतेजगुणपणेनित्यछे तथाद्रव्यपिंडपणेएकछे अनेगुणपर्यायपणेअनेक छे तथाआत्माकारणपणे कार्यपणें समयसमयमांनवानवापणोजेपामेछे तेनवनध र्मछे तोपणआत्मानोमूलधर्मजेपलटतोनथी तेअनवनधर्मछे इत्यादिकअनेकधर्म परि णतियुक्तछे एरीतेषट्द्रव्यनेजाणी निरधारीने हेयोपादेयपणे श्रद्धान भासनथाय तेसम्यक्ज्ञान सम्यक्दर्शनछे एजीवनीअशुद्धता तेपरकर्त्ता परभोक्ता परग्राहकता टा लवानाउपायनुंसाधन तेसाधनकरवे आत्माआत्मापणें मूलधर्मेरहे तेसिद्धपणो तेनीरुचिउद्यमपणोकरवो एहिजश्रेयछे.

स्यात्अस्ति स्यान्नास्ति स्यात्अवक्तव्यरूपास्त्रयः सकला देशाः संपूर्णवस्तुधर्मग्राहकलात् मूलतः अस्तिभावाअ स्तित्वेनसंति नास्तित्वेनसंति एवंसप्तभंगाः एवंनित्यत्व सप्तभंगी अनित्यत्वसप्तभंगी एवंसामान्यधर्माणां विशेष धर्माणां गुणानांपर्यायाणां प्रत्येकंसप्तभंगी तद्यथा

अर्थ ॥ स्यात्अस्ति स्यात्नास्ति स्यात्अवक्तव्य एत्रणभांगा वस्तुनासंपूर्ण रूपनेग्रहे माटेसकलादेशीछे अने शेषरह्याजेचारभांगा तेविकलादेशीछे तेवस्तुनाए कदेशनेग्रहेमाटे. तथावलीअस्तिपणानेविषेजेअस्तिपणो तेनास्तिपणेनथी अनेना स्तिपणोनास्तिपणेछे तेमांअस्तिपणोनथी इहांकोइपुछेके वस्तुमांजेनास्तिपणोते अ स्तिपणेकहोछो तोनास्तिपणामां अस्तिपणानीनाकिमकहोछो तिनेउत्तर जेनास्ति पणोतेअस्तिछे छतापणेछे अने अस्तिधर्मकांइनास्तिपणामांनथी माटेनाकहीछे छति नीनाकहीनथी तथाएमज नित्यपणानीसप्तभंगी तथा अनित्यपणानीसप्तभंगीतेमज सामान्यधर्मसर्वेनी भिन्नभिन्नसप्तभंगी तथासर्वविशेषधर्मनीसप्तभंगी तेमजगुणपर्या यसर्वेनी जूदीजूदी सप्तभंगी केहेवी तद्यथाके० तेकहीदेखाडेछे.

ज्ञानंज्ञानत्वेनअस्तिदर्शनादिभिः स्वजातिधर्मैः अचेत नादिभिः विजातिधर्मैः नास्ति एवंपंचास्तिकायेप्रत्यस्ति कायमनंतासप्तभंग्योभवंति अस्तित्वाभावेगुणाभावात् प दार्थेशून्यतापत्तिः नास्तित्वाभावेकदाचित् परभावत्वेन परिणमनात् सर्वसंकरतापत्तिः व्यंजकयोगेसत्तास्फु

रति तथाअसत्तायाअपिस्फुरणात्पदार्थानामनियताप्र
तिपत्तिः तत्रार्थेतन्नावाव्ययंनित्यं ॥

अर्थ ॥ हवेगुणनीसप्तनंगीकहीदेखाडेछे जेमज्ञानगुण ज्ञायकादिकगुणेअस्तिछे अनेदर्शनादिकस्वजातिएकद्रव्यव्यापिगुण तथास्वजातिनिन्नजीवव्यापि ज्ञानादिकस वेंगुण अनेअचेतनादिक परद्रव्यव्यापि सर्वधर्मनीनास्तिछे एमपंचास्तिकायनेविषे अ स्तिकायें अनंतिसप्तनंगीउपामे एसप्तनंगी स्याद्वादपरिणामेंछे तेसर्वद्रव्यादिकमांछे

हवे वस्तुमध्येअस्तिपणोनमानियें तोस्योदोषउपजेतेकहेछे जोवस्तुमांअस्तिपणो नमानियें तोगुणपर्यायनोअनावथाय अनेगुणनाअनावें पदार्थशून्यतापणो पामे

तथाजोवस्तुमध्ये नास्तिपणोनमानियेंतो तेवस्तुकदाकालें परवस्तुपणें अथवा परगुणपणें परिणमिजाय तेथीकोइवारे जीवतेअजीवपणोपामे अनेअजीवतेजीवप णोपामे तोसर्वसंकरतादोषउपजे तथा व्यंजनके० प्रकटतानोहेतु तेनेयोगेंछतोधर्म तेफुरे पणजेधर्मनीसत्ताछतिनहोय तेफुरेनही जोनास्तिपणोनमानियें तोअसत्ताप णेफुरे अनेजेवारेंअसत्तास्फुरे तेवारेंद्रव्यनो अनियामकके० अनिश्चयपणोथइजा य तेमाटेसर्वेनाव अस्तिनास्तिमयीछे व्यंजकतानोदृष्टांतकहेछे जेमकोराकुंनामांसुगं धतानीसत्ताछे तोजपाणीनेयोगेंवासनाप्रगटेछे जोवस्त्रादिकमांतेधर्मनथी तोतेमांप्रग टतोपणनथी एमसर्वत्रजाणवो हवेत्रीजोनित्यस्वनावकहेछे तेजेवस्तुनानावतेनो अ व्ययके० नहीटलवो एटलेतेमनोतेमजरहेवो तेनित्यपणोकहियें तेनाबेनेदछेतेकहेछे

एकाअप्रच्युतिनित्यता द्वितीयापारंपर्यनित्यता ॥ तथा
द्रव्याणांऊर्ध्वप्रचयतिर्यग्प्रचयत्वेनतदेवद्रव्यमितिध्रुवत्वे
ननित्यस्वनावःनवनवपर्यायपरिणमनादिभिःउत्पत्तिव्य
यरूपोनित्यस्वनावः उत्पत्तिव्ययस्वरूपमनित्यं ॥

अर्थ ॥ एकअप्रच्युतिनित्यता वीजीपारंपर्यनित्यता तिहां अप्रच्युतिनित्यतातेनेक हियें जेद्रव्यतेऊर्ध्वप्रचय तिर्यक्प्रचयनेपरिणमवे एद्रव्यतेहिज एध्रुवतारूपज्ञानथा यछे एटलेसदासर्वदा त्रणेकालेतेंहिज एवुंजेज्ञानथायछे जेमूलस्वनावपलटेनही ते अप्रच्युतिनित्यताकहियें अनेएनित्यतामांजे ऊर्ध्वप्रचयकह्यो तेउलखावेछे जेपहेले समयें द्रव्यनीपरिणतिहति तेबीजेसमयेंनवापर्यायनेउपजवे अनेपूर्वपर्यायनेव्ययें स र्वपर्यायनीपरावृत्तिथइ तोपणएद्रव्यतेनुंतेज एवुंजे ज्ञानथायते द्रव्यमांऊर्ध्वप्रचय कहियें उपरलेसमयेतेमाटेऊर्ध्वप्रचयकहियें.

तथाअनंताजीवसरिखाछे पणसर्वनिन्ननिन्नछे पणसर्वजीवजाणताए पणजीवए वोजीवत्वसत्तायेंतुल्य निन्नजीवसत्तारूपज्ञान थाय तेतिर्यक्प्रचयकहियें.

ऊर्ध्वप्रचय ते समयांतरे अनेकउत्पादव्ययनेपलटवे पणएजीवते तेजछे एवुंज्ञा नथाय एनित्यस्वनावनोधर्मजाणवो एकारणथीकार्यउपनो तेनुंज्ञानथाय तेनित्यस्व नावनोधर्मजाणवो तथाएकारणथीजेकार्यउपनो वलीज्ञानथयुं तेकारणथीबीजेका रणेबीजुंकार्यथाय एमनवेनवेकार्यउपने पणजीवतेजछे एवुंजेज्ञानथाय परंपरारूपसं ततिचालीजाय तेपारंपर्यनित्यताकहियें जेमप्रथम शरीरनेकारणेरागहतो तेहिज वस्त्रधननेकारणप्रतेरागथयो तेकारणनवारागनोनवापणोपणरागरहितआत्माकेवारे नही एपारंपर्य एटले परंपरानित्यताकहियें बीजुंनामसंततिनित्यताजाणवी तेका रणयोगेनिमित्तेंनीपजे नवानवापर्यायनेपरिणमवे एटले पूर्वपर्यायनेव्ययथवे तथा अनिनवपर्यायनेउपजवे अनित्यस्वनावजाणवो एटलेउत्पत्तिके० उपजवो व्ययके० विणसवो एवोजेस्वनाव ते अनित्यस्वनावजाणवो.

तत्रनित्यत्वंद्विविधं कूटस्थंप्रदेशादीनां परिणामित्वं ज्ञाना दिगुणानां तत्रोत्पादव्ययावनेकप्रकारौ तथापिकिंचिल्लि ख्यते विस्रसाप्रयोगजन्नेदात्द्विन्नेदोसर्वद्रव्याणांचलनसह कारादिपदार्थक्रियाकारणंन्नवत्येव ॥

अर्थ ॥तिहांवलीग्रंथांतरे नित्यपणोबेप्रकारेकह्योछे एककूटस्थनित्यता बीजीपरि णामिनित्यताछे जीवनाअसंख्यातप्रदेश तेसंख्यायें तथाक्षेत्रावगाह पलटतोनथीते तथागुणनोअविन्नाग तेसर्वकूटस्थनित्यताछे.

ज्ञानादिकगुणएसर्व परिणामिकनित्यतायेंछे केमकेगुणनोधर्मजएछे जेसमयेंसम यें स्वकार्यपणेपरिणमे अनेजेकार्यहोय. तेपरिणामिकपणेजहोय एनीतिजछे अने जोज्ञानगुणने कूटस्थनित्यतापणेमानियें तोपेहेलेसमयेंजे ज्ञानेकरीजाण्यो तेहिज जाणपणो सदासर्वदारहे पणतेमतोनथी ज्ञेयतोनवनवीरीतें परिणमतादेखायछे तो तेज्ञेयनीनवनवीअवस्थाज्ञानजाणेनही एटलेपहेलेसमयजेरीतें ज्ञानपरिणमेछे तेरी तें परिणमजोवुंजोईयें अनेएरीतें ज्ञानयथार्थथयुं एमघटेनही तेमाटेज्ञेयजेघटपटा दिक तेजेमपलटेछे तेमज्ञानपणजाणे तोहिजज्ञानयथार्थथाय तेमाटेज्ञानगुण ते नवानवाज्ञेयनेजाणवामाटे परिणामीजाणवो अनित्यज्ञायकताशक्ति माटेनित्य ए रीतें नित्यानित्यस्वनावी सर्वगुणछे सर्वद्रव्यनेविषेपोतानीक्रियानुंकारणथायजछे.

तत्रचलनसहकारित्वंकार्यंधर्मास्तिकायं द्रव्यस्यप्रतिप्रदेशस्थचलनसहकारिगुणाविभागाः उपादानकारणंकारणस्यैवकार्यपरिणमनात् तेनकारणत्वपर्यायव्ययः कार्यत्वपरिणामस्योत्पादः गुणत्वेनध्रुवत्वं प्रतिसमयंकारणस्यापिउत्पादव्ययौ कार्यस्याप्युत्पादव्ययावित्यनेकांतजयपताकाग्रंथे एवंसर्वद्रव्येषुसर्वेषांगुणानांस्वस्वकार्यकारणताज्ञेया इतिप्रथमव्याख्यानं ॥

अर्थ॥ तिहांजेमधर्मास्तिकायद्रव्यनो चलणसहकारीपणो तेमुख्यकार्यछे अने अधर्मास्तिकायद्रव्यनो स्थिरसहायी तेमुख्यकार्यछे वलीआकाशद्रव्यनुंअवगाहनादानते मुख्यकार्यछे जीवनोजाणवा देखवारूपउपयोगतेमुख्यकार्यछे पुद्गलनोवर्णगंधरसस्पर्शीपणो तेमुख्यकार्यछे इत्यादिस्वकार्यनोथावुंछे तेजिहांथावुं तिहां नवनधर्मथयो अने जिहांनवनधर्म तेउत्पादथयो अनेउत्पादहोयते व्ययसहितजहोय तेनवनधर्म तत्वार्थग्रंथमध्येकह्योछे हवेतेउत्पादव्ययबेप्रकारनाछे एकप्रयोगथीथाय अनेबीजो विश्रसाके० सहजेपरिणामीधर्मथाय हवेइहांसहजनो उत्पादव्ययकहेछे तिहांधर्मास्तिकायादि छद्रव्यने पोतापोताना चलणसहकारादिगुणनी प्रवृत्तिरूप अर्थक्रियानोकरवोथायज अनेचलणसहकारपणोतेकार्य धर्मास्तिकायद्रव्यने प्रतिप्रदेशें रह्यो जे चलणसहकारीगुणाविभाग तेउपादानकारणछे तेहिजकार्यपणेपरिणमेछे एटले कारणपणानोव्यय अनेकार्यपणानोउत्पाद तथा चलणसहकारीपणे ध्रुवछे एमज अधर्मास्तिकायनेविषे थिरसहायगुणनुं प्रवर्त्तनछे तथाआकाशास्तिकायनेविषेपण अवगाहनागुणनुंप्रवर्त्तन एमजछे वलीपुद्गलमां पूरणगलनादिकगुणनुंप्रवर्त्तनछे तेमजजीवद्रव्यमां ज्ञानादिकगुणनुंप्रवर्त्तनछे अथवावली अनेकांतजयपताकाग्रंथने विषेएमपणकह्युंछे जेप्रतिसमयें गुणनेविषे कारणपणो नवोनवोउपजेछे एटलेकारणपणानोपण उत्पादव्ययछे तेमजप्रतिसमयें कार्यपणोपण नवोनवो उपजेछे एटलेकार्यपणानोपण उत्पादव्ययछे एमसर्वद्रव्यनेविषे सर्वगुणनोकार्यपणो कारणपणोउपजेविणसेछे एमउत्पादव्ययनो एकस्वरूपप्रथमभेदकह्यो.

तथाचसर्वेषांद्रव्याणांपारिणामिकत्वं पूर्वपर्यायव्ययः नवपर्यायोत्पादः एवमप्युत्पादव्ययौ द्रव्यत्वेनध्रुवत्वंइतिद्वितीयः ॥

अर्थ ॥ सर्वधर्मछेतेपरिणामिकभावेंछे तिहांपूर्वपर्यायनो व्यय अनेनवापर्यायनो उत्पाद एउत्पादव्यय समयसमयेंछे अनेद्रव्यपणोध्रुवछे एबीजोभेद.

प्रतिद्रव्यंस्वकार्यकारणपरिणमनपरावृत्तिगुणप्रवृत्तिरूपापरिणतिः अनंताअतीता एकावर्त्तमाना अन्याअनागतायोग्यतारूपाः तावर्त्तमानाअतीताभवंति अनागतावर्त्तमानाभवंति शेषाअनागताकार्ययोग्यतासन्नताभवंते इत्येवंरूपावुत्पादव्ययौ गुणत्वेनध्रुवत्वं इतितृतीयः अत्रकेचित्कालापेक्षया परप्रत्ययत्वंवदंति तदसत् कालस्यपंचास्तिकायपर्यायत्वेनैवागमेउक्तत्वात् इयंपरिणतिः स्वकालत्वेनवर्तनात्सप्रत्ययं एवंतथाकालस्यभिन्नद्रव्यत्वेपिकालस्यकारणताअतीतानागतवर्त्तमानभवनंतुजीवादिद्रव्यस्यैवपरिणतिरिति ॥

अर्थ ॥ सर्वद्रव्यनेविषे स्वके० पोतानुंकारण परिणमन परावृत्तिके० पलटणपणे गुणनीप्रवृत्तिरूप परिणमनछे ते परिणतिअनंति अनंतजातिनी अतीतकालेंथइछे अनेअनंतिजातिनी एकवर्त्तमानकालेंछे अनेबीजीअनागतयोग्यतारूपपणे अनंतिछे ते वर्त्तमानपरिणतिते अतीतथायछे एटले तेपरिणतिमध्ये वर्त्तमानपणानोव्यय अने अतीतपणानोउत्पाद तथा परिणतिपणेध्रुवछे अनेअनागतपरिणति तेवर्त्तमानथायछे तिहांअनागतपणानोव्यय वर्त्तमानपणानोउत्पाद अनेछतिपणेध्रुव अने अनागतकार्ययोग्यता तेदूरहताते आसन्नके० नजीकपणोपामे एटलेदूरतानोव्यय अनेनजीकतानोउत्पाद तथाअतीतमध्ये दूरतानोउत्पाद अनेनजीकतानोव्यय एरीतेंसर्वद्रव्यनेविषे अतीतवर्त्तमान तथाअनागतपणे परिणतिछे तेपरिणमेजछे एद्रव्यनेविषेस्वकालरूप परिणमनछे एउत्पादव्ययनोत्रीजोभेदजाणवो.

इहांकेटलाककालनीअपेक्षालेइने परप्रत्ययपणोकहेछे तेखोटोछे कारणके कालद्रव्यजेछेतेपंचास्तिकायनोपर्यायछे अने परिणतितोद्रव्यनोस्वधर्मछे माटेकालतेस्वकालरूपवस्तुनोपरिणाम तेनोभेदछे अथवाकालनेभिन्नद्रव्यमानियें तोपणकालतेकारणपणेछे अनेअतीतअनागतवर्त्तमानरूपपरिणति तेतो जीवादिकद्रव्यनोधर्मछे ते माटेएउत्पादव्ययपणस्वरूपजछे एत्रीजोभेदथयो.

तथाचसिद्धात्मनिकेवलज्ञानस्ययथार्थज्ञेयज्ञायकत्वात् य
थाज्ञेयाधर्मादिपदार्थाः तथाघटपटादिरूपावापरिणमं
तितथैवज्ञाने भासनात् यस्मिन्समयेघटस्यप्रतिभासः स
मयांतरेघटध्वंसेकपालादिप्रतिभासः तदाज्ञानेघटाप्रतिभा
सध्वंसः कपालप्रतिभासस्योत्पादः ज्ञानरूपत्वेनध्रुवत्वमि
तितथाधर्मास्तिकायेयस्मिन्समयेसंख्येयपरमाणूनांचलन
सहकारिता अन्यसमयेअसंख्येयानां. एवंसंख्येयत्वस
हकारिताव्ययः असंख्येयानंत सहकारितात्पादः चल
नसहकारित्वेन ध्रुवत्वं एवमधर्मादिष्वपिज्ञेयं एवंसर्वगुण
प्रवृत्तिषु इतिचतुर्थः ॥

अर्थ ॥ तथाके० तेमजवलीसिद्धात्मानेविषे केवलज्ञानगुणनीसंपूर्णप्रगटताछे तेय थार्थजेकालें जेज्ञेयजेमपरिणमे तेकालेंतेमजजाणे एहवोज्ञेयनोज्ञायक तेकेवलज्ञानछे जेमधर्मादिद्रव्य तथाघटपटादिज्ञेयपदार्थ जेरीतेपरिणमे तेरीतेज केवलज्ञानजाणे ते जेसमयेघटज्ञानहतुं तेसमयांतरे घटध्वंसथये कपालनुंज्ञानथाय तेवारेंघटप्रतिभा सनोध्वंस कपालप्रतिभासनोउत्पाद अनेज्ञाननोध्रुवपणो एमदर्शनादि सर्वगुणनोप्र वर्त्तनजाणवो.

तथाधर्मास्तिकायनेविषे जेसमयेसंख्यात परमाणुनो चलनसहकारिपणो हतो फरीसमयांतरे असंख्यात परमाणुने चलनसहकारी पणोकरे तेवारें संख्याता पर माणुचलनसहकारतानोव्यय अनेअसंख्येयपरमाणुने चलनसहकारतानो उत्पाद अनेचलनसहकारी पणेध्रुवछे एमजअधर्मास्तिकायादिकनेविषे पण सर्व गुणनीप्रवृ त्तिथायछे एरीतेएकद्रव्यनेविषेअनंतागुणनीप्रवृत्तिछे इहांकोइपुछशे जेधर्मास्तिकाय मध्ये अनंताजीवतथाअनंता परमाणु ते चलणसहकारीथाय एटलोचलनसहका रीछे तोथोडाजीव अनेथोडा परमाणुनें चलणसहकारकरतां बीजोगुणक्योअणप्रव र्त्यो रह्यो एमकहे तेनेउत्तर केनिरावरणजेद्रव्यछे तेनोगुणअणप्रवर्त्यो रहेजनही अनेजीवपुद्गलजे आवी पहोता तेनेसहकारेंसर्व चलनसहकारीगुणना पर्यायते प्रव र्तेजछे केमकेअलोकाकाशमध्ये जोअवगाहकजीवपुद्गलनथी तोपण अवगाहकदान

गुणतोप्रवर्त्तेंजछे तेमधर्मास्तिकायादिकमां जीवपुद्गलथोडाने पोचवे पणगुणतोबधो प्रवर्त्तेंजछे एमधारवो एरीतेंगुण पर्यायनो उत्पादव्यय ध्रुवरूपधर्मकेवो एचोथुंरूपकह्युं.

तथासर्वेपदार्थाः अस्तिनास्तित्वेनपरिणामिनः तत्रास्ति भावानांस्वधर्माणां परिणामिकत्वेनउत्पादव्ययौस्तः नास्ति भावानांपरद्रव्यादीनांपरावृत्तौ नास्तिभावानांपरावृत्तित्वेना प्युत्पादव्ययौ ध्रुवत्वंच अस्तिनास्तिद्वयौ इतिपंचमः

अर्थ ॥ तथासर्वद्रव्यमांअस्तितथानास्ति ए बे स्वभावपरिणमिरह्याछे तिहांजेअ स्तिस्वभावछे तेस्वद्रव्यादिकनोछे ते जेवारेंज्ञानगुण घटजाणतोहतो तेवारें घटज्ञा ननीअस्तिताहती अनेतेजघटध्वंस थये कपालज्ञानथयुं तेवारें घटज्ञाननीअस्तिता नो व्ययथयो अने कपालज्ञाननी अस्तितानोउत्पादथयो एरीतेंअस्तितानोउत्पादव्य यछे तेजरीतेंनास्तितानोपणउत्पादव्ययजाणवो जेपहेलीघटनास्तिताहती तेपछेघट ध्वंसेंकपालनास्तिताथयी एमपरद्रव्यनेपलटवे नास्तितापलटेछे तेस्वगुणनेपरिणामिक कार्यनेपलटवेकरीनेअस्तितापलटेछे अनेजिहांपलटवापणो तिहांउत्पादव्ययथायेज एमद्रव्यमांसामान्यस्वभाव सर्वधर्मेछे तेमां जेमसंभवेतेम श्रीप्रभुनीआज्ञायें उपयोगदे इने उत्पादव्ययपणोंकरवो अने अस्तिनास्तिपणे ध्रुवछे एपांचमोअधिकारकह्यो.

तथापुनःअगुरुलघुपर्यायाणां षड्गुणहानिवृद्धिरूपाणांप्र तिद्रव्यंपरिणमनात् नानाहानिव्ययेवृध्युत्पादः वृद्धिव्यये हान्युत्पादः ध्रुवत्वंचागुरुलघुपर्यायाणां एवंसर्वद्रव्येषुज्ञेयं तत्वार्थवृत्तौआकाशाधिकारेयत्राप्यवगाहकजीवपुद्गलादि र्नास्ति तत्राप्यगुरुलघुपर्यायवर्त्तनयावश्यलेचानित्यताभ्यु पेया तेचअन्येअन्येचभवंति अन्यथातत्रनवोत्पादव्य यौनापेक्षिकाविति न्यूनं एवंसल्लक्षणंस्यात् इतिषष्ठः ॥

अर्थ ॥ तथाके० तेमज वलीसर्वद्रव्यतथापर्याय ते अगुरुलघुधर्में संयुक्तहोय द्रव्यनेप्रदेशें अगुरुलघुअनंतोछे तेअगुरुलघुसमयेंसमयें प्रदेशें तथापर्यायें कोइ कवारेंवृद्धिपामे कोइकवारेंघटीजाय तेवधुघटुथवोछप्रकारेंछे १ अनंतभागहानि २ असंख्यातभागहानि ३ संख्यातभागहानि ४ संख्यातगुणहानि ५ असंख्यातगुण हानि ६ अनंतगुणहानि एछप्रकारेंहानि तथा १ अनंतभागवृद्धि २ असंख्यातभा

गवृद्धि ३ संख्यातभागवृद्धि ४ संख्यातगुणवृद्धि ५ असंख्यातगुणवृद्धि ६ अनंत गुणवृद्धि एहप्रकारनीवृद्धि तेसर्वद्रव्यनासर्वप्रदेशें सर्वपर्यायमांथाय एकप्रदेशमां को इकसमयेंवधेछे कोइकसमयेंघटेछे जेम परमाणुमांवर्णादिक वधेघटेछे तेमअगुरुलघु पणोपण वधेघटेछे हानिनोव्ययछे तोवृद्धिनोउत्पादछे अथवावृद्धिनोव्ययछे तोहानि नोउत्पादछे पणअगुरुलघुध्रुवनोध्रुवछे एमसर्वद्रव्यनेविषेजाणवो तिहांतत्वार्थटीका मां आकाशद्रव्यनें अधिकारेकह्युंछे तेलखियेंछैयें जिहांअलोकाकाशमध्ये अवगाहक जीवपुद्गलादिकद्रव्यनथीतिहांपण अगुरुलघुपर्यायवंतपणो अवश्यछे तेअगुरुलघु नीअनित्यता अवश्यअंगीकारेछे अनेतेअगुरुलघु तेपर्यायें तथाप्रदेशें अन्यअन्यके० बीजोबीजोथायछे एटलेपूर्वसमयें अगुरुलघुनोव्यय अनेबीजेसमयें नवाअगुरुलघुनो उत्पादछे जोएरीतेनवोउत्पादव्यय गवेषियेंनही तोअलोकाकाशनेंविषे सत्लक्षण न्यू नके० ऊणोपड़े जेउत्पादव्ययध्रुवतासंयुक्ततेसत्कहियें अनेजेद्रव्यहोयतेसत्पणासंयु क्तजहोय माटेअगुरुलघुनापरिणमन सर्वद्रव्यमांसर्वपर्यायमां सर्वप्रदेशमांछेएअगुरु लघुनो उत्पादव्ययकह्यो एहत्रोअधिकारथयो.

तथाभगवतीटीकायां तथाच अस्तिपर्यायतःसामर्थ्यरूपा विशेषपर्यायास्तेचानंतगुणास्तेप्रतिसमयंनिमित्तभेदेनपरावृ त्तिरूपाः तत्रपूर्वविशेषपर्यायाणांनाशः अभिनवविशेषपर्या याणामुत्पादपर्यायवस्त्वेध्रुवत्वं इत्यादिसर्वत्रज्ञेयं इतिसप्तमः

अर्थ ॥ तेमजवली अस्तिपर्यायथी विशेषपर्यायजे सामर्थ्यरूप तेअनंतगुणाछे एभगवतीसूत्रनीटीकामध्येकह्योछे जेअस्तिपर्याय तेज्ञानादिकगुणनाअविभागरूपपर्या यछे जेपर्यायपर्यायमांसर्वज्ञेयजाणवानुं सामर्थ्यछे तेविशेषपर्यायछे तथामहाभाष्ये यावंतोज्ञेयास्तावंतोज्ञानपर्यायाः एसामर्थ्य पर्यायगवेष्याछे एसामर्थ्यपर्याय तेज्ञेयनें निमित्तेछे तेज्ञेयतोअनेकरूपजेछे नेअनेकविणशेछे तेवारेंविशेषपर्यायपणपलटेछे तेप्र तिसमयें निमित्तभेदनी परावृत्तिपलटवेथी पूर्वविशेषपर्यायनाशथाय तथाअभिनववि शेषपर्यायनोउपजवोछे अनेपर्यायनीअस्तिताध्रुवछे एमगुणपर्यायनोउत्पादव्ययध्रुव पणो ते सातमोछे ए अस्तिनास्तिस्वभाव वखाण्या.

नित्यताऽभावेनिरन्वयताकार्यस्यभवति कारणाभावताच भवति अनित्यतायाअभावेज्ञायकतादिशक्तेरभावः अर्थ

क्रियासंभवः तथासमस्तस्वभावपर्यायाधारभूतभव्यदेशा नांस्वस्वक्षेत्रभेदरूपाणामेकलापिंमीरूपापरत्यागः एकस्व भावः क्षेत्रकालभावानांभिन्नकार्यपरिणामानांभिन्नप्रभाव रूपोनकस्वभावः एकलाभावेसामान्याभावः अनेकलाभा वेविशेषधर्माभावः स्वस्वामिलव्याप्यव्यापकताप्यभावः

अर्थ ॥ एमज सर्वद्रव्यमांनित्यता तथाअनित्यताछे एनित्य अनित्यपणाविना द्रव्यकोइनथी जोद्रव्यमांनित्यतानहोयतो कार्यनोअन्वयकोनेहोय एटलेअमुककार्यते अमुकद्रव्यें कर्यो एमकह्योजायनही माटेद्रव्यमांनित्यतामानवाथीज अमुकद्रव्येअ मुककार्यकर्यो एमकेवायछे माटे जोद्रव्यनेनित्यपणेजमानियें तोगुणनुंकार्य तेद्र व्यनोकेवाय अनेगुणतेद्रव्यनकेवाय अनेजोद्रव्यनित्यनहोय तोकारणपणानो अभा वथाय माटेद्रव्यमां नित्यतामानवी अनेजोद्रव्यमां अनित्यपणोनमानियेंतो जाणंग आदेदेइनें सर्वद्रव्यना गुणरूपकार्यनो अभावथइजाय अर्थक्रियासंभवेनही एटलेको इकअनित्यपणोहोय तोअर्थक्रियानेकरे केमकेकरवापणोकोइकबीजापणो एटलेनवा पणो निपजाववो तेपूर्वपर्यायनो ध्वंसथयेथीथाय अनेतेएकनोध्वंस अनेंकोइकबीजा नवानोनीपजवो तेद्रव्यमांअनित्यपणोछे एटलेनित्यस्वभाव तथा अनित्यस्वभाव उ लखाव्या हवेएकस्वभाव तथाअनेकस्वभाव उलखावेछे.

तथाके० तेमज समस्तके० सर्वजेस्वभाव अस्तित्व प्रमेयत्व अगुरुलघुआदिक समस्तपर्याय गुणाविभागादिक तेसर्वनुंआधारभूतक्षेत्र तेप्रदेशछे ते स्वके०पोता नाजेक्षेत्र तेसर्वभेदरूप जूदाजूदाछे एटलेसंख्याताप्रदेश भिन्नछे पणतेएकपिंमपणो किवारेंतजतानथी सर्वप्रदेशमां अंतरालक्षेत्रपणो कोईवारेंपामतोनथी जेअनंतास्वभा व अनंतपर्याय तेअसंख्यातप्रदेशरूप तेलुंप्रमाणफिरतुंनथी एवोजेद्रव्यनेविषे स मुदायपिंमपणोरहेछे तेएकस्वभावकहियें तेपंचास्तिकायमध्ये १ धर्म २ अधर्म ३ आ काश एत्रणद्रव्य एकेकछे अनेजीवद्रव्यअनंताछे तेथीपुद्गलपरमाणु अनंतगुणाछे तेए कजीव अनेकरूपनवनवाकरे पण अंतरपडेनही तेमाटे द्रव्यमध्येएकस्वभावछे.

क्षेत्रअसंख्यातप्रदेश कालउत्पादव्ययरूप भावपर्याय गुणनाअविभागते पोताना भिन्नकार्य परिणामीछे तेसर्वनोभिन्नप्रवाहछे एटलेसर्वनो कार्यपणोभिन्नछे तेमाटेद्र व्यने सर्वस्वभावपर्यायभेदें विचारताद्रव्यमां अनेकस्वभावपणछे. जोवस्तुमां एकप णानो अभावमानियें तोसामान्यपणोरहेनही अनेगुणनो पर्यायनो स्वामीआधारते

कोणथाय अनेआधारविनागुणादिआधेयते क्यांरहे तेमाटेद्रव्यनो एकपणोछे. जो वस्तुमां अनेकपणोनमानियें तो द्रव्यतेविशेषरहितथईजाय तेथीगुणनोअनेकपणो शीरीतेद्रव्यनेविषे पामियें माटे द्रव्यमां गुणकार्यनो अनेकपणोपणछे तथास्वस्वामि व्याप्य व्यापकभाव केमतेरे जेगुणपर्याय तेस्वके० धनअनेद्रव्य तेतेनोस्वामीछे अथवा द्रव्यतेव्याप्य अने गुणपर्यायते व्यापकछे एरीते द्रव्यमां एकस्वभाव तथाअनेकस्व भाव जाणवा.

स्वस्वकार्यभेदेन स्वभावभेदेन अगुरुलघुपर्यायभेदेन भेदस्वभावः अवस्थानाधारताद्यभेदेन अभेदस्वभावः भे दाभावेसर्वगुणपर्यायाणां संकरदोषः गुणगुणीलक्ष्यलक्षणः कार्यकारणतानाशः अभेदाभावेस्थानध्वंसः कस्यैतेगु णाःकोवागुणीइत्याद्यभावः

अर्थ ॥ स्वस्वके० पोतपोताना कार्यनेभेदेंकरी एटलेजीवद्रव्यमां ज्ञानगुण तेजा णवानुंकार्यकरे अनेदर्शनगुण देखवानुंकार्यकरे तथाचारित्रगुण थिरतारमणतारूप कार्यकरे तथापुद्गलद्रव्य ते रूपपणोभिन्नकार्यकरे तथावर्णपणो गंधपणो रसपणो अनेस्पर्शपणो सर्वकार्यभिन्नछे तथास्वभावभेदते अस्तिस्वभावछतिरूपछे नित्यस्वभा व अविनाशीपणोछे अनित्यपणोते पलटणरूपछे एकपणोतेपिंडरूपछे अनेकपणोते प्रदेशादिकछे इत्यादि स्वभावभेद तथाअगुरुलघुपर्याय प्रदेशेंगुणाविभागें जूदोजूदोछे कोईकोईनोतुल्यनथी हानिवृद्धिरूपपरिणमनछे इत्यादि प्रकारे द्रव्यमांभेदस्वभावछे.

तथासर्वधर्मनो अवस्थानके० रेहेवो तेनेआधारपणो कार्यनी तुलनाके० सरि खापणोकेवारेंभिन्नपडतोनथी तेमाटेद्रव्यमां अभेदस्वभावछे.

जोद्रव्यगुणपर्यायमांभेदस्वभावनहोयतो सर्वसंकरएकपणोथाय तेवारें कार्यनो भेदकेमपडे तेमाटे सर्वद्रव्यगुणपर्यायमां भेदसर्वभावछे. जीवतेचेतनालक्षणवंत अजीवतेचेतनारहित एभेदछे अजीवमध्ये जेधर्मास्तिकायद्रव्यते चलणसहकार नेंकरेछे पणबीजाअजीवद्रव्यतेएकार्यकरतानथी एमअधर्मास्तिकाय थिरसहायगु णनेंकरेछे आकाशअवगाहदाननेंकरेछे पुद्गलरूपी आवरणस्कंधादिकपरिणमनकरेछे एमसर्वद्रव्यनेंभेदछे तोजभिन्नभिन्नद्रव्यकेहवायछे इहांकोइकहेशे जीवअनंतातेतोस रिखाछे तोसर्वजीवनें एकद्रव्यशावास्तेनकह्यो तेनेंउत्तरजेरूपैया सोनारूपापणे अथ वा धवलापणे तोलपणेसरिखाछे पणवस्तुनापिंडपणे भिन्नछे तेमाटे सोनेपण भि

न्नभिन्नकद्दियेंछैयें तेमजीवनेपण भिन्नभिन्नकद्दियें वलीउत्पादव्ययनोफिरवो सर्वमां ते जरीतनोछे पणपलटण तेएकरीतनोनथी तथाअगुरुलघुनी हानिवृद्धिनो फिरवोपण सर्वद्रव्यमां पोतपोतानेछे तेथीसर्वजीव तथासर्वपरमाणुभिन्नछे एन्नेदस्वन्नाव जाणवो.

तन्मयतावस्थानाधारताद्यन्नेदेन अन्नेदस्वन्नावः तथातन्मयता अवस्थानतानो अन्नेदछे अनेआधारतानोपण अन्नेदपणोछे तेअन्नेदस्वन्नावछे.

तथान्नेदनोजो अन्नावपणोमानियें एटलेवस्तुमांन्नेदपणो नमानियेंतो सर्वगुण तथापर्यायनो संकरके० एकमेकपणो एदोषलागे तोगुणीकोण तथागुणकोण द्रव्यकोण एमगुणपर्यायने केद्रव्यनो क्योपर्याय एमवेहेचणथायनहीं गुण तथागुणी तथा जेउलखवायोग्यलक्षण तेनुंचिन्ह तथाकारणधर्म तथाकार्यधर्मता एबेजूदापडेनहीं कार्यधर्म तथाकारणधर्मनो नाशथाय माटेवस्तुमां न्नेदस्वन्नावमानवो.

तथाजोवस्तुमांअन्नेदपणोनमानियें तोस्थानध्वंसथायछे जेस्थान कोण अनेतेस्थानकमां रहेतेकोणछे इत्यादिकनोअन्नावथायछे एमविचारतां सर्वथाएकपणोमानतां कोणगुणी अनेकोणगुण एमउलखाणनथाय. एरीतेंन्नेदान्नेदस्वन्नाववस्तुमां मानवा.

परिणामिकत्वेनउत्तरोत्तरपर्यायपरिणमनरूपोन्नव्यस्वन्नावः तथातत्वार्थवृत्तौ इहतुन्नावेद्रव्यंन्नव्यंन्नवनमितिगुणपर्यायाश्चन्नवनसमवस्थानमात्रकाएवउथ्थितासीनोत्कुटकजागृतशयितपुरुषवत्तदेवच वृत्यंतरव्यक्तिरूपेणोपदिश्यते जायतेअस्तिविपरिणमतेवर्द्धते अपक्षीयते विनश्यतीति पिंडातिरिक्तवृत्यंतरावस्थाप्रकाशतायांतुजायतेइत्युच्यते सव्यापारैश्चन्नवनवृत्तिः अस्तिइत्यनेननिर्व्यापारात्मसत्ताख्यायते न्नवनवृत्तिरुदासीनाअस्तिशब्दस्यनिपातत्वात् विपरिणमतेइत्यनेनतिरोन्नूतात्मरूपस्यानुछिन्नतथावृत्तिकस्यरूपांतरेणन्नवनं यथाक्षीरंदधिन्नावेनपरिणमते विकारांतरवृत्यान्नवनवत्तिष्ठते वृत्यंतरव्यक्तिहेतुन्नाववृत्तिर्वाविपरिणामः वर्द्धतइत्यनेनतुपचयरूपःप्रवर्तते यथांकुरोवर्द्धतेउपचयवत्परिणामरूपेणन्नवनवृत्तिर्व्यज्यते अपक्षीयते इत्य

नेनतुतस्यैवपरिणामस्यापचयवृत्तिराख्यायते दुर्बलीनवत् पुरुषवत्पुरुषवदपचयरूपजवनवृत्त्यंतरव्यक्तिरुच्यते विनश्यति इत्यनेनाविर्भूतजवनवृत्तिस्तिरोजवनमुच्यते यथा विनष्टोघटः प्रतिविशिष्टसमवस्थानात्मिकाजवनवृत्तिस्तिरोजूतानत्वजावस्यैवजाता कपालाद्युत्तरजवनवृत्त्यंतरक्रमाविच्छिन्नरूपत्वादित्येवमादिनिराकारैर्द्रव्याण्येवजवनलक्षणान्यपदिश्यंते· त्रिकालमूलावस्थायाअपरित्यागरूपोऽजव्यस्वजावः जव्यत्वाजावविशेषगुणानामप्रवृत्तिः अजव्यत्वाजावेद्रव्यांतरापत्तिः

अर्थ ॥ हवे जव्यस्वजाव तथाअजव्यस्वजावकहेछे जीवअजीवादिक द्रव्यछे तेपरिणामिछे समयेंसमयें नवानवापरिणामें परिणमेछे तिहांपूर्वपर्यायनेविनाशें अने उत्तरोत्तर नवानवापर्यायनेप्रगटवे एवीजे द्रव्यनीपरिणति तेनुंमूलकारणते जव्यस्वजावकहियें तिहांतत्वार्थटीकामध्येकह्योछे इहांद्रव्यानुयोगनेविषे जावधर्मनेविषे एटलेगुणपर्यायनेविषे द्रव्य ते जव्यके० जवनथयो एटलेनवोनीपजवो तेजवन इतिके० एमवस्तुना गुणपर्यायजेछे तेजवनके० नवोथवारूप समवस्थानमात्रछे एटले नवानवा थावारूपछे तिहांदृष्टांतकहेछे जेपुरुष उत्थितके० ऊठ्यो आसीनके० फरीतेद्विजबेगो बेसवुंतेपद्मासनकहियें अथवाउकडवुंतेआसनसहितसूवुं जेमइत्यादिक पर्यायेंतेपुरुषथायछे तेम तेहजवृत्त्यंतरके० पूर्वपर्यायनोविनाश अनेउत्तरपर्यायनो उपजवोते वृत्त्यंतरकहियें वृत्त्यंतरव्यक्तिरूपपणेउपदेशेछे तेजवनधर्मनीप्रवृत्तिकहेछे जायतेके० नवोऊपजे अस्तिके० छतिपणेरहे विपरिणमतेके० बीजापणेपरिणमे वली सामर्थ्यधर्मेवधे अने अपक्षीयतेके० घटे विनश्यतिके० विनाशपामे पिंमके० समुदायपणो तेथो अतिरिक्तके० बीजीवृत्तिजे गुणनी प्रवृत्त्यंतरनी अवस्थाने प्रकाशथवे करीने जे जवनपणोथाय एटलेहेरीजेजवनवृत्ति तेसव्यापारछे पणनिर्व्यापारनथी.

अस्तिएवचने निर्व्यापार आत्मशक्तिछे तेकहियेंछैयें तेपण जवनवृत्तिथी उदासीनछे एटलेजवनवृत्तिने ग्रहणकरतीनथी अस्तिशब्दने निपातपणोछे विपरिणमतेएवचने तिरोजूतके० अणप्रगटीजेवस्तु तेमांतद्रूपपणे अनुच्छिन्नके० विच्छेदगई तथावृत्तिकस्यके० तेरीतें वर्ततिआत्मशक्ति तेनोरूपांतरेथवो तेजवनकहियें तिहांदृष्टांत जेम

क्षीरते दूध दधिनावेंपरिणमे विकारांतरेथवो तेरीतेंरहे एनवनधर्मेकहियें जेज्ञानादिप र्यायमां अनंतज्ञेय जाणवानीशक्तिछे पणजेज्ञेय जेरीतेंपरिणमे तेरीतेंज्ञानगुणप्रवर्ते एज्ञानगुणनुंप्रवर्त्तन तेप्रतिसमयें विपरिणामपणे परिणमनछे एपणनवनधर्मछे व लीवृत्त्यंतरवर्तने अन्यपणे व्यक्तिनेहेतुकरणे जेनवांतरें वर्तवो तेविपरिणामकहियें त थावली वर्द्धतेके० वधेएवचने उपचयरूपपणेप्रवर्ते जेमअंकुरवधेछे तेमवर्णादिक पु ज्ञलना गुणउपचयपणेवधे एउपचयरूपनवनतावृत्ति व्यज्यतेके० प्रगटकरियेंछैयें.

एमगुणने कार्यांतरपणे परिणमवे द्रव्यमां नवनधर्मछे अपक्षीयते एवचनेकरीने तुके० वलीतेहिजपरिणामनो कणोथवो अथवाटलवोकहियें दुर्बलथतापुरुषनीपरें जेमपुरुषदुर्बलथाय तेमपर्यायनेघटवे द्रव्यप्रमाणादिक तथातेसमयें अगुरुलघुपर्या यघटवे तेदुर्बलथवुं तेरूपजेनवनवृत्तिनेअंतरे व्यक्तिके० प्रगटताकहिछे तथाविनश्य ति एमकेवाथी आविर्भूतके० प्रगटथयोजेनवनधर्मनुंवर्तवो तेनो तिरोनावथयोक हियें जेमविणस्योघट जेमृत्पिंमनेविषे तेचक्रादिकारणे प्रगटथयोजेघट तेनेप्रध्वंसें विनाशकहियें एमद्रव्यनेविषे कार्यकरवारूपजेपर्याय तेने तिरोनावें अन्यपणे कार्य करणरीते समवस्थानजेरहेवुं तेसमयेंतेनवनवृत्तिकहियें तथा तिरोनावपणानेअना वें थावुंजेकपालादिक उत्तरनवन तेपणेवर्त्तवुं एपणनवनधर्मछे एमअनुक्रमेअविछिन्न निरंतररूपेंइत्यादिकअनेकआकारेंद्रव्यतेजनवनलक्षणकहियें एनव्यस्वनाव जाणवो द्रव्यनेविषे जे अस्तित्व वस्तुत्व प्रमेयत्व अगुरुलघुत्वादिक धर्मतेत्रणेकालमां मूलअ वस्थाने अपरित्यागेके० तजतानथी तेहिजरूपपणेरहे एहवाजेटलाधर्मते अनव्य स्वनावजाणवो जेअनेक उत्पादव्ययने परिणमने फिरवेफिरे पणजीवनोजीवपणोप लटायनहीं तेमज अजीवनो अजीवपणो पलटायनही एसर्वेअनव्यस्वनावजाणवो.

हवे एबेस्वनाव जोद्रव्यमांनमानियें तोस्योदोषथाय तेकहेछे जोद्रव्यनेविषे नव्य पणोनमानियें तोद्रव्यनाजेविशेषगुण गतिसहकार स्थितिसहकार अवगाहदान ज्ञा यकता वर्णादिजेपंचास्तिकायना विशेषगुण तेनीप्रवृत्तिनथाय अनेप्रवृत्तिविना कार्य नोकरवोनथाय अनेकार्यनेअणकरवे द्रव्यनोव्यर्थपणोथाय तेमाटेनव्यस्वनावछे.

जोद्रव्यनेविषे अनवनरूप अनव्यस्वनावनहोय अनेएकलो नवनस्वनावजहोय तोनवानवापणेथवे तेद्रव्यपलटीने अन्यद्रव्यथयीजाय तेमाटे द्रव्यत्व सत्व प्रमेयत्वा दि धर्मेअनव्यपणोछे तेथीज द्रव्यपलटतोनथी तेमनोतेमजरहेछे एअनव्यस्वनावछे.

वचनगोचरायेधर्मास्तेवक्तव्या इतरेअवक्तव्याः तत्राक्षराः संख्येयाः तत्संनिपाताअसंख्येयाः तद्गोचराभावाः भाव श्रुतगम्याः अनंतगुणःवक्तव्याभावेश्रुताग्रहणापत्तिः अ वक्तव्यभावे अतीतानागतपर्यायाणां कारणतायोग्यता रूपाणामभावः सर्वकार्याणां निराधारतापत्तिश्च सर्वेषांपदा र्थानांये विशेषगुणाश्चलन स्थित्यवगाहसहकारपूर्णगल नचेतनादयस्तेपरमगुणाः शेषाःसाधारणाः साधारणासा धारणगुणास्तेषां तदनुयायिप्रवृत्तिहेतुःपरमस्वभावः इ त्यादयःसामान्यस्वभावाः

अर्थ ॥ आत्मानो वीर्यनामागुण तेनाअविभाग जेवीर्यांतराय कर्म्मेंआवखाछे ते जवीर्यांतरायनेक्षयोपशमें तथाक्षयथवाथी प्रगटथोजेवीर्यधर्म तेनेभाषापर्याप्ति नाम कर्मनेउदयें लीधराणाजे भाषावरगणानापुद्गल तेशब्दपणेपरिणमे तेशब्दपुद्गलखंधछे पणश्रोताजनने ज्ञाननाहेतुछे एटलेजेमांजेगुणनहोय तेगुणनुंकारणपण थायनही एमजेकहेछे तेमृषाछे केमकेजेनिमित्तकारणहोय तेमांगुणहोयकिंवानपणहोय अने उपादानकारणमां तेगुणनाकारणतापणे तथा योग्यतापणेनियामकछे तेवचनयोगें जग्रहवाय एवाजेवस्तुमांधर्मछे तेनेवक्तव्यधर्मकहियें अनेतेथीइतरके० जूदाजेधर्मा स्तिकायद्रव्यमां अनेकधर्मछे तेवचनमांग्रहवातानथी तेवासर्वधर्म अवक्तव्यकहियें ते वक्तव्यधर्मथी अवक्तव्यधर्म अनंतगुणाछे वचनतोसंख्याताछे पणतेवचनोमां एवो सामर्थ्यछे जेअवक्तव्यधर्मसर्वनो ज्ञायपणोथाय उक्तंच अभिलप्पाजेभावा अणंत भागोयअणभिलप्पाणं अभिलप्पसाणंतो भागसुएनिबद्धोअ ॥ १ ॥ तत्रके० तिहां अक्षरसंख्याताछे तेअक्षरना सन्निपात संयोगीभाव असंख्याताछे तेअक्षरसन्निपात नेग्रहवाय एवाजे पदार्थादिकनाभाव तेअनंतगुणाछे तेथीअवक्तव्यभाव अनंतगुणा छे जेमतिज्ञान श्रुतज्ञान अभिलप्यभावनो परोक्षप्रमाणेग्राहकछे अवधिज्ञान तेपुद्ग लनो प्रत्यक्षप्रमाणेजाणगछे पणएकपरमाणुना सर्वपर्यायने जाणेनही केटलाकपर्या यनेजाणे तेपण असंख्यातसमयेंजाणे अनेकेवलज्ञान एद्रव्यनासर्वपर्यायने एकस मयमां प्रत्यक्षजाणे माटेजोद्रव्यमां वक्तव्यपणोनहोय तोश्रुतज्ञानेग्रहणथायनही अ ने जेग्रंथाभ्यासउपदेशादिक सर्वकामथायछे तेतोएमनथीमाटेद्रव्यमांवक्तव्यपणोछे॰

अवक्तव्यानावेके० अवक्तव्यपणाने नमानियेंतो अतीतपर्याय तेवस्तुमांकारण तानी परंपरामांरह्याछे तथा अनागतापर्याय सर्वयोग्यतामांरह्याछे तेसर्वनोअनाव थाय तेवारें वस्तुमां वर्त्तमानपर्यायनी ब्रतिपामियें तेथी अतीतअनागतनो ज्ञानथा यनही माटे अवक्तव्यस्वनाव अवश्यमानवो अनेवर्त्तमान सर्वकार्य ते निराधारथइ जाय अनेद्रव्यमां एकसमयमां अनंताकारणछे तेअनंताकारणना अनंताकार्यधर्म छे अनेअनंताकार्यना अनंताकारणपरंपरानुं ज्ञानतेकेवलीनेछे अनेवर्त्तमानकालें का रणधर्मेतथाकार्यधर्मथी अनंतगुणा कारणकार्यनी योग्यरूपसत्ताछे तेकोइना अवि नागनथी पणअविनागी जेज्ञानादिकगुण तेमांअनंता कारणधर्म अनंताकार्यधर्म ऊ पजवानी योग्यतारूपसत्ताछे तेसर्वअवक्तव्यरूपछे.

हवेपरमस्वनावनुं स्वरूपकहेछे सर्वजे धर्मास्तिकायादिकपदार्थ तेनाविशेषगुण जे धर्मास्तिकायनो चलनसहकारीपणो तथाअधर्मास्तिकायनो स्थितिसहाय आकाशा स्तिकायनो अवगाहक तथापुजलद्रव्यनो पूरणगलन जीवद्रव्यनो चेतनालक्षण ए सर्वद्रव्यना विशेषगुणकह्या एमलक्षणरूप तथाद्रव्यांतरथी निन्नपाडवानुं मूलकार ण तेपरमप्रकृष्टगुणकहियें एप्रधानगुणने अनुयायी बीजाजे साधारणगुण ते गुण पंचास्तिकायमां पामियें तेनानाम अविनाशीपणो अखंमपणो नित्यत्वादिकधर्म एपंचास्तिकायने सरिखाछे तेमाटेसाधारणगुण तथापंचास्तिकायमां कोइक अस्ति कायमांपामियें कोइकमांनपामियें तेगुणने साधारणअसाधारणकहियें तेसर्वगुणनेवि षे विशेषगुणने अनुयायिप्रवर्त्तनछे तेप्रवर्त्तननाकारण द्रव्यमां एकपरमस्वनावपणोछे तेपरमस्वनावने परिणमने द्रव्यनासर्वगुणमुख्यगुणने अनुगमेजप्रवर्त्ते तेपरमस्वनाव सर्वद्रव्यनेविषेछे एटले तेरसामान्यस्वनाव कह्यावली अनेकांतजयपताकामांकह्याछे.

तथास्तित्व नास्तित्व कर्तृत्व नोक्तृत्व असर्वगतत्व प्रदेशव त्वादिन्नावाः पुनः तत्वार्थटीकायांपुनरप्यादिग्रहणंकुर्वन्ज्ञा पयत्यत्रानंतधर्मवत्वं तत्राशक्ताः प्रस्तारयंतुसर्वेधर्माः प्र तिपदंप्रवचनज्ञेनपुंसायथासंन्नवमायोजनीयाः क्रियावत्वं पर्यायोपयोगित्वाप्रदेशाष्टकनिश्चलता एवंप्रकाराःसंतिन्नू यांसः अनादिपरिणामिकान्नवंतिजीवस्वन्नावाः धर्मादिन्नि स्तुसमानाइतिविशेषः

अर्थ ॥ तेमज अस्तिपणो नास्तिपणो कर्त्तापणो नोक्तापणो गुणवंतपणो असर्व

व्यापिपणो प्रदेशवंतपणो इत्यादिअनंतस्वभाववंतद्रव्यछे तेमज तत्वार्थटीकामध्ये प रिणामिकभावनाभेद वखाणतांकह्योछे पुनरपिआदिशब्दना ग्रहणकरतां एमजणावेछे जेवस्तुअनंतधर्मवंतछे तेसर्वविस्तारीशकेनही तोपणद्रव्यद्रव्यनेविषे प्रवचननाजाण पुरुषें जेमसंभवेतेमधर्मजोडवा तथाक्रियावंतपणो जेज्ञानादिकगुण तेलोकालोकजा णवाने प्रतिसमयेंप्रवर्त्तेछे श्रीभाष्यकारें ज्ञानादिगुण तेकरण अने तेजगुणनीप्रवृत्ति तेक्रियाजाणवी तथादेखवोतेकार्य एमधर्मास्तिकायादिकना सर्वगुण तेत्रणपरिणतियें परिणामीछे तेमाटेपंचास्तिकाय तेअर्थक्रियाकरेछे तेक्रियावंतपणोजाणवो सर्वपर्या यनो उपयोगीपणो एपणजीवस्वभावछे तथाप्रदेशाष्टकनी निश्चलता एपणजीवनोस्व भावछे तिहांधर्माधर्म अनेआकाश एत्रण अस्तिकायनाप्रदेश अनादिअनंतकाल अव स्थितपणेछे पुद्गलनेचलणपणो सदासर्वदाछे पुद्गलपरमाणु तथापुद्गलस्कंध तेसंख्या तोकाल अथवाअसंख्यातोकाल एकक्षेत्रेरहेपणपछे अवश्यचलथाय तथाजीवद्रव्यने सकर्म्मा संसारीपणे क्षेत्रथी क्षेत्रांतरगमन भवथी भवांतरगमनरूप चलताछे तेजी वने सम्यक्दर्शन सम्यक्ज्ञान अनेसम्यक्चारित्रने प्रगटवे सर्वपरभावभोगीपणो नि वारवे आत्मस्वरूप निराधारण स्वरूपभासन स्वरूपपरिणमने करवे स्वरूपएकत्वें स्व धर्मकर्त्ता स्वधर्मभोक्तापणे सकलपरभावतजवे निरावरण निःसंग निरामय निर्द्वंद्व निष्कलंक निर्मलस्वीय अनंतज्ञान अनंतदर्शन अनंतचारित्र अरूपी अव्याबाध पर मानंदमयी सिद्धात्मा सिद्धक्षेत्रेरह्या तेसादिअनंतकाल स्थिरछे सकलप्रदेशस्थिरछे अनेसंसारीजीव तेनाआठप्रदेश सदासर्वदास्थिरछे तेआठप्रदेश निरावरणे तथा आ चारांगनीटीका शैलंगाचार्यकृतना लोकविजयाध्ययनने प्रथमोद्देशके तदनेन पंचद शविधेना पियोगेनात्मा अष्टौप्रदेशान्विहाय तप्तभाजनोदक वद्वर्त्तमानैः सर्वैरेवा त्मप्रदेशैरात्मप्रदेशावष्टब्धाकाशस्थं कार्मणशरीरयोग्यं कर्मदलीकं यत्बध्नाति त त्प्रयोगकर्मेत्युच्यते.

एटले आठप्रदेशें कर्मलागतानथी इहांकोइपुछेजेआठप्रदेशनिरावरणछे तो लोका लोककेमजाणतानथी तिहांउत्तरजे आत्मद्रव्यनी जेगुणप्रवृत्ति तेसर्वप्रदेशमिले प्रव र्त्ते तोतेमां एआठप्रदेश अल्पछे तेथीआठप्रदेशमां सर्वगुणनिरावरणछे पणकार्य क रीशकतानथी जेमअग्निनुंअत्यंतसूक्ष्मकणीयुंहोय तेमां दाहक पाचक प्रकाशक गु णछे पणअल्पतामाटे दाहकादिकार्य करीशकतुंनथी.

वलीकोइपुछेजे एआठप्रदेश ते निरावरण केमरहीशक्या तेनुंउत्तर जेचलप्रदेश होय तेनेकर्मलागे पणअचलप्रदेशने कर्मलागेनही एमभगवतीसूत्रेकह्युंछे जेअट्ठ वे

अइ चलइ फंदइ घट्टइ सेबंधइ एपावळे तेमाटे जेचलहोयतेबंधाय अनेआत्मप्रदेश तो अचलछे तेथीएआत्मप्रदेशने बंधनथी तथाकार्यन्यासें प्रदेशभेलाथाय तेथी प्र देशनागुणपण तिहांतेकार्यकरवाने प्रवर्तेछे तथाजेद्रव्यनो जेगुणजेप्रदेशेंहोय तेगु णतेप्रदेशमूकी अन्यक्षेत्रेंजायनही तथाजीवना आत्मप्रदेश सर्वथानिरावरणछे बीजा प्रदेशें अक्षरनोअनंतमोभाग चेतनासर्वदाउघाडीछे एरीतें संतिके० छेघणाअनादि परिणामिकभावते भवंतिके० होय अनादिपरिणामिकभावछेते जीवनाभावछे अने सप्रदेशादिक धर्मास्तिकायप्रमुखनेविषे समानछे एमजाणवो इत्यादिकशेषस्वभावछे.

भिन्नभिन्नपर्यायप्रवर्तनस्वकार्यकरणसहकारभूताः पर्यायानुगतपरिणामविशेषस्वभावाः तेचके १ परिणामिकता २ कर्तृता ३ ज्ञायकता ४ ग्राहकता ५ भोक्तृता ६ रक्षणता ७ व्याप्याव्यापकता ८आधाराधेयता ९ जन्यजनकता १० अगुरुलघुता ११ विभूतकारणता १२ कारकता १३ प्रभुता १४ भावुकता १५ अभावुकता १६ स्वकार्यता १७ सप्रदेशता १८ गतिस्वभावता १९ स्थितिस्वभावता २० अवगाहकस्वभावता २१ असंख्यता २२ अचलता २३ असंगता २४अक्रियता२५ सक्रियता इत्यादिस्वीयोपकरणप्रवृत्तिनैमित्तिकाः उक्तंचसंमतौ आरोपोपचारेण यद्यदपेक्षते तत्नवस्तुधर्मः उपाधिताभवनात् नचोपाधिवस्तुसत्ताइति

अर्थ ॥ हवेविशेषस्वभावकहेछे भिन्नभिन्नजेपर्यायछे तेनुंकार्यकारणपणे जेप्रवर्त्तन तेना सहकारभूत जेपर्यायानुगतपरिणामि एवाजेस्वभाव तेविशेषस्वभावकहियें ते नाअनेकभेदछे ते श्रीहरिभद्रसूरिकृत वार्तिकसमुच्चयग्रंथमांकह्याछे तेकहेछे.

१ सर्वद्रव्यने पोतानागुण समयसमयमां कार्यकरवेप्रवर्त्ते ते भिन्नभिन्न परिणामेपरिणमे तेसर्वपोतानागुणतेने कारणीकछे तेपरिणामिकपणोकहियें २ तत्रकर्तृत्वं जीवस्यनान्येषां तिहांआत्माकर्त्ताछे एटलेकर्त्तापणो जीवद्रव्यनेविषेछेअप्पाकत्ताविकत्तायइति उत्तराध्ययनवचनात् ३ ज्ञायकता जाणपणानीशक्ति जीवनेविषेछे ज्ञानलक्षणजीवछे तेमाटेगिन्हईकांईएणंइतिआवश्यनिर्युक्तिवचनात् ४ ग्राहकशक्तिप

छे ठप्रकारनीवृद्धि तथाठप्रकारनीहानि एवीरीतें बारप्रकारें परिणमेछे इहांकोइप्रेरक नो योगत्तथी वस्तुनेमूळधर्मनोहेतुछे एनोस्वरूपपूरूं वचनगोचरनथी अनुभवगम्यन थी केमके श्रीठाणांगसूत्रनी टीकामध्येश्रुतज्ञानवृद्धिना सातअंगछे तिहांप्रथमसूत्र अंग बीजुं निर्युक्तिअंग ३ भाष्यअंग ४ चूर्णिवालोसूत्रादि सर्वनाअर्थकहेछे ५ टीका व्याख्यानिरंतर एपांचअंगतो ग्रंथरूपछे तथाछठोअंगपरंपरारूपछे तथासातमुंअंगअ नुभव एसातेकारणे विनयसहितभणतां सुणतांथकासाचाअर्थ पामिने आत्मानुंज्ञान निर्मलथाय श्रीभगवतिसूत्रे गाथा सुत्तच्छोखलुपढमो बीउनिज्जुत्तिमिसिउभणीउ त इयोअनिरवसेसो एसविहिहोइअणुउगे एपांच पर्यायकह्या तेसर्वद्रव्यमध्येछे

६ विभागपर्याय तेजीव तथापुद्गलमध्येंजछे तेविभावपर्यायजीवने नरनारकीपणुं पामवुंते तथा पुद्गलनो द्व्यणुकत्र्यणुकादिकखंधनोमिलवुंअनंताणुकपर्यंत अनंतपुद्ग लस्कंधरूप ते विभागपर्याय कहियें.

मेर्वाद्यनादिनित्यपर्यायाः चरमशरीरत्रिभागन्यूनावगा हनादयःसादिनित्यपर्यायाः सादिसांतपर्यायाभवशरीरा ध्यवसायादयः अनादिसांतपर्यायाभव्यत्वादयः तथाचनि क्षेपाःसहजरूपावस्तुनःपर्यायाः एवंचत्वारोवथ्थुपज्जाया इतिभाष्यवचनात्नामयुक्तेप्रतिवस्तुनि निक्षेपचतुष्टयंयुक्तम् नुक्तंचानुयोगद्वारे जथ्थयजंजाणिज्जा निरकेवंनिरकवेनिर वसेसं जथ्थयनोजाणिज्जा चउक्कयंनिरकवेतथ्थ तत्रनाम निक्षेपः स्थापनानिक्षेपः द्रव्यनिक्षेपः भावनिक्षेपः तत्र नामनिक्षेपोद्विविधः सहजःसांकेतिकश्च स्थापनाऽपिद्वि विधा सहजाआरोपजाच द्रव्यनिक्षेपोद्विविधः आगमतो नोअगमतश्च तत्रआगमतः तदर्थज्ञानानुपयुक्तः नोआग मतोज्ञशरीरभव्यशरीर तद्व्यतिरिक्तभेदात्रिधाभावनिक्षेपो द्विविधः आगमतोनोआगमतश्चतदज्ञानोपयुक्तःतद्गुणम यश्च वस्तुस्वधर्मयुक्तं तत्रनिक्षेपावस्तुनः स्वपर्यायाधर्मभेदाः

अर्थ॥पुद्गलतुंमेरुप्रमुख तेअनादिनित्यपर्यायछेजीवनीसिद्धावस्था सिद्धावगाहना दिकतेसादिनित्यपर्यायछे तथाभावअनेशरीर तथाअध्यवसाय एत्रणप्रकारनायोगस्था

अव्याबाध ६ अरूपी ७ अगुरुलघु ८ अनवगाह्यादिकअनंतगुणछे एरीतें द्रव्यनेवि षे अनंतागुणजाणवा.

पर्यायाःषोढा द्रव्यपर्यायाअसंख्येयप्रदेशासिद्धत्वादयः १ द्रव्यव्यंजनपर्यायाः द्रव्याणांविशेषगुणाश्चेतनादयश्च लनसहायादयश्च २ गुणपर्यायाः गुणा विभागादयः ३ गुणव्यंजनपर्यायाज्ञायकादयः कार्यरूपाः मतिज्ञानादयः ज्ञानस्यचक्षुर्दर्शनादयो दर्शनस्यक्षमामार्दवादयः चारि त्रस्यावर्णागंधारसास्पर्शादयोमूर्त्तस्यइत्यादि ४ स्वभावप र्यायाअगुरुलघुविकाराः तेचद्वादशप्रकाराःषट्गुणहानिवृ द्धिरूपाः अवाग्गोचराः एतेपंचपर्यायासर्वद्रव्येषु विभाव पर्यायाः जीवेनरनारकादयः पुद्गलेद्व्यणुकतोनंताणुकपर्यंतास्कंधाः

अर्थ ॥ हवेनयज्ञानकरवानो अधिकारकहेछे तिहांद्रव्यास्तिकनयनामूलबेभेदछे १ शुद्धद्रव्यास्तिक २अशुद्धद्रव्यास्तिकअनेदेवसेनकृतपद्धतीमांद्रव्यास्तिकनादशभेदकरया छे तेसर्वएबेभेदमध्येसमायछेतथातेसामान्यस्वभावमांसमाणाछेतेमाटेइहांनवखाण्या.

हवेपर्यायना ६भेदकहेछे तिहांप्रथम १ जेद्रव्यनेविषे एकत्वपणेरह्या जेजीवादिकना असंख्याताप्रदेश तथाआकाशना अनंताप्रदेश एद्रव्यपर्यायकहियें २ सिद्धत्वादिक अखंडत्वादिक तथाद्रव्यनोव्यंजकके० प्रगटपणोजेमानेछे तेद्रव्यव्यंजनपर्यायकहियें

द्रव्यनोविशेषगुण जेअन्यद्रव्यमांनथी तेनेविशेषगुणकहियें तेजीवनेचेतनतादि क अने धर्मास्तिकायमांचलणसहकार तथा अधर्मास्तिकायमांथिरसहकार आका शमां अवगाहदान पुद्गलमां पूरणगलणरूप एसर्वस्वद्रव्यनीभिन्नताने प्रगटकरेछे ते माटे एधर्मनेद्रव्यव्यंजन पर्यायकहियें.

३ एकगुणना अविभाग अनंताछे तेनोपिंडपणो तेगुणपर्यायकहियें ४ गुण व्यंजनपर्यायतेज्ञाननो जाणंगपणो तथाचारित्रनो थिरतापणो इत्यादिक अथवा ज्ञा नगुणनाभेदांतर ज्ञाननाभेद जे मतिज्ञानादिक पांच तथादर्शनगुणना चक्षुदर्शना दिकभेद तथाचारित्रगुणना क्षमादिकभेद पुद्गलनोरूपीगुण तेनाभेदवर्णगंध रसस्प र्श संस्थानादिक अरूपीगुणना अवर्ने अगंधे अरसे अफासे इत्यादिकचारजाणवा तेगुण व्यंजनपर्याय ५ स्वभावपर्याय ते वस्तुनोकोइकस्वभावज एवोछे तेअगुरुलघुपणे

रूपनयछे तेमाटे. तेमांनैगमनात्रणज्जेदछे १ आरोप २ अंश ३ संकल्प तथाविशे षावश्यकमां चोथोजेदपणउपचारपणेकह्योछे नथीएकगमो अन्निप्रायजेनो तेनैगमन यकहियें एटलेअनेकआशयीछे तेनैगमनयना चारजेदछे तेमध्ये आरोपना चारप्र कारछे १ द्रव्यारोप २ गुणारोप ३ कालारोप ४ कारणाद्यारोप

१. तिहांगुणादिकनेविषे द्रव्यपणोमानवो तेद्रव्यारोपजेमवर्तनापरिणाम तेपंचा स्तिकायनो परिणमनधर्मछे तेने कालद्रव्यकहिवोलाव्यो एकालतेज्जिन्नपिंडरूपद्रव्यन थी पणआरोपेंद्रव्यकह्योछे माटेद्रव्यारोप अनेद्रव्यनेविषे गुणनोआरोपकरवो जेमज्ञानगुणछे पणज्ञानीतेजआत्मा एमज्ञानने आत्माकह्यो तेगुणनोआरोपकर्यो माटेगुणारोप तथा जेमश्रीवीरनिर्वाणथयातेने तोघणोकालगयोछे पणआजदीवा लीनादीवसेंवीरनोनिर्वाणछे एमकेवुं एवर्तमानमां अतीतनो आरोपकर्यो अथवा आजश्रीपद्मनाजप्रज्जुनो निर्वाणछे एमकेवुं तेमवर्त्तमाननेविषे अनागतकालनोआ रोपछे एवीरीतें वलीअतीतनाबेजेदछे तथाएवीजरीतेअनागतनाबेजेदछे अनेवर्तमा नना बेजेदउपरकह्या तेसर्वमली कालारोपना छजेदजाणवा.

वलीकारणविषे कार्यनोआरोपकरवो तेकारणचारछे १ उपादानकारण २ नि मित्तकारण ३ असाधारणकारण ४ अपेक्षाकारण तेमांबाह्यद्रव्यक्रिया ते साध्यसा पेक्षवालाने धर्मनुंनिमित्तकारणछे तोपणएनेधर्मकारणकहियें तेमजश्रीतीर्थंकर मो क्षनुंकारणछे तेथीतेने तारथाणंकह्यो तेकारणनेविषे कर्त्तापणानोआरोपकर्यो एम आरोपता अनेकप्रकारेंछे तेकारणाद्यारोप वलीसंकल्प नैगमनाबेजेदछे १ स्वपरिणा मरूपजेवीर्य चेतनानो जेनवोनवो क्षयोपशमतेलेवो बीजोकार्यांतिरे नवेनवेकार्यें नवो नवोउपयोगथाय ते एबेजेदथया तथाअंशनैगमनापणबेजेदछे १ज्जिन्नांशतेजूदोअंश स्कंधादिकनो बीजो अज्जिन्नांश ते जे आत्मानाप्रदेश तथागुणनाअविज्जाग इत्यादिक एसर्वनैगमनयनाज्जेदजाणवाएटलेनैगमनयकह्यो

सामान्यवस्तुसत्तासंग्राहकसंग्रहः सद्विविधसामान्यसंग्रहो
विशेषसंग्रहश्च सामान्यसंग्रहोद्विविधःमूलतउत्तरतश्चामूल
तोस्तित्वादिज्जेदतः षड्विधः उत्तरतोजातिसमुदायज्जेदरूपः
जातितः गविगोत्वं घटेघटत्वं वनस्पतौ वनस्पतित्वं समुदय
तोसहकारात्मकेवनेसहकारवनं मनुष्यसमूहेमनुष्यवृंदइ
त्यादिसमुदायरूपः अथवाद्रव्यमितिसामान्यसंग्रहः जी

नजे वीर्यनाक्षयोपशमथीऊपना तेमांकषायस्थान जेचेतनानोक्षयोपशम कषायनाउ दयथीमिल्या अनेसंयमस्थानजे चारित्रनो क्षयोपशमपरिणामी जेचेतनादिकगुण ए सर्वअध्यवसायस्थानक तेसादिसांतपर्यायछे तथासिद्धिगमनयोग्यताधर्म तेजव्यपणो एपर्याय तेअनादिसांतछे जेसिद्धत्वपणोप्रगटे जव्यत्वपर्यायनोविनाशछे तेमाटे अना दिकालनोछे पणअंतथवासहितछे माटेअनादिसांतपर्यायछे एमपर्यायअनेकजाणवा.

तथावस्तुमां सहजना जेचारनिक्षेपाछेतेपणवस्तुनास्वपर्यायछे तेश्रीविशेषावश्य कनी जाष्यमध्येकह्योछे चत्वारोवस्तुपज्जाया एवचनछे तेमाटेस्वपर्यायकहियें वलीश्री अनुयोगधारसूत्रमांकह्योछे जिहांजेवस्तुना जेटलानिक्षेपाजाणियें तिहां तेवस्तुना ते टलानिक्षेपाकरियें कदाचित्वधतानिक्षेपा जासनमांनआवे तोपण १ नाम २ स्था पना ३ इव्य ४ जावएचारनिक्षेपातो अवश्यकरवा तेमांनामनिक्षेपानाबेजेदछे.

१ सहजनाम २ सांकेतिकतेकोइकनोकह्योनाम तथास्थापनानाबेजेदछे १ सहज स्थापना तेवस्तुनीअवगाहनारूप २आरोपस्थापनाते आरोपथीथयी माटेकृत्रिमकहि यें आरोपजाकहियें हवेइव्यनिक्षेपानाबेजेदछे तेकहेछे १ आगमथीइव्यनिक्षेपो ते जे जेपुरुषना स्वरूपनाजाणपणे हमणातेऊपयोगेंनथी तेआत्मइव्यनिक्षेपजेवस्तुतेगु णसहितछे पणहमणातेपणेवरततानथी तेहनात्रणजेदछे १ ज्ञशरीरजेहनाहत्ता प णमरणपाम्या तेथीतेनुंशरीर जेऋषजदेवना शरीरनीजक्ति श्रीजंबूद्वीपन्नतीमांछे २ ज व्यशरीरते हमणातो गुणमयनथी पणगुणमयथशे जेम अयमंतामुनी एजव्यशरी रजाणवो ३ तद्व्यतिरिक्त जेतेगुणेवर्तेछे पणतेऊपयोगें हमणावरततानथी.

जावनिक्षेपानाबेजेद १ आगमथी जावनिक्षेपो तेआगमना अर्थनोजाण वलीतेऊ पयोगेंवर्तेछे २नोआगमथी जावनिक्षेपो तेजेपणेज्ञवर्त्तेछे तेजरूपछे एरीतेंनिक्षेपाकेवा.

एचारनिक्षेपामां पेहेलात्रणनिक्षेपा तेकारणरूपछे अनेचोथोजावनिक्षेपो तेकार्य रूपछे तेजावनिक्षेपाने निपजावत्तां पहेलात्रणनिक्षेपा प्रमाणछे नहींकांअप्रमाणछे पहेलात्रणनिक्षेपा इव्यनयछे एकजावनिक्षेपो तेजावनयछे जावनिक्षेपाने अणनिप जावतां एकलीइव्यनीप्रवृत्तिते निष्फलछे एमश्री आचारांगनीटीकामां लोकविजया अध्ययने कह्युंछेतेजखीयेछैयें फलमेवगुणः फलगुणः फलंचक्रियाजवतितस्याश्च क्रियायाः सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्र रहितायाऐहिकामुष्मिकार्थप्रवृत्तायाः अनात्यंति कोनैकांतिकोजवेत् फलंगुणोप्यगुणोजवति सम्यक्दर्शनज्ञानचारित्रक्रिया यास्त्वेकां तिकानाबाधसुखाख्यसिद्धिगुणोवाप्यते एतडुक्तंजवति सम्यक्दर्शनादिकैवक्रियासि द्धिफलगुणेनफलवत्यपरातुसांसारिकसुखफलाप्यासएवफलाध्यारोपान्निष्फलेत्यर्थः

तिसामान्यकह्यो अने आंबानासमूहनेंविषे अंबवनकहे तथा मनुष्यना समूहमां मनुष्यग्रहणथाय तेसमुदायसामान्य एउत्तरसामान्य तेचक्षुदर्शन तथाअचक्षुदर्शनने ग्राहीकछे अनेमूलसामान्य तेअवधिदर्शन तथाकेवलदर्शनथी ग्रहवायछे अथवा १ सामान्यसंग्रह २ विशेषसंग्रह तिहां छद्रव्यनासमुदायने द्रव्यकह्युंएसामान्यसंग्रह इहांसर्वनोग्रहणथयोछे अनेजीवने जीवद्रव्यकही अजीवद्रव्यथी जूदोभेदपाड्यो एविशेषसंग्रह एविशेषसंग्रहनो विस्तारघणोछे तथाविशेषावश्यकथी संग्रहनयना चारभेद तेलखियेंछैयें मूलपाठमां कहेलीगाथानोअर्थछे.

संग्रहणंके० एकठो एकवचनमध्ये एकअध्यवसाय उपयोगमां समकालेंग्रहेवुं सामान्यरूपपणे सर्ववस्तुनो आक्रोमण ग्रहणकरवो तेसंग्रहकहियें अथवासामान्यरूपपणेसर्व संग्रहकरे तेसंग्रहकहियें अथवाजेथकीसर्वभेद सामान्यपणे ग्रहियें तेने संग्रहकहियें अथवासंगृहीतं पिंडितके० जेवचनथी समुदायअर्थग्रहवाय तेसंग्रहवचनकहियें तेनाचारभेदछे १ संगृहीतसंग्रह २ पिंडितसंग्रह ३ अनुगमसंग्रह ४ व्यतिरेकसंग्रह.

१ सामान्यपणे वेचणविना ग्रहणथाय एवोजेउपयोग अथवा एवुंवचन अथवाएवोधर्म कोइपणवस्तुनेविषेहोय तेनेसंगृहित संग्रहकहियें.

२ अनेएकजातिमाटे एकपणोमानिने तेएकमध्ये सर्वनोग्रहणथायजेमएगेआयाए गेपुग्गले इत्यादिवस्तुअनंतिछे पणजातिएकमाटेग्रहवायछे तेबीजोपिंडितसंग्रहकहियें

३ जेअनेकजीवरूप अनेकव्यक्तिछे तेसर्वमांपामियें जेम सत्चित्मयोआत्मा एटलेसर्वजीव तथासर्वप्रदेश सर्वगुण तेजीवनालक्षणछे एनेअनुगमसंग्रहकहियें.

४ तथाजेनेनाकहेवे तेथीइत्तरनो सर्वसंग्रहपणेज्ञानथायतेजेमअजीवछेतेवारें जे जीवनहीतेअजीवकहिये एटलेकोइकजीवछे एमव्यतिरेक वचनेंकह्यो तथाउपयोगें जीवनो ग्रहणथायछे तेव्यतिरेकसंग्रहकहियें

अथवासंग्रहनयबेभेदेंकेवायछे १ महासत्तारूप २ अवांतरसत्तारूप एरीतेंपणसंग्रहनोस्वरूपकह्योछे सवतिभणिएएज म्हासवन्नाणुप्पवत्तएबुद्धि तोसव्वंसत्तमत्तं नहीतदंतरंकिंचि ॥ १ ॥ यद्यस्मात्सदित्येवंभणिते सर्वत्रिभुवनत्रयांतर्गतवस्तुनिबुद्धिरनुप्रवर्तते प्रधावतिनहितत् किमपिवस्तुअस्तियत् सदित्युक्तेजगतिबुद्धौनप्रतिभासते तस्मात्सर्वसत्तामात्रं नपुनःअर्थांतरं तत्श्रुतसामर्थ्यात् यत्संग्रहेन संगृह्यते तेनपरिणमनरूपत्वादेवसंग्रहस्येतिएटलेत्रणेभुवनमां एहवीवस्तुकोइनथीजे संग्रहनयने ग्रहणमांआवतीनथी जेजेवस्तुछेतेसर्व संग्रहनयमां ग्रहवाणीजछे एसंग्रहनयकह्यो.

जेगुणतेपर्यायनेविषे अंतर्भूतछे तेपर्यायार्थिकमध्येजसंग्रह्योछे तेपर्याय बेभेदेछे एक सहभावि बीजोक्रमभावि तेमांसहभावितेगुणछे तेपर्यायनेविषे अंतर्भूतछे ति हांद्रव्यपर्यायथी व्यतिरिक्तसामान्यविशेष एबेधर्मछे माटेसामान्यविशेष बेनयवक्ताके मकेहेतानथी एमकोइपुछेतेनेउत्तर.

जे द्रव्यपर्यायाभ्यां व्यतिरिक्तयोः सामान्यविशेषयोरप्रसिद्धेः तथाहि द्विप्रकारं सामान्यमुक्तमूर्ध्वतासामान्यं तिर्यक्सामान्यंच तत्रोर्ध्वसामान्यंद्रव्यमेव तिर्यक्सामान्यंतु प्रतिव्यक्तिसदृशपरिणामलक्षणंव्यंजनपर्यायएव एणावथी ऊर्ध्वसामान्यते द्रव्यनोधर्मछे अनेतिर्यक्सामान्यते पर्यायधर्मछे विशेषोपिवैसादृश्यविवर्त्तलक्षणंपर्यायएवांतर्भवतिनैताभ्यामधिकनयावकाशः

विशेषपणेअनेकरीतें वर्तवानोलक्षणछे तेपर्यायनेविषे अंतर्भावछे तेमाटे भिन्ननयनो अवकाशनथी एबेनयमध्येज अंतर्भावछे तेमांवली द्रव्यार्थिकना चारभेदछे १ नैगम २संग्रह ३ व्यवहार ४ ऋजूसूत्र तथापर्यायार्थिकना त्रणभेदछे १ शब्द २ समभिरूढ ३एवंभूत.

विकल्पांतरेऋजुसूत्रस्यपर्यायार्थिकताप्यस्ति सनैगमस्त्रिप्रकारः आरोपांशसंकल्पभेदात् विशेषावश्यकेतूपचारस्य भिन्नग्रहणात्चतुर्विधःनएकेगमाआशयविशेषायस्यसनैगमः तत्रचतुःप्रकारआरोपः द्रव्यारोपगुणारोप कालारोप कारणाद्यारोपभेदात् तत्रगुणेद्रव्यारोपः पंचास्तिकायवर्तनागुणस्यकालस्यद्रव्यकथनं एतद्गुणेद्रव्यारोपः १ ज्ञानमेवात्मा अत्रद्रव्येगुणारोपः २ वर्त्तमानकालेअतीतकालारोपःअद्यदीपोत्सवेवीरनिर्वाणं वर्तमानेअनागतकालारोपः अद्यैवपद्मनाभे निर्वाणं एवंषट्भेदाः कारणेकार्यारोपः बाह्यक्रियायाधर्मत्वं धर्मकारणस्यधर्मत्वेनकथनं संकल्पोद्विविधः स्वपरिणामरूपः कार्यांतरपरिणामश्च अंशोपिद्विविधः भिन्नोभिन्नश्चेत्यादिशतभेदोनैगमः

अर्थ॥ वलीविकल्पांतरे ऋजुसूत्रते पर्यायार्थिकमां पणकह्योछे केमके एविकल्प

अथवा व्यवहरणके० प्रवर्तन तेव्यवहारनय तेनाबेभेदछे १ शुद्धव्यवहार २ अशु द्धव्यवहार वलीशुद्धव्यवहारनाबेभेदछे १ सर्वद्रव्यनी स्वरूपरूपशुद्धप्रवृत्ति जेमधर्मा स्तिकायनी चलणसहायता तथाअधर्मास्तिकायनीथिरसहायता तथाजीवनीज्ञायक ता इत्यादिकने वस्तुगतशुद्ध व्यवहारकहियें २ द्रव्यनोउत्सर्ग निपजवामाटे रत्नत्रयी शुद्धता गुणस्थाने श्रेणीआरोहणरूप तेसाधनशुद्ध व्यवहारकहियें

वलीअशुद्धव्यवहारनाबेभेदछे १ सद्भूत २ असद्भूत तेमांजेखेत्रेअवस्थाने अभे देंरह्याजे ज्ञानादिगुण तेनेपरस्परभेदेंकेवा ते सद्भूतव्यवहार

तथाजेमक्रोधीहुं मानीहुं अथवादेवताहुं मनुष्यहुं इत्यादिदेवतापणो तेहेतुपणेप रिणमतांग्रह्याजेदेवगतिविपाकीकर्म तेनेउदयरूपपरभावछे तेपणयथार्थज्ञानविना भे दज्ञानशून्यजीवने एककरीमानेछे तेअशुद्धव्यवहारकहियें तेनाबेभेदछे १ संश्लेषित अशुद्धव्यवहार ते जे शरीरमारुं हुंशरीरी इत्यादिकसंश्लेषितअसद्भूतव्यवहार २ अ संश्लेषितअशुद्धव्यवहार ते आपुत्रमारो धनादिकमारा एमकेवुंतेअसंश्लेषितअसद्भू तव्यवहार तेचउपचरित अनुपचरित एबेभेदजाणवा.

तथाविशेषावश्यकमाहाभाष्यमांकह्युंछे जे व्यवहारनयना मूलबेभेदछे एकव हेचणरूपव्यवहार बीजोप्रवृत्तिव्यवहार तेवलीप्रवृत्तिनात्रणभेदछे १ वस्तुप्रवृत्ति २ साधनप्रवृत्ति ३ लौकिकप्रवृत्ति तेमांवलीसाधनप्रवृत्तिनात्रणभेदछे १ जे अरिहंत नीआज्ञायें शुद्धसाधनमार्गे इहलोकसंसारपुंजलभोगआशंसादिदोषरहितजेरत्नत्रयी नीपरिणति परभावत्यागसहित तेलोकोत्तरसाधनप्रवृत्ति २ जेस्याद्वादविना मिथ्या भिनिवेशसहित साधनप्रवृत्तिते कुप्रावचनिकसाधनप्रवृत्ति ३ अनेजेलोकनास्वस्व देश कुलनीचालेप्रवृत्ति तेलोकव्यवहारप्रवृत्ति एत्रणप्रवत्तिकहियें एव्यवहारनयनाभे दजाणवा तिहां द्वादशसारनयचक्रमां एकेकनयना सोसोभेदकह्याछे तेजैनशासनरह स्यनाजाणजीवे तेग्रंथमांथीधारवा एव्यवहारनयकह्यो.

उजुंरुजुसुअनाणे मुजसुयमस्ससोयमुज्जसुउ ॥ सुत्तयइवा जमुवत्थु तेणउज्जुसुत्तोत्ति ॥ १ ॥ उजुंतिरुजुश्रुतंसुज्ञानं बोधरूपंततश्चऋजुअवक्रमश्रुतमस्यसोयमृजुश्रुतंवा अथ वा ऋजुअवक्रं वस्तुसूत्रयतीतिऋजुसूत्रइति कथंपुनरेतद भ्युपगतस्य वस्तुनोवक्रत्वमित्याह पच्चुपन्नंसंपयमुप्पन्नं जंचजस्सपत्तेयं तंऋजुतदेवतस्सत्थि उवकम्मन्नंतिजमसंतं

वइतिविशेषसंग्रहः तथाविशेषावश्यके संगहणंसंगिन्ह इसंगिन्हंतेवतेणजंभेया तोसंगहोसंगिहियपिंमियत्थंवउज्ञ स्स संग्रहणंसामान्यरूपतयासर्ववस्तुनामाक्रोमनंसंग्रहः अथवासामान्यरूपतयासर्वंगृन्हातीतिसंगृहः अथवासर्वे पिभेदाः सामान्यरूपतयासंगृह्यंतेअनेनेतिसंग्रहः अथवा संगृहीतंपिंमितंतदेवार्थोभिधेयंयस्यततसंगृहीतपिंमितार्थं एवंभूतंवचोयस्यसंग्रहस्येतिसंग्रहीतपिंमितं ततकिमुच्यतेइ त्याह संगहीयमागहीयं संपिंमियमेगजाइमाणीयं ॥ संगही यमणुगमोवा वइरेगोपिंमियंभणियं ॥१॥ सामान्याभिमुख्ये नग्रहणंसंगृहीतसंग्रहउच्यते पिंमितंत्वेकजातिमानित मभि धीयतेपिंमितसंग्रहः अथसर्वव्यक्तिष्वनुगतस्यसामान्यस्य प्रतिपादनमनुगमसंग्रहोभिधीयते व्यतिरेकस्तुतदितरधर्म निषेधातग्राह्यधर्मसंग्रहकारकं व्यतिरेकसंग्रहोभण्यतेय थाजीवोजीवइतिनिषेधे जीवसंग्रह एवजाताः अतः १संग्र ह २ पिंमितार्थ ३ अनुगम ४ व्यतिरेकभेदाच्चतुर्विधः अ थवास्वसत्ताख्यंमहासामान्यंसंगृण्हाति इतरस्तुगोत्वादिक मवांतरसामान्यंपिंमितार्थमभिधीयते महासत्तारूपं अवां तरसत्तारूपं एगंनिच्चंनिरवयवमक्कियं सव्वगंचसामन्नं एतत् माहासामान्यं गविगोत्वादिकमवांतरसामान्यमितिसंग्रहः

अर्थ ॥ हवेसंग्रहनयकहेछे सामान्ये मूलसर्वइव्यव्यापक नित्यत्वादिक सत्ताप णे रह्याजेधर्म तेनोजेसंग्रहकरे तेसंग्रहकहियें तेनाबेभेदछे १ सामान्यसंग्रह २ विशेषसंग्रह वलीसामान्यसंग्रहना बेभेदछे १ मूलसामान्यसंग्रह २ उत्तरसामान्य संग्रह वलीमूलसामान्यसंग्रहना अस्तित्वादिकछभेदछे तेपूर्वेकह्याछे तथाउत्तरसामा न्यना बेभेदछे १ जातिसामान्य २ समुदायसामान्य तिहांगायनासमुदायमां गोत्व रूपजातिछे तथाघटसमुदायमांघटत्वपणो अनेवनस्पतिनेविषे वनस्पतिपणो तेजा

स्थूलऋजुसूत्र एपणकालापेक्षीनावछे तथाएजावनयछे अनेयोगावलंबीपणो तेबाह्य छे तेपणद्रव्यमाटे एकद्रव्यमध्येगणेछेएऋजुसूत्रनयकह्यो.

शपआक्रोशेशापनमाव्हानमितिशब्दः शपतीतिवाआव्हानयतीशब्दःशप्यतेआहूयते वस्तुअनेनेतिशब्दः तस्य शब्दस्य योवाच्योर्थस्तत्परिग्रहात्तत्प्रधानत्वात्नयशब्दः यथाकृतकत्वादिइत्यादिकपंचम्यंतःशब्दोपिहेतुः अर्थरूपं कृतकत्वमनित्यत्वगमकत्वान्मुख्यतयाहेतुरुच्यते उपचारवस्तुतद्वाचककृतकत्वशब्दोहेतुरभिधीयते एवमिहापिशब्दवाच्यार्थपरिग्रहादुपचारेणनयोपिशब्दोव्यपदिश्यतेइतिभावः यथाऋजुसूत्रनयस्याभीष्टं प्रत्युत्पन्नं वर्त्तमानं तथैवइच्छत्यसौशब्दनयः यद्यस्मात्पृथुबुध्नोदरकलितमृन्मयं जलाहरणादिक्रियाक्षमं प्रसिद्धघटरूपं भावघटमेवेच्छत्यसौनतु शेषान्नामस्थापनाद्रव्यरूपान्त्रीन्घटानितिशब्दार्थप्रधानोह्येषनयः चेष्टालक्षणश्चघटः शब्दार्थोघटचेष्टायां घटते इतिघटः अतो जलाहरणादिचेष्टांकुर्वन्घटः अतश्चतुरोपिनामादिघटानिच्छतःऋजुसूत्राद्विशेषिततरंवस्तुइच्छति असौशब्दार्थोपपत्तेर्भावघटस्यैवानेनाभ्युपगमादिति अथवाऋजुसूत्रात् शब्दनयःविशेषिततरःऋजुसूत्रेसामान्येनघटोभिप्रेतः शब्देनतुसद्भावादिभिरनेकधर्मैरभिप्रेतइति ते चसप्तभंगाःपूर्वंउक्ताइति ॥

अर्थ हवेशब्दनयनुं स्वरूपकहियेंछैयें शपतिके० बोलावे तेनेशब्दकहियें अथवा शपियेंबोलावियें वस्तुपणेतेशब्दकहियें तेशब्देंजेवाच्यअर्थ तेनेग्रहे एहवोछेप्रधानपणो जेनयमां तेपणशब्दनयकहियें जेमकृतकतेजेकर्यो तेनो हेतुजेधर्मते जेवस्तुमांहोय तेबोलाय एटलेशब्दनुंकारणतो वस्तुनोधर्मथयो जेमजलाहरणधर्मजेमांछे तेनेघटकहियेंछैयें एमइहांपण शब्देंवाच्यअर्थग्रहेतेमाटेतेनयनोनामपण शब्दकेवायजेमऋजुसूत्रनयने वर्त्तमानकालनाधर्मईष्टछे तेमशब्दादिकनयने पणवर्त्तमानतानाधर्मजइष्टछे.

संग्रहगृहीतवस्तुभेदांतरेणविभजनंव्यवहरणंप्रवर्तनंवाव्य
वहारःसद्विविधःशुद्धोशुद्धश्च शुद्धोद्विविधः वस्तुगतव्यवहा
रः धर्मास्तिकायादिद्रव्याणां स्वस्वचलनसहकारादिजीव
स्यलोकालोकादिज्ञानादिरूपः स्वसंपूर्णपरमात्मभावसाध
नरूपो गुणसाधकावस्थारूपः गुणश्रेण्यारोहादिसाधनशु
द्धव्यवहारः अशुद्धोपिद्विविधः सद्भूतासद्भूतभेदात् सद्भू
तव्यवहारो ज्ञानादिगुणः परस्परंभिन्नः असद्भूतव्यव
हारः कषायात्मादि मनुष्योहं देवोहं सोपिद्विविधः संश्ले
षिताशुद्धव्यवहारःशरीरंममअहंशरीरी असंश्लेषितासद्भू
तव्यवहारः पुत्रकलत्रादि तौचउपचरितानुपचरितव्यवहार
भेदात्द्विविधौ तथाचविशेषावश्यके व्यवहरणंव्यवहारःए
सतेणव्यवहार एवसामान्नंव्यवहारपरोघजउविसेसउतेण
व्यवहारःव्यवहरणंव्यवहारः व्यवहरतिसइतिवाव्यवहारः
विशेषतोव्यवह्रीयते निराक्रियते सामान्यंतेनेतिव्यवहारः
लोकव्यवहारपरोवाविशेषतोयस्मात्तेनव्यवहारः नव्यवहा
रास्वस्वधर्मप्रवर्तितेनकृतेसामान्यमितिस्वगुणप्रवृत्तिरूप
व्यवहारस्यैववस्तुत्वं तमंतरेणतभावात् सद्विविधः विभज
न१प्रवृत्ति२भेदात्प्रवृत्तिव्यवहारस्त्रिविधःवस्तुप्रवृत्तिः१सा
धनप्रवृत्तिः २ लौकिकप्रवृत्तिश्च३ साधनप्रवृतिस्त्रेधा लो
कोत्तर१ लोकिका २ कुप्रावचनिक३भेदात् इतिव्यवहारन
यश्रीविशेषावश्यके ॥

अर्थ ॥ हवेव्यवहारनयनी व्याख्याकरेछे संग्रहनयें ग्रहितजेवस्तु तेनेभेदांतरे विभ
जनके० वेचवुं तेव्यवहारनय जेमद्रव्यएवुंसामान्यनामकह्युं तेमां वलीवेचणकरि
यें जे द्रव्यनावेभेदछे १ जीवद्रव्य २ अजीवद्रव्य वलीतेमांपणवेचणकरियें जेजीवना
वेभेद १ सिद्ध बीजासंसारी एमवेचणकरवी तेसर्वेव्यवहारनयनो स्वभावजाणवो

विमुखछे तेनेसमभिरूढनयकहियें जोएकसंज्ञामध्ये सर्वनामांतरमानियें तोसर्वनोसं करथाय तेवारेंपर्यायनो भेदपणोरहेनही अनेजेपर्यायांतरहोय तेतोभेदपणेजहोय ते श्रीपर्यायांतरनो भेदपणोजरह्यो तेमाटेलिंगादिभेदने सापेक्षपणे वस्तुनोभेदपणोजमा नवो एसमभिरूढनयवखाण्यो एनयमांपण भेदज्ञाननी मुख्यताछे.

एवंजहसदत्थो संतोभूतंतदन्नहाभूतं॥ तेणेवंभूअनतं सद त्थपरोविशेशेणं ॥ १॥ एवंयथाघटचेष्टायामित्यादिरूपेण शब्दार्थोव्यवस्थितः तद्वत्तितथैवयोवर्त्तते घटादिकोर्थः स एवंसन्भूतोविद्यमानः तदन्नहाभूतंतिवस्तुतदन्यथाशब्दा र्थोल्लंघनेनवर्त्ततेसतत्वतोघटाद्यर्थोपिनभवति किंभूतोविद्य मानःयेनैवमन्यते तेनकारणेनशब्दनयसमभिरूढनया भ्यांसकाशादेवंभूतनयो विशेषेणशब्दार्थनयतत्परः अयं हियोषिन्मस्तकारूढं जलाहरणादिक्रियानिमित्तंघटमानमे व चेष्टमानमेव घटंमन्यते नतुगृहकोणादिव्यवस्थितंविशे षतःशब्दार्थतत्परोयमिति वंजणमत्थेणत्थंच वंजणेणो भयंविशेशे इजहघडसद्दंचेष्टा वयातहातंपितेणेव॥ १॥ व्यं ज्यतेअर्थोनेनेतिव्यंजनंवाचकशब्दोघटादिस्तंचेष्टावताएत द्वाच्येनार्थेनविशिनष्टिसएवघटःशब्दोयश्चेष्टावंतमर्थंप्रति पादयति नान्यइत्येवंशब्दमर्थेननैयत्येव्यवस्थापयतीत्य र्थः तथार्थमप्युक्तलक्षणमभिहितरूपेणव्यंजनेनविशेषय तिचेष्टापिसैवया घटशब्देनवाच्यत्वेनप्रसिद्धायोषिन्मस्तका रूढस्यजलाहरणादिक्रियारूपानतुस्थानतरणक्रियात्मि का इत्येवमर्थं शब्देननैयत्येस्थापयतीत्यर्थः इत्येवमुभयं विशेषयतिशब्दार्थोनार्थः शब्देननैयत्येस्थापयतीत्यर्थः एतदेवाहयदायोषिन्मस्तकारूढचेष्टावानर्थो घटशब्देनो च्यतेसघटलक्षणोर्थः सचतद्वाचकोघटशब्दः अन्यदातुव

॥१॥ यत्सांप्रतमुत्पन्नं वर्त्तमानकालीनं वस्तुयन्नयस्य प्रत्ये कमात्मायत्तदेवतदृजुनयस्वरूपं वस्तुप्रत्युत्पन्नमुच्यते तदे वासौनयः ऋजुप्रतिपाद्यते तदेवच वर्तमानकालीनंवस्तु तस्यार्जसूत्रस्यास्तिअन्यत्रशेषातीतानागतंपरकार्थंच य द्यस्मात् असदविद्यमानं ततोअसत्वादेवतद्वक्रमिच्छत्यसा वितिअतएवउक्तं निर्युक्तिकृता पच्चुपन्नगाही उजुसुनयवि हीमुणेयद्योति यत्कालत्रयेवर्तमानमंतरेणवस्तुत्वं उक्तंच यतः अतीतंअनागतंभविष्यति नसांप्रतंतद्वर्तते इतिवर्त मानस्यैववस्तुत्वमितिअतीतस्यकारणता अनागतस्यका र्यता जन्यजनकभावेनप्रवर्तते अतः ऋजुसूत्रंवर्तमानग्रा हकंतद्वर्तमानं नामादिचतुःप्रकारंग्राह्यं ॥

अर्थ ॥ हवे ऋजुसूत्रनयकहेछे ऋजुके० सरलछे श्रुतके० बोधतेऋजुसूत्रकहियें ऋजुशब्दें अवक्रएटलेसमोछे श्रुतजेने तेऋजुसूत्रकहियें अथवाऋजु अवक्रपणे वस्तु नेजाणे कहे तेऋजुसूत्रकहियें ते. वस्तुनोवक्रपणोकेमजाणियें तेकहेछे सांप्रतके० वर्तमानपणे उपनोजेवर्तमानकालेंवस्तुतेऋजुसूत्रकहियें अन्यजे अतीतअनागत तेऋजुसूत्रनी अपेक्षायें अछतोछेकेमके अतीततोविणसीगयोछे अनेअनागतआव्योन थी तेवारेंअतीतअनागत एबेअवस्तुछे अनेजेवर्तमानपर्यायेंवर्त्ते तेवस्तुपणोछे जेपूर्वका लपश्चात्काल लेयीवस्तुकेवीते नैगमनयछे आरोपरूपछे तिहांकोइपुछे जेसंसारीसकर्मी जीवने सिद्धसमानकहेछे तेतोअनागतकालें सिद्धथसे तोतमेअनागतने अवस्तुकेम कहोछो तेनोउत्तर जेहेभव्यएअनागतभावि माटेकेतानथी एतोवर्तमान सर्वगुणनी छति आत्मप्रदेशेंछे तेआवरणदोषें प्रवर्ततिनथी तेथीतिरोभावीपणामाटे संग्रहनयें कहियें पणवस्तुमां सर्वकेवलज्ञानादिगुण छतावर्त्तेछे तेमाटेसिद्धकहियेंछेयें.

अनेजेवस्तु तेनामादिकपर्यायसहितवर्त्तेछे माटेनामादिकनिक्षेपा तेसर्वऋजुसूत्र नयनाभेदछे तथानामादिक त्रणनिक्षेपातोद्रव्यछे अनेभावतेभावछे एव्यारव्याकारण कार्यभावनी वेचणकरियें तेमाटेछे पणवस्तुमां सहज चारनिक्षेपाते भावधर्मजछे तथा एस्वस्वकार्यनाकर्त्ताजछे एऋजुसूत्रनाबेभेद दिगंबरकहेछे १सूक्ष्मऋजुसूत्र २स्थू लऋजुसूत्र जेवर्त्तमानकालनो एकसमयतेने सूक्ष्मऋजूसूत्रकहियें अनेजेबहुकालिते

र्यायास्तिकश्च आद्योनैगम संग्रह व्यवहार ऋजुसूत्रनेदा
च्चतुर्धा केचित्ऋजुसूत्रंपर्यार्थिकं वदंति तेचचेतनांशत्वेन
विकल्पस्यऋजुसूत्रेग्रहणात्श्रीवीरशासनेमुख्यतःपरिणति
चक्रस्यैवनावधर्मत्वेनांगीकारात् तेषांऋजुसूत्रःद्रव्यनयेएव
धर्मयोर्धर्मिणोर्धर्मधर्मिणोश्च प्रधानोपसर्जनआरोपसंक
ल्पांशादिनावेनानेकगमग्रहणात्मकोनैगमः सत्चैतन्यमा
त्मनीतिधर्मयोः गुणपर्यायवत्द्रव्यमितिधर्मधर्मिणोः क्षण
मेकोसुखीविषयासक्तोजीवइतिधर्मधर्मिणोःसूक्ष्मनिगोदीजी
वसिद्धसमानसत्ताकः अयोगी नोसंसारीतिअंशग्राहीनैग
मःधर्मधर्मादीनामेकांतिकपार्थक्यानिसंधिनैगमान्यासः

अर्थ ॥ हवेस्याद्वादरत्नाकरथी नयस्वरूपलखियेंछैयें नीयतेके० पमाडीयें जेथ
कीश्रुतज्ञान स्वरूपप्रमाणे विषयेकीधो जेपदार्थनोअंश तेअंशथी इतरके० बीजोजे
अंश तेथकीउदासीपणो तेनेपडिवर्जवावालानोजेअनिप्रायविशेष तेनेनयकहियेएटले
वस्तुनाअंशनेग्रहे अनेअन्यथीउदासीनपणो तेनयकहिये एकअंशनेमुख्यकरीने बीजा
अंशनेउठापे तेनयान्यासकहियें तेनयनाबेनेदछे एकद्रव्यार्थिक बीजोपर्यायार्थिक ते
मांद्रव्यार्थिकना १ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार ४ ऋजुसूत्र एचारनेदछे केटलाक
आचार्यते ऋजुसूत्रने विकल्परूपमाटे नावनयगवेषेछे तेरीते द्रव्यार्थिकना त्रणनेदछे.

हवेनैगमनयनुं स्वरूपकहेछे जेधर्मनेप्रधानपणे अथवागौणपणे अथवा धर्मीने
प्रधानपणे अथवा गौणपणे तथाधर्मधर्मीएबेउने प्रधानपणे तथागौणपणे जेगवे
षवो एटलेधर्मीनी प्राधान्यता तेवारेपर्यायोनी प्रधानताग्रयी अनेजिहांधर्मीनोप्रधा
नपणो तिहांद्रव्यनोप्रधानपणो तेमजगौणपणो तथाधर्मधर्मीनो प्रधानगौणपणो
एरीतेजेद्रव्यपर्यायनो गौणप्रधानपणानी गवेषणारूप ज्ञानोपयोग तेनैगमनयजाण
वो तेनाबोधने नैगमबोधकहिये तेनाउदाहरण कहेछे.

सत्के० छतापणो चैतन्यके० जाणपणो एबेधर्ममध्ये एकधर्मपक्षमुख्यपणेग
णे अनेबीजानेगौणपणे नगवेषे एरीतें नैगमनयजाणवो इहांचैतन्यनामेजे व्यंजन
पर्यायतेने प्रधानपणेगणे केमकेचैतन्यपणो तेविशेषगुणछे अने सत्वनामाव्यंजनप
र्यायछे तेसकलद्रव्यसाधारणछे तेमाटेतेने गौणपणेलेखवे एनैगमनोप्रथमनेदकह्यो.

केमकेपेटेपृष्ठुके० पहोलो बुध्नके० घोल संकोचित उदरकलितयुक्त जलाहरणक्रियानेसमर्थ प्रसिद्धघटरूप नावघट तेनेजघटइछेछे पणशेष नाम स्थापना अनेद्रव्य रूप त्रणघटने एशब्दनयघटमानेनही घटशब्दनाअर्थने तेसंकेतनेजघटकहे घटधातु तेचेष्टावाचीछे अतःकारणात्के० एकारणपणामाटे एशब्दनयते चेष्टाकर्त्ताँनेजघटक हेएटलेऋजुसूत्रनय चारनिक्षेपासंयुक्तने पणघटमाने अनेशब्दनयते नावघटनेजघट माने एटलोविशेषपणोछे शब्दनाअर्थनी जिहांउपपत्तिहोय तेनेजतेवस्तुपणेकहे एटलेऋजुसूत्रनयें सामान्यघटगवेष्यो अनेशब्दनयें सद्भावजे अस्तिधर्म तथाअसद्भाव जेनास्तिधर्म तेसर्वसंयुक्तवस्तुने वस्तुपणेंकहे.

एटले वस्तुने शब्देंबोलावतां सातनांगेबोलववो माटेएसप्तनंगीजेटलाज शब्दनय नानेदजाणवा तेसप्तनंगीनो स्वरूपपूर्वेकह्युंछे एशब्दादिकनय वस्तुनापर्यायने अवलं बीने वस्तुनानावधर्मनाग्राहकछे तेमाटेवस्तुना नावनिक्षेपा एनयेंमुख्यछे धुरनाचा रनयमां नामादिक त्रणनिक्षेपामुख्यछे एशब्दनयनुंस्वरूपकह्युंः

गाथा॥जंजंसण्णंनासइ॥तंतंचियसमनिरोहइज्जम्हा सणं तरथ्थविमुहो तउनउसमनिरूढोत्ति ॥ १ ॥ यांयांसंज्ञांघ टादिलक्षणांनाषते वदतितांतामेवयस्मात्संज्ञांतरार्थविमु खः समनिरूढोनयःनानार्थनामा एवनाषते यदिएकपर्याय मपेक्ष्यसर्वपर्यायवाचकत्वं तथा एकपर्यायाणांसंकरःपर्या यसंकरेचवस्तुसंकरोनवत्येवेतिमानूत्संकरदोषः अत ःपर्या यांतरानपेक्षएवसमनिरूढनयइति ॥

अर्थ ॥ हवेसमनिरूढनयनी व्याख्याकहियेंछैयें जेशब्दनयतेइंद्र शक्र पुरंदर इत्या दिकसर्वइंद्रनानामनेदछे पणएकइंद्रपर्यायवंत इंद्रदेखी तेनासर्वनामकहे उक्तंचविशे षावश्यके एकस्मिन्नपिइंद्रादिकेवस्तुनियावत् इंद्रनशक्रनपुरंदारणादयोर्थाघटंते त द्भे नेंद्रशक्रादिबहुपर्यायमपित द्वस्तुशब्दनयोमन्यतेसमनिरूढवस्तुनेवमंस्यतेइत्यनयोर्नेदः

जेएकपर्यायप्रगटपणे अने शेषपर्यायने अणप्रगटवे शब्दनय तेटलासर्वनामबोला वे पणसमनिरूढनयतेनबोलावे एटलोशब्दनय तथासमनिरूढनयमां नेदछे माटेह वे समनिरूढनयकहेछे.

घटकुंनादिकमां जेसंज्ञानो वाच्यअर्थदेखाय तेजसंज्ञाकहे जेमांसंज्ञांतर अर्थने

नादीगजे इष्टअर्थतेने अविरोधेंकरीने विशेषधर्मोंने एकरूपपणेजेग्रहणकरवो तेसंग्रहनयकहियें एनावनाछे तेनाबेन्नेदछे १ परसंग्रह २ अपरसंग्रह तेमां अशेषविशेषोदासीनंनजमानंशुद्धद्रव्यं सन्मात्रमभिमन्यमानःपरसंग्रहइति जेसमस्तविशेषधर्मस्थापनानीनजनाकरतो एटलेविशेषपणाने अणग्रहतोथको शुद्धद्रव्य सत्तामात्रप्रतेंमाने जेमद्रव्यएपरसंग्रह विश्वएकसत्पणामाटे एमकह्याथी छतापणाना एकपणानुं ज्ञानथायछे एटलेसर्वपदार्थनोएकपणेग्रहणछे तेपरसंग्रहकहियें.

तथाजेसत्तानो अद्वैतस्वीकारे अने द्रव्यांतरन्नेदनमाने समस्तविशेषपणाने नाकहेतोथको जेग्रहणकरे तेअद्वैतवादीवेदांत तथासांख्यदर्शन एपरसंग्रहान्नासछे केमके जेन्नेदधर्म छतादेखायछे तथाद्रव्यांतरपणो तेनेनमाने माटे परसंग्रहान्नासकहियें अनेजैनतो विशेषसहित सामान्यनेग्रहेछे माटेसंग्रहनयकहियें.

द्रव्यत्वादिनयांतरसामान्यानिमत्वातः तद्भेदेषुगजनिमीलिकावलंबमानः अपरसंग्रहः द्रव्यजे जीवअजीवादिक जेअवांतरसामान्यनेमानतो अनेजीवनेविषे प्रतिजीवनोविशेषन्नेद नव्य अन्नव्यसम्यक्तमिथ्यात्वी नरनारकादिजेन्नेद तेनेगजनिमीलिकाके॰मास्ताइयेंनगवेषवो तेअपरसंग्रहकहियें अनेद्रव्यने सामान्यपणेमाने पणस्वद्रव्यनी परिणामिकतादिक धर्मनेनमाने तेअपरसंग्रहान्नासकहियें एसंग्रहनयनुंस्वरूपकह्यो.

संग्रहणेचगोचरीकृतानामर्थानांविधिपूर्वकमवहरणं येनान्निसंधिनाक्रियतेसव्यवहारःयथयत्सत्तत्द्रव्यंपर्यायश्चेत्यादियःपुनरपरमार्थिकंद्रव्यपर्यायप्रविन्नागमान्निप्रैतिसव्यवहारान्नासः चार्वाकदर्शनमितिव्यवहारदुर्नयः

अर्थ ॥ हवेव्यवहारनयकहेछे संग्रहनयेंग्रह्याजे वस्तुनासत्वादिकधर्म तेनेजगुणन्नेदेंवेचे निन्ननिन्नगवेषे तथापदार्थनीगुणप्रवृत्ति तेनेजमुख्यपणेगवेषे तेव्यवहारनय कहियें जेमद्रव्यछेतेनाजीवपुद्गलादिकपर्यायना क्रमन्नावी तथासहन्नावी एरीतेंबेन्नेदछे तेमांवलीजीवबेप्रकारें १ सिद्धना २ संसारी तेमजपुद्गलनाबेन्नेद परमाणुतथास्कंध इत्यादिककार्यन्नेदें निन्नमाने तथाक्रमन्नावीपर्यायनाबेन्नेद एकक्रियारूप बीजोअक्रियारूप इमवेचणजे सामर्थ्यादिकगुणन्नेदेंपडे तेसर्व व्यवहारनयजाणवो अनेजेपरमार्थविना द्रव्यपर्यायनोविन्नागकरे ते व्यवहारान्नासजाणवो.

जेकल्पनाकरीन्नेदेंवेंचे तेचार्वाकमतप्रमुख एव्यवहारनोदुर्नयछे जेम चार्वाकप्रमाणपणें छतोजीवपणो लोकप्रत्यक्षमां दृष्टिगोचरनथी आवतो तेमाटेजीवनथी एमक

स्वंतरस्यैवतच्चेष्टाभावादघटत्वं घटध्वनेश्चावाचकत्वमित्ये
वमुन्नयविशेषकः एवंभूतनयइति ॥

अर्थ ॥ हवेएवंभूतनयनोस्वरूपकहिछैयें एवंके० जेमघटचेष्टावाची इत्यादिकरूपें शब्दनयनोअर्थकह्योछे एरीतेजेघटादिकअर्थवर्ते ते एवंके० एमज जेविद्यमानपणे शब्दनाअर्थने उलंघीनेवर्त्ते तेतेशब्दनोवाच्यनथी अने शब्दार्थपणोजेमांनपामियें ते वस्तुतेरूपेनही माटेजोशब्दार्थमांथी एकपर्यायपण उछोहोयतो एवंभूतनयतेने तेप णोकहेनही तेमाटेशब्दनयथी तथासमभिरूढनयथी एवंभूतनयत्तेविशेषांतरछे.

एएवंभूतनयते स्त्रीनेमस्तकेचढ्यो पाणीआणवानी क्रियानोनिमित्त मा र्गेंआवतापणानी चेष्टाकरतोहोय तेनेघटमाने पणघरनेखूंणे रह्योजेघट तेनेघटक रीमानेनही केमकेते चेष्टाने अणकरतोछेतेमाटे. जेथकीअर्थने व्यंजीयेके० प्रगटक रियें तेनेव्यंजनकहिये व्यंजनतेवाचकशब्दछे तेअर्थनेकहेतेक्रियावंतथको तेनेजतवस्तु कहे बीजानेनकहे अनेतेहिजअर्थेंकह्युं जेलक्षण तेकह्यानेरूपेंविशेषथाय जेमचे ष्टावटशब्दवाचेप्रसिद्धछे योषितूके० स्त्रीनेमाथेपाणीलावतो तेघट तथास्थानकेंरह्यो अथवातरणक्रियाकरताने एवंभूतनयघटकहेनही एशब्देंअर्थ तथाअर्थेंशब्दनेथापेछे एवुंएरहस्यछे जेस्त्रीनेमस्तकेंचढ्यो चेष्टावंतअर्थ तेघटशब्देंबोलावे तेथीअन्यथा तेने तेपणेबोलावेनही जेम सामान्यकेवली जे ज्ञानादिकगुणेसमानछे तेने समभिरूढ नय अरिहंतकहे पण एवंभूतनयतो समोसरणादि अतिशयसंपदासहित तथाकेव लीते इंद्रादिकेंपूजतां युक्तहोयतेनेज अरिहंतकहे तेविनानकहे वाच्यवाचकनी पूरण तानेकहे एस्वरूपे एवंभूतनयजाणवो.

एसातेनयनाभेद ते विशेषावश्यकने अनुसारेकह्या तेमांनैगमनादसभेद संग्रह नाछभेद अथवाबारकह्या व्यवहारनाभेदआठ अथवाचउदकह्या ऋजूसूत्रनाचार अथवा ६ कह्या शब्दनासातभेदकह्या समभिरूढनाबेभेद अनेएवंभूतनो एकभेदक ह्यो एरीतेसर्वनाभेदकह्या वलीनयचक्रमां नयनाभेद सातसोकह्याछे तेपणजाणवा.

एवमेवस्याद्वादरत्नाकरात्पुनर्लक्षणतउच्यते नीयतेयेनश्रु
ताख्यप्रामाण्यविषयीकृतस्यार्थस्यशस्तादितरांशौदासीन्य
तः संप्रतिपत्तुरभिप्रायविशेषोनयःस्वाभिप्रेतादेशादपरां
शापलापीपुनर्नयाभासःससमासतःद्विभेदः द्रव्यार्थिकःप

ए तेनेनेदें शब्दनोनेदपडे तेनेदेंजअर्थनेकहे अथवा जलाहरणादि समर्थनेघटकहे तथाकुंनादिक चिन्हपर्यायजेटलाछे तेटलानो अर्थवर्ततोनदेखाय तोपण तेनेनाम कहीबोलावे एमजेमां कार्यनोसामर्थ्यवंतपणोछे तेनेग्रहे पणमाटीनापिंमने घटक हेनही तेशब्दनयकहियें अनेजे संग्रह तथानैगमनयवालोकहेते सत्तायोग्यता अंश नाग्राहकछे तथातत्वार्थटीकामध्ये शब्दवशथीअर्थपडिवजवो तेशब्देंबोलावतोहोय जे अर्थतेवस्तुमां धर्मपणेप्रगटदेखाय तेनेज तेवस्तुमाने एनयने शब्दानुजायी अर्थप रिणमतिजेवस्तु तेनेवस्तुकहेछे काललिंगादिनेदें अर्थनोनेदछे तेनेद तेमते धर्मवस्तु माने तेशब्दनयकहियें अनेतेअर्थविना तेवस्तुमध्ये तेपणोवर्ततो देखातोनथी तेनेते वस्तुपणेसमर्थनकरे तेशब्दानासकहिजे एटलेशब्दनयकह्यो.

एकार्थावलंबिपर्यायशब्देषुनिरुक्तिनेदेनन्निन्नमर्थं समन्नि रोहन्समन्निरूढः इंदनादिंद्रः शकनाछक्रः पुरदारणात् पुरंदरःइत्यादिषुयथापर्यायध्वनिनामान्निधेयनानात्वमेवक क्षीकुर्वाणस्तदान्नासः यथाइंद्रःशक्रःपुरंदर इत्यादिन्निन्नान्निधेये

अर्थ ॥ हवेसमन्निरूढनयकहेछे जेएकपदार्थनेअविलंबी जेटलासरिखानाम तेट लापर्यायनामथया तेपर्यायनामजेटलाहोय तेटलानिरुक्तिव्युत्पत्तिनिन्नहोय तेअर्थनो पणनेदहोय तेअर्थने शंके० सम्यक्प्रकारें आरोहतो एटलेएटलासर्वअर्थसंयुक्तजेहो य तेसमन्निरूढनयकहियें जेमइंद्रादिधातु परमैश्वर्यनेअर्थेछे तेपरमऐश्वर्यवंतनेंइंद्रक हियें तथाशकनकहेतांनविनविशक्तियुक्तने शक्रकहियें पुरके० दैत्यने दरेके० विदारे तेपुरंदर अनेशचिजेइंद्राणी तेनोपतिस्वामी तेशचीपतिकहियें एटलासर्वधर्मतेइंद्रमांछे तेमाटेजेदेवलोकनोधणीछे तेनेइंद्रएवेनामें बोलावेछे बीजानामादिकइंद्रने एनामेन बोलावे जेटलापर्यायनामछे तेनाजेअर्थथाय तेसर्वनेनिन्ननिन्नअर्थकहेछे पणएकार्थ नजाणेते समनिरूढान्नासकहियें एटलेंसमन्निरूढनयकह्यो.

एवंन्निन्नशब्दवाच्यत्वाच्छब्दानांस्वप्रवृत्तिनिमित्तन्नूतक्रिया विशिष्टमर्थंवाच्यत्वेनाभ्युपगच्छन्नेवंन्नूतः यथाइंदनमनुन्नव न्निंद्रःशकनाछक्रःशब्दवाच्यतयाप्रत्यक्षस्तदान्नासःयथा विशिष्टचेष्टाशून्यं घटाख्यवस्तुनः घटशब्दवाच्यं घटश ब्दप्रवृत्तिन्नूतार्थशून्यत्वात् पटवदित्यादि.

तथावलीवस्तुपर्यायवत्द्रव्यं एमबोलवुंते धर्मिनोनैगमछे इहांपर्यायवत्द्रव्यं एमवस्तुछे इहांद्रव्यनोमुख्यपणो वलीवस्तुनेपर्यायवंतकेवुं ते वस्तुनोगौणपणो अनेपर्यायनोमुख्यपणो इहांउजयगोचरपणामाटे एनैगमनोबीजोजेदकह्यो

क्षणमेकःसुखीविषयासक्तोजीवइतिधर्मधर्मिणोरिति इहांविषयासक्तजीवाख्य जे धर्मिना मुख्यताना विशेषपणाथी सुखलक्षणधर्मनीप्रधानता तेविशेषणपणेकरीने धर्मधर्मिने आलंबने एत्रीजोनैगम जेवारेधर्म तथाधर्मिएबेने अवलंबे ग्रहणकरे ते वारेसंपूर्णवस्तुनोग्रहणथयो तेवारेएज्ञाननेप्रमाणकह्यो तिहांउत्तरद्रव्यपर्यायतेबेहुनेप्रधानपणे अनुजवतो जेज्ञानप्रमाणथाय इहांबेपक्षनेविषे एकनीगौणता बीजानीमुख्यतालेइने ज्ञानथायछेतेमाटे नयकहियें. तथावलीसूक्ष्मनिगोदिजीव तेसमानसत्तावंतछे अथवा अयोगीकेवलीजिनतेने संसारीकेवुं तेअंशनैगम.

हवेनैगमाज्यासकहेछे वस्तुमांधर्मअनेकछे तेएकांतेमाने पणएकबीजाने सापेक्षपणेनमाने एटलेएकधर्मनेमाने अनेबीजाधर्मनेनमाने तेनैगमाज्यासकहियें एडुर्नय जाणवो केमके अन्यनयनेगवेषेनही माटेजेमआत्मानेविषे सत्वतथाचैतन्य एधर्मजिन्नजिन्नछे तेमांचैतन्यपणोनमाने ते नैगमाज्यासकहियें एटलेनैगमनयकह्यो.

यथात्मनिसत्वचैतन्येपरस्परंजिन्ने सामान्यमात्रग्राहीसत्तापरामर्शरूपसंग्रहः सपरापरजेदात्द्विविधः तत्रशुद्धद्रव्यसन्मात्रग्राहकःपरसंग्रहः चेतनालक्षणोजीवइत्यपरसंग्रहः सत्ताद्वैतंस्वीकुर्वाणः सकलविशेषान्निराचक्षाणः संग्रहाजासः संग्रहस्यैकत्वेन एगेआयाइत्यनजिज्ञानात् सत्ताद्वैतएवआत्माततः सर्वविशेषाणांतदितराणांजीवाजीवादिद्रव्याणामदर्शनात् द्रव्यत्वादिनावांतरसामान्यानिमन्वानस्तदजेदेषुगजनिमीलिकामवलंबमानःपरापरसंग्रहः धर्माधर्माकाशपुद्गलजीवद्रव्याणामैक्यं द्रव्यत्वादिजेदादित्यादिद्रव्यत्वादिकंप्रतिजानानस्तद्विशेषान्निन्हुवानस्तदाजासः यथाद्रव्यमेवतत्वं तत्पर्यायाणा मग्रहणाद्विपर्यासइतिसंग्रहः

अर्थ ॥ हवेसंग्रहनयकहेछे सामान्यमात्र समस्तविशेषरहित सत्यद्रव्यत्वादिकनेग्रहेवानोछेस्वजावजेनोते संके०पिंमपणेविशेषराशीनेग्रहे पणव्यक्तपणेनग्रहे स्वजाति

पुनैगमः सामान्यविशेषोज्नयग्राहकः व्यवहारविशेषग्राहकःद्रव्यार्थावलंबिऋजुसूत्रविशेषग्राहकएव एतेचत्वारःद्रव्यनयाः शब्दादयःपर्यायार्थिकविशेषावलंबीनावनयाश्चेति शब्दादयोनामस्थापनाद्रव्यनिक्षेपादवस्तुतयाजानाति परस्परसापेक्षाःसम्यक्दर्शनिप्रतिनयंन्नेदानांशतं तेन सप्तशतंनयाना मितिअनुयोगधारोक्तत्वात्ज्ञेयं

अर्थ ॥ एसातनयमां आद्यनाचारनयजेछे तेअविशुद्धछे शामाटे के जे पदार्थ के० द्रव्य तेनेसामान्यपणेकेवाना अधिकारीछे एनयतुंकिहांएकअर्थनय एपणनाम छे तेअर्थशब्दे द्रव्यलेवुं तथाशब्दादिकत्रणनयते शुद्धनयछे केमके शब्दनाअर्थनी एनेमुख्यताछेपेहेलानयतेन्नेदपणे वचननेवांछेछे अनेशब्दादिकनयते लिंगादिके अन्नेदवचने अन्नेदकहे तथान्निन्नवचनने न्निन्नार्थकहीमाने अनेसमन्निरूढते न्निन्नशब्द तेनेवस्तुपर्यायनमाने तथाएवंन्नूतते न्निन्नगोचरपर्यायने न्निन्नमाने जेचेष्टाकरतोहोय तेनेघटकहे पणखूंणेपड्योघटकहेनहीं चित्रामकरतोहोय तथातेजउपयोगेंवर्ततो होय तेनेचित्रकारकहे पणंतेजचित्रकारसुतोहोय अथवाखावाबेगोहोय तेनेचित्रकारनकहे केमकेतेउपयोगेंरहितछे माटेएनयतेशब्द तथाअर्थनेअन्नेदपणोमानेछे अने अर्थथीशून्यशब्दते प्रमाणनथी अनेशब्दप्रधान अर्थतेद्रव्यने गौणपणेवर्तता शब्दादिकत्रणनयछे एमतत्वार्थटीकामध्येकह्योछे.

एसातनयनेविषे पेहेलोनैगमनयते सामान्यविशेषबेहुनेमानेछे संग्रहनयते सामान्यनेमानेछे व्यवहारनयविशेषनेमानेछेअने द्रव्यार्थावलंबीछे तथाऋजुसूत्रतोविशेषग्राहकछे एचारतेद्रव्यनयछे अनेपाछला शब्दादिकत्रणनयते पर्यायार्थिक विशेषावलंबी न्नावनयछे तथाशब्दादिकनयते नामस्थापनाद्रव्य एपेहेलात्रणनिक्षेपाने अवस्तुमानेछे तिन्हसद्दनयाणंअवत्थू एअनुयोगद्वारसूत्रतुंवचनछे एसातेनयपरस्परसापेक्षपणे ग्रहेते समकेतिजाणवा अनेजो एनय परस्परविरोधीहोय तोमिथ्यात्वीजाणवा तथाएकेकानयना सोसोन्नेदथायछे एमसातेनयनामली सातसोन्नेदथायछे ए अधिकार श्रीअनुयोगद्वारसूत्रथीकह्योछे.

पूर्वपूर्वनयःप्रचुरगोचरःपरास्तुपरिमितविषयाः सन्मात्रगोचरात्संग्राहात्नैगमोन्नावान्नावन्नूमित्वाद्न्नूरिविषयः वर्त्त

हे अनेजगत्मांपंचभूतादिकवस्तुनथी एमकल्पनाकरी भुललोकनेकुमार्गेप्रवर्त्तावे ते व्यवहारदुर्नयकहियें एव्यवहारनयनुंस्वरूपकह्युं.

ऋजुवर्तमानक्षणस्थायिपर्यायमात्रप्राधान्यतःसूत्रयतुअभि प्रायः ऋजुसूत्रः ज्ञानोपयुक्तःज्ञानीदर्शनोपयुक्तः दर्शनी कषायोपयुक्तः कषायीसमतोपयुक्तः सामायकीवर्तमाना पलापीतदाभासः यथातथागतमतइति ॥

अर्थ ॥ हवेऋजुसूत्रनयकहेछे ऋजुके० सरलपणेअतीतअनागतने अणगवेष तो अनेवर्तमानसमयवर्त्तता जेपदार्थनापर्यायमात्र तेने प्रधानपणे सूत्रके० गवेषे तेऋजुसूत्रनयकहियें तेज्ञाननेउपयोगें वर्तताने ज्ञानीकहे दर्शनोपयोगें वर्तताने द र्शनीकहे कषायपणेवर्तताजीवने कषायीकहे समतानेउपयोगेंवर्तताजीवने सामाय कवंतकहे इहांकोइपुछेजे उपरकह्यामुजवतो ऋजुसूत्र तथाशब्दनय एवेएकजथायछे ते नेउत्तरकहेछे जेविशेषावश्यकमांकह्युंछे कारणंयावत् ऋजुसूत्रः एटलेज्ञाननेकारणपणे वर्ततो तेऋजुसूत्रग्रहेछे अनेजेजाणपणारूप कार्यपणेथाय तेशब्दनयकहियेंएफेरछे.

वर्तमानकालनेपण ग्रहणनकरे तेऋजुसूत्राभासकहियें जेछताभावनेअछताकहे अथवाविपरीतकहे जेमजीवनेअजीवकहे अजीवनेजीवकहे इत्यादिक ते गतके० बौद्धनोमतछे जेछतोसदासर्वदावर्तंतो जीवादिद्रव्य तेनापर्यायने पलटवे सर्वथाद्र व्यने विनासिकमाने तेनेऋजुसूत्रनयाभासाभिप्रायजाणवो एऋजुसूत्रनयकह्यो.

एकपर्यायप्रागभावेनतिरोभाविपर्यायग्राहकशब्दनयःका लादिभेदेनध्वनेरर्थभेदंप्रतिपाद्यमानःशब्दः जलाहर णादिक्रियासमर्थएवघटः नमृत्पिंडादौ तत्तार्थवृत्तौशब्द वशादर्थप्रतिपत्तिः तत्कार्यधर्मेवर्त्तमानवस्तुतथामन्वानः शब्दनयः शब्दानुरूपंअर्थपरिणतंद्रव्यमिच्छतित्रिकाल त्रिलिंगत्रिवचनप्रत्ययप्रकृतिभिःसमन्वितमर्थमिच्छति तभे देतस्यतमेवसमर्थप्रमाणस्तदाभासः

अर्थ ॥ हवेशब्दनयकहेछे जेवस्तुनाएकपर्यायने प्रगटदेखवे वीजाशब्दवाचकप र्यायने तिरोभावें अणप्रगटवेंपणतेपर्यायनेग्रहे अथवाकालत्रण वचनत्रण लिंगत्र

एमसर्वनयनी विधिप्रतिषेधेंकरीने सप्तभंगीऊपजे पणनयनीजेसप्तभंगी ते विकलादेशी जहोय अनेजेसकलादेशीसप्तभंगी तेप्रमाणछेपणनयनीसप्तभंगीनऊपजे.

उक्तंच रत्नाकरावतारिकायां विकलादेशस्वभावाहिनयसप्तभंगीवस्त्वंशमात्रप्ररूपकत्वात् सकलादेशस्वभावनुप्रमाणसप्तभंगी संपूर्णवस्तुस्वरूपप्ररूपकत्वात्एवचनछे एटलेयथायोग्यपणेनयनोअधिकारकह्यो.

सकलनयग्राहकंप्रमाणं प्रमाताआत्मा प्रत्यक्षादिप्रमाणसिद्धः चैतन्यस्वरूपः परणामीकर्त्तासाक्षात्भोक्तास्वदेहपरिमाणः प्रतिक्षेत्रभिन्नत्वेनैवपंचकारणसामग्रीतः सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रसाधनात्साधयतेसिद्धिः स्वपरव्यवसायिज्ञानंप्रमाणं तद्विविधप्रत्यक्षपरोक्षभेदात्स्पष्टंप्रत्यक्षापरोक्षमन्यत् अथवाआत्मोपयोगताइंद्रियद्वाराप्रवर्तनेनयत्ज्ञानंतत्प्रत्यक्षं अवधिमनपर्यायौदेशप्रत्यक्षो केवलज्ञानंतुसकलप्रत्यक्षंमतिश्रुतेपरोक्षे तच्चतुर्विधं अनुमानोपमानागमार्थापत्तिभेदात् लिंगपरामर्शोनुमानं लिंगंचाविनाभूतवस्तुकंनियतंज्ञेयं यथागिरिगुहिरादौव्योमावलंबिधूमलेखांदृष्ट्वाअनुमानंकरोति पर्वतोवन्हिमान्धूमवलात् यत्रधूमस्तत्राग्निः यथामहानसं एवंपंचावयवशुद्धं अनुमानं यथार्थज्ञानकारणं सदृश्यावलंबनेनाज्ञातवस्तुनांयत्ज्ञानंउपमानज्ञानं यथागोस्तथागवयः गोसादृश्येनअदृष्टगवयाकारज्ञानं उपमानज्ञानं यथार्थोपदेष्टापुरुषआप्तः सद्भूत्कृष्टतोवीतरागः सर्वज्ञएव आप्तोक्तंवाक्यंआगमः रागद्वेषाज्ञानभयादिदोषरहितत्वात् अर्हतः वाक्यआगमः तदनुयायिपूर्वापरविरुद्धंमिथ्यात्वासंयमकषायभ्रांतिरहितं स्याद्वादोपेतंवाक्यं अन्येषांशिष्टानामपिवाक्यंआगमः लिंगग्रहणात्ज्ञेयज्ञानोपकारकंअर्थापत्तिप्रमाणं यथापीनोदेवदत्तोदिवानभुंक्ते

अर्थ ॥ हवेएवंभूतनयकहेछे शब्दनीप्रवृत्तिनो निमित्तभूतजेक्रिया तेविशिष्टसंयुक्त जेअर्थ तेनेवाच्यजेधर्म तेनेजेपोचतोहोय एटलेतेकारणकार्यधर्मसहिततेनेएवंभूतनय कहियें तथा ऐश्वर्यसहित तेइंद्रशक्ररूप सिंहासनेबेशेतेशक्र शचिके० इंद्राणीनेसा थेबेठो तेवारेंशचीपतिकहे एटलेजेशब्दना जेटलापर्याय तेसर्वेतेमांपोचताजावने ते नामकहिबोलावे अनेजेपर्यायपोचतोदेखेनहीतेपर्यायनीनाकहे जिहांसुधीएकपर्याय कणोछेतिहांसुधी समभिरूढनयकहियें अने सर्ववचनपर्यायनेपोचे तेवारेंएवंभूतनयक हियें जेपदार्थनोनामभेदनो भेददेखीनेपदार्थनीभिन्नताकहे तेएवंभूतनयाभासकहिजे नामभेदेंतेवस्तुजभिन्न जेम हाथी घोडा हिरणभिन्नछे तेमभिन्नपणोमाने जेमअर्थभि न्नपणामाटे घटथी पटभिन्नछे तेमइंद्रपणाथी पुरंदरपणोभिन्नमाने तेएवंभूतनयनोदु र्नयजाणवो एटलेएवंभूतनयकह्यो एरीतेसातनयनी व्याख्याकही.

अत्र आद्यनयचतुष्टयमविशुद्धपदार्थप्ररूपणाप्रवणला त् अर्थनयानामद्रव्यत्वसामान्यरूपानयाः शब्दादयो वि शुद्धनयाः शब्दावलंबार्थमुख्यत्वादाद्यास्तेतत्वभेदद्वारेणव चनमिच्छंतिशब्दनयास्तावत्समानालिंगानां समानवचना नांशब्दानां इंद्रशक्रपुरंदरादीनांवाच्यं भावार्थमेवाभिन्न मभ्युपैति नजातुचित्भिन्नवचनंवाशब्दंस्त्रीदाराः तथाआ पोजलमितिसमभिरूढवस्तुप्रत्यर्थंशब्दनिवेशादिंद्रशक्रा दीनांपर्यायशब्दत्वंनप्रतिजानीते अत्यंतभिन्नप्रवृत्तिनिमि त्तत्वादभिन्नार्थत्वमेवानुमन्यंते घटशक्रादिशब्दा नामिवेति एवंभूतः पुनर्यथासद्भाववस्तुवचनगोचरं आप्रवृत्तीतिचेष्टा विशिष्टएवार्थोघटशब्दवाच्यः चित्रालेख्यतोपयोगपरिण तश्चचित्रकारः चेष्टारहितस्तिष्ठन्घटोनघटःतच्छब्दार्थरहि तत्वात् कूटशब्दवाच्यार्थवन्नापिभुंजानः सयानोवाचित्रका राभिधानाभिधेयश्चित्रज्ञानोपयोग परिणतिशून्यत्वाद्गोपा लवदेवमभेदभेदार्थवाचिनो नेकैकशब्दवाच्यार्थावलंबिन श्चशब्दप्रधानार्थोपसर्जनाच्छब्दनयाइतितत्वार्थवृत्तौ एते

ग्निसहितछे ए पक्षतथासाध्यकह्यो जेपक्षतेपर्वत अनेसाध्यते अग्निवंतपणो साधवो तेहेतु जेधूम्रवंतपणामाटे एटलेजिहांधूम्रहोय तिहांअग्निअवश्यहोयेज आकाशने पोहोचती जेधूंम्ररेषाते अग्निविनाहोयनही तिहांदृष्टांतकहेछे.

जेममाहानसके० रसोडो तेरसोडानेविषे धूमतथाअग्नीनेजेलादीठा तेमाटेइहां आअमुकपर्वतनेविषेधूमछे तोतिहांनिश्चेथीअग्नीछेज एहवीव्याप्ति निर्धारीनेज्ञानक रवो तेपंचावयवें शुद्धअनुमानप्रमाणकहियें तेअनुमानप्रमाण मतिज्ञान तथाश्रुत ज्ञाननुंकारणछे तेअनुमानेजे यथार्थज्ञानथाय तेनेमानके०प्रमाणकहियें अनेजे अ यथार्थज्ञानथाय तेप्रमाणनही

तथासरिखावलंबीपणे अजाणीवस्तुनो जेजाणपणोथाय जेम गोके० बलद ते म गवयके० गवो ए गो सरिखो गवयनुंज्ञानथयुं तेउपमानप्रमाणकहियें

यथार्थभावनो उपदेशकजेपुरुष तेआप्तकहियें तेउत्कृष्टआप्त वीतरागरागद्वेषर हितसर्वज्ञकेवलज्ञानीते आप्तनोकह्योजेवचन तेनेआगमकहियें जेरागद्वेषतथाअज्ञा नएदोषेआगोपाछो अधिकोओछो बोलायछे तेआगमनही अने राग द्वेष भय अज्ञान रहितजे अरिहंत तेनुंवचनते आगमप्रमाणजाणवो

तथावलीते अरिहंतनावचनने अनुजायी पूर्वापरअविरोधि मिथ्यात्व असंयम कषायथीरहित तेभ्रांतिविनास्याद्वादेंयुक्त तथाजे साधकते साधक बाधकते बाधक हेयते हेय उपादेयते उपादेय इत्यादिकवेचणसहित जेहोय तेनोकह्योते आगम प्रमाणजाणवो उक्तंच सुत्तंगणहररइयं तहेवपत्तयबुधरइयंच ॥ सुअकेवलीनारहियं अभिन्नदशपुव्विणारइयं ॥१॥ इत्यादिकसडुपयोगी भवभीरु जगतजीवोना उपकारी एवाश्रुतआम्नायधर जेश्रुतनेअनुसारेंकहे तेनोवचनपण प्रमाणमानवुं

तथाकोइक फलरूपलिंगेकरीने जेअजाण्यापदार्थनो निर्धारकरियें तेअर्थापत्तिप्र माणकहियें जेमदेवदत्तनो पीनके० पुष्टशरीरछे पण तेदेवदत्त दिवसनोजमतोनथीते वारेंअर्थापत्तिथीजाणीयें जेरात्रेंजमतोहशे माटेपुष्टशरीरछे एमअर्थापत्तिप्रमाणजा णवो एप्रमाणतेजाते अनुमाननोअंशछे तेमाटे श्रीअनुयोगद्वारमां प्रथमकह्योनथी.

इहांदर्शनांतरीजे प्रमाणमानेछे पणतेसत्यनथी जेमछप्रकारनाइंद्रिय सन्निकर्षथी उपनो जेज्ञान तेनेनैयायिक प्रत्यक्षप्रमाणकहेछे अने परब्रह्मनेइंद्रियरहितमानेछेज्ञा नानंदमयीमानेछे तेवारें इंद्रियरहितज्ञानते अप्रमाणथायछे इत्यादिकअनेकयुक्तिछे तेमाटेतेप्रमाणनही तथाचार्वाकमतवाला मात्र एकइंद्रियप्रत्यक्षनेज प्रमाणमानेछे

मानविषया ऋजुसूत्राद्यवहार स्त्रिकालविषयत्वात्बहुविषय
कालादिभेदेनभिन्नार्थोपदर्शनात् भिन्नाहजुसूत्रविपरीतत्वा
न्महार्थःप्रतिपर्यायमशब्दमर्थभेदमभी्प्सितःसमभिरूढा
च्छब्दप्रभूतविषयःप्रतिक्रियांभिन्नमर्थंप्रतिजानात्एवंभूता
त्समभिरूढःमहान्गोचरः नयवाक्यमपिस्वविषयेप्रवर्त्त
मानंविधिप्रतिषेधाभ्यांसप्तभंगीमनुव्रजति असंग्राहीनैगमः
सत्ताग्राहीसंग्रहः गुणप्रवृत्तिलोकप्रवृत्तिग्राहीव्यवहारःका
रणपरिणामग्राहीऋजुसूत्रः व्यक्तकार्यग्राहीशब्दःपर्यायां
तरभिन्नकार्यग्राही समभिरूढः तत्परिणमनमुख्यकार्य
ग्राहीएवंभूतः इत्याद्यनेकरूपोनयप्रचारः जावंतियावयण
प्पहा॥तावतियाचेवहूंतिनयवाया॥इतिवचनात् उक्तोनयाधिकारः

अर्थ ॥ एप्रकारे पूर्वके० पूर्वलोजेनैगम नय तेनो विस्तारघणोजाणवो अनेतेथी ऊपरलोनयतेनो परिमितविषयछे एटले थोडोविषयछे केमकेसत्तामात्रनुंग्राहकसंग्रह नयछे छतिसत्ताने संग्रहनयग्रहे अनेनैगमते छताभाव अथवा संकल्पपणे अछता भाव सर्वनेग्रहे अथवासामान्यविशेष बेधर्मनेग्रहे तेमाटेनैगमनोविषयघणोछे. तथा संग्रहनयते सत्तागत सामान्यविशेष बेहुनेग्रहेछे अनेव्यवहारते सत्एकविशेषनेज ग्रहेछे माटेसंग्रहनयथी व्यवहारनयनो विषयथोडोछे. अने व्यवहारनयथी संग्रह नयते बहुविषयीछे तथाऋजुसूत्रनयते वर्त्तमानविशेषधर्मनो ग्राहकछे अनेव्यवहार थी ऋजुसूत्रनयते कालविषयनोग्राहकछे तेमाटेव्यवहार बहुविषयीछे अने व्यवहार थी ऋजुसूत्रअल्पविषयीछे ऋजुसूत्रनयते वर्त्तमानकालग्रहे अनेशब्दनयकालादि वच नलिंगथी वेहेचताअर्थनेग्रहे अने ऋजुसूत्रनयतेवचनलिंगने भिन्नपाडतोनथी तेमाटे ऋजुसूत्रथी शब्दनयअल्पविषयीछे ऋजुसूत्रबहुविषयीछे अनेशब्दनय सर्वपर्यायनो एकपर्यायनेग्रहताग्रहे अनेसमभिरूढतेजेधर्मव्यक्त तेवाचकपर्यायनेग्रहे तेमाटे शब्दन यथी समभिरूढनयते अल्पविषयीछे केमके समभिरूढते पर्यायनोसर्वकालगवेष्योछे. अने एवंभूतनयते प्रतिसमयें क्रियाभेदें भिन्नार्थपणो मानतोअल्पविषयीछे तेमाटे एवंभूतथी समभिरूढबहुविषयीजाणवो अनेएवंभूत अल्पविषयीजाणवो.

जेनयवचनछे तेपोतानानयने स्वरूपेंअस्तिछे अनेपरनयनास्वरूपनी तेमांनास्तिछे

नें प्रथमज्ञानोपयोग पछेदर्शनोपयोगछे जेसर्व जीवनवोगुणपामेतेनो केवलीनेज्ञानो पयोग तेकालेंथाय तेमाटे प्रथमज्ञानोपयोगवर्त्ते.

अनेसहकारीजेकर्तृताशक्ति तेजेमहतोतेमजछे एकगुणनेसाह्यकरे अनेबीजागुणनो उपयोगसहकारेंवर्त्तेछे सहकारतेज्ञानोपयोग विशेषधर्मनेजाणे तेजाणतांविशेषते सामान्यनेंआधारेंवर्तेछे तेसहितजाणेएटले विशेषतेजेला सामान्यग्रहवाणा अनेसा मान्यग्रहतां सामान्यतेविशेषता जनकहेता सहितजाणेतेमाटेसर्वज्ञसर्वदर्शीपणोजा णवोएरीतेस्वतत्वनुंज्ञानकरवुं तेथीस्वधर्मनो उपादानके० लेवापणुंथाय पछेस्वरूप नेपामवे स्वरूपमांरमणथाय तेरमणएकीध्याननी एकत्वताथाय एटलेनिश्चेज्ञान नि श्चेचारित्र तथा निश्चेतपपणोथाय जेथकी सिद्धिके० मोक्षनिपजे एसिद्धांतजाणवो

तत्रप्रथमतःग्रंथिभेदंकृत्वा शुद्धश्रद्धानज्ञानीद्वादशकषायो पशमः स्वरूपैकत्वध्यानपरिणतेनक्षपकश्रेणीपरिपाटीकृ तघातिकर्मक्षयः अवाप्तकेवलज्ञानदर्शनः योगनिरोधात् अयोगीभावमापन्नः अघातिकर्मक्षयानंतरंसमयएवास्पर्श वद्गत्याएकांतिकात्यंतकानांबाधनिरूपाधिनिरूपं चरित्रान याशाविनाशिसंपूर्णात्मशक्तिप्राग्भावलक्षणं सुखमनुभव न् सिध्यति साद्यनंतंकालंतिष्ठतेपरमात्माइति एतत्कार्यं सर्वभव्यानां.

अर्थ ॥ तेप्रथमग्रंथिभेदकरीने शुद्धश्रद्धावान तथाशुद्धज्ञानीजेजीव ते प्रथमत्र णचोकडीनो क्षयोपशमकरीने पाम्योजेचारित्र तेध्यानेंएकत्वथयीने क्षपकश्रेणीमांही अनुक्रमेंघातिकर्म क्षयकरीने केवलज्ञान केवलदर्शनपामे पछेएसयोगीगुणें जघन्य थी अंतर्मुहूर्त अनेउत्कृष्टो आठवरशउणापूर्वकोडीरहीने कोइककेवलीसमुदघात करे कोइककेवलीसमुद्घातनकरे पणआवर्जिकरण सर्वकेवलीकरे ते आवर्जिकर णनुंस्वरूपकहेछे इहांआत्मप्रदेशें रह्याजेकर्मदल तेपेहेलाचलेछे पछेउदीरणाथायछे पछेभोगवीनिर्जरेछे तिहांकेवलीने जिवारेतेरमेंगुणठाणे अल्पायुरहे तिवारेंआवर्जि करणकरेछे तेआत्मप्रदेशगतकर्म्मदलने प्रतिसमयें असंख्यातगुणनिर्जराकरवीछे तेटलादलने आत्मवीर्येंकरीनें सर्वचलायमानकरीमूके एवुंजेवीर्यनुंप्रवर्तन तेआव र्जिकरणकहियें एमकरतां त्रणकर्म्मदलवधतांरह्यातो समुद्घातकरे नहींका नकरे

तदाअर्थीजात्रीजुंक्तेएवइत्यादिप्रमाणपरिपाटीगृहीतजीवा जीवस्वरूपःसम्यकज्ञानीउच्यते.

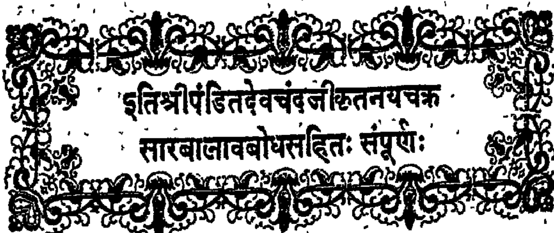
अर्थ॥हवेप्रमाणनुं स्वरूपकहेछे सर्वनयना स्वरूपने ग्रहणकरनारो तथासर्वधर्मनो जाणंगपणोछेजेमां एहवुंजेज्ञानतेने प्रमाणकहियें जेप्रमाणतेमापवानुंनामछे त्रणज गतनासर्वप्रमेयने मापवानुंप्रमाण तेज्ञानछे अनेतेप्रमाणनो कर्त्ताआत्मातेप्रमाता छे तेप्रत्यक्षादिप्रमाणे सिद्धके० उहेखोछे चैतन्यस्वरूपरिणामीछे वलीनवनवधर्मथी उत्पादव्ययपणे परिणमेछे तेमाटेपरिणामिकछेतथाकर्त्ताछे तथाजोक्ताछे जेकर्त्ताहोय तेजजोक्ताहोय जोक्तापणाविना सुखमयीकेवायनही तेचैतन्यसंसारीपणेस्वदेहपरिमा णछे प्रतिक्षेत्रके० प्रत्येकें शरीरजिन्नपणामाटे जिन्नजीवछे तेजीवपांचकारणनी सा मग्रीपामीने सम्यक्दर्शन सम्यक्ज्ञान सम्यक्चारित्रनेसाधवाथी संपूर्णअविनाशी निर्मल निःकलंक असहाय अप्रयास स्वगुणनिरावरण स्वकार्यप्रवृत्ति अक्षर अव्या बाधसुखमयी एवीसिद्धता निःप्पन्नतानीपजे एजसाधनमार्गछे.

स्वशब्देंकरीआत्मा परशब्देंपरद्रव्य स्वआत्माथीजिन्न अनंतापरजीवधर्मादिक तेनाव्यवसायीव्यवछेदकजेज्ञान तेनेप्रमाणकहियें तेनामूलजेदबेछे एकप्रत्यक्ष बीजो परोक्ष तिहांस्पष्टज्ञानते प्रत्यक्षकहियें तेथीइतरके०बीजोजे अस्पष्टज्ञानते परोक्षकहि यें अथवा आत्माना उपयोगथी इंद्रियनीप्रवृत्तिविनाजे ज्ञानते प्रत्यक्षकहियें तेना बेजेदछे एकदेशप्रत्यक्ष बीजोसर्वप्रत्यक्ष तेमांअवधिज्ञान तथामनपर्यवज्ञान ते देश प्रत्यक्षछे केमके अवधिज्ञान एकपुद्गलपरमाणुने द्रव्यथीतथाक्षेत्रे अने कालें तथाजावें केटलाकपर्यायनेदेखे तथामनपर्यवज्ञानी मननापर्यायने प्रत्यक्षजाणे पणबीजाद्र व्यनेनजाणे माटेबेहुज्ञानने देशप्रत्यक्षकहियें कारणके देशथीवस्तुनेंजाणे पणसर्व थीनजाणेमाटे. अनेकेवलज्ञान ते जीवतथाअजीव रूपीतथाअरूपीसर्वलोकालोकना त्रणकालना सर्वजावने प्रत्यक्षपणेजाणे माटे सर्वप्रत्यक्षकहियें.

तथामतिज्ञान अनेश्रुतज्ञान एबेअस्पष्टज्ञानछे माटेपरोक्षछे तेपरोक्षप्रमाणना चा रजेदछे १ अनुमानप्रमाण २ उपमानप्रमाण ३ आगमप्रमाण ४ अर्थापत्तिप्रमा णतिहांचिन्हेकरीने जेपदार्थनेउलखवुं तेनेलिंगकहियें तेपरामर्शके० संजालवाथी जेज्ञानथाय तेनेअनुमानज्ञानकहियें लिंगते जेविना तेवस्तुहोयजनही ते तेवस्तुनुंलिं गजाणवुं तेलिंगनेदेखवाथी वस्तुनोनिर्धारकरवो तेअनुमानप्रमाणजाणवो.

जेमगिरिगुहिरनेविषे आकाशावलंबी धूमनीरेषादेखीने अनुमानकरेजेएपर्वत अ

मेंगेहलेएह ॥ २ ॥ तजीपरपरिणतिरमणता ॥ नजनिजनावविशुद्ध ॥ आत्मनाव थीएकता परमानंदप्रसिद्ध ॥ ३ ॥ स्याद्वादगुणपरिणमन ॥ रमतासमतासंग ॥ साधेशुद्धानंदता ॥ निर्विकल्परसरंग ॥४॥ मोक्षसाधनतणुमूलते ॥ सम्यक्दर्शनज्ञान॥ वस्तुधर्मअवबोधविणु ॥ तुसखंमणसमान ॥५॥ आत्मबोधविणुजेक्रिया ॥ तेतो बालकचाल ॥ तत्वार्थनीवृत्तिमें ॥ लेजोवचनसंजाल ॥ ६ ॥ रत्नत्रयीविणुसाधना ॥ निःफलकहीसदीव ॥ लोकविजयअध्ययनमें ॥ धरोउत्तमजीव ॥ ७ ॥ इंद्रिविषयआसंसना ॥ करताजेमुनिलिंग ॥ खूतातेजवपंकमें ॥ नाखेआचारंग ॥ ॥ ८ ॥ इमजाणीनाणीगुणी ॥ नकरेपुजलआस ॥ शुद्धात्मगुणमेंरमे ॥ तेपामेसिद्धिविलास ॥ए॥ सत्यारथनयज्ञानविनुं ॥ नहोयेसम्यक्ज्ञान ॥ सत्यज्ञानविणुदेशना ॥ नकहेश्रीजिनजाण ॥ १० ॥ स्यादवादवादीगुरु ॥ तसुरसरसियाशीस ॥ योगमिलेतोनीपजे ॥ पूरणसिद्धजगीस ॥ ११ ॥ वक्ताश्रोतायोगथी ॥ श्रुतअनुजवरसपीन ॥ ध्यानध्येयनी एकता ॥ करताशिवसुखलीन ॥ १२ ॥ इमजाणीशासनरुची ॥ करजोश्रुतअन्यास ॥ पामीचारित्रसंपदा ॥ लेहेसोलीलविलास ॥ १३ ॥ दीपचंद्रगुरुराजने ॥ सुपसायेंउल्लास ॥ देवचंद्रनवीहितनणी ॥ कीधोग्रंथप्रकाश ॥ १४ ॥ सुणसेजणसेजेनविक ॥ एहग्रंथमनरंग ॥ ज्ञानक्रियाअन्यासतां लहेशेतत्वतरंग ॥ १५ ॥ द्वादशसारनयचक्रछे ॥ मल्लवादिकृतवृद्ध ॥ सप्तशतिनयवाचना ॥ कीधीतिहांप्रसिद्ध ॥ १६ ॥ अल्पमतिनाचित्तमें ॥ नावेतेविस्तार ॥ मुख्यथूलनयनेदनो ॥ नाख्योअल्पविचार ॥ ॥ १७ ॥ खरतरमुनिपतिगल्लपति ॥ श्रीजिनचंद्रसूरिस ॥ तासशीसपाठकप्रवर॥ पुन्यप्रधानमुनीस ॥ १८ ॥ तसुंविनयीपाठकप्रवर ॥ सुमतिसागरसुसहाय ॥ साधुरंगगुणरत्ननिधि ॥ राजसारउवझाय ॥ १ए ॥ पाठकज्ञानधर्मगुणी ॥ पाठकश्रीदीपचंद ॥ ताससीसदेवचंदकृत ॥ नणतांपरमानंद ॥ २० ॥ इतिश्रीनयचक्रविवरणंसमाप्तं ॥


इतिश्रीपंडितदेवचंदजीकृतनयचक्र सारबालावबोधसहितः संपूर्णः

एमदर्शनांतरीना अनेकविकल्पटालीने सर्वनयनिक्षेप सप्तभंगी स्याद्वादयुक्त जेवस्तु जीव तथाअजीवनोजे सम्यक्ज्ञानतेने सम्यक्ज्ञानीकहियें एज्ञाननुंस्वरूपकह्युं॥

तत्वार्थश्रद्धानंसम्यग्दर्शनं यथार्थहेयोपादेयपरीक्षायुक्त ज्ञानेनसम्यग्ज्ञानंस्वरूपरमणपरपरित्यागरूपंचारित्रंएत द्रत्नत्रयीरूपमोक्षमार्गसाधनात्साध्यसिद्धिः इत्यनेनात्मनः स्वीयंस्वरूपंसम्यक्ज्ञानंज्ञानप्रकर्षएवात्मलाभः ज्ञानद र्शनोपयोगलक्षणएवात्मा छद्मस्थानांचप्रथमंदर्शनोपयो गः केवलीनांप्रथमज्ञानोपयोगः पश्चाद्दर्शनोपयोगसह कारीकर्तृत्वप्रयोगात् उपयोगसहकारेणैवशेषगुणानां प्रवृ त्यभ्युपगमात् इत्येवंस्वतत्वज्ञानकरणे स्वरूपोपादनं त थास्वरूपरमणध्यानैकत्वेनैवसिद्धिः

अर्थ ॥ हवेश्रीवीतरागना आगमथीजाण्यो जे वस्तुस्वरूप तेनेहेयोपादेयपणे नि र्धारकरवो तेसम्यक्दर्शनकहियें सिद्धांतत्वार्थनेविषेकह्योछे के जे तत्वार्थश्रद्धान स म्यक्दर्शन उक्तंच उत्तराध्ययने जीवाजीवायबंधो ॥ अपुन्नंपावसवोतहा ॥ संवरो निज्जरामुक्खो ॥ संतिएतिहियानव ॥ १ ॥ तिहियाणंतुनावाणं सद्भावेउवएसणं॥ नावेणसद्दहंतस्स ॥ समत्तंतिवियाहियं ॥ २ ॥ इत्यादिकदशरुचीथी सर्वजाणवुं जे तत्वार्थ जीवादिपदार्थनो श्रद्धाननिर्धार ते सम्यक्दर्शनकहियें अनेजेसम्यक्दर्शनते धर्मनुंमूलछे तथाजेहेयतेतजवायोग्य अने उपादेयते ग्रहणकरवायोग्य एहवी परि ज्ञातहितजेजाणपणो तेसम्यक्ज्ञानछे जेमांहेयोपयोग संकोच अकरणबुद्धीनथी पणउपादेयनेउपयोगें एहवीचिंतवणाथायजेहवे किवारेकरुं एविनाकेमचाले एहवी जोबुद्धीनथी तो तेसंवेदनज्ञानछे तेथीसंवरकार्यथाय एवोनिर्धारनथी.

तथास्वरूपरमण परभावरागद्वेष विभावादिकनोत्याग तेचारित्रकहियें एरत्नत्रयी रूप परिणामते मोक्षमार्गछे एमार्गनेसाधवाथी साध्यजे परमअव्याबाधपद तेनी सिद्धिनिष्पत्तिथाय. जेआत्मानोपोतानुंरूप तेयथार्थज्ञानछे तथा चेतनालक्षणतेज जीवपणोछे अने ज्ञाननोप्रकर्ष बहुलपणोते आत्मानेलाभछे ज्ञानतथादर्शननो उप योगलक्षणआत्माछे सिद्धांतछद्मस्थने प्रथमदर्शनोपयोग पछेज्ञानोपयोगछे अनेकेवली

पणनही अनेदरूपेंमिळ्योकेवारें निन्नथायनही तेथीजमारासाहेबनोरीझवानो सादि अनंतनांगो प्रवचनमांकह्योछे शुद्धस्वनावप्रगट्योतेसादि अनेतेस्वनावत्रिकालेंअक्षय माटेअनंत अथवा वीतरागपणे प्रतीतकर्योतेसादि अनेतत्वस्वनाव स्वरूपतान्नावितन्मयिनाव आचरणहेतुयें करीथयोतेअनंत तेथीमारोसाहेब रीझ्यापछे विछडवामां समजेज नही ॥ १ ॥

प्रीतसगाईरेजगमांसहुकरेरे ॥ प्रीतसगाईनकोय ॥ प्रीतस
गाईरेनिरूपाधिककहीरे॥सोपाधिकधनखोय॥ऋषन्न०॥२॥

अर्थ ॥ हवे लोकोत्तरप्रीति तेने लौकिकप्रीतपक्षें दृढकरतो कर्त्ताकेहेछे जगतमां अन्योन्य प्रीतवधारवामाटे समस्तजगतवासी जीव पुत्रपुत्रीनीसगाइसंबंधकरेछे परं तु तेप्रीतीनामिलापने विचारीजोउंतो हेश्रद्धामाराजर्त्तारना प्रीतनीजेरीत तेमांतो एवीसगाइसंबंधमात्र कोयनथी केमकेमाराजर्त्तारनी प्रीततेस्वनावनुंमिलापछे माटे निरुपाधिकप्रीतिछे अनेसिद्धांतमांपण प्रीतीनीरीत उपाधिरहितकहीछे तोहेश्रद्धाविन्नाविछतो स्वन्नाविकृषनपरमात्मासाथें सोपाधिकप्रीतकरवावांछतो स्वनावनीप्राप्तिसंबंधी कृषनजिननीप्रीतिरूप परमधनने खोवे एटले आत्मगुणनोनाशकरे ॥ २ ॥

कोइकंतकारणकाष्टन्नक्षणकरेरे ॥ मलसुकंतनेधाय ॥ एमे
लोनविकहियेंसंन्नवेरे ॥ मेलोठामनठाय ॥ ऋषन्न० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ फरिसोपाधिकप्रीतपक्षनादृष्टांतथी निरुपाधिकप्रीतपक्षदृढकरेछे जे हेश्रद्धा कोइकस्त्रीनर्त्तारनेमिलवावास्ते काष्टचढे एटलेसतिथाय अथवा पक्षांतरें कोइकमतवादि निरंजननर्त्तारनेमलवासारूं पंचाग्निजपापातसमाधिकरे शामाटे जेथायके० दोडीनेतुरतकंतनेमलसुं तथा धरतिमांपेसवुं इत्यादिक महाकष्टोनेकरवे निरंजनथीतुरत मलिसुं परंतुएरीतेंतो नर्त्तारनोमलवो त्रणेकालमांसंनवतोनथी केमके अमुकगतिमांतुंपणजाजे अनेहुंपणतेजगतिमांतेजस्थानकेंआवीस एवाविचारथी अग्निमांजस्मथयी वलीमरवुं एमेलानोठामस्थाननही एमजनिश्चेंथायनही तथापंचाग्निजंपापातादिकें मरणपामे तेपणबालमरणमाटे सिद्धस्थानकने निश्चेंथीनहीजमिले ॥ ३ ॥

कोइपतिरंजनअतिघणोतपकरेरे ॥ पतिरंजनतनताप ॥ एप
तिरंजनमेंनविचितधरयुंरे ॥ रंजनधातुमिलाप ॥ ऋषन्न०॥४॥

अर्थ वली हेश्रद्धा माराऋषननर्त्तारथी मिलवामाटे कोइकक्रियारुचीजीव तेमा

तेमाटे आवर्जिकरण सर्वेकेवलीकरे पछे तेरमागुणठाणानेअंते योगनोरोधकरीने अयोगी अशरीरी अणाहारीअप्रकंप घनीकृतआत्मप्रदेशीथको पांचलघुअक्षरजेट लोकाल अयोगीगुणठाणेरहिने शेषसत्तागत प्रकृतिविद्यमान तथाअविद्यमान स्ति बुकसंक्रमें सत्ताथीखपावी सकलपुद्गलसंगपणाथीरहितथयी तेहिजसमयें आकाश प्रदेशनी बीजीश्रेणीने अणफरसतोथको लोकांतेसिद्धकृतकृत्य संपूर्णगुणप्राग्भावी पूर्णपरमात्मा परमानंदी अनंतकेवलज्ञानमयी अनंतदर्शनमयी अरूपीसिद्धथाय उ क्तंच उत्तराध्ययने कहिंपडिहयासिद्धा॥कहिंसिद्धापयठिया॥कहिंबोंदिंचइत्ताणं॥ कत्थं गंतुणसिज्झई अलोएपडिहयसिद्धा लोयग्गम्मिपयठिया॥इहबोंदिंचइत्ताणं तत्थगंतूण सिज्झइ॥ इत्यादि तेसिद्ध एकांतिक आत्यंतिक अनाबाध निरुपाधि निरुपचरित अना यास अविनाशी संपूर्ण आत्मशक्तिप्रगटरूपसुखप्रते अनुभवे अव्याबाधसुखते प्रदे शेंप्रदेशें अनंतोछे उक्तंच उववाइसूत्रे सिद्धस्ससुहोराशि ॥ सव्वद्धापिंडियंजइहवज्जा ॥ सोणंतवग्गोजइयो ॥ सव्वागासेनमाइज्जा ॥ १ ॥ इतिवचनात् एरीतेपरमानंदसुख भोगवतारहेछे सादिअनंतकालपर्यंत परमात्मापणेरहेछे तोएहिजकार्य सर्वभव्यने करवो तेकार्यनोपुष्टकारण श्रुताभ्यासछे तेश्रुतअभ्यासकरवामाटे एद्रव्यानुयोग नयस्वरूप लेशथीकह्यो तेजाणपणो जेगुरुनीपरंपराथी लंपाम्यो तेगुर्वादिकनी परंप रानेसंभारुछुं.

काव्य

गछेश्रीकोटिकाख्येविशदखरतरेज्ञानपात्रामहांतःसूरिश्री
जैनचंद्रा गुरुतरगणभृत्शिष्यमुख्याविनीताः ॥ श्रीम
त्पुण्यात्प्रधानाःसुमतिजलनिधिपाठकाःसाधुरंगाः ॥ त
च्छिष्याःपाठकेंद्राःश्रुतरसरसिकाराजसारामुनींद्राः ॥ १ ॥

तच्चरणांबुजसेवालीनाः श्रीज्ञानधर्मधराः ॥ तच्छिष्यपाठकोत्तम दीपचंद्राःश्रुतरस ज्ञाः ॥ २ ॥ नयचक्रलेशमेतत्तेषांशिष्येणदेवचंद्रेण ॥ स्वपरावबोधनार्थं कृतंसदभ्या सवृध्यर्थं ॥ ३ ॥ शोधयंतुसुधियःकृपापराः शुद्धतत्त्वरसिकाश्चपठंतु ॥ साधनेनकृतसि द्धिसत्सुखाः परममंगलभावमश्नुते ॥ ४ ॥ इतिश्रीनयचक्रविवरणंसमाप्तम् ॥

दोहा

सूक्ष्मबोधविणुभविकने ॥ नहोयेतत्वप्रतीत॥ तत्वालंबनज्ञानविण ॥ नटलेभवभ्र मभीत ॥ १ ॥ तत्वतेआत्मस्वरूपछे ॥ शुद्धधर्मपणतेह ॥ परभावानुगचेतना ॥ क

## ॥ अथश्रीअजितजिनस्तवनं ॥

रागआसाउरीमारुंमनमोह्युंरेश्रीविमलाचलेरेएदेशी

पंथडोनिहालूंरेबीजाजिनतणोरे ॥ अजितअजितगुणधाम ॥
जेतेंजीत्यारेतेणेहुंजीतिओरे॥पुरुषकिस्युंमुजनाम॥ पंथ० ॥१॥

अर्थ ॥ आनंदघन सुमतिप्रतेंकहेछे जे बीजाअजितजिनतुं पंथके० मार्गप्रवर्त्त नाते यूथभ्रष्टमृगनीपरें निहालूंके० जोउंछुं एटलेजेमार्गप्रवर्त्तने अजितप्रभु निर्वाण पदपाम्या. तेमार्गनेगवेषुंछुं तेअजितनाथकेवाछे के भव्यरासीविना प्राणीमात्रेंजित्या नजाय तेवाअनंतज्ञानदर्शनादिक जेगुणतेनाधामछे एवापरमेश्वरथी सुमतिवंतछतो आनंदघनकहेछे जेहेअजितजिन जेरागद्वेषमोहादिकवैरीउने तमेएकलेजीत्या तेणे रागद्वेषादिकें मुजनेजीतिलीधो एटले ते रागादिकेंमुजनेहराव्यो तोहेपरमेश्वरमारुं पुरुषनामसुं. एटलेधर्मविना धर्मनीउलखाणशानी जिमतमेंएकले पुरुषत्वधर्में रागादि कनेजीत्या तेमहुंजीत्योहत तोहुंपणपुरुषकेवात तेतोनजीत्यो माटेमारोपुरुषनामनही

चर्मनयणकरीमारगजोवतोरे ॥ भूलोसयलसंसार ॥ जेणे
नयणेकरीमारगजोइयेंरे॥ नयणतेदीव्यविचार॥ पंथ०॥२॥

अर्थ ॥ हेपरमेश्वर चर्मचक्षुयेंकरी अथवा बाह्यदृष्टीयेंकरी तमारोमार्गजे आत्मि कस्वरूपरूप वीतरागपरिणतियें परिणाम्यो परमात्माधर्मे धर्मितमार्गें जोवतोथ को समस्तसंसारमात्र भूलीजरह्योछे एटले बौध नैयायक सांख जैमनीय वैशेषका दिक मतममत्वी एकांतवादी सर्वेतमारामार्गने भूलीरह्याछे माटेहेपरमेश्वर जेनेत्रेंकरी तमारोमार्ग जेशुद्धस्याद्वाद परमांमृतमयी जैनदर्शन आत्मिकस्वरूप साक्षात्कार करवामाटे असाधारणकारण एवोमार्ग देखीशकियें तेतो दीव्यके० ज्ञानरूपनेत्रज विचारके० जाण एटले अजितपरमेश्वरनोमार्ग तेज्ञानरूपचक्षुथीजजोवाय ॥ २ ॥

पुरुषपरंपरअनुभवजोवतांरे ॥ अंधोअंधपुलाय ॥ वस्तु
विचारेरेजोआगमेंकरीरे॥ चरणधरणनहीठाय॥ पंथ०॥३॥

अर्थ ॥ वलीहेसुमति पुरुषोनीपरंपराजेश्रेणी एटलेमालानामणियां नेअनुक्रमें १ हांसुधर्मास्वामी प्रभवास्वामि सझंभवादिकनी अपेक्षायें एकथननथी पणगछोनावि भेदकारक मतममत्वी परभवनीवीकथी अणमरता गछस्थापते परंपराथापी एवापु रुषोने अनुभवके० विचारीजोइयें तोअत्तरपदनोदृष्टांत साक्षात्संभवेछे एटले अंधो

श्रीगौतमगुरुन्योनमः

अथ

श्रीआनंदघनकृत ऋषभप्रमुखचोवीसजिनस्तुति बालावोधसहितप्रारंभकरियेंछैयें॥

दोहाः

चिदानंदआनंदमय चिद्रूपिअविकार॥सिद्धबुद्धशुविशुद्धतुं तुंजगपरमाधार॥१॥ तुझकृपालताथीकरुं जाषाजाषारूप॥ तवनाजिनबावीसनी आनंदघनरसकूप॥२॥ राजऋद्धिजेमदेखीने ड्रुमककरेमनआस॥ बुद्धिऋद्धिविणडुंड्रुमक अरथराजऋद्धिरास॥३॥ आशयआनंदघनतणो अतिगंजिरउदार॥ बालकबाहपसारिजिम कहे उदधिविस्तार॥४॥ तेममनोरथमुझमने बुद्धिविणकिमथाय॥ गुरुकृपाथीगहननग पंगुपारलंघाय॥५॥ सीजाषाजाषातणी कोएहेवुंकहिदेय॥ पीस्यानुंसुंपीसवुं पीसेडाणनलेय॥६॥

॥अथश्रीऋषभजिनस्तवनलिख्यते॥

॥रागमारूकरमपरिक्षाकरणकुमरचल्योरेएदेशी॥

ऋषभजिनेश्वरप्रितममाहरोरे॥ओरनचाहुंरेकंत॥ रीज्यो साहेबसंगनपरिहरेरे॥जांगेसादिअनंत॥ऋषभ०॥१॥

अर्थ॥ इहांकोइपूछेजे एतवनोकेटलानामजवाथीथयो तेनेकहेछे जे शुद्धचेतना श्रद्धासखीने पोतानाघरनीवातोदेखाडतिकहेछे के हेसखिमाराजर्त्तारनो वृत्तांतसांजलवाथी माराघरनोसर्ववृत्तांत तुंपोतानीमेलेसमजीजइस केमके पोतानोजर्त्तार स्त्रीनाकथनमांहोय तोबीजातोहोयज माटेबीजासर्वेमाराकथनमां एकजर्त्तारनेपठवाडेछे तेमारोजर्त्तार ऋषभदेव रागादिकेंशून्य एवोजर्त्तार पामिने हुंओरशब्दें रागादिकपरिणतियें परिणम्या एवादेवोने जर्त्तारपणेवांछुनही तेमाराजर्त्तारनो एवोस्वजावछे जेमाराविना बीजाकोइथी एनुंरंजनथायजनही एटलेजेदिवसथी मारासाथेंरीज्योछे तेदिवसथीआजपर्यंत मारासाहेबेंमारोसंघकेवारेंमूक्योनथी तेमआवतेकालेंमूकसे

विनतीकरेछे जेहेप्रभु परिपाककाळपामिने एटले चरमावर्त्तन भवस्थितिनुंपरिपाक ए वीकाळरूपलब्धिपामिने पंथके० तारोजेमार्गते निहाळसुंके० जोसुं आकाळेंतोतारोमा र्गेहार्थेआववानुं कोइक्रपायनथी तोहेपरम्भर काललब्धिरूप आस्याएटले मननेथिर ता एआस्याने अविलंबनके० ग्रहणकरीने एजनके० आजपंचमकालनापुरुषते जी वेके०. जीवतारेहेछे कालक्षेपनाकरीरह्याछे एटलेनिराधारछतां कालनेपूरोकरेछे एवी पंचमकाळवासीजीवोनी विवस्थातेहे जिनजीके० अजितजिनेम्भरतुमे जाणजोके० जाणणारहेजो हेप्रभुतमेकेवाछो आनंदशब्दें ज्ञानानंदतेनो घनके० अतिंद्रियसुखनो समूह एटले केवलज्ञाननीकारक जेशुध्दस्याद्वादमत तेनाअंबछो सदाफळछो शुध्द स्याद्वादपरिणतिना परिपाकपणाथी ॥ ६ ॥ इतिअजितजिनस्तवनसंपूर्ण ॥

॥अथश्रीसंभवजिनस्तवनप्रारंभः॥

रागरामगिरिरातडीरमिनेकिहांथीआवियारे एदेशी

संभवदेवतेधुरसेवोसवेरे ॥ लहिप्रभुसेवनभेद ॥ सेवनकार
णपहेलीभूमिकारे ॥ अभयअद्वेषअखेद ॥ संभव० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवेसुमतिवंतछतो निजआत्मस्वरूपानुजायी शुध्दालंबन परमकारणभूत त्रीजा संभवपरमेम्भरनुं सेवन तेजपरमेम्भरपासेथी मांगवावांछतोछतो पोतेतेमजस वैने उपदेशरूप वीनतिकरतोकहेछे भोभव्यप्राणीयो संभवदेवतेने धुरके० प्रथमसेवो केमकेआत्मापोतानो अनंतकालनुंभूल्योजे आत्मिकस्वरूप तेस्वरूपनीओलखाण प्र थमंएपरमेम्भरने सेव्याविना थायजनही तथाथसेपणनही एटलेजेभव्यप्राणीयें पो तानाआत्मस्वरूपने अतितकालेंउलख्योछे तथावर्तमानेंउलखेछे अनेअनागतें उ लखशे तेसर्वप्रथमथी प्रभुनास्वरूपनुंसेवनकरीने उलखाणथयीछे इहांसिंह तथाछाग नाद्दष्टांते जिमसोनानीखाणमां सोनुंमाटीसाथेभळीरह्योछे तेमआत्माअनादिकालनुं कर्मोथीमिलीरह्योछे तेप्रथमसंभवदेवथी पोतानीएकताजाणी जडस्वभावथीभिन्नस्व भाविपणुजाणीनेजडथी आत्माभिन्नथाय तेमाटेअनादिकालनो भूल्योछतांआत्माने स्वभावनीप्राप्तिनुं असाधारण कारणभूतपणुं तेधुरथीसंभवनुंनथी तोहेसुमति शुध्दा त्मप्रवर्त्तियें परमेम्भरनेस्वरूपें सेवननुंरहस्यपामिने संभवपरमेम्भरनुं सेवन तेनीएतो पेलीभूमिकाके० पेहुंपायुंछे परंतुएपायुंकेवुंछे जेसेवनानुंपूर्वे लक्षणकह्युं तेसेवनारूप कार्यनुंकारकपणुंछे तेत्रणप्रकारेंछे १ अभयपणुं २ अद्वेषपणुं ३ अखेदपणुं एसेव नानाकारणनी पेलीभूमिका एटलेस्थानकह्युं ॥ १ ॥

रापतिने रंजनके० राजीकरवामाटे अत्यंतघणोतपकरे तेथीपण मारोजर्त्तार राजी थायनही केमके जेएकांततपस्या तेतो तनतापके० मात्रशरीरनेतपाववुंछे माटेएरी तेंतपस्यादिक बाह्यकरणियें मारापतिनेराजीकरवुं तेहेश्रद्धासखी मेंचित्तमांनधा युं एटलेनतेराव्युं केमके माराजर्त्तारने राजीकरवानीरीततो धातुमिलापजेवी एटले तेनीधातुप्रकृतिछे तोतेवीप्रकृतिवंतछतोमिले तेथीराजीथाय ॥ ४ ॥

कोइकहेलीलारेअलखअलखतणीरे॥ लखपूरेमनआस॥ दोष रहितनेलीलानविघटेरे॥ लीलादोषविलास॥ ऋषन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वलिकेइकइश्वरवादी एमकहेछे के अलखजेपरमेश्वरतेनीलीला ते अलख के० लखिजायनही जाणीजायनही तेमाटेअलखनामकहेछे तेनेपोतानीशक्तिफोरवीने लीलानीपरमकारणीनूत मायारची तेसर्वजगतछुं चटनविचटनरूपलीलानुं लखवुं जाणवुं तेज जननामननी लाखोगमेआशापूरेछे पणहेश्रद्धासखीजे एवुंकहेछे एपण बाधकवचनछे केमके जेरागादिदोषेंरहितनहोय तेनेअलखकेवायनही अनेअलखक ही फरितेनेलीलाकेवी एघटमाननथी केमकेजे लीलातेतो दोषनुंविलासलेहेरछे मा टेरागादिदोषविना लीलानोविलासनजहोय तो अलखकहि फरीपरमेश्वरनेलीलाते रावबी एतोघहेलीनुंपहिरणोलाचो एमथयुं ॥ ५ ॥

चित्तप्रसन्नेरेपूजनफलकह्युंरे ॥ पूजअखंडितएह ॥ कपटर हितथयीआतमअरपणारे॥ आनंदघनपदरेह॥ऋषन०॥६॥

अर्थ ॥ तेथीहेश्रद्धा तपसंयमनियम व्रतपालन एतारीलीलाछे अथवातुं तपसं यमादिककीधाविनाज लाखोगमेना मननीआशानो पूरणहारछो एवीआधीनतानुंजाण वुं तेपूजननही पणजे चित्तनीप्रसन्नता अल्हादपणुं तेजपूजननीसफलताछे जोअखं मतंडुल वस्त्र धूप दीप नैवेद्य फल जल फूल केशर चंदनादि सर्वसामग्रीअखंमछते चित्तनीप्रसन्नताजे शुजनाव तेनेअनावें तेअखंमपूजानही जेशुजनावतेज अखंमितपू जाजाणवी माटेहेसखी जेप्राणीआनंदघनपद पामवानीचित्तमां अनिलाषाकरे तेप्रा णीमारा ऋषनजर्त्तारथी कपटरहित निष्कपटीथयी बहिरात्मापणोमूकी अंतरआ त्मावंतछतो थिरस्वनावें परमात्मस्वरूपने पोतानाआत्मामांचिंतवे एरीतें ऋषनपर मेश्वरथी आत्मानुंअर्पणकरे तेप्राणी आनंदशब्दें ज्ञानानंदतुंपद जे मुक्तिपद तेनी रेहके० रेखा एटलेमिलापछतेसिद्धछे ॥ ६ ॥ इतिऋषनजिनस्तवनंसमाप्तं॥

अर्थ ॥ जेवारें प्रवचनामृतनीप्राप्तिथयी तेवारेंमिथ्यादर्शनीओथी पेलापरिचयह तो तेटलीने आश्रवरोधि संवरसोधि प्राणातिपातादिकनाघातक मोक्षमार्गनासाध क एवासाधुओथी तेजीवने परिचयके० आसेवनथाय तेवारे आत्मस्वरूपपामवा ने अकल्याणकारी एवोजेअसुद्धश्रद्धा तद्रूपअकुशलपणानो अपचयके० नाशकर नार एवो चेतके० चित्तथाय एटलेस्वरूपानुयायी चित्तथाय तेवोचित्तथयाथी संम ति तत्वार्थ अध्यात्मशार अध्यात्मकल्पद्रूमादिक अध्यात्मिग्रंथोनुं श्रवणके० सां जवुंथाय मननके० परिचिंतवन युक्तिसहितविचारणा तेणेकरी नैगमादिक सातेन यनो जिन्न जिन्नहेतुयें जिन्नजिन्नकथन केमके हेतुजिन्ननेअजावें कथनजिन्ननोअजा वछे तोइहांनयोनाहेतके० हेतुयेंकरीने संजवनाथनास्वरूपथी पोतानाआत्मस्वरूप नुं परिके० समस्तपणे शीलनके० स्वजावथीमिलाववुंथाय ॥ ४ ॥

कारणजोगेंहोकारजनीपजेंरे ॥ एमांकोइनवाद ॥ पणकारण
विणकारजसाधियेंरे ॥ एनिजमतउनमाद ॥ संजव० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ तेपरमेश्वरना स्वरूपथी निजस्वजावनुंमलाववुं तद्रूपकारणनेसंयोगें पो तानोस्वरूपरूपकार्य सिद्धथाय एमांकाइवादनथी केमके कारणेकार्यनिपजे एमांतो सुंकेवुं पणश्रीसंजवदेवना स्वरूपनुंसेवनरूपजेकारण तेकारणविना निजस्वरूपरूप कार्य तेप्रत्यक्ष करवाने साधवावांछियें एटलेकारणविना कार्यनीसिद्धता वांछवी ते तोपोतानीमतिनीउन्मतता हठग्राहीपणुंछे अथवापोतानी बहिरात्मापणारूपकुम तिनो उन्मादके० चित्तविभ्रमताछे ॥ ५ ॥

मुगधसुगमकरीसेवनआदरेंरे॥सेवनअगमअनूप ॥ देजोक
दाचितसेवकयाचनारे ॥ आनंदघनरसरूप॥संजव० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ माटेसंजवदेवना सेवनरूपकारणने सद्भावें पोतानास्वरूपरूपकार्यनुं नि संदेहसद्भावीपणुंजछे पणतेसेवनघणोडुष्करछे परंतुमुग्धजे सेवननाअसमंजस जइ कलोकते सुगमजाणीने संजवदेवनुंसेवनआदरें परंतुअंतरात्माविना संजवदेवना सेवननीकोइने गम्यनथी एसेवनतोपरमोत्कृष्ट निरुपमकह्युंछे तेसेवनआजवेंतो पा मवुं डुर्लजछे माटे संजवपरमेश्वरथी विनतिकरुंछुं जे चरमावर्त्तनादि कारणमिलापें पाम्युंजे कदाचितके०कोइजवें तेजवमां हुंतमारोसेवकजे पामरतेनी याचनाएटले सेव नरूपप्रार्थना तेमुजनेदेजो सफलकरजो हेपरमेश्वरतमेकेवाछो आनंदशब्दें ज्ञानानं द तेनु घनके० समूह एटलेकेवलज्ञान केवलदर्शनेकरी इव्यनाअनंतागुणादिकने

अंधपर्हनित्ता पूरमझानगच्छइ एवुंसुयगडांगना पहेलाश्रुतस्कंधने बीजेअध्ययनेकह्युं छे माटे जेमआंधलोआंधलाने गामांतरें पोचडवावांछे पणपोचीशकेनही तेथी ग्या ननेत्र तथापुरुषपरंपरा एबेकारणमार्गपामवानातो निर्थकथया अने आगमजेसिद्धां त तेथीजो वस्तुके० तत्वविचारणाकरियें तोजेरीतें अजितपरमेश्वरप्रवर्त्त्या तेवोतेणें मार्गजाण्यो तेमांसंपूर्णप्रवर्त्तवुंतो वेगळुंरह्युं पणतेमां चरणके० पगमूकवुं तेपणठाम ठेकाणेपडवुंजकठणछे एटलेतेप्रमाणे पगमात्रप्रवर्त्तवुंपणकठिणछे ॥ ३ ॥

तर्कविचारेंरेवादपरंपरारे ॥ पारनपहोंचेकोय॥ अभिमतेंव
स्तुवस्तुगतेंकहेरे ॥ तेविरलाजगजोय ॥ पंथ० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वलीहेसुमति तर्कविचारेंजो मार्गनेविचारुं तो एककथन तेउपरबीज्ुं ते उपरत्रीजुं एमकथननीपरंपरा एटलेकथनउपर कथनचाल्युंजाय एवीवादनीपरंपरा जोतांतो मारोजन्मवितिजाय तोपणपारनपामुं तेहुंतोशीगणतिमां पणकोइथीपारन पोचाय तोहेसुमति अभिमतेंके० पामवायोग्य जे वस्तुके० पदार्थतेजिनमार्गि सि द्धांतनेविषे गतशब्दें जिमरह्युंछे तिमनुंतिमकहे पणएकअक्षर हिनाधिकनकहे तेवा प्राणीजगतनेविषे केइकविरलाज तुं जोयके० देख एटलेयशोविजयउपाध्यायजीपण एमजकहेछे जे शुद्धभाषकनीवलिहारी ॥ ४ ॥

वस्तुविचारेंरेदीव्यनयणतणोरे॥विरहपडयोनिरधार॥तरत
मजोगेरेंतरतमवासनारे ॥ वासितबोधआधार॥ पंथ०॥५॥

अर्थ ॥ माटे जेणेकरीवस्तुनो यथार्थस्वरूपविचारुं एवाजेज्ञानरूपनेत्र तेनुंतोरा गादिकेंकरी विरहके० अंतर निरधारके० निश्चेंथीपडयुं एटले मारोआत्मज्ञानरूप ने त्रफूटिगयुं अथवाबीजेपक्षें वस्तुके० तत्वविचारें विचारीयेंतो दीव्यनयणते केवलज्ञा नीविना शुद्धमार्गनपामियें ते केवलज्ञानीनो निश्चेंथीविरहपड्यो माटेहेसुमति चर्म नेत्र पुरुषपरंपरा आगमथीरहस्यनुंविचार शुद्धकथक केवलज्ञानी इत्यादिकमार्गपाम वाना कारणनुंतो अभावथयो एमनिसंदेहयोग तोएकालेंकोइनेहाथेंचढेनही तोमार्ग किहांथीपामियें एटलेतरतमयोगेकरी वासनाजे श्रद्धातेपण तरतमजथयि पणसंदेहर हित श्रद्धातेरीनहीतोएवीश्रद्धायेंप्रतिवासित सुगंधितबोधग्यानतेनुंआधारमारेछे॥५॥

कालंलबधिलहीपंथनिहालसुंरे ॥ एआस्याअविलंब॥एज
नजीवेरेजिनजीजाणजोरे॥आनंदघनमतअंब॥पंथ० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ एपूर्वोक्तसर्ववातोविचारी सुमतिसहित आनंदघन खाखोविलखोथयीने

थीतज्ञानदृष्टीयें विचारीजोयुंतो तमारादर्शनमां नयोनुं वादके० कथनं एवोछे जेए कवस्तुने एकनयेंथापियें तोअन्यनयें उत्थापिजायछे माटेनयवादनीपण दूर्गमताछे ए टलेगम्यनपडे वलीतमारा आगमके० सिद्धांतोनो वादके०कथन तेथीतोसहज तमा रोदर्शनपामिशकियें पणतमारा सिद्धांतोनाकथननुं गुरुगमकोइनथी एटले जेगुरुथ की सिद्धांतोनी गम्यथाय समजपडे एवोगुरुकोइनथी अथवा गुरुपारतंत्रेकरीसम ज्युंहोय एवोपरंपरागमि कोइगुरुआकालमां देखातोनथी माटे मतमतांतरोनाजेवधी हेतुविवादोथी तेमजनयवादोथी तथा आगमवादथी तमारादर्शननी प्राप्तिनथी एज सवलोके० बलवान मनमां विषवादके० उद्वेगछेअसमाधिछे ॥ ३ ॥

घातिडुंगरआडाअतिघणा ॥ तुजदरिशणजगनाथ ॥ धींग

ईकरिमारगसंचरूं ॥ सेंगूकोइनसाथ ॥ अभि० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ माटेहेजगनाथके० त्रिजगतनास्वामि तारोदर्शन पामवाने अंतरायनाकर नार घातकारक एवापूर्वोक्त जेकारणकह्या तद्रूपपर्वतोपम एवा अत्यंत घणामांघणा पूर्वेकह्या तेथी हजीघणारहियाछे माटेकेटलाककहुं तो पणहुं धींगइकरि एटले त मारोदर्शनपामवानी घातनाकरनाराछे तेनेनहीगणता हठनुंयोगें जैनदर्शननामार्गे मां संचरुंके० प्रवृत्तनकरुं पण शुद्धस्याद्वादमार्गनो प्रवृत्तावववावालो तेने सैंगूकहि यें तेवोकोइज्ञातापुरुष रस्तोदेखाडनारसाथेंनथी जेनासहायथीमार्गें प्रवृतियें ॥ ४ ॥

दरशणदरशणरटतोजोफरूं ॥ तोरणरोझसमान ॥जेहनेपी

पासाहोअमृतपाननी ॥ किमभाजेविषपान ॥ अभि० ॥५॥

अर्थ ॥ हेअभिनंदन परमेश्वर तारादर्शननी पूर्वोकंतकारणे अप्राप्तिजाणीने मा त्रदर्शनीओथी दर्शनदर्शन अहोउपगारिओ शुद्धआत्मिक स्वरूपानुंयायी परमपद प्रापक एवोदर्शनजेममारेहाथेंचडे तेरीतबतावो एमरटतोके० केहेतोथको जोके० कोइरीते फिरुंके० परिभ्रमणकरुं एटलेजैनीओसहीत सर्वमतोनावाचकधर्मिओथी वारंवारपूछतोजटकुं तोहेप्रभुतारोदर्शन एरीतेंतोहाथेचढेनही पणउलटो जैनदर्शननी सोधकरतोदेखीने सर्वदर्शनीएमकहेजे आतोमनुष्यकारें जंगलनारोजशरखो मूर्खशे खरछे माटेएरीतेंसर्वदर्शनीओथी जैननीसोधकरतेछते कोइमहावंचकी नयनापक्षथी एवीवातसंजलाविआपे के जेथकी जैनदर्शननी प्राप्तितोदूररहीपणजोकोइनयरूपनी वात पेटमांफालियाना फालियानरीआपे तेथीभ्रष्टश्रद्धाछतो अन्यमत प्रवर्त्तनआद रीने जैनमतनी हेलनाकरवा लागीजाय माटेजेनीचाहना तेतोमलेनही पणजेडुंन

भयचंचलताहोजेपरणामनीरे ॥ द्वेषअरोचकभाव ॥ खेदप्रव
त्तिहोकरतांथाकीयेंरे ॥ दोषअबोधलखाव ॥ संभव० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ एत्रणमांथी पेलुंअभयनुंलक्षणकेहेछे संभवजिननुंचिंतवनकरतां तेचिंतव नाथी परिणाम चलायमानथयीने अन्यचिंतवनामां मननुंप्रवर्तवुं इत्यादिकपरिणा मनुं चंचलतापणुं अथिरपणुंतेनेभयकहियें अनेतेसर्वपलटावीने एकाग्रस्वरूपनुं चिंत वनतेअभय हवे अद्वेषनुंलक्षणकेहेछे संभवजिननुंसेवन भजन स्वरूपचिंतवन तेचि त्तमांरुचेनही सुहायनही इत्यादिक अरोचकभावतेद्वेष अनेप्रभुनो स्वरूपचिंतवन रुडोलागेतेअद्वेष हवेअखेदनुंलक्षणकहेछे संभवप्रभुना स्वरूपचिंतवणानी प्रवृतिमां मनप्रवर्त्योंथको थोडाकालमां थाकीजाय पछेतेप्रवृतिमां प्रवृतिशकेनहीतेखेद अने जे संभवदेवना स्वरूपचिंतवनथकी निवृत्तेनहीतेअखेद माटेहेसुमति जेनेसंभवदेव नीसेवनामां अभय अद्वेष अने अखेदीपणुंछे तेनेतोस्वरूपानुयायी बोधनुंलखावछे अने जेनीसेवामां भय द्वेष अनेखेदपणुंछे तेने अबोधके० स्वरूपनुंअजाणपणु ने दोषनुं लखावके० लखवुंछे ॥ २ ॥

चरमावर्त्तहोचरमकरणतथारे ॥ भवपरिणतिपरिपाक॥ दोषट
लेवलीदृष्टीखुलेभलीरे ॥ प्रापतिप्रवचनवाक ॥ संभव० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ तेदोषटालवानाजेकारण श्रीसंभवनाथें पोतानामुखथी सिद्धांतोमांकह्या छे तेकहुंछुं तेमांपेलुंकारणतो जीवनेसंसारमां परिभ्रमणकरतां अनंतिउत्सर्प्पिणि अवसर्प्पिणीथयी तेमांछेलीउत्सर्प्पिणी अथवाअवसर्प्पिणी संसारभ्रमणकरवानीहो य तेचरमावर्त्तन अनेबीजोकारण अपूर्वकरणादिमांनुंछेलोकरण तेचरमकरणकहि यें तथाके० तेमजत्रीजुंकारण भवजेसंसारनीगत्यागति तेनुंजेपरिणमवुं तेनोपरि पाक एटले गत्यागतिनोअभावते भवपरिणतिपरिपाकनामाकारण माटेहेसुमतिए त्रणेकारण मिलताज जीवने भय द्वेष अनेखेदरूप दोषटलीजाय तिवारें अभयी अद्वेषी अखेदी आत्माथताज भलीआत्मस्वरूपानुयायी एवीज्ञानरूप दृष्टीके० च क्षुते खुलेके० उघडे तेज्ञानदृष्टीखुलवाथी प्रवचनवाक जेसिद्धांतोना सप्तनयाश्रित वाक्य तेनीशंकारहित प्राप्तिथाय ॥ ३ ॥

परिचयपातिकघातिकसाधुसूंरे॥ अकुशलअपचयचेत॥ ग्रंथ
अध्यातमश्रवणमननकरीरे ॥ परिशीलननयहेत॥संभव०॥४॥

तमअरपण योग्यकह्युंछे तेथीआत्मनाभेदकहेछे समस्त शरीरधारिओना शरीरनेवि षेरह्योजे आत्माते त्रिविधके० त्रणप्रकारेंछे तेमांपहेलोबहिरात्मा बीजोअंतरात्मा त्रीजोअविछेदपरमात्मा इहांकोइपूछेजे सिद्धअनंताछे माटेअनंताभेद केमनकह्या तेनेउत्तर जेअनंतासिद्धनोरूपएकछे माटेअविछेद अभेदकह्यो इहांपेहेलोबीजो त्रीजो आत्माकह्यो एलखेतो जघन्य मध्यम उत्कृष्टआत्मात्रणप्रकारनाथया परंतुसत्तानिश्चयथीकोइपूछे तोतेना भेदअनंताथाय ॥ २ ॥

आतमबुद्धेंकायादिकेंग्रह्यो॥बहिरातमअघरूप ॥सुग्यानी ॥ काया दिकनोहोसाखीधररह्यो॥अंतरआतमरूप॥सुग्यानी॥सुमति०॥३॥

अर्थ ॥ तेपूर्वोक्त त्रणेआत्मानोस्वरूपकहेछे बहिरात्माते कुत्सितबुद्धियेंकरीने कायादिकशरीरादिकेंग्रह्यो एटलेअहंबुद्धियें शरीरादिकथीबंधाणो एकायानेसुखेंहुंसुखी एकायानेदुखेंहुंदुखी आदिशब्दें मायाममता मिथ्यात्वादिकेंग्रह्यो तेपरिणतियें परणम्यो इत्यादिकलक्षणे लक्षितजेआत्मा तेनेबहिरात्माकहियें तेआत्माने अघके० पापरूपव्यापारवंतजाणवो अने जे कायाके० शरीर आदिशब्दें अंगोपांगादिक भूमिघरादिकनो शाखनोभरवावालो एटलेअंतरात्मावंत दसमेंद्वारआत्मास्थापे अनेभ्रांतिपामि ए सजीवछेकेंवानिर्जीवछे तेनोस्वासरुधिरादिकें साखनोदातार तथा कायादिकनो निरममत्वीआत्मस्वरूपनोज्ञाता तेनेअंतरआत्मानो रूपएटलेलक्षणजाणवुं॥३॥

ज्ञानानंदेहोपूरणपावनो॥ वरजितसकळउपाधि सुग्यानी॥अतिंद्रियगुणगणमणिआगरू॥इमपरमातमसाध॥सुग्यानी॥सुमति०॥४॥

अर्थ ॥ स्वरूपज्ञानथी प्रगटथोजेआनंद तेहर्षेंकरीने संपूर्ण पावनोके० पवित्र वलीकर्म्मजनित एवीसमस्त उपाधिओथीरहित केमके उपाधिरहितविना ज्ञानादिगुणे सहितनथाय माटेउपाधिवर्जितकह्यो तथाशब्द रूप रस गंध स्पर्श इत्यादिक इंद्रीयजनितगुणोना अभावथी प्रगटथोजे अतिंद्रियगुण ज्ञानदर्शनादिकना अनंता समूह तद्रूपमहामणिओनो आगर जेमांथी मणिनासमूह पामियेंतेस्थानक एरीतें परमात्मापणाने हेसुमतितुं सिद्धकर ताराविना एपरत्मानुं लक्षणसिद्धनथाय॥४॥

बहिरातमतजअंतरआतमा ॥ रूपथईथिरभाव॥ सु०॥ परमा तमनुंहोआतमभाववूं ॥ आतमअरपणदाव ॥ सु० ॥ सुम०५ ॥

अर्थ ॥ इहांकोइपुछेजे आनंदघने प्रथमथी सुमतिपपरमेश्वरने चरणें आत्म

जाणवेथी उपनोजे आनंद तद्रूपरस तेछे रूपके० स्वरूपकथनजेनो एवातमेछो ॥ ५ ॥ इतिश्रीसंजवजिनस्तवनसंपूर्ण ॥

॥ अथश्रीअभिनंदनजिनस्तवनलिख्यते ॥

रागधन्यासिरिसिंधुओआजनिहेजोरेदीसेनाह्लोएदेशी

अभिनंदनजिनदरशणतरसियें ॥ दरशणदूर्लजदेव॥ मत
मतजेदेंरेजोजइपूछीयें॥ सहुथापेअहमेव ॥ अजि० ॥ १॥

अर्थ ॥ अभिनंदनपरमेश्वरना दर्शनप्रतें एटलेजैनदर्शनप्रतें तरसियेंके० कोइरी तेमिले तेवांछियेंछैयें पणहेप्रभु तारो जैनदर्शनतेदूर्लजछे डुखेनलभ्यतेतिदूर्लज एटले गतकालेंनपाम्यो आजन्ममांपामवानी विवस्था आगलकहीस माटेदूर्लज कह्युं इहां कोइपोतें अजाणछतो बीजानेमार्गपूछे तेन्यायें जेजूदीजूदीमतवालाछे तेमनेजइपुछि यें जे शुद्धस्वरूपानुंजायी आत्मिकस्वरूताविछेदकावछनदर्शनतेस्यो तेवारें सहुमतांत रनाधारकते अहमेवके० अहंएव एटलेनिश्चेअमेज प्रवृतियेंछैयें तेजशुद्धदर्शनछे प ण अमारादर्शनथी स्वरूपनीप्राप्तिनथी एवुंकोइकहेनही ॥ १ ॥

सामान्येकरीदरिशणदोहेलूं ॥निरणयसकलविशेष ॥ मद
मेंघेरयोरे आंधोकेमकरे॥रविशसिरूपविलेष॥ अजि०॥२॥

अर्थ॥माटेहेपरमेश्वरसामान्यप्रकारेंमतमतांतरनाजेदेंकरी एटलेएकांतवादिछनेपू छतांतमारोजैनदर्शन पामवोदूर्लजछे वली निरणयके० निश्चेसंघातें स्वरूपानुंयायी प रमतात्विकपणे अनंतेकेवलज्ञानीयेंजाण्युं तदाकारजूतें समस्तनयानुंयायी विशेषपणें तमारुंदर्शन प्रत्यक्षपणेकेवुं तेपणकठणछे ह्वेतेमतमतजेदिछथीपूछतां तमारोदर्शनजपामियें तेउपरदृष्टांतकहेछे जेमकोइकजन्मांधप्राणीछे तेणे फिरिमद्यपान क र्यूंहोय तेप्राणी सूर्य तथाचंद्रमानास्वरूपनो विशेषपणे लखवुंके० जाणवुं तेशीरी तेकरीशके तेमज जेमिथ्यादर्शनेकरी अंधतोछे वलीमतममत्वरूप मदिरामांघेराणा तेसूर्य चंद्ररूपजैनदर्शनतुं विशेषपणेलखवुं केमकरीशके अर्थात नजकरीशके ॥ २॥

हेतुविवादेंहोचित्तधरिजोइयें ॥ अतिदुरगमनयवाद ॥ आग
मवादेंहोगुरुगमकोनही॥ एशबलोविषवाद॥ अजि०॥३॥

अर्थ ॥ वलीहेपरमेश्वर जे साधवायोग्य कार्यनीप्राप्तिकरे एवा हेतुके० कारणो नो विवादके० विशेषपणेकथन तेने चित्तमांधारीने एटलेमनमां विचारीनेजोइयें अ

नारचारकर्म तथाबीजोन्नेद आत्मगुणना अघातिआचारकर्म्म वलीबीजान्नेद बंध उदय उदिरणा सत्ता इत्यादिक एकर्मना विछेदके० विछेदन्नेदजाणवा वलीआदि शब्दथी ध्रुवबंधी अध्रुवबंधी ध्रुवोदयी अध्रुवोदयी ध्रुवसत्ता अध्रुवसत्ता तेमज नव विपाकि क्षेत्रविपाकी जीवविपाकी पुज्जलविपाकी तेमजसर्वघाति देशघाति परावर्त मान पुण्यप्रकृति पापप्रकृति इत्यादिकसर्वे कर्म्मनाविछेदछे ॥ २ ॥

कनकोपलवत्पयडिपुरसतणीरे ॥ जोडीअनादिस्वन्नाव ॥ अ
न्यसंजोगीजिहांलगेंआतमारे ॥ संसारीकहेवाय ॥ पद्म० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ एरीतें कर्म्मनी पयडिके० प्रकृति तेपुरुसशब्दें जीवनीसाथें अनादिकाल नी जोडीके० मिलापछे एटलेसंयोगसंबंधछे जेमखाणमां सुवर्ण तथापाखाणने अना दि संयोगसंबंध स्वन्नावेंजछे तेमप्रकृतिपुरुषनीजोडीछे तेअनादिनीस्वन्नावेंजछे माटे जिहांलगें आत्मा पुज्जलादिकअन्यसंयोगीछे तिहांलगें एआत्मासंसारीकेवायछे ॥ ३ ॥

कारणजोगेहोबंधेबंधनेरे ॥ कारणमुगतिमूकाय ॥ आश्रवसं
वरनामअनुक्रमेंरे ॥ हेयउपादेयसुणाय ॥ पद्म० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ आत्मामिथ्यात्वाविरति कषाययोगादिक कारणनेयोगें कर्मप्रकृतिरूप बंध नेबांधे तेमजकर्म्मबंधथी मुक्तथवानाकारण सम्यक्त विरति अकषायी शुन्नमनोयोगा दिकथी बूटे एमअनुक्रमें कर्म्मबंधना कारणनेमिलापेंआश्रव अनेकर्म्मबूटवाना का रणनेमिलापेंसंवर यथा आसमंतात्श्रवति कर्म्मजलंप्रतिआश्रव माटेआश्रवते हेय के० छांमवायोग्य अनेसंवृयते आछायते आश्रवद्वारंप्रतिरितिसंवर तेमाटेसंवरते उ पादेयके०आदरवायोग्य एरीतें सिद्धांतोनेंविषे सुणायके० सन्नलायछे ॥ ४ ॥

यूंजनकरणेहोअंतरतुजपड्योरे ॥ गुणकरणेंकरीन्नंग ॥ ग्रंथ
उक्तेंकरीपंमितजनकह्योरे ॥ अंतरन्नंगसुअंग ॥ पद्म० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ तेथीपंमितजने आनंदघनप्रतेकह्यो के सिद्धांतोनीउक्तें त्रणकारणकह्या तेमांजे कारणेकरी आत्मानेकर्म्मसंघातेजोडवुं मिलाववुं तेने यूंजनकरणकहियें ते यूंजनकरणेकरीने हेआनंदघनतारे परमेश्वरसाथें अंतरके० निन्नन्नाविपणुं पडियुं छे ते ज्ञानकरणे आत्मस्वरूपजाणीने गुणपणेआचरणा एटले कार्यकारणन्नाववुं अ न्नेदोपचारछे तेथी ज्ञानदर्शनतेआत्मा अनेआत्मातेज्ञानदर्शन एवाअन्निन्नन्नावेंकरी ने हेआनंदघन तारेपद्मप्रन्नुसाथें अंतरतुंनांजवुं त्रूटवुंछे तेवारेंफरि तेपंमितोने आ

वांछुं तेजेहेरूपमारीश्रद्धामां प्रवेशकरीजाय तोएअन्यमतिओनी इच्छाथीसखुं केमके जेनेअमृतपीवानी पीपासाहोय तेनेजेरआपेछते अमृतनी तृषाकेमनांजे ॥ ५ ॥

तरसनआवेहोमरणजीवनतणो ॥ सीजेजोदरिशणकाज॥ दरि
शणदूर्लभसुलभकृपाथकी॥आनंदघनमहाराज॥अभि० ॥६॥

अर्थ ॥ माटेहेपरमेश्वर एजैनदर्शन रूपकार्य जोकोइरीतेंसिद्धथाय तोमरणजीवननो तरसके० त्रासएटलेभयनआवे तेप्राणी जन्मजरामरणादिकना दुःखरहितथयी मोक्षपामें परंतुतारोदर्शन दुखेःपामवामांआवे पणतमारीकृपाथी स्वरूपज्ञानथाय अने जेस्वरूपग्यान तेजैनदर्शनमां अभेदपणेछे माटेतमारीकृपाथकी सुलभके० सुखेंपामियें तोहे आनंदघनशब्दें ज्ञानानंदना सघनपणासहित एटलेज्ञाननुं अत्यंतपणेंजराव तेनामहाराज तेआनंदघनमहाराज तमारीकृपाथी शुद्धस्वरूपात्मजैनदर्शन पामियें ॥ ६ ॥ इतिअभिनंदनजिनस्तवनसमाप्तः ॥

॥ अथश्रीसुमतिजिनस्तवनलिख्यते ॥

॥रागवसंततथाकेदारो॥

सुमतिचरणकजआतमअरपणा ॥दरपणजिमअविकार ॥
सुग्यानी ॥ मतितरपणबहुसम्मतजाणियें ॥ परिसरपणसु
विचार ॥ सुग्यानी ॥ सुमति० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ सुमतिनाथ परमेश्वरना पदपंकजमां माराआत्मानो अरपणके० स्थापन जेनिभ्रमपणे परमात्मानुं स्वरूपचिंतवन तेआत्मअरपणकहियें तेपरमेश्वर उपाधिजनितजे विकारतेथीरहित जेमआरीसामां जेवीअवस्थाहोय तेवीभासे तेथी भिन्नपणेनभासे तेनीपरेंनिर्विकारीछे यथातथ्य कांतिवंतछे भलाकेवलग्यानीछे माटे हेसुमतिवंतप्राणी तेजे बहुके० घणामततेमने सम्मतचालतां तो आत्मअरपणानुं स्वरूपते मतितरपणथयीजाय एटलेबुद्धिनी तृप्तिथयीजाय तेटलासुद्धिजाणियें सम जीलहियें पछे परिके० समस्तपणे जेअन्यमतिओमां आत्मानोअरपण तेथी सरपणके० ओसरवुं कपरांगेप्रवर्त्तवुं तेज सुविचारके० भलोयोग्यविचारछे ॥ १ ॥

त्रिविधशकलतनुंधरगतआतमा ॥बहिरातमधुरिभेद॥सु०॥ बी
जोअंतरआतमतिसरो ॥ परमातमअविछेद सु०॥सुमति०॥२॥

अर्थ ॥ तेपूर्वोक्त एकआत्मअरपणथी ओसरवुंयोग्यकह्यो अनेबीजेआत्मभेदें आ

वंतछे एटले स्वस्वरूपकांतिवंतछे एवापरमेश्वरने अहोवहिरात्माओ तमेसावधान एकाग्रतदाकार मनप्रवृत्तियेंकरी एटलेबहिरात्मापणोमूकीने अंतरआत्मावंतछता जिनेश्वरना चरणकमलनीसेवनात्रणेकालें तत्वतध्यानेधारो ॥ २ ॥

शिवंशंकरजगदीश्वरू॥ चिदानंदभगवान ॥ल०॥ जिनअ
रिहातीर्थंकरू॥ ज्योतिसरूपअसमान ॥ ल०॥श्रीसु०॥३॥

अर्थ ॥ एवुंआनंदघनेकहेछते शीवनासेवकअलखनाउपाशनी योगी तथानिरंजनोपाशनी विरंचोपासनी रुषीकेशोपाशनी इत्यादिक सर्वमतनाधारको आनंदघनने पूछवालागा जेहेआनंदघन तेंसर्वेनुंसेवन उपाडीने एकसुपार्श्वपरमेश्वरनुं सेवन थाप्यो तोतेसर्वअभिधाननी सत्ताएमांछे तेवारेंआनंदघनकहेछे के शिवतेकर्मोपद्रवनिवारक संकरतेसुखनोकर्त्ता जगदिश्वर एटलेजगतईश्वरपणएहिजछे तथाचिदानंदतेज्ञानानंदिछे वलीभगवानते ज्ञानमहातमारूप वीर्य वैरागवंतछे तथारागादिकनो जीपक माटेजिनपणएहिजछे तथासर्वनीद्रव्यभावपूजानेयोग्य अथवा कर्मरूपशत्रुनेहणनार एवोअरिहंतपणएहिजछे तथा गणधर द्वादशांगिप्रवचनकारक साधु साधवी श्रावक श्राविकारूप तीर्थनोकरनारपणएजछे वलीअखंडमहाउज्वलज्योतिस्वरूपीतेपणएहिजछेअसमानएटले जगतमां एनीतुलनाकरनार बीजीकोइज्योतिनथी॥३॥

अलखनिरंजनवछलू॥ सकलजंतुविसराम ॥ ल०॥ अभय
दानदातासदा ॥ पूरणआतमराम ॥ ल०॥ श्रीसु० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ बहिरात्मा संसारीजीवोथी लख्योजाएयोनजाय माटे अलख तथा कर्मरूप अंजनके० लेपनथीजेने माटेनिरंजन सर्वप्राणीओने हितकारीमाटेवछलू त्रसथावरसर्वजीव भवअटवीमांभमता कर्मतापे अत्यंततप्या जन्मजरामरण आधिव्याधियें दुःखीथयेलाओने सातानोस्थानक माटेविश्रामनोधामछे तथाजेमरणथीबचाववुं ते अभयकहियें तेनादाननोसदादातार एटलेप्रभुनोदंमकमरणनपामे तोजिहांमरणनही तिहांजन्मपणनही तथा ज्ञानादिकगुणेभर्यो माटे आत्मरामपणतुंजछो अथवा संपूर्ण आत्मस्वरूपमां तुंरमीरह्योछो प्रवृत्तिरह्योछो ॥ ४ ॥

वीतरागमदकल्पना ॥ रतिअरतिभयसोग ॥ लजना ॥ नि
द्रातंद्रादुरंदसा ॥ रहितअवाधितयोग ॥ ल०॥ श्रीसु०॥५॥

अर्थ ॥ वली रागद्वेषरहितछे माटेवीतराग तथा मदतेउत्कर्षउन्मादनारहितथी तथाकल्पनाते संकल्परहितपणाथी रतितेरागरहितपणामाटे तथाअरतिते द्वेषथी

अरपणाएवुंकह्युं पणिआत्माना त्रणलक्षणकेहेवालागा तेसुं तेनेउत्तरजे आत्माना एत्रणलक्षणकह्याविना आत्मअरपणानो स्वरूपजणायनही माटे बहिरात्मपणुं मूकीने अंतरात्मानुंजेस्वरूप तेमांथिरभावेंथयी एकाग्रस्वभावेंथयीने परमात्मानुंस्व रूप पोतानाआत्मामां भाववुं चिंतववुं एआत्मअरपणानुं दावके० उपायछे॥ ५ ॥

आतमअरपणवस्तुविचारतां॥भरमटलेमतिदोष॥सु०॥पर
मपदारथसंपतिसंपजे ॥ आनंदघनरसपोष ॥सु०॥सु०॥६॥

अर्थ ॥ माटेआत्मअरपणानो वस्तुविचारतां एटलेतत्वविचारणा करतां जेपर स्वरूपने भ्रमथीमानीरह्योहतो तद्रूप मतिके० बुद्धिनोदूषणमटीजाय तेभ्रमतामटी जताज केवलज्ञान केवलदर्शनथी पामिजेमुक्ति तेथीउपनोजे आनंदनो घनके०भराव तेणेकरीउपनोजेअनिर्वचनीयरस तेरसनीपुष्टताछेजेनेविषेएवो परमपदार्थजे उत्कृष्ट मोक्षरूप संपतिके०संपदाते संपजेके०प्राप्तथाय॥६॥इतिश्रीसुमतिजिनस्तवनसंपूर्ण॥

## ॥ अथश्रीपद्मप्रभजिनस्तवनलिख्यते ॥

॥ रागमारुतथासिंधुउचांदलीयासंदेसोकेहेजेमाराकंतनेरेएदेशी ॥

पद्मप्रभजिनतुजमुजआंतरूंरे ॥ किंमभाजेभगवंत ॥ करम
विपाकेंकारणजोइनेरे ॥ कोइकहेमतिमंत ॥ पद्म० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ अहोश्रीपद्मप्रभपरमेश्वर सिद्धांतवचनपक्षें तमारीसाथेंमारे अंतरकांइन थी तोतमारेमारेअंतरशानो पणअन्वय व्यतिरेकलक्षणें तमारेमारेअंतरघणुपडयुं माटे हेभगवंतके० ज्ञानवंत तेअंतरशीरीतेंभांजसे ते तमेग्यानेकरीनेकहो हेपरमेश्व र तमारामाराअंतरनो ग्यानावर्णादिक कर्म्मना विपाकके० परणमवुं तेनाकारण मिथ्यात्वाविरति कषाययोगना बंधनेजोयीने कोइकमहाबुद्धिमंतग्यानी मतिमंतपुरु ष तेणे तुजथीअंतरपडयुं तेकह्युं केजेछतेतेछतुंतेअन्वय अनेजेअछते तेअछतुंतेव्यतिरे क एटलेकर्मबंधकारणनेअभावें अंतरनोपणअभाव थाय ॥ १ ॥

पयइठिइअणुभागप्रदेशथीरे॥मूलउत्तरबहुभेद॥ घातीअ
घातीहोबंधूदयउदिरणारे ॥ सत्ताकरमविछेद ॥ पद्म०॥२॥

अर्थ ॥ हवेअंतरपडवाना कारणमतिमंत पुरुषकहेछे १ प्रकृतिबंध २ स्थितिबंध ३ अनुभागतेरसबंध ४ प्रदेशतेदललुंसंचय एचारप्रकारेंबांधे तेकर्म्मतेनीमूलप्रकृति आठछे अनेउत्तरप्रकृति एकसोअठावनछे तेमांवलीएकभेद आत्मगुणोना घातकर

नो धारकछे तेथी एनेसेवो एनेसेव्याथीसर्वेनुं सेवनएमांअंतर्नूतछे एमअनेकनामो नोअर्थ तेनोविचाररहस्यचिंतवन एटलेएकेकनामनो व्युतपतिसहित अर्थनुंविवेचनकरवुं तेनेअनुनवगम्यकहियें एरीतेंजेनामोनो विचार हेतुसहितचिंतवन तेनी रीतजे जाणे तेप्राणीने श्रीसुपार्श्वपरमेश्वर आनंदघनअवतारकरे एटलेपरमानंदपणे अवतरणकरे ॥७॥ इतिश्रीसुपार्श्वजिनस्तवनसंपूर्ण ॥

॥ अथश्रीचंद्रप्रनजिनस्तवनलिख्यते ॥

॥ रागकेदारोतथागोडीकुमरीरोवेआक्रंदकरेमुनेकोइमूकावेएदेशी ॥

देखणदेरेसखीमुनेदेखणदे ॥ चंद्रप्रनमुखचंद स० ॥ उपशा
मरसनोकंद ॥ स० ॥ गतकलिमलदुखदंद ॥ सखी० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ शुद्धचेतनत्वधर्मेंधर्मित एवीशुद्धचेतना परमेश्वरना मुखप्रमुख आंगोपांगमां व्यापीरहिछे तेपरमेश्वरनामुखादिक देखवा आपेनहि हवेअनादिकालनो कर्मउपाधियेंउपाधित एवोआनदघननोआत्मा सुमतिवंतछतो परमेश्वरना मुखनुंदर्शन करवा वांछतो शुद्धचेतनानेकहेछे के हेशखीआछमांचंद्रप्रनप्रनुनुं मुखरूपचंद्रमा ते मुजनेदेखवाआप केमके एप्रनुनोमुखतुंतोअहर्निसजूएछे अने हुंतोआगलकहिस तेते स्थानकें मुखदीठुंनथी माटेवीनतिकरूंछुं हवेतेचंद्रप्रनस्वामीनो मुखरूपचंद्रमाकेवुंछे तेकहेछे रागद्वेषरहितपणाथी उपशमरसथीउपनुंजेप्रशमरस तेनुं कंदके० उगतांन वोकिशलथछे वलीजेनेचारनिकायना सुरके० देवता तथा मनुष्य इंद्रसर्वेसेवीरह्याछे तेसेवनारनाकलिमलजेपाप तथादुःखोनादंद्रजे समुदायते गतके० नासिगयाछे माटेहेशखी मनेपणजोवाआप जेथीमारापणकलीमलदुःखदंद्रजतारहे ॥ १ ॥

सुहमनिगोदनदेखिओ ॥ स० ॥ बादरअतिहिविशेस ॥ स०
पुढवीआउनलेखिओ ॥ स० ॥ तेउवाउनलेस ॥ स० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ वलीहेशखी अव्यवहाररासी सुक्ष्मनिगोदमां एचंद्रप्रनुनोमुखनदीठो दर्शनथयोनही केमके सुक्ष्मनिगोदें रूपनुंअसंनव रूपनाअसंनवें चक्षुनोअसंनव तेथी देखवानुंसंनव क्यांथीहोय माटेहेशखीमुजनेजोवादे वलीहेशखी बादरनिगोदमांतो अत्यंतविशेषपणे दीठोनही केमके सूक्ष्मनिगोदमांनदीठो तोपणसिद्धनाजीवोथीनजीकछे एटलेसिद्धक्षेत्रमांपण सूक्ष्मनिगोदछे पणबादरनोढूकडोरेवासनथी तेमाटेबादरमां अत्यंतविशेषपणेनदीठुं वलीपृथ्वीकाय अपकायमांपण नलख्यो एटले चक्षुदर्शननाअनावें जाणवामांनआव्यो तथा एकेंद्रीनिश्चअज्ञानीछे माटेजाणवामांनज

नंदघनेपुलघुंजे एकघनतमे तमारीबुद्धियेंकहोठो तेवारेंपंडितोयें प्रत्युत्तरकह्युं जे हेआं नंदघन जैननाग्रंथजेसिद्धांतो तेनान्यायथी अथवा कर्त्तेके० तेसिद्धांतोना वचनथीक हियेछैयें पण स्वेछायेंकेतानथी माटेहेआनंदघन तमारेपरमेश्वरनेआंतरोजांगवानो रहस्यार्थें स्वरूपें एकथवानो एहिज सुअंगके० जलोकपायछे ॥ ५ ॥

तुझमुझअंतरअंतरजाजसेरे ॥ वाजसेमंगलतूर ॥ जीवसरो वरअतिशयवाधसेरे ॥ आनंदघनरसपूर ॥ पद्म० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ तेथीहेपद्मप्रभु जेवारें दुंगुणकरणेप्रवर्त्तिस तेवारेंतारेमारे ध्याताध्येयरू पजे अंतरछे तेजांजसे एटलेनेदअनाविपणुंथासे तेथीस्वरूपप्राप्तिना हर्षोंत्कषनूं घो सरूपअनाहिद ध्वनीरूपमांगलिकना वांजीत्रवाजसे एरीतेआत्मा परमात्मस्वरूप पा मेंथकेज आनंदघनशब्दें केवलज्ञान केवलदर्शनथी अनंताज्ञेयनो चटनविचटनना अ वलोकनथी ऊपजशेजेअल्हादरूपरस तेनापूरजरावथी अत्यंतसुष्क एवोजीवरूपजे सरोवर तेअनंतेज्ञानेकरी अत्यंतवृद्धिपामशे ॥ ६ ॥ इतिपद्मप्रजजिनस्तवनसमाप्तं ॥

॥ अथश्रीसुपार्श्वजिनस्तवनप्रारंजः ॥

॥ रागसारंगमल्हारललनानीदेशी ॥

श्रीसुपासजिनवंदियें ॥ सुखसंपतिनेहेतु॥ललना ॥ शांत सुधारसजलनिधि॥जवसागरमांसेतु॥ललना॥ श्रीसु०॥१॥

अर्थ ॥ हवेसुमतिवंतछतो आनंदघन कुमतिसहचारी प्राणीओप्रतें आत्मसाध नलुंउपाय कंथनपूर्वक श्रीसुपार्श्वपरमेश्वरनी स्तवनाकरतोकहेछे जेहेजव्यों श्रीसुपार्श्व परमेश्वरने द्वादशावर्त्तवादणायेंवांदियें तेमोक्षरूपसुख स्वजावप्राप्तिरूपसंपतिनाहेतुयें एवंदनछे ललनाइतिवाक्यालंकारे परंतुते सुपार्श्वजिनकेवाछे आत्मस्वरूपानुजवें राग द्वेषादिकनेअजावें प्रगटथोजे नवसुंशांतरस तेनासमुद्रछेवलीजवजेशंसारसमुद्रनिवा सीजीवोने सेतूके० पाजसमानछे ॥ १ ॥

सातमहाजयटालतो॥ सप्तमजिनवरदेव ॥ ललना॥ साव धानमनसाकरी॥ धारोजिनपदसेव॥ ल०॥ श्रीसु० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ वलीसुपार्श्वनाथकेवाछे वज्रोपम एवामोटा इहलोकपरलोकादि सातज य अथवा काम क्रोध मद हर्ष राग द्वेष मिथ्यात्व एसातजयनाटाजणहारछे एवोगण नायेंसातमो श्रीसुपार्श्वते जिनके० सामान्यकेवलीमां वरप्रधानअग्रगामी देवद्युति

ति चोराशीलक्षजीवायोनीफरसते इत्यादिकवीजापण अनेकस्थलजाणियें तेस्थलो नेविषे सामान्यकेवलीमां राजासरिखा एवाजिनदेवना दर्शनदीठाविना तेसर्वस्थल निर्थकगया माटेहेसखीमनेदेखवाआप हवेसुमतिवंतआनंदघन शुद्धचेतनानेकहेछे के गयाजवतेतोरह्यापण हमणामनुष्यनवमां शीरीतेंसेवाकरुं तिवारेशुद्धचेतना प्र त्युतरकहेछे हेआनंदघन आगमसिद्धांतोना कथनथी पूजानो मतके० कथनजाणि यें एटलेसिद्धांतोमां हिआए सुहाए निस्सेसाए मुक्तिप्रापकसेवाजाणीने अन्नय अ द्वेष अखेदपणे निर्मलनावांकित पूजाकरियें ॥ ५ ॥

निरमलसाधुन्नगतिलही ॥ स०॥योगअवंचकहोय॥स०॥
किरियाअवंचकतिमसही॥स०॥फलअवंचकजोय॥स०॥६॥

अर्थ ॥ तेमजनिर्मल शुद्धमुक्तिमारगसाधक साधुओनी नक्तिनावांकित वाछल्यप णुं लहिके० पामि एबीजोकारणमल्युं तेनासन्नावें ज्ञानादिक आत्मगुणनेठगेनही एवा मनवचनकायाना त्रणेयोगनीप्रवृत्ति अवंचकथाय तेवारेंक्रियाकरवानुं सर्वप्रव र्त्तनतेपण अवंचकके० अठगाइरूपथाय तेवारेंमनोयोग अवंचकपणेप्रवर्त्ते तेथी स हिके० निश्चेथी आत्मस्वरूप अवछेदफलपणअवंचक जोयके० हेसखीतुंदेख ॥ ६ ॥

प्रेरकअवसरजिनवरू ॥ स०॥मोहनीयक्षयजाय स०॥॥
कामितपूरणसुरतरू॥ स० ॥ आनंघनप्रन्नुपाय ॥ स०॥७॥

अर्थ॥जेअवशरेंअवंचकफल स्वरूपप्राप्तिथाय तेटाणे प्रेरकके०प्रेरणानुंकारकपोता नास्वरूपथी अन्यनास्वरूपनुं ओलखावनार तेचंद्रप्रन्नपरमेश्वर प्रावर्त्तकछे अनेआत्मा प्रवर्त्तकछे एमहेसखी स्वरूपतदाकारपणे आत्माप्रवर्त्यो तेवारें अचिंतनीयआत्मश क्तियें मोहनीयकर्म्मनोक्षयथाय तेथी केवलज्ञान केवलदर्शननुंजेपरमानंद तेनुंघ नके० नराव तेजछेस्वरूपजेनुं एवोजेचंद्रप्रन्नप्रन्नु तेनाचरणकेवाछे कामितके० नि जस्वरूपानिलाषीप्राणीउनो मनोवांछितपूरवाने शाक्षात् सुरतरूके० कल्पवृक्षछे॥७॥

॥ अथश्रीसुबुद्धिजिनस्तवनप्रारंन्नः ॥

॥ रागकेदारोएमधन्नोधणनेपरचावेएदेशी ॥

सुबुधिजिणेसरपायनमिने ॥ शुन्नकरणीएमकीजेंरे ॥ अति
घणोउलटअंगधरीने ॥ प्रहउठीपूजीजेंरे ॥ सुबु० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवेआनंदघन सुबुधिजिननो पूजननाभेदपूर्वक स्तवनकरतो नव्यप्राणीओ

रहितपणामाटे अनेसातनयरहित तथा शोगतेसोचनारहित अनेनिद्रारहित तथातं द्राते आलशरहित वली दूरंके० डुष्टदशारहितछे इहां सरागता मद कल्पना रति अरति नय-शोक निद्रा तंद्रा तथा एकमनोयोग बीजोवयनयोग त्रीजोकाययोगना जेबाधकपणा अविरोधकपणा तेसर्वथी श्रीसुपार्श्वप्रजुरहितछे तेमाटे अबाधित एट लेएसर्वेनी पडारहितथयीगयो तेथीअबाधितयोगीछे ॥ ५ ॥

परमपुरषपरमातमा ॥ परमेश्वरपरधान ॥ ललना ॥ परम
पदारथपरमिष्टी ॥ परमदेवपरमान ॥ ल० ॥ श्रीसु० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जगतनेविषे यावत्मात्र जेटलापुरषछे तेमांउत्कृष्ट पुरसत्वधर्मेसहित पु रुषएछे तथापरमोत्कृष्ट आत्मापणएछे सर्वमनुष्यशिरोमणी परमेश्वरत्रणजगतनोना यकछे वलीत्रणजगतमां परमोत्कृष्ट पदार्थके० वस्तुतेएछे अथवा परमपदजेमुक्तिपद ते नोरहस्यछे तथापरमइष्टते परमोत्कृष्ट इष्टवांछितपदार्थछे एटलेन्नव्यने परमवांछनीकए छे वली परमदेवछे माटेहेअन्यदेवसेवीप्राणिओ तमे सर्वदेवोमां परमदेवपणे एसु पार्श्वप्रजुने परमानके० प्रमाणकरो अवधारो ॥ ६ ॥

विधिविरंचिविश्वंन्नरू ॥ ऋषीकेशजगनाथ ॥ ल० ॥ अघह
रअघमोचनधणी ॥ मुक्तिपरमपदसाथ ॥ ल० ॥ श्रीसु० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वली एप्रजुनेसेवेते सुनवांधे अनेजेनसेवेते असुनवांधे अनेवांधेतेवोन्नोगवे तेथीविधातालेखनुंलेखकएछे तथासंसारीजीवअने एप्रजुतेसत्तायेएकछे माटेश्रेष्ठनोक र्त्ता विरंचिजेब्रह्मातेएजछे तथा संसारीजीव एनेआधारेछे माटे विश्वंन्नरतेसंसारनोधा रकएजछे वलीजे ऋषीराजछेते एनेजध्यावेछे माटेऋषीउंनोइशके० स्वामितेएजछे तथा जगतवासीजीवोने शुद्धस्वरूपनोपोषक माटेयगतनोनाथते एजछे वली अघजेपोता नापाप तेनोहरनारो दूरकरनारो तथा अघमोचनते अनेककालना पापीप्राणीओना पापनोहरनार माटेधणीपापनोकर्त्ताछे वली मोक्षरूपपरमपदनो साथछे अथवा क र्म्मनेमूकवाथी मुक्तथयो माटे परमपदतेनिरवाणपद तेमां सहचारीपणोछेजेनुं ॥ ७ ॥

एमअनेकअन्निधाधरे ॥ अनुन्नवगम्यविचार ॥ ल० ॥
जेजाणेतेहनेकरे ॥ आनंदघनअवतार ॥ ल० ॥ श्रीसु० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ एमके० एपूर्वेजेअनेकरीतोकही तेथीपण बीजीघणी अन्निधाके० श क्तिओनेधारेछे एटले अजर अमर अक्षर अकल अनादिस्वरूपि विजयी अतिंद्रिय प्रभ्नात्मा संन्नु स्वयंन्नु सार्व अज अच्युत अविरुद्ध इत्यादिक अन्यपण अनेकनाम

एहनुंफलदोयनेदसुणीजें ॥ अनंतरनेपरंपररे ॥ आणापा
लणचित्तप्रसन्नी ॥ मुगतिसुगतिसुरमंदिररे ॥ सु० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेपूर्वोक्तजे अंगपूजानीविधिकही तेनोफलकहेछे एनुंकार्यसिद्धरूपफल एकअनंतर बीजोपरंपरारूप एबेनेदें सिद्धांतोमांथी सांनळुंछे तेरीतेंकहुंछुं जेपूजा मांतदाकारवृत्तियें स्वामिसेवकसंबधेप्रवर्त्तें तेपरमेश्वरनीआज्ञानजलोपे चित्तप्रसन्निते मननीहर्षवृत्तियें आज्ञापालनरूपफलनीप्राप्तिथाय तेपूजानुं अनंतरके० आंतरेरहि तफलजाणवुं केमकेजेने प्रनुआज्ञानीप्राप्तिथयी तेनेजैनदर्शननुं सर्वस्वहाथेंचढ्युं तथाएरीतेंआज्ञासहित पूजनकरनारने परंपरफलतो मुक्तिसिद्धप्राप्ति तथा सुगति के० सोनलिकमनुष्यपणानीगति अथवा सुरमंदिरतेदेवनुवनपामे तेमांपणनावाधि कपणेमुक्तिजकहि तेनावाधिकपणुंपण तथाविधछे परंतुनवस्थितिनुंपरिपाककारण नमले तोपण मनुष्यअथवा देवतानीउत्तमगतिपामे ॥ ४ ॥

फूलअक्षतवरधूपपइवो ॥ गंधनैवेद्यफलजलनरीरे ॥ अंग
अग्रपूजामलिअडविध ॥ नावेंनविकसुनगतिवरीरे ॥ सु०॥५॥

अर्थ ॥ हवेअग्रपूजानामें बीजुंपूजानोनेदकहेछे तेमांपांचनेदतोतेअंगपूजानाज छे फरित्रणबीजामलाव्या परंतुआगल सतरनेदादिक अन्यनेदकेशे तेसर्वेअग्रपूजा नानेदमलवाथीथशे हालअग्रपूजाआठनेदेंछेतेनानामकहेछे १ फूल २ अक्षत ३प्र धानधुप ४ पइवोके० प्रकृष्टदीप ५ सुगंधवासक्षेप ६ नैवेद्य ७ फल ८ गंगाप्रमुख नाजल एरीतें अंगपूजानापांचतेमज अग्रपूजानात्रणमलिने अडविधके० आठनेद दथया तेअंगअग्रपूजाजे नव्यजीव नावसहितकरे तेप्राणीसुनगतिशब्दें पंचमगतिने वरे ॥ माटेपूजातेमोक्षपदनीप्राप्तिकरनारीछे ॥ ५ ॥

सत्तरनेदएकवीसप्रकारें ॥ अष्टोत्तरसतनेदेंरे ॥ नावपूजा
बहुविधिनिरधारी ॥ दोहगदुरगतिछेदेंरे ॥ सु०॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवेअंगअग्रपूजानानेदफिरिसत्तरनेदमांलिखेछे १ न्हवण २ विलेपन३ वस्त्रयुग ४ गंधारोहण ५ पुष्पारोहण ६ मालारोहण ७ पंचवर्णपुष्पारोहण ८ चुए ९ ध्वज १० आनरण ११ पुष्पघर १२ पुष्पपगर १३ अष्टमंगल १४ धू प १५ गीत १६ नृत्य १७ वाजीत्र एसतरनेद तथावलीएकवीसप्रकारें तेमजवली अष्टोतरसतके० एकसोआठनेदें तथाएकहजारआठनेदें एसर्वेअंगअग्रपूजानानेद तेनावेंआचरतांसुगतिवरे हवेत्रीजोपूजानोनेद नावपूजाछे तेकहेछे नावशब्दें परमे

आव्यो वलीतेउकाय तथावाउकायमांपण लेसमात्रनदीठो केमके मनुष्यजवेंप्रज्जुनुं दर्शनकरी मरणपामिने जोआवेतोअपर्याप्ताअवस्थायें पूर्वेनवनुंलेसपामे पणमनुष्य एवेनिकायमां आवेजनही माटेनदीठुं ॥ २ ॥

वनसपतिअतिघणदिहा ॥ स० ॥ दीठोनहीदीदार ॥ स० ॥
बितिचउरिंदीजललिहा ॥ स० ॥ गतिसन्नीपणधार ॥ स० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वलीहेशखी मारोजीव वनस्पतिकायमांपण अत्यंतघणादिवश एटलेघणोकालरह्यो तिहांपणअनंतोकालसुधी जोवानोविरहपड्यो तेथीप्रज्जुनो दीदार के० मुखकमलनदीठुं एरीतेंएकेंद्रीमांचक्कुनोअजावमाटे नदीठुंफरीहेशखीतुंएमकहिस के एतोतेंसर्वएकेंद्रीनाज स्थानकबताव्या पणएकेंद्रीमांथीछूटीने बेंद्री तेंद्री नेचक्कु नथी पणचौरेंद्रीनेतोचक्कुछे तेपण चक्कुकेवीछे केजललिहाके० पाणीनीलीकजेम निष्फल तेमतेआंखपण दर्शनकार्यनीअसिद्धता माटेनिष्फलछे जेमपाणीमां लीक पामियें पणथायनही तेमआंखछतेदर्शननथाय तेथीचक्कुपामि पणनिरर्थक माटेमुफ नेजोवादे वली संज्ञीपणानी पणके० पांचेगतिमांपणनदेख्यो एमहेसुद्धचेतनाशखी तुं धारके० अवधार ॥ ३ ॥

सुरतिरिनिरयनिवासमां ॥ स० ॥ मनुजअनारजसाथ ॥ स० ॥
अपजताप्रतिजासमां ॥ स० ॥ चतुरनचढीओहाथ ॥ स० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वलीविषयाशक्तछते देवतानीगतिमां तथा विवेकनाविकलपणामाटे तीर्यचनीगतिमांपणनदीठो वली नरकगतिनानिवासमांपण नित्यदुःखमांमग्नछते संजारवुंपणनथयुं तोदेखवुंकिहांथीथाय तेमज जिहांधर्माधर्मेतुंज्ञातापणुनथी एवाअनार्य मनुष्यना साथके० संगते एटलेअनार्यमनुष्यमांउपनेथके तेमज अपर्याप्तामनुष्यनी प्रतिजा एटलेप्रतिबिंबतेजलक तेपणधर्माधर्मे विवेकविकलपणामाटे अपर्याप्तानेस हसजासेछे जातेंतेमनुष्यछे इत्यादिकपूर्वोक्त स्थलमात्रमां चतुरके० महानिपुण एवो परमेश्वर मारेहाथेनआव्यो एटलेदर्शननी योगवाइनमिलि पणहमणादर्शननी योग वाइमलीछे माटेतुंकेमजोवादेतिनथी तोहेशखीहमणातुंमनेजोवाआप ॥ ४ ॥

एमअनेकथलजाणियें ॥ स० ॥ दरिशणविणुजिणदेव ॥ स० ॥
आगमथीमतजाणियें ॥ स० ॥ कीजेनिरमलसेव ॥ स० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ एरीतेंपूर्वेकह्या तेमज कामि क्रोधी लोभी मोहि रागी अश्रद्धा अन्यम

नेदें जगांतरनीरचना. विविधके० नानाप्रकारनीछे तेनव्यजीवोने मनोहरचमत्कारक पछे. परंतुमनमांजयानकपणेउर्धर्षनथी तेत्रिनंगीनीनंगरचनाकहेछे १ करूणातेम ननी कोमलतादयानापरिणामतेशीतलपरमेश्वरना स्वनावें अहिंसकनावेंज परिण म्याछे तेनेकरुणाकहियें इहां करुणानोकोमलताअर्थ योजनामांजकर्युं तेनुंहेतुजे नाष्यनिर्युक्तिमां पोतानापदनोअर्थ पोतेंजयोजनामांकरिजाय माटेदोषनथी वलीती क्ष्णता तेतीक्ष्णवृत्ति एटलेक्रूरताउर्धर्षपणुं एबीजोनांगोअनेउदाशीनवृत्ति एत्रीजोनां गो एटले नव्यजीवनेकालपरिपाककारणमिलें सहजेंसिद्धथाय माटेदयाचिंतवेवुं वी जुंकर्म्मपणसहजखपीजाशेमाटेकोमलता तथातीक्ष्णतामां मध्यस्थनावेंप्रवृतिजाण वी. तेउदासीनता एवीसीतलपरमेश्वरनीमनोहरत्रिनंगीकही ॥ १ ॥

सर्वजंतुहितकरणीकरुणा ॥ कर्मविदारणतीक्ष्णरे ॥ हाना
दानरहितपरणामि ॥ उदाशीनताविक्षणरे ॥ शी० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवेएजत्रिनंगीनुंसंनववतावेछे समस्त सुक्ष्मबादर त्रसथावरसंसारीजीव मात्रनेहितकारीचिंतवणा तेकरुणानामेंपेलोनांगो बीजोज्ञानावरणादिकर्म्मनुंविदारवुं अनावकरवुं एतीक्ष्णताछे इहांनिर्दयीपणुंछे एटलेबापडाजडोनेकुणहणे एमकर्म्मोनो नासकरवामांदयाआवतिनथी तेबीजुंनंगो हवेत्रीजाउदासीननंगनू उनयविलक्षणी माटेअसंनवजछे तेनुंसंनवकहेछे हानके० बोडवायोग्य आदानके० ग्रहणकरवायो ग्य तेथीरहितपरिणामिछे एटले बोडवायोग्यवस्तुनेबोडवानीइच्छानथी तथाग्रहणक रवायोग्यवस्तुनेग्रहवानीइच्छानथी एरीतेंइच्छानोनिरोधकर्युंछे तेपणजाणीने रोकीन थी पणस्वनावेंज इष्टअनिष्टवस्तुउपरथीहानादानपणुंउठीगयुं तेउदाशीनतावृतिप णुं विक्षणके० विचक्षण तेपदपूरोकरवामाटेविक्षणपदमूक्युं एउदाशीनतानुंलक्षण कहेछे जेअनादिनिजस्वरूपनुंग्रहणतेआदान अनेपरपरिणतिनुंत्याग तेहान एबेथी रहितपरिणामिपणुंछे केमके एमारोअनादिस्वनावछे तेहुंपाम्योमाटेतेनोशोहर्षजे मग्यानदर्शनतेआत्मा अनेआत्मातेग्यानदर्शन तेमजनिश्चेनयेंत्रणेकालें आत्मामां कर्म्मनोअसंनवजछे तेनोपणशोकहर्षनथी एरीतेंउदाशीनतानुंसंनवकह्युं ॥ २ ॥

परदुखछेदनइच्छाकरुणा ॥ तीक्ष्णपरदुखरीझेरे ॥ उदाशी
नताउनयविलक्षण ॥ एकठामेंकेमसीझेरे ॥ शी० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवेएत्रिनंगीनेविषें अर्थनेदेंत्रिनंगीदेखाडेछे संसारीजीवोने अनादिकालनुं परपुजलादिजडनेसंबधे थयोजेदुःख तेनेछेदवानीइच्छातेकरुणा. एपेलोनंगो तथाजेम

ने यथातथ्यपूजननुं फलउपदेशेछे के अहोजव्योतमे प्रथमतोसुबुधिपरमेश्वरना च रणकमलनेनमिने एमके० आगलजेदेखाडीत तेरीतें शुजकरणीकरियें स्वरूपानुजा वीकर्त्तव्य आचरियें अथवा आत्मानेदेवतानीगतिसंबंधीसुखदायककरणी तेशुजकर णीआचरियें तेशुजकरणीकहेछे जेमसंसारीजीवोने विवाह्प्रमुख ते अतिहर्षनुंस्था नकछे अथवा अपुत्रियानेघरेंपुत्रोत्पत्तिथाय तेथीअत्यंतघणोउल्लटथाय एवीरीतेंअ त्यंतउल्लास अंगमांधारणकरीने रोमांचितदेहकरी जन्ममांतेदीवशने धन्यमानतां अहोजव्योतमे एवेहर्षोत्कर्षसहित प्रजातनेविषे उठीनेबीजोसंसारसंबंधिकोइपणका र्यकर्याविना सुबुधिपरमेश्वरनापदकमलनेनमिने पछेपूजनरूपशुजकरणिकरो ॥१॥

द्रव्यजावसुचिजावधरीने॥ हरखेंदेहरेजइयेंरे ॥ दहतिग
पणअहिगमसाचवतां ॥ एकमनाधुरियइयेंरे॥ सु० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ एटले जेजेवखतेंपूजाकरवी तेते वखतें शरीरधोयी तथाधोतिप्रमुखधोयी धोयीसुकावीसुकावीने पेरवातेथीजमात्र सुचिके०पवित्रताकरवी तेतोकर्त्तायेंमानीनही पणजावनेधरवे द्रव्यतथाजावएबेनीसुचिताकहिछे एवोउत्तांसाडात्रणक्रोडरोमउल्ला सितथका निस्सहिप्रमुखदसत्रिक तथा पांचअजिगमन जेरीतेंप्रवचनसारोद्धार तथा चैत्यवंदनजाष्यप्रमुखग्रंथोमांकह्याछे तेसर्वरीतसांचवतांथकां हर्षजरहियें जिनमंदिरे जइयें तिहांजइने धुरिके० प्रथमतो एकमात्रपूजाकरवानेविषेज मननीएकाग्रता त दाकारवृत्तिराखवी पणअन्यस्थानकोथीसर्वथाप्रकारें मननीनिवृतिकरवी एमतन्मयी पूजामयीजथइयें एरीतेंशुजकरणीकरिये ॥ २ ॥

कुसुमअक्षतवरवाससुगंधो धुपदीपमनसाखीरे॥अंगपूजा
पणजेदसुणीएम॥ गुरुमुखआगमजाखीरे ॥ सु० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवेपूजानाचारजेदछे १अंगपूजा २ अग्रपूजा३जावपूजा४प्रतिपत्तिपूजा एचारजेदोमां प्रथमअंगपूजाकहिते १ कुसुमतेफूलचंबेलीप्रमुख अक्षततेअखंडित तंदूल २ वरके० प्रधान चंदनकपूरकस्तुरिकादिकसुगंधीद्रव्येंयथायोजेचास ४ चंदनश्वे त अगर वालछड कपूरकाचरी कस्तुरी जीमसेनीबरास सेलारस एअष्टगंधधूपजाण वो ५ घृतमौलीसुतरनीबत्तिनोदीप एसर्वएकाग्रतायें मननीसाखें सार्थकछे तेविना निर्थकजाणवो एअंगपूजाते पूर्वोक्त पणके० पांचजेदें तेजेरीतेंआगममांजाषी तेरीतें गुरुमुखेथी सांजलीकर्णगोचरकरी ॥ ३ ॥

तेशक्ति तेजशक्तिथी स्वस्वभावनुं प्रत्यक्षकरवुंतेव्यक्ति अनेस्वगुणग्रहणकरतां शक्तिफो रववानुंस्योकार्य एतोआत्मानागुणहता तेजआत्मामांप्रगट्या माटेनशक्ति अनेआ त्मापोतानास्वभावमांरम्योतेमांसुंप्रत्यक्षकरवुं तेनव्यक्ति एपेहेलीत्रिभंगी वली त्रणजग तनापूज्यमाटेत्रिभुवनप्रभुता बाह्याभ्यंतरग्रंथीयेंरहितमाटेनिर्ग्रंथता स्वभावेंत्रिजगत पूज्यनाअवांछकपणामाटे नत्रिभुवनप्रभुता पाशेंछघोमुहपतिनराखे निर्ग्रंथीपर्यीने फिरेनही माटेननिर्ग्रंथता एबीजीत्रिभंगीकही १ योगी २ भोगी ३ नयोगीनभोगी मनवचनकायानुंयोगीछे पोतानागुणने भोगववामाटेभोगीछे सिद्धावस्थाचिंतवतां न योगीछेयोगरहितछे निजगुणनेभोगवतोछेपरंतुस्वभावेंसिद्ध गुणनोअंतर्भावीपणामाटे नभोगी एत्रीजीत्रिभंगीकहि १ वक्ताछे २ मौनीछे ३ नवक्ता नमौनी द्वादशांगीनो वक्ता आश्रवसंबंधीवचनतुंकथननकरेमाटेमौनी अनंतातीर्थंकरें द्वादशांगीभाषीतेथी कांइपणहिनाधिकनकह्युं तेथीनवक्ता तीर्थप्रवृत्तनसमयें ते द्वादशांगीवचनवर्गणायेंभा षी माटे नमौनी एचोथीत्रिभंगीथयी हवेअनुपयोग उपयोगनेसंयोगें पांचमीत्रिभंगी बतावेछे १ अनुपयोगी २ उपयोगी ३ नअनुपयोगी नउपयोगी उपयोगप्रयुंज्याविना अनंतापदार्थ केवलज्ञानथीप्रत्यक्षछे माटेअनुपयोगी केवलज्ञानोपयोगी केवलदर्शनो पयोगी पणामाटे उपयोगी सिद्धावस्थामां केवलज्ञान केवलदर्शन एबेउपयोगोनोसं भव तेमाटेनअनुपयोगी पणउपयोगप्रयुंजवानो कारणकोइवारें पडतुनथी तेमाटेन उपयोगी एमपणकह्युंजाय एपांचमीत्रिभंगीकही ॥ ५ ॥

इत्यादिकबहुभंगत्रिभंगी॥चमतकारचित्तदेतीरे॥ अचरिज कारीचित्रविचित्रा ॥ आनदघनपदलेतीरे ॥ सी०॥ ६ ॥

अर्थ ॥ इत्यादिपूर्वेकही तेआदेदेइनेबहुविकसंयोगी त्रिभंगीओनाभांगाछे जेम १ कामकर्मे २ क्रोधकर्मे ३ नकामकर्मे नक्रोधकर्मे स्वस्वरूपग्रहवानो कामके० अभिला षते क्रमके० व्यापिरह्योछे मोहादिकशत्रुहणता क्रोधव्यापिरह्योछे जिवारेसंज्वलननो लोभखपावी बारमेंगुणठाणेचढ्यो तिवारेंनकामीनक्रोधी इहांकामक्रोधादिकसहुनो त्यागीछे एत्रिभंगीथयी तेमज १ सकामी २ निष्कामि ३ नसकामिननिष्कामी स्वस्व रूपग्रहवाने अभिलाषेंसकामी परपरिणतिने अणग्रहवेनिष्कामी कामकरमनेत्यागें नसकामी अने ताराअनंतागुणोमांथी तेंएकगुणहीनग्रहणनकर्‌यो माटेतुंननिष्का मि इत्यादिक अनेक त्रिभंगीओछे असंभवपणाने प्राप्तकरतिथकी चित्तनेचम त्कार उपजावनारीछे केमके चित्रके० नानाप्रकारना विचित्राके० अनेकभंगतर

थरनास्वरूपनेज्ञानादिक बहुविधिके० घणाप्रकारें निरधारीके० तेतेलक्षणेअवधारी ने चिंतववुं एत्रीजीपूजाछे तेनुंफल छुर्नाग्यजेस्वरूपनीअप्राप्तिरूप एवीकर्म्मसंबधनीचा रेडुर्गति तेनो छेदके० नासकरे नेपंचमगतिनीप्राप्तिकरे ॥ ६ ॥

तुरियन्नेदपडिवत्तीपूजा ॥ उपशामखीणसयोगीरे ॥ चनुहा
पूजाइमउत्तरश्रयणे ॥ न्नाषीकेवलन्नोगीरे ॥ सु० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवेपूजानो तुरियके० चोथोन्नेदजे प्रतिपतिपूजातेनुंसरूपलिखेछे प्रति पतिके० पडिवजवुं अंगिकारकरवुं एटलेपोतानास्वरूपने अविछनपणेजेआदरवुं तेप्रतिपतिपूजा ते इग्यारमांउपशम तथा बारमांक्षिणमोह अने तेरमां सयोगीगुण गणेपामे एरीतेचारप्रकारनीपूजा तेवक्तव्यतायें उत्तराध्ययनसूत्रना सम्यक्तपराक्रम नामा अध्ययने जेकेवलज्ञानना नोगीपुरषो तेणेन्नाषीके० उपदेशीछे तोअहोन्नव्यो कोइमतममत्वमांग्रस्याछतां परन्नवनाबीकनेअवगणी उत्सूत्रन्नाषणकरता परमेश्व रनीफूलधुपादिक पूजामांआरंन्नबतावेछेतेजो केवलज्ञानीपूजामां आरंन्न जाणतातो पोतेजसिद्धांतोमां पूजानेनिषेधकरता परंतुइहांतोलान्नजाणीउपदेशीछे ॥ ७ ॥

एमपूजाबहुन्नेदसुणीने ॥ सुखदायकसुन्नकरणीरे ॥ न्ना
विकजीवकरसेतेलसे ॥ आनंदघनपदधरणीरे ॥ सु० ॥८॥

अर्थ ॥ माटेहेन्नव्यो एरीतेंद्रव्यन्नावपूजानाघणान्नेद ते सुखशब्देंमुक्तिनासुखदेवा नेअर्थें पूजातेसुन्नकरणी एटलेआत्मानेस्वस्वरूपकरणीनाकर्त्तव्य सांन्नलीने श्रोत गोचरें मनमांअवधारणकरीने द्रव्यपूजा न्नावपूजा जेन्नाविकजीवकरशे आदरशे ते प्राणी आनंदशब्दें अनिर्वाच्य अतिसयानंदनो घनके० अत्यंतन्नरावरूपपद तेमुक्ति पदनी धरणीनामस्थानते लेसेके० पामसे ॥ ८ ॥ इतिसुबुधिजिनस्तवनसंपूर्ण॥

॥ अथश्रीशीतलजिनस्तवनलिख्यते ॥

॥ रागधन्यासरिगोमीमंगलिकमालागुणहविसालाएदेशी ॥

शीतलजिनपतिललितत्रिन्नंगी ॥ विविधन्नंगीमनमोहेरे ॥
करूणाकोमलतातीक्ष्णता ॥ उदाशीनतासोहेरे॥शी०॥१॥

अर्थ ॥ हेशीतलजिन सामान्यकेवलीनास्वामि तमारास्वरूपमां रमणथयीरहि वि रोधान्नासप्रत्यक्ष तेतमारेविषे अविरोधपणेप्रवृत्ति माटे ललितके० मनोहरकहीए वी त्रिन्नंगीके० त्रणछेप्रकारजेना तेएकत्रिन्नंगीनेविषे फरिमूलन्नंगीनानामोनाअर्थेवि

यें देवता तथामनुष्यनीगतिनेसिद्धकरे अथवाअसुनक्रियाजे प्राणातिपातादिक तेक्रियाकरीने नरकतीर्यंचादिक गतिनेसिद्धकरे एटलेसाधुपणामांदेवतामनुष्यनीगतिसिद्धकरे अनेतेजसाधुछते वंचकपणानीकरणीकरे अथवाप्राणातिपातादिकें नरकतीर्यंचनी गतिसिद्धकरे तोतेक्रियाने अध्यात्मस्वरूपानुंजाथी नकहियें ॥ ३ ॥

नामअध्यातमठवणअध्यातम ॥ द्रव्यअध्यातमछंमोरे॥ भा
वअध्यातमनिजगुणसाधे ॥ तोतेहसुंरढमंमोरे॥श्रीश्रे०॥४॥

अर्थ ॥ हवेअध्यात्मक्रियाना चारप्रकारछे तेकहेछे एकतो जेअध्यात्मशब्दनुंमात्रअर्थपणनजाणे अनेजेपूछेतेनेकहेजे अमेंअध्यात्मीछैयें तेनामअध्यात्म तथाबीजुं अध्यात्मशब्दनुं अक्षरविन्याशीपणुं तेस्थापनाअध्यात्म त्रीजुं रेचक पूरक कुंनकादिकेंकरी बाह्यवृत्तियें एवुंध्यानबतावे जेथकीलोकएमजाणेजे एणेअंतरवृत्तियें आत्मानुंस्वरूपप्रत्यक्षकर्युंदेखायछे पणपोतेकोरानाकोरा एद्रव्यअध्यात्म एत्रणेअध्यात्मछांमवायोग्यछेतेछांमो अनेजे निजस्वरूपसहित क्रियानुंप्रवर्त्तवुं एवोजेनावअध्यात्म तेआत्मानागुणज्ञानदर्शनादिकनेसाधे नावअध्यात्मिपणुंसिद्धकरे माटेअहोनव्योजोतमने निजगुणनीसिद्धताकरवीछे तोनावअध्यात्मथीज रढमंमोके० रटनाकरो ॥ ४ ॥

शब्दअध्यातमअरथसुणीने ॥ निरविकल्पआदरजोरे॥शब्द
अध्यातमनजनाजाणी॥ हानग्रहणमतिधरजोरे॥श्रीश्रे०॥५॥

अर्थ ॥ हेनव्यो आतमाने अंतर्वर्त्ति आत्मरूपमां तदाकारीपणेरमवुं एवुंअध्यात्मशब्दनुंअर्थछे तेगुरुमुखथीसांनलीने निश्चेनय आत्मानेविषे स्वरूपनुंनिरविकल्पिपणुंअनेदिपणुंछे ते आदरजो अवधारजो तथा अध्यात्मशब्दमां वली नेनेदछे एटले एकमां स्वरूपअध्यात्मिपणुंछे अनेबीजामांस्वरूपअध्यात्मिपणुंनथी माटेनजनाछे एटलेजे निःकेवलनाम अर्थविनाएकलो अध्यात्मशब्द तेमांस्वरूपअध्यात्मिपणुंनथी तेथीशब्दअध्यात्ममां स्वरूपनीअसिद्धतामाटे हानके० छांमवानी मतिके० बुद्धीधारजो अने अर्थअध्यात्ममां स्वरूपनीसिद्धतामाटे ग्रहणकरवानी बुद्धिधारजो॥५॥

अध्यातमजेवस्तुविचारी ॥ बीजाजाणलबासीरे ॥ वस्तुग
तेंजेवस्तुप्रकाशे ॥ आनदघनमतवासीरे ॥ श्रीश्रे० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ माटे वस्तुशब्देंआत्मतत्वने तदैकपणेविचारवावाला लक्षलक्षणनाअजिन्नविचारी तेतोअध्यात्मनेग्रहणकरेछे अनेजेवस्तुविचारीअध्यात्मथीजिन्न हठवादीपणेअन्यरूदयछतां अध्यात्ममतममत्वी एकनिश्चेनयवादी तेतोलबाडछे अनेजेमुनी

महावीरस्वामिने संगमानाउपसर्गोंथी परजेपुद्गलोतेनेदुःखपामतादेखीने रीजेके॰ ह र्षपामें एटलेज्ञानीपुरुषएमविचारेजे अनादिकालना ए मनेदुःखआपताहता आजए दुःखपामेछे एवीविचारणातेरीजकहियें एतीक्ष्णताबीजोभांगो अनेजे अभयविलक्ष णके॰ एबनेलक्षणोथीरहितजूदुजछे तेउदाशीनतात्रीजोभांगो तेआवीरीतें जेमपुद्गल संगीजीवोने दुःखीजोयीने विचारेजे एनीभवस्थितिपरिपाकविना मारीकरुणाथीसुंथा य तथाएपुद्गलादिकजडवस्तुने बीजानाकरेलाउपशर्गादिकना दुःखदेखीनेहुंराजीथयो परंतुमारोस्वरूप निश्चेंथीएकानंदोपेतजछे माटेएजडरोकीशकेनही तेउदाशीनता एत्र णेलक्षणकह्या ते एकपरमेश्वररूप ठामके॰ स्थानकमां शीरीतेसिद्धथाय केमकेएना लक्षणभिन्नभिन्नछे तेथीएकस्थानकमांकेमपामियें तेनोआगलीगाथामांजवाबआपेछे

अभयदानतेमलक्षयकरुणा॥ तीक्ष्णतागुणभावेंरे ॥ प्रेरण
विणुकृतउदाशीनता ॥ इमविरोधमतिनावेरे ॥ शी॰ ॥४॥

अर्थ ॥ हवेतेत्रिभंगीनु शीतलपरमेश्वरमां अविरोधिपणे अवतरणकरीदेखाडेछे कोइनेभयनउपजाववुं एवोअभयदान सर्वजीवने परमेश्वरआपेछे तेनेजकरुणाक हियें तेरागद्वेषरूप मलनाक्षयथीछे अथवा मलक्षयतुंअर्थ अलक्षयकरियें तोएजक रुणानथी हवेइहांसुमतिपूछेछेके तीक्ष्णता तथाकरुणानेतो परस्परविरोधिभावछे मा टेतीक्ष्णता केमसंभवे तेनेकहेछे जेएपरमेश्वरमां पोतानागुणनो स्वभाव एवोज छे जे कर्म्मोउपरअतितीक्ष्णताउपजे एरीतें मतिके॰ बुद्धिविरोधआवतीनथी अथ वा मतितेहेसुमति एमविरोधिपणुंनथीआवतुं एवीजोभंगो हवेत्रीजाभंगानुस्वरूपबता वेछे प्रेरणकयाविना उदाशीनताछे एटलेजिहां इष्टयोगें अनिष्टसंयोगें उदाशीनता थाय तेदुःखनीप्रेरणाथीथयीकेवाय पणपरमेश्वरनेविषे जेउदाशीनताछे तेप्रेरणावि नाछे केमके आत्मधर्मेंथी वीतरागपरिणतिपरिणमि परमात्मवृतियें स्वभावप्रासिथ यी तेनोशोदूषे तेथीप्रेरणाविना उदाशीनताछे माटे मतिके॰ हेसुमति शीतलपरमे श्वरमां पूर्वोक्तविधें त्रिभंगीनी परस्परविरोधता आवतिनथी ॥ ४ ॥

शक्तिव्यक्तित्रिभुवनप्रभुता ॥ निर्ग्रंथतासंयोगेंरे ॥ योगी
भोगीवक्तामौनी ॥ अनुपयोगिउपयोगेंरे ॥ शी॰ ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वलीबिभंगानेप्रयोगेंत्रीजोभांगोथाय एवीपांचत्रिभंगीकहेछे १ शक्ति २ व्य क्ति वलीएबेनेसंयोगें त्रीजुंनशक्ति नव्यक्ति वली १ त्रिभुवनप्रभुता २ निर्ग्रंथता एबे नेसंयोगें त्रीजुं नत्रिभुवनप्रभुता ननिर्ग्रंथता एटले स्वगुणपर्यायनेग्रहवेसामर्थ्यपणुं

म्मैनुं कर्त्तापणुंतेपरिणामेंव्यापिरह्युंछे पणजीवमांनथी इहांकोइपुछेजे जोवमांकर्त्तापणुं केमनथी तेनेउत्तरजे करियेंके॰ जेपरिणामेंप्रवृत्तियें तेकर्म्मजीवेंकरियें जेममिथ्यात्वपरिणामेंपरिणामतोजीव मिथ्यात्वकर्म्मप्रकृतिनेकरियें पणअविरतप्रतेंनकरियें तेथीकर्त्तापणुंपरिणाममांछे पणजीवमांकर्त्तापणुंनथी जेकरियेंतेकर्म्म तेथीकरवामात्र कर्म्मतोएकजछे परंतुनयवादेंके॰ नयवचनमार्गें तेनाअनेकरूपछे एटले वस्तुतत्वे एकनयवचनमार्गें ज्ञानावर्णादिकर्म्मेंआवछे तेहेनरके॰ नव्यमनुष्यो नियतेंके॰ निश्चे संघातें अनुसरियेंके॰ अवधारणकरियें एटलेकर्त्तापणानापरिणामें जेजीवेंकरियें ते वाकर्म्मेनयवादेंआवथाय तेनिश्चेंथीअवधारियें ॥ ३ ॥

दुखसुखरूपकरमफलजाणो॥निश्चयएकआनंदोरे॥ चेतन
तापरिणामनचूके ॥ चेतनकहेजिनचंदोरे ॥ वासु॰ ॥ ४ ॥

अर्थ॥तोहेभव्यो दूःखस्वरूप अनेसुखस्वरूप एवेकर्म्मनाफलजाणो तेव्यवहारनयनीअपेक्षायें अनेनिश्चेनय विचारीने अनादिसिद्धअपेक्षायेंजोइयेंतो त्रणेकालें निजस्वभावनोजकर्त्ताछे निश्चेंथीएकअद्वितीयआनंदमयीछे अनेचेतनानेविषे चेतनाधर्मतेचेतनतापणुंछे तेचेतनतानोपरिणामके॰ परिणमनने नचूके एटलेचेतनाचेतनता रूपधर्मनेमूकेनही तेचेतनजाणवी केमके चेतनतातेचेतननोधर्मछे तेधर्मथीधर्मिनी ओलखाणथाय दोहा ॥ धर्मिअपनेधर्मकूं ॥ नतजेतिनूकाल ॥ आत्मज्ञानगुणनातजे जडकिरियाकीचाल ॥ १ ॥ माटेधर्मनेअभावें धर्मिनोअभाव जेमजलावधारणधर्मने अभावें घटधर्मिनोअभाव तेथीचेतनताधर्मवंतने श्रीजिनचंद्रे चेतनकह्यो ॥ ४ ॥

परिणामिचेतनपरिणामो ॥ ज्ञानकरमफलभावीरे ॥ ज्ञान
करमफलचेतनकहिये ॥ लेजोतेहमनावीरे ॥ वासु॰ ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ एटलेचेतनताधर्मे परिणामिके॰ व्यापीरह्यो एवोजेचेतन जीव तेनो परिणामोके॰ परिणामनसुंछे एटलेधर्मसुंछे तेकहेछेजे ज्ञानशब्दें निजस्वरूपज्ञान एटलेहुंचेतनछुं अनेजेपुद्गलादिकमां रमिरह्योछुंतेजडछेहुंअविनासी एजडतेविनासी हुंचेतनाधर्मि एसडणपडण विध्वंसणधर्मि तोएआत्मानुं करमके॰ करवुं तेनुंफल शुद्धात्मस्वरूप प्राप्तिरूप तेनुंभाविके॰ चिंतक विचारकरनारो तेथी ज्ञानके॰ आत्मज्ञाननुं करमके॰करवुं प्रयुंजवुं तेनुंफलतेस्वरूपप्राप्तिरूप तेनेचेतनतावंतचेतनकहियें एटलेलक्षणसहितचेतनकहियें केमकेसिद्धांतोमां स्वरूपप्राप्तिथयी तेनेलक्षणसहितचेतनकछुंछे अनेबीजातोकथनमात्रचेतनजाणवा माटेअहोभव्यो तेहके॰ तेसुद्धात्मरूपने

गनी त्रिजंगी तेअसंजवसंजवरूप माटेअचरिजकारीछे जेमकरुणातिहांज तीक्ष्णता वलीतिहांज उदाशीनता एकेमसंजवे माटे आश्चर्यकारीकही एत्रिजंगीओनीफलप्रा प्तिते ज्ञानानंदनुं नरावरूपजेमोक्षपदतेने लेतीके० ग्रहणकरतीछे एटलेत्रिजंगीओ ना जंगतरंगते केवलज्ञान केवलदर्शनात्मकछे अथवाएकेकजंगते आनंदघनपदथी व्यापिने रह्युंछे माटे आनंदघन पदलेतीथकीकही ॥६॥इतिशीतलजिनस्तवनंसंपूर्ण॥

## ॥ अथश्रीश्रेयांसजिनस्तवनप्रारंजः ॥

॥ रागगोडीअहोमतवालेसाजनाएदेशी ॥

श्रीश्रेयांसजिनअंतरजामी ॥ आतमरामीनामीरे ॥ अध्या
तममतपूरणपामी ॥ सहजमुगतिगतिगामीरे ॥ श्रीश्रे० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ श्रीश्रेयांसजिनने साक्षीजूतकरीनेकहेछे हेसुमति केवलज्ञानदर्शनसंबंधी ल क्ष्मीसहित श्रेयांसपरमेश्वर तेआपणा अंतरके० गुह्यनीसर्ववातना जामीके० जाणनारछे एसर्वनोअंतरजामीमाटेज एनोआत्मारामएवोनामछे जेणे स्वरूपसंबंधी मतिके० बुद्धिते पूरणके० अखंडित जेपरमेश्वरेंपामि तेमाटे अध्यात्ममतिनेपू रणपामी तेथीसहजनिप्रयासेंमुक्तिगतिनागामीके० जवावालाछे ॥ १ ॥

सयलसंसारीइंद्रियरामी ॥ मुनीगुणआतमरामीरे ॥ मुख्य
पणेजेआतमरामी ॥ तेकेवलनिःकामीरे ॥ श्रीश्रे० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ सर्वसंसारीजीवमात्र तेतोइंद्रियोनासुखजे शब्दरूपरसगंधस्पर्शतेमां तदाका रीपणेप्रवृत्तिरह्याछे माटेइंद्रीयआरामीछे अनेएजसंसारमां सिद्धांतोक्तियें जेमुनीराजछे तेआत्मगुणज्ञानादिकमां रमिरह्याछे स्वरूपनेजजीरह्याछे तोमुख्यपणेतेनिश्चेनयजे गुणगुणीनेअजेदें आत्मस्वरूपमांतदाकार तद्रूपपणेप्रवृत्तिरह्या एवाजेमुनीराजतेनेतो निःकेवल एकआत्मस्वरूपविना अन्यअजिलाषमात्रनथीरह्युं एवानिष्कामीछे ॥ २ ॥

निजस्वरूपजेकिरियासाधे ॥ तेहअध्यातमलहियेंरे ॥ जेकिरि
याकरिचउगतिसाधे ॥ तेनअध्यातमकहियेंरे ॥ श्रीश्रे० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हेसुमतिजेप्राणी पोताना आत्मस्वरूपें रमतां प्रतिक्रमणादिक पापनि: वर्त्तनक्रियामात्रनेसाधे तेप्राणी अध्यात्मशब्दें आत्माने अधिअंतर्वर्त्तीरह्युं एवो स्वस्वरूपअविछेदकारूप आत्मस्वरूप ते लहियेंके० पामियें एटलेतेनेतो अध्यात्म कहियें पणजेप्राणी निजस्वरूपजाणवें क्रियाकरीचारगतिनेसिद्धकरे एटलेसुजनकरणि

रानेत्रोथीआजदीठा एटलेदर्शनकर्युं माटेआजनोदीवश वेलाघडीधन्यछे तेविमलजिनलादेखवारूप कारणथी मारामनोवांछितकार्यसिद्धथया ॥ १ ॥

चरणकमलकमलावसेरे ॥ निरमलथिरपददेख ॥ समल
अथिरपदपरिहरीरे ॥ पंकजपामरपेख ॥ वि०॥दी० ॥२॥

अर्थ ॥ एगाथानुंअर्थअन्वयकरिलखियेंछैयें हेसुमति केमलाजेलक्ष्मीतेणेपोतानेवसवानुं पदके० स्थानकजेकमल तेकादवमांउपजवाथी समलके० मलसहितजाणुं फरिएकबेदीवशमां फूलीनेपांखडीपांखडीखरिजाय तेवारें तेस्थानकमूकीने फरिबीजाकमलनुं स्थानकग्रहणकरवुंपडे तेथीतेकमलरूपस्थानकने फरिअथिरपणेपणजाणुं तेअथिरजाणीने लक्ष्मीजीयें पोतानेवसवानुंकमल तेने पामरपेखके० रांकसमानगणीने परिहरिके० तेकमलमूकीने निरमलके० कर्मरूपमेलरहित एवोविमलनाथपरमेश्वरना चरणकमलके० पगरूपकमल तद्रूप थिरपददेखके० स्थिरस्थानकदेखीने तेमांवासकर्युं एटलेत्रिजगलक्ष्मीते परमेश्वरनाचरणकमलोमांवसेछे मुग्धप्राणीलक्ष्मीनुंवास अन्यस्थानकोमांधारिरह्याछे तेजूठाछेमाटेविमलजिनना चरणकमलोनेसेवोजेथीसमस्तलक्ष्मीसंपजे केमकेनिर्वाणपदादिक संपदानोवासो एनाचरणमांछे॥२॥

मुझमनतुझपदपंकजेंरे ॥ लीणोगुणमकरंद ॥ रंक
गणेमंदिरधरारे ॥ इंदचंदनागिंद ॥वि०॥ दी०॥३॥

अर्थ ॥ हेपरमेश्वर मकरंदनीपरें एटले कमलनापानउपर जेम भ्रमराकमलमांतदाकारथाय तेममारोमनरूपभ्रमरते अनंताज्ञानादिकगुणछेजेमां एवातमारापदपंकजमां लीणोके० तदाकारथयीगयुंछे वसीभूतथयीगयुंछे तेहर्षेकरीनेएवोउन्मतथयोछे के मंदिरके० मरुपर्वतनीपृथ्वीसुवर्णमयी अथवानंदनवनादिकनी धराके० पृथ्वीतेने रंकसमानगणेछे दरिद्रीनीगणतिमांगणेछे एटलेतमाराचरणकमलनीभक्तिआगल ए शीवस्तुछे एमजमारोमनजाणेछे तेमजदेवतानापतिइंद्रने चंद्रमाने तथानागिंद्रते नागकुमारवासीइंद्र इत्यादिकसर्वेनेरांकतुल्यगणेछेएवोमारोमनमोटुंथयीगयुंछे॰

साहिबसमरथतुंधणीरे ॥ पाम्योपरमउदार ॥ मनवि
सरामीवालहोरे ॥ आतमचोआधार॥वि०॥ दी०॥ ४ ॥

अर्थ ॥ अहोसमर्थसाहेब हेपरमेश्वर ताराजेवोधणीहुंपाम्यो तोहवेमाराआठेकर्मरूपशत्रुतेपरिवारसहित मुझनेगंजीशकसेनही तेमजतुंतुष्टमानथाय तोपोतानुंज

राज जेवस्तुनामसिद्धांतोनेविषे गतके० प्राप्तथयो जेतत्वशब्देंअध्यात्मतत्व तेनें प्र काशेके० प्रगटकरे एटलेजेरीतेंसिद्धांतोमां अध्यात्मतत्वनाष्युंछे तेमप्रकाशे एवाको णहोय जेआनंदशब्देंअनंतकेवलज्ञानी तेश्रोनोजेसप्तनयाश्रितमत तेनेजिनमतकहि यें तेजमतनेप्रकाशे ॥ ६ ॥ इतिश्रीश्रेयांसजिनस्तवनंसंपूर्ण ॥

॥ अथवासुपुज्यजिनस्तवनलिख्यते ॥

॥ रागगोडीतथापरजीउत्तूंगीयागिरिसिखरसोहेएदेशी ॥

वासुपूज्यजिनत्रिभुवनस्वामी॥घननामीपरनामीरे॥निराका
रसाकारसचेतन ॥ करमकरमफलकामीरे ॥ वासु० ॥१॥

अर्थ ॥ अहोभव्यो वासुप्रज्यजिन तेत्रणभुवनना पूज्यपणामाटेस्वामिछे वलीघ ननामीके० घणाछेनामजेना एटलेजे परमात्मानानाम तेपरिणामेजपरिणमिरह्याछे हवे एकवहिरात्मा बीजाअंतरआत्मा एरीतें संसारीजीवोनाबेभेदछे तेमां अंतरात्मा नुं एकनिराकार तेसामानोपयोग बीजोसाकारतें विशेषोपयोगएवाउपयोगलक्षणेस के० सहिततें चेतनकहियें तेकरमकरमफलकामीके० सामान्यविशेषसुभासुभोपयोगें प्रवृत्ततो चेतन कर्मजेज्ञानावरणादिक तेनुं कामीके०अभिलाषी तेमांसुभोपयोगेंप्रव र्त्ततोचेतन सुभपुण्यप्रकृतिनो कामीके० अभिलाषी असुभोपयोगेंप्रवृत्ततोचेतन अ शुभपापप्रकृतिनोकामी एम सुभासुभोपयोगेंकीधाजे सुभासुभकर्म तेनासुभासुभफल नो कामीके० अभिलाषी तेचेतनजाणवो १ ॥

निराकारअभेदसंग्राहक ॥ भेदग्राहकसाकारोरे ॥ दर्शन
ज्ञानदुभेदचेतना ॥ वस्तुग्रहणव्यापारोरे ॥ वासु० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवेनिराकारनोलक्षण ओलखावेछे जेभेदरहितनोसंग्रहीक तेनिराकार द र्शनोपयोगीपणुं अनेजे भेदके० भिन्नभिन्नस्वरूपनुंग्राहक तेसाकारज्ञानोपयोगीपणुं एनिराकारसाकारबेउपयोगनेभेदें चेतनापणबेभेदेंथयी एरीतें सामान्यविशेषबेउप योगें जडथीआत्मतत्वनेस्वरूपेंग्रहवुं भिन्नके० जूदोकरीजेवुं तेछे व्यापारके० प्रवृत्त नजेवुं एचेतनावंतअंतरात्मानोलक्षणकह्युं ॥ २ ॥

कर्तापरिणामिपरिणामो ॥ कर्मजेजीवेंकरियेंरे ॥ एकअने
करूपनयवादें ॥ नियतेंनरअनुसरियेंरे ॥ वासु० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ कर्मनुंकर्त्तापणुंतेपरिणामिके० व्यापीने परिणामोके० परिणमेछे एटलेक

अर्थ ॥ हवेसुमतिवंतआनंदघन विमलपरमेश्वरथी आधीनवृतियें वीनतिकरेछे केहेजिनदेव अहोसामान्यकेवलीओनापुजनीक हुंलाजानंदनामा तमारोअनुचरसेवक तेनीएकअरजते अवधारोके० मानोतो माराउपरसंपूर्णकृपानजरकरीने मुजने देवावांछोतो अन्यजेपांचअनुत्तर वासीप्रमुख देवतानासुखनुं हुंअभिलाषीनथी पणनिजस्वरूपथीउपनुंजेआनंदनोजराव तेपदनीकरनारी एवीसेवा दीजीयेंके० आपो अथवाहेजिनदेव बीजातोघणानी वीनतिअवधारोछो परंतुएकअरजमारीपण अवधारोजेमाराउपरकृपाकरीने आनंदघनपदनीसेवाआपो अथवाहेजिनदेव मुजआनंदघनउपरकृपाकरीनेतमारापदकमलनीसेवाआपो ॥ ७ ॥ इतिविमलजिनस्तवनसंपूर्ण ॥

॥ अथश्रीअनंतजिनस्तवनलिख्यते ॥

॥ रागरामगिरिकडखानादेशीनीढाल प्रसिद्धछे ॥

धारतरवारनीसोहेलीदोहेली ॥ चउदमांजिनतणी
चरणसेवा ॥ धारपरनाचतादेखबाजीगरा ॥ सेव
नाधारपररहेनदेवा ॥ धा० ॥ १ ॥ एआंकणीछे

अर्थ ॥ आनंदघन आपंचकमालामां जैनदर्शनीओनी जैनदर्शनथीविरुद्ध आचरणादेखीने दुःखी तेमजअनंतपरमेश्वरसेवितचारित्रनीइकरता दुसमकालेंदेखीने महादुःखीछतो सुमतिनेकहेछे के अत्यंततीक्ष्णछेधाराजेनी एवीतरवारतेनीधारउपर उगाडेपगेंचालवुं तेदोहेलुंछे परंतुविचारीजोतांते सोहेलीछे पण चउदमांपरमेश्वरनी चरणकें० चारित्र तेनुंसेववुंनामप्रवर्त्तना तेदोहेलीछे एटलेतरवारनीधारथी एचारित्रनीधारकठणछे केमके बाजीनोकरवावालो तेचोगठामांचारेदिशायें चारतरवारबांधीने तेतरवारोनीधारोविचें गुलाटाखातोखातो निकलीजाय एवाबाजीगरपणनाचतादीठाछे माटेतरवारनीधाराउपरनाचवुंसुगमछे परंतु चारित्रनाप्रवर्त्तननीजेआसेवनारूपधारा तेउपरें तोमहाशक्तिनाधारक एवादेवतापणनरहिशके केमकेदेवतानाभवमांव्रतउदयथतुंजअसंभवछे तोचारित्रप्रवर्त्तनकिहांथीहोय तेथीतरवारनीधारातेसुगमछे अनेचारित्रनासेवननीधाराविषमजाणवी ॥ १ ॥

एककहेसेवियेंविविधकिरियाकरी ॥ फलअने
कांतलोचनदेखे ॥ फलअनेकांतकिरियाकरीबा
पडा ॥ रडवडेचारगतिमांहेलेखे ॥ धा० ॥ २ ॥

मनावीलेजो अहोरात्रतेहथीज हेतराखजो स्वरूपमांजप्रवर्त्तजो एटलेस्वरूपचिंतवन विना अन्यचिंतवन कोइमात्रकरसोमां असिद्धछेमाटे ॥ ५ ॥

आतमज्ञानीश्रमणकहावे ॥ बीजातोद्रव्यलिंगीरे ॥ वस्तुग
तेजेवस्तुप्रकासे ॥ आनंदघनमतिसंगीरे ॥ वासु० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ माटेजेअंतरआत्मावंतते साधुनेकहियें केमके ते शुद्ध आत्मस्वरूपनाग्याताछे तोजेनेआत्मस्वरूप प्रत्यक्षथयीरह्युंछे तेथीजते श्रमणके० साधुकेवायछे नाणेणयमुणीहोइइतिवचनात् अनेबीजाजेस्वरूपज्ञानथीरहितछेतेतो मात्रउघामुहपतिनाधारकद्रव्यलिंगीछे पणजावलिंगीपणुंतो स्वरूपग्यानमांव्यापीरह्युंछे अनेउघामुहपतिमांद्रव्यलिंगीपणुंव्यापिरह्युंछे माटेजे वस्तुगतशब्दें आत्मवस्तुजेवोछे तेरीतेंज आत्मवस्तुतत्वनेप्रकासे प्रगटकरे. एटलेआत्माथीबाहिरस्वरूपग्याननथी पणआत्मामांहेजआत्मस्वरूपज्ञानकहे ते आनंदघनमतिसंगीके० चित्आनंदनुंसमूह तेनीमतिजेसुमति तेनासंगीएटलेसहचारीहोय ॥ ६ ॥ इतिश्रीवासुपुज्यजिनस्तवनसमाप्तः॥

## ॥ अथश्रीविमलजिनस्तवनप्रारभ्यते ॥

॥ रागमल्हारइमरआंबाआंबलीरे ॥ इमरदाडिमड्राखएदेशी ॥

दुखदोहगदूरेंटल्यारे ॥ सुखसंपदसुंभेट ॥ धींगधणीमाथे
कियारे॥ कुणगंजेनरखेट॥ विमलजिन ॥ दीठलोयणआ
ज ॥ मारासिद्धावंछितकाज॥ विमलजिन ॥ दीठ०॥ १ ॥

अर्थ ॥ हेसुमति विमलपरमेश्वरनादेखवाथी चारगतिसंबंधी दुःख अनेअनादिकालनाअग्यानसंबंधी दौर्जाग्य तेदूरेंटल्या वेगलाथया अनेनेत्रोनाजोवाथी हर्षनिर्भरगात्रें जेआत्मानेउल्लासथयुंतद्रूपसुखउपनुं तेसुखथीप्रगटी जेसमदमखम विचक्षणरुची एकतमारीस्वरूपानुंजायी अनुजव संबंधीनीप्रीत तेथी निजस्वरूपसंपदाजे रत्नत्रयरूपतेथी भेटके० मिलापथयुं तोहेसुमति जेपरमेश्वरना देखवाथी दुखःदौर्जाग्यदूरगया अनेसुखसंपदाथीमिलापथयुं एटलाकार्यतो मात्रएकदेखवाथीजथया तोएवा धींगके० समर्थवानने माथेंधणीकस्याछता एटले बलवानधणीनासेवकने खेटनरके० खेटानाकरनार जेखेटोखायनेमारवावाला एटले रात्रदिवशकांइगणे नहीपण तेनाइलाजमांजप्रवृत्तिरह्याछे एवानरशब्देंपुरुषत्वधर्मवंतजे मोहादिक कषाय तेमांथीमुजनेकोणगंजीशके एटलेकोइगंजवानेसमर्थनथी एवाविमलपरमेश्वरने मेंमा

अर्थ ॥ जेमतवादिहोय तेअपेक्षासहितवचनीथायजनही एकांतवादी निरपे क्षीएटले अपेक्षारहितवचनीजथाय तोअपेक्षारहितवचने जोअत्यंतकठणचारित्र मां प्रवर्त्तनहोय तोपणतेव्यवहार जूठोके० आज्ञाथीविरुद्धजाणवो तोहेजव्यो वांछा येंसहित तेसापेक्षकहियें तेसापेक्षवचने जेमनिश्चेसंबंधीवचन व्यवहारनीवांछाराखे तेमज्ञानक्रियासहित उत्सर्गेअपवाद सापेक्षवचने जे व्यवहारके० चारित्रनुंप्रव र्त्तन तेसिद्धांतानुंजायीव्यवहारछे तेचारित्रआज्ञाथी अविरुध माटेसाचोकह्यो तो गयोछेवांछाजेवचनथी तेनेनिरपेक्षवचनकहियें तेवाएकांतवादिओनुंचारित्रते संसार फलनुंदेवावालोछे माटेते एकांतवादीओनावचन स्वरूपाभिलाषीओने सांभलवायोग्य नथी कदाचित्सांभल्यो तो तेवचनआदरवायोग्यनथी अनेजोआदर्योतो तेनाउपररा चवुंनही एमनिरपेक्षिकवचन जैनमतथीविरुद्धजछे तेसांभलीआदरीने कांराचोछो ए टलेतेमनाथी रागराखोछो तेनहिजराखो ॥ दोहा ॥ भाषेनिरपेक्षकवचन ॥ क्रिया देखावेक्रूर ॥ वाकोतपसंयमसरव ॥ कर्योकरायोधूर ॥१॥ माटे जेएकांतक्रियापक्षी एकांतदयापक्षी एकांतपूजापक्षी एकांतभक्तिपक्षी एकांतगुरुपक्षी जेमगुरुगुरुजपना ओरसबसुपना इत्यादिकोनेवचनेजेप्रवर्त्तसे तेचारगतिमांभटकसे ॥ ४ ॥

देवगुरुधर्मनीशुद्धकहोकेमरहे ॥ केमरहेशुद्ध
श्रद्धानआणो ॥ शुद्धश्रद्धानविणसर्वकिरिया
करी ॥ छारपरलीपणोतेहजाणो ॥ धा०॥५॥

अर्थ ॥ अहोभव्योते एकांतवादिओनावचनथी शुद्धदेव शुद्धगुरु शुद्धधर्म एत्रण नीपरिक्षाकेमरहिशके अर्थात्नजरहिशके तोशुद्धदेवगुरुधर्मनोउलखाणनेभावें साचादेवगुरुउपरश्रद्धाजेप्रतित तेपणकेमरहे केमकेसाचीवस्तुनीउलखाणविना सा चीप्रतितनउपजे एरीतें आणोके० अवधारणकरो अनेशुद्धप्रतितविना सर्वक्रियाउं करवुं तेकेवुंछे जेम छारके० राख अथवाछारतेखात्रनीपृथ्वी तेनाउपरछाणप्रमुखर्हु लीपणुंकरवो तेनीपेरेनिर्थकजाणवुं॥ ५ ॥

पापनहीकोइउत्सूत्रभाषणजिस्यो ॥ धर्मनहीकोइ
जगसूत्रसरिषो ॥ सूत्रअनुसारजेभविकिकिरिया
करे ॥ तेहनोशुद्धचारित्रपरिखो ॥ धा० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ माटेजेनिरपेक्षकवचनते उत्सूत्रभाषीपणोछे तोतेउत्सूत्रथीविरुद्धभाषण करवुं तेसरखुंजगतमांबीजोकोइपापनथी उत्सूत्रभाषीमहापापीकह्योछे एपापसर्वपा

पदआपे माटेपरमउदार एवोधणीतुंछो ते हुंपाम्यो फरितुमनेमाथेधारतांज मुजनेथिर ताआविगयी माटेमननोविश्रामि एवोतुंधणीहुंपाम्यो वलीमिथ्यात्वमतेमजिन एवोमा रोआत्मा तेनेस्वरूपप्राप्तिनुंआधार आश्रयतेतुंछो केमकेजिवारेहुंमाराआत्मानुंरूपपा मिस ते तारेजआसरेपामिस माटेमारीआत्मानुंतुंआधारछो ॥ ४ ॥

दरिशणदीठेजिनतणोरे ॥ संशयनरहेवेध ॥ दिनकरकर
नरपसरंतारे ॥ अंधकारप्रतिखेध ॥ वि० ॥ दी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ तेथीहेसुमति एवाविमलपरमेश्वरनेमें लोचनेकरीआजदीठा ते परमेश्वरनुं एवोप्रनावछे जेएनुंदर्शनदेखवाथी जेफलथायतेसांनल एनोनावछुंछतायें दर्शन थतांज जेनीमति एकाग्रेएनादर्शनमांछेरी तेनेस्वस्वरूपनी मननेविषे संसयजेभ्रांतिते नरहे तेमज एप्रनुनोनेमारोस्वरूपएकमाटे तेमांविरोधनथी एवुंमननुंनिरदोषपणुंथयी जाय माटे वेधनरहे तेनोदृष्टांतकहेछे जे दिनकरके० सूर्यतेना करके० किरणनो न रके० समूह तेजगतमांपसारोकरताछतां अंधकारनुंप्रतिषेधके० निषेधथयीजाय एट लेसूर्योदयें अंधकारजाय तेमजतारोदर्शनथतांज संसय तथावेधमात्ररहेजनही॥५॥

अमीयनरीमूरतिरचीरे ॥ उपमनघटेकोय ॥ शांतसुधार
सजीलतीरे ॥ निरषिततृपतिनहोय ॥ वि० ॥ दी० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ परमेश्वरनीमूर्त्ति रचनानी अधिक्यतानोवर्णन एकमुखेंकेटलोकरीशकुं परं तु थोडामांघणुंकहिवतावुंछुं जगतमांअमृतसमान प्रसंसाकरवायोग्य बीजोकोइपदार्थ नथी तेनिःकेवलअमृतथीनरीने जेमकोइरचे तेवीजतारीमूर्त्तिसहजे रचाणीछे एमू र्त्तिनेजगतमां प्रत्यक्षप्रमाणेएटलीउपमांओमांथी कोइअव्याप्ति अतिव्याप्ति दूषणस हित प्रत्यक्षप्रमाणे अथवा उपमानप्रमाणे पणकोइउपमानुंसंनवजनथी इहांजेमूर्त्ति ने अमीयनरीकहि तेतोवचनगोचरकरवामाटेकही पणएमूर्त्ति रागद्वेषनीपरिणतिना क्षयथकी सहजआत्मस्वनावें प्रगटथोजे शांतरूपअमृतरसतेमांज जीलीरहिछे जा णियेंमूर्त्तिउपरशांतरसवरसीरह्युंछे तेथीउपमानोअसंनवछे केमके अमृतकीएकबुंदसें अजरहोतसबअंग तोएमूर्त्तितेसंपूर्णशांतरसस्वरूपथीनरी जन्ममरणरहितमाटे शी उपमासंनवे तेमाटेनिरषीनिरखीने मारीचक्षु तथामारेदर्शननीइछा तेमजमाराहृद यनेत्रथीस्मरण एमांथीएकनेपणतृप्तिनहोय एटलेअनइछावृत्तिनथाय ॥ ५ ॥

एकअरजसेवकतणीरे ॥ अवधारोजिनदेव ॥ कृपा
करीमुजदीजीयेरे ॥ आनंदघनपदसेव॥वि० ॥दी०॥७॥

धरमधरमकरतोजगसहुफिरे॥धरमनजाणेहोमर्म॥जि०॥धर
मजिनेसरचरणग्रह्यापछी॥कोइनबांधेहोकर्म॥जि०॥धर्म०॥२॥

अर्थ ॥ हेशुद्धचेतनाए अमारुंविस्नुधर्म अमारुंशिवधर्म अमारुंशन्यासधर्म अमारुंब्रह्मचर्यधर्म अमारुंग्रहस्थाश्रमधर्म यअमारुं तापसधर्म कुलधर्मादिधर्मइत्यादिक धर्मधर्मकरता एजगतमात्रना सर्वप्राणीते निर्थकभ्रमणकरीरह्याछे परंतुतेसर्वप्राणी धर्मशब्दनुंजे मर्मके० रहस्यतेनेजाणतानथी एटलेआत्मस्वभावरूपधर्म जेणेकरीविभाव परिणतिथीछूटवुं अनेस्वभावपरिणतिथी परिणमवुं तद्रूपधर्मनुं रहस्यजाण्याविना धर्मधर्मपोकारेछे तेवाप्राणीधर्मनुं लक्षणजाणतानथी तोहेशुद्धचेतना धर्मपरमेश्वरना चरणकमलोमां धर्मनुंमर्म समाहीरह्युंछे केमके जेप्राणीयेंबहिरात्मापणुंमूकी अंतरआत्मावंतछता धर्मपरमेश्वरना चरणकमलमां पोतानास्वरूपप्रवर्त्तियें मननेथाप्युं तोतेप्राणीआश्रवद्वारें कोइपणनवोकर्म बंधमांनपाडे ॥ २ ॥

प्रवचनअंजनजोसदगुरुकरे॥ देखेपरमनिधान॥ जि०॥हृद
यनयणनिहालेजगधणी॥महिमामेरुसमान॥जि०॥धर्म०॥३॥

अर्थ ॥ तेधर्मनाथनुंस्वरूप शीरीतेंउलखाय तेकहेछे हेसुमति शुद्धउपदेशकगुरु जोकृपाकरीने हृदयरूपचक्षुनेविषे सिद्धांतरूपअंजनकरे तोतेथीअनादिकाल मिथ्यात्वरूपी हृदयनेत्रनुंरोग दूरजाय तिवारेंपोतानास्वरूपरूप निधानके० धनजेअनादिनुंअजाण्योगयो तेनेप्रत्यक्षकरे पछेतेहृदयरूपनेत्रेंकरीने त्रिजगतनास्वामिने निहालेके० देखे स्वस्वभावें पोतानास्वरूपने प्रगटजाणे जेप्राणीयेंपोताना स्वरूपनेउलख्यो तेजप्राणी हृदयनेत्रेंकरी परमेश्वरनुंस्वरूप उलखीशके तेप्राणीनो महिमाके० प्रभुता तेमेरुसमानमहोटोछे एटलेजगतमां मोटाइनीअवधिहती तेकहीबतावी पणतेनुं महिमातो निरुपमछे उपमाकोइनथी ॥ ३ ॥

दोडतदोडतदोडतदोडीओ॥जेतीमननीरेदोड ॥ जि० ॥ प्रेमप्रती
तविचारोढूकडी॥ गुरुगमलेजोरेजोड ॥ जि० ॥ ध० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेशुद्धचेतना आनंदघनप्रतेकहेछेके प्रवचनकारणविना परमनिधानदेखवानो बीजामतममत्तिओनो कहेलुंजेसिद्धांत तेकारणनथीसुं तिवारेआनंदघन शुद्धचेतनानेकहेछेके हुंतोनिजस्वरूपउलखवामाटे दोडीदोडीने याव्योमतमात्र हेरीहेरीनेदेख्या तेवाह्यदृष्टीयेंनही पण तेओनासंकल्पित वेदांतन्यायादिक सिद्धांतोमां जे

अर्थ ॥ एककोइकगणभेदीसमुदायनाधारक कहेजे विविधप्रकारेंतपस्यादिक नी किरियाके० आचरणआचरीने परमेश्वरनाचारित्रनीसेवनाकरियें केमकेचारित्रनुंमू लक्रियाछे जेमढुंढकादिककरेछे तेनीपरें परंतुतेप्रवचनरहस्यनाअजाणछे केमके न थीजेमांएकांतफल तेनेअनेकांतफलकहियें एटलेअनेकक्रियाओनाअनेकफलछे जेजे क्रियाभिन्नभिन्न तेनुंफलपणभिन्नभिन्नछे उदयपणभिन्नभिन्न भोगपणभिन्नभिन्न जे मशालिभद्रसुखभोगव्याते संगमानेभवेंदाननुंफलते लोचनके० आखेनथीजोतासुं तो अनेकांतफलछेजेभां एवीअनेकक्रियाकरीने परमार्थेसुन्य तेवापडा निर्थकछतांआंधी नासेंटनीपरें चारगतिमां रडवडेके० परिभ्रमणकरे तेलखेके० न्यायेंरडवडे केमके अनेकांतफलें गतिनीसमृधिथाय अनेगतिसमृधीपणेभवभ्रमणटलेनही तेथीआत्मा नीशीसिद्धीथाय एवीएकांतक्रियाजकरवी तेतो आश्रवमांगणीछे ॥ २ ॥

गछनाभेदबहुनयणनिहालतां ॥ तत्वनीवातक
रतांनलाजे ॥ उदरभरणादिनिजकाजकरताथ
का ॥ मोहनभियाकलिकालराजे ॥ धा० ॥३॥

अर्थ ॥ इहांगछशब्देंसमुदायविशेष अथवा खरतर तपालोकादिगछो तेगछोनीमतो नाभेदग्रहणे प्रतिभेदनुंपणग्रहण तेथीमतमतांतरना बहुके० गणभेदप्रतिभेद ते नयणनिहालतांके० तात्विकदृष्टीयें हृदयरूपनेत्रेंविचारीजोतां तेनिर्लज्जआत्मतत्वनी वातोकरताछतां लाजतानथीसुं केमकेममत्व अनेतत्वनीवातने महोमांहेविसंवादछे जेमकोटरमांअग्नीछतां वृक्षनेनवपल्लवथवानुंविसंवाद तेममत्वीनेस्वरूपलक्षणनी वातकरतोदेखीने तत्वज्ञानीतेनेनिर्लज्जजाणे केमके गछभेदीओनेतो जेटलीधर्मकर णीप्रमुखनुंकरवुंतेपोतानापेटभरवानेअर्थें तथाआदिशब्दे क्रोधमानमायालोभ राग द्वेषकलह उन्नतादिककारणे सर्वकार्यनुंकरवुंछे तेमांसतपुरुषतो लाखमांएकहसे ते नीनानथीबाकोबीजातोसर्ववेशनाकरनारा जाणवा केमके आकलिकालजेडुसमकाल तेनुंअधुराज्यते बीजासंसारीओथीपण गछधारिओउपरें विशेषपणेप्रवृत्तिरह्यो छे माटेमोहनेनडथाकह्या तेनुंरहस्यार्थीएछे जेसंसारीजीवोमां मोहने कोइगले कोइ छातियें कोइकेडे कोइजंघाप्रमुखेनडयाछे अनेगछभेदीतोमाथासुधीनडीपोच्याछे॥३॥

वचननिरपेक्षव्यवहारजूठोकह्यो ॥ वचनसापे
क्षव्यवहारसाचो ॥ वचननिरपेक्षव्यवहारसं
सारफल ॥ सांभलीआदरीकांइराचो॥धा०॥४॥

जिहांथीनपामियें तेनेजहेरीरह्याछे, केमके जगतनास्वामीनी ज्ञानप्रकाशकज्योति अनेएआत्मानी स्वरूपप्राप्तिनीज्योति एबेनेअभेदपणुंछे पणजुओके विनाके० तेस्व रूपज्योतिनेअनावें आंधलापूठेंआंधला दोडयाजाय तेमज्ञानस्वरूपदृष्टीनेफूटवे अज्ञा नतिमिरनेपसरवे अज्ञानेअज्ञानीछेलायछे एटलेकेवावाला पणआंधलाने श्रोतापण आंधला एमजनिश्चेछे॥ ६ ॥

निरमलगुणमणिरोहणभूधरा ॥ मुनीजनमानसहंश ॥ जि०॥ध न्यतेनगरीधनवेलाघडी ॥ मातापिताकुलवंश॥जि०॥धर्म०॥७॥

अर्थ ॥ जेजगदीश्वरनीज्योतिविनाजगतमां अंधकारप्रवृत्तिरह्युंछे तेजगदीश्वरके वाछे महाउज्वल ज्ञानादिक अनंतगुणनो आरोहणके० स्थापननो उपमानकरते छते भूधराके० पर्वतोपमछे वलीमुनीराजोनो मानसके० मनतेनेविषे हंसतुल्य उज्व लताछेछे अथवामुनीराजोनामनज मानशरोवरनेविषे हंसछे एटलेमुनीनामनमां वशी रह्याछे एवापरमेश्वरें जेनगरीमांजन्मलीधुं तेनगरीसर्वनगरीओमां उत्कृष्टमाटेधन्य त थाजेवेलाजेवेघडी तेपणधन्य वलीजेमातानीकुक्षीनेविषे जन्मथयो तेकुक्षीनीधारक माता तेसर्वस्त्रीयोमांधन्य तथातेमजजेपीताने परमेश्वरजेवा पुत्रकेवाणा तेपीताने धन्य तथाजेकुलमांपरमेश्वरें जन्मलीधुंतेकुल तथावंशसर्वनेधन्यछे ॥ ७ ॥

मनमधुकरवरकरजोमीकहे ॥ पदकजनिकटनिवास॥जि०॥घन नामीआनंदघनसांजलो ॥एसेवकअरदाश॥जि०॥धर्म० ॥८॥

अर्थ ॥ तेमाटे वरके० प्रधानएवोमारोमनरूपभ्रमर तेपरमोल्लासवंतछतो हाथ जोडीनेवीनतिकरेछेके हेप्रभुमाराउपरकृपाकरीने तमाराचरणकमलोमां निकटके० न जीकढुकडोवासदीजीयें अहोघननामी एटलेघणाछेनामजेना एवाधर्मपरमेश्वर हेचिदा नंदनासमूह पदकजनिकटनिवास संबंधी सेवकनीअरदास आधीनवृत्तियें तेकृपाकरी नेसांजलो ॥ ८ ॥ इतिश्रीधर्मजिनस्तवनसंपूर्ण ॥

॥ अथश्रीशांतिजिनस्तवनप्रारंभ ॥

॥ रागमल्हारचतुरचोमासोपडिकमीएदेशी ॥

शांतिजिनएकमुजवीनती ॥ सुणोत्रिभुवनरायरे ॥ शांतिसरूप केमजाणियें ॥ कहोमनकिमपरखायरे॥शांति०॥१॥एआंकणी॥

अर्थ ॥ हवेआनंदघन शांतिपरमेश्वरथी शांतिस्वरूप स्वपक्ष परपक्षें निश्चंकरवा

रछे तेमजजगतमां सूत्रमांवचनहोयतेप्रमाणेज नाषणकरवुं तेसरिखो बीजोतपसं यमादिकमांपण धर्मकोइनथी माटे सूत्रअनुसारके० सूत्रनीमर्यादायें जेनव्यजीव त पसंयमादिकक्रियाकरे तेचारित्रिआनुं शुद्धचारित्र एटलेजेवोचउदमांपरमेश्वरेंचारि त्रसेव्यो तेवोजतेनुंपणचारित्र परिखोके० परिक्षाकरो जाणो ॥ ६ ॥

एहउपदेशनुंसारसंक्षेपथी ॥ जेनराचित्तमेंनित्य
ध्यावे ॥ तेनरादीव्यबहुकालसुखअनुनवी ॥ नि
यतआनंदघनराजपावे ॥ धा० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ एपूर्वोक्तउपदेशनुं सारके० रहस्यजेसूत्रानुंजायीचारित्रनुंप्रवर्त्तवुं तेसंक्षेप थकीकह्यो तेनेजेनव्यप्राणी पोतानाचित्तमांनिरंतरध्यावे एटलेआजनागछधारिओ थीशुद्धधर्मतत्वपुछयायकां हवआदीपणुंसीखावे एवामतवादीओनुंउपदेश नआदर वुं एवीवांछनाधारी सूत्रानुंसारेंप्रवर्त्तकमनुष्यते दीव्यके० निरुपमिअथवादेवतासं बंधी अथवादीव्यके० मनोहरमनुष्यसंबंधी घणापल्योपमसागरोपमकालसुधी सातावे दनीना विपाकोदयने अनुनवीके० नोगवीने नियतके० निश्चेसंदेहरहितपणे आनं दशब्दें परमानंद ते अतेंद्रीयआनंदनुंसमूह एटलेमोक्षस्थानकनुंराजपामे ॥ ७ ॥ इतिअनंतजिनस्तवनसंपूर्ण ॥

॥ अथश्रीधर्मजिनस्तवनलिख्यते ॥

॥ रागगोडीतारंगरसीयानीदेसीमां ॥

धरमजिनेसरगाउंरंगसुं ॥ नंगमपडसोहोप्रीत ॥ जिनेसर ॥ बीजो
मनमंदिरआणुनही ॥ एअमकुलवटरीत ॥ जिनेसर ॥ धर्म० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ आनंदघन शुद्धचेतनावंतछतो नावोल्लासें हर्षोत्कर्षी परंतुप्रीतनंगनानयें ससोकीथको शुद्धचेतनानेवतलावतोदी नवचने धर्मपरमेश्वरनी स्तवनाकरेछे धर्मपर मेश्वरनें निजस्वरूपप्राप्तिरूप रंगके० रागथी वचनगोचरस्तवनायेंस्तवुंछुं पणद्दष्टीरागा दिकेंनही पणहेशुद्धचेतना धर्मपरमेश्वरनीस्तवनारूप कार्यप्रारंन्यो तेअविछिन्नधारायें पारपामजो पणकोइविघ्नपडसोमां एधर्मजिनेश्वरविनाबीजा रागद्वेषें परिणम्यादेवो ने मारामनरूपमेहेलमां लावुंनही अर्थात्‌मारामनमां बीजारागादिदोषेसहित देवो नुंध्यानकरुंनही एटलेजेशुनआत्मिकधर्मेधर्मित जेआत्मातेवाआत्मामात्रनाकुलनी वटके० मर्यादाएजछे एजधर्मछे एजलक्षणछे जेबीतरागविना बीजानेनध्यावे ॥ १ ॥

रक एवोअनुनवसमूर्तेनिन्नतात्कालिकस्वरूप ज्ञानरूप अनुनवनाआधारछे एटले जेरात्रदीवश स्वरूपचिंतवनमांज प्रवर्त्तिरह्याछे तेवागुरुविना शांतिस्वरूपनपामे॥४॥

शुद्धआलंबनआदरे ॥ तजीअवरजंजालरे ॥ तामसीवृ
त्तिसविपरिहरी ॥ नजेसात्विकीसालरे ॥ शांति० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वलीगुरुकेहेवाछे आत्मानुनवेंकरी प्रगटथो जेआगमानुंजायी शुद्धस्व रूपसंबंधी निर्मलज्ञानथी सिद्धस्वरूपनुं अवलंबके० आधारतेने आदरे एटले स्वरूपमांहतो सिद्धादिकनुंध्यान अविलंबीरह्याछे ते अवरके० बीजाजेरागादि क्रो धादिमोहआर्त्तरौद्र इत्यादिक ध्यानसंबंधी विघ्नकारकजंजालोने तजीके०दूरकरीने स्व रूपनुंआलंबन करीरह्याछे तथातामसीके० क्रोधसंबंधनी वृत्तिआजीविकाते मकार चकारादिककहीने आहारप्रमुखलाववुं तेनेपरिहरयोछे अथवाक्रोधसंबधी हवग्राही पणे प्राणायामादिकनुं प्रवर्त्तनतजे एवी शालके०प्रधान ज्ञानादिकगुणथीउपनीजे सात्विकवृतितेंथी शत्रुमित्रनीसाथेंसमपरिणामेंवर्त्ते सर्वजीवउपर माहणबुद्धीधारे॥५

फलविसंवादजेमांनही ॥ शब्दतेअर्थसंबंधिरे ॥ शकल
नयवादव्यापिरह्यो ॥ तेशिवसाधनसंधिरे ॥ शांति० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ एवागुरुतेउत्सूत्रनाषिनजहोय जेवचननाषे तेमां विसंवादके०विरुद्धपणुं तोहोयजनही जेवचननोफलविरुद्धनजहोय वली विसंवादफलेंरहितजेवचननुं अर्थ के० रहस्यार्थछे तेवेज रहस्यार्थें तेवचनसंबंधितछे मिल्योछे फरीतेवचनमां नैगमादि सातेनयनुं वादके० कथनेकरी तेशब्दनुंअर्थ व्यापीरह्योछे अहोनव्यो एवोशांतरस नथुंजेसद्गुरु तेशिवशाधननाहेतुनी सिंधिमिलापकारकछे ॥ ६ ॥

विधिप्रतिषेधकरीआतमा ॥ पदारथअविरोधरे ॥ ग्रहणवि
धिमहाजनेपरिग्रह्यो ॥ इसोआगमेंबोधरे ॥ शांति०॥ ७ ॥

अर्थ ॥ एवागुरुनेमिलापें स्वरूपानिलाषीप्राणी स्वकार्यसाधे तेविधिकहेछे जेथकी आत्मस्वरूपनुं ग्रहणसुखेथाय एवोजे विधिके० आचरवायोग्यआचरण तेमजआ त्मद्रव्यने सुखेग्रहणकरवाने अविरोधिके० विरुधनकरे एवोजे प्रतिषेधविधिके० प रजडादिस्वरूपनुं निषेधविधि एटलेअनाचरणीयविधि तेविधिनेप्रतिखेधेंकरी आत्माहु किपदनाअर्थकार्यनोकारकथाय तेमाटेग्रहणकरवायोग्य विधिकर्त्तव्यकह्यो तेग्रहण करवायोग्यकार्य तो महाजनशब्दें महामुनीराजें समस्तपणेग्रहणकस्रो एवोपरमे

टलीमारामननीदोडहति तिहांसुधीदोड्यो परंतुस्वरूपप्राप्तिनथयी माटे विचारकरियें प्रयूंजनकरियें तो प्रेमनामस्वरूपाभिलाष तेनीप्रतितनिश्चें तेसर्वथीधर्मजिनेश्वरनीप्रीत ढुकडीके० अत्यंतनजीकछे वेगलीनथी एटलेआत्मामांहेजछे परंतुनजीकछतां दूरकेमथयीरहीछे एटलेपामियें नही तोनजीककेमजाणियें तेतो गुरुगमके० गुरुयेंबताव्योजेमार्ग तेजोडके० सद्दचारीकरीलेजो एटलेसूत्रमर्यादाथी गुरुजेमार्गबतावे तेमार्गेतोनिश्चेंथीनिजस्वरूपनी धर्मजिनेश्वरथीप्रीतढुकडीछे ॥ ४ ॥

एकपखीकेमप्रीतिवरेंपमे ॥ उन्नयमिल्याहुएसंधि ॥ जि० ॥
हुंरागीहुंमोहेंफंदिओ ॥ तुंनिरागीनिरबंध ॥ जि० ॥ध०॥ ५ ॥

अर्थ ॥ तेधर्मजिनेश्वरनीसाथें एकतोप्रीतनोअभिलाषीछे अनेबीजोप्रीततुं अभिलाषीनथी एटलेहुंतोप्रीततुं अभिलाषीहुं अनेप्रभुतोप्रीतना अभिलाषीनथी एरीतेंतोप्रथमप्रीतथायजनही कदाचित एकपखीप्रीतथयीतो वरेंपडेनही निभेनही एटलेविरुद्धस्वन्नावें प्रीतनथाय नेथायतोनिभेनही तेथीहुंस्वरूरहित अनेप्रभुस्वरूपसहिततेनीशीरीतेंप्रीतबने अनेकदाचितबनीतो वरेंकिमपडे माटे उन्नयके०वेहुसमानधर्मेमव्यां संधिके० मिलापहोय माटेहेजिनेश्वर हुंतुजथी सिंधिमिलापकरवावांछुंछुं परंतुमारामनथी मारापरिणामनो परिणमनविंचारीजोउं तोविषअमृतजेटलोफेरछे केमके हुंरागी तुंनिरागी हुंमोहफंदे फंदाणुके० बंधाणुछुं अनेतुंतोबंधनमात्ररहित माटेतारेमारे प्रकृतियेंमिलापनहि तोप्रीतकेमथाय दोहा ॥ प्रकृतिमिलेतेंमनमिले अनमिलतेनमिलात दूधदहिंतेंजमतहे कांजीतेंफटजात तेमहुंतथातुंसत्तायेंतोएकछैयेंजेमकांजीतथादही बेखटाशपणेएक परंतुदहीनाखटास तथाकांजीनाखटाशनी प्रकृतिभिन्न तेथीदहीनाखटासेंदूधजमे पणकांजीनाखटासें दूधफाटीजाय तेममारीसरागप्रकृति तारीनिरागप्रकृति तेथीप्रीतरूपदूधजमेनही एटलेहुंतोप्रीतनेजमावुं पणतारोवीतरागपणाथी प्रीतफाटवानुंधर्म तेथीएकपखीप्रीत वरेंपमेजनही ॥ ५ ॥

परमनिधानप्रगटमुखआगलें ॥ जगतउलंघीहोजाय ॥जि० ॥
ज्योतिविनाजुउजगदीसनी ॥ अंधोअंधपुलाय जि०॥ध० ॥६॥

अर्थ ॥ वलीहेशुद्धचेतना जगतनीविपरीत रीतबतावुं तेतोसांन्नल के पूर्वेंजाव्योजे महानिधान तेजपरमनिधान तेछतोहीयामांज गडयोपडयोछे परंतुछीप्योनथीप्रत्यक्षमुखआगलें हृदयकमलमांजछे पणवेगलुंनथी तोपण जगतनाप्राणीमात्र तेनेउलंघीजायछे केमकेजिहांथीपामियें तेस्थानक नथीजजोता अनेकष्टक्रियादिक

सारथी उदासीनवृतिजातिरही अने मोक्षपामवानीहर्षवृतितेपणजातिरही इहांमा रापदने हुंपामुं तेनोशोहर्ष तेजव्य जवके० संसाररूपसमुद्रमां शांतरसने नावसमा न मुणेके० जाणे अथवा जवजलनिधिनो शांतरशरूपनावायेंकरी मुणेके० पारपा मे एवोतुंजाणथाय. आगलीतथाआगाथाबेहुनुंअर्थसंबंधीतछे ॥ १० ॥

आपणोआतमनावजे ॥ एकचेतनाधाररे ॥ अवरसविसा
थसंयोगथी ॥ एहनिजपरिकरसाररे ॥ शांति० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ हेजव्यवली एवोजाणजे मारोआत्मा ज्ञानदर्शन स्वजाववंतछे तेएकअद्वि तीय स्वरूपमयीचेतनानेआधारें आश्रयकरी आत्मारह्योछे एटलेचेतनानेआधारेंआ त्माआधेयछे अनेएचेतनाविना अवरके० बीजो सर्वसाथजे पुजलसंबंधीशरीरपुण्य पापसुखदुःखादितेसंयोगजन्यछे अनेज्ञानादिकगुण समवायसंबंधेछे अनेरागद्वेषक्रोधा दिक बुद्धीइछादिक सर्वआरोपितधर्मछे पणतेआत्मस्वजावनथी एरीतेंपूर्वोक्ततथापु नःखंत्यादि शांतदांत्यादि समित्यादितेपोतानुंसारके० प्रधान परिवार जाण ॥ ११ ॥

प्रजुमुखथीएमसांजली ॥ कहेआतमरामरे ॥ ताहरेदरिश
णेनिस्तर्यो ॥ मुऊसिद्धासवीकामरे ॥ शांति० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ अहोजव्यो एपूर्वेकह्युंते जेरीतेंपरमेश्वरें पोतानामुखथीकह्युं तेजरीतेंमें सिद्धांतोक्तिथीसांजली तेएवीवाणीसांजलतांज मारोआत्मारांम अत्यंतउल्लासपाम्यो थकोकहेछे के अहोपरमेश्वर तुमारादर्शनथी एटलेतमाराजैनदर्शनथी निस्तारपाम्यो एटलेशांतरसनास्वरूपनुंपारपाम्यो माटेकारणेकार्योपचारात् तेथीशांतरसनुं स्वरूप जाणवारूप कारणथीमारास्वस्वरूपादिकसर्वकार्यनी सिद्धताथई ॥ १२ ॥

अहोअहोहुंमुऊनेकहुं ॥ नमोमुऊनमोमुऊरे ॥ अमितफ
लदानदातारनी ॥ जेहनीनेटथयीतुऊरे ॥ शांति० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ आनंदघनकहेछेके अहोजव्यो मेंपरमेश्वरथी शांतरसनोप्रश्नपुछ्युं अनेप रमेश्वरेंमुऊनेउत्तरआप्या तेथीहुंउत्कर्षहर्षवंतथयोथको माराआत्मानेकहुंछुं उपदे शुंछुंजे अहोइतिआश्चर्य एमआश्चर्य वंतोथयोथकोकहुंछुं जेमुऊनेनमस्कारकरो नम स्कारहोजो माराआत्माने हुंमाराआत्माने नमस्कारकरुंछुं इहांकोइपुछशेजे पोतानी आत्मानेज पोतेनमस्कारशावास्तेकह्युं तेनेउत्तरजे माराआत्माने अमितके० प्रमा णरहित दानदेवुं एटलेजेदाननोपारनपामियें एवादाननोदातारजे देवावालो एवोभी

कारणे वीनतिरूपप्रश्नकरेछे जेहेत्रणभुवननाराजा ते मारीविनतीकृपाकरीनेसांभलोश्रु होशांतिपरमेश्वरतुमें शांतरसेंपरिपूरितमाटे तमारोनामशांतिछे परंतुतेशांतरसनुं स्वरूप यथातथ्यपणे शीरीतेंजाणिशकियें तेथीकृपाकरीने मुजनेउपदेशो जेथकी मारा मनने शांतरसनी परखायके० परिक्षाथयीजाय तेरीतेंकहो ॥ १ ॥

धन्यतुंआतमजेहने ॥ एहवोप्रश्नअवकाशरे॥ धीरजमन
धरीसांभलो ॥ कहुंशांतिप्रतीभासरे ॥ शांति० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवेआनंदघन पोतानामनथी हर्षवंतथकोकहेछे जेहेमाराआत्मा तुंसर्वे आत्मामांत्रमांउत्कृष्ट माटेतुजनेधन्यछे केमकेमाराआत्माने शांतरसनास्वरूपनुंप्रश्न पुछवानो अवकासके० अवशर तेजधन्यनुंकारण एमशांतिप्रभुनेपुछवाथी जिमप्रभुयें पाछोउत्तरदीधो तेरीतेंभव्यजीवोने आनंदघनकहेछे केअहोभव्यो हुंशांतिस्वरूपकहुंते तमेमनमांधीरजधरी एटलेएकाग्रमननेराखी सांभलो जेरीतें शांतिजिनेश्वरें भाष्योतेनी प्रतिभासनामतेजरहस्यार्थेकहुंछुं पणस्वमतकल्पनायें कहेतोनथी॥ २ ॥

भावअविशुद्धसुविशुद्धजे ॥ कह्याजिनवरदेवरे ॥ तेतेमअ
तथ्यसद्दहे ॥ प्रथमएशांतिपदसेवरे ॥ शांति० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ षटद्रव्यनाशुद्धाशुद्धभाव जेरीतेंजिनवरदेवेंकह्याछे तेमांशुद्धभावनेशुद्धपणे तथाअशुद्धनेअशुद्धपणे अवितथके० निर्भ्रांतपणेशद्दहे ए प्रथमके० पेहेलोशांतिरसनोपदनामस्थानक तेअहोभव्यतुं सेवके० आदर एटलेशुद्धश्रद्धान आव्या विना आंगलसंपूर्ण शांतिपदनुंकथनकर्युं तेसंभवेजनही माटेप्रथमशुद्धश्रधानरूप शांतरसनुंस्थानकते हेआत्मातुं सेवके०आदर॥ ३ ॥

आगमधरगुरुसमकेति ॥ किरियासंवरसाररे ॥ संप्रदायी
अवचंकसदा ॥ सुचीअनुभवाधाररे ॥ शांति० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वलीपरमेश्वरभाषीतसिद्धांतोना धारकगुरु इहांकोइकहेजे नवपूरवशुद्धीतो अभव्यपणभणे तोआगमधारीगुरुनी सीअधिक्यता तेनेउत्तरजे शुद्धदेवगुरुधर्मनी प्रतितवंत एवासमकेतिगुरुथी शांतस्वरूपपामे तेगुरुकेवाहोय सारके० प्रधान आश्रवनिरोधीने संवरसंबंधनीक्रिया साधवामां प्रवर्तिरह्याछे वली मुग्धप्राणीओने भगवानी संप्रदायीके० परंपराजेनेनथी एटलेगुरुक्रमागतेंजेमां अन्योनेभगवानो आचरणप्रवर्त्तननथी माटेशुद्धसंप्रदायीछें वली सुचीके० पवित्रआत्मस्वरूपध्यानका

अर्थ॥ इहांकोइएमकहेसेजे मननोएवोस्वनावजहसे जे कोइस्थानकेंनजाय माटेप रमेश्वरकने पण नथीजातो एटले एनोफिरवानोस्वनाव नथी एवुंबोलनारने आनं दघनउत्तरआपेछे केहेनाइतेतोमारोजीवजाणेछे एतोजेमरात्रें तेमदीवसें जेमवस्ती मां तेमउजाडमां जेमआकाशमां तेमपातालमांजाय एरीतेंमनफरीरह्योछे पणएनीग तिकोइस्थानकें रोकेते रोकातिनथी तेथीएमननी अप्रतिहतगतिछे फरीन्रमणशीलीछे एनीचंचलतानी उपमानकरियें तेवोकोइजगतमां चंचलपदार्थनथी इहांकोइकेहेके जेफिरेतेवरेपणखरो माटे शब्दरूप रस गंध स्पर्श एउनोस्वादमनमां मिलतुंहसे ते नो दृष्टांत जेमकोइपुरुषनेसर्पेखाधो एवुंकोइयेंकह्युं तेनेकोइयेंपूछ्युंजे सापनामुखमां कांइग्रासआव्युं तिवारेतेणेकह्युं सापनामुखमांसुंआवे सापतुंमुखतो थोथुके० खाली जरह्युं मात्रसापेंखाधो एवुंनामथयुं पणसापनामुखमां ग्रासतोएककवलमात्र नथी आव्युं एओखाणो न्यायके० साचुंछे तेमज शब्दरूपादिकनुंस्वादमात्रतो पांचेंद्रीलइ गया अनेमननामुखमांतो काइपडयुंनहीतेथी थोथुके० नराणुंनही ॥ १ ॥

मुगतितणाअभिलाषीतपीया ॥ ज्ञाननेध्यानअभ्यासें ॥
वयरीडुंकांइएहवुंचिंते ॥ नाखेअलवेपासेंहो ॥कुं० ॥३॥

अर्थ ॥ माटेएमनते महादुष्टनिर्दयीछे केमकेजेएकमोक्षनाजअभिलाषी तपस्या नाकरनार तेमननेसाधवामाटे ग्यानध्याननेअभ्यासें एटलेआत्मस्वरूपजाणवामाटे ग्याननोअभ्यासकरिरह्याछे तथापोतानुंस्वरूपप्रगटकरवामाटेध्यानते तदाकारवृतियें स्वरूपचिंतवनानुं अभ्यासकरीरह्याछे एवामहामुनीओनेपण एमनरूपमहादुष्टशत्रु तेकोइएवीरीतनुंचिंतें एटलेएवोकोइघाटनुं विचारविचारे जे अलवेके० सहजेंनिप्रया सें एटलेकोइविशेषविचारणारूप उद्यमकर्याविनाज कर्म्मरूप पासके० जालमांना खीआपे जेमप्रश्नचंद्रराजऋषीने सातमीनरकना दलियाबंधावीदीधा तेमजएकआंख नापलकामां केवलज्ञानपणउपजावीदीधुं ॥ माटेजिहांसुधीमनगामनआवे तिहांसु धी कष्टक्रियासर्वेनिःफलजाणवी॥ ३ ॥

आगमआगमधरनेहाथें ॥ नावेकिणविधिआंकुं ॥ किहां
कणेजोहठकरीहटकुं ॥ तोव्यालतणीपरेंवांकुंहो॥कुं० ॥ ४॥

अर्थ ॥ इहांकोइकसेजे जिहांसुधी आगमनीप्रवृति जाणीनहोय तिहांसुधीमनउ साध्यछे तेनुंउत्तर जे आगमजो मननी स्थिरतानुंकारणहोय तोआगमनाधरनार आगमहाथमांजछे वलीतेमांमनदमनकरवुं तेनुंज अधिकार वांचीरह्याछे तेटाणेपण

भरजाषित सिद्धांतनेविषे बोधके० जाणपणोछे अथवा आगमेंके० सिद्धांतोथीबोध जाणजो एटले पूर्वोक्तगुरुनीसंगते स्वरूपप्राप्तिरूपफलथाय ॥ ७ ॥

दुष्टजनसंगतिपरिहरी ॥ जजेसुगुरुसंतानरे ॥ जोगसाम
र्थ्यचित्तजावजे ॥ धरेमुगतिनिदानरे ॥ शांति० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ वलीशांतरसाजिलाषिपुरुषते डुष्टके० क्षुद्रपुरुषजे मतममत्वनाग्राहक हठग्राहि तेनाकेवाथीभ्रष्टश्रद्धावानथाय माटेतेनीसंगतनकरे अनेरुडागुणनाधारकजेगुरु तेना संतानीआ एटलेपरंपरागते शीष्यशीष्यादिकोने जजेके० सेवे पछेजोगसामर्थ्य जे मनादिक त्रणयोग्यते स्ववसीजूतछते चित्तनेविषे जावके० आत्मस्वजाव अजेद अजेदादिकने जेप्राणी धरेके० धारीराखेतेप्राणीमुक्ति तेकर्म्ममुकीजवानुं निदानके० मूलकारणछे केमकेचित्तवृतिनुंरोधन तेजकर्ममोक्षनुंमूलकारणछे ॥ ८ ॥

मानअपमानचित्तसमगणे ॥ समगणेकनकपाखाणरे ॥
वंदकनिंदकसमगणे ॥ इशोहोयतुंजाणरे ॥ शांति० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ एवानिजात्मस्वजावमांप्रवृत्त्यी तेपुरुषोनाचित्तकेवाहोय तेनेकोइसत्कारशन्मानादिककरे तेमांहर्षउल्लाहनधरे कोइअनादरें अस्तकारकरे असन्मानादिकें अपमानकरे तोपणमनमांविषवादनधारे एरीतेंचित्तनी समवृतिहोवाथी लोजदशामं दपडिगयी तेथीतेना मुखआगलकोइसूवर्णमूके तेमजकोइपछरनीछोढी आगलआवी मूकेतोपणतेबेनेतुल्य सरिखामाने पणसुवर्णने अधिकनमाने अनेछोढानेहिननमाने वलीकोइके प्रसंसाकरीवंदनाकरी तेथीमनमांप्रश्नथाय तेमजकोइकें निदाअछताछताअवगुणकह्यातोतेनाउपर रोसआणेनही मनमांउत्सुक अनुत्सुक स्वजावनहोय हेनव्य एवोजाणके० प्रवीणतुंहोय ॥ ९ ॥

सर्वजगजंतुनेसमगणे ॥ गणेतृणमणिजावरे ॥ मुक्तिसंसा
रवेहुसमगणे ॥ मुणेजवजलनिधिनावरे ॥ शांति० ॥ १० ॥

अर्थ॥वलीत्रसथावरमात्रसमस्तजगतना जंतुके० जीवोने एकराजा एकरांक एकशत्रु एकमित्र एकस्वजन एकपरजन इत्यादिकने समतुल्यमाने तेमजतृण तथा मणीशब्दें सूर्यकांति चंद्रकांत्यादिकमणीने जावके० समजावेंगणे पणहिनाधिकपणेनगणे वली मुक्ति तथाचारगतिरूप संसारएवेहुने समतुल्यमाने एटलेअप्रमादिशातमां गुणठाणे प्रवर्त्तनेएकथनछे तेथीतिहांमनस्वस्थित वृतियेंछे हिनाधिकथीमनउठीगयुं माटेसं

शास्त्रवादेंसमजावे तोपणसमजेनही तोएमारी कुमतिस्त्रीनो भ्राता माटेसालोछे अ
ने आत्मा शुद्धोपयोगें प्रवृत्ते तेवारें सुमतिस्त्रीनुंभ्रातापण एहिजछे ॥ ६ ॥

मेंजाण्युंएलिंगनपुंसक ॥ सकलमरदनेठेले ॥ बीजीवातें
समरथछेनर ॥ एहनेकोइनजेलेहो ॥ कुं० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वलीअहोस्वामि मेंशास्त्र द्वारायें एमननेनपुंसकलिंगीछे एमनिश्चेंकर्युं प
रंतुप्रत्यक्षप्रमाणे विचारीजोयुंतो एमनसमस्तमरदोने तेले हठावीनाखें एटलेजोपुरुष
स्वधर्में सहीतहोयपण जो तेनोमनअन्यठेकाणें प्रवृत्तिरह्युंहोय तोछतोपुरुषस्त्रीनेसंयो
गें नपुंसकसमानथयीजाय केमकेएमहामरदरूपमनजो पुरुषनेसहायी नेलोनन
थ्योतो छतोमरदते नपुंसकप्रायेंथयीजाय तोएमन सर्वमरदोमांअग्रगामीछे माटेतप
करवामां कष्टक्रियासाधवामां सिंहनागादिकनेदमनकरवामां समुद्रादिकजलतरण
क्रियामां आकाशगमनमां भूतपीशाचादिक वसीकरणक्रियामां मनुष्यसमर्थछे परंतु
हेकुंथुपरमेश्वर एमनने एक नवपरिणतिपरिपाकी मुनिराजविना बीजोकोइपण जेले
के० जीलीशकेनही एटले एनीगतिनेरोकीशकेनही एकाग्रतायेंराखीशकेंनही माटे
मारुंमन कोइरीतेंतमारीसाथें तदाकारथातुंनथी ॥ ७ ॥

मनसाध्युंतेणेंसघलुंसाध्युं ॥ एहवातनहीखोटी ॥ एमकहे
साध्युंतेनवीमानुं ॥ एकहिवातछेमोटीहो ॥ कुं० ॥ ८ ॥

अर्थ॥माटेहेप्रभु चंचलतामिटावीने एकाग्रतायें जेपुरुषेंमनने साध्युंके०वसीभूतक
र्युं तेपुरुषें सर्वतपसंयमादिकार्य साध्या एटलेएकसाधे सर्वसाध्युं केमकेसाधननुं
अंत मननुंसाधवुंछे तेथीजेप्राणीयें मनवसकर्युं तेणेआत्मवक्षराज्युं मूलसिद्धकर्युं
एवातके० एकहाणीखोटीनथी निसंदेहसाचीछे पणकोइमाराजेवो महामूर्ख माया
वीछतो पोतानासुखथी एमकहेके मेंमारुंमनसाध्युं तेनाकह्यावचनप्रतें मानुंनही प्र
माणनकरुंकेमके मेंमनवशकर्युं एवातमोटीछे घणीलांबीछे पणछोटीनथी ॥ ८ ॥

मनडुंदुराराध्यतेंवसआण्युं ॥ तेआगमथीमतिआणुं ॥ आनं
दघनप्रभुमाहरुंआणो ॥ तोसाचुंकरीजाणुंहो ॥ कुं० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ माटेहेप्रभु दुःराराध्य जेदुःखेकरीसाधवामांआवे एवुंमनते तुंमेंवशकर्युं
तेमनवशकरवानीवात आगमके० सिद्धांतोथी मारीबुद्धीनेविषेआणुं एटलेतमेजेम
मनवशकर्युं तेबुद्धीमारेसिद्धांतोथीछे पणप्रत्यक्षनथी तोहेपरमानंदनासमूहएवा प्रभु

शांतिपरमेश्वरनी मुजनेजेटके० प्राप्तिथयी तेथी अहोअहो नमोनमोमुजने एमकह्युं परंतुएगाथानुंरहस्यार्थतो आनंदघने श्रीशांतिपरमेश्वरने शांतरसनुंप्रश्नकर्युं तेना हर्षथी एवचनछे ॥ १३ ॥

शांतिसरूपसंक्षेपथी ॥ कह्योनिजपररूपरे ॥ आगममां
हेंविस्तरघणो ॥ कह्योशांतिजिनभूपरे ॥ शांति० ॥१४॥

अर्थ ॥ आनंदघनकहेछे अहोभव्यो एस्तवनमां शांतरसनुंस्वरूपते निजरूपेंएटले पोतानोस्वरूप तथापरभव्यजीवोनोस्वरूपप्राप्तिकारणे यथातथ्यकथने संक्षेपथीसूत्रें करीकह्यो पणअहोभव्यो जोतमेविस्ताररुचीछो तो शांतिजिनराजें शांतरसनुंस्वरूप स्व भाषितसिद्धांतोनेविषे अत्यंतविस्तारपणे भाख्योछे तिहांथीअवधारणकरजो ॥१४॥

शांतिसरूपएमभावसे॥ धरीशुद्धप्रणिधानरे॥ आनंदघन
पदपामसे ॥ तेलेहेसेबहुमानरे ॥ शांति० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ माटेअहोभव्यो एमपूर्वोक्तरीतें रागद्वेषविषय कषायादिकेंरहित तेशुद्ध निर्मल अने प्रणिधानते मननीनिश्चलतावृति एकाग्रताधारीने जेप्राणीशांतरसनुंस्वरू पभावसे विचारसे तेप्राणी आनंदशब्देंपरमानंदनो समूह तेसंबंधी निर्वाणपदपामसे त्रणजगत्पूज्यपणानो बहुमानपामसे ॥ १५ ॥ इतिश्रीशांतिजिनस्तवनसमाप्तः ॥

॥ अथश्रीकुंथुजिनस्तवनप्रारंभः ॥

॥ रागगुर्जरीतथारामकलीअंबरदेहोमुरारीहमारोएदेशी ॥

कुंथुजिनमनडुंकिमहीनबाजेहो ॥ कुं० ॥ जिमजिमजत
नकरीनेराखूं ॥ तिमतिमअलगुंभाजेहो ॥ कुं० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हेकुंथुपरमेश्वर मारुंमनमहोटेकष्टेंकरी तुजथीबजाववावांछुं जोडवाचा हुं तोपण भावस्तवसंबंधी ध्यानादिकमां कोइप्रकारेंनबाजे नमिले एटलेअन्यस्था नकें भलिरह्युंछे पणतुजथीभ्राजतुंनथी हेपरमेश्वर जेमजेमहुंमारामनने प्रयत्नकरीघ णोजाबतोकरी राखवावांछुं एटलेप्राणायामादिकें रेचकपूरककुंभकें इत्यादिकउद्यमेंक रीराखूं एटलेहुंतोएमजाणुंजे एनेएकाग्रराखवानुंउ पायजेध्यानहतो तेजमेंकर्यो मा टे एकाग्रेंरेसे परंतु एमन तेमतेमतुजथीवेगलुं नासीजाय पणताराथीबाजेनही ॥१॥

रजनीवासरवसतीउजड ॥ गयणपायालेंजाय ॥ साप
खाएनेमुखडुंथोथु ॥ एहओखाणोन्यायहो ॥ कुं०॥ २ ॥

पनथीकह्युं रहस्यार्थंतेविरुध समयके० सिद्धांतनो निवासके० स्थानकछे एटले शु द्धात्मनाअनुनवथी कोरवांडीतेज परसमयजाणवुं ॥ २ ॥

तारानक्षत्रग्रहचंदनी॥ ज्योतिदिनेसमजाररे ॥ दर्शनज्ञा नचरणथकी ॥ शकतिनिजातमधाररे ॥ ध० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ फरिश्रानंदघनकहेछे अहोस्वामि शुद्धात्मानुनवमां अनेज्ञानदर्शनचारि त्रमां नेदछेकिंवाअनेदछे हवेपरमेश्वर दृष्टांतसहितउत्तरकहेछे जेम तारा नक्षत्र ग्र ह चंद्रमांनीज्योति ते दिनेसके० सूर्यनेविषे अंतर्नूतछे तेमज दर्शनशब्दें केवलदर्श ननीज्योति तथाकेवलज्ञाननीज्योति अने क्षायकचारित्रनीज्योति एत्रणेज्योति तेस र्वेपोतानाआत्मानी अनंतवीर्यरूपजेशक्ति सामर्थ्यता तेथकी धारके०अवधार एटले आत्मशक्तिनीज्योतिमां ज्ञानदर्शनचारित्रनीज्योति अंतर्नूतछे ॥ ३ ॥

नारीपीलोचीकणो ॥ कनकअनेकतरंगरे ॥ पर्याय दृष्टीनदीजीयें ॥ एकजकनकअनंगरे ॥ ध० ॥ ४॥

अर्थ ॥ फरीएजकथनउपर दृष्टांतकहेछे सूवर्णधातुने कोइअजाणथकोपूछे जेसा तधातुथी एकसूवर्णधातुने निन्नलक्षणे शीरीतेउलखाय तेवारेंकोइकबोल्योजे पारादि कसर्वेधातुथी वजनमांजारीहोयते सूवर्णधातुकहियें कोइबोल्योसर्वेधातुमां पीलासेउ त्कृष्ट कोइबोल्योसर्वेधातुमां अत्यंतसचिकण एमशोनानाअनेक तरंगके० पर्यायछे प रंतुपर्यायांतरें दृष्टीनआपियें अपेक्षानराखियेंतो पर्यायांतरसंबंधी जेनंगतेथीरहित एवोअनंग सूवर्णद्रव्यतेएकजछे ॥ ४ ॥

दरशणज्ञानचरणथकी ॥ अलखसरूपअनेकरे॥ निरवि कलपरसपीजियें ॥ शुद्धनिरंजनएकरे ॥ ध० ॥ ५ ॥ ॥

अर्थ ॥ तेमजकेवलदर्शनरूपपर्यायें पणएकअलखनोजस्वरूपछे अनेकेवलज्ञान रूप पर्यायेंजोइयें तोपणएकअलखनोज लक्षणछे वलीक्षायकचारित्ररूप पर्यायेंजो इयें तोपणएकअलखनोज लक्षणछे एमबीजापण अजर अमर अचल अकल अरु ज इत्यादिक अलखजेपरमेश्वर तेनाअनेकसरूपछे पण पर्यायांतरसंबंधी नेदकल्प नायेंकरीरहित द्रव्यार्थिकपणे अनेदवृतिचिंतवनरूप निरविकल्प रूप अमृतोपम रसनुंपानकरियें तोशुद्धनिर्मल कर्मअंजनरहित जेपरमेश्वर तेएकजछे जेमऋषना दिकथी महावीरपर्यंत सर्वेतीर्थंकर सत्तायेंनिन्न पणरूपेंअनिन्न ॥ ५ ॥

स्थिरतायी हेप्रभुताराचरणकमलोमां किणविधिके० कोइरीतेंनावे एटलेतमारा चरणकमलमां लाववाना जेटला यत्नकरुं तेटलासर्वप्रयास निःफलकरीआपे केमकेए आंकुंके० वांकुंछे शरलनथी वक्रछे विना रोक्योतोकदासारहिपणजाय परंतुरोंक्योतो रहेजनही एमकोइप्रकारें तमाराचरणोथीनबाजे एवुंजोयीनेहुं किहांकणेके० कोइस्थानकें एमननेहठकरीनेजो हटकुंके०हटकहुं तोजेमसर्पनुंगमन तेछेडकीधाविनाजवक्रछे तोछेडकरवापबिवक्रतायींतुंसुंकेवुं तेमएमननेपण हटक्युंनही तिहांसुधीतोजधुं अने जोहटक्यो खीजव्योतोतेवारे सर्पनीवक्रतानीपरेंवाकुंथयीने हेकुंथुपरमेश्वर मारुं मनतुजथीवाजतुंनथी एटलेमारामननी प्रकृतितुजथीमलतिनथी ॥ ४ ॥

जोठगकहुंतोठगतोनदेखुं ॥ साहुकारपणनाही ॥सर्वमांहेंने
सहुथीअलगुं ॥ एअचरिजमनमांहीहो ॥ कुं० ॥ ५ ॥

अर्थ॥अहोपरमेश्वरजो एमननेठगाइकरतोदेखूंतोठगकहुं पणएतोपाचेंइीनेप्रेरकछे माटेठगाइनाकारकतोइंद्रीछे पणएनेठगाइकरतांदेख्याविना ठगकेमकहुं तेमजएनी प्रेरकशक्तिनेअजावें इंद्रीठगीशक्तानथी पांचेंइीएनाप्रवृत्ताव्याविना प्रवर्त्तनकरीशक्तानथी एटलेइंद्रीयोने शब्दरूपादिकमां प्रवर्त्तावबानुं मूलकारणमनछे माटेसाहुकारपणनथी तेथीएमनते नारदजेवुंमहाठग जणायछे केमके सर्वशब्दें पांचेंइीयोमां एनोइंद्रीमलिरह्योछे एकीभूतथयीरह्योछे एनामिलापविना पांचेंइीओथीठगाइथायजनही वलीइंद्रियोशब्दरूपरसादि पोतपोतानाविषयग्रहणकरे तेवखतें एपोतानीपातीवेचीलेतोनथी माटेसहुथीवेगलुंपणछे तेथीहेपरमेश्वर एमारामनमां महोटुंआश्चर्यलागेछे केमकेजे सर्वथीभेलुं तेवेगलुंकेमकेवाय अनेजेसर्वथीवेगलुं तेभेलुंकेमकेवाय एमअन्योन्यविरोधिछे परंतु एनेविषेबेहुविरोधते अविरोधपणेभेलारह्याछे एआश्चर्यछे ॥ ५ ॥

जेजेकहुंतेकाननधारे ॥ आपमतेरहेकालो ॥ सुरनरपंडि
तजनसमजावे ॥ समजेनमाहरोसालोहो ॥ कुं० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वलीमाहरामनने जेजेहुंहीतशीखानुं उपदेशकरुं तेमारोवचनमात्रकानेजनधारे एटलेपोतानी इच्छायें जेजेसुनासुनतरंगउपजे तेप्रमाणेरहे तेथीएमारोमनते कालोके० महामेलोछे आर्त्तरौद्रचिंतवनायें उपगतमाटेस्यामछे तोहुंसुंसमजावीशकु पण सुरके० देवतामहाशक्तिवंत तेपणमनने समजावेछे तेमजप्रबलमनुष्य जेयकीसिंह अष्टापदपक्षीजेवापण जयपामे एवापुरुषोमांपणवली पंडितके० महाकोविदते

टाथीप्रीतशी महोटानीतो कृपाजजोइयें दयावंतपणानुं तमारूंबिरूदळे माटेमारा पर कृपाकरीने तमारा चरणके० पगनेनीचें मारोहाथग्रहीनेराखजो इहां परमेश्वर तो सिद्धगतिपाम्यामाटे तेमनेचरणनुं असंजव तथासेवकनुंहाथग्रहवुं तेनुंपणअसंवजळे परंतुएवचन जक्तिपक्षनुंळे तेथीदूषणनथी जक्तलोकओलंबा देताजआव्याळे॥ ७॥

चक्रीधरमतीरथतणो ॥ तीरथफलततसाररे ॥ तीरथसेवेतेलहे ॥ आनंदघननिरधाररे ॥ ध० ॥ ए ॥

अर्थ॥ अहोपरमेश्वर एपूर्वोक्त तमारासमयधर्मनुं शुद्धात्मस्वरूप प्राप्तिरूपफलकह्युं अनेतमाराधर्म समयसंबंधीतीर्थनुं आनंदघनप्राप्तिरूपफल आगलवर्णव्युं तेधर्मतीर्थशब्दें चतुर्विधसंघनातमे चक्रवर्त्तिळो तेमाटेज धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणंकह्युं तेथीतमारीआण चतुर्विधश्रीसंघमां अखंरूपणेप्रवर्त्ते तेमज तीरथफलके० चतुर्विधसंघनातुमेंफलळो तेमज तीरथशब्दसाथें ततशब्दमिलाववुं तेवारेतीर्थनातत्वळो रहस्यळो तेमजतीर्थमां सारके० प्रधानवस्तुतमेळो एटलेजेतीर्थनुं ताराजेवो चक्रवर्तिप्रवर्त्तक तथाजेमांताराजेवो फलजूतपदार्थ वलीजेमांताराजेवोतत्व वलीजेमां ताराजेवोसारपदार्थ एवोजेतमारोतीर्थ जेनेतमाराजेवा नमोतीळस्स एवीवाणियें नमस्कारकरेळे एवो जेचतुर्विधसंघरूपतीर्थ तेनेजेप्राणीसेवे आदरे तेप्राणी निरधारके० निश्चेथी निसंदेहपणे आनंदघननुंसमूहपामे ॥ ए ॥ इतिश्रीअरजिनस्तवनसमाप्तः ॥

॥ अथश्रीमल्लिजिनस्तवनप्रारंभ ॥

॥ रागकाफिसेवककिमअवगणियेंहोएदेशी ॥

सेवककिमअवगणियेंहो॥मल्लिजिन॥एहअबसोजासारी॥अवरजेहनेआदरअतिदीए ॥ तेहनेमूलनिवारीहो॥ मल्लि० ॥१॥

अर्थ ॥ अहोमल्लिपरमेश्वर अबके० हवेकर्म्मनेक्षयकरवाथी पाम्याजे केवलज्ञान केवलदर्शन तेनीसोजा सारीके०रुडीप्रधानपामिंने पोतानीसाचीसेवानुंकरनार चाकरतेनी एवेटाणेकेमअवज्ञाकरोळो एटलेमारीअवज्ञाकरवी योग्यनथी अवरके०ताराथी बीजाजे माराजेवा संसारीजीव रागादिपरिणतियें ग्रस्याळे जेनेआस्यादासी अत्यंत आदर सत्कारआपेळे तेआस्यादासीने हेप्रजुतमें मूलथीके० जडथी निवारणकरीळे रहस्यार्थें जडथी निर्लोजताकिजियेंकरी उखेडीनाखीळे दिक्षालेताज अस्यानुंत्यागकर्युं अनेजेवारें वारमेंगुणठाणेचढ्या तेवारेंमुक्तिप्राप्तिरूप आस्यानेपणनिवारी॥१॥

के॰ सामर्थ्यवान कुंथुपरमेश्वर मारोमनतुमथीवाजतुंनथी तेनेएकतमारेविषे थिरतायें एकाग्रतायें प्रवृत्ताविद्योतो साचोके॰प्रत्यक्षप्रमाणेकरीजाणुं प्रमाणकरुं एटलेशब्दप्र माणेतो एवातप्रमाणजछे परंतुपरमेश्वरेंमनवसआएंुते प्रत्यक्षप्रमाणे प्रमाणकरुं ॥ ए ॥इतिकुंथुजिनस्तवनसंपूर्ण ॥

॥ अथश्रीअरजिनस्तवनलिख्यते ॥

॥ रागपरजतथामारू॥ रुषजनोवंसरयणायरूएदेशी ॥

धरमपरमअरनाथनो ॥ किमजाणुंनगवंतरे ॥ स्वपरसम
यसमजावियें ॥ महिमावंतमहंतरे ॥ ध० ॥ १ ॥एआंकणी

अर्थ ॥ एगाथानुं अर्थ अन्वयकरीलखियेंछैयें अहो महंतके॰महोटामहिमावंत एटलेचोसठइंद्र असंख्यातादेवता चक्रवर्त्ति वासुदेव राजाओसेनापति तथाअन्यपुरु षोनीकोडीतेणेकख्युं जयजयशब्द तेनाउच्चारपूर्वक समवसरणनी महोटीमहिमा तछत् एवाअरनाथपरमेश्वर तमारोकेवलज्ञानसंबंधीजे परमोत्कृष्टधर्म तेहुंकेमजा णुं शीरीतेंओलखुं हेनगवंत स्वसमयते स्वरूपप्राप्तिसमय एटलेजेसिद्धांतप्रमाणेप्रवर्त तां स्वरूपपामियेंते समजावियेंके॰ मुजनेसमजावो तेम एथीअन्यजे समयप्रमाणे प्रवृततां स्वरूपसिद्धिनपामियें तेपरसमयकहियें तेपणमुजनेसमजावो ॥ १ ॥

शुद्धातमअनुनवसदा ॥ स्वसमयएहविलासरे ॥ परबडी
गहडीजेहपडे ॥ तेपरसमयनिवासरे ॥ ध० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवेपरमेश्वरउत्तरकहेछे हेआनंदघन शुद्धनिर्मल स्वरूपवंत निरुपाधिक एवाआत्मतत्वनुं सदाके॰निरंतर स्वरूपतावंत स्वरूपनुंप्रत्यक्षकरवुं तेअनुनवकहियें ए टलेजेथकीशुद्धात्मनुं तात्कालिकज्ञानथायते स्वसमयके॰मारोस्याद्वादसिद्धांतनो वि लासके॰विलसनते उलखाणजाणवी अनेए शुद्धात्मअनुनवथी निन्नयावत्मात्रक थन तेमारोसमयनही तेजकहेछेजे परके॰ जेकथनमां शुद्धात्मअनुनवीपणुंनथी ए वुंजे वडेके॰ वट एटलेतेवाकथननुं जेटलुंविस्तारछे अथवाजेकथनमां शुद्धात्मअनु नवजेटलो विस्तारपणेकथननथी पण गहडीजेहपडे एटलेजेकथनमां आत्मअनुनव थी विरुधकथननी गयापडेछे एटलेकोइकजैनमतनुंज कथनकहिस्युंछे तेमांसर्वथा तोपरसमयनथी पणछायामात्रछे एटलेकोइकनयें आत्मअनुनवथी परकथनछे तो कर्त्ताआनंदघनना आसयप्रमाणे तोतिहांपणपरमेश्वरें परसमयकह्युं पणनिजसम

अर्थ ॥ तेमजहेप्रभु नवनोकषायमां १ हास्यमोहनी २ अरतिमोहनी ३ रति मोहनी ४ शोकमोहनी ५ दुगंछामोहनी ६ नयमोहनी तेनोकषायमाटे क्रोधादिकक षायनीअपेक्षायें पांमरके० रांक तथासंसाररूपखेतिनी वृधीकारकमाटे करसाके० खे तीखेडानी आलीके० पंक्तितेक्रोधादिककषायथी सहसमाटेनोकषाय तेजिवारें तमेक्ष पकश्रेणीरूप गजके० हाथीनीस्वारीकरीतेवारें तेणे श्वानके० कुतरानीरीतग्रहणकरी जे मराजमार्गेहाथीचालतां हाथीउपरचडनारने कुतरापोंचीशकेनही परंतुहूहूतोकरेज ते मपरमेश्वर श्रेणीगजेंआरूढथया तिवारेंगरजतोसरेनही पणहाकथीतो हास्यादिक उणगयानही माटेकुतरानीपरें हाकहाककरतारह्या ॥ ५ ॥

रागद्वेषअविरतिनीपरिणति ॥ एचरणमोहनायोधा॥ वीतरा
गपरिणतिपरणमता ॥ उठीनाठावोधाहो ॥ मल्लि० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वलीरागदशा द्वेषदशा एबेनवबीजनाअंकूरनाउत्पादक तेमज अविरति पणानेविषे तदाकारीपणेप्रवर्त्तवुं एत्रणेनुंपरिणमन ते चारित्रमोहनीयना योधाके० सुनटछे एटलेचारित्रमां प्रवर्त्ततामुनीराजोने चारित्रथीपाडवाना योधाछे परंतुहेपर मेश्वर तमेजिवारें वीतरागपरणतिनेविषे परिणमनके० तदाकारपणेथाताछतां एटले तमोनेवीतरागपणामां एकाग्रवृत्तियेंप्रवृत्तेतानीदशाजोइने तेणेविचार्युंजे अमारीविरो धी वीतरागता एघरमांआवी माटेआंइअमोठेरियेंनही एमविचारीवोधावुध अवगम ने जाणताछतां पोतानीमेलेज उठीने नासीगयाएकार्यंतमारो सहजेथयो ॥ ६ ॥

वेदोदयकामापरिणामा ॥ काम्यकरसहुत्यागी ॥ निःकामीकरु
णारससागर ॥ अनंतचतुष्कपदपागीहो ॥ मल्लि० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वलीअहोपरमेश्वर वेदनोउदयतेथी कामना परिणामके० अभिलाप ए टले पुरुषस्त्री स्त्रीपुरुष एबेनोअभिलाप वेदोनाउदयथीथाय तेवेदनाउदयथी काम नुंपरिणामपणुंतो वेगलुंरह्युं पणतमेतो कामके० वांछितकर्म्ममात्र सर्वनात्यागीछो तोवेदनोसर्वथाअनाव तेनीशीअधिक्यता केमके वांछितकर्म्ममात्रना त्यागीथयातेथी शब्दरूपरसगंधादिकना अभिलाषनुंपण सर्वथाअनावथयीचूकूं माटेनिरअभिला षीपणाथीज करूणारूपरसना समुद्रछो निष्कामीविना दयानापरिणामनुं अनाव जहोय तेथीतमे अनंतज्ञान अनंतदर्शन अनंतचारित्र अनंतवीर्य एअनंतचतुष्क पद तेनिर्वाणपदनातमे पागीके० पदनारंगाणा एटलेमोक्षपदमांलीनछो ॥ ७ ॥

परमारथपंथजेकहे ॥ तेरंजेएकतंतरे ॥ व्यव
हारेंलखजेरहे ॥ तेहनाभेदअनंतरे ॥ ध० ॥ ६॥

अर्थ ॥ जे परमके० उत्कृष्ट अर्थके० कार्यनोकरनारएवोजे पंथके० मार्गते जे कहेके० जेउपदेशे तेएकांतनिश्चेनयनाज रंजेके० रागीछे एटलेजेसमात्र व्यवहारन यना अपेक्षीकनथी एकांतनिश्चेनयनाज अपेक्षीकछे अथवा एबेपदोनाअर्थनो अन्व यएवीरीतेंकरियें तोविशेषतीखोजासे एटलेजेएकांतरागी तेपरमार्थपंथकहे एटलेउत्कृ ष्टमार्गकहे पणबीजाथीनकेवाय एवुंनिश्चेनयनुं कथनकहीने वलीजेप्राणी व्यवहार नयनेज लखके० जाणीनेरह्याछे एटलेनिश्चे तथाव्यवहार एबेनयमां एकव्यवहारने जमुख्यजाणीरह्याछे तेव्यवहारनयवादीओना भेदके० विकल्प अनंतके० घणाछे॥६॥

व्यवहारेंलखेदोहिला ॥ कांइनआवेहाथरे ॥ शुद्धनयथा
पनासेवतां ॥ नवीरहेदुविधासाथरे ॥ धर्म० ॥ ७ ॥ ॥

अर्थ ॥ जेप्राणीव्यवहारना रसियाहोय तेस्थविरगुणेप्रवृत्तकादिकोनी घणीसेव नादिक कष्टक्रियाथी तपसंयमादिक व्यवहारने लखेके० शीखीने दोहिलाके० महा कष्टेंप्रवर्त्ते परंतु तेवाव्यवहारनेसेवतां जन्मारोवहीजाय पणएकलाव्यवहारनी कडा कुटकरणीकरतां कांइ लिगारमात्र स्वरूपप्राप्तिरूपवस्तु हाथेंआवेनही तेथीजोशुद्धन यने थापनाके० प्रमाणकरीने एटले आत्माशुद्धनिर्मल कर्मोपाधियेंरहित एवीकरि येंते शुद्धनयनीस्थापना सेवियेंके० विचारियेंतो आत्माशुद्धस्वरूपेंरहितछे अथवा आत्माआत्मस्वरूपपामसे एवो दुविधाके० द्विधाभावीपणानो शाथके० कल्पना वि चारणातेनरहे एटलेआत्मा त्रणेकालेंशुद्धात्मस्वरूपीजछे एअरनाथनोधर्मएवोछे तेध र्मनेप्रसादेंदुविधानी विचारणानरहे ॥ ७ ॥

एकपखीलखिप्रीतनी ॥ तुमसाथेंजगनाथरे ॥ कृपा
करीनेराखजो ॥ चरणतलेंग्रहीहाथरे ॥ ध० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ माटेजोशुद्धात्मस्वरूपीहुंछुंतो तमेशुद्धात्मस्वरूपीजछो परंतु हुंरागी तुंनि रागी माटेतमारेमारे असमानधर्मिपणुंछे तेथीमेंतमारीसाथें एकपखीप्रीत लखिके० जाणी एटलेतमोनेतो मारीसाथें प्रीतकरवानीइछाजनथी तोप्राणे प्रीतशीरीतेंथाय तेथीअहो त्रिजगतनाथ तमारासाथेंप्रीतनीरीत नजथाय तमेत्रणजगतपूज्य हुंजग तुंनिखारी लोकोक्तिपणएमछे के वैर विवाद अनेप्रीतते शरिषासाथेंकरियें तोमहो

इणविधपरखीमनविसरामी ॥ जिनवरगुणजेगावे ॥ दीनबंधु
नीमहिरनजरथी ॥ आनंदघनपदपावेहो ॥ मल्लि० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ माटेहेसुमति जेस्वरूपज्ञाताप्राणीते एपूर्वेंअढारदोष वर्जवानी विधिके० रीतकही तेरीतें मनविसरामीके० मनने थिरताजावेंप्रवर्त्तावी नेजेअढारदूषणेंरहित तेजअरिहंत देवाधिदेव एवीपरिक्षाकरीने सामान्यकेवलीओमांप्रधान एवाजेमल्लिप रमेश्वर तेनागुणग्राम एटलेस्तवनाकरे अथवामनने विसरामनाधाम एवामल्लिजिन ना गुणवर्णवीनेजे प्राणीगावेते मोहमल्लेहण्या एवानिजस्वरूपेंरहित संसारमांज न्मजरादिकें खिन्नथयला एवादीनप्राणीयोने बंधुके० भ्रातानीपरें सहायनाकारक एवामल्लिपरमेश्वरनी महिरके० कृपासंबंधी सीतलदृष्टीथी तेगुणगातापुरुष अति हीयानंदनोसमूह एवोजेमुक्तिपद तेनेनिःसंदेहपणेपामें ॥ इतिमल्लिजिनस्तवनसंपूर्ण

॥ अथश्रीमुनीसुव्रतजिनस्तवनलिख्यते ॥

॥ रागकाफीआघाआंमपधारोपूज्य ॥ एदेशी ॥

मुनीसुव्रतजिनरायएकमुझवीनतिनिसुणो ॥ आतमतत्वक्युंजा
ण्युंजगतगुरु ॥ एहविचारमुझकहियो ॥ आतमतत्वजाण्याविण
निरमल चित्तसमाधिनविलहियो ॥ मुनी० ॥ १ ॥ एआंकणी

अर्थ ॥ अहोमुनीसुव्रतजिनराज मुझआनंदघननी एकआत्मतत्वसंबंधनी वीन तिके० प्रार्थनाते अतिशयपणेसांभलो हेत्रिजगद्गुरु आत्मानेविसर्यो जे आत्मधर्मरूप तत्व तेतमेकेमजाण्यो एटलेशीरीतेनिश्चेंकर्यो एहके० एआत्मतत्वतमे जेरीतेंजाण्यो तेनुंविचार अनुक्रमविधते मुझनेकृपाकरीनेकहेजो केमके आत्मतत्वजाण्याविना पु ग्दलादिकजडथी आत्मानेभिन्नअवधारणकर्याविना काम क्रोध लोभ मोहादिकनेवसें तो मननीसमाधिके० स्थिरतासहजेंपामियें परंतुअकामि अक्रोधि अमानि अमाई अलोभि अमोही इत्यादिकनेविषे निर्मलथतो चित्तनिवृत्तिनिरोध तदाकारें स्वस्वरूप नेविषेजप्रवर्त्तनते नविलहियोके० नपाम्यो माटे आत्मतत्वजेमजाणुतेउपदेशो ॥१॥

कोइअबंधआतमततमाने ॥ किरियाकरतोदीसे ॥ क्रियात
णुंफलकहोकुणभोगवे ॥ इमपूछ्युंचितरीसें ॥ मुनी० ॥ २ ॥

अर्थ॥इहांकोइकेशेजे सर्वमतोमां आत्मतत्वनुंकथनछेतो परमेश्वरथीज पुछवानुंसुं कार्य तेनोउत्तरजे एमुनीसुव्रतप्रभुविनाजो बीजाने आत्मतत्वनुंनिरणयहोयतो कोइ

ज्ञानसुरुपअनादितुमारुं ॥ तेलीधुंतुमेंताणी ॥ जुउअज्ञान
दशारीसावी ॥ जातांकाणनआणीहो ॥ मल्लि० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हेप्रजुतमारुं अनादिकाजनुं ज्ञानस्वरूप तेमोहथीप्रगटीजे अज्ञानदशाते थी आछादितहतुं तेतुंमेंताणीलीधुं अनेहेसुमतितुमे जुउके० देखो अनादिकाजनी खीरनीरवत् जेअज्ञानदशानामे स्त्री तेमल्लिनाथपरमेश्वरने आत्मस्वरूपानुंजवने असु हामणीलागी तेथीअप्रीतकारणीजाणीने तेनेआत्मरूपघरथी जाताजाणी पणकाण नआणी एटलेएथी अनादिकालनुंघरवासहतुं तेघरबांधीने जेमउठनेसींघगया तेम जायछेतोजलेजाओपरंतुएथीनाषणकरवुं एटलीपण काणके० मर्यादनआणी॥२॥

निद्रासुपनजागरउजागरता॥तुरियअवस्थाआवी॥निद्रा
सुपनदशारीसाणी॥जाणीननाथमनावीहो ॥ मल्लि०॥ ३ ॥

अर्थ ॥ तेमजहेपरमेश्वर जव्यअजव्य शंसारीजीवोनेविषे निद्रातथा सुपनएबे अ वस्थापामियें तेमजजव्यने जव्यत्वपणानो परिपाककाल तेरमेंगुणगणेथाय तिवारें एबेअवस्थानो नासथाय अनेजागृतअवस्थापामे तथाचउदमांगुणगणाना अंतथी सिद्धनेविषे उजागरअवस्थाहोय एचारअवस्थामां हेप्रजुतमारे तुरियके० चोथीउ जागर अवस्था प्राप्तथयी तेजोयीने निद्रादशामां गर्जितसुपन अवस्था तेणेजाण्युं जे अमोनेप्रजुयें दूरवचनकह्याविनाज अमारीप्रतिपक्षणीओने मनावी माटेअमारो तीरस्कारथयो एमजाणीने रीसाणीथकी आत्मघरथीजातीदेखीने स्वरूपमांअंतराय कारकजाणीने हेनाथतमेतेनेमनावीनही ॥ ३ ॥

समकेतसाथेंसगाइकीधी ॥ सपरिवारसुंगाढी ॥ मिथ्याम
तिअपराधणजाणी ॥ घरथीबाहिरकाढीहो ॥ मल्लि० ॥४॥

अर्थ ॥ वलीहेपरमेश्वरतमे मिथ्यात्वथी उपरांगथयीने उपशम विवेक संवरादि कपरिवारसहित समकेतसाथें सगाइते गाढीके० अत्यंतनिवडकरी तिवारेतमे आ त्मस्वरूपथी विरुधप्रवर्त्तिका एवीमोहनीयनीपुत्रीजे मिथ्यामति तेआत्मथी मिलवा नीवांछने नांजीनाखनारी माटेअपराधीजाणीने हेप्रजुतमेतमारा आत्मघरथी बाहेर काढीमूकी पणसर्वथाप्रकारें एनुंघरमांप्रवेसज नथीराख्युं ॥ ४ ॥

हास्यअरतिरतिशोकदुगछा॥जयपांमरकरसाखी॥नोकषा
यश्रेणीगजचढतां ॥ श्वानतणीगतिजाखीहो ॥ मल्लि० ॥ ५ ॥

दुखनो कर्त्तापणथावरजंगममयी जडचेतन अनेदुःखनोकर्त्तापण थावरजंगममयी जडचेतन तेथीथावरनोकरेलो सुखदुखजंगममां प्रवेशथवुंजोइयें तेमजजंगमनुंकरेलो सुखदुःख थावरमांप्रवेशथवुंजोइयें तोएमकेवाथी शंकरदुषण थावरजंगमथाय ॥३॥

एककहेनित्यजआतमतत ॥ आतमदरशणलीनो ॥ कृतवि
नाशअकृतागमदूषण ॥ नवीदेखेमतहीणो ॥ मु० ॥ ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वलीकोइक अद्वैतवादी तेरापंथी समेसारीया वासिष्ठसारग्रंथी एमकहे छे जेनित्यके० निश्चेथी आत्माचारगतिसंबंधी हरेकभवनेपाम्यो पणआत्मापोताना स्वरूपदर्शनमां लीनोके०व्यापकछे एटलेत्रणेकालें आत्मास्वरूपदर्शनेरहितनथी तेने मेंएमपुछयुंजे आत्मा आत्मस्वरूपेंलीनहोयतो कृतविनाशके०साधवादिककरणीनुं कृतकरवो तेनोविनासभावदुषणते तुं नवीदेखेके०नथी देखतोसुं अनेबीजोदुषण अकृतायम एटले अणकीधानुंआववुं नकर्यानुंप्राप्तथावुं एटले जोआत्मा स्वरूपदर्शनमां नित्यलीनमानोतो स्वरूपेंलीनछतो आत्मादुःकृतनेतोनजबांधे अनेप्राणीओने दुःकृत आगमथयो एटलेपापपुंउदयआव्यो तेअकृतदुःकृतनोआगमरूपदुषण तेनेहेमतहीणातमे नथीजोतासुं एटलेतमाराज शास्त्रोमांएवुंवाक्यछेजे कृतविनाननोकर्त्तव्यं तेमाटेकीधाविनाभोगववुंसुं ॥ ४ ॥

सुगतिमतिरागीकहेवादी ॥ क्षिणकएआतमजाणो ॥ बंधमो
खसुखदुःखनघटे ॥ एहविचारमनआणो ॥ मुनी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वलीहेशुद्धचेतना सुगतके० बौधमतनारागीप्राणी वादीके० बोधमतनाशास्त्रनो पक्षकर्त्ताएमकहेछे यावत्मात्रआत्माते क्षणक्षणदीठ भिन्नभिन्न जाणोके० अवधारो एटलेजगतमां आत्मामात्र तेमजअन्यपदार्थमात्र सर्वक्षणिकछे जेप्रथमक्षणेंअविछिन्नछे तेथीबीजेक्षणेतेनथी एवोतेनुंसिद्धांतछे तेबौधवादीने मेंकह्युंजे आत्माने क्षणक्षणदीठजोतमे भिन्नभिन्नछेरावशोतो बंधके० शुभाशुभकर्मबंधने तेमज मोक्षके० कृतकर्म्मनां खपाववाने तथासुकृतकरे सुखनाभोगववाने फरिदुःकृत करे दुःखनाभोगववाने एकपक्षग्रहणकरवाथीतो पूर्वेकह्याचारेप्रकारोने एआत्मा नघटेके० नसंभवे केमकेजे बंधननोकर्त्ता आत्माक्षणेंबधकरे अनेतेक्षणथीबीजेक्षणेतो आत्माभिन्नछे तेवारेंबधनोकर्त्ता आत्मापणभिन्न भोक्ताआत्मापणभिन्न एमकर्त्ताकोइक अनेभोक्ताकोइक एरीतेंअसंभवनोविचार मनमां आणोके० लावो माटे हेशुद्धचेतना जेपोतेजआत्मतत्व पाम्यानथीने भूलाजफरेछे तेओथीपुंछताहुं आ

दानविघनवारीसद्भुजनने ॥ अन्नयदानपददाता ॥ लाजविघन
जगविघननिवारक ॥ परमलाजरसमाताहो ॥ मल्लि० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ वलीहेपरमेश्वरतमेकेवाथया दानसंबंधीविघन एटलेदानांतरायनुं निवार
णकरीने जव्यरासीजीवमात्रने अन्नयपदजेमुक्तिपदतेना दानना दाताके० देवावा
लाथया वलीतमेंपोतालुं लाजांअंतराय निवारीने जगतवासी सर्वजीवोने लाजाअं
तरायना निवारकके० दूरकरनारथयीने पोते परमके० उत्कृष्टआत्मऋधि तेसंबंधी
रस अव्ययपदप्रासें उपनोजे अतिंडीयरस तेरसमां माताके० मग्नठो ॥ ८ ॥

वीर्यविघनपंमितवीर्यैंहणी ॥ पूरणपदवीयोगी ॥ जोगोपजोग
दोयविघननिवारी ॥ पूरणजोगसुजागीहो ॥ मल्लि० ॥ ए ॥

अर्थ॥ वलीतमारे परमआत्मस्वजावनेपामवें उपर्नुजेपरमोल्लास तेउल्लासें उल्लसी
त परमआत्मवीर्य तद्रूपदरसपंडितवीर्यें एटलेपराक्रमेकरीने वीर्यांतरायनेहण्युं तेथी
संपूर्णतीर्थंकरपदवीपाम्याठो एटलेआत्मवीर्यफोरवतां आत्मपदवीनोरोधक विघनक
रताजेमोह तेनेतमें पंमितवीर्यैंहण्यो तेथीपूर्णपदवीपाम्या एयोग्यठे इहांसूत्रकारेंयो
गीपदगुंथ्योठे तेपदलुंप्रास मेलववामाटे गुंथ्योठे नेयोगीपदनुंअर्थकरियें तोतेपदवीथी
संयोगथयो तेआत्मानेस्वरूपपदवीनुं समवायसंबंधसंजवे पणसंयोगसंबंधनसंनवे
तेथीयोगशब्दनोअर्थ एपदवीनेयोग्यठे एमलिख्युं कर्त्तानुंआशयकर्त्ताजाणे वलीतमें जो
गांतराय उपजोगांतराय एबेअंतरायने आत्मवीर्यथी निवारणकरीने संपूर्णसिद्धा
त्मसंबंधी आतगुणरूपजोगना सुजोगीके० जलाजोगवनाराठो एटलेसुजोगने अंतराय
करनारा जोगोपजोगांतराय एबेरोधकोनो नाशथयो ॥ ए ॥

एअढारदूषणवरजिततनुं ॥ मुनिजनवृंदेगाया ॥ अविर
तिरूपकदोषनिरूपण॥निरदूषणमनजायाहो०॥मल्लि०॥१०॥

अर्थ ॥ माटेहेपरमेश्वर एमअढारेदोषनुंपूर्वें वर्णनकर्युं एअढारेदोषनाकर्त्ता दूष
णठेतेथी तमारो तनुंके० असंख्यातप्रदेशरूप आत्मपिंमरहितथयो तेथीतमे मुनी
जनोना वृंदके० समूहनेगावायोग्यथया मुंनीनावृंदोयें तमोनेस्तव्या परंतुहेसुमति
अविरतीथी एटलेविरतिपणारहितथी नथीनिवर्त्तवुंजेने तेतोदोषनोनिरुपणकथनठे
एटलेअढारेदूषणमां प्रवर्त्तवुं तेदोषतो सर्वजीवमात्रनेकेवाय पणप्रभुतो तेअविरतादि
कदूषणथी रहितथयामाटेनिरदूषणपणे मनजायाके० मारामनमांसुहाया ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हेशुद्धचेतना मेंप्रश्नपुछ्युं तेनोवलतुं त्रिजगतगुरुमुनीसुव्रतस्वामीयें आपी तेंजाण्युं तेकहुंछुं जेप्राणीआत्मतत्वजाणवानीचाहनाकरे तेप्राणी एकांतपक्षीवाद सर्वेगांमी सर्वथामूकीने रागद्वेषमोह अज्ञाननोपक्षवर्जे तेप्राणीअवश्य आत्मस्वरूपप्राप्तिथी रात्रदीवस सुतांजागतां उठतांबेसतां खातांपीतां कार्यादिकमांप्रवर्त्ततोछे परंतुअंतरवृत्तियें मननीप्रवर्त्ति आत्मस्वरूपमां प्रवर्त्तिरहिछे ॥ ८ ॥

आतमध्यानकरेजोकोउ ॥ सोफिरइणमेंनावे ॥ वागजाल
बीजुंसहुजाणे ॥ एहतत्वचित्तचावे ॥ मुनी० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ एरीतेंजेप्राणी ब्रह्मरंध्रमध्यआशनपूरीने आत्मामांलयलीनथयी तदाकारवृत्तियें शुद्धात्मस्वरूपनुंध्यानकरे तेप्राणी अनेकमतवादीओना विभ्रममतरूपजालमांफसेनही तेप्राणी एकआत्मस्वरूपकथनविना अन्यजे जप तप पूजा नियमादिक कथनमात्रने वागजालके० वचननुंजाल आत्मानेफसवानुं फंदजाणे एनिश्चेआत्मस्वरूपनुं तत्वते पोतानाचित्तनेविषे चावेके० चिंतवे ॥ ए ॥

जेणेविवेकधरीएपखग्रहियें ॥ तेततज्ञानीकहियें ॥ श्रीमुनी
सुव्रतकृपाकरोतो ॥ आनंदघनपदलहियें ॥ मुनी० ॥१०॥

अर्थ ॥ माटेजेविवेकनो धारवावालो विवेकवंतप्राणी तेआत्मध्यानसंबंधीत पक्षनेग्रहणकरियें ते प्राणीने तत्वज्ञानी आत्मतत्वनो वेत्ताकहियें माटे श्रीके० सिद्धसंपदानाधारक एवाअहो मुनीसुव्रतजिन कृपाकरो एटले आत्मतत्वनी ओलखाणकरावो तो अनादिकालनुं एलेगमांव्युं चिंतामणिसरिखो एवोपरमानंदनूं घनपदअर्थात्मुक्तिपद ते लहियेंके० पामियें ॥१०॥ इतिश्रीमुनीसुव्रतजिनस्तवनसमाप्तः

॥ अथश्रीनमिजिनस्तवनलिख्यते ॥

॥ रागआस्याउरी धनधनसंप्रतिसाचोराजाएदेशी ॥

षटदरसणजिनअंगभणीजे॥न्यासषडंगजोसाधेरे॥ नमिजिनव
रनाचरणउपासक॥षटदरशनआराधेरे॥षट० ॥१॥ एआंकणी

अर्थ ॥ हेशुद्धचेतना पूर्वस्तवनायें परुपितछएदर्शन ते जिनके० परमेश्वरना अंगभणिजे एटलेपरमेश्वरपोतें एछएअंगोनाधारकछे केमकेएकजैनदर्शनविना बीजापांचेदर्शन एकेकनयनाअपेक्षीछे माटेअन्यअंगकह्या अनेजैनसप्तनयाश्रीत माटेउत्तमांगकह्युं परंतुकर्त्तानोआशयएछेजे एअंगोनेछेदते जिनेश्वरनुंउछेदकजाणवो केमकेजि

शब्दें शांखादिकमतवालाते अबंधपणे आत्मतत्वमानेछे विगुणोनबध्यते नमुच्यते एट लेआत्मा त्रणेकालेंकर्मनबांधे तोनिश्चेंनयतोएमजछे परंतुव्यवहारनयनीअपेक्षायें व दांति आत्मानेअबंधमानेछे अनेपोतेंज कामक्रोधादिकउपयोगें प्रवर्त्तेछे तेनेकहियेंजे तुंदुःकर्मेंबंधाएंछोतिवारेएम उत्तरआपेजे मान्योतोकर्मेंबंधाणो अनेआत्मस्वनावेंनिर्म लछे एवोविचारियेंतो आत्मानबंधाएं एवीरीतेवंदातिप्रमुख मुखथीकहे अनेफरितेज प्राणी क्रियाकरतो दीसेकें० देखायछे माटेहेशुद्धचेतनामेंतेनेक्रियामां प्रवर्त्ततुंजोयीने चित्तरीसेंके० मननीरीसेथी एटलेरीसनापरिणामें एमपुछ्युं प्रश्नकर्युं जेतमेआत्मानेतो अबंधमानोछो एटलेशुनाशुनकरणियें शुनाशुनकर्म आत्मानथीबांधतो आत्माआत्म स्वनावें निर्मलछे अबंधकछे तो महाकष्टकरीने शुनकरणीकरी तेक्रियानुंफल नोक्ता पणेमानसोतो आत्माअबंधकमानोछोते तमारोपक्षछेथोकेवासे अनेजो क्रियानुंफ ल आत्माननोगवे ऐमकेहेसोतो क्रियाकरोछो तेनुंफलकोणनोगवशे अनोजो करे लीक्रियानुंफल नोगववामांनआवेतो क्रियानुंकरवुं असिद्धथयुं तोहेशुद्धचेतना एवा नेपुछवाथी हुंआत्मतत्वकेमपामुं माटेजप्रजुनेवीनतिकरीपुछ्युं ॥ २ ॥

जडचेतनएआतमएकज ॥ थावरजंगमसरिखो ॥ दुखसु
खसंकरदूषणआवे ॥ चित्तविचारीजोपरिखो ॥मुनी०॥३॥

अर्थ ॥ वलीअद्वैतवादीना त्रणपक्षछे १ अद्वैत २ द्वैताद्वैत ३ विशिष्टाद्वैत एविशेष्टाद्वैतपक्षी तेविष्णुस्वामिनाउपाशनी तो जडचेतनके० जडसंबंधितचेतन ए आत्माएकजछे एटले यावत्मात्रसर्वशरीरधारियोमां एकांसेंपरमात्मा व्यापिरह्योछे एकसर्वगतोनित्य एतेमनोमूलसिद्धांत तेथीएकांश माटेजीवात्मा कोइकालें परमात्मा पणेनजथाय त्रणेकालें एजीवात्मा सेवक परमात्मास्वामिइत्यादिक केटलोलिखुं वली द्वैताद्वैतपक्षीते कथंचित् थावरजंगममां नेदमानेछे तेवली विशेष्टाद्वैतनेपुछेके पृ थ्वी अप्प तेज वायु वनस्पति पृथ्वीनेअंतर्नावीमानोछो तेथीथावरजंगममां जडसं बंधीत चेतनाएकछे अथवा कथंचित्पणेनेदछे किंवानथी तेवारेतेकहेजे थावरजं गमसरिखोएटले थावरमांने जंगममांअनेदछे तोहेशुद्धचेतना मेंतेओनेपुछ्युं जेत मेतमारोमतजेथाप्युंतेने चित्तविचारीजोपरखोके० तमेजतमारामनथीविचारीने परि क्षाकरो एटलेतमारामतमां तमाराजकेवाथी सुखदुखसंबंधी संकरदुषण आवेके० प्रवेशकरेछे एटलेसुखदुःखने परस्परमाहोमांहे अत्यंतसर्वथा अनाविपणुंछे जेसुख तेदुःखनथाय अनेदुःखतेसुखनथाय तेसुखदुःखने समान एकअधिकरणहोय एटले

क्षणेवस्तुनें भेदके० भिन्नमाने अने मीमांसकते नित्यआत्माअकर्त्ताछे तेथीत्रणेकाले स्वरूपेंअभेदछे उक्तंच एकएवहीभूतात्मा भूतेभूतेव्यवस्थितः एकधाबहुधाचैव दृश्यते जलचंद्रवत् ॥ १ ॥ पुनःएकःसर्वगतोनित्य पुनः वेदेविगुणोनबध्यते नमुच्यते माटे एबेदर्शनते जिनवरके० परमेश्वरना दोयकरके० बेहाथछे भारीके० गंभीराशयपणे समजवाकठिणमाटे गुरुगमके० गुरुयेंबताव्योजे रेचक कुंभक पूरकसंबंधी प्रवर्त्तन तेथीप्रथमतो लोकशब्दें ब्रह्मरंध्रथकी अवशेषहेठलरह्युंजे शरीर तेनेभूगोलसंज्ञाछे ते माटेलोककह्युं तेने अवलंबनके० आत्मानेआश्रयणकरीने एबेदर्शनरूपजे परमेश्वरनाबेहाथ तेने अवधारिके० निर्णयकरीने भजियेंके० ध्याइयें तेमज अलोकके० शून्यमाटेखगोलसंज्ञा तेब्रह्मरंध्रनेछे तेथीअलोकशब्दें ब्रह्मरंध्रनेविषे आत्मानेआशयकरीने एबेदर्शनरूपबेहाथने निर्णयकरीनेभजीयें ध्यानकरियें.

एटलेएबेदर्शनमां बौध्दर्शनतेजेविद्यमान तेक्षणेक्षणेभिन्नभिन्नछे एतेमनोसिद्धांतछे तोजोआत्माप्रमुखने व्यवहारनयथी पर्यायांतरेकालथी अवधारियेंतो क्षणक्षणादीठ भिन्नभिन्नछे अनेमीमांसकते वस्तुनेअभेदमानेछे तेजेमआपणे निश्चेनयनीअपेक्षायें आत्माप्रमुख सर्ववस्तु पोतपोतानाधर्म लक्षणथी त्रणेकालेंअभेदमानीयेंछेयें तेथीआत्मापण स्वस्वरूपलक्षणधर्मे त्रणेकालेंअभेदसहीतछे एरीतेंएबेदर्शनते व्यवहार तथानिश्चेनयना अपेक्षीकछे अनेपरमेश्वरनुं प्रवर्त्तनपणनिश्चेतथाव्यवहारथीछे माटे बौध्दर्शननुंव्यवहारें प्रवर्त्तनते परमेश्वरनुं वामकरछे अनेमीमांसकनुं निश्चे प्रवर्त्तनते परमेश्वरनुंदक्षणकरकह्युं एआशयसमजवामां कठीनछेमाटे गंभीरकह्युं एरीतेंपरमेश्वरना चारअंगवर्णव्या ॥ ३ ॥

लोकायतिककूषजिनवरनी ॥ अंशविचारीजोकीजेंरे ॥ तत्वविचारसुधारसधारा ॥ गुरुगमविणकेमपीजेंरे ॥षट०॥४॥

अर्थ ॥ वली नमिपरमेश्वरनी कूंषिके० पेटते नास्तिकवादी लोकायतिकके० चारवाकदर्शनछे एटले जीव पुण्य पाप गत्यागति कांइनथी एनास्तिकशून्यवादीनुं मतछे तेसर्वासेंतो परमेश्वरनो पेटनथी पण अंसविचारीजोकीजेके० एकअंसेविचारीजोइयेंतो परमेश्वरनीकूखछे केमकेतेनास्तिक शून्यवादीछे तेमपरमेश्वरनी कूंखपणशून्यमाटे एकअंसेंनास्तिक परमेश्वरनीकूंखकही परंतुतत्वविचारें विचारीजोइयेंतो एसर्वदर्शन वाणीथीवर्णव्या तेवाणीकूखथीउपनी माटेएकूंखते पांचेअंगनुं खजानुंछे एकूंखथीपांचेदर्शननी उत्पत्तिछे माटे सुधारसधाराके० अमृतरूपरसनुंप्रवाहछे तेथी

त्मतत्वसुंजाणुं माटेपरमेश्वरथीपुंछुं जेमारीवीनतिअवधारो अनेमुजनेआत्मतत्वनी ओलखाणथाय तेरीतेंकृपाकरीनेनाखो ॥ ५ ॥

भूतचतुष्कवरजितआतमतत ॥ सत्ताअलगीनघटे ॥ अं
धशकटजोनजरनदेखे ॥ तोसुंकीजेंशकटें ॥मुनी० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हेशुद्धचेतना वलीनास्तिकवादी एमकहेछे १ पृथ्वी २ आप ३ तेज ४ वायु एभूतचतुष्कवरजीने आत्मतत्वनो सत्ताके० छतापणुंते नघटे एटलेएचारभू तोथी अलगीके० वेगली भिन्न आत्मतत्वनीसत्ता नघटेके० नसंभवे अनेजिहांएचा रभूतहशे तिहांशून्यआकाशपणहशेज तेथीएचारनुं ग्रहणकरी एभूतचतुष्कमयी आत्मसत्ता मदिराद्दष्टांतेमानेछे जेमदिरानाएकेकाअंगमां छाकशक्तिनथी सर्वांगने मिलापें छाकशक्तिछे तेमजचारेभूतनेमिलापें चैतन्यशक्तिछे परंतुहेनास्तिकवादीअंध के०जन्मांधप्राणीते शकटके० गाडानो म्होटापणुं पहोलापणुं ते जोकोइवारेंपण नज रके०आंखेनदेखे प्रत्यक्षनकरे तोमहोटापण शकटके० गाडानेसुंकीजें केमके गाडानो मोटापणुं आंधलानेदेखवारूपकार्यनो तो साधकनही तेवारेंमहोटागाडानेपणसुंक रियें तेमतमनेपण गाडाजेटलोमोटोद्दष्टांत रुदयरूपनजरेनदेखाय तेवारेंमहोटोद्द ष्टांतपणशाकामनुं जेमकोइकप्राणीमरणपाम्यो तेनाशरीरमां चारेंभूतोमां प्रथमआत्म सत्ताप्रगटथयीहती अनेचारेभूतथी आत्मसत्ताअलगीनथीघटति तोआत्मसत्ता ते ओनेकेममूकीगयी माटेहेशुद्धचेतना एवाथीआत्मतत्व केमओलखाय ॥ ६ ॥

एमअनेकवादीमतविभ्रम ॥ संकटपडियोनलहे ॥ चित्तस
माधतेमाटेपुछुं ॥ तुमविणततकोइनकहे ॥ मुनी० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ एमजैनविना एकांतपक्षीआ यावन्मात्र मतवादीना सिद्धांतोथी भिन्नभि न्नकथनना सांभलवाथीपाम्यो आत्मतत्वसंबंधीजे विभ्रमके० विशेषपणेभरम तेज थयो संकटके० महाकष्टरूपसमुद्रमां पडयोछतो भरममांरुल्योछतो आत्मतत्वने न लहेके० नपामे परंतुहेशुद्धचेतना अनेकमतवादीओनाकथन तेनाविभ्रमरूप संक टमांहुंनथीपड्यो तेथीजमारेचित्तने समाधिछे एटले तेओनाकह्यामुजबतो मारुंम नप्रवर्त्ततुंनथी तेमाटेजपरमेश्वरथी पुछुंके० प्रश्नकरुंछुं जेहेप्रभु तुमविना अन्यकोइ नाममात्र मतोनाधारको जेथकीशुद्धात्मतत्वपामियें एवुंकथनकोइकहेनही ॥७॥

वलतुंजगगुरुइणिपरेंभाषें ॥ पक्षपातसबछंडी ॥ रागद्वेषमो
हपखवर्जित ॥ आतमसुंरढमंडि ॥ मु० ॥ ८ ॥

रें पोतेंथयीने तदाकारवृत्तियें परमेश्वरनुं आराधनकरे ध्यानधरे तेप्राणी सहीके० नि श्चेंथीजिनवरशब्दें केवलनाणदंसणीथाय जेम नृंगीके० नमरीते उसकालमां मवेश्या वे तेमदनीउन्मत्ततायी एकतोचंचलतावधे बीजोपोताना कांटामांपणविषवधे पछे काली अथवापीली नीजेलीमाटीमां पोतेंलवमूकी गोलीवालीने एकेकगोलीलावी घरबांधी तेमांपोतें ईलीकाजे लटतेने कांटाथीचटकुदेइ तेलटने घरमांमूकी फरीएक गोलीयेंते घर नुंमुढोढांकीने सत्तरमेंदीवस चटकाथीते घरनुंमुखखोलतांजेलटतेनमरी थयीउडीजाय तेलटथीनमरीथयीने जगतदेखे तेमजिनस्वरूपेंथयीनेजिननेआराधवुं ते जथयुंपोते लटरूपआत्मानेचटकूं पछेनिजस्वरूपमां परिणमवुंतेघरमां रहेवुं अनेते घरमांज लटनुंनमरीथयीजावुं तेमजनिजस्वरूपरूपघरमां जिनस्वरूपनी प्राप्तिथाय पछेत्रणेजगतजोतेछते सिद्धमांगमन तेउडीजावुंथाय ॥ ७ ॥

चूरणनाष्यसूत्रनिर्युक्ति ॥ वृत्तिपरंपरअनुनवरे ॥ समय
पुरुषनाअंगकह्याए ॥ जेछेदेतेदुरनवरे ॥ षट० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ अहोमारीश्रुद्धश्रद्धा परमेश्वरनुंउत्तमांगरूप जैननुंसंबंधित समयपुरुषतेना छअंगछे १ पूर्वधरकृत बुटकपदनी व्याख्या तेचूर्णि २ नाष्यतेसूत्रोक्तार्थ ३ सु त्रते गणधरादिकृत सूत्रवचनमात्र ४ पूर्वधारीकृतनिर्युक्तिवचन ५ वृत्तितेटीका नि रंतरव्याख्या ६ परंपरअनुनवते गुरुसंप्रदायथी अनुनवके० यथार्थस्मृतिथी नि न्नतात्कालिकज्ञान एरीतें समयके० सिद्धांतरूप पुरुषत्वधर्मवंतना एपूर्वोक्त चूर्ण नाष्यादि छअंगछे तेनेजेप्राणी परनवनाबीकने अवगणी निर्नयथको उछेदीने ममत्व रूपरसें हीनाधिकनाषे तेप्राणीदूरबुद्धी अथवा डुरनवके० डुष्टनवगामिजाणवो ॥८॥

मुद्राबीजधारणाअक्षर ॥ न्यासअरथविनयोगेंरे ॥ जेध्या
वेतेनविवंचीजे ॥ क्रियाअवंचकनोगेंरे ॥ षट० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ मुद्राबीजधारणा अक्षरन्यास एवधाध्याननाअंगछे अने अर्थके० एमु द्राबीजधारणादिकनुं तात्पर्यार्थरहस्य तेनो विके० विशेषपणो नियोगीके० विधिसं पेषी विधिनोज्ञाता एध्याननाअंगोनो रहस्य तेमुजनेतोआंइनासतुंतथी अनेकर्त्ता येंतो आगलजेध्यावे एवुंपदगुप्युं तेथीदेखातो ध्याननुंजकथनछे परंतुमुजनेननास्यो कर्त्तानुंआशयकर्त्ताजाणे माटेजेप्राणीसमउपशमी निरममत्वीछतो एपूर्वोक्तमुद्राबी जधारणादिकें एस्तवनानी नक्तिविधेंध्यावे एटलेएकाग्रचित्तें तदाकार तद्रूप तन्मय थी तल्लेसी तदानिलाषीछतो ध्यानकरे विषयविषयी अनिन्नपणेनासे एवोथयो तो

नेश्वरनाअंगछे माटे. इहांकोइपुछेजे एगंतेदोयमिछत्तं एकेमकह्युं परंतु जेजेमतोनाथा रकोथी जैनीस्थलकरतो जेजेमतोने एस्तवनामां जेजेअंगठेराव्या तेतेजिनभ्वरना अंगबतावे परंतु तेउनेसर्वथा असत्यकहेनही केमके कर्त्तायेंषटदर्शनजिन अंगभणिजें एवुंपातकह्युं पणदर्शनएवुंनकह्युंमाटे. परंतुछएदर्शनते हेतुशुद्धचेतना तुजने समाराध नकरी निरममत्वी समपरिणामिछतो षडंगके० एस्तवनमांजेम छएमतोनेछएअंगोनो न्यासके०स्थापनकर्युंछे तेरीतेंजोकोइप्राणीसाधे तोसिद्धकरे तेकोणसिद्धकरेजे नमिप रमेश्वरनाचरणोपासकी एटलेचारित्रनी सेवानाकरनार निरममत्वी निरअहंकारी पुरुषोतेजेरीतेंएस्तवनमां परमेश्वरना अंगउपर छएदर्शनथाप्यातेवीज रचनायें आराधे के० साधनाकरीशके कर्त्तानोआशयतो एमजणायछे जेमात्रदर्शनीछे तेसर्वेएकेकन याश्रीतछे तेमनेतेतेनयेंसत्यकहे परंतुजेनयनावचनथी तेमनोपक्षउछपे तेवोवचन जेहांशुद्धी अन्यदर्शनी जैनदर्शनउत्थापक वचननकहेतिहांशुद्धी जैनीपणतेनेदूषव तोवचननजकहे केमकेएपणपरमेश्वरनाअंगछेतेमाटे॥१॥

जिनसुरपादपपायवखाणुं॥ सांख्यजोगदोयभेदेंरे॥ आ
तमसत्ताविवरणकरता॥ लहोदुग अंगअखेदेंरे॥ षट०॥२॥

अर्थ॥ हवेछएमतोमां जेजेमत परमेश्वरनुंजेजेअंगछे तेतेकहिबतावेछे एकसांख्य अनेबीजो जोगके० नैयायिक एबेदर्शन ते नमिपरमेश्वरना सुरपादपके० कल्पवृक्ष समानउपमांछेजेने एवा पायके० चरण वखाणुंके० व्याख्यानकरुं केमकेजेम शरीरनुंमंडाणपगोथी तेमजीवमात्रनुंमंडाणसत्तायकीछे तेमएबेदर्शनपण आत्मसत्तानुं विवेचनकरवावालाछे जेमसांख्यदर्शनकहेछे आत्ममात्र पुष्करपत्रवन्निरूप लेपप्रकृतिः कर्त्री तेहनेमुखआगलविकृति इत्यादिककथनघणुंछे परंतुआत्मसत्तानुं विवेचन छे तेमज नैयायिकपण आत्मामात्रमां सत्तातोएकजमाने परंतु एकजीवात्मा बीजो परमात्मा एमआत्मानीबेजातमाने तेमांजीवात्माते मात्रकार्यनुं कारणभूतमाने अने कर्त्तापरमात्मानेमाने एरीतेंहेतुशुद्धचेतना जेमसत्तासर्वेनुंमूल तेमअंगोनुंमूलपाद माटे एबेदर्शनते परमेश्वरना दुगअंगके० बेचरण ते अखेदके० प्रसन्नचित्तछता लहोके० जाणो एदर्शनोनुं विशेषस्वरूप षडदर्शनसमुच्चय प्रमुख ग्रंथोथीजाणवुं॥ २॥

भेदअभेदसुगतमीमांसक॥ जिनवरदोयकरभारीरे॥ लो
कालोकअवलंबनभजियें॥गुरुगमथीअवधारीरे॥षट०॥३॥

अर्थ॥ वलीसुगतके० बौद्धदर्शन अने मीमांसकदर्शन तेमां बौद्धदर्शनतो क्षणे

॥ अथश्रीनेमनाथजिनस्तवनलिख्यते ॥

॥ रागमारूणीधणराढोलाएदेशी ॥

अष्टभवंतरवालहीरे ॥ तुंमुजआतमराम ॥ मनरावाला ॥
मुगतिस्त्रीसुंआपणेरे ॥ सगपणकोइनकाम ॥ म० ॥ १ ॥
घरआवोहोवालिमघरआवो ॥ मारीआस्यानाविसराम॥म०॥
रथफेरोहोसाजनरथफेरो॥साजनमारामनोरथसाथ॥म०॥१॥

अर्थ ॥ नेमपरमेश्वर राजेमतिनुं पाणिग्रहणकरवामाटे तोरणेआव्या तिहांमृगती तरादिकपशुने सभयदेखी अभयबुद्धीयें सारथीनेकही रथपाछुंफेराव्युं तेसमयतुं रा जेमतिजीनुंवचन नेमपरमेश्वरथीछे अहोपरमेश्वर आठभवमां एकेभवनेविषे अवल्ल भनही पणभवभवनेविषे प्रीतपात्रछुं तेमाटेतुं माराआत्मानेविषे रमीरह्योछो एटले मारा हीजकमलनी पांखडीपांखडीहीत तुंरमिरह्योछो वसीरह्योछो तेमाटे मननावल्ल भछो प्याराछो माटेहेस्वामि मुक्तिस्त्रीसाथें आपणोस्त्रीभर्तारनो सगपण संबंधकरवा नुं कोइकामनथी केमके मुक्तिस्त्रीतो रूपरहितछे अनेहुंराजकुमरी शोभनरूपा एवी स्त्रीरत्नछतां रूपरहितमुक्तिस्त्रीथी संबंधकरवानुंस्योकाम अथवामाराउपर मुक्तिस्त्रीने लावशो तेवारेंतेस्त्री मारीशोकथसे अनेस्त्रीनेतो शोकनादुःखजेवुं मरणपणनथी तेथी तमारेमारे परमप्रीतीछे तेनुंनासकरवुंहोय तोतमेंबीजीस्त्रीलावो ॥ १ ॥ माटेअहो वालेसर उग्रसेनजीना घरनेविषेआवो इहांअत्यंतरागे रंजीतचित्तथी विकलचित्त थ्य न्यरूदयथइगइथकी राजेमतीकहेछेके मारीआस्याना विशरामके० धामतमेछो केम केमारेआधारें मारीआस्या आधेयपणेरहीछे तेथीहेमनवालेसरी विलंबमकरो मारी आस्यारूपवेलत्रुटीतो फरीसंधासेनही तेथीहेसाजनरथने पाछोवालोअने मारामनना मनोर्थ पुराकरो केमकेतमारारथने मारामनोरथजेवुं साथफरिमलसेनही॥२॥

नारीपखोस्योनेहलोरे ॥ साचकहेजगनाथ ॥ म० ॥ ६
श्वरअरधगेंधरीरे ॥ तुंमुजझालेनहाथ ॥ म० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ नारीविनास्यो स्नेह यद्यपिस्नेहनुवास रूदयांतरवर्तिछे परंतुनारीस्नेहल ताछे स्नेहरूपफलनीप्रापकाछे माटेनारीते शाक्षात्मूर्त्तवंतस्नेहजछे तेथीअहोनाथ जगतवासीजीवते नारीविनानेहनकहे तेसाचुंकहेछे जोकदाचित् नारीविनाज स्नेहथ तुंहोय तो महादेव सृष्टीसंहारकर्त्ताकहेवाय तेणेपोताना अर्धांगमां पार्वतीनारी

एसर्वांगोनी धाराके० प्रवाहनुं मिलापकरीने पीजेके० रसआस्वादनकरियें तेनिरम मत्वीगुरुनोबताव्योजेमार्ग तेविना सर्वांगदर्शननुं मिलापरूप तत्वनुंविचार तद्रूपसु धारसनीधारा शीरीतेंपानकरीशकीयें ममत्वरूपभुजनते पानकरतांढोलीआपे एरीतें पांचअंगवर्णव्या ॥ ४ ॥

जैनजिनेश्वरवरउत्तमअंग॥ अंतरंबगहिरंगेरे॥ अक्षरन्या
सधराआधारक ॥ आराधेधरीसंगेरे ॥ षट० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वलीजैनदर्शनते नमिपरमेश्वरनुं वरके० प्रधान सर्वअंगोमां शिरोमणी उत्तमांगते मस्तकछे केमके अंतरंगें जैनदर्शननाअनावें स्वस्वरूपप्राप्तिनथाय नथासे अने बाह्यांगेंजोइयेंतोपण एजैनदर्शनसर्वांसीछे केमकेएदर्शननुंकथन सर्वनयापेक्षी कछे तेमाटेअंतरंगें बाह्यांगेंपण उत्तमअंगजछे परंतुजेप्राणी. निरममत्वीछतो अक्षर न्यासके० एकेकअक्षरनुंस्थापन एटलेएअक्षरपहेलुं एवीजुं तेनीधराके० जूमिका स्थानक एटलेएपेहेला अक्षरने रहेवानुंस्थानक एवीजाअक्षरने रेहेवानुंस्थानक तेए केकाअक्षरनो आधारकके० आधारजूत एटलेआश्रयकरीनेरह्युं जेअर्थ तेअर्थने सं गेधरीके० साथेंकरीने जेसर्वांसीजैनदर्शनने आराधेके० आराधनकरें एटलेएकअक्ष रमात्रनुं उछेदनकरवुं तेतोवेगलुंरह्युंपण अक्षरआगलपाछलपण नकहेवुं एवोजैनद र्शननुं आराधनकरे एछदर्शन परमेश्वरनाछअंगछे तेवर्णव्या ॥ ५ ॥

जिनवरमांसघलादरिशणछे॥ दर्शनेजिनवरजजनारे॥ सा
गरमांसघलीतटनीसही॥तटनीमांसागरजजनारे॥ षट० ॥६॥

अर्थ ॥ एरीतें नमिपरमेश्वरमां सर्वदर्शनछे तेमाटे एछएदर्शन परमेश्वरना अंग छे पणएकेकादर्शननेविषे सर्वांगसत्तानपामियें एटलेसर्वदर्शनोमां सर्वांसें जैनदर्श ननपामियें तेनीजजनाछे केमके एकअंगेपामियें पणसर्वांगेंनपामियें जेमसमुद्रमां यावत्मात्र तटनीके० नदीओते सहीके० निश्चेंथीपामियें पण नदिओमां समुद्रनी जजनाजाणवी एटलेजेनदी समुद्रमांजलि तेमांसमुद्रनी वेलुनुंपाणीआवे एमनदीओ मांसमुद्रते एकदेशेंसंजवेछे तेरीतेंसमुद्रोपम जिनवरना एछएदर्शनते अंगकहियें॥६॥

जिनस्वरूपथइजिनआराधे ॥ तेसहीजिनवरहोवेरे ॥ जृं
गीइलीकानेचटकावे ॥ तेजृंगीजगजोवेरे ॥ षट० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ एरीतेंसर्वदर्शनोतुं एकजनावरूप जिनेश्वरदेवनुंस्वरूपके० आकारतेआका

प्रेमकरेजगजनसहुरे ॥ निरवाहतेओर ॥ म० ॥ प्री
तकरीनेछोमीदेरे ॥ तेसुंनचालेजोर ॥ म० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ संसारीजीवमात्ररागीछे माटेप्रीततोकरे केमकेसरागीपणुंते प्रीतरूपका र्यनुंकारणछे परंतुहीनाधिकवचन नविचारतां प्रीतनोनिरवाहकरे तेवाप्राणी ओर के० बीजाजाणवा पणतमेतेवानथी एटलेतमेप्रीतकरवामांछो परंतुप्रीतनुं निभावत मथीनथाय दोहा ॥ प्रीतरीतअतिकठिनहे समजकरइयोकोय नांगनखंतासोहली लहिरांसुसकलहोय ॥ १ ॥ तोहेवल्लभजेप्राणी प्रथमतोअत्यंतप्रीतबांधे फरीतेजप्री तनेछोडी त्रोडीनाखे तेप्राणीसाथेजोरनचाले जेमप्राणेप्रीतनथाय एवीकेवतछे॥७॥

जोमनमांएहवुंहतुंरे ॥ निसपतिकरतनजाण ॥ म० निसप
तिकरीनेछांमतारे ॥ माणससहुयेनुकसाण ॥ मन० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जोआपनाचितमां प्रथमथीजएवुंहतुंजे तोरणथीज रथनेपाछो फेरवसुं एटले प्रथमथीजमने छोडवानीइछाहतीतो जाणके० तेइछातमारामनमांजाणीने निसपतिकरतनके० संबंधनकरता एटलेतमोने मारीसाथें संबंधकरवुंयोग्यनहतुं ते तमेपोतेजविचारो पणस्त्रीमात्रनो जिहांसुधीसगाइनथयी तिहांसुधीसर्वजनथी संबंध छे अने जेवारेंसगाइथयी तेवारें तेपुरुषथीसंबधरह्यो पछेतेपुरुषजेवारेंछांमिआपे तेवारें तेस्त्रीनेबीजोपुरुषतो रांधेलीहांमीप्रायेंजाणीने नजवांछे अथवाकोइकवांछे तेने बीजापुरुषकहेके अहोजलाआदमी तमनेएविना बीजीकोइस्त्रीजगतमांनथीमलती सुं केमकेएनीतोसगाइथयीहती तेणेमूकीदीधी तेथीविषकन्यादिदूषणविना सगाइथ यापछे कोणमूके माटेसगाइथयापछेछांमवुं तेतो माणसनुं नुकसानछे तेहनेअछतुंदो षप्रगटकरीने कलंकितकरवुंछे ॥ ८ ॥

देतांदानसंवत्सरीरे ॥ सहुलहेवंछितपोष ॥ म० ॥ सेव
कवंछितनवीलहेरे ॥ तेसेवकनोदोष ॥ मन० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ हेस्वामीरथफेरीने घरेपहोतासुं एवेअवसरें लोकांतिकदेवतायें दीक्षानो अवसर नजीकजाणीने हेपरमेश्वरतुंबूज एवावचने अवसरजाणवतांज प्रभुसंवत्स रदान देवालागा तेथीसर्वप्राणीमात्र मनोवांछितनीपुष्टतापामें एटलेएकदानदीधुंतेन नोना घरनरीजदीधा एवीदाननीवर्षा वरसतांछतापण मुजजेवो परमसेवक तेकांइ पणवंछीतनपामें यथा पेडाखावेदूरका नूखामरेहजूरका अथवाघरनाछैयांघरटीचाटे

तेप्राणीनो आत्मस्वरूपरूप चिंतामणीरत्नते रागादिके अथवा दुष्टमतममत्वीठगो थीनवंचिजेके० ठग्योजायनही तेप्राणी अवंचकक्रियानुं जोगीथाय एटलेजेशुद्धसर ल स्वजाविक करणीनुंजोगीथाय तेमायावीवचनोथी ठगायनही इहांकोइकप्रतमां जेथ्यावेनेठेकाणेजेसाधे एवुंपाठछे तेनोअर्थ मुद्रावीजधारणादिकेंजे समयपुरुषने सा धे तेक्रियाअवंचकनोजोगीहोय एपदनुंरहस्यकर्त्ताजाणे मुफनेतोनजास्यो ॥ ए ॥

श्रुतअनुसारविचारीबोलुं ॥ सुगुरुतथाविधिनमिलेरे ॥ किरिया करीनविसाधिसकीयें ॥ एविषवादचित्तसघलेरे॥षट० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हवेहेशुद्धचेतना एकालेंजेप्रवर्त्तेने मारोकालक्षेपथायछे तेमतुफनेकहुंछुं तेसांजल एजैनदर्शननुं श्रुतके० सिद्धांतनुं नैगमादिक नयानुजायीकथनछे तेवचन वर्गणायें कहेतांछतां किहांनुंकिहांनिसरीजाय माटे अनुसारके० तेपाठने नजरआग लराखी अर्थकर्त्ता विचारीविचारीबोलुं परंतुसिद्धांतमां यथाविधगुरुनो लक्षणकह्युंछे जेविशुद्धश्रद्धावंत ज्ञानी आत्मार्थी परोपकारी निरमायी निरममत्वी कथनीकरणी सम सप्तनयानुंजायी जिनप्रवचन विशुद्धजाषी तथाविधके० तेवोसोजनगुरुनी जो गवाइमुफनेनमिले तेथीसूत्रमर्यादायें विचारीनेबोलुंतोसुंथयुं परंतुतेमर्यादामांरहीनेसा धुसंबंधी क्रियाकरी प्रवर्त्तताने उदयआव्युंजे साधुपणुंते नविसाधीसकीयेंके० सिद्ध करीनशकीयें केमकेश्रुतमर्यादायेंपण चारित्रसाधवी अतिकठिनछेमाटे एएक अनेबी जो तथाविधगुरुनी योगवाइनमिले तेथीतेवीक्रियानकरीशकुं माटेव्रतोजेषधारीछुं तो पणकोइपुछेतुंकोणछो तिवारेंमहाहीनवचने पोतानामुखथीकहुंजे हुंजैननोजंदोछुं ते थीसमस्त चित्तनेविषेप्रदेशप्रदेशें विषवादके० उदासीनतालागीरहीछे ॥ १० ॥

तेमाटेउजाकरजोमी ॥ जिनवरआगलकहीयेंरे ॥ समयचर णसेवाशुद्धदेजो ॥ जेमआनंदघनलहीयेंरे ॥ षट० ॥११ ॥

अर्थ ॥ माटेहेशुद्धचेतनातुं तथाहुंअने त्रीजीशुद्धश्रद्धा आपणेत्रणे परमेश्वरआ गल बेहाथजोडी उजाथकाकहियें जेहेपरमेश्वर तमारोजाषित समयके० सिद्धांतसं बंधी शुद्धचारित्रतेनी सेवाके० सेववुंप्रवर्त्तवुंतेदेजो जेमअमेपणआनंदनासमूह ल हियेंके० पामियें अथवा हेपरमेश्वर मारे चरमावर्त्तन चरमकरण जवपरिणतिना प रिपाकसमयें शुद्धआगमोक्त चारित्रनीसेवादेजो अथवा चरमावर्त्तनादिककालें शुद्ध आगमोक्त तमाराचरणकमलनीसेवादेजो जेमआनंदघनपदपामियें ॥ ११ ॥ इति श्रीनमिजिनस्तवनसंपूर्ण ॥

अर्थ ॥ हेस्वामी सर्वलोकमुजने आवीकहेले जेएताराजत्तारनी सीत्रावलेजे तोर णेआव्या तुंजनेमूकीगया तेवारेंअमे सर्वलोकेंजाएयुजे नेमनाथथी कामरूपीओ रो गगयुं तेमाटेब्रह्मचारीले परंतुराजेमतीएकरहितोसुं पणतेंतो अनेकांतिकनोगवेले ने फरीब्रह्मचारी कहेवायले तेथीतुंजइनेसमजाव केजोब्रह्मचारीनामकहावोतो हुंअर जकरुंबुं जे एकगुह्यघटतुंनथी एटलेलोकजाणीशके एशानोगुह्यबुपाववुं सुंलोकसर्व जाणेजे एअनेकनोगवेले नेफरीब्रह्मचारी निःकामीनामधारवुं एतोअघटतुंगुह्यले घटतुं गुह्यतो तेनेकहियें जेनेलोकनजाणीशकें अनेजोलोकेजाणीलीधु तोशानोगुह्य चतुर नोगुह्यतो जन्मारोवहिजाय तोपणकोइलोक जाणीशकेनही परंतु तमारोगुह्यतो हवेरह्युंजनही लोकमां प्रगटथयीगयुं जे अनेकनेनोगवोजलो तोएक मनेनोगववा मां सुब्रह्मचर्यनो नंगथयीजायले अनेजो ब्रह्मचर्यने अखंमपाल्याचाहोलो तो अने कांतनेंनोगववुं मूकीद्यो पणतमेतो बेघोडेचडोलो अनेकांतनेंनोगवोलो नेफरी ब्रह्म चारी नामधरावोलो ॥ १२ ॥

जिणजोणीतुमनेजोउंरे ॥ तिणजोणीजोवोराज ॥ म० ॥
एकवारमुजनेजुओरे ॥ तोसीजेमुजकाज ॥ म० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हेस्वामीहुं जिणजोणीके० जेजोवानीरीतें तुमने जोउंके० देखुं एटलेस रागवर्त्तियें एकाग्रतदाकारें सन्नुखनेत्रें हुंतमोने निरखणकरुंबुं तेमारानेत्रोथी निरखवा नुंसराग मारामनथी बिप्युंनथी माटेहुंआपथी अरजकरुंबुं केजेरीतें हुंतमोने निरखुं बुं तेवीजरीतें तमेपण मुजनेरात्रदीवस रूदयनेत्रेंजूओ तोमोटीकृपाकरो कदाचितरात्र दिवसनजूओतोरह्युं पणएकवारतो मुजनेजूओ तोपणमारोवांछितकार्य सिद्धथाय १३

मोहदशाधरीनावनारे ॥ चित्तलहेतत्वविचार ॥ म० ॥ वी
तरागताआदरीरे ॥ प्राणनाथनिरधार ॥ म० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एटलासुधीतो राजेमतियें पोतानी सखिओसंघाते श्रीनेमनाथ संघातें मोहदशानी विवस्थासंबंधी मोहनीना वचननाष्या हवेचित्तमां मोहदशायें बधाणो मन तेजमननेविषे नावनाके० बारनावनामांथी इहांप्रस्तावें एक एकत्वनावनाज उचितले फरिएजनावनानेआशयें सूत्रकर्त्तायें पाछलीगाथाना उत्तरपदमां एकवारमुज नेजूओ एमकेहेवाथी राजेमतीजीयें जेटलामोहमयी वचनकह्या तेकेहेताछतांजचित मां एकत्वनावनाआवी एटलेमारोआत्मद्रव्यतेमाराआत्मप्रदेशोनेआधारेंरह्योले तो मारेतेओने शोसंबंधले एवो आत्मतत्वनो विचारके० नेदते राजेमतीजी पाम्याथका

ने केमधारीलीधुं नकरवायोग्यकार्यकर्युं तमनेतोतेमकरवुंनथी पणसगाइकरीने पाणिग्रहणतो सर्वजगतकरेछे अनेतमेमुजने हाथेनहीजालो करपीडनतोकरो ॥ ३ ॥

पसुजननीकरुणाकरीरे ॥ आणीहृदयविचार ॥ म० ॥
माणसनीकरुणानहीरे ॥ एकुणघरआचार ॥ म० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हेप्रभुतमेपसुजननी करुणानोविचार हृदयमांआण्यो जे एटलापसुओनो संहारथसे माटेधिःकारपडोमारापरणवाने तोएवाअविवेकी प्राणीओनीदयाकरीने रथपाछोफेरव्यो तोतेथीअसंख्यातगुण पुंण्यप्रबल एवामुजसरिखा माणसनीदयानथी आवती एक्याघरनोआचार एटलेजगतमां हीनमांहीन अधिकमांअधिक जातोना घरोमात्रमां एवुंप्रवर्त्तननथीजणातुं ॥ ४ ॥

प्रेमकल्पतरुछेदीयोरे ॥ धरियोजोगधतूर ॥ म० ॥ च
तुराइरोकुणकहोरे ॥ गुरुमिलियोजगसूर ॥ म० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हेस्वामी तमे जेमकल्पवृक्ष आभवसंबंधी मनोवांछकछे तेमप्रेमरूपकल्पतरुपण आभवसंबंधी मनोवांछितनो पूरनारोछे एटलेस्त्रीओना भलारूप हावभाव मुखविकार मंदहास्य वक्र तीक्ष्णकटाक्ष तेमजमनभावता षटरसभोजन तथाअंतर पुष्पादिकनीसुरभि इत्यादिकमनोवांछित प्रेमकल्पतरु जछेदीने योगरूपधतुरो धारणकर्यो केमकेक्षुधापिपासा शीतउष्णदंशमशक तेशरीरनीसाताने विषप्रायछे अशाताना कारकमाटे धतुरप्राय तोहेमनवल्लभ एवोतमोने जगतमां सूरके० यावत्मात्र चंद्रमाग्रहनक्षत्रतारास्थाने चतुराइनोसीखवनारोगुरु कहोनेस्वामीकोणमिल्युं आपने हाथें रत्नप्रायेंकिहांथीचढ्यो ॥ ५ ॥

मारुंतोएमांक्युंहीनहीरे ॥ आपविचारेंराज ॥ म० ॥
राजसभामेंबेसतांरे ॥ किसडीबधसीलाज ॥ म० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हेराजन् मनेमूकीनेतमेजाओछो तेमांमारीतो बदनामोसी किंचितमात्र नथी केमकेतमे पोतानीइछायें रथपाछोफेरव्यो तेथीमेंअकार्यकर्युं एमकोइकेसेनही पणतमेमुजने परिहरोछो तेतमेंपोतेतमारा चित्तमांजविचारो जे तमेंतमारावरोबरिया राजानीसभामां जयीबेसशो तेवारें किसडीके० केवीशोभापामशो एटलेघणातोनकहेशे पणकोइकवहुबोलोहशे तेतमनेसभामां आवतादेखीने कहेसेजेजूओ आपुरुषत्व धर्मवंत पुरुषआव्या तेवारें केवीलाजवधशे, घणीसरमजेवीवातछे माटेहजीकांइवग डयुंनथी तेथीरथपाछोफेरवो ॥ ६ ॥

कारणरूपीप्रभुनज्योरे ॥ घण्योनकाऊअकाज ॥ म० ॥
कृपाकरीमुझदीजीयेरे ॥ आनंदघनपदराज ॥ म० ॥१७॥

अर्थ ॥ अहोनेमनाथ परमेश्वर मेंतमोनें नज्योके० सेव्यो तेकारणस्वरूपीसेव्यो एटले मारामनमां परमेश्वरना स्वरूपरूप कारणप्रवर्त्ति प्रवर्त्तशे तेवारेंमारुं आत्म स्वरूपरूपकार्य सिद्धथासे निश्चेंथीएमजाणीने नज्यो परंतुतमारोसेवनकरतेछते मेंका र्येअकार्य गण्योनही एटलेजेम संसारीनेशब्दादिकनुं सेवनतेकरणीय अनेदीक्षानुंसे वनते अकरणीय तेबेहुनेगण्योनही एकपरमेश्वरने स्वरूपेंजसेव्यो माटेहेपरमेश्वर ह वेमाराउपर कृपाकरीने अथवा कृपाके० प्रसन्नथयीने आनंदघनके० निरवाणपद संबंधी राजके० ठकुराइ तेमुझने दीजीयेंके० बक्षीयें ॥ १६ ॥ इतिनेमनाथजिनस्त वन संपूर्ण ॥ इतिश्रीआनंदघनकृत बावीसीसंपूर्ण एबावीसतवनोनोटबो ज्ञानसार जीयें श्रीकृष्णगढेरहीने सवंत१७६६ना जादरवासुद १४ नादीवसेंकर्युंछे तेनोनावा र्थ लहीनेछाप्युंछे तेमांजूलचूकरहीहोयते वाचनारसज्जनोए शुद्धकरीवांचवुं हवेफरी आनंदघनजीना पोतानाजकरेला छेलाबेतवनोहता तेबेप्रतउपरथी जडया तेबेप्रत नालखनारें एवुंलख्युंहतुंजे एतवनोआनंदघनजीनास्वकृतछे माटेतेबेतवनलिखीयें छैयेंअनेएबेस्तवननोटबो ज्ञानविमलजीकृतछे एवुंएकप्रतमांलख्युंहतुं ॥

॥ अथश्रीपार्श्वजिनस्तवनलिख्यते ॥

॥ रागसारंगरसीआनीदेशी ॥

ध्रुवपदरामीहोस्वामिमाहरा॥निकामीगुणराय॥सुग्यानी॥ निजगुण
कामीहोपामीतुंधणी ॥ ध्रुवआरामीहोथाय ॥ सुग्यानी ॥ ध्रु० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ ध्रुवके० निश्चलपदजेसिद्धतापणुं तेना रामिके० रमणहारजेप्रभु तेमारा स्वामीछे वली कामकंदर्पना अभिलाषरहितछे माटेनिःकामीछे तथा अष्टगुणेकरीस हित माटेगुणरायछे अव्याबाधसुखना जोगीछे केवलज्ञानेसहितमाटे सुग्यानीछे पो तानागुणना अभिलाषीछे एटलेस्वस्वभाव प्रगटथातेनाअर्थीछे माटेसम्यक्दृष्टीजीव ते तमाराजेवो धणीपामीने ध्रुवपदआरामीके० अचलसुखी नित्यआत्मारामीथाय केमकेजे परमात्मानेसेवे तेपरमात्माथाय ॥ १ ॥

सर्वव्यापीकहेसर्वजाणंगपणे॥परपरिणमनसरूप॥सु०॥प
ररूपेंकरीतत्वपणुंनही॥स्वसत्ताचिदरूप॥सु०॥ध्रु०॥२॥

पाडोसणनेपेडा एकेवतहेप्रनुतमे साचीकरीबतावी पणतेसर्वेहुं तमारीसेवकनोजदो थतें एटलेतेसर्वेना नोगकर्मनो उदयहतुं तेणेतमथीऽव्यपामी अनेमारेआजवें तमारीसाथें नोगोपनोग कर्मनाउदयनो असंनव माटेवंढीतपोषनपामुं तेमारापूर्वकृतना उदयनुंदूषणछे ॥ ए ॥

सखीकहेएसामलोरे ॥ हुंकहुंलक्षणसेत ॥ म० ॥ इणल
क्षणसाचीसखीरे ॥ आपविचारेहेत ॥ म० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ आजसुधी जेटलापुरुषमेंपारख्या ते तेमजनिवड्या परंतुतमनेहुं परखीश कीनही केमकेजेटाणे सगाइथयी तेटाणे मारी सखीनावर्गें मने कह्युंजे एतमारोनतार बाहिरतेमजअंतरपणइयामछे तेवारेंमेकह्युं एबाह्यतोश्यामछे पणअंतरथीलक्षणे से तके० उज्वल निष्कपटीछे परंतु नलाराजनी पुत्रीयोथी प्रथमसंबंधकरीने पछेते नेकालीधारे धसकाइदेवी एलक्षणेतो सखीओनावर्गेंनुंकेहेवुं साचुंथयुं मारीपरीक्षा सर्वनिरर्थकथयीएरीतेंजे हेतके०कारणकह्या तेमांअसत्यहोयतोतमेंविचारीनेदेखो १०

रागीसुंरागीसहुरे ॥ वैरागीस्योराग ॥ म० ॥ रागविना
किमदाखवोरे ॥ मुगतिसुंदरीमाग ॥ म० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ माटेहेप्रनु हुंसरागणीछुं तेमतमनेपण सरागीथवुं योग्यछे केमके जगतनीएनीतछे जेपोताथी रागराखे तेथीसहुरागजराखे पणजेपोते वैरागीके० रागरहितहोय तेनेकोइथी सानोरागहोय तेमहुंतमाराऊपर रागवंतछुं माटेतमारामांपण जोरागहोयतो तमेमुजथीरागराखो पणतमारामां रागवस्तुजनथी तेथीतमारेकोइथी रागछेहेखुंनही तो माराथी शानोरागहोय हवेराजेमती पोतानामनमां स्वामीनेस्थापन करी मनवचनयोगथी उलंनारूप वीनतिकरेछे हेस्वामी पोतानावचनथीपण यथास्थितवात बतावबानोनीतीनापक्षें अटकावनथी तेमाटेजोतमें रागीनथी तोरागनेअनावें जेमर्गेंप्रवर्त्तिने मुक्तिस्त्रीपामियें तेनेमुगतिसुंदरीमार्गकहियें तेमार्ग वारेपरखदामां सर्वने सांजलताकेम दाखवोके०देखाडो तेमाटे कोतेंहोयतेहोतें तेथीएमजणायछे जेतमारो तेमुक्तिस्त्रीथीरागछे माटेजसर्वे समक्ष लज्जाअवगणीने स्मरोछो तेथीछतेरागेंमुजनेकेमपरिहरोछो अनेंजेना अनेकनत्तीरछे एवीमुक्तिनेवांछोछों एक्याघरनोआचार ११

एकगुह्यघटतुंनथीरे ॥ सघलोईजाणेलोक ॥ म० अने
कांतिकनोगवोरे ॥ ब्रह्मचारीगातरोग ॥ म० ॥ १२ ॥

-यातेपेसीशकेनही एटलेआत्माना आठरुचकप्रदेशतिहां कर्मग्रहणरूपयोगक्रियानथी वलीयोगनी ध्रुवताके० निश्चलताछे तेनोलेशजिहांहोय तिहांआत्मशक्तिप्रतेंकोइक मेंखसावीशकेनही एटलेतेप्रदेशें आवरणजावनकरे ॥ ४ ॥

कामवीर्यवशेंजेमभोगी ॥ तेमआतमथयोभोगीरे ॥ सूरप णेआतमउपयोगी ॥ थायतेहनेअयोगीरे ॥ वी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ जेमकामके० अभिलाषीवीर्यनेवसेंजेमभोगीपुरुष सर्वपरभावनेवांछे तेम आत्मापरभावनो भोगीथयो अनेतेहिज आत्मा सूरपणेपरिणमे जेमारास्वरूपविना परभावमांपेसवुंजनही एवीप्रतिज्ञापालतो आत्मोपयोगीथातो अयोगीपणुं प्रगटकरे एवोसूरवीरपणुं हेवीरपरमेश्वर तमारूंघणुंउत्कृष्टोछे ॥ ५ ॥

वीरपणुंतेआतमठाणे ॥ जाण्युंतुमचीवाणेरे ॥ ध्यानविनाणे शकतिप्रमाणे ॥ निजध्रुवपदपहिचाणेरे ॥ वी० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ एवुंवीरपणुंतें आत्मानेस्थानकेंछे एटलेआत्मामांहेजछे तेमेंतुमारीवाणी थीजाण्युं तेहवे ध्यानने विज्ञाने तथाशक्तिनेप्रमाणे जेमजेमआत्मानुं मूलवीर्य वी रपणोचितवीयें जाणीयें तेमतेमजीवतेमांरमीने पोतानो ध्रुवपदके० निश्चलपरमानं दपदने पहिचानेके० उलखे ॥ ६ ॥

आलंबनसाधनजेत्यागे ॥ परपरिणतिनेभागेरे ॥ अक्षयद र्शनज्ञानवैरागें ॥ आनंदघनप्रभुजागेरे ॥ वी० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥परंतुते परनेअविलंबनकरी जेसाधनकरवुं तेनेत्यागें एटलेपरालंबनपणुं छां मे परपरिणति भागेके०जाय तेथीअक्षय अप्रतिपाति क्षायिक केवलदर्शन केवलज्ञान अनेवीतरागताते यथाख्यातचारित्रें लयलीनथयोथको आनंदघनशब्दें परमानंदमय प्रभुताजागे॥ ७ ॥ इतिश्रीमहावीरजिनस्तवनसमाप्त ॥ इहां श्रीज्ञानविमलसूरियें तथापंमित देवचंद्रजीयेंपण एचोवीसीना पाछलाबे स्तवनकर्याछे तेमांज्ञानविमल जीयेंतोचोवीसेस्तवननो टबोपणकर्योछे अनेदेवचंद्रजीकृतटबोनथी कदापिहतेतो पण मारेजोवामां तथा सांभलवामां आव्युंनथी तोपणइहां बावीसस्तवनोनो बा लबोध ग्यानसारजीना करेला बालबोधउपरथी संक्षेपीनेलख्युं माटेएमनाजकरेला पाछलाबेस्तवनो अर्थसहितनीचें लखियेछैयें ॥

पोतानीआत्माने कहेछे केहेआत्मा प्राणनाथके० प्राणोनानाथजे नेमनाथ स्वामी ते णे निरधारके०, निर्ग्रंथकी वीतरागता आदरीके० ग्रहणकरी तोहेआत्मा ताराराग एह्नुनेकेमनेदीशके तेमाटे एहतुंनेमारो शोसंबंध एमएकत्वनेविचारताहुवा ॥ १४ ॥

सेवकपणतेआदरेरे ॥ तोरहेसेवकमाम ॥ म० ॥
आशयसाथेंचालीयेरे॥एहीजरूडुंकाम॥म०॥१५॥

अर्थ ॥ हवेराजेमतीजी नीतीनापक्षें सन्मुखदृष्टीयें एकत्वनावना नावनकरेछे हेमाराआत्मा तने नेमनाथजीसाथें स्वामीसेवक संबंधकरवुं योग्यहतुं केमके ते संबंधकस्या उपरांत परवशवर्त्तिपणे प्रवर्त्तवुंपडे अनेजे परवशवर्त्तिपणे प्रवर्त्तवुंते स्वेछाचारीने नरकप्रायछे परंतुएवात प्रथमथीविचारवी योग्यहती हवेपाछलथी विचारकरेशीसिद्धी तेमाटे स्वामीयें वीतरागता आदरी तेज सेवकपण निर्ग्रंथीअंगीकार करे तेवारें सेवकनो मामके० धर्मस्थिररहे माटेअहो माराआत्मा स्वामीनामननो आशयके० अनिप्राय तेनीसाथेंचालीयें एटले अनिप्रायानुंजायी चालियें स्वामीना आशयसाथें प्रवर्त्तवुं तेजरूडुंकामछे एटले सेवकनोसेवकत्वधर्म तेएहिजछे जेपोताने हित अहितनजूए पणस्वामिनी आज्ञाप्रमाणेवर्त्ते एजसेवकपणानुं लक्षणछे ॥१५॥

त्रिविधयोगधरीआदर्योरे॥ नेमनाथनरतार ॥ म० ॥धार
णपोषणतारणोरे ॥ नवरसमुगताहार ॥ म० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ माटेश्रीनेमनाथ स्वामियें त्रिविधधरीके० त्रणप्रकारनेधरी योगआदर्यो एटले मनथी वचनथी अनेकायथी योगआदस्यो तोतेजआशयलेइनें मुफनेपण तेज योगधारवुं रूडुंकामछे परंतुमारामनना वल्लनश्री नेमनाथ नर्त्तारकेहवोछे माराआत्मिकगुणानो धारणके० आधारछे वलीमारा आत्मिकगुणोनो पोषणके० पुष्ठनुंकरनारपण एहिजछे तेमज मारेसंसारसमुद्रथी तारनारपण एहिजछे वलीशृंगार हास्य करुणा रौद्र वीर नयानक बीनत्स अद्भुत शांत एनवरसरूप मुगताके० मोतीनोहार माराकंठनोशृंगाररूप तेएहिजछे एटले निरुपम आत्मिकस्वरूपते अद्वितीयशृंगार अनादिकनकोपलनीपरें प्रकृतपुरुषनी जोडीथीवियोग तेथीअतींद्रियनो हृषोंत्कर्षतेथयुं परमहास्यरस्य सर्वजंतुनें अनयदानदेवुं तेकरुणारस कर्मनेविदारवुं ते रौद्ररस इत्यादिक सर्वरसोनोसंनव यथातथ्यविचारीलेजो आइंलिखतां वधीजाय माटेनलख्युं एनवरसोना अनअनंतरनाव तरंगरूप घणामोती तेमाटेहारसंज्ञाबांधी॥१६

यातेपेसीशकेनही एटलेआत्माना आठरुचकप्रदेशतिहां कर्मग्रहणरूपयोगक्रियानथी वलीयोगनी ध्रुवताके० निश्चलताछे तेनोलेशजिहांहोय तिहांआत्मशक्तिप्रतेंकोइक मेलवावीशकेनही एटलेतेप्रदेशें आवरणभावनकरे ॥ ४ ॥

कामवीर्यवशेंजेमभोगी ॥ तेमआतमथयोभोगीरे ॥सूरप
णेआतमउपयोगी ॥ थायतेहनेअयोगीरे ॥ वी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ जेमकामके० अभिलाषीवीर्यनेवसेंजेमभोगीपुरुष सर्वेपरभावनेवांछे तेम आत्मापरभावनो भोगीथयो अनेतेहिज आत्मा सूरपणेपरिणमे जेमारास्वरूपविना परभावमांपेसवुंजनही एवीप्रतिज्ञापालतो आत्मोपयोगीथातो अयोगीपणुं प्रगटकरे एवोसूरवीरपणुं हेवीरपरमेश्वर तमारूंघणुंउत्कृष्टछे ॥ ५ ॥

वीरपणुंतेआतमठाणे ॥ जाण्युंतुमचीवाणेरे ॥ ध्यानविनाणे
शक्तिप्रमाणे ॥ निजध्रुवपदपहिचाणेरे ॥ वी० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ एवुंवीरपणुंते आत्मानेस्थानकेंछे एटलेआत्मामांहेजछे तेमेंतुमारीवाणी थीजाण्युं तेहवे ध्यानने विज्ञाने तथाशक्तिनेप्रमाणे जेमजेमआत्मानुं मूलवीर्य वीरपणोचितवीर्यें जाणीयें तेमतेमजीवतेमांरमीने पोतानो ध्रुवपदके० निश्चलपरमानंदपदने पहिचानेके० ओलखे ॥ ६ ॥

आलंबनसाधनजेत्यागे ॥ परपरिणतिनेभागेरे ॥ अक्षयद
र्शनज्ञानवैरागें ॥ आनंदघनप्रभुजागेरे ॥ वी० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥परंतुते परनेअविलंबनकरी जेसाधनकरवुं तेनेत्यागें एटलेपरालंबनपणुं छांमे परपरिणति भागेके०जाय तेथीअक्षय अप्रतिपाति क्षायिक केवलदर्शन केवलज्ञान अनेवीतरागताते यथाख्यातचारित्रें लयलीनथयोथको आनंदघनशब्दें परमानंदमय प्रभुताजागे ॥ ७ ॥ इतिश्रीमहावीरजिनस्तवनसमाप्त ॥ इहां श्रीज्ञानविमलसूरियें तथापंडित देवचंद्रजीयेंपण एचोवीसीना पाछलाबे स्तवनकर्याछे तेमांज्ञानविमलजीयेंतोचोवीसेस्तवननो टबोपणकर्योछे अनेदेवचंद्रजीकृतटबोनथी कदापिहसेतो पण मारेजोवामां तथा सांभलवामां आव्युंनथी तोपणइहां बावीसस्तवनोनो बालवोध ग्यानसारजीना करेला बालबोधउपरथी संक्षेपीनेलख्युं माटेएमनाजकरेला पाछलावेस्तवनो अर्थसहितनीचें लखियेछैयें ॥

अर्थ ॥ हेप्रस्तुतमने सर्वज्ञपणामाटे केटलाक सर्वव्यापीकेहेछे तेतोआरोपेंघटेछे प रंतुजो वस्तुधर्में सर्वव्यापिकहेतो दोषऊपजे केमके जेपरमांव्यापे तेपरपणेपरिणमे अनेपरपरिणमन स्वरूपथयेतो द्रव्यनुं अस्थिरस्वनाव तथा अनव्यस्वनावरूप दूष णथाय वलीपररूपे एटले अन्यद्रव्यरूपेंथयो तोतत्वपणुंनजहे माटेपोतानीसत्ताज चिद्रूपज्ञानस्वरूपछे तेणेकरी तत्वपणुंकहियें ॥ २ ॥

ज्ञेयअनेकेंहोज्ञानअनेकता ॥ जलनाजनरविजेम॥सु० द्रव्यए
कत्वपणेगुणएकता ॥ निजपदरमताहोखेम॥सु०॥ध्रु० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वलीज्ञेयजे सर्वद्रव्यते अनेकछे तेनेज्ञानेकरीजाणे तेणेकरी आत्मानुंज्ञान अनेकछे एटलेज्ञेयनाभेदें ज्ञानपणअनेकरूपछे यद्यपिसूर्यएकछे तोपण जलनाजन मां प्रतिबिंबपडवेकरी अनेकजणायछे तेमज ज्ञानगुणाधिकरणभूत सर्वआत्मनावनुं अस्थलीभूतजे जीवद्रव्य तेनेएकपणे गुणनोपणएकपणो जाणवो केमके पर्याय अविनाग अनेकता पणज्ञायकरूपकार्यअभेदें ज्ञानगुणएकछे तेथीसर्वगुण पोतपोतानुं खेत्रजेद्रव्य तेमां रमतां क्षेमकल्याणछे एटलेकोइगुण परपरिणामीनथी ॥ ३ ॥

परक्षेत्रेंगतज्ञेयनेजाणवे ॥परक्षेत्रेंथयुंज्ञान॥सु०॥ अस्तिप
णुंनिजक्षेत्रेंतुमेकह्यो॥निर्मलतागुणमान॥ सु० ॥ ध्रु० ॥४॥

अर्थ ॥ स्वअवगाहनाथी परके० अन्यक्षेत्रेंरह्युंजे जीवद्रव्य तथाअजीवद्रव्यरूप ज्ञेय तेनेमात्रजाणवेकरीने एज्ञानपरक्षेत्रीथयुं पणजेगुणीहोयतें गुणथीअभेदपणेहोय तेथी ज्ञानते निजक्षेत्रेंके० पोताना असंख्याताप्रदेशें आत्मामध्ये व्यापकपणेरह्युंछे तेमाटेतुमेएने अस्तिपणुंकह्युं तेज्ञानमां निर्मलतास्वनावछे तेथीएज्ञानमां द्रव्यआरीसानीपरें नासेछे परंतुज्ञानने क्षेत्रें ज्ञेयजातोनथी अनेज्ञानते ज्ञेयमांआवतुंनथी ॥४॥

ज्ञेयविनासेंहोज्ञानविनिश्वरू ॥ कालप्रमाणेंरेथाय ॥ सु०॥
स्वकालेंकरीस्वसत्तासदा ॥ तेपररीतेंनजाय॥ सु०॥ध्रु०॥५॥

अर्थ ॥ कोइकेहेसेजे ज्ञेयघटपटादिकने विनाशें ज्ञानपणविनाशीकछे अतीतअनागत वर्त्तमानने परावर्त्तें जे अनागतपर्यायतेवर्त्तमानपणुं पामे वर्त्तमानपर्यायते अतीतपणुंपामे तेसर्वपर्यायनो नासनधर्मज्ञानमध्येछे तेनासनपर्याय एरीतें परिणमेछे तेथीज्ञानमध्ये विनाशीकधर्मछे तेनेउत्तरकहेछेजे स्वकालेंकरी पोतानाउत्पादव्यय

नयाश्रयीतोयके० आत्माछे तेजआत्मा निश्चेनयविचारियेंतो आठरुचकप्रदेशथीएआ त्मातुं स्वरूपत्रणेकालें अखंडितछे अणाइएअपज्जवसिए एजंगमाटेअनादिछे आत्मा नेसर्वथा ज्ञाननोअजाव नथयोमाटे अचल त्रणेकालें अनाशअपेक्षायेंनित्यछे अबाधि तते अनादिस्वरूपनी अपेक्षायें बाधापीडानहीमाटेअव्याबाधएरीतें सोयके० आत्माछे

अन्वयहेतुव्यतिरेकथी ॥ अंतरोतुजमुजरूपरे॥ अंतरमे
टवाकारणे ॥ आत्मस्वरूपअनूपरे ॥ पास० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हेप्रभु अन्वयहेतुथी तथा व्यतिरेकहेतुथी एटले स्वरूपनेअजावें परमा त्मानोअजाव तेथीताराऊपथी तुं रहित तेनेव्यतिरेक कहियें तेव्यतिरेकहेतुथी तारा मारास्वरूपमां अंतरके० जेदपड्योछे तेतारेमारे अंतरमिटाववाने अन्वयहेतु का रणछे अनूपके० निरुपम एवोजेतारात्मानुं आत्मस्वरूपते अन्वयहेतुथीछे एटले जेछते तेछतुंते अन्वयकहियें ॥ ४ ॥

आतमतापरमात्मता ॥ शुद्धनयजेदनएकरे ॥ अवरआ
रोपितधर्मछे ॥ तेहनाजेदअनेकरे ॥ पास० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हेप्रभु माराआत्मानेविषेरह्यो जे आत्मत्वधर्म तेनेविषेरहीजे आत्मताते मां अने परमात्मानेविषेरहीजे परमात्मतातेमां जेदकिंवाअजेद तेनुंउत्तरजे हेआनं दघन ताराआत्मा अने मारापरमात्मामां शुद्धनयके० निश्चेनयथीकोयजेदनथी के मके अवरके० स्वरूपथी व्यतिरिक्त यावन्मात्र जेटलासंयोगजन्य आरोपितधर्मछे कर्मेआरोपितछे तेनाअनेकजेदछे यथा कबहुंहाटककबहुंनाटक काटककबहुंक हुं कबहुंसाटककबहुंफाटक चेटककबहुंरहुं करमकीकैसीवातकहुं एमअनेकजेदछे॥५॥

धरमीधरमथीएकता ॥ तेहमुजरूपअजेदरे ॥ एकसत्ता
लखएकता ॥ कहेतेमूढमतिखेदरे ॥ पास० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हेआनंदघन आत्मत्वधर्मेसहिततेआत्मा तेनारूपमां अनेमारास्वरूपमां अजेदपणुंछे केमके आत्मत्वधर्मे सहितहुंछुं तेमजबीजोजेआत्मत्वधर्मे सहितथयो तेमांअने मारामांजेदकांइनथी परंतुपरमात्मानी सत्ताजेमनिर्मलछे तेमहुंशरीरमांरह्यो थको त्रणेकालें कर्मलेपरहित निर्मलछुं एवुंजे एकताके० एकतापणुंते अद्वैतपक्षी लखके० लिखेछेकहेछे तेनेविषे मूढमतिके० मूर्खबुद्धीनो खेदके० प्रयासछे एट ले हठग्राहीपणे अतात्विकपणुंछे ॥ ६ ॥

॥ अथश्रीमहावीरजिनस्तवनलिख्यते ॥

॥ रागधन्यासरी ॥

वीरजीनेचरणेलागुं ॥ वीरपणुंतेमागुंरे ॥ मिथ्यामोह
तिमिरभयभागुं ॥ जितनगारुवागुंरे ॥ वी० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हुंश्रीमहावीरभगवान चोवीसमातीर्थंकरनेपगेलागीने क्षायकवीर्यपणुंमां गुंछुं जेवीर्यनाउल्लासथकी मिथ्यात्वते कुश्रद्धारूप तथामोहतेमूढतारूप तद्रूपजे तिमिरके० अंधकारनुंभय तेदूरगयुंछे एवा हेप्रभुतमेअनादिकर्मशत्रुजीतिने जीतनोन गारुंवजाव्यो तेवीर्यमांगुछुं जेवीर्यथीहुंपण कर्मशत्रुनेजीतुं ॥ १ ॥

छउमथ्थवीरयलेस्यासंगे ॥ अभिसंधिजमतिअंगेरे ॥ सु
क्षमथूलक्रियानेरंगे ॥ योगीथयोउमंगेरे ॥ वी० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हेप्रभुछद्मस्थवीर्यते क्षयोपशमीवीर्य तेलेस्यायें जेपरिणाम्योते अभिसंधिजवीर्य अनेककर्मग्रहणकरे जे मतिपूर्वक उपयुक्तवीर्य तेअभिसंधिजवीर्यकहियें ते सूक्ष्मक्रियाकंपनरूप स्थूलक्रिया आकुंचप्रसारणरूप एटले भावयोग तथा द्रव्ययोगरूप सूक्ष्मतथास्थूल क्रियानेरंगे योगवंतथयोथको आत्मासंसारमध्ये उमंगपामिर ह्योछे एविचार कम्मपयडीग्रंथमध्येछे ॥ २ ॥

असंख्यप्रदेशेवीर्यअसंखें ॥ योगअसंखितकंखेरे ॥ पुद्गल
गणतेणेलेसुविशेषें ॥ यथाशक्तिमतिलेखेंरे ॥ वी० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ आत्माना असंख्याताप्रदेशछे तेएकेकाप्रदेशें असंख्याता वीर्यविभागछे एकम्मपयडीमध्ये योगस्थानकेंकह्याछे एरीतेंजीवने योगपणेअसंख्यातोछे एटलेजेक्षयोपशमीवीर्य असंख्यातोछेते योगरूपछे तेणेकरीजीव कर्मपुद्गलना समूहनेलीयें योगविशेषें विशेषकर्मनेलीयें यथाके० जेहवीयोगबलशक्ति तेवाकर्मनादलजीवलीयें एमतिजाणवी ॥ ३ ॥

उत्कृष्टेवीरयनेवेसें ॥ योगक्रियानवीपेसेरे ॥ योगतणीध्रु
वतानेलेसें ॥ आतमशगतीनखेसेरे ॥ वी० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ अनेजिहां उत्कृष्टके० अनंतोअचलवीर्य तिहांकर्मनलागें अनेचलवीर्य होयतिहांकर्मलागें जेप्रदेशोमां उत्कृष्टवीर्यहोय तिहांयोगक्रियाजे कर्मग्रहणरूप क्रि

अनेदछे घनघातीआ चारकर्मखपीने अघातीआचारकर्म अवशेषरहिगया तेथी ते वाआत्माना प्रथमथीबेनेदथया एकसाकारी परमात्मा बीजोनिराकारी परमात्मा तेमांसाकारी परमात्माना वलीबेनेदछे एकतीर्थंकर नामकर्मोदयी साकारी बीजो अतीर्थंकरनामकर्मोदयी साकारी तेमांतीर्थंकर साकारीपद उत्कृष्टपदे १७० अने अतीर्थंकरसाकारी उत्कृष्टपदें नवकोडी केवली जेआकारसहित वर्ते तेसाकारी कहियें बीजो परमात्मानो नेद आकाररहित माटे. निराकारी ते अनंतसिद्धो ना एकरूप माटे निरन्नेद नेदरहित जाणवा केमके अनंतसिद्धोनो एकरूप माटे निरन्नेद जाणवा ॥ २ ॥

सूखमनामकरमनिराकारजेरे ॥ तेहनेदेनहींअंत॥निराका रजेनिरगतिकर्मथीरे ॥ तेहअनेदअनंत ॥ चरम० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ फरीहेशुद्धचेतना आवचनकहुंछुंते लाडछुंवचनछे जेनिराकारनाबेनेद एकसूक्ष्मनामकर्म्मे निराकार एकनिर्गतकर्मेनिराकार एमतेओनाकथननुं आंइंया नकारणीयतो प्रस्तावनथी परंतु निराकारनाममात्र नेदनाकथन केवाकारणे इहांप्र स्ताव जे सूक्ष्मनामकर्मोदयथी पाम्युंजेणेनिराकारीपणुं तेनीनेदसंज्ञाकरियें तोतेनो अंतनही पारनही अनंताछेमाटे वलीनिरगतनाम सर्वथाखपाव्याछेकर्म्मजेणे तेथी निराकारीपणुं सहजेसिद्धथयुंछे तेनानेदपणअनंतछे सर्वसिद्धोनीसत्ता असंख्यातप्र देशात्मक निन्नपणामाटे अनंतछे ॥ ३ ॥

रूपनहीकइयेंबंधनघटयुंरे ॥ बंधनमोक्षनकोय॥बंधमोख विणसादिअनंतनुंरे॥ नंगसंगकेमहोय ॥ चरम० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वलीहेआनंदघनजो आत्माने रूपनहीतो बंधनकइयेंघटयुं एटलेकर्म थोबंधाइजातुं क्यालेंसंनव्युं एटलेरूपविनाबंधनुं असंनव अनेजेवारेंबंधनही आ त्मात्रणेकालें अबंधकमानसो निरलेपमानसोतो पुण्यपापनाक्षयथी जेमोक्ष तेमोक्ष कोयनही तेमोक्षनेअनावें सादिअनंतनंगानुसंगके० संनवकेमहोय ॥ ४ ॥

द्रव्यविनातेमसत्तानवीलहेरे ॥ सत्ताविणस्योरूप ॥ रूपवि नाकेमसिद्धअनंततारे ॥ नावुंअकलसरूप ॥ चरम० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ जेमकोइमनुष्यें कोइनेपुछयुंजे एनूतलमांघटछे तेवारेंतेणे नूतलसामुंजो यीने नूतलमां घटस्वरूपनदीठुं तेवारेंकह्युंजे नूतलेंघटद्रव्यनथी तेमजद्रव्यनेअना

॥ अथश्रीपार्श्वजिनस्तवनलिख्यते ॥

॥ शांतिजिनएकमुऊवीनतीएदेशी ॥

पासजिनताहरारूपनूं ॥ मुऊप्रतिन्नासकेमहोयरे ॥ तुऊमुऊस
त्ताएकता॥अचलविमलअकलजोयरे॥पास०॥१॥एआकणीबे

अर्थ ॥ अहोपार्श्वपरमेश्वर तमारास्वरूपनुं मुऊने प्रतिन्नासके० प्रकर्षणआन्नास एटलेसाक्षातुकार केमहोय केमथाय विचारीजोतांतो तारेमारे सत्ताएकबे माटेअ न्निन्नताबे एटले न्निन्नन्नावपणाविना तारास्वरूपनुं मुऊनेप्रतिन्नासकेमथाय वलीनि श्चेनयथी हुंमारास्वरूपने संन्नारुंतो जेमतुंतारा स्वरूपथी त्रणेकालेंचल्योनही तेमहुं पण मारास्वरूपथी चल्योनथी वलीजेमतुंनिर्मल तेमहुंपणकर्ममलरहित वलीजेम तुजनेंकालादिकें कल्योनही तेमनिश्चेंकालादिकें हुंपणअकलबुं माटेएत्रणे व्युत्पत्ति यें एकता जोयके० देखीने अहोपार्श्वजिन तारुंरूपन्निन्नपणे प्रत्यक्षकेमकरीशकुं॥१॥

मुऊप्रवचनपक्षथी ॥ निश्चयन्नेदनकोयरे ॥ विवहारेंल
खिदेखीयें ॥ न्नेदप्रतिन्नेदबहुलोयरे ॥ पास० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवेपरमेश्वर उत्तरकहेबे के हेआनंदघन निश्चेनयनी अपेक्षाकरियेंतो ता रेमारे एपरमात्मा एजीवात्मा एवोन्निन्नन्नावीपणानो न्नेदकोयनथी अने व्यवहारन यनो आश्रयकरीने देखीयेंतो एटले ऋदयनेत्रें हेतुप्रतिहेतुयें अवलोकनकरियें तो एजीवते लोयके० लोकनेजविषे बहुके० घणान्नेदप्रतिन्नेदथाय एकदेवता एकमनुष्य तेमांवली देवतादेवतामां मनुष्यमनुष्यमां वलीतेजजीवने नरकप्राप्तथयुं एप्रतिन्नेद तेमांपणएक पेलीनरके एकसातमीनरकें एरीतेंप्रतिन्नेदमां प्रतिन्नेदघणाथाय॥२॥

बंधनमोखनहीनिश्चयें ॥ विवहारेंन्नजदोयरे ॥ अखंडित
अबाधितसोयकदा ॥ नितअबाधितसोयरे ॥ पास०॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वलीहेआनंदघन निश्चेनयेंजजो आत्माने अवलोकनकरियें तोआत्मात्र णेकालें कर्मबंधनेनबंधाणुं केमकेनिश्चेथी जीवअरूपीजकह्युं तोअवस्तुनुबंधसुं अने बंधनहीतोमोक्षके० मूकीजवुंजनथी एटलेनिश्चेनय बंधमोक्षनथी अने व्यवहारनया सरीबंधमोक्षएबे न्नजके० अवधार एटलेव्यवहारनयें एआत्माअखंडितनही अक्षरनो अनंतमोविन्नाग ज्ञानरहिगयुं तेमाटे अनादिनही पर्यायमरणमाटे अचलनही गत्या गतकरवामाटे नित्यनही क्षीणविनश्वरकर्मेंपीडित माटे अबाधितनही एरीतेंव्यवहार

रे सुधारीवांचवुं तथा बेत्रणठेकाणे मनेपणचूकजेवुंलागेछे पणपरतएकजहति बी जीपरतो ज्ञानविमलजीनाटबानीहती माटेतेमनीसाथे एटबानुंबरावर मिलापनथ युं तेथीसुधारीशक्योनथी फरीपेला श्रीऋषभदेवना स्तवनमध्ये कोइकहेलीलारेलख ख अलखतणी तेनेठेकाणे अलखअलखतणी एममूलपाठमांलखाणुंछे तथापांचमां श्रीसुमतिनाथजीना स्तवननी चोथीगाथानुं बीजोपद वरजितसकलउपाधिने ठेका णे वरजित सकलउपाधि नजरचूकथीथयीगयीछे तथाचौदमां अनंतपरमेश्वरना स्त वननीबीजीगाथामां फलअनेकांतलोचननदेखे तेठेकाणे लोचनदेखे एमपदलखायी गयुंछे फरीएजतवननी पांचमीगाथामां देवगुरुधर्मनी शुद्धिनेठेकाणे शुद्धकहोकेमर हे एमचूकथीथयुंछे इत्यादिकचूकथयेलीछेते मारीनजरमां पाछलथीआवी माटेत्र्याइ लखीछे जेनहीआवी तेनुंमिछामिदुक्कडं ॥

इतिश्रीआनंदघनकृत चोवीसजिनस्तुति तथाश्री
ग्यानसारकृत बे स्तवनमली छवीसस्तवन
बालावोधसहितसमाप्त

॥ अथश्रीपार्श्वजिनस्तवनलिख्यते ॥

॥ शांतिजिनएकमुजवीनतीएदेशी ॥

पासजिनताहरारूपनूं ॥ मुजप्रतिभासकेमहोयरे ॥ तुजमुजस
ताएकता॥अचलविमलअकलजोयरे॥पास०॥१॥एआंकणीछे

अर्थ ॥ अहोपार्श्वपरमेश्वर तमारास्वरूपनुं मुजने प्रतिभासके० प्रकर्षपणेआभास एटलेसाक्षात्कार केमहोय केमथाय विचारीजोतांतो तारेमारे सत्ताएकछे माटेअ भिन्नताछे एटले भिन्नभावपणाविना तारास्वरूपनुं मुजनेप्रतिभासकेमथाय वलीनि श्चेनयथी हुंमारास्वरूपने संभारुंतो जेमतुंतारा स्वरूपथी त्रणेकालेंचल्योनही तेमहुं पण मारास्वरूपथी चल्योनथी वलीजेमतुंनिर्मल तेमहुंपणकर्ममलरहित वलीजेम तुजनेंकालादिकें कल्योनही तेमनिश्चेंकालादिकें हुंपणअकलछुं माटेएत्रणे व्युत्पत्ति यें एकता जोयके० देखीने अहोपार्श्वजिन तारुंरूपभिन्नपणे प्रत्यक्षकेमकरीशकुं॥१॥

मुजप्रवचनपक्षथी ॥ निश्चयभेदनकोयरे ॥ विवहारेंल
खिदेखीयें ॥ भेदप्रतिभेदबहुलोयरे ॥ पास० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवेपरमेश्वर उत्तरकहेछे के हेआनंदघन निश्चेंनयनी अपेक्षाकरियेंतो ता रेमारे एपरमात्मा एजीवात्मा एवोभिन्नभावीपणानो भेदकोयनथी अने व्यवहारन यनो आश्रयकरीने देखीयेंतो एटले हृदयनेत्रें हेतुप्रतिहेतुयें अवलोकनकरियें तो एजीवते लोयके० लोकनेजविषे बहुके० घणाभेदप्रतिभेदथाय एकदेवता एकमनुष्य तेमांवली देवतादेवतामां मनुष्यमनुष्यमां वलीतेजजीवने नरकप्राप्तथयुं एप्रतिभेद तेमांपणएक पेलीनरके एकसातमीनरकें एरीतेंप्रतिभेदमां प्रतिभेदघणाथाय॥२॥

बंधनमोखनहीनिश्चयें ॥ विवहारेंभजदोयरे ॥ अखंडित
अबाधितसोयकदा ॥ नितअबाधितसोयरे ॥ पास०॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वलीहेआनंदघन निश्चेंनयेंजजो आत्माने अवलोकनकरियें तोआत्मात्र णेकालें कर्मबंधनेनबंधाणुं केमकेनिश्चेंथी जीवअरूपीजकह्युं तोअवस्तुनुबंधसुं अने बंधनहीतोमोक्षके० मूकीजवुंजनथी एटलेनिश्चेंनय बंधमोक्षनथी अनें व्यवहारनया सरीबंधमोक्षएबे भजके० अवधार एटलेव्यवहारनयें एआत्माअखंडितनही अक्षरनो अनंतमोविभाग ज्ञानरहिगयुं तेमाटे अनादिनही पर्यायमरणमाटे अचलनही गत्या गतकरवामाटे नित्यनही क्षीणविनश्वरकर्मेंपीडित माटे अबाधितनही एरीतेंव्यवहार

एबाह्यदृष्टीना चित्तमांवसेनही उक्तंच चरणकरणप्पहाणा ॥ ससमयपरसमयमुक्क वावारा ॥ चरणकरणस्ससारं ॥ णिच्छयसुद्धंनयाणंति ॥ १ ॥ वलीतेहीजदृढकरेछे ॥ २ ॥

शुद्धाहारादिकतनुयोग ॥ मोटोकहिउंद्रव्यअनुयोग ॥ एउप
देशपदादिकग्रंथें ॥ सांखलहीचालोशुभपंथें ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ बेतालीसदोषरहित शुद्धआहारलेवुं इत्यादिकयोगछे पणतेसर्व तनुके० न्हानायोगकहियें अने स्वसमयपरिज्ञानजे द्रव्यअनुयोगते मोटोयोगकह्योछे केमके शुद्धआहारादिकेंतो स्वाध्यायनुंज साधनछे एसांख उपदेशपद आददेइने ग्रंथोथीलेइने शुभपंथेंके० उत्तममार्गेचालो पणबाह्यव्यवहार प्रधानकरीने ज्ञाननीगौणताकरवी ते अशुद्धमार्गेजाणवो अनेजिहांज्ञाननी प्रधानता राखवी तेशुभ उत्तममार्गे जाणवो जेज्ञानादिकगुणनोहेतु गुरुकुलवासतेनेछांमी शुद्धआहारादिकनी यत्नावंतने महादोषें चारित्रहानि कहीछे यतः गुरुदोषारंभितयालब्धकरणयत्नतोनिपुणधीभिः ॥ सन्निंदादेश्चतथाज्ञायतेयन्नियोगेन इतिषोडशके ॥ ३ ॥

एयोगेंजोलागेरंग ॥ आधाकर्मादिकनहिभंग ॥ पंचक
ल्पभाष्येंइमभण्युं ॥ सदगुरुपासेइस्युंमेंसुण्युं ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ माटे द्रव्यानुयोगविचाररूप जेज्ञान तेनेयोगें जोअभंग सेवारूप रंगलागे तो गुरुकुलवासें समुदायमध्ये ज्ञानाभ्यासकरतां कदाचित्आधाकर्मादि दोषलागे तोपण चारित्रभंगथायनही केमके भावशुद्धि बलवंतछेमाटे. एरीतें पंचकल्पभाष्यमांकह्युंछे तथा सद्गुरुपासेंथीपण एमसांभल्युं अतएव कल्पाकल्पतो अनेकांतशास्त्रेकह्युंछे ॥ आहागडाइभुंजंति अणमणेसकम्मुणा उवलितेवियाणिज्जाअणुवलितेत्तिवापुणोएतेहिंदोहिंगणेहिं ववहारेणविज्जइ एतेहिंदोहिंगणेहिंअणायारं तुजाणए ॥ २ ॥ एमबीजाअंगनापहेलाअध्ययनमांकह्युंछे तथा किंचित्शुद्धंकल्प्यमकल्प्यंस्यादकल्प्यमपिकल्प्यं॥पिंडःशय्यावस्त्रंपात्रंवाभेषजाद्यंवा॥ १ ॥ देशंकालंपुरुषमवस्थामुपयोगशुद्धिपरिणामान्॥प्रसमीक्ष्यभवतिकल्प्यं नैकांतात्कल्प्यतेकल्प्यं एमप्रशमरतिग्रंथमांकह्युंछे ॥ ४ ॥

बाह्यक्रियाछेबाहिरयोग ॥ अंतरक्रियाद्रव्यअनुयोग ॥ बाह्य
हीनपणज्ञानविशाल ॥ भलोकह्योमुनिउपदेशमाल ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ आवश्यकादिरूपबाह्यक्रियातेतो बाह्ययोगछे अनेद्रव्यानुयोगजे स्वसम

आतमधरमअनुसरी ॥ रमेजेआतमरामरे ॥ आनंद
घनपदवीलहे ॥ परमआतमतसनामरे॥ पास० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हेआनंदघन जेआत्मा आत्मधर्मने अनुसरी अंगीकारकरीने तद्रूपथतो रमेके० प्रवर्त्ते तदाकारपणुंजजे तेआत्मानुंनाम अभिधेयरामकहियें एरीतसके० ते ज आत्मानुंनाम आनंदशब्दें अनंतापदार्थोनुयोग्यता तद्रूपज्ञाननोभराव तेसंबंधनी पदी जेमुक्तिपदवी तेनुंज लहेके० निदर्शनकरे वलीतेजआत्मानुंनाम परमात्माप एकहियें एरीतेंअहोप्रभु तमाराकेवाथी मुजने तमारारूपनो प्रतिभास करतलवत्थयुं ॥ ७ ॥इतिश्रीपार्श्वजिनस्तवनसंपूर्ण ॥

॥ अथश्रीमहावीरजिनस्तवनलिख्यते ॥

॥ पंथडोनिहालुंरेबीजाजिनतणोरेएदेशी ॥

चरमजिणेसरविगतस्वरूपनूंरे ॥ भावुंकेमसरूप ॥ साका
रीविणध्याननसंभवेरे ॥ एअविकारअरूप ॥ चरम० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हेशुद्धचेतना चरमजिणेसर शासननायक तेनुंस्वरूपतुंचिंतव तेवारे शु द्धचेतनाकहेछे जे तेतोविगतस्वरूपीछे एटले मनपर्यायज्ञानीथी पण जेनुंस्वरूप जाण्युंजायनही तोहुंशीरीतेंजाणीशकुं वलीसिद्धांतोमां सालंबनध्यानकह्युंछे तोरूप विना आलंबनकेमसंभवे अने आलंबननेअभावे ध्याननोअसंभव तेमाटे साकारी के० आकारसहितविना ध्यानकेमकरीशकुं एरीएपरमेश्वर ज्ञानावरणादिक कर्मना विकाररहित माटेअविकारी तथारूपआकाररहित माटेअरूपी तोएवाचरमपरमेश्वर अलखसरूपीने स्वरूपेकेमचिंतवीशकुं ॥ १

आपसरूपेंआतममांरमेरे ॥ तेहनाधुरबेभेद ॥ असंखउ
क्कोसेंसाकारीपदेंरे ॥ निराकारीनिरभेद ॥ चरम० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हेशुद्धचेतना तेंकह्युंजे विगतस्वरूपिने शीरीतेंध्यायीशकुं तेतारुंवचन स त्यासतछे केमके० अरूपीनुंध्यानसंभवे तेमाटेसत्य अनेतुंपण चेतनाचिंतववारूपछो माटेधर्मेरहित अनेहुंपण आत्माछतो अघरूपीछुं माराधर्मेरहितछुं एटलेआपणेबे विगतस्वरूपीनोध्यानध्यायवाने निरर्थकछुं परंतुतुंज शुद्धचेतनाथयीथकी माराआत्मा मांरमें तेवारेंहुंपण आपसरूपजे मारोआत्मा तेमांरमुं जेआत्मा आपस्वरूपें आत्मा मांरमे तेआत्माने ध्याताध्येयपणुं फरकिएंछे केमके तेआत्माने तथापरमात्माने

तेकारणगुरुचरणआधीन ॥ समयसमयइणयोगेंलीन ॥ सा
धुजेकिरियाव्यवहार ॥ तेहिजअममोटोआधार ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ एद्रव्यानुयोगनी लेशमात्रप्राप्ति पोताना आत्मानें कृतकृत्यताकहेछे ते माटे द्रव्यानुयोगनी बलवत्तानेंहेतें गुरुचरणनें आधीनतायेंकरी मतिकल्पनापरि हरीनें समयसमय एद्रव्यानुयोगें लीनके० आसक्तथका जेक्रियाव्यवहारसाधु सेवें तेहिजअमनें महोटोआधारछे केमके एनाथी इच्छायोगसंपजे तेहनुंलक्षणकहेछे कर्त्तुमिच्छोः श्रुतार्थस्य ज्ञानिनोपिप्रमादिनः॥विकलोधर्मयोगोय मिच्छायोगउदाहृतः॥१॥ एमललितविस्तरादिग्रंथनेविषेकह्युं एमइच्छायोगेंरहीनें हुंपरोपकारनेअर्थें द्रव्यानुयो गनो विचारकहुंछुं पणएटलेज संतुष्टकरवोनही विशेषार्थें गुरुसेवामूकवीनही एहि तशिक्षाआगलीगाथामांकहेछे ॥ ८ ॥

संमतितत्वार्थमुख्यग्रंथ ॥ मोटाजेप्रवचननिर्ग्रंथ ॥ तेहनो
लेशमात्रएलह्यो ॥ परमारथगुरुवयणेरह्यो ॥ ए ॥

अर्थ ॥ संमतितत्वार्थ प्रमुखग्रंथजे महोटानिर्ग्रंथ प्रवचनरूपछे तेनोलेवलेशमात्र एलह्योके० आप्रबंधमांबाध्योछे पणपरमार्थें गुरुवचनरहेजो थोडुंजाणीने गर्वकर शोनही अधनेनधनंप्राप्तं तृणवत्मन्यतेजगत् एदृष्टांते माटेज कुपरलाचारनय ते अ तिगंभीरछे घणाने नपरिणमे एमजाणीने सिद्धांते पेहेलादेखाड्यानथी अनेजेगंभी रहोयगुरुआधीनहोय तेहनेजदेखाडवाकह्याछे ॥ ए ॥

॥ ढालबीजोधनधनसंप्रतिसाचोराजाएदेशी ॥

गुणपर्यायतणूजेभाजन ॥ एकरूपतिहुंकालेरे ॥
तेहद्रव्यनिजजातिकहियें ॥ जसनहिभेदविचाले
रे॥ जिनवाणीरंगेमनधरियें ॥ १ ॥ एआंकणीछे॥

अर्थ ॥ गुणतथापर्यायनोजे भाजनके० स्थानक तेजेहनोअतीत अनागत त थावर्त्तमान एत्रणेंकालें एकस्वरूपेंहोय पणपर्यायनीपरेफिरेनही तेहनें निजजातिके० पोतानी स्वजाति द्रव्यकहियें जेमज्ञानादिक गुणपर्यायनुं भाजन तेजीवद्रव्यअने रूपादिगुणपर्यायनुं भाजनते पुद्गलद्रव्य तथा रक्तादि घटादि गुणपर्यायनुं भाजन ते मृद्द्रव्य वलीतंतुतेपटनीअपेक्षायें द्रव्य अनेतंतुअवयवनी अपेक्षायें पर्याय केम के पटनेविचालें पटावस्थामध्ये तंतुनोभेदनथी अनेतंतुअवयव अवस्थामध्ये अन्य

वें सत्तानवीलहेके० द्रव्यतुंबलापणुंनपामियें अने सत्तानेअनावें रूपके० स्वरूपपण
स्यो माटेहेआनंदघन रूपनेअनावें वस्तुनोअनावथयो अनेजो वस्तुनोजअनाव तेवा
रेंएकवेत्रएचारनी गणनापणनसंनवे तोसिद्धनी अनंतताकेमसंनवे माटे चरमजिने
सरनुं स्वरूपचिंतवन तमेकह्युंपणते अकलस्वरूपनुं स्वरूपकेमजावुं तेतमेजकहो॥५॥

आत्मतापरिणतिजेपरिणम्यारे॥ तेमुकनेदानेद ॥ तदाका
रविणमारारूपनुंरे ॥ ध्यावुंविधप्रतिषेध ॥ चरम० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवेशुद्धचेतना तथा आनंदघन एबेप्रतें चरमजिनेश्वरकहेले के आत्मा
नेविषे रह्युंजे आत्मत्वधर्म तेनेविषें आत्मतानुंपरिणमवुं तद्रूपथावुं एटलेजेआत्मस्व
रूपनेविषेथिरताजावें प्रवर्त्त्या रूपातीतजावें अनेदोपचारें ज्ञानदर्शनतेआत्मा आ
त्मताते ज्ञानदर्शन एवीपरिणतीयें परिणम्या तेमुकनेदानेदके० तेआत्माने तथामा
रे एटलुंजनेद के तेसाकारीपरमात्मा अनेहुंनिराकारी परमात्मा माटेजो वहिरात्म
पणुंमूकी अंतरआत्मस्वरूपवंतथयी मारोअनेद अठेदादिक स्वरूपधर्मले तेनेविषे
तदाकारीलतो मारारूपनुं ध्यायवुंके० ध्यानकरे तेतो विधके० ध्याननोविधिछे अ
ने तेवातदाकारीपणा विणके०विना स्वरूपधर्मनेअनावें रहस्याथैं वहिरात्मवंतलते
करेते प्रतिषेधके० निषेधविधिजाणवो ॥ ६ ॥

अंतिमनवगहणेतुकनावनुंरे ॥ नावसुंशुद्धसरूप ॥ तइयें
आनंदघनपदपामसुंरे॥ आतमरूपअनूप॥चरम०॥ ७ ॥

अर्थ ॥ माटेवीरपरमेश्वरथी हाथजोडीवीनतीकरेले केअहोस्वामिअंतिमनवग
हणेके० आगलसर्वथा अनावीपणुं एवोनवते चरमावर्त्तन चरमकरण तथानवप
रिपाति नेपरिपाक तेटाणे तुजनावनुंके० परमात्मस्वनावनुं शुद्धस्वरूपलेइने तार
परमात्मानो माराआत्मामां नावसुंके० चिंतवनकरसुं तेवारें उपमारहित आनंद
घन पदपामसुं तेआनंदघनपद केवुंले जेमां उपमाउपमेयरहित एवो आत्मानुंस्वरू
पले एटले आत्मानुं आत्मित्वधर्मपणुंले ॥ ७ ॥ ॥ इतिमहावीरजिनस्तवनसंपूर्ण॥

आचोवीसीनो बालबोध ग्यानसारजीकृतले परंतुतेमांकेटलुंक पुनरुक्तिसहि
त घणुंविस्तारकरेलुंले माटेतेमनालखवाथी काइकन्यूनकरीने मेंलाप्यूंले तोपणतेमनो
नावार्थ सर्वलीधोले कदापिउतावलमां कापीओलखतां किहांचूकथयीहसेतो वाचना

उरधतासामान्यशक्तिते ॥ पूरवअपरगुणकरतीरे ॥ पिंमकुसू
लादिकआकारें ॥ जेममाटीअणफिरतीरे ॥ जिन० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेआगलीगाथामां द्रव्यनेसामान्यकह्युं तेसामान्यना बेप्रकारछे तेदेखा डेछे एकउर्ध्वता सामान्यरूपद्रव्यशक्ति ते तेहनेकहियें जे पूरवके० पहेला अने अप रके० आगलें गुणके० विशेष तेनेकरती तेसर्वेमां एकरूपेरहीछे जेम पिंमके० माटी नोपिंमो अने कुसूलादिके० कोठीप्रमुख एवामृत्तिकाना अनेक आकारफिरेछे पणते मां माटीफिरतीनथी तेपिंमकुसूलादिक आकारने उर्ध्वतासामान्यकहियें अनेजो पिंमकुसूलादिक पर्यायमां अनुगत एकमृद्रव्यनकहियेंतो घटादिपर्यायमां अनुगत घटादिद्रव्यपणनकहेवाय तेथीसर्वेविशेषरूपथातां क्षणिकवादिबौद्धमतआवे अथवा सर्वेद्रव्यमां एकजद्रव्यआवे माटेघटादिद्रव्य अनेतेमां सामान्यमृदादिद्रव्य अनुभवने अनुसारें परापरउर्ध्वतासामान्य अवश्यमानवा घटादिद्रव्यतेरक्तादिकथोडापर्यायने व्यापेछे अनेमृदादिद्रव्यते रक्तादिक घटादिक घणापर्यायनें व्यापेछे एमनरनारकादि कपणुतेपणद्रव्यनो विशेषजाणवो एसर्वेनैगमनयनुंमत अने शुद्धसंग्रहनयनेमतेतो सदद्वैतवादें एकजद्रव्यआवे एमजाणवुं ॥ ४ ॥

भिन्नविगतमांरूपएकजे॥द्रव्यशक्तिजगदाखेरे॥तेतिर्यक्सा
मान्यकहीजें ॥ जेमघटघटपणेराखेरे ॥ जिन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेबीजोभेददेखाडेछे ते भिन्नविगतमांके० भिन्नप्रदेशीविशेषमां जेद्रव्यपो तानीशक्ति एकरूपएकाकारछेते देखाडेछे तेतिर्यक्सामान्यछे जेमघटघटपणे घटत्वरा खेछे इहांकोइपुछेजे घटादिकभिन्नव्यक्तिमां जेमघटत्वादिक एकसामान्यछे तेमज पिंम कुसूलादिक भिन्नव्यक्तिमां मृदादिक एकसामान्यछे तो तिर्यक्सामान्य अने उर्ध्वता सामान्यनो स्योविशेषछे तेनेकहियेंजे देशभेदें जिहांएकाकारप्रतीतउपजे तिहांतिर्य क्सामान्यकहियें अनेजिहांकालभेदें अनुगताकारें प्रतीतउपजे तिहांउर्ध्वता सामा न्यकहियें कोइकदिगंबरानुसारी एमकहेछे जेषट्द्रव्यने कालपर्यायरूप उर्ध्वताप्रच यछे अनेकालविना पांचद्रव्यने अवयवसंघातरूप तिर्यक्प्रचयछे तेनेमते तिर्यक्प्र चयनो आधार घटादिक तिर्यक्सामान्यथाय पणपरमाणुरूप प्रचयपर्यायनो आ धारभिन्नद्रव्यजोइयें माटेपांचद्रव्यने खंध देश प्रदेशजावेंज एकअनेक व्यवहारउप पादवो पणतिर्यक्प्रचय नामांतरनकहेवुं ॥ ५ ॥

श्रीशांतिनाथायनमः

# अथश्रीमद्यशोविजयजीउपाध्यायकृतद्रव्यगुणपर्याय नोरासबालाबोधसहितलिखियेछैयें



श्लोक

इंद्रश्रेणीनतंनत्वाजिनंतत्वार्थदेशिनं ॥ प्रबं
धेलोकवाचात्रलेशार्थः कश्चिदुच्यते ॥ १ ॥

॥ ढालपहेलोचोपाइनीदेशी ॥

श्रीगुरुजितविजयमनधरी ॥ श्रीनयविजयसुगुरुआदरी ॥
आतमअरथीनेउपकार ॥ करुंद्रव्यअनुयोगविचार ॥ १ ॥

अर्थ॥श्रीजितविजयपंन्डित अनेश्रीनयविजयपंन्डित एबेहुरुडागुरुने चित्तमांसंभारीने आत्माअर्थि ज्ञानरुचि जीवना उपकारनेहेते द्रव्यानुयोगनो विचार करुछु जेअनुयोगते सूत्रार्थव्याख्यान तेहना चारभेद शास्त्रेंकह्याछे १ आचारवचन आचारांगप्रमुखसूत्र ते चरणकरणानुयोग २ संख्याशास्त्र चंद्रप्रज्ञप्तिप्रमुखसूत्र ते गणितानुयोग ३ ज्ञाताप्रमुख आख्यायिकावचन तेकथानुयोग ४ षड्द्रव्यादिविचारते सूत्रमध्येसूत्रकृतांग तथाप्रकरणमध्ये संमतितत्वार्थप्रमुख महाशास्त्र तेद्रव्यानुयोग एचारभेदमां द्रव्यानुयोग जे द्रव्यगुणपर्याय ते विचारछे तनोमहिमांकहेछे इहांप्रथमगुरुने नमस्कारकरीने प्रयोजनसहित अभिध्येयदेखाडयुं पेहलेबेपदें नमस्कारकस्योते मंगलाचरणदेखाड्युं अने इहांअधिकारी आत्मार्थिजीवछे तथाआत्मार्थिने अवबोधथसे ते उपकाररूप प्रयोजनजाणवुं द्रव्यनो अनुयोगके० कथन तेइहांआत्मार्थि ज्ञानरुचिजीवनाउपकारनेअर्थेकरुछुं ॥ १ ॥

विनाद्रव्यअनुयोगविचार ॥ चरणकरणनोनहिकोसार ॥
संमतिग्रंथेंभाख्युंइस्युं ॥ तेतोबुद्धजनमनमांवस्युं ॥ २ ॥

अर्थ ॥ एद्रव्यानुयोगनो विचारकस्याविना केवलचरणसितरी तथाकरणसितरी प्रमुखनो सारकोइछेनही एवुंसंमतिग्रंथनेविषेकह्युंछे तेतो बुद्धजननामनमांवस्युं प

कार्यकारणभेदमानेछे अनेनिश्चयनयथीद्रव्यना नानाप्रकारनाकार्यकारण तेएकशक्ति स्वभावज हृदयमांधरियें नहीतोस्वभावभेदेंद्रव्यभेदथाय अनेव्यवहारनयें ते तेका लादिकनीअपेक्षायें एकनेअनेक कार्यकारण स्वभावमानता कोइदोषनथी कारणांत रनी अपेक्षापण स्वभावमांज अंतर्भूतछे तेमाटेतेनोपण निष्फलपणुंनथाय त थाशुद्धनिश्चयनयनेमतेंतो कारणकार्यतेमिथ्याछे आदावंतेचयन्नास्ति वर्तमानेपितत्त था इतिवचनात् कार्यकारणकल्पनारहित शुद्धअविचलितरूपद्रव्यजछे एमजाण वुं एशक्तिरूपद्रव्यवखाणुं ॥ ए ॥

गुणपर्यायविगतबहुभेदें ॥ निजनिजजातिवरतेंरे ॥ शक्ति
रूपगुणकोइकभाषे ॥ तेनहिमारगनिरतेंरे ॥जिन०॥१०॥

अर्थ ॥ हवेव्यक्तिरूपगुणपर्यायवखाणेछे तेगुंणपर्यायनीव्यक्ति बहुभेदेके० अने कप्रकारें निजनिजजाति सहभाविक्रमभावि कल्पनाकृत आपआपणेस्वभावेवर्तेछे को इकदिगंबरानुसारी ते शक्तिरूपनेजगुण भाषेके० कहेछे तेआवीरीतेजे जेमद्रव्यगुण पर्यायनुंकारणद्रव्यछे तेमगुणपर्यायनुं कारणगुणछे द्रव्यपर्यायद्रव्यनो अन्यथाभाव जेमनरनारकादिक अथवा द्व्यणुक त्र्यणुकादिक गुणपर्यायगुणनोअन्यथाभावनही जेममतिश्रुतादिक विशेष अथवा भवस्थसिद्धादि केवलज्ञानविशेष एमएकद्रव्य बी जोगुण एजातिशाश्वत अनेपर्यायथीअशाश्वत एमआव्युं एमकहेछे ते निरतेके० रुडे मार्गेनही केमके एकल्पनाशास्त्रथी तथायुक्तियेंमिलेनही ॥ १० ॥

पर्यायथीगुणभिन्नभाषीउं ॥ संमतिग्रंथेव्यक्तिरे ॥ जेह
नोभेदविवक्षावशथी॥ तेकेमकहियेंशक्तिरे॥जिन०॥११॥

अर्थ ॥ तेहनेउत्तरकहेछे जेपर्यायथकीगुणते भिन्नके० जूदोभाष्योनथी एमसंम तिग्रंथनेविषे व्यक्तिके० प्रगटअक्षरेकह्युंछे गाथा ॥ परिगमणंपज्जाउ अणेगकरणे गुणत्तितुल्लत्ता ॥ तहविणगुणत्तिभणइ पज्जवणयदेशणाजह्मा ॥ १ ॥ अर्थ ॥ जेमक्रमभाविपणुं पर्यायनुंलक्षणछे तेमअनेकपणुंकरवुं तेपणपर्यायनुंलक्षणछे द्रव्यतोएकजछे अनेज्ञानदर्शनादिकभेदकरेछे तेपर्यायछे पणगुणनकहियें केमके द्रव्य पर्यायनीदेशना भगवंतनीछे पणद्रव्यगुणनीदेशनानथी इतिगाथार्थ ॥ इहांकोइपुछे जे एरीतेंजो गुणते पर्यायथीभिन्ननथी तोद्रव्यगुणपर्याय एत्रणनानाम किमकह्योछो तेमनेकहेवुंजे विवक्षाके० भेदनयनीकल्पना तेहथीजेम तैलस्यधारा इहां तेलने धारा भिन्नकहीदेखाडचा पणतेल अनेतेलनीधारा भिन्ननथी तेमसहभावी क्रमभा

यपरिज्ञानते अंतरंगक्रियाछे माटेजे बाह्यक्रियायेंहीनहोय पणज्ञानविशालबहुश्रुत होय एवोमुनीश्वरते उपदेशमालामां नलोकह्योछे यतः नाणाहिउवरतरं हीणोवि हुपवयणंपज्ञावंतो ॥ नयडुक्करंकरिंतो सुंहुविअप्पागमोपुरिसो ॥ १ ॥ हीणस्सविसुद्धपरुवगस्स नाणाहियस्सकायव्वं तेमाटे क्रियाहीनतादेखीनेपण ज्ञानवंतनी अवज्ञा नकरवी तेहनेज्ञानयोगेकरीनेजप्रनाविकजाणवुं ॥ ५ ॥

द्रव्यादिकचिंतायेंसार ॥ शुक्लध्यानपणलहियेंपार ॥ ते
माटेएहिजआदरो ॥ सदगुरुविणमतनूलाफिरो ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ इहांकोइपुछेजे क्रियाहीन ज्ञानवंतनेनलोकह्योतेतो दीपकसम्यकनी अपेक्षायेंकह्यो पणक्रियाहीनतायें मात्रज्ञानथीज पोतानो उपकारनथाय एमकहेते नीशंकाटालवाने द्रव्यादिकज्ञान तेहिजशुक्लध्यानद्वारें मोक्षनुंकारणछे माटेउपादेयछे एद्रव्यादिकनी चिंतवणायें शुक्लध्याननोपण पारपामियें केमके आत्मद्रव्य गुणपर्यायनेदचिंतायें पण शुक्लध्याननो पहेलोपायोहोय अने तेनीज अनेदचिंतायेंशुक्लध्याननो बीजोपायोहोय तथाशुद्धद्रव्य गुणपर्यायनीनावनायें सिद्धसमापतिथाय तेतो शुक्लध्याननुंफलछे एमप्रवचनसारोद्धारमध्येकह्युंछे जोजाणइअरिहंते दव्वगुणपज्जवंतेहिं ॥ सोजाणइअप्पाणं मोहोखलुजाहितस्सलयं ॥ १ ॥ तेमाटेएहिज द्रव्यानुयोगने आदरो एहिजउपायछे पणसद्गुरुविना स्वमतिकल्पनायें नूलाफिरसोनही॥६॥

एहनोजेणेपाम्युंताग ॥ तेघेएहनोजेहनेराग ॥ एबेविण
त्रीजोनहिसाध ॥ नाष्योसंमतिअरथअगाध ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवेजेज्ञानविना मात्रचारित्रथीज संतुष्टथायछे तेहनेशिक्षा कहेछे एक तो एद्रव्यानुयोगनोजे तागके० पारपामी संमतिप्रमुख तर्कशास्त्रनणीने जेगीतार्थथयो तेतथा बीजो तेघेके० सामान्यप्रकारें एद्रव्यानुयोगनो जेनेरागछे तेगीतार्थनिश्रित एबेविना त्रीजोसाधुनही एवोअगाधअर्थ संमतिग्रंथमांकह्योछे तेमाटेज्ञानविना चारित्रजनहोय उक्तंच गाथा ॥ गीयत्थोयविहारो बीउगीयत्थनिस्सिउनणीउ ॥ इत्तो तइयविहारो नाणुणाउजिणवरेहिं ॥ १ ॥ एटलोविशेषजे चरणकरणानुयोग दृष्टी निशीथ कल्प व्यवहार दृष्टीवादीध्ययने जघन्यमध्यमोत्कृष्ट गीतार्थजाणवा द्रव्यानुयोगदृष्टीते संमत्यादिक तर्कशास्त्रपारंगामीज गीतार्थजाणवा अनें तेनीनिश्रायें ज अगीतार्थनेंचारित्रकहेवुं ॥ ७ ॥

रूप तेथीजकेवलसंनवेछे पणपरमार्थेनही अनेद्रव्यगुणपर्याय एत्रणनामकह्यिंछे यें तेपणनेदोपचारेंजकह्यिंछैयें एमजाणवुं ॥ १३ ॥

एकअनेकरूपथीएणीपरे ॥ नेदपरस्परनावोरे ॥ आधा
राधेयादिकनावें ॥ इमजनेदमनलावोरे॥ जिन० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एणीपरेके० एरीतें द्रव्यएक अनेगुणपर्यायअनेक एरूपें परस्परके०मा होमांहे नेदनावविचारो एमज आधार आधेयप्रमुख नावेंके० स्वनावेंकरीनेएनोने दमनमांलावो केमके परस्परअवृतिधर्मे परस्परमांनेदजणावे ॥ १४ ॥

द्रव्यआधारघटादिकदीसे ॥ गुणपर्यायआधेनुरे ॥ रूपा
दिकएकेंद्रियगोचर ॥ दोइघटादिकवेनुरे ॥ जिन० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवेतेहीज विवरीदेखाडेछे जेघटादिकद्रव्यते आधारदेखायछे अनेएघटना रूपादिकते एमजाणियेछैयें जेगुणपर्याय रूपरसादिक तथांनीलपीतादिक तेआधेय द्रव्यऊपरेंरह्याछे एमआधाराधेयनावें द्रव्यथी गुणपर्यायने नेदछे तथारूपादिकगुणप र्याय एकेक इंद्रियनो गोचरके०विषयछे जेम रूपते चक्षुरिंद्रियेंज जणायछे तथारसते रसनेंद्रियेंजजणाय इत्यादिक अनेघटादिकद्रव्यछेते चक्षुइंद्रिय अनेस्पर्शइंद्रिय एदो इके० बेंद्रियेंकरीजणायछे एनैयायिकमत अनुसरीनेकह्युं अनेस्वमते गंधादिकपर्यायिते घ्राणेंद्रियादिकेंपण द्रव्यप्रत्यक्षछे नहींकां कुसुमगंधुवुं इत्यादिक ज्ञानने भ्रांतिपणोथा यछे तेजाणवुं एमएकअनेक इंद्रियग्राह्कपणे द्रव्यथी गुणपर्यायने नेदजाणवुं अने गुणपर्यायने माहोमाहेंनेदते स्वनावी क्रमनावीपणेथाय एकल्पनाथीजनावबुं॥१५॥

संज्ञासंख्यालक्षणथीपण ॥ नेदएहोनोजाणीरे ॥ सुजश
कारणीसुनमतिधारो॥दुरमतिवेलिकृपाणीरे॥जिन० ॥१६॥

अर्थ ॥ तथासंज्ञाके० नाम तेथीद्रव्यनोनेद एटलेनामनेदेंनेद तेमांवली एकद्रव्य नामथीनेद बीजोगुणनामथीनेद त्रीजोपर्यायनामथीनेद तथासंख्यातेएकबेत्रणनीग णना तेथीनेद एटलेद्रव्यछे गुणअनेकछे पर्यायअनेकछे अनेलक्षणथीनेदतेनअनेक पर्यायगमन द्रव्यलक्षण नएकथीअन्यने निन्नकरण तेगुणलक्षण परिगमनसर्वतोव्या प्ति तेपर्यायलक्षण एमद्रव्यगुणपर्याय एहोनोमाहोमांहेनेदजाणीने उत्तमयशनीकर नारी नलीमतिनेधारो तेकहेवीछे जेडुरमतिके० द्रव्याद्वैतपक्षनीमाठीमतितेरूपणीजेवे ली तेहुनेविषे कृपाणीके०कोहाडीसमानछे एढालमां द्रव्यगुणपर्यायनोनेददेखाड्यो॥

स्वरूपभेदछे माटेपुद्गलस्कंधमां द्रव्यपर्यायपणोतेअपेक्षायेंजाणवो इहांकोइकेहेसेजे एरीतेंद्रव्यत्वपणो स्वभाविकनथयुं पणअपेक्षिकथयुं तेनेउत्तरजे सकलवस्तुनो व्यवहारते अपेक्षायेंजहोयछे माटेइहांदोषनथी जेसमवायीकारणप्रमुखें द्रव्यलक्षण मानेछे तेनेपणअपेक्षा अवश्यअनुसरवी गुणपर्यायवत्द्रव्यं इतितत्वार्थे एजिनवाणीनेंरंगके० विश्वासें मनमांधरियें ॥ १ ॥

धरमकहीजेगुणसहभावी॥क्रमभावीपर्यायोरे॥भिन्नअभिन्नत्रिविधतियलक्षण॥ एकपदारथपायोरे॥जिन०॥ २ ॥

अर्थ ॥ सहभावीके० यावत्द्रव्यभावीजेधर्म तेनेगुणकहियें जेमजीवनोगुण उपयोग अनेपुद्गलनोगुण ग्रहणपणो तथाधर्मास्तिकायनो गतिहेतुत्वगुण वलीअधर्मास्तिकायनो स्थितिहेतुत्वगुण अनेआकाशद्रव्यनो अवगाहनाहेतुत्वगुण कालद्रव्यनोवर्त्तनाहेतुत्वगुण एरीतेंद्रव्यना स्वभाविकधर्म ते गुणजाणवा तथा क्रमभाविके० यावत्द्रव्यभावीते पर्यायकहियें जेमजीवने नरनारकादिक पर्याय तथापुद्गलने रूपरसादि परावर्त्तिते पर्यायजाणवा एमद्रव्यादिक ते द्रव्य गुण पर्याय एत्रणरीतें भिन्नछे तथालक्षणादिकथी अभिन्नछे अनेप्रदेशना अविभागथी त्रिविधछे केमकेनवविधोपचारें एकेकमां त्रणत्रणभेद आवे तेनवविधोपचारकहेछे १ द्रव्येंद्रव्योपचार २ द्रव्येगुणोपचार ३ द्रव्येंपर्यायोपचार ४ गुणेद्रव्योपचार ५ गुणेगुणोपचार ६ गुणेपर्यायोपचार ७ पर्यायेंद्रव्योपचार ८ पर्यायेंगुणोपचार ९ पर्यायेंपर्यायोपचार तथातियलक्षणके० उत्पादव्यय अने ध्रौवस्वरूपछे एहवाभावने एकपदार्थे जैनप्रमाणेपाम्यो थकोछे एह्वारूप पाठलावेपद जाणवा ॥ २ ॥

जेममोतीउज्वलतादिकथी ॥ मोतीमालाअलगीरे॥ गुणपर्यायव्यक्तिथीजाणो ॥द्रव्यशक्तितेमवलगीरे॥जिन०॥३॥

अर्थ ॥ हवेआढालमांप्रथम द्रव्यगुणपर्यायनो भेदयुक्तिदेखाडेछे जेममोतीथकी तथामोतीना उज्वलतादिक धर्मथकी मोतीनीमाला अलगीछे तेमज द्रव्यनीशक्ति तेगुणपर्यायनी व्यक्तिथीअलगीछे तथाएकप्रदेश संबंधेवलगीछे एटलेएमजे मोतीते पर्यायनेठामेंजाणवा अने उज्वलतादिकधर्मते गुणनेठामेजाणवो तथामालाते द्रव्यनेठामेजाणवी एमदृष्टांतजोडवो एरीतेंघटादिद्रव्य प्रत्यक्षप्रमाणें सामान्यविशेषरूप अनुभवेछे तेसामान्यउपयोगें मृत्तिकादि सामान्यभासेछे विशेषउपयोगें घटादिक विशेषभासेछे तेमांहेजे सामान्यते द्रव्यजाणवुं अनेविशेषते गुणपर्यायरूपजाणवा॥३॥

देशतेअवयव एहनेजोनेदेंजमानियें तो बमणोजार खंधमांहेंथवोजोइयें जेमाटे सोतंतुनोजेपटछे ते सोतांतुंआमांजेटलोजार तेटलोजजार तेनापटमांपण थायछे तथा जेकोइनवानैयायिक एमकहेछे जे अवयवनाजारथी अवयवीनो जार अत्यंतहीनछे तोतेहनेमतें द्विप्रदेशादिकखंधमांहे किहांपणउत्कष्टगुरुता नथयीजोइयें माटेद्विप्रदेशादिकखंधते एकप्रदेशादिकनीअपेक्षायें अवयवीछे अनेपरमाणुमांहेजो उत्कष्टगुरुत्वमानियें तोरूपादिकविशेषपण परमाणुमांहेमानवाजोइयें अनेद्विप्रदेशादिकमांनमानवाजोइयें अनेनेदनयनो बंधनमानियेंतो प्रदेशनोजार तेहिजखंधजारपणे परिणमे जेमतंतुरूपपटरूपपणे परिणमे तेवारेंगुरुतावृद्धीनोदोषकह्योतेनलागे ॥ ४ ॥

भिन्नद्रव्यपर्यायनेजी ॥ नवनादिकनेंरेएक ॥ नाषेंकिम
दाखेनहीजी ॥ एकद्रव्यमांविवेकरे ॥ न० ॥ धा० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वलीजेद्रव्यादिकने अनेदनयीमानता तेहनेउलंनोआपेछे जिन्नद्रव्यजे पाषाण काष्ट पृथ्वी जलादिकतेनोपर्यायजेनवनादिक घरप्रमुख तेहनेतुंएककहेछे जे एकघरइत्यादिक लोकव्यवहारछे तोएकद्रव्यमां द्रव्यगुणपर्यायनोअनेदहोय एहवो विवेक शावास्तेनथीकहेतो माटेजेआत्मद्रव्य तेहिजआत्मगुण अनेतेहिजआत्मपर्याय एहवो व्यवहारअनादिसिद्धछे ॥ ५ ॥

गुणपर्यायअनेदथीजी ॥ द्रव्यनियतव्यवहार॥ परिणति
जेछेएकताजी ॥ तेणेतेएकप्रकाररे ॥ नवि० ॥ धा० ॥६ ॥

अर्थ ॥ वलीजीवद्रव्य अजीवद्रव्यइत्यादिक जे नियतके० व्यवस्थासहितव्यवहारथायछे तेगुणपर्यायनाअनेदथीथायछे जेमज्ञानादिकगुणपर्यायथी अनिन्नतेजीवद्रव्य अनेरूपादिक गुणपर्यायथी अनिन्नतेअजीवद्रव्य नहीकांद्रव्यसामान्यथी गुणपर्यायनी विशेषसंज्ञानथाय १ द्रव्य २ गुण ३ पर्याय एत्रणनामछे पणस्वजातित्रणनेएकत्वपरिणामछे माटेएत्रणेनोएकप्रकारकहियें जेमआत्मद्रव्य ज्ञानादिकगुण तथातेहनांपर्याय एसर्वएकजआत्माकहियें तथा जेम १ रत्न २ कांति ३ ज्वरापहारशक्ति एत्रणेनेएकजपरिणामछे तेमद्रव्यगुणपर्यायनेपण जाणवुं ॥ ६ ॥

जोअनेदनहीएहनेंजी ॥ तोकारयकिमहोय ॥ अछतिवस्तु
ननीपजेजी ॥ शशविषाणपरेंजोयरे ॥ न० ॥ धा० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वलीजेअनेदनमाने तेहनेदोषदेखाडेछे जोएद्रव्यगुणपर्यायने अनेदनथीतों कारणकार्यनेपण अनेदनहोवोजोइयें तोमृत्तिकादिक कारणथी घटादिकार्यकेम

शक्तिमात्रतेद्रव्यसर्वनी ॥ गुणपर्यायनीलीजेंरे ॥ कार्यरूप
निकटदेखीने ॥ समुचितशक्तिकहीजेंरे ॥ जिन० ॥ ६ ॥

अर्थ॥ हवेऊर्ध्वतासामान्यशक्तिनाबेजेददेखाडेछे तेमांजे सर्वद्रव्यनी पोतपोताना गुणपर्यायनी शक्तिमात्रजीजे तेउघशक्तिकहियें अनेजेकार्यरूप निकटके० वहेलुंउपजतुंदेखीयेंतेकार्यनीअपेक्षायें तेनेसमुचितशक्तिकहियेंसमुचितके० व्यवहारयोग्य ॥६॥

घृतनीशक्तियथातृणभावें ॥ जाणीपणनकहायरे ॥ दुग्धा
दिकभावेंतेजननें ॥ भाषीचित्तसुहायरे ॥ जिन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ इहांदृष्टांतकहेछे जेमपुद्गल द्रव्यमां घृतउपजवानीशक्तितृणभावेंछे नहीकांतृणआहारथीधेनुदुधआपेछे तेदुधमां घृतनीपजवानीशक्तिकिहांथीआवी एम अनुमानप्रमाणें तृणमांघृतशक्तिजाणी पणकहेवायनही माटेतेनेउघशक्तिकहियें अनेजोतृणने दुग्धादिकभावेंके० दूध दहीप्रमुखने परिणामें घृतशक्तिकहियेंतो तेभावथकी जनके० लोकनाचित्तमांसुहायछे माटेतेनेसमुचितशक्तिकहियें एटले अनंतरकारणमां समुचितशक्तिकहेवी अने परंपरकारणमां उघशक्तिकहेवी एविवेकछे एबेनाज १ अन्यकारणता २ प्रयोजनता एबेबीजानामपणकहेछे तेजाणवा॥ ७ ॥

धरमशक्तिप्राणीनेपूरव ॥ पुद्गलनेआवर्त्तेरे ॥ उघेंसमुचि
तजेमवलीकहियें ॥ छेहलेंतेआवर्त्तेरे ॥ जिन० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हवेएशक्तिते आत्मद्रव्यमांफलावेछे जेम प्राणीके० भव्यजीवने पूरवके० पहेलाअनंतापुद्गलपरावर्त्तवित्या तेमांपण उघेंके० सामान्येंधर्मशक्तिकहियें जोनकहियें तो छेहलेपुद्गलपरावर्त्तेतेशक्तिआवेनही नासतोविद्यतेभाव इत्यादिवचनात् अनेछहेलेपुद्गलपरावर्त्तेंधर्मेनी समुचितशक्तिकहियें अतएव अचरमपुद्गलपरावर्त्तभावबालकालकह्युंछे अने छहेलोपुद्गलपरावर्तधर्मयौवनकालकह्युंछे अचरमपरिअट्टेसु कालोभवबालकालमोभणिओ ॥ चरमोउधम्मजुवण कालोतहचित्तभेउत्ति ॥ १ ॥ एयोगनीबीजीबीसीमध्येकह्युंछे ॥ ८ ॥

कारयभेदेंशक्तिभेदइम ॥ व्यवहारेंव्यवहरियेंरे ॥ निश्च
यनानाकारयकारण ॥ एकरूपतेधरियेंरे ॥ जिन० ॥ ९॥

अर्थ ॥ एमएकेकाकार्यनी उघसमुचितरूप अनेकशक्तिएकद्रव्यनीपामियें केमके कार्यनाभेदेंशक्तिनोभेदथायछे तेव्यवहारनयेंकरी विवहरियें केमके एव्यवहारनय ते

नाकारज छे बाह्यआकारअनादिअविद्यावासनायेंअछताजनासेछे जेमस्वप्नमांहे अछतापदार्थनासेछे एहवोबाह्याकाररहितशुद्धज्ञानते बुद्धनेजहोय एमकहेतो योगाचारनामेत्रीजोबौधजजीपे तेमाटेअछतानुंज्ञाननहोय ॥ ११ ॥

हवणाजाएयोअरथतेजी॥ एमअतीतजेंजणाय ॥ वर्त्तमान पर्यायथीजी॥ वर्त्तमानताथायरे ॥ भ० ॥ धा० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जोछतानुंज्ञाननहोय तोहमणामेंअतीतघटजाएयो एमकेमकहेवायछेतेअतीतघटमेंहमणाजाएयो एमजेजणायछे तिहांद्रव्यथीछताअतीतघटनेविषे वर्त्तमानज्ञेयआकाररूपपर्यायथी हमणाअतीतघटजाएयोजायछे अथवा नैगमनयथीअतीतनेविषेवर्तमानतानोआरोपकरियेछैयें माटेसर्वथाअछतिवस्तुनोज्ञाननथाय ॥ १२ ॥

धर्मिअछतेधर्मनोजी॥ अछतेकालेंसुहाय ॥ सर्वकालनिर्न्न यपणेजी॥ तोशशशृंगजणायरे ॥ भ० ॥ धा० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ धर्मिअतीतघटअछते धर्मघटत्वअछतेकालें घटनेअनावकालेंनासेछे अथवाधर्मिअतीतघटअछते धर्मज्ञेयाकारअछतेकालेंनासेछे एरीतेंजोतुजनेचित्तमांहेसुहाय तो सर्वअतीत अनागत वर्त्तमानकालेंनिर्नयपणे अदृष्टशंकारहितपणे शशशृंगपणजाएयुंजोइयें एमतो नथी ॥ १३ ॥

तेमाटेअछतातणोजी ॥ बोधनजनमनहोय ॥ कारयकारण नेसहीजी॥ भेअभेदइमजोयरे ॥ भ० ॥ धा० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ तेमाटेअछताअर्थनोबोधनहोय तथाजन्मपणनहोय एमनिर्द्धारिकार्यकारणनोअभेदछे तेदृष्टांते द्रव्यगुणपर्यायनोपण अभेदछे एमसईहवुं एभेदपक्षनाढालपरें अभेदपक्षनोढालकह्यो केमकेभेदनयपक्षनो अभिमानते अभेदनयटाले ॥ १४

भेदेंभणेनैयायिकोजी॥ सांख्यअभेदप्रकाश॥ जैनउभयविस्तारतोजी ॥ पामेंसुजशविलासरे॥ भ० ॥ धा० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवेएवेहुनयनास्वामीदेखाडीने स्थितपक्षकहेछे जेभेदनयतेनैयायिकनापेछे जेथीते असत्कार्यवादीदेखायछे तथासांख्यमततेअभेदनयप्रकाशेछे अनेजैनतेबेहुनयस्याद्वादेंकरीविस्तारतोथको भलायशनोविलासपामे केमके पक्षपातिबेहुनयमाहोमांहे घसातां स्थितपक्ष अपक्षपातितेस्याद्वादिनोजदीपेछे उक्तंच ॥ अन्योन्यपक्षप्रतिपक्षभावात् यथापरेमत्सरिणः प्रवादाः॥ नयानशेषानविशेषमिछन्नपक्षपाती

वी कहीनें गुणपर्याय भिन्नकहीदेखाडया पणपरमार्थेभिन्ननथी एरीतें जेहनोभेद उपचरितछे तेहनेंशक्तिकेमकहियें जेम उपचरित गायदूजेनही तेम उपचरितगु णतेपणशक्तिधरेनही ॥ ११ ॥

जोगुणत्रीजोहोएपदारथ ॥ तोत्रीजोनयलहीयेंरे ॥ द्रव्या रथपर्यायारथनय ॥ दोइजसूत्रेंकहीयेंरे ॥ जिन० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवेजेगुणनेंपर्यायथीभिन्नमानेछे तेहनेंदूषणआपेछे के जोगुणएहवोत्री जोपदार्थद्रव्यपर्यायथी जूदोभावहोय तोनयपणत्रीजो लहीयेंके०पामियें पणतेतोकि हांकह्यानथी सूत्रमांहेतो १ द्रव्यार्थ २ पर्यायार्थएवेदुजनयकह्याछे अनेंजोगुणहोय तोत्रीजोगुणार्थनयपणकह्योजोइयें उक्तंचसंमतौ दोउणणयाभगवया दव्वठियपज्ज वठियाणियया ॥ जइपुणगुणोविहुंतो गुणठियणउविजुज्जंतो ॥ १ ॥ जंचपुणभगव या तेसुसुत्तेसुगोयमाईणं ॥ पज्जवसणाणीयया वागरियातेणपज्जाया ॥ २ ॥ रूपा दिकनें गुणकहीनें सूत्रेबोलाव्यानथी पणवन्नपज्जवा गंधपज्जवा इत्यादिकपर्यायशब्दें बोलाव्याछे तेमाटेपर्यायकहियें पणगुणकहियेंनही अनें एगगुणकालए इत्यादिकठामें जेगुणशब्दछे तेगणितशास्त्रसिद्धपर्यायविशेष संख्यावाचीछे पणतेवचन गुणास्तिकन यविषयवाचीनथी उक्तंचसंमतिग्रंथे जंपइअछिसमए एगगुणोदसगुणोअणंतगुणो॥ रूवाईपरिणामो भन्नइतम्हागुणविसेसो ॥ १ ॥ गुणसद्दमंतरेणावि तंणुपज्जववि सेससंखाणं॥ सिज्झइनवरंसंखाणे॥सच्चधम्मोणयगुणोत्ति॥ २ ॥जहदससुदसगुणमिय॥ एगंमिदसत्तणंसमंचेव॥अहियंमिविगुणसद्दे तहेवइयंपिदठ्ठवं ॥ ३ ॥ एमगुणतेपरमार्थें द्रव्यथी पर्यायथीभिन्ननथी तोतेनेद्रव्यनीपरें शक्तिरूपकेवीरीतेंकहियें ॥ १२ ॥

जोगुणदलपर्यवनुंहोवे॥ तोद्रव्येंसुंकीजेरे॥गुणपर्या यपटंतरकेवल॥गुणपर्यायकहीजेरे॥ जिन०॥ १३॥

अर्थ ॥ हवेजेपर्यायनुंदलतेगुणछे माटेगुणनेजेशक्तिरूपकहेछे तेहनेंदूषणआपेछे जोगुणपर्यायनुं दलके० उपादानकारणहोय तोद्रव्येंसुंकीजे द्रव्यनोकामगुणेजकी धो माटे १ गुण २ पर्याय एबेजपदार्थकहो पणत्रीजोद्रव्यपदार्थनहोय कोइकहेसे जे द्रव्यपर्याय तथागुणपर्यायरूपकार्यभिन्नछे तेमाटेएकद्रव्य बीजुंगुणरूपकारणभि न्नकल्पियें एमकहेछे तेजूठोछे केमके कार्यमांकारणशब्दनोप्रवेशछे तेथीकारणभेदेंकार्य भेदसिद्धथाय अनेकार्यभेदसिद्धथयोहोय तोकारणभेदसिद्धथाय नहिंकांअन्योन्या श्रयनामेदूषणउपजे माटेगुणपर्यायजेकहियें तेगुणपरिणामनोजे पटंतर भेदकल्पना

नहिप्रत्यक्षदृष्टेर्थेविरोधोनाम तथाजेमप्रत्यक्षदृष्टेर्थे दृष्टांतनुंपणकार्यनथी शक्तंच क्वेच मन्यत्रदृष्टत्व मद्दोनिपुणतातव ॥ दृष्टांतंयाचसेयत्वंप्रत्यक्षेप्यनुमानवत् ॥ १ ॥ ३ ॥

श्यामन्नावजेघटछेपेहेलो ॥ पछेभिन्नतेरातोरे ॥ घटन्नावेंन
विभिन्नजणाय ॥ सीविरोधनीवातोरे ॥ श्रुत० ॥ ४ ॥ ॥

अर्थ ॥ हवेन्नेदान्नेदना प्रत्यक्षनो अभिलाप तेपुद्गलद्रव्यें देखाडेछे जेघटपहेलां श्यामन्नावेंछे तेपछेंरातोथयो तेवारें भिन्नजजणायछे अनेविहुंकालें घटन्नावें अभिन्नज जणायछे श्यामतथारक्त अवस्थानेन्नेदेंघटएकजछे तोइहांविरोधतानीवातसीकहेवी ॥

बालन्नावजेप्राणीदीसे ॥ तरुणन्नावतेन्यारोरे ॥ देवदत्त
न्नावेंतेएकज ॥ अविरोधेंनिरधारोरे ॥ श्रुत० ॥ ५ ॥ ॥

अर्थ ॥ हवेआत्मद्रव्यमां न्नेदान्नेदनो अनुन्नवदेखाडेछे जेप्राणी बालकन्नावें देखायछे तेजप्राणी तरुणन्नावें न्यारोके० भिन्नछे अनेदेवदत्तन्नावें एटलेमनुष्यपणाना पर्यायें तेएकछेतोएकपदार्थनेविषे बालतथातरुण न्नावेंन्नेदछे अनेदेवदत्तन्नावें अन्नेदछे एमअविरोधेंनिरधारो नक्तंच पुरिसंमिपुरिससद्दो जम्माइमरणकालपज्जंतो॥तस्सउबालाईया पज्जवजेयाबहुवियप्पा ॥ १ ॥ इतिसंमतिग्रंथे ॥ ५ ॥

धर्मन्नेदजोअनुन्नवन्नासे ॥ धर्मिन्नेदनवीकहियेंरे ॥ भिन्नध
र्मेनुंएकजधर्मि ॥ जडचेतनपणलहियेंरे ॥ श्रुत० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जिहांन्नेदहोय तिहांअन्नेद होयजनही केमके न्नेदव्याप्यवृत्तिछे एहवी प्राचीननैयायिकनी शंकाछे तेटालेछे जे श्यामोनरक्तः इहां श्यामत्व रक्तत्वधर्मनान्नेदनो अनुन्नवन्नासेछे पणधर्मिजे घटपदार्थ तेनोन्नेद न्नासतोनथी माटेएमजो कहियेंतो जडचेतननो न्नेदन्नासेछे तेपण जडत्वचेतनत्व धर्मनोजन्नेदछे पणजडचेतन द्रव्यनोन्नेदनथी एरीतें अव्यवस्थाथाय धर्मिने प्रतियोग्यपणे उल्लेखतो बिहुगमें सरिखोछे अनेप्रत्यक्ष सिद्धअर्थे बाधकतो अवतरेजनही ॥ ६ ॥

न्नेदान्नेदतिहांपणकहेतां ॥ विजयजैनमतपावेरे ॥ भिन्नरूप
मांरूपांतरथी ॥ जगअन्नेदपणआवेरे ॥ श्रुत० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ तेजडतथा चैतन्यमांपण न्नेदान्नेदकहेता जैननोमत विजयपामेछे माटे निरूपजे जीवअजीवादिक तेमांरूपांतर द्रव्यत्वपदार्थत्वादिक तेथीजगतमां पणअन्नेदपणोआवे एटलेन्नेदान्नेदने सर्वत्रव्यापकपणुंकह्युं ॥ ७ ॥

॥ गलत्रीजोशालिनइनोगीरह्योएदेशी ॥

एकांतेजोन्नाषियेंजी॥द्रव्यादिकनोरेन्नेद॥तोपरद्रव्यपरेंहुएजी॥
गुणगुणीन्नावउच्छेदरे॥ न्नविका॥धारोगुरुउपदेश॥१॥ एआंकणी

अर्थ ॥ हवेजेद्रव्यमां एकांतेन्नेदमानेछे तेनेअन्नेदपक्ष अनुसरीने दूषणदीयेछे द्रव्यादिकके० द्रव्यगुणपर्यायनोजो एकांतेन्नेदन्नाषियें तो परद्रव्यनीपरें स्वद्रव्यनेविषे पण गुणगुणीन्नावनो उच्छेदथयीजाय जेमजीवद्रव्यनागुणज्ञानादिकछे तेनोगुणी जीवद्रव्य तथापुजलद्रव्यनागुणरूपादिकछे तेनोगुणी पुजलद्रव्यछे एव्यवस्था शास्त्रप्र सिद्धछे तेमांन्नेदमानतातेलोपाय जीवद्रव्यने पुजलगुणथीजेमन्नेदछे तेमपोतानागु णथीपणन्नेदछे तोअमुकद्रव्यनो अमुकगुण अथवा अमुकगुणनोअमुकगुणी ए व्य वहारछे तेनोविलोपथयीजाय माटेद्रव्यगुणपर्यायनो अन्नेदजसंन्नवे एहवो अन्नेद नयनागुरुनोउपदेशछे तेनेहेन्नव्यप्राणीतुमेधारो आदरो जेमआत्मद्रव्यशुद्धथाय॥१॥

द्रव्येंगुणपर्यायनोजी ॥ छेअन्नेदसंबंध॥न्निन्नतेहजो
कल्पियेंजी॥तोअनवस्थाबंधरे॥न्न०॥धा०॥२॥

अर्थ ॥ वलीअन्नेदऊपरयुक्तिकहेछे द्रव्यनेविषे गुणपर्यायनोजेसंबंधते अन्नेदजछे केमके जोद्रव्यनविषे गुणपर्यायनो समवायनामेसंबंधने न्निन्नकल्पियें तोअनवस्थादो षनुंबंधनथाय जेथी गुणगुणथीअलगो समवायसंबंधकहियेंतो तेसमवायनेपण अन शेसंबंधजोइयें वलीतेसंबंधनेपण अनेरोसंबंधजोइयें एमकरतां किहांपणव्हेरावन थाय अने जोसमवायनो स्वरूपसंबंधनेजअन्निन्नमानियेंतो गुणगुणीनेस्वरूपसंबंध मानतांसुंविघटेछे जेफोकटनवासंबंधमानोछो ॥ २ ॥

सुवर्णकुंन्नलादिकहुउंजी॥घटरक्तादिकन्नाव॥ एव्यव
हारनसंन्नवेजी॥जोनअन्नेदस्वन्नावरे॥न्न०धा०॥३॥

अर्थ ॥ वलीजेअन्नेदनमाने तेहनेबाधककहेछे जे सुवर्णके० सोनुंतेकुंन्नलपणुं तथाघमोप्रथमश्यामहतो तेहिजरातोवर्णथयो एहवोसर्वलोकनोजे अनुन्नवसिद्धव्यव हारछे तेजोद्रव्यादिकत्रणने अन्नेदस्वन्नावनहोयतो तेव्यवहारपणघटेनहि ॥ ३ ॥

खंधदेशन्नेदेंहुएजी ॥ बमणीगुरुतारेखंध॥ प्रदेशगु
रुतापरिणमेंजी॥खंधअन्नेदसंबंधरे॥न्न० धा०॥४॥

अर्थ ॥ वलीजेअन्नेदनहीमाने तेहनेबीजुंबाधककहेछेजे खंधके० अवयवी अने

द्रव्यनाजे गुणपर्याय तेआविर्नाव तथातिरोनावेंछे ३ अनुक्रमें जो द्रव्यर्थिक तथा पर्यायार्थिक एबेहुनय अर्पियें तोकथंचित् निन्न तथाकथंचित् अनिन्नकहियें॥ १० ॥

जोएकदाउन्नयनयग्रहियें ॥ तोअवाच्यतेलहियेंरे ॥ एकेश ब्देंएकजवारें ॥ दोयअर्थनवीकहियेंरे ॥ श्रुत० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ ४ जोएकवारेंज बेहुनयना अर्थविवक्षियेंतो तेअवाच्यलहियें केमकेएक शब्दें एकजवरवते बेअर्थकह्याजातानथी संकेतिकशब्दपण एकजसंकेतिकरूपकहे पण बेरूप स्पष्टकही शकीयेंनही जेमपुष्पदंतादिक शब्दपणएकोक्ति चंद्रसूर्यकहे पणजि न्नोक्ति कहीशकेनही अनेबेनयनाअर्थ मुख्यपणेतो निन्नोक्तिज कहेवा घटे इत्यादि कयुक्ति शास्त्रांतरथी जाणवी ॥ ११ ॥

पर्यायारथकल्पनउत्तर ॥ उन्नयविवक्षासंधिरे ॥ निन्नअवा च्यवस्तुतेकहियें ॥ स्यातकारनेवंधिरे ॥ श्रुत० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ ५ जेमांप्रथमपर्यायार्थकल्पनापणछे पछेएकदाउनय नयार्पणाकरियें ते वारें वस्तुने निन्नअवक्तव्य कथंचित् एमकहियें ॥ १२ ॥

द्रव्यारथनेउन्नयग्रह्याथी ॥ अनिन्नतेहअवाचोरे ॥ क्रमयुग पत्नयउन्नयग्रह्याथी ॥ निन्नअनिन्नअवाचोरे ॥श्रुत० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ ६ प्रथमद्रव्यार्थ कल्पनापणछे अनेएकदाउन्नयनय अर्पणाकरियें ते वारें कथंचित् अनिन्नअवक्तव्य एमकहियें ७ अनुक्रमें बेहुनयनी प्रथमअर्पणाक रियें पछेबेहुनयनी एकवारेंअर्पणाकरियें तेवारेंकथंचित् निन्नअनिन्न अवक्तव्यएम कहियें ए एकन्नेदान्नेद पर्यायमां सप्तनंगी जोमी तेमजसर्वत्रजोडवी इहांशिष्यपुछे छेके जिहांबेनयनाजविषयनी विचारणाहोय तिहांएकेक गौणमुख्यनावें सप्तनंगी थाउ पणजिहांप्रदेश प्रस्थकादिविचारें तो सात छ पांच प्रमुखनयना निन्ननिन्नवि चारहोय तिहांअधिकनंगथाय तेवारेंसप्तनंगीनो नियमकेमरहे तेनेगुरुकहेछे के तिहांपणएकनयार्थ मुख्यपणेविधि बीजासर्वनो निषेधलेइ प्रत्येकें अनेकसप्तनंगीक वाक्य एलक्षणलेइने तेवेगमें स्यात्कारलंबित सकलनयार्थसमूहालंबन एवाक्य प्रमाण निषेधनथी तेमाटे व्यंजनपर्यायने तेकाणे बेनंगेपण अर्थसिद्धि संमतिग्रंथनेविषे देखाडीछे तत्रगाथा ॥ एवसत्तवियप्पो वयणपहोहोइअछपज्जाए ॥ वंजणपज्जाए पुण सवियप्पोनिवियप्पोअ ॥ १ ॥ एगाथानोअर्थ ॥ एवंपूर्वोक्तप्रकारें सप्तविक

नीपजे अनेकारणमांहेंकार्यनीशक्तिहोय तोजकार्यनीपजे पणकारणमांहे अछतिका र्यवस्तुनीपरिणतिनीपजेनही जेम शशविषाण शशलानाशिंगडा माटेजोकारणमांहे कार्यनीसत्तामानियेंतो अनेदसद्दजेजआव्यो ॥ ७ ॥

द्रव्यरूपछतिकार्यनीजी ॥ तिरोन्नावनीशक्ति ॥ आविरन्ना
वेंनीपजेजी ॥ गुणपर्यायनीव्यक्तिरे ॥ न्न० ॥ धा० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवेजोकारणमांहे कार्यउपनाअगाउ जोकार्यनीसत्ताछे तोकार्यदर्शनकेमथ तुंनथी एहवीशंकाकरनारने उत्तरआपेछे जे कार्यउपनोनथी तेवारेंकारणमांहे कार्य नीद्रव्यरूपेंतिरोजावनीशक्तिछे तेथीकार्यजणातुंनथी पणसामग्रीमले तेवारें गुणपर्या यनीव्यक्तिथीआविरजावके० प्रगटन्नावथायछे तेथीकार्यदेखायछे तिरोजाव तथाआ विरन्नावपणे दर्शनादर्शन नियामककार्यनापर्यायविशेषजजाणवा तेथीआविरन्नाव नेसत्असत्विकल्पेंदूषणहोयनही केमके अनुन्नवनेअनुसारेंपर्यायकल्पियें ॥ ७ ॥

नैयायिकन्नाषेंइस्युंजी ॥ जिमअछतानुंरेज्ञान ॥ होवेविषय
अतीतनुंजी ॥ तिमकार्यसहिनाणरे ॥ न्न० ॥ धा० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ इहांनैयायिकएहवुंकहेछे के जेमअतीतविषयजे घटादिकअछताछे तेह नुंजेमज्ञानहोय तेमघटादिककार्यमृत्तिकादिकदलथकीपण अछताजछे सामग्रीमिलेनि पजसे अछतानीज्ञप्तिहोयतो अछतानीउत्पत्तिकेमनहोय घटनुंकारणदंमादिकअमे कहियेंछैयें तिहांलाघवछे तुंमारेमतेघटाजिव्यक्तिनुं दंमादिककारणकहेवुंतिहांगौरव होय वीजुंअजिव्यक्तिनुंकारणचक्षुप्रमुखछे पणदंडादिकनथी माटेन्नेदपक्षजघटेछे ॥ए॥

तेमिथ्यानहीसर्वथाजी ॥ अछतोविषयअतीत ॥ पर्यायार
थतेनहीजी ॥ द्रव्यारथछेनित्यरे ॥ न्न० ॥ धा० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हवेनैयायिकमतनेदुषवेछे जे अछतानीउत्पत्तिहोयएमकहेछे तेमत मि थ्याछे केमके अतीतविषयघटादिक सर्वथाअछतोनथी तेपर्यायार्थथीनथी अनेद्रव्या र्थथीनित्यछे जेम नष्टघटपणमृत्तिकारूपेंछे जोसर्वथानहोयतो शशलानाशृंगपरेंथाय

अछतोन्नाषेंज्ञाननेजी ॥ जोस्वन्नावेंसंसार ॥ कहेतोज्ञाना
कारतोजी ॥ जीपयोगाचाररे ॥ न्न० ॥ धा० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ जेसर्वथाअछतोअर्थज्ञानमांहेनासेछे एहवुंकहेछे तेहनेबाधकदेखाडेछे एहवुंमानीयेंतो सर्वसंसारज्ञा जोज्ञाननेस्वन्नावें अतीतघटप्रमुखनोअछतोअर्थनासेछे

मके नयवादीजे एकांशवादीतेपण मुख्यवृत्ति अनेउपचारें एकअर्थनेविषे त्रयरूपप णोजाणे यद्यपि नयवादिने एकांशवचने शक्तिएकज अर्थकह्यिं तोपणलक्षणारूप उपचारें बीजाअर्थपणजाणे पणएकदावृत्ति द्वयनहोय एपणतंतनथी जेमगंगायां मत्स्यघोषौ इत्यादिस्थलें एमबेवृत्तिपणमानीछे इहांपणमुख्य अमुख्यपणे अनंतध र्मात्मिक वस्तुजणाववाने प्रयोजने एकनयशब्दनी बेवृत्तिमानता विरोधनथी अथ वानयात्मक शास्त्रें क्रमिकवाक्य द्वयेंपणएअर्थ जणाविये अथवाएकवोधशब्दें एकवो धअर्थें एमअनेकभंगाजाणवा एरीतें ज्ञानदृष्टीयें जगतनाभाव देखीयें एअर्थकह्योते हिजस्पष्टपणे जणाववानेआगलीगाथाकहेछे ॥ १ ॥

मुख्यवृत्तिद्रव्यारथो ॥ तासअभेदवखाणेरे ॥ भेदप
रस्परएहनो ॥ तेउपचारेंजाणेरे ॥ ग्यान० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ मुख्यवृत्तिके० शक्तिशब्दार्थे केहेतो जे द्रव्यार्थनयते तासके० तेनेएटले द्रव्यगुणपर्यायने अभेदवखाणेछे केमके गुणपर्यायें अभिन्न एवो मृद्द्रव्यादिक ते नेविषेघटादिपदनी शक्तिछे पणएनो परस्परके० माहोमांहेभेदछे तेउपचारेंके० लक्ष णेजाणे माटे द्रव्यभिन्न कंबुग्रीवादिक पर्यायनेविषे घटादिकपदनी लक्षणामानेछेअ नेमुख्यार्थसंबंधे तथाविधव्यवहार प्रयोजनें अनुसरीयें तिहांलक्षणाप्रवृत्ति दुरघटनथी

मुख्यवृत्तिथकोलेखवे ॥ पर्यायारथभेदरे ॥ उपचारें
अनुभवबलें ॥ मानेतेहअभेदरे ॥ ग्यान० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ एमपर्यायार्थनयनीमुख्यवृत्तिकरीने सर्वद्रव्यनागुणपर्यायभेदें लेखवे केम के एनयनेमतेमृदादिपदनो द्रव्यअर्थ अनेरूपादिपदनोगुणज घटादिकपदनो कंबु ग्रीवादिपर्यायज तथाउपचारें लक्षणायेंकरी अनुभवनेबलेकरी तेअभेदमाने जेमघ टादिमृद्द्रव्यादि अभिन्नजछे एप्रतीतें घटादिपदनी मृदादिकद्रव्यनेविषे लक्षणा मानियें एपरमार्थछे ॥ ३ ॥

दोयधर्मनयजेग्रहे ॥ मुख्यअमुख्यप्रकारोरे ॥ तेअनुसा
रेंकल्पियें ॥ तासप्रतिउपचारोरे ॥ ग्यान० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ भेदअभेदप्रमुख बहुधर्मते द्रव्यार्थिक अथवापर्यायार्थिकनय जेग्रहे क हाल्यप्रमाणेधारे मुख्यअमुख्यप्रकारें साक्षात्संकेतें तथाव्यवहितसंकेतें तेअनुसारें तासके० तेनयनोवृत्ति अनेतेनयनो उपचारकल्पियें दृष्टांतजेम गंगापदनो साक्षात् संकेतते प्रवाहरूपअर्थनेविषेछे तेमाटेप्रवाहेशक्ति तथागंगानेतीरे जेगंगासंकेतकरवो

समयस्तथाते ॥ १ ॥ यएवदोषाःकिलनित्यवादे विनाशिवादेपिसमास्तएव॥ परस्पर ध्वंसिपुकंटकेषु जयत्यधृष्यंजिनशासनंते ॥ २ ॥ ॥ १५ ॥

॥ ढालचोथी रागआसाउरी नंदनकुंत्रिसला हुलरावे एदेशी ॥

नेदअनेदउनयकिममानो ॥ जिहांविरोधनिरधारोरे ॥ एकठामेंकहोकिमकरीरहेवे ॥ आतपनेअंधारोरे ॥ श्रुतधर्मैं मनदृढकरीराखो॥जिमशिवसुखफलचाखोरे॥१॥एआंकणी

अर्थ ॥ हवेनेदानेदनोविरोध आशंकीनेटालेछे इहांकोइपरवादी कहेछेजे इव्यादिकनेविषे १ नेद २ अनेद एवेहुधर्म किममानोछो जिहांविरोधताने निरधारोछो केमकेजिहांनेदहोय तिहांअनेदनहोय अने जिहांअनेदहोय तिहांनेदनहोय एविहुंनावानावरूपें विरोधीछे तोबेहुविरोधी एकठामेंरहेनही जेमआतपहोय तिहांअंधारोरहेनही अनेजिहां अंधकारहोय तिहांआतपरहेनही तेमनेदानेदपण एकत्रन होय इहांश्रुतधर्में स्याद्वादप्रवचनमां मनदृढविश्वासवंत करीराखो जिनशासन अद्वादृढपणे मोक्षरूप कल्पवृक्षना सुखरूपफलचाखो श्रुतधर्मविना चारित्रधर्म फलवंतनहोय केमके शंकासहित चारित्रिउपण समाधीनपामे यङुक्तं वितिगच्छसमावन्नेणं अप्पाणेणंनलनतेसमाहिं इतिआचारांगे ॥ १ ॥

एहवीशिष्यनीशंकाजाणी॥ परमारथगुरुबोलेंरे ॥ अविरोधेंसवीठामेंदीसे ॥ दोयधर्मएकतोलेंरे ॥ श्रुत० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ एहवीशिष्यनी शंकाजाणीकरीने गुरुस्याद्वादी परमार्थबोलेछे जे घटघटानावादिकने यद्यपिविरोधछे तोपणनेदानेदने विरोधनथी केमके सर्वठामे नेद अनेद एवेहुधर्म अविरोधें एकाश्रयवृत्तिपणेज एकतोले देखायछे पणकोइकएमक हेछेजे अनेदस्वानाविक साचोछे अनेनेदउपाधिकतेजूगे तेअनुनवतानथी केमके व्यवहारेंपरापेक्षायें बेहुनेगुणादिकनोनेद तथागुणादिकनोअनेद एवचननथी ॥ २ ॥

एकठामेंसविजननीसांखे ॥ प्रत्यक्षंजेलहियेंरे ॥ रूपरसादिकनीपरेंतेहनो ॥ कहोविरोधकेमकहियेंरे ॥ श्रुत० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ एकठामें घटादिकइव्यनेविषे सर्वलोकनीसांखे प्रत्यक्षप्रमाणे रक्तत्वादिक गुणपर्यायनो नेदानेदजे लहीयेंछेयें तेनोविरोधकहो केवीरीतेंकहियें जेमरूपरसादि कनो एकाश्रयवृत्तित्वानुनावथी विरोधनकहियें तेम नेदानेदनुंपण जाणवुं घटकंच

पहेलोद्रव्यारथनयो ॥ दशप्रकारतसजाणोरे ॥ शुद्धअक
र्मोपाधीथी ॥ द्रव्यार्थिकधुरेंआणोरे ॥ ग्यान० ॥ ए ॥ ॥

अर्थ ॥ एकद्रव्यार्थनय बीजोपर्यायार्थनय त्रीजोनैगमनय चोथोसंग्रहनय पांचमो व्यवहारनय छठोऋजुसूत्रनय सातमो शब्दनय आठमोसमभिरूढनय नवमोएवंभूतन यएनवनयनो नियमछे तेमां पहेलोद्रव्यार्थिकनय तेना दशप्रकारजाणवा तेमां धुरेंके० पहेलो अकर्मोपाधिथी शुद्धद्रव्यार्थिकनय मनमांहेआणोएटलेकर्मोपाधीथीरहित शुद्धद्रव्यार्थिक एप्रथमभेदजाणवो ॥ ए ॥

जिमसंसारीप्राणीया ॥ सिद्धसमोवडगणीयेंरे ॥ सहेजभाव
आगलकरी ॥ भवपर्यायनगणीयेंरे ॥ ग्यान० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हवेशुद्धद्रव्यार्थिकनो विषयदेखाडेछे जेम सर्वसंसारीप्राणीमात्रने सिद्धस मानगणियें एटले सहजभावजे शुद्धात्मस्वरूप तेंआगलकरियें अने भवपर्यायजेसंसा रभाव तेगणियेंनही तेनीविवक्षानकरियें एअभिप्राय द्रव्यसंग्रहेकह्योछे यतः मगा णगुणठाणेहिं चउदसहिंहवंतितहंअसुद्धणया विणेयासंसारी सवे सुद्धासुद्धणया

उत्पादव्ययगौणता ॥ सत्तामुख्यजबीजेंरे ॥ भेदशुद्धद्रव्या
रथें ॥ द्रव्यनित्यजिमलीजेंरे ॥ ग्यान० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ उत्पादव्ययनी गौणतायें अनेसत्तानी मुख्यतायें बीजोभेद शुद्धद्रव्यार्थी नोजाणवो उत्पादव्ययगौणत्वेन सत्ताग्राहक शुद्धद्रव्यार्थिक एबीजाभेदनेमते द्रव्य ते नित्यपणेलेवी एटले नित्यते त्रिकालेंअविचलितरूप सत्ताने मुख्यपणेलेता एभा वसंभवे केमके जो पर्याय प्रतिक्षणे परिणामीछे तोपणजीवपुद्गलादिक द्रव्यसत्ता कदापिचलतीनथी ॥ ११ ॥

त्रीजोशुद्धद्रव्यारथो ॥ भेदकल्पनाहिनोरे ॥ जिमनिजगु
णपर्यायथी ॥ कहीयेंद्रव्यअभिन्नोरे ॥ ग्यान० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवेत्रीजोभेद तेभेदकल्पनायेंहीन शुद्धद्रव्यार्थकछे भेदकल्पनारहितशु द्धद्रव्यार्थिक इतितृतीयभेद जेमएकजीव अथवा पुद्गलादिकद्रव्यने निजके० पोता नागुणपर्यायथी अभिन्नकहियें केमके जोभेदपणुंछे तोपणतेनी अर्पणानकरियें अनेअभेदनी अर्पणाकरियें तोअभिन्नछेएत्रीजोभेद शुद्धद्रव्यार्थिकथयो ॥ १२ ॥

जेहनोभेद अभेदजतेहनो ॥ रूपांतरसंयुतनोरे ॥ रूपां
तरथीभेदजतेहनो ॥ मूलहेतुनयसतनोरे ॥श्रुत०॥ ८ ॥

अर्थ ॥ वलीएहिजविवरीदेखाडेछे के जेहनोभेदतेहनोज रूपांतरसहितनो अभेदहोय जेम थास कोस कुसूल घटादिकनोभेदछे अनेतेजमृद्द्रव्य विशिष्टअनर्पित स्वपर्यायनो अभेदछे वलीतेनोज रूपांतरथी भेदथाय जेम थास कोस कुसूलादिक पर्यायविशिष्ट मृद्द्रव्यपणें तेनोज भेदथाय एरीतेंभेदनेअभेदजेछे तेशैकडागमेनयनो मूलहेतुछे सातनयनाजे सातसैंनयभेदछे तेएरीतेंद्रव्यपर्यायनीअर्पणाअनर्पणायेंथायतेशतारनयचक्राध्यनयमां पूर्वेंहता अनेहमणा द्वादशसारनयचक्रमां विधिविधिविधिरित्यादिरीतें एकएकनयमां बारबारभेद उपजवाकह्याछे ॥ ८ ॥

खेत्रकालभावादिकयोगें ॥ थायभंगनीकोडीरे ॥ संखेपे
एकठामेंकहीयें ॥ सप्तभंगनीजोडीरे ॥ श्रुत० ॥ ए ॥ ॥

अर्थ ॥ जेमद्रव्यादिक विशेषणे भंगथाय तेमज खेत्रादिकविशेषणे पण अनेक भंगथाय जेमघटद्रव्यने स्वकरीविवक्षियें तेवारें खेत्रादिकघट परथाय एमप्रत्येकें सप्तभंगीपण क्रोडोगमेनीपजे १ घटःस्यादस्त्येव २ स्यान्नास्त्येव ३ स्यादवाच्यएव ४ स्यादस्त्येवनास्त्येव ५ स्यादस्त्येवस्यादवक्तव्यएव ६ स्यादनास्त्येवस्यादवक्तव्यएव ७ स्यादस्त्येवस्यादनास्त्येव स्यादवक्तव्यएवइतिप्रयोग तथापि लोकप्रसिद्धजे कंबुग्रीवादि पर्यायेंर्पितघटछे तेनेजस्वत्रैवडीने स्वरूपेंअस्तित्व पररूपेंनास्तित्व लेइनेसप्तभंगी देखाडेछे १ स्वद्रव्य स्वखेत्र स्वकाल स्वभावनी अपेक्षायें घटछे अने २परद्रव्य परखेत्र परकाल परभावनी अपेक्षायें घटनथी ३ तथाएकवारें वेपर्याय एकशब्दें मुख्यरूपें नकहेवायमाटे उभयविवक्षायें अवाच्यछे ४ एकअंशस्वरूपें अनेएकअंश पररूपें विवक्षियें तेवारें छेनेनथी ५ एकअंशस्वरूपें तथाएकअंश युगपत् उभयरूपें विवक्षियें तेवारेंछे अनेअवाच्य ६ एकअंशपररूपें अनेएकअंशयुगपत् उभयरूपें विवक्षियेंतेवारेंनथी अनेअवाच्य ७ एकअंशस्वरूपें तथाएकअंश पररूपें अनेएक अंश युगपत् उभयरूपें विवक्षियें तेवारें छे नथी अनेअवाच्य ॥ ए ॥

भेदज्ञानस्याद्दयाभिन्नवस्तुछे ॥ द्रव्यारथेंअभिन्नोरे ॥ क्रमेतुभ
पर्यायास्थभिन्नवस्तुछे ॥ द्रव्यारथेंअभिन्नोरे ॥ श्रुत० ॥ १० ॥
यनयजोअर्पिजे ॥ तोभिन्नानेअभिन्नोरे ॥

अर्थ ॥ हवेभेदाभेदमां सप्तभंगी जोडियेछैयें १ पर्यायार्थनयथी सर्ववस्तु द्रव्यगुणपर्यायलक्षणें. कथंचित्पणे भिन्नछे २ द्रव्यार्थनयथी कथंचित्अभिन्नजछे क्रमेंक

स्वद्रव्यादिकग्राहको ॥ जेदआठमोजाण्योरे ॥ स्वद्रव्यादि
कचारथी ॥ छतोअर्थजिमदाख्योरे ॥ ग्यान० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ स्वद्रव्यादिग्राहक नामेंद्रव्यार्थिकनो आठमोजेदजाण्यो जेम अर्थजे घटादिकद्रव्यतेस्वद्रव्य स्वखेत्र स्वकाल स्वजाव एचारथीछतोकह्यो स्वद्रव्यथी मृत्तिकायें अनेस्वखेत्रथी तेपाटलिपुरादिकें अनेस्वकालथी विवक्षितकालें तथास्वजावथी रक्तादिकजावें जे घटादिकनी सत्ताते प्रमाणछे सिद्धछे इतिस्वद्रव्यादिग्राहकद्रव्यार्थिक अष्टम एआठमोजेदथयो ॥ १७ ॥

परद्रव्यादिकग्राहको ॥ नवमजेदतेमाहिंरे ॥ परद्रव्या
दिकचारथी ॥ अर्थछतोकिमनाहिंरे ॥ ग्यान० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ तेद्रव्यार्थिकमां परद्रव्यादिक ग्राहक नवमोजेदकह्योछे जेम अर्थजेघटादिक तेपरद्रव्यादिकचारथी छतोनथी परद्रव्यजे तंतुप्रमुख तेथीघटअसत्कहियें अनेपरक्षेत्रजे काशीप्रमुख तथापरकालजे अतीत अनागतकाल परजावथी कालादिजावें विवक्षितविषयें अछतापर्यायतेथी परद्रव्यादिग्राहक द्रव्यार्थिकनवम

परमजावग्राहककह्यो ॥ दशमोजशअनुसारोरे ॥ ग्यान
सरूपीआतमा ॥ ग्यानसर्वमांसारोरे ॥ ग्यान० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ दशमो द्रव्यार्थिकनो परमजावग्राहकनामें जेदकहेछे जेनयने अनुसारें आत्मानेज्ञानस्वरूपकहियेंछैयें अने दर्शन चारित्र वीर्य लेश्यादिक आत्माना अनंतागुणछे पणसर्वमां ज्ञानते सारवत्कृष्टछे केमके अन्यद्रव्यथी आत्मानेजेदते ज्ञानगुणेदेखाडेछे तेमाटे शीघ्रोपस्थितिक पणे आत्मानुंज्ञानते परमजावछे एमबीजाद्रव्यनापण परमजाव असाधारणगुणजेवा परमजावग्राहकद्रव्यार्थिकदशम ॥ १९ ॥

ढालछठीएकवारदरिशनआपगुरुजीएदेशी

षटजेदनयपर्यायअरथो॥पहेलोअनादिकनित्यरे॥पुद्ग
लतणोपर्यायकहियें॥ जिममेरुगिरिमुखनित्यरे ॥ १ ॥
बहुजांतफेखीजैनशैली ॥ साचडुंमनधाररे ॥ खोटडुं
जेकांइजाणे ॥ तिहांचित्तनिवाररे ॥ बहु० ॥ २ ॥

अर्थ॥हवेपर्यायार्थनय छजेदेंजाणवो तेमां पहेलोअनादिनित्य शुद्धपर्यायार्थिककहियें जेमपुद्गलनोपर्याय मेरुप्रमुख प्रवाहथी अनादीअने नित्यछे असंख्यातकालें

रूप सप्तप्रकारवचनपथ सप्तभंगीरूप वचनमार्ग तेअर्थपर्याय तेअस्तित्व नास्तित्वा दिकने विषे होय व्यंजनपर्यायजेघटकुंभादि शब्दवाच्यता तेहनेविषे सविकल्प विधि रूप निर्विकल्प निषेधरूप एबेभांगाहोय पण अवक्तव्यादि भंगनहोय केमके अव क्तव्य शब्दविषय कहियेंतो विरोधथाय अथवा सविकल्पशब्द समभिरूढनयमते अनेनिर्विकल्पशब्द एवंभूतनयनीमते एमबेभंगजाणवा अर्थनये प्रथमचारजे अ र्थनयछे तेतो व्यंजनपर्याय मानेनही तेमाटे तेनयनीइहां प्रवृत्तिनथी अधिकुं अ नेकांतविवस्थाथी जाणवुं तदेवमेकत्रविषये प्रतिस्वमनेकनयविप्रतिपत्तिस्थलेस्यात् कारलांछितताविन्नयार्थप्रकारकसमूहालंबनबोधजनकएकएवभंगएहव्योव्यंजनपर्याय स्थले भंगद्वयवत् यदिचसर्वत्रसप्तभंगीनियमएवाभ्यासास्तदाचालनीयन्यायेनताव न्नयार्थनिषेधबोधको द्वितीयोभंग स्तन्मूलकाश्चान्येतावत्कोटिकाःपंचभंगाश्चकल्पनीया इत्थमेव निराकांक्षसकलभंगप्रतिपत्तिनिर्वाहादितियुक्तंपश्यामः एविचार स्याद्वाद पं मितें सूक्ष्मबुद्धीयें चित्तमांधारवो ॥ १३ ॥

संप्तभंग एदृढअभ्यासी॥ जेपरमारथदेखेरे ॥ जशकि
रतिजगवाधेतेहनी॥ जैनभावेंतसलेखेरे श्रुत० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ हवेएनोफलितार्थकहेछे एकह्याजेसातभांगा ते दृढअभ्यासें सकलादेशी विकलादेशी नयसप्तभंगप्रमाण सप्तभंगइत्यादि भेदें घणोअभ्यासकरी जीवाजी वादिपरमार्थसमजे देखे तेहनीजशकीर्त्तिवधे केमके स्याद्वादपरिज्ञानेज जैनने तर्कवादनुं थशछे अनेजैनभावपण तेप्राणीनोज लेखेजाणवो केमके निश्चेंनयथी सम्यक्त स्याद्वाद परिज्ञानजछे उक्तंचसंमतौ चरणकरणप्पहाणा ससमयपरसम यमुक्कवावारा ॥ चरणकरणस्ससारं नछयसुद्धंनयाणंत्ति ॥ १ ॥ एचोथाढालमां भे दानेदवेखाड्यो अनेसप्तभंगीनुं स्थापनकर्युं ॥ १४ ॥

॥ ढालपांचमो ॥ आदिजिणंदमयाकरोएदेशी ॥

एकअरथत्रयरूपछे॥ देख्योभलेप्रमाणेरे ॥ मुख्यवृत्तिउपचारथी
॥ नयवादिपणजाणेरे ॥ १ ॥ ग्यानदृष्टीजगदेखियें ॥ एआंकणी

अर्थ ॥ हवेनयप्रमाण विवेककरेछे एकअर्थजे घटपटादिक जीवअजीवादिक ते त्रयरूपके० द्रव्यगुणपर्यायरूपछे केमके घटादिक मृत्तिकादिरूपेंद्रव्य अनेघटादिरू पें सजातीयद्रव्य पर्यायरूपरसात्मकपणेंगुण एमजीवादिकमां जाणवो एहवेप्रमा णें स्याद्वादवचनेदेख्युं जेमाटे प्रमाणेसप्तभंगात्मके त्रयरूपपणो मुख्यरीतेंजाणियें के

संसारवासीजीवने जन्ममरणनीव्याधिछे एमकहियें इहांजन्मादिक जीवनापर्याय जे कर्मसंयोगेंछे तेअनित्य अशुद्धछे तेथीज जन्मादिपर्यायनो नाशकरवानेअर्थें मोक्षा र्थेजीवप्रवृत्तेछे एरीतेंद्रव्यार्थिक तथापर्यायार्थिक नयकह्या ॥ ६ ॥

बहुमानआदिकह्योनैगम ॥ भेदतसछेतीनरे॥ वर्त्त
मानारोपकरवा ॥ भूतअर्थेंलीनरे ॥बहु०॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवे नैगमनयकहेछे सामान्यविशेषज्ञानरूप बहुमानके० घणाप्रमाण ते नोग्राही नैगमनयकहियें नैकैर्मानैर्मिनोतीतिनिगमः ककारलोपान्नैगमइतिव्युत्पत्तिः तेनैगमनयना त्रणभेदछे तेमांप्रथमनैगमभूतार्थे वर्त्तमाननो आरोपकरवाने तत्परछे

भूतनैगमकह्योपहेलो ॥ दीवालीदिनआजरे ॥ यथास्वा
मीवीरजिनवर ॥ लहिउशिवपुरराजरे ॥ बहु० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ तेमांप्रथमभेदतुं उदाहरण देखाडेछे जेमआज दीवालीना दिवसनेवि षे श्रीमहावीरस्वामी शिवपुरनोराजपाम्या इहांअतीत दिवालीनादिननेविषे वर्त्तमा न दिवालीना दीवसनो आरोपकरियेंछैयेंएमवर्त्तमान दिवसनेविषे भूतदिवसनो आ रोपकरियें देवागमनादिक महोटाकल्याण भाजनत्व प्रतीतप्रयोजननेअर्थें जेमगंगा यांघोषः इहांगंगानातटनेविषे गंगानोआरोपकरियें शैत्यपावनत्वादि प्रत्यायन प्रयो जननणी तोएघटमानछे जो वीरसिद्धिगमननो अन्वय भक्तिनेवास्तेप्रतीतिकमानि यें एअलंकारनाजाण पंडितहोय तेविचारजो ॥ ८ ॥

भूतवतकहेभाविनैगम॥ भाविजेमजिनसिद्धरे ॥ सिद्ध
वंतछेवर्त्तमाने ॥ कांइसिद्धअसिद्धरे ॥ बहु० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ भावीनुं भूतवडुपचारकरे एबीजोनैगमनोभेद जेम जिननेसिद्ध कहियें छैयें केमके केवलीनेसिद्धपणो अवश्यभावीछे माटे कांइकसिद्ध अने कांइकअसिद्ध नेवर्त्तमानकहे तेवर्त्तमान नैगमकहियें ॥ ९ ॥

भाषीयेंजिमभक्तपचियें ॥वर्त्तमानारोपरे॥ करेकिरि
याभूतलेइ॥ भूतवचनविलोपरे ॥ बहु० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ जेम भक्तके० रसोइरांधिछे एमकहियें इहां रसोइना केटलाकअवयव सि द्धथयाछे अनेकेटलाक साध्यमानछे पणपूर्वापरभूतावयव क्रियासंतान एकबुद्धीयें आरोपियें तेने वर्त्तमानकहियेंछैयें एआरोप सामग्री महिमायें कोइअवयवनी भूत

ते व्यवहित संकेतछे तेमाटे उपचारछे तेमज द्रव्यार्थिकनयनो साक्षात्संकेतते अ
भेदछे अनेशक्तिनाभेदें व्यवहितसंकेतछे तेथीउपचारछे एमपर्यायार्थिकनयनापण
शक्तितथाउपचार तेभेदअभेदने विषेजोडवा ॥ ४ ॥

भिन्नविषयनयग्यानमां ॥ जोसर्वथानभासेरे ॥ तोस्वतंत्र
भावेंरहे ॥ मिथ्यादृष्टिपासेरे ॥ ग्यान० ॥ ५ ॥ ॥

अर्थ ॥ कोइकदेछेजे एकनयते एकजविषयने ग्रहेपणबीजानयनो विषयग्रहेनही
तेहनेदूषवेछे जोनयज्ञानमां भिन्नविषयके० नयांतरनो मुख्यार्थ ते सर्वथाके० अमु
ख्यपणेपण नभासे तो स्वतंत्रभावें सर्वथानयांतर विमुख्यपणें मिथ्यादृष्टिपासेरहे
एटलेदुर्नयथाय पणसुनय थायनही एमजाणवुं ॥ ५ ॥

एहविशेषावश्यकें ॥ संमतिमांपणधारोरे ॥ एमनयथी
सविसंभवे ॥ भेदअभेदुपचारोरे ॥ ग्यान० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ एअर्थविशेषावश्यके तथासंमतिग्रंथमांछे एमधारो यतः दोहिंविणएहिं
णीअ सब्बमूलएणतहविमिछत्तं ॥ जंसविसयप्पहाण तणेणअण्णुणनिरवक्के १
स्वार्थग्राहीइतरांशाप्रतिक्षेपीसुनयइतिसुनयलक्षणं स्वार्थग्राहीइतरांशप्रतिक्षेपीदुर्नय
इतिदुर्नयलक्षणं एम नयविचारथी भेदअभेद ग्राह्य व्यवहारसंभवे तथानयसंकेतवि
शेषथी ग्राहकवृत्तिविशेषरूप उपचारपण संभवे तेमाटेभेदअभेद तेमुख्यपणे प्र
त्येकनयविषय मुख्यामुख्यपणे उभयनयविषयउपचारते मुख्यवृत्तिनीपरें नयपरिक
र पणविषयनही एसमोमार्गते श्वेतांबरप्रमाणे शास्त्रसिद्धजाणवो ॥ ६ ॥

गंभिमारगएसमो ॥ उपनयमुख्यजेकल्पेरे ॥ तेहप्रपंच
पणजाणवा ॥ कहियेंतेजेमजल्पेरे ॥ ग्यान० ॥ ७॥

अर्थ ॥ एसमोमार्गेगंभिकरीने जेदिगंबर बाल उपचारादिक ग्रहवानेकाजे उपनय
प्रमुखकल्पेछे तेप्रपंच शिष्यबुद्धी धंधनमात्रछे पणतेसमानतंत्र सिद्धांतछे माटे जाण
वानेकाजे जेमते दिगंबरीयो जल्पेके० स्वप्रक्रियायेंबोलेछे तेमजकहियेंछेयें ॥ ७ ॥

नवनयउपनयतीनछे ॥ तर्कशास्त्रअनुसारोरे ॥ अध्यातम
वाचेंवली ॥ निश्चयनेव्यवहारोरे ॥ ग्यान० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ तेदिगंबरीओनेमते तर्कशास्त्रने अनुसारें नवनय अने त्रणउपनयछे त
था वली अध्यातमवाचेंके० शैलीयें १ निश्चयनय २ व्यवहारनय एवेजनयकह्याछे॥८॥

अर्थ ॥ जेशब्दनयते प्रकृतिप्रत्ययादिक व्याकरणव्युत्पत्तिथी सिद्धथयेलोशब्दमाने लिंगवचनादिनेदें अर्थनोनेदमाने जेमतटः तटी तटं एत्रणलिंगनेदें अर्थनेद त थाआपः जलं इहांएकवचन बहुवचननेदें अर्थनेदमाने अनेऋजुसूत्रनयने एश ब्दनयं एमकहेजे कालनेदें अर्थनेदतुंमानेछे तोलिंगादिनेदें नेदकांनथीमानतो अने छठोसमनिरूढनय एमकहेजे निन्नशब्दते निन्नार्थकजहोय माटे एनयते शब्दनयने एमकहेजे तुलिंगादिनेदें अर्थनेदमानेछे तोशब्दनेदें अर्थनेदकेममानतोनथी तेमाटे घटशब्दार्थनिन्न अनेकुंनशब्दार्थनिन्न एमएमाने एवेशब्दनुं एकार्थपणुं तेशब्दादिनय नी वालनाथकी प्रसिद्धछे ॥ १४ ॥

क्रियपरिणतअर्थमाने ॥ सर्वएवंनूतरे ॥ नवेनयना
नेदएणीपरें ॥ अठावीसप्रनूतरे ॥ बहु० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवेएवंनूतनयते सर्वअर्थक्रियाने परिणतक्रियावेलायें माने पणअन्यदा मानेनही जेमछत्रचामरादिके शोने परषदामांबेठा चामरढलावे तेवारेज तेने राजा माने पण स्नानादिकवेलायें तेअर्थविना राजानकहियें एरीतेंनवेनयना अठावीसनेद तेप्रनूतके० घणाथया १० इव्यार्थिकना ६ पर्यायार्थिकना ३ नैगमना २ संग्रहना २ व्यवहारना २ ऋजुसूत्रना १ शब्दनो १ समनिरूढनो १ एवंनूतनो ॥ १५ ॥

नवेनयएमकह्याउपनय ॥ तीनकहियेंसाररे ॥ साचमोश्रुत
अरथपरखी ॥ लहोजशविस्ताररे ॥ बहु० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ एमनवेनयकह्या हवेत्रणउपनय ते दिगंबरप्रक्रियायेंकहियेंछैयें एमां साचोश्रुतनोअर्थ परखीकरीने बहुश्रुतपणाना यशनोविस्तारपामो ॥ १६ ॥

॥ ढालसातमोचक्रउपनुंसाररे ॥ एदेशी ॥

सद्भूतव्यवहार ॥ नेदप्रथमतिहां ॥ धर्मधर्मीनानेदथीए ॥१॥
शुद्धअशुद्धविनेद॥ शुद्धअशुद्धना॥ तेहअरथनानेदथीए॥२॥

अर्थ ॥ नयसमीपेंतेउपनयकहियें तेमांसद्भूतव्यवहारते उपनयनोप्रथमनेदछे ते धर्म अने धर्मिना नेददेखाडवाथी होय ॥१॥ तेहनावलीबेनेदछे एकशुद्ध बीजोअशु द्ध तेमांपेलो शुद्धधर्मधर्मीनानेदथी शुद्धसद्भूत व्यवहारथाय अनेबीजोअशुद्ध धर्म धर्मीनानेदथी अशुद्धसद्भूत व्यवहारथाय इहांसद्भूतते एटलामाटेजे एकद्रव्यजछे अनेनिन्नद्रव्यसंयोगादि अपेक्षानथी तथा व्यवहार ते माटेजे नेददेखाडेछे ॥ २ ॥

अशुद्धकर्मोपाधिथी ॥ चोथोएहनोभेदोरे ॥ कर्मभावम यआतमा ॥ जिमक्रोधादिकवेदोरे ॥ ग्यान० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवेद्रव्यार्थिकनो चोथोभेद ते कर्मोपाधिथीछे माटेअशुद्धकहेवुं कर्मोपाधिसापेक्षोअशुद्धद्रव्यार्थिक इतिचतुर्थभेद जेमक्रोधादिक कर्मभावमय आत्मावेदोछो जाणोछो के जेवारेंजेद्रव्य जेभावेंपरिणमे तेवारें तेद्रव्य तन्मयकरीजाणवुं जेमलोहअग्निपणे परिणम्युं तेकालेंलोह अग्निरूप जाणवुं एमक्रोध मोहनीआदि कर्मोदयनेअवसरें क्रोधादिभाव परिणतआत्मा क्रोधादिकरूप जाणवो अतएव आत्मानाभेदआव सिद्धांतमां प्रसिद्धछे ॥ १३ ॥

तेहअशुद्धवलीपंचमो ॥ व्ययउतपतिसापेखोरे ॥ उत्पाद व्ययध्रुवएकें ॥ समयेंद्रव्यजिमपेखोरे ॥ ग्यान० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ तेवलीअशुद्धद्रव्यार्थिकनामे पांचमोभेद तेव्ययउत्पत्तिसापेक्षजाणवो उत्पादव्ययसापेक्ष सत्ताग्राहकअशुद्धद्रव्यार्थिकपंचम जेमएकसमयें द्रव्यने उत्पादव्यय ध्रुवरूपकहियें जेकनकाद्युत्पादसमय तेहिज केयूरादि विनाशसमय अने कनकसत्तातो अवर्जनीयजछे एवंसति त्रैलक्षण्यग्राहकत्वेनेदं प्रमाणवचनमेवस्यान्नतु नयवचनमितिचेन्न मुख्यगौणभावेनैवानेननयेन त्रैलक्षणग्रहणान्मुख्यनयस्वस्वार्थग्रहणे नयानां सप्तभंगीमुखेनैवव्यापारात् ॥ १४ ॥

ग्रहतोभेदनीकल्पना ॥ छठोतेहअशुद्धोरे ॥ जिमआतमि कबोलीयें ॥ ज्ञानादिकगुणशुद्धोरे ॥ ग्यान ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ भेदनीकल्पनाग्रहतो छठोभदते अशुद्धद्रव्यार्थिक जाणवो जेमज्ञानादिक शुद्धगुण आत्मानाबोलीयें इहांषष्ठीविभक्तिभेदकहेछे भिक्षोःपात्रमितिवत् अनेगुणगुणीने भेदतोनथी पण भेदकल्पनासापेक्ष अशुद्धद्रव्यार्थिकषष्ठ ॥ १५ ॥

अन्वयद्रव्यार्थिककह्युं ॥ सप्तमएकस्वभावोरे ॥ द्रव्यएकजिमभाषियें ॥ गुणपर्यायस्वभावोरे ॥ ग्यान० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ सातमोभेद अन्वयद्रव्यार्थिक कह्युंछे जे एकस्वभावबोले जेमएकजद्रव्य गुणपर्यायस्वभावकहियें एटलेगुणपर्यायनेविषे द्रव्यनो अन्वयछे जेम द्रव्यनेजाणवाथी द्रव्यार्थादेशें तदनुगत सर्वगुणपर्याय जाण्याकहियें जेमसामान्यप्रत्यासत्ति परवादीनी सर्वव्यक्तिजाणी कहे तेमइहांजाणवुं एअन्वयद्रव्यार्थिक सप्तम ॥ १६ ॥

यछे तेआत्मा एमगौरपणो उद्देसीने आत्मविधानकरियें एटलेए गौरतारूप पुजलगुण उपरें आत्मद्रव्यनो उपचार तेगुणेद्रव्योपचार छठोजेदथयो तथापर्यायें द्रव्योपचारः ते जेम देहनेआत्माकहियें इहां देहरूप पुजलपर्यायनेविषे आत्मद्रव्यनो उपचारकस्रो एसातमोजेदथयो ॥ १० ॥

गुणपजवनुपचार ॥ गुणनोपजवें ॥ जिममतितनुत
नुमतिगुणोए ॥ ११ ॥ असद्भूतव्यवहार ॥ एमउ
पचारथी ॥ एहत्रिविधहवेसांजलोए ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ गुणेपर्यायोपचारः तेजेममतिज्ञानते शरीरजन्यछे तेमाटे शरीरजकहियें इहांमतिज्ञानरूप आत्मगुणनेविषे शरीररूप पुजलपर्यायनो उपचारकस्रो एआठमोजेदथयो हवे पर्यायेगुणोपचारः ते पूर्वप्रयोगनेज अन्यथाकरियें तेआवीरीतें के शरीरते मतिज्ञानरूप गुणजछे तोइहां शरीररूप पर्यायनेविषे मतिज्ञानरूप गुणनोउपचारकरायछे एनवमोजेद ॥ ११ ॥ एमउपचारथी असद्भूतव्यवहार नवप्रकारनोकह्यो हवेएना त्रणजेदछेतेकहियेंछैयें तेसांजलो ॥ १२ ॥

असद्भूतनिजजाति॥जिमपरमाणुउ ॥ बहुप्रदेशीजाषियेंए॥ १३ ॥
तेहविजातिजाणो॥ जिममूरतमति ॥ मूरतद्रव्येंउपनीए॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एकस्वजाति असद्भूतव्यवहार ते जेमपरमाणु ते बहुप्रदेशीथवानी जातिछे माटे बहुप्रदेशीकहियें ॥ १३ ॥ तथा जेम मतिके० मतिज्ञानने मूर्त्तिवंत कहियें मूर्त्तजे विषयालोकनमस्कारादिकथी उपनोतेमाटे इहांमतिज्ञानते आत्मगुण तेनेंविषे मूर्त्तजे पुजलगुण तेनेउपचर्यु तेनेविजातीय असद्भूत व्यवहारजाणो एबीजोजेद॥ १४॥

असद्भूतदोउजांत॥जीवअजीवने॥विषयग्यानजिमजांषियेंए॥१५॥
उपचरितासद्भूत ॥ करियेंउपचारो॥ जेहएकउपचारथीए ॥ १६ ॥

अर्थ ॥दोउजांतिके०बेजाति तेस्वजाति अने विजातियें असद्भूत व्यवहारनो संबंध कहियें जेमजीवाजीव विषयज्ञानकहियें इहांजीवतेज्ञाननी स्वजातिछे अनेअजीवते ज्ञाननोविजातिछे एबेनोविषयविषयीजाव नामे उपचरित संबंधछे तेस्वजाति विजातिनामे असद्भूतकहियें सजातीयांशेकिंनायंसद्भूतइतिचेत् विजातीयांशेविषयता संबंधस्योपचरितस्यैवानुनावादितिगृहाण एत्रणजेदकह्या ॥ १५ ॥ जेएकउपचारथी बीजोउचारकस्रो तेउपचरित असद्भूत व्यवहारकहियें ॥ १६ ॥

अन्योन्यपुद्गलसंक्रमे पण संस्थानतेहिजछे एमज रत्नप्रजादिक पृथ्वीपर्यायपण जाणवा ॥ १ ॥ एमघणाप्रकारें जैननी शैलीफेलीछे दिगंबरमतेंपण जैनदर्शननाम धरावी एवीनयनीअनेक शैलीप्रवर्त्तावेछे तेमांविचारतां जेसाचुंहोयते मनमांनिरधारी राखवुं अनेतिहांजेकांइ खोटुंजाणे तेचित्तमांनधरवुं पणशब्दफेरमात्रें द्वेषकरवोनही अर्थजप्रमाणछे ॥ २ ॥

सादिनित्यपर्यायअरथो ॥ जिमसिद्धनोपज्जाउरे ॥ अहे
शुद्धअनित्यसत्ता ॥ गौणवयणप्पाउरे ॥ बहु० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ सादिनित्य शुद्धपर्यायार्थनय तेबीजोजेदजाणवो जेम सिद्धना पर्यायनी आदिछे केमके सर्वकर्मक्षयथयो तेवारेंसिद्धपर्यायउपनो तेथीआदिथयी पणतेनो अंतनथी केमकेपछे सिद्धजावसदाकालेछे एरीतेंजपर्यायसरिखो सिद्धद्रव्यपर्यायजाववो हवेसत्तागुणत्वे उत्पादव्ययग्राहक अनित्यशुद्ध पर्यायार्थिक त्रीजोजेदकहियेंछेयें

जेमसमयमेंपर्यायनाशी ॥ छतिगहतनित्यअशुद्धरे ॥
एकसमयेंयथापर्याय ॥ तृतीयरूपेंरुद्धरे ॥बहु०॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जेमएकसमयमां पर्यायविनाशीछे एमकहियें इहां नाशीकहेता एनोप्रतिपक्षी उत्पादतोआव्यो पणध्रुवताने गौणकरीदेखाडीनही चोथो छतिके० सत्तानेग्रहतो तेनित्यअशुद्ध पर्यायार्थिक कहियें जेमएकसमयमां पर्यायते उत्पादव्ययध्रुवलक्षण तृतीयरूपेंरुद्धछे एवुंबोलीयें पणपर्यायनुं शुद्धरूपतो तेनेकहियेंजे सत्तानदेखाडवी पणइहांतो मूलसत्तादेखाडी तेमाटेअशुद्धजेदथयुं ॥ ४ ॥

पर्यायअरथोनित्यशुद्धो ॥ रहितकर्मोपाधिरे ॥ जेमसिद्ध
नापर्यायसरिखा ॥ जवजंतुनानिरुपाधिरे ॥ बहु० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेकर्मोपाधिरहित नित्यशुद्धपर्यायार्थिक पांचमोजेद कहेछे ते जेम जवजंतुके० संसारीजीवना पर्याय सिद्धनाजीवो सरिखाकहियें जोपणकर्मोपाधिजाव छताछे तोपणतेनी विवक्षानकरियें अनेज्ञानदर्शन चारित्रादिक शुद्धपर्यायनीज विवक्षाकरियें ॥ ५ ॥

पर्यायअरथअनित्यअशुद्धो ॥ सापेक्षकर्मोपाधिरे ॥ संसा
रवासिजीवने ॥ जेमजनममरणव्याधिरे ॥ बहु० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवेकर्मोपाधि सापेक्ष अनित्य अशुद्ध पर्यायार्थिक छठोजेदकहेछे जेम

अर्थ ॥ वली व्यवहारनयना बेभेदछे एकसद्भूतव्यवहार बीजोअसद्भूतव्यवहार ए कविषयके० एकद्रव्याश्रितते सद्भूतव्यवहार अनेजे परविषयते असद्भूतव्यवहार॥३॥

उपचरितानुपचरितथीजी ॥ पहेलोदोयप्रकार ॥ सोपाधि
कगुणगुणीभेदरे ॥ जेअनिमित्तउपचाररे ॥ प्राणी० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ तेमां पहेलोजे सद्भूतव्यवहारते बेप्रकारेंछे एकउपचरित सद्भूतव्यवहार बीजो अनुपचरित सद्भूतव्यवहार ते जे सोपाधिकगुणगुणीनो भेददेखाडे जेम जीवस्यमतिज्ञानं एउपाधि तेहिजइहां उपचरित प्रथमभेदछे ॥ ४ ॥

निरुपाधिकगुणगुणीभेदेंरे ॥ अनुपचरितसद्भूत ॥ केवल
ज्ञानादिकगुणारे ॥ आतमनाअभूतरे ॥ प्राणी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ तथानिरुपाधिक गुणगुणीभेदें बीजोभेदजाणवो यथाजीवस्यकेवलज्ञानं इहांउपाधिरहितपणो तेहिज निरुपचरितपणुं जाणवुं ॥ ५ ॥

असद्भूतव्यवहारनाजी ॥ एमजभेदछेदोय ॥ प्रथमअसं
श्लेषितयोगेंजी ॥ देवदत्तधनजोयरे ॥ प्राणी० ॥ ६ ॥ ॥

अर्थ ॥ वलीएजरीतें असद्भूतव्यवहारनापण बेभेदछे एकउपचरित असद्भूत व्यवहार बीजोअनुपचरित असद्भूतव्यवहार तेमांप्रथमभेदते असंश्लेषित योगें कल्पितसंबंधेंहोय जेम देवदत्तनुंधन इहांधनते देवदत्तनेसंबंध स्वस्वामीभावरूप कल्पितछे तेमाटेउपचारथयुं तथादेवदत्त अनेधनतेजाते बेहुएकद्रव्यनथी तेमाटे असद्भूत एमभावनाकरवी तेउपचरित असद्भूत व्यवहार जाणवुं ॥ ६ ॥

संश्लेषितयोगेंबीजोरे ॥ जेमआतमनुंदेह ॥ नयउपन
यनयचक्रमांरे ॥ कह्यामूलनयएहरे ॥ प्राणी० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ बीजोभेद संश्लेषितयोगें कर्मसंबंधेजजाणवुं ते जेमआत्मानुंशरीर आत्मातथादेहनासंबंध तेधनसंबंधनीपरें कल्पितनथी विपरीतभावनायें निवर्त्तेनहीं जावजीवरहे तेमाटे एअनुपचरित अनेभिन्नविषयमाटे असद्भूतजाणवो एरीतेंनयतथा उपनय एबेमूलनयसहित तेदिगंबर देवसेनकृत नयचक्रमां कह्याछे ॥ ७ ॥

विषयभेदयद्यपिनहीरे ॥ इहांअमारेथूल ॥ उलटीप
रिभाषाइसीरे ॥ तोपणदाजेमूलरे ॥ प्राणी० ॥ ८ ॥

क्रियालेइ पचतिएवेकाणे अपाक्षीत् एप्रयोगनथीकरता जेनैयायिकादिक तेएमकहे छे जे चरमक्रियाध्वंस अनेअतीत प्रत्ययविषय तेहनेकिंचित्पक्कं किंचित्पच्यते एवुं कहेछेतो एप्रयोगनथवोजोइयें तेमाटे एवर्त्तमानारोप नैगमनयनोभेदज नलोजाणवो

संग्रहेनयसंग्रहो ॥ तेद्विविधउघविशेषरे ॥ द्रव्यसविअ
विरोधियाजेम ॥ तथाजीवअशेषरे ॥ बहु० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ जेसंग्रहेले संग्रहनयकहियें तेना एकउघ बीजोविशेषए बेभेदछे तेमां एक उघके० सामान्यसंग्रह अनेबीजो विशेषसंग्रह एबेभेदजाणवा द्रव्याणिसर्वाणिअविरोधीनि एप्रथमभेदनुं उदाहरण तथाजीवाःसर्वेअविरोधिनः एबीजाभेदनुं उदाहरण सर्वद्रव्यनेएकपणे बोलाववुंते सामान्यसंग्रह अने तेमांवली एकजीवद्रव्यने जूदोकरी सर्वजीवने एकजीवद्रव्य कहिबोलाववुं तेविशेषसंग्रह ॥ ११ ॥

व्यवहारसंग्रहविषयभेदक ॥ तेमजद्विविधप्रसिद्धरे ॥ द्रव्य
जीवाजीवभाषें ॥ जीवभवियासिद्धरे ॥ बहु० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जेसंग्रहनयनो विषय तेनाभेदनोदेखाडनार तेव्यवहारनयकहियें तेना तेमज संग्रहनयनीपरें द्विविधके० बेभेदछे १ सामान्यसंग्रहभेदकव्यवहार २ विशेषसंग्रहभेदकव्यवहार एरीतें बेभेदजाणवा द्रव्यजीवाजीवौ एसामान्यसंग्रहभेदव्यवहार अने जीवाःसंसारिणः सिद्धाश्च एविशेषसंग्रहभेदकव्यवहार एमउत्तरोत्तरविवक्षायें सामान्य विशेषपणुंभाववुं ॥ १२ ॥

वर्त्ततोऋजुसूत्रभाषें ॥ अर्थनिजअनुकूलरे ॥ क्षणिकपर्यय
कहेसुषिम ॥ मनुष्यादिकस्थूलरे ॥ बहु० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ ऋजुसूत्रनयते वर्त्तमानें वर्त्ततो अर्थनेभाषे पणअतीत अनागत अर्थनेन माने अनेवर्त्तमानेपण निजअनुकूलके० पोताना कामनोअर्थमाने पणपरकीयमाने नही तेऋजुसूत्रनय बेभेदेंकहेवो १ सूक्ष्मऋजुसूत्र ते क्षणिकपर्याय जेउत्पादव्यय तेनेमाने अनेबीजोस्थूल ऋजुसूत्रते मनुष्यादिपर्यायमाने एटलेमनुष्यतीर्यंचादिक भव नापर्यायग्रहे पणकालत्रयवर्त्ती पर्यायमानेनही अनेजे व्यवहारनयछे तेत्रणेकालना पर्यायमाने तेमाटे स्थूलऋजुसूत्र तथाव्यवहारनयने संकरदोषनजाणवो ॥ १३ ॥

शब्दप्रकृतिप्रत्ययादिक ॥ सिद्धमानेशब्दरे ॥ समभिरूढ
विभिन्नअर्थक ॥ कहेभिन्नजशब्दरे ॥ बहु० ॥ १४ ॥

पज्जवनयतिअ अंतमांरे ॥ प्रथमद्रव्यनयचार ॥ जिनभद्रा
दिकभाषियारे ॥ महाभाष्यसुविचाररे ॥ प्राणी० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवेसातनयमध्ये द्रव्यार्थिक तथापर्यायार्थिक एबेनय भेल्यानी आचार्य मत प्रक्रियादेखाडेछे जे अंतमांके० छेहलाजे शब्द समभिरूढ अनेएवंभूतरूप एत्र णनयते पर्यायनयकहियें अनेप्रथमनाचारनय जे नैगम संग्रह व्यवहार ऋजुसूत्र लक्षण तेद्रव्यार्थिकनयकहियें एरीतें जिनभद्रगणीखमाश्रमण प्रमुखसिद्धांतवादि आचार्यते श्रीविशेषावश्यकना महाभाष्यमध्ये निर्धारींकहेछे ॥ १२ ॥

सिद्धसेनमुखएमकहेरे॥ प्रथमद्रव्यनयतीन॥ तसऋजुसू
त्रनसंभवेरे ॥ द्रव्यावश्यकलीनरे ॥ प्राणी० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवेसिद्धसेन तथामल्लवादीप्रमुख तर्कवादीआचार्य एमकहेछे के प्रथम नात्रणनयजे १ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार लक्षणते द्रव्यनयकहियें अने १ ऋजुसूत्र २ शब्द ३ समभिरूढ ४ एवंभूत एचारनय पर्यायार्थिककहियें. द्रव्यार्थिकमते सर्वे पर्यायाः खलु कल्पिताः॥ सत्यंतेष्वन्वयिद्रव्यं कुंडलादिषुहेमवत् ॥ १ ॥ पर्यायार्थम ते द्रव्यं पर्यायेभ्योस्ति नोपृथक्॥यत्तैरर्थक्रिया दृष्टा नित्यं कुत्रोपयुज्यते ॥२॥ इतिद्र व्यार्थपर्यायार्थनयलक्षणात् अतीत अनागत पर्यायप्रतिक्षेपीऋजुसूत्रः शुद्धमर्थपर्या यंमन्यमानः कथंद्रव्यार्थिकः स्यादित्येतेषांमाशयः तेआचार्यनेमते ऋजुसूत्रनय द्रव्यावश्यकनेविषे लीननसंभवे तथाच उज्जुसुअस्सएगे अणुवउत्तेएगंदव्वावस्सयंपुहु त्तंनइछइ इतिअनुयोगद्वारसूत्रविरोधः वर्त्तमानपर्यायाधारस्यद्रव्यांशपूर्वापरपरिणा मसाधारण ऊर्ध्वतासामान्यद्रव्यांशसादृश्यास्तित्वरूपतिर्यक्सामान्यद्रव्यांशः एमांए केपर्यायनमाने तो ऋजुसूत्रने पर्यायार्थिकनयकहेता एसूत्रकेममिले तेमाटेक्षणिक द्रव्यवादी सूक्ष्मऋजुसूत्र तद्वर्तमानपर्यायापन्न द्रव्यादि स्थूलऋजुसूत्रते द्रव्यनयक हेवो एमसिद्धांतवादीकहेछे अनुपयोगद्रव्यांशमेव सूत्रपरिभाषितमादायोक्तसूत्रता किंकमतंतेनोपपादनीयमित्यस्मादेकपरिशीलितःपंथा. ॥ १३ ॥

इमअंतरभावितणोरे ॥ केमअलगोउपदेश ॥ पांचथकी
जेमसातमांरे ॥ विषयभेदनहीलेशरे ॥ प्राणी० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ इमके० एरीतेअंतरभावितके० मांहेभेल्याजे द्रव्यार्थिक तथापर्यायार्थिक नय तेनो अलगोउपदेश केमकस्यो कदाचितजो इमकहेसोजे मतांतरें पांचनयक हियेंछैयें तेमांबेनयभेल्यांथका सातनयकहेता जेमअलगोउपदेशछे तेमअमारे द

जेमजगकेवलज्ञान॥आतमद्रव्यनुं॥मइनाणादिकतेहनुंए॥३॥
गुणपर्यायस्वन्नाव॥कारकतन्मनो॥अरथन्नेदछेएहनोए॥४॥

अर्थ॥ जेमजगतमां आत्मद्रव्यनुं केवलज्ञान षष्ठीयें प्रयोगकरियें तेशुद्धसद्भूतव्यव हारथयो तथामतिज्ञानादिकते आत्मद्रव्यनागुणछे एमबोलावियें तेअशुद्ध सद्भूतव्य वहारथयो ॥३॥ गुणगुणीनो पर्यायपर्यायवंतनो स्वन्नाव स्वन्नाववंतनोकारक अने त न्मयके० कारकी तेहनोजे एकद्रव्यानुगत न्नेदबोलावियें तेसर्वउपनयनो अर्थजाण वो घटस्यरूपं घटस्यरक्तता घटस्यस्वन्नावः मृदायटोनिष्पादित इत्यादिप्रयोगजाणवा

असद्भूतव्यवहार॥परपरिणतिन्नलें॥द्रव्यादिकउपचारथीए॥५॥
द्रव्येंद्रव्यउपचार॥पुद्गलजीवने॥जिमकहियेंजिनआगमेंए॥६॥

अर्थ॥ परद्रव्यनी परिणति न्नलेंथके जेद्रव्यादिकने नवविधोपचारथी कहियें ते असद्भूत व्यवहारजाणवो ॥५॥ तेनवविधोपचारमां पहेलो द्रव्येद्रव्यनोउपचार क हेछे जेमजिनआगममां क्षीरनीरनेन्यायें जीवतेपुद्गलसाथें मिल्योछे माटे जीवनेपुद्गल कहियें एजीवद्रव्यें पुद्गलद्रव्यनो उपचार तेद्रव्येद्रव्योपचार पहेलोन्नेदथयो ॥ ६ ॥

कालीलेस्यान्नाव॥श्यामगुणेन्नली॥गुणउपचारगुणेकह्योए॥७॥
पर्यायेंपर्याय॥उपचारेंवली॥हयगयखंधयथाकह्याए॥८॥

अर्थ॥ जेन्नावलेश्यातेआत्मानो अरूपीगुणछे तेनेजे कृस्ननीलादिक कालीलेश्या कहियेंछैयें तेकृस्नादि पुद्गलद्रव्यनागुणनो उपचार करियेंछैयें एआत्मगुणे पुद्गलगुणनो उपचारजाणवो एरीतें गुणेगुणोपचारथयुं ॥ ७ ॥ वलीपर्यायें पर्यायोपचारते हय के० घोडा गयके० हाथी रथप्रमुख आत्मद्रव्यना असमानजातीय द्रव्यपर्याय ते ने खंधकहियेंछैयें तेआत्मपर्यायउपरें पुद्गलपर्यायजेस्कंध तेनोउपचारकरीने कहियें छैयें एपर्यायेपर्यायोपचारनो त्रीजोन्नेदथयो ॥ ८ ॥

गौरदेहहुंबोलताए॥९॥ गुणेद्र
द्रव्येंगुणउपचार॥वलीपर्यायनो॥गौरदेहजिमआतमाए॥१०॥
व्यउपचार॥पर्यायद्रव्यनुं॥

अर्थ॥ द्रव्येगुणोपचारः चोथोन्नेदकहेछे ते हुंगौरवर्णछुं एमबोलताहुंतेआत्मा द्रव्य अनेजे गौरतेपुद्गलनो उज्वलतापणो उपचर्युं एचोथोन्नेद हवेपांचमुं द्रव्येंपर्या योपचार ते जेमहुंदेहएमबोले तेमां हुंतेआत्मद्रव्य अनेदेहतो पुद्गलद्रव्यनो सामा न्यजातीय द्रव्यपर्यायउपचार्युं एपांचमोन्नेदथयुं॥९॥गुणेद्रव्योपचारः जेम एगौरदेखा

भिन्नभिन्न तत्व व्यवहारमात्र साध्यछे तेतेमजसंभवे अने इहां इतरव्यावृत्तिसाध्य छे तिहांहेतु कोटि अनपेक्षित भेदप्रवेशें वैयर्थ्यदोषहोय तत्वप्रक्रियायें एप्रयोजन छे जीव अजीव एबेमुख्यज्ञेयपदार्थभणीकहेवा अनेबंध मोक्ष एबे मुख्यहेयउपादेयछे तेमाटे बंधकारण जेआश्रव ते हेयके० छांमवुं अनेमोक्षमुख्य पुरुषार्थछे तेनाबेका रण एक संवर बीजोनिर्जराकहेवा एसाततत्वकहेवानी प्रयोजनप्रक्रियापुण्यपापरूप शुभाशुभबंध भेदविगति अलगाकरी एजप्रक्रियानवतत्वकथननीजाणवी ॥ १६ ॥

भिन्नप्रयोजनविणकह्यारे ॥ सातमूलनयसूत्र ॥ तेणेअधिकुं
केमभाषीयेंरे ॥ राखीयेंनिजघरसूत्ररे ॥ प्राणी० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ माटेइहांद्रव्यार्थिक पर्यायार्थिकना भिन्नोपदेशनुं कोइप्रयोजननथी केमके सातमूलनयापणत्ता एहवुंसूत्रेंकह्युंछे तेउल्लंघीने नवनयकहियें तो आपणाघरनुं सू त्रकेमरहे तेमाटे नवनयाः एमकहेतोथको देवसेननामा बोटिकतेउत्सूत्रभाषीजाणवो

दशभेदादिकपणइहांरे ॥ उपलक्षणकरीजाण ॥ नहींतोक
होअंतरभवेरे ॥ प्रदेशार्थकुणठाणरे ॥ प्राणी० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥इहां नयचक्रग्रंथमां दिगंबरें द्रव्यार्थिकादिक दशभेदादिककह्या तेपण उपलक्षणेकरीजाणो नहींतो प्रदेशार्थ नयक्यास्थानकेंआवे तेविचारजो उक्तंचसू त्रे दवठ्याए पएसठ्याए इत्यादि तथाकर्मोपाधीसापेक्ष जीवभावग्राहक द्रव्यार्थिक नय जेमकह्यो तेम जीवसंयोगसापेक्ष पुद्गलभावग्राहकनयपण भिन्नकह्योजोइयें ए रीतेंकरियें तो अनंताभेदथाय तथाप्रस्थकादि दृष्टांते नैगमादिकना अशुद्ध अशुद्ध तर अशुद्धतम शुद्धतर शुद्धतमादिभेद किहांसंग्रह्याजाय उपचारछे तेमाटे उप नयकाढियेंतो अपसिद्धांतथाय एअनुयोगद्वारसूत्रें तेनयनाभेद देखाड्याछे ॥ १८ ॥

उपनयपणअलगानहींरे ॥ जेव्यवहारसमाय ॥ नहींतोभे
दप्रमाणनोरे ॥ उपप्रमाणपणथायरे ॥ प्राणी० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ वलीएहिजवातदृढछे जेउपनयकह्या तेपण व्यवहार नैगमादिनयथी अलगानथी उक्तंच तत्वार्थसूत्रे उपचारबहुलोविस्तृतार्थो लौकिकप्रायोव्यवहारइति एमकरता नयनाभेदनेजो उपनयकरीमानसो तो स्वपरव्यवसायि ज्ञानप्रमाणं एल क्षणें लक्षित ज्ञानरूपप्रमाणनो एकदेश मतिज्ञानादिक अथवा देशअवग्रहादिक तेने उपप्रमाणपण केमनथीकहेता तस्मात्नय उपनय एबोटिकनीप्रक्रिया शिष्य बुद्धीते धंधनमात्रजाणवी ॥ १९ ॥

तेहस्वजातिजाणोरे॥हुंपुत्रादिक ॥ पुत्रादिकछेमाहराए॥१७॥विजा
तियीतेजाणोरे ॥ वस्त्रादिकमुज॥ गढदेशादिकउनयथीए॥ १८ ॥
उपनयजाष्याएम ॥ अध्यात्मनय ॥ कहीपरिछाजशजहोए॥१९॥

अर्थ ॥ तेस्वजाति उपचरित असद्भूत व्यवहारजाणो संबंधीकल्पनं जेहुंपुत्रादिक इहांहुंमारा एवुं जेपुत्रादिकनेविषेकेवुं तेपुत्रादिकने उपचरवाछे ते आत्मानो जे दाजेदसंबंध उपचरियेंछेयें जेपुत्रादिकते शरीरआत्मपर्यायरूपें स्वजातिछे पणकल्पितछे नहीतो स्वशरीरजन्य मत्कुणादिकने पुत्रकेमनकहियें ॥१७॥तथाविजाति उपचरित असद्भूत व्यवहारते कहियेंजे आवस्त्रादिक माहराछे इहांवस्त्रादिक पुजलनापर्यायें नामादिजेदें कल्पितछे नहीतो वल्कलादिक शरीराछादक तेनेवस्त्रकेमनकहियें तेविजातिमां स्वसंबंध उपचरियेंछेयें तेमज माहरागढदेश प्रमुखछे एमकहेताथका स्वजाति विजात्युपचरित असद्भूत व्यवहार कहियें केमके गढदेशादिकतो जीवअजीवउजय समुदायरूपछे ॥ १८ ॥ एरीतेंउपनयकह्या हवे आगलीढालमां अध्यात्मनयकहिने एमांगुणदोष परिछानो यशपामो ॥ १९ ॥

॥ ढालआवमोजायातुजविणघडीरेछमासएदेशी ॥

दोयमूलनयजाषीयारे॥निश्चयनेव्यवहार॥निश्चयद्विविधकह्योरे॥शु
द्धअशुद्धप्रकाररे ॥१॥ प्राणीपरखोआगमजाव ॥ १ ॥ एआंकणीछे

अर्थ ॥ हवेप्रथम अध्यात्मजाषायेंतो मूलबेजनयकह्याछे एकनिश्चयनय अनेबीजो व्यवहारनय तेमां निश्चयनयनावली बेजेदछे एकशुद्धनिश्चयनय अनेबीजो अशुद्धनिश्चयनय हेप्राणीआगमना जावपरखीनेग्रहो ॥ १ ॥

जीवकेवलादिकयथारे ॥शुद्धविषयनिरुपाधि ॥ मइनाणादिकआतमारे ॥ अशुद्धतेहसोपाधिरे ॥ प्राणी० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जीवते केवलज्ञानादिरूपछे माटेजे कर्मोपाधिरहित केवलज्ञानादिक शुद्धगुणविषयलेइ आत्माने अजेददेखाडियें तेशुद्धनिश्चय नयकहियें अने जे मतिज्ञानादिक अशुद्धगुणने आत्माकहियें तेअशुद्धनिश्चयनय सोपाधिकछे एटले जेनिश्चयनयते अजेददेखाडे अनेजेव्यवहारनयते जेददेखाडे ॥ २ ॥

एकविषयसद्भूतछेजी ॥ परविषयासद्भूतरे ॥ प्राणी० ॥ ३ ॥
दोइजेदव्यवहारनाजी ॥ सद्भूतासद्भूत ॥

जेहभेदबेविगतिनोरे ॥ जेउत्कटपर्याय ॥ कार्यनिमित्त
अभिन्नतारे ॥ एव्यवहारउपायरे ॥ प्राणी० ॥ २३ ॥

अर्थ॥जेव्यक्तिनो भेददेखाडियें जेम अनेकानिद्रव्याणि अनेकजीवा इत्यादिरीतें व्यवहारनयनोअर्थ तथा उत्कटपर्याय जाणियें तेपणव्यवहारनयनोअर्थ अतएव निश्चयपणएणेंपंचवर्ण्ण भमरेववहारणएणंकालवर्णो इत्यादि सिद्धांतेंप्रसिद्धछे तथा कार्यने निमित्तके० कारण एबेहुने अभिन्नपणुंकहियें तेपणव्यवहारनयनो उपायछे जेमआयुर्घृतं इत्यादिककहियें एमजगिरिर्दह्यते कुंभिकास्रवति इत्यादिक व्यवहारजा षा अनेकरूपें कहियेंछैयें ॥ २३ ॥

एमबहुविषयनिराकरीरे॥ करतांतससंकोच ॥ केवलबाल
बोधवारे ॥ देवसेनआलोचरे ॥ प्राणी० ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ एहवानिश्चेंनय तथाव्यवहारनयनाघणाअर्थ तेनेनिराकरीके० टालीने तेनो संकोचकरतां थोडोभेददेखाडतां नयचक्रग्रंथनोकर्त्ताजे देवसेननामादिगंबरी तेनो आलोच ते पोतासरिखा केटलाक बालकनेज बोधवानोदेखायछे पणसर्वार्थिनि रणयनो आलोच देखातोनथी अनेजे शुद्धनयार्थतेतोश्वेतांबर संप्रदायना शुद्धनय नाग्रंथ तेनाअभ्यासथीज जणाय एभावार्थछे ॥ २४ ॥

एमबहुविधनयभंगसुंरे ॥ एकत्रिविधपयथ्थ ॥ परखोहर
पोहेयडलेरे ॥ सुजशलहीपरमथ्थरे ॥ प्राणी० ॥ २५ ॥

अर्थ ॥ एप्रक्रियामांपणअशुद्धटालीने जेयुक्तिसिद्धअर्थछे ते उपपाद्युंछे तेमाटे एरीतें बहुप्रकारनयेभंगे एकजअर्थ त्रिविधके० द्रव्यगुणपर्यायरूप परखो स्वसमय परसमयनुं अंतरजाणीने हृदयनेविषे हर्षो परमार्थज्ञानयशपामीने ॥ २५ ॥

॥ ढालनवमी इमधन्नोधणनेपरचावे एदेशी ॥

एकअरथतिहुंलक्षणे ॥ जेमसहितकहेजिनराज
रे ॥ तेमसदहणामनधारतां ॥ सीजेसघलासुभ
काजरे॥जिनवाणीप्राणीसांभलो॥एआंकणीछे॥१॥

अर्थ ॥ हवेएकजअर्थ जीवपुद्गलादिक तथाघटपटादिक ते जेम उत्पादव्ययध्रौव्य एत्रणलक्षणेकरी सहित एमश्रीजिनराजकहेछे उपन्नेवा विगमेइवा ध्रुवेइवा एत्रिपदीयेंकरीने तेमज सदहणामनमांधरतां सर्वकार्यसीजे एत्रिपदीने सर्वअर्थव्याप

अर्थ ॥ इहांयद्यपिअमारे श्वेतांबरने मूलके० महोटो विषयभेदके० अर्थनोफे रनथी तोपणमूलके० प्रथमथी उलटीके० विपरीतपरिभाषानी शैलीकरीतेदाजेछे खे दकरेछे यद्यपि न भवति हानिः परकीयां चरतिरासभेइाहां॥असमंजसं तु दृष्ट्वा तथा पि फेरिखिद्यते चेतः इतिवचनात् ॥ ८ ॥

तत्वार्थेनयसातछेरे ॥ आदेशांतरपंच ॥ अंतरभा
वितउद्धरीरे ॥ नवनोकिस्योप्रपंचरे ॥ प्राणी० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ हवेतेबोटीकनी उलटीपरिभाषाछे ते देखाडोयेंछैयें तत्वार्थसूत्रें सातनय कह्याछे अने आदेशांतरके० मतांतर तेथीपांचनयकह्याछे सप्तमूलनयाः पंचेत्यादे शांतरं एसूत्रें एटले १ शब्द २ समभिरूढ ३ एवंभूत एत्रणनयने एकशब्द एवेनामें संग्रहीयें तो पहेलानैगमादिक चारनयसाथें मेलवतां पांचनयकहियें तेवलीएकेक ना सोसोभेदहोय तिहांपण ७०० तथा ५०० भेदथाय एरीतें बेमतकह्याछे तथो क्तमावश्यके इक्किकोयसयविहो सत्तणयसयाहवंतिएसेव॥ अणोविहुआएसो पंचेव सयानयाणंतु ॥ १ ॥ एवीशास्त्रनीरीत मूकीने अंतर्भावित सातनयमां भेल्याजे इ व्यार्थिक पर्यायार्थिक तेउद्धरी अलगाकाढीने नवनयकह्या एस्योप्रपंच हेचतुरमनु ष्योतमे विचारीजुउ ॥ ९ ॥

पज्जयथ्थउव्यारथोरे ॥ जोतुमेअलगादीठ ॥ अप्पियण
प्पियभेदथीरे ॥ केमइग्यारनइठरे ॥ प्राणी० ॥ १० ॥

अर्थ॥ एमकरता पर्यायार्थ तथाद्रव्यार्थ एबेनयजोतुमे अलगादीठा अनेनवनय कह्या तोअर्पित तथाअनर्पित एबेनयअलगाकरीने इग्यारनयकेमकह्यानहीं॥१०॥

संग्रहव्यवहारादिकेंरे ॥ जोतुमेभेलोतेह ॥ आदिअंतनय
थोकमांजी ॥ केमनवीभेलोएहरे ॥ प्राणी० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ हवेजो एमकहेसोजे अर्पितानर्पितसिद्धेइत्यादि एटले तत्वार्थसूत्रादिकमां जे अर्पितानर्पित नयकह्यांछे तेअर्पितके० विशेषकहियें अने अनर्पितके० सामान्यक हियें जे अनर्पितते संग्रहनयमांभिले अने अर्पितते व्यवहारादिक विशेषनयमां भिले माटे जूदाशीरीतेकहियें तो अर्पितनार्पित एबेनयजो जूदानथीकहेता तो आ दिअंतके० पहेला तथापाछलनयना थोकडामां द्रव्यार्थिक तथापर्यायार्थिक एवे नयकेमनथीभेलता जेथकीसूधीरीतें मूलनयसातजकहेवाय तेसर्वेसुंविधियेंरहे॥११॥

घटव्ययतेउतपत्तिमुकुटनी ॥ ध्रुवताकंचननीएकरे॥ दलएकें वर्त्तेएकदा ॥ निजकारयशकतिअनेकरे ॥ जिन० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेउत्पादव्यय ध्रुवनुं अनेदसंबंध नेददेखाडेछे हेमनाघटनोजेव्यय ते हिज हेममुकुटनीउत्पत्ति एककारणजन्यछे तेमाटे विनागपर्यायोत्पत्ति संतानछे ते थीजघटनाश व्यवहारसंनवेछे तेमाटे पण उत्तरपर्यायउत्पत्ति तेपूर्वपर्यायनो नाश जाणवो अनेकंचननी ध्रुवतापणतेहिजछे केमके प्रतित्यपर्यायोत्पदें एकसंतानपणुं तेहिजद्रव्यलक्षण ध्रौव्यछे एत्रणलक्षण एकदलें एकदावर्त्तेछे एमअनिन्नपणे पण शोक प्रमोद माध्यस्थरूप अनेककार्यदेखीने तत्कारणशक्तिरूपें अनेकपणे निन्नतापणो जाणवो जेम सामान्यरूपें ध्रौव्य अनेविशेषरूपें उत्पादव्यय एममानतापण विरोध नथी व्यवहारतोसर्वत्र स्याद्वादार्थानुं प्रवेशेंजहोय विशेषपरतापण व्युत्पत्तिविशेषेंज होय अतएव स्यादुत्पद्यते स्यान्नश्यति स्याद्ध्रुवं एमजवाक्यप्रयोगकरियेंउप्पन्नेवा इ त्यादौ वाशब्दोविवस्थायांसच स्याच्छब्दसमानार्थः अतएव कृष्णःसर्पः एलौकिकवाक्य पण स्यात्शब्देंलहीयें केमके सर्पने पृष्ठावच्छेदेश्यामताछे पण उदरावच्छेदें श्यामता नथी तथासर्पमात्रें कृष्णतानथी शेषनाग शुक्लकहेवायछे तेमाटे विशेषणविशेष्यनिय मार्थेजो स्यात्शब्दप्रयोगछे तोत्रिपदि महावाक्यपणे स्यात्कारनीनजनासंनवे ॥४॥

बहुकारयकारणएकजो ॥ कहियेंतेद्रव्यस्वन्नावरे ॥ तोका रणन्नेदान्नावथी ॥ होयकारयन्नेदान्नावरे ॥ जिन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेजोएमकहियेंजे हेमद्रव्यएकज अविकृतछे अनेजेविकार तेमिथ्याछे अनेशोकादिककार्यत्रय जननैकशक्ति स्वन्नावतछे तेमाटे तेथी शोकादिककार्यत्रयथा यछे तोकारणनान्नेदविना कार्यनोन्नेद केमथाय श्रेष्ठसाधनते प्रमोदजनक अने स्वा निष्ठसाधनते शोकजनक तदुन्नयन्निन्नते माध्यस्थजनक एत्रिविधकार्य ते एकरूपथी केमहोय शक्तिपण दृष्टांतानुसारे कल्पियेंछैयें नहीतो अग्निसमीपें जलदाह जनक स्वन्नावे इत्यादिककल्पतां पण कोणनिषेधकछे तस्मात् शक्तिन्नेद कारणन्नेद कार्यन्ने दानुसारे अवश्यअनुसरवो अने जननैकशक्तिशब्दज एकत्वानेकत्व स्याद्वादसूचवेछे

शोकादिकजननेवासना ॥ न्नेदेकोईबोलेबुद्धरे ॥ तसमन सकारनीन्निन्नता ॥ विणनिमित्तन्नेदकिमशुद्धरे॥ जिन०॥६॥

अर्थ ॥ शोकके० बौधमतवादि एमकहेछे जे तुनानोमन्नोतमननीपरें उत्पादव्य

व्यार्थिक पर्यायार्थिकनो अलगोउपदेशछे तेनुंउत्तरजे शब्द समभिरूढ तथाएवंभू
तने जेमविषयभेदछे तेमद्रव्यार्थिक तथापर्यायार्थिकने सातनयथी भिन्न विषयदे
खाडो जेमत्रणनयने एकसंज्ञायेंसंग्रही पांचनयकह्यांछे पणविषयभिन्नछे पणइहां
तो विषयभिन्ननथी केमके जेद्रव्यार्थिकना दशभेददेखाडया तेसर्वशुद्धाशुद्धसंग्रहा
दिक नयमांआवेछे तथाजे पर्यायार्थिकना भेददेखाडया तेसर्व उपचरितानुपचरित
व्यवहार शुद्धाशुद्ध ऋजुसूत्रादिकमांआवे जोगोबलिवर्दन्यायें विषयभेदें भिन्ननयक
हियें तोस्यादस्त्येव स्यान्नास्त्येव इत्यादिक सप्तभंगीमांक्रोडोरीतें अर्पितानर्पित स
त्वासत्व ग्राहक नय भिन्नभिन्नकरतां सप्तमूलनयप्रक्रियाजांजे एपमितेविचारवुं॥१४

संग्रहनेव्यवहारथीरे ॥ नैगमकिहांएकभिन्न ॥ तेणेते
अलगोतेहथीरे ॥ एतोदोयअभिन्नरे॥प्राणी०॥ १५ ॥

अर्थ॥इहांजो विषयभेदनेनयभेदकहेसो तो सामान्यनैगमसंग्रहनयमांअने विशेष
नैगमव्यवहारनयमांभेळतांबाकीछनयजथयीजासेएहवी शिष्यनीआशंकाटाळवानेअ
र्थेकहेछेकेयद्यपि संग्रहनय तथाव्यवहारनयमांहेज सामान्यविशेषपर्यायेंनैगमनय
निळेछे तोपणकिहांएकप्रदेशादिदृष्टांतस्थानेभिन्नथायछे उक्तंच ळन्हंतहयचळन्हं पंच
विहोतहयहोइभयिळ्ळा ॥ तम्मयसोयपएतो सोचेवपणेवसत्तन्हं ॥ इत्यादिक तेमाटे
किहांएक भिन्नविषयपणाथी नैगमनयभिन्नकह्यु पणइहांतो द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिकवे
हुनयनो नैगमादिकनयथी अभिन्नविषयछे तोतेने अलगाकरीने नवभेद शीरीतेकहियें

इमकरताएपामिएरे ॥ सर्वविभक्तविभाग ॥ जीवादिकप
रेंकोनहीरे ॥ इहांप्रयोजनलागरे ॥ प्राणी० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ एमकरता नवनयदेखाडतां तो विभक्तनो विभागथाय एटले वहिंच्यानुं
वहेचवुंथाय जोतमारे वेचणकरवीहोयतो तेवारें जीवाद्विधाः संसारिणःसिद्धाः
संसारिणः पृथ्वीकायिकादि षट्भेदाः सिद्धाःपंचदशभेदाः एमज नयाद्विधाः द्रव्यार्थि
क पर्यायार्थिक भेदात् द्रव्यार्थिकास्त्रिधाः नैगमादिभेदात् ऋजुसूत्रादिभेदाश्चतुर्धा
पर्यायार्थिकः एमकह्युंछे पणनवनया एमएकवाक्यनो विभागकीधो तेसर्वथा मिथ्याजा
णवो नहीतो जीवसंसारी सिद्धा इत्यादि विभागवाक्यपण थावापामे हवेकोइक
हेसेजे जीवाजीवौतत्वं एमकहेता अनेरातत्वआव्या तोपणसात अथवानवतत्व भे
मकहियेंछैयें तेमजद्रव्यार्थिक पर्यायार्थिकौ नयौ एमकहेताथका अनेरानय सर्वथा
वेछे तोपण अमे स्वप्रक्रियायें नवनयकहिसुं एमकहेतेनेकहियेंजे तिहांप्रयोजनभेदें

अर्थ ॥ जेदधिद्रव्यते डुग्धद्रव्यनही केमके जेहनेदूधनुंव्रतछेएटलेदूधजजिमवुं ए हवीप्रतिज्ञारूपछे तो तेदहीजिमेनही माटे दूधपरिणामतेहिजदधि एमजोअनेदक हियें तोदधिजिमता डुग्धव्रतनंगथवोनजोइयें एमाटे जे दूध तेदधिद्रव्यनही अने जोपरिणामीछे माटे अनेदकहियें तो दूधजिमता दधिव्रतनंग नथवोजोइयेंअने जे हने दधिखावानुंव्रतछेतेपण दूधजिमतोनथी तथाअगोरसजजिमवुं एहवोव्रतवंत होय तेदूध तथादहीबेहुजिमेनहीएमगोरसपणे बेनेअनेदछे इहांदधिपणे उत्पत्तिअने डुग्धपणेनाशतथागोरसध्रुवपणोप्रत्यक्षसिद्धछे एदृष्टांते सर्वजगदर्त्तिनावने लक्षणत्र ययुक्तपणुं कहेवुं श्लोक पयोव्रतोनदध्यत्तिनपयोत्तिदधिव्रतः ॥ अगोरसव्रतोनोजे तस्मादस्तुत्रयात्मकं ॥ १ ॥ जे अन्वयिरूप अनेव्यतिरेकरूप द्रव्यपर्यायथी सिद्धांत अविरोधें सर्वत्रअवतारीने त्रणलक्षणकहेवा केटलाएकनाव व्यतिरेकीज अने केट लाएकनावअन्वयीज एरीतेंजे दर्शनीकहेछे तिहांअनेरानावस्याद्वादव्युत्पत्तीयें देखा डवा बीजुंवस्तुनीसत्ता त्रणलक्षणरूपजछे उत्पादव्यय ध्रौव्ययुक्तं सदितितत्वार्थ वचनात् तोसत्ताप्रत्यक्ष तेहजत्रिलक्षणसाक्षातछे तथारूपें सद्व्यवहार साध्य अनुमानादिकप्रमाणअनुसरियेंछैयें ॥ ए ॥

उत्पन्नघटेंनिजद्रव्यना ॥ उत्पत्तिनाशकेमहोयरे ॥ सुणध्रु

वतामांपहेलानलिया॥छेअनुगमशक्तिदोयरे॥जिन०॥१०॥

अर्थ ॥ हवेयावत्काल एकेकवस्तुमां त्रिणत्रिणलक्षणादिक केवीरीतेंहोय तेनिर धारेछे उत्पत्तिथयीछेजेहनी एहवोजेघट तेनेविषे द्वितीयादिक्षण स्वद्रव्यसंबंध रू पोत्तरपर्यायोत्पत्ति तेहिजपूर्वपर्यायनाश तेतुमेपूर्वेंथाप्योछे एहवुंशिष्येंप्रश्नपुछ्युं ते वारेंगुरुकहेछे प्रथमक्षणेंथयाजे उत्पत्तिनाश ते ध्रुवतामांनिल्या अने अनुगमके० ए कता तेशक्तिसदाइछे अछतेपण आद्यक्षणे उपलक्षणेथयीने आगलक्षणे द्रव्यरूपत तुसंबंधकहियें जेम उत्पन्नोघटः नष्टोघटः सर्वप्रयोगात् इदानींउत्पन्ननष्टः एमकहि यें तेवारें एतत्क्षणविशिष्टता उत्पत्तिनाशनेजाणियें तेद्वितीयादिक्षणेनथी तेमाटे द्वितीयादिक्षणे इदानींउत्पन्न इत्यादिप्रयोगनथाय घटके० इहांद्रव्यार्थदेशें मृद्द्रव्य लेवुं जेमाटे उत्पत्तिनाशधरतां सामान्यरूपेंकहियें तत्प्रतियोगिता तेविशेषरूपेंकहियें

उत्पत्तिनाशनेअनुगमें ॥ नूतादिकप्रत्ययज्ञानरे ॥ पर्याया

रथथीसविघटें॥ तेमानेसमयप्रमाणरे ॥ जिन० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ निश्चेनयथी कज्ञमाणेकडे एवचनअनुसरीने उत्पद्यमानते उत्पन्नंएमक

व्यवहारनेनिश्चयथकीरे ॥ स्योउपचारविशेष ॥ मुख्यवृ
त्तिजोएकनीरे ॥ तोउपचारिशेषरे ॥ प्राणी० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ व्यवहारनेविषे उपचारछे अनेनिश्चेनयमां उपचारनथी एपणस्योविशेष जेवारें एकनयनी मुख्यवृत्तिलहियें तेवारें बीजानयनी उपचारवृत्तिआवे अतएव स्यादस्त्येव एनयवाक्यें अस्तित्वग्राहक निश्चेनयेंअस्तित्वधर्म मुख्यवृत्तिलेता कालादिकआठे अभेदवृत्त्युपचारें अस्तित्वसंबंध सकलधर्मलेतांज सकलादेशरूप नयवाक्य थाय एमआकरग्रंथेप्रसिद्धछे स्वस्वार्थे सत्यपणानो अभिमानतो सर्वनयने माहोमांहेछेज अने फलथीसत्यपणुंतो सम्यक्दर्शनयोगेंजछे ॥ २० ॥

तेणेएभाष्येभाष्युंरे ॥ आदरियेंनिरधार ॥ तत्वअरथनि
श्चयग्रहेरे ॥ जिनअभिमतव्यवहाररे ॥ प्राणी० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ तेमाटेनिश्चय तथाव्यवहारनुंलक्षण भाष्येके० विशेषावश्यकें कह्युंछे तेरीतें निरधारीने आदरो तत्वार्थग्राहीनयोनिश्चयः लोकाभिमतार्थग्राहीव्यवहारः जेतत्वअर्थते युक्तिसिद्धअर्थ जाणवो अनेजेलोकाभिमतते व्यवहारप्रसिद्धछे तेयद्यपि प्रमाणेतत्वार्थग्राहीछे तथापि प्रमाणस्य सकलतत्वार्थग्राही निश्चयनयः जछे एटले एकदेशतत्वार्थग्राही व्यवहार एभेदनिश्चें व्यवहारमांजाणवो अनेनिश्चेंनयनी विषयता अनेव्यवहारनयनीविषयताते अनुभवसिद्धभिन्नछे अत्राज्ञाननयनिष्ठ जेमसविकल्पकतानिष्टप्रकारी इत्यादिक अन्यवादिभिन्न मानेछे एमहृदयमां विचारवुं ॥ २१ ॥

अभ्यंतरताबाह्यनेरे ॥ जेबहुविगतिभभेद ॥ निरमलपरि
णतिद्रव्यनीरे ॥ एसवीनिश्चयभेदरे ॥ प्राणी० ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ जेबाह्यअर्थने उपचारें अभ्यंतरपणुं करियें तेनिश्चेनयनो अर्थजाणवो यथा समाधिर्नंदनंधैर्यं दंभोलिःसमताशची॥ज्ञानंमहाविमानंच वासवश्रीरियंपुनः॥१ इत्यादि पुंडरीकाध्ययनाद्यर्थोप्येवंभावनीयः जेघणीव्यक्तिनो अभेददेखाडियें तेपण निश्चयनयार्थ जाणवो जेम एगेआया इत्यादिसूत्रं वेदांतदर्शनपण शुद्धसंग्रहनयादेशरूप शुद्धनिश्चयनयार्थे एमसंमतिग्रंथेंकह्युंछे तथाद्रव्यनीजे निर्मलपरिणति बाह्यनिरपेक्ष परिणाम तेपणनिश्चयनयनोअर्थजाणवुं जेम आयासामाइए आयासामाइअस्सअट्ठे एमजेजेरीतें लोकातिक्रांत अर्थपामियें तेते निश्चयनयनो अर्थभेदथाय अने तेथीलोकोत्तरार्थ भावनाआवे ॥ २२ ॥

क्षणांतरभावें द्वितीयादिक्षणे उत्पत्तिपामीजोइयें जोअकल्पित अनुत्पन्नता होयन ही तोपणप्रतिक्षणे उत्पत्तिविना परमार्थथी अनुत्पन्नतापथी जोइयें ॥ १३ ॥

एणेभावेंभासिउं ॥ संमतिमांहेएभावरे ॥ संघयणादिकभ
वभावथी ॥ सीजंताकेवलजायरे ॥ जिन० ॥ १४ ॥
तेसिद्धपणेवलीउपजे ॥ केवलभावेंबेतेहरे ॥ व्ययउत्पत्ति
अनुगमथीसदा ॥ शिवमांतियलक्षणएहरे ॥ जिन० ॥१५॥

अर्थ ॥ एमपरिणामथी सर्वद्रव्यने त्रिलक्षणयोग समर्थिउ एजअभिप्रायें संमति ग्रंथमां एभावभाष्युंछे जेसंघयणादिक भवभावथीसीजतां मोक्षसमयें केवलज्ञानजाय भवस्थ केवलज्ञानपर्यायें नाशथाय एअर्थतोसिद्धपणे सिद्धकेवलज्ञानपणे उपजे ते हीजकेवलज्ञानपणे भावेंछे ध्रुवछे एमोक्षगमनसमयजे व्ययउत्पत्तिथया तत्परिणत सिद्धद्रव्यानुगमथी शिवमां मोक्षमां त्रणलक्षणहोय जेसंघयणाईया भवछकेवल वि सेषपज्जाया ॥तेसिज्झमाणसमए णहोइविगयंतउहोइ॥१॥सिद्धत्तणेणयपुणो उप्पणो एसअत्थपज्जाउ केवलभावंतुपडुच्च केवलंदाइअंसुत्ते॥२॥एभावलेइने केवलनाणेदुवि हेपन्नते भवछकेवलनाणेय सिद्धकेवलनाणेय इत्यादिसूत्रें उपदेशछे एत्रणलक्षण स्थू लव्यवहारनय सिद्धनेभाव्युं पणसूक्ष्मनयनाव्युं केमके सूक्ष्मऋजुसूत्रादिकनय तेसम यसमयप्रतें उत्पादव्ययमानेछे तेलेइनें तथा द्रव्यार्थादेशनो अनुगमलेइने जेसिद्धकेव लज्ञानमां त्रैलक्षणकहियें तेजसूक्ष्मकहेवाय एमविचारीनें पक्षांतरकहेछे॥१४॥१५॥

जेज्ञेयाकारेंपरिणमे ॥ ज्ञानादिकनिजपर्यायरे॥ व्यतिरेकेंते
थीसिद्धने ॥ तियलक्षणइमपणथायरे ॥ जिन० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ जेज्ञानादिकके० केवलज्ञान केवलदर्शन तेपोतानापर्यायें ज्ञेयाकारेंके० वर्तमानादिक विषयाकारें परिणमे व्यतिरेकेंके० प्रतिक्षणेअन्योन्यपणे सिद्धनेपरिण मे तेथीपणत्रणलक्षणथाय तेआवीरीतेंजे प्रथमादिसमये वर्त्तमानाकारछे तेहनो द्वितीयादिक्षणेनाश अतीताकारेंउत्पादआकारेंभावें अनेकेवलज्ञान केवलदर्शनभा वें अथवा केवलमात्रभावें ध्रुवछे एमभावना करवी ॥ १६ ॥

इमजेपर्यायेंपरिणमे ॥ क्षणसंबंधेंपणभावरे ॥ तेथीतियल
क्षणसंभवे ॥ नहीतोतेथायअभावरे ॥ जिन० ॥ १७ ॥

अर्थ एमजेज्ञेय द्रव्याकारसंबंधे केवलनेत्रैलक्षण कह्युं हवेनिराकारजे सम्यक

कपणुं धारवुं तेजिनशासनार्थे पणकेटलाएक एकनित्यज केटलाएकएकअनित्यज एमनैयायिकादिककहेछे तेरीतिनथी केमके नित्यैकांत अनित्यैकांत पक्षतोलोकयु क्तिथीपण विरोधछे माटे दीपथीमांमीने आकाशसुधी जेटलापदार्थछेतेमां उत्पाद व्यय ध्रौव्य लक्षणमानवुं तेहिजप्रमाणछे उक्तंच श्रीहेमाचार्यै आदीपमाव्योमस मस्वनावं स्याद्वादमुद्रानतिचेदवस्तु॥तन्नित्यमेवैकमनित्यमन्य दितित्वदाज्ञाद्विषतांप्र लापः ॥ १ ॥ एजिनेश्वरनीवाणी हेप्राणीतुंमेसांनलो ॥ १ ॥

उत्पादव्ययध्रुवपणे ॥ छेसमयसमयपरिणामरे ॥ षटद्रव्य

तणोप्रत्यक्षथी ॥ नविरोधतणोएठामरे ॥ जिन० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवेएहिजनाव विवरीनेकहेछे १ उत्पाद २ व्यय ३ ध्रुव एलक्षणे षट द्रव्यनो समयसमय परिणामछे इहांकोइकहेसेजे जिहांउत्पादव्यय तिहांध्रुवपणो नजोइयें अनेजिहांध्रुवपणो तिहांउत्पादव्यय नजोइयें एहवोविरोधछे तोत्रणलक्ष ण एकठामेकेमहोय जेम छाया तथाआतप एकठामेनहोय तेम ए त्रणलक्षणपण ए कठामे नहोवाजोइयें तेनेकहियेंजे शीत उष्ण स्पर्श जल तथाअनलके० अग्नीनेवि षे परस्परें परिहारेंदीठाछे तेने एकठामें उपसंहारे विरोधकहियें पण इहांतोत्रणल क्षण सर्वत्रएकठाज प्रत्यक्षथीदेखायछे परस्परपरिहारेंकिहांयें प्रत्यक्षसिद्धनथी तोए विरोधनोठाम केमहोय अनादिकालनी एकांतवासनायें मोहितजीव तेएहोनोविरोध जाणेछे पणपरमार्थें विचारीजोता विरोधनथी समनियततायें प्रत्ययजविरोधनंजकछे

घटमुकुटसुवर्णहअर्थिया ॥ व्ययउत्पतिथितिपेखंतरे॥ नि

जरूपेंहोवेहेमथी ॥ दुखहर्षउपेक्षावंतरे ॥ जिन० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ तेहिजदेखाडेछे जे एकहेमद्रव्यनेविषे घटाकारेंनाश अनेमुकुटाकारेंउत्प त्ति तथाहेमाकारेंस्थिति एत्रणलक्षण प्रगटदेखायछे केमके हेमघटनांजी नेहेममु कुटथायछे तेथी हेमघटार्थी दुखवंतथायछे माटेघटाकारें हेमव्ययसत्यछे अने हेम मुकुटार्थी हर्षवंतथायछे तेमाटेहेमोत्पत्ति मुकुटाकारेंसत्यछे अनेहेममात्रार्थी तेकालें नसुखवंत नदुःखवंतथायछे स्थितिपरिणामेंरहेछे तेथी हेमसामान्यस्थिति सत्यछे एमसर्वत्र उत्पादव्यय स्थितिपर्याय द्रव्यरूपेंजाणवा इहांउत्पादव्यय जाणेंनिन्न द्रव्य अनेस्थितिजांणे निन्नद्रव्य कोइदेखातुंनथी केमके घटमुकुटाद्याकारें स्पर्शी हे मद्रव्यछेनही जेएकध्रुवहोय ध्रुवतानीप्रतितिपणछे माटेतन्नावाव्ययंनित्यं एलक्षण परिणामेंध्रुव अने परिणामेंअध्रुव एसर्वनाववुं ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ संयोगविनाजे विश्रसाउत्पाद तेएकत्विकजाणवो तेद्रव्यविनागें सिद्ध केº उत्पन्नजाणवो जेमद्विप्रदेशादिक स्कंधविनागें अणुपणुंकेº परमाणुद्रव्यनो उत्पादथाय तथाजेमजीवने कर्मविनागें सिद्धपर्यायनो उत्पादथाय अनेअवयवनासंयोगेंज द्रव्यनीउत्पत्तिहोय पणविनागेंनहोय एहवुंजे नैयायिकादिक कहेछे तेनेमतें एकत्वादिविनागें खंमपटोत्पत्तिकेमघटे प्रतिबंधकानावसहित अवस्थित अवयवनासंयोगने हेतुताकल्पतां महागौरवहोय तेमाटेकिहांएकसंयोग किहांएकविनागें द्रव्योत्पादकमानवो तोविनागज परमाणुउत्पादपणे एपणअर्थेसिद्धथयो एसंमतिमांसूचव्युंछे तदुक्तं दव्वंतरसंयोगाहि केइदवियस्सविंतिउप्पायं ॥ उप्पायथ्थाकुशला विनागजायणइथ्थंति ॥ १ ॥ अणुएहिंदव्वेआ रद्धेत्तिअणुअंतिववएसो ॥ तत्तोअपुणविनत्तो अणुत्तिजाउअणुहोइ ॥ २ ॥ ॥ २१ ॥

विणखंधहेतुसंयोगजे ॥ परसंयोगेंउत्पादरे ॥ वलीजेह्नि
णह्निणपर्यायथी ॥ तेएकलज अविवादरे ॥ जिनº ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ जेमपरमाणुनो उत्पादएकलजछे तेमजजेनासंयोगें बंधनीपजेनही एहवोजे धर्मास्तिकायादिकनो जीवपुद्गलादिकना संयोग तद्द्वारें जेसंयुक्ते द्रव्योत्पादअसंयुक्ता अवस्थाविनाशपूर्वक तथाऋजुसूत्रनयानिमतजे क्षणिक पर्याय तेप्रथमद्वितीयसमयादि द्रव्यव्यवहारहेतुतद्वारें जेउत्पाद तेसर्वएकलउत्पाद अविवादपणे जाणवो इहांकोइविवादनथी ॥ २२ ॥

परप्रत्ययधर्मादिकतणो ॥नियमेज्नांण्योउत्पादरे॥ निजप्रत्य
यपणतेहिजकह्यो ॥ जाणीअंतरंगनयवादरे ॥ जिनº ॥२३॥

अर्थ ॥ धर्मास्तिकायादिकनो उत्पाद ते नियमेंपरप्रत्यय स्वोपष्टम्यगत्यादिपरिणत जीवपुद्गलादिकना निमित्तेंजनाष्युंछे तेउनयजनित तथाएकजनितपणहोय तेमाटेतेने निजप्रत्ययपणेकह्यो अंतरनयवाद केº निश्चेंव्यवहारजाणीने एअर्थ आगासाइआणंति न्हंपरपच्चउनियमा एसंमतिनीगाथामध्ये अकारप्रश्लेषें बीजोअर्थ वृत्तिकारेंकह्योछे तेअनुसरीने लिख्योछे ॥ २३ ॥

द्विविधनाशपणजाणीयें ॥ एकरूपांतरपरिणामरे ॥ अर्थांत
रगमनन्नावगमनवली॥ बीजोप्रकारअनिरामरे॥ जिनº॥२४

अर्थ ॥ परिणामोह्यर्थांतरगमनंनचसर्वथाव्यवस्थानं ॥ नचसर्वथाविनाशः परिणामस्तद्विदामिष्टः॥सत्पर्यायेणविनाशः प्राडुर्नावोसताचपर्ययतः॥द्रव्याणांपरिणामःप्रो

यजएकदाछे क्षणिकस्वलक्षणनेध्रुवतातोछेजनही हेमथीशोकादिक कार्यहोयछे नि न्ननिन्नलोकनी निन्नवासनाछे तेमाटे जेमएकजवस्तुवासनानेदें कोनेअनिष्ट एप्रत्यक्ष छे जेमसेलडीप्रमुख मनुष्यनेइष्टछे तथाकरनजेउंट तेनेअनिष्टछे पणतिहां वस्तुनेदन थी तेमइहांपणजाणवुं तेबौद्धने निमित्तनेदविना वासनारूप मनस्कारनीनिन्नता के मछुद्धथाय माटे शोकादिकनुं उपादान जेमनिन्ननिन्नछे तेम निमित्तपणनिन्न अव श्यमानवुं एकवस्तुनीप्रमातृनेदें इष्टानिष्टताछे तिहांपण एकद्रव्यना इष्टानिष्टग्यान जननशक्तिरूपपर्यायनेदकहेवाज ॥ ६ ॥

जोनिमित्तनेदविणग्यानथी ॥ शक्तिसंकल्पविकल्परे॥ तो
बाह्यवस्तुनालोपथी॥ नघटेतुजघटपटजल्परे॥जिन०॥७॥

अर्थ ॥ जो योगाचारमतवादि बौद्ध कहेसेजे निमित्तकारणनानेदविनाज वास नाविशेषजनितग्यानस्वनावथी शोकप्रमोदादिक संकल्पविकल्पहोयछे तो घटपटा दिक निमित्तविनाज वासनाविशेषें घटपटाद्याकार ग्यानहोवोजोइयें तेथी बाह्यवस्तु सर्वलोपाए अनेनिःकारण तत्तदाकारग्यानपण संनवेनही अंतरबहिराकारवि शेषें बाह्याकार मिथ्याकहियें तोचित्रवस्तुविषय नीलपीताद्याकार ग्यानपण मिथ्या थयोजाय तथासुखाद्याकार नीलाद्याकारपण विरुद्धथाय तेथीसर्वे शून्यग्यानवादि माध्यमिकबौद्धनो मतआवीजाय उक्तंच किंस्यात्साचित्रतैः कस्यांनस्यात्तस्यामता वपि ॥ यदीदंस्वयमर्थानां रोचतेतत्रकोवयं ॥ १ ॥ तेशून्यवादपण प्रमाणसिध्यसि द्धि व्याहतछे तेमाटे सर्वनयशुद्धस्याद्वादज वीतरागप्रणीत आदरवो ॥ ७ ॥

घटनाशमुकुटउत्पत्तिनो ॥ घटएकजरूपेंहेतरे ॥ एकांत
नेदनीवासना ॥ नैयायिकपणकेमदेतरे ॥ जिन० ॥ ८ ॥

अर्थ॥एमशोकादि कार्यत्रयनेनेदें उत्पादव्ययध्रौव्य एत्रणलक्षण वस्तुमांसाध्यांपण तेअविनक्तछे द्रव्यपणेअनिन्नछे अतएव हेमघटनाशानिन्न हेममुकुटोत्पत्तिनेविषे हे मघटावयव विनाशादिकहेतुछे अतएवच महापटनाशानिन्न खंमपटोत्पत्तिप्रतिए कादि तंतुसंयोगापगमहेतुछे खंमपटें महापटनाशने हेतुताकल्पियें तोमहागौरवथाय एमजाणतो एलाघवप्रियनैयायिक नाशोत्पत्तिना एकांतनेदनीवासना केमदीयेछे ते हनुंमतछे जे कल्पनागौरवंयत्र तंपक्षंनसहामहे॥कल्पनालाघवंयत्र तंपक्षंतुसहामहे

दुग्धव्रतदधीजिमेनही ॥ नवीदूधदधीव्रतखायरे ॥ नवीदो
इअगोरसव्रतजिमे॥ तेणेतियलक्षणजगथायरे ॥ जिन० ॥ ९॥

सविअर्थसमयमांनाषिया ॥ एमविधत्रिलक्षणनीलरे ॥ जेना
वेएहनीनावना ॥ तेपावेसुखजशलीलरे ॥ जिन० ॥ २८ ॥

अर्थ ॥ एरीतें समयके० सिद्धांतमां सर्वअर्थत्रिविधप्रकारें त्रिलक्षणके० उत्पादव्ययध्रौव्य तत्शील तत्स्वनावनाष्याछे माटेजेपुरुषपदार्थमां एत्रणलक्षणस्वनावनी नावनानावे तेप्राणीविस्ताररुची सम्यक्त अवगाहीने अंतरंगसुख अने प्रनाविकपणानोयश तेनीलीलाप्रतेंपामे ॥ २८ ॥

॥ ढालदशमो आजनहेजोरेदिसेनाहलो ॥ एदेशी ॥

निन्नअनिन्नत्रिविधतियलक्षणो॥ नाषिउंइममेंअत्थ ॥ ने
दद्रव्यगुणपज्जवनाहवे ॥ नाषीजेंपरमत्थ ॥ १ ॥ समकि
तसुद्धोरेइणीपरेंआदरो ॥ समकितविणसविधंध ॥ समके
तविणजेरेहठमारगेंपम्या॥ तेसविजातिरेअंध ॥समण॥२॥

अर्थ ॥ एरीतें निन्नतथाअनिन्न अनेत्रिविध त्रीयलक्षणे अछके० एकअर्थ ते एकपदार्थछे एवुंजेपहेलां बीजाढालमां ढाररूपेंकह्युंहतुं तेमेंविस्तारीने आगला ढालेंकह्युं हवेद्रव्यगुणपर्यायनाजे परमार्थनेदछे तेविस्तारीनेजाणवुं ॥ १ ॥ एरीतें द्रव्यगुणपर्याय परमार्थेविचारीने विस्ताररुची सम्यक्तनेआदरो जोकदाचित् तादृशधारणाशक्तिनहोय अने एद्रव्यगुणपर्यायनाजे विचार तेनेजनावथीसदहे तथाज्ञानवंतनोरागीहोय तेनेपणयोग्यतायें द्रव्यसमकेतहोय एवेप्रकारछे तेसमकेतवंतनी दानदयादिक तथाथोडीक्रिया तेपणसर्वसफलहोय उक्तंच विंसेकायांदाणाइं आउएयं मिचेवसहलाउ ॥ हुंतिकिरियाउएआउ विहुजह्मामोरकफलाउपराउअ ॥ १ ॥ माटेसमकेतविना तेसर्वक्रिया धंधके० क्लेशरूपजाणवी अनेसमकेतविनाजेअगीतार्थ तथाअगीतार्थनश्रीत स्वस्वांनिनिवेशें हवकदाग्रहमार्गें पडयाछे तेसवेंजातिअंधसरिखा जाणवा तेजोरुडुंजाणीकरे तोपणनलुंनहोय उक्तंच सुंदरबुद्धीइकयं बहुअंपिणसुंदरंहोइ माटेद्रव्यगुणपर्याय नेदपरिज्ञानेकरीने सूधुंसमकेतआदरो एहितोपदेशछे ॥ २ ॥

धर्मअधर्महगगनसमयवली॥ पुग्गलजीवजएह ॥ षटद्रव्य
कह्यारेश्रीजिनशासने ॥ जासनआदिनछेह ॥ सम० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ धर्मके० धर्मास्तिकाय अनेअधर्मके० अधर्मास्तिकाय तथागगनके० आकाशास्तिकाय तथासमयके० कालद्रव्य तथाअद्धासमय जेहवुं बीजुंनामछे वली

हियें पणव्यवहारनयथी उत्पद्यते उत्पन्नं उत्पस्यतेनश्यतिनष्टंनंक्ष्यति एविजक्त काल त्रयप्रयोगछे तेप्रतिक्षण पर्यायोत्पत्तिनाशनयवादी जे ऋजुसूत्रनय तेणेअनुगृहीत जे व्यवहारनंयते लेइनेकहियें केमके ऋजुसूत्रनय समयप्रमाण वस्तुमानेछे तिहां जेपर्यायना वर्त्तमान उत्पत्तिनाश विवक्षीयें तेलेइने उत्पद्यते नश्यतिकहियें अने अ तीतलेइ उत्पन्नोनष्टः एमकहियें वली अनागतनेलेइ उत्पत्स्यतेनंक्ष्यति एमकहियें व्यवस्थासर्वस्याङ्ब्दप्रयोगेंसंजवे ॥ ११ ॥

जोतुजउत्पत्तिविशिष्टनो ॥ व्यवहारनाशनोइष्टरे ॥ व्यवहा रेंउत्पत्तिआदरो ॥ तोपहेलाअछतिविशिष्टरे॥जिन०॥१२॥

अर्थ ॥ जोउत्पत्तिधारारूप नाशनेविषे भूतादिकप्रत्ययनकहियें अने नशधातु नोअर्थ नाश ने उत्पत्ति एबेलेइ तडुत्पत्तिकालत्रयनो अन्वयसंजवतो कहियें एरीतें कहेतां नश्यसमयें नष्टःएप्रयोगनहोय केमके तेकालेंनाशोत्पत्तिनुं अतीतत्वनथी ए म व्यवहारनोजो समर्थनकरोछो तोव्यवहारें उत्पत्तिक्षणसंबंध मात्रकहो तिहां प्रागजावध्वंसनाकालजावथी कालत्रयनोअन्वय समर्थनकरो अनेजोएमविचारसो जेघटने वर्त्तमानत्वादिकें जेमघटवर्त्तमानत्वादि व्यवहारनहोय अने पटधर्मेवर्त्तमा नत्वादिकें पटवर्त्तमानत्वादिकव्यवहारनहोय तेमनाशोत्पत्ति वर्तमानत्वादिकें नाश वर्तमानत्वादिव्यवहारनहोय तोक्रियानिष्ठा परिणामरूप वर्त्तमानत्वने अतीतत्वले इ नश्यतिनष्टः उत्पद्यतेउत्पन्नः एविजक्ति व्यवहारसमर्थन करो अतएव क्रियाका ल निष्ठाकालयौगपद्य विवक्षायें उत्पद्यमानं उत्पन्नं विगछद्विगतं एसिद्धांतिक प्रयो गसंजवे अनेपरमतें इदानीं ध्वस्तोघटः एआद्यक्षणे व्यवहारसर्वथा घटेनही पण अमारेनयजेदेसंजवे उक्तंच संमतौ स्वाधिकरणक्षणत्वव्यापकस्वाधिकरणक्षणध्वंसा धिकरणताकत्वं अनुत्पन्नं ॥ उप्पज्जमाणकालं उप्पणंति विगयंविगछंतं॥जेदवियप न्नवंतो तिकालविसयंविसेसेई ॥ १ ॥ १२ ॥

नुत्पत्तिनहीजोआगलें ॥ तोअनुत्पन्नतेथायरे ॥ जिमनाश विनाअविनष्टछे ॥ पहेलातुजकेमसुहायरे ॥ जिन० ॥१३॥

अर्थ ॥ आगलेंके० द्वितीयादिक्षणेजो उत्पत्तिनही तोघटादिक द्वितीयादिकक्ष णे अनुत्पन्नथाय जेमध्वंसथयापहेला नाशविना अविनष्टकहियेंछैयें तोएतर्कतुज ने केमसुहातुंनथी तेमाटेप्रतिक्षणोत्पाद नाशपरिणामद्वारें मानवा द्रव्यार्थदेशें द्वितीयादिक्षणे जोउत्पत्ति व्यवहारकहियें तोनाशव्यवहारपण होवोजोइयें तथा

अनंतालोकाकाशप्रमाणें एक अलोकाकाशछे तेमांलोकाकाशने गतिहेतुपणुंछे तेथीअ लोकमां सिद्धगतिनहोयएमतो कह्युंजायनही पण धर्मास्तिकायविना लोकाकाश विव स्थाजनहोय धर्मास्तिकायविशिष्टाकाशएवहि लोकाकाशस्तस्यच गतिहेतुत्वेघटादाव पि दंमविशिष्टाकाशसत्वेनैवहेतुतास्यादितिनकिंचिदेतत् बीजुं अन्यस्वनावपणे कल्पि तआकाशनेस्वनावांतर कल्पनाते अयुक्तछे माटेगतिनिबंधप्रमुख धर्मास्तिकायड्व्य अवश्यमानवुं ॥ ६ ॥

जोथितिहेतुअधर्मनजाषीयें ॥ तोनित्यथितिकोंइठाण ॥ गतिवि णहोवेंरेपुजलजंतुनी ॥ संनालोजिनवाण ॥ सम० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवे अधर्मास्तिकायनेविषे प्रमाणदेखाडेछे जोसर्वेजीवपुजलने साधारण थितिहेतुत्व अधर्मास्तिकायड्व्य नकहियेंतो किंतुधर्मास्तिकायाजावप्रयुक्त गत्यजा वे अलोकेस्थित्यजाव एमकहियेंतो अलोकाकाशें कोइकस्थाने गतिविना पुजलजी वड्व्यनी नित्यस्थितिपामिजोइयें बीजुंगतिस्थिति स्वतंत्र पर्यायरूपछे जेमगुरु त्व लघुत्व एकने एकाजावरूप कहेतां विशेषग्राहक प्रमाणनथी तेमाटेकार्यजेदें अपे क्षाकारण ड्व्यजेद अवश्यमानवो धर्मास्तिकायाजावप्रयुक्तगत्यजावें स्थित्यजावक ही अधर्मास्तिकाय अपलपियेंतो अधर्मास्तिकायाजावप्रयुक्त स्थित्यजावेंगत्य जावकही धर्मास्तिकायनोपण अपलापथाय जेमनिरंतर गतिस्वजावें ड्व्यनकहेवो जोइयें तोनिरंतर स्थितिस्वजावेंपण केमकहीयें तेमाटेश्रीजिनवाणीनो परमार्थ सां जलीने धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय एबेड्व्य असंकीर्णस्वजावेंमानवा ॥ ७ ॥

सर्वड्व्यनेंरेजेदीयेसर्वदा ॥ साधारणअवकाश ॥ लोक अलोकप्रकारेंजाषित ॥ तेहड्व्यआकाश ॥ सम० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हवे आकाशड्व्यनुं लक्षणकहेछे सर्वड्व्यनेजे सर्वदासाधारण अवकाश आपे तेअनुगत एकआकाशास्तिकाय सर्वाधारकहियें इहपक्षीतेहपक्षी इत्यादिव्यवहा रयदेशजेदेंहोय तद्देशीअनुगतआकाशज पर्यवसन्नहोय तद्देशोर्ध्वजागावछिन्नमूर्त्तजा वादिनात द्व्यवहारोपपत्तिरिति वर्द्धमानाद्युक्तं नानवद्यतस्याजावादिनिष्ठत्वेनानुजू यमानड्व्याधारांशापलापप्रसंगात्तावत्प्रतिसंधानेपि लोकव्यवहारेणाकाशदेशप्रतिसं धेयोक्तव्यवहाराच्च एमआकाश लोकालोकजेदें द्विविधजाण्वुंछे यतःसूत्रं डविहेआगा सेपन्नतेलोआगासेय अलोआगासेय ॥ ८ ॥

वीर्यादिकन्नाव तेने तथा सिद्धादिक शुद्धद्रव्यने कालनासंबंधथी त्रैलक्षणदेखाडेछे एमजेन्नाव क्षणसंबंधेपण पर्यायथीपरिणमे एप्रथमपदार्थः तेथीत्रणलक्षण संन्नवे जेमद्वितीयक्षणेन्नाव अने आद्यक्षणे संबंधपरिणामें नाशपाम्यो अनेद्वितीयक्षणे संबंधपरिणामे उपनो वलीक्षणसंबंधमात्रें ध्रुवछे तेकालसंबंधथी त्रणलक्षणसंन्नवे नहीतोतेवस्तुनो अन्नावथयीजाय उत्पादव्यय ध्रुवयोग्यज न्नावलक्षणछे अनेतेरहित जे शशविषाणादिक तेअन्नावरूपछे ॥ १७ ॥

निजपरपर्यायेंएकदा ॥ बहुसंबंधेबहुरूपरे ॥ उत्पत्तिनाश
एमसंन्नवे ॥ नियमेंतिहांध्रौव्यसरूपरे ॥ जिन० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ एमपोतानापर्यायें जीव तथापुज्ञलने अनेपरपर्यायें आकाश अनेधर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकायएत्रणद्रव्यने एककालें बहुके० घणासंबंधे बहुप्रकारें उत्पत्तिनाशसंन्नवे जेटलास्वपर्याय तेटला उत्पत्तिनाशहोय तेथी तिहांध्रौव्यस्वरूपपण तेटला निरधारछे पूर्वापरपर्यायानुगतआधारांशतावन्मात्रहोय तेवति अत्रसंमतिगाथा एगसमयंमीएग दवियस्सबहुआविहोंतिउ॥ उप्पायसमाविगमा ठिईयउस्सग्गोणियमा

द्विविधप्रयोगजवीससा ॥ उत्पादप्रथमअविशुद्धरे ॥ तेनिय
मेंसमुदयवादनो ॥ यतनेंसंयोगजसिद्धरे ॥ जिन० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ उत्पादद्विविधके० बेप्रकारेंछे एकप्रयोगज बीजोवीससाके० स्वन्नावजनित तेमांपहेलो उत्पादते व्यवहारनोछे तेमाटेअविशुद्धकहियें तेनिर्धार समुदयवादनो तथायत्नेकरी अवयवसंयोगें सिद्धकहियें अत्रसंमतिगाथा ॥ उप्पाउदुवियप्पो पउगजणीउअवीस्सचेव॥ तबयपउगजणीउ ॥ समुदयवाउअपरिसुद्धो ॥ १९॥

सहजेंथायतेवीससा ॥ समुदयएकलप्रकाररे ॥ समुदयअ
चेतनखंधनो ॥ वलीसचित्तमिसनिरधाररे ॥ जिन० ॥२०॥

अर्थ ॥ अनेजे सहजें यत्नविनाउत्पादथाय तेविश्रसा उत्पादकहियें तेएकसमुदयजनित अनेबीजोएकत्विक उक्तंच साहाविउविसमुदय कउवएगत्तिउव्होज्जाहिं॥ जेसमुदयजनित विश्रसाउत्पाद तेअचेतनस्कंध अभ्रादिकनो तथासचित्तमिश्रशरीर वर्णादिकनो निरधारजाणवो ॥ २० ॥

संयोगविनाएकलनो ॥ तेद्रव्यविन्नागेंसिद्धरे ॥ जिमखं
धविन्नागेंअणुपणुं ॥ वलीकर्मविन्नागेंसिद्धरे ॥जिन०॥२१॥

अर्थ ॥ तथाबीजाआचार्य एमन्नाषेछे जेज्योतिषचक्रनेचारें परत्वापरत्व नवपुराणादिनावस्थितिछे तेहतुं अपेक्षाकारण मनुष्यलोकमां कालद्रव्यछे अर्थनेविषे सूर्यक्रियोपनायक द्रव्यनुं चारके० फिरवुं तेक्षेत्रप्रमाणज कल्पवुंघटे माटेएहवुंकालद्रव्यकहियें तोज श्रीनगवतीसूत्रमां कइणंनंतेदवापन्नत्ता गोयमा छव्विहादवापन्नत्ता धम्मत्थिकाए जाव अद्धासमए एववचनछे तोतेनुंनिरुपचरितज व्याख्यानघटे अनेकालद्रव्यवर्त्तनापर्यायिने साधारणापेक्षा द्रव्यनकहियेंतो गतिस्थित्यवगाहनासाधारणापेक्षा कारणपणे धर्माधर्माकाशास्तिकाय सिद्धथया तिहांपण अनाश्वासथावे माटेए अर्थयुक्तिग्राह्यछे तेथीकेवलआज्ञायें ग्राह्यकह्युं पणतेथीकेमसंतोषधराय ॥ १२ ॥

धम्मसंग्रहणीरिएदोयमतकह्या ॥ तत्वार्थमांरेजाण ॥ अनपेक्षितद्रव्यार्थिकनयमतें ॥ बीजुंतासवखाण ॥सम०॥१३॥

अर्थ ॥ एबेमत धर्मसंग्रहणीग्रंथमां श्रीहरिनद्रसूरियें कह्याछे तथाचतद्गाथा ॥ जंवत्तणाइरूवो कालोदवस्सचेवपज्जाउ ॥ सोचेवतत्तोधम्मो कालस्सवजस्सजोलोएत्ति ॥ १ ॥ तथातत्वार्थसूत्रेंपण एबेमतकह्याछे कालश्चेत्येके इतिवचनात् बीजुंमतते तत्वार्थनेव्याख्याने अनपेक्षित द्रव्यार्थनयनेमतें कह्युंछे स्थूललोकव्यवहारसिद्ध एकालद्रव्य अपेक्षारहितजाणवुं अन्यथा वर्त्तनापेक्षाकारणपणेजोकालद्रव्यसाधियें पूर्वापरादि व्यवहारविलक्षण परत्वापरत्वादि नियामकपणे दिग्द्रव्यपणेसिद्धथाय अनेजो आकाशमवगाह्य तदनन्यादिगन्यथा ॥ तावप्येवमनुछेदात्ताभ्यांचान्यडुदाहृतं एसिद्धसेनदिवाकरकृतनिश्चयद्वात्रिंशिकार्थविचारी ने आकाशथीयदि कार्यसिद्धहोय एममानीयेंतोकालद्रव्यकार्यपणेकथंचित्तेहथीज उपपन्नहोयतस्मात्कालश्चेत्येकेइतिसूत्रंअनपेक्षितद्रव्यार्थिकनयें नैवेतिसूक्ष्मदृष्ट्याविनावनीयं ॥

मंदगतेअणुयावतसंचरे ॥ नहप्रदेशएकेछोर ॥ तेहसमय नोरेनाजनकालाणुं ॥ इमन्नांषेकोइछोर ॥ सम० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ हवेकालद्रव्याधिकारें दिगंबरप्रक्रिया उपन्यासेछे जेएकनन्नप्रदेशने छोरके० मंदगति अणुके० परमाणुजेटलेंकालें संचरे तेपर्यायिनेसमयकहियें तदनुरूपतेकालपर्यायसमयनुं जेनाजन तेकालाणु कहियें तेएकेक आकाशप्रदेशें एकेकपरमाणु एमकरता लोकाकाशप्रदेशप्रमाण कालाणुहोय एरीतें कोइक छोरके० जैनानासदिगंबरन्नाषेछे उक्तंचद्रव्यसंग्रहे रयणाणंरासीइव तेकालाणुअसंखदव्वाणि ॥ १४ ॥

क्तः खलुपर्यवनयस्य एवचन संमति तथाप्रज्ञापनावृत्तिमां कह्युंछे कथंचित्सतूरुपांत रपामे पणसर्वथाविणसेनही तेद्रव्यार्थिकनयनो परिणामकह्यो पूर्वसतूपर्यायेंविणसे अनेउत्तर असतूपर्यायेंउपजे तेपर्यायार्थिकनयनो परिणामकह्यो एअभिप्रायेंजोता ए करूपांतरपरिणाम विनाशअनेएकअर्थांतरगमनविनाशएरीतेंविनाशना बेभेदजाणवा

अंधारानेउद्योतता ॥ रूपांतरनोपरिणामरे ॥ अणुनेअणु
अंतरसंक्रमे ॥ अर्थांतरगतिनोठामरे ॥ जिन० ॥ २५ ॥

अर्थ ॥ तिहांअंधारो अनेउद्योतता तेअवस्थित द्रव्यनो रूपांतरपरिणामें रूप नाशजाणवो अने अणुके० परमाणु तेजेवारेंअणुअंतरसंक्रमे तेवारें द्विप्रदेशादि कन्नावथायछे तिहांपरमाणुपर्यायमूलगोटल्यो अनेस्कंधपर्यायउपनो तेणेकरीने अ र्थांतरगतिरूप नाशनो गमजाणवो ॥ २५ ॥

अणुनेंव्यद्यपिखंधता ॥ रूपांतरअणुसंबंधरे ॥ संयोगवि
नागादिकथकी ॥ तोएणेएभेदप्रबंधरे ॥ जिन० ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ यद्यपि अणुनेअणुसंबंधे खंधताछे तेरूपांतर परिणामजछे तोपणसंयो गविन्नागादिकरूपें द्रव्यविनाश द्विविधतुंजछे एउपलक्षणजाणवुं केमके द्रव्योत्पाद विन्नागेंज जेमपर्यायोत्पादविन्नागथाय तेमद्रव्यनाशविन्नागेंज पर्यायनाशविन्नागहोय तेसमुदयविन्नाग अनेअर्थांतरगमन एबेप्रकार व्यवहारियें पहेलोतंतुपर्यंत पटनाश अनेबीजोघटोत्पत्तियें मृत्पिंमादिकनो नाश उक्तंचसंमतौ विगमस्सविएसविहा समु दयजाणीयमिसोउडविअप्पो ॥ समुदयविन्नागमित्तं अत्थंतरन्नावगमणंच ॥ १ ॥ २६ ॥

ध्रुवन्नावथूलऋजुसूत्रनो ॥ पर्यायसमयअनुसाररे ॥ संग्रहनो
तेहत्रिकालनो ॥ निजद्रव्यजातिनिरधाररे ॥ जिन० ॥ २७ ॥

अर्थ ॥ ध्रुवन्नावपण स्थूलतथासूक्ष्मभेदें बेप्रकारनोछे तेमां पहेलो स्थूलते ऋजु सूत्रनयने अनुसारे मनुष्यादिकपर्याय समयप्रमाणजाणवो अनेबीजो सूक्ष्मते सं ग्रहनयनेसम्मत तेत्रिकालव्यापकजाणवुं पणजीवपुजलादिक निजद्रव्यजातीते जे मआत्मद्रव्यें गुणपर्यायतुं आत्मद्रव्यानुगमजध्रुव तेसामान्याधिकरणत्वे नान्वयानु गमज ध्रौव्य अनेपुजलद्रव्यें गुणपर्यायतुं पुजलद्रव्यानुगमज ध्रौव्य एमपोतपोतानी जातियें निरधारजाणवो ॥ २७ ॥

तोसर्वेजीवाजीवनापर्यायरूपजकालकह्योछे तेमांविरोधनथी तोड्व्यकालपण केमक ह्योछेमाटेकालने ड्व्यत्ववचन तथालोकाकाश प्रदेशप्रमाणअणुवचन एसर्वेउपचारें जोडीयें मुख्यवृत्तीते पर्यायरूपकालज सूत्रसंमतछे अतएव कालश्चेत्येके इहांएकवच नते सर्वसंमतत्वानावसुचव्यो ॥ १७ ॥

पर्यायेजेमन्नाष्योड्व्यनो ॥ संख्यारथउपचार ॥ अप्रदेश तारेयोजनकारणें ॥ तेमअणुतानोरेसार ॥ सम० ॥ १ए ॥

अर्थ ॥ हवे उपचारप्रकारज देखाडेछे षडेवड्व्याणि एसंख्यापूरणनेअर्थें जेमप र्यायरूप कालनेविषे ड्व्यपणानोउपचार नगवत्यादिकनेविषे करियेंछैयें तेमसूत्रें कालड्व्यने अप्रदेशताकहियेंछैयें तथाकालपरमाणुपण कह्याछे तेयोजननेकारणे लो काकाशप्रदेशस्थ पुजलाणुनेविषेज योगशास्त्रनाअंतरश्लोकमां कालाणुनो उपचार कह्योछे तेजाणवो मुख्यकालइत्यस्यचानादिकालीनाप्रदेशत्वव्यवहारनियामकोपचा रविषयइत्यर्थः अतएव मनुष्यक्षेत्रमात्रवृत्तिकालड्व्यंयेवर्णयंतितेषामपिमनुष्यक्षे त्रावच्छिन्नाकाशादौकालड्व्योपचारएवशरणमितिदिङ्मात्रमेतत् ॥ १ए ॥

वर्णगंधरसफासादिकगुणे ॥ लिखियेंपुदगलन्नेद ॥ सहज चेतनारेगुणवलीजाणियें ॥ जीवअरूपअवेद ॥ सम० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ हवेपुजल तथाजीवड्व्य संक्षेपेकहेछे जेवर्ण गंध रस स्पर्शादिकगुणे पु जलड्व्यनो अन्यड्व्यथीन्नेदलखियें तेपुजलड्व्य अनेजीवड्व्य ते सहज चेतनागु णछे तेजरूपोजसर्वे अचेतनड्व्यथी निन्नछे ते व्यवहारनयतो रूप तथावेदसहितपणे छे अनेनिश्चयनयथी रूपतथावेदरहितछे उक्तंच अरसमरूवरसगंध अवन्नचेयणागु णमसद्दं ॥ जाणअलिंगगहणं जीवमणीदिठ्ठसंगाणं ॥ १ ॥ २० ॥

एमएन्नांख्यारेसंखेयेंकरी ॥ ड्व्यतणाषटन्नेद ॥ विस्तारेतेजा णिश्रुतथकी ॥ सुजशलहोगतखेद ॥ सम० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ एरीतें ड्व्यनासंक्षेपथी बनेदन्नांख्याछे तेविस्तारें श्रुतके० सिद्धांतथकी जाणीने खेदरहितथका प्रवचनदाक्षिण्यपणानो सुजशके० सुबोध तेपामो ॥ २१ ॥

ढालइग्यारमो सोवनगिरिन्नूषणत्रिसलानंदनएदेशी

हवेन्नेदगुणनान्नाषीजे ॥ तिहांअस्तिताकहियेंजी ॥ सद्भूत ताभावस्तुताजाति ॥ व्यक्तिरूपतालहियेंजी ॥ ड्व्यनावड

पुज्ञलके० पुज्ञलास्तिकाय अनेजीवके० जीवास्तिकाय एषटद्रव्यश्रीजिनशासननेविषे कह्याछे जेनोद्रव्यजाति तथापर्यायप्रवाहें आदितथा छेहके० अंतनथी एछमध्ये ए ककालवर्जीने बाकीपांचद्रव्यते अस्तिकायकहियें अस्तयःप्रदेशास्तेःकायंतेशब्दायंते इ तिव्युत्पत्तेः एरीतेंप्रदेशनोसंबंधछे माटेअस्तिकायकहियें अनेकालद्रव्यने प्रदेशसंघात नथीमाटे अस्तिकायनकहियें केमके जे एकसमयते बीजासमयने मिलेनहीमाटे. ए मज्ञीजापण धर्माधर्माकाशाद्येकैकमतःपरंत्रिकमनंतंकालंविनास्तिकाया जीवमृतेचा प्यकर्तृणि इत्यादिकसाधर्म्य वैधर्म्यप्रशमइत्यादिक महाग्रंथथी जाणवुं ॥ ३ ॥

गतिपरिणामीरेपुज्ञलजीवने॥ऋषनेजलजेमहोय ॥ तासअ
पेक्षारेकारणलोकमां ॥ धरमद्रव्यछेरेस्होय ॥ सम० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ तेमांप्रथम धर्मास्तिकायद्रव्यनुं लक्षणकहेछे गतिपरिणामीजे पुज्ञल त थाजीवद्रव्य ते लोकके० चतुर्दशरज्वात्मक आकाशखंमतेमांछे तेनुंजेअपेक्षाकारण परिणामव्यापाररहित अधिकरणरूप उदासीनताकारण जेमगगनगमनादि क्रियाप रिणत ऋषके० मत्स्यतेनेजेम जलअपेक्षाकारणछे तेहनीपरेंअपेक्षाकारणते धर्मास्ति काय द्रव्यजाणवुं स्थलेऋषक्रिया व्याकुलतयाचेष्टाहेतुत्वान्नावादेव नजवति ननुज लान्नावादिति गत्यपेक्षाकारणेमानान्नाव इतिचेन्न॥अन्वयव्यतिरेकाभ्यांलोकसिद्धव्यव हारादेवतद्धेतुत्वसिद्धेरन्यथांत्यकारणेनेतराखिलकारणान्यथासिद्धिप्रसंगादितिदिग् ४

थितिपरिणामीरेपुज्ञलजीवनी ॥ थितिनोहेतुअधर्म ॥ सवि.
साधारणगतिथतिहेतुता ॥ दोयद्रव्यनोरेधर्म ॥ सम० ॥५॥

अर्थ ॥ हवेअधर्मास्तिकायद्रव्यनुं लक्षणकहेछे तेस्थितिपरिणामीजेपुज्ञल तथाजी वद्रव्य तेहनोस्थितिनोहेतुके०अपेक्षाकारणजेद्रव्य तेअधर्मास्तिकायजाणवुं गतिस्थि तिपरिणत सर्वद्रव्यनुंजे एकद्रव्यजाघवें कारणसिद्धहोय तेएवेद्रव्यजाणवा तेथीज खादिगत्यपेक्षाकारण जलादिद्रव्यनेविषे धर्मास्तिकायादिक द्रव्यलक्षणनी अतिव्या प्तिनहोय एमगतितथास्थितिना हेतुतानोधर्म सर्वसाधारणपणें बेद्रुद्रव्यनुंछे ॥ ५॥

सहेजउर्ध्वगतिगामीमुक्तने ॥ विनाधर्मप्रतिबंध ॥ गगनेअ
नंतेरेकहीयेंनविटले ॥ फिरवारसनोरेधंध ॥ सम० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवेधर्मास्तिकायनेविषें प्रमाणकहेछे जोगतिनेविषे धर्मास्तिकायनो प्रति बंधके० नियमनहोय तोसहज उर्ध्वगतिगामीजे मुक्तके० सिद्धजीव तेएकसमयें लोका ग्रेजाय एहवेंस्वन्नावें अनंतेगगनेजता हजीलगें फिरवानारसनो धंधटलेनहीं केमके

इत्यादौव्यनिचारेणपरेणपरेषामप्यजावत्वानियामकत्वाज्ञावांतरमजावोह्किंयाचित्तु व्यपेक्ष्येतिनयाश्रयणेनदोषाजावाच्च ॥ एदशसामान्यगुणठे तेमां १ मूर्त्तत्व २ अमूर्त्तत्व ३ चेतनत्व ४ अचेतनत्व एचारगुणते द्रव्योनेविषे परस्परपरिहारें बेबेगुण रहे तेमाटे प्रत्येकें एकएकद्रव्यनेविषे आव्आवगुणपामियें एमविचारीनेजावो ॥२॥

ज्ञानदृष्टिसुखवीर्यफरसरसा।गंधवर्णएजाणोजी॥गति
थितिअवगाह्नावर्त्तना॥हेतुजावमनआणोजी॥चेत
नादिचारेजेला ॥ विशेषगुणएसोलेंजी॥ षटपुद्गल
आतमनेतिनह् ॥ अन्यद्रव्यनेटोलेंजी ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ १ ज्ञान २ दर्शन ३ सुख ४ वीर्य एचारआत्मानागुणठे १ स्पर्श २ रस ३ गंध ४ वर्ण एचारपुद्गलना विशेषगुण शुद्धद्रव्यंअविकृतरूप अविशिष्टरहे ते माटेएगुणकह्या विकृतस्वरूपते पर्यायमांजिले एविशेषजाणवुं १ गतिहेतुता २ स्थितिहेतुता ३ अवगाह्नाहेतुता ४ वर्त्तनाहेतुता एचारगुणतेधर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय अनेआकाशास्तिकाय तथाकालद्रव्यना प्रत्येकेंप्रत्येकेंविशेषगुणजाणवा एरीतेंबारगुणथया तेमां १ चेतनत्व २ अचेतनत्व ३ मूर्त्तत्व ४ अमूर्त्तत्व एचारगुणजेलीयें तेवारें सोलविशेषगुणथाय तेमध्ये पुद्गलद्रव्यने वर्ण गंध रस स्पर्श मूर्त्तत्व अचेतनत्व एठगुणहोय अनेआत्मद्रव्यने ज्ञान दर्शन सुख वीर्य अमूर्त्तत्व चेतनत्व एठगुणहोय बीजासर्वद्रव्यने टोलेके० समुदाय त्रणगुणहोय एकपोतानो अचेतनत्वगुण बीजोअमूर्त्तत्व त्रीजोगतिस्थित्यादि एमफलावीनेधारवुं ॥ ३ ॥

चेतनतादिकचारस्वजाति॥ गुणसामान्यकहायजी॥वि
शेषगुणपरजातिअपेक्षा ॥ग्रहताचित्तसुहायजी॥विशे
षगुणठेसूत्रेंजाषिया॥बहुस्वजावआधारोजी ॥ अर्थते
ह्किमगणिआजावे ॥ एहथूलव्यवहारोजी ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेजेचेतनत्वादि चारगुणते सामान्यगुणमां पणकह्या अनेविशेषगुणमांपणकह्या तेनुंकारणकहेठे चेतनत्वादिचारगुण स्वजात्यपेक्षया अनुगत व्यवहारेंठे तेथी सामान्यगुणकहियें अनेपरजातिनी अपेक्षायें चेतनत्वादिक तेअचेतनत्वादिकद्रव्यथी स्वाश्रय व्यावृत्तिकरेठे तेमाटें विशेषगुणकहियें परापरसामान्यवत्सामान्यविशेषगुणमेषामितिजावः तथाज्ञानदर्शनसुखवीर्य एचारआत्मविशेषगुणअने

धर्मादिकसूरेसंयुतलोकछे ॥ तासवियोगअलोक ॥ तेनिर
विधछेरेअवधिअनावने ॥ वलगीलागेरेफोक ॥सम०॥ए॥

अर्थ ॥ धर्मास्तिकायादिकथी संयुक्त जेआकाश तेलोकाकाशछे अनेते धर्मास्ति कायादिकनो जिहांवियोगछे तेअलोकाकाशकहियें तेअलोकाकाश निरविधछे एटले तेहनोछेहनथी कोइएमकहेसेके जेमलोकनेपाशें अलोकनोछेहछे तेमआगलपणछे हो तेहनेकहियेंजे लोकतोनावरूपछे तेमांतोअविधिघटेछे पणआगल अलोकमां के वलअनावछे माटेतिहां अलोकावधिपणोकेमघटे शशशृंगकुणनो अवधिहोय अनेजो नावरूप आत्मामानियेंतो तेअन्यद्रव्यरूपनथी आकाशदेशस्वरूपनेतो तदंतपणोकहे तां वदव्याघातहोय माटेअलोकाकाश अनंतोजाणवुं ॥ ए ॥

वत्तणालक्षणसर्वद्रव्यहतणो ॥ पज्जवद्रव्यनकाल ॥ द्रव्य
अनंतनीरेद्रव्यअनेदथी॥उत्तराध्ययनेरेनाल॥सम०॥१०॥

अर्थ ॥ हवेकालद्रव्यने लक्षणेकरीकहेछे जेकालते परमार्थथीद्रव्यनथी तोशुंस र्वद्रव्यनो वर्त्तनालक्षण पर्यायजछे तेपर्यायनेविषे अनादिकालीन द्रव्योपचारअनु सरीने कालद्रव्यकहियें अतएव पर्यायेंद्रव्यनेदथी अनंतकालद्रव्यनेदनीनाल तेश्री उत्तराध्ययनेछे तथाचतत्सूत्रं धम्मोअधम्मोआगासं दव्वंइक्किक्कमाहियं ॥ अणंताणिय दव्वाणि कालोपुग्गलजंतवो ॥ १ ॥ टीकाएतदुपजीव्यान्यत्राप्युक्तं धर्माधर्माकाशादे कैकमतःपरंत्रिकमनंतमिति तेमाटे जीव अजीवद्रव्यजेअनंतछे तेहनीवर्त्तनापर्याय नणीज कालद्रव्य सूत्रनेविषे अनंतकह्याजाणवा ॥ १० ॥

जीवअजीवजसमयेंतेकह्युं ॥ तेणेकेमजुदोरेतेह ॥ एकव
खाणेरेआचारयइस्युं ॥ धरतांसुजमतिरेह ॥सम०॥११॥

अर्थ ॥ कंवथीपणसूत्रें जीवाजीवथी अनिन्न कालकह्योछे तेदेखाडेछे समयके० सूत्रेंतेकालने जीव तथाअजीवरूपजकह्योछे तेकारणे कालने जुदोके० निन्नद्रव्यरू प केमकहियें तथाचोक्तं जीवानिगमादिसूत्रे किमयंनंतेकालोत्तिपवुच्चइ गोयमा जी वाचेवअजीवाचेवत्ती एकआचार्यतो सिद्धांतनापाठने अनुसारें शुजमतिनीरेखाधर तां कालद्रव्यने एरीतेंवखाणेछे ॥ ११ ॥

बीजानांषेरेजोइसचक्रने ॥ चारेंजेथितितास ॥ कालअ
पेक्षारेकारणद्रव्यछे ॥ षटनीनगवइनास ॥ सम०॥१२॥

नावकहियें परन्नावेंपण सत्ता अस्तिस्वन्नावकहेता सर्वस्वरूपें अस्तिथयुं तेवारें जग त्रएकरूपथाय तेतोसर्वशास्त्र व्यवहारविरुद्धछे माटेपरापेक्षायें नास्तिस्वन्नावछे जेसत्ता तेस्वन्नावें वस्तुमांहेजजणायछे माटेसत्यछें जे असत्तातेस्वज्ञाने परमुखनिरीक्षणकरे छे तेथीकल्पना ज्ञानविषयपणें असत्यछे एहवुंबौद्धमतछे तेनेखंडवानेकहेछे जेसत्ता नीपरें तत्काल असत्ताजेनथीस्फुरति तेव्यंजक अणमिल्यानावशथी जाणवी पण शून्यपणाथी तुबपणाथकीनही जेमछतो माटीनुं सरावकेण्घटछे तेहनोजेगंधते नी रकेण पाणीनास्पर्शविना जणायनही एतावता असत्यनथी केटलाएकवस्तुनागुण स्वन्नावेंजजणायछे अनेकेटलाक प्रतिनियत व्यंजननाव्यंग्यछे एवस्तुमांवैचित्र्यछे प णएकेनीतुब्रताकहियेंतो घणोव्यवहार विलोपाय उक्तंचास्मानिन्नीषारहस्यप्रकरणे तेहुंतिपरावेरका वंजपमुहदंसिणोत्तिणयतुब्ना॥ दिठमिणंवेचित्तं सरावकप्पूरगंधाणंति

निजनानापर्यायेंतेहज॥ द्रव्यएहएमकहियेंजी॥ नित्यस्वन्नावअ
नित्यस्वन्नावें॥पज्जयपरणतिलहियेंजी॥छतिवस्तुनेरूपांतरथी॥ना
शद्विधान्नासेजी॥विशेषनेसामान्यरूपथी॥स्थूलअंतरनाशेजी॥७॥

अर्थ॥निजकेण्पोतानाजे क्रमन्नावी नानाप्रकारनापर्याय श्यामत्व रक्तत्वादिक तेने दकछेतेहुंते पणएद्रव्यतेहिज जेपूर्वेंअनुन्नव्युंहतु एवुंज्ञानजेहथीथायछेतेनित्यस्वन्नाव कहियें तद्भावाव्ययंनित्यमितिसूत्रं प्रध्वंसाप्रतियोगित्वंनित्यत्वमित्यस्याप्यत्रैवपर्यवसा नंकेनचिद्रूपेणैवतल्लक्षणव्यवस्थितेः एनित्यस्वन्नावत्रीजोथयो अने अनित्यस्वन्नावते पर्यायनीपरिणतिलेइयें जेरूपेंउत्पादव्ययछे तेरूपेंअनित्यस्वन्नावछे जेमछतिवस्तुनुं रुपां तरथी पर्यायविशेषथीनाशछे तेथीकरीएद्विधाआरूपें नित्यआरूपेंअनित्यएवैचित्रिन्ना सेछे विशेषअनेसामान्यरूपथी अनित्यताजेमघटनाशें पणमृद्द्रव्यानुवृत्ति तथासामा न्ये मृदादिकनेपण स्थूलार्थांतर घटादिकनाशेंअनित्यताछे नेघटरूपेणमृन्नष्टेतिप्रतीतेः

जोनित्यतानछेतोअन्वय॥विनानकार्यहोवेजी॥ कारज
कालेंअछतुकारण॥परिणतिरूपविगोवेजी॥अनित्यता
जोनहीसर्वथा॥ अर्थक्रियातोनघटेजी ॥दलनीकारय
रूपपरिणति ॥ अनुत्पन्नतोविघटेजी ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जोनित्यता द्रव्यनेविषेनथी अनेंएकांतक्षणीकज स्वस्वलक्षणछे तोकारण ना अन्वयविना कार्यनीपजेनही केमके कारणक्षण कार्यक्षणोत्पत्तिकालें निर्हेतुक

योगशास्त्रनारेअंतरश्लोकमां ॥ एपणमतछेरेइछ ॥ लोक
प्रदेशेरेअणुआजूजुआ॥मुख्यकालेतिहांदिछ॥सम०॥१५॥

अर्थ ॥ ते योगशास्त्रना अंतरश्लोकमां एदिगंबरमतपणइष्टछे केमके तेश्लोकमां लोकप्रदेशें जूजूआ कालनाअणुआ तेनेमुख्यकालकह्युंछे तथाचतत्पाठः लोकाकाशप्रदेशस्था भिन्नाकालाणवस्तुये ॥ भावानांपरिवर्त्ताये मुख्यकालःसउच्यते ॥१॥"

प्रचयऊर्ध्वतारेएहनोसंभवे ॥ पूर्वअपरपर्याय ॥ तिर्यक
प्रचयघटेनहीखंधनो ॥ विणप्रदेशसमुदाय ॥ स० ॥१६॥

अर्थ ॥ एकालाणुद्रव्यनो उर्ध्वताप्रचयसंभवे जेममृद्द्रव्यने स्थास कोस कुसूलादि पूर्वापरपर्यायछे तेमएहने समयावलीप्रमुख पूर्वापरपर्यायछे पणखंधनोप्रदेश समुदाय एकालद्रव्यनेनथी माटे धर्मास्तिकायादिकनीपरें तिर्यक्प्रचयसंभवेनही तेतिर्यक्प्रचयनथी तेथीजकालद्रव्यने अस्तिकाय नकहियें वलीएहने परमाणुपुद्गलनीपरें तिर्यक्प्रचय योग्यतापणनथी माटेउपचारेंद्रव्यछे तेथीपण कालद्रव्यने अस्तिकायपणोनकहेवाय ॥ १६ ॥

एमअणुगतीनीरेलेइहेतुता ॥ धर्मद्रव्यअणुथाय ॥ साधार
णतारेलेइएकनी ॥ समयखंधपणथाय ॥ सम० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ एदिगंबरपक्ष प्रतिवादेंदुषेछे एमजोमंदाणुगतिकार्यहेतु पर्यायसमयभाजन द्रव्यसमय अणुकल्पियेंतो मंदाणुगतिहेतुतारूप गुणभाजन तेधर्मास्तिकायाणुपण सिद्धहोय एमअधर्मास्तिकायादिक अणुनोपण प्रसंगथाय अनेजो सर्वसाधारण गतिहेतुतादिकलेइ धर्मास्तिकायादिक एकस्कंधरूपज द्रव्यकल्पियें देशप्रदेशनीकल्पना तेहनीव्यवहारानुरोधे पछेकरीतो सर्वजीवाजीवद्रव्य साधारणवर्त्तनाहेतुतागुणलेइने कालद्रव्यपण लोकप्रमाणे एककल्पवोजोइयें धर्मास्तिकायादिकने अधिकारें साधारणगति हेतुताद्युपस्थितिकल्पकछे अनेकालद्रव्यकल्पकते मंदाणुवर्त्तना हेतुत्वोपस्थितिजछे एकल्पनायेंतो अभिनिवेशीविना बीजोकोइकारण दिगंबरीथोमांजणातुंनथी ॥ १७ ॥

अप्रदेशतारेसूत्रेंअनुसरी ॥ जोअणुकहियेंरेतेह ॥ तोप
र्यायवचनथीजोभीयें ॥ उपचारेंसवीएह ॥ सम० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ हवेजोएमकहेसोजे सूत्रेंकालप्रदेशकह्योछे तेहनेअनुसारें कालाणुकहियें

अर्थ ॥ गुणगुणीने पर्यायपर्यायीने कारककारकीने संज्ञा संख्या तथालक्षणादिक भेदेंकरीने सातमोभेदस्वभाव जाणवो अने अभेदनीजेवृत्ति ते लक्षणवंतआठमो अभेदस्वभाव जाणवो हवेजोद्रव्यनेविषे भेदस्वभाव नमानीयेंतो सर्वद्रव्यगुणपर्यायने एकपणोथाय तेथीकरी इदंद्रव्यं अयंगुणः अयंपर्यायः एव्यवहारनो विरोधथाय अनेजो अभेदस्वभाव नकहियेंतो निःकेवल निराधार गुणपर्यायनो बोधथवोजोइयेंनही केमके आधाराधेयनो अभेदविना बीजोसंबंध घटेजनही अत्र प्रवचनसारोद्धारनीगाथा ॥ पविजत्तपदेशत्त पुधत्तमितिसासणंहिवीरस्स ॥ अन्नत्तमतप्भावो एतप्भवंभवदिकधमेगति ॥ १ ॥ १० ॥

शक्तिअवस्थितनिजरूपांतर ॥ भवनेभव्यस्वभावोजी ॥
त्रिहुंकालेमिलतापरभावें ॥ अभव्यनअभव्यस्वभावोजी॥
शून्यभावपणभव्यस्वभावें ॥ कूटकार्यनेयोगेंजी ॥ अभ
व्यभावेविणद्रव्यांतरता ॥ थायेद्रव्यसंयोगेंजी ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ अनेककार्य कारणशक्तिकजे अवस्थितद्रव्यछे तेहने क्रमिकविशेषता आविर्भावें अतिव्यंग्यते नवमोभव्यस्वभाव कहियें त्रिहुंकालें परद्रव्यमांमिलतांपण परस्वभावें नपरिणमवुं तेदशमोअभव्यस्वभावकहियें अन्नोन्नंपविसंता देताउगासमण्णमणस्स ॥ मेलंतावियणीचं सगसगभावंणविजहंति ॥ १ ॥ हवेभव्यस्वभावविना कूटके० खोटाकार्यनेयोगें शून्यपणोथाय परभावेंनहोय अनेस्वभावेंहोय तेवारेंभव्यहोय अनेतेजो परभावेपणनहोय अने स्वभावेंपणनहोय तेवारें होयजनही एवुंथयुं तथाजोअभव्यस्वभाव नमानीयेंतो द्रव्यनेसंयोगें द्रव्यांतरपणुं थयुंजोइयें केमके धर्माधर्मादिकने जीवपुद्गलादिकने एकावगाहनावगाढ कारणें कार्यसंकर अभव्यस्वभावेंज नथाय तत्तद्रव्यने तत्कार्यहेतुता कल्पनपणे अभव्यत्वस्वभाव गर्भजछे आत्मादेःस्ववृत्त्यनंतकार्यजननशक्तिर्भव्यतातत्तत्सहकारिसमवधानेनतत्तत्कार्योपधायकताशक्तिश्च तथाभव्यतेति तथाभव्यतयैवानतिप्रसंगइतितु हरिभद्राचार्याः

परमभावपरिणामिकभाव॥प्रधानतायेंलीजेजी ॥ एवि
णमुख्यरूपकेमद्रव्यें॥प्रसिद्धरीतेंदीजेजी॥एसामान्यस्व
भावइग्यारह ॥ सकलद्रव्यनेधारोजी ॥ आगमअर्थ
विचारीनेजग ॥ सुजशवादविस्तारोजी ॥ १२ ॥

व्यत्वप्रमाणे ॥ परिछेद्यजेरूपजी ॥ प्रमेयत्वश्रा
णागमसुधीम ॥ अगुरुलघुत्वरूपजी ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवेगुणनानेद सामान्यतंत्रप्रक्रियायें कहियेंछेयें तिहां १ अस्तित्वगुणतेक हियें के जेहथी सद्भूततानो व्यवहारथाय २ वस्तुत्वगुणतेकहियें जेहथी जातिव्यक्ति रूपपणो जाणियें जेमघटतेहिज सामान्यथी जातिरूपछे अनेविशेषथी तद्व्यक्तिरू पछे अतएव अवग्रहें सामान्यरूप सर्वत्रनासेछे अपायें विशेषरूप नासेंछे पूर्णोपयो गें संपूर्णवस्तुग्रहणथायछे तथा ३ द्रव्यनावजे गुणपर्यायाधारतानिर्व्यंग्यजातिवि शेषते द्रव्यत्वएजातिरूपछे माटेगुणनहोय एहवीनैयायिकादिवासनायें आशंका करवीनही केमके सहभुवोगुणाः क्रमभुवःपर्यायाः एहवीजजैनशास्त्रनी व्यवस्थाछे द्रव्यत्वंचेद्गुणःस्याद्रूपादिवदुत्कर्षापकर्षनागिस्यादितितुक्तचोद्यमेकत्वादिसंख्यायां प रमतेपि व्यनिचारेण तथाव्याप्यनावादेवनिरसनीयं ४ प्रमाणेपरिछेद्यजे रूपप्रमा ण विषयत्वते प्रमेयत्वगुणकहियें तेपणकथंचित् अनुगत सर्वसाधारणगुणछे परंप रासंबंधें प्रमाणत्वज्ञानेपण प्रमेयत्व व्यवहारथायछे तेमाटेजे प्रमेयत्वगुणते स्वरूप थीअनुगतछे ५ अगुरुलघुत्वगुण ते सूक्ष्मआज्ञाग्राहीछे सूक्ष्मंजिनोदितंतत्वं हेतुभि र्नैवहन्यते ॥ आज्ञासिद्धंतुतद्ग्राह्यं नान्यथावादिनोजिनाः ॥ अगुरुलघुपर्यायाः सूक्ष्मा अवाग्गोचराः ॥ १ ॥

प्रदेशत्वअविनागीपुद्गल॥खेत्रनावजेव्यापिनजी॥चेत
नताअनुनूतिअचेतन॥नावअननुनवथापिनजी॥मूर
ततारूपादिकसंगति ॥ अमूर्त्ततातदनावोजी॥दशसा
मान्यगुणाप्रत्येकें ॥ आठआठएनावोजी ॥ २ ॥

अर्थ ॥ ६ जेअविनागीपुद्गल यावत्खेत्रेंरहे तावत्खेत्रव्यापीपणुं तेप्रदेशत्वनामा छठोगुणजाणवो ७ चैतन्यत्वगुण तेआत्मानो अनुनवरूप गुणकहियें जेसुख दुःखादिचिंतियें एव्यवहारथायछे जेहथीजाति वृद्ध नग्न क्षत संरोहणादि जीवन धर्महोयछे ८ एथीविपरीत जेअचेतनत्वगुण तेअजीवमात्रनोगुणछे ९ मूर्त्ततागुणते रूपादिक सन्निवेशानिर्व्यंग्यंपुद्गलद्रव्यमात्रवृत्तिछे १० अमूर्त्तत्वगुणामूर्त्तत्वानावस मनियतछे अचेतनत्वामूर्त्तत्वयोश्चेतनत्वमूर्त्तत्वानावरूपत्वान्नगुणत्वमितिनाशंकनीयं अचेतनामूर्त्तद्रव्यवृत्तिकार्यजनकतावछेदकत्वेनव्यवहारविशेषनियामकत्वेनचतयोर पि पृथक्गुणत्वात् नञःपर्युदासार्थकत्वात् नञ्गर्भपदवाच्यताथाश्चानुभाशीतस्पर्शे

तेपण अमूर्त्तनहोय तेथीमोक्षघटेनही माटेमूर्त्तसंचलितजीवनेपण अंतरंग अमूर्त्तस्वनावमानवो वलीएकप्रदेशस्वनाव तेहनेंकहियेंजे एकत्वपरिणति अखंमाकार बंधके० सन्निवेश तेहनो निवासके० नाजनपणुं तेएकप्रदेशस्वनाव जाणवो ॥ ४ ॥

जीहोअनेकप्रदेशस्वनावता ॥ लालानिन्नप्रदेशस्वनाव
जीहोजोनहीएकप्रदेशता॥लालानेदहुएबहुनाव॥चतु०॥५

अर्थ ॥ अने अनेकप्रदेशस्वनाव तेहनेकहियें जेनिन्नप्रदेशयोगें तथा निन्नप्रदेश कल्पनायें अनेकप्रदेश व्यवहारयोग्यपणुंहोय हवे जोएकप्रदेशस्वनाव नहोयतो असंख्याता प्रदेशादियोगें बहुवचनप्रवृत्ति एकधर्मास्तिकायछे तेमाटे एव्यवहारनहोयतो घणाधर्मास्तिकायछे इत्यादिक थयुंजोइयें ॥ ५ ॥

जीहोकेमसकंपनिःकंपता॥लालाजोनअनेकप्रदेश ॥ जीहो
अणुसंगतिपणकेमघटे॥लालादेशसकलआदेश॥चतु०॥ ६॥

अर्थ ॥ जोअनेकप्रदेशस्वनाव इव्यनेनकहियेंतो घटादिक अवयवी देशथीसकंप तथादेशथीनिःकंप देखियेंछैयें तेकेममले अनेअवयवकंपे पणअवयवीनिःकंप एमकहियेंतो चलतिएप्रयोग केमथाय प्रदेशवृत्तिकंपनो जेमपरंपरासंबंधछे तेमदेशवृत्ति कंपानावनोपण परंपरासंबंधछे तेमाटेदेशथीचलेछे अनेदेशथी नथीचलतो एअस्खलितव्यवहारेंअनेकप्रदेशस्वनाव मानवो तथाअनेकप्रदेशस्वनाव नमानियेंतो आकाशादिइव्यें अणुसंगतिके० परमाणुसंयोग केमघटे ॥ ६ ॥

जीहोदेशसकलनेदेंद्विधा ॥ लालादीठीजगमांवृत्ति ॥जी
होप्रत्येकेंदूषणतिहां॥ लालाबोलेसंमतिवृत्ति ॥चतु० ॥७॥

अर्थ ॥ वलीएहिजयुक्ति विस्तारीदेखाडेछे एकवृत्तिदेशथीछे जेमकुंमलइंइनेइहांकुंमलतो कानमांपसघाछे तेकानतोइंइनो एकदेशछे पणइंइकहिवोलायछे तथाबीजी वृत्ति सर्वथीछे जेमसामान्यवस्त्रइयनी एटलेजामो सर्वअंगमांपेखोछे तेदेवदत्त एसर्वथीजाणवी तिहांप्रत्येकेंदूषण संमतिग्रंथनी वृत्तिबोलेछे परमाणुने आकाशादिकेंदेशवृत्तिमानतां आकाशादिकनाप्रदेश अनिष्ठतापणआवे अनेसर्वथी वृत्तिमानतां परमाणु आकाशादिप्रमाण थईजाय तथाउनयानावेंतो परमाणुने अवृत्तिपणुंथाय यावद्विशेषानावस्यसामान्यनावनियतत्वादित्यादि ॥ ७ ॥

स्पर्श रस गंध वर्ण एचार पुजलविशेषगुण एमजेकह्युं तेस्थूलव्यवहारजाणवुं जे मके अष्टौसिद्धगुणाः तथा एकत्रिंशत्सिद्धादिगुणाः एकगुणकालकादयः पुजलाअनंताः इत्यादिसूत्रार्थविचारणायें विशेषगुण अनंताथाय तेढअस्थकेमगणीशके तस्माद्धर्मास्तिकायानां गतिस्थित्यवगाहनावर्तनाहेतुत्वोपयोगग्रहणाख्याःषडेवास्तित्वादयः सामान्यगुणास्तुविवक्षयाअपरिमिताइत्येवन्याय्यं षण्णांलक्षणवतां लक्षणानि षडेवेतिहिकोनश्रद्दधाति।नाणंचदंसणंचेव चरित्तंचतवोतहा ॥ वीरियंउवउगोय एवं जीवस्सलरकणं ॥ १ ॥ सद्दंधआरउज्जोय पनावायातहेवय॥वण्णरसगंधफासा पुग्गलाणंतुलरकणं ॥ २ ॥ इत्यादितुस्वनावविनावलक्षणयोरन्योन्येनांतरीयकत्वप्रतिपादनायेत्यादिपंडितैर्विचारणीयं ॥ ४ ॥

धम्मेअपेक्षायेंइहांअलगा ॥ स्वनावगुणथीनाष्याजी ॥
निजनिजरूपमुख्यतालेइ ॥ स्वनावगुणकरीदाष्याजी ॥
अस्तिस्वनावतिहांनिजरूपें ॥ नावरूपतादेखोजी ॥ पर
अनावपरेंनिजनावेंपण ॥ अरथअनुनविलेखोजी ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ अनुवृत्ति व्यावृत्तिसंबंधें धर्ममात्रनीविवक्षाकरीने इहांस्वनावनेगुणथकी अलगाके० जूदा पंडितेंनाष्याछे तेइव्यना निजनिजके० आपआपणारूपनी मुख्यतालेइने अनुवृत्तिसंबंधमात्र अनुसरीने जेस्वनावछे तेनेजगुणकरीने दाख्याके० देखाडयाछे माटें गुणविनागकहिने स्वनावविनाग कहियेंछैयें तिहांप्रथम अस्तित्वनावते निजरूपें एटलेस्वइव्य स्वखेत्र स्वकाल स्वनाव स्वरूपें नावरूपतादेखो जेम परअनावें नास्तित्वनाव अनुनवियेंछैयें तेमनिजनावें अस्तित्वनावपण अनुनवियेंछैयें तेमाटेअस्तिनावतेलेखेछे एप्रथमअस्तिनावकह्यो ॥ ५ ॥

नहीतोसकलशून्यताहोवे ॥ नास्तिस्वनावपरनावेंजी॥
परनावेंपणसत्ताकहेता॥ एकरूपसविपावेजी ॥ सत्ताजे
मअसत्तानफुरे ॥ व्यंजकअमिलनवसथीजी॥ ढतोसरा
वगंधनवीनासे ॥ जेमविणनीरफरशथीजी ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जोअस्तिस्वनाव इव्यनेविषे नमानीयेंतो परनावापेक्षायें जेमनास्तिता तेमस्वनावापेक्षायेंपण नास्तिताथाता सर्वशून्यताथयीजाय तेमाटेस्वइव्याद्यपेक्षायें अस्तिस्वनाव सर्वथामानवो एप्रथमगुण अनेपरनावेंके० परइव्याद्यपेक्षायें नास्तिस्व

अर्थ ॥ एदेशोविशेषस्वभाव नियतद्रव्यवृत्तिमाटे एमध्ये पूर्वोक्तइग्यार सामान्य स्वभाव भेलियें तेवारें सर्वमिलिने एकवीस स्वभावथाय तेपुद्गलतथाजीवने एकवीस स्वभावहोय तेएकवीसमांथी छकाढियें तेवारें कालद्रव्यने पन्नरस्वभावथाय तेछस्व भावनानाम आगलीगाथामां कहेसे ॥ १२ ॥

जीहोबहुप्रदेशाचित्मूर्त्तता ॥ लालाविभावअशुद्धअशुद्ध ॥ जीहो
टालीआदिमसंजूआ ॥ लालासोलधर्ममुखबुद्ध ॥ चतु० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ १ बहुप्रदेशके० अनेकप्रदेशस्वभाव २ चित्के० चेतनस्वभाव ३ मूर्त्तत्व स्वभाव ४ विभावस्वभाव ५ शुद्धस्वभाव ६ अशुद्धस्वभाव एछस्वभावकाढीयें तेवारें बाकी पन्नरस्वभाव कालद्रव्यनेथाय वली १ धर्मास्तिकाय २ अधर्मास्तिकाय ३ आ काशास्तिकाय एत्रणद्रव्यने आदिमके० पहेलो अनेकप्रदेशस्वभाव तेणेसंयुक्तकरियें अने बीजापांचटालियें तेवारेंसोलस्वभावथाय ए एकविंशतिभावाःस्युर्जीवपुद्गलयोर्मताः धर्मादिनाषोडशस्युः कालेपंचदशस्मृताः ॥ १३ ॥

जीहोप्रमाणनयतेअधिगमें ॥ लालाजाणीएहस्वभाव ॥जीहोसुय
शविबुधजिनसंगतें ॥ लालाधरोचित्तशुभभाव ॥ चतु० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एएकवीस स्वभावते प्रमाणनयने अधिगमेके० ज्ञानेजाणीने सुयशके० शोभन अनुयोग परिज्ञान यशवंतजे विबुधके० पंमितजन तेहनीसंगतकरी सर्वशं कादोषटालीचित्तमांहें शुभभावधरो ॥ १४ ॥

॥ ढालतेरमो वीराचंदलाएदेशी ॥

स्वद्रव्यादिकग्राहकेंरे ॥ अस्तिस्वभाववखाण॥परद्रव्यादि
कग्राहकेंरे॥ नास्तिस्वभावमनआणोरे॥ चतुरविचारियें॥१॥

अर्थ ॥ हवेस्वभावनो अधिगम तेनयेंकरीदेखाडेछे १ जेअस्तित्वस्वभाव द्रव्यनो छे तेस्वद्रव्यादिग्राहक द्रव्यार्थिकनयें वखाणियें अनेजे २ नास्तिस्वभावछे तेपरद्र व्यादिग्राहक द्रव्यार्थिकनयेंवखाणियें उक्तंच सर्वमस्तिस्वरूपेण पररूपेणनास्तिच॥१॥

उत्पादव्ययगौणतारे ॥ सत्ताग्राहकनित्य ॥ कोइकपर्या
यार्थिकेंरे ॥ जाणोस्वभावअनित्योरे ॥ चतु० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ ३ उत्पादव्ययगौणत्वें अनेसत्ताग्राहक द्रव्यार्थिकनयें नित्यस्वभावक

नाश अनुनवतो अबतोछे तेकार्यरूप परिणतिकेमकरे अबतोयेंकारणरूप कार्यरू पकरेतो चिरनष्टकारणथी अथवाअनुत्पन्नकारणथी कार्यनीपजुंजोइयें एमतोकार्य कारणनावनी विमंबनाथाय अव्यवहितजेकारणरूप कार्यरूपकरे एमकहियेंतोयें रूपालोक मनस्काराादिरूप रूपादिकनेविषें उपादानआलोकादिकनेविषे निमित्त ए व्यवस्थाकेमघटे केमके अन्वयंविना शक्तिमात्रें उपादानता निमित्तमांहेपण कहि शकीयें माटेजेउपादानते अन्वयीमानवुं अनेअन्वयीपणुं तेहीज नित्यस्वनावहोय हवेजोसर्वथा नित्यस्वनावज मानीयें अनेअनित्यस्वनाव सर्वथानमानीयेंतो अर्थक्रि याघटेनही केमके दलनेकारणेंअने कार्यरूपता परिणतिकथंचित् उत्पन्नपणुंजआव्युं अनेसर्वथा अनुत्पन्नपणुं विघटीजाय अनेजोएमकहियें केजेकारण ते नित्यजछे तथा तद्वृत्तिकार्य तेअनित्यजछे तोकार्यकारणने अनेदसंबंधकेमघटे नेदसंबंधमाने तो त त्संबंधांतरादि गवेषणायें अनवस्थाथाय तेमाटे कथंचित् अनित्यस्वनावपण मानवो

स्वनावनेएकाधारतें॥ एकस्वनावविलाशोजी॥ अनेक
द्रव्यप्रवाहएहने॥अनेकस्वनावप्रकाशोजी॥विणएक
ताविशेषनविलहीयें॥ सामान्यनेअनावेंजी॥ अनेकत्व
विणसत्तानघटे॥ तेमजविशेषअनावेंजी ॥ ए ॥

अर्थ ॥ स्वनावके० सहनावीधर्म तेहनेआधारत्वें एकस्वनाव जेमरूपरसगंधस्प र्शनो आधार घटादिएककहियें तेमनानाप्रकारना धर्माधारत्वें एकस्वनावता नाना रूपानुगतत्वे नित्यस्वनावता एविशेषजाणवो एपांचमोएकस्वनावजाणवो हवे मृदा दिद्रव्यनो स्थास कोस कुशूलादिक अनेकद्रव्य प्रवाहछे तेथीअनेकस्वनाव प्रकाशि यें पर्यायपणेआदिष्ट द्रव्यकरियें तेवारें आकाशादिकद्रव्यमांपण घटाकाशादिकनेदें एस्वनाव दुर्लक्षनथाय एछठो अनित्यस्वनावकह्यो हवेएकस्वनावविना सामान्यनो अनावथाय माटेविशेष नपामियें अनेविशेषानावें अनेकस्वनावविना मूलसत्तापण घटेनही तेमाटे एकानेक एबेहुस्वनावमान्याजोइयें ॥ ए ॥

गुणगुणीनेसंज्ञासंख्यादिक॥नेदेंनेदस्वनावोजी॥अने
दवृत्तिसुलक्षणधारी ॥ होयेंअनेदस्वनावोजी ॥ नेद
विनाएकलसर्वने ॥ तेणेव्यवहारविरोधोजी ॥ विण
अनेदकेमनिराधारनो ॥ गुणपज्जवनोबोधोजी ॥१०॥

असद्भूतव्यवहारथीरे ॥ जीवअचेतनधर्म ॥ परम
जावग्राहकनयेंरे ॥ मूरतकर्मनोकर्मोरे॥चतु०॥७॥

अर्थ ॥ असद्भूतव्यवहारनयथी जीवने १२ अचेतन स्वजावकहियें अतएव ज डोयमचेतनोयमित्यादि व्यवहारछे एतेनमांनजानामीतिप्रतीत्या विलक्षणाज्ञान सिद्धिर्वेदांतिनामपास्ता सद्भूतव्यवहारनयग्राह्येणाचेतनस्वजावेनैवतदुपपत्तेः परमस्व जावग्राहकनयें कर्मनोकर्मने मूर्त्तस्वजावकहियें ॥ ७ ॥

असद्भूतव्यवहारथीरे ॥ जीवमूरतपणहोय ॥ परम
नयेंपुद्गलविनारे॥ ऊव्यअमूर्त्ततुंजोयरे॥चतु० ॥८॥

अर्थ ॥ असद्भूतव्यवहारनयथी जीवने १३ मूर्त्तस्वजावपणकहियें अतएव अ यमात्माहश्यते अमुंआत्मानंपश्यामिएव्यवहारछे एस्वजावेंजे रक्तोचपद्मप्रजयासुपू ज्यौ इत्यादिवचनछे तथापरमजावग्राहकनयें पुद्गलऊव्यविना बीजासर्वऊव्यने १४ अमूर्त्तस्वजावकहियें ॥ ८ ॥

उपचारेंपणपुद्गलीरे ॥ नहीअमूर्त्तस्वजाव ॥ उपचरि
येंअनुगमवसेंरे ॥ व्यवहारेंजेहजावोरे ॥चतु०॥ए॥

अर्थ ॥ चेतननासंयोगे देहादिकनेविषे जेमचेतनत्व उपचरियेंछेयें तेमअमूर्त्तत्व पचरतानथी तेमाटेअसद्भूतव्यवहारथीपण पुद्गलने अमूर्त्तस्वजावनकहियें प्रत्यास त्तिदोषे अमूर्त्तत्व तिहांकेमनउपचरिते उपचरितकहेछे अनुगमवसे एकसंबंधदोषे जे हजावविवहरियें तेउपचरियें पणसर्वधर्मनो उपचारनहोय तथाच आरोपेसतिनि मित्तानुसरणंनतुनिमित्तमस्तीत्यारोपइतिन्यायोनाश्रयणीयइतिजावः ॥ ए ॥

एजावेंसंमतिजणिउरे ॥ अनुगतअर्थअशेष ॥ जलपयजे
मनविजंजीयेंरे ॥ यावतअंत्यविशेषोरे ॥ चतु० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ एजावेंके० एअजिप्रायें संमतिग्रंथमांकह्युंछे जे अनुगतके० अत्यंतसंबंध अशेषके० सर्वअर्थ जलपयजेमके० खीरनीरनीपरें विजंजेनही पृथक्करहेनही किहां तायें अंत्यविशेषतायें अंत्यविशेषे शुद्धपुद्गलजीवलक्षणे विजंजीयें यथा उदारिकादि वर्गणानिष्पन्नाछरीरादेर्ज्ञानघनासंख्येयप्रदेशआत्माजिन्नइति अत्रगाथा ॥ अन्नुन्ना णुगयाणं इमवतंवत्तिविजयणमजुत्तं॥जहदुद्धपाणियाणं जावंतविशेषपज्जाया ॥ १॥

अर्थ॥स्वलक्षणीभूत परिणामिकभाव प्रधानतायें परमभावस्वभावकहियें जेमज्ञानस्वरूपआत्मा एइग्यारमोभेदथयो जोपरमभाव स्वभावनकहियें तोइव्यनेविषेप्रसिद्धरूप केमदेखाय अनंतधर्मात्मवस्तुने एकधर्मपुरुषकारें बोलाविये तेहीज परमभावनुं लक्षणछे एइग्यारसामान्यस्वभाव सर्वइव्यनेधारवा एहवाआगमना अर्थविचारीने जगत्रमां सुयशविस्तारो ॥ १२ ॥ हवेआगलढालमांदशविशेषस्वभावकहेछे.

ढालबारमीजीहोसंभवनामसोहामणोएदेशी

जीहोचेतनभावतेचेतना॥लालाउलटअचेतनभाव॥जीहोचेतनता
विणजीवने॥लालाथाएकर्मअभाव॥चतुरनरधारोअर्थविचार॥१॥

अर्थ ॥ जेहथी चेतनपणानो व्यवहारथाय तेचेतनस्वभाव अनेतेथीउलटो तेअचेतनस्वभाव जोजीवने चेतनस्वभाव नकहियें तोरागद्वेष चेतनारूपकारणविना ज्ञानावरणादिकर्मनो अभावथाय यतः उक्तंच स्नेहाभ्यक्तशरीरस्य रेणुनाश्लिष्यतेयथा ॥ गात्रंरागद्वेषक्लिन्नस्य कर्मबंधोभवत्येवमिति माटेहेचतुरपुरुषोएरीतें अर्थविचारीनेधारो

जीहोजोचेतनतासर्वथा॥ लालाविनाअचेतनभाव॥जीहोध्यान
ध्येयगुरुशीष्यनी ॥ लालासीखपशुद्धस्वभाव ॥ चतु० ॥२॥

अर्थ ॥ जोजीवने सर्वथा चेतनस्वभावजकहियें अनेअचेतनस्वभावनकहियें तो अचेतनकर्मनो कर्मइव्योपश्लेष जनितचेतनाविकारविना शुद्धसिद्धसदृशपणुंथाय तेवारें ध्यानध्येय तथा गुरुशिष्यनीशीखपतीपडे एरीतेंसर्वशास्त्रव्यवहार फोकटथईजाय शुद्धने अविद्यानिवृत्तिपणे स्योउपकारथाय तेमाटे अलवणायवागूरितिवत् अचेतनआत्मा एमपणकोइकरीतें कहियें ॥ २ ॥

जीहोमूर्त्तभावमूरतीधरे ॥ लालाउलटअमूर्त्तस्वभाव ॥ जी
होजोमूर्त्ततानजीवने॥लालातोसंसारअभाव॥चतु० ॥३॥

अर्थ ॥ मूर्त्तिके० रूपरसगंधस्पर्शादिसन्निवेशते जेहथीधरियें तेमूर्त्तस्वभावकहियें अनेतेहथीजे विपरीत तेअमूर्त्तस्वभावजाणवो जोजीवने कोइकरीतें मूर्त्ततास्वभाव नहोयतो शरीरादिसंबंधविना गत्यंतरसंक्रमविना संसारनो अभावथाय॥३॥

जीहोअमूर्त्तताविणसर्वथा॥लालामोक्षघटेनहीतास॥जीहो
एकप्रदेशस्वभावता॥लालाअखंडबधनिवास॥चतु० ॥४॥

अर्थ॥ अनेजो लोकदृष्टव्यवहारें मूर्त्तस्वभावज आत्मानेमानीयें तोमूर्त्ततेहेतुसह

शुद्धाशुद्धद्रव्यार्थिकेंरे ॥ जाणोविन्नावस्वन्नाव ॥ शुद्धेशुद्ध स्वन्नावबेरे ॥ अशुद्धेअशुद्धस्वन्नावोरे ॥ चतु० ॥ १५ ॥

अर्थ॥ शुद्धाशुद्धद्रव्यार्थिकनयें संमुग्धे १७ विन्नावस्वन्नावबे तथा शुद्धद्रव्यार्थिकनयें १८ शुद्धस्वन्नावजाणो अनेअशुद्धद्रव्यार्थिकनयें १९ अशुद्धस्वन्नाव जाणवो॥१५॥

असद्भूतव्यवहारथीरें ॥ बेउपचरितस्वन्नाव ॥ एस्वन्नाव नययोजनारे ॥ कीजेंमनधरीन्नावोरे ॥ चतु० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ असद्भूतव्यवहारनयथी २० उपचरितस्वन्नावबे एन्नावचित्तमांधरीने स्वन्नावनयनी योजनाकरियें ॥ १६ ॥

अनुपचरितनिजन्नावजेंरे ॥ तेतोगुणकहेवाय ॥ एकद्रव्याश्रितगुणकह्यारे ॥ उन्नयाश्रितपज्जायरे ॥ चतु० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ एदिगंबरप्रक्रिया किहांकिहांस्वसमयेंपण उपस्कृतकरीबे एमांहेचिंत्यबे तेदेखाडेबे स्वन्नावते गुणपर्यायथीन्निन्न नविवक्षियें जेमाटे जेअनुपचरितन्नाव तेगुणजजाणवो अनेजेउपचरितते पर्यायजजाणवो जेम द्रव्याश्रिततेगुण अनेउन्नयाश्रिततेपर्यायकह्याबे तथोक्तमुत्तराध्ययनेषु गुणाणमासउदव्वं एगदव्वस्सियागुणा ॥ लरकणंपज्जवाणंतु उन्नउअस्सिआन्नवेत्ति ॥ १ ॥ १७ ॥

स्वन्नावन्नेदसहितकह्यारे ॥ एमएगुणहप्रकार ॥ हवेन्नेद पज्जायनारे ॥ सुणयोसुयशन्नंमारोरे ॥ चतु० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ यदिचस्वद्रव्यादिग्राहकेणास्तिस्वन्नावः परद्रव्यादिग्राहकेणनास्तिस्वन्नाव इत्युपगम्यते तदोन्नयोरपि द्रव्यार्थिकविषयत्वात्सप्तन्नंग्यामाद्यद्वितीययोर्नैगयोर्द्रव्यार्थिकपर्यायार्थिकाश्रयेण प्रक्रियान्नज्यतेत्याद्यत्रबहुविचारणीयं ॥ स्वन्नाव एमएस्वन्नावन्नेदसहितगुणना प्रकारकह्या हवेआगलाढालमां पर्यायनान्नेदकहुंबुं तेहेनेसुयशनान्नंडार एहवाश्रोतापुरुषो तमेसांन्नलो ॥ १८ ॥

ढालचउदमो बोडीसीमंधरसामीआ तेमुजमिन्नामिडुक्कडंएदेशी

सुणोन्नेदपज्जायनारे ॥ तेदोयप्रकारव्यंजनअर्थबेन्नेदथी ॥ संक्षेपेंसार ॥ श्रीजिनवाणीआदरो ॥ १ ॥

अर्थ ॥हवेपर्यायना न्नेदसांन्नलो तेपर्यायनान्नेद संक्षेपथी बेप्रकारनाबे एकव्यंजनपर्याय बीजोअर्थपर्याय एसंक्षेपकह्या ॥ १ ॥

जीहोभावस्वभावह अन्यथा॥लालाछेविभावववड व्याधि॥जीहो एविणनघटेजीवने॥ लाला अनियतकर्मउपाधि॥ चतु०॥ ७॥

अर्थ॥ स्वभावथी जेअन्यथाभाव तेविभावस्वभावकहियें तेमहाव्याधिरूपछे. ए विभावस्वभाव मान्याविना जीवने अनियतके० नानाप्रकारना देशकालादिविपाकी कर्मोपाधी नलागवाजोइयें उपाधिसंबंध योग्यतायें अनादिविभावस्वभावः॥७॥

जीहोशुद्धभावकेवलपणुं॥ लालाउपाधिकज अशुद्ध॥ जीहोवि णशुद्धतानमुक्तिछे॥ लालालेपनविगर अशुद्ध॥ चतु०॥ ए॥

अर्थ॥ केवलपणुंके० उपाधिभावरहितांतरभाव परिणमनते शुद्धस्वभाव अने जे उपाधिजनित बहिरभाव परिणमन योग्यताते अशुद्धस्वभावछे. जोशुद्धस्वभाव नमानियेंतो मुक्तिघटेनही अनेजोअशुद्धस्वभाव नमानियेंतो कर्मनोलेपघटेनही इ हांशुद्धस्वभावनेकदापि अशुद्धतानहोय अने अशुद्धस्वभावने पछेपणशुद्धता नहोय एवेदांत्यादिक मतनिराकरी उभयस्वभावमाने जेथकीकोइदूषणनहोयतेवत्ति॥ ए॥

जीहोनियमितएकस्वभावजे॥ लालाउपचरियेंपरठाण॥ जीहोतेउ पचरितस्वभावछे॥ लालाएविणकेमपरनाण॥ चतु०॥ १०॥

अर्थ॥ नियमितजे एकस्थाने निरधारयुंजे एकस्वभाव अनेपरस्थानकें उपचरि यें तेउपचरित स्वभावहोय तेउपचरितस्वभाव नमानियेंतो स्वपरव्यवसायी ज्ञानवं तआत्मा केमकहियें जेमाटे ज्ञानने स्वविषयत्व तो अनुपचरितछे पणपरविषयत्व ते परापेक्षायें प्रतीयमानपणे तथापरनिरूपित संबंधपणेउपचरितछे॥ १०॥

जीहोकर्मजसहजबेभेदते॥ लालामूर्त्त अचेतनभाव॥ जी होप्रथमजीवनीसिद्धने॥लाला अपरपरज्ञस्वभाव॥चतु०॥११

अर्थ॥ तेउपचरित स्वभाव बेप्रकारेंछे एककर्मजनित बीजोस्वभावजनित तिहां पुद्गलसंबंधे जीवने मूर्त्तपणुं अनेअचेतनपणुंजे कहियेंछैयें तिहांगौर्वाहीकः एरीतें उपचारछे तेकर्मजनितछे माटेकर्मेतेहीज उपचरितस्वभावछे हवेजीवने अपरके० बीजोजे सहेजउपचरित स्वभाव तेसिद्धने परज्ञपणु तिहांकोइ कर्मोपाधिछेनही तड कमाचारसूत्रे अकम्मस्सववहारोणविज्जइ कम्मुणाववाहिजायतत्ति॥ ११॥

जीहोदशेविशेषस्वभावए॥लालासर्वेएकवीससंभाल॥जी होसविहुंपुद्गलजीवने॥लालापन्नरभेदछेकाल॥चतु०॥१२॥

अर्थ॥ जेकेवलज्ञानादिकते शुद्धगुणव्यंजनपर्यायहोय तिहांअर्थपर्यायनथी एह वीकोइक दिक्पटानासनी शंकाटालेछे जे षट्गुणहानिवृद्धिलक्षणागुरुलघुपर्यायाः सूक्ष्मार्थपर्यायाः एजेमकह्युंछे तेमक्षणभेदथी केवलज्ञानपर्यायपण भिन्नभिन्न देखाडयाछे ॥ पढमसमयसयोगिभवत्थकेवलनाणे ॥ अपढमसमयसयोगिभवत्थकेवलनाणे इत्यादिवचनात् तेमाटेऋजुसूत्रादेशें शुद्धगुणनापण अर्थपर्यायमानवा ॥ ७ ॥

शुद्धद्रव्यव्यंजनअणु॥ पुद्गलपर्याय॥ अशुद्धद्व्यणु
कादिकगुणा ॥ निजगुणपर्याय ॥ श्रीजिन० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ पुद्गलद्रव्यनो शुद्धद्रव्यव्यंजनपर्यायते अणुके० परमाणुजाणवो केमके तेपरमाणुनोकिवारें नाशनथी तेमाटेतथा द्व्यणुकादिकद्रव्यते पुद्गलद्रव्यना अशुद्धद्रव्यव्यंजनपर्याय संयोगजनितछे तेमाटे एम गुणाके० पुद्गलद्रव्यना शुद्धगुण व्यंजनपर्याय तथाअशुद्धगुणव्यंजनपर्यायते पोतपोताना गुणाश्रितजाणवा जेपरमाणुगुण तेशुद्धगुणव्यंजनपर्याय अनेद्विप्रदेशादिगुणते अशुद्धगुणव्यंजनपर्याय ८

सूक्ष्मअर्थपर्यायते ॥ धर्मादिकएम॥ निजपरप्र
त्ययथीलहो॥ गंभिदृष्टप्रेम॥ श्रीजिन० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ धर्मास्तिकायादिकना शुद्धद्रव्यव्यंजनपर्यायजछे एहवोजे हठकरेछे तेहनेकहियेंजे ऋजुसूत्रादेशें क्षणपरिणतिरूप अर्थपर्यायपण केवलज्ञानादिकनीपरें हठछांडीने तिहांपणकेमनथीमानता ॥ ९ ॥

जेमआकृतिधर्मादिकनी॥ व्यंजनछेशुद्ध ॥ लोकद्रव्य
संयोगथी ॥ तेमजाणीअशुद्ध ॥ श्रीजिन० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ तेधर्मास्तिकायादिकमां अपेक्षायें अशुद्धपर्यायपणहोय नहीतोपरमाणुपर्यंत विश्रामेंपुद्गलद्रव्यपण नहोय एहवें अभिप्रायेंकहेछे जेमधर्मास्तिकायादिकनी आकृति लोकाकाशमान संस्थानरूपते शुद्धद्रव्यव्यंजन पर्यायकहियें परनिरपेक्षपणामाटे तेमजलोकवर्त्ति द्रव्यसंयोगरूप अशुद्धद्रव्यव्यंजनपर्यायकहियें पणतेहनोपरापेक्षपणे कहेतांथका अनेकांतिकने विरोधनथी ॥ १० ॥

संयोगेआकृतिपरें ॥ पज्जयकहेवाय ॥ उत्तराध्य
यनेभाषिया॥ लक्खणपज्जाय॥ श्रीजिन०॥११॥

अर्थ ॥ जेआकृतिते पर्यायहसे अने संयोगपर्यायनहोय एहवीआशंकाटालेछे

हियें तथा ४ कोइकरीतें पर्यायार्थिकनयेंकरी उत्पादव्यय ग्राहकहोय तेणेकरीने इ व्यनेविषे अनित्यस्वनावजाणो ॥ २ ॥

नेदकल्पनारहितथीरे ॥ धारोएकस्वनाव ॥ अन्वय
इव्यार्थिकनयेंरे ॥ अनेकइव्यस्वनावोरे ॥चतु०॥३॥

अर्थ ॥ ५ नेदकल्पनानी अपेक्षारहित शुद्धइव्यार्थिकनयें एकस्वनावजाणो तथा ६ अन्वयइव्यार्थिकनयेंकरी अनेकस्वनावजाणो कालान्वयेंसत्ताग्राहको देशान्वयेंचान्वयग्राहकोनयः प्रवर्त्तते ॥ ३ ॥

सद्भूतव्यवहारथीरे ॥ गुणगुणादिकनेद ॥ नेदक
ल्पनारहितथीरे॥जाणोतासअनेदोरे॥चतु०॥४॥

अर्थ ॥ ७ सद्भूतव्यवहारनयथी गुणगुणी पर्यायपर्यायीनो नेदस्वनावजाणवो ८ अने नेदनीकल्पनारहित शुद्धइव्यार्थिकनयथी अनेदस्वनावजाणवो यत्रकल्प्यमानस्यांतर्निर्गीर्णत्वेनग्रहस्तत्रैकस्वनावो यथाघटोयमिति अत्रविषयविषयिणोर्वैविक्त्येनग्रहस्तत्राजेदस्वनावो यथानीलोघटइति सारोपासाध्यवसानयोर्निरूढत्वार्थमयं प्रकारनेदः प्रयोजनवत्वेतुतेयद्दबानिमित्तकत्वेनस्वनावनेदसाधके इतिपरमार्थः

परमनावग्राहकनेरे॥ नव्यअनव्यपरिणाम ॥ शु
द्धअशुद्धतेहथीरे ॥चेतनआतमरामोरे॥चतु०॥५॥

अर्थ ॥ हवे ए नव्यस्वनाव अने १० अनव्यस्वनाव एबेस्वनावते परमनावग्राहकनयें जाणवा नव्यताते स्वनावनिरूपितछे अनेअनव्यता तेउत्पन्नस्वनावनी तथापरनावनी साधारणछे तेमाटेइहां अस्ति नास्ति स्वनावनीपरें स्वपरइव्यादिक ग्राहकनय एबेप्रवृत्तिनहोय. शुद्धाशुद्धपणो संमुग्धजे परमनाव ग्राहकनय तेणेकरीने आत्मारामने ११ चेतनस्वनाव कहियें ॥ ५ ॥

असद्भूतव्यवहारथीरे ॥ चेतनकर्मनोकर्म ॥ परम
नावग्राहकनयेंरे॥ तेहअचेतनधर्मोरे ॥चतु०॥६॥

अर्थ ॥ असद्भूतव्यवहारनयथी ज्ञानावरणादिककर्म तथानोकर्मते मनवचनकायपणुं तेहनेचेतनकहियें चेतनसंयोगकृतपर्यायतिहांछे तेमाटे इदंशरीरमावश्यकं जानातीत्यादिव्यवहारः अतएवनवति घृतंदहतीतिवत् अनेपरमनावग्राहकनयें तेकर्म नोकर्मने १२ अचेतनस्वनावकहियें जेम घृतअनुष्णस्वनाव ॥ ६ ॥

यें तथा इव्यबेमिलीएकइव्यञपनुं तेमाटे मनुजादिपर्यायते विजातीय इव्यपर्याय कहियें केमके तेबेइव्यमली परस्पर निन्नजातीय इव्यपर्यायञपनो तेमाटे. तथाके वलज्ञानते कर्मरहितपणामाटे स्वनावगुणपर्यायकहियें अनेमतिज्ञानादिकते कर्मप रतंत्रपणामाटे विनावगुणपर्यायजाणवा एरीतें एचारनेदपण प्रायिकजाणवा केम के परमाणुरूप इव्यपर्यायते एचारमांहेन अंतरनवें पर्यायपणुंतेहने विनागजाति शास्त्रेंकह्युंछे तडुक्तं संमतौ अणुंडअणुएहिंदवे आरईइअणुअंतिअणुतिववएसो॥ त त्तोअपुणविन्नत्तो अणुत्तिजाउअणुहोइ ॥ इत्यादिक ॥ १६ ॥

गुणविकारपज्जवकही ॥ इव्यादिकहंत ॥ सुंजा
णेमनमांहेते ॥ देवसेनमहंत ॥ श्रीजिन ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ गुणविकाराः पर्यायाः एमकहीने तेहनानेदनेअधिकारें तेपर्याय हिने द १ इव्यपर्याय २ गुणपर्याय इत्यादिककहेतोथको नयचक्रनोकर्त्ता जे देवसेनदि गंबर तेमनमांहेसुजाणेछे अर्थात् पूर्वापरविरोधनाषणथी कांइजाणतोनथी तेमाटे इव्यपर्यायजकहेवा पणगुणपर्याय जूदानकहेवा एपरमार्थछे ॥ १७ ॥

इमइव्यादिकपरखीया ॥ राखीगुरुआण ॥ नवेखी
बहुतनुमति ॥ अवगणीअजाण श्री० ॥ १८ ॥

अर्थ॥एरीतें इव्यगुणपर्यायते स्वरूपलक्षण नेदादिकेंकरीने परख्या गुरुआणाके० गुरुपरंपरानी आज्ञाराखीने तथाघणा तनुमतिके० तुह्बबुद्धीनाधणी तेहनेनवेखीने अजाणजेहठकदाग्राही तेहनेअवगणी निराकरीने इव्यादिकनीपरीक्षामेंकरी ॥ १८

जेदिनदिनएमनावसे ॥ इव्यादिविचार॥ तेलहेसेज
शसंपदा ॥ सुखसघलासार ॥ श्रीजिन० ॥ १९ ॥

अर्थ॥जे एअर्थदिनदिनप्रतें इव्यगुणपर्याय विचाररूपनावसे तेप्राणी यशनीसं पदाप्रतें पामसे तथा सघलासुखप्रतें सारके० निश्चेंपामसे एगुरुनोउपदेश प्रमाणकरजो

दोहा

गुरुश्रुतअनुनवबलथकी ॥ कह्युंइव्यअनुयोग ॥
एहसारजिनवचननूं ॥ एहपरमपदनोग ॥ १ ॥

अर्थ ॥ गुरुउपदेश श्रुतशास्त्राभ्यास अनुनवबल सामर्थ्ययोग तेहथीए इव्यानु

अनभिनूतजिहांमूर्त्ततारे ॥ अमूर्त्ततातिहांनादिं ॥ जिहांअ
भिनूतअमूर्त्ततारे ॥ मूर्तिअनंत्यतेमांहिरे ॥ चतु० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ एमकहेता मूर्त्तता जोपुजलद्रव्य विभंजक अंत्यविशेषछे तोतेनोउपचार आत्मद्रव्यें केमहोय अनेजोते अंत्यविशेषनहीतो अन्योन्यानुगमे अमूर्तताना उप चार पुजलद्रव्यें केमनहोय एहवीशंका कोइकनेहोयछे तेटालवानेकहेछे जिहांपुजल द्रव्यमूर्त्तता अभिनूतनथी किंतुउभूतछे तिहांअमूर्त्तता स्वनावनहोय तेमाटेअमूर्त्तता अपुजलद्रव्यनो अंत्यविशेष अनेजिहांआत्मद्रव्य कर्मेनहोय तिहांअमूर्त्तता अभिनू तछे तिहांमूर्त्तता अनंत्य अनुगमजनित साधारणधर्मरूपहोय तथाचान्योन्यानुगमा विशेषेपिक्वचिदेवाकिंचित्केनचित्कथंचिदभिनूयत इतियथागमव्यवहारमाश्रयणीयं ११

पुजलनेएकवीसमोरे ॥ एमतोभावेविखुत्त ॥ तेणेंअसनू
तहनयेंरे ॥ परोक्षअणुअअमूत्तोरे ॥ चतु० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जो उपचारेंपण अमूर्तस्वनाव पुजलनेनहोय एमकहेतातो एकवीसमो नाव लोपाये तेवारें एकविंशतिर्भावाःस्युर्जीवपुजलयोर्मताः एवचनव्याघातथी अ पसिद्धांतथाय तेटालवानेअर्थे असनूतव्यवहारनयें परोक्षते पुजलपरमाणुछे तेनेअमू र्तकहियें व्यवहारिकप्रत्यक्षागोचरत्वममूर्तत्वं परमाणोः नाक्तंस्वीक्रियतइत्यर्थः ॥१२॥

कालपुजलाणुतणोरे ॥ एकप्रदेशस्वनाव ॥ परमनयेपर
द्रव्यनेरे ॥ नेदकलपनाअनावोरे ॥ चतु० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ कालाणुने तथापुजलाणुने परमनावग्राहकनयें १५ एकप्रदेशस्वनावकहियें एमकालतथापुजल एबेद्रव्यटालीने परद्रव्य जेबीजाचारद्रव्य तेहने नेदकल्पनारहि त शुद्धद्रव्यार्थिकनयें एकप्रदेशस्वनावकहियें ॥ १३ ॥

नेदकल्पनायुतनयेंरे ॥ अनेकप्रदेशस्वनाव ॥ अणुविण
पुजलअणुतणुरे ॥ उपचारेंतेहनावोरे ॥ चतु० ॥ ॥ १४॥

अर्थ ॥ अनेनेदकल्पनानी सापेक्षायें जेशुद्धद्रव्यार्थिकनयें अणुके० एकछुटापरमा णुविना सर्वद्रव्यने १५ अनेकप्रदेशस्वनावकहियें अने पुजलपरमाणुनेपण अनेकप्रदेश थवानीयोग्यताछे तेमाटे उपचारें तेहनेपण अनेकप्रदेश स्वनावकहियेंतथाकालाणु मां तेउपचारकारणनथी तेमाटे तेहनेसर्वथा एस्वनावनथी ॥ १४ ॥

ग्यानवंतहकेवली ॥ द्रव्यादिकअहिनाण ॥ वृह
त्कल्पनाभाष्यमां ॥ सरिषाभाष्याजाण ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वृहत्कल्पगाथाचेयं ॥ किंगीयच्छोकेवली चउविहेजाणएेयकहणेय ॥ तु छेरागदेसे अणंतकायस्सवज्जणवा ॥ १ ॥ ॥ ७ ॥

नाणपरमगुणजीवनो ॥ नाणभवार्णवपोत ॥
मिथ्यामतितमभेदवा ॥ नाणमहाउद्योत॥ ८ ॥

॥ ढालपन्नरमो होमतवालेसाजना एदेशीछे ॥

नाणसहितजेहमुनीवरा ॥ किरियावंतमहंतोरे ॥ तेमृगपतिजेमपाखरिया ॥ तेह नागुणनोनअंतोरे ॥ श्रीजिनशासनसेवियें ॥ १ ॥ एआंकणीछे ॥ वशनिरुपक्रमक र्म्मने ॥ जेपणज्ञानविहीनारे ॥ तेपणमारगमांकह्या ॥ ज्ञानीगुरुपदलीनारे ॥ श्रीजि न० ॥ २ ॥ नाणरहितहितपरिहरी ॥ अज्ञानजहठरातारे ॥ कपटक्रियाकरतायति॥ नहुयेनिजमतिमातारे ॥ श्रीजिन० ॥ ३ ॥ कपटनजाणेरेआपणो ॥ परनागुह्यते खोलेरे ॥ गुणनिधिगुरूथकीबाहेरा ॥ विरुउनिजमुखेंबोलेरे ॥ श्रीजिन० ॥ ४ ॥ बा हिरबकपरेंचालता ॥ अंतरआकरीकातीरे ॥ तेहनेजेहभलाकहे ॥ मतिनवीजाणेतेजा तीरे ॥ श्रीजिन० ॥ ५ ॥ बहुविधबाह्यक्रियाकरें ॥ ज्ञानरहितजेहटोलेरे ॥ शतजि मअंधअदेखता ॥ तेतोपडिआछेनोलेरे ॥ श्रीजिन० ॥ ६ ॥ निजउत्कर्षअहरषि या ॥ निजअवगुणनवीदाखेरे ॥ ज्ञानजलधीगुणअवगणी ॥ अवगुणलवबहुनांषे रे ॥ श्रीजिन० ॥ ७ ॥ गुणप्रियआगेंअबुटता ॥ जेगुणअल्पशोनाषेरे ॥ तेपणअ वगुणपरिणमे॥ मायाशल्यमनराखेरे ॥ श्रीजिन०॥ ८ ॥ ज्ञानरहितजेएहवा ॥ जिन शासनधनचोरेरे ॥ तेहशिथलपरेंपरिहरूं ॥ गच्छाचारनेजोरेरे ॥ ए ॥ एनवमीगाथा नोअर्थ ॥ गच्छाचारवचनंचेदं ॥ अगीअच्छकुसीलेहिं संगंतिविहेणवोसिरे ॥ मुरकमग्ग स्सिमेविग्घं पहंमितेणगेजहा इति॥ज्ञानीवचनविषअमृतछे उलटीमूरखवाणीरे॥आ गमवचनएआदरो ज्ञानग्रहोभविप्राणीरे ॥ श्रीजिन० ॥ १० ॥ अर्थ ॥ गीयच्छस्स वयणेणं विसंहालाहलंपिबे ॥ अगीयच्छस्सवयणेणं अमयंपिनघुट्टए ॥१॥ इत्यादिव चनशास्त्रेंछे तेमाटे हेधमार्थिभव्यप्राणी ज्ञानपक्षदृढआदरो केमकेहमणाज्ञानप क्षनोदृढाधिकारछे ॥ १० ॥ चरणकरणगुणहीणडा ज्ञानप्रधानआदरियेंरे ॥ एम किरयागुणअन्यसी ॥ इच्छायोगंथीतरियेंरे ॥ श्रीजिन० ॥११॥ अर्थ ॥ कर्तुमिच्छोःश्रु तार्थस्य ज्ञानिनोपिप्रमादिनः॥ कालादिविकलोयोग इतीच्छायोगलक्षणं. ललितविस्ता

अनुगतकालकलितकह्यो ॥ व्यंजनपर्याय ॥ वर्त्तमानसु
षिमतिहां ॥ अत्यहपज्जाय ॥ श्रीजिन० ॥ २ ॥

अर्थ॥जेजेहनो त्रिकालस्पर्शिपर्याय तेतेनोव्यंजन पर्यायकहियें जेमघटादिने मृदादिपर्याय तेहमांसूक्ष्मवर्त्तमानकालवर्तितेअर्थपर्यायछे जेमघटनेतत्क्षणवर्ति पर्यायते अर्थपर्याय ॥ २ ॥

द्रव्यगुणेबिहुंभेदथी॥वलीशुद्धअशुद्ध॥शुद्धद्रव्यव्यं
जनतिहां ॥ चेतननेसिद्ध ॥ श्रीजिन० ॥ ३ ॥

अर्थ॥ तेप्रत्येकें एकेकबेबेप्रकारें एकद्रव्यपर्याय बीजोगुणपर्याय भेदथीजाणवा तथातेवली शुद्ध अनेअशुद्धभेदथी बेबेप्रकारेंजाणवा तेमांशुद्धद्रव्यव्यंजनपर्यायते चेतनद्रव्यने केवलज्ञाननां भावथी सिद्धपर्यायजाणवो ॥ ३ ॥

अशुद्धद्रव्यव्यंजनबहु ॥ मनुजादिकभेद ॥ गुणथीव्यं
जनएमद्विधा ॥ केवलमइभेद ॥ श्रीजिन० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेअशुद्धद्रव्यव्यंजनपर्याय तेमनुष्य देवता नारकी तीर्यंचादिक बहुभेदेंजाणवो केमके तेद्रव्यभेद पुद्गलसंयोग जनितछे एमज शुद्धगुणपर्यायते केवलज्ञानादिरूप अने अशुद्धगुणव्यंजनपर्यायते मतिज्ञानादिरूपजाणवा ॥ ४ ॥

ऋजुसूत्रादेशेंकरी ॥ क्षणपरिणतएह ॥ कह्योअर्थ
पज्जायए ॥ अभ्यंतरजेह ॥ श्रीजिन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ एमऋजुसूत्रादेशें क्षणपरिणतजे अभ्यंतरपर्याय तेशुद्धार्थपर्याय अने जेजेहथी अल्पकालवर्त्तिपर्याय तेतेहथीअल्पविवक्षायें अशुद्ध अर्थपर्यायकहेवा ५

पुरुषशब्दजेमपुरुषने ॥ व्यंजनपर्याय ॥ संम
तिग्रंथेअर्थथी॥बालादिकहाय॥श्रीजिन०॥६॥

अर्थ ॥ इहांदृष्टवचन संमतिग्रंथदेखाडेछे जेम पुरुषशब्दवाच्य जेजन्मादि मरणकालपर्यंत एकअनुगतपर्याय तेपुरुषनोव्यंजनपर्यायकहियें एसंमतिग्रंथेकह्युंछे तथा बालतरुणादि पर्यायते अर्थपर्यायकह्याछे एमसर्वत्रफलावीलेवुं अत्रगाथा ॥ पुरिसंमिपुरिससद्दो जम्माइमरणकालपज्जंतो॥ तस्सउबालाईया पज्जवभेयाबहुविगप्पा

षटगुणहाणीवृद्धीथी ॥ जेमअगुरुलहुत्त ॥ पज्जव
तेमक्षिणभेदथी ॥ केवलपणेवुत्तं ॥ श्रीजिन०॥७॥

संततिगावे ॥ सुरकिन्नरनिसदीसोरे ॥ हम० ॥ ६ ॥ गुरुश्रीलाजविजयवरपंमित ॥ तासससीससोजागो ॥ श्रुतव्याकरणादिकबहुग्रंथें ॥ नित्यंजशमतिलागीरे ॥ हम० ॥ ॥ ७ ॥ श्रीगुरुजितविजयतससीसो ॥ महिमावंतमहंतो ॥ श्रीनयविजयविबुधगुरु ज्राता ॥ तासमहागुणवंतोरे ॥हम०॥७॥ जेगुरुस्वपरसमयअन्यासें ॥ बहुउपायकरी कासी ॥ सम्यग्दर्शनसुरुचिसुरनिता ॥ सुजमतिसुजगुणवासीरे ॥ हम० ॥ए॥ जशसे वासुपसायेंसहजें ॥ चिंतामणीमेंलहिउं ॥ तसगुणगाइशकुंकेमसघला ॥ गावानेगह गहिउंरे ॥ हम० ॥ १० ॥ तेगुरुनीजक्तिसुजशक्ति वाणीएहप्रकाशी ॥ कवियशविज यजणेएमजणयो ॥ दिनदिनबहुअन्यासीरे ॥ हम० ॥ ११ ॥

॥ कलश ॥

एमद्रव्यगुणपर्यायेंकरी जेहवाणीविस्तरी गतपारगुरुसंसारसागर तरणतारणवर तरी तेएहजाषीसुजनमधुकर रमणसुरतरुमंजरी श्रीनयविजयबुधचरणसेवक जश विजयबुधजयकरी ॥ १ ॥ सर्वगाथा २७५ इयमुचितपदार्थोद्भापनश्रव्यशोजा बुधजनहितहेतुर्जावनापुष्पवाटी॥ अनुदिनमितएवध्यानपुष्पैरुदारै र्जवतुचरणपूजा जैनवाग्देवतायाः ॥ १ ॥

इतिउपाध्यायश्रीयशोविजयगणिकृतद्रव्यगुण पर्यायनोरासबालावबोधसहितसमाप्तः

जे संयोगतेपण आकृतिनीपरें पर्यायकहेवायछे केमके पर्यायनालक्षण भेदरूप श्री उत्तराध्ययनसूत्रें एरीतेंकह्याछे ॥ ११ ॥

एकतपृथकततेमवली ॥ संख्यासंठाण ॥ वलीसंयोग
विभागए ॥ मनमांतुआण ॥ श्रीजिन० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ उक्तंच ॥ एगत्तंचपुहुत्तंच संखासंठाणमेवय॥संयोगायविभागाय पज्जवाणं तुलक्खणं ॥ १ ॥ एगाथातुंमनमांआण एमदिगंबरनयचक्रनाकर्त्तादेवसेननेकहेछे॥१२

उपचारीनयशुद्धते ॥ जोपरसंयोग ॥ असद्भूतम
नुजादिका ॥ तोनयशुद्धयोग ॥ श्रीजिन० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवेजोएमकहेसोजे धर्मास्तिकायादिकने परद्रव्यसंयोगछे तेउपचरित प र्यायकहियें पणअशुद्धपर्यायनकहियें द्रव्यान्यथात्वहेतुनेविषेज अशुद्धत्व व्यवहार छे तेवर्तीतो तेमाटे मनुष्यादिकपर्यायपण अशुद्धनकह्यो असद्भूतव्यवहारनयग्राह्य माटें असद्भूतकह्यो ॥ १३ ॥

धर्मादिकपरपज्जयें ॥ विसमाइएम ॥ अशुद्धताअ
विशेषथी ॥ जिअपुग्गलजेम ॥ श्रीजिन० ॥ १४ ॥

अर्थ॥हितंतुकादिक पर्यायनीपरें एद्रव्यजनकअवयवसंघातनयेंज अशुद्ध द्रव्यव्यं जनपर्यायपणुंज कहेतारुडुंलागे तस्मादपेक्षानपेक्षाभ्यांशुद्धाशुद्धानेकांतव्यापकत्वमे वश्रेयः तेहिजदेखाडेछे धर्मादिकने परपर्यायें एटलेस्वपर्यायथी विषमायीके० विल क्षणताएमजाणवी केमके परापेक्षायें जेमजीवद्रव्य पुग्गलद्रव्यनेविषे अशुद्धतानो विशेषनथी ॥ १४ ॥

एमजसजातिविजातिथी ॥ द्रव्येंपज्जाय ॥ गुणेस्व
भावविभावथी ॥ एचारकहाय ॥ श्रीजिन०॥१५॥

अर्थ ॥ हवे प्रकारांतरे चारप्रकारनापर्याय नयचक्रमांकह्याछे तेदेखाडेछे एमज स्वजातीयद्रव्यपर्याय तथाविजातीयद्रव्यपर्याय वलीस्वभावगुणपर्याय अनेविभा वगुणपर्याय एरीतेंचारभेद पर्यायनाकहेवा ॥ १५ ॥

द्व्यणुकमनुजकेवलीवली ॥ मतिमुखदिइंत॥ एप्राथि
कजेएद्रव्यथी ॥ अणुपज्जवसंत ॥ श्रीजिन० ॥१६॥

अर्थ॥ हवेउदाहरणदेखाडेछे द्विप्रदेशादिकस्कंधते स्वजातीय द्रव्यपर्यायकहि

द्धिपदसौख्यप्राप्ति सकलप्रवचन परिज्ञाप्राप्ति इत्यादिकसर्वेनो साक्षात्लाभकारी एयो गछे एसामर्थ्ययोगना बेभेदछे एकधर्मसन्यास बीजोयोगसन्यास.

धर्मसन्यासते मोहादिकक्षयोपशमरूप तथायोगसन्यासते कायादिकव्यापार कायोत्सर्गकरणादिक एवेप्रकारनुं सामार्थ्ययोगते समस्तलाभप्राप्तिहेतुथाय प्रथमतोधर्मसन्यास सामर्थ्ययोगते बीजेअपूर्वकरणेहोय एटलेप्रथम अपूर्वकरणे यथाप्रवृत्तिकरणनीसंज्ञाछे तेथीअधिकृत धर्मसामर्थ्ययोगनहोय अनेबीजेअपूर्वकरणेते ग्रंथिभेदनुंनिबंधनछे तेमाटेप्रथममूकी बीजुंकह्युं यतःजागंठीतापढमं गंठीसमइक्कमेभवेबीयं ॥ अनिअट्टिकरणंपुण सम्मत्तंपुरक्कडेजीवे ॥ १ ॥ इतिवचनात्

अपूर्वकरणते आत्मवीर्य शुभपरिणाम अपूर्वअपूर्व अनादिकालें जेजेशुभशुभतर परिणाम धर्मस्थानकनेविषेहोय तेधर्मसन्यास बीजेअपूर्वकरणे ग्रंथिभेदफलते सम्यक्दर्शन समसंवेगादिकलिंग आत्मपरिणाम यतः॥ शमसंवेगनिर्वेदाऽनुकंपास्तिक्यलक्षणैः ॥ पंचभिःपंचभिःसम्यक् सम्यक्त्वमुपलक्ष्यते॥१॥ इतियोगशास्त्रे तत्वार्थश्रद्धान सम्यक्दर्शनं तेवारपछितथाविध कर्मस्थितिने उंछीकरे संख्यसागरोपमातिक्रम यावत् तेवारेंप्रथम धर्मसन्यास सामर्थ्ययोगहोय यतःगंठित्तिसुडुभेउ करकडघणरूढगूढगंठिव्व ॥ जीवस्सकम्मजणिउ घणरागदोसपरिणामो ॥१॥ सम्मत्तंमिउलद्धे पलियपहुत्तेणसावउहुज्जा ॥ चरणोपसमखयाणं सागरसंखंतराहुंति ॥२॥ माटे स्थितिभेदथीऊपर जेमजेमवधे तेमतेम आयुजीकरणते जेमजेम आत्मवीर्योल्लासें गुणस्थानकभजन तेसर्वधर्मसन्यास सामर्थ्ययोगकहियें तेपारमार्थिक तात्विककहियें ते माटे प्रथमकह्यो अनेकोइकवेलायें प्रव्रज्याप्रतिपत्तिकालें अतात्विककहियें केमके प्रव्रज्यासन्मुखतोछे पणप्रव्रज्याआदरीनथी माटे तिहांज्ञानरूप प्रतिपत्तिविशेष होय पणधर्मसंन्याससामर्थ्याधिकारी नवविरक्तिजोइयें तेयुक्तछे केमके सिद्धांतमांकह्युंछे.

प्रव्रज्याधिकारी आर्यदेशोत्पन्न विशिष्टजाति कुलमर्यादोपेत अशुभकर्म मलबुद्धि प्रपंच तेप्रायेंक्षीणछे अने मनुष्यपणानुं निमित्तदुर्लभछे संपदातेचपलछे विषयतेदुखोघहेतुछे जेसंयोगते वियोगमिश्रितछे शरीरते प्रतिक्षणे मरणयुक्तछे दारुणविपाक एवा संसारनुं अनेकप्रकारे निर्गुणपणुभावीने सहजपणे तेसंसारथी विरम्योथको अल्पकषाय अल्पहास्यादिकें निरविकारपणे वेदोदयादिकतज्ञ विनीतपरवास पणे राजामात्यादिबहुजन मान्य अद्रोहकारी सुंदरअंग श्रद्धावंत एवोजेहोयते प्रव्रज्याआराधक ज्ञानयोगनोआराधनार इत्यादिकगुणोपेत धर्मसंन्याससामर्थ्ययोगजाणवो.

योगकह्यो एसर्वेजिनराजना वचनतुंसारछे एजपरमपदके॰ मोक्षतेहनोजोगछे केम के एद्रव्यादिकविचारें शुकलध्यानसंपदायें मोक्षपामियें ॥ १ ॥

मध्यमकिरियारतहुए ॥ बालकमानेलिंग ॥
षोमशकेंजाष्युंधरे ॥ उत्तमज्ञानसुरंग ॥ २ ॥

अर्थ ॥ एद्रव्यानुयोगमां जे रंगधरे तेहनेजपंमितकहियें एहवुं अनियुक्तसाखेंसम र्थछे षोडशकवचनंचेदं ॥ बालःपश्यतिलिंगं मध्यमबुद्धिर्विचारयतिवृत्तिं ॥ आगमत त्वंतुबुधः परीक्षतेसर्वयत्नेन ॥ २ ॥

नाणरहितजेशुभक्रिया ॥ क्रियारहितशुभनाण ॥
योगदृष्टिसमुच्चयकह्यो ॥ अंतरखजुआजाण ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ ज्ञानरहितजे शुभक्रिया अनेक्रियारहित जे शुभज्ञान तेनेयोगदृष्टिसमुच्चय मां खजुआ अनेसूर्यजेटलो आंतरोकह्युंछे ॥ ३ ॥

खजुआसमीक्रियाकही ॥ नाणजाणसमजोय ॥
कलियुगएहपटंतरो ॥ विरलाबूजेकोय ॥ ४ ॥

अर्थ॥ तात्विकः पक्षपातश्च जावशून्याचयाक्रिया॥अनयोरंतरंज्ञेयं जानुखद्योतयो रिव ॥ इत्यादिकयोगदृष्टि समुच्चयें कह्योछे ॥ ४ ॥

क्रियामात्रकृतकर्मखय ॥ दहुरचुन्नसमान ॥
ग्यानकिउंउपदेशपदें ॥ तासछारसमजाण ॥५॥

अर्थ ॥ मंडुक्कचुन्नकप्पो किइयाजाणिउंकउकिलेसाणं॥तद्दहुरचुन्नकप्पो नाणकउ तंचआणाए ॥ १ ॥ इत्युपदेशरहस्ये एतदर्थसंग्रह ॥ ५ ॥

मिथ्यात्वादिककर्मथिति ॥ अकरणनियमेंजाष ॥
अप्रतिपातिज्ञानगुण ॥ महानिशीथहसाष ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेज्ञानते सम्यक्दर्शनसहितजआवे तेपाम्यापछि मिथ्यात्वमांआवेतोप ण एककोडाकोडी सागरोपम उपरांत कर्मबंधजीवनकरे बंधेणनवोलेयकयावितिवच नात् एअनिप्रायें नंदिषेणनेअधिकारें महानिशीथे ज्ञानगुण अप्रतिपातिकह्योछे उ त्तराध्ययनेप्युक्तं ॥ सूइजहासमुत्ता णणस्सईकयवरंमिपडिआवि॥ इयजीवोविसमुत्तो णणस्सइगउविसंसारे ॥ १ ॥ ६ ॥

दर्शनजेथयाजूजूआ ॥ तेऊघनजरनेफेरेरे ॥ नेदथिरा
दिकदृष्टीमां ॥ समकेतदृष्टीनेहेरेरे ॥ वी० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ उंघनजरनाफेरने अनुसारें षटदर्शननानेद जूदाजूदाथया तेउंघदृष्टीनुं इहां अधिकारनथी इहांतो मित्रा तारा बला दीप्रा स्थिरा कांता प्रना परा॥नामानियोगदृष्टीनां लक्षणेतुनिबोधत॥१॥ एआठयोगनीदृष्टीनो अधिकारछे तेमांबोधज्ञानप्रकाश कहेवोहोय तेकहेछे तृणगोमयकाष्ठाग्नि कणदीपोपमप्रना ॥ ताराकेचंद्रनारत्नदृष्टेदृष्टिरष्टधा ॥ १ ॥ इतियोगदृष्टिसमुच्चये एं आठमांपहेली चारदृष्टीलगें मिथ्यादृष्टी अने पाछली थिरादिकचारदृष्टी ग्रंथिनेदथीहोय एटलेथिरादिकथी सम्यक्तछे माटेस दृष्टी योगदृष्टीएवुंविरुदघटेछे पणआठेनेयोगदृष्टी केमकहियें एवुंकोइप्रश्नकरे तेनेउ त्तरकहेछेजे पहेलीचारदृष्टीमां सतसंगनायोगछे तेमांपण बीजाध्यानकरेछे तेमाटे सदृष्टि कहियें एशब्दार्थेयोगदृष्टीकही ॥ ३ ॥

दर्शनसकलनानयग्रहे ॥ आपरहेनिजनावेरे ॥ हितक
रीजननेसंजीवनी ॥ चारोतेहचरावेरे ॥ वी० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेथिरादिकदृष्टीवंतप्राणी समस्तछएदर्शनना नयग्रहणकरे तेने अद्वेषगुं राखे अनेपोतानास्वनावमां स्यादनित्यानित्यपणे जगत्वर्त्तेछे एनावमांवर्त्ते शुद्धदृष्टीनो नंगकरेनही हितकारी नव्यजननेशुद्धोपदेशरूप संजीवनीके० औषधीनोचारोचरावीने आपस्वरूपप्रगटकरावे तेनुंदृष्टांतउपनयें करीकहेछे कोइकनगरें कुलवंतपुत्ररहेछे तेनी बेस्त्रीछेएकवृद्धसुशीलविनीताछे बीजीवक्रछे तेवक्रस्त्रीपोतेपोतानापतिसाथें कामक्रीडा करी दिवसेवृषननीविद्यायें वृषनकरी नर्त्तारनेखेत्रमांमूकीआपे अनेवृद्धस्त्री धणीनास गपणनेमाटे दिवसनुंतेवृषनपासेरहिने चारापाणीनी खबरकरे एमकरतांकेटलेक दिवसे तिहांविद्याधरदंपतिविमानेबेसीआव्या तेवृषनदेखी विद्याधरपोतानीस्त्रीनेकेहवालागोके आवृद्धस्त्रीयें नर्त्तारनीसेवाकरवामांमीछे लघुस्त्रीयेंनर्त्तारने वृषनकर्योछे एमसर्ववातसांनली विस्मयचित्त आनंदपामीथकी तेविद्याधरनीस्त्रीपोतानानर्त्तारने कहेछेके एवृषनपुरुषथयीजाय एवोकोइयोगछे विद्याधरेकह्युं अमुकवटसमीपेंजे औषधीछे तेचरावेतोपुरुषथइजाय एमकहीविद्याधरगयो वृद्धस्त्रीएं तेविद्याधर नीसर्ववातसांनलीने तेवचनप्रतीते प्रयत्नकरी तेसर्ववटसमिपवर्त्ति औषधीग्रहीने तेनोचारोवृषननेचराव्यो तेथीवृषनतेपुरुषथयो स्त्रीनीसेवानक्ति नर्त्तारेजाणी एह ष्टांते इहां उपनयपुरुषतेआत्मा तेमजेएपक्षप्रायेंकर्यो तेअशुद्धचेतनास्त्री अनेजेए

रादौग्रंथे ॥११॥ चरणपतितवलीश्रावको ॥ तनुथमोविलीजेहोरे ॥ तेहनेज्ञानप्रधान छे ॥ मुनीनेछेगुणगेहोरे ॥ श्रीजिन० ॥ १२ ॥ आवश्यकमांहेनाषिउं ॥ तेणेगही ज्ञानप्रधानोरे ॥ आचरणापथचालतां ॥ लेश्येंजशबहुमानोरे ॥ १३ ॥ अर्थ ॥ अत्र आवश्यकगाथा ॥ दंसणपरकोसावय चरित्तन ठेयमंदधम्मेय ॥ दंसणचरित्तपरको सम णपरलोगकंखंमि ॥ १३ ॥

॥ ढालशोलमो समविसारदाए वरदायकदेवीएदेशी ॥

आत्मअर्थिनेअर्थप्राकृतवाणी ॥ एमएमेंकीधीहीयडेवलटआणी ॥ मिथ्यादृष्टी नेएहमांमतिमुझाणी ॥ सम्यकदृष्टीनेलागेसाकरवाणी ॥ १ ॥ गुरूपासेंसीखीअर्थेए हनाजाणी ॥ तेहनेएदेजोजेहनीमतिनवीकाणी ॥ लघुनेनयदेताहोएअर्थनीहाणी ॥ योगदृष्टिसमुच्चयएहवीरीतिवखाणी ॥ २ ॥ सामान्यमजाणोएतोजिनब्रह्माणी ॥ न लीपरेंसंजालोतलरयणनीखाणी ॥ एछुजनमतिमाताङ्गमतिवेलिकपाणी ॥ एशिवसु खसुरतरुफलरसस्वादनिशाणी ॥ ३ ॥ एहनेसुपसायेंउज्जाजोडीपाणी ॥ सेवेनरकि न्नरविद्याधरपविपाणी ॥ एअमियदृष्टीथीजहेनीमतिसीचाणी ॥ तेमांहेउल्लसेसुरुचि वेलीकरमाणी ॥ ४ ॥ बहुनावएहनाजाणेकेवलनाणी ॥ संखेपेएतोगुरुमुखथीकहेवा णी ॥ एहथीसंजारीजिनगुणश्रेणीसुहाणी ॥ वचनानुष्ठानेसमापत्तिपरमाणी ॥ ५॥ एहथीसवीजाएपापश्रेणीवजाणी ॥ गुणश्रेणीचढतांलहेमुक्तिपटराणी ॥ घनघातिक मैनेपीलियेंजेमतेलघाणी ॥ निर्मलगुणएहथीपामियाबहुनविप्राणी ॥ ६ ॥ खलज नजोएहमांदेषधरेअनिमानी ॥ तोपणसज्जनथीएहनीख्यातिमचाणी ॥ गुणमणिर यणायरजगउत्तमगुणगाणी ॥ जशदियेगुणीसज्जननेसंघअनंतकल्याणी ॥ ७ ॥

॥ ढालसतरमोदेशीहमचडीनीछे ॥

तपगछनंदनसुरुतरुप्रगट्यो ॥ हीरविजयसूरिंदो ॥ सकलसूरिमांजेसोजागी जेम तारामांचंदोरे ॥ हमचडी० ॥ १ ॥ तासपाटविजयसेनसूरेश्वर ॥ ज्ञानरयणनोदरि उं ॥ साहिसनामांजेयशपाम्यो ॥ विजयवंतगुणजरिउंरे ॥ हम० ॥ २ ॥ तासपाटे विजयदेवसूरिसर ॥ महिमावंतनिरीहो ॥ तासपाटेविजयसिंहसूरिसर ॥ सकलसू रिमांसीहोरे ॥ हम० ॥ ३ ॥ तेगुरुनाउत्तमउद्यमथी ॥ गीतारथगुणवाध्यो ॥ तस हिततिखतणेअनुसारें ॥ ज्ञानयोगएसाध्योरे ॥ हम० ॥ ४ ॥ जशउद्यमउत्तममार गनो ॥ नलेनावथीलहियें ॥ जसमहिमामहिमांयेंविदीतो ॥ तसगुणकेमनगहियेंरे॥ हम० ॥ ५ ॥ श्रीकल्याणविजयवरवाचक ॥ हीरविजयगुरुसीसो ॥ उदयाजशगुण

हारते इंद्रियनेविषयार्थेनजोडे ६ धारणातेएकशुद्धवस्तुनुंचिंतन ७ ध्यानतेध्येयनुंक रे ८ समाधीते जेअर्थचिंतव्या तेनुंजतन्मयपणेअनुभव एअष्टांगयोग प्रवृत्तिजाणवी

योगनाबीजइहांग्रहे ॥ जिनवरशुद्धप्रणामोरे ॥ भा
वाचारजसेवना ॥ भवउद्वेगसुठामोरे ॥ वी० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ वलीबीजी पणअष्टयोगांगीनी प्रवृत्तिकहिछे १ अद्वेष २ जिज्ञासा ३ शु श्रूषा ४ श्रवण ५ बोध ६ मीमांसा ७ परिशुद्धि ८ अप्रतिपत्ति प्रवृत्तिरष्टांगकीतडै इत्यादिकसर्वयोगनालक्षणछे वली १ जिननाम २ स्थापना ३ द्रव्य ४ भाव ५ मुद्रा इत्यादिक योगनाबीजछे तेनेइहांसंग्रहे तेनेप्रणमनकरे भावाचार्य सूत्रोक्तप्रवृत्तियें भाषणकरनार स्ववीर्यपंचाचारमां गोपवेनही तेवाआचार्यनीसेवना पर्युपासनाकरे तथाभवउद्वेगजे संसारनोत्यागतेज शुभस्थानकनीप्राप्तिछे एवुंजाणे ॥ ८ ॥

द्रव्यअभिग्रहपालवा ॥ उषधप्रमुखनेदानेरे ॥ आदरआ
गमआसरी ॥ लिखनादिकबहुमानेरे ॥ वी० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ ग्रंथिभेदविना भावाभिग्रहकहेवायनही तोपणद्रव्याभिग्रहतो हर्षथीपाले तेऔषधप्रमुख वस्त्रपात्रादिकदेवाना अभिग्रहते आदरसहित आगमनाविधिने अ नुसारें साधुजनने उचितहोयतेआपे तथाबहुमानपणे पुस्तकलिखनादिक उद्यमक रावे इहांसिद्धांतादिकमां सन्मार्गछेमाटे तेनुंलखनसमजवुं ॥ ए ॥

लेखनपूजनआपवुं ॥ श्रुतवाचनाउद्ग्राहोरे ॥ भाववि
स्तारसञ्झायथी ॥ चिंतनभावनचाहोरे ॥ वी० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ सिद्धांतोना लखवादिकमां तथा वीतरागनाबिंबोनी पूजनामां तेनाद्रव्य मसारादिकना आपवाने सावधानहोय तथासन्मार्गपरूपक श्रुतके० शास्त्रनीवाचना नो उदग्राहीके० उद्यमयोगमेलवे वली सञ्झायवाचनादि पांचप्रकारना विस्तारसांभली भावविस्तारते भावआस्थादिकना प्रत्ययवधारे तेनीचिंतना भावनानी चाहनाधरे

बीजकथाभलीसांभली ॥ रोमांचितहुयेदेहरे ॥ एहअ
वंचकयोगथी ॥ लहियेंधरमसनेहरे ॥ वी० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ संवेगभावनी यथास्थिततता समसंवेगसत्प्रवृत्ति श्रद्धानिराशय परोपका रकरण दुःखितानुकंपा सत्शीलानुचरण औदार्य धैर्य गांभीर्य सहजप्रमुखादिक बीजकथी योगांगकथासांभलीने रोमांचित हर्षोत्कर्ष कंटकितशरीरथाय एहवाप्रश

श्रीपार्श्वनाथायनमः

# अथश्रीमद्यशोविजयजीउपाध्यायकृतआठदृष्टी नीसझ्झाबालावबोधसहितलखियेंछेयें

ऐंद्रश्रेणीनतंपार्श्वं श्रीशंखेश्वरनामकं॥लिखा
मियोगदृष्टिस्वा ध्यायार्थंलोकभाषया ॥ १ ॥

अर्थ ॥ इंद्रनासमुदायछे जेनेविषे एवीश्रेणीपरंपरा तेनम्याछेजेने एवाश्रीशंखेश्वर पार्श्वनाथप्रते प्रणमिने यमनियमादिक तथाअष्टांगयोग प्राणयामादिकछे जेनेविषे एवाजे योगनाशास्त्रपातंजलादिक तेमांपोचवानेनजोक एवोश्रीहरिभद्रसूरिकृत यो गदृष्टिसमुच्चयग्रंथछे तेनाभावआणीने सकलतार्किकशिरोमणीवाचकराजश्रीयशो विजयजीउपाध्यायेंयोगदृष्टीनो सझ्झायरच्योछे तेसझ्झानोलेशमात्र भावार्थजाणवाने अर्थें प्राकृतभाषायें टबार्थलिखियेंछेयें.

तिहांप्रथम योगशब्दतेसुं तिहां मन वचन कायाएत्रणयोगछेतथाअष्टांगयोगछे त थाज्ञानदर्शनादियोगछे अथवाजेजेवस्तुनायोग युंजनकरियेंतेयोगकहियें एमबहुप्रका रनायोगछे पणइहांतो शास्त्रनीआदें पातंजलादिक ग्रंथानुयायी त्रणयोगकह्याछे ते अहवा तेनानामकहेछे १ इच्छायोग २ शास्त्रयोग ३ सामर्थ्यप्रतिज्ञायोग.

१ तेमां तथाविधपोताना ज्ञानावरणादिककर्मने क्षयोपशम विशेषें सांभल्याश्रुत नुं अर्थज्ञानलेइने करवावांछतापुरुषने पणप्रमादथी धर्मव्यापारयोगें विकलरहित अ नेअंतःकरणनेविषे सूत्रार्थनो इच्छकपणोहोयपण यथार्थबोधनही तेइच्छायोगकहियें.

२ यथार्थस्वरूपें विकथादिकनोत्यागी अप्रमादिधर्मव्यापारयोगवंत श्रद्धावंत तीव्र बोधेंकरी वचननुं वितथ भाषणनकरे तथाविध मोहनाअपगमथी सत्यप्रतीतवं त तथा कालादिविकलपणानीबाधायें अतिचारादिकदोषने जाणेतोखरो पणतथा प्रकारेंटालीनशके तेवापुरुषने शास्त्रयोगकहियें.

३ शास्त्रमांदेखाड्याजेउपाय तेनेअतिक्रमिने शक्तिनाअधिकपणाथकी धर्मव्यापा रयोगआदरे तेसामर्थ्याख्ययोगकहियें सिद्धिपदप्राप्तिनाविशेषण एमांबहुंछे तेनेअ तिक्रमेनही शास्त्रथकीजसर्व अर्थातजाणे एसामर्थ्याख्ययोगथी सर्वज्ञपदप्राप्ति सि

सके० गुणतेनुं टाणुके० स्थानकहोय एटलेसुंकह्युं जे अजव्यने डुर्नव्यने बहुपुजल परावर्त्तवालानेतो थोडाजवनहोय जे सठहठ कदाग्रही अत्यंतअनिनिवेशी गुरुआशातनावालाने एदृष्टीनहोय ॥ १५ ॥ एरीतेंप्रथममित्रादृष्टीनोविचारकह्यो.

॥ ढालबीजोमनमोहनमेरेएदेशी ॥

दर्शनतारादृष्टीमां ॥ मनमोहनमेरे ॥ गोमयअगनिसमान ॥
म०॥ शौचसंतोषनेतपजला॥म०॥ सक्षायईश्वरध्यान॥म०॥१॥

अर्थ ॥ हवेतारादृष्टीनो विचारकहेछे तारादृष्टीनेविषे मित्रादृष्टीथी मिथ्यादर्शन शीरीतें मंदहोय तथातिहांबोध कवोहोय तेकहेछे गोमयके० ढाणानीअग्निसरिखो जेमढाणनामोराथी अग्निवधे तेमबोधवधतोजाय कांइककार्यसाधकथाय तिहांशौच एटलेमननिर्मलरहे अने संतोषतेप्राप्तवस्तुथी आगलतृष्णानवधारे वली तपते इछारोधकरे एवोतपसक्षायते सुकथा सांजलवानुंतथा श्रुतजणवादिकनुंहोय अने ईश्वरध्यानते आत्मानेहितचिंतवनकरे जेरखेकोइ अकार्यसेवीसतो डुर्गतिपामिस॥१॥

नियमपंचइहासंपजे॥म०॥नहीकिरियाउवेग ॥म०॥ जिज्ञासा
गुणतत्वनी॥ म० ॥ पणनहीनिजहठटेग ॥ म० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ वलीएदृष्टीनेविषे पूर्वेकह्याते पांचनियमसंपजे महोटीक्रियापामे तेमांअखेदहोय एटले परलोकहितारंज कार्यकरतां उद्वेगनपामे वलीजिज्ञासाते जाणवानी वांछाहोय तत्वगुणनेविषे तत्वसत्कथायोगनी जिहां प्रीतिहोय तथाकरणकरावण अनुमतिरूप. निरविकारपणुंहोय पणविशिष्टपणे पोतानाहठकदाग्रहनोटेकराखेनही

एदृष्टीहोयवरततां ॥म०॥ योगकथाबहुप्रेम ॥म०॥ अनुचि
ततेहनआचरे ॥ म० ॥ वाल्योवलेजेमहेम ॥ म० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ एदृष्टीमांवर्त्ततोप्राणी अष्टांगयोगादिकनी कथामांबहुप्रेमधरे योगशुद्धीक्रियाशुद्धीमां सफलप्रसिद्धकार्यसाधे जेथकीपरलोकनेविषे अहितारंजफलपामियें एवुंअनुचितकार्य आचरेनही तेप्राणीने हितसिखामणकहेछते जेरीतेंसोनुंवाल्योवले तेवीरीतें सरलपणुआदरे ॥ ३ ॥

विनयअधिकगुणीनोकरे ॥ म० ॥ देखेनिजगुणहाण ॥ म०
त्रासधरेजवजयथकी ॥ म० ॥ जवमानेदुखखाण ॥म०॥४॥

अर्थ ॥ जेपोताथीअधिक गुणवंतप्राणीहोय तेनोविनयकरे अनेपोते विशेषगु

बीजोयोगसंन्यास सामर्थ्ययोगते पारमार्थिक तात्विककेनेकहियें क्षपकश्रेणीगत योगीने क्षांतादिकगुणसर्वे क्षयोपशमपणे नीपनाने यावत्केवलज्ञानलाभ जोगशील लगें तथातेहिजलाभवेलायें शैलेसीअवस्थागत योगनिरुंधनकालें पण परमार्थिक योगसंन्यास सामर्थ्यकहियें तेमाटेएत्रणयोगमां प्रथमयोगते चरमाकहियें पणभव्य मिथ्यादृष्टीनेहोय अनेबीजोयोग सम्यकदृष्टिग्रंथिभेदपछे देशविरतिप्रमुखनेहोय तथा त्रीजोयोगते पण दीक्षानेसन्मुख भवविरक्तअप्रत यावत् अयोगअवस्थालगेंजाणवुं एमएत्रणयोगकह्याछे तेनुंविचार योगदृष्टिसमुच्चयग्रंथथी विशेषजाणवुं इहांले शमात्रलख्युंछे तेयोगनुंदृष्टिदर्शन सामान्यमात्र ज्ञानावरणीयना क्षयोपशमेंजाणवुं इहादिविचारणायेंदेखवुं तेनेदृष्टिकहियें तेदृष्टिस्वरूप सर्वेआगलेंकेसे तेथीजाणवुं.

॥ ढालपहेलोचतुरसनेहिमोहनाएदेशी ॥

शिवसुखकारणउपदिशी ॥ योगतणीअडदिठीरे ॥ तेगुणथुणी
जिनवीरनो ॥ करसुंधर्मनीपुठीरे ॥ वीरजिनेसरदेशना ॥ १ ॥

अर्थ ॥ शिवके० निरुपद्रव उत्तरोत्तरजेआव्यो निर्विघ्नसुखतेना कारणके० हेतुयें श्रीवीरस्वामीयें योगनीआठदृष्टीउपदेशी तेश्रीवीरनुंगुणस्तवीने धर्मनीपुष्टीकरसुं यतः विदारयतियत्कर्म तपसाचविराजते॥ तपोवीर्येणयुक्तश्च तस्मा द्वीरइतिस्मृतः॥१॥ तथा दुर्गतिप्रपतत्प्राणि धारणाधर्मउच्यते॥संयमादिदशविधः सर्वज्ञोक्तोविमुक्तये॥२॥ अथवा अपरभाव व्यतिरिक्त केवलवस्तुस्वभावपणुं निरावरणपणे सादिअपर्यवसानपणेतेधर्म एसामान्यपणे एवीश्रीवीरनीदेशनाके० वाणीछे ॥ १ ॥

सघनअघनदिनरयणिमां ॥ बालविकलनेअनेरारे ॥ अ
रथजोयेजेमजुजूआ ॥ तेमउघनजरनाफेरारे ॥ वी० ॥२॥

अर्थ ॥ जेम सघनके० मेघसहितदिवस अने अघनके० मेघरहितदिवस एटले केटलाक मेघघटासहितदिवस अने केटलाकमेघघटारहितदिवस एरीतें जेमदिवसदिवसोमांभेद तेमज रात्रिनापणभेदछे वलीतेभेदनादेखनाराजेछे तेपण एकबालदृष्टि एकविकलदृष्टि एकअनेरा तेमांतरुण वृद्ध रोगीदृष्टी इत्यादिकअनेक तेजेम पदार्थनेजूए पणतेमां ज्ञानावरणीयादि कर्मविचित्रतायें सामान्य विशेषणादिदृष्टीमां अनेकफेरपडे जूदाजूदाअर्थदेखे तेसर्वेउघदृष्टिकहियें तेउघदृष्टिबहुजातिनीछे ॥ २ ॥

अर्थ ॥ एदृष्टीनागुणंते बोधज्ञानप्रवाहनी सरिसमानछे जेमकूपवापीप्रमुखे पाणी नीकळवानी सेरिहोय तिहांखणणकरतां पाणीतुरतपामियें तेनीपरें सिरीछे जेमरा जा शय्यायेंसुतोहोय अनेकोइक याचकादिक आशाथीगीतगाय अनेराजा पोता नाविषय कषायमां एकबेशब्दसांभळे तेजेमनिर्थक तेमएदृष्टीरूपगुणविना जेटलुंसां भळवुं तेबोधनकरे तेसर्वेथलकूपसमानजाणवुं ॥ ३ ॥

मनरीजेतनुउल्लसेजी ॥ रीजेबुजेएकतान ॥ तेइछावि

णगुणकथाजी ॥ बहिराआगलगानरे ॥जि०॥ध०॥४॥

अर्थ ॥ जिहांमनमां रीझपामें शरीररोमांचितथाय तथारीझअने बुजके० बोध तेएकतानेमिळे तेकथासांभळीलेखामांछे अनेतेवीइछानागुणविना जेतत्वकथासांभळ वीतेतो जेमबहिराआगळ गीतगानकरवा निःफळतेरीतेंनिःफळजाणवी ॥ ४ ॥

विघनइहांप्रायेंनहीजी ॥ धर्महेतुमांकोय ॥ अनाचारपरि

हारथीजी ॥ सुयशमहोदयहोयरे ॥ जिन० ॥ ध० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ एदृष्टीनागुणमां धर्मनुंकार्यकरतांथका प्रायेंकोइविघन अंतरायथायनही केमके अनाचारनोपरिहारथाय तेथी भलोसुयश महोटाउदयनोलाभ प्राप्तिनोविस्ता रपणुं इत्यादिकगुणनो क्षेपहोय एदृष्टीनेविषे शुभयोगनाप्रारंभहोय सुकथाश्रवणस मीहा थिरकार्यकर्त्ताइत्यादिकगुणनोक्षेपहोय ॥ ५ ॥ एवलानामेत्रीजीदृष्टीकही

॥ ढाळचोथीझांझरीयामुनिवरधनधनतुमअवतारएदेशी ॥

योगदृष्टीचोथीकहीजी ॥ दीप्रातिहांनउथ्थान ॥ प्राणायामतेभावथी

जी॥ दीपप्रभासमज्ञान॥ मनमोहनजिनजी॥ मीठीताहरीवाण॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवेदीप्रानामे चोथीदृष्टीकहेछे एदृष्टीमां १ समान २ उदान ३ व्यान ४ अपान ५ प्राणायाम एपांच तेमां १ समान तेहृदयनाभिनोवायु २ उदानते हृदयअने मस्तकवच्चें ३ व्यानते सर्वत्वचावर्त्ति वायु ४ अपानते अंगवर्त्तिवायु ५ प्राणायामते श्वासोश्वास एअनिलके० वायुनापांचभेद जाणवा १ रेचक २ पूरक ३ कुंभक पवनसाधे तेथीप्रशांतवाहितानोलाभथाय तिहां एकक्रियामां अपरक्रिया उपयोग तेउत्थानदोष लागेछे तेयद्यपिइहांग्रंथिभेदनथी थयो तोपणप्रशस्तयोगवंत ने भावथीप्राणायामकहियें एदृष्टीमां दीपप्रभासरिखोबोधजाणवो एटले तत्वश्रव ण सुश्रूषाफळवती यमनियमादिकफळवति पणसूक्ष्मबोध जाणवो हेमननाप्यारा हेजिनजीतारोउपदेशछे अनेतारीजेवाणीछे तेअत्यंतमीठीछे ॥ १ ॥

सेवाजक्तिकरीते शुद्धचेतनारूपी अनेविद्याधरगुरुमल्यो तेविद्याधरनीप्रीते दयाधर्मेक रणो तेणेहितोपदेशरूप मनुष्यगतिसमानवट तेसकलसामग्रीवंतने संजीवनीनोचा रोचरावोयथास्थितचत्तारिकीधो केमकेशुद्धचेतनाने अनुवर्त्ततो सर्वेगुणनुं जाजन थाय तेमउपनयेंथिरादिक चारदृष्टीनोधणीसर्वजीवनेहितकारीउपदेशआपे ॥४॥

दृष्टीथिरादिकचारमां ॥ मुगतिप्रयाणनजाजेरे ॥ रयणि
सयनजेमश्रमहरे ॥ सुरनरसुखतेमगाजेरे ॥ वी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वलीथिरादिक चारदृष्टीमां मुक्तिनो प्रयाणके० गमनतेजाजेनही केमके एदृष्टीवंतप्राणीते प्रायेंप्रतिपातिनहोय जेमवांछितनगरेजाता विचमांरात्रेंविश्रामकरि येंतेथीजेमश्रमहराय पणतेथीइछितपुरेंजतां बाधकनथाय तेमसम्यक्तदृष्टीने मोक्षेंज ताथका विचमांकिहांएक सुबाहुकुमर तथा श्रीपालादिकनीपरें देवता तथामनुष्य नाजवकरवापडे तेथीमोक्षप्रयाणनो बाधनथाय ॥ ५ ॥

एहप्रसंगथीमेकह्युं ॥ प्रथमदृष्टीहवेकहियेंरे ॥ जिहांमि
त्रातिहांबोधजे ॥ तेतृणअगनिसोलहियेंरे ॥ वी० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ एटलीवात प्रसंगथीजाणवाने योगदृष्टी तथाउगदृष्टी सर्वसंसारीजीव मात्रनीकही देखवुं जाणवुं ज्ञानावरणीयना क्षयोपशमआश्रीछे पणतेनोइहांअर्थ नथी इहांतोमित्रादिक आठदृष्टीनोअधिकारछे तेमांपहेली मित्रादृष्टीनुंलक्षण क्रियाबोधकहियेंछैयें जिहांसत्श्रद्धावंतना संगथकी असत्प्रवृत्तिनकरे सत्प्रवृत्तिनुं पदकहे इत्यादिकसंबोधज्ञानहोय तेमाटेदृष्टिकहियें हवेजिहां मित्रादृष्टीहोयतिहां जेबोधहोय तेकहेछे तृणस्पर्शना अग्नीसरिखो मिथ्यादर्शन मंदस्थिति रसादिक होय बोधअल्पहोय ॥ ६ ॥

व्रतपणइहांयमसंपजे ॥ खेदनहीशुजकाजेंरे ॥ द्वेषन
हींवलीअवरसुं ॥ एहगुणअंगविराजेरे ॥ वी० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ एदृष्टीनेविषे यमादिक १ अहिंसा २ सत्य ३ अस्तेय ४ मैथुनविरमण ५ अपरिग्रहता एपांचव्रतपणसंपजे वलीशुजकार्यजे दान दया देवगुर्वादिकनी कार्यप्र वृत्तिमां खेदआलस्यादिकनउपजे वलीअपरदर्शनना तथाविधदेखीने द्वेषनउपजे ए वाजेसत्यप्रवृत्तिनागुण ते असत्यवृत्तिनिवारणार्थें १ पांचमहाव्रतते पांचयम नियम शौच संतोष स्वाध्यायादिक २ योगासन ४ प्राणायामते पवनरोधवुं ५ प्रत्या

आत्मपरिणतिवीर्यनुं स्फुरणमिथ्यात्वादिकनाक्षयेंथीहोय॥५॥एवेपदनोअर्थलेशमात्रछे

वेद्यबंधशिवहेतुछेजी ॥ संवेदनतसनाण ॥ नयनि
क्षेपेंअतिनलुंजी ॥ वेद्यसंवेद्यप्रमाण ॥ म० ॥६॥

अर्थ॥ तेमाटेवेद्यपदनोबंधते शिवकें०मोक्षनोहेतुछे अनेसंवेदनपदते तेनुंज्ञानजा एवुं नैगमादिकसप्तनय नामादिकचारनिक्षेपा तथा सप्तभंगादिक तथागमाजेसरि खापाठ इत्यादिकेंकरी निर्मलते प्रमाणेकरी वेद्यसंवेद्यपदते ग्रंथिभेदेंप्रमाणछे ॥६॥

तेपदग्रंथिविभेदथीजी॥ छेहलीपापप्रवृत्ति ॥ तप्तलोहपद
धृतिसमीजी ॥ तिहांहोयअंतनिवृत्ति ॥ म० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ तेवेद्यसंवेद्यपदनुंदर्शन मोहनीनानाशथी ग्रंथिभेदेंउपजे तेथीअनादिनी अतत्ववासनामिटे संसारमांछेहली पापप्रवृत्तिते अग्नियेंतप्तलोहउपर पगमांम वानाधैर्यसरिखी समस्तअनर्थनी करनारी एवीपापप्रवृत्तिलागे तिहांअंतेएपापप्रवृ त्तिनीनिवृत्तिथाय एवेद्यसंवेद्यपदनुं लक्षणजाणवुं ॥ ७ ॥

एहथकीविपरीतछेजी॥ पदतेअवेद्यसंवेद्य ॥ भव
अभिनंदीजीवनेजी॥ तेहोयवज्रअभेद्य ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ अनेएवेद्यसंवेद्यपदथी विपरीतलक्षणते छतेमिथ्यात्वें सूक्ष्मबोध नहोय तेअवेद्यसंवेद्यपदछे एचारदृष्टीमां ग्रंथिभेददर्शनमोहनयीनो क्षयोपशमनहोय मा टेजेभवाभिनंदी संसारनासुखमां घणुराचेतेप्राणीने अवेद्यसंवेद्यपदहोय तेवज्रनीप रेंअभेद्य अनादिपदने शिरेंछे ॥ ८ ॥

लोभीकृपणदयामणोजी ॥ मायीमछरठाण ॥ भवअभिनं
दीभवभयभर्योजी॥ अफलआरंभअयाण ॥ म० ॥ ए॥

अर्थ ॥ एकलोभीसर्वत्र याचनशील बीजोछतेधने निभोगी कृपणतेतुछप्रकृतिकरे त्रीजोदयामणोते सर्वनेअकल्याणवांछे चोथोमायीते सर्वकाममांकपटमयहोय पां चमुंमछरते परनेसुखें पोतेदुःखीथाय छठोभवकें० संसारतेनोज आनंदीहोय भव विरक्तताकेवारें नभावे सातमुंसदायलहुथी भयपामतोरहे आठमुंअयाणते अज्ञानम मतत्वअतात्विकहोयकिस्युंनजाणेएआठदोषछताछे अनेटल्यानथी तिहांसुधीजेप्राणी धर्मनोप्रारंभसाधे तेजोसाचोहोय तोपणफलेनही कुशलादेवीनीपरे निःफलारंभथाय

स्त बाह्यनासंयोग सदअभ्यासकरण करावणमलेयके योगनुंअवंचकपणुं तेसफल एटलेतेप्राणी विषक्रियावंचेनही क्रियानिःफलनकरे तेअवंचकयोगकहियें तेअवंचक योगपामिने परमोत्कृष्ट धर्मस्नेहपामें मनमांजाणेजे एलाजडुष्करपणेपाम्योछुं ११॥

सदगुरुयोगेंवंदनक्रिया ॥ तेहथीफलहोयेजेहोरे ॥ योग
क्रियाफलभेदथी ॥ त्रिविधअवंचकएहोरे ॥वी० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ रूडागुरुसुसाधुनो योगपामिने वंदनक्रिया व्यवहारविधिपूर्वकपणेसाचवे तेथीजेफलथाय ते कहेछे एकमननेविशुद्धपणेराखवुंते योगअवंचककहियें तथा वचनअनेकायानुं निरवद्यपणेवर्तावबुं सकलविधिप्रवर्त्ततावबुं ते क्रियाअवंचककहियें तेणेकरी मिथ्यात्वादिक तथाविषयकषायादिकनी हीनतायें शुभगत्यादिकफलपामे ते फलावंचक एत्रणप्रकारना अवंचकयोग तेप्राणीनेहोय यद्यपिएत्रणअवंचकयोगते साधुनहेसीनेहोय पणअवक्रसामायिकें तथाभावसमाधि अमछरपणे द्रव्यथीएकह्योछे

चाहेचकोरतेचंदने ॥ मधुकरमालतीभोगीरे ॥ तेमभविस
हजगुणेहोये ॥ उत्तमनिमित्तसंयोगीरे ॥ वी० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ जेमचकोरपक्षी चंद्रमंडलनेदेखी चाहनाकरे जेमभ्रमर मालतीनाफूलनोभोगीहोय तेमभव्यप्राणीने यद्यपिमोहनो क्षयोपशमनथी तथापि उत्तमके० प्रधानजेशुभनिमित्त तेनोसंगीथाय एवोसहजगुणीहोय ॥ १३ ॥

एहअवंचकयोगते ॥ प्रगटेचरमावर्त्तरे ॥ साधुने
सिद्धदशासमो ॥ बीजनुंचित्तप्रवर्त्तरे ॥ वी०॥१४॥

अर्थ ॥ एवाअवंचकयोगते जेवारें चरमपुद्गलपरावर्त संसारथाकतोहोय तेवारें नीपजे तेपणकेटलाकप्राणीजेक्रियायोगीहोय तेहोने तथासाधुनेतो सिद्धदशासरिखो परमानंदपणुंजजे तथामित्रादृष्टीवर्त्ततांप्राणी बीजयोगनाजेअंग समता औदार्यादिक ग्रहणकरवाने चित्तप्रयत्नवंतकरे ॥ १४ ॥

करणअपूर्वनानिकटथी ॥ जेपहेलुंगुणठाणुरे ॥ मुख्यपणे
तेइहांहोये ॥ सुयशविलासनुंठाणुरे ॥ वी० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ इहांकहेलोयथाप्रवृत्तिकरण तेना निकटके० समीपपणाथीजे स्थिति रसें मंदपणे मिथ्यात्वगुणठाणें वर्त्ते शिवराज तापसादिकनी पूर्वेजेदिशाहती तेनीपरें मुख्यपणेतेजाणवुं तेकहेवुंजाणवुं भलायश शिष्टवखाणे एवा विला

अर्थ ॥ तिहांवलीविचारेजे सर्वज्ञदेवकोइ जूदाजूदानथी वीतराग अवितथवा दीएकजछे तेनाजे दासके० किंकरतेएकसर्वज्ञशासनाछे तेदेवनीभक्तिपणएककहिछे ते मांएकचित्रभक्ति बीजीअचित्रभक्ति एबेहुनोप्रकाशके० विस्तारघणोछे तेकहेछे॥ १४

देवसंसारीअनेकछेजी ॥ तेहनीभक्तिविचित्र ॥ एक
रागपरद्वेषजी ॥ एकमुगतिनीअचित्र ॥म०॥१५॥

अर्थ ॥ जेवीतरागभाव नथीपाम्या अने संसारमांदेवनामधरावेछे एवाअनेकदेव छे तेनीभक्तिपण विचित्रके० अनेकप्रकारनीछे एकरागथीहोय परके० बीजीद्वेषथी होय तेसर्वेविचित्रभक्तिमांजाणवी अनेएककेवल वीतरागनीभक्ति मुक्तिनेअर्थेतेअ चित्रभक्तिकहियें ॥ १५ ॥

इंद्रियार्थगतबुद्धिछेजी ॥ ज्ञानछेआगमहेत ॥ असंमोह
शुभकृतिगुणेजी ॥ तेणेफलभेदसंकेत ॥ म० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ एरीतेंभक्तितोबेप्रकारनीछे अनेतेनाफलभेदतो घणापडेछे तेकहेछे कोइ कप्राणीनीबुद्धिते इंद्रियमांहेंजपोचेछे कोइकप्राणीनुं ज्ञानते आगमप्राप्तिनोहेतुथायछे ज्ञानाभ्यासीविशेषणे कोइकनेअसंमोहपणथायछे तेणेकरीशुभकृतिगुण निपजावेछे एनाप्रकारेंकरी फलभेदना पणबहुसंकेतथायछे ॥ १६ ॥

आदरकिरियारतिघणीजी ॥ विघनटलेमिलेलछि ॥ जि
ज्ञासाबुधसेवनाजी ॥ शुभकृतिचिन्हप्रत्यछि ॥म०॥१७॥

अर्थ ॥ हवेशुभकृतिगुणतेसुं तेकहेछे विधिपूर्वकक्रियानो आदरपणोउपजे शुद्ध क्रियानेविषे अभ्युद्यमहोय तथा रतिके० हर्षघणोहोय एवागुणथीसुंथाय कर्मावर णनाविघनटलीजाय अनेअक्षयभावनीमोक्षरूपलक्ष्मीमिले तथा तत्वज्ञानजाणवा नी जिज्ञासाके०इछा तथा बुधके०ज्ञानीतत्वीपुरुषना चरणसेववानीइछा सत्संगति प्रत्यक्षपणे शुभकृतिना चिन्हलक्षणजाणवा ॥ १७ ॥

बुद्धिक्रियाभवफलदीयेजी ॥ ज्ञानक्रियाशिवअंग ॥ असं
मोहकिरियादियेजी॥ शीघ्रमुगतिफलचंग ॥ म० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ हवेएनाफलकहेछे जेइंद्रियार्थगतबुद्धि एवीक्रियाते भवके० संसारफल आपे अनेज्ञानक्रियानुंफलतेशिवके० मोक्षनुंअंगछे तेज्ञानपूर्वकअसंमोहक्रियारूपजे

णीहोयतोपण पोतामांहीनपणुंजावे सामान्यपणुंजावे एटलेअहंकृति उत्कर्षनकरे वली चतुर्गतिरूपसंसार दुःखनीखाणदेखीने तेनाजयथी त्रासपामे यतः जन्मदुखं जरादुःखं रोगाणिमरणाणिय॥अहोदुःखेहुंसंसारो जत्थकिंसंतिजंतुणो ॥४॥

शास्त्रघणामतिथोमली ॥ म० ॥ शिष्टकहेतेप्रमाण ॥ म० ॥
सुयशलहेएजावथी ॥ म० नकरेजूठमफाण ॥ म० ॥ ५ ॥

अर्थ॥शास्त्रतोघणाछे अनेपोतानीबुद्धिथोडीछे माटेजे शिष्टके० महोटागुरुकहेतेवचन प्रमाणकरे सम्यक्प्रकारें मन वचन कायायें करण करावण अनुमतिरूपें निर्विकारपणुं होयतेविशिष्टजावना जावतोथको सुयशके० निर्मलकिरतीपामें तेप्राणीअछतागुणोनो जूठोमफाणकरेनही शुजयोगकथानेविषें प्रीतिबांधे॥५॥ एटलेताराानामेंबीजीदृष्टीकही

॥ ढालत्रीजोप्रथमगोवालातणेजवेजीएदेशी ॥

त्रीजीदृष्टीबलाकहीजी॥काष्ठअगनीसमबोध॥क्षेपनहीआसन
सधेजी॥श्रवणसमीहासोधरे॥जिनजी॥धनधनतुजउपदेश॥१॥

अर्थ ॥ हवे बलानामे त्रीजीदृष्टीकहेछे इहांसुखासने बेठेलानीपरें थिरचित्त होय देववंदन गुरुवंदन आवश्यकादिकार्य अनुकूलपणेकरे यद्यपि मिथ्यादर्शनछे तोपणतेमिथ्यात्वदृढपणेनहोय एटलेमिथ्यात्वीयोना भ्रांतिरूपचमत्कारिक ज्ञानदेखीचपलपरिणामिनहोय इहांशास्त्रमांसांजलवाने दृढतरबोधते काष्ठनाअग्निसरिखो होय वलीएकेकक्रियानो अन्योन्यनेजेलकरे तेनेक्षेपदोषकहियें तेक्षेपदोषनहोय वली पर्यंकासन पद्मासनादिक त्रीजायोगनेसाधे सिद्धांतादिकसांजलवानी समीहाके० इच्छाहोय तथातेनासांजलवानी सोधनेसाधवाचाहे हेजिनजीतमाराउपदेशने धन्यछे एरीतेंआदरकरे पोतानीआत्माने धन्यमाने ॥ १ ॥

तरुणसुखीस्त्रीपरिवर्योजी ॥ जेमचाहेसुरगीत ॥ सांजल
वातेमतत्वनेजी ॥ एदृष्टीसुविनीतरे ॥ जिन० ॥ धन० ॥२॥

अर्थ ॥ जेमकोइक तरुणअजिनववय युवान सुखी धनाढय शुजतरुणीयें परवर्योते जेमदेवत्तागांधर्वना गीतगानसांजलवानेचाहे तेरीतें तत्वसांजलवानी इच्छाधरे एमएदृष्टीनाजेधणी तेसुशोजन विनयवंत विनीतपुरुषजाणवा ॥ २ ॥

सरिएबोधप्रवाहनीजी ॥ एविणश्रुतथलकूप ॥ श्रवणस
मीहातेकिसीजी ॥ शयितसुणेजेमजूपरे ॥ जि० ॥ ध०॥३॥

अभिनिवेशसघलोत्यजीजी ॥ चारलहीजेणेदृष्टी ॥ तेलेसे
हवेपंचमीजी ॥ सुयशअमृतघनवृष्टी ॥ म० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ अभिनिवेश कदाग्रह मत्सरीपणुं इत्यादिकदोषसर्वेत्यजीने जेणेमित्रा तारा बला दीप्ता एचारदृष्टिपामि तेप्राणीपांचमी थिरानामेंदृष्टिपामे तेदृष्टिकहेवीछे सर्वेदिशेंप्रवर्त्ततो जलोयश तद्रूपअमृत वधारवाने घनके० जलधारासरिखीछे गौतमस्वामिना शिष्यपन्नरसेंतापसनापारणानीपरेंवृद्धिनीकरनारछे ॥ १३ ॥ एचोथीदीप्ता नामेंदृष्टिकहि एचारदृष्टीमां ग्रंथिभेदपणुंतोनही पणसत्संगति सदाचारप्रवृत्तिहोय

॥ ढालपांचमोधनधनसंप्रतिसाचोराजाएदेशी ॥

दृष्टीथिरामांहेदर्शननित्यें ॥ रतनप्रभासमजाणोरे ॥ भ्रां
तिनहीवलीबोधतेसुक्ष्म ॥ प्रत्याहारवखाणोरे ॥ १ ॥
एगुणवीरतणोनवीसारूं ॥ संभारूंदिनरातरे ॥ पसुटाली
सुररूपकरेजे ॥ समकेतनेअवदातरे ॥ एगुण० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवेपांचमीथिरादृष्टिकहेछे तेथिरादृष्टीमां ग्रंथिभेदकरी सम्यक्दर्शन नित्यें होय तेनोबोधके० प्रकाशते रत्ननीकांतिसरिखोहोय वलीतेनेकोइजातनीभ्रांतिनहोय अपर्याप्तपणाथीपृथककरीने सूक्ष्मबोध तत्वार्थरूप यथार्थज्ञानहोय अज्ञानमिथ्यात्वनापुद्गल छेदातानहोयतेछेदाय सरलबुद्धिहोय सकलइंद्रियार्थविषयटलीने तत्वसुज्ञाननेविषेप्रवर्त्तेविषयार्थमटे तेप्रत्याहारकहियें ॥ १ ॥ एममहोटोश्रीमहावीरनोगुणते चित्तथीविसारुंनही दिनरात्रनित्यप्रतेंसंभारुं केमके एप्रभुनाउपदेशथी माराइंद्रियादिकनागुण विषयादिकार्थें पशुप्रायेंहता तेटालीने सुररूपके० तत्वबोधवंतकीधा दर्शनमोहविनाशथी उपनुंजे समकेतगुण तेणेकरीमननिर्मलकीधुं ॥ २ ॥

बालधुलिघरलीलासरिषी ॥ भवचेष्टाइहांभासेरे ॥ रिद्धिसि
द्धिसविघटमांपेसे ॥ अष्टमहासिद्धिपासेरे ॥ एगुण० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ जेमवर्षाकालें नानाबालकधुलिनाघरकरी लीलामानेछे पणपरमार्थनजाणे तेसरिखीएसंसारनीचेष्टारूप सर्वपुद्गलनाविलास इहांके०आदृष्टीमांभासेछे एरीतें संसारने अनित्यपणेजाणेथके पोतानाअंतरंगगुणनी ऋद्धितेसर्व तेनाघटमांपेदाथाय एवोसंतोषसुखउपजे वलीअष्टमहासिद्धिपण तेनीपासेजछे तथासमस्त लब्धिनीसिद्धिते योगरूपकल्पवृक्षना कुसुमरूपछे एमकरीमाने ॥ ३ ॥

बाह्यनावरेचकइहांजी ॥ पूरकअंतरनाव ॥ कुंन
कथिरतागुणेकरीजी ॥ प्राणायामस्वनाव॥म०॥२॥

अर्थ ॥ एकबहिरात्मार्येवर्त्तवुंते बाह्यनावते इहां रेचकपवनादिरोधजाणवुं बीजो अंतरनावें पवननेरोकवुंते पूरक अनेत्रीजो जेगुणआव्या तेनेथिरनांवेंकरे तेकुंनक पवनरोध प्राणायाम श्वासप्रवेश रोधवानाएस्वनावछे ॥ २ ॥

धर्मअरथिइहांप्राणनेजी ॥ ठांमेपणनहीधर्म ॥ प्राण
अरथेंसंकटपडेजी ॥ जूउएदृष्टीनोमर्म ॥ म० ॥ ३ ॥

अर्थ॥एदृष्टीनेविषेवर्त्ततोप्राणी धर्मनेअर्थें पोतानाप्राणनें तृणनीपरेंठांमे पणप्राणनेअर्थें संकटपडेतोपण धर्मनेठांमेनहीएवीरीतनोएदृष्टीनो स्थिरतानुंमर्मजूउके०देखो

तत्वश्रवणमधुरोदकेंजी ॥ इहांहोएबीजप्ररोह ॥ खारउद
कसमनवत्यजेजी ॥ गुरुनगतिअद्रोह ॥ म० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ एदृष्टीनेविषे सिद्धांतादिकोमांथी तत्वश्रवणरूप मधुरोदकने सेववेकरीबीजके० संसारनी अनाशंसा विरक्तादिक प्ररोहके०अंकुराछे तेथीखारोदकसमान नवाजिनंदीपणुं तेनेत्यजे तेप्राणीसरलमने गुरुनक्तिनोअद्रोहीहोय एटलेगुरुनोनक्तहोय

सुक्ष्मबोधतोपणइहांजी ॥ समकेतविणनविहोय ॥ वे
द्यसंवेद्यपदेंकह्निजी ॥ तेनअवेद्येंजोय ॥म०॥ ५ ॥

अर्थ॥ यद्यपिसूक्ष्मबोध परिज्ञान एदृष्टीनेविषेनथी केमकेग्रंथिनेद समकेतविनान होय माटेजेसूक्ष्मबोधते वेद्यसंवेद्यपदरूप समकेत तेइहांनथी इहांतोअवेद्यपदछेमिथ्यात्वछेतेमाटेसूक्ष्मबोधनथी एविस्तारयोगदृष्टीसमुच्चयमांछे पणइहांसंक्षेपेंलखियेंछैयें

मित्रादिचारदृष्टीयद्यपि क्रियादिकें सत्संगत्यादिकगुण तथाधर्मनाबीजसंग्रहे पणएचारदृष्टीते अवेद्यपदछे एटलेसूक्ष्मतत्वबोधनथी जेमपक्षीनीछायापाणीमांपडती देखी पाणीपणतेवीजप्रवृत्तिकरे तेनीपरेंप्रवर्त्तिकरे पणतत्वबोधनही तेमाटेअवेद्यपदते अपदछे जिहांअंतरमुहूर्त्तप्रमाणमात्रमां दर्शनमोहनीयनो क्षयोपशमग्रंथिनेदनकरे एवोआत्मनुंपंभितवीर्यस्फुरेनही तेमाटेअवेद्यपदकहियें.

अनेथिरादिक आगलीचारदृष्टीमां वेद्यसंवेद्यपदछे जे वेद्यते जेसूक्ष्मबोध सम्यक्वेदनरूपछे एटलेमिथ्यात्वक्षयेपणे यद्यपि छेहेलीपापप्रवृत्ति नरकादिकगमन श्रेणीकादिकनीपरें तप्तलोहपदस्पर्शी प्रवृत्तिसरिखीहोय पणतेवेद्यसंवेद्यपद सूक्ष्मबोधसहित

ढालछठीनोजीडाहंसारेविषयनराचीयेंएदेशी ॥

अचपलरोगरहितनिठुरनहीं॥ अल्पहोयदोयनीति॥
गंधतेसारोरेकांतिप्रसन्नता ॥ सुस्वरप्रथमप्रवृत्ति
॥ १ ॥ धनधनशासनश्रीजिनवरतणु ॥ एआंकणी

अर्थ॥वलीतेप्राणी इंद्रियार्थना चपलपणारहितहोय सम्यक्तनायोगें थिरहोयत था रोगादिकेंरहित शरीरहोय नठुरके० कठणक्रूदयनहोय एटलेकोमलपणुं होय वली लघुनीति वडीनीतिए दोयके० बेहु शरीरादिकमां अल्पहोय तथामलादिकनो गंधते नलोसुरनीवंतहोय वली कांतिलावण्यादिक सुंदरहोय तथासर्ववचनादिकें प्रसन्नता प्रसादपणुंहोय सुशोननस्वर गंनीर्यहोय अतिगंनीर मधुरधर्मोपदेशरूप वचनहोय एरीतेंप्रथम एदृष्टीनुंप्रवर्त्तनहोय ॥ १ ॥ एवुंश्रीवीतरागनुं शासन आज्ञारूपप्रवचनते धन्य प्रशंसनीयछे ॥ १ ॥

धीरप्रनावीरेआगलेंयोगथी॥ मित्रादिकयुत्तचित्त ॥ लान
इष्टनोरेद्वंद्वअधृष्यता॥ जिनप्रीयताहोयनित्य॥धन० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ आगलेकालें योगथी धैर्यतानागुण विशेषपणेनावे जेमअप्रमत्ततावधे तेमयोगथाय १ मैत्री २ प्रमोद ३ कारुण्य ४ माध्यस्थादियुक्त जेमनुंचित्तहोय इष्टज्ञानादिकनोलानथाय द्वंद्वनीअधृष्यता एटलेएकपणुं असहायीपणुंवालो जनप्रियके० लोकवल्लनतादिकगुण सदाइंहोय इहांमैत्र्यादिक चारनावनाते धर्मध्याननी पुष्टिकरेछे यद्यपिध्याननी एकाग्रता मुहूर्त्तमात्रछे तोपणतेध्याननी नावना बहुकालसुधीछे माटेज्ञाननी चिंतवणापण बहुकालनीछे तेपण धर्मध्यानकहियें तेथी मैत्र्यादिकनावनाते धर्मध्याननुं रसायनछे जेमजराअवस्थामां जर्जरितशरीरने रसायनखाधाथी दृढशरीरथाय तेमएनावनारूप रसायनपण ध्याननेदृढकरेछे तेनावनानाववी एनुंविशेषस्वरूप नवनावनाग्रंथ तथायोगशास्त्रादिकग्रंथोथी जाणवुं ॥ २॥

नाशदोषनोरेतृपतिपरमलहे ॥ समताउचित्तसंयोग ॥ ना
शवयरनोरेबुद्धिशतंनरा ॥ एनिष्पन्नहयोग ॥ धन०॥ ३ ॥

अर्थ ॥ क्षुद्रादिकआठदोष तथारागद्वेष कामक्रोध मदहर्ष तेनोनाशकरे तथा अतत्वबुद्धिनाहेयपणाथकी परमप्रकृष्टरुचिमार्गें तत्वश्रद्धानादिकें तृप्तिपामे कृतापराधजनउपरपण तीव्रानुबंधीक्रोध नहोय पिशुनतानहोय तेप्राणी समतातथा त

एहवाअवगुणवंतनुंजी ॥ पदछेअविद्यकठोर ॥ साधुसं
गआगमतणुजी ॥ तेजीत्योधुरेंछोर ॥ म० १० ॥

अर्थ ॥ एवापूर्वोक्त अवगुणवंतने अवेद्यपदते कठोरके० आकरुंजहोय तेप्रा णीने ग्रंथिभेदनथाय अनेतिहांलगें सूक्ष्मबोधपणनथाय मिथ्यात्वेंवर्त्ते अवेद्यसंवेद्यप देवर्त्ते पछेसाधुनोसंग अने आगमके० सिद्धांतनीसंगत एवेहेतुयेंकरीतेजीतेतेजीतवा ना धुरके० प्रथमएबेप्रकारछे ॥ १०॥

तेजीतेसहजेंटलेजी ॥ विषमकुतर्कप्रकार ॥ दूरनिक
टहाथीहणेजी ॥ जेमएबठरविचार ॥ म० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ तेमोहनीयजीतेथके विषमके० आकरामागतत्वनाजेविकल्प तेविचाररू पकुतर्कसहेजेंटलीजाय जेमबेहुबठरअज्ञानीहता तेनेहाथीऊपर वेसनारमावतेंकह्युंजे तमेदूररहो नहीतोहाथीतमनेहणसे तेसांभलीबठरें कुतर्कपणेविचारकर्युंजे हाथीप्राप्त थयेलानेहणेछे किंवाअप्रासनेहणेछे जोपाम्यानेहणेतोमावतनेहणे जोअणपाम्याने हणेतो आवनारनेहणे एमविचारकरेछे एटलामांतेहाथीआव्यो तेणेबेबठरनेउपा डिहणीनाख्या एवाकुतर्कप्रमुखनाविचारते सहजेटलीजाय ॥ ११ ॥

हुंपाम्योसंशयनहीजी ॥ मूरखकरेएविचार ॥ आलसु
आगुरुशिष्यनोजी ॥ तेतोवचनप्रकार ॥ म० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हुंतत्वपाम्योछुं एमांकांइसंशयनथी एवोविचारतोजे मूर्ख आपमतिहोय तेकरे जेमआलसुगुरु तथाआलसुशीष्यना विचारें वचननाप्रकारघणाथया तेजेम पोतानी सज्झायें आविशक्यानही तेमतेपणजाणवुं ॥ १२ ॥

हीजेतेपतिआववुंजी ॥ आपमतेंअनुमान ॥ आग
मनेअनुमानथीजी ॥ साचुलहेसुज्ञान ॥म०॥१३॥

अर्थ ॥ माटेजेप्राणी हीके० पोतानीबुद्धियेंकरीनेपत्तिआववुंके० प्रत्ययउपजाववुं तेपण अनुमानप्रमाणे आपके० पोतानीमतेजकरे तेकांइनपामे अनेजे आगमप्रमा ण प्रवीणगुरुनीमतें आगमनाअनुमानथी प्रत्ययउपजावे तेहिजसाचु सुज्ञान भ लीतत्वबुद्धिपामे एमजाणवुं पणस्वमतिकल्पनायेंनही ॥ १३ ॥

नहीसर्वज्ञजूजूआजी ॥ तेहनाजेवलीदास ॥ भगतिदे
वनीपणकहीजी ॥ चित्रअचित्रप्रकाश ॥ म०॥ १४ ॥

थी अनेदोषपणनथी तेप्राणीविषयादिकनेविषे मनजोडवुंते अवगुणनुंक्षेत्रकरीमानेछे तेथी विषयार्थनेविषेमननजोडे ॥ ७ ॥

मायापाणीरेजाणीतेहने लंघीजायअमोल ॥ साचुंजाणी
रेतेथिरहतोरहे ॥ नचलेभ्रमामाडोल ॥ धन० ॥ ८ ॥

अर्थ॥ तेप्राणीमायारूपपाणीना जेविविधतरंग तेना विलासदेखीने तेमायाने उ लंघीजाय केमके सम्यकश्रद्धान सम्यकज्ञानेकरी तेप्राणीअमोलछे भवप्रपंचमां मु जावबुंनही एमतेसत्यपणेजाणेछे माटेभवप्रपंचथी बिहितोरहे संसारमांअविद्या प्रपंचमायादेखीने तेक्षोभपामेनही अंबडपरिव्राजिक तथासुलसानीपरेंचलेनही ॥ ८

भोगतत्वनेरेएमभयनविटले ॥ जूठाजाणेरेभोग ॥ तेएह
ष्टीरेभवसायरतरे ॥ लहेवलीसुयशसंयोग ॥ धन० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ जेसंसारनाभोगने तत्वकरीजाणे तेनेसंसारनुंभयटलेनही एरीतेंविचार करीने भोगजे इंद्रियार्थसुखते जूठाजाणे एभोगथी भवप्रपंचवधे पणमोक्षपंथनमि ले एरीतेंजेप्राणीजाणे तेप्राणीएदृष्टीयें वर्त्ततोथको भवसमुद्रनो पारपामे वलीकर्मर हितपणे सुशोभनयश सिद्धपणानोसंयोग आत्मिकअक्षयसुखनी लीलाविलासपा मे ॥ ए ॥ एछठीकांतानामे दृष्टीकही

॥ ढालसातमीएछडिकिहांराखीएदेशी ॥

अर्कप्रभासमबोधप्रभामां ॥ ध्यानप्रीयाएदिठी ॥
तत्वतणीप्रतिपत्तेइहांवली ॥ रोगनहीसुखपुठीरे ॥
भविकावीरवचनचित्तधरियें ॥ १ ॥ एआंकणी ॥

अर्थ ॥ हवेप्रभानामें सातमीदृष्टीकहियेंछैयें एदृष्टीनोप्रकाशते अर्कके० सूर्यनीप्र भासरिखो बोधहोय जेमसूर्यनीशक्ति तिमिरनोनाशकरे तेमइहां प्रशांतवाहितादि कगुणंते दुर्धरछे एटलेकायरादिकनेदुःखे देखवायोग्यछे एवीपूर्णप्रभाकरछे एदृष्टीमां ध्यानप्रियहोय एकाकीध्यानमांज वर्त्ततोरहे एदृष्टीमां तत्वनीप्रतिपत्तिके० स्वरुधर्मे अंगेयथाविधपणे चारित्रादिक त्रणतत्वनी आदरणाहोय शरीरमांबाह्य अभ्यंतरप णे रोगआधिव्याधि असमाधिनहोय तेथीसुखनीपुष्टिहोय मनसमाधीमांरहे ॥ १ ॥ अहोभव्यो एहवाश्रीमहावीरना वचनतेमनमां तत्वपणेग्रहो ॥

चारित्रते शीघ्रके० तत्काल चंगके० मनोहर मुक्तिनाफलआपे यतः ज्ञानस्यफलंविरति विरतिफलंसंवरोबोधः॥संवरफलंक्रियानिवृत्तिःक्रियानिवृत्तेरयोगित्वंइति ॥ १८ ॥

पुदगलरचनाकारमीजी ॥ तिहांजशाचित्तनलीन ॥ ए
कमार्गतेशिवतणोजी ॥ नेदलहेजगदीन ॥ म० ॥१९॥

अर्थ ॥ जिहांसमस्त पुजलनी रचनाके० शोजाते कारमीजाणे एटले नवनाट कने शिशुके० बालकनाकरेला धुलियहनीपरें असारजाणी तेनेविषेजेनुं चित्तला गेनही आसक्तनथाय तेहिजएकमोक्षनोमार्गछे तेमार्गमांजेप्राणीनेदपणुं लहेके० पामे तेप्राणीजगतमां दीनके० दुःखीजाणवा ते नवदुःखपामे ॥ १९ ॥

शिष्यनणीजिनदेशनाजी ॥ कहेजनपरिणतिनिन्न ॥ क
हेमुनिनीनयदेशनाजी ॥ परमार्थथीअनिन्न ॥म०॥२०॥

अर्थ ॥ जेमश्रीवीतरागजेदेशनाकहेछे तेशिष्यगणधर तीर्थथापनादिकार्यमाटे कहेछे अग्गिलाएधम्मदेसणाए तित्थंकरनामकम्मंवेईज्जइ इतिआगमवचनात् तेदेशना सकलजनसांनले तेसांजलनारानीपरिणतिपण निन्ननिन्नहोय अने मुनिजननीदेशना पण नयेंनयेंनिन्ननिन्नहोय अने देशनाआपनारनीपरिणतिपण निन्ननिन्नहोय पण तेसर्वेपरमार्थें एकस्याद्वादमुद्रायें अनिन्नजाणवा॥ २० ॥

शब्दनेदझगडोकिस्योजी॥ परमारथजोएक॥ कहोगंगा
कहोसुरनदीजी ॥ वस्तुफिरेनहीछेक ॥ म० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ माटेशब्दनेदमां झगडोविवादकांइनथी विवादतेअनिनिवेशेंजहोय पण जोपरमार्थएकहोयतो शब्दफेरेंविवादनथी जेमकोइकगंगाने सुरनदीकहे कोइकजान्हवीकहे एमजोपरमार्थएकछेतोपर्यायनामेफेरसमजवुनही जेम घटने कुंन कलश इत्यादिकें बोलवता कांइवस्तुमांफेरसमजवुंनही ॥ २१ ॥

धर्मक्षमादिकपणमिटेजी॥ प्रगटेधर्मसंन्यास ॥ तोझगमा
झांटातणोजी ॥ मुनीनेकवणअन्यास॥ म० ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ तेमएदृष्टीमां क्षमादिधर्म तेनेपरशासनमां खंतीमद्दवइत्यादिककह्याछे तेपणमटे केवलधर्मसंन्यासप्रगटे जेधर्मसंन्यासतसामग्रीते द्व्ययोगनुंजधरले तेधर्मसंन्यासतो असत्पंमितने अमायीनेजहोय तोझगडाझाटानुं मुनीनेअन्यासनहोय॥ २२

॥ ढालआठमीतुझसाथैंनहीबोलुंमारावालातेमुजनेविसारीजीएदेशी ॥

दृष्टीआठमीसारसमाधि॥नामपरातसजाणुजी॥आपस्व
नावेंप्रवृत्तिपूरण॥ शशिसमबोधवखाणुजी॥निरतिचार
पदएहमांयोगी ॥ कहियेंनहिअतिचारीजी ॥ आरोहे
आरूढेगिरिने ॥ तेमएहनीगतिन्यारीजी ॥ १ ॥

अर्थ ॥ नव्यलोकनाआत्मनाव जिहांअक्षयपणेछे एवीआठमीदृष्टिते सारके० प्र
धानआत्मसमाधिरूपछे तेदृष्टीनुंनाम पराछे एमजाणवुं एदृष्टीमांपोताना आत्माना
स्वनावमां पूर्णप्रवर्त्तनहोय इहां संपूर्णचंद्रमा सरिखो निर्मल प्रशांतवाहितादिक
समानगुणवंत बोधप्रकाशहोय एस्थानकमां प्रवर्त्ततोयोगी निरतिचारपदेंवर्त्ते पण
केवारें अतिचारपदमां वर्त्तेनही १ अतिक्रम २ व्यतिक्रमइत्यादिक अनेअतिचार न
हीतो अनाचारनो स्योआसरो जेममुनिराज उपशम क्षपकश्रेणीरूप गिरिके० पर्व
तउपरे आरोहके०चढे तेमइहांपरिणामधारायें आत्मानापंडितवीर्यना विलासेंएपण
गुणश्रेणीने आरूढके०आरोहे माटेएहनी गतिके०गमनते नवगतिथीन्यारीछे ॥१॥

चंदनगंधसमानखिमाइहां॥ वासकनेनगवेषेजी ॥ आ
संगेवर्जितवलीएहमां ॥किरियानिजगुणलेखेजी ॥ शि
क्षाथीजेमरतननियोजन॥दृष्टीनिन्नतेमएहोजी॥ तासनि
योगेंकरणअपूरव ॥ लहेमुनिकेवलगेहोजी ॥ २ ॥

अर्थ ॥ इहांजेमशरीरादिकनो चंदनसरिखोगंध सहजहोय तेम सहेजथीवचनप
ण चंदनसरिखोशीतल क्षमायुक्तहोय तथाक्षमादिकधर्मपण सहजथीहोय एवीसहेज
वासनाहोय पणबीजाकोइद्रव्यनी अपेक्षानकरे केमकेजेनेसहजथीगुणउपना तेप
रनागुण आव्यानेवांछेनही वलीएदृष्टीमां संसारनीआसंगता नहोय तथा सुमतिगु
प्तादिक मूलोत्तरगुणनो अन्यासतेथी क्रियासर्व आत्मानागुणनेलेखेथाय जेक्रियानेअ
नुसरतोहोय ते क्रियाएवीहोयजे अक्रियागुणनेसाधे जेमक्षारादिक शतपुटादिक
शिक्षानायोगेंकरी रत्ननीजातिने तादृशस्थानकेंजोडियें तेरत्नतोएकजजातिछे पणजेवा
पुटदीधातेवो जोवावालानीदृष्टीथी निन्न निन्न तेरत्नदेखाय तेमजएदृष्टीना जोवा
वाला निन्ननिन्नदृष्टीवंत केमकेछद्मस्थनुंज्ञान एकरूपीनहोय माटेतेनेनियोगें एदृष्टी

इहांअष्टमहा सिद्धिना नामकहेछे १ महिमाते शरीरादिकने मेरुपर्वतथकीपण महोटोंकरवानी शक्तिहोय २ लघिमाते वायुथकीपण शरीरादिकने लघुकरवानीश क्ति ३ गुरुताते वज्रथकीपण अत्यंतनारीकरवानी शक्ति ४ प्राप्तिते नूमिकायेंरह्यो थकोपण अंगुलनोअग्रनाग मेरुप्रांतेंपोचाडवानीशक्ति ५ प्रकाम्यते पाणीनेविषेपण पृथ्वीनीपरें उन्मज्जन मज्जन प्रविशन गमनादिककरे तेजीवनी अनाबाधपणे एह वीशक्तिहोय ६ ईशिताते त्रैलोक्यऋद्धिकरण तथातीर्थंस्वरादि ऋद्धिविकुर्वणशक्ति ७ वशिताते सर्वजीवनेवशीकरणशक्ति ८ अप्रतिघातते पर्वतमांपण प्रवेश निर्गमन शक्ति एआवतथावली अंतर्धान अदृश्यकरणशक्ति तथाकामरूपीनामे एटलेसमकालें नानाप्रकारनारूपकरणशक्ति इत्यादिक अनेकप्रकारनी सिद्धि ऋध्यादिकपाशेवसे॥३॥

विषयविकारेंनइंद्रियजोडे ॥ तेइहांप्रत्याहारोरे ॥ केवल
ज्योतितेतत्वप्रकाशे॥ शेषउपायआसारोरे ॥एगुण० ॥४॥

अर्थ ॥ शब्दादिकत्रेवीसविषय तेनाविकारने इंद्रियनाकामनोगसाथें जोडेके० मेलवेनही तेहुंनामप्रत्याहारगुणकहियें तेगुणइहांउपजे तेप्राणीनीज्योति निःकेव ल तत्वरहस्यनेजप्रकाशे तत्वज्ञाननेजलखेकरीजाणे शेषबीजासंसारना सर्वउपाय प्रपंच तेने असारकरीजाणे ॥ ४ ॥ तेनेजदृष्टांतेद्वारेंकरी आगलीगाथामांदेखाडेछे

शीतलचंदनथीपणउपनो ॥ अगनीदहेजेमवनननेरे ॥ धर
मजनितपणनोगइहांतेम॥लागेअनिष्टतेमननेरे॥एगुण०॥५॥

अर्थ ॥ यद्यपिचंदनतो शीतलछे तोपणतेथीउपनुंजे अग्नितेजेमआखावनने बा लीनाखे तेमजधर्मजनित पतिव्रतादिक ग्रहस्थाधर्मसेवनादिकदेखाडी यद्यपिनोगा दिकनीसेवनाकरेछे तोपणतेनेमनमां अनिष्टलागे अवसरआवेथके तेनोगादिकने मूकीआपवाने वारलगाडेनही ग्रहस्थावासने पाशपरमाणेमाने ॥ ५ ॥

अंशेहोयइहांअविनाशी ॥ पुदगलजालतमासीरे ॥ चिदानं
दघनसुयशविलासी॥ केमहोयजगनोआसीरे ॥एगुण० ॥६॥

अर्थ ॥ इहां अंशेके० विनाशेंअविनाशीथाय जेमजेमआश्रवनाहेतुओछा तेमतेम अविनाशी निरावर्णिथाय जेटलोपुद्गलनोखेल तेसर्वेतमासारूप बाजीगरनीबाजीकरी जाणे तेप्राणिज्ञाननोजेआनंदतेनो घनके० निवडपणुं एवोजेनलोयश तेनोविलासके० लीलातेमांरहे पणतेप्राणीनेत्रणभुवनरूपजे जगततेमां कोइनीआसीनहोय सहज स्वरूपनुं विलासीहोय॥६॥एहष्टिदर्शनमोहनीनाक्षयोपशम अथवाउपशमादिकेंहोय

ते कोइदर्शनउपर मत्सरीनहोय अवरवेदादिगुणउपनाहोय वलीगुरुके० हितोपदेशक होय तथा देवके० रागद्वेषादिकें विमुक्तहोय वलीद्विजते ब्रह्मचर्यादिकगुणेयुक्त एवा प्रियविजासेंचित्तनेराखे जीवनोदयावंत यत्नावंत इत्यादिकउपयोगमांवर्त्ततोहोय तेने प्रवर्त्तयोगीकहियें ॥ ४ ॥

शुश्रूषादिकअडगुणसंपूरण ॥ प्रवृतचक्रतेकहियेंजी ॥
यमद्वयलाजीपरदूगअर्थी ॥ आद्यअवंचकलहियेंजी ॥ चा
रअहिंसादिकयमइच्छा ॥ प्रवृत्तिथिरसिद्धिनामेंजी ॥ शु
द्धिरुचेंपालेअतिचारह ॥ टालेफलपरिणामेंजी ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ १ शुश्रूषा २ श्रवणं ३ चैवग्रहणं ४ धारणं ५ तथा॥ऊहा ६ पोहो ७ ऽर्थविज्ञानं ८ तत्वज्ञानं चधीगुणाः ॥ १ ॥ अथवा १ शुश्रुषा २ श्रुतज्ञान ३ विरति ४ आश्रवरोध ५ संवर ६ निरीहतप ७ निर्जरा ८ क्रियानिवृत्तिअयोगीपणुं एआठगुण एकेकथीवधता वधतासाधेतेप्रवृत्तयोगी तथातेने चक्रयोगीपणकहियें एत्रणयोगीनालक्षणकह्या फरिचक्रयोगीनुं लक्षणकहेछे प्रथम यमद्वयते १ अहिंसा २ सत्यएबे यमनुं लाजवंतहोय अने परडुगके० आगला अशौचमैथुननोत्याग एबेना अर्थीहोय एवाजेचक्रयोगीते आद्यअवंचकफलना धणीजाणवा केमके अवंचकत्रणकह्याछे क्रियाअवंचक फलअवंचक योगावंचक तेमांजेपुरुषनीक्रिया असंगानुष्ठाननीपरे निःफलनथाय तथाचारअहिंसादिनेवशयकोहोय तेनेयमकहियें तेचारनानामकहेछे १ इछाते गुणीजननी सम्यक्कथाकरवानेमनथाय २ प्रवृत्तिते उत्कृष्टपणेपालवानेमनथाय ३ थिरताते निरतिचारतापणे प्रवृत्ते ४ सिद्धिते स्वार्थ परार्थ निष्पादन. एहवा अहिंसादिक चारयमतेने शुद्धरुचीपणे चारप्रकारेंपाले अतिचार टालीनेजेरीते फलीभूतथाय तेवापरिणामेसाधे तेचक्रयोगी सदासफलाज्यासी जेमविगरफेरव्युंचक्रतेभाजनने उतारें एमज फरेपण तेफरवानीक्रियानिःफलनथाय तेमतेयोगीनोक्रियापणनिःफलनथायतेयोगीजाणवा ॥ ५ ॥

कुलयोगीनेप्रवृत्तचक्रने ॥ श्रवणशुद्धिपक्षपातजी ॥
योगदृष्टीग्रंथेहितहोवे ॥ तेणेकह्युंएवातजी ॥ शुद्ध
भावनेसूनिकिरिया ॥ बेहुमांअंतरकेतोजी ॥ जल
हलतोसूरजनेखजूउ ॥ ताशतेजमांतेतोजी ॥ ६ ॥

त्वमांगेना धर्मव्यापारनो संयोगीहोय तेप्राणीने वयरनोनाशहोय अनेपापप्रवृत्तिनो पश्चात्तापहोय तेप्राणीनीएवीबुद्धिहोय जे शतंनराके० शोकडागमेंपुरुषोने आजीविकादिकनीवृत्ति शांतननराहोय इत्यादिक योग आठदोषगयाथी सहजेनीपजे ॥ ३ ॥

चिन्हयोगनारेजेपरग्रंथमां योगाचारयदिठ ॥ पंचमदृष्टी
थकीतिजोमियें ॥ एहवातेहगरिठ ॥ धन० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वलीयोगना चिन्हके० लक्षणजे परग्रंथमांकह्याछे ब्रह्मचर्यकृतप्रतिज्ञानिर्वाह अपाय निराकरणादिसर्वांगें योगाचार्येजेदीठाछे पातंजलादिकते सर्वपंचमदृष्टी सार्थेजोडियें एटले पूर्वलीदृष्टीथी अधिकगुणेकरी तेनीगरिष्ठबुद्धिथाय माटेमोहनो क्षयोपशमजे ग्रंथिभेदतेथयोछे ॥ ४ ॥ एटलेपांचमीथिरानामें दृष्टीकही

छठिदिठिरेहवेकांताकहु ॥ तिहांताराभप्रकाश ॥ तत्वमिमां
सारेदढहोयेधारणा ॥ नहीअन्यश्रुतवाश ॥ धन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेछठीकांतानामा दृष्टीकहियेंछैयें तेछठीदृष्टीमां जेमआकाशेंतारादीपे ते सरिखो तत्वज्ञानप्रकाशबोधदीपे तेसर्वेतारासाथेजरहे पणजायनही जेमताराजाय नही तेनीपरेंनजाय तिहांतत्वनीज विचारणाहोय तत्वउपरेंदढनिबन्धधारणाहोय अन्यमिथ्यात्वेप्रणीत श्रुतशास्त्रउपर वासनानहोय अर्हतप्रणीत तत्वनीश्रद्धानहोय

मनमहिलानुंरेवाहलाउपरें ॥ बीजाकामकरंत ॥ तेमश्रुत
धर्मेरेएहमांमनधरे ॥ ज्ञानाक्षेपकवंत ॥ धन० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेमपतिव्रतास्त्रीनुंमन पोतानावल्लभ भर्त्तारउपरहोय बीजाघरसंबंधी समस्तकार्यकरताथकापण तेनुंचित्तभर्त्तारउपरहोय तेम कांतादृष्टीवाला प्राणीने अर्हतप्रणित धर्मउपरेंचित्तरहे यद्यपिसंसारमांरह्यो सर्वेकार्यकरे तथापितेनाउपर स्नेहधरेनही अनेसम्यक्ज्ञाननो आक्षेपके० आदरवंतहोय ॥ ६ ॥

एहवेज्ञानेरेविघननिवारणा ॥ भोगनहीभवहेत ॥ नविगुणदो
षनविषयस्वरूपथी ॥ मनगुणअवगुणखेत ॥ धन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ एहवेज्ञानेकरी धर्मनेविघनकारी एवाजेकारण तेनीनिवारणाजकरे वलीअभयकुमारादिकनीपरें परनेपण शासनप्रभावनादिककारण अनेकभेलवीआपे तोतेप्राणीयद्यपि भोगादिकभोगवेछे तेभोगादिकपण भवके० संसारनाहेतुनहोय केमकेतेप्राणी एमजाणेछेजे स्वरूपथीविचारत्तां संसारनाजे विषयतेगुणपणन

सजात्रणश्रोतागुणअवगुण ॥ नंदिसूत्रेदीशेजी ॥तेजा
णिएग्रंथयोग्यने ॥ देजोसुगुणजगीशेजी ॥लोकपूरयो
निजनिजइछा ॥ योगजावगुणरयणेजी॥ श्रीनयविज
विबुधपयसेवक ॥ वाचकयशनेवयणेजी ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ वलीसनात्रणकहिछे १ श्रोतानागुणतथा अवगुणदेखाडे तेमाहीराजहंस सरिखीसजानंदिसूत्रमांकहीछे २ अजाएथापछुमृग कुर्कटनाबालसरिखोखपकरतां सीखे ३ जेथोरीगीतार्थनाअपमानीते अयोगसजा एवीत्रणसजाजाणी योग्यविनय हिताहितप्राप्तिपरिहारजाणीने एग्रंथनोहार्दकह्यो एवानेदेतां जलाप्रवचन शोनाकारकादिक अनेकगुणतेहथी पोतेपोतानीमेले जली जगीसके० लीलापामसे एम इछायोग तथाशास्त्रादिकनाजेयोग तेरूपजे जावगुणतद्रूपमणिरत्नेकरी समस्तलोक पूरयो विशिष्टआत्मयोग जावरत्नेकरी समग्रलोकनरीतृप्तिपामजो एग्रंथनुंरहस्यपामि सदासंसारजावथीमूकाजो आपस्वजावमांरहेजो एअमारीप्रार्थनाछे एमश्रीनयविजयनामा पंमितनापदनोसेवक उपाध्याय श्रीयशोविजयगणि जेश्रीकाशीनेविषे न्यायविशारद एवुंबीजुंबिरूदपाम्या तेनावचनथीजाएवुं तेहवुंमेलिख्युंछे ॥ ८ ॥ तेकिहास्थानकेलिख्युं तेसर्वेआगलेकहियेछैयें ॥

काव्यं ॥ श्रीमद्यशोविजयवाचकराजराज विनिर्मितोदृष्टि
विचाररूपः॥ स्वाध्यायएषप्रथमंततोयं जाषामयोलेशतया
टबार्थः॥१॥श्रीस्तंजतीर्थेऽत्रतपागणिय नाम्नाचज्ञानाद्विमला
जिधेन॥ श्रीसुरिणाजूरिसुखावबोधा र्थमेविलखितोहिजद्रं॥२॥

अर्थ॥ महोपाध्यायश्री यशोविजयगणिकृत दृष्टिविचार सज्झायहती तेनोसुखेअवबोधथवाने अर्थें श्रीमत्तपागछीयसंविज्ञजनपद्धीय जट्टारक श्रीज्ञानविमलसूरियें लेशमात्रअर्थकरीने लिख्योछे श्रीखंबातबंदरमां दोशीमेघजीउदेकरण तथावडनगरीय शाअमुलिकना अनुग्रहनेहेतें प्रथमादर्शेलिखितः एप्रकारें योगदृष्टिसिझायटबार्थसंपूर्णथयोसर्वेगाथा ७६ तथाबेश्लोकमली ७८

इति महोपाध्यायश्री यशोविजयगणिकृत योगदृष्टिसा
ध्याय तेश्रीज्ञानविमलसूरिकृतअर्थसहितसमाप्तः

सघळुंपरवशतेदुखलक्षण ॥ निजवशतेसुखलहियें ॥ एह
ष्टेंआतमगुणप्रगटे ॥ कहोसुखतेकुणकहियेंरे॥नवि० ॥२॥

अर्थ ॥ जेपरपुजलादिकोने वशवर्त्तवुं आशीपणुराखवुं तेहिजदुःखनुंलक्षणछे अ नेपोताना आत्मनावेंवर्त्तवुं तेजीवनेमुक्तसुखकहेवाय तो एसातमीदृष्टीमां आत्मिक परमानंद सहेजसुखप्रगटथाय तेसुखज्ञानीविना कोइथीकह्याजायनही ॥ २ ॥

नागरसुखपामरनवीजाणे ॥ वल्लनसुखनकुमारी ॥ अनुन
वविणतेमध्यानतणुसुख ॥ कुणजाणेनरनारीरे ॥ न० ॥३॥

अर्थ जेमनगरनावासी चतुरनागरलोक तेनासुखनी लीलानोविलास तेनीवात पामरतुच्छ अज्ञानीलोकनजाणे तेमजकुमारीकन्या तेवल्लननर्त्तारना सुखनीवातन जाणे तेमयथार्थआत्माना अनुनव बोधज्ञानविना धर्मध्यान शुक्लध्यानादिक सुख नोआनंदते कोणजाणेअर्थात् स्त्रीअथवापुरुषकोइ अनुनवज्ञानविना जाणीशकेनही

एहदृष्टीमांनिर्मलबोधें ॥ ध्यानसदाहोयेसाचुं ॥ दूषणर
हितनिरंतरज्योति ॥ रतनतेदीपेंजाचुंरे ॥ न० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ एहदृष्टीमांवर्त्ताप्राणीने निर्मलबोधनोप्रकाशथयेछते सदैव धर्मध्यान तथा शुक्लध्यान एवेध्यान तेसाचाजहोय तेध्याननोविचार आवश्यकनिर्युक्तिमां ध्यानशत कछे तेनीवृत्तिथीविशेषजाणवुं जेम दूषणरहित निर्मलजातिनुंरत्न तेनीज्योतिनिरंत र विशेषेंदीपे तेमध्यानमांलीनपुरुष कर्म्मोपाधिनेअनावें वलीएहदृष्टीमांपोतो तेथी विशेषपणेदीपे ॥ ४ ॥

विषनागक्षयशांतवाहिता ॥ शिवमारगध्रुवनाम ॥ कहे
असंगक्रियाइहांयोगी ॥ विमलसुयशपरिणामरे॥न०॥५॥

अर्थ ॥ वलीएहदृष्टीनुं लक्षणकहेछे विषनागके० रागद्वेष अहंकृति कामोद्रेकादि कदोषनाक्षयथीमोक्ष एवुंबौद्धमतेमानेछे वली निरापराधिनेविषे प्रशांतवाहिताते निरंतरशांतपणुंतेने सांख्यमतमोक्षमानेछे तथाध्रुवनाम शिवनुंछे एटलेजिहां उत्पा दविनाशनही तेध्रुवरूपमोक्ष एवुंजैमिनीयमानेछे अने इहांदृष्टीनेविषे एसर्वेपदार्थअसं गजावथी अलिप्तक्रियाहोय निर्मलजलयशरूप आत्मगुणनापरिणाम कर्म्मोपाधिवि शुद्धएसर्वेमलीनेमोक्षछे एमएहदृष्टीनो बोधजाणवो ॥ ५ ॥ एप्रजानामेसातमी दृष्टिकही

न्मथयो राजायें महोटामहोटा महोत्सवकरी शुनवेलायें नव्यपुरुषएहवुंपुत्रनुं नामदीधुं अनेवलीमातायें सुमति एहवुं बीजुंनामदीधुं.

हवे ते मनुष्यगतिनामे नगरीनेविषे एकअगृहीतसंकेता अने बीजी प्रज्ञाविशाला एहवेनामे बेस्त्रीओरहेछे तेवेहुनेपोतामां सखिपणोछे तेमांअगृहीतसंकेतायें प्रज्ञाविशालाने पुछ्युं जे हे सखि आपणीनगरीनोराजा निर्बीजकहेवातोहतो अने राणीपणवंध्याकहेवातीहती तोतेहोनेपुत्रथयो एमहोटुंआश्चर्यलागेछे तेसांजली प्रज्ञाविशालाबोली जेहेबेहेन तुंतो तारानामने अनुसारेंज अबुजदेखायछे केमके सर्वेजगतएराजाराणीनुं संतानरूपछे एराजाना अविवेकादिकजेप्रधानोछे तेमणे राजाराणीने दृष्टीदोषनलागे माटे निर्बीज वंध्यानोप्रवाद कर्योहतो तेहवे राणीनाकहेवाथी प्रधाननेडुहवी पुत्रजन्मनो महोत्सवकरी ने निर्बीज अने वंध्यानो प्रवादटाल्यो

तेवातसांजली अगृहीतसंकेतायेंकह्युंजे हेसखीएवात तें केमजाणी तेवारें प्रज्ञाविशालाबोलीजे एहिजनगरीनेविषे समस्तजीवोनेहितकारी एहवो सदागमनामे एक प्रधानपुरुष वसेछे तेहनीसाथेंमाहरेघणोस्नेहछे अनेतेराजातथाराणी बेहुनी एकांतवार्त्तासर्वेजाणेछे वली तेप्रधान नव्यपुरुषने हितकारी गुणवंतोजाणीने में तेहनेमहारीपासेतेडावी परिचयकरावी स्नेहधरी जणवाराख्योछे. ते सदागमप्रधानथी राजानो तथा बीजाअविवेकादिकप्रधानोनो अने कामक्रोधादिक चौराटा विगेरेकोइनो जोरचालेनही माटेतेसदागमना कहेवाथी हुंजाणुंछुं इत्यादिकवार्त्तासांजली अगृहीतसंकेताबोली जे हे सखिते सदागमनामा प्रधाननोमुजनेदर्शनकराव. तेसांजली प्रज्ञाविशाला अने अगृहीतसंकेता एबेहुजणी जिहांघणुसदागमनोनिवासछे एहवो महाविदेहरूप चहुटानीवस्तियें आवीनेजुवेछे तो सदागमप्रधान पोतानारागी वचननामाननारा एहवा अनेकजीवोने प्रतिबोधी कर्म्मपरिणामराजानी विटंबनाथी मूकावीने अनंतसुखनुंस्थानक एहवोजे मोक्षरूपनगर तिहांपहोचाडेछे अने जे पापिष्ठसदागमनी निंद्यानाकरनारा तथा सदागमनाउपदेशने नथीमानता तेवापुरुषोने सदागम उवेखीमूकेछे.

पणकर्म्मपरिणामराजा तेअधमजीवोनासमुदायने निराधार अनाथजाणीने कामक्रोध लोजादिक सुनटोपासें तेमने घणीविटंबनाकरावी महानरकादिकबंधीखानेनाखी संतापेछे एरीतें तेबेहुसखिओए सदागमनेदेखी परिणामकरी तिहांबेसीने जुवेछे तो महाविनयवंत गंजीर अगंज साहसिकादिक अनेकगुणे परिपूर्ण एहवो नव्यपुरुष ते सदागमपासेबेगेलणेछे अने सदागमपण तेहनेसाहमुं परमस्नेह

तवे पणयथाप्रवर्त्तिकरण अपूर्वकरणादिकगुणस्थानकना करणसाधतो अनुक्रमे ए दृष्टीयें वर्त्ततो मुनिराज केवलज्ञानतुंघरपामे ॥ २ ॥

क्षीणदोषसर्वज्ञमहामुनि ॥ सर्वलब्धिफलजोगीजी ॥ पर
उपगारकरीशिवसुखते ॥ पामेयोगअयोगीजी ॥ सर्व
शत्रुक्षयसर्वव्याधिलय ॥ पूरणसर्वसमीहाजी ॥ सर्व
अरथयोगेंसुखतेहथी ॥ अनंतगुणनिरीहाजी ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ एदृष्टीवंतप्राणी सर्वदोषथीक्षीणथाय वलीलोकालोकनासन सर्वज्ञमहो टोमुनी केवलज्ञानवंतोथाय समस्तलब्धीनाफल तेनोजोगीथाय वलीनव्यप्राणीउने चारित्रधर्मपमाडतो परनेअत्यंत आनंदनोउपकाररूप निमित्तथाय तेपोते शिवके० मोक्षनासुखपामे तेरमांसयोगी गुणगणेवर्त्ततो चउदमांगुणगणें अयोगपदलेइ सि द्धिपामे सर्वकर्मरूपशत्रुनो क्षयकरी सर्वव्याधिजे बाह्याभ्यंतर रोगादिकतेक्षयकरे संपू र्ण समीहाके० वांछापूरीथयेथके तृप्तिप्रमोदेंकरी केवलआत्मरूपमां लयथयोथको एकरूपतापामे सर्वअर्थनेयोगें संपूर्णसुखवंत सदातृप्तिवंतरहे तेथीकरीने निरीहाके० निस्पृहतापणेप्रगटथाजेअनंतगुण तेणेकरीसुखपणअनंतपणेवधता अतींद्रियसुख होय एमअबाधनिर्मल सर्वोपाधिविशुद्ध आत्मानंदसुखवंतथाय ॥ ३ ॥

एअडदिठीकहीसंक्षेपे ॥ योगशास्त्रसंकेतेजी ॥ कुल
योगीनेप्रवृत्तचक्रजे ॥ तेहतणेहितहेतेंजी ॥ योगीकु
लेंजायातसधर्म्मे ॥ अनुगततेकुलयोगेंजी ॥ अ
द्वेषीगुरुदेवद्विजप्रिय ॥ दयावंतउपयोगेंजी ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ एआठदृष्टिते नव्यप्राणीना उपकारनेअर्थें योगनाशास्त्र अध्यात्मनाग्रंथ उपमितनवप्रपंच नवनावनावृत्ति पातंजलशास्त्र तथा प्रवचनप्रबोधादिकग्रंथोने सं केतेकरी संक्षेपेंकही केमके योगीत्रणजातनाकह्याछे १ कुलयोगी २ प्रवृत्तियोगी ३ चक्रयोगी तेपोतपोतानाचित्तमां अहंकारेकरीमानेजे अमेपणयोगीनाम धरावियेंछैयें तेवाप्राणीओना हितने हेतेके० कारणेकही केमकेतेवायोगीयेंजो एयोगदृष्टीजाणी होय तोपोतानुंस्वरूपविचारे हवेएत्रणजातनायोगी लक्षणेकरीउलखावेछे जेयोगीने कुलेजन्याहोय तथातेनाधर्माचार रूढिमार्गना अनुगतेंचालताहोय एमसामान्यबुद्धि मात्रें वर्त्तता सर्वतापसादिक षट्दर्शनीउ तेकुलयोगीजाणवा वलीअद्वेषादिकगुण

एकेंड्रियनामे नगरआव्युं तिहां १ पृथ्वीकाय २ आपकाय ३ तेउकाय ४ वायुकाय ५ वनस्पतिकाय एपांचपाडाछे तेमां वनस्पतिनोपाडो बेप्रकारनोछे एकसाधारण अनेबीजोप्रत्येक हवे सूक्ष्म अने बादर एनामेजे साधारणवनस्पतिनोपाडोछे तेमां हेथींहुं संसारीजीव नीकलीने पृथिव्यादिकने पाडेआव्यो तेवारें हुंव्यवहारराशीउ जीवकहेवाणो तिहांमने नवितव्यतायें एकनववेद्य कर्म्मसंचयरूप गोलीखवरावीने विविधप्रकारनारूपलेवरावी घणीविडंबनाकरतां तथातेबेहुअधिकारीयोने देखतां ते पांचेपाडामांघणोकालसुधीराख्युं.

एमकरतां ते नवितव्यता कांइकमहाराजपर प्रसन्नथयी तेवारें तेनगरथकी मने चलावीने विकलेंड्रियनामे नगरमां आण्यो तिहां १ बेंड्रिय २ तेंड्रिय ३ चोरेंड्रिय एत्रणपाडाछे तेमांमुजने नवीनवी गोलीखवरावी अनेकप्रकारनारूपलेवरावी घणीरोतेंविडंबनाकीधी एम लखोगमेयोनी तथाकोडीकुलें फेरवतांफेरवतां केटलेक कालें तेनवितव्यता प्रसन्नथयी तेवारें तेहांथीमुजनेचलावीने पंचेंड्रियपशुसंस्थान नामेनगरनेविषे आण्यो.

तिहांपणगुटिकानेप्रयोगें हरणी शृगाल व्याघ्र सिंह गजादिरूपें अपर्याप्त पर्याप्तपणे घणोविडंब्यो एमकरतांकरतांफरी नवितव्यताप्रसन्नथयी तेवारें मुजनेपुण्योदय सहचारीनलावीनेकह्युं जेहे आर्यपुत्र घणाकष्टनोगवंता ताहरो अध्यवसायसुंदरथयो माटेहवेतुं मनुष्यगतिनामानगरीनेविषेचाल तेवारेंमेकह्युंघणुंसारुं पछे मनुष्यगतिनगरीयें तरतनामेपाडोछे तेहां जयस्थलनामेनगरनो पद्मनामेराजा तेहनीनंदा नामेस्त्रीनी कुक्षीनेविषे नवितव्यतायें गुटिकाखवरावीने अवताख्यो तेहांअनुक्रमेम हारो जन्मथयो राजायें महोटोमहोत्सवकरी महारुंनामनंदिवर्द्धन एहवुंदीधुं पछे पांचेधावे पालतो तथामातापिताने आनंदवधारतो हुंत्रणवर्षनोथयो.

हवे हुंजेवारें असंव्यवहारनगरथीनिकल्यो तेदिवसथी महारा बेपरिवारछे एकबहिरंग बीजोअंतरंग ते अंतरंग परिवारमध्ये अविवेकता नामे मारीधावहति तेणेमनेजण्यो अनेतेजदिवसें तेणेबीजोपुत्रजण्यो तेहनुंनाम वैश्वानरदीधुं ते वैश्वानरने वैर अने कलह ए बे चरण तथा ईर्षा अने चोरी रूप बे जंघा वली पश्चात्ताप अने अनुपशमतानामे बे शाथल तथा चाडीरूप कटीतट तथा परममोंदृघट्टन नामें उदर अने अतिसंतापनामे हृदय तथा खार अने मत्सररूपहाथ वली क्रूरपरिणामरूपकोटी असत्यनाषणादिरूपदांत प्रचंरूपणुं अने असहजपणुनामे बे कान तामसपणुनामें नासिका रौद्रपणु तथानिर्दयपणु ए बे नामें बे लोचन

अर्थ ॥ कुलयोगीने तथाप्रवृत्त चक्रयोगीने शुद्धमार्ग यमनियमादिक धर्मशास्त्र नुंश्रवणहोय तथा शुद्धाचारीनुं पक्षपात विनयादिककरण सदासत्संगी एवागुणना धारकते योगी कहियें अनेजे दंनी विषयप्रसंगी एवादोषवंततेने योगीनकहियें एवा तसर्वेविस्तारेंश्रीहरिनद्रसूरिकृत योगदृष्टिसमुच्चयग्रंथथी विशेषेजोवी तेमांहितबुद्धीने हितथाय तेहेतेकह्युंछे माटेएवातनामर्म रहस्यसर्वेतेग्रंथमांछे तेमाटे शून्यमनेशून्या चारेंयोगीनहोय केमके शास्त्रमां शुद्धनाव सम्यक्दर्शन क्षयोपशमनाव तेनीक्रिया अनेबीजीजे मोहनाक्षयोपशमविना शून्यक्रिया एवेक्रियानाफलनो अंतर तेजेटलो सूर्यनासहस्रकिरणनुंतेज अने अंधारीरातेंप्रकाशकरतो खजूओतेनातेजमांजेटलुं अंतरछेतेटलुंजअंतर सम्यक्ज्ञान दर्शनसहितक्रियाअनेमिथ्यात्वनावें मिथ्याक्रिया मां एटलो पटंतरछे ॥ ६ ॥

गुह्यनावएतेहनेकहियें॥ जेहसुंअंतरनांजेजी॥ जेहसुं
चित्तपटंतरहोवे ॥ तेहसुंगुह्यनगजेजी॥योग्यअयोग्य
विनागअलहतो॥ करसेमोटीवातोजी ॥ खमसेतेपं
मितपरखदमां ॥ मुष्टीप्रहारनेलातोजी ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ माटेएहवा शास्त्रनाजे गुह्यनावतेतो शास्त्रनारहस्यें जेवर्त्तताहोय तेनेज प्रकाशियेंके० कहियें जेनीसंघातें अंतरनांगोहोय मिथ्यादर्शनटाली सम्यक्दर्शन एकपरिणतिश्रद्धानहोय तेआगल शास्त्रनागुह्यप्रकाशियें अनेजेनीसाथें चित्तपटंतरवर्तेतुंहोय तथाजेने सम्यक्श्रद्धान प्रवचनअनुसारे नथयुंहोय तेनीसाथेए गुह्यनीवात करवीघटतीनथी अनेजेप्राणीखोटामतकदमालचलावे योग्यअयोग्यना विनागके० वहेंचणमांसमजतोनथी केमके गुरूनोविनयीनथी तेमाटे परंपराशुद्धाचारव्यवहार इव्यादिनावना विचारसमजतोनथी तेमबतांपोतें मोह्योथयोने एवीमहोटीवातोकरशे ते पंमितोनीपरषदामां मुष्टीनाप्रहारजेवधबंधनादिक तथालातके० पाटुप्रहारादिकते आलोयणादिकना प्रहारखमसे निश्चितजे मुष्टिप्रहारते गछादिकथी निर्गमकरवा तथानरकइत्यादिकना वधबंधनखमशे तथा अपयशअकीर्तिइत्यादिक लातो खमशे यडुक्तं जंजायईअगीयङो जंचअगीयङनिस्सीयोजयई॥ वट्टावेइयगछं अणंतसंसारियोनणियो॥१॥ इत्यावश्यकनिर्युक्तिवचनात् तेमाटेगीतार्थनेविहार तथा गीतार्थनश्रीतनेविहारकह्योछे तेथीगंनीरअर्थनीवाणी योग्यजननेदेवी संनलाववी ॥ ७ ॥

दिवर्द्धनसाथें विवाहथाय एवात सांनली राजाक्षीणथयोदेखीने फरीजैनमतज्ञेंकयुं के हे राजन् जेअसाध्यकार्यतेनथाय तोफोकटविषादस्योकरवो अनेए नंदिवर्धनने जिहांसुधी प्रबलपणे पुण्योदयछे तेहांसुधी एनो पापमित्रजे वैश्वानर ते जेजेमातुंक रसे तेते एहने नलुंजपरणमसे.

तेसांनली राजायेंचित्तस्थिरकरी जैनमतज्ञने सनमान सत्कारदेयी विदायकीधो बीजेदिवसें राजायें पुत्रनाप्रेमवास्ते जिहांहुंनणतोहतो तिहांविडुरनेमोकलीने कयुंजे हे विदूरतुंजइने कोइक उपायकरी महाराछोकराने वैश्वारनोसंगमुकाव तेराजानुंवचन प्रमाणकरी विदूरमहारीपासें आव्यो तेहने मेंपुछयुंजे हेमित्र तुंकालेकेमनाव्यो ते वारें विदूरबोल्युंजे कालेजैनमतज्ञ राजापासेंआव्योहतो तेणेएक सुंदरघणीरमणी क वातराजानेकही तेहुंसांनलतोहतो माटेतारीपासेनाव्यो तेवारे में तेवार्त्ताविदू रनेपुछी एटलेविदूरेकहेवामांडी तेआवीरीते.

मनुष्यगतिनगरीयें नरतनामेपाडोछे तिहांक्षितिप्रतिष्ठितनामेनगर तेहनो कर्म्म विलासराजानी त्रणस्त्रियोछे १ शुनसुंदरी २ अकुशलमाला ३ सामान्यरूपा ते मां पहेलीनोपुत्रमनीषी बीजीनोपुत्रबाल अने त्रीजीनोपुत्र मध्यम एवेनामेछे एकदा राजाने आदेशें मध्यमबुद्धि किहांकचाल्योछे अने बाल तथा मनीषी ए बे उद्याने क्रीडाकरवागयांछे तेहांजुवेछेतो एकवृक्षमां पाशबांधीने एकपुरुष अपघातकरेछे ते देखीने तेबेहुकुमर उतावला तेहांजयी तेपाशत्रोडीनाखी अने ते पुरुषनेडुःखनी वातपुछी तेवारेंतेपुरुष डुःखनीवातकहेछे अने ते बेहुकुमरसांनलेछे.

तेकहेछे के महारुंनाम स्पर्शनछे अने महारे नवजंतुनामे एकमित्रहतो ते दर रोज विलेपनादिकें तथा सुकुमालवस्त्रादिकें मृडशय्यायें इत्यादिकअनेकउपायकरी मुफनेपोषणकरतोहतो एवामां महाराअनाग्यनेलीधे ते महारोमित्रजे नवजंतु ते संतोषसाथेंमिलीने संतोषनोनाइजे सदागम तेहनेमिल्यो अनेतेहनीसाथें नवजंतु नी मित्राचारीथयी तेवारपछिते व्रतलेइ लोचकरावी विषमनूमिकायें शयनकरे जीर्णवस्त्रपहेरे इत्यादिकअनेकप्रकारें स्पर्शनकहेछे जेमुफनेघणोसंतापी विनोंफकरी सदागमनीआज्ञायें ते नवजंतुनामे महारोमित्र मोक्षपुरीनगरीयें गयो एमसंनला यछे तोहवेहुंनिराधारथयो माटेजीवीनेसुंकरुं.

तेसांनली ने बालबुद्धिनामाछोकरो बोल्यो जे ते गयोतोजवादे हुं तुजनेमहारो मित्रकरीराखीश अने मनिषीयेंतो एमविचार्युंजे सदागम अने संतोषतो परमउप गारीपुरुषछे अने तेणे ए नवजंतुने जे स्पर्शसाथें मित्राचारिहती तेछोडावीहसे मा

ॐश्रीपंचपरमेष्ठिभ्योनमः

अथ

श्रीउपमितभवप्रपंचवार्त्तिकरूपंलिख्यते

श्लोक

वाग्देवीं प्रणिपत्य ध्यात्वाजैनंमतंसमृद्धिकरं ॥ नि
जगुरुचरणसरोजं हृदयेविनिधायभावेन ॥ १ ॥
उपमितभवप्रपंच मध्यस्थितजन्मिजीवसंबंधः॥ प्रा
कृत्याभारत्या विव्रियतेसरलबोधाय ॥ २ ॥

जिहां तीर्थंकर चक्रवर्त्ति प्रमुखने उपजवानुं स्थानक तथा सर्वधर्मनुं साधन अने चतुर्विध संघने हर्षकारक एहवी मनुष्यगतिनामे नगरी तेनेविषे इंद्रादिकदेवताओथी पण जीतायेनही एहवो अतुल्यपराक्रमी कर्म्मपरिणाम नामे महानिर्दयी राजा ते सर्वसंसारीजीवोने नरकादिरूपें नचावेछे.

तेराजाने कालपरिणति नामे स्त्रीछे तेहने राजाथी पणघणुंनाटकप्रियछे केमके ते स्त्री सर्वसंसारीजीवोने बाल युवान वृद्ध मृतिकादिक विशेष वेषलेवरावीने संतुष्ट थायछे कोइकसमे ते कालपरिणतिस्त्रीयें कर्म्मपरिणामनामे पोतानास्वामीने विनतीकरी के हेभर्त्तार ताहरापसायथी मने सर्वमनोवांछितछे पणएक पुत्रमहारेनथी ते थायतोभलुं तेसांभली राजाबोल्यो जे महाराचित्तमांपण एहिजवात्तछे अने ताहरे चित्तमांपण एवातआवीछे माटेहवेबेहुनो मनोवांछितथाशे ते सांभली कालपरिणतिराणी आनंदपामी सुकनगांठेबांधी राजासाथे सुखविलासकरेछे.

एकदासमें सर्वांगसुंदर पुरुष मुखेप्रवेशकरीनेउदरेनिकल्यो तेहने कोइकमित्रेंलीधो एहवो सुपन रात्रीनेविषे राणीयेंदीठुं ते सुपनराजाने संभलाव्युं तेवारें राजायेंकह्युं जे हेस्त्रीतुफनेपुत्रथाशे पणकोइक धर्माचार्यनेवचने प्रतिबोधपामीने पोतानोसर्वअर्थ सिद्धकरशे तेसांभली कालपरिणतिराणीबोली जे भलेथाओ पछे ते हुतोमनमाने तमकरो. हवेराणीनेगर्भरह्याथी अनुक्रमे धर्मकृत्योकरवाना डोहोला उपना तेडोहोलाराजायें पूर्णकर्या पछेगर्भकालसंपूर्णथयेथके शुभमूहूर्त्तें पुत्रनोज

तेवारेंमाताबोली के परीक्षाकरीजे पक्षबलवंतहोय तेतुंआदरजे. पणहमणा मै थुनयुगलनीपरें थोडोविलंबकर तेवारेंमध्यमबुद्धीयें मातानें पुछ्युंजे तेमैथुनयुगल कोणछे हवेते सामान्यरूपा मैथुनयुगलनी वार्त्ताकहेछे अनेमध्यमबुद्धि सांभलेछे.

मनुष्यगतिनगरीसरिखुं एकनगरछे तेहांकृष्णनामेराजाछे. तेहनीप्रगुणाराणीने मुग्धनामेपुत्रछे तेहनीअकुटिलानामेस्त्रीछे एकसमे मुग्ध अने अकुटिला एबेस्त्री भर्त्तारनोजोडुंउद्यानेरमवागयुंछे तिहांजूदीजूदी पुष्पादिकनीक्रीडाकरेछे एटलामां आ काशमार्गे कालज्ञनामेंदेवता अने विचक्षणानामेदेवीजायछे तेबेहुने मुग्धतथा अकु टिलासाथें भोगकरवानी वांछाथयी तेवारें ते देवता देवीयें परस्पर कपटरचनाकरी देवतायें मुग्धनुंरूपलेइ अकुटिलानेतेडी कंदलिगृहनेविषे लइगयो एटलामां देवीप णअकुटिलानुंरूपलेइ मुग्धनेतेडी तेहीजकंदलीगृहनेविषेआवी.

हवेमुलगाजे मुग्ध अने अकुटिला तेबेहुजणाओ चाररूपदेखीने जाणवालागा जे एवनदेवतायें आपणाबेबे स्वरूपकर्याछे हवेतेहांथीचारेजणराजमंदिरेआव्या ति हांराजाराणीबेहुयें बे मुग्ध अने बे अकुटिलामिली चारजणदेखीने विचार्युंजे कां इकदेवप्रयोगछे एहवुंजाणीने पुत्र तथावधूते न्यायप्रवर्त्तेछे एमतेराख्युं.

हवे एकदाकालज्ञदेवतायेंजोयुंजे आ बीजीअकुटिलाकोणछे अनेविचक्षणादेवी येंपण ज्ञानेकरीजोयुं जे आबीजोमुग्धकोणछे तेवारें कालज्ञेंदेवीनुंस्वरूपजाण्युं अने विचक्षणायेंपण देवतानुंस्वरूपजाण्युं तेथी बेहुनेपरस्परें क्रोधउपनो पछे देवतायेंमु ग्धनेहणवानी वांछनाकरी अने विचक्षणायें अकुटिलानेहणवानी वांछनाकरी वली क्षणेकवारें पोतेंपोतानो अन्यायजाणी तथा परस्परेंअनर्थथातोजाणी बेहुजणा मो हनपणेरह्याछे एटलामां मोहवलयनामा उद्याननेविषे बहुशिष्यपरवर्या ज्ञानादिक गुणे संपूर्ण एहवाप्रतिबोधकनामे आचार्यपधार्या तेवातसांभलीने राजादिकसर्वलो क परिवारसहित आवीआचार्यने तथाअनुक्रमे सर्वसाधुनीमंडलीनेवांदीने धर्मस भायेंबेठा तेमने आचार्येंधर्मोपदेश देवामांड्युं तेआवीरीते.

राधावेधनीपरेंदुःकर एहवो आमनुष्यनोअवतारपामीने संसारनुंस्वरूप अधम जाणी विषयाभिलाषपरिहरी अनंतसुखपामवानोपदजे मोक्षमार्ग तेहनो उपायजे ज्ञानमार्ग अनेक्रियामार्ग तेहनेविषे हेभव्यजीवोतुमेप्रवर्त्तो इत्यादिकधर्मदेशना सां भलीने ते कालज्ञदेवता अनेविचक्षणादेवी सम्यक्तपाम्या एटले एबेहुनांशरीरमांथी कृष्णरक्तपरमाणुघटीने एकपूतलीनिकली तेवारें ते देवता तथा देवी बेहुजणरुदन करता गुरुनेपगेलागी पोतपोताना अन्यायकहेवालागा तेवारेंगुरुयेंकह्युंजे हेमहानु

दृष्टीयें जुएछे एवीउत्तमरीतीजाणी ते बेहुसखिसदागमनी सेवाकरवारही अने जव्यपुरुष निरविघ्नपणेजणेछे तथा मतिज्ञान अवधिज्ञान मनपर्यवज्ञान केवलज्ञानरूप एचारप्रधानपुरुष मनुष्यगतिनगरीनाछे तेपण आनंदपामेछे.

एहवामां एकपुरुष जेहने रासजपर स्वारीकरावीछे अनेघणीविटंबनाथाते काहलिफूंकाते सदागमनाआगलें निकल्यो तेहनेजोयी करुणारसेकरी प्रज्ञाविशाला बोली जे अरेपुरुष तुंसदागमनुंशरणकर तो ताहरीसर्वविटंबनाटले एवोसांजली ते पुरुषने ज्ञानोदयथयो तेथी तेपुरुषें सदागमनुं शरणकर्युं तेवारें सदागमें तेपुरुषनेसनमुखजोयुं एटलेविटंबनानाकरनार सर्वपुरुषनाठा तेदेखी सर्वलोकविस्मयपाम्या अनेते पुरुषपण हर्षसहित सदागमनेसनमुखबेठो.

हवे अगृहीतसंकेतायें ते पुरुषनेपुछ्युं जे हेपुरुषतुंकोणछो अनेताहरो शुंअन्यायछे जेथकी तुजने आवीविटंबनाथयी एवुंसांजली तेसंसारीजीवबोल्योजे हुंतस्करछुं अनेमाहरा अन्यायनावातनीगम्य आ परमउपगारीसदागमनेछे तेवारेंसदागमें तेपुरुषनेकह्युंजे एअगृहीतसंकेताने ताहरोवृत्तांत सांजलवानुं कौतुकछे तोतुंएनेताहरीवितेलीवातकहे तेवारें तेसंसारीजीव एकांतेजइ सदागम तथा जव्यपुरुष अनेते बेहुसखियो नेसांजलतां पोतानेवितेलीवातकहेछे.

असंव्यवहारनामे नगर तिहांअनादिवनस्पतिनामे अनंताजीवछे तेनगरनेविषे कर्म्मपरिणामराजाना एकअत्यंतअबोधनामे तथाबीजो तीव्रमोहोदयनामे एबेअधिकारीछे अनेतेनगरनालोक प्रायेंमहाअज्ञानीमूर्छितछे तिहांहुंपणरहेतोहतो एटलामांलोकस्थितिनामे कर्म्मपरिणामराजानीबेहेने तन्नियोगनामे दूतमोकली तेबेअधिकारीनेकहेवराव्युं जे आपणाराजानो सदागमनामे एकशत्रुछे तेमनुष्यगतिनगरीथी लोकने मुक्तिनगरियें मोकलेछे तेफरीआंइआवेजनही तेथीमनुष्यगतिनामेनगरी शून्यथायछे माटे जेटलामुक्तिजाय तेटलालोकोने असंव्यवहारनगरथीतेडावो एममनेकह्योछे तेमाटे इहांथी केटलाकलोकोने तमेमोकलो अनेएनगररूडीपरेंजालवो.

एहवुंदूतनुंवचन सांजली तेबेहुअधिकारीयें संसारीजीवनीस्त्री जे जवितव्यतानामे तेसर्वकार्यनीकरनारीछे तेहनीसाथेंविचारकरी असंव्यवहारनगरें गोलक नामे असंख्याताप्रासादछे तेएकेकाप्रासादें निगोदनामे असंख्याताओरडाछे तेएकेकेओरडेमाहोमांहे परममित्र जे अहार निहारादिकसाथेंकरे एहवाअनंता अनंताजीव वसेछे पछेतेबेहुअधिकारीयें सर्वजीवोनेजोयी जवितव्यतानेपूछीने मुजनेचलाव्यो अने तेबेअधिकारी तथा जवितव्यतापण महारीसाथेंथयां पछेअमेतिहांथी चाल्यां एटले

थको तेशय्यायें तडफडवालागो एटलामांते शय्यानोरक्षक व्यंतरदेवता आव्योते बालनेसुतेलोदेखीकहेवालागो के अरेपापिष्ट आकामदेवनीशय्यायें सुंसुतोछे एम कही तेउपरेंक्रोधकरी लोहनीशृंखलायेबांधी महाविडंबनाकरी पछेसर्वलोकदेखतां ते हनेधसडीने लोहनामुग्ररेंहणवामांमंड्यो

तेवारें मध्यमबुद्धीयें बालनीएवीअवस्थाजोइ जाइनास्नेहवास्ते घणोवनयप्रतिपत्तिकरी ने व्यंतरपासेथी बालनेमूकावी घरेंआवीमध्यमबुद्धीयें पूछ्युंके जाइतुमने किहांकिहांदूखेछे तेवारेंबालबोल्योजे मुझनेमात्र मदनकंदलीनो विरहथयो तेहिजदुखेछे बीजुकांइपणदुखतुंनथी तेवारेंमध्यमबुद्धीयेंवार्यो जे एतोराजानीस्त्रीछे माटेते हनोसंगतुं शावास्तेवांछेछे तेवारेंबाल क्रोधेकरीबोल्युंजे ताहरेसुंछे महारामांशक्ति हशे तो हुं अवश्य मदनकंदलीनो संगकरीस तेसांजली मध्यमबुद्धिमौनपणेरह्यो.

हवेरात्रीथयी तेवारें बाल मदनकंदलीनामेराणीना संगनीइच्छायें बाहिरनिकल्यो तेवारेंबालनेजातोदेखी मध्यमबुद्धिपण स्नेहवास्ते तेहनीपछवाडेथयो एटलामां एकविद्याधर ते बालनेउपाडी आकाशमार्गेंलेइचाल्यो तेवारें बालें पुकारकर्यो पण मध्यमबुद्धि नीचेरह्योमाटे तेहनोजोर तेविद्याधरसाथें चाल्युंनही पणनीचेपृथ्वीयें चालतो तेविद्याधरनी पछवाडेथयो आगलचालतो महाअटवीउटपडतो क्षुधायें तृषायेंतथा कांटाप्रमुखें महाकष्टजोगवतो सातमें दिवसें कुशस्थलनगर पासेंआव्योपण बालनी तो शोधमिलीनही तेवारें मध्यमबुद्धि दुःखनोमार्यो एककुवामांपडवालागो

एटलामां जवितव्यतानेवसे एकनंदननामेपुरुष तिहांउतावलोआवीने मध्यमबुद्धीने कुवामांपडताथका वार्यो अनेतेहनेदुःखनीवातपूछी तेवारेंमध्यमबुद्धीयें बालनोहरणथयो तेसर्ववार्त्ता कहीसंजलावी तेसांजली नंदनबोल्योजे आनगरनो हरिश्चंद्रराजाछे तेहनोरतिकेलीनामे एकविद्याधरमित्रछे तेणे एराजानेकोइ शत्रुपराजव करीशकेनही तेमाटे घणीक्रूरविद्यासिखवीने छमहीनाउथी तेविद्यानोसाधनकरी साधावीछे तेहनेसातदीवसथया हमणास्मशानजूमीयें तेहनोमित्रजेविद्याधरछे तेएक पुरुषनेलाव्योछे तेपुरुषना मांसे तथा रुधिरेकरीने विद्यानी अधिष्ठायकदेवीआगलें राजा आहुतिकरेछे हालतेपुरुषमृत्युतुल्यछे पणराजायें मनेसोप्योछे माटेजो तेहि जताहरोजाइहोयतो उलख एमकहीनेते नंदने मृतकसरिखो पुरुषदेखाड्यो तेहने मध्यमबुद्धीयें ओलख्यो तेवारें विनतीकरी नंदनपासेथीतेपुरुषमांग्यो तेवारें नंदने कह्युंजे हजीआजनोदिवसराजाने एपुरुषनोकामछे पणपरउपगारमाटे आपुरुषहुंत

अन्याय आचरणरूप त्रिखुणीशुं मस्तक परसंतापरूप मस्तकनाकेश एहवे शरीरें सहित जे वैश्वानर तेहनीसाथे महारे प्रीतिथयी तेवारें पुण्योदयें अमाराबेहुनो मिलादेखीने चित्तरिसालकीधुं अने पुण्योदयें एहवुंविचार्युं के जेजे महारावैरीछे तेहनी साथें एनंदिवर्द्धनमिलेछे माटे एथी ए नंदिवर्द्धन घणुंदुःखपामसे तोपणहालतुरत हुं एहनेमूकुंनही एमविचारी पुण्योदय महारेपासें प्रछन्नपणेरह्यो पछेदिवसें दिवसें महारेतोवैश्वानरसाथें प्रीतवधतीगयी अने सर्व नानामहोटा महारीआज्ञामां चालवालागा एमकरतांहुं अनुक्रमेंआठवर्षनुंथयो तेवारें महारेपितायें मने बुद्धिसमुद्रनामे उपाध्यायपासें जणवामोकल्युं तिहांगुरुनीपासें पुण्योदयेंकरीहुं थोडादिवसमां समस्तकलाशीख्यो पण वैश्वानरनी सोबतहती तेथी गुरुनोउपदेश कांइपणमान्युंनही जोकोइहितशिक्षाआपे तेहनीसाथें उलटोक्लेशकरुं एमवर्त्ततां सर्वविद्याविस्मृतथयी अने कोइमहारासामुं बोलीशकेनही एवामांमुजने वशथयोजाणीने वैश्वानरे क्रूरचित्तनामें वडा मुजनेखवराव्या तेथी वली हुं घणूजवैश्वानरने वशथयो.

हवेएकादासमे एकविदूरनामे विश्वासीपुरुषने राजायेंमहारी विद्याजोवाने महारीपासेंमोकल्यो तेणे नूतावेष्ठसरिखुं महारुंशरीरजोथीने राजानेजयीकह्युं पछराजाते वातसांभली महादुःखपामिने बुद्धिसमुद्रनामे उपाध्याय ने तेडीपुछ्युं तेणेपणतेमजकह्युं तेवारें राजायें उपाध्यायने फरीकह्युंके जेमए वैश्वानरनोसंगमूके तेउपायकहो तेवारें उपाध्यायबोल्याजे आपणानगरनेविषे एकजैनमतनोजाण सिद्धपुरुषछे तेहनेतेडीप्रश्नकरो तेतेमनेएनो उपायकहेसे तेसांभलीराजायें जैनमतना ज्ञानीने तेडीपुछ्युं जे हेस्वामी आमहारो छोकरो नंदिवर्द्धनते वैश्वानरनीसंगतमूके तेवो उपायकहो तेवारें जैनमतानुसारी ज्ञानप्रयुंजीने उपायकहेछे तेराजाप्रमुखसांभलेछे

चित्तसुंदरनामेनगर तेहांशुभपरिणामनामे राजा तेहनी निप्रकंपसानामेंस्त्रीने सकलजननेहितनीकरनारी क्षमानामेंपुत्रीछे ते कन्यानीसाथे नंदिवर्धनने पाणिग्रहणकरावो तो वैश्वानरनो संगमूकसे तेसांभलीराजायें मतिधननामा प्रधाननेकह्युंजे तमेजइने तेकन्यानीसाथें विवाहमेलवीआवो तेवारें जैनमतज्ञेकह्युंजे हे राजन् बाह्यनगरें तोतमारोजोरचालेछे पण चित्तसुंदरनगरतो अंतरंगछे तेहांतो कर्म्मपरिणाम राजानो सुभट शुभपरियामराजानेमित्रि कर्म्मपरिणामनो लोकस्थितिनामेबहेनछे ते साथेविचारकरो कालपरिणतिजे महाराणीतेहनेकही स्वभावनामेजे कर्म्मपरिणामनो महाप्रधान तेहनेपुछी तथा अनादिसंसारनीचालिआवेछे एहवी भवितव्यतानामे जे नंदिवर्द्धननीस्त्री तेहनेमनावो तेवारपछी क्षमाकन्यानो तमारापुत्र नं

सित नामाउद्याननेविषे सकलगुणेसंपूर्ण एहवा प्रबोधन रतिनामे आचार्यपधार्या एटलेते गामनोराजा परिवारसहीत तथाप्रजालोकसहीत शुनसुंदरीयेंपरवरयोथको मनिषी तथा मध्यमबुद्धीप्रमुखनेसाथेलेइवांदवाआव्यो बालपणतेदिवशें स्त्रीयुंना रूपजोवासारूं तेहांआव्यो हवेगुरूधर्मदेशनाआपेछे.

हेनव्यप्राणीओ जेहनीआदिनथी एहवासंसारमां घणोडुर्लन मनुष्यनवपामी १ स्पर्शनेंद्रीय २ रशनेंद्रीय ३ घ्राणेंद्रीय ४ चक्षुइंद्रीय ५ श्रोतेंद्रीय एरीतेंएपां चेंइंद्रीउं वशकरवानेडुर्लनछे एइंद्रीओनापरवशपणे जीवअनंतडुःखपामेछे तेमाटे ए इंद्रीयोनेजीतो तेवारेंराजायें पुछयुंजे हेस्वामी इंद्रीयजयनाकरनारा आसंसारमांको इहशे तेसांनलीगुरुयेंकह्युंजेछे केमके मनुष्यचारप्रकारनांछे १ जघन्य २ मध्यम ३ उत्कृष्ट ४ उत्कृष्टतर तेमां जेसदागमनेसंबंधे सतोषराखी स्पर्शनेंद्रीयादिकना अधम विपाकजाणी इंद्रीयनाजयनेअर्थेप्रवर्त्ते तेने उत्कृष्टतमकहियें एवोगुरूनुंवचनसांन ली मनीषीयेंविचार्युं के जेजीवेसंतोषआणी सिद्धांतनेअनुसरी स्पर्शनेंद्रियजीत्युं तेप्राणीउत्कृष्टतमजाणवा वलीगुरुबोल्याजे स्पर्शनेंद्रियादिकनी शुद्धीजोवरावी एने रागद्वेषनासंबंधीजाणी अवगणनाकरी इंद्रियनोपोषकरेनही तेहने उत्तमकहियें एवो गुरुनुंवचनसांनली वलीमनीषेंविचार्युंजे तेरीतेतोमेंकर्युंछे माटेहुंउत्तमछुं.

फरीगुरुबोल्याके जेप्राणीपंमितनावचनथी स्पर्शनादिकइंद्रियना अधमफलजा णीने जेपुरुषचित्तमांसंदेहआणे अनेस्पर्शनादिकना लोलपीजे मनुष्य तेहनीविमंब नादेखीने पछेठेकाणेआवे तेमध्यमपुरुषकहियें एवोगुरुनुंवचनसांनली मनीषीयेंवि चार्युं के तेतोमारोनाइ मध्यमने मध्यमबुद्धीजकहियें केमके ते बालनुंकष्टदेखी पो तेंपणकष्टपामो कालविलंबकरी ठेकाणेआव्यो.

वलीगुरुयेंकह्युंजे स्पर्शनादिकइंद्रियना माठाफलनो जेआस्वादनकरे महाविमंबना नोगवतोहोय तोपणतेइंद्रियनो नोगमूकेनही तेहने जघन्यपुरुषकहियें तेसांनली फरीमनीषें विचार्युंजे ते तो बाल जघन्यपुरुषकहियें केमके एटलीविटंबनाथयी तो पण ते बाल स्पर्शनेंद्रियनो संगमूकतोनथी एरीतें राजाप्रमुखेसर्ववात गुरुनामुख थी सांनली तथामदनकंदलीयें पणएसर्ववात गुरुमुखेसांनली पण बालेंतो मदन कंदलीनेदीठी तेहनो नखथीमांमीने केशाग्रशुद्धी वर्णवकरवांमांवखतगयो तेथीकरी ने कांइपणधर्मोपदेश बालेंसांनल्युंनही.

एहवामां एशत्रुमर्दनराजानो एकसुबुद्धिनामे प्रधानछे तेणेगुरुनेपुछयुंजे एचारप्र कारनापुरुषतमेकह्या तेहोमांसुंनेदथयो तेवारेंगुरुयेंकह्युं जे उत्कृष्टतरतो सर्वइंद्रिय

टेएनोकांइक अन्यायदसे तोहवे महारे एनीसाथेंमिलवुंनही एहवोचित्तमांजाणी
रानोरह्यो पछे उद्यानथी तेवेंजाइ तथात्रीजो स्पर्शनपुरुष एत्रणेजण घेरआव्या
तेहां अकुशलमालाता स्पर्शनसाथें बालने मित्रताथयी एवुंजाणीनेहर्षपामी अने
शुजसुंदरीयेंतो मनिषीनेवार्यु जे ए स्पर्शनमहादुष्टछे माटेएहनीसंगत तुंकरीसनही
तथा छोकरानो कर्म्मविलासनामेपिताछे तेंतो पोतानाचित्तमां जाणीरह्योके जेछोकरो
स्पर्शनसाथें संगकरसे तेहनेढुं विपरीतफलदेखाडीस एरीतेंसर्वेकोइप्रवर्त्तेछे.

हवे मनीषीयें तो स्पर्शननी मूलशोधजाणवानेवास्ते बोध एवेनामे पोतानोअं
गरक्षक पुरुषछे तेनेतेडावीकह्युंजे तुंस्पर्शननी उत्पत्तिजोइआव तेसांजली बोधेंपोता
नो प्रजावनामेदूतमोकली ते स्पर्शननीशोधकरावी पणबाह्यनगरेतो केहांपणतेह
नी शोधमिलिनही तेवारें अंतरंग राजसिचित्तनामेनगर तेहांमहामोहनोपुत्र राग
केसरीनामेराजा तेहनो विषयाजिलाषनामे प्रधान तेणेराजानी आज्ञायें इंद्रादिक
थीपण जेमनीआणलोपायेनही एहवोउपायकरवावास्ते १ स्पर्शन २ रसन ३ घ्रा
ण ४ चक्षु ५ कर्ण एपांचेंजुजयमानपुरुष ते राजानासेवावर्त्तिआ करीमूक्याछे तेथी
सर्वलोकनेविषे ते राजानीआज्ञा अखंमप्रवर्त्तेछे इत्यादिकवृत्तांत ते विषयाजिलाष
नोदूत विपाकनामेछे तेहनामुखथी बुधनोदूतजे प्रजावनामेछे तेणेसांजल्युं तथातेस
मे रागकेसरीनामेराजा ते मिथ्याजिमानादिकरथ तथा ममतादिकहाथी अने अज्ञा
नादिकअश्व वली चपलतादिकपायदललेइ महाकटकसहित स्पर्शनादिकनाजयनोक
रनार एहवोजे संतोष तेउपरें विषयाजिलाषादिक प्रधानपुरुषें परवशोथको महा
मोहसाथे रागकेसरीराजाचढेछे तेसर्वेवात प्रजावेंदीठी अने पोतानास्वामी बोधनेक
ही बोधेजइने मनीषीनेकही एरीतें मनीषीयेंस्पर्शननी शोधकहडावी ने स्पर्शननो
मूलथीसंगमूक्यो अने एनोजाइ बाल तेतोमूर्खछे माटे घणुंज स्पर्शनसाथेसंगकरेछे

हवे बालनीमाता अकुशलमालाछे तेणेपणपोताना पुत्रने जेम स्पर्शनसाथें अ
त्यंतप्रीतिथाय तेवोउपाय तेणेमंत्रशक्तियेंकर्यो एमप्रवर्त्तताथका एटलामां मध्यम
बुद्धिपण किहांकथीआव्यो तेणेस्पर्शननेदेखी बालनेपुछ्युं जे एकोणछे तेवारेंबालें
कह्युंजे ए महारोसुखदायी परममित्रछे तेसांजलीने मध्यमबुद्धीयें मनिषीनेपुछ्युं जे
आस्पर्शनकोणछे तेवारेंमनीषीयेंकह्युंजे एमहादुखःदायकदुरात्माछे जोतुंतारो जलुं
वांछवानीचहनाराखे तो ए स्पर्शनसाथेंकोइदाडे संगकरीसनही तेसांजलीने मध्यमबु
द्धीयें पोतानी सामान्यरूपानामे मातानेकह्युं जे बाल तो स्पर्शननेसारुंकहेछे अने
मनिषी तो स्पर्शननेनिंदेछे माटे हुं ए स्पर्शनने मलुंकेनहीमलुं.

त्युपामी नरकादिकगतिना घणादुःखपामसे एवातसांभली फरीराजायेंपुछ्युंजे हेस्वा मी एबालनी माता अकुशलमाला तथाएनो मित्र स्पर्शन एबेहुकिहांजसे तेवारेंगु रुयेंकह्युंजे वलीइहांना लोकमध्येआवसे. फरीराजायेंपुछ्युंजे ए अकुशमाला तथा स्पर्शन शीरीतेंआपणनेमूके तेहनोउपायकहो तेवारेंगुरुयेंकह्युंजे एनेअप्रमादरूपयं त्रथीपीलो तोसर्वेसिद्धीथाय फरी राजायेंपुछ्युंजे अप्रमादयंत्रतेकोनेकहियें गुरुबोल्या जे कोइपणजीवने लिगारमात्रपणपीडाकरियेंनही तथा जूठोबोलीयेंनही अदत्तची जकोइनीलहियेंनही नववाडेसहितब्रह्मचर्यपालवुं समस्तपरिग्रहनो त्यागकरवो ध र्मोपकरण तथाशरीरनीपण ममताकरवीनही रात्रीभोजनकरवुंनही मात्रविशुद्ध अहार संयमयात्रानेअर्थेग्रहवुं पांचसुमति त्रणगुप्ति एआठप्रवचननीमाताछे तेपा लवी विविधप्रकारना अभिग्रहधारवा कुमित्रनोसंगपरिहरियें उचितमर्यादा उलं घीयेंनही लोकमार्गनीअपेक्षाकरियेंनही गुरुजननेमानियें तथा गुरुनीआज्ञायेंचालि यें सिद्धांतसांभलियें तथाद्रव्यादिपदार्थें धीरजपणोअवलंबियें चित्तनेउन्मार्गें प्रवर्त्त वाथी तुरतपाछुंवालियें कोइपणदूषणलागेतो तेहनेप्रयत्नकरी निवर्त्तावियें निःसंग पणेचित्तराखियें परमात्मानुंध्यानधरियें योगसाधनकरियें शुक्लध्यानध्यायियें आ त्मातथाशरीरने भिन्नपणे चिंतवियें इत्यादिकनेअप्रमादयंत्रकहियें एवीगुरुनीवाणी सांभली मनीषीयेंकह्युंजे हेस्वामी मुजने एअप्रमादयंत्रयोगहोयतो पसायकरो.

तेवारेंराजायें मनीषीसांमुजोइने गुरुनेपुछ्युंजे हेभगवन्जी एकोणछे तेवारेंगुरु येंकह्युंजे हे राजन् जेमतमे एनगरनाराजाछो तेम तमाराथीअधिक तमारुंराज्य लेवाने पण समर्थ एहवो अंतरंगनो कर्मविलासनामेराजाछे तेहनीशुभसुंद रीनामेस्त्रीनो आमनीषीनामेपुत्रछे तेमहारीपासेथी दीक्षालेवानीप्रार्थनाकरेछे ते सांभली मध्यमबुद्धीयें गुरुनेकह्युंजे हे स्वामी ए अप्रमादयंत्रतो चारित्रनेकहियें तेतोमहाराथी लेवायेंनही माटेमुजने श्रावकनोमार्ग उपदेशो तेसांभली राजायेंप णकह्युंजे हेस्वामी भलीवातछे तेश्रावकनोधर्मसुंछेतेकहो पछेगुरुयें बारव्रतरूप श्राव कनोधर्म उपदेस्युंते श्रावकनुंव्रतराजायें तथामध्यमबुद्धीयें सांभलीने बेहुजणायें आदर्युं पछे मनीषीने गुरु दीक्षादेवानेउछ्या तेवारें राजायें कह्युंजे हेस्वामी महा रोमनोरथछे जे हुं मनीषीनो दीक्षामहोत्सवकरुं तेवातसांभली गुरुतो मौनपणेरह्या तेवारें सुबुद्धिप्रधानबोल्योजे हे राजन् एमहोत्सवकरवुं तेतो द्रव्यस्तवछे माटेगुरु उपदेशआपे अनुमोदनाकरे पणसाक्षात् आदेशआपेनही तेमाटेतमे एप्रार्थनामनी षीनेकरो तेवारेंराजायें मनीषीने प्रणामकरी पोतानोमनोरथकह्युं तेसांभली मनीषी

नावो तुमेतोनिर्मलजछो पणआपूतलीते जोगतृष्णाकहियें तेहने वशरह्याथका तुमे ए अन्यायआचस्यो तेवारें तेबेहुबोल्याजे हेस्वामी एनोगतृष्णामिटे तेउपायकहो ते वारेंगुरुयेंकह्युं जे तुमेस्त्रीनुंस्वरूप विपरीतभावेंविचारी विकारनेपरिहरोतो तेहथी आ नवेंतो एनोगतृष्णा मिटसेनही पणडुर्बलथासें बाकीआवतेभवेंमिटशे तेमाटेसम्यक पालो कालविलंबेंनलुंथासे इहां ऋजुके० सरलस्वनाविराजासमजवो.

ऋजुराजातथा प्रगुणाराणीये एसर्ववातसांजलीने विचारवालागाजे एबेहुनेपुत्रप णे तथावहुपणेमान्या एमिथ्याछे तथा मुग्ध अने अकुटिलायेंपणविचास्युं जेआ शी लखंडनकस्युं तेमहोटोअन्यायथयो एमचारेजणा पश्चात्तापकरेछे एटलामांवलीते चा रेनाशरीरथीएकतेजवंत आनंदनोकरनार उज्वल एकबालकनिकल्युं फरीएककालुं बालकनिकल्युं वलीतेकालाबालकमांथी बीजुंएककालुंबालक निकलीने वधवाला गुं तेहनेउज्वलबालकें माथामांमारीनेनाजुराख्युं तेवारें राजाप्रमुखने गुरुयेंकह्युं जेहे महानुनावो आजे कृष्णबालकनिसस्युंते अज्ञानकहियें अने तेमध्येथी वलीबी जुं कृष्णबालकनिसस्युंतेपापकहियें तेअज्ञानेकरीपापनीवृद्धीथयी पणआउज्वल,बा लकजे छे तेसरलपणुंकहियें माटेएणे पापवधवादीधुंनही हवेधर्मकरोके जेथकीन लुंथाय तेसांजली राजाप्रमुख चारेजणे महाआडंबरेंकरी दीक्षालीधी पोतानास्वार्थ नी साधनाकरी हवेतेकालज्ञदेवता तथाविचक्षणादेवीयेंजोकालविलंबकस्यो तोगुरु मिल्या अने धर्मप्राप्तिथयी एवातकहीने तेसामान्यरूपास्त्री पोताना मध्यमबुद्धिपुत्र नेकहेछे जे तुंपणकालविलंबकरी परीक्षाकर एमसांजली मध्यमबुद्धिपरीक्षाकरेछे

हवेकोइकवेलायें वसंतऋतुनोओछवआव्योछे सर्वनगरनालोक कामदेवनीपूजायें जायछे तेवारें तेबालनामापुत्र पोतानोस्पर्शननामा मित्रनीसाथें वसंतनुंकौतुकजो वा चाल्यो मध्यमबुद्धिपण तेहनीसाथेंथयो.

हवे तेबाल लोकोनोवसंतोत्सवजोतोथको कामदेवनामंदिरेंपहोतो तेहांजेतेका णे माहेलीबाजुयें कामदेवनीसुकुमालशय्याछे तेहांगयो तेवारें शय्यानो स्पर्शथयो तेस्पर्शननेप्रनावें बालने गुरुनीशिक्षाआक्रमोनही तेज्ञानतोविसरीगयुं अने इंद्रि यनेपरवशपणे मूर्छथयीसुतो अने मध्यमबुद्धितो बाहिर तेहनीवाटजोतोथकोउन्नो छे एटलामां एहिज क्षितिप्रतिष्ठितनगरनो जेमकर्म्मविलासनामे अंतरंगराजाछे तेम एनगरनोबाहिरंग शत्रुमर्दननामेराजाछे तेहनीमहारूपवंत मदनकंदलीनामेस्त्रीछे ते राणीपणइहां कामदेवनीपूजायें आवीछे माटे अंदरजइ शय्यापूजवागयी तेवारेंते शय्याउपर बाल सुतोहतो तेहनेते मदनकंदलीनोस्पर्शथयोतेथीघणो विकलथयो

पुरुष एहवीधर्मसामग्रीफिरीमिलवीदुःकरले तेमाटेजो तमारुंचित्त जावितहोयतो दीक्षाआदरो ते सांजली राजा तथा राजानीस्त्रीमदनकंमली तथा सुबुद्धिमंत्री अने मध्यमबुद्धिपण वैरागपामी सुलोचनकुमरने राज्यआपी सर्वजणायें दीक्षालीधी तेमनें आचार्येंधर्म्म शिक्षादीधी अनेकह्युं के जे कुमित्रनोसंगकरे ते बालनीपरें दुःखनीपरंपरापामे अनेजेपंमितोनावचनेप्रवर्त्ते ते मध्यमबुद्धीनीपरें कालविलंबे धर्म्म पामें तथाजे मनीषीसरिखाहोय ते पोतानीबुद्धीयेंज दुर्जनमनुष्यजाणीने तेहनो संगपरहरे तेमाटेउत्तमपुरुषनो संगकरीयें जेथकी इहलोकें तथा परलोकें कल्याणनीपरंपराथाय इत्यादिकधर्म्मशिक्षागुरुयेंकही तथा घणोकालसुधी सदागमविधियें चारित्रपाली मनीषीमोक्षेंपहोतो अने मध्यमबुद्धिप्रमुख तो चारित्रपाली देवलोकें पहोताअनेबाल तोस्पर्शननामा पापमित्रने संगें घणोकालदुःखपाम्यो.

॥ इतिविदुरोक्तं स्पर्शन कथानकंसमाप्तं ॥

हवेविदुरकहेले जेहेनंदिवर्द्धन एकथानकजेजैनमतशेकह्युं ते में तमोनेकह्युं ते वात हमणा संसारीजीव अगृहीतसंकेता आगलें सदागम सांजलताकहेले जे इत्यादिक वात विदुरपासेथी सांजलीनेमें विदुरनेकह्युंहतुंजे एकथातो घणीसुंदरले तेवारें फरीविदुरेंमनेकह्युंजे जोपापमित्रनोसंगनकरियें तोएकथासांजलवाउं परमार्थपामियें तेवारें संसारीजीवकहेलेजेमेंविदुरनेकह्युं केखरीवातले तेसांजलीविदुरहर्षितथयो थको अवसरजाणीकेहवालागो जेहेनंदिवर्द्धनमेंलोकवार्त्तायें सांजल्युंले जेएतारोमित्र वैश्वानरम हादुरात्माले तेमाटेतुंएनीसोबत मूकीआप विदुरनेएवीशिक्षादेतोजोयी वैश्वानरेंमुजने क्रूरचित्तरूपवरुउपचाख्युं एटलेमेंक्रोधकरी विदुरनेकह्युंजे अरेदुरात्मा तुंमुजनेतेबालसमानगणेले अनेपरमहितकारकजे वैश्वानर तेहने साथेजेचपेटोदीधो माटेजाहवेइहांथीमित्रताकरीतेहनोमनेतें पलेतिहांथी विदुरनाशीने पद्मराजापाशेआवी सर्वमारीवातकही राजातेवातसांजली असाताधरीरह्यो केटलाकदिवसवित्यापले हुंकलाशिख्यो जाणी तथायौवनअवस्था प्राप्तथयोजाणी राजायेंमनेतेडी मंदिरमांराख्यो.

हवेएकदासमें मारोमामोजे कनकचूडतेनोपुत्र कनकशेखर तेपोतानापिताथी रीसावीनेएनगरेंआव्यो एवावार्त्ताजाणीहुंसामोजयीने कनकशेखरनेतेडीआव्यो मारोपिता पद्मराजातथा नंदामाताप्रमुख हर्षपाम्या इहांकनकशेखरने सुखेरहेताथकां मेंएकदिवसें कनकशेखरनेपुछ्युं जेहेनाइतारेपितासाथें सावास्ते क्लेशथयो तेवारें कनकशेखर पोतानीहकीगतकहेले.

नेआपुंबुं पणतुंउतावलो इहांथीलेइजा तेसांजली मध्यमबुद्धि तेबालनेखंधेउपाडी पोतानानगरेंआव्यो तेहनाशरीरने औषधादिकेकरी समाधीकरी.

मध्यमबुद्धीयें पुछ्युंजे जाइतें महाकष्ट जोगव्युं माटेहवेपरस्त्रीनी वांछनाकरीस नही तेसांजली बालक्रोधेकरीबोल्युंजे तुंतो मनीषीनोपक्षपातीछो माटेरे मूर्खकोणें तुजने कह्युंहतुं जे तुंआकष्टमांथी मनेमूकावजे महारेतोजिहांसुधी मदनकंदलीनो समागमनथाय तिहांसुधी एमाराप्राणनेपण शत्रुतुल्यलेखवुंछुं इत्यादिक बालनाव चनसांजली मध्यमबुद्धीयें विचार्युंजे एदुष्टनेस्पर्शनेंद्रिय मिल्यामाटे पापात्माथयो तोहवेहुंएनो संगमूकुं एमविचारी मध्यमबुद्धि मनीषीनेआवीमल्यो अनेबालनी सर्व वातकही तेसांजली मनीषीयेंकह्युंजे एवातहुंपण सर्वजाणुछुं केमके जेवारेंबालने विद्याधरेंहर्यो तेवारेंबालें पुकारकर्यो अनेतुंपणपोकारकरतो पछवाडेदोड्यो तेथीलो कसर्वेजाग्या अनेपरस्परें वातोकरवालागा जे बालनेकोइक परउपगारीपुरुषेंहर्यो तेघणुसारूंथयुं हवेजोएबालने हणवानीवातसांजलीयेंतो अत्यंतजलुंथाय वलीको इकएमबोल्युंजे मध्यमबुद्धितो जलोजछे पणएचंमालना स्नेहवास्ते हेरानथायछे वली कोइकें एमकह्युंजे मध्यमबुद्धिजोसाधुहोयतो मनीषीनेकांमलतुंनथी एवीएवीवातोलो कोकरताहताते मेंसांजलीने एसर्ववातमें मारापिता कर्म्मविलासनेकही तेवारेंतेपणक हेवालागो के जे माणसए स्पर्शननीसोबतकरशे तेमाणशथी हुंघणोविपरीतचालीस.

हवे बालनीमाता अकुशलमाला तथाएनोमित्र स्पर्शन तेणेबालनेपुछ्युं के जो अमारोप्रजावकहेवोछे तेवारेंबालहुंकारोकरीनेबोल्युंजे हातमारोरूडोप्रजावछे एम करता केटलाकदिवसवितीगयां इहांमध्यमबुद्धीयेंतो सर्वथा बालनोसमागममूक्यो जछे वलीएकादासमयें ते बाल मदनकंदलीनीवांछनायें रात्रेंबाहिरनिकली राजमंदि रमांप्रवेशकरी जेहांराजानीशय्याछे तेहांआव्योदैवयोगेंकोइयें प्रवेशकरतांजाण्युंनही अनेरात्रपणहजीघणीवितीनथी मदनकंदलीतो शृंगारपहेरवागयीहती एटलामांबा लशय्यादेखी तेनाउपरबेगे अने राणीनीवाटजूवेछे एटलामां शत्रुमर्दनराजाआव्यो तेणेबालने देखी अन्यायीजाणी पोताना त्रिनीषणनामें शेवकनेतेडी तेनाहाथें ते बालनेलोहयंत्रेंबंधावी आखीरात्रनारकीनीपरें विटंबनाकरावी प्रातःकाले गधेडाउपर चडावी चोराशीचहुटेफेरवी हणवानीआज्ञा राजायेंदीधी नगरनालोक परमआनंदपा म्या हवे बालने विटंबनाउपजावीगले पाशबांधी राजानासेवकपाछावल्या एटलामां ज वितव्यतानेवशें पाशत्रूटो तेवारेंबालहेठेपड्यो पछे सावधानथयी तुरतपोताना घरे आव्यो तिहांप्रछन्नपणे रहेवालागो हवेकेटलाकदिवसपछि तेनगरना निजचित्तविल

यीने पोतानापितानेकह्युंजे मारोपाणिग्रहणकरावोतो कनकशेखरसाथेंकरावो पण विनाकरनेहुं परणीशनहीं एवोपुत्रीनोआग्रहजाणी तेनापितायेंतेवातमानी एटला मां रत्नवतियेंकह्युंजे हुंपणकनकशेखरना कोइमित्रने परणीस केमकेमहारे विमला ननासाथें वियोगनथाय अनेजोकनकशेखरनें परणुंतो सपत्नीपणुंथाय इत्यादिकवा तसांभली रत्नवतीनुंवचनपण पितायेंमान्युं पछेराजायें बेहुकन्याने घणापरिवारसहि त आपणेनगरे मोकलीछे तेसांभलीआपणो कनकचूडराजा दुःखाक्रांतथयोछे तेमा टे प्रधानकहेछे जेहेकनकशेखरजी तमारामातापिताने हर्षउपजाववामाटे तुर तआपणानगरेपधारो एवातसांभली कनकशेखर पद्मराजानेपूछी तेसंसारीजीवकहे छेजेमुझनेसाथेंलेइ घणापरिवारेंचाल्या हवेमार्गेंजाता रौद्रचित्तनामे अंतरंगनगरआ व्युं तिहांदुष्टाभिसंधिनामेराजा तेनीनिःकरुणतानामे स्त्रीनेंहिंसानामेपुत्रीछे एवामां सचित्तनामेनगरथी महामोहनोपुत्र द्वेषगजेंद्रराजा तेनीअविवेकतास्त्री तेगर्भवती थकांज कोइकप्रयोजने रौद्रचित्तनामानगरेआवी तेहनेदुष्टाभिसंधिराजासाथें परि चयथयो तिहांवैश्वानरनो जन्मथयो.

हवेसंसारीजीव अगृहीतसंकेताआगळकहेछे जे मुझनेमनुष्यगतिनगरीयें आ व्योजाणीने अविवेकतायें वैश्वानरसाथें संबंधकराव्यो तेवैश्वानरें जेमकनकशेखर नजाणे तेवीरीतें रौद्रचित्तनगरेंतेमीने मुझनेहिंसानामे कन्यासाथे प्रीतउपजावीने पाणिग्रहणकराव्यो अनेमने एहवुंकह्युंके जो आहेडोकरोतो हिंसानामास्त्रीतमारे आधीनथासे एमकहिवैश्वानरें मुझने मृगयारमवासीखव्युं हवेतेहांथीवली कनक शेखरअने हुं बनेजणचाल्या मार्गेमांएक विषमकूटनामा पर्वतआव्यो तेहांअमर्षना मे चोरटानीमंडलीवसेछे तेनेपूर्वेंकनकचूडराजायें घणापराजव्याछे तेवैरनेलीधे क नकशेखरनेआवतोजाणी तेचोरटाघणा चोरें परवश्याथका संग्रामकरवानेआव्या ते हांयुद्धकरतां कनकशेखरनुंकटक नाम्युं.एटलेवैश्वानरें मुझनेक्रूरचित्तरूप वडाखवरा व्या अनेमारीहिंसानामेस्त्रीयेंमने उत्कर्षचडाव्युं तेहांप्रवरसेननामेंजे चोरटानोस्वामि तेणेघणाशत्रुओ माराउपरमूक्या पणपुण्योदयथी तेमुझनेपराजव करीशक्यानही अनेमेंतेचोरटानोपति प्रवरसेननुं शिरछेद्युं तेवारेंजयजयकारशब्दथयो सर्वसैन्यआवि मल्युं अमर्षनामेचोरटापण सर्वमारा सेवकथयीरह्या अनुक्रमेकुशलें अमेकुशावर्त्तनग रें पहोता कनकचूडराजाप्रमुख सर्वलोकआनंदपाम्या महोटाआडंबरें दानदेताथका नगरमांप्रवेशकराव्यो विमलानना तथा रत्नवतीपण आनंदितथयी राजायेंमहोटा

नोजयकारी केवलमोक्षपंथेजप्रवर्त्ते तेमाटेतेजुदोकह्युं अने जघन्य मध्यम तथा उ त्कृष्टनातो कर्म्मनेविचत्रपणेनेदछे तेमाटे एत्रणेनो जनककर्म्मविलासराजा अनेते कर्म्मनीजे शुजपरिणति तेहनेजशुनसुंदरीराणीकहियें तेजेकांइ उत्कृष्टमनुष्योछे ते हनी जननीकहियें अनेजे अशुजकर्म्मनीपरिणतिते अकुशलमाला कहियेंते जघन्य पुरुषोनी माताकहियें अनेजे शुजाशुजकर्म्मनी परिणति ते कर्म्मनी सामान्यरूपा स्त्रीकहियें ते मध्यमपुरुषोनी माताकहियें एहवागुरुना वचनसांजली मनीषीयेंचिं तव्युं जे गुरुयेंतोअमारो चरित्रपणकहीदेखाड्युं एमविचारेछे एटलामांते बालें स्प र्शन अने अकुशलमालाना परवशपणे राजादिकना जयअवगणीने सर्वलोकने उवेखीनिर्लज्जपणे जेहां मदनकंदलीउनीछे तेहां कामांधथयी दोडतो दोडतोआ व्यो तेदेखीलोकोयें हाहारवकस्त्रो राजायेंपणक्रोधदृष्टियें जोयीने ओलख्योके अरे एतो पापात्माबालछे तेजाणी राजायें हुंकारोकस्त्रो तेवारेंबालनाशीगयुं पणदोडवा नीगति जंगथयी तेथी लांबोजयी पृथ्वीउपरपड्यो तेवारेंमनीषीपोतानाजाइनो एह वो अधर्मचरित्रदेखी लज्जापाम्यो अने बीजो मध्यमबुद्धिजाइछे तेपणलज्जापाम्यो एट लामांतेंबालना शरीरमध्येथी एकपुरुषनिकली दूररह्यो तेवारेंराजायें गुरुनेपुछ्युंजे हे जगवन् एडुरात्मायें आटलालोकदेखतां एहवोडुराचार केमकस्त्रो तेवारेंगुरुबोल्या के हे राजा आपुरुषजे बालनाशरीरमांथी निकलीने वेगलोरह्योछे ते स्पर्शनछे एस्पर्शन ना वशपणाथकी एणे एअन्यायआचस्त्रोछे अनेअकुशलमालाजे अशुजकर्म्मनीपरण तिते एहनीमाताछे तेनेवशें एमूढथयोथको शत्रुजूतजेस्पर्शन तेहने मित्रकरीमानेछे.

तेवारेंफरीराजायें पुछ्युंजे हेस्वामी तमारेपसायें पण एधर्मपाम्योनही तेनुंकार णसुं तेवारेंगुरुयेंकह्युंजे हे महानुनाव जे अत्यंतपुण्यना धरनार श्रीतीर्थंकरदेवाधि देव तेहनाउपदेशथी समवरसणनेविषे पण नित्यविरोधी निवडकर्मनावशथकी घ णाजीवो धर्मपामतानथी तोहे राजन् इहांधर्मनपामे एमांस्योआश्चर्य तेवारें सुबु द्धिप्रधाने कह्युंजे सत्यछे गुरुजी जेमने सिद्धांतनावचनउपर आसताहोय तेए बा लप्रमुखनीवातोथी कांइपण आश्चर्यपामेंनही.

वलीराजायेंकह्युंजे हे जगवन् हमणा आसर्वसजा धर्मोपदेश सांजलवाआवीछे माटेहुंतो एगुनेगारनेमूकुंछुं पणआगलजातां एनाशाहवालथासें तेकहो तेवारें गुरुबोल्याजे हेराजन् ए बालअहिंथी नाठो ते कोल्लागसन्निवेसें एक सरोवरछे तेमांकोइचंमालणीने जीलतीदेखी जोगनीवांछायें चंमालणीनीपासेंजयी बलात्कार करसे तेवातसांजली तेचंडालणीनोजरतार चंमालआवीने एनेबाणेहणसे तिहांथीमृ

रोनीपाछनांगी सर्वेचोरोनेबांधीलइगया तेनीसाथेंमनेपण बांधीनेलेइगया पछेनगरें जइ तेसर्वेबंदीवानो विजाकरराजानेदेखाड्या तेवारेंजोतांथकां मुजनेविजाकरें उंल ख्यो विजाकरेंमनेपुछ्युंजे हेजाइनंदिवर्द्धन तारीआअवस्थाकेमथयी तेवारेंमेंसर्वेमा हरीवितेलीवातकहीसंजलावी तेसांजली विजाकरमहादुःखपामी मनेकहेवालागोजे हेजाइएअनर्थ तेशावास्तेकर्यो तेसांजलीमने क्रोधउपनुंपण माहारापाशे कोइशस्त्र हतुंनही जेणेकरी हुंविजाकरनेहणुं.

हवेएहवुंमाहरुंचित्त दिलगीरथतुंजाणी वातकरवीमूकीदेइने विजाकरेंमने बंधछो डावी मज्जनकरावी जलावस्त्र अलंकारपहेरावी अर्धासनेबेशाडी सुखनीवातकरवा मांमी एटलामांजोजनकरवानो वखतथयो तेहांमेंअने विजाकरें जलिविधियें जोजन कर्युं हवेतेविजाकरराजानो मतिशेखरनामेप्रधानछे तेणेमनेकह्युंके जेदिवसथीप्रजाक रराजा परलोकेंपहोता तेदिवसथी आजपर्यंत विजाकरराजाने असाताजहति ते हे नंदिवर्द्धनजी तमेंमिल्यामाटे राजाआजेसुखपाम्याछे हवेविजाकरें आंसुपूर्ण नयणे करी मनेकह्युंके हेजाइपितातो परलोकपहोता हवेअमारोतुंजपिताआराज्यताहरुं हुंतोतारोसेवक जेमनेबतावीसते हुंतारी सेवाकरीस इत्यादिकवचनकह्या पणमेंते वै श्वानरनेवशें सर्वकपटजाण्युं एटलामां रात्रीनोसमयथयो सजासर्वेविसर्जि राजाअ नेहुं बन्नेजण एकशय्यायेंसुतां विजाकरनेनिद्राआवी एटलेमें विजाकरनुंखड्गलेइ वि जाकरनुंशिरछेदीनाठो जंगलअटवीओलंघतां हुंकुशावर्त्तनगरआगलेंनिसर्यो तेहांमने लोकेंदीठो तेणे राजानेजइ मारासमाचारकह्या राजाकनकचूड अने कनकशेखर मारे सन्मुखआव्या मने पुछ्युंजे तमेएकाकी आवेवेशेंकेमआव्याछो तेवारेंमारी वितेली सर्ववातकही तेसांजली कनकशेखरेंकह्युंजे जेहनेक्रोध अनेहिंसासमीपेंहोय तेनीएवि ज अवस्थाथाय तेसांजली मनेक्रोधचड्यो अनेकनकशेखरनीज केडथकीछुरीलेइने ए नेजहणुं एटलामां कोइकदेवतायें मुजनेथंजीराखी तेहांथीउपाडी प्रवरसेनजीह्रनी पालेंजइमूक्यो तेजील्लेंमने ओलखी पहेलामारासेवकथयीरह्याहता माटेमने घणो आदरआपी सिंहासनेबेशाडी सर्ववातपुछी मेंसर्ववातकही एटलेसर्वेजिह्ने मस्तकधु णाव्युं अनेमातुथयुं एमकहेवालागा तेवारेंमने वैश्वानरदीप्यो पछेकोइकजिह्लनो श स्त्रलेइने केटलाकजिह्लोने तेहांहण्या पछेमनेदुष्टजाणीपकडी बांधीने घणीकदर्थनाक री रात्रें तेअटवी उलंघावीने शार्दूलपुरनगर आगलमूकीगया तेजिह्लोए एमविचा र्युंजे अनेमारीनाखसुंतो स्वामिघातनो अपवादचालसे माटेएमजमूकीगया एवामांसू र्योदयथयो जोयुंएटले एकदिशें महोटाअतिशयेंकरीयुक्त एवाविवेकनामें केवलीते

ने उत्सवनीइछानथी तोहेपण महापुरुषना मनोरथनो जंगकरवो नही एहवुंजा णी मनीषीयेंआदेशआप्यो हवेराजायें महोटाआमंबरे मनीषीने देवपूजाकरावी पछेहाथीउपरचढावी छत्रधरी महोटोदानदेताथका निर्घोषवाजीत्रवाजते सर्वलोक नेआनंदउपजावतां घरेतेमीलाव्या बंदीवानोने मूकीदीधा वलीमदनकंमलीयें यथा विधे मनीषीने मज्जनकरावी आजरण विलेपन वस्त्रादिकें सत्कारकरी विधियेंसहि त जोजनकराव्या पछेराजायें पोताना सुबुद्धिप्रधानने कह्युंजे धन्यछे ए मनीषीने जे गुरुनेवचने संसारने अस्थिरजाणी चारित्रअंगीकारकरेछे तिसांजली सुबुद्धीयेंकह्युं हामहाराज जेलघुकर्मिहोय तेनेएहवीसामग्रीमिले.

तेवारेंराजायें सुबुद्धिप्रधानने एकांतेकह्युंजे एमनीषीने स्त्रीनो तथा धननो अने रा ज्यप्रमुखनो लोजदेखाडी केटलाकदीवसशुद्धीराखो तोपछेहुंपणाएनीसाथें दीक्षाआ दरुं तेसांजली सुबुद्धिप्रधानबोल्युंजे हे राजन् एमनीषीउत्तमपुरुषछे ए संसारनासुख नेतो मृगतृष्णासमान गणेछे अनेहमणाएणे ताहरामनोरथमाटे आटलोकालविलंब कर्यो तोहवे एहनेकेमअंतरायकरियें एवोसुबुद्धिप्रधाननो वचनराजायें मानीने ज्यो तिषीतेडावी मुहूर्त्तजोवराव्युं तेवारें सिद्धार्थनामा ज्योतिषीयें कह्युंजे आजथी नवमें दिवसें उज्वलत्रयोदशीयें शुक्रवारें उत्तराजाद्रपदनक्षत्रें शिवयोगें सवाप्रहर दि वसचढते वृषलग्न निरविघ्नमुहूर्त्तछे पछेतेनिमित्तीयाने राजायेंघणुंदानआपी विदा यकर्यो बीजादिवसथीमांडी जैनचैत्यमां राजायें महोटामहोत्सवमंमाव्या अष्टाह्नि महोत्सव थयीरह्यापछे मुहूर्त्तदिवसआवेथके मनीषीने हाथीउपरचढावी राजायेंछत्रध र्युं चतुरंगीसेनासज्जकरी जैनशासननीशोजा वधारवानेअर्थें तथा बहुलोकोने मा र्गानुसारी करवावास्ते अने जव्यजीवोने बोधबीजनिर्मलकरवामाटे सर्वनगरसिणगा र्युं एम महोटीरुद्धीयें महोटे आमंबरें घणालोकेंअनुमोदते श्रावकश्राविकायें आनं दाश्रुजरेलोचने परवर्योथको प्रमोदशेखर चैत्येंआवीदेवपूजाकरीनें पछेमनिषीप्रमु ख सर्वगुरुपासे आव्या तेहांमहोटा आनंदसहित वधतेतेजे प्रसादथाते संसारने असारजाणी मेरुपर्वतनीपरे थिरथयी मनीषीयें चारित्रआदर्युं गुरुयेंधर्मदेशना आ पी जे हे महानुजावो आ अनंत सुखास्पद एहवाचारित्रमार्गने जाणीजुजी पछे कोणपुरुषसंसारउपरें रागधरे राज्यनोलाजछते चांमालपणुं कोणअधमपुरुषवांछे तो सर्वदुःखदालिद्रादिकनो विनाशकरनार एचारित्रछे अनें चोथुंपुरुषार्थ जे मोक्ष तेह नुं परमसाधनछे इत्यादिक सविस्तारपणे धर्मदेशनासांजली सुबुद्धिप्रधाने अवसरजा णी राजानेकह्युं के हे राजन् एप्रबोधरति सरिखोआचार्य अनें ए मनीषीसरिखो उत्तम

जहोय पणकेटलाक अघोरकर्मीते त्रीजाकुटुंबने पोषवामाटे बीजुंकुटुंब आदरी प्रथमकुटुंबने आघुछेलीमूकेछे अनेजे आसनसिद्धिजीवहोय तेतो महोटापराक्रमे शूरवीरथयीने बीजातथा त्रीजाकुटुंबने मूलथीत्यागी पहेलाज कुटुंबनेआदरी महाआनंदपामेछे इत्यादिक वातकेवलिभगवंतना मुखथीसांभली राजायेंपुछ्युंजे हेस्वामि जेथकीप्रथमकुटुंबपामियें तेवोउपायकहो तेवारेंकेवलिभगवानकहेछे.

हेराजन् साधुनीपरें महानिर्दयथयी पहेलाकुटुंबनाजोरेंकरी अप्रमत्तथयीने बीजाकुटुंबने निरंतरहणे एटलेज्ञानेकरी महामोहनेहणे तथावैराग्यमंत्रेकरी रागनेहणे तथा मैत्रीरूपबाणेकरी द्वेषनेहणे अनेक्षमारूप करवतेंकरीक्रोधनेहणे तथा नम्रपणारूप खड्गेंकरी माननेखंडखंडकरीने हस्तपणधोयनहीं वलीसरलपणारूपदंडेंकरी मायानेहणे अने निर्लोभतारूप कोहाडेकरी लोभनेहणे तथा कामरूपसुभटने वस्तुविचारणायेंकरी मंकोडानीपरें चोलीनाखे ध्यानरूप अग्नियेंकरी शोकनेबाले धैर्यरूपभालेकरी भयनेहणे तथाहास्य रति जुगुप्साने विवेकरूप शक्तियेंकरीहणे तथापांचेंद्रियरूपजे पांचभाइतेने संतोषरूप खड्गेंकरीहणे एरीतेंनिर्दयीथयीने प्रथम कुटुंबेकरी बीजाकुटुंबनेहणे तेवारें प्रथमकुटुंबदीसथाय तेणेकरीसमस्तसिद्धिथाय एवातसांभली राजायेंपुछ्युंजे हेभगवन् मुजने तेमार्गेकहो तेवारेंभगवानबोल्याजे

त्रीजुंअनित्यजे कुटुंबछे तेमूलथी परिहरियेंतो बीजुंकुटुंबमूकाय तेवारपछें प्रथम कुटुंब दीपावियें इत्यादिक धर्मदेशना सांभली संसारनुं स्वरूपअसारजाणी राजऋद्धि इंद्रादिकपणाथी पणएधर्ममार्ग अधिकजाणीने पोतानाश्रीधरनामें पुत्रने राज्यदयी विमलमतिप्रमुख प्रधानसाथें विधियें राजायेंदीक्षालीधी हवेतेसंसारीजीवकहेछेकेतेवेलायें राजायेंमुजने छोडावीमूक्यो हवेजेसमयें राजाप्रमुखें दीक्षालीधी तेसमयें केटलाकभारीकर्मि पापिष्ठ नीचविषयलंपटी कुटुंबमोही प्रमुखलोकेंतो एवुंविचार्युंजे रखेनेराजा आपणनेपण बलात्कारें दीक्षाअपावे एवोभयपामिने नासवालागा तथाकेटलाक नीचोमुखकरी बेसीरह्यापण दीक्षालीधीनहीं हवेए विवेकनामा केवलीयें राजऋषि प्रमुखने संवेगनीदेशनादयी विहारकर्यो परखदाप्रमुख पोतपोतानेंस्थानकेपहोता तेवारेंहे अगृहीतसंकेता मेंविचार्युंजे एडुष्टात्मा केवलीमारीनिंदाकरतोहतो तेजतोरह्यो माटेभलुंथयुं तेवारपछेहुं त्यांथीचाल्यो केटलोकमार्ग अतिक्रम्यो एटले विजयपूरनो शिखरीनामेराजा तेनोपुत्र धराधरनामे तेमार्गे जेवोज क्रोधी हिंसकछे तेनेराजायें बाहेराकहाडीमूक्योछे ते मनेमल्यो मेंतेनेमार्गे पुछ्युंपण तेपोतेंक्रोधीमाटे मनेजवाबआप्युंनहीं तेथीमनेपण क्रोधव्याप्यो मेंतेह

कुशावर्त्तनगरें कनकचूडराजातेनी अचूतमंजरीराणीयें लाडलडावीने मुफनेमहो टोकयो पछेएकदामारामित्रना समुदायेंहुंपरवयोथको वनक्रीडायेंगयोहतो तिहांए कवृक्षतलें योगिंद्रमुद्रायें बेठेलासाधुनेजोयी तेमनेप्रणामकरी हुंतेहांबेगो साधुयें पणमने धर्मलाभदेइ धर्मदेशनादीधी तेमांसाधुधर्म अनेश्रावकधर्मबेहुकह्या तेवारेंमें साधुधर्म दुःकरजाणी श्रावकव्रतअदरी पाछोमारामंदिरेआव्यो तेदिवसपछि हुंजेने श्रावकजाणुं तेनीसाथेंमित्राचारिकरुं अनेतेनाउपर कोइजातनोकर अथवादंडकरुं नही तेवुंजाणीघणालोक श्रावकथयां हवेतेराजाने दुरमुखनामेप्रधानछे तेणेएमा रीचालजोयीने राजानेजइकह्युंजे हेराजन् तमेतोसर्वअधिकार पुत्रनेभलाव्योछे पण पुत्र तोकोइनापासेथी कोइजातनोपणकर अथवादंडलेतोनथी माटेएरीतें तारुंराज्य चालेनही केमकेकरदंडविना कोइलोकमानेनही एवातदुरमुखप्रधाननामुखथीसांभ ली राजायेंदुर्मुखनेकह्युंजे तुंजजइनेमाराकुमरने शिखामणआप तेउपरथीदुरमुखेंआ वीने मुजने तेजरीतेंकह्युं तेसांभलीमेंकह्युंजे करतथादंडतो जेअन्यायीहोय तेनाउपर नाखियें पणन्यायवंतउपर दंडादिककरवुंसांभळ्युंनथी इत्यादिकमारावचन दुर्मुखेंसां भलीने मुफनेकपटेवर्णवी प्रजालोकने एकांतेतेडावी भयदेखाडी सर्वपाशेथी करत थादंडलेवराव्या वलीतेप्रजालोकने एवीधमकीआपीजे कोइकुमरनेकेहेशोतो हुंतमो नेमहोटीशिक्षाआपीस एमकहीप्रजालोकनेविसर्ज्या हवेतेवातचतुरदूत द्वारेंमेजाणी अनेमारापितायेंपण एवातजाणीने दुर्मुखनेकाइकह्युंनही तेमाटेहुंमारापिताथी रीसा वीआव्योछुं इत्यादिक कनकशेखरनीवातसांभली पद्मराजायें तथामें कनकशेखरने घणी आश्वासनादेइराख्यो.

हवेएकदिवसें कनकचूंडराजाना त्रणप्रधान १ समति २ वैराग ३ केशरीनामे एत्रणप्रधान तेजयस्थलनगरेआवी राजाने तथाकनकशेखरनेप्रणामकरी कनकशेखर नेकह्युंजे हेस्वामितमें चाल्यापछे राजाराणीमहादुःखपाम्या अनेदुर्मुखनाप्रपंचथी ए कप्रकारतमारोजाणी दुर्मुखने कुटुंबसहित देशबाहेरकाढीमूक्यो अने चतुरदूतना वचनथी तमनेइहांआव्याजाणी राजायेंएवीप्रतिज्ञाकरीछे जेमहारोपुत्र इहांआवेतो ज हुंअहारकरुं एवीप्रतिज्ञाकरीबेठा एटलामांवली एकवातबीजीथयी.

जेविशालानगरीनो नंदननामेराजा तेनीएकप्रभावती बीजीपद्मावती एवेस्त्रीछे ते मनेएकेकपुत्रीछे १ विमलानना अने २ रत्नावतीनामे बेपुंत्रीछे तेमां विमलाननाने प्र भावतीयें पोतानोभाइ प्रभाकरनामें कनकपुरनोराजा तेनोपुत्रविभाकरनामेछे तेनेदी धीछे केटलाकदिवसें विमलानना कनकशेखरनो वर्णनसांभली तेनाउपरसरागिणीथ

रें परवस्थोथको मेंदीगो पछे तेमृषावादसाथे मेंमित्रताकरी तेवारपछेमारीप्रवृत्तिएवी थयीजे कोइयेमाहरोकुकर्मप्रत्यक्षदीगोहोय तेमनेआवीकहे तोपणहुंतेवातकबुलनहि कहुंएक अनेकरूबीजो यद्यपि एकअहंकार अनेबीजो मृषावाद एबेदुपापमित्रना वश थकी कोडोगमेअनर्थ उपजे पणपुण्योदय सखायीहतो तेथीतेअनर्थविलयथयीजता हता पणतेमें अज्ञानपणाना वशथकीनजाण्युं हवे मने कलाजणावाने योग्यजाणी नरवाहनपितायें महामतिनामाकलाचार्यपासें जणवामोकल्यो पितायें मनेकह्युंजे हेवत्स दिनप्रतें गुरुचरणे परिणामकरी विनयपूर्वक विद्याजणजो एवुंसांजलीमेंक ह्युंजे हेपिता तुंतोमूढदेखायछे एकलाचार्यमां माराथीशाअधिकगुणछे केजेथकीहुं एगुरुनेनमस्कारकरुं तेसांजली राजायें कलाचार्यने एकांतेकह्युं जे एरिपुदारण अहं कारीछे तेमाटे तमारोविनयादिकनकरे तोपण माहरोपुत्रजाणी जणावजो इत्यादिक वातो कलाचार्यें सांजली पछेहुंकलाचार्यनो विनयादिक नकरुं तोपणतेमने जणा वताहता पणसन्निपातिने जेमजेम दुध खवरावियें तेमतेमरोगवृद्धिपामे तेमहुंपण जेमजेमजणुं तेमतेम मने अविनयादिकनी वृद्धिथतिगयी.

हवेएकदिवसें गुरुयेंमनेकह्युं जे हेवत्सकुपात्रनीपरें जणतांपणतुं अविनीतकेमथा यछे तेसांजलीमें गुरुनीघणीज हिलनाकरी पणगुरुसांजलीरह्या बीजाविद्यार्थियोने वारीमूक्याजे कोइएअधमने बोलावशोमां पछेकेवारेकहुं गुरुनेआसने जइबेसुं कोइ वारेंतो मृषाबोलुंजे कोणबेगोहतो अथवागुरुनीनिंदाकरुं गुरुतेहवुंदेखीवारे तोगुरु नेपण खोटोठेरावुं इत्यादिकघणो माहरोअन्यायजाणी गुरुयेंमने हांकीमूक्यो हुंरा जमंदिरेंआव्यो राजायें मनेपुछ्युंजे हेपुत्रतुं सुंसुंजण्यो तेवारेंमें मृषावशेंकह्युंजे व्या करण छंद तर्क गणित ज्योतिष धनुर्वेदादिक तथाबहुतेरकला चउसठकलाप्रमुखसर्व हुंजण्यो तेसांजली राजाघणोहर्षितथयो कलाचार्यनेघणुंद्रव्यआपाव्युं वलीराजायेंम नेकह्युंजे शास्त्रंसुनिश्चितधियापरिचिंतनीयमाराधितोपिनृपतिःपरिशंकनीयः॥अंकस्थि तापियुवतिःपरिरक्षणीया शास्त्रेनृपेचयुवतौचकुतःस्थिरत्वमितिन्यायात् माटेहेवत्स वलीपणगुरुपासेंरही जेविद्याजण्याछो तेसंजारजो तेवारेंमेकह्युंसारुं एमकहि राजमं दिरथी बाहेरआवीने में मारामृषावादमित्रने पुछ्युं जेहेनाइ ताहरीशक्ति अत्यंतछे एशक्तितुंक्यांथीजण्यो हवेमृषावादपोताना शक्तिनीवातकहेछे राजसचित्तनगरनो रा गकेसरीनामेराजा तेनीमूढतानामेस्त्री नेमायानामेपुत्रीछे तेनेमेंमाहरीमहोटीबेहनक रीमानीछे तेमायाथी मेंएशक्तिजाणी जोताहरेए शक्तिशिखवीहोयतो वेश्यानेवाडे त था द्यूतकारादिक स्थानकेजयीशीखवानो उद्यमकर अनेहुंपण वखतउपर मायाने

महोत्सवें विवाहकरी विमलानना कनकशेखरनेपरणावी अने संसारीजीवकहेछेके रत्नवतीमुजनेदीधी.

हवेएबेस्त्रीओ बीजेदिवसे कुतूहलेंवनक्रीमाकरवागयीछे एटलामां नगरनेविषे कोलाहलथयो जेकोइपरकटकआवीने विमलानना तथा रत्नवतीनेहरीजायछे तेसां नलीअमेपण लशकरलेइ तेनीपठवाडेथया तेनालशकरने जइमिल्या तेवारेंखबरप डीजे विमलाननानो जेनीसाथें विवाहमेलव्योहतो तेविन्नाकरराजानो एलशकरछे पछे तेनीसाथें महायुद्धथयुं एटलामां विन्नाकरनो काको कलिंगदेशनोस्वामी सम रसेनराजाते अमारासैन्यने नांजतो शस्त्रधारावरसावतो आव्यो तेनेमेंवैश्वानर तथा हिंसानेबलें तेसमरसेनने खड्गेहण्योवलीबीजो विन्नाकरनोमामो व्यंगाधिपतिद्रुमराजा तेकनकचूडसाथें युद्धकरतोहतो तेनेपणमेंहण्यो पछे कनकशेखरने सन्मुखयुद्धकर नार विन्नाकरराजा तेनेपणमेंघाहण्यो तेथीविन्नाकर पृथ्वीयेंपम्यो वली विन्नाकरने सज्जकरी कनकशेखरेंकह्युंजे हेनलाशूरवीर फरीमारेसन्मुखथा तेसांनली विन्नाकरें कह्युंजे हेकनकशेखर हवे तुंस्वामि अनेहुंसेवक केमकेहुं पृथ्वीयेंपड्योहतो तेवारेंतेन हण्यो तोहवेकेमसामुंथाउं एमसांनली सर्वनेहर्षथयो जयजयकारशब्दथयो विम लाननाने तिहांथी आश्वासनादेइ कनकचूडेंपोताने रथेंबेसाडी अनेरत्नवतीनेमारा रथमांबेसाडी जयपताकावरी महोटामहोत्सवें नगरमांप्रवेशकर्यो राजा तथा कनक शेखरप्रमुख पोताने स्थानकेगयां अनेहुंरथेंबेगेथको राजमार्गेंजाउंछुं एटलामां कनक चूडराजानी स्त्रीमलयमंजरी तेनीकनकमंजरीनामेपुत्रीनेमें गोखेबेठीदिठी तेमहारूप वंतहती माटेमाहरीदृष्टितिहांलागीरही अनेतेनीदृष्टिपण माहराउपर लागीरही एवुं देखी तेतलीनामेसारथी तेनीदृष्टिपणमाराउपरलागी पछेतेसारथियें मनेवार्यो थको हुंमहारामंदिरेगयो पणतेरात्रियें मनेविरहनीवेदना नारकीनीपरें नोगवतांथयी प्रा तःकालेंते कनकमंजरीनी विरहनीवात तथामारासाथें कनकमंजरीनो विवाहमेलव वानीवात तेकनकमंजरीनीधाव कपिंजलानामे गुणिकाछे तेपासेथीमेंसांनलीने हुंघ णोहर्षवंतथयो एटलामांविमलनामे राजानोप्रधान तेणेआवीमने कह्युंजेहेनंदिवर्द्धन जी तमनेगुणवंतजाणीनें राजायेंतथा कनकशेखरेंविचारकरी कनकमंजरी तमनेदीधी छे अनेकनकमंजरीनीबेहेनजे मणिमंजरी तेतोतमारा शीलवर्द्धननामाप्रधानने पूर्वेंप रणावीछे एवचनविमलप्रधाननुंसांनली एवातमेंतथा तेतलीयेंकबुलकरी अनुक्रमेंवि वाहथयो पछेबेहुस्त्रीसाथें नोगविलासकरतां केटलाकदिवसवितिगया हवेविन्नाकररा जानेजे घालाणोहतो तेथीतेराजा एजनगरमांरह्योहतो तेनेसमाधीथयेथके कनकचूडें

जेमतेम कष्टेंकरीतेदिवस वोल्यो रात्रेंहुंसुतो एवामां मारो पुण्योदयते मनेतथा मारा पिताने चिंतातुरजाणी लज्जापाम्यो महारा मित्रनेविटंबनाथयी तोहुंसुखे सुं बेसी रह्योछुं एवुंविचारी तेपुण्योदय नरकेसरीराजा पासेगयो एटले नरकेसरीने एवीबु द्धिउपनीजे नरसुंदरीनो रिपुदारणसाथें पाणिग्रहणथयुं एवातसर्वस्थले विख्याति पामिगयीछे तोहवेजोहुंनपरणावीसतो बेहुनिलाजरेसेनही इत्यादिकविचारी नरसुंद रीनेपणसमजावीने बीजादिवसें मारापिताने आवीकह्युंजे रिपुदारणने विद्याबोलाव्या विनाज नरसुंदरीसाथें पाणिग्रहणसुखेंकरावो तेवातसांभली नरवाहनराजा हर्षपा म्या महोटाआडंबरें विवाहकर्यो नरसुंदरीसरिखीस्त्रीपामि हुंपण परमहर्षपाम्यो नवा नवा भोगविलासें विषयसुखभोगववालागो नरकेसरीराजा आनंदपामि पोतानेनगरे पहोता हुंअनेनरसुंदरी बेहुनेपरस्परेंस्नेहरागें सुखभोगवतां घणावर्षवितिगया.

एकसमे अहंकारें मृषावादनेकह्युंजे हेमित्र आपणोपरमस्नेहीजे रिपुदारणतेतो नरसुंदरीसाथें रक्तथयोछे तेथीआपणे बेहुनेविसारीमुक्योछे माटेएहवो उपायकरियें के जेथकीएनरसुंदरीसाथें रिपुदारणनो विछोहथाय तेसांभली मृषावादेंकह्युंजे हुं पणएहिजविचारमांछुं हवेएकदिवसें नरसुंदरीसाथें विनोदकरतां नरसुंदरियें मनेपु छयुंजे हेस्वामिविवाहनादिवसें विद्यापुछतां तमेक्षोभपाम्यातेनुंसुंकारण तेसांभलीमें कह्युंजेतुंस्त्रीजातिछो. तोतारासाथें विसंवादकरतां अमेहलकाकेहवायीयें तेमाटेहुं बोल्योनही तेवारें नरसुंदरियें महारुचित्त खोटुंजाणीकह्युंजेरूडुं पणहेस्वामिजीहम णातो एकांतछे माटेहमणाजकोइकला कहीबतावो तेसांभलीहुं मारामनमां उत्तर आपवानीचिंतवनकरुंछुंएटलामांशैलराजायेंस्तब्धचित्तनामे औषधमाहरे हृदयेंचोप डयुं तेथीमेंअहंकारनेवशेथयी नरसुंदरीनेपगेठेलीनेकह्युंजे अरेरंडातुंगर्वकरी मनेमू र्खजाणेछे तोजाहवेजे पंडितहोय अनेजेहांताहरुंमनमाने तेनीपासेजा एमकही निर्भर्त्सनाकरीने नरसुंदरीनें काढीमूकी.

तेवारेंनरसुंदरीमहादुःखवंतथकि रुदनकरति महारीमातापासेजइएसर्व हकिगत कहि मातायेंपण एवातजाणी नरसुंदरीने आश्वासना आपी दुःखधारणकरी मने समजाववाआवी अनेकह्युंजेहेवत्स एहवीचतुरगुणवंत स्नेहवंत स्त्रीनो शावास्ते अ पमानकर्यो इत्यादिकमाताना वचनसांभलीमेंअहंकारवशें मातानेपणनिर्भर्त्सनाकरी काढीमूकी तोपणमारीमातायें नरसुंदरीने समजावी मनावीने महारीपाशेंमोकली तेणेआवीमनेकह्युंजे हेनाथ हेप्राणवल्लभ हेचित्तेश्वर इत्यादिक ललितवचने तथा नयनजलेंकरी माहराचरण प्रक्षालनकरति पगेमस्तकनाकेसलगाडति दीनवचनेना

बीजीस्त्रीचारुतानामेछे तेनीदयानामेपुत्रीते तमाराकुमरने परणावोतो एहिंसातथा मृगयादिकव्यसननेमूकीदेशे पणतेतो क्रमानीपरें कालादिकसामग्रियें परणशे इत्या दिकसांजली राजायें मनेछवेखीमूक्यो.

हवेएकदाराजायें शुभमुहूर्त्ते महोटेआमंबरे मनेयुवराजपदवीदीधी तेजवखते शार्दूलपुरनगरनो अरिदमनराजा तेनोस्फुटवचननामे प्रधानछे तेतेहांआवी राजानेप्रणामकरी कहेवालागोजे हेस्वामितमारो नंदिवर्द्धनपुत्रते महागुणवंतछे माटे अमारा राजानी मदनमंजूषानामे पुत्रीछे तेनोनंदिवर्द्धन सार्थेविवाह मेलववाआव्योछुं तेसांजली पद्मराजाप्रमुख आनंदपाम्या विवाहमेलवामांडयुं एटलामांमेंते स्फुटवचनप्रधाननेपुछयुंजे शार्दूलपुरनगर इहांथीकेटलुंदूरछे तेणेकह्युं अढीसोयोजनदूरछे तेसांजलीमेंकह्युं एकगाउउणा अढीसेंयोजनछे एमकहेता माहारेअने स्फुटवचनने माहोमांहेविवादथयो एटलेमें महाविकराल खड्गकाढयुं तेवारेंपुण्योदयजे माहरेसन्मुखहतो तेमनेनिर्गुणी अयोग्यजाणीनाठो मेंतेस्फुटवचननेहण्यो तेवारेंपद्मराजा सिंहासनथी उठी मनेवारवाआव्यो तेवारेंमेंविचार्युंजे जूउआमारो पिताते मारावेरिनोपक्षकरेछे एमजाणी क्रोधवशें पितानेपणहण्यो एटलेसुनंदानामें मारीमाता तेमंदिरमांथीरुदनकरती पुकारकरती माहरेहाथेंआवी विलगी तेमातानेपणमें हणीनाखी एटलेमाहरोपरममित्रजे शीलवर्द्धन अनेतेनीस्त्रीजे मणीमंजरी तथामारीस्त्री रत्नवती एत्रणेजणामने वारवाआव्या तेपणमेंहण्या तेवारेंमदनमंजरीजे महारीहृदयवल्लभाते वारवाआवी तेनेपणमेंक्रोधवशेहणीनाखी तथाबीजापण बांधव प्रधानादिकजेजे वारवाआव्या तेसर्वनेमेंहण्या एमघणानेहणतां मारोपहेरवानुं वस्त्रनिसरीगयुं मस्तकना केशछूटा तेथीपिशाचसरिखोमने नग्नदेखीने बालक हशवालागा तेदेखीहुंक्रोधें तेबालकोने मारवादोडयो पछेघणेलोकेमने पृथ्वीयेंपाडयो माराहाथमांथी तरवारखेंची लेइ पाछलथीबांधी महाकष्टेंअंधारे बंदीखानेनाख्यो तेहांएकमहीनासुधी क्षुधातृषायें पीडयोथकोमस्तकें बंदीखानाना कपाटभांजतेपण केणेकाढयुंनही पछेघणुजआक्रांतथयो कृणेकनिद्राआवी एटलेउंदरे मारोपाशत्रोडीनाख्युं पछेहुं जाग्योतेवारें माहाराहाथछुटाजाणी कपाटउघाडी बाहेरनिकल्यो तेवखतरात्रीघणीहती लोकतो निद्रामांहतातेवारेंहुंक्रोधवशें गामगांमअग्नीदेइ संपूर्णनगरदाहकरी नासीगयो अटवीमांजतां चोरमल्या तेणेघणीकदर्थनायें मनेपकडीने चोरनास्वामिपासे लेइगया तेणेकह्युंजे आपुरुषदेखातो महाछष्टछे तेमाटेसारीपते कष्टआपीने बंदोबस्तकरीराखवुं केमके बब्बरकुलें वेचवानेकामआवशे एमकरीराख्यो एटलामां विजाकरराजानाकटकें तेचो

व्रत ग्रहणकर्यो तेसांनली आचार्यबोल्या जेहेराजन्एवृत्तांतकहेताथकां पोतानीस्तु ति तथापरनीनिंदा अनेंपूर्वेंक्रीडाजोगवी तेनुंकहेवापणुंथासे एटलोविरुद्धछे तोपण तमोने सांजलवानोविनोदछे माटेकहुंछुं तेसांजलो.

अनादितथा अंतरहित एहवुं पृथ्वीतलनामेनगर तेअनेकलोकेंकरीपरिपूर्ण तेहां मलसंचयनामेराजा तेहनीमलपंक्तिनामेस्त्री तेहना एकशुजोदय बीजोअशुजोदय एवेनामे बेपुत्र तेमांशुजोदयनी आपनलाइनामेस्त्री अने अशुजोदयनी आपयोग्य तानामेस्त्रीछे वलीशुजोदयने विचक्षणानामेपुत्रछे अने अशुजोदयने जडनामेपुत्रछे.

तेमांविचक्षणपुत्रतो धर्मवंत सत्यवादी धीरजवान देवगुरुनोपूजनारो जितेंद्रिय आचारतत्पर विनीत क्षमावंत इत्यादिक असंख्यगुणे संयुक्तछे तथाजडपुत्रतो वि परीताचारी असंतोषी मृषाजाषणकरनार कपटी देवगुरुनोनिंदनिक कायर लोजी क्रोधी अहंकारी परसंपत्तियेंदुःखी परआपदायेंसुखी इत्यादिक असंख्याता डुर्गुणे संयुक्तछे एरीतेंते बेहुपित्राइजाई यौवनअवस्थापाम्या.

एटलामां सकलगुणाकर एहवुंनिर्मलचित्तनामे अंतरंगनगरछे तिहांमलक्षय नामेराजा तेहनेचित्तसुंदरयेता एहवेनामे स्त्रीछे तेहनीबुद्धिनामेपुत्रीछे तेविचक्षणकुम रनेपरणावी तेबुद्धिनामास्त्रीसाथें सुखजोगवतोथको विचक्षणकुमर कालव्यतिक्रम करेछे एकदिवसें मलक्षयराजायें पोतानीपुत्रीनो सुखजाणवानेअर्थे विमर्शएहवेना में पोतानापुत्रने खबरकाहाडवामोकल्यो हवेते विचक्षणने प्रकर्षनामापुत्रथयो ह वेविमर्शनी बहेनबुद्धि तथा प्रकर्षनामाजाणेज तेनास्नेहने प्रसंगे माहोमांहे वातवि नोदकरतां तिहांजरह्योछे एरीतेंप्रवर्त्ततां एकदिवसेंविचक्षण अनेजड एबेहुपोताना सुखविक्षनामा उद्यानेगया तेहांदंतरूप कुंदवृक्षनीशोजा जुएछे एटलामां एकदासीयें करीयुक्तलालवर्णि रूपवंतएहवीस्त्रीदीठी जडकुमरतो तेस्त्रीनेदेखी मोहपाम्योअने वि चक्षणकुमरेविचार्युंजे एस्त्रीएकलीज एकदासीसाथें वनमांफिरेछे माटे एधूर्त्तछे एह वुं विचारी जडकुमरने पोतानोहाथजाली आगलचाल्यो एटलेस्त्रीतो मूर्छापामि ते स्त्रीनीदासीपोकारकरतिते बेजाइओ आगलआवी मूर्छानीवातकही तेवारें जडकु मर विचक्षणनेसाथेतेडी तिहांआवी दासीनेस्त्रीनुंनामपुछ्युं तेवारेंदासीयेंकह्युंजे ए हनुंनामजिव्हाछे अनेमारुंनाम लोलताछे तेवारेंजडेपुछ्युंजे हेलोलता अमाराथ रें एजिव्हाने एटलोबधो शोरागछे केजेथकी अमाराविरहथी एस्त्रीनेमूर्छाआवी ते वारेंस्त्रीना स्नेहनीवात लोलतादासीकहेछे.

असंव्यवहारनगरथी कर्म्मपरिणाम तथालोकमर्यादा प्रमुखनेबलेंनिकली एकेंद्रि

अनेकदेवतायें परवस्या गोव्याघ्रादिकजीवोनेपण विरोधनीवात समावतायका सुख एकमलेंवेगायका धर्मनीदेशनाआपेछे.

तेहांतेनगरनोराजाजे अरिदमनते महाआडंबरें सपरिवारें वांदवाआवी धर्मदेशनासांभलेछे जेअनादिसंसारे जैनधर्मनीप्राप्तितेडुःकरछे अनेजैनधर्मपामि साधुमार्गे तथा श्रावकमार्गेआदरे तेनेनिर्वाणमार्गनुं साधनथाय इत्यादिकधर्मदेशना सांभल तांराजायें पुछ्युंकेहेभगवन् महारीपुत्रीनो विवाहकरवाने मेंमारो स्फुटवचननामे प्रधाननें जयस्थलनगरें मोकल्योहतो तेनीपाछीकशी खबरआवीनही तेवारेंमेंबीजो माणसमोकली खबरकरावीतो तेणेकह्युंजे जयस्थलनगरनाठेकाणेतो प्रज्वलितअटवीदेखायछे आगलापाछलागामतोसर्व उध्वंसदेखायछे तोएगामनोपण्राजा अनेनंदिवर्द्धनप्रमुख सर्वकिहांगया एवुंराजायेंपुछे थके केवलीकहेछेजे पेलोआइथीघोडेकदूरें मजबुत्तबंधेबांध्यो जेपुरुषदेखायछे तेजूओ राजायेंजोयुं एटलेकेवलियेंकह्युं जेएनंदिवर्द्धन अनेएने द्वेषगजेंद्रराजानीस्त्रीजे अविवेकता तेनोपुत्रजे वैश्वानरबीजुंनाम अनंतानुबंधीक्रोध तेनीसाथेंमित्राइछे तथा रौद्रचित्तनगरनोराजा डुष्टाभिप्राय तेनीस्त्री निःकरुणता तेनीपुत्रीजेहिंसा तेएनीस्त्रीछे तेनावशवर्त्तियेंरेहवाथकी एनाएहालथयाछे एमकहिमारी सर्ववात तेराजाआगलें केवलियेंकही तेवारेंराजायेंपुछ्युंजे एनंदिवर्द्धनने एनीसाथेंसंबंधथयें केटलाकदिवसथया तेवारेंकेवलियेंकह्युंजे.

असंव्यवहारनगरथीमांडी अनंतकालनो संबंधछे पणआभवेंतो प्रगटपणेछे तेउपरवली राजायेंपुछ्युंजे एनंदिवर्द्धन रूपवंत शूरवीर पराक्रमी इत्यादिक अनेकगुणवंतकहेवातो अनेजेहांतेहां एनोजयसंभलातोहतो तेकेम तेवारेंकेवलियेंकह्युंजे एहनें जिहांसुधी पुण्योदय सखाइहतो तेहांसुधी जेमप्रवर्त्ततो तेमभलुंजथातुंहतुं अने ते स्फुटवचनसाथें जेवारेंविवादथयुं तेवारेंतेपुण्योदयनहतुं तेथीएनी एअवस्थाथयी ते सांभली वलीराजायेंपुछ्युंजे एहिंसाअनेक्रोधसाथें बीजाकोइनोसंबंधछे तेवारेंकेवलियें कह्युंजे सर्वसंसारीजीवोसाथें एनोसंबंधछे हवेकेवलिते संबंधनीवात विस्तारेंकहेछे.

हेराजन् जीवमात्रने त्रणत्रणकुटुंबछे तेमां क्षमा सरलपणुं निर्लोभीपणुं ज्ञान दर्शन चारित्र सत्य शौच तप संतोषपणुं इत्यादिकतो स्वभाविक अंतरंग प्रथमकुटुंब छे तथा क्रोध मान माया लोभ राग द्वेष अज्ञान शोक भयप्रमुख एबीजुंकुटुंब तथा माता पिता पुत्र पुत्री स्त्री प्रमुख त्रीजुंकुटुंबछे तेमांपहेलुंकुटुंबतो जीवने मोक्षपमाडेछे अनेबीजुं कुटुंबते अभव्यनेतो अनादिअनंतकालहोय अनेभव्यनेतो अनादि अनेअंतसहितहोय तथात्रीजुंकुटुंबतो सर्वसंसारीजीवने भवोभवें नवुंनवुं

तोकालथयुंपण हजीकटकपाछोवल्योनथी हुंपणआगलते कटकसाथेगयोहतो प
नगरसाचववामाटे पाछोवालीमूकीने मनेआंहिजराख्योछे तेसांनली विमर्शेपु
युंजे संतोषनीसाथें रागकेसरिराजाने शोवैरछे तेवारें मिथ्यानिमानेकह्युंजे एराजा
विषयानिलाषनामे प्रधानछे तेणेस्पर्शन जिव्हा घ्राण चक्षु करणनामे पोताना
चसंतान ते जगतवशकरवावास्ते राजानेनलाव्याछे हवेतेपांचेंद्रियरूप पांचसंता
नेसंतोषनामाचोर ते कोइकोइवखते आवीने हणीजायछे तेमाटेअमारोराजासंतो
कपरचडचोछे.

तेसांनली मामा तथानाणेज बेहुजणेविचार्युंजे जिव्हानीउत्पत्तितो मलीआ
एतोविषयानिलाषनामें प्रधाननापांचइंद्रियरूप पांचसंतानमांहेली एकछे माटे
वेचालो तेजिव्हानेजोवाजइयेंएम विचारी मिथ्यानिमानने पुछयुंजे तेमोहराजानुं
शकरकिहांछे तेसांनली मिथ्यानिमानेविचार्युंजे रखेएकोइतपासकरनारुंहोयएम
णीबोल्योनही तेवारेंमतिनुं उत्कृष्टपणुंछेजेहमां एहवोजेप्रकर्षतेणेपोताना मामा
कह्युंजे रूडुं हवेआंइथीचालो आपणेगणीएनीशोधकरसुं एमकहीअनुक्रमें तामस
त्तनामानगरें आव्या तेनगरपण शून्यदीठुं तेह्यांजुएछे एटलामां एकश्यामवदनवंत
रुपदीठी तेदेखीतेनुंनाम तथाएनगरशून्यशाथीथयो तेनोखोलासोपुछयो तेवारेंतेबो
जे माहरुंनामशोकछे अनेएनगरनासर्वलोक ते द्वेषगजेंद्रनामाराजानीसाथे सं
षउपर कटकलयी युद्धकरवागयाछे तथा द्वेषगजेंद्रराजानीस्त्रीजे अविवेकता तथा
णीनीसासु महामूढता अने जेराणीमूढता तेमने द्वेषगजेंद्रराजा घणुंवह्लनछे पण
विवेकता सगर्नाछेमाटे कटकसाथेनिकलीतोपण राजायें तेमनेमार्गमांथी पाछी
लीने रौद्रचित्तनगरें द्वेषगजेंद्रनोसुनंटजे दुष्टनावनामेराजा तेहनेनलावी तेहां मूकी
यो तेणेप्रथम वैश्वानरपुत्रजण्योहतो हवेवलीद्वेषगजेंद्रराजाना संयोगथी शैलरा
नामेपुत्रजण्योसंनलायछे एटलीवात रिपुंदारणनेजवें विचक्षणसूरिनामुखथी ते
सारीजीवें सांनलीहती तेकही.

एटले प्रज्ञाविशालाबोलीजे हेअगृहीतसंकेता तुंसंनारजे जे नंदिवर्द्धननेनवें
लापरणवाने अधिकारें संसारीजीवेंकह्युंहतुं जे अविवेकता रौद्रचित्तनगरें कोइककां
नेवास्तेआवीहति तेवातसर्वमलि एटलेवलीप्रज्ञाविशालायेंपुछयुंजे हेसंसारीजीव वि
क्षणसूरिनेवचने अविवेकतानुं स्वरूपकहेवाणुं ते ताराजाणवामांकांइ आव्युंकेनही
वारें संसारीजीवकहेछेजे मेंतोअज्ञानेकरी विचक्षणसूरिनुंवचन मिथ्याकरीमान्युं
हवेफरी प्रज्ञाविशालाप्रमुखने संसारीजीव पाछलनीवातकहेछे जे मामे नाणेज

नाज केमथीछुरीकाढी एटलेतेणेपण विकराल तरवाल जंबीओकाढी मारासामे युद्ध करवामांडयुं एमबेजणयुद्धकरता मृत्युपामि छठ्ठिनरकेगयां तेवारपछे तेहांथीनिकली केटलाकनवनमतां तीर्यंचपणे तथानरके कलहकरतांज कालगयो हवेमाहरीजे नवितव्यतास्त्री तेणें केटलेककालें कर्म्मरूप गुटिकाओखवरावी अनंतकालसुधी असं व्यवहारनगरें मूकी प्रायेंसर्वत्रस्थानकें नवेनवेरूपें वेषलेवराव्यां एमअनंतकालसु धी कष्टनोगवतां फरीनवितव्यता प्रसन्नथयी तेवारें मुजनेनविव्यतायें आहिरनो अवतारलेवरावी मध्यमगुणउपजावी कह्युंजे हेआर्यपुत्रतें घणाकष्टनोगव्या हवेतु जने पुण्योदय सहचारी नलावुंछुं माटेतुं मनुष्यगतिनामनीनगरीयें अवतारले तेवा रेंमेंकह्युं नलुं एम नंदिवर्द्धनना क्रोध अने हिंसानाफल मागजाणीने तथाबाल अने मनिषीनासंबंधथी स्पर्शनेंन्द्रियनो अधमविपाकजाणी हेनव्यजीवो तमे क्रोध तथा हिंसापरिहरो स्पर्शनेंन्द्रियनो जयकरो जेमसर्वमनोरथसिद्धथाय.

इतिक्रोधेहिंसायांचनंदिवर्द्धनकथाःसमाप्ताः

---

हवेअगृहीतसंकेताने संसारीजीवकहेछे जे सिद्धार्थपुरीनगरी तेनो नरवाहनराजा तेनीविमलमालास्त्रीनी कुक्षीनेविषे अनुक्रमेंहुं अवतर्यो पुण्योदय सायेहतो तेथीशु नमुहूर्त्तें मारुंजन्मथयुं राजायेंमहामहोत्सवकरी रिपुदारण एवुंमारुंनामदीधुं अनुक्र मेंहुंमहोटोथयो तेवारें मातापिता तथाप्रजालोकघणुं आनंदपाम्या हवेजेअविवेकता नामें नंदिवर्द्धननानवें मारीधावहती तेणेवली जाति लान कुल ठकुराइ बलरूप तप अनेश्रुत एआठमदरूप आठमस्तकेकरीशोनतुं एवोशैलराजातथामातानामें पुत्रजण्यो तेथीअविवेकताघणुं हर्षपामिपछे तेशैलराजासाथें माहरेप्रीतिथयी तेथीदेवने तथा गुरुने तथामातापिताप्रमुखकोइने नमस्कारकरुंनही उंचीआंखे आकाशजोतोचालुं कोइनेलेखामांगणुंनही पोतानाज जात्यादिकमदनी वातकरुं एहवोमनेमानसाथे मल्योजाणी पितायेंप्रधानादिक सर्वपुरुषोनेवारीमुक्योजे कोइएरिपुदारणनी आज्ञा लोपसोमां तेसांनली प्रधानादिकलोकसर्व महारीआज्ञामांरह्या मनेदेखे एटलेप्रणा मकरे तेथीमेंजाण्युंजे एमाहात्म्यसर्व मानमित्रनुंछे एमकरताकेटलाकदिवस वित्यापछें तेशैलराजायें मनेवशथयोजाणीने स्तब्धाचित्तनामे औषध महारेहृदयें चोपडयुं ते थीहुं पथ्थरनास्तंनननीपरे स्तब्धथयो.

हवेएकदिवसेहुंअंतरंगक्लिष्टमानसनामानगरेंगयोहतोतेहांदुष्टनावनामेंराजातेनी जघन्यताहीनपरिणामनामेस्त्रीतेनोपुत्रमृषावादनामेतेकपटचाडीपरद्रोहादिकपरिवा

केसरीनीज मूढतानामेस्त्रीछे एराजा तथाएत्रणपुरुष तथाएस्त्री तेसर्वजीवने असद्व स्तुनेविषे पण प्रीतिउपजावे तथामोहराजाने वामपासेंजेबेगेछे तेद्वेषगजेंद्रछे तेयद्यपि रागकेसरीनो नानोनाइछे तोपणतेनाथीएघणोजपराक्रमीछे केमके घणादिवसनीप्री तिहोय तेक्षणवारमां त्रोडीनाखे तेथीएनोपिताजे मोहराजातेने एपुत्रतेपरमवल्लनछे अनेएनीस्त्रीजे अविवेकताछे तेतो तिहांशोकें आपणनेकह्युंजे रौद्रचित्तनगरमांछे ते नीआपणनेखबरजछे.

तेसांजली प्रकर्षेकह्युंजेहा फरीविमर्श बोल्युंजे आमोहराजानें पछवाडेबेठो जेमहा सुंदर पुरुषवेद स्त्रीवेद नपुंसकवेदरूप त्रणपुरुषें परवस्यो तथारतिरूपजेस्त्री तेणेसहि त पंचबाणेयुक्त एनेकामदेवकहियें जेनावशथकी ईश्वरे पार्वतीनेआगलें नाटककर्युं श्रीकृष्णगोपागंनाने पगेंलागा ब्रह्माध्यानथीचूको एमइंद्रचंद्रादिक सर्व एनावशें विडं बनापाम्या तथाएनेवशरह्योथको जोवृद्धहोयतोपण एकामसेवामाटे औषधकरे शरी रबलवीर्यने स्तंजनादिकवांछे तथास्त्रीओ कुलमर्यादालोपि व्यनिचारसेवे इत्यादिक महाशक्तिवंतछे तथामोहराजनीपछवाडेवली बीजाजे पांचमनुष्य बेगछे तेमांएकहा स्य अनेहास्यनीस्त्री तेतोमस्ताई एहनेपासें बेठीछे तथाबीजोमनुष्यते अरतिछे जेने वशेंरह्याथका लोकउद्वेगपामेछे त्रीजोमनुष्यनयनामेछे तेनेपासें तेनीस्त्री हीनसत्वप रिणाम एवेनामेछे तेबेठीछे तथाचोथोमनुष्यजेबेगछे तेशोकनामेछे तेहनापासें तेहनी स्त्रीनावछनामे बेठीछे जेहनावशेंरह्याथका लोकशिरस्फोटनादिक करेछे जेआपणने तामसचित्तनगरें मल्योहतो तेशोकहमणाज इहांआव्यो देखायछे तथापांचमो मनु ष्यते डुगछाकहियें जेहनावशेंरह्याथकालोक डुर्गंधवस्तु अथवाकोइपण हीनवस्तुदे खीने शिरधुणेछे नाकमरोडेछे एमएपांचेमनुष्य पोतपोतानाविपाकदेखाडी लोकने इहलोकें तथा परलोकेंडुःखआपेछे.

तथाआबीजाजे आनीतरफ शोलबालकदेखायछे तेशोलेकषायछे तेमांपहेलाचा रबालकते अनंतानुबंधी क्रोध मान माया लोन कहियें एहनावशेंरह्योथको जीवस म्यक्तपामेनही तथाबीजावलीचारबालकते अप्रत्याख्यानिया क्रोधादिककषायछे एने वशेंरह्योथकोजीव देशविरतिपणोनपामे तथावली आत्रीजाचारबालकते प्रत्याख्यानी आक्रोधादिकचारकषायछे एनावशेंरह्योथको जीवदिक्षापामेनही तथाआ नाना चार बालकते संज्वलनाक्रोधादिक कषायछे एहनेवशेंजीवनदीक्षापालताथकापण अतिचा रलागे एरीतें एशोलेकषाय मोहराजानापोत्राजाणवा तेमांचारप्रकारनोक्रोध अनेचा रप्रकारनोमान एआठबालकते द्वेषगजेंद्रनी अविवेकतानामेस्त्रीना पुत्रजाणवा तथा

तेडीतेहां आवीस तेसांजली संसारीजीवअगृहीतसंकेतानेकहेछे जेपछेहुं तेतेस्थानकें जयी खुलाशाथी मृषावादचलाववापणानी शक्तिशीख्यो एमकरतांकेटलाकवर्षवित्या.

एटलामां शेखरपुरनगरनो नरकेसरीनामेराजा तेणेमारी किर्त्तिसांजली जे नरवाहनराजानोपुत्र रिपुदारण महागुणपात्रछे तेजाणीने तेणेपोतानीस्त्रीजे वसुधराते ने सर्ववातजणावीने महारूपवंत कलावंत घणीचतुरएवीजे नरसुंदरीनामे पोतानी पुत्रीछे तेहनेकह्युंजे रिपुदारणवरताहरेयोग्यछे तेनीसाथेंविवाहकरियें तेसांजली नरसुंदरियेंकह्युं जलेकरो पणसन्नामां एकविद्यानीपरीक्षाकरीपछे पाणिग्रहणकरीश तेसांजली राजायेंकह्युंघणुंसारुं पछे नरकेसरीराजा घणापरिवारें सहित सिद्धार्थपुरेंआवी नरवाहनराजानेंतेवातसंजलावी राजाप्रमुखसर्वे हर्षपाम्या ज्योतषीनेंतेडी मुहूर्त्तलेवराव्युं राजायें महामंमपादिक सामग्रीकरावी मुहूर्त्तनादिवसें मनेंतेडावी नरवाहनराजा परिवारसहित विवाहमंमपें आवीबेठा एहवामां नरकेसरीराजापण परिवारसहित मंमपेंआव्या सर्वलोकजोवानें एकठाथया तिहां महामतिनामा कलाचार्यनेंपण राजायेंतेडाव्यो तेपण मंमपेंआवीबेठो.

एटलामां वसुधरामातायें सहित तथासखियें परवरीथकी सर्वलोकनाचित्तने रागउपजावति रूपेंकरी रंजा तिलोत्तमानेपण जीपति वदनरूपचंद्रमायेंकरी दशेदिशोने दीपावति स्तनयुगलेंकरी कनकलशना भ्रमनेउपजावति मधुरस्वरेकरी कोकिलानेपणजीपति विविधप्रकारना अलंकारवेषेकरी साधुजननेपण कौतुकउपजावति कामीलोकनाचित्तने, आकर्षणकरत्ति एवी नरसुंदरीपण सन्नामांआवी मारासन्मुखबेठी तेवारेंमहारोपिता तथा विमलमालामाता अनेहुंपण परमहर्षितथयो तेवखते हर्षितवदने नरसुंदरीबोली जेहेराजपुत्रजी कोइकविद्यामनेसंजलावो तेहांलोक सर्वे उत्सुकथयीजूएछे अनेमनेतो जयथयो गलुबंधाइगयो केमकेविद्यानातोनामपण विस्मृतथयाहता तेथीहुं मृत्युप्रायेंथयीगयो नरसुंदरी तथा नरकेसरीप्रमुखतो मनेएवोदेखीने विलखाथया अनेमहारेपितायें महामतिनामा कलाचार्यने सन्मुखजोयीपुछ्युं जेआमारोपुत्र एवोपंमितकहेवातोहतो तेनीआजे जीनपणकेमउघडतीनथी तेउपरें महामतियेंकह्युंजे हेराजन् एताहरोपुत्र एकअहंकार अनेबीजोमृषावादएबेवातें पंमितछे पणविद्याध्ययननोतो लेशमात्र समजतोनथी इत्यादिकअवगुण कलाचार्यनामुखथी सांजली राजामहालज्जायमानथयी आवतिकालें विद्यानीपरीक्षाकरावशुं एमकही सन्नाविसर्जनकरी राजाउठीगयो लोकतोसर्वेठामोठाम महारो हास्यकरवालागा सन्नानालोकगयापछे हुंपणसावधथयी श्यामसुखकरी मंदिरमांगयो

२ निद्रानिद्रा ३ प्रचला ४ प्रचलाप्रचला ५ थीणद्धी एपांचजातनीनिद्रा तथा १ चक्षु २ अचक्षु ३ अवधि ४ केवलदर्शनावरणरूप एरीतें नवमनुष्यें परवस्यो थको एपण सामान्यावबोधरूपज्ञानने आवरेछे.

तथासाता असातावेदनीरूप बेपुरुषेंपरवस्यो त्रीजो वेदनीकर्मनामे राजाबेगोछे तेप्राणीने सुखअने असुखना विपाकप्रतें देखाडेछे तथा चारेगतिनाआउखारूप चारमनुष्येंपरवस्योथको जीवने हेडिनीपरें चारेगतिमां फेरवनारो आयुकर्मनासेरा जाछे तथा १ मनुष्यादिचारेगति २ एकेंद्रियादिक पांच जाति ३ उदारिकादिकपांच शरीर ४ उदारिकादि त्रणअंगोपांग ५ उदारिकादि पन्नरबंधन ६ उदारिकादिकपांच संघातन ७ संघयणछ ८ संस्थानछ ए वर्णपांच १० गंधबे ११ पांच रस १२ आठ स्पर्श १३ मनुष्यादिकचारगतिनीआनुपूर्वी १४ हिंमवानीगतिबे तथात्रस बा दर पर्याप्त प्रत्येक स्थिर शुभ शुभग सुस्वर आदेय यशनाम एत्रसदशकपुरुष तथा थावर सूक्ष्म अपर्याप्त साधारण अथिर अशुभ अशुभग दुःस्वर अनादेय अने अय श एथावरदशकपुरुषमली २० थयातथा अगुरुलघु उपघात पराघात उसास आताप उद्योत निर्माण अने त्रिजगत्पूज्य तीर्थंकरनामकर्म ए १०३ प्रकृतिरूप १०३ मनुष्येंपरवस्योछे तेनेनामकर्मराजाजाणवो.

तथा उच्चगोत्र अने नीचगोत्र एबेसुभटेपरवस्योथकोछे तेहने गोत्रकर्मराजाकहियें तेजीवोने नानाप्रकारनारूपेंकरी नाटककरावेछे तेउंचगोत्रअने नीचगोत्रनामे बेसुभटें युक्तथकोकुलादिकनेविषेप्राणीनेजोडेछे तथा १ दानांतराय २ लाभांतराय ३ भोगां तराय ४ उपभोगांतराय ५ वीर्यांतरायरूप पांचेपुरुषें परवस्योथको आर्श्वंतरायक र्मराजाबेगोछे एरीतें एसातेराजा मोहराजाना कुटुंबीछे ते मोहराजानी आज्ञायें प्र वर्त्ततायका सर्वसंसारीजीवने विविधप्रकारना विपाकदेखाडेछे एसातेनेजो सामान्य दृष्टीयेंकरी विचारियेंतो सर्वेराजाजदेखायछे पणमोहराजाना सुभटदेखातानथी अ नेजो विशेषरीतें विचारियेंतो मोहराजानासुभटदेखायछे पणराजादेखातानथी केम के जिनराजें अनेकांतिकवाद उपदेश्युंछे तेसत्यछे जेमाटे समुदायमात्रें सामान्यवि शेषरीतें कथंचित् भिन्न कथंचित् अभिन्न जेम जूदाजूदातंतुनो ग्रहणकीधेछते पट जेवस्तुतेनोअभावथाय अने संपूर्णपटनीअपेक्षायेंकरी तंतुआजणातानथी तेमज एके कवृक्षनो ग्रहणकीधेछतें वननोअभावथाय अने सामान्यरीतें जोतां जूदाजूदा वृक्ष नोअभावथाय तेमकर्म्मोनी मूलप्रकृतिनो ग्रहणकीधेछते उत्तरप्रकृति जूदीनकहेवा

षणकरीमनेमनाववालागी पणमेंअहंकारनावशें शलटोसामो तेहनेकह्युंजे हेकपटी हेधूर्त तुंएटलो पंमितायीनोमोलमाहराआगल सुंराखेछे इत्यादिकवचने निर्भर्त्सना करी काढीमूकी.

तेवारें निराशथयीथकी नरसुंदरी महाडुःखीथयी जेम कमलनीने उखेडीनाखी होय अथवाजेम विद्यार्थीभ्रष्टथयली विद्याधरीहोय तेवीथकी महाचिंतातुरथयीथकी क्षणेकवारतो मंदिरना द्वारें सुनीथइजनीरही पछेचालवामांमयुं तेवारेंमें विचार्युंजे किहांजायछे एमविचारीहुंपण तेनीपछवाडेथयो एटलामां सूर्यपणअस्तथयो अनेअं धकारव्याप्यो नरसुंदरियेंतो एकशून्यघरेंजयी उंचोपाशबांधी पोतानागलामांघाली न गरदेवताप्रमुखने पोतानी हकीगतकहिने मारेदेखताज मृत्युपामि एटलामां विमलमा लानामे माहरीमातातेपण पछवाडेआवी तेणेनरसुंदरीनी एवीअवस्थादेखीने गलेपा शोदेइतेपणमृत्युपामि अनेहुंतो तेबेहुनोमरणदेखतोथको पणअहंकारमयीजथइरह्यो हतोतेथीमने पापात्मा अयोग्यजाणी मारोमित्र पुण्योदयनामा तेडुर्बलथयो एहवा मांकपिंजला दासी ते मातानीतथावहुनी शोधकरति तेपणतिहां शून्यगृहपासेंआ वी बेहुनीएहवी अवस्थादेखी तेणेपुकारकर्यो एटलामां चंद्रमानोउदयथयो लो कएकठाथया मनेपिशाचजेवोदेखीने अनेमातानी तथास्त्रीनी एरीतदेखीने लोकोयें माहरी घणीज निर्भर्त्सनाकरी केटलाकएमकेहवालागजे एकागडाने एहवीहंसणीस रिखीकन्या अथवा गधेडाने घोडीयोग्यनहति एमकहेताथका लोकमारीनिंदाक रेछे तेसर्ववातराजासांजलीने महाडुःखपाम्यो पछेतेबेहुना उत्तरकर्त्तव्यकरीमनेअ योग्यजाणी राजायें घरथीबाहेर काढीमूक्यो.

केटलाकदिवसपछे राजाने शोकनिवृत्तिथयी तेथी उद्यानेक्रीडाकरवा निकल्योछे एट लामां एकवृक्षनीचें धर्मसूरतितेजवंतमहाक्रियापात्र अनेकनव्यजीवोने तारवासमर्थ बहुसाधुनापरिवारें परवरयाथका एहवाविचक्षणनामे आचार्यने राजायेंदीठा तेनेप रमआनंदे प्रणामकरी राजाते आचार्य आगलबेठा एटलेवीजापण सर्वलोक वंदनाक री आचार्यआगलबेठा अनेहुंपण किहांकिहांथी नमतो नमतो तेसनामांआवीबेठो ह वेते विचक्षणनामा आचार्यें सर्वसनानालोक सांजलतां धर्मदेशनादेवानो प्रारंनकर्यो.

आसंसारते दावानलनीपरें प्रज्वलितथयीरह्योछे तेअग्निनेतो सिद्धांतवासनायें धर्मरूपमेघप्राप्तथयोहोयतो उपशमावी शकाय तेमाटेहेनव्योतमे धर्मनेविषे उद्यम करो इत्यादिकधर्मदेशना सांनलतां केटलाएकनव्यतो चारित्रमार्गने वांछवालागा ए टलामांराजायें आचार्यनेपुछ्युंजे हेमहाराज तमेएयौवनअवस्थामां शीरीतेंचारित्र

तथासमस्त समुद्रनापाणीथी धोताथकापण मलमूत्रथी उपनोस्वनावथीज अ शुचिवंत एहवुं शरीरतेपवित्रनथाय तोडुगलाशीकरवी एहवुंजेविचारकरे तेहनीसा थें डुगलानोजोरचालेनही.

तथाजे सत्यज्ञाननी नक्तियें सझायध्यानादिक पांचप्रकारें ज्ञाननो अन्यासकरे करावे अथवाअनुमोदे तेपुरुषने ज्ञानावरणीअने दर्शनावरणीयनामे एबेडुराजा प रानवकरीशकेनही वलीजेपुरुष सातक्षेत्रनेविषे धनखरचतोथको तथाआरहितथको ज्ञा नाचारादिकनेविषे वीर्यबलपराक्रमफोरवेले दानादिपराक्रमिहोय तेहने सातमोअं तरायराजाते परानवकरीशकेनही इत्यादिक सर्वमोहराजाना सुनटोनेजीतवाना उ पायले अनेतेनाजीतनारपणले पणजेम शैलेशैलेनमाणिक्यं मौक्तिकंनगजेगजे॥ साध वोनहिसर्वत्र चंदनंनवनेवने इतिन्यायात् तेमजेनव्यजीवसाथें मोहराजानोपरिवार सहित कांइजोरचालेनही तेवाजीवपणथोडाजले हवेतेवातसांनली प्रकर्षबोल्योजे हेमामाजी तेवाविधिवंतपुरुषकिहांवसेले तेउपरें विमर्श पोतानाजाणेजंने आसन्न सिद्धिआजीवनीवातकहेले.

जेअनादितथा अंतरहित समस्तवृत्तांतने उपजवानुंस्थानक एहवुं महामहोटुं नवचक्रनामे नगरले ते समस्तबाह्यनगर अनेअंतरंगनगरनो आधारनूतले तेनगरमांव ली बीजाघणानगरले अनेघणापाडाले घणाघर तथाघणादेहराले तेहां अनंता लोकवसेले तेनगरने अंतरंगपणकहियें तथाबाह्यपणकहियें तेनगरमां मोहराजा दिक सर्वनोजीपनार संतोषनामेमहासुनटपणतेहांवसेले तेहनासन्मुख जेतुरत मो क्षना जनारनव्य पुरुषतेवसेले तेवारें प्रकर्षेपुब्युंजे हेमामा सुंतेहांपणमोहराजादि कले तेवारें मामेकह्युंजे हा तेपणले केमके मोहराजादिकसर्वे योगशक्तिवंतले तेअने करूपेंकरी उत्कृष्टपणे नगरमां प्रवेशकरी सर्वलोकने जीपेले इत्यादिक मामानावच नसांनली प्रकर्षबोल्योजे मोहादिकनाजयनोकरनारजे संतोष तेहने तथा नवचक्रन गरने तथानव्यजीवोने जोवानोमनेमहोटोउल्लासले माटेतेनगरमनेदेखाडो तेवारें मामेकह्युंजे जिव्हानी मूलशुद्धीनेअर्थें आपणेनीकल्या हता तेहनीउत्पत्तितो आपणे जाणी जेरागकेसरीनोप्रधान विषयानिलाषले तेहनीपुत्री स्पर्शनादिकोनी न्हानीबेहेन रसनाले एटलुंतोजाण्युं तोहवेजांबोजवानुंसुंकामले फोकटनोकालक्षेपकरवोनही ते माटे जेकार्यकरवाआव्याहतेथयुं तोहवेपोतानेनगरेंजइयें तेसांनली नाणेजबोल्योजे हजीतो एकवर्षनीअवधिमां लमहिनाथयाले तेमाटेचालो कौतुकजोइयें एमनाणेज नाआग्रहथकी तेबेडुमामोनाणेज नवचक्रनगरजोवाने आगलचाल्या.

यनगरेआवी. पछेविकलेंद्रिय नगरेआव्या तेहांबेइंद्रियादिकत्रण पाडेरह्या तेदिवसनी एजिव्हास्त्री कर्म्मपरिणामराजायें तमने परणावीछे तेमाटे घणाकालनोसंबंध केमवी सारीमूकोछो इत्यादिक वातसांजली जडकुमरतो परमहर्षवंतथयी लोलतादासीसाथें जिव्हास्त्रीनेआदरी अनेविचक्षणकुमरतो कर्म्मपरिणामराजायेंज जिव्हास्त्रीदीधीछे एमजाणीने मननारागविना एनेलौकिकरीतेंराखी पणलोलतादासीनेतो राखीनही अनेजडकुमरतो लोलतादासीनेवशथयोथको द्राक्ष खजूरप्रमुख तथा दुध दधि घृत गोड सकर तथा मिष्टान्नभोजन शाक मद्य मांस मधु लविंगजाति फल तंबोल प्रमुखनी लालचनावशेंकरी जिव्हानी पुष्टीकरी हर्षपामें अने विचक्षणतो लौकिकरीतें जिव्हाने शुद्धआहारपोषे पण सरसआहारप्रमुखतो कारणविशेषेंजआपे नहिकांनआपे एरीतेंलोलतानो सर्वथासंगकरेनही एमजिव्हास्त्रीसाथें तेबेहुकुमरप्रवर्त्ततांथका लोकतो विचक्षणनी प्रशंसाकरवालागा केजूओ एविचक्षणकुमर स्त्री पाम्योछेपण सुखेमनेछे लिगारमात्र पण जिव्हानेवशथतुंनथी अनेजडकुमरतो शूधोजडजेवोजछे केमके जिव्हास्त्रीवास्ते धर्ममार्गमूकी महाआहेडाप्रमुखेंकरी पापकरेछे एमजडकुमरनी निंदाथवालागी.

हवेएकदिवसे जडकुमरे जिव्हानामेस्त्रीनी पुष्टिकरवानीवात पोतानीमाताआगलकरी तेवारेंमातायेंकह्युंजे हेवत्स एस्त्रीनलीछे माटेजेमलोलताकहेतेरीतें जिव्हा वहुतुंपोषणकरजे तेसांजली जडकुमरघणोज खाद्य अखाद्य पेय अपेयादिकेंकरी जिव्हानेपुष्टकरेछे हवेविचक्षणकुमर पण वहुनीइछाविनामात्र पेटभरवानेवास्तेजएजोव्हास्त्रीने संतोषुंछुं एटलीजवात पोताना मातापिता आगलकहि तेसांजली मातापितायेंकह्युंजे हेवत्स तुंभछुंजकरेछे तथापिएवहुनी उत्पत्तिजोइकाढजे तेउपरें विचक्षणकुमरें तेवचनप्रमाणकरी पोतानोसालोविमर्श तथा प्रकर्षनामा पोतानोजे चतुरपुत्रछे तेबेहुजणने एकवर्षनी अवधिकरी जिव्हानी उत्पत्तिजोवामोकल्या बाह्य नगरेंतो मामांनाणेजेंजोयुंपण केहांजिव्हानीउत्पत्तिमलिनही·

तेवारें अंतरंग राजसचित्तनगरेंगया तेहांजोयुंतोतेनगर ऋद्धिसमृद्धियेंपूर्णछे पण कोइमनुष्यदीठुंनही तेवारेंमामेंकह्युंजे मनुष्यविना एनगरखालीथयोथको ऋद्धिवंततो देखायछे माटेइहांकोइक भलोरखवालोहसेज एमकहेछे एटलामां दूरथकी एकपुरुष दीठो तेनीपासेंजइ जुहारकरी तेनुंनाम तथाआनगर केमखालीथयुं तेनीहकीगतपुछी तेवारेंतेबोल्योजे मारुंनाम मिथ्याभिमानछे अनेमोहराजासहित मोहराजानो पुत्र रागकेसरीनामेराजाते सर्वकटकलेइ संतोषनामाचोरउपरें चड्योछे तेवातने अ

पुरुषछे केटलाकवलीमद्यपानकरी पृथ्वीनेविषे लोटीरह्याछे केटलाकवली स्त्रीनेआश्र यीने गायनकरीरह्याछे एम मद्यपानकरता भमताभमता नगरनालोक ठेकाणेठेकाणे मांमवेबेगदीठा एटलामांवली महोटापरिवारेंसहितमहोटीऋद्धियें महोटे आमंबरें अनेकवाजित्रना निर्घोषथाते समुद्रनापूरनीपरें महोटाशब्दथाते छत्रचामरादिकें शोजतोथको चतुरंगणीसेनायेंसहित वली छत्रधरयोछेजेहने चामरादिकराजचिन्हवंत थको तेनगरनोराजा वसंतनीशोजा जोवानेआवतोदीठो तेदेखी विमर्श प्रकर्षनेकह्युं जे हेजाणेज आजोजे जे महामोहें रागकेसरियें विषयाभिलाषें जोगतृष्णायें तथा मकरध्वजें अने हास्यादिकें जीत्याजेलोकतेनुंआजडपणुं अज्ञानकारीपणुं अकार्यका रीपणुं चित्तविकलपणुं तेतुंजो कहेवोछे तेवारें प्रकर्षेपुछ्युंजे एसर्वलोक मोहादिक नेवशवर्त्तिथयीने चेष्टाकरेछे तेकेमजीताणाहसे तेवारें विमर्शमामो तेनेजीतवानी वातकहेवालागो अने प्रकर्षसांभलवालागो

कर्मपरिणामराजानीस्त्रीजे कालपरिणति तेहना १ हेमंत २ शिशिर ३ वसंत ४ ग्रीष्म ५ वर्षा ६ शरद एहवेनामे छऋतुरूप छसेवकछे तेवलीयथानुक्रमें कालपरि णतिदेवीनाआदेशें जवचक्रनामानगरे मानवावासक्षेत्रमांआवीने पोतानावारानी मर्यादानेविषे पोतपोतानीआज्ञाप्रवर्त्तावेछे जेवारें वसंतऋतुनोवारोहोय तेवारें म हादेवीपण तेहनेज इहांमोकले पणजेवारें वसंत महादेवीनी आज्ञायें जवच क्रनगरमाहेला मानवावासनामे नगरें आवे तेवारें मोहराजातेपण वसंतनोवल्लभ मित्रजे कामदेवतेहने पोतानाप्रतापनीवृद्धिनेअर्थें तेनगरेंमोकले अनेपोते तथा स वैसैन्य कामदेवनीसाथेंथाय तेमाटेवसंत हमणाइहां आव्योछे अने मकरध्वजजे रा जाथयीआव्योछे तेणेएसर्वलोकने जीत्योछे अने मोहराजाप्रमुखनेवशवर्त्तिकीधाछे वलीमोहराजादिक तेपण विचविचमांरूडीरीतेंआवीने पोतपोतानेअवसरें पोतानो व्यापार देखाडसे पणमोहराजाप्रमुखसर्वे योगशक्तिवंतछे तेथीसाक्षात् देखातानथी अनेमामेकह्युंजे माहरीपासेंविमलालोकनामे योगांजनछे तेथीहुंएसर्वनेदेखुंछुं अनें हे प्रकर्षतुजनेपण एनादर्शननो जोअभिलाषहोयतो एऔषधनुं अंजनकर एमकही नाणेजने अंजनकर्युं तेहनाअनुजवथी जेहवुं मामेकह्युंहतुं तेवुंजसर्वप्रकर्षेपणदीठुं तेदेखीप्रकर्षबोल्योजे हेमांमाजी तमेंतोविस्मयरूप महोटुं कौतुकदेखाड्युं तेवारें विमर्शबोल्योजे एतोथोडुंजकौतुकछे पणहजीतोए जवचक्रनगरें घणुंकौतुकदेखसुं हवेवली प्रकर्षबोल्योकें जेवारें वसंत मानवावासनगरेंआवेछे तेवारें मोहराजा कामदेवने तेहिज नगरनुंराज्यआपेछे अनेपोतें तेहनो परिकरजूत थयीने कामदेव

वेढुजणे शोकनी एटलीवातसांजलीपुढचुंजे एनगरनो तुंअधिकारीठोके. तेवारें शोकें कह्युंजे आनगरनो अधिकारीतो मतिमोहनामेठे पणतेमहारोपरममित्रठे तेमाटेह मणाज महाअटवीमां मोहराजानुं तथा रागकेशरीनुं अने द्वेषगजेंद्रप्रमुखनुं सैन्य सर्वमूकी मित्रनेमलवा आव्योछुं एरीतें ते मामानाणेजें तेशोकनीवात सांजली शो कनेजुहारकरी तेहांथीपवनवेगें चाल्या मार्गमां चित्तव्यापाररूपणी अटवीदीठी तेअट वीनेजे मिथ्यारीतें सेवनाराजीवोतेने तो महाअनर्थनीदेवावालीठे तथा सम्यक्रीतेंसे वताथका अनंतसुखनीदेवावालीठे तेअटवीमां निद्रातथातंद्रारूप जेषमेंसोजति कथा यरूपजलनीवहेनारी तथाविकथारूपठे प्रवाहजेहनुं वली विषयरूपकल्लोलने उछाल ति अनेहास्य विभ्रमादिक जलचरजीवेंशोजति अज्ञानीजीवोने खेंचीलेइजनारी एहवी प्रमादपणारूप महानदीदीठी तेएक राजसचित्तनगर अनेबीजुं तामसचित्तनगर एबेन गरथी निकलीने संसाररूपसमुद्रमांजयी निलेठे तेनदीनातटें जोगसेवादिकनेवशें चि त्तशून्यपणे कांईपण गुरुनीहितशिक्षाने नमानतो एहवो चित्तविक्षेपनामें मंमपदीठोते मंमपें तृष्णारूपवेदिकादीठी तथा विपरीतमतिरूप सिंहासनदीठुं तेनाउपर महामोह नामेराजा बेठेोहतो तेदेखी जाणेजें मामानेपुढ्युं जेहेमामाजो आमोहराजानुं सर्वसैन्य मने उंलखावो तेवारेंविमर्शेकह्युंजे हेप्रकर्षजाणेज हुंकहुछुं तुंसावधानथयीसांजलजे.

आमोहराजानेपासेजे कालेवरणेबेठोठे तेमोहराजानोवजीर मिथ्यात्वनामे आ सर्व सैन्यने जालवीराखनारोठे एमिथ्यात्वनेवशें जीवरागादिकदोषें संयुक्तथायठे जेई श्वरादिकदेवने देवकरीमाने अनेहिंसामृषावादादिक सर्वजेअढारदोष तेथीरहित एह वोजे अवितराघवदेव तेहनेदेवकरीनमाने तथा परिग्रही आरंजी उत्सूत्रजाषी तेहने गुरुकरीमाने अने पंचमहाव्रतनापालक शुद्धोपदेशनादेनार तेहनेगुरुकरीनमाने त थासुवर्णादिकदान पंचाग्न्यादिसाधन माघस्नानादिक जेअज्ञानकष्ठ तेहनेधर्मकरी माने अनेपूजा प्रतिष्ठा सुतीर्थयात्रा संघवात्सल्य सम्यक्तमार्ग देशविरतिमार्ग सर्वविर तिमार्ग प्रमुखनेधर्मकरीनमाने तथाश्राद्ध संवत्सरीप्रमुख यागादिकें धनखरचेतेरुडा करीमाने अनेजिनबिंबादिक सातखेत्रेंधनवावरेते रुडाकरीनमाने तथाजैनमार्गथी व्यतिरिक्तजे पांचेदर्शन तथानिन्ह्वमार्गआदरे अनेजीव अजीव पुण्यपापआश्रव संव र निर्जरा बंध मोक्षरूपजे नवतत्वते सद्दहेनही एसर्वेमिथ्यात्व वजीरनावशरह्याथी थाय तथामोहराजाने जमणेबाजु जेबेठोठेते एमोहराजानो वृद्धपुत्र महाअतुल्यपरा क्रमी तथा कामराग स्नेहराग अने उन्मार्गग्रहणरूपजे दृष्टिराग एत्रणेपुरुषें परवस्यो थको रागकेसरिनामेराजाबेठोठे तथाएनीजपासेजे मूढपरिणामरूपस्त्रीबेठीठे तेएराग

तेवारेंमामें नाणेजनेकह्युंजे हेपुत्र जोआप्रगटजूत देषगजेंद्रनो महिमा कहेवो छे तेसांजली नाणेजेजोवामांडयुं एटलामांज रिपुकंपनने वृद्धनाइने खड्गेकरीहण्यो तेथी कोलाहल हाहाकारथइरह्यो तेवारें विमर्शेकह्युंजे जोआमद्यपाननीरीत कहेवीछे जेमद्यपानकरे तथापरदारावांछे एहवाअनर्थकरनारने एहवीएहवी विटंबनाओथाय तेमाटे नलापुरुषें मद्यपान तथा परदारागमन परिहरवुं.

हवेरिपुकंपनपोतानानाइनेहणीने पोतेराजाथयो देशनेविषे पोतानीआज्ञाप्रवर्त्तावी तेवारपछेतेजनगरमांते मांमानाणेजने कौतुकजोताज केटलेकदिवसें मिथ्याभिमान तेरिपुकंपनने आवीमल्यो एटलामां रिपुकंपननीबीजीस्त्री जे मतिकलितातेणे पुत्रप्रसव्यो राजानेवधामणीआवी राजायें मिथ्याभिमाननेवशें मुकुटकुंमलादिक सर्वाभरण वधामणीनी देनारीदासीने आप्या राजमंदिरसमराव्युं गामगामें हर्षसहित महोत्सवमंमाव्या घणोअहंकारधरवालागो अनेविचार्युंजेअहोमहारो भाग्योदयक हेवोछे जेसमकालें राज्यनोलाभथयो अनेवली पुत्रनोपणलाभथयो.

एसर्वे मामोभाणेजजुएछे एटलामां क्षणेकवारें वली मतिमोह अने शोकएबेहु सुभटने राजमंदिरमांप्रवेशकरतादेखीने प्रकर्षे पुछ्युंहेमांमा एमतिमोह अनेशोक एबेहुकिहांजशे तेसांभली विमर्शेकह्युंके हमणाए राजमंदिरमां जइने सुंतमासोकरेछेते तुंजोजे एटलामां एकदासीयें राजानेआवीकह्युं जेहेस्वामी पुत्रनेघणोरोगउपनोछे तेसांभली राजाजेहर्षधरतोहतो तेसर्वेजतुरह्युं अने मतिमोह तथा शोकएबेराजाना शरीरमांपेठा तेथीराजा दुःखाक्रांतछतो रुदनकरतो पुत्रसमीपेंआव्यो अने अनेक यंत्र मंत्र तंत्र औषधकराव्या तेसर्वेउपायजेम कलरनीजमीनमां वर्षादनिःफलथाय तेम निःफलथयां क्षणेकेंराजानेदेखतांज बालकमृत्युपाम्यो तेहथी राजा अने राजानी स्त्रीबन्नेजणा मतिमोहनावशथकी इंटनेविषे मस्तकनुंफाडवुं तथा हृदयनुंकुटवुं इत्यादिकेंकरी मूर्छितथयी मृत्युपाम्या तेथीराजानुंकुल सर्वशोकातुरथयुं तेवारेंमामें भाणेजनेकह्युं के जोआभवचक्रनगरनाकौतुक केहवाछे.

प्रकर्षपण आश्चर्यंकरी सहितथको खेदवचनेकरी मोहसैन्यना भागविलासनी वातोकरतां तेहांथीवली मामोभाणेज बन्नेजणा आगलचाल्या एटले जेहांहाटनी श्रेणीछे तिहांकौतुकजोवानेअर्थे आव्या तिहांएकमहोटा हाटनेविषे एकव्यापारी घणो व्यापार करतोथको हाटेंबेठोदीठो तेहनाआगल घणावाणीआनापुत्रो लखता वांचता तोलतां वेचता लेताइत्यादिकव्यापारनीक्रियाकरेछे विविधप्रकारना रत्न मणि माणिक्य सुवर्ण रूपुंप्रमुखना अंबार एटले ढगला नखापडयाछेतेदेखीने प्रकर्षे विम

चारप्रकारनीमाया अनेचारप्रकारनोलोन एआठबालकते रागकेसरीराजाना पुत्रोछे मूढतानामेराणीनी कुंखथीउपनाछे एरीतेंए सोलेकषायतेमहामोहराजाना पोत्रा जाणवा एरीतें एनुंस्वरूपसामान्यप्रकारेंकह्युं वली विशेषप्रकारें एहनोअचिंतनीय शक्तिपणारूपसरूपकहेछे.

तथाआवलीरागकेसरीनामेराजानेपासेंजे बेठोछे जेहनुं मुखतंबोलेंकरीशोनितछे सुगंधिकमलनो गंधलियेछे तथापासेबेठली नोगतृष्णानामेस्त्रीनाकंठनेविषे थापीछेबा हुजेहने तथा आलिंगनआपेछे अनेनोगतृष्णानाज मुखनेसन्मुखजेऐपोताना लोचनथाप्याछे तथास्त्रीना नेउर कंकणादिकना अवाजेकरीसर्वदिशिनेजीतीछे तेहनेविषेजदीधाछे समकालें बेहुकानजेणे तथा हावनावादिकना मधुरस्वरसांनलेछे समकालें पांचेइंद्रियना विषयने नोगवतो एहवोए विषयानिलाषनामेप्रधानछे अनेए नापासेजे एनीस्त्रीबेठीछे तेनोगतृष्णानामेछे.

एविषयानिलाष पोतानीस्त्रीयेंकरीसहितथको नक्ष्यानक्ष्ययोग्य पीवानपीवायोग्य हिताहित कार्य अकार्यादिकेंकरी सर्वलोकने विकलनाववंत कर्याछे यगत्आंधला नीपरें चेष्टाकरेछे एहवोएअत्यंत शक्तिवंत जाणी रागकेसरीराजायें सर्वराज्यकारनां रमां एनेमुख्यप्रधानकर्योछे तथास्पर्शनादिक पंचेंद्रियजे पूर्वेंकह्या ते एविषयानिलाषनाज पुत्रोछे अनेजेप्राणी एविषयानिलाषने वशेंपडेतेप्राणी डाह्याछतां मूर्खथाय चारित्रवंतछतां अचारित्रिओथाय धीरपुरुषनेकायरकरे एमएविषयानिलाषनो वर्ण वसांनली प्रकर्षबोल्योजे हेमांमाजी एनेतोमेंतमाराकह्याविना एनावीर्यनुंस्वरूपदेखतांजजाणीलीधो केमके नितिशास्त्रमांकह्युंछे रूपतोज्ञायतेजाति जातेःशीलंशुनाशुनं॥ शीलाद्गुणाःप्रकाश्यंते गुणैःसत्वंमहाधियां॥१॥ तेसांनली विमर्शबोल्योजेहे प्रकर्षतुं बुद्धिनो तथाविचक्षणनोपुत्रछो माटेएनुंस्वरूपजाणीजाय तेमांकांइ महोटीवातनथी तोपण एमोहराजाना सैन्यनास्वरूप बाकीरह्याछेते टुंकटुंकु माटेसावधानथयी सांनलजे.

आमंडपमांजे कुविकल्प अनेउष्टनावादिक उनारह्याछे तेसर्वेमोहराजाना गोत्रीछे तोपणतेमोहराजाने पोतानाकुलमां उत्तमजाणीने स्वामीपणेकरी सेवेछे माटेसुनटछे तथाआमोहराजानेपासे पोतपोताना परिवारसहित जेसातपुरुषबेठाछे तेमोहोटापराक्रमवंतदेखायछे तेमांप्रथम ज्ञानावरणीकर्मनामेराजाछे तेपोतानाअंगनूतछे ते. १ मतिज्ञानावरणी २ श्रुतज्ञानावरणी ३ अवधिज्ञानावरणी ४ मनपर्यवज्ञानावरणी ५ केवलज्ञानावरणी एपांचेमनुष्य परवश्योथको पांचज्ञाननेआवरेछे लोकने अज्ञानेकरीआंधलाकरेछे तथाआवीजो राजाते दर्शनावरणीकर्मछे ते १ निद्रा

रिखोपण सोभापूर्वक भाऊतंबोळादिकलेइने कोणपुरुषजायछेअने एकिहांजतोहशे तेसांभळीमामो तेपुरुषनीवातकहेछे जे.

एसमुद्रदत्तनोपुत्र रमणनामे एनगरनी वसनारी गणिकानेघरेरहीने तेव्यसनमां आधीनथयीने पोतानापितानो असंख्यद्रव्यहतुं तेसर्वेनुंएणे नाशकर्युं फरीलोकना घरे चाकरीकरतां आजीविकाचलावेछे आजतोकिहांकथी काइकद्रव्यपामिछे एटले वळी तेद्रव्यखरची नवोपहेरवाशकरी शरीरनेशोभावी मदनमंजरीनामे गणिकानी पुत्रीकुंदलतानामेछे तेहनीपाशेजायछे तेणेआगलएरमणनुं द्रव्यसर्वे खरचाव्युंछे पछे दलिद्रीथयो तेवारेंमुआसरिखोजाणीने काढीमेल्यो तोपण वळीआजे भोगवांछ नायें कामेहण्योथको तेहांजायछे तोचालोहवे आपणेपणतेहां एनुंकौतुकजोवा ज इयें एमकहिते बन्नेजण तेनीपछवाडेथया गणिकानेघरें आव्या एटले विमर्शेनाक मरडी माथुंधुणी नाकआडुं वस्त्रदेइ खेदेकरी प्रकर्षनेकह्युंजे आगणिका अशुचीनी कोठी विष्टायेपरिपूर्ण जेनाबारेद्वारथी अशुचिनीकलीरहीछे दुर्गंधउछलेछे विष्टामूत्र कृमियाजीव नस मांस हाड श्लेष्म गात्रआदिदेइने अपवित्रवस्तुयें व्याप्तछेअंतरजेहेनुं

पणकृत्रिम पुष्पगंधादिकें क्षणिकक्षयरूप शोभाउपजावीने कामेकरीअंधथयाएहे वाजे कामीपुरुषतेने मोहउपजावेछे एहवुंसांभळी प्रकर्षकहेछे अहोइतिआश्चर्य एदु र्गंध असहेवायोग्यछे ते आपणाथी नखमाय माटेआपणेबाहेरजइयें पछेतेबन्नेज ण मंदिरबाहेरनीकलीने कौतुकजुएछे एटलामां रमणते वेश्यानामंदिरमांगयो तेणे मदनमंजरीनेदीठी मदनमंजरीयेंपण पूर्वेंतोकाहाडीमूक्योहतो तथापिहमणाकांइक वळीरुडीभोगवस्तु एनीपाशेजोइने कपटवचनेकरीकह्युंजे अहोस्वामिपधारो तमेजेदि वसथीगयाछो तेदिवसथीमांडीने म्हारीपुत्रीजे कुंदलतिलकाते तमारेविरहें जेमपा णीथी विछूटी माछलीहोय तेहनीपरें महादुःखपामिहति इत्यादिकवचनें घणोकप टरागदेखाडो कह्युंजे हे रमण हमणाराजपुत्र चंदनामेंइहांआवसे तेमाटेइहां तमे हाल एकमुहूर्त्तमात्र प्रछन्नपणे बेशीरह्यो एटलीवातकरेछे एटलामांज राजानोपुत्र चंदआव्यो तेथीरमणना शरीरमांभयनामेमोहराजाना सैन्यनोमनुष्यपेठो तेवारें चंद राजपुत्रेंरमणनेदीठो तेथीक्रोधेंव्याप्यो हाथमांछुरीलेइने रमणना नाक तथा कानछे दिनाख्या एकआंखफोडीनाखी लातोमारी बाहेरकाढीमूक्यो मदनमंजरी अने कुंद लतिलकापण विचित्रप्रकारनी उपहासकरी घरथीबाहेरकाढीने खडखडहसवालागी हवेरमणनेवळी तिहांपण चंदनीआज्ञायें सुभटपुरुषोनीनिवडलाकडीमूठीप्रमुखेकरी मारखातोथको मृत्युपाम्यो एहवोतेनोवृत्तांतदेखीने विमर्शेकह्युंके जोवत्स आगणिका

य अनेउत्तरप्रकृतिनी विवक्षानेविषे मूलप्रकृतिनपामियें इत्यादिप्रकारें सामान्यविशे षरीतें जैन सर्वपदार्थने ग्रहणकरेछते सर्वसमजावनेपामे एमकही.

विमर्शबोल्योजे हेनाणेज एसातराजामां त्रीजो चोथो पांचमो अने छठो एचार राजातो केटलाकनेदुःखआपे अने वली केटलाकने सुखपणआपेछे जेमशरीरादिकना योगथी व्याघ्रादिकहिंसाकरेछे अने साधुजनते एजशरीरादिकना योगथी जीवरक्षा करेछे इहांकेटलाक अज्ञानी केवलीने जीवघात कायादिकने हालवेकरीमानेछे ते मिथ्याजाणवुं जोहालवा चालवाथी जीवघातमानियेंतो केवलीने जीवघात निरंत रपणे मानवीजोइयें तेवाततोमलतीनथी जो व्याघ्रादिकपण निरंतर जीवघातना करनार कहेवातानथी तोकेवलीने निरंतरजीवघातक शीरीतेंकहियें तेमाटे सत्तहिं गणेहिं केवलीजाणेज्ञा तंजहा नोपाणेअइवाइत्ता इत्यादिक श्रीठाणांगसूत्रनावच न तथा जैनमतनी प्रक्रिया सांचववामाटे जे केवलीते निर्दोषजमानवा.

तथावली विमर्शबोल्योजे पहेलो बीजो अने सातमो एत्रणराजाते सपरिवारें मोहराजासाथें मलीने सर्वजीवने एकांतें विडंबनाआपेछे एटले इग्यारमांगुणठा णासुधी मोहराजानीसत्ताछे तेहांसुधीतो जीवघातथायछे इत्यादिकमामाना वचन सांभलीने प्रकर्षबोल्योजे हेमामाजी एमोहराजानुं सैन्यजेहने पराभवकरीशकेनही एहवाकोइभवजंतुहशे तेवारें विमर्शबोल्योजे एहवापणछे जेजीव निर्मलचित्तवंतहोय तथाधीरपुरुषहोय तथा अनादि अने अंतरहित संसारसमुद्रनेजाणी दुर्लभमनुष्यभ वपामि सद्भूतभावें अप्रमत्तपणे प्रवर्त्ते तेहनीसाथें मोहराजा तथारागकेसरी प्रमुख कोइनोजोरचालेनही तथाजेप्राणी पाणीनापपोटानीपरें जीवतव्यजाणी अनेअशुचि रोगादिकें ग्रस्त क्षीण विनासी एहवुंशरीरजाणी यौवन संध्यारागसमानजाणे अनेवि षयसुखने किंपाकफलनीपरें पहेलातोसुंदरहोय अनेपछे अतिदारुणदुःखदायीजाणे वलीसज्जनकुटुंबनोसंबंधते पक्षीनामेलासरिखोजाणीने जीवितव्यतथा शरीर धनादि कनेविषेजेपुरुष अनित्यपणोभावे तेजीवसाथें मोहराजातथा मोहराजानीस्त्रीजे महा मूढतानामेछे तेबन्नेनो कांइजोरचालेनही तथा शोक भय हास्यादिक अने रागद्वेषा दिकनोपण कांइजोरचालेनही तथा जैनप्रक्रियायेंज जेणेआत्माशुद्धकर्योहोय तेहनी साथें मिथ्यात्वनामेप्रधानतथा मिथ्यात्वनीस्त्रीजे कुदृष्टितेहनी शक्तिनोप्रचारचालेनही.

तथास्त्रीना शरीर ते मलमूत्र रुधिर मांस हाडेकरी भर्याहोय एवुंजाणी स्त्री थीविपरीतअशुचि भावनायेंकरी भावितमने प्रवर्त्ते तेपुरुषजोस्त्रीसहितहोयतोपण तेहनीसाथें कामदेव तथा तेनीस्त्री रतिनामेछे तेबेहुनोजोरचालेनही.

छे हेपुत्रएनवचक्रमध्येज ललितांगपुरनामेनगरनो स्वामि ललनानामेराजाछे एनेष एणेआहेमोप्रियछे एरात्रदिवस निरंतर आहेडोकरतोकरतोजफिरेछे एणेराजकार्य सर्वेविशारीमूक्याछे प्रधानादिकें घणुंवाख्योतोपण एणेआहेडोमूक्योनही तेवारें प्र धानादिकें राजकरवाने अयोग्यजाणी एहनापुत्रने राज्यथापी एहनेनगरबाहेर का ढीमूक्योछे तेथीएललनराजा सुखतलायें घणुदुःखीथायछे तथापि मांसनेलोभें आ हेडोमूकतोनथी आहिंपणकुटुंबधनादिकथी भ्रष्टथयो वलीपरभवेपण नरकादिकग तिप्रतेंपामशे अनेजेपुरुषने मांसभक्षणनीवांछाहोय तेहनेसर्वथाधर्महोयजनही ते इहलोकें परलोकेंघणुदुःखपामे एरीतें मामोभाणेजवातकरेछे एटलामां ललनराजा जे शृगालनीपछवाडे अश्वदोडावतोहतो तेशृगालतोनासीगयो अने एनीदृष्टीसीधा लउपरहती तेथी आगल एकखाडोआव्यो तेनाउपर एनोध्यानरह्योनही एटलामां घोडो अगाधऊंडांखाडामाजइपडयो तेहांललनराजा चंपायीने क्षणेकमां मृत्युपा म्यो एटलेंविमर्शें प्रकर्षनेदेखाडयुंकेजो आहेमाकरवाना फल तेमाटेजे सदाइं परि णामें उत्तमपुरुषहोय तेणेमांसभक्षण तथा आहेडोवर्जवुं धर्मतोआज्ञापूर्वकदयायेंछे

एहवामांवली कोइकपुरुषने जमराजानादूतसरखा राजानामाणसोये तेहनी जीभने उखेडीनाखीने गलामां तपावेलासीसानोरस पीवरावेछे तेदेखीने प्रकर्षें विम र्शनेपुछयुंजे हेमामा आकोणपुरुषछे एतोकोइ अपराधिपुरुषजणायछे माटेज एह नागलामां तपावेला शीसानोरसढोलीने एनेपीडाउपजावेछे तेवारेंमामोकहेछेजे एच रणकपुरनगरनो वसनारो महाधनवंत सुमुखनामेव्यापारीछे पणतेबालावस्थाथीज स्त्रीकथा देशकथा राजकथा भक्तकथा एचारकथारूपचारेंविकथानेविषे अतिआस क्तवंत महावाचाल तेथीकरीलोकें एनुंनामदुर्मुखदीधुंछे एकदिवसे एनगरनोराजाती व्रनामेछे तेनेकोइकपोताना दुसमनसाथें संग्रामथयो तेराजावैरीनोजयकरी पोता नानगरमांआवेछे एटलामांएदुर्मुखें गाममांएहवी अफवाकरीछेजे राजाहारीगयो अनेवैरीजीतिगया माटे जेहथीनसाय तेनासीजाओ नहीतोसर्वेलूटासो एवातसां भली सर्वेनगरनालोकेंनासवामांडयो नगरशून्यथयुं एहवामां तीव्रनामेराजा शत्रुने जीतीने जेवारें पोतानानगरमांआव्यो तेवारें लोकोपणराजानाआववाथी हर्षवंत थका नगरनेविषेपाछाआव्या अनुक्रमेराजायें नगरमांभयपेशवानुं कारणपूछेथके को इकनामूखथकी बीकउपजवानुंमूलएदुर्मुखहतो एवुंजाणी क्रोधेंकरी राजायें पोताना सेवकोने आदेशकर्युंके जेजीभेकरी एदुर्मुखेकह्युं तेजीभनोमूलथी उन्मूलनकरीनाखो

मार्गेचालतां नाणेजेंपुब्युंजे हेमामासांनलियेंछेयेंजेकर्मपरिणामराजा महावीर्य वंत कहेवायछे तोते महामोहादिकथीपणबलवंतहशे किंवामहामोहतेहिज कर्मप रिणामराजाछे एमएबेमांशोभेदछे तेवारें विमर्शबोल्यो के जे कर्म्मपरिणाम ते मोह राजानो वृद्धनाइ सर्वकार्यनोअधिकारीछे पणतेकर्म्मपरिणामने घणुं नाटकप्रियछे अनेमोहतो चोरटोछे केमके संग्रामनेविषे रसिकथको जेहने तेहनेजीपतोफिरे तेमा टेज चित्तवृत्तिरूप अटवीमांनिवासकरीने जगतनेफसावेछे पणमोहराजानुंजेसैन्य तेजसैन्य कर्मपरिणामराजानुं पणसमजवुं तथाकर्मपरिणामतो जीवनेजेमकष्टआपेछे तेमविचविचमांसुखनोलेशपणआपेछे सारुं अथवा मातुं एबेहुकार्यकरे अनेजेमोहरा जातेतो निःकेवलडुःखनोजदेवावालोछे मातुंजकरे तथामोहराजा तेकर्मपरिणामनो न्हानोनाइथाय माटेतेसर्वप्रपंचकरतोफिरे अनेकर्म्मपरिणामराजा स्त्रीयेंसहित नाना प्रकारेनवजंतुना नाटकोप्रतें जोतोथको सुखेंबेगेराज्यकरेछे अने राजसचित्त तथा तामसचित्तनामे जेबेअंतरंगनगरते मोहराजाने नोगववामाटे कर्मपरिणाम राजायें आप्याछे अनेचित्तवृत्तिनामेअटवीनों राजातोपोतेनव्यजीवजहतो पणसकर्मकजे संसारीजीव तेहने एमोहादिकें बलवंतथयी दूरकरीने चित्तवृत्तिअटवीनोराज्य पोतानेहस्तककर्युंछे तथाबीजा एबेनगरनोगवेछे पणएहोने राज्यनोगवतां केटलोका लथयो तेकेवलज्ञानीजजाणे अने एमांजे कर्मपरिणामराजाछे तेतोलेवामां तथा आपवामां बेवातेंसमर्थछे तथासर्वनाउपरचालनारोछे अनेमोहराजातें कर्म्मपरिणा मराजायेंदीधुंजेकटकतेलेइ लोकनेजीपी कर्मपरिणामराजानोज नंमारवधारेछे.

इत्यादिकवातोनाविनोदेकरी मार्गउलंघवानो श्रमपणतेनाजाणवामां आव्योनही एमजताथका मामोअनेनाणेज बेहुजणनवचक्रनगरेंआव्या एहवामां कामदेवनोमि त्रजे वसंत तेपण तेहिजनगरेंआव्यो तेवारें उद्याननेविषेनवानवाउपनाजेकुंपल तेना विकस्वरवंतसमूह तेवलीअतिसूक्ष्म अनेअतिसुंदरछे वलीसुखकारीवायुयें प्रबलपणे फलनासमूहनेंकंपाव्युंछे वलीआंबानीमांजरनेपामिने उन्नमतजे कोकिलानोसमूहते णे मधुरस्वरेंकरीने वन्नखंडनीनूमिनेवाचालकरीछे वली वृक्षफल्याछे वेलडीओपुष्पव त्नीथयी वलीनहीमंदएहवोजेमकरंद तेहनाआस्वादेकरी हर्षवंतअनेउन्नमतथयीजेन्न मरानीश्रेणी तेहनोजे जंकारशब्द तेणेकरीमनोहरकर्युंछेवन्नखंमनजेणे तथावनवासी प्रमुखफलफूलनी छायायेंकरी गंनीरथयुंछे इत्यादिक वसंतनीशोन्नादेखीमामेंकर्युंजे हे प्रकर्षनाणेज चालोआपण आवसंतनीशोनाजोइयें तेवारेंनाणेजेंकह्युंनलुं हवेतेबेहु जणाजूएछे तोवन्नमां स्थानके स्थानकेंबांधीने मद्यपाननी गोष्ठीवंत एहवा केटलाक

वेंपरिवारपण रुदनकरवालागो तेवारें प्रकर्षेंपुछ्युंजे हेमामा नवचक्रनामानगरनो एरूपस्यो जेक्षणेकहर्षपामे अनेक्षणेक विषवादपामें तेवारेंमामोकहेछे ते हेप्रक र्षतुं एटलोआश्चर्यसुंपामेछे एबाह्यलोक मोहनेवशें राज्य धन पुत्र मित्रादिक पामि क्षणेकमां महोटोहर्षपामेछे विश्वने तृणसमानगणेछे अनेक्षणेकमांवलीतेहिज वस्तु नाशपामेंछे तेवारेंवलीघणो शोकअनेविषवादादिकधरेछे एसर्वेमूढपणाना लक्षण छे अनेजे विवेकीपुरुषछे तेतोधनादिकअनित्यवस्तुनेपामवाथी तथानाशथवाथी ह र्षअनेशोकपण नथीकरता एमकहीने वलीविमर्शेंएहवुंकह्युंजे हेवत्सतुजने प्रत्येकें प्रत्येकें नानाप्रकारना आश्चर्यमय एनवचक्रनगरना केटलाक कौतुकदेखाडुं तेमाटे संक्षेपेंजनवचक्रनगरनुं स्वरूपजाणवानो उपायतुजनेकहुंछुंतेसांजल.

यद्यपि एनवचक्रनगरते अनेकनगरेंकरी संयुक्तछे तथापि १ मानवावास २ वि बुधालय ३ पशुसंस्थान ४ पापिपिंजर एचारनगरते महोटाछे बीजासर्वेनगर एमां अंतरगतछे तेमाटेएचारना देखवाथीज सर्वेनवचक्रनगरनुं स्वरूपजणासे तेहमां प्रथमए मानवावासनगरनालोक तेहने मोहादिकें घणुंपीरुयोछे केटलाकसुखी अनेकेटलाकदुःखी केटलाक हर्षवंत अनेकेटलाकविषादवंत केटलाकरागेंकरी आ सक्तछे अने केटलाकद्वेषेंकरी तप्याछे कोइकसोजागी कोइडुर्जागी इत्यादिक विविध प्रकारना लोकदेखायछे तथाविबुधालयनगरना लोकोपण रत्नमयविमानो अने पु ष्करणीवाव्यो तथा कल्पवृक्षादिकनाजोग अने देवांगनानाविलासेंकरी तथा चिंत वितसमकालें उपनाजेवांछितजोग तेणेंकरी सातावेदनियने अनुजवताथकाछे त थापि इर्षा शोक जय लोज क्रोधादिक तिहांघणाछे तेहनाप्रयोगेंकरी तेनगरना लो कपणसर्वे मोहराजायें विटंब्याथकादेखायछे तथापशुसंस्थाननगरें तो क्षुधा तृषा उद्वेग दाह जयप्रमुख तथामनुंपरवशपणुं इत्यादिक अनेकरीतना दुःखेंकरी स र्वेलोक मोहादिकेंपीडयाछे केमके तेनगर कर्मपरिणामराजायें अशातावेदनीयना सुजटने निरंतर जलाव्युंछे तथा पापीपिंजरनगरें अवतरेला लोकतो निरंतरनिवरु दुःखें नित्यदुःखीजछे केमके तेनगरनालोकने परमाधामिओ तपाव्या त्रावानारस नुं पानकरावे तथा मुज्जरेंकरीमारेछे लोहनायंत्रेंकरी पीडेछे अग्निमां पचावेछे वेतर णीनदीमां वहेरावेछे तरवारेंकरी कान नाकप्रमुखछेदेछे करवतादिकेकरी वहिरेछे तथाएनगरना उपराउपरें सातपाडाछे अनेतेसर्वेपाडापाडाना लोकमोहादिकेंपी डयाछे एकपाडाथी बीजापाडानालोक अधिकअधिक दुःखेंपीडयाछे तेदुःखकेवली विनाबीजोकोइ कहेवानेसमर्थनथी एमजवचक्रनगरना वसनारसर्वेलोक तेणेसंतोष

नीपठवाडे आवेछे अनेवखतउपर पोतानोव्यापारकरतोदेखायछे तेम रागकेसरीनामे राजा अने विषयाभिलाषनामेप्रधान तथाभोगतृष्णानामे तेहनीस्त्री इत्यादिकतो स वैंइहांपोतानाव्यापारें प्रगटदेखायछे पणद्वेषगजेंद्रादिक तथाशोकादिक केमदेखाता नथी तेसांभली मामोबोल्योजे हेप्रकर्ष तेद्वेषगजेंद्रादिक पणइहांजछे तेहमणागु सरह्याछे पणपोतानाअवसरें प्रगटथासे तेवारेंवली प्रकर्षेंपुछ्युंजे हेमामाजी मोह राजाप्रमुखजो इहांआव्याछे तो चित्तवृत्तिअटवी खालीथयीगयीहशे तेवारेंमामेंकह्युं जेएमोहराजप्रमुखसर्वे इच्छारूपीछे जोचिंतवेतो अनंतरूपकरीशके माटेतेहांपण ए हिजछे अनेइहांपणएहिजआव्याछे.

एममामोभाणेज वातोकरेछे एटलामां अतिलोलाक्षनामेराजा आव्योछे तेहा थीथीउतरीने चंडिकानामेदेवीनामंदिरमां जइ देवीने मद्यादिकेंसीची तृप्तिवंतकरी तेवारपछे मद्यपानमंडपें आवीपरिवारसहितबेगो सुवर्णना रत्नजडितपात्रेकरी मद्य पानकरेछे अनेसर्वेपरिवारपण मद्यपानकरी नवानवाप्रकारनी चेष्टाओकरेछे एटला मां लोलाक्षराजानो नानोभाइ जे रिपुकंपननामे तिहांबेगोहतो तेणे मद्यपानकर्युंह तुं तेणेकरी परवशथयीने पोतानी रतिललितानामे जेस्त्रीहती तेहनेकह्युंजे तुं नाट ककर तेवारेंतेस्त्रीयें जेठनी तथा लोकनीलज्जामूकी निर्लज्जथयीने नर्त्तारनाकेह वाउपरथी नृत्यकरेछे एटलामां रिपुकंपनप्रमुख मद्यपाननावशें प्रबलछाकवंतथयोथ को चेष्टारहितथयीने भूमिनेविषे लोटवालागो बीजापण कुटुंबनासर्वेलोकतेमद्यपा नेकरी चैतन्यभाववर्जिततुल्यथयीपड्याछे एटलामां रतिललिताने नाचतीदेखी लो लाक्षराजा परवशथयोथकोमदोन्मत्तथयी चक्षुगेरायीगयीछे वली भोगवांछनायें व शीभूतथको रतिललिताने जालवाउच्यो स्खलितमानछे पगभूमूकवुंजेहतुं एहवीस्त्री येंजेष्ठनो दुष्टअभिप्रायेजाणी रतिललितायेंनासवामांड्युं तेहने लोलाक्षे दोडीने पकडी फरीतेनाहाथमांथीछूटी ने मंदिरमां चंडिकानी मूर्त्तिपाछलजयी भरा इबेगी एटले द्वेषगजेंद्रनो अवसरथयो तेराजानाशरीरमांपेगो एटलेराजायें खड्गका ढी चंडिकानीमूर्त्तिनेछेदी तेहांथीवली रतिललिता पुकारकरतिनाठी अने मद्यपा नी रिपुकंपनादिकजेहांपड्यांछे तेहांआवी तेहनीपछवाडे राजापण खड्गलेइआ व्यो एटलामां रिपुकंपन सावधानथयो तेणेमहोटाभाइनो एहवो अन्यायजाणी रि पुकंपनपण खड्गलेइउठ्यो तेवारेंतो कोलाहलथयो ठेकाणेठेकाणेथी सुभटोशस्त्रले इउठ्या मद्यनावशथयाथका पोतानातथापरना भागनेनथीओलखता एहवाथका प्रवर्त्त्या अने माहोमांहें युद्धथयुं लोकतोसर्वेत्रासपामि दिशोदिशेंनासीगया.

धननानाशथकी प्रगटथायछे तेथकीउपजे दीनपणुं मूढपणुं प्रायहोय बहुसंतान पणुं घणीक्षुधा उद्वेग संतापादिक चित्तनोथहेलापणो निरउद्यमपणो इत्यादिकथी एस्त्रीनोपरिवारजाणवो अनेपुण्योदयथकीजे ठकुराइमले तेहनेएस्त्रीदूरकरे.

वली सातमी दुर्जगतानामेस्त्रीतेपण दुष्टनामकर्मनामें राजामोकलेछे तेपुण्योदय थीउपनुंजे जोग्यपणुं तेहनेदूरकरीने जीवनेदुर्जागी अनेसर्वलोकने तेअलखामणो लागे एवुंकरेछे एरीतें एसातेस्त्रीयोते आजवचक्रनामानगरनालोकने विविधप्रका रेंपीडेछे यद्यपि सामान्यप्रकारेंतो कर्मपरिणाम कालपरिणति स्वजाव लोकस्थिति जवितव्यता प्रमुखेंकरी कार्यमात्रनीपजेछे तोपणविशेषअपेक्षायेंकरी सातेस्त्रीओ पणपोतपोताना विपाकोना हेतुपणेछे.

हवेवली विमर्शकहेछे जे हेप्रकर्ष निश्चेनयमतेंतो एस्त्रीओनेटालवानो कोइप्रति कारनथी तोपणव्यवहारनयथी एस्त्रीओने टालवाना तपस्यादिकप्रतिकारोछे केमके सर्व लोकतेव्यवहारनयने अवलंबनकरीज प्रवर्त्तेछे माटेव्यवहारतेज बलवंतजा णवो अने सम्यक्दृष्टीजीवें तेबेहुनय मानवा केमकेबेहुनयसम्मत सर्वज्ञनोदर्शनछे रुडापुरुषेएहोना निवारणनो यत्न करवुं इत्यादिकवातसांजली प्रकर्षबोल्योजे हेमामा एजरादिक सातस्त्रीओजिहांनहोय एहवोकोइस्थानकछे तेवारें मामोबोल्युंजे अनं तसुखनो स्थानक एहवी निवृत्तिनामेजेनगरीछे ते एजराप्रमुख सर्वोपद्रवेंरहितछे अने जेपुरुषतेनिवृत्तिनगरें जवानीवांछाकरे तेपुरुष ज्ञान दर्शन अने चारित्र एत्रण तत्वनेविषे उद्यमकरे तोजतेनिवृत्तिनगरनेपामे.

वलीप्रकर्षेंपुछ्युंजे आ जवचक्रनगरतेसंपूर्ण मोहराजादिकेंकरी व्यापछे तोपण मिथ्यात्वनामेवजीरनी कोइकोइस्थानकेंअधिकशक्तिछे तेसांजली विमर्शबोल्योजे हेव त्स जवचक्रनाजे चारनगरपूर्वेंकह्यां तिहांसर्वत्र मिथ्यात्वनी स्थितिछे तेमांपण वि शेषप्रकारें तो नैयायिकादिक छनगरेतो मिथ्यात्वनी स्थितिघणीजछे तेमां प्रथमनै यायिकपुर बीजुंवैशेषिकपुर त्रीजुंसांख्यपुर चोथुंबौद्धपुर पांचमो मीमांसकपुर छठुं नास्तिकपुर तेमां बीजुंवैशेषिकपुरते पहेलाज नैयायिकनामा नगरमां अंतरजूत था यछे तेमाटे एपांचनगरज कहियें छैयें एमिथ्यामंत्रीने निरंतरनिवासना स्थानकोछे पण आविवेकपर्वतउपरना अप्रमत्तनामें शिखर उपरेंजे महाशोजायमान देखा यछे ते जैनपुरकहियें तेजैनपुरनगरना वसनारलोकोने जैनीलोककहियें तेहने मि थ्यात्वनामा वजीर पराजवकरवानेसमर्थनथी अनेबीजाजे पांचपुरछेतेहनालोकोने मिथ्यात्वें वशकर्याछे.

शीनेकहेछे जेहेमामा आव्यापारीआगलें लोकप्रणामकरेछे कोइबोलावेछे कोइमांगेछे तोपणतेह्ने सामुजोतोनथी तथा सांभलतोपणनथी अथवाघणेकालेपण बोलतो नथी अनेऊंचीजनजरकरीरह्योछे पण कोइनेजोतोनथीतेसुं.

तेवारेंमामोबोल्यो जेएव्यवहारियाना अंगनेविषे मिथ्याभिमाननोभाइ धनगर्वनां मेंपेठोछे तेणेकरी धनगर्वितछे तेह्नावशथकी एह्वी एनीमाठी अवस्थाथयीछे प ण एमजाणतोनथीजे एसर्वक्षणीकछे एममामोभाणेजवातोकरेछे एटलामां राग केसरीराजानो पांचमोबालकजे अनंतानुबंधीलोभ तेव्यवहारीयानाअंगमांपेठो एटला मांकोइकपुरुषेंआवीएक बहुमुलोरत्नजडितमुकुटते व्यवहारियानेएकांतेतेडी नेदेखा डयुं व्यवहारियेंपणजाण्युंजे एमालचोरीनोछे तोपणलोभनावशें तेव्यवहारियें थोडुं कइव्यआपीने वेचातुंलीधो पछेतेवेचनारपुरुषतोजतोरह्यो एटलामांपाछलथी पग नेअनुसारें बिभीषणराजानुं कटकआव्युं तेणेतेमुकुटसहित व्यवहारियानेपकडयुं सर्वलोकदेखतांतेनी झुकानलुंटीलीधी गधेडेचडावी विचित्रप्रकारनी विटंबनाकरी फेरव्युं लोकमांबहु अपकिर्त्तिचाली अपभ्राजनाचाली तेवारें आश्चर्येंआकुलचिंतवंत थकोप्रकर्षें विमर्शनेकह्युंजे हेमामाआकेह्वो आश्चर्य एतेइंद्रजालके स्वप्न आएक क्षणवारमांआमकेमथयुं तेवारेंमामोबोल्यो जेहेप्रकर्ष एजेदेखायछे तेसर्वसत्यछे ध नविभवादिनीएह्वीजगतिछे केमकेजे उत्तमपुरुषहोय ते धननोगर्वकरेनही एधनते शरदऋतुनावादलनीपरें चंचलछे देखतादेखताजतोरहे धननालोभीपुरुषो शइकमा गर्मेकार्येंकरी हीनलोकनीपण सेवाकरेछे पोतानागुणनोनाशकरेछे हजारोगमेकव णउपायेंकरी महाकष्टेकरी धननेउपजावे तोपणएधन स्थिररहेनही तेवारेंवलीप्रक र्षेंपुछ्युंजे हेमामास्वभावेंकरी चपलएह्वुंएधन तेसीरीतेंस्थिरथाय तेह्नोउपायक हो तेवारेंमामो धनस्थिरथयाना उपायकहेछे.

जेपुरुषनीतिथीउपजावेलुंधनपामिने देवगुरुनीपूजाकरे शुद्धाचारेंप्रवर्त्ते अशर णादिक जीवोउपरेदयाराखे परनेपीडानकरे परोपकारकरे पोतानोचित्तवशराखे शुभ स्थानकें धनखरचे धनउपरमूर्छानराखे इत्यादिकमां जेतत्परहोय तेपुरुषने पुण्यानु बंधीपुण्येंकरी धनस्थिरथाय एमए मामोभाणेज विचित्रप्रकारनी वातोमां हर्षेंकरी तत्परथकां उभारेछे एटलामां एकयुवानपुरुष जेह्ने घणामलिनदलिद्रीजेवा फा टेलात्रुटेला वस्त्रपहेर्याछे तथापि कांइकद्रव्यखरचीमोदक तांबूलादिकलेइ सुगंधवंत तैल अने पुष्पादिकेंकरी शरीरनेशोभायमानकरीने कांइकभाडुंआपी धोबीनाघरथी रूडांवस्त्रपहेरीने किहांकजतोहतो तेह्नेप्रकर्षेंदीठो तेवारेंमामानेपुछ्युंजे आमूर्खस

वैद्यनेतेडीपुछ्युं तेवारेंवैद्येंकह्युंजे अरेमूर्ख माहारोपुत्रनथीसांजलतो तेनेतोहुंजणा वुंहुं तोपणरमतना आवेशथकी मारुंवचनचित्तमां धरतोनथी तेथीहुंतेनेमारीनेशी खामण आपतोहतो लोकेंपुछेथके वलीक्रोधनावशथकी मेंलोकोनेकह्युंजे एनथी सांजलतो पणजे बधिरहोय एटलेकानेबेरोहोय तेहनुंकांइएऔषधनथी इत्यादिक वै द्यनुंवचनसांजली लोकें शांतिशिवने घणुनिंद्यो माटेहेप्रकर्ष एनैयायिकादिकपांचेद र्शनते शांतिशिवनीपरें मूर्खछे आपमतेंचालेछे जिहांतिहांथीसांजलेलीवात अंगिका रकरीने उन्मार्गेंदोडताथका पराजवपामेछे तेथीमुक्तिपामतानथी अनेजैनदर्शन तो तत्वनाज्ञानथकीज मोक्षपदकहेछे इत्यादिक शुद्धमतेंचालेछे माटे जैनजमुक्तिपामेछे फरी प्रकर्षेंपुछ्युंजे एनैयायिकादिक पांचदर्शन तथा छठुंजैनदर्शनए सर्व कहेवीक हेवीरीतें मुक्तिमानेछे तेसांजली विमर्शकहेछे.

नैयायिकदर्शनतो प्रमाण प्रमेय संशय प्रयोजन दृष्टांत सिद्धांत अवयव तर्क निर्णय वाद जल्प वितंडा हेत्वाजास छल जाति निग्रहस्थानकरूप ए सोलपदार्थना तत्वज्ञाननुंजाणवुंतेहथी मोक्षछे अने प्रत्यक्षप्रमाण अनुमानप्रमाण उपमानप्रमाण शब्दप्रमाण एचारजेदेंचारप्रमाणोकहेछे एहवुंमानेछे तथावैशेषिकतो द्रव्य गुण कर्म सामान्य विशेष समवाय ए छतत्वमानेछे अने प्रत्यक्षप्रमाण तथा अनुमानप्रमाण एबेप्रमाणमानेछे एमतनेनैयायिकमतसाथें माहोमांहे तत्वनोविशेषपणोछेपण एकदे वपणाथकी तथाईश्वरकृतजगतइत्यादिकप्रकारेतो नैयायिकमतनेविषेज अंतरजूतथा यछे तथा सांख्यदर्शनीतो सत्वगुण रजोगुण तामसगुण एत्रणगुण तेम प्रकृति मंद अ हंकार स्पर्शन रसना नासिका चक्षु कान पायू उपस्थ वाक् हाथ पग मन शब्द रूप रस गंध स्पर्श पृथ्वी आप तेज वायु आकाश एलक्षणेंचोवीसतत्वो पुरुष वलीपचीसमो गुणमानेछे तेहोनामतमां प्रमाणत्रणछे १ प्रत्यक्ष २ अनुमान ३ शब्द एलक्षणेप्रकृतिनुं वियोगपणुंतेमोक्ष एहवुंकहेछे एसांख्यदर्शनमांवली केटलाकईश्वरकर्तृत्वपणुंमानेछे केटलाईश्वरकृतजगतनथीमानता केटलाकनारायणनामेदेवकबूलकरेछे तथाबौद्धदर्श चारप्रकारनाछे तेमां १ वैजाषिकते क्षणिकवस्तुमाने बीजासौत्रांतिकते रूप वेदनानी ज्ञान संज्ञा संस्कार एपांचस्कंधजमाने त्रीजो योगाचारनामाबौद्धते मात्रविज्ञानिनजे माने चोथोमाध्यमिकते सर्वस्वप्नोपममाने एचारेनोसुगतनामेदेवछे सर्वपदार्थ क्षणजं गुरछे एममाने तथा प्रत्यक्षप्रमाण अनुमानप्रमाण एबेप्रमाणमानेछे रागादिकनाज्ञा ननीसंततिनी वासनाना छेदवाथकी मोक्षउपजे एहवुंएमतनुंसिद्धांतछे तथामीमां सकमतवालातो जगतनेविषेसर्वज्ञसर्वदर्शिविशेषणादिक वस्तुगोचरकरनार कोइदेव

नो कुटिलपणो तथाकपटनुंपंडितपणुंकहेवोछे तथावली जोआकामदेवनीशक्ति पणक हेवीछे जोआगणिकानाव्यसनमां आसक्तपुरुषोनो विमंबनापणुं माटेहेवत्स गणिका नाआवा अधमपणाजाणी उत्तमपुरुषें जाति शील धन लज्जाइत्यादिक राखवाने अर्थे अनेकअनर्थरूपपूरेकरीनरपूर एहवी नदीरूप एगणिकानुं समागमराखवारूप व्यसनपरिहरवुं फरीविमर्शबोल्यो जेहेप्रकर्ष हजीएनवचक्रनगरें घणुजोवुं बाकी रह्युंछे एतोअनंतकौतुकमयछे पणआपणीअवधिमां थोडादिवसबाकीरह्याछे तेमाटे मद्दारुंवचन मानीने चालतोहुंतने एकलामहुं कौतुकदेखाडुं एमकही प्रकर्ष नाणे जने समजावी एकविवेकनामे महापर्वतछे तेहनाशिखरउपरचढिने मामोनाणेज बन्नेजण नवचक्रनो कौतुकजुएछे.

एटलामांएक नग्नपुरुष दीनरोकजेवो नयेंकरीसहित जेनाकेशसर्व लुटायथीगया छे पिशाचनीपरें कुक्षीदुखेकरी क्षीणथयीछे वली आंखचपलथयीछे दशेदिशेंजोतो थको घणापुरुषेंविटचोथको नाशवावांछतो खडीमाटीयेंकरी धोयाछेहाथजेहना एहवो पुरुषदेखीप्रकर्षेंपुछयुंजे हेमांमा एकोणपुरुषछे तेवारेंविमर्शकहेछे.

कुबेरनामेसार्थवाहनो महाधनवंत ए धनेश्वरनामेपुत्रछे पणजुगटादिकनेविषे आशक्तछेमाटे एनेघणेलोकें कपोत एटलेहोलो एहवुंयथार्थनामदीधुंछे एणेजुवटाना व्यसनमां क्रोडोगमे रत्ननीराशी खपावीने पितानुंघरसमसान जेहवुंकरीमूक्यो एवो अपलक्षणोजाणी पितायेंएनेघरथीबाहेरकाढीमूक्योछे वलीहाखोधन पाछोमेलववाने घणीचोरीउंकरीपण राजायें एने रासभारोहणादिक कदर्थनाओकरी वाणियानो पुत्रछेएहवुंजाणीनेजीवतो मूक्योछे तथापिएव्यसनमूकतोनथी आजेरात्रेंवली एजु वटोरमतां पोतानो मस्तकहाखोछे तेमाटे आसर्वेधूर्त्त जुवानारमनारलोक हमणाए नो मस्तकलेवावांछेछे तेवारें प्रकर्षेंपुछयुंजे धनक्षयादिक अनर्थनोकरनार अनेप्राण नोनाशकरनार इत्यादिकअनर्थनुंहेतुभूत जोजुवटुंछे तोलोकएहवी द्यूतक्रीडाशावास्ते करेछे तेवारें विमर्शकह्युंजे मोहराजायें जेहनेपोतानेशक्तियें आंधलाकर्याछे माटेदे खती आंखेंपणनथीदेखता एहवाजे.लोकते आवामाठाव्यसनना अधमफलने बिलकु लजाणतानथी पणउत्तमपुरुषजेमोहराजादिकथी पराभववंतनथी एहवोजेहोयतेतो द्यूतव्यसन सर्वथानजकरे एहवी वातकरेछे.

एटलामां प्रकर्षेंजंगलमध्ये एकअस्वारहाथमांतलवारलेइ शीआलनीपछवाडे दोड तोदेखी मामानेपुछयुंजे शाकारणे आविह्वामणा ग्रीष्मऋतुना तडकामां दुखतरस थी व्याकुलथकोजीवनीपछवाडे अटवीमांरजडेछे तेकोणहसे तेसांभली विमर्शकहे

तरसुधी योगसेवेपण जेहांसुधी हेजगवंत ताहरुं शासनपाम्योनथी तिहांसुधीतेजी वसवेग्राप्रकारें मुक्तिपामेजनही केमके जेमिथ्यात्वीना माघस्नानादिकने सकामनि र्जराकहेछे अने मिथ्यात्वीनाधर्मनी अनुमोदनाकरेछे तेवाजैनाजासनासर्वेवचन मिथ्याजाणवा.

यद्यपिक्रियावाद्यादिक पाखंमीओना ३६३ नेदछे तथापिमिथ्यात्वीछे वलीन्ह नवादिकजेउत्सूत्रपरूपक तेपणसर्वेजैनदर्शनथी विरोधमार्गेनाचालनारजाणवा ते घणाकालसुधी तपस्याप्रमुख क्रियाकरताथकापण मिथ्यात्वनामे प्रधानना पराजव थकी उलटासंसारनी वृद्धीकरनारथायछे अनेज्ञानसमन्वित चारित्रेंकरीपवित्रजे जैनछे तेहनीपाशें मिथ्यात्वनोकांइजोरचालेनही इत्यादिक विस्तारसहित विमर्शनी वातसांजली प्रकर्षबोल्युंजे हेमामाजी हवेते जेलोकोने मोहादिकें पराजव्यानथी ते लोकदेखाडो तेवारेंमामेकह्युंजे हेवत्स आजैनपुरनगरें तेहवालोकवसेछे तेमाटे चा लोतेनगर जोइयें एमकहिजैनपुरनगरमां बेहुयेंप्रवेशकर्यो एटलेसाधुजननेदीठा.

तेमोहादिकने दूरकरतांदेखी विमर्शतेसाधुओना गुणवर्णवेछे जेएसाधुते त्रस थावरमात्रजीवने हितवांछकछे तथासत्यजाषणकरनारा चारप्रकारें अदत्तादानना डांमनारातथा मनुष्य अनेदेवता तथातिर्यंचनीस्त्रीओने मातासमानमाने वलीबाह्य थी अनेअभ्यंतरथीपरिग्रहना डांमनारा पोताना शरीरनेविषेपण ममत्वधरेनही बे तालीसदोषरहित शुद्धमानआहारना ग्रहणकरनारा पांचसुमति त्रणगुप्तियेंकरी सहि त मोहादिकवैरीना घातकरनारा लोलतानात्यागी घणुंसुंवखाणियेंजेजेएसाधुउनीक्रि याछे तेतेमोहादिकने जीपनारीजछे तेमाटेचित्तवृत्तिरूप अटवीमां प्रमादपणारूपन दीछे तेतोएसाधुओनीआगल शुष्कथयीगइ तथाजे मंमपनीवेदिकाउपरनो सिंहास न तथातेनाउपर बिराजनार मोहराजा तथातेहनो सर्वपरिवार तेसर्वेएसाधुओनी आगले शक्तिरहितछे तथा एमनीजेचित्तवृत्तिनामेअटवीतेपण घणीसुंदर रुमाप्रका शवाली अनंतज्ञानादिकगुणरूपरत्नने उपजवानी जूमीसमानछे नित्यप्रतेंसुखमय प्रवृत्तछे इत्यादिकसाधुओनोवर्णन सांजली हर्षपूर्वक प्रकर्षबोल्योजे हेमामातमे पू र्वेकह्युंहतुंजे तुजने संतोषराजा देखाडीस तेसंतोषराजाकिहांछे तेवारेंमामो क हेछेजे आउज्वलचित्त समाधाननामेदेहरो तेजैनपुरना लोकनेवह्लनछे तेहांअनेक राजवृंदे परिवर्योथको संतोषराजा सिंहासने बेगेहशे एहुंविशेषवर्णनपहेंपछे देखा डीस तेजोयी प्रकर्षबोल्योजे धन्यए जैनपुरनगरने जेहनोए संतोषजेवोराजाछे फरीविशेषाकारें विमर्शकहेछे जे नवचक्रनगरमांज चित्तवृत्तिनामेअटवी तेमांवि

वलीजेगर्दनरूपनालथकी एजीवनी मूलप्रवृत्तिनीकली तेगर्दनरूपनालनेविषे तपावे लासीसानोरसनाखो तेमाटेराजानाहुकुमथी राजानासेवकोयें एहने एविटंबनाकरीछे.

तेसांभली प्रकर्षेकह्युंजे हेमामाजीजेविकथाना करनारछे तेहने एहवीविटंबना थायछे तेवारेंमामेंकह्युं जेहनामोकलामुखहोय अणविचार्युंबोलनारा विकथासक्त होय तेहनेएमजहोयतेमाटेजे सत्यपुरुषहोय सर्वलोकने हितवंछकहोय तेवा प्रमाणोपेतपुरुषनेज सत्यकहेनाराकहियें तेमाटे हितवंछकपुरुषें सर्वथाविकथावर्जवी.

एटलामां राजमार्गेजोतां प्रकर्षे एकउज्वलपुरुषदेखीपुछ्युंजे हेमामाजी आपेलो घोलाशरीरवंत पुरुषदेखायछे तेकोणछे तेवारें मामोतेहनीवातकहेछे जे एपुरुष राग केसरीनामाराजानो सुभट हर्षनामेछे अनेए मानवावासनगरनोवसनार वासवनामे महोटोव्यवहारीओ तेहनो घणाकालनोविरहयुक्त धनदत्तनामेमित्रनो आववूंथसे तेणेकरीहर्षवंतथशे केमकेअत्यंतवल्लभ बालपणानोमित्रते हमणाघणादिवसेंआवि मल्योछे तेथीएहर्षहमणा तेहांजायछे एटलामांतो हर्षतिहांगयो हवेवासवें घणाकालेंआविमल्युं एहवोपोतानो धनदत्तमित्रदेखीने हर्षनावशथकी आलिंगन आसनदेइने खेमकुशलादिकनीवातो पुछवाथी व्यवहारीओ महाहर्षपाम्यो मित्रनीघणीभक्तिकरी हास्यविनोदादिककरेछे घरनामाणसपण सर्वहर्षयुक्तथयाछे एममित्रसंघाते विनोदक्रीडानीवातोकरेछे एहवामांवली एक वासवनाघरनोचाकर देशांतरथकीआवीने मलानमुखथको कांइकबोलवाने प्रवर्त्तवालागोतेवामांज एक श्यामपुरुष ते हिजव्यवहारियाना घरतरफजातो प्रकर्षेदीठो तेवारें विमर्शनेपुछ्युंजे एकोणपुरुषजायछे तेवारें मामेंकह्युंजे एशोकनोमित्र विषादनामेंछे ए मोहराजानीसैन्यनुंमनुष्य अनेएव्यवहारियानाघरमांज जायछे केमके एव्यवहारीयाने शैकडागमेदेवदेविओमानतां वर्द्धननामेएकपुत्रथयोछे तेमहोटोथयो यौवनअवस्थापाम्यो तेवारें वासवें वार्योथको पण घणुंद्रव्यलेइने परदेशेंव्यापारकरवागयो तिहांवली केटलोक कालरहीने क्रोडोगमेद्रव्योपार्जनकरी महोटासार्थसहितघरप्रतें आवतोहतो एटलामां मार्गें क्रूरचोरमल्या तेणेसर्वसार्थ लुंटीलीधो वर्द्धननेकुटुंबेकरीसहितपकडीलीधो ते मांथीएवासवनाज घरनोदासलंबनकनामे बंदीवानतिहांथी नासीआव्यो तेइहांवातकहेछे तेमाटेएविपादपण तिहांजजायछे एटलामांतो विषादपणते वासवव्यवहारियाना शरीरमांपेठो तेवारेंते व्यवहारीओ हाइतिखेदे हेपुत्र हेवत्स हेवर्द्धन तुजनेमें परदेशजवानीमनाइकरी तोपण तेंमानीनही हवेहुंशुंकरुं धनपणखोयुं हवे शोउपायकरी तनेमूकावुं इत्यादिक करुणाविलापेंआक्रंदकरवालागो तेदेखी घरनोस

बेते पाशेंरह्याथको मुक्तिनगरेपहोचाडे, एमविविधप्रकारनी वातोमां तत्परथकातेबे हुजणायें जैनपुरनगरमां चित्तसमाधाननामेंमंमपनेदीगे तेमांनिस्पृहतानामें वेदिका तिहांजीवपराक्रमनामे सिंहासन तिहांबेगेथको दान शील तप अने नाव एचारेमु खेकरी शोजायमान एहवोचारित्रधर्मनामेराजा देखीने तेहनादर्शनथीहर्षितथको प्र कर्षने विमर्शकहेले हेपुत्र जोआचारित्रधर्मनामेराजा चारेमुखेकरी चारप्रकारना ध र्ममार्गनो उपदेशकरेले तेमांपहेलामुखथीअजयदान सुपात्रदान प्रमुखदानदेवानो उपदेशकरेले तथाअनुकंपादिकदानप्रतेपण निषेधकरतुंनथी पण पृथ्वीदान कन्या दान मद्य जूए रथ घोडादिकनोमहाआरंजकारकदान तेहनेतोनिषेधेले.

तथाबीजामुखेंकरी अढारहजार शीलांगरथनेनेदे शोजित शीलपालवानो उपदेश करेले तथात्रीजामुखेंकरी बारप्रकारें वांगरहित तपकरवानो उपदेशकरेले अने पंचा ग्निसाधन तथामाघस्नान इत्यादिकलौकिकमार्गतपनोनिषेधकरेले तथाचोथामुखेंकरी अनित्यतादिक बारजावनाओकहेले जेमएधनादिक सर्ववस्तु अनित्यले इत्यादिककहे ले वलीएचारित्रधर्मराजानाजे सिंहासनादिक तथामंडप वेदिकादिकवखाण्या तेहोना पोतपोताना नामप्रमाणे प्रजाव पणतेहवुंजले वली एहनाप्रजावथी एजैनलोकनित्या नंदीले वलीएहनाप्रजावथकी मोहादिकपण उपद्रवकरीशकतानथी हीनकांतिवंतथका दूरथकीजनासीजायले हवे विमर्शप्रकर्षने चारित्रधर्म राजानो परिवारकहिदेखाडेले.

एराजानेसन्मुखजे महारूपपात्रस्त्रीबेठीले ते एचारित्रधर्मराजानी विरतिनामेंपट राणीले एजैनलोकोनेमुक्तिनगरीनी पमाडनारीले तथाराजाने सन्मुख आ पांचपुरुष बेठाले ते १ सामायक २ लेदोपस्थापनीय ३ परिहारविशुद्धी ४ सूक्ष्मसंपराय ५ य थाख्यात एपांचेनामेपांचपुरुषते एराजानाअंगजूतमित्रले एपांचेमित्र जैनलोकने पा पथीनिवर्त्तावेले तथाआराजाआगल यतिधर्मनामे राजानोपुत्र महाधुरंधरबेठोले.

वलीएयतिधर्मनो परिवारजूतते आदसमनुष्यबेठाले तेमां एकक्षमा बीजुं आर्ज वतेसरलातपणुं त्रीजुं मार्दवतेनम्रपणू चोथुंमुक्तितेनिःसंगपणुं पांचमोतपोयोग तेव लीबारमनुष्यें परवखोले १ अनशन २ ऊनोदरी ३ वृत्तिसंक्षेप ४ रसत्याग ५ का यक्लेश ६ संलीनपणुं एलप्रकारेंबाह्यतप तथादसप्रकारें प्रायश्चित्ततप चारप्रकारेंवि नयतप दसप्रकारें वैयावच्च पांचप्रकारें सिज्झाय बेप्रकारेंध्यान तथाकायोत्सर्ग ए रीतेलप्रकारनुंअज्यंतरतप मलिनेबारप्रकारनातपरूप बारपुरुषें परवखो तेपांचमो त पोयोगकहियें,एहनीशक्तिथी साधुविविधरीतनातपकरीने कर्मपरिणामराजानेजर्जरी जूतकरेले तथालठोपुरुषते संयम जेमांप्राणातिपातादिक पांचआश्रवनी निवृत्तिले

नामा महासुनटनुं शरणकस्योनथी तेमाटेहेवत्स एनवचक्रनामा आखुंनगरमोहा दिकेंपीडयुंछे.

एममामोवातकरेछे एटलामांवली प्रकर्षेसातस्त्रीओ नवचक्रनगरमां देखीनेपु छयुंजे हेमामाआस्त्रीओकोणछे तेवारेंमांमोकहेछे १ जरा २ रोगपीडा ३ मृत्यु ४ दुर्जनता ५ कुरूपता ६ दारिद्रता ७ दुर्भाग्यता एसातनामे सातेस्त्रीओ तेयथा संभवेकरी एटलेपोतपोताना नामप्रमाणे नवचक्रनगरना वसनार लोकोनेरुडीरीतें जोईने पोतपोताविपाको लोकोनेदेखाडेछे.

तेमांपहेलीजरानामेस्त्रीतो कालपरिणतिराणीनीआज्ञायें युवान मदोन्मत सरि खानेपणवृद्ध अशक्त पलित शरीरेशिथिल इंद्रियबलेंरहित एहवोक्षीणकरेछे.

अनेबीजीरोगपीडानामे स्त्रीतो अशातावेदनीय पुरुषनीआज्ञायें बुद्धी शक्त्यादि कनो भ्रंशकरेछे वात पित्त कफादिकना विकारकरेछे अतिसार कुष्ट प्रमेह शूल व मन श्वास भ्रमर उद्रस खर्जु जलोदर प्रमुख एसर्व बीजीस्त्रीनोपरिवार जाणवो तेनिरोगतानेदूरकरीनें लोकोनेपीडेछे.

तथात्रीजीमृत्युनामेस्त्रीतें आयुकर्मराजाना क्षयथीआवे विष अग्नि शस्त्र उदक पर्वतथीपडवुं तथा अकस्मात् भयादिकेंकरी मृत्युकरेछे एएकलीयकीपण इंद्रचक्र वर्त्त्यादिक महोटापराक्रमि पुरुषोनेकंपावेछे धनवंत तथा दलिद्री वृद्ध तथा युवा न सबल तथा निर्बल पंडित अथवा मूर्ख राजा रांक इत्यादिकसर्वेनेउपरें एसरिखी समतुल्य प्रवृत्तेछे. केमकेएस्त्री धन मंदिर बंधु कुटुंब पुत्रादिक सर्वेछंमावी पापतथापु ण्यरूप संबलसाथेलेवरावी जीवनेलेइ बीजीगतियेंजइमूके अनेपछवाडे कुटुंब परि वारहोयते बेचारदिवसरुदनादिककरी पछे निचिंतपणेखाय एमएनीआण त्रणभु वननेविषे अखंडपणेप्रवर्त्तेछे.

तथाचोथीदुर्जनतानामेस्त्रीते तेपापनाउदयथी आवेछे एस्त्रीथी कपट चाडीमित्र द्रोही निर्लज्जपणुं ईर्षा मत्सरादिक जगतनेठगवुं कीधागुणनुंहणवुं इत्यादिकअपलक्ष णकरेछे तेसर्वएस्त्रीनोप्रभावछे अनेपुण्योदयेंकरी उपनुंजेसज्जनपणुंतेहनेएस्त्रीदूरकरेछे

तथापांचमी जेकुरूपतानामेस्त्री तेनामकर्मराजानाहुकमथी छद्मपणेआवेछे तेथी टुंटा खोडा बोडा काणा आंधला खूंधा वामणा नाकनुबेसवुं माठोरूप हीनअंग अधिकअंग प्रमुखजेलोकनेथायछे तेएस्त्रीनोप्रभावजाणवो.

हवेछठीदलिद्रता नामेस्त्रीते अंतरायकर्मराजानाआदेशेकरी पापनाउदयथी आवेछे एस्त्री जल अग्नि चोर द्यूतादिव्यसन चोरइत्यादिक निमित्तकारणेकरी तथा

लज्ञान नामेएपांचते एसद्बोधनाअंगनूतमित्रबेगळे हवेएसद्बोधते ज्ञानावरणीय कर्मराजानेक्षयें तथाक्षयोपशमेंउपजे एपांचेमित्रमांबीजो श्रुतज्ञाननामा जेमित्र तेह नेज सदागमकहियेंछेयें ते सर्वेचारित्रधर्मराजाना समग्रराजनी स्थिति अने मर्यादा नोकरनारछे.

अने मतिज्ञानादिक चारमित्रते मूगासरिखाछे पोतानाज अर्थकार्यने साधिशके छे पणपरार्थसाधिनशके तेकारणेजैनधर्मना लोकसदागमनीज आज्ञायेंक्रियादिक साधेछे योगउपधाननुं वहेवुं कालविनयादिक आठप्रकारें लखवुंवांचवुं इत्यादिक नक्तियेंकरी एनुंबहुमानकरेछे जेप्राणीसदागमनोपद अक्षर मात्रा ने लोपेंछे तेहनेनि श्चेंज मालीनीपरें अनंतसंसारज्रमवुंपडेछे एम एसदागमपोतेंजकहेछे के बारअंग रूपगणीनीपेटीनेजे विराधसे तेअनंतिवार नवचक्रमां रखडसे डुःखपामसे यथा इर यैइगंडुवाल संगंगणिपडिगंविराहेत्ताकाले अणंताजीवाचाउरंतसंसारकंतारंपरि अट्टेसु इत्यादिसमवायांगसूत्रे नंदिसूत्रेच एमअनेकस्थान के सदागमबोलेछे तेमाटे एसदागमनीआज्ञाते उत्तमपुरुषे नलीरीतें आराधवी.

वलीजेजैनलोक मुक्तिनगरें पहोचेछेते केवलज्ञानरूप पांचमांमित्रनाबले पहो चेछे वलीप्रकर्षेपुछ्युंजेहे मामा आपणेइहां संतोष नामामहोटोसुनट जोवानेअ र्थे आव्याछैयें तेतोहमणा किहांपणदीठोनही तेहनोकारणसुं तेवारें विमर्शेकह्युं जे आचारित्रधर्मराजानें सन्मुख संयमआगलेंजे बेठोछे तेसंतोषकहियें यद्यपि एसं तोषते चारित्रधर्मराजानो सेवकछे तथापिएपांचेंद्रियनो जयकरनारोछे अनेमहामो हनामें राजानापराक्रमने हणनारोछे तेमाटेचारित्रधर्मराजायें पोतानुंसर्वलशकर एहने स्वाधिनकरीने सेनाधिपतिकरयोछे एमए संतोषते अतुल्यपराक्रमीछे तेथीएहि जराजाकहेवायछे अनेएनाउपरमोहराजाजे सपरिवारेंचडयोछे तेकोइकोइवारें एह नेजीपेछे अनेकिवारेंक एसंतोषपण मोहराजानेजीपेछे पणएवेहुने अनंतोकालयु द्धकरतांथयो पणहजीमाहोमांहें युद्धचाल्याजकरेछे पणआगलेंसुंथासेते जणातुंन थी तथाएसंतोषनीपाशेंजेबेठीछेतेनिःपिपासा अतृष्णानामे एसंतोषनीजस्त्रीछे एस्त्री लोकोने रागद्वेषरहितकरेछे वली लाननावखते तथा अलाननावखते सुखनीवे लायें डुःखनीवेलायें माननीवेलायें अपमाननीवेलायें तथासरसअहार निरसआहा रें पणजैनलोकोनो मनसंतुष्टराखेछे.

एरीतेंचारित्रधर्मराजा तथायतिधर्म अनेश्रावकधर्म एबेएनापुत्र तथासम्यक्दर्शन अने सद्बोधनामे एबेहुप्रधानते राजनीचिंतानाकरनारछे तथा संतोषनामेसेनाधिपति

वलीप्रकर्षें पुछ्युंजे पांचपुरनालोकने मिथ्यात्व पराजवकरीशके अनेजैनपुरनालो कने पराजवनकरीशके एटलोफेरशावास्तेतेसांजली विमर्शबोल्युंजे.

अनंताआनंदनुं स्थानक एहवी एकमुक्तिनामे नगरीछे तेमां एछएपुरनालोकते मुक्तिनोवातजाणी सर्वेतिहांजवावांछेछे पणपांचनगरनालोकतो स्वकल्पित विरुद्धमा र्गें चालनारा दिगमूढछता खरामार्गनेअणजाणता उन्मार्गेंचालेछे मिथ्यात्वनामाप्र धानेकरी घणाप्रकारें विटंबनापामेछे तेघणेकालेपण मुक्तिपामतानथी अने जैनन गरनावसनारालोकतो सम्यक्तदर्शननेपोतानोस्वामीकरीने तेहनाकहेलामार्गनेजआ श्रयीनेचालेछे तेथीथोडाकालनेविषे तेमुक्तियें पहोचेछे माटेएदर्शनजूदोकह्योछे हवे एपांचेदर्शनना लोक समजविनानाज प्रवर्त्तेछे तेहनीकथाखोलासाथी विमर्शकहेछे.

कोइकनगरें सदाशिवनामे नौताचार्यछे तेकानेबहेरोछे एकदिवसें कोइधूर्त्तेंआवी सदाशिवनेहाथनी संज्ञायें करीकांइकतेहनेजणाव्युंजे हेजडतमे वृद्धछो पणएकवात कहुंतेसांजलो जे लेणदार तथाशत्रुनीपरे व्याधीनेपण उवेखवाविना आगलजता महोटाअनर्थनीकरनारीथायछे तेमाटे बधिरपणानोकाइ औषधकरो अनेतमारोब हिरापणुंटालो तेसांजली सदाशिवें तेधूर्त्तनुंवचन सत्यमानी शांतिशिवनामें पोता नाशिष्यने कह्युंजेतुं वैद्यनाघेरजयी बधिरपणुंटले एहवुंऔषधपूछीआव पछे शांति शिव वैद्यनेघरेंआव्यो तेवारें वैद्यपोतानापुत्रने मजबुतदोरडेबांधीने रोषेंकरी लाकडी येंमारेछे एहवुंदेखी शांतिशिवेंपुछ्युंजे पुत्रने शावास्तेमारोछे वैद्येंकह्युंजे एपुत्रसांजल तोनथी तेमाटेमारुंआपुंछुं एटलामां वैद्यनीस्त्री पुत्रनेमूकाववाआवी तेहने वैद्येंकह्युं जे हेरांम तुंदूरजनीरहे एपुत्रकोइरीतें मारोकह्योसांजलतोनथी तेमाटे अवश्यएह ने मारतोरहीश वलीघरनामाणसोयें वार्युंतेहनेपणवैद्येंकह्युंजे एहनेमेंसेंकडावखत कह्युंहशेतोपण सांजलतोनथी तेमाटे एनेमारुंछुं तमेकोइप्रतिकारकरशोनही एमक रीशतोज एहनुं बहिरापणुंजाशे एमकहीपुत्रने मार्युं एटलीवातधारीने शांतिशिव नामाशिष्यपण परमार्थनेअणजाणतो तेवैद्यनुं बोलवुंजसांजलीने पोतानाआश्रमें आवी महेश्वरना घरथी एकदृढदोरडुंलेइने वैद्यनीरीतेंज पोतानागुरुने खांजेबांधी वांशअनेलाकडीओथीगुरुने कुटवामांडयो जेमजेमगुरुपोकारकरे तेमतेमवधारे मा रआपे तेशब्दसांजलीनेलोकएकठाथयातेणे कह्युंजे अरेपापिष्ट आशुंकरेछे तेवारें शां तिशिवेंकह्युंजे तमेशुंजाणोछोजे कानेसांजलतोनहोय तेनुंएऔषधछे एहवुंहुं वैद्यनाघे रथी शीखीआव्योछुं हुंमहाराआचार्यनो बहिरासपणुंटालवाने एकार्यकरुंछुं माटे तमेंदूरजनारहो अनेजोतमे वचमांपडसोतो तमनेपणहुंमारीस तेवातसांजलीलोकें

पणमनुष्यनोमांस किवारेंखाधुंनथी तेआजेमने माहराजाग्योदयथी मल्युं माटेएमां सेंकरी रसनाने तृप्तिवंतकरुं एमविचारकरी मनुष्यनो मांसखावख्युं तेथीलोलतावल वंतथयी तेवारपछेते मनुष्यनामांसनोलोजीथयो पछेएजनगरनाछोकराओने अपहरी ने जक्षणकरवालागो एकदिवसें रात्रनेसमे शूरनामें क्षत्रीनाघरमांपेसीने तेनोस्तन नोधावनारपुत्रने सुतोलेइ घरथीबाहिर निकल्यो एटलामां शूरजागीउठ्यो तेणे जडने देखी दृढबंधनेबांधी सेकडागमे महाकदर्थनाकरी प्रजातेंसर्वलोकें जडनोवृत्तांतजाण्यो.

एटलेविचक्षणेपण पोतानोपित्राइजाइजे जड तेहनीअपभ्राजना विटंबनादेखी ने चित्तमांलज्जापाम्यो जेजूओ ए जडे जीव्हास्त्रीनेवशें अमारो कुललजाव्युं तोहुं एअधमकुलनीउपनीजे जिव्हास्त्री तेहनेछांडवानो उपायकरुं एमविचारी पोतानो पिता शुनोदय तथा मातानेपुछी पोतानी बुद्धिनामेस्त्री तथाप्रकर्षनामेपुत्र अने वि मर्शनामेसालो तेहनेसाथेलेइ विवेकपर्वत उपरचढीने अप्रमतनामें शिखरउ पर जैनपूरनगरछे तेहांआवीनेश्रीगुणधरनामें आचार्यनीपासेंथी दीक्षालीधी तेवारें महारोपिताजे शुनोदय अने आपजलाइनामेंमहारीमाता ते पणमाहरा सार्थेआव्या जिव्हापणसाथेहती हेराजनूतेजहुंविचक्षणसूरिछुं.

पछेगुणधरसूरिपासेथी हुंसर्वयतिधर्म सीख्यो वलीअनेकप्रकारनातपकरया तेणे करी रसनानामेइंद्रियने अकिंचित्करी केटलाकदिवसें मनेगुणवंतगीतार्थ जाणीने गुरुयें सूरिपदआप्युं इत्यादिकवात विचक्षणसूरिनामुखथी सांजली नरवाहनराजा प्रतिबोधपाम्या.

अने हाथजोडी कहेवालागाजे हेजगवन् प्रमादरूपविषेंकरीलेपाणो एहवामा हराचित्तने तमाराचरित्रना अमृतरूपपानेकरीने बोधवंतकरयो एसंसारसर्व असा रछे माटेजो एटलीवात संजलावी मनेउपकारकरयो तोहवेदीक्षाप्रसादकरी मनेसं पूर्णपसायकरो एहवाराजाना वचनसांजली विचक्षणसूरियेंपण राजाने योग्यता जा णीनेकह्युंके जेमतमने सुखउपजेतेमकरो तेवारेंराजायें राज्येबेसाडवाने पुत्रसंजाख्यो.

हवेसंसारीजीव अगृहीतसंकेताने कहेछेजे हेअगृहीतसंकेता तेवखतेएवोमने मागप्रकारनोडुखीदेखीने माहरोपुण्योदयलज्जापामि काइकमारानजीकआव्यो ते हथीयद्यपिहुं दोषनोढगलोहतो तोपणपुण्योदयनाअनुनावथी राजायेंमने सजामां म्लानसुखवंतथको बेठोदेखीने स्नेहनेलीधे उत्संगेबेसाडी आचार्यनेपुछ्युंजे हेमहा राज आरिपुदारणे पोतानीमाताजे विमलमाला तथानरसुंदरीनामेस्त्री तेहनीपोता नादोषेकरीज पोतानानजरेदेखतां मरणअवस्थाकेमकरी एमांएहवोनिर्लज्जपणुंकेम

नथी वेदनावाक्यथी अर्थनुंनिश्चयेंकरवुं वेदनुंजाणवुं तेपूर्वकधर्मनीइच्छापणोकरीकार्य छे एहवुंकहेछे जेप्रेरणाकरवीतेहनेधर्मकहियें तेहनुंप्रवर्त्तकवेदवचनछे एदर्शन प्रत्यक्ष अनुमान शब्द उपमा अर्थापत्ति अनाव एछप्रमाणनेमानेछे आत्मानेविषेज ली नथवुं तेमुक्तिएहवुंएमतनोसिद्धांतछे वलीनास्तिकवादीमतवालातो १ पुण्य २ पाप ३ परलोक ४ धर्म ५ अधर्म ६ जीव ७ स्वर्ग ८ मोक्षइत्यादिक सर्वपदार्थखोटाछे एहवुं कहेछे एटले जेटलोप्रत्यक्षदृष्टीयेंदेखे तेटलोज लोकछे एममाने पंचनूतात्मकदेहछे जेममद्यांगथी नीपनीजे मदशक्ति तेहनीपरे पंचनूतथीएचेतनपणोउपनो तेजीवकहे वामात्रछे जेवारेंपांचनूतरूप शरीरनोनाशथाय तेवारेंजीवनोपणनाशथयीजायएमजी वपदार्थजनथी माटेपरनवपणनथी तोप्रत्यक्षपाम्याजेसुखतेहनो त्यागकरीअदृश्य मानजे स्वर्गादिकनासुखनो प्रयत्नकरवोते निष्फलछे एनास्तिकमतवाला एकप्रत्यक्ष प्रमाणजमानेछे एषांचेदर्शन पोतपोतानामतनेविषे वचननाआडंबरनी स्फुरणाथकी पंडितपणुंमानताथका हाथीओनेलडाइकरवानी प्रमाणरूपनूमीनेउलंघतानथी.

अनेजैनमतें जीव अजीव आश्रव संवर बंध निर्ज्जरा अने मोक्षएसात तत्व माने तेमां पुण्यपापमिलवाथकी वलीनवतत्वथाय तेमांशुनाशुन कर्मनोकर्त्ताजोक्ता चेतनलक्षणवंत जीवतत्वछे तेथीविपरीतते अजीवतत्व साराकर्मनोविपाकतेपुण्य तत्व मागाकर्मनोविपाकतेपापतत्व वलीपांचमिथ्यात्व बारअविरति पचीसकषाय अनेपन्नरयोग एरीतेंसतावननेद कर्मबांधवानाछे तेहनेआश्रवतत्वकहियें आश्रवनुं रोधवुंते संवरतत्वकहियें आत्मानेकर्मसाथेमलाववुं तेबंधतत्व तथा कर्मनुंसमस्त प्रकारेंछांडवुं तेहने निर्ज्जरातत्व कहियें अने निर्ज्जरानुंफलते मोक्षतत्व ते अत्यंत पणेदेहादिकनो वियोगलक्षणरूपछे तथाअज्ञानादिक अढारदोषेरहिततेदेव पंचमहाव्रतनाधारक सत्यपरुपणाना करनारतेगुरु ज्ञानदर्शनचारित्ररूप लक्षणवंततेधर्म तथाअनंतपर्यायमय नित्यानित्य उत्पत्ति ध्रुव अने व्ययुक्त इव्यमानवो ज्ञानक्रियानायोगथकीमुक्तिछे सकलकलंकरहित जातिवंत मणीरत्ननीपरेंशोनित एहवुंकेवलज्ञानरूप अनुतनावेंसहित सर्ववस्तुनास्वरूपनेप्रकाशनार जैनदर्शनछे.

एहवुंजैनमार्गमूकीने नैयायिकादिक पांचेंदर्शनने कोइपणरीते कृत्रिमकांतिनेधरताथकां पणकाचतेमणिरत्ननीपरें परीक्षासहेनही तेम घणाकालसुधी क्लेशने सहेताथकापण मुक्तिनहोय अने जैनदर्शनते स्याद्वादमानेछे माटेजैननेज इष्टसिद्धि होय. अतएव परःसहस्राः शरदस्तपांसि युगांतरंयोगमुपासतांवा॥तथापितेमार्गमनापतंतो नमोक्षमाणाअपियांतिमोक्षं ॥ १ ॥ अर्थ ॥ हजारोवर्षसुधी अथवायुगां

रहे हुंकाइआवतोनथी इत्यादिक सांजली दूतपाछोवल्यो तेणेजइने प्रधानादिकनेक ह्युं तेसांजळीने प्रधानादिक क्षीणथया इत्यादिक महारोगवैंकरी आचरेलुंजे मातुं लक्षण तेसर्वेचक्रवर्त्तियें वेशवदलावीनेछानो दूतमोकल्योहतो तेहनामुखथी चक्रवर्त्ति यें माहरीवात जाणीने योगेश्वरनामे एकमंत्रवादिनेसिद्धार्थपुरे मोकल्योतेवारेंमहा रोपुण्योदयनासीगयोछे तेणेमंत्रशक्तियेंकरी मनेविकलकस्योथको हुंवस्त्रवर्जितथको छुटाकेशे माथाउपरधुलनाखीने थानकेंथानकें चहुटेचहुटे हाथतालीकरतो नाचतो थको मनेचक्रवर्त्तिना लशकरनेकिनारेआण्योवली जेकोइचक्रवर्त्तिनीसाथें गर्वकरशे ते हनाएहवाहालथशे एहवी उद्घोषणासहित सर्वस्थानकें समस्तप्रकारें नमावीने चक्रवर्त्तिनामाणसोयें मुद्गरनाप्रहारादिकें शोकमार्गमेंविटंबनाकरीने मने मारीनाख्युं हवेतेहांथीहुंमरणपामिने.

पापिपिंजरनगरना महातमतमप्रभानामा सातमेंपाडे तेत्रीससागरोपमने आ उषे नारकीपणे जयीउपनो पछेहे अगृहीतसंकेता तेहांमें जेजेदुःखनोगव्यां तेस वेंदुःखआसदागम जाणेछे मनेकहेताथकां आजपणशरीरकंपेछेजे त्रासउपजेछे तेम हारुंमनजाणेछे तेवारपछि तेहांतेत्रीससागरोपमआयु पूरणनोगवीने तेहांथीनिक ल्यापछे महारीस्त्रीजे नवितव्यता तेणेनवीनवी कर्मगुटिकाओखवरावीने अनंतावा र नवानवा वेशें नचाव्यो बहुलतायें एकअसंव्यवहारनगरविना प्रायेंसर्वत्रस्थानके मुजनेनमाव्यो किहांएकछेदनभेदनादिकेंकरी किहांएकयंत्रमांहेपीलाव्यो किहांएक नूख तरस टाढ ताप नोगवाव्या किहांएकमूर्ख किहांएकदालिद्री तेमज हीनजातिप णुं हीनअंगपणुं कुटुंबवियोगपणुं दासपणुं दुर्नाग्यपणुं कुरूपपणादिक एमनाना प्रकारना नवनवनेविषे संसारमां दुःखनोगवतां तेमज स्वजनने अनिष्टपणुंजिव्हा छेदनपणुं इत्यादिक नानाप्रकारना संसारनेविषे दुःखनोगवतां अनंतकालसुधी वि टंबनाकरता करता थाकीथकी कांइकमहाराउपर रहेमनजरकरीने एकदिवशें नवित व्यता महाराउपर प्रसन्नथयीने मनेकहेवालागीजे हेआर्यपुत्र तेघणादुःखनोगव्यां हवेतुं मनुष्यगतिनामानगरीयेंजा अनेपुण्योदयनामामित्रनेपण तारीसाथे नलावुं छुं एहवातेहनावचननेमें अंगीकारकस्या.

एवातसांजली प्रज्ञाविशालाबोलीजे जूओमृषावाद तथा अहंकारअने रसना इंद्री चोरीइत्यादिकनासंगथी उपनुंजेफलते सांजलीने एहनेविषे पंमितपुरुषेंकेवारें पण शक्तिफोरववीनहीं तेमाटे उत्तमपुरुषें एरिपुदारणनो संबंधसांजलीने मृषावाद तथा अहंकारना माठाफलजाणी एवेवानापरिहरवा तथा विचक्षणसूरिनो संबंध

वेकनामापर्वतछे एहनाउपरें सात्विकमानसनामा अंतरंगनगरछे अनेनिर्मलचित्ता दिकजे घणाकनगरोछे तेसर्वेएमां अंतरजूतथायछे हवेजेप्राणी सम्यक्दर्शन अनेस दागमजे श्रुतज्ञान तेहनेउवेखीने मोहादिकने वशवर्त्तिथयाछे तेपुरुषकेवारेंपण सात्विकमानसादिकनगरोप्रते अनेविवेकनामापर्वतप्रतें देखवानेपण समर्थनथाय वि वेकपर्वत अने जैनपुरनगरना वसनारालोकोने धन्यछे केमके कर्मपरिणामनामे रा जातेपण एहोनेसमाधिनोकरनार सुखनोदेवावालोछे.

जेसात्विक मानस नगरनावसनारा लोकतेने मार्गानुसारीकहियें अनेजे जैनपुर ना वसनारालोक तेहनेजैनीकहियें

जेजैनी लोकते विवेकनामापर्वतउपर वेगथका संपूर्णजवचक्रनुं स्वरूप जेम हा थनेविषे आमलानुंफल प्रत्यक्षदेखाय तेहनीपरेंदेखी वैरागपामेछे अनेकिवारेंक मो हादिक पणअंतरकालदेखीने जैनलोकने जीतवाआवेछे पणविवेक पर्वतनेबलें मो हादिकनीशक्तिचालतिनथी तेहांथीपाछावलीजायछे जैनपुरनगरते घणेकष्टेंलोकपा मेछे यद्यपि मानवावासादिकचारेनगरमां जैनलोकवसतादेखायछे तोहेपण तत्वथ की तेजैननगरमांज वशेछे.

वलीप्रकर्षेपुछ्युंजे हेमामा जेममिथ्यामतिलोकने मोहादिकनी चेष्टाछे तेमजैनी लोकोनेपण मोहादिकनी चेष्टातोदेखायछे केमकेजिनबिंबदेखी मोहपामेछे तथास्वा ध्यायादिकउपरें रागीथायछे साधर्मिकउपरें स्नेहधरेछे जलीक्रियानेविषे प्रीतिवंतथाय छे गुरुनादर्शनथकी हर्षवंतथायछे व्रतनाअतिचारउपरें द्वेषधरेछे सामाचारीलोप नार उपरें क्रोधधरेछे प्रवचनना प्रत्यनीकउपरें रोषकरेछे कर्मनिर्जराउपरें हर्षक रेछे प्रतिज्ञापालवा उपर अहंकारधरेछे देवादिकनाउपसर्ग उपरें विस्मयपामेछे व्रतेकरी मलिनपुरुषनीदुगंछाकरेछे इंद्रियरूपधूर्त्तने वंचेछे तप तथा चारित्रउपरें लोजधरेछे वैयावच्चनीवांछाकरेछे परोपकार करीनेपण संतोषपामतानथी प्रमादरूप चोरने हणेछे संसारभ्रमणथी बिहेछे मागआचरणथी शोकपामेछे पोतानामागच्च रित्रनो निग्रहकरेछे जिनाज्ञारूपस्त्रीनुं घणुंआराधनकरेछे इत्यादिकरीतें विचारतां जैननेपण मोहादिकनी चेष्टातो घणीजदेखायछे अनेकहेवायतो एमछेजे ए मोहा दिकनानाशकरनाराछे.

तेसांजली विमर्शबोल्योजे हेप्रकर्ष जेमोहादिकते बेप्रकारनाछे तेमांजेमिथ्यात्वी नेहोयते अप्रशस्त मोहादिककहियें ते कर्मपरिणामराजाना पक्षपातीहोय अने जै ननेतोप्रशस्त मोहादिकहोय तेचारित्रधर्मराजाना पक्षपातीहोय जेप्रशस्तमोहादिक

थापितुजनेदेखी मह्हारोह्रृदय तथा नयनप्रसन्नथायछे तेथीजाणुंछुंजे ताहरीवातस वेखरीजछे अनेतुंमह्हारो उत्कृष्टमित्रछो माटे ताराजाइतथाबहेन सहितमाह्हरापासें बेश तेसांभली मृषावादेकह्युंजे हेवत्स तुंपरमस्नेह्पात्रछो तेमाटे ह्मणातो माह रीबेहेन माया अने स्तेयने प्रगटपणें ताह्हरीपासेंमूकुंछुं एबेहुनेतुंमित्रपणेजावजे ए पणतुजने विचित्रप्रकारनी शक्तिआपशे प्रस्तावेहुंपण प्रगटथइश ह्मणातो प्रछन्न पणेरहुंछुं एमकहीमृषावादतो अंतरभूतथइगयुं अने मायातथा स्तेयतेप्रगटपणे र ह्यादेखी हुंमहाआनंदपाम्यो शावास्तेके जूओआअनंतोकालवहीगयो तोपण मि त्रेमाराउपर केहेवोउपकारकर्योछे.

हवेमायानाअनुभावथकी हुंमातापितादिकनेपगलागुं अनेस्तेयनेवशें चोरीकरुं ए हवामारालक्षणजोइनेकुटुंबनालोकोनेविषेतोहुं अवगणनानावरतुल्यथयो हवेराजा नीस्त्री कमलसुंदरी अने मह्हारीमाता कनकसुंदरी तेबेहुनेपोतामां सखीपणोह्तो तेह्नासंबंधथी मह्हारे अने राजपुत्रविमलनेपण माहोमाहेंमित्रताथयी हवेतेविम लकुमरसज्जनमाटे मह्हाराउपरउत्कृष्ट स्नेह्धरेतो पणहुंतेह्नीसाथें घणी ठगाइज करुं एमकरतां केटलाकदिवसगया वलीअवसरें मातापितायेंअमने भणवामूक्या पछे अमें बेहुजणा भेलागुरुपासेथीघणीकलाओभण्या.

एकदिवसेंअमें कौतुकजोवानेअर्थें विविधप्रकारनावृक्षेंशोभित क्रीडाकरवानेयोग्य एहवोनंदननामा उद्यानेगयाह्ता तेहांविविधप्रकारनावृक्षोनी शोभाजोइयेंछइयें ए टलामां अमेबेहुयेंकोइअव्यक्त मधुरध्वनि दूरथीसांभली तेवारेंविमलें मनेपुछ्युंजे हेमित्रकिंकणीयेंकरी दशिनेजिते एह्वोए शब्दथायछे माटेनिश्चेंकरी वननासुखजो वानाकौतुकि कोइक किंन्नर अथवादेवता इहांकोइवेलनासमूहनेविषे विचरतोहसे तेमाटेचालोजोइयें एमविचारी अमेबन्नेजण शब्दनेअनुसारेंचाल्या एटले मार्गमां अंकुश चक्र छत्रादिलक्षणोपेत कोइकना पगलादेखी विमलकुमरबोल्योजे हेमित्र आपगलातोकोइक उत्तमपुरुषनादेखायछे आकाशनाचालनार देवतानेतो धरतियें प गथापवानो अभावछे केमकेधरतिथी चारअंगुलउचाचालेछे माटे देवताना पगलाए नथी एमकहिथोडेछेटे आगल चाल्या एटलेएकलतागृहमां सर्वांगेंसुंदरएहवुं स्त्रीपु रुषनुंजोडलुंदीठुं तेनोदेवताथीपण अधिकरूपदेखीने विमल कुमरबोल्युंजे हेवामदे व एह्नालक्षणजोतां एस्त्रीपुरुष महाउत्तमदेखायछे मेंपुछ्युंजे एह्वाक्यालक्षणए मांछे तेवारें विमलेंकह्युंके.

जेह्नानख आरसीसरिखा चलकाटकरताहोय वली स्निग्ध अने पुष्टचरण

तथापांचेंद्रियनोनिरोध अनेचारकषायनोजय तथामनोदंड वचनदंड अनेकाय दंड एत्रणदंडनी निवर्त्ति एरीतें सत्तरपुरुषेकरी परिवर्योथको एहछोसंयमनामापुरुषकहियें तथावली आ सातमो सत्यनामेपुरुष तथाआठमोद्रव्य तथाजावनी शुद्धिनीपजावनार एहवोशौचनामेपुरुषबेठोछे तथापरिग्रहने छंफावनारोअकिंचननामे पुरुषतेनवमोआबेठोछे तथादसमुं ब्रह्मचर्यते मन वचन कायायेंकरी दिव्य तथाउदारिकादिक कामनासंबंधथी छोडावनारो वलीदसमुंब्रह्मचर्यपुरुषबेठोछे एरीतें दसमनुष्यें परवर्योथको यतिधर्मनामे महोटो राजपुत्रबेठोछे तथातेनेडावेपासेजेस्त्री बेठीछे तेसझावसारितिनामे एयतिधर्मनीस्त्रीछे.

तथाआवीजो राजासमीपेंबेठोछेते ग्रहस्थधर्मनामें नानोराजपुत्रछे तेप्राणातिपातादिक बारमनुष्यें परवर्योछे ते बारमनुष्यनानामकहियेंछेयें १ स्थूलहिंसाविरमणव्रत २ स्थूलमृषाविरमणव्रत ३ स्थूलअदत्तविरमणव्रत ४ परदाराविरमणव्रत ५ इछापरिमाण रूपपरिग्रहव्रत ६ दिशिनापरिमाणरूपते दिशिव्रत ७ नोगोपनोगव्रत ८ अनर्थदंडनिवर्त्ति ९ सामायकव्रत १० देशावगाशीकव्रत ११ पोषधोपवासव्रत १२ अतिथिसंविनागव्रत एबारपुरुषें परवर्योथको ग्रहस्थधर्मनामा लघुराजपुत्रबेठोछे तथाएनी स्त्री सद्गुणरत्नतानामें तेहनीपासेंजबेठीछे.

वलीआसम्यक्तदर्शननामे जेपुरुषबेठोछे तेचारित्रधर्मराजानो प्रधानछे तेराजानी तथाबेहुराजपुत्रनी परिपालनाकरेछे ते १ उपशम २ संवेग ३ निरवेद ४ अनुकंपा ५ आस्तिकता एपांचेपुरुषेकरी परवर्योथको जणायछे तथा १ परहित बुद्धि २ गुणिजनउपरेपक्षपात तथा ३ परदोष विनाशकरवानीइछा तथा ४ असाध्यदोषउपरें उपेक्षा एचारजावनारूप चारस्त्रीएनाआनूषणनी धरवावालो परिचयनीकरनारीछे तेणेकरीए सम्यक्तदर्शननामाप्रधानशोजतुंछे वली एसम्यक्तदर्शननामा वजीरनीपासें जेसमस्तसुलक्षणेकरीसहित गौरांगीस्त्रीबेठेछे तेसुदृष्टिनामे एनी स्त्रीछे एवजीरते मिथ्यात्वनो जीपनारछे तथादर्शनमोहनीयकर्मनेक्षयेंकरी तथाउपशमेंकरी अनेक्षयोपशमेंकरी १ उपशमसम्यक्त २ क्षयोपशमसम्यक्त ३ क्षायकसम्यक्त एत्रणलक्षणेकरी त्रणरूपधरेछे.

वलीआवीजोसद्बोधनामे राजानो महोटोप्रधानबेठोछे एजूत नविष्य तथावर्त्तमानकालना समग्रद्रव्यगुणपर्यायने जाणे एचारित्रधर्मराजाना राजमां जैननगरने विषे सर्वजैनलोकोने नीतिमार्गें प्रवर्त्तावेछे तथाएनीपासें जाणपणाएहवेनामे एनी स्त्रीबेठीछे वली १ मतिज्ञान २ श्रुतज्ञान ३ अवधिज्ञान ४ मनपर्यवज्ञान ५ केव

लेकरी बेहुवैरीनेजीत्या तोतेठेकाणेहुं सुंउपकारकरतोहतो पणतमारादर्शनथकीज महारासर्वकार्यनी सिद्धिथयी माटेतमारोवृत्तांतकहीने मनेसंतोषवंतकरो तेवारें युगलपुरुष पोतानीवातकहेछे.

चंद्रनाकिरणनीपरें उज्वल एहवो वैताढ्यनामेंपर्वत तेहांदक्षणश्रेणीनेविषें गग नशेखरनामेनगर तेनो मणीप्रननामेराजा तेहने कनकशिखानामेस्त्री तेहनोरत्नशिख रनामाएकपुत्र तथारत्नशिखा अनेमणिशिखा एबेपुत्रीछे तेमां रत्नशिखाते मेघनाद नामेविद्याधरने परणी तेहनोपुत्रहुं रत्नचूडनामे तथा मणिशिखानामापुत्रीतो शित प्रननामाविद्याधरने परणी तेहना अचल तथा चपलनामेबेपुत्रछे हवे रत्नशेखरनी स्त्री रतिकांता तेहनी कुक्षीथीउपनी चूतमंजरीनामेपुत्री तेआमहारीस्त्री तमारापासें उनीछे हवेकुमारावस्थायें अमेसर्वेएकठा रत्नशेखरनामां अमारामामानाघरें क्रीडा करताहता एकदिवशे चंदननामा सिद्धपुरुष अष्टांगनिमित्तनोजाण अने जिनमत नोजाण वली रत्नशेखरनामे राजानोबालमित्रहतो ते यंत्र मंत्रज्योतिषादिक सर्वशास्त्र जाणेछे तथाजैनमतमां घणो कुशलछे तेहनासंयोगें रत्नशेखरपण जैनीथयो अनुक्र में महारी माता रत्नशिखा महारोपिताजे मेघनाद तेहनेपण जैनधर्म समजाव्यो वली रत्नशिखाने तथामनेपण धर्ममार्गसमजाव्यो.

हवेएकदिवसें चंदने महारासन्मुखजोयीने रत्नशेखरने कह्युंजे आताहरोजाणेज रत्नचूडनामे ते विद्याधरोनो चक्रवर्त्तिथाशे एमजणायछे ते सांभली संसारीजीव कहेछेजे में विमलना सन्मुखजोयीनेकह्युंजे हेमित्रतेंएपुरुषनेश्रुन लक्षणवंतकह्युंहतुं ते ताहरुंवचन मिलतुंथयुं एमकहिरह्यो एटलेफरी रत्नचूडेकह्युंजे. हेविमल पछे र त्नशेखरविद्याधरें चंदननिमित्तियानावचनथकी उदयनोकरनार तथाजैनधर्मवंतमने जोयीने पोतानीपुत्री चूतमंजरी मनेदीधी तेवारें अचल तथा चपल महारामाताविषे असर्दहताथका मनमांडहवाणा तेदिवसथीमांडी महाराउपर मत्सरभावराखेछे प णचूतमंजरीने हरवानेअर्थें तथामनेउपद्रवकरवाने असमर्थथका कालनामें दुष्ट विद्यानो साधनकरीने महारीस्त्रीहरणकरवानेविचार्युं तेवातमें मूखरनामादूतथीजा णीने विचार्युंजे एहोनीसाथेंयुद्धकरतां महारीमासीनापुत्रोने हणवानोपाप महा राउपरपडेनही एटलामाटेहुं प्रथमथीज माहरीस्त्रीनेतेडीने इहांथी अन्यत्रस्थानके जतोरहुं एमविचारी हुंमाहरीस्त्रीनेलेइ आक्रीडा नंदनवनमांआव्यो एटलामां पा छलथी तेबेहुपण किहांकथीमाहरेइहांआववानी खबरजाणीने तमारेदेखतांज इहांआव्या तेमांथी अचलेंमनें युद्धकरवानेअर्थेबोलाव्युं अनुक्रमें मेंतेहनेजित्यो

ते सर्वलोकनेहितनोकरनार रखवालोछे इत्यादिक सर्वपरिवारसहितकह्या तेजेममो हादिकसर्वने दुःखदायीछे तेमएराजमंडलते सर्वजीवनेअनंतसुखनो उपजावनारछे

तथावलीआ चित्तसमाधनामा मंडपमांरह्याजे शुभाशयेंकरीविशुद्धथयेला अ नेकसुभटोबेगाछे तेसर्वएराजाना सेवकजाणवा हवेविमर्शकह्युंजे हेवत्स एराजानुंव र्णन तथा सैन्यनुंवर्णन तेसर्वप्रकारेंकोणकरीशके तेमाटेचालोहवे आपणेआपणा स्थानकेंजइयें तेवारेंप्रकर्षेकह्युंनलुं हवेतेहांथीचाल्या मार्गमां गांभीर्य धैर्यादिकरथ तथा यश सुजनपणोप्रमुखहस्ति वली बुद्धियेंकरीचतुर अनेतत्त्वबोधादिक अश्व त था अचलपणुं विनीतपणुं दाक्षिणपणो इत्यादिकपालोकटकजे चारित्रधर्मराजानुं छे तेसर्वजोताजोताचाल्या.

हवेप्रकर्षकहेछेजे हेमामातमेतो मनेंभलुंजकौतुकदेखाड्युं मोहराजानुंसैन्य तथा चारित्रधर्मराजानुंसैन्य अने भवचक्रनुंस्वरूप वली जैनपुरनुंस्वरूप तथाविवेक पर्वत इत्यादिकसर्वनुंस्वरूप तमेंमनेदेखाड्युं माटेहुंकृतकृत्यथयो हजीपणथोडादिव स आहिं विवेकपर्वतें रहिनेभवचक्रनगरनुं स्वरूपजाणियें तेवारेंफरी चारमहिना सुधी तेहांरह्याजैनपुरादिकना अनेककौतुकजोवाने तत्परथका सर्ववातने भलीपरे जाणी हवेतेहांथी प्रकर्ष अने विमर्श पोतानीअवधिनोकाल पूरोथयोजाणीने पो तानाघरप्रतें चाल्या तेअनुक्रमें पोताने मंदिरेंआवी शुभोदय विचक्षण अने बुद्धिप्र मुख सर्वनेसंतुष्टथयी परस्परें आलिंगनादिकेकरीमिल्या बुद्धीपोतानाभाइ अने पुत्र नेदेखी खुसीथयी अने प्रकर्षने विचक्षणेपोताने खोलेबेसाडी माहोमांहे खेमकुश लनी सर्वखबरकही विमर्श अने प्रकर्षे राजसचित्त तथा तामसचित्त प्रमुखनगरो नी दीठेली सर्ववातकही संभलावी.

फरीकह्युंजे हेविचक्षणजी एजिव्हाते रागकेसरीराजानो प्रधानजे विषयाभिला ष तेहनीपुत्रीछे अने चारित्रधर्मराजानो मुख्यसेवकजे संतोषनामेछे ते ए जिव्हा नो जीपनारोछे वली मोहराजानुंलशकर अने भवचक्रनगर तथाविवेकपर्वत जैन पुरनगर तथाचारित्रधर्मराजाना लशकरादिकनासर्व वृत्तांतकह्या तेसांभली विचक्षण हर्षपाम्योथको विशेषेंकरी रसनास्त्रीनोविषयभूतममतानो त्यागकरवालागो.

हवेजडकुमरतो लोलतादिकनेवशें रह्योथको मद्य मदिरा मांसादिकेंकरी जिव्हा नेपुष्ट करतो एकदिवसें घेटानामांसनेलोभे घेटानीभ्रांतियें एकगोवालियो सुतोह तो तेहनेरात्रीनेवखतबाणेकरीमारीने तेहनीपासेगयो अनेजोयुंतो मनुष्यसुवेलोदे खीने मनमांविचार्युंजे अहोमें रसनानी तृप्तिनेअर्थे विचित्रप्रकारना मांसखाधाछे

पतत्वने हजीजाएयुंनथी एह्वा मह्वारामातापिता आज्ञाआपेनह्वी तेमाटे कोइकरीतें पणमह्वारा मातापिता प्रतिबोधपामे तेवारेंमह्वारुंमनोवांछितसिद्धथाय.

एमसांजली रत्नचूडबोल्योजे हेमित्र जोह्मणांकिह्वांकथीपण बुद्धनामे आचार्यछे तेजोकदाच इह्वांआवेतो ताह्वरामातापितादिकने प्रतिबोधकरीसमजावे तेवारें विम लें पुछयुंजे हेमित्र तेआचार्यने तमेदीठाछे रत्नचूडेकह्युंजे गइअष्टमीनादिवसें अने कमुनीनावृंदे परवस्योथको इह्वांज आप्रासादनेविषे जिनराजनेवांदवा आव्योह्वतो तेवारेंमें एप्रासादनाद्वारे मेघनीपरें गंजीरस्वरें जव्यजीवोने धर्मदेशनादेतोथको दीठो ह्वतो पणशरीर श्याम निष्टरूप देखतोजयंकर त्रिखुणीओमस्तक चूसेलानेत्रो उंची नाशिका कोटलांबी पेटलांबो इत्यादिक मह्वाकुरूपदेखीमें विचार्युंजे जूओगुरुना व चनतुंअतिशयपणुं माटे एमने एह्वोकुरूपपणुंनजोइयें एमविचारीहुं देरासरमांज थी जगवंतनीपूजा विधिसह्वितआठप्रकारेकरीने शक्रस्तव मंगलादिकें वाजीत्रना नि र्घोषादिककर्या पछेप्रासादथी निकल्यो एटलेते आचार्यने सुवर्णकमलें बेठासाक्षात् कामदेवसमान रूपवंत लक्षणोपेत अंगोपांगें विराजितदेखीने में विचार्युंजेएआचा र्यक्षणेकवारमां आवाजातिवंत सोनानीकांतिसरिखा केमथया वलीविचार्युंजे मह्वा तपस्वी मुनिराजोतो अनेकलब्धिवंत एह्वाजह्वोय.

एरीतेंपूर्वेमह्वारा चंदनधर्माचार्येपण मनेएमजकह्युंह्वतुं जे तपस्वी तो परमाणुजे ह्ववो सूक्ष्मशरीरकरे तेमज मेरुपर्वतथीमह्वोटुशरीरपणकरे वज्रथकीपणअत्यंतजारी थाय जूमिनेविषेरह्याथकापण अंगुलनेअग्रजागेकरी मेरुनेस्पर्शे जेवीरीतें जूमिनेवि षेचाले तेवीजरीतें अग्निज्वालानें विषेपणचाले वलीतेह्वनाआश्रितजीवोनें बाधापी माउपजेनह्वी तेमजचक्रवर्त्ति अनेंइंद्रादिकनी ऋद्धिनेविकूर्वे इंद्रअनें जपइंद्रादिकोनें पणावशवर्त्तिकरे एमअनेकलब्धियेंशोजित विचित्रप्रकारना रूपवंतह्वोय जुवनपूराइ जाय एटलोमह्वोटोपण शरीरकरे इंद्रसरिखानेपण किंकरगणे कठिणशिलामध्ये प्र वेशकरे एकघटना ह्वजारघटकरे स्पर्शेंद्रियेंकरी सर्वरोगहरे अग्नि तथा जलादिक उ परेंचाले इत्यादिक सर्वप्रकार तपस्वीनेसाध्यजह्वोय तोसाधुते मह्वोटाजजाणवा एह्व वुंजाणीने में सूरितथा सर्वयतिप्रतेंप्रत्येकेवांद्या यतियेंपण स्वर्गादिकसुखनोदायक धर्मलाजरूप आशीरवाददीधो तेवारपछि वैरागनीउपजावनारी धर्मदेशनाआपी ते थीहुं माह्वराचित्तमां घणोआनंदितथयो अनेजैनमतनेविषे घणोदृढथयो पछेकोइक मुनीने आचार्यनोनामादिकपुछयुं तेवारेंतेणेकह्युंजे एबुद्धनामाआचार्य सर्वलब्धिना

आव्यो तेवारें गुरुबोल्याजे हे राजन् ए यद्यपिताहरा कुलमांतो उपनो तोपणएहने मृषावाद अने शैलराजनामेंबे पापमित्रछे तेहनावशथकी जो एरुडोहोय तोपणनिर्ज क्षयथयोतेथी एनीएवीबुद्धिथयी वलीराजायेंपुछ्युं जे हेस्वामि एपापमित्रकोइपणरीतेंट ले एहवोकोइउपायछे तेवारेंगुरुबोल्याजे. हेराजन्

उज्वलमानसनामेनगरनो शुद्धाभिप्रायनामेराजा तेनीएकसौजन्यता अने बीजीश्रेष्ठ तानामे एरीतेंबेस्त्रीओछे तेमांपेहेलीस्त्रीनीपुत्री नम्रपरिणामनामे अनेबीजीस्त्रीनीपुत्री सत्यतानामें एबेकन्याओजेवारें एतमारोपुत्र परणसे तेवारें शैलराजा अनेमृषावाद एबेहु पापमित्रटलशे पणतेतोकालांतरेंथशे पणहजीतो घणोकालसुधी एताहरोपुत्र एहवीज स्थितिमांचालसे तेसांभलीराजाने घणीअसाताथयी तथापि चारित्रलेवा वाने उतावलहती माटे मने अयोग्यजाणीतोपण पुत्रनास्नेहमाटेमने राज्यआपी राजायें विचक्षणाचार्यपासेथी दीक्षालेइ गुरुसाथें विहारकरी अन्यस्थानकेंगया.

हवेसंसारीजीवकहेछेजे हुंजेवारथीराजाथयो तेवारथी पापमित्रतो उलटावध वालागा आखाजगतने तृणसमानगणतोहतो मिथ्यात्वनी प्रशंसाकरुं एरीतें शैल राजातथामृशवादने पुष्टिवंतकर्या घणुंखोटुंबोलुं एमकरतापण पुण्योदयनाजोरथी राज्यपालतां केटलाकदिवसवित्या एहवामांएक तपननामे चक्रवर्त्ति दिगविजयकरवा नेअर्थेनिकल्यो तेसिद्धार्थपुरें मारानगरेआव्यो तेवारेंमने प्रधानादिकेंकह्युंजे हेस्वामि एतपनचक्रवर्त्ति सर्वोपरिचालनार अतुल्यपराक्रमी आपणेसन्मुखआवेछे माटे भेट णाप्रमुखलेइ एहनासन्मुखजयी एहनीपूजाकरो जेथकीआपणाराजने कुशलथाय.

तेसांभली हुंतेचक्रवर्त्तिने सन्मुखजवानेइछुं एटलामां माहरेहृदयें शैल राजायें स्तब्धचित्तनामे औषध चोपड्युं तेथी हुंगर्वेंकरीधमधम्योथको प्रधानने कहेवालागो जे एतपनचक्रवर्त्तितें महाराजुजानापराक्रम आगलें शीगणतीमांछे तमेंजीखारीछो जेएनाथकीजयपामोछो हुंतोएनासन्मुखजनारनथी अनेजो वारंवार म नेकहोछो तो एकवारतमें सन्मुखजाओ हुं पाछलथीआवुंछुं एममृषावादेंहुंबोल्यो तेवारेंप्रधानादिक सुभटोनासमुदायसहित घणीभेटलेइने चक्रवर्त्तिनेजयी मिल्या च क्रवर्त्तियेंतेमने मानदीधुं कुशलनासमाचारसहित माहरानआववानो कारणपुछ्युं तेवारेंप्रधानादिकेंकह्युंजे हेस्वामिअमारोराजा आपनापगनी सेवानेविषे उत्सुकथको हमणाअमारीपछवाडेआवेछे एमकहितेप्रधानादिकेंफरी मनेतेडवानेअर्थें दूतमोक ल्यो पणमेंतो शैलराजानावशथकी प्रधानादिकने कहेवराव्युंजे अरेअरेअधमपुरुषो तमेमनेपुछ्याविना कोहोनाहुकमथी एतपनचक्रवर्त्तिने मलवागया एचक्रवर्त्तिसुंकरना

रत्नलेतां मनेदीठोहोशे तोहवेढुंइहांथी नासीजाउं एमविचारी जेस्थानकें रत्नराख्युं हतुं तिहांआवीने व्याकुलपणाथकी रत्ननीभ्रांतियें पत्थरनोकटकोलेइ वनमांनासी गयो तेएहवोउतावलो चाल्योजे त्रणदीवसमां अठ्यावीसयोजन भूमिओलंघीगयो पछेतिहांकांइकविसामोखाइने गांठछोडीजोयुंतो रत्नेनेबदले पत्थरोदेखीमूर्छाआवी फरी सावधानथयी वलीरत्नलेवाने तेहांथीपाछोफर्यो.

हवेपछवाडेविमलें प्रासादथीबाहिरनिकली मनेदीठोनही तेथीव्यग्रचित्तकरीने सर्वत्रजोयी गामगांमे म्हारीशोधकरवाने माणसोदोडाव्या तेमाहेलो एकपुरुष माहरा सन्मुखआव्यो तेदेखीहुंजयपाम्योथको नासवानुंमनकरुंछुं एटलामां तेणेआवीमनेक ह्युंजे हेवामदेवताहरेविरहें विमलमहादुःखपामेछे माटेतुंवहेलोतिहांचाल तेसांभ ली मेंजाण्युंजे हजीमाहरोअपराध विमलकुमरें जाण्योनथी एहवुंधैर्यआव्युंपछे हुं हर्षितथयोथको तिहांजयी विमलनेमल्यो विमलमहारेकंठेवलगी रुदनकरी मनेअ र्धआसने बेसाडी पुछ्युंजे हेमित्रतुंकिहांगयोहतोतेवारें मेंतेहनेअनुभवेंकरीनेकपट थी एककल्पितवातकही जेभाइतुंतो देराशरमांगयो एटलामां एकविद्याधरियें मुजने हरणकरी आकाशमार्गें केटलाकयोजन उचाजयीने मारीसाथें भोगवांछवानीयाच नाकरीपण ताहरासाथे वियोगथाय माटेमेंतेहनुंवचन अंगीकारकर्योनही एटला मांवली एकबीजीविद्याधरियेंदीठो तेपणभोगवांछनायें तिहांआवीनेमाहारा हाथनेव लगी पछेतेबेहुविद्याधरियें परस्पर युद्धकरवामांडयुं एटलामांहुं तेमनाहाथथी स्खलि तथयोथको पृथ्वीउपरेपडयो मनेघणुंवाग्युं तेथीजर्जरितअंग थयो तोहे पण ताहराप्रेमना परवशपणाथकी कोइकरीतें हलवेहलवेचालतोहतो एटलामां आ पुरुषमल्यो तेवारेंसर्ववात एहनामुखथी जाणीने हुंउतावलो आव्यो इत्यादिकमेंजे कपटभावें वातकहीते सर्वविमलें खरीजाणी केमकेते सरलस्वभावीहतो माटे.

इत्यादिकमें खोटावृत्तांतकह्या तेथीनिश्चेंमहारा शरीरमां महोटीवेदनाथयी ते वेदनानावशथकी चक्षुफूटवालागीभूमिनेविषेपडयो भांनवर्जित थयो एहवोमनेजो यीने म्हारेदुःखेपीडाणोथको विमलकुमरें हाहारवकर्यो धवलराजाप्रमुख सर्वएक ठाथया मंत्रतंत्रादि हजारोउपायकर्यापण तेसर्व निःफलथया कांइपण वेदना उपशमीनही तेवामां विमलने रत्नसांभलीआव्युं केमकेचिंतामणी रत्नछे माटेतेह नाजलेकरी प्रक्षालनकरवाथी एवेदनाजसे एमविचारी तेरत्नलेवानेअर्थें जिहांरत्न दाटयुंहतुं तिहांजयीजोयुं पणरत्नदीठुंनही तेवारें विमलने चिंताथयीजे रत्नतोको इकहरणकरीगयुं एमनिश्चेंकरीहाइतिखेदे तोहवेएमहारोमित्र वामदेव केमजीवसे

सांजली जिव्हाइंद्रियनो जयकरवो जेमसकलमनोरथनी सिद्धिहोय परमानंदथाय.

इतिउपमितभवप्रपंचनीकथाना द्वारविषे शैलराजाजेमान तथामृषावाद मदि रापान मिथ्याभिमान धनगर्व गणिकानेघरेंजावुं जुगटानुंरमवुं आहेडोक रवुं विकथानीशक्ति इत्यादिकोना विपाकनेदेखाडवारूप बीजोअधिका रसंपूर्णथयो इतिमहामृषावादेच रिपु दारण कथानकःसमाप्तः

---

हवेसंसारीजीव अगृहीतसंकेतापासें सदागम तथा भव्यपुरुष अने प्रज्ञाविशा ला सांजलतांथकां पोतानेमनुष्यगतिनगरियें आव्यानीवातकहेछे जेपुण्योदयनेमित्र करीने वर्द्धमाननामेनगर तेहांन्यायादिकगुणेयुक्त वलीपोतानीकिर्त्तियेंकरी उज्वलक र्योछे पृथ्वीनोवलयजेणे एहवो धवलनामेराजा तेहने कमलसुंदरीनामेपटराणीछे ते नोविमलनामेपुत्रछे अनेतेहिज वर्द्धमाननगरें एकसोमदेवनामें व्यवहारीओ महा बुद्धिवंत धनवंतवसेछे तेहनेकनकसुंदरीस्त्रीछे तेहनीकुक्षीनेविषे भवितव्यतानेवशें गुटिकानाप्रयोगथी हुंअवतर्यो पछेअनुक्रमें पुण्योदयसंघाते महारुंजन्मथयुं पिता येंमहोटो महोत्सवकरी महारुंनाम वामदेवपाडयुं अनुक्रमें दिवशें दिवशें माता पितादिकें लाडलडाव्योथकोहुं महोटोथतोगयो.

एकदिवसें श्यामवर्णे बेपुरुषोतथा एक वक्रशरीरवंत अने चंचल स्त्री एरीतेंत्रणे जणनेआवतामेंदीठा तेमांथीएकपुरुष महारापाशेआवी मनेरुडीरीतें आलिंगनदेइ पुछवालागोजे हेमित्रतुंमनेओलखेछे तेवारेंमेंकह्युंना नथीओलखतुं तेवारेंते शोकातु रथयोथको बोल्योजे हेमित्र असंव्यवहारनगरथीमांमीनेजेजे स्थानकेंतुंक्रीडाकरतो तेतेस्थानकेंहुंपण ताहरीसाथेंअलक्षनीपरें ताहराघरमांज हतो पणजेवारें सिद्धार्थ पुरनगरेंतुं रिपुदारणकहेवातोहतो तेवारेंतोहुंताहरीसाथें प्रगटपणेजमृषावादनामे ताहरोमित्र हतो तेवारेंतुंमहाराउपर उत्कृष्टआसक्तहतो एमतेमहारीसाथें पूर्वेघ णीक्रीडाकरीछे अनेएकदिवशेंतुं महारीशक्तियें रीज्योथको तेंमुजनेमहारीशक्तिपाम वानुं कारणपुछयुं तेवारेंमें कह्युंजे रागकेसरीनामेंराजानीपुत्री मायानामे महारीअं गीकारकरेलीबेहेनछे तेहनीपासेंथी हुंशीख्योछुं अने वखतउपरतुजनेपण हुंदेखाडी स एहवुंमेंतुजने कह्युंहतुं तेमाहरोबोलवुं साचुंकरवानेअर्थें तेमहारीमहोटीबहेन जेमाया तथावली स्तेयके० चोरीपणोनामे महारोनानोभाइ एवेहुनेंसाथेंलेइनेहुं ताहरीपासेंआव्योछुं.

एहवामृषावादना वचनसांजलीनेमेंकह्युंजे हेमित्रयद्यपिहुंतने ओलखतोनथी त

केथरी सर्वेआनंदितथया केटलाकदिवसतो विविधप्रकारना राजकार्यकरवेंकरी व्यग्र चित्तथकागया पछेएकदिवसेंमने स्मरणथयुंके जूओमाहरोप्रमादपणुंजे विमलनुंकह्यो कार्यविसारीने राजनीपीमारूपकादवमां मग्नथको निरंतररहुंछुं पछेमेंघणोछेकाणें त पासकरी बुद्धआचार्यने शोधीने हेविमल में तमारादीक्षाना अभिलाषनी याचनाक री अनेकुटुंबने समजाववानीपण वातकही तेवारेंबुद्धसूरियें मनेकह्युंजेघणुंसारुं अ मेप्रस्तावें तिहांवर्द्धमाननगरेंजासुं पणविमलपासें दुःखीजननी खोलकरावजो हुंतो एवेजवेशें आवीस एहिजविमलनाकुटुंबने प्रतिबोधवानो उपायथासे तेसांभलीहुं तमारापासें आव्योछुं एमकहीने रत्नचूडेकोइक संकेतनीवात विमलना कानमांकही

एसर्ववातसांभलीने विमलकुमरहर्षवंतथको रत्नचूड तथाचूतमंजरीराणीप्रमुख ने पोतानानगरमां तेमीआव्यो तेमनीभलीरीतें भोजन वस्त्र आभूषणादिकें परो णागतकरी विविधप्रकारनी धर्मचरचायेंकरी सुखअनुभवतां विमलनास्नेहनेवशथ का पांचदिवसस्त्रीभर्तारितेहांरह्या तेवारपछे रत्नचूड विमलनीरजालेइ पोताने नगरें पहोतो अनेविमलकुमरतो हलुकर्मिमाटे कर्मजालने अवगणी तेदिवसथीविशेषेंकरी संसारने असारपणेभावतोथको दीक्षालेवानेघणो रागीथकोरह्योछे हवेएकदा धवलरा जायें तथाकमलसुंदरीयें विचार्युंजे आआपणोपुत्रविमलकुमर नवो यौवनपाम्यो छे महाशक्तिवंतछे तथापि साधुनीपरें इंद्रियनेसंवरीराख्योछे कांइपणविषयसुखने वांछतुनथी भोग्यतथा राज्यादिकने वांछतोनथी तोआपणेहवे विमलनेसमजावी रा ज्यदेइ विषयादिकसुख भोगवावियें.

एमविचारी विमलनेतेमी मातापितायेंकह्युंजे हेवत्स तुंअमाराप्राणने आलंबन करवामां लाकमीसमान कुलनेविषेधोरी अमने तुंघणामनोरथें घणाउपायेंकरी प्राप्तथयोछो तोतुजनेभोगववायोग्य एसर्वेराजनीसंपदा तेहथीतुं विरक्तनीपरेंर हेछे तोअमनेशीरीतेसुखउपजे माटेहेकुमरतमे नवयौवनराजकन्यापरणो तेहनी साथेंमनोवांछितभोगभोगवो शब्दादिकपंचविषयने ग्रहणकरी आराज्यलक्ष्मीनो गवी अमारामनोरथ पूरणकरो इत्यादिक मातापिताना वचन सांभली विम लबोल्योजे हेपूज्यजी जगतनेविषे अखतरसरूपदुःखेंपीड्या स्वजनकुटुंबनोवियो गइत्यादिक शोकडागमे दुःखेपीडित पोताना‍देशना लोक छतेथके जेराजा राज्यभोगवे तेहनेनिःकेवल पेटभराकहियें पण राजानकहियें तोधिःकारपडो तेराजाना सुखने तेमाटेहुंतो हमणा मित्रादिकें परवस्योथको नगरनाउद्यानमांजइ रहुंछुं पण तमे ठेकाणे ठेकाणे मनुष्यमोकली दुःखीलोकोने तेमावो तेसर्वना दुःखनोक्ष

होय तथालिंगन्हानो उदरकृश नाभिगंभीर हृदयविशाल तथाकमलनापत्रस रिखा विशालनेत्र मस्तकविस्तीरण मध्यस्थशरीरवंतउचीनासिका भुजाओलांबी र क्तहस्त सर्वांगेंसुलक्षणवंत इत्यादिक अनेकरीतनालक्षण जेपुरुषनेहोय तेवारेंजाणि यें एमहाभाग्यवंत पुरुषछे तेमाटेएपुरुष चक्रवर्त्तिथाशे अने एहनी स्त्रीनापणपद्म चक्रादिचिन्हेयुक्त चरणशोभेछे तथा वृत्तजंघा अने कठणस्तनवंत विपुलनितंबादि कें शोभेछे इत्यादिकरुडेलक्षणे शोभितसर्व अवयवदेखायछे माटे एस्त्रीपणसाक्षा तलक्ष्मीनीपरें महाभाग्यवंत जणायछे एरीतेबेमित्रवातोकरेछे.

एटलामां आकाशमार्गें कोइकबेपुरुषो ते लताग्रह उपरआव्या तेमांथी एकपुरुषें युगलने तिरस्कारकरी युद्धनेअर्थें बोलाव्यो केजोतुंपराक्रमवंतहोयतो आवमाहारी सार्थेयुद्धकर एटलेते युगलपुरुषपण वेलनाघरमांस्त्रीनेमूकी क्रोधेंवंतथयी विकरालनेत्र करी तेहनेसन्मुखदोडयो पछेबेहुयेंयुद्धकरवामांडयुं एटलामांते बेमाहेलोएकपुरुष ल तागृहमां प्रवेशकरी स्त्रीनेग्रहणकरवानेअर्थेंदोडयो एटलेस्त्रीभयपामियकी तिहांथी नासीने राजपुत्रविमलकुमरने कहेवालागी हेवीरपुरुष मनेराखराख एमकहेतिथकी विमलनोशरणकरवालागी एहवामां वनदेवतायें विमलनापुण्योदयनेप्रभावें स्त्रीनेजा लनारदुष्टपुरुषने थंभीराख्यो एटलामां युगलपुरुषते पहेलायुद्धकरनार एकपुरुष नेजीत्यो तेपुरुषनाशे युगलपुरुषपण तेहनीपछवाडेगयो पछेतेथंभेला पुरुषेदीठो ते वारेंतेणेपण तेहनीपछवाडेनासीजवानी इछाकरी एटलेतेने वनदेवतायेंमूक्यो तेवा रेंतेपण तेहनीपाछल नासीगयो एमत्रणजण आकाशमार्गें उंचाचाल्यातेजेवारें दी ठामांनआवे एटलाउंचागया तेवारें स्त्रीयेंजाण्युंजे घणोवखतथयो हजीमहारो भर्त्ता रआव्योनही तेथीएहने दुष्टोयेपराभवपमाडयो अथवाहण्यो महोजो एमदुःखेपी डाणीथकी तेस्त्रीरोवालागी तेहने विमलकुमरें रुडीरीतें आश्वासनकरी तेहांबेशा डीने तेहनाभर्त्तारनेजोवाजायछे.

तेसमयें बेहुपुरुषनेजीति महाउत्साहवंतथको युगलपुरुष आकाशथीहेठेउत र्यो तेवारेंतेहनी स्त्रीयें विमलकुमरना उपकारसंबंधी पाछलोवृत्तांत भर्त्तारआ गलकह्यो तेसांभली युगलपुरुषें पणहर्षपामि विमलनेकह्युंजेआश्चर्य केहवीवातछे जे तमेकारणविना महारीस्त्रीने घणीआश्वासनाकरी दुःखिराखीनथी माटेमहाराउ परतमेंघणोउपकारकर्यो एमकही घणो सनमानदीधो अनेकहेवालागोजे हेविमल हेपिता हेमित्रजे तुंकहेतेहुंतुजनेआपुं तेमाटे तमेकोइकपणकार्यकहो एटले प्रतिउ पकारकरीहुंपण तमारोलेणोउतारुं एहवुं कहेछते विमलेंकह्युंहेमित्र तमेपोतानाव

ही पणविमलेंतोविचार्युंजे आमहाक्रियापात्रसूरियें जूओमने संसारसमुद्रथी उद्धा रकरवामाटे कहेवोप्रपंचकर्योछे.

हवेवलीतेपुरुषे एमहावीहामणो ग्रीष्मऋतुनातापमां राजगृहजेहवुं शीतलग्रह मूकोने चालवामांड्युं एटलेतेपुरुषने केटलाकलोक मूर्खकही हसवालागा केटलाक नंदवालागा केटलाककोढीइत्यादिकवचने गालोदेवालागा इत्यादिकलोकोनो बोलवुं सांनली तेपुरुषें उगतासूर्यनीपरें रातालोचनकरी तपाव्यासोनानीकांतिसरिखुं शरीर वंतथयो लक्ष्योधीथीजेम लोकनयपामिजाय तेहवो सर्वसन्नानेबीकनोकरनार थ थीने नृकुटीचढावी बीहामणोमुखकरी सिंहनादकरी क्रोधेकरीसहितपुरुषनीपरें पो तानोआत्मालोकोनेदेखाडीने महोटेस्वरेंकरीकह्युंजे अरेपापिओ अरेअधमपुरुषो अ रेडुष्टात्माओ तमाराथीमने कुरूपवानगणोछो पणहुंतो एमजाणुंछुंजे तमेमाहराथी रोगीकुरूपवंत कोढीआ सुखमरादलिद्रिछो समस्तदुःखेकरी दुःखीतछोतोपणहुंमारीम शकरीकरीनेतमाराथकीमनेअधिकदोषवंतकहोछो इत्यादिकवचनेसर्वलोकनेनिःउत्तबग्या

एहवे क्रोधेकरीविकराल लोचनवंत स्वरूपदेखीनेराजायें विमलनेकह्युंजे हेव त्सएकोइकगुप्तवेशें महामुनीश्वरदेखायछे तोकदाचित्तेजुलेस्यायेंकरी समस्तदेशमां हाहाकारशब्दकरावे महाटेपहेलाज आपणेएहने नमस्कारादिकेंकरी मनावियें ते सांनली विमलेंपणहाकही एटलेराजाप्रमुख सर्वलोकें उठीने तेपुरुषने बेहाथजोडी परणामकर्यो अनेकहेवालागाजे हेस्वामिअमेअज्ञानीछैयें तमेमहोटाआत्मानाथ णीछो तेमाटे अमाराउपरप्रसन्नथयी अमारोअपराधक्षमाकरीने तमारोमूलरूपदे खाडी अमनेअनुग्रहकरो इत्यादिनक्तिनावचनेकरी क्रोधनेसमावी आंखमीचीउघा डे एटलीवारमांराजाप्रमुखेंजोयुं तोमहारूपवंत तेजेंकरीसूर्यसमान सुवर्णकमलेबे ठो देदोप्यमान सर्वांगसुंदर एहवोमहामुनिश्वरदीठो तेवारेंराजाप्रमुखसर्वे हर्षवंतथ का तेमहाऋषीने नमस्कारकरीने पुछयुंजेहेनगवान पूर्वेंतमारापोताना अंगमांकुरू पपणुं कोढीआपणुं इत्यादिकदोषहतां ते सर्वे अमाराविषेज आरोपण कर्या अने तेतो प्रत्यक्षपणे अमारामांदेखातानथीजे थकीतमारुंबोलवुं सत्यथातुंनथी अनेतमे तो सत्यबोलनारछो माटेअमारोसंशयनाशपमाडवोतमनेयोग्यछेतेवारेंआचार्यकहेछे

अहोनव्यपुरुषोतमोनेमेंजे कुरूपपणोआदे कह्युंतेहना कारण कहुंछुं तेसांनलो सोनानीकांतीशरीरवोजो संसारीजीवहोय तोपण पापरूपकादवेकरी लीपाणोछे माटे कालाशरीरवंतजकहीयें अने साधुजोश्यामअंगवंतछे तोपणतेहना रूडापरि णामछे माटे गौरवर्णिजकहियें.

तेवारें तेणेनाशवामांडयुं पणमेंतेहनीपाछलजयी पराक्रमेंवांजितकरीमूक्यो अनेमेंविचार्युंजे चपले रखेमाहरीस्त्री चूतमंजरीनें हरणकरीहोय एमजाणीहुं जयेंकरीसहित आहिंआवतोहतो तेटलामां चपलपण मनेसन्मुखमल्यो तेनेपणतेमज हतवीयेंकरी हुंइहांआव्यो एमाहरोवृत्तांतकह्यो॰

हवेतुंमहोटो उपकारीपुरुषछो माटेतुंपण ताहरो संबंधकहे तेसांभली में तेविद्याधरने विमलनोसंबंधसर्व कहिसंभलाव्युं तेहथी रत्नचूडेहर्षितथयी एकमहाअमूल्य घणुंतेजवंत एहवुंमहोटुं रत्नतेबलात्कारेंकरी विमलकुमरने आप्युं तेवारपछे केटलीकवातोकरी रत्नचूडविद्याधरेंकह्युंजे हेविमल आउद्यानमां एकप्रासाद महारा पितायें कराव्योछे तेमांश्रीऋषभदेव जिनराजनीमूर्त्ति प्रतिष्ठितकीधीछे तेमाटेचालो तिहांजयी परमेश्वरनो दर्शनकरियें पछेअमेसर्वे चारेजण दर्शनकरवागयां तिहां उचातोरणे विचित्रप्रकारना मणिरत्नेकरीबांधेलुंछे भूतलजेहनो तेहनीकांतियेंकरीश्वेतकीधोछे दिशिओनावलयने वलीरुडोउद्योतकारीछे मंदिरनोमध्यभागजेहनुं एहवो महाशोभायमान प्रासाददेखी रत्नचूडें श्रीऋषभदेवनी मूर्त्तिनी नानाप्रकारनीस्तुतिकरी वलीविमलकुमरनेपण दर्शनथकी कहेवामांनआवे एटलोप्रेमतुंरसउपनुं तेहथीविशेषें हर्षवंतथयोथको भगवंतनेनमस्कारकरीने सर्वजणबाहेरना मंडपेंआवीबेठा एटलामांविमलने मूर्छाआवी तेहनेशीतलउपचारेंकरीरत्नचूडें सावधनकर्यो तेवारें विमलें रत्नचूडनेपगेलागी कह्युंजे हेस्वामि हेउत्तमपुरुष हेबंधु तुंमहारेकारणविनानो भाइछो अने गुरूपणतुंजछो तथा महोटोउपकारनोकरनारछो केमके ताहराउपदेशथी भगवंततुं बिंबदेखीमने जातिस्मरणज्ञानउपनुं तेजेभवथकी हुंपूर्वेंसमकेतपाम्योहतो तेसर्वेभवनीवातमने जाणवामांआवी मेंपूर्वेनानाप्रकारें भगवंतनीपूजा भलीरीतेंकरीछे वलीइहांपण ताहरापसायथकी आजथीमहारे जैनधर्मेविषेप्रवर्त्तवुंथयुं.

एवातसांभली रत्नचूडपण विकस्वरथयी साधर्मिकजाणीभक्तियेंसहित विमलकुमरने प्रणामकरी कहेवालागोजे हेविमलतुं धर्मपाम्यो तेथी माहरासर्वेमनोवांछित सिद्धथया केमकेतेंअरिहंतनोधर्मआदर्यो तेहथीसाधर्मिकसाथेंजेमित्रपणुंते सोनुंअनेसुगंधसरिखुं तेतोविशेष पुण्योदयेंकरीपामियें अनेजेमूर्खहोयतेतो स्त्री राज्य धन पुत्रादिक पामिने हर्षपामे अनेतुजनेतोमें चिंतामणी रत्नआप्युं तेवारेंपणतुंकांइ हर्षनपाम्यो जेटलोहमणा जातिस्मरणथी जैनधर्मपामिहर्षपामेछे माटेतुजनेधन्यछे तुं महोटो धीरपुरुषछो एमसांभली विमलकुमरबोल्युंजे हेरत्नचूड हमणामने संसारनुंस्वरूप किंपाकफलना विपाकसरिखुंजाणवामांआवेछे माटेआजेज संयमआदरुंपण धर्मरू

तानाकुटुंबने उवेखीनाखे पुरुंखावानेपणआपेनही पछे अनुक्रमे तेधूर्त्तलोकोयें काम णनाप्रयोगथी सारगुरुनेवशकरीलीधो पछेजेमधूतारालोकोकहे तेमजकरे एमकरतां तेधूताराओये समस्तऋद्धियेंजरेलःमवने पोतानेस्वाधीनकरी एकमहोटाधूर्त्तने तेहनो नायककस्यो अनेसर्वधूर्त्तो पोतानीइछायें तेहनीलक्ष्मीने जोगववालागा तेसारगुरुने म ठमांपणपेसवाआपेनही एहवुंकौतुकजोयीने तेनगरना वसनारा व्यवहारीलोकोमली ने सारगुरुने अनेकप्रकारनी शीखामणआपवालागा अनेकहेवालागाजे अरेतुंपो तानाकुटुंबनेमूकी आधुताराओने सुंपुष्टकरेछे एहथीतुंहेरानथयीस एतोतारा सा क्षात्ङ्कसमनछे तनेघणाप्रकारनी विटंबनाओकरसे इत्यादिक साहुकारलोकोयेंकह्युं तोपणतेसारगुरु कामणेकरी बंधाणोथको तेथीव्यवहारीआना वचनतेणेमान्यांनही पछेतेसाहुकारोजेलाथयीने तेगुरुनागुणप्रमाणे तेहनुं बठरएहवुंनामथाप्युं.

हवेजेजेरीते तेधूर्त्तलोको बठरनेनचावे तेतेरीतेंकरीने एगुरुहर्षवंतथाय तेगाममां चारपाडाछे तेमांपहेलापाडानेविषे जांगेलाघडानोठीकरो हाथमांआपीने बठरगुरुने तेधूर्त्तोनिक्षामंगावे वलीतेपाडानालोको धूर्त्तसाथेमिलताछे माटेकठणवचनेकरी तर्जनाताडनादिकें तेबठरगुरुने विटंबनाकरे हाथमानुं ठीकरुंजांगीआपे.

एटलेतेधूर्त्तोफरी एकसरावलो हाथमांआपी तेबठरगुरुने बीजेपाडे निक्षामांग वामोकले तेहांनालोकपण तेहनुंसरावलुंजांगी संतापप्रमुखकरी काढीमूके.

वलीत्रीजापाडेमोकलतां त्रांबानोजाजन हाथमांआपे तेहांकांइक निरसअन्ननी निक्षापामे तेटलामां तेहांनालोक तेहनी निक्षालुंटीलेइ पोतेखाइजाय अने ताम्र जाजनपण जांगीआपे.

एटलेवलीरूपानुं जाजनआपी चोथापाडामां निक्षामांगवामोकले तेहांकांइक वधारेनिक्षापामे पणतेहांतेवीज जाजनजांगवा प्रमुखनीविटंबनापामे एरीते धूर्त्त लोकोते बठरगुरुने घणाप्रकारें नाटककरावेछे स्थानकें स्थानकें निखमंगावे पोतानाम ठमांपोते पेशीपणशकेनही पोतानाकुटुंबने उवेखीमूके अनेतेधूर्त्तो एनीलक्ष्मीखाय लो कसर्व एनीहासीकरे पणबठरगुरुकामणे वशकस्योथको धूर्त्तोसाथेज मित्राइकरे अ नेतेधूर्त्तोनीकरेली विटंबनानेपण सुखजाणी सहनकरे.

तेमहेराजन् इहांपण एजउपनयछेजे संसाररूपगाम तेमांआत्मस्वरूप ज्ञानादिकर त्नेकरीपरिपूर्ण एहवुंएकशिवतुंमंदिर रूपमठजाणवुं अनेआत्मारूपबठरगुरु तिहांआ ठकर्मरूपधूर्त्तायें मोहनो उन्मादादिकरूपकामणना प्रयोगेंकरी आत्मानेघहेलोकस्योछे तेहथीस्वजाविकगुणरूप पोतानाकुटुंबने उवेखीनाखेछे अनेमोहनीयते धूर्त्तोनो

पांत्रछे एहवुंसांजली साक्षात्पणे तपनोप्रनावदेखीने हुंजैनमतनेविषे निवडनक्तिवंत थयो फरीसाधुओने नमस्कारकरीनेघरेआव्यो.

हवेतेसूरियेंपण मुनीनासमूहें परवस्याथकां बीजेस्थानकें विहारकस्यो माटेहे विमलकुमर जोतेआचार्यमलेतो अर्थसिद्धिथाय एमसांजली विमलें रत्नचूडनेकह्युं जे हेनाइते आचार्यकदाच तमोनेमलेतो तेहनेमहारेअर्थें एहवीयाचनाकरवी के तेगुरुइहांपधारे एहवावचनसांजली रत्नचूडेंमाहोमाहें स्नेहधर्मदृढकरवानेअर्थें वा तोनाआलापेंकरी रत्नचूडतेविमलनोनाइ अने चूतमंजरीते विमलनीबहेन पणेक रीने तेबेहुस्त्रीनर्तार पोतानानगरेंचाल्या तेहनेघणीकनूमिसुधीवोलावीने दर्शनआप वाने कोइवारेंमनेसंजालजो इत्यादिक आंसुनरेनेत्रें घणाप्रीतिना वचनबोली चूतमंजरीनेपण प्रेमनावचनेबोलावी विमलतेहांथीपाछोवल्यो अने रत्नचूडतथा चूतमंजरीपण घणास्नेहनावचन तथा धर्मनीस्थिरतापणानावचनकही घणाकष्टें तेहांथीचाल्या.

हवे संसारीजीवकहेछे जे हेअगृहीतसंकेता एविमलेंतथा रत्नचूडें अनेककथाउ महारासमिपेंकहि पणमेंतो तेविमलनेजे रत्नचूडे चिंतामणीरत्नआप्युंहतुं तेहरणक रवानी चिंतायें करीआकुलथको कांइपणसांजल्युंनही हवेतिहांथीघरजणी चाल्या एट लेमार्गमां मेंकह्युंजे हेमित्र एरत्ननेइहांजमूकीयें तेवारेंविमलतो सरलस्वनाविमाटेतेणे कह्युंजेघणुंसारुं पछे तिहांनूमिखोदीनेमें रत्न एकत्रस्थानकेराखीने अमेघेरगया पणते रत्नहरवाना उपायचिंतववामाटे रात्रनीएकक्षणवारपण मनें निद्राआवीनही प्रनात समयेंमनें स्तेयनामे कुमित्रेंप्रेस्योथको रत्नलेवानेअर्थें हुंवनमांगयो एटलामां विमल कुमरपण जिननेवांदवानेअर्थें तेवनमांजवानिमित्तेंमाहरे घरे मनेतेडवाआव्यो एटले कोइकेंकह्युंजे एतो उद्यानेगयोछे तेसांजली विमलपण उद्यानेआववामहारेपछवाडे चाल्यो जेस्थानकेंरत्नराख्योहतो तेस्थानकेंजयीहुंवेगो एटलामांदूरथीविमलने आवतो देखी हुंआकुलव्याकुलथयो थकोमेंतेरत्नलेइने रत्नेस्थानके एकपछरनोकटकोमूकी र त्नने विमलनीबीकथी बीजीनूमिनेविषेमूक्यो एटलामां विमलें आवी पुछयुंजे हेनाइतुंइहां केमआव्योहतो तथाआमविलखानीपरें केमदेखायछे तेवारेंमेंकह्युंजे हेनाइमें कोइनासुखथी एवुंसांजल्युंजे विमलआहिं आव्योछे माटेहुंतारापछवाडे इ हांआव्यो अनेताहरोमुख जोवाविना हुंविलखोदेखाउंछुं तेसांजलीविमल हर्षितथ यी मनेकह्युंजेनलुं हवेचालोजिनमंदिरे जइयें.

एमकहीदेहरेआव्या विमलतो प्रासादमांगयो पाछलथीमें विचार्युंजे रखेविमलें

बुं तेतमाराआदेशथकीज इहांरहुंछुं तेमाटेजुनो स्नेहसंजालीने मने तथातमारो मित्रनासिकाने आदरो.

एहवातेहना वचनसांजलीने हर्षवंतथयोथको मंदकुमरतो घ्राणअने जुजंगताने वलीआश्वासनाकरीने तेबेहुनीसाथें अतिस्नेहधरवालागो अनेबुद्धकुमरतो मध्यम जावेंकरी घ्राणनामामित्रने पालवालागो अनेजुजंगतानेतो अधमस्त्रीजाणीने माहरेएनीसाथे सोबतकरवायोग्यनथी एवुंविचारी तेहनोसंगतो सर्वथाकीधोजनही.

हवेमंदकुमरतो जुजंगतायें प्रेस्योथको कपुर केशर सुगंधिपुष्पादिक सुरजिद्रव्यें करी घ्राणेंद्रियने पोषणकरवालागो कांइपणमाठीगंधनी वस्तुदेखीने नाशिकानेआमोवस्त्रआपे अने डुगंछाकरे अनेबुद्धतो सुगंधिडुर्गंधिद्रव्यनेविषे समचितपणेवर्त्ते एमकरताकेटलाकदिवस वितिक्रम्या.

हवेबुद्धकुमरनोपुत्र धिषणानाअंगथी जन्मेलो विचारनामेछे तेपूर्वेकौतुक जोवाने अर्थें समस्तदिशाओनेविषेगयोहतो तेकेटलेकदिवसें बाह्यतथा अंतरंगवैगेरे नगरो जोयीने पाछोफरीआव्यो तेएपोतानापिता बुद्धनेसमीपें घ्राणेंद्रियनेजोइने कहेवालागोजे हेपिताजी आघ्राणतेडुष्टमित्रछे माटेतमारे एनीसाथें सोबतकरवीयोग्यनथी एघ्राणनीउत्पत्तिने रूडीरीतेंहुंजाणुछुं केमकेहुंइहांथीनिकल्योपछे दिशोदिशेंजमतोथको हुंजवचक्रनामानगरे पहोतो तिहांजिहांसुंधीहुंराजमार्गनेविषे रह्योहतो तिहांएकस्त्री मनेदेखीने तत्कालपणे आनंदवंतथको आसुंजरेलानेत्रे मनेकहेवालागीजे.

अहोपुत्रहुं मार्गानुसारीतानामे तारीमाताधिषणानी प्रीतिवंतनानी बहेनछुं तो तुमने उलखतोनथीसुं तुंतोमाहरोजाणेजछो माटेहेपुत्रतुं सुखेथीमहारापासेंबेश अनेहुंतुजने नानाप्रकारना जवचक्रनाकौतुकप्रतेंदेखाडुं तेचरित्र तने जोवायुक्तजछे केमकेतुं धिषणानोपुत्र माटेविविधप्रकारना देशोदेशना चरित्रजोवारूप चतुराइपणुं ताहरामांहोवोजजोइयें एहवुंसांजलीने हर्षवंतथको हुंतेहनीसमीपेंरह्यो.

पछेतेणेमने विविधप्रकारना आश्चर्यमय जवचक्रनामानगर संपूर्णदेखाड्युं तेहथीविवेकनामा पर्वतउपरजवानेअर्थें अमेंचाल्या मार्गमां निवडप्रहारेकरीजाजरु थयेलुछे अंगजेहनुं केटलाकमनुष्यें खांधउपरउपाड्योछे वलीघणामनुष्यें विटचोथको एहवोएकसुजटनेदेखी मेंपुछ्युंजे हेमाताजी एकोणपुरुषछे तेवारें मार्गानुसारीतावोलीजे हेपुत्र आपर्वतउपर चारित्रधर्मराजाछेतेहनो महोटोपुत्रजे यतिधर्मनामा कुमार तेहनोए संयमनामासुजटछे तेक्रीडाकरवानेअर्थें बाहेरनिकल्यो तेहने मोहराजाना सैन्यको जे मिथ्यात्वादिक तेणेहण्योछे माटेहवेपोतानाघरें लइजायछे तो

एमचिंतायेंपीडयोथको पाछोफरीजेवारें महारीपासें आव्यो तेवामां महाविकराल रूपें वननदेवता प्रगटथयो सर्वलोकने सांजलतांकह्युंजे अहो ए वामदेव विश्वासघातक ले केमके प्रथमरत्नहरयुं वलीजुतुंबोलीने विमलनी सार्थे ठगाइकरीले माटेएकर्मचंद्रा लनी में आवी मातीदिशाकीधीले हजीहुंएनेघणी विटंबनाओकरीस एहवुंसांज लीने कृपायें निन्नोचित्त एहवोविमलकुमरने मिष्टवचनेकरी वननदेवताने प्रसादवंत करी मनेरोगें वर्जित कराव्यो तेवारपछेसर्व लोकोयें एहवो महारोमाठोचरित्रदेखीनेम नेघणो धिःकारकस्यो वली स्वजन कुटुंबादिकनावर्गेंमने घेरथी बाहेरकाढीमूक्यो तो पणविमलकुमर माहरोस्वजन माटे आश्वासनादयी कांइपणमहारीसायें मलीनमन राख्युंनहीं उलटो एमकह्युंजेहेमित्र लोकतोबोकनीपरें उघाडेमुखेहोय माटेरखेतुं लो कनाबोलवाउपर अशातापामतोहोय.

हवेएकदिवसें फरीहुंअनेविमल बन्नेजण क्रीडाकरवानाउद्याने श्रीरुषनदेवना प्रासादेगयाहता तेहांविमलकुमरें नगवंतने आगलें विविधनावेंसंयुक्त नवाकाव्य नाप्रबंधेकरी अनेकप्रकारनी स्तुतिकरवामांडी एटलामां रत्नचूड तेपोतानीस्त्री चूत मंजरीसायें तेहांआव्यो तेपण उत्कृष्टनक्तिसमोहेकरीने विमलनीस्तुतिसांजली महो टोआनंदपाम्यो थको पोतेपण नगवंतनीस्तुतिकरीरह्या पछे वेहुधर्ममित्र बाहेरनामं मपमांआवी आनंदनरेंलोचने आलिंगनदेइ एकस्थानकेंबेठा परस्परकुशलना स माचारपूछ्या.

रत्नचूडेकह्युंजे हेनाइविमल तुंतोमहारा हृदयमांजले क्षणेकविसरतोनथी तोहे पणकार्यनाव्यग्रचित्तपणे आजसुधीतने मलवाआव्योनही तथा बुधसूरिने तें तेमा व्योहतो तेहनेपणतेमीआव्योनहीं केमके हुंताहरीपासेथी निकल्यो तेजदिवसें वे ताढयपर्वतेंगयो मातापिता हर्षपाम्या हवेतेजदिवसनी पाछलीरात्रें रोहणीप्रमुख सोलविद्यादेवीप्रगटथयीने मनेआवीकह्युंजे हेवत्स ताहरेपुण्योदयेंकरी अमेंप्रसन्नथ याछुं अनेतुं विद्याधरनोचक्रवर्त्तिथाइश तेमाटेआजथीअमेसर्व ताहराशरीरमां प्रवेश करसुं अनेप्रनातेसर्वविद्याधरपण ताहरीआज्ञामानवा आवशे तेवारेंमेंविचार्युंजे एवि द्यादेवीओ तथाचक्रवर्त्तिनीठकुराइ तेसर्वपुण्यानुबंधी पुण्यनुंफलले पणएपुण्यानुबंधी पुण्यतें वीतरागनेलेखे सुवर्णशृंखलासमानले अनेएरीतेंतो महारेविमलकुमरनीसायें दीक्षापणलेवायनही एमविचारुंछुं.

एटलामांसर्वविद्यायें महाराशरीरमां प्रवेशकस्यो अनेसूर्योदय थये सर्वविद्याधरेंम होटामहोत्सवेंसहित मनेराज्यानिषेककस्यो तेदिवसथीमाहरीआज्ञा सर्वविद्याधरेंमस्त

कहीनसत्वकरीने तेतुं राजग्रहणकर्युंछे तेपणअमे कांइकहेतानथी तेमछतातमें उठीउठीने अमारासुभटोने कदाग्रहकरोछो तेवातयुक्तनथी इत्यादिक सत्यनामादूत नो बोलवुंसांभलीने मोहराजानीस्त्रीजे महामूढतानामे ते अत्यंतक्रोधवंतथयीने दूतनेकहेवालागीजे अरेदूततुं अधमपुरुषछो एहवुंअसमंजस शुंबोलेछे जेमोहराजादि कते भवजंतुनाकिंकर एवुंबोलताकांइ एनेशरमआवतीनथी माटेएनेशिक्षाआपो.

इत्यादिक कठणवचन कहेवालागी तेसमयें सर्वमोहराजानासुभटो भृकुटीचडा वीने क्रोधेंकरी धमधमताथका सत्यनामादूतने हणवानेअर्थेंउठ्या तेवारें सत्यना मादूतनो शरीरभयेंकरीकंपायमान थयोथको कोइकरीतें तिहांथकीनाशीने तुरतचा रित्रधर्मराजा आगलआवी कहेवालागोजे हेस्वामिमोहराजातो मदेकरीउन्मत्तथ योछे माटेतमने तृणनीपरेंगणेछे पणतमारोकह्युंमानतोनथी इत्यादिकवृत्तांतसांभ ली चारित्रधर्मराजापण क्रोधायमानथयोथको रणभंभावजावी सर्वपोतानोलशकर लेइ मोहराजासाथें युद्धकरवानेअर्थें चाल्यो एटलामां मोहराजापण महोटालश करें परवरचोथको चारित्रधर्मराजाना सैन्यनेसन्मुखआव्यो हवेतेबेहुसैन्यनो चित्तवृ त्तिनामा आटवीनेविषे माहोमांहे विविधप्रकारना शस्त्रेकरी महायुद्धथातेथकेदुष्टा भिप्रायादिक मोहराजानासुभटोयें शुभाभिप्रायादिक चारित्रधर्मराजाना सुभटोने प्र हारेंकरी शिथिलअंगवंतकरताथका समस्तसैन्यनुं निर्मथनकर्युं.

एमपोतानोलशकर भांगीगयुंदेखीने चारित्रधर्मराजा लशकरेंसहित ओशरीने पाछो जैनपुरनगरमांआव्यो अने मोहराजापण जीतवंतथको पोतानालशकरेंस हित तेचारित्रधर्मराजाने चोमेरविंटीरह्योछे एवीतेरीमने तेमार्गानुसारीतायें सम ग्रपणे चारित्रधर्म अनेमोहराजानालशकरनुं स्वरूपदेखाड्युं तेदेखीनेतिहांथी पा छावली अनुक्रमेइहांहुंआव्योछुं अने मार्गानुसारीतापण महारेपछवाडेआवेछेतोति हांएघ्राणेंद्रीते विषयाभिलाषनामा प्रधाननापांचेंद्रियरूप पांचपुत्रमांहेलोएकपुत्रछे एहवुंमने मार्गानुसारितायें ओलखाव्योहतो माटेएतमनेवर्जवायोग्यछे.

एहवाविचारनामापुत्रना वचनथकी सर्वथाप्रकारें जिहांसुधीबुद्ध घ्राणेंद्रियना संगनो त्यागकरवाना उपायनेचिंतवेछे तिहांसुधीमार्गानुसारीतापण तिहांआवीप होती तेहनामुखथकीपण तेवीजरीतें घ्राणेंद्रियनी उत्पत्तिसांभलीने बुद्धअत्यंतप णे तेघ्राणेंद्रियनो त्यागकरवामां उद्यकथयो.

अनेमंदकुमरतो भुजंगताने अनुरक्तथयी जिहांतिहांसुगंधनो लोलपीथको भम तोफिरेछे एकदिवसें देवराजनीस्त्री लीलावतीतेमंदनीबहेनथाय तेहनेघरेगयो तिहां

य करी पछेतमेजे आदेशआपसोतेहुं कबूलकरीस एह्वाविमलना वचनसांजली राजातथा कनकसुंदरी हर्षपाम्या अने पोतेनानाप्रकारना वृक्षनासमूह तथावेल सेलोरवाव्य इत्यादिकरमणिक वननीभूमिनेविषे तंबुआपीने विमलकुमरनीसंघाते परिवारसहित सन्नापूरीने वाजित्रनाटकनेविषे तत्परथकारह्या गामगाम मनुष्यमो कलीनेकह्युंके जेजेदुःखीलोकदेखो तेहनेतेडीलावो पछेसेवकलोको गामगामजइ जि हांजिहांदुःखीलोकनेदेखे तेहांतेहांथीतेडीआवे हवेएक अटवियें एकमनुष्य उघाडे पगें अत्यंततापपमते क्षुधायें तृषायें क्षीणथयेलोश्यामवर्णें कोढी कंपायमानशरीर गलतेलोचने जरायेंकरीजाजरुंछेअंग नाशिकामेलेंकरीसहित बेसीगयीछे हाथपग स डीगयलाछे मस्तकेंलोचकस्रोछे समस्तप्रकारें सडीगयेलाजे लुगडानाकटंका तेणे करी शरीरढाक्युंछे एककांबली एकदंम वेतुंबडा एकउननीपेंछीनोरजोहरण तेहाथेंध खुंछे ग्रीष्मऋतुनामध्यानकालनो सूर्यतेनातापेकरी तप्युंछेमस्तकजेहनुं लांबीछेएक साथलजेहनी नवो दवदग्ध काष्ठतेहनाखीलासरिखीगर्दनछेजेहनी परसेवोअनेमेलें करीमलीनछे शरीरजेहनुं एह्वोपुरुष रखडतोथको देखीने राज्यपुरुषेंविचाखुंजे आपुरुषमहादुःखीछे माटेएने राजापासेतेडीजइयें एहवुंविचारीने तेपुरुषपासेज यीपुछ्युंजे हेमनुष्य आउनालानेतावडे आवावेशें उघाडेपगेंचालवानुंतुजनेसुंकारणछे

तेवारेंते मनुष्यबोल्योजे महारेसिरआलकर्मरूप लेणदारछे तेहनाथीछुटवामाटे हुंमाहराग़ुरुनी आज्ञायें एरीतेंफिरुंछुं तेमाहरागुरुनापसायथकी लेणामांथीछूटीस ए मकहीफरी चालवामांमयुं तेवातसांजली राजपुरुषेतेहने दुःखीजाणी हाथपकड्यो तेवारेंतेणेकह्युं माहरोवृथाकालक्षेपथायछे तथामहाराकार्यनीहाणीथशे एमकहीफ रीचालवामांमयुं तेवारेंबलात्कारेंराजानासेवकोयें तेहनेराजानीसन्नामांआण्यो धवल राजा तथा विमलाराणीपासें तेडीआव्या एकुरूपवानहतो कुष्टरोगवंतहतो माटेआ कोपडदोबांधीने तेपुरुषनीसर्ववात राजानाचाकरेंकहीसंनलावी एटलामां विमलकुम रेंपडदो उचोकरीजोयी तेपुरुषनेदेखी मनमांविचाखुंजे मनेरत्नचूडेएकांते कह्युंहतुंजे आवेवेशें बुद्धनामाआचार्यआवसे अनेतुंदुःखीजननो शोधकरावजे तेमाटे माहरा धारवाप्रमाणे एबुद्धआचार्यजछे एमजाणी विमलहर्षपाम्योथको विचारवालागो जे अहोमहापुरुषोनुं कृपालुचित्तवंतपणुं कारणविनाउपकारनुंकरवापणुं इमविस्म यकरीसहित विकस्वरमनेकरी तेपुरुषने नमस्कारकस्रो पुरुषेंपणमनेकरी धर्मलाभरूप आशीरवाददीधो एरीतेवेहुजणानो नमस्कार तथा धर्मलाभथयो तेकोइयेंजाण्योन

थमग्रहणकरावसे एहवीबीकथकी नाशीगयोछे. फरीविमलकुमरेंपुछ्युंजे एदुष्टमित्रो नो त्यागशीरीतेंथाय तेवारेंगुरुबोल्याजे.

निर्मलचित्तनामा नगरनोस्वामी श्रेष्ठाभिप्राय नामेराजा तेहनी एकशुद्धता अ ने बीजी पापभीरुतानामे बेस्त्रीओछे वलीतेमनीअनुक्रमें एकसरलता बीजीअचोरी ता नामे बेकन्याओछे तेजेवारेंएपरणसे तेवारें मायाअने स्तेयनोसंगमूकशे एहवुंसां भली अयोग्यजाणी विमलकुमरेमने छवखीमूक्यो पछेधवलराजा अने विमलकुं मरादिक गुरुनीसाथें अन्यस्थानकें विहारकरीगया तेपछेहुंनगरमांआव्यो पणमेंपूर्वें घ णीचोरीओकीधीहती तेअपराधोनेलीधे हुंनगरनालोकोथी उपद्रवपाम्योथको स्वामि वर्जितपणेकरी तेनगरमांरहेवाने असमर्थथको देशांतरेचाल्यो मार्गमां कोइनगरे स रलनामे वाणीआनीदुकानेबेठो तेणेमने मारानामादिको सर्वपुछ्या तेवारेंमेंपण मारो यथास्थितस्वरूपकह्यो तेसरलने कपटेकरीहुंपगेलागो पछेतेवाणीआयें माह रापितानेनामे मनेकुलवंतजाणीने कह्युंजेहेपुत्रतमें इहांमहाराघरनेविषे सुखेरहो.

मेंपणकपटे करीने कह्युंजे आजतमारादेखवाथीमने माहरापितानुं दर्शनथयुं इत्यादिककपटनावचनेकरी वाणीआनेवशकर्युं पछीमनेघरेतेडीगयो तिहांपोतानी स्त्री बंधुमतिनेकहेवालागोजे हेस्त्रीआपणे पुत्ररहितछैयें माटेभाग्योदयथी आवामहे वपुत्रआव्युंछे एनेपुत्रनीपरें संभालजो एहवुंकहीने मनेराख्यो पछेते सेठनाघरं मां समस्तजेकांइ धनादिक पदार्थहता ते सर्वमनेदेखाड्या केटलाकदिवसपछे तेस रलसेठनीबेहेन बंधुलानामे तेछठीजागरणना ओछवनेअर्थें सेठनेतेडवावास्तेआवी तेवारेंसरलसेठें मनेकह्युंजे हेपुत्रतुंसावधानथयीने हाटमांशयनकरजे हुंजागरणकर वानेअर्थेंजाउंछुं तेवारेंमेंकह्युंहुंतो एकलोइहांबीहुंछुं माटेघेरजयी शयनकरीश एह वुंकहिनेहुंघेरगयो सरलसेठमित्रनेघरेगयो हवेमध्यरात्रगयेथके महारास्तेयमित्रे म नेप्रेर्योथको हलवेहलवेघरथकीउठीने हाटउपरगयो तिहांथीधनलेइ किहांकबीजा स्थानकनेविषे दाटीआवीने पाछोवल्यो तेसमयें पोरायतपुरुषेंमनेदीठो तेणेमनेचो रदाखलपकड्यो तिहांघणाकलोकनो कोलाहलशब्दसांभलीने सरलसेठपण आव्यो तेणेमनेपुछ्युंजे हेपुत्र एनुंशुंकारणछे तेवारेंमेंकह्युंजे हेपितातमाराविना घेरसुते थके मनेनिद्राआवीनही तेवारेंमेंविचार्युंजे हाटेजयीने पितानीसुवानीपथारीनेविषे जोकोइरीतेंनिद्राआवेतो घणुंसारुं एमचिंतवीने घेरथीनिकल्यो इहांसुधीआव्यो ते वारेंहाटनाकमाडउघाडाज पड्याहता तेदेखीने विलखोथकोबेसीरह्यो.

पणदैवयोगे एपोरायतलोकेआवीने चोरनीबुद्धीयें मनेजपकड्यो एहवुंसांभलीने

संसारी पुरुषजो निरोगीहोय तोपण मिथ्यारूपमहाकोढरोगेकरी ग्रस्तछेमाटे को ढीआजजाणवा अनेसाधुजो बाहिरंगे गलित कुष्टीवंतहोय तोपणमिथ्यात्व रूपकोढ ना नाशपणाथकी निरोगीजजाणवाः

संसारीपुरुषजो नित्यप्रते मिष्टान्नवस्तुना भोजनकरनाराहोय तोपण विषयरू पभाग अनाजेकरी सदासर्वदा अतृप्तछे माटेतेनेभूखवंतजजाणवा अने साधुतो बा ह्यदृष्टीयें भूखेकरीक्षीणछे तोपण समतारूप अमृतना आस्वादेकरी हर्षवंतथका नि रंतर तृप्तिवंतजाणवा.

संसारीजीवो यौवन अवस्थायें मदोनमत्तथकापण पंभितवीर्यनो उल्लासपाम्या नथी तथाछेला पुद्गल परावर्त्तरूप स्वभावरूप यौवनअवस्थाने अणपामताछे तथा ज्ञानादिक रत्नत्रयीउपजाववानेविषेंविकलपणामाटे जरायें करीजजराथयेला शरीरवं तजाणवा अने साधुतो बाहेरअंगें जरायेंकरीजर्जरितछे तोपण आत्मस्वभावरूप यौवनअवस्थाने पाम्याछे माटेयौवनअवस्थावंतजजाणवा.

संसारीजीवना रुडानेत्रछेतोपण तत्वज्ञानजोवाने मीचेलीआंखोजेहवा जाणवा अनेसाधुजो गलितचक्षुवंतछे तोपण तत्वनादेखवावालाछे माटेरुडानेत्रवंतजाणवा

संसारीजीव घरमांभीरह्याछेतोपण दुःखेतरवायोग्य एहवीभवरूपअटवीमांथी अणनिवर्त्त्याथकाछे माटे निरंतर परिभ्रमणकरवाना आचारवंतज जाणवा अनेसा धुतो नित्यहर्षवंतथका विहारनाकरनार देशोदेशना विचरनार तोपण अप्रमत्तना मानगरना आशयपणाथकी निरंतरसुखआचारवंतज जाणवा.

एमसर्वबीजापण चारित्रादिकनाविशेष पणाथकी रुडीरीते विशेषेकरिभावितछे म नजेहनो माटेसाधुओनेज उत्तमउत्तमपदवीसंभवे पणसंसारीजीवोने संभवेनही केमके लोकोत्तरस्वस्वभावरूप लक्ष्मीनीठकुराइ तेरूपजेसुख तेनेविषेहर्षवंतपणो तेसा धुनेविषेजसंभवेछे.

इत्यादिक संसारनेसन्मुखपुरुषो तथासंसारथीपराङ्मुखपुरुषोनो स्वरूपते आ चार्यनामुखथकी सांभलीने राजादिकसर्व हर्षवंतथका आचार्यप्रतेकहेवालागाजे हे स्वामितमे कुरूपपणादिकनास्वरूपनुं घणोरुडो निरुपणकर्युं पणहेस्वामिजो एहवोसं सारनुं स्वरूपअतिबिहामणोछे तोपणलोकतेहना आसक्तभावने केमनथीमूकता

हवेआचार्यकहेछे केहेराजन् एकविशालनामा गामनेविषे विचित्रप्रकारना खाद्या दिकवस्तुतथा धन रत्ननीखाणेसंपूर्ण एहवुंमहादेवनुंमंदिरछे तेहांएकसारगुरुना मा मठनोस्वामीवसेछे तेनिरंतर तेजगामनारेहेवासी धूताराओनीसाथेंमले अनेपो

हवेसंसारीजीव अगृहीतसंकेतानेकहेछे जे हवेमाहारे मनुष्यगतिनगरीनेविषे आववानीवातकहुंछुं तेसांजल आनंदपूरनामानगर तिहां अहंकारप्रबलना वंठरूप अन्यराजारूपहाथीनीघटा तेहनामदने उन्मूलवामां केसरीसिंहसमान एहवो केसरी नामेराजाहतो तेहनी जयसुंदरीनामेराणी तेनगरमां धनोपार्जयनामेशेठवसेछे तेह नी धनमंजरीनामेस्त्रीनी कुक्षीनेविषे तेजवनेविषे जोगववायोग्य कर्मरूपगुटिकाआपी ने जवितव्यतायें मनेअवतराव्यो.

हवेजवितव्यतायें जेवारेंपुण्योदयनामे मित्रमनेदीधुं तेवारेंबीजोपण लोजसमुद्र रूपमित्र मनेदीधुंहतो तेवारपछे गर्जकालपुरोथये मनेपुण्योदय अने लोजसमुद्र ए बेमित्रेंकरीसहित प्रसव्यो महारापितायें महोटामहोत्सवसहित धनशेखर एहवुं माहरुंनामदीधुं हवेअनुक्रमें हुंमहोटोथयो तेवारेंसागरमित्रना अनुजावथकी मनमां एवाविचाररूप विकल्पउपजेके संसारनेविषे धनतेहिज सर्वथीअधिकवस्तुछे माटे कोइपणउपायकरी धननोसंचयकरवुं एहिजश्रेष्ठछे केमकेधनमलेजोगादिकसर्वमिले तथाधनरहितपुरुषते तृणधुलीसमानकहेवाय तेमाटे गमेतेउपायकरवुंपण धनउ पार्जवुं इत्यादिकचिंतवतोथको हुंसर्वकलाजण्यो व्यापारनाकाममां चतुरथयो.

एकदिवसें महारापितानेकह्युंजे हेपिताजी तमारीआज्ञाहोयतो हुंव्यापारकरवा नेअर्थें देशांतरजाउं तेसांजली महारोपिता दुःखितथको कहेवालागोजे हेपुत्रतुं ए कजअमाराप्राण अविलंबनने लाकडीजूतपुत्रछो अनेपरदेशेजावुंतेतो सेकडागमेदो षनुं हेतुजूतछे माटेहुंतुजने परदेशजवानीआज्ञाआपुंनही वलीदेशांतरजयीनेधनक मावीआववानी कांइआपणने जरुरनथी केमकेआपणाघरमां घणोद्रव्यहालविद्य मानछे माटेस्वेछायें धनखरची दान जोगादिककरीने इहांजरहो.

फरीमेंपितानेकह्युंजे हेपिताजी धनउपार्ज्याविना खरचकरताथकां समुद्रसरि खाजंमारहोय तोपणक्षयपामिजाय तोआपणीपासेवली केटलुंकधनछे वलीजेपुरु ष युवानअवस्थापामिने पोतेकमावतोनथी अनेपोतानापितानीज उपार्जनकरेली लक्ष्मी जोगवेछे, तेप्राणीपोतानी मातानेजजोगवेछे एहवीलोकोक्तिछे तेमाटेमने प रदेशजवानी आज्ञाआपो तोहुंनानाप्रकारनाउपायें धनउपार्जनकरी थोडादिवस मांपाछो घरेआवीस इत्यादिकवचनेंकरी माताअनेपिताप्रतें समजावी कोइकरीतें तेहनीआज्ञालेइने दक्षणदिशिनासमुद्रनेविषे रह्याजेदेशोतेहांहुंगयो तेसमुद्रनाकि नारे जयपूरनामानगरनेसमीपेंगयेथके हुंविचारकरवालागोजे हवेवाहणउपरचडी रत्नद्वीपेंजाउं अथवा चंमिकादिकदेवीओने रुधिरादिकना बलीदाने प्रसन्नकरी ध

स्वामि तेणेआत्मस्वन्नावरूप शिवमंदिरने पोतानास्वाधीनकरीलीधुंबे तेहांसद्गुरुरूप व्यवहारियानो प्रतिबोधश्रपामतोथको जेश्रात्मातेहिज बवरगुरुजाणवो हवेते कर्मरूपधूर्तो नरक तीर्यंच मनुष्य अनेदेवतानाआयुरूप चारजाजनआपीने चारगति रूप चारपाडानेविषे विषयादिकनी निद्राकरावेबे तेहथी हजारोगमेपीडाने अनुन्न वतोथको उद्वेगपामेबे तोपणजीवनेसारुंलागेबे अनेरागादिक चोर नानाप्रकारनी विटंबनायेंजीवनेफेरवेबे माटेहेराजन् सर्वसंसारीजीव मोहना उन्मादादिक कामणे करी परवशथका संसारनाडुःखने जाणताथकापण अजाणनीपरेंन्नटकेबे जोजैनगु रुरूप व्यवहारिश्रो श्रासंसारीजीवने संगतमूक्यानो तथा ज्ञानादिक कुटुंब पोषण करवानो धर्मोपदेशश्रापेबे तथापिमोहोन्मादरूप कामेणेग्रथीलथयोथको तेविर्मव नाउनेज इष्टकरीमानेबे अनेते हितोपदेशनमाने माटेज्ञानीथको अज्ञानीकहेवायबे.

तेमांकोइक लघुकर्मीजीवहोयते गुरुनोउपदेश रुमीरीतेंजाणी मोहादिकधूर्त्तोनो तिरस्कारकरी स्वन्नाविक कुटुंबनो पोषणकरे तेपोतानी आत्मसंपदारूपलक्ष्मीनी समृद्धियें सहितसुखीथाय इत्यादिकदेशनासांन्नलीने वलीराजाकहेबे हेन्नगवन् तमारा जेवाजिहां बोधनाआपनारहोय तिहांन्नव्यजीव बोधपामेज एमांकांइसंशयनथी पण हेगुरुजीतुमेकोनाउपदेशथी शाहेतुथी व्रतश्रादर्युंतेसर्ववृत्तांतकहीनेश्रमने पवित्रकरो

हवेश्राचार्यकहेबेजे हेराजन् तुमेंसांन्नलो पृथ्वीतलनामा नगरनेविषे शुन्नविपाक नामेराजा तेहनी निजसाधुतानामेस्त्री तेहनोबुद्धनामापुत्र तेघणोगुणपात्रबे हवे शुन्नविपाकनोन्नाइ अशुन्नविपाकनामेराजा तेजगतनेघणोन्नयंकरबे तेहनोपुत्र समस्त दोषनुंघर एहवोमंदनामेबे हवेते बुद्ध अने मंदबेहु पित्राइन्नाइते क्रीडाविनोदकरतां अनुक्रमें वधतावधतामहोटाथया एकदिवसें बुद्धतो निर्मलमानसनामा नगरनोस्वा मी शुन्नान्निप्राय तेहनीपुत्री धिषणानामे तेहने बुद्धनीसाथेपरणावी तेहनासाथें सुखन्नोगवताथका विचारनामापुत्रथयो. हवेएकदिवसें बुद्धअने मंदबेन्नाइ पोताना क्षेत्रनेविषे ललाटके० कपालनामापर्वतेंगया तेहांबेविवरेंसहित नाशिकानामे गुफा प्रतेदेखीने तेमांनजरकरवालागा एटलामां ते गुफामांथी निकलतिएक कन्यादीवी पबेते कन्यानोनामादिक पुबवालागातेवारें तेकन्याकहेबे.

हेउत्तमपुरुषो जेवारेंतमो असंव्यवहारनामा नगरथीनिकलीने एकेंद्रियनामा नगरें घणोकालरहीने विकलेंद्रियनामानगरना तेंद्रियनामापाडानेविषेश्राव्या तेवा रेंकर्मपरिणामनामनाराजायें घ्राणनामाचाकर तमारासाथेंन्नलो चालनार तम नेसोप्योहतो तेतमारोघणाकालनोमित्र आगुफामांरहेबे हुंतेहनीन्नुजंगतानामे दासी

लेकदिवसें दशहजार सोनामोरपेदाकरी वलीकेटलेकदिवसें लाखसोनामोरथयो ते मजदशलाखपणथयी.

तेमजवली क्रोडसोनामोरोथवाना लाजनेअर्थे महारासागरमित्रें मनेप्रेरणाकरी तेवारेंप्रवहणोलेइ मालथीजरी परदेशमोकल्या मांमवीनाकामचलाव्या नपुंसक तथागणिकाओनापोषकर्या महाआरंजमय मागव्यापारो प्रवर्त्ताव्या वलीपुण्योदय तुं साह्यहतो तेहनाबलथकी क्रोडसोनामोरपणमेलवी.

वलीसागरमित्रेकह्युंजे हजीतोरत्ननीराशी मेलववीजोइयें आक्रोडसोनैथाते शी गणतीमांछे तेवारेंप्रवर्द्धमानजे तृष्णा तेणेकरीमें बकुलनामा महारासस्रानेकह्युंजे हेपिताहुं रत्नद्वीपे रत्नासमूहमेलववानेजाउंछुं तेसांजलीबकुलेंकह्युंजे हेपुत्रतुं कोटिध्वजथयो हजीतनेसुंओछुंछे जेवली रत्नद्वीपेंजवानोविचारकरेछे इत्यादिकघणुं तेणेवार्युंपण मेंकह्युंजे हेपिताकोटीश्वरनेपण लक्ष्मीनालाजनेअर्थें उद्यमकरवुं केम के उद्यमनेवशलक्ष्मीछे जेमगुणाढ्यहोय सर्वांगसुंदरहोय तोपणनपुंसकहोयतोतेह नेजेम स्त्रीलोकपरिहरेछे तेदृष्टांते निरुद्यमीने लक्ष्मीमूकीजायछे इत्यादिकवचने स सराने निरुत्तरवंतकरीने वलीबलात्कारेंत्रीनी अनुज्ञालेइने नानाप्रकारना क्रियाणे करी समस्तप्रकारें वाहणनरीने चाल्योथको रत्नद्वीपेंजइपहोतो तेहांनो निलकंवना मेराजाने खेमकुशलेकरी प्रसन्नकर्यो राजापणमहाराउपर प्रसन्नथयो.

पछेअनेकप्रकारेकरी रत्नाव्यापारनो प्रारंजकर्यो एकदिवसेंकोइक अर्द्धगरढी स्त्री मारेघरेंआवीने मनेकहेवालागीजे हेधनशेखरशेठ आनंदपुरनो केशरीनामेरा जानी जयसुंदरी अने कमलसुंदरीनामे बेस्त्रीओछे पणतेनगरनेराजायें राजनीवां छावंतथको एहवुंविचार्युंके जोकदाच महारोकोइमहोटोपुत्रथसे तो मनेहणीने तेराज्यगादिनोवारेशथाशे एमविचारीने जेजेपुत्रतेहनाघरें जन्मेछे तेहनेहणीनाखेछे एकदिवसे गर्जवंति कमलसुंदरीराणी पुत्रहणवानीबीकेकरी छुंवसुमतिनामेसखीने शाथेंलेइ रात्रने समयेंनाठी तेदैवयोगें विषमअटवीनेविषेजइपडी तिहांश्वापद जना वरादिकना पुकारशब्दसांजलीतेहने बीकेंकरी तेणेपुत्रजन्म्योपछे तेराणीपुत्रजन्म्याने अनंतरें तुरतमरणपामि तेवारेंहुंडःखवंतथकी रत्नाकरंडिआनीपरे घणेयत्नेकरी पुत्रनेलेइ सथवारानेसंयोगेअनुक्रमें इहांआवीने कमलसुंदरीनोजाइ नीलकंवनामे राजानेआगल सर्ववृत्तांतकहीने पुत्रतेहनेआप्युं.

बहेनतुंमरणसांजलीने राजाडःखपाम्यो पणदेवकुमरनी उपमासरिखो नाणेज देखीने हर्षवंतथयोथको तेहनुंदरिएहवोनामआपीने तेपुत्रनेप्राणथी अधिकयत्नेक

चालोआपणेपण तिहांजइ कौतुकजोइयें जेहवेचारित्रधर्मराजासुंकरेछे एमकहीने अमेबेहुजण तिहांगया तिहांविवेकपर्वतनाउपरेंरह्यो एहवो अप्रमत्तनामानगरअमे दीठो तिहांचित्तसमाधाननामें मंडपनेविषे चारित्रधर्मनामेराजा बेठोहतोते परिवारें सहित मने मारीमातायें उलखाव्यो वलीसनाना सर्वलोकनोसमूह तेपणजूदाजूदा नामोलेइने मार्गानुसारितायें उलखाव्या.

तेवामां संयमसुनटपण तेहवीज अवस्थावंतथको आवीने चारित्रधर्मराजाने सुनटोयेदेखाड्यो वलीमोहराजानी सैन्यनोआकराइपणुं तेसर्वचारित्रधर्मराजाने सुनटोयेकह्युं हवेतेसंयमसुनटनेराजा सनामांसंनालीनेजूएछे तेसमये घणाआयुध वंत संतोषनामे दयानामे क्षमानामे ब्रह्मचर्यनामे इत्यादिक सुनटउठीने संनिधबद्ध थयी हुंकारशब्दमूकताथका राजानेकहेवालागाजे हेदेव आपणासंयमसुनटनेमोहा दिकेंकदर्थनाकरीछेमाटे मोहराजाने सन्मुखलडवानेअर्थें अमोनेआदेशआपोतो अमे एकक्षणमात्रमां सर्वमोहराजाना सैन्यने क्षीणकरीनाखियें माटेइहांहुकमआपवाने विलंबकरवुंनही केमकेवैरीने शिक्षाआपशोनही तोतमारीअखंमआज्ञाशीरीतेप्रवर्त्तसे इत्यादिकपराक्रमना वचनसांजलीने राजायें सद्बोधनामे प्रधानने सन्मुखनजरकरी

पछेसद्बोध अने सम्यक्दर्शन एबेहुमाहोमांहेवातकरीने राजानेकहेछे जेहेस्वा मि प्रथमतोराजाना सातअंगकह्याछे १ राजा २ प्रधान ३ मित्र ४ नंमार ५ देश ६ गढ ७ लशकर एसातअंगराजानाकह्याछे तेमज एकठकुराइपणानीशक्ति बीजी उ त्साहपणानीशक्ति त्रीजी मंत्रपणानीशक्ति एत्रणशक्तिनोबलाबल चिंतवीने पछेते रा जानीसाथें जीतवानीइछाकरियें साम दाम नेद दंम एमांहेथी जेयोग्यहोयतेउपा यकरियें वली संधि विग्रह यान आसन द्वेधा आश्रय एरूपछगुणते राजानाअंग नूतछे तेमांथीजेगुणे वर्त्तवायोग्यहोय तेगुणेविचारीने वर्त्तवो.

एहवीनीतिनी स्थितिछेमाटे सहसाकारीजलडवुंते युक्तनथी सोएनीसाथें संधी करवासारुं कोइकदूतने पछेलाएनीपाशेंमोकलियें एमसांनलीनेराजायें तेवातप्रमाण करी सत्यनामेदूतने मोहराजापाशेंमोकल्यो तेदूतचालतोथको अनुक्रमे सचित्तवृत्ति नामे अटवीनेविषे प्रमत्तनामानदीने किनारे मोहराजाना लशकरनोपडावछे तिहां चित्तव्याक्षेपनामामंमपनेविषे परखदासहित मोहराजाबेठोहतो तेहने पोतानास्वा मिनुं कहेलोकार्यप्रगटपणे दूतेंआवीनेकह्युं जे हेमोहराजा आचित्तवृत्तिनामे अटवी तेपहेलातमारीनथी तेमअमारीपणनथी एहनोस्वामितो नवजंतुजछे वलीआपणे कर्मपरिणामादिकसर्वें नवजंतुनाजसेवकछैयें एवातसाचीछता तमेतेनवजंतुने कांइ

प्राणथीपण वल्लभएहवी मारी मयूरमंजरीनामेंपुत्रीछे तेआजजेमपिशाचवलगुंहो य तेमसुखनाचालाकरति नीसासामूकतीथकी व्यग्रचित्तकरीने बेठीहती तेहनीचिंता येंहुंपीडाणीछुं तेवारेंमें तेहनेलग्नजोयीकह्युंजे एहनामनमां परणवानीचिंताछे एहवुं सांजली मनेनमस्कारकरीने राणीबोलीजे हेतापसणीजी एवातसाचीछे केमके मयूरमंजरीनीवल्लभसखी जेलीलावतितेणे मनेकह्युंहतुंजे मित्रनासमूहें परवश्यो हरिकुमरने एणेआजदीठोछे तेवखतथी एम्लानमुखवंतथकी विलखीथयीबेठीछे तेवारपछे राणीनाकहेवाउपरथी हुंमयूरमंजरीनो चित्रपटमांआलेखी कुमरनेआपीजाउंछुं.

हवेहेअगृहीतसंकेता तापसणीनामुखथी सर्ववृत्तांतसांजली हुंघणोहर्षवंतथको कुमरपासेजयीने सर्ववृत्तांतकह्योतेअणसद्दहतो हतोतोपणमेंसोगनखायीनेप्रतीतवंत कस्यो तेवारेंकुमर कांइकस्वस्थथयीने मित्रनासमूहें परवश्योथको पोतानाघरेंआव्यो हवेराणीयेंपण पुत्रीनोअभिप्राय राजानेसंजलाव्यो पछे राजायेंमहोटा महोत्सवेंकरी मयूरमंजरीने हरिकुमरसाथें परणावी तेवारें हरिकुमरते पुण्यनाप्रागभावेंकरी उपनोजेमयूरमंजरीनो समागम तेपामिने नानाप्रकारना जोगविलासने विलसतोथकोरह्योछेतोपणमनेक्षणवार वीसारतोनहतो अनेहुंतोलोजसमुद्रनामे मारामित्रनावशथकी एमविचारुंजे इहांपणव्यापारमां अंतरायनीकरनार एहवी आकुमरनीसाथें माहारे केहांथीसोबतथयी केमके एहनीसाथेंगोष्ठीकरवाना विग्रहचित्तथकी कोइपणजणसवेचवी लेवीइत्यादिक कार्यमां सामर्थवंत थयीशकतो नथी एमचिंतवतोथको थोडेथोडेतेकुमरनीसाथें मित्राचारीनो समागममूकीने पोतानाकार्योमां आसक्तथयो थकोरत्नउपार्जनकरीहुंहर्षपामुं कोइनो विश्वासकरुंनही तथा रात्रेसुखेनिद्रापणकरुंनही एमउद्यमकरतां में नानाप्रकारना रत्ननोजातिनासमूह एकठाकस्या.

एहवामां कर्मपरिणामनामेराजानीस्त्री कालपरिणति तेणे एकयौवन अने बीजुं मैथुन एबेसुजटोमोकल्या तेमाहरापासेआव्या मेंतेबेहुसुजटोने आदरसत्कारें करीसहित यौवननामेसुजटने देहरूपघरनेविषे निवासआप्युं अनेमैथुननेहृदयने विषेथाप्युं पछेयौवननामे मित्रना अनुजावथकी हुंवांकीनजरकरीने मुखअनेआंखनाविकाररूप अहंकारकरुं अने मैथुननामे मित्रनावशथकी सेकमागमे स्त्रीओना जोगेकरीपण तृप्तिपामुंनही तेमचक्षुइंद्रियना परवशपणाथकी जेजेस्वरूपवंतस्त्रीने देखुं तेतेस्त्रीसाथें रमवानीइछायें नवानवाप्रकारनी चेष्टाकरुं जोपण लोजसमुद्रमित्रनाउपदेशथी द्रव्यखरचवाना जयथी मैथुननोसंग निषेधकरुं तोपणतेमैथुनना स्नेहनापरवशपणाथकी हुंथोडुंद्रव्यआपीशकुं तेणेकरी बालविधवा नीखारण नर्तार

लीलावतीनीशोकें लीलावतीनो पुत्रमारवानेअर्थें एकविषमिश्रितसुगंधिकवस्तुनापडि काने घरनाबारणाना बारसांखउपरमूक्युंछे तिहांमंदकुमरें आवताज भुजंगताना प रवशपणाथकी तेसुगंधनापुडीकाने सुंगवालागो तेहथीएहनेविषव्याप्यो तेणेकरी मं दकुमर एकक्षणमात्रमांहे मरणपाम्यो एममंदनामरणनुंकारण घ्राणेंद्रिनासंगनो मागेविपाकदेखीने विरक्तथको बुद्धकुमरते पोतानीसाधुतानामेमाता अने शुभवि पाकनामेपिता तथाधिषणानामेस्त्री वली विचारनामेपुत्र अनेमार्गानुसारितानामे शाली तथाबीजोपण समस्तकुटुंबनेसाथेलेइने रुडागुरुपाशेथीदीक्षालेइ थोडाकाल मां समस्तसिद्धांतनोपारंगामीथयो तेथीगुरुयेंमने आचार्यपदवीदीधी.

तेमाटेहेधवलराजा एमहाव्रतग्रहणनुंकारणकह्युं तेजहुंबुद्धनामाआचार्यछुं इ त्यादिकदेशनासांभली वैरागअने संवेगादिक दृष्टीवंतथको धवलराजा पोताना वि मलनामाकुमरने कहेवालागोजे आराध्यनोजार तमेग्रहणकरो अनेहुंसंसारथी मु क्तथवानेअर्थें चारित्रनेग्रहणकरीश तेसांभली विमलकुमरबोल्योजे हेपिताजीजोत मेमाहराउपर प्रेमनजररारवोछोतो धर्मनोविघ्नभूत तथा पापनुंकारणभूत एहवोजे राज्य तेहनेग्रहणकरवानुं मनेकांइपण प्रयोजननथी राज्यआपवाथी पुत्रनोहितवां छकपणुंथाय एहवोतमे विचारताहशो पण हुंतोआगलथीज चारित्रव्रत ग्रहणकर वानी उत्कंठावंतछुं एहवुंसांभलीराजायें विमलकुमरनोजाइ कमलकुमारनेराजआ पी नगरमां चैत्यनेविषे अष्टाइमहोत्सवकरीने राजाअने विमलकुमरें तथाबीजापण घणानगरनालोकें बुद्धाचार्यपासेंथी दीक्षालीधी.

हवेसंसारीजीवकहेछेजे हेअगृहीतसंकेता तेबुद्धनामे आचार्यनीदेशनासांभलीने हुंचोरीनावशथकी कांइपणप्रबोध पाम्योनही उलटोविमलकुमरने व्रतग्रहणकरवा नेअवसरें मेंविचार्युंजे रखेविमलकुमरमने बलात्कारेकरी दीक्षाग्रहणकरावे एहवुंजा णी तिहांथीनाशीगयो पछेविमलकुमरें सेवकोमोकली महारीशोधकरावी पण हुं किहांयेंमल्योनही तेवारेंविमलकुमरें गुरुनेपुछयुंजे हेस्वामि तमारीदेशनासांभलीने कोइसर्वविरति कोइदेशविरति कोइसम्यक्तिइत्यादिक सर्वलोकयथाशक्तियें प्रतिबोध पाम्या धर्मविषेउद्यमकरताथया पणमहारोमित्रवामदेवतो कांइपणप्रतिबोधपाम्यो नही वलीहमणाते शाकारणेकिहांकजतोरह्योदेखायछे एहवुंपुछेथके आचार्यज्ञान प्रयुंजी कहेवालागाजे हेमहाभाग्य जिहांसुधी एनीपाशें मायाअने चोरीनामे बेदुष्ट मित्रोछे तेहांसुधीए धर्मनोबोध पामशेनही हमणापणएविमलमने बलात्कारें सं

रें हरिकुमरेंदेवतानेकह्युंजे अपराधक्षमाकरो अपराधक्षमाकरो एहवुंसांजली देवता मने मारतोहतोतेमूकीने समुद्रमांनाखीदीधो.

हवेहरिकुमर खेमकुशलेकरी थोडादिवसमां समुद्रनोपारपाम्यो तेहांलोकनामु खथी पोतानापितानुंमरण सांजली आनंदपूरेजयीने पोतानापिताना राज्यनेअंगि कारकर्युं अनेमाहरो रत्नथीनरेलोवहाणतेमहारापिताने हरिकुमरेंदीधुं हुंतोचपलस मुद्रना कल्लोलेंकरी हणाणोथको जलचरजीवें नक्षकरतोथको सेकडागमे असाता ने अनुजवतोथको जवितव्यतानावशथकी मुआसरिखो सातमेदिवसें समुद्रनोपारपा म्यो पलेवंमावायुना स्पर्शथी सचेतनावंतथयो छुख अने तृषायेंपीमितथको इहां तिहांजमवालागो तेवारपलेकांइक वनफलादिकखातोथको धीरेधीरे फिरतो फिरतो कोइकनगरेंजइपहोतो.

तेहांमिथ्याजिमानना वशथकी मेंविचार्युंजे एहवी मारीअवस्थायें पोतानेघरें अथवा ससरानेघरें केमजाउं माटेइहांजरही धनउपार्जनकरीने माहरेघरेजइश एह वुंविचारी वलीसागरनामा कुमित्रेंप्रेर्योथको विचित्रप्रकारना धनउपार्जनकरवाना उपायनेविषे प्रवर्त्यो पणपुण्योदयनाअजावथी विशेषें धननीप्राप्तिकिहांपणथयीनही

जोकरसणीनो कर्मकरवाजाउंतो अवृष्टिथाय जोकिहांचाकरीकरुंतो प्रहारेकरी जाजरा अंगवंतथाउं अने गामादिकवाहनकार्यनेविषे प्रवर्तुंतोबलदप्रमुखमरणपामे एरीतेंजेजे उपायने आलंबीप्रवर्तुं तेतेकार्य अनर्थनाकरनाराथाय तेथीकंटालीने दैव उपरआसरोकरी पगपसारीनेंबेसीरह्यो.

फरीसागरमित्रेंकह्युंजे अहोएमनिश्चितथको शुंबेसेले धननाअर्थिपुरुष पोताना मातापितादिकनेपण मरणप्राप्तकरे सइकडागमे अकार्यकरे एमविचारी में गलेफा सोआपीलोकानेमारीनाखवो इत्यादिक अकार्यकर्या पंथीलोकोनेलुटीलेवुं एमनाना प्रकारें चोरीनाकर्मनी क्रियाकरवामांडी तथाजुवटुंकर्युंएमसेकमागमें मागकर्मकरतां पण एकफुटकलकोडी पाम्योनही तिहांवधबंधनादिक असातायेंकरी डुःखनेवि षेरह्योथकोपण विचविचमां मैथुननीप्रेरणायें नीचजातिनीस्त्रीओसाथे वचननीचतु राइतोघणीजकरुं पणएटलोविशेषजे महारीपासेंद्रव्य निलकुलनहतुं माटेमहारी अजिलाषाकोइ ढेड चमरादिक नीचजातिनी स्त्री पणकरेनही

एकदिवसें आनंदपूरनगरना वनखंमनेविषे उत्तमसूरिनामेआचार्य समोसर्या तिहांहरिनामेराजा परिवारेंसहित वांदवानेअर्थेंगयो गुरुयेंधर्मदेशनाआपी तेवारप लेराजायें गुरुनेपुलयुंजे हेस्वामि हुंधनशेखरउपरअत्यंतप्रेमराखतोहतोतोपणतेएम

सेछेसर्वेपोरायतनेवाला तेथीपोरायतपुरुष न्नष्टथया तोपणपोरायतेंकह्युंजे धनएणे जलीधुंछे तेंजिह्वांदाटयुंछेतेपण अमेदीठुंछे अने अमेसारीपेठेजाणुंजे एद्विजचोरछे माटेप्रनाते एनीचोरीप्रगटकरसुं एमकहीमहारेसन्मुखजोयी बराबरमने ओलखीने जतारह्या पछेमेंविचार्युंजे एपोरायततोमने प्रनातेंजरूरपकडसे माटेहमणाज ना सीजाउं एमविचारीरात्रेंतेदाटेलुंधनलेइनेनाठो.

दैवयोगेंरस्तामां तेद्विजपोरायततेणे मने देखीनेपकडयो पछे खासडा अने लां कडी तथा मुष्टिप्रहारेंकरी जाजरोकरी निवडबंधनेबांधी चोरीनामुद्दासहित राजा नेसन्मुखलेइगया राजायें शूलियेंचडाववानो आदेशआपवामांड्युं तेटलामां ति हां सरलसेठेंआवी राजानेकह्युंजे हेस्वामी एमहारोपुत्र इत्यादिक विनतीकरी मने मूकाव्युं पण राजायें सरलसेठनेकह्युंजे हेसरलएताहरोपुत्र डुष्टछे ताहराघरमां राख वायोग्यनथी माटेताहराकहेवाथीजीवतोमूकवुं पणअमेजएनेराखसुं एहवुंकही रा जायेंपोताना मंदिरमांदासकर्म करावचानेवास्ते मनेराख्युं.

एकदिवसेंमें कोइकविद्यानाबलेकरी राजानानंडारमांथीधनचोर्युं पणनिर्नेयकी स र्वथाप्रकारें महारोपुण्योदय खालीथयीगयो पछेपगनाजोनारपुरुषें कोइकरीतें मनेपक डीघणीविटंबनाकरीने मनेमारीनाख्यो.

हवेसेनव वेदवायोग्य कर्मरूप गुटीका क्षयथयेथके नवितव्यतायें वलीबीजीगुटि काआपीने पापिष्ठनिवासनामानगरें मनेमोकल्योतेहांघणोकालसुधीरही सेकडागमेडुः खो अनुनवीने वलीतेहांथीनिकलीने स्त्रीवेदपणे नपुंसकवेदपणेकिहांकवली पुरुषवे दपणे विविधप्रकारनी जातिकुलादिकनेविषे अनंताकालसुधी नवितव्यतायें मनेघणी रीतें विटंबीने एकदिवसेवली कांइकमहाराउपर प्रसन्नथयी कहेवालागीजे हेआर्य पुत्रतेंघणाकष्टो अनुनव्या माटेहमणा तहारोपुण्योदयनामा मित्रतुजनेआपुंछुंतेहनेले इनेमनुष्यगतिनामानगरियेंतुंजा तेसांनलीहुंचाल्यो एरीतेहेनव्यजीवो एवामदेवनो सं बंधसांनली माया चोरीपरहरो तथाबुद्धसूरिनोसंबंधसांनली घ्राणेंद्रियनोजयकरो अने घ्राणेंद्रियनासंगथकी उपनोजेअनर्थ तेनेजाणीनेसुखनीवृद्धिनेअर्थें एमाया दिकोउपर आसक्तथावुंनही.

एमउपमितिनवप्रपंच कथाद्वारनेविषे माया चोरी अनेघ्राणें द्रियादिकनो विपाक देंखाडवारूप त्रीजोअधिकारसंपूर्णथयो.

अनेपोतानो आत्माज सर्वने उपरवर्त्तमानपणेमानीनेएकांतपणे संसारीजीवनेपीडा आपेछे चारित्रधर्मादिकोने त्रासपमाडेछे.

फरीअप्रबोध शिष्यें पुछ्युंजे हेस्वामि हमणासंसारीजीवकेवाप्रकारनोछे तेसांभली सिद्धांतनामे आचार्यकहेछे जेहमणातोए उत्कृष्टवैरीभूतजे मोहादिकोछे तेहने हितनाकारणकरीमानेछे वलीचारित्रधर्मादिकजे हितनाकरनार तेहने शत्रु पणेगणेछे तेमजसागर अने मैथुनतुंआसक्तछते भवचक्रमां भमेछे एमसामान्यप्रकारेंतेहनेकह्युं.

वलीहेपुत्र हेअप्रबोधतुजने विशेषप्रकारेकहुंछुं तेसांभल कर्मपरिणामराजाना जो पणअनंतापुत्रोछे तोपण छपुत्रोतो जगत्नेविषे प्रसिद्धछे तेहने नामो सहितवखाणेछे

पहेलो निकृष्टनामापुत्रछे एकदिवसेकर्मपरिणामें तेहनेराज्यदिधुं तेप्रकृतियेंक्रूरछे पापात्माछे दुर्भगछे कुरूपस्त्रीनासमूहेंपणजेहने नापसंनकर्योछे सर्वथाशुभअध्यव सायेंकरी वर्जितछे शुभलेश्याने जाणतोनथी पांचप्रकारना विषय सुखनेजाणतोनथी केवलपृथ्वीनेभारभूत एहवाप्रकारनो तेहनेदेखीने हर्षनेपाम्याथकामोहादिकोयें ए मविचार्युंजे एअमारोपोषनार एमचिंतवताथया तेमज चारित्रधर्मादिकोयें जाण्युंजे एअमारोशत्रुछे एमविचारीनेनासीगया वली राजसचित्तादिकनगरना वसनारालोकह र्षवंतथयाअने सात्विकमानसादिकनगरोनालोकते शोकेकरीसंकुचितथया तेमाटे निकृष्टपुत्रनेमोहादिकेंविकलकर्यो तेथी विडंबितमानथयोथको राजनेविषे प्रवेशपणन पामे रुष्टमानथयो कर्मपरिणामनामेंराजा तेणेपापिष्ठनिवासनामानगरेंमोकल्यो ए मनिकृष्टेंराजने माठीविधयें पाल्यो तेथकी उत्कृष्टकष्टनो स्थानकथयो हवेजे निकृष्टतेबा हिरलोकें पारधी माछिमार सौकरिक वागुरिक जालनाखनार इत्यादिक क्रूरकर्मि जीव जेहनोसर्वलोकोयें तिरस्कारकर्युंछे तेसर्वेअधमकर्मनाकरवाथकी आलोकने विषे शोकडागमेंदुःखअनुभवीने पछे तेपुरुषोनरकनाजानार होय एहवुंदेखाडवुंछे.

एकदिवसें कर्मपरिणामराजायें बीजाअधमनामापुत्रनेराज्यसोप्युं तेपुत्रपणस्वभा वथकीनिकृष्टसरिखोजछे पणकांइक धन अनेकामभोग तेणेकरी सहितछे धर्मिपुरुषो नीरुडीरीतेंउपहासकहेछे अने देव गुरु धर्मनीअवगणनाकरेछे पुण्यपाप अनेपरलो कादिकनेमानतोनथी केवलसंसारिकसुखनेज सारपणेगणेछे पंचेंद्रियनापरवशपणा थकी चांडालणीसरखी स्त्रीसाथें पणभोगसेवाकरेछे वलीभखावायोग्यने तथानपीवा योग्य अगम्यादिकोनेइछेछे एमतेपुत्रपण मोहादिकोप्रतें पोषीने तथा चारित्रधर्मादिको नेविटंबीने पोतानाराजनासुखनी गंधपणनपाम्यो माटेरुष्टमानथयो कर्मपरिणामरा जातेणे आदेशआप्योथको पापिष्टनिवास नगरनेपाम्यो एबाहिर लोकोनेविषे नट

ननीयाचनाकरुं अथवा कोइकपराक्रमें करी कोइकराजानेहणी तेहनुं राजलेउं अ थवा कोइपर्वतनीगुफादिकमांप्रवेशकरीनेरसकुंपिकादिकलेइआवुं अथवा कोइसाथें वातचितकरुं अथवा पातालखोदी द्रव्यकाढुं इत्यादिक नानाप्रकारेधन उपार्जनकरवा ना उपायनेविचारतोथको आगलजावंतुं तोमार्गमांएक केसुडानोवृक्षकुंपलेसहित देखीने कोइधातुरवादिना वचनथकी निश्चेथी इहांधनहशे एवुंजाणीने ॐनमोधरणें द्राय नमोधनपालाय इत्यादिकमंत्रजणीनें जमीनखोदवामांमी तेपृथ्वीनातलामांथी हजार सोनामोरेकरीभरेलुं एकत्राबानुंपात्रनिकल्युं तेहनें ग्रहणकरीने हुंघणोह र्षवंतथयो.

वलीलोननामासमुद्रजे महारोमित्रते बलवंतथयो पछेहुंजयपुरनगरमांगयो तेहां रहेताथका बकुलनामाव्यवहारीसाथें महारोपरिचयथयो तेणेकुलशीलादिकगुणेक रीसहित मनेजाणीने कमलिनीनामे पोतानीपुत्रीते मनेपरणावी तेहनासंघाते जो गनोगवता मनेघणादिवसो व्यतिक्रम्या एकदिवसें लोनसागरनामामित्रेंमनेकह्युं ते थीमेंपणविचार्युंजे अहोजूओतोखराजे हुंनिश्चितथको उदरपूरणाजकरुंछुं अनेधन उपार्जनकरवामां अंतरायनीकरनार एहवीएजोगनी विटंबनाते शाथयेनी जि हांसुधीधनना ढगला नेलाकस्थानथी तिहांसुधीतो एसंसारादिकते मनेधनउपार्ज वामां अंतरायनाकरनाराछे एहवोमहारो विलखोचित्तदेखीने महारेससरे बकुलेंमने कह्युंजे हेपुत्रएमहारोधनादिक सर्वपदार्थ ताहराजछे तेमाटेयथायोग्य सुखनाजो गप्रतेंजोगव एधनउपार्जनकरवानी चिंताकरवेथीसखुं आपणनेकांइ धनखपतुंनथी तेसांनलीमेंकह्युंजे हेपिताजोएमछेतोपणहुं जुदोमाहरोव्यापारकरीस तोमनेसंतोष उपजे एहवुंकहीने मेंतिहांजूदाव्यापारनो प्रारंनकर्यो.

पछेलोनेंआसक्तहतो तेणेकरीमाहारीधर्मबुद्धिनाशपामि दयाजावदूरथयो अने पापथीदरवापणुंपणदूरथयुं तेथीमें रशनाव्यापार केशनाव्यापार विषनाव्यापर दंतना व्यापार तथालाखनाव्यापार इत्यादिक व्यापारोप्रते एमपन्नरेकम्मदानोमांहुं प्रव र्त्यों एमनानाप्रकारना व्यापारेंकरी हजारसोनामोरपेदाकरी तेवारें बेहजारसोना मोरनी वांछाथयी वलीसागरमित्र वृद्धिपाम्यो तेवारेजेथकी घणापापथाय एवाअंहटा दिक अधमजातिनाव्यापारकरवामांडया तेमां जोजनादिकना स्वादतज्या वस्त्र अनेघर आजूषणादिकनाउपजोगने विशारीमूक्यो तथास्त्रीना स्नेहनेअणगणतोथको दि वसअनेरात्रे व्यापारनेविषेज श्रमकरतो व्याकुलथको पर्यटनकरुं एमकरता केट

वानेअर्थे हितकार्य अने अहितकार्यनो रुडोउद्यमवंतथयो तेवारें मोहादिकचोरोकंपा यमानथयीने क्षोजनापाम्या वलीराजसचित्तादिकनगरोना वसनारलोकते हर्षवंतथ या चारित्रधर्मादिकोना रोमराय उल्लसितथया सात्विकमानसनामेनगरादिकोमां महो टोओछवप्रवर्त्यो वलीएकदिवसें एराजायेंपोतानुंराज्यपामवाना उपायने वास्ते यथा र्थनोबोलनारसिद्धांतनामे महोटाउत्तमपुरुषनेपूछ्युं तेवारें तेणेकह्युंजे हेमहाजाग्यवं तसांजलजेजवसमुद्रथी विरक्तथयाछे विषयसुखथी पराङ्मुखथयाछे वलीजेहनुं चित्त मोक्षनासुखमांएकाग्रथयुंछे तेहवापुरुषनेपोतानाराज्यपामवाना उपायनुंपुछवुं युक्तजछे तेमाटे तुंअंतरंगराज्यनासुखनो इछनारछो तोतुजनेउपायकहुंछुं तेसांजल.

प्रथमतोसद्गुरुनीसेवाकरवी वलीतेगुरुनोउपदेश रुडीरीतेंविचारवुं शास्त्रनाजा वार्थमां सदाइंप्रवर्त्तवुं शास्त्रोक्त क्रियाकरवी सज्जनपुरुषनी सोबतअंगीकारकरवी दू र्जनपुरुषनी सोबतछांमवी हिंसा मृषावाद अदत्तदान अने मैथुननो त्यागकरवो बाह्यअने अभ्यंतर एबेजेदें परिग्रहनेछांमवो साधुनोवेशधारणकरवो नवकोटियें विशुद्धआहार उपधि अने शय्यादिकेंकरी शरीरने क्षणक्षणेथापवो अने संसारनाकटु आविपाकछे एहवुंचिंतववुं पांचविषयनेजीतवुं तथा शीयल सत्य संतोष अने तप इत्यादिकनी वृद्धिकरवी एहमांजअहर्निश उद्यमकरवो एरीतेंकरतां तुजने पोताना राज्यमां प्रवेशपणुंथासे तेमाटे अभ्यासनामे स्वांगिकअंतरंगनुं सहाय ग्रहणकरवो ते मज चारित्रधर्मराजानुं सैन्यतुजनेमिलशे अने बीजोताहरो वैरागनामेमित्रथासे तेबे हुयेंसहितथको तेणेकरीपूर्वदिशिना द्वारेंथयीने पोतानाराज्यमां प्रवेशकरवुं.

तेहमांवली मावेबाजु महामोहादिकोना सैन्यने आधारजूत ग्राम नगर आकर पर्वतादिकोछे तेमूकीनेदक्षणदिशिनाजागनेविषे चारित्रधर्मनी सेनानेरहेवाजूत ग्रामा दिकछेवलीएसर्वने आधारजूत चित्तवृत्तिनामा अटवीछे तेहनेछहेडे पश्चिमदिशिना विजागनेविषे निवृत्तिनामेनगरीछे त्यांगयाथीएपूर्वनाराज्यनुंफलथाशे तेमाटेताहरे चा रित्रधर्मराजानी सेनाने अतिवल्लजकरी अने महामोहना सैन्यनेतजवेकरी उदासीन तानामे राजमार्गेंचालवो जेणेकरी अविछिन्नप्रयाणथाशे तिहांवचमांएक अध्यवसाय नामे द्रहआवशे ते कलुषितजावथकीथायछे तेस्वजावेंज मोहराजानालशकरने पुष्ट करेछे अने चारित्रधर्मराजाना लशकरनेपिडानेअर्थे थायछे वलीतेहिज अध्यवसा यनामेद्रहजो निर्मलहोयतो चारित्रधर्मराजाना लशकरनेपुष्टकरछे अने मोहराजाना लशकरने पीडाकरेछे तेमाटेंतारे अध्यवसायनामाद्रहने निर्मलकरवानेअर्थे १ मैत्री जावना २ प्रमोदजावना ३ करुणाजवना ४ उपेक्षाजावना एचारराणीओने थापवी

री तेह्नेमह्टोटोकरवालागो ह्मणानेपुत्र यौवनअवस्थापाम्योछे एह्रिकुमरते तुज ने आनंदपुरथको आव्योसांजलीने पोतानानगरनो वसनारजाणी अतिनम्रतापूर्वक तुजने तेडवानेअर्थें मनेताह्रीपासेंमूक्योछे तेमाटेतमेतुरतचालो एह्वोसांजलीनेहुं कुमरपासेगयो तेणेपणबहुमानपूर्वक पोतानानगरनीवातपूछवाथी मेंतेह्नेतेहांनो सर्ववृत्तांतकह्यो पछेतेकुमरनीसाथें माह्रेनित्यपरिचयथयाथकी मित्रताथयी तेथी मनेजाइतुल्यकरी मानवालागो.

एकदिवसें वसंतऋतुयें मनेतेडीने हरिकुमर मित्रनासमूहेपरवस्थोथको क्रीडा नेअर्थें वनखंडेआव्यो तेह्रांअमेनानाप्रकारना विनोदजोवाने तत्पररह्याछैयें एह्वा मां एकबुढीतापसणीतिह्रांआवी आशीरवादपूर्वकें कोइकस्त्रीनो चित्रितलेख हरिकुम रने ह्रार्थेदेइने किह्रांकजतिरही तेचित्रितस्त्रीनारूपने जोतोथको हरिकुमरपण चि त्रलेखनीपरें स्तब्धथयीगयो तेवारें मन्मथनामामित्रेंकह्युंजे हेकुमर सुंएकतानेकरी विचारकरेछे तेवारेंकुमरनुंध्यानतोतेचित्रमांजहतुंतथापितें आकाररूपचित्रलेखने छुपावीनेपोतानोअभिप्रायकोइने संजलाव्योनही.

पण एचित्रकरनारानी चतुराइते आश्चर्यउपजावेइत्यादिक प्रत्युत्तरआप्या तेवारेंम न्मथ पद्मकेशर विभ्रमकपोलादिकमित्रोये विचित्रप्रकारनी परोलीओ अने समस्या दिकनी वातोनारसेंकरी कोइकरोतें तेवातकुमरने विस्मृतजावेकरी

एटलामांवली एकमुहूर्त्तपछे चक्रवाकिनेजोइ तेह्थीतेचित्रितस्त्रीनास्तननीसमृति तेह्नाहृदयमांथयी पछेतेकुमरकिह्रांपणआनंदपामतोनथी तेथी सर्वमित्रोनेविस र्जिकरी मनेसाथेलेइ एकस्थानकें वेलीनाघरमांजयी शयनकरवालागो त्यांपणउन्न रेतोमांजेमभाछलीतडफडेतेनीपरें लोटतोथको माह्रोकरेलो शीतलउपचार तेथीप ण क्षणमात्र रतिपाम्योनही हवेते मन्मथादिकपणक्यांएक प्रछन्नवेलीरह्याह्रता तेणेगुप्तपणें तेसर्वव्यतिकरदीठुं पछेतिह्रांआवीने उपह्रांसेसहितकहेछेजे हेकुमर स्त्रीनेसेववेकरी आताह्रोताप उपशमसे इत्यादिक चिकित्सानाउपदेशरूप मीसते णेकरी घणुंहास्यविनोदकरवालागा तेवारपछे तेकुमरतिह्रां सर्वमित्रोनीसमक्ष पो तानोजेअभिप्रायहतोते प्रगटकरी तापसणीनेजोवानेअर्थेंमनेमूक्यो हुंतेनगरने सन्मु खजाउंछुंएटलामां अर्धमार्गनेविषे तेतापसणी मनेमली में तेह्नेनमस्कारकरीने चित्रनारूपनुंकारणपुछ्युं तेणेकह्युं आजहुं निद्रालेवासारुं नीलकंठनामेराजाना-म होत्रमांगइहती तिह्रांसिखरणीनामे राणीने चिंतायेंपीडितजोयीनेमेंतेह्ने चिंता नुंकारणपुछ्युं तेवारेंतेणेकह्युंजे

एवरिष्टपुत्रनागर्भकालथकीज मतिश्रुत अवधिरूपत्रणज्ञानेकरीशोभित अजरामरहतो तोपण श्रीतीर्थंकरदेवें ते अजरामरसिद्धांतनी लोकनेविषेख्यातिकरी प्रसिद्धकर्यो.

वलीएनगवान गर्भकालथकीज समस्तनावें मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान ए त्रणज्ञाने शोभित वली जन्मथकीज चारअतिशयेंकरिसहित लोकोत्तरगुणनासमूह नो समुद्र समस्तआश्चर्यनोकरनार एहवोसौनाग्यछेजेहनुं समस्तसुर अने असुरनाइं द्रादिकेंपूजित वली व्रतलीधाथीउपनुंछे चोथोमनपर्यवज्ञानजेहने घातिकर्मनोनाश करीने पांचमाकेवलज्ञानपाम्याछे कर्मनाक्षयथकी इग्यारअतिशयउपना वलीदेव तायें ओगणिश अतिशयकर्या तथा आठप्रातिहार्यैंकरी त्रणनुवननी साम्राज्यनेप्र काशकरीछे वली पांत्रीसगुणेसहित योजनगामिनी सर्वेनथनीउपजावनारीवाणीछे तेवाणियेंकरी धर्मउपदेशकरताथका पोतानेविहारेंकरी पृथ्वीतलने पवित्रकरेछे एह वानगवानने नमस्कारकरवाथी मिथ्यात्वरूप अंधकारनोनाशथायछे मुक्तिमार्गनोरु डोप्रकाशकरीने धर्मरूपतीर्थनेस्थापेछे एपूर्वोक्तप्रकारने अनुक्रमेंकरी निवृत्तिनामेनग रीने पाम्योथको शाश्वतपोतानीसाम्राज्य सुखनेनोगवे एमां अतीत अनागत वर्त्तमा नएत्रणेकालना तीर्थंकरोनुंदेखाडवुंछे.

हवेएछपुरुषनो दृष्टांतसांनलवाथीपण अप्रबुद्धते परमार्थपाम्योनही तेवारें तेह नेसिद्धांतनामागुरुयें विचाररूपमनुष्यआपीने अंतरंगनगरेमूकीने एछएनी राज्यस्थि ति साक्षात्देखाडीने प्रबोधवंतकर्यो.

तेमाटेहेराजा जेमनिकृष्ट अधम विमध्यमोयें राज्यनेमाठुंपाल्युं तेराज्यतेहनेकेवल उत्कृष्टदुःखसहेवायोग्यजथयुं अने मध्यमतोपालवाने सन्मुखपणाथी थोडादुःखनो देखनारथयो वली उत्तम तथा वरिष्ठ एबेहुयें रुडीरीतें राज्यपालवाथकी अनंतसुख नोदेवावालोथयो तेमज सर्वजीवोनेपोतानुंराज्य जेणेजेणेरुडुंपाल्युं तेनेतोसुखनो आपनारथयुं अने जेणे माठुंपाल्युं तेहनेदुःखदेवानुंज कारणथयुं एरीतेंजगतमां जेप्राणी नानाप्रकारना सुखीदुःखीछेतेहनुंकारणएहिजछे.

इत्यादिकदेशनासांनलीने हरिनामेराजाते यथायोग्यें पोतानानावरूप राज्यपा लवानेविषे सन्मुखथयो पछेपोताना शार्दूलकुमरने राज्यथापी मयूरमंजरीआदेदे इ पोताना कुटुंबना अनेक समूहसहित संयमव्रतलीधुं.

हवेदेअगृहीतसंकेता हुंतोलोन अने मैथुनने परवशनमतोथको एकदिवसें को इकवनमांगयो तिहांअंकूरेंसहितबिल्लीनोवृक्षदेखीने धननीवांछायेंकरी नूमीनेखोद वालागो.तेवृक्षनामूलमांथी एकनयंकरसर्पनिकल्यो तेणेमनेदंस्यो.तेथीतेनववेदवारू

वर्जितव्वी इत्यादि स्त्रीओनेजोगवुं एमअकार्यकरतोथको लोकमांहलकाइपणानो थानकरूतहुंथयो.

तोपणहरिकुमरनेबलेकरी मनेकोइ पराजवकरीशकेनही एवामांसर्वदेशनेविषे था प्युंछेपराक्रमजेहनुं वलीमहाबलवंत एहवुंहरिकुमरप्रतेंदेखीने नीलकंठनामेंराजा चिंतातुरथयो के आश्चर्यजेहवीवातछे जेनगरनासर्वलोकने हरिकुमरें वशकर्याछे व लीएहनोप्रताप दिनदिनप्रतेवधतोजायछे एहवोएहरिकुमरतें मनेअपुत्रीआनेहणीने जोमाहरुंराज्यलेइमूकेतो हुंसुंकरुं एमविचारकरी पोतानासुबुद्धिनामेप्रधानने छानोवो लावीने पोतानाकुदयनीवातकही वलीएहवुंकह्युंजे कोइकरीतें एहरिकुमरनेमारवुं एहवोहुकमप्रधाननेदीधो हवेप्रधानेपण अज्ञानना परवशपणाथकी तेराजानावच नने कबुलकरी घरेंआवीने विचारकरवालागोजे हाइतिखेदे धिःकारथाओ आराज नालोजने केंमकेएनीलकंठराजायें पोतानो पालेलोपुत्रजेवो जाणेज वलीतेहने ज माइपणकर्योछे एहवाहरिकुमरनेपण रागवर्जितथको हणवानेइछेछे एअसमंजस सरिखुंकरेछे जोपणलोकेकरीअंधथयो एहवोएराजा ते एमजाणतोनथी जेहुंअनर्थक रुंछुं तोहेपणमाहरेतोएकुमरने जीवतोजराखवो एमधारीने राजानोमागोअभिप्राय जेहतोतेप्रछन्नपणे हरिकुमरनेजइप्रधानेकह्यो.

तेवारपछे कोइनाखुदासाथें मसलतकरी सुवर्णरत्नादिकेंकरी वाहणोजरीने मयू रमंजरीने साथेलेइ कोइपणनजाणे तेवीरीतें रात्रनेसमें वाहणेचडीने हरिकुमर पोतानादेशतरफजवालागो तेअवसरें व्यापारनालोभथकी हुंमहारादेशतरफजवाने अणइछतोथको पणहरिकुमरेंमने अत्यंतआग्रहथकी तेडाव्यो तेहांहुंपण एकव हाण रत्ने जरीने कुमर संघातेचाल्यो वायुसरखी गतिवंतवाहणे वेगथका अने विचित्रप्रकारना कौतुकप्रतेंदेखतायकां जिवारेंअमे अर्द्धपंथेआव्या तेवखते सागरअने मैथुनएबेमित्रें मनेप्रेर्योथको मेंविचार्युंजे आश्चर्यकारी हरिकुमरनीए प्रमाणरहितऋद्धि तथा साक्षात् इंद्राणीनीपरेंएनीमयूरमंजरीनामेस्त्रीछे माटेजोएहरि कुमरनेमारीनाखुंतोसर्वस्व माहरेस्वाधिनथाय एहवीमाठीबुद्धीयें छलेकरीने महासमु द्रमांमें तेहरिकुमरनेनाखीदीधुं तेथीवाहाणमांहे लोकोनोकोलाहलशब्दथयो एहवोम नेअनर्थनोकरनारजाणीने महारोपुण्योदय महाराथीदूरथयो अनेहरिकुमरनेतो पो तानापुण्योदयना महात्म्यथकी समुद्रदेवतायें उपाडीनेवाहाणमां मूक्यो अनेहुंतो क्षीणपुण्योदयमाटे तेसमुद्रदेवतायेंज अतिक्रोधथकी घणोमार आपवामांडयुं तेवा

नुरोथयकी तेहोंबेगो हवेअकलंकें साधुनेपुब्युंजे हेस्वामि तमोनेशोवैरागनुं कारण हतुं जेथकीतमो आवायौवन अवस्थामां व्रतअंगीकारकर्युंछे तेसांजली मुनिराजबो ल्याजे हेकुमर हुं तुजने महारो वैरागउपजवानुं कारणकहुंछुं ते सांजल.

हुंलोकोदरनामे गामनोवसनार कुलपुत्रहतो तिहांएकदारात्रें अग्निनीजायलागी तेहथीविकराल ज्वालाओप्रगटथयी तेहनाधुमाडाथी नगरसर्वढंकाइगयुं तेणेकरी नगरनासर्वलोक आकुलव्याकुलथया अंने स्त्रीबालकादिकोनो कोलाहलशब्द प्रवर्त्यो तिहांपांगला आंधला नपुंसकादिक घणाकमनुष्यबलताथका पोकारकरवालागा.

लोकोनोधनलेइने चोरलोकोये घणालोकोने मुसाडया धूताराअने लुंटनाकरना र घणाहर्षवंतथया तेअवसरें प्रधाने पोतानावचननी शक्तियेंकरी चोतराविषे एकमं फलआलेखीने नगरनासर्वलोकनेबोलावी कह्युंके अहोनाइयो तमेआमंफलमांआ वीबेशो इहांतमनेबलवानीधास्ती बिलकुलनथी तेसांजलीने केटलाकलोकतोते मंफ लमांजइबेगा.

अनेबीजातो उपना उन्मादनीपरें प्रधाननुंवचन अवगणीने तृण काष्टघृता दिकेंरी अग्निसमाववानेअर्थें प्रवर्त्त्या जेमजेमतेसमाववाना उपायकरे तेमतेम घृतादिकनेप्रयोगें अग्निअधिक वृद्धिनेपामे तेदेखीवली प्रधानेकह्युंजे हेमुर्खो पाणियें करी निवारवायोग्यअग्नितेहने घृतादिकनुंसीचवुंकरीने सीरीतेसमाविसकशो तोपण उ न्मत्तनीपरें तेप्रधाननावचनने निंदताथका फरीतेमजकरवालागा एहवामांहुंपण म हाराभाग्यनाबलथकी मंत्रीनोवचनप्रमाणकरी बलताघरनेमूकीमंफलमांपेगो एमजे पुरुषें मंफलनो आश्रयकर्यो तेतोबल्यानही अनेजे प्रधाननावचनअवगणीने मंफल थीबाहेररह्या तेपुरुषसर्वें बलीने नस्मनूतथया तेदेखीने मनेवैरागउपनुं तेहथीव्र तआदर्युं एकारणहतुं तेतुजनेसंजलाव्युं.

एहवासाधुना वचनसांजलीने लीधोछेपरमार्थजेणे एहवोअकलंककुमर हर्षवंत थको तिहांथीउठीने बीजामुनिराजने सन्मुखजाताथकां मार्गमांमनेपुछ्युंजे हेधनवा हन आसाधुनावचनथी तेंकांइपणजाणवायेंजाण्युं मेंकह्युंहुंतो कांइपणतत्वपाम्योन थी तेवारेंअकलंकेंकह्युं हेमित्र हुंएहनोनावार्थकहुंछुं तेतुंसांजल.

आसंसाररूपनगर तेहांमोहमयरात्रजाणवी तेमांराग अने द्वेषनापरिणामरूप अग्निजाणवी वलीतामसनावरूप धुमाफाजाणवा रजोगुणस्वनावरूप अग्निनीज्वा लानो समूहजाणवो सोलकषायरूप बालकोजाणवा माठिलेश्यारूप स्त्रीउजाणवी अने अव्रति अज्ञान सत्ववर्जितपणुं तेरूप पांगला आंधला नपुंसकरूपप्राणीजाण

ने समुद्रमांकेमनाख्युं आचार्येकह्युंजे धनशेखरतो स्वनावेसारोजछे पण एह्ना सा गर अनेमैथुन एबेकुमित्रना परवशपणाथकी एएेएअकार्यआदर्युं तेजेवारें शुद्धचि त्तनामानगरनो शुनाशयनामेराजा तेह्नी प्रधानतानामेराणीनी कुक्षीनेविषे निर्जो न्नता अने ब्रह्मव्रतीनामे बेकन्याओछे तेह्नेपरणसे तेवारें सागर अने मैथुन एबे कुमित्रोनासंगथीमूकासे.

एमसांजलीने वलीकुमरेंपुछयुंजे हेमहाराज एह्वा विचित्रप्रकारनाजीवह्येयछे तेह्नुंसुंकारण तेसांजली गुरुबोल्योजे हेराजन् कर्मपरिणामनामेराजा तेह्नीकालप रिणतिनामेराणीछे तेबेहुने यद्यपि आसर्वेजगतते संतानरूपछे परंतु अविवेकादि क प्रधानोएमजिने तेस्त्रीनरतारबन्नेजणने दुर्जन दृष्टिदोषनो प्रवादनलागेतेमाटे निर्बीज वंध्याना प्रवादनुंप्रवर्त्तनकर्युंछे.

हवेएकदिवसें सर्वलोकनेहितकरनार यथार्थबोलनारा समस्तवस्तुना तत्वनाजाण एह्वासिद्धांतनामेआचार्यने अप्रबोधनामाशिष्यें सर्व जीवोनेसुखदुःखनी प्राप्तिनुंकार णपुछयुं तेवारेंगुरुयेंकह्युंजे हेवत्सतुं सांजल जेजीव ज्ञानादिक शक्तियेंसहित चित्तवृत्ति नामे अटवीनेविषे पोतानाजावनी साम्राज्यलक्ष्मीनेजोगवे तेह्ने चारित्रधर्मनामे राजा हितनोंकरनारथाय तेमाटेतेजीवनी सात्विकमानसनामानगर अने जैनपुरादि कनगरें वशवर्त्तिछे वली एक यतिधर्म अनेबीजोगृहस्थधर्म एबेचारित्रधर्मराजाना पुत्रोछे तथा एकसम्यक्दर्शन बीजो सद्बोध एबेप्रधानछे तथा सत्य अने संतो षादिक चारित्रधर्मराजाना सुनटोछे इत्यादिक जेकांइ परिवारछे तेसर्व तेसंसारो जीवने हितनुंछकथायछे.

हवेतिहां घातिकर्म अनेविषयकषायादिकचोर तथाप्रमादरूपधूर्त्ततेपणवशेछे तेमां कर्मपरिणाम अनेमोह एबेलुंटनारोनानायकोछे तेमणे एकदिवसें विचार्युंजे आपणा पराक्रमआगल संसारीजीवते सीगणतिमां तथा चारित्रधर्मराजातेपण सीगणतिमांछे एमविचारी संसारीजीवने पोतानास्वनावरूप महोटाइनावथकी विकलरूपकरीने चि त्तवृत्तिनामेअटवीप्रतें पोतानेवशकरी तिहां राजसचित्तादिकनगरो वसावीने तेनगरो नोमहामोहपोतेराजाथयो अनेकर्मपरिणामराजायेंतो राज्यनोनारपोतानान्नाइनेविषे थापीने पोते संसारीजीवोनोकरेलुंनाटक तेजोवाने तत्पररह्योछे पणकर्मपरिणामरा जायेंतोसंसारीजीव तथाचारित्रधर्म राजादिकोते निश्चेंकरीबलवंतछे एह्वीआशंकाक रीनेकोइकोइवखते संसारीजीव अने चारित्रधर्मराजादिकोने अनुकूलपणेप्रवर्त्ते पण मोहराजातो गर्वेधमधम्योथको पोताना अहंकारेकरी जगत्नेपण तृणनीपरेमानेछे

कुमर जातिस्मरण ज्ञानपाम्यो पछेकह्युंहे नाइपनवाहन एउपदेशसांजलीने तेंकांइ एनोन्नावार्थजाएयुं तेवारेंमेंकह्युं हुंतोकांइपण जावार्थसमज्योनही.

तेवारें अकलंककहेछे सांजल हेजाइ संसाररूप मह्योटीमदिरानी शालाजाणवी तेमांअनंतासंसारीजीव मदिरानापीवावालाजाणवा अनेआठप्रकारना कर्मनासमूह तेरूपमदिरानाअंगजाणवा तथाकषायरूप तेमदिरानोरसजाणवो तेमां घातिकर्मनी प्रकृतिरूपमदिरा अनेआयुरूप पात्रजाणवुं तथाशरीररूप प्यालाजाणवा पछिते मदिरापीधाथकी तेप्राणी विविधप्रकारनी कुचेष्टाकरेछे एकेंद्रियादिकथी पंचेंद्रियना जवपर्यंत एकनीआदिथी मांमीने पांचविषयोलगण यथासंजवपणेसेवेछे.

हवेतिहां मद्यशालामां तेरप्रकारनालोकछे तेहनानामकहेछे १ असंव्यवहार सूक्ष्मनिगोदीनामें बीजा व्यवहार साधारणवनस्पतिरूप बादरनिगादनामें एपण सूक्ष्मवनस्पतिकाय जाणवा त्रीजा पृथ्वी अप्प तेउ वाउ अनेबादरवनस्पतिरू पजाणवा चोथाबेंइंद्रियजाणवा पांचमातेइंद्रियजाणवा छठाचौरेंद्रियजाणवा सा तमां असंज्ञीपंचेंद्रियजाणवा आठमांनारकीजाणवा नवमांसंज्ञीपंचेंद्री तिर्यंचजा णवा दसमांमनुष्यजाणवा इग्यारमांवली निःकायथीउपना चारनिकायना देवता जाणवा बारमां ब्राह्मणतेसाधुजाणवा तेरमां मदिरायेंवर्जित सिद्धनाजीवजाणवा.

इहांएसाधुते तेरप्रकारनालोकमाहेला पहेलालोकनेमांहे अनंताअनंतकालसु धी जवितव्यतानावशथकीभ्रमणकरी तेवारपछि तेहांथी निकलीने बीजादसप्र कारनालोकनेविषे अनंतोकालरही घणाप्रकारनी विटंबनाओ अनुजवीने वली तिहां थीनिकलीने बारमाजेदनेविषे चारित्रना अध्यवसायपामिने तेवारपछि एसाधुतेपोता नी शुनदशानेवशें बारमांजेदनाजीवजे साधुतेएहनेमल्या तेणेएसाधुने संसाररूपम दिरानी शालानास्वरूपने रुमीरीतेसमजावीज्ञानमार्ग तथाक्रियामार्गदेखामीने दीक्षा दीधी अनेसमजावरूप औषधनासेववाथी शेषघातिकर्मरूप मदिरानुं अजीर्णपणुंहसे एएहनोजावार्थजाणवो हेअगृहीतसंकेता तुंसांजल एरीतें जातिस्मरणज्ञानावसथकी तात्पर्यार्थजेइने अकलंककुमरें मुजनेरुडीरीतेंसमजाव्यो तोपणमेंकांइ सर्दह्योनही.

वलीत्रीजामुनिराज पासेंगया तेहनेनमस्कारकरी अकलंककुमरेंपुछ्युं जेहेस्वामि तमारावैराग्यनुंकारणमनेकहो तेवारें मुनिराजबोल्या जेअरहट्टनुंदेखवुं तेमहारुंवै राग्यनुंकारणजाणवुं एहवुंसांजलीकांइकहसितथइ फरी अकलंककुमरें तेहनोजावार्थ पुछेथके मुनिराजकहेछे हे कुमरतुंसांजल.

संसाररूप अरहट्टतिहां राग द्वेष चित्तनोजाव अनेमिथ्यात्व एचारकर्षणीजाणवा

पुरुष विटपुरुष जूवटानारमनार चोरीनाकरनार वेश्यादिक जेजोकोछे बहुलतायें इहां तेवापुरुषोनो देखाडवुंछे.

तेवारपछेकर्मपरिणामराजायें त्रीजा विमध्यमनामापुत्रने राजआप्युं तेवलीमोह राजादिकनेविषे निरंतरआसक्तछे पणकोइकोइवारें चारित्रधर्मादिकोनेपण रुडीरीतेंजा वेछे प्रकृतियेंजडकछे देवनीबुद्धियेंकरी सर्वदेवनेसेवे वलीसरलपणेदानादिककरेछे पुण्य अनेपाप तथापरलोकादिकमानेछे धर्मनेवांछेछे पापथकीडरतोरहेछे तोपणमिथ्यात्वद र्शननामा प्रधानादिकोथी ठगाणोथको पोतानेजोगववानी जूमिमांप्रवेशकरी शकतोन थी एपुत्रनेसामान्यगुणवंतदेखीने कर्मपरिणामराजा किवारेक पशुसंस्थाननगरे तिर्यं चमांमोकले वलिकेवारेक मानवावासें मनुष्यमांमोकले केवारेक विबुधालयनामान गरें देवतामांमोकले एबाहिरलोकनेविषे राजाओ क्षत्रियो ब्राह्मणो अथवाबीजा पणजे प्रकृतियेंजडकहोय धर्मार्थीहोय पणसद्गुरुनो संयोगपाम्यानथी तथासर्वज्ञदे वनो आगमलेशमात्रनथीजाण्यो वलीसद्गुरुनेसंयोगेंपण मावाग्रहनाग्रस्तपणाथकी यथास्थितधर्मना तत्वोप्रतें असर्दहताथका सावद्यदान चांद्रायणव्रत होम यज्ञादि क कर्म धर्मबुद्धियेंकरीकरे इत्यादिक पुरुषानोइहां बहुलतायेंदेखाडवुंछे.

पछेकर्मपरिणामराजायें चोथो मध्यमनामापुत्रनेराजाकीधो तेवलीप्रकृतियेंकरी हि तकारक विवेकनोजाण अने चारित्रधर्मराजादिकोने पोतानाहितकारीजाणी ते होने आगेवानकरी मोहादिकोने शत्रुसरिखाजाणीने कांइकपीडेछे तेवारें मोहादि को कांइकम्लानमुखवंतथया अने चारित्रधर्मादिको उल्लासवंतथया जोपण धर्म अ र्थ अने कामनेसेवेछे तोपण धर्मनेजबहुमानकरेछे मोक्षनेजपरमार्थपणुंजाणेछे ते हवीशक्तिनाअजावेंपण यथाशक्तियें मोहादिकोप्रतें ताडनाकरेछे इंद्रियनासमूहने धीरेधीरेदमेछे कषायादिकोनुं जीतवापणुंकरेछे तेहांसिद्धांतनामा महोटोउत्तमपुरुष सर्वराजनीस्थितिनोजाणछे तेहनेपूछी निर्णयकरीने केटलीक पोतानीराज्यनीस्थि तिमां प्रवर्त्तमानथयोछे पराक्रमरूपवीर्यनी शिक्षाने अनुसारेंकरी एपुरुषें केट लीकपोतानी आत्मसत्तारूप जोगववायोग्यपृथ्वीपामिने कांइकपोतानाराज्यमां सुखरूपवर्णिकाने वशकरी एरीतेंते मध्यमगुणेकरी कांइकसंतुष्टमानछे तेहने कर्म परिणामराजायें विबुधालयनगरें देवतानीगतिमां मोकल्यो इहांसम्यक्दृष्टीश्रावको जेणेयथाशक्तियें व्रतोनेअंगीकारकस्याछे एहवारूडापुरुषोनुं देखाडवुंछे.

हवेकर्मपरिणामराजायें पांचमा उत्तमनामेंपुत्रने राज्यदीधुं तेस्वजावथकीज मो हादिकोनोध्वंसकरनारोछे अनेचारित्रधर्मादिकोनो पक्षपातीछे पोतानुंराज्य पाल

एकांइक अजीर्णथीउपनुं संन्निपातछे तेमाटेमहारुंकहेलुं औषधसेवतोरहेजे एहवुं गुरुनुंवचनसांजली वैरागपामिने मेंव्रतअंगिकारकस्युं एहवुंसाधुना मुखथीसांजलीने तेहनोजावार्थ अकलंककुमर मुजने कहेवालागो.

संसाररूपमठ तेमांलोखदनाखीजानीपरें माहोमांहेअसंबंधेंमिलेला सर्वजीव तेरूपछोकरा तेमां १ प्रमाद २ अविरति ३ मिथ्यात्व ४ कषाय ५ योगएनामे एपांच मनुष्य कुटुंबीजाणवा जोएपांचेवैरीजूतछे तोहेपणमोहनावशथकी जीवएहने हितकारीकरीमानेछे तेहनुंदीधुंजे कर्मरूपजोजन तेणेकरी स्वजावेंविकलकस्या अने अनाजिगृहीतमिथ्यात्व तेरूपसन्निपातें पीमाणाथकां एकेंड्रियादिकनेविषें भ्रमणकरवुंते विविधप्रकारनी चेष्टाजाणवी.

केटलाकवली मागेआजिनिवेशक मिथ्यात्वनाउन्मादे पीड्याथका उत्सूत्रप्ररूपणारूप घर्घरादिकेंपीडायछे एहवाप्रकारनुंदुं तेहने जवितव्यतानावशथकी गुरुरूप वैद्य तेणेसम्यक्रूप औषधनाप्रयोगेंकरी सचेतनावंतकरीने सर्वप्राणीना कर्मनाउन्मादनुं यथार्थस्वरूपकह्युं वलीकर्मरूपअजीर्णनो नाशकरनार एहवुं संयमरूप औषधदीधुं एजावार्थअकलंके कह्युंते सांजलीने मेंतेमांथीकांइपण अवधार्युंनही.

हवेपांचमांमुनीने आगलजइनमस्कारकरीने अकलंकेवैरागनुंकारणपुब्युं तेवारेंते मुनि कहेछे जेहेराजपुत्र सांजल गुरुनीकहेली विचित्रप्रकारनी देखान्दवामयीएककथा सांजलीने हुंवैराग्यपाम्यो तेथीमें व्रतग्रहणकस्युं तेकथाहुंतुजनेकहुंछुं.

वसंतपुरनगरनारहेवासी १ चारू २ योग्य ३ हितज्ञ ४ मूढनामेंचारवाणिया हता तेउःखेंतरवायोग्यसमुड्ने रूमीपरेंओलंगीने रत्नउपार्जनकरवानेअर्थें रत्नद्वीपप्रतेंपाम्या तिहांचारूतोपोतें रत्नपरीक्षानेविषे निपुणहतो निरंतरउद्योगेकरीनेघणा बहुमूला रत्नने उपार्जनकरवालागो अनेजे योग्यनामावाणियोहतो तेतो रत्ननीपरीक्षाप्रतें जाणतोथकोपण क्रीडानोविनोदपणुं तेहनाउपर आसक्तथको घणोकालतेहमांज क्षेपकरतोहतो तेहथी थोडाकरत्नोउपार्जनकरतोहतो अनेहितज्ञनामा त्रीजोवाणीयोतेतो पोतेरत्ननीपरीक्षानजाणे तथावलीक्रीडामां आसक्तथको थोडोजउद्यमकरे पणपरीक्षानजाणे तेहथी धुतारादिकेंकरी उगाणोथको केटलाककाचनेज मणिरत्ननीबुद्धियेंकरी लेवालागो अनेचोथोजे मूढनामेंवाणियोहतो तेतोपोते परीक्षापणबिलकुल करीशकेनही वलीव्यापाररूप उद्यमपणकरेनही केवलधूतारादिकोसाथें जेलोथको कालगमावतोहतो.

हवेचारूयेंतो थोडाकालमां घणारत्नउपार्जनकरवानी प्रेरणापाम्योथको कौतुक

पछेतेओनेराख्याथी सुप्रसन्नभूतथयाथी तेहनेविषे चारित्रधर्मादिकसांगिकराजाओ पुष्टीभूतथयाछे अनेमोहादिक चोरोना जेसमुदायते डुर्बलथयाछे.

वलीतिहांथी आगलेंजाइश तेवारेंतेद्विजमहाइहमांहेथीनिकलेली एकधारणारूप महा नदीआवशे तेहनेस्थिरतारूप सुखनोकरनार वाहण तेरूपआसनबेठेथके अ तिशीघ्रगतियेंकरी कोइकर्मादिकतनेहणेनही तेमाटे सावधानथयीने उलंघवी तेह थीआगलवली एकधर्मध्यान एहवेनामे अत्यंतसरल दंभोदेखीश तेदंभेंकरी आगल चालीसतेवारें बीजेंकरीसहित योगनामें महापंथमार्गपामिश तेमार्गेंथयीने आगल जताथकां तुजने मोहादिकवैरीओ सर्वेअंतरिक्षथाशे अने समस्तचारित्रधर्मादिकमि त्रोते प्रकर्षेकरीबलवंतथाशे तेहथी समस्तराज्यभूमि प्रगटथाशे वलीआगल शुक्ल ध्याननामेदंभोआवशे तिहांजताथकां तुजनेनिर्मल केवलज्ञानरूप प्रकाशथाशे ते पछे बीजवर्जितयोगनामे महोटोमार्गपामिने विषमशत्रुने समाकरवानेअर्थे जेकेव लीसमुद्घातनामे कर्तव्य तेप्रयत्नविशेषेंकरी मन वचन अने कायरूपयोगनामे त्रण मागवैतालोनेहणवा तेवारपछि शैलेसीनामेश्रेणीने आश्रयीने निवृत्तिनामेनगरनें विषेजावुं एसर्वेव्यतिकरो उदासीनतानामे राजमार्गने नही मूकवाथीज तुजनेथसे.

वलीतिहांजता यथावस्थित सर्वपदार्थने अर्थेकरिसहित देखाडवावाली एहवीस मतानामें योगनालिकाआवशे तेप्रतेंदृष्टीथापेथके तुजनेसर्वपदार्थनुंज्ञानथाशे तेहथी पगेंपगें पोतानीमेलेज यथायोग्यकार्यनेजाणीश इत्यादिक सिद्धांतनीकहि अवधार वायोग्य हितशिक्षा तेहिज शिक्षानीरीतें प्रवर्त्तताथकां अनुक्रमें मोहादिक शत्रुनेह णी तथाकर्मपरिणामनामें पितानेपणजीतिने मोक्षरूपनगरप्रतें गयाथकां पोतानाआ त्मस्वरूपरूप राज्यनीसारभूत शाश्वत आनंदरूपसुखप्रतेंभोगवी इहांविशेषेंकरी संयम नाआराधकसाधु जेणेमोक्षमांजवांछांबांधीछे एहवा गणधरादिकनुंदेखाडवुंछे.

हवेछठोवरिष्ठनामा कर्मपरिणामनोपुत्र राजाथयो तेहनाआववाथी मोहादिको हतपराक्रमवंतथया वली चारित्रधर्मादिको हर्षवंतथया जोपण उत्तमनीपरेंज एहनो सर्ववृत्तांतछे तोपणएटलोविशेषछेजे एहनेप्रथमथीज सिद्धांतनीसाथें परिचयहतोमाटे एसिद्धांतने पुछयाविनाज समस्तराज्यनी स्थितिने साधतोआव्यो वलीएहनागुणेकरी खेंचाणाथका बहिरंगजे गणधरनामेराजाते एनापगनीसेवाकरवानाभावनेपामे तेग णधरने एउपकारीजाणीने एवरिष्ठनामाराजाते सिद्धांतनेप्ररूपेछे पछेतेगणधरो सिद्धां तप्रतेंपामिने पोतानीशक्तियेंकरी तेहना अंगोपांगने रुडीरीतेरचेछे यद्यपिएसिद्धांत

तोपदेशआपनारउपरें वेषधरे तेओने कर्मपरिणामनामेराजाते दुःखेंतरवायोग्य संसारसमुद्रमांनाखेछे.

जोपणएहवाजीवोने किवारेक कोइकरीतें द्रव्यसाधुपणुं अथवा द्रव्यश्रावकप णुं उपजे तोपण तत्वनीसद्दहणानहोय माटेसमस्तप्रकारें उवानिंदियका मोक्ष रूपपुरुषार्थनेनसाधे एहवोजावार्थलीजीने मेंकांइकपरमार्थलीधो पछेक्षणमात्र ते हना आस्वादने आस्वादनकरीने वली शून्यचित्तनीपरेंबेठो.

तेवारपछिअमें बुधमुनीश्वरपाशेजयी नमस्कारकरीतेमने अकलंककुमरें वैराग्य पामवानुं कारणपुछयुं तेवारेंमुनियेंकह्युं हाटनीश्रेणीनुंदेखवुं तेहिजमाहारुं वैराग्यनुं कारणछे फरीअकलंककुमरें तेहनोजावार्थपुछयो तेवारेंमुनिकहेवालागा सांजलहेम हाजाग्यवंतपुरुष.

संसाररूपनगरमां जन्मनीपरंपरारूप हाटनीश्रेणीजाणवी तेमांजवजंतुरूप वा णीयोजाणवो वलीसुखअने दुःखनाजेदेंकरी जूदाजूदा विचित्रप्रकारना क्रियाणाजा णवा पुन्यअने पापरूपक्रियाते क्रयवक्रयपणुंजाणियें एम पुन्यपापरूप क्रयवक्रय करतेथके केटलाकलाजनेपामेछे केटलाकजेटलो गांठमांद्रव्यछेतेटलोजराखेछे लाज खोटपामतानथी अने केटलाकहारीजायछे तेनगरनोमाहामोहनामे रखवालोछे अनेकामक्रोधादिक तेहनासेवकछे तेकारणविनापण लोकोनेविटंबनाकरेछे.

हुंपणतिहांनोज रेवासीवाणीयोहतो तेएकदिवशें एमहारोगुरु तेणेसम्यकरूप योगाजंनने प्रयोगेंकरी मार्गदेखाडीने मने पोतानामठनेविषे लाव्यो अनेहाटनीश्रे णीनुं असारपणुंमनेजाणव्युं पछे अनंतसुखनाघरसरिखी मोक्षरूपमंदिरेंपहोचाड नारी एहवीदीक्षामने गुरुयेंआपीने कह्युंजे पंचेंद्रियरूप गोखनीजारीने रुडीपरेंराख वाथी एदीक्षाते तुजने महाआनंदनी करनारीथाशे माटेएदीक्षाते जेम कषायरूप उंदरेकरी मंसायनही अने नवनोकषायरूप विछियेंकरीपीडायनही तथाआहार संज्ञा दिकरूप बिलाडीयेंकरी एहनोपराजवनथाय वली रागद्वेषरूपसुअरेंकरी ( सुकरेंकरी ) उपद्रवनथाय महामोहरूप जंगलीबिलाडो ( जंगबिलाडो ) तेणेकरीनखवाय परिसह रूप दांसा अनेमछर तेणेकरीनदंसाय क्षुधानिद्रायादिक मांकण तेणेकरीपीडायन ही चिंतारूपगरोलियेंकरी व्याकुलवंतनथाय प्रमादरूपसरडायेंकरी पराजवनपामें वली अविरतिरूपजुं ( लीख ) तेणेकरी विटंबनानपामे तथा मिथ्यात्वरूपतिमिरेंकरी आंधलीनथाय एहवीरीतें यत्नाकरीएदीक्षानेतुंराखजे

एपूर्वेंकह्याजेउपद्रव तेउपद्रववंतथकोजेहोयते वेदनायेंव्याकुलवंतथयी पंचेंद्रि

प गुटिकानाक्षयथकी नवितव्यतायें बीजीगुटिकाखवरावीने पापिष्ठनिवासनामानग रना सातमां पाडानेविषे मोकल्यो तिहांघणाडुःखोअनुनवीने तेंत्रीससागरोपमायु पूरणकरी तिहांथीनिकलीने वली अनंतोकालक्षुद्री एकेंद्रियादिक नगरमांनम्यो ति हांअनंताडुःखनोगव्या वलीपण माहाराउपर नवितव्यता कांइकसुप्रसन्नथयी पुण्यो दयनामे मित्रआपीने मनुष्यगतिनामा नगरियेंजवानो आदेशकर्यो मेंपणतेहनास न्मुखें एवातअंगिकारकरिने मनुष्यगतिनगरियेंचालवामांडयुं एरीतें लोननुंफल मै थुननुंफल चक्षुइंद्रियादिकनेविषे आसक्तनुंफल रुडेप्रकारेंजाणीने बुद्धिवंतपुरुषें एहनो जयकरवानेदृढपणे प्रवर्त्तवुं.

एरीतेंउपमिति नवप्रपंच कथाद्वारनेविषे लोन मैथुन चक्षु इंद्रियनोविपाकवर्णन एहवेनामें चोथो अधिकारसंपूर्णथयो

---

हवेवली सदागम नव्यपुरुष प्रज्ञाविशालानेसमक्ष संसारीजीव अगृहीतसंके ताने संबोधनकरीकहेले के हेअगृहीतसंकेता सांनल मानवावासनामा नगरनेविषे कर्मरूपगुटिकानुंदेवुं तेनाप्रयोगेंकरीने साल्हादनामानगरें जीमूतनामेराजानी ली लावतीनामे राणीनी कुक्षीनेविषे नवितव्यतायें मुजनेअवतार्यो तिहांसंपूर्णनवमास पूरे थयेथके पुण्योदयेंकरी सहितहुंजन्म्यो पितायेंमहोटोमहोत्सवकरी घनवाहन ए हवुंमारुंनामपाडयुं. हवेजीमूतनामेराजाने नारदनामान्हानोनाइले तेहनीपद्मावती स्त्रीयेंपण माराजन्मनाअवसरेंज पुत्रनेजन्मआप्यो तेहनुंनाम अकलंकदीधुं पलेअ मेंबेहुनाइ अनुक्रमें वधताथका आठवर्षनाथया तेवारें कलाचार्यनीपासें समस्त शास्त्रनीकला नण्या पलेअनुक्रमे यौवनपाम्या.

हवेअकलंकतो हलुकर्मीपणाथकी प्रकृतियेंदयालु क्षमा सत्य संतोषादिकेंयुक्त परउपकारी गुणीनोरागी इत्यादिक अनेकगुणेकरीसहित हतो अनेंहुंतो स्नेहव र्जित सत्वेकरीरहित पारकाछिद्रनोजोनार एरीतेंनानाप्रकारना दोषनोआश्रयनूतह तो तोपणअकलंकते माहाराउपर घणोविशेष स्नेहराखतोहतो.

एकदिवसेंअमें नंदनवननेविषे क्रीडाकरवागयाहता तिहांएक जैनप्रासाद देखी मध्यानसमयें बन्नेजणायें देवयात्राकरी तेवारपलिबाहरमंमपेंआव्या तिहां जेणेअष्टमतिथीना उपवासकर्याले एहवाअनेकसाधुओ अमेंदीठा तेसर्वे जूदाजू दाबेसीनेसिद्धांतनी सिझायध्यानकरताहता एहवासाधुओजोइ अकलंककुमरें तेम नेनमस्कारकरी एकसाधुनेपासें धर्मसांनलवानेअर्थेबेठो अनेंहुंपण अकलंकना अ

पमाकडोपण उपद्रववर्जित शुक्लध्यानरूप चंदननेवांटणेकरी कर्मरूपरोगने नाशप माडे पछेसुखेकरी उंचापगथीआउपरसीघ्रपणेचडेछे तेमाटेएकहेलामार्गेंकरी मनरूप मरकटनेयत्नेकरी उंचपदप्रते पामतोथको तेहनीसाथेंतुंपण तेस्थानकप्रते आरोहिस.

तेवारपछे तेमनरूपमर्कट तथातेवानरानायूथनेवली तिहांजमूकीने शैलसीकरणनामें तेंकडेकरीतेंकीने अनंतआनंदमय शिवालयनामे मठमांजइयें एहवोगुरुयेंमने मार्गकह्योछे माटेहमणाहुं मनरूपमर्कटनो राखवुंकरुंछुं एहवुंसाधुपासेथी सांभलीने अकलंककुमरें मने अनुग्रहबुद्धियेंकरी रूडीरीतें तेहनोभावार्थजणाव्यो हवेएवखतेजेथयुंते हेअगृहीतसंकेतातुं उपयोगदेइने सावधानथइ सांभल.

पूर्वेंवामदेवनाभवनेविषे बुद्धनामाआचार्यना चरित्रमांहें बुद्धिनापुत्र विचारें कह्युंहतुंके संयमनेघातकरवाना वैरथकी मोहराजा अने चारित्रधर्मराजा ए बेहुनेयुद्ध थयुं तेवारपछे मोहराजायें चारित्रधर्मराजाने पराभव्योतेथी चारित्रधर्मराजानाशीने जैनपुरमांजइबेठो पछे पोतानापराजयपणाथी दुःखपामीने चारित्रधर्मराजानी साथें सद्बोधमंत्रीयें विचारकरवामांडयुंजे हवेआपणने शोउपायकरवो पछे पक्कोविचारकरी सद्बोधनामा प्रधानबोल्योजे हेस्वामि संसारीजीवजेछे ते आपणो स्वामीछे तेजिहांसुधी आपणाथीदूरछे तिहांसुधीशत्रुओ आपणने पीडाकरशे पण तमेंकांइविषादकरशोनही केमके हमणाआचित्तवृत्तिनामाजे अटवीछे तेघणीस्वछदे स्वायछे माटेआपणो स्वामीपणहवे इहांथीनजीकजहशे एमजणायछे.

तोहवेकर्मपरिणामनामेराजानेपुछी कोइकमनुष्य तेहनेसन्मुखमोकलियें केमके तेहनीपासेंघणो जावा आववादिकना परिचयेंकरी तेआपणने रुडीरीतेंउलखसे एहवोसद्बोधनुंवचन अंगीकारकरीने चारित्रधर्मनामें राजायेंकह्युंके आपणा एकसम्यक्दर्शन बीजोसदागम नामा महोटोउत्तमप्रधान एबेप्रधान घणानीतिमांनिपुण रह्याछे तेमांप्रथमसदागमनेज मूकियें.

जोसदागमनावचनेकरी आपणाविषे रागवंतथाय तोपछेसम्यक्तनो महोटोछेते हनेपणमूकवो पणहालतो सदागमनेज तिहांमोकलवोयोग्यछे एहीवोविचारकरी कर्मपरिणामनामे राजानेपुछीने सुजने घनवाहननाभवमां रह्योजाणने सदागमने महारापासेंमूक्यो पछेतेसदागमआवीने महारापासेरह्यो.

हवेसांभलहेभद्रे सदागमना सान्निध्यपणाना अनुभावथकी तेछठासाधुनी कहेलीवातसांभलीने अकलंकेमने तेहनोभावार्थकह्यो तेभावार्थरुडीरीतें जाणीनेहुं श्रुतज्ञानपाम्यो तेथीघणुंहर्षवंतथयो पछे अकलंककुमरें सुजनेसदागमने आश्रितज्ञा

वा इंद्रिओरूपंचोरजाणवा तेसुकृतरूपद्रव्यनेमुसाडेछे पाखंम्मादिकोरूप धूर्त्तजाण वा तिहांतीर्थंकररूप प्रधानजाणवो ते तीर्थरूपमंम्फलबनावी देशनारूप शब्देकरी लोकोने बोलाविने तीर्थरूपमंम्फलमां बेसवानो आग्रहकरेछे तेमांकेटलाएक कल्या णनावांछनार एहवा साधु साधवी श्रावक श्राविकारूप तेतो तीर्थरूपमंम्फलने आ श्रयीने अग्नियेंकरीरहितथायछे अनेबीजातो मोहनो उन्माद तेहनापरवशपणाथ की रागरूपअग्निने कामभोगादिक घृतनीधारायेंकरी सिंचेछे तेवापुरुषरागरूप अग्नि येंकरी भस्मभूतथायछे.

एहवाअकलंकना वचनसांभलीने मेंतेहनेकह्युंहेमित्र मुनितो वांकीयुक्तियेंकरीक हेछे तेताहराकहेवाप्रमाणेजहशे एमतें शीरीतेंजाण्युं तेवारेंअकलंकेंकह्युं हेभाइ मु नितोरुडीरीतेंकहेछे पणतुं अज्ञाननाबलथकी एहनोभावार्थजाणतोनथी इत्यादिक वात करताथका बीजामुनीने पासेंगया तेहनेनमस्कारकरीने अकलंके वैरागपाम वानुं कारणपुछयुं तेसांभलीमुनिराज बोल्या हेकुमर महारावैरागनुंकारण सांभल.

हुंमदिराशालामां मदिरानोपानकरतोहतो तेहांमने एकब्राह्मणें समजाव्योथको वैरागपामिने व्रतआदर्युं एमसांभली अकलंकेकह्युंजेहेभगवान एतमारोव्यतिकर अमनेविस्तारसहितकहो तेवारेंमुनिकहेछे.

अनंतामदिरायेंकरी संकीर्ण एहवी कामांधनामेंशाला तेविचित्रप्रकारना मदिरा येंकरीपरिपूर्ण तेमांलोकमदिरापिधेथके केटलाक पृथ्वीयेंलोटेछे केटलाकवलीजीभे करी कांइक आस्वादनकरेछे केटलाक नाशिकायेंकरी कांइकसुंगेछे केटलाकनेत्रेकरी कांइकदेखेछे केटलाकवलीकानेकरी कांइकसांभलेछे एमकेटलाक एकजविषयप्रतेंसे वेछे केटलाकवली बे त्रण चार अथवाकेटलाकवली पांचेविषयोने समकालेंसेवेछे एरीतेंते मदिरायें विटंबितथका केटलाकस्त्रीनेकंठेवलगेछे केटलाकनाचेछे केटलाक हसेछे केटलाककूदेछे एमविचित्रप्रकारनी चेष्टाकरताथका भमताहता.

तेमांहुंपण विविधप्रकारनीचेष्टाकरतोहतो मदिरानापरवशपणाथी चोरीकरुं प रस्त्रीहरण इत्यादिक अनेक अन्यायोप्रतें करतोथको विचित्रप्रकारनी कष्टरूपकद र्थना अनुभवतोहतो एकदिवसें ब्राह्मणेमने करुणानापात्रजेवोदेखीने प्रतिबोधदी धो महोटाप्रयत्नेकरी प्रतिबोधीने ब्राह्मणकह्यो तेवारपछि अनुक्रमेंवलीहुं साधुथयो हजीपणतेमदिरानुं अजीर्णपणुं मनेविद्यमानछे पणगुरुनोकह्यो औषधसेववाथीते नाशपामसे एमहारावैरागनुं कारणछे.

एवृत्तांतमुनीनामुखथी सांभलीने वैरागनोविकस्वरपणोउपनो तेहथी अकलंक

संघनीपूजा साधर्मिनीवात्सल्यता इत्यादिकसर्वशुभकार्यमूकीने हुं केवल अर्थ अ नेकाम एबेवर्गमां लुब्धथयो एकदिवसें अकलंकादिक घणाशिष्यंकरी परवस्था श्री कोविदनामाआचार्य तिहांआव्या अकलंकना दाक्षणपणाथकी हुंवांदवानेअर्थे ति हांगयो तेवारें मोहअने परिग्रहेंकरीआसक्त तथा सदागमेंकरी वर्जित एहवो देखीने अकलंकेमने प्रतिबोधवानेअर्थें गुरुनेदेशनाविषे प्रेरितमानकस्यो तेवारें गु रुपोताना चरित्रनेकहेवेकरी सदागमनुंवर्णन करवालागा.

निश्चयभूतनामा नगरनेविषे मलनिचयनामाराजा तेहनी मलानुभूतिनामेस्त्री तेहना एककोविद अनेबीजो बालिश एहवेनामेबेपुत्रो तेहमां कोविदतो जातिस्म रण ज्ञाननाबलथकी पूर्वपरिचयवंत सदागमने भलीपरें उलखीने परमवांछित बु द्धियेंकरीसेवे तथापोतानाभाइ बालिशनेपण सदागमनागुणकहे पणतेमानेनही हवेएहोने कर्मपरिणामराजायें पूर्वभवनेविषे श्रुति(बेकान)नामे कन्यापरणावीहति.

एकदिवसें तेकन्यासंगदासेसहित एटलेसांभलवापणारूप दासजेचाकर तेणेकरी सहित मोकलीथकी स्वदेहनामापर्वतना मस्तकनामे शिखरनेविषे बेछिद्ररह्याछे तेमांते श्रुतिनामास्त्रीनेतोराखी पणसदागमनावचनथकी संगदासने अधमजाणी कोविदेंतो संगदासने दूरकस्यो पण बालिशायेंतो संगदासनेपणराख्यो तेवारपछि कोविदतो शुभ अशुभशब्दनाभेदनेविषे संतोष तथा द्वेषपणुंराखेनही अनेबालिशतो संगदा सने आसक्तथको अनिष्टशब्दउपरद्वेषराखे तथाइष्टशब्दउपरप्रीतिराखे.

एकदिवसें तुंगशिखरनामे बाह्यपर्वतनेविषे कोविद अने बालिश एबेक्रीडाकर वानेगया तिहांएकगुफामां किन्नरदेवतानायुगलनुं गीतसांभलीने कर्णेंद्रियनापरवशप णाथकी कोविदेंतेहने घणोवास्यो तोपणतेहनी शिखामणअणमानतो बालिशते सांभलवानेअर्थें गुफामांपेठो तेवारेंकिन्नरदेवताना युगलेजाण्युंजे अमारेजोवानेअ र्थें एआव्यो पछेक्रोधेकरीतेदुष्ट किन्नरें बालिशनेहण्यो तेदेखीने कोविदेंतोवैराग्यपा मि सदागमनेपूछी चारित्रलीधो माटेसांभलहे धनवाहनराजा तेजहुंकोविद पो तानाआत्मस्वभावथी उपनुंजे परमसुखते सदागमनी सेवनाथीहुंपाम्यो माटे वी जापण सुखनावांछनारें सदागमनीसेवा तत्परपणेकरवी इत्यादिकगुरुनावचनथी तथा अकलंकना आग्रहथी हुंचैत्यवंदनादिक कांइकश्रुत भणीनेद्रव्यश्रावकनी क्रि याआदरी एरीतेंमुजने मार्गेस्थापीने अकलंकादिक मुनीयें शोभित एहवाकोविदना मा आचार्य बीजेस्थानकें विहार करिगया.

केटलाकदिवसपछि वली मोह तथा परिग्रहना आसक्तथी में सदागमनोत्याग

अने महामोहनामे राजाते पोतेकर्षणीनो स्वामिहलनोधणीजाणवो हवेते अरहट्टने फेरववावास्ते चारापाणी इत्यादिकें वर्जितथका सोलकषायरूप सोलबलदो निरंतरव हेछे अने तिहांहास्य शोक नयादिकते कामनाकरनारजाणवा तथा रति अरतिइत्या दिक अव्रतिजलेंरूप परिपूर्ण तेअसंयमनावेंकरी जीवितव्यरूप कुवोजाणवो तेमां जीवनासमूहरूप घटीनुंयंत्र जाणवुं तथा डष्टयोग अनेप्रमाद एबेतुंबा जाणवा अनेसंविभ्रमपणुं तथाविलासपणुं इत्यादिकएहना आराजाणवा मरणनामे पा णीनोकाढनारोजाणवो एदूरथीपण विवेकिपुरुष जाणेछे मिथ्यानिमान एहवेनामे रेंटनीकुंडीजाणवी आत्माने अज्ञानरूपजे मलिनतानाव तेजलनीग्रहणकरना री परनालिकाजाणवी क्लेशेंकरीसहितचित्त तेरूपखालजाणवी नोगनीवांछातेरूप पाणीनीनीक जाणवी जन्मनीपरंपरा तेखेत्रजाणवुं एकजन्मथी बीजुंजन्मपामवुं ते रूपकीयाराजाणवा तिहांजीवपरिणाम नामें धानतुं वावनारोपुरुषजाणवो कर्मरूप बीजजाणवुं वली असत अने अज्ञाननामेचारकते पाणीपीवरावेछे तेथकीडःखरूप धाननीपजे एहवाप्रकारना क्षेत्रमांहुंसुतोहतो तेवारेंएसूर्यसरिखामारागुरुयें मनेजा ग्रतकरीनेकह्युं जेहेअजाणतुंहिजआखेत्रथीउपनुं जे डःखरूपधान तेहनाफलनो नोगवनारथयीस तेमाटेसावधानथयीने तावमतोव एअरहट्टनास्वामिपणानो त्याग कर तेसांनलीने मनेवैराग्यउपनुं तेथीकरी मेंतेहनो ममत्वनावमूकीने व्रतआदर्युं छे एहवुंसाधुनामुखथी सांनलीनेहुंतो शून्यचित्तवंतथयो अने अकलंककुमरतो उ त्कृष्टवैरागनेपांम्यो.

वलीचोथासाधुने नमस्कारकरी तेहना वैरागनुंकारणपुछ्युं तेवारेंसाधुकहेवा लागा के जिहां अनंताछोकराओवशेछे तिहांहुंपणवशतोहतो एकदिवसें महाराकुं टुंबनूत पांचमाणस तिहांआव्या पणतेतो साक्षात् वैरीसरिखाहता पणमेंतेमने हि तनाकरनारकरीमान्या पछेएकदिवसेंते कुटुंबीपाचेंजणना आग्रहसहित सर्वेछोकरा ओने नोजनकराव्युं तेनोजननावशथकी अमेंसर्वें चैतनेकरिविकलथया पहेलानीमा फक प्रवर्त्या वलीविचित्रप्रकारनी कुचेष्टाकरवारूपजे सन्निपातते वृद्धिनावनेपाम्यो घरघरो ताप सीतादिकथया सर्वेनागलारुंधाइगया जीव्हायेंकंटकथया तेवारपछे नवितव्यतानेबलेंकरी तथाविधमाठी अवस्थावंत मुजनेदेखीने आमहात्मामहा रागुरुतेणे औषधदेइने मनेसज्जकर्यो वलीकह्युंके जेमएगरिवो विषरूपनोजनथकी सर्वेकष्टने अनुनवेछे तेमतुंपणएहवीज हालतमांहतो पणमें औषधनाबलेकरी तुजने सावधानकर्यो तेमाटे आजथीमांमीने एककुटुंबनो विश्वासकरजेनही हजीप

इव्यस्तवनाउपदेशथकी घणाइव्यनोव्यय में कर्योअनेकरुंबुं माटे कोइकउपायकरी हुंएहनेविहारकरावुं एहवुंध्यानकरी अकलंकमुनीने मेंजइकह्युंके हेस्वामि तमेंमुज ने शोकरूपकादवथी उद्धर्यो तेदानेकरी अनुग्रह्योमुजने अनेहमणा तमारोमास कल्प संपूर्णथयो माटेसुखें विहारनोकार्यकरो नहीतो गुरुअमने उलंनोदेशे एहवोमेंक ह्युं तिवारें महारीकलुषतानो अभिप्रायेंजाणीने अकलंकनामेमुनि विहारकरीगया.

तेमनागयाथीज मेंसदागमने विस्मृतकर्युं तेथी मोह अने परिग्रह पराक्रमवंत थया तेणेकरीवली तेवीजरीतें महाआरंभ महापरिग्रहमां आसक्तथयो तेसांभली ने अकलंकमुनिफरी मनेप्रतिबोधवानेअर्थें गुरुनीआज्ञामांगेथके गुरुकहेवालागाजे हे अकलंकमुनी एधनवाहनने ताराशेंकडामे उपदेशलागवानानथी जेमकानेबहिरो होयतेनाथीकोइ वातसंभलायनही तथा आंधलाने नाटकदेखाडवुंतेजेमव्यर्थथाय तेहनीपरे एहने प्रतिबोधकरवाना श्रमपण निःफलथवानोछे.

एहवुंगुरुनामुखथी सांभलीने फरीपणअकलंकनामा मुनियें मनेप्रतिबोधकरवानो उपायपुछेथकेगुरुयेंकह्युं जे सम्यक्तनामाप्रधाननी पुत्री विद्यानामाकन्याने जेवारें ए धनवाहन परणशे तेवारें मोह अने परिग्रहनेत्यजी प्रतिबोधपामवाने योग्यथाशे एकामतो कर्मपरिणामराजा अने कालपरिणति स्त्री इत्यादिकने आधीनछे माटे कालना परिपक्केथशे तोहमणाए चिंतायेंकरीसर्युं माटेहेसाधुतुं पोतानाअर्थनेसा ध्यकर एहवागुरुनावचन सांभलीने अकलंकनामामुनियें मनेउवेखीनाख्यो.

हवेसांभलहे कल्याणकारणी अगृहीतसंकेता पूर्वें रिपुंदारणना भवमां विच क्षणनामे आचार्यना चरित्रनाअवसरें चित्तवृत्तिनामें अटवियें चित्तव्याक्षेपनामा मंमपनेविषे रह्युंजे मोहराजानुं सैन्य तेसमस्तप्रकारेंविमर्श अने प्रकर्षे वर्णव्युंह तुं तेसर्वसैन्यआवीने महारेपाशेंरह्युं तेवारपछि महामूढताना अनुभवथी हुंसंसा रनेविषेज आसक्तथयो अने मिथ्यादर्शनना वशथकी धर्मबुद्धियेंकरी पापकर्मकरुं वांछित शब्दरूपादिक विषयनेविषे हुंरागीथयो अनेअवांछितपदार्थउपर द्वेषधरुं त था अभिमानगर्वअने हर्ष तथाविषादादिको पण पोतपोताना विषयनेविषें वीर्य फोरववालागा शोलेकषायघणादीप्तथया इष्टाभिप्रायनामे राजानामोकलेला आ र्त्तध्यान रौद्रध्यान ते निरंतर एकठेकाणें समाश्लिष्टपणेरह्या ज्ञानावर्णादिक सातेराजाओ पराक्रमें वध्याथका व्यापीरह्यातेवारें कामदेवपण रतिविषयनो अभिलाष अने भोगतृष्णापंचेंद्रियादिक परिवारेंसहित मनेघणीविटंबनाकरे ते हनावशथकी में बलात्कारें परस्त्रीओनेग्रहणकरी तीव्राभिलाषेंकरी पांचेविषयसेव्या

दिकनी आसक्तिनावमूकीने आर्जवरूप उद्यमकस्यो तेणेतोकेटलेककालें रत्नाढग लाउपार्जनकरीने महानंदनगरेंजयीने सुखनोगववालागो.

वलीयोग्यनामाबीजोवाणियो तेणेपणरत्नतो मेलव्यापण क्रीमादिकमांगमाव्या फरीचारुनाकहेवाउपरथी सारीपठेव्यापारनो उद्यमकरी रत्नपेदाकरी तेपणमहानं दनगरेपहोतो अनेहितज्ञेपण घणाककालसुधीतो कांचमणिनेसंग्रह्या पणअंतेंकां चनुंस्वरूपजाणवाथी अणकरवायोग्यकार्य मेंकखुंएमविचारी तेणेकरी खेदवंतथ योथको चारूपासेथीकोइकरीतें रत्ननीपरीक्षासीखीने वलीमहोटोउद्यमकरी रत्नउपा र्जनकरीने महानंदनगरेजयी पहोतो तिहांसुखनोगववालागो.

अनेमूढनामा चोथोवाणीयोतो धुताराढिकोनीसोबतमां आसक्तथयी चारूनीहि तशिक्षाने नमानतोथको विचित्रप्रकारना अकार्यकरवालागो तेहनेराजायें घणीवि टंबनाओकरी जेहनोपारपामियेंनही एहवासमुद्रमांहेनाख्यो तेहथीघणाकालसुधी दुःखनोनोगवनारथयो एहवीसाधुनीकहेली कथासांजलीने अकलंकमनेकहेवाला गोजे हेनाइघनवाहन एकथानोजावार्थसांजल.

सूक्ष्मनिगोदरूप वसंतपुरनगरजाणवुं तिहांविचित्रप्रकारनी नवितव्यतायें यथा थैनामें चारप्रकारनाजीवोकस्या तेचारवाणीआजाणवा अनेसंसारनोविस्तारतेरूप स मुद्रजाणवो अनेमनुष्यनवरूप रत्नद्वीपजाणवुं नानाप्रकारनाविषयते कौतुकोनास्था नकजाणवा तेमांधूतारारूप कुतीर्थजाणवा अनेकुधर्मेरूपकांचमणीजाणवा अनेत त्वज्ञानते रत्ननीपरीक्षाजाणवी वलीज्ञानदर्शनचारित्रादिकोने जिनोक्तधर्मरूप वाह णजाणवुं अने मोक्षरूपनगरते महानंदनगरजाणवुं वलीकर्मपरिणामतेराजाजाणवो तेमां चारुनामेव्यापारीतेरूप स्थानकवंतसाधुजाणवा ते तत्वज्ञानेकरी ज्ञानादिकर त्नउपजावे अनेजिनधर्मना आश्रयथकी मोक्षप्रतेपामे तेमज योग्यनामाव्यापारी रूप स्थानकवंत ते श्रावकजाणवा तेविषयप्रमादादिकनेविषे आसक्तछे पणसाधुने वचनेकरी तत्वज्ञानपामि विषयादिकनो आसंगोमूकीने महाआनंदनगरनेपामेछे.

अनेजेनद्रकपुरुषो तेतोहितज्ञरूप स्थानकवंतजाणवाते विषयादिकें आसक्त थका किवारेंक धर्मरूपउद्यमने कोइकरीतेंपामे पणकुतीर्थियेंठग्याथका तत्वज्ञान थीविकलथका माठाधर्मनेउपजावी अणकरवायोग्यकार्यनाकरनारथका कोइवारेंपण साधुनेवचनेकरी तत्वज्ञानपामीने घणेकालेंपणपोताना अर्थनेसाधेछे तथावली अ नव्यजीवो अने बहुलनविजीवोते मूढस्थानकियाजाणवा तेकेवल विषयादिक नेविषे आसक्त व्यसनादिकमां तत्परहोय तेणेकरी शेकडागमे अकार्यकरे अने हि

एरीतें आववाजाववानी परंपरायेंकरी कांइकमहारी चित्तवृत्तिनामे अटवीनिमे लथयी तेवारपछिपोतानुं अवसरदेखी चारित्रधर्मनामेंराजा तथा सद्बोधादिकने पूछीने सम्यक्दर्शननामें प्रधान महारापासेंआववामाटे सद्बोधमंत्रीनी विद्यानामें कन्यानेसाथें लेइ समययोग्यताजाणीने हुंजइश एहवोविचारकरीनेरह्यो.

एहवामांहुं जनमंदिरपुरनेविषे आनंदनंदननोपुत्र वैरोचननामेंथयो यौवनअवस्थामां धर्मघोषआचार्यनी देशनासांजलीने सदागमनो परिचयकस्यो तेणेकरी जीवअजीवादिक तत्वनेवीर्योल्लासेंकरी जाण्या तेथी मनेकर्मपरिणामराजायें अपूर्वकरणनामें कुहाडोदीधो तेकुहाडेकरी कर्मनीगांठछेदीने सम्यक्दर्शननामा प्रधाननेजोयुं तेहनादर्शनथी मने समस्तसंसारमां पूर्वेकोइवारेंपण अनुजव्युंहतुंनही एहवो सम्यक्तप्रगटयो तेथी में कोइकलोकोत्तर प्रमोदेकरी शुद्धदेव शुद्धगुरु अने शुद्धधर्मप्रते साक्षात् उलख्या तेणेकरी मोहादिकनाशीगया.

तेवारेंमें श्रावकधर्म अंगीकारकरीने श्रावकनाकेटलाक व्रतग्रहणकस्या जेपूर्वेंघनवाहनादिकना जवोमां अकलंकादिकने वचनेकरी मेंसदागम अने श्रावकपणुं इत्यादिकनी आराधनाकरीहति तेतो श्रद्धाशून्यपणेकरीहति अनेइहांतो निश्चयथीश्रद्धावंतहतो एरीतेंतेजवमां सम्यक्तनोमूलरूप जेश्रावकधर्म तेहने आराधिने तेजवरूपगोलीनो क्षयथयाथके वलीबीजीगोलीलेइकरीने सौधर्मनामादेवलोकें महोटीऋद्धिवंतदेवताथयो तिहांजयजयनिंदा जयजयनंदा इत्यादिक देवीनावचन सांजलीने ज्ञानोपयोगदीधो तेहथी वैरोचननो जवदेखीने सम्यक्दर्शन अनेसदागम बेहुप्रगटया.

तिवारपछि शाश्वताअरिहंतना बिंबोनीपूजा जिनराजनाकल्याणिकोना उत्सवादिकद्रव्यस्तवप्रतें करवालागो बेसागरोपम कांइकउणा देवतासंबंधीजोग जोगवीने गुटीकाक्षयथयथकें तिहांथी चवीने मानवावासनगरें मदननामेपुरुषनी रेणानामेस्त्री तेहनो कुंदलनामेपुत्रहुं आहेरजातिमांउपनुं प्रकृतियेंजद्रक तथापापथीदरवुं इत्यादिकगुणे सहितथयो वली तिहांथी चवीने ज्योतिषिदेवताथयो तेवारपछि सम्यक्त अने सदागम एबेहुयेंमनेतज्यो अने मोह तथापरिग्रह एबेहुयें विंटितथयो वली तिहांथीचवीने पंचेंद्रिय पशुसंस्थान नगरें देमकापणुंपाम्यो पलीजवितव्यतायें घणा कालसुधी विचित्रप्रकारनारूपकरीने विटंबितकस्युं.

एकदिवसें वलीमानवावासनगरें जवितव्यतायें मुजनेलावीने कांपिलपूरनो वसुबंधराजा तेहनीधरानामेराणीनीकुखें पुत्रपणेउपजाव्युं तिहांवासव एहवुंमारुंनामदीधुं अनुक्रमेंहुं यौवन अवस्थानेपाम्यो पछे शांतिसूरिनामा आचार्यनीपासेथी विधि

यरूपगोखना बारणाथीनिकलीने रौद्र्ध्यानरूप अग्निकुंमनेविषे अथवा आर्त्तध्यान रूप महोटाखामामांजयीपडे.

वलीआशरीररूप ओरमाने पांचेंद्रियरूपगोखछे तेएकेकागोखनाबारणामां एके कविषनोवृक्षछे तेजेजेवारें जीव वृक्षने सुंगेछे अथवादेखेछे स्पर्शकरेछे सांजलेछे ते तेवारें एजीव तेहनाविषथकी मूर्छितथको महोटीआपदानेपामेछे माटेविषवृक्षथ की जीवने दूरजराखवुं एहवुंसांजलीने अकलंकेंकह्युं हेस्वामितमे एमनरूपवांदराने राखवानोउपाय घणुंरुडोकह्यो केमके जवांतरेंपणमुजने महारागुरुराजें मनरूपवां दराने राखवानोउपाय एमजकह्युंहतो एहवुंकहिनेवली जातिस्मरणज्ञानेकरीजे पूर्व जेजवेंचारित्रनोमार्गेआदस्योहतोते सर्वएनेजाणवामांहतुं तेप्रमाणेसर्ववृत्तांत गुरुआ गलेंकहीसंजलाव्यो मुनिराजेपण एजरीतेंप्रमाणकरीने फरीगुरुकहेवालागाजे.

हेमहाजाग्यवंत वलीपणमहारेगुरुयें मनेकह्युंछेतेप्रमाणे तुजनेकहुंछुं तेसांजल आ शिवालयनामामठनेमार्गें शरीररूपघरनेविषे कृष्णलेस्या नीललेस्या कापोतलेस्या एत्रणदासीछे तेमनरूप मांकडाने दुःखनीदेवावालीछे अनेएत्रणेजो मनरूपमांकडा नी परिचर्याकरनार करियें तोएमांकडानेंसर्वउपद्रवना घरसरिखीथाय तेमजवली तेजु पद्म अने शुक्ल एत्रणलेस्यानामे त्रणदासीओते एमनरूपमाकडाने हितनीकरना रीछे तेमाटेएहिज एहनारक्षणनेअर्थें थापवी.

हवेतेलेस्यारूप दासियेंज शिवालयनामामठना स्वामिपणानेअर्थें देहरूपअन्यंत रघरमां परिणामनामा एकनिश्रेणीकरीछे तेणेकरीउपरचडायछे तेदाधराना वली ते लेस्यायेंज चित्तअध्यवसायस्थानक एहवेनामे असंख्याता पगतीआरूप पाटीआक खाछे तेमांप्रथमनीत्रणलेस्यानाकरेला पगतीआनीश्रेणीयें चडतेथके एमनरूपवांद राने पूर्वोक्त विविधप्रकारनाउपद्रवेंकरी पराजवथायछे तेउपरेंवली तेजुलेस्यादिक त्रणलेश्यानीकरेली पगतीआनीश्रेणीनेविषे जेमजेमउपरेंचडे तेमतेम विषयरूप वि षयप्रवेशनो चपलतापणुं निवर्त्तिपामे क्षयथाय.

वलीपूर्वनाउपना कर्मरूपरोग तेरूपसमस्त उपद्रवो तेधर्मध्यानरूप शीतलवायु ति हांआवेछे तेहनाफरसवाथकी क्षयथाय वलीतिहां शम दम संतोष संयम सद्बोधादि क वांदरायेंशोजित एहवी धृति श्रद्धा सुखाशिका विविदिषा जाणवानीइछा विज्ञप्ति स्मृ तिबुद्धि क्षमादिक वांदरियें शोजित धैर्य वीर्य शौर्य गांजीर्य ज्ञान दर्शन तप सत्यादिक अनेकनानामर्कट तेणेकरी संकीर्ण एहवोविशुद्धधर्मनामे एकमहोटेवांदरे रूडोमहो टो घणावांदरानुं एकयूथराखेलुंछे तेयूथआवे तेवारें तेहनीसाथेंजातोथको एमनरू

स्तवप्रतें आराधि देवतासंबंधीसुखअनुजवीने तिहांथीचवीने मनुष्यपणुंपाम्यो वली तिहांपण देशविरतिपणुं पालीने चोथेदेवलोकेंगयो एम सम्यक्त अनेसदागम तथा देशविरतिना प्रजावथकी बारेदेवलोकोनेविषे देवतानासुखोने अनुजव्या तेवारपछि जवितव्यतायें तेजववेदवायोग्य गोलीदेइने मुजने मानवावासनामा नगरनेविषे पुण्यो दयकरीसहित मोकल्यो एम मोहनीयकर्म अने परिग्रह तथा श्रोतेंड्रियनुं संगत्यजी ने वलीसद्दर्शन एकांतसुखनुं देवावालोजाणीने हेजव्योतमे सद्दर्शननेजजो सेवो.

इति उप.मिति जवप्रपंच कथाद्वारनेविषे मोह परिग्रह श्रोतें
ड्रियादिकनाविपाकवर्णनरूप एपांचमो अधिकारसंपूर्णथयो.

---

हेकल्याणकारी हेअगृहीतसंकेता हवेआगल माहरुंचरित्रकहुंछुं तेसांजल संप्र मोदनामानगरनो मधुवारणनामेराजा तेहनी सुशालिनीनामेराणीनी कुंखनेविषे हुं गर्जकालपूर्णथये पुण्योदयें सहितजन्म्यो महारापितायें महारोगुणधारणएहवुंना मदीधुं वली तेहिजनगरमां विशालनामे महारापितानुं मित्ररहेछे तेहनोपुत्रकुलंधर नामें तेहनीसाथें बालअवस्थाथीज मनेमित्रताथयी अनुक्रमें अमेबेहुमित्र यौवनअ वस्थायें कलाचार्यनीपासेंथी समस्त कलाओसीख्याः

एकदिवसें आल्हादमंदिरनामा उद्यानेक्रीडाकरवाने अर्थेंगया तिहांस्वरूप अने सौंदर्य वडेतिरस्कारकर्योछे देवांगनानासमोहनारूपने एहवीकोइकस्त्रीसखीसहित चा लतिथकी अमेंदीठी तेहनारूपथी महारोचित्तहणाणो तेहथी तरलितदृष्टीयें फरीफरी तेहनासन्मुखजोउं अनेतेहनेपण माराउपर रागउपनुं तेणेकरी वारंवार महारासुखने विकारसहितनेत्रें जोतिथकी कटाक्षनाखतिहति तिवारेंकुलंधरें मनेविकारसहित जाणीने महारामुखउपर दृष्टीकरी तेहथीहुंलज्जापाम्योथको आकृतिगोपवीने कुलं धरनीसाथें घरेंआव्यो पणमहारुंचित्त तेस्त्रीनेविषेमूकाणुं तेणेकरी अनेकविकल्पें आकुलथको किहांपण साताउपनीनही एमकष्टेंकरी तेरात्रमने युगरूपथइथिती.

प्रजातें में कुलंधरनेकह्युं केहेमित्र हमणाहुं वनमां जाउंछुं तेसांजली विस्मित थको कुलंधरबोल्युंजे हुंताहरुंकुचेष्टितपणुं जाणुंछुं तेवारेंमेंपण माहारामननो जा वकह्युंजे हेमित्रजो तेस्त्रीपरणेजीहसे तेवारेंतोतेंपरस्त्री एसरिखी अनर्थनीखाण ते हनेतोहुं स्वप्नमांपण इछुंनही अनेजोकुमारिकाहसे तिवारेंतो शेकडागमे उपायकरी पण हुंतेहनेपरणीस माटेतिहांजयी निर्णयकरियें पछेअमें उद्यानमांगया तिहांचारे

णीने तेपणहर्षवंतथयो पछे सर्वसाधुनानायकभूत कोविदनामा आचार्य सातमांम हातुभावने नमस्कारकरीधर्मपुछवालागा तेवारेंगुरुयें विस्तारसहित धर्मनुंस्वरूपकह्युं.

तेसांभलीने अकलंकेमनेकह्युंजे हेभाइघनवाहनएगुरुपासें समस्तप्रकारेंसदागमवसे छे तेमाटेएमनामुखथकीकांइकपणश्रुतनोअभ्यासकरियेंतोमहारुंहृदय हर्षवंतथाय.

एहवाअकलंकना अनुरोधथकी हुंकांइकनमस्कारादिक श्रुतप्रतेंभण्यो अनुक्रमेंकां इक द्रव्यश्रावकना मार्गनोजाणथयो अने अकलंककुमरतो जातिस्मरणेकरी उत्कृष्ट वैरागपाम्यो पछेमातापितानेकहीने श्रीकोविदनामा आचार्यपासेथी संयमआदर्युं.

हवेसदागमेकरीसहित मनेदेखीने ज्ञानावर्णनामेराजा क्रोधपाम्योथको महामो हराजापासेजयीकह्युंजे भव्यजीवतो सदागमनीसाथें मलीगयोछे इत्यादिकवात सां भलीने मोहराजामहाक्रोधवंतथयो वली रागद्वेषादिक तथातेहनी सैन्यानामाणस दोषेकरीपीडित सर्वक्रोधवंतथया हवेसंग्रामनेविषे उद्यमवंत एहवामोहराजाना स र्वमाणसोने निवारीकरीने पोतानोपुत्र रागकेसरीनामेराजा अनेलोभसागरनोभाइ प रिग्रहनामे एबेहुनेसाथेलेइने मोहराजापोतें महारीपासेंआव्यो मेंपणतेहने पूर्वना परिचयथकी अत्यंत स्नेहनाघरकरीराख्या.

एहवामां जीमूतनामें महारोपिता परलोकेंपहोतो तेहनाप्रेतकार्यकरीने पछेहुंरा जाथयो महारीआज्ञाप्रवर्त्तावी हवेसदागमतो मनेएहवुंकहेजे एसर्वपुद्गलिकसुखते अ नित्यछे धन यौवन राजलक्ष्मीप्रमुखते सर्वक्षणवारमां क्षयथाय माटेएनाउपरमोहकर वुंनही इत्यादिक उपदेशमनेकहे अनेवली मोहराजातो एहवोउपदेशकरेजे हेभाइ घनवाहन इहांतो मनगमता विषयसुखभोगववा कोणेपरलोकदीठोछे वली पुण्य पापादिकोपणनथी जेमचारवाकमतवाला नास्तिक कहेछे.

पिवखादचचारुलोचनेयदतीतंवरगात्रितन्नते॥नहिभीरुगतंनिवर्त्ततेसमुदयमात्रमि दंकलेवरं॥१॥ तथा॥ क्वालिंगनंभुजनिपीडितबाहुमूलो भुग्नोन्नतस्तनमनोहरमायात क्ष्याः॥निक्षोपवासनियमार्कमरीचिदाहैर्देहोपशोषणविधःकुधियांक्वचैषः ॥१॥ एरीतें नास्तिकमतनेविषे प्रेरणाकरे तेमजमोहराजानीसाथेंआवेलो परिग्रहपण भंडारइत्या दिकनी वृद्धिनेअर्थें प्रेरणाकरे एमतेत्रणेना जूदाजूदावचनो सांभलीने घणापरिचयप णाथकीमोहअने परिग्रह एबेहुनोवचन प्रमाणकर्युं अनेसदागमनुंवचन अवगण्युंपछे तेदिवसथीमांमीने में नमस्कार जाप देवपूजादिक जेसुकृतअनुष्ठानहताते मूकीदीधा.

तेवारपछे ज्ञानावर्णिकर्मनामें राजायेंपण मनेआवीआश्रयो तेवारें मातामि त्रोमां आसक्तथयोदेखी मने अयोग्यजाणीने सदागमदूरजतोरह्यो पछे सुपात्रदान

एह्वीथकी घरप्रतें आवी तेवारपछि लवलिकासखीना मुखथी तेवातजाणीने हर्षपामतिथकी मेंराजानेजइकह्युं राजापणतेसांजलीने हर्षवंतथयो तेवारपछि कुम रीने आश्वासनाआपीने हुंतमारीशोधकरवानेअर्थें इहांआवीछुं माटे एकुमरने एमा हारीपुत्रीनो पाणिग्रहणकरावो'

एह्वातेह्ना वचनसांजलीने कुलंधरेंआवी मनेकह्युं मेंपणतेह्नावचन अंगीका रकस्या तेवारें कामलता हर्षवंतथयीने पोतानेस्थानकेगयी पछेअमेंबन्नेजण पणप्री तिवंतमनेथका घरेंआव्या ह्वेबीजादिवसें अमेबेहुजण उद्यानेगया तेसमयेंतिहां रत्नादिकलक्ष्मीयेंपूरित वैमाने करीसहित वलीमदनमंजरीना विवाह्नीसामग्रीलेइने कामलतादिक कुटुंबीपुरुषोयें सहित कनकोदरनामे विद्याधरनोस्वामी तेपणपूर्वेंअवग एया विद्याधरोथी इहांकार्यनेविषे कोइविघ्नमथाजो एह्वी आशंकाकरी तुरततुरत विवाह्नो आरंजकरी मने मदनमंजरीसाथें पाणीग्रह्णकराव्यो अनेघणुं रत्नादिकद्र व्यतुंदायेंजो पण आप्युं.

एटलामां क्षणेकवारमां पूर्वें अपमानपामेला एह्वाघणाक विद्याधरोनाराजा ओ तिहां युद्धनेअर्थें आव्या पणमहारा पुण्योदयना अनुजावथी तेसर्वेमनेदेखी ने कहेवालागाजे एराजहंसयोग्यछे एह्वीयुक्तिसहित क्रोधनिवारीने मने तथा क नकोदरने अश्वासनादेइने जनारह्या पछेएसर्ववृत्तांत जाणीने मधुवारणनामाराजा जे महारोपिता तेपण सैन्यसहित तिहांआव्यो सर्वेकुटुंब हर्षवंतथयो पछेते कन कोदरादिक राजाओपण माह्रापिताने तथामने जणावी रजालेइने पोतपोताने स्थानकेंगयां अमेंपणमहोटे महोत्सवेंकरी पोताना नगरमांआव्या तेवारपछिहुं म दनमंजरीसाथें मनगमता देवतासंबंधी जोगजोगवतोथको विचरुंछुं.

एकदिवसें महारामित्र कुलंधरने स्वप्नमां त्रणपुरुष अनेबेस्त्रीओआवीनेकहेछे के अहोकुलंधर गुणधरकुमरजे विचित्रप्रकारना सुखजोगवेछे तेसर्व अमेपांचजण ना अनुकूलताना अनुजावथकी जोगवेछे एह्वोस्वप्नो जावार्थते मने कुलंधरेंक ह्युं तेवारेंमेंविचार्युंजे अहोइतिआश्चर्य पूर्वें कनकोदरराजायें चारमनुष्योदीठा अ नेहमणातो कुलंधरेंपांचदीठा माटेएमांसुंविजेदछे एह्वासंदेह्वंतथको कुलंधर अने मदनमंजरीयें युक्त क्रीडाकरवानेअर्थें अल्हादमंदिर उद्यानेगया तेवखतें तिहांएक कंदनामा महाऋषिदीठो तेह्नेनमस्कारकरीने परिवारसहित हुंधर्मसांजलवानेअर्थें तेमुनिराजपासेंबेठो तेवारेंमुनिराजेपण धर्मदेशनादीधी तेसांजलवाथी सम्यक्त अने सदागम एबेहुमाह्रे पासेंआव्या तेह्थीमाह्रो चित्तवृत्तिनामा अटवी निर्मलथ

कस्यो अने सेकडागमे स्त्रीओपरस्यो राजनीवृद्धिनी तृष्णायेंकरी कर्मजावशथकी म होटामहोटापाप प्रवर्त्ताव्या एहवामां मनेप्राणथकीपण अतिवल्लन एहवी मदनमं जरी नामेमाहरीपटराणी मरणपामि तेवारें मोहराजाना शोकनामेसुनटेकरीहुंघ णोपीडाणो वलीतेशोकनावशथकीमस्तकपीटन रुदन विलापादिककरवाने प्रवर्त्यो खानपानआनरणादिकसमस्तनोगवस्तुनो त्यागकर्युंनीलासेकरी दिवसनिगमतोहतो.

एवीरीतेंमने शोकेंकरीपीमायमानथयो सांनलीनें अकलंकनामेंमुनि गुरुनेपुछी मनेप्रतिबोधकरवाने अर्थेंआव्या तेऐअनित्यनावनामय विचित्रप्रकारना उपदेशदी धा पणजेमआंखें आंधलाहोय तेहनेदीपकशाकामनुं तेन्यायनीपरें विफलनूतथया फरीमुनियेंकह्युं हेघनवाहन पंमितपुरुषोएमकहेले के शरीरवंतनोजे जीवितव्यपणोले तेमरणनीजप्रकृतिले केमके मरवुंसर्वनेले माटेजेजेमांथी उत्पन्नथाय तेतेहनीप्रकृति कहेवाय तोप्राणीमात्रनो जिहांसुधी श्वासोश्वासले तिहांसुधीतेहने महोटोलानवं तकहियें माटेएअनित्यवस्तुनेविषे शोककरवुंयुक्तनथी इत्यादिक अनेकउपदेशना सां नलवाथीमें शोकनेमंदकस्यो तथा मोह अने परिग्रहएबेहुने दूरकस्या तेथी महारा पासें सदागमआव्यो तेहनासंयोगथी पूर्वेंनणेलो श्रुतसंनाख्युं वली जिनराजनामंदि रें बिंबोनी प्रतिष्ठाकरावी अने तीर्थयात्रा स्नात्रमहोत्सवादिक इव्यस्तवना कारणो कराव्या वलीपरनेनयकरवो क्रोध करवो हीनपुरुषनीसोबत करवी मृषावादबोलवुं चोरीकरवी खोटुं अनिमान धरवुं परस्त्रीनुंवांछवुं तथा परनाअवर्णवादबोलवा इ त्यादिकमागाकार्यनुंमें समस्तप्रकारें त्यागकर्युं.

तथा दया अनुकंपादिक गुणनेविषे अनुरागपणुं सुकृतनुंअनुमोदवुं परनोउपकार करवुं देवगुरूनी पूजाकरवी स्वजनलोकोनी वर्तणुक परमाणें वर्तवुं शासननीप्रना वना करवी दान शील इत्यादिकशुनकृत्योआदस्या.

वलीकुलनीमर्यादानुं अतिक्रमणकरुंनही तथालोकविरुद्धकार्य आचरुंनही पर नाममर्मादिक उघाडुंनही साधुनीसेवाकरुं श्रुतज्ञाननुं अन्यासकरुं पुस्तकनीपूजा शा स्त्रसांनलवुं इत्यादिकमां प्रवर्त्ततोरहुं तथा पंचपरमेष्ठीमंत्र नवकारनुंजापजपुं इंद्रि यनेजीतवाना उद्यमनुं आचरणकरुं मिथ्यात्वडुःकृतनी निंदाकरुं तथासुकृतनी अ नुमोदनकरुं पोतानादेशमां न्यायतथानीतिने प्रवर्तावुं एरीतेंहे अगृहीतसंकेता हुं श्रावकपणुंपाम्यो तेदेखीने अकलंकनामामुनि संतुष्टथया.

एहवामां वली नवितव्यताना वशथकी मायाअने सागरके० लोन तेऐआवीने मने आलिंगनकर्युं तेहोनाअनुनावथी मेंचिंतव्युंजे अहो अहो अकलंकमुनीना ए

रीसाधुतेहनेज तत्वथी सुखीकहियें तेसुखप्राप्तिनुंकारणतो चारित्रधर्मनामाराजाछे माटेहितनाअर्थिपुरुषें संसारथकोपराङमुखथयी तेहनोजसरणकरवो.

इत्यादिक धर्मदेशनासांभलीने अमृतेंसोच्यानीपरेंहुं प्रीतिवंतथयो पछेदेशनापूरीथयाथी मेंस्वप्ननाअर्थ गुरुनेपुछ्या तेवारें आचार्यबोल्या हेराजन् एस्वप्ननोघणो वृत्तांत छे माटेएस्वप्ननुंमूलकहुंछुं तेएकचित्तथइ सांभल हुंपण तेहवीजरीतें सांभलावीश.

पछेगुरुयें असंव्यवहारनामा नगरथीमांडीने महारोमूलथी विस्तारेंसहित पूर्वं भवनुंचरित्रकह्युं सांभलहेराजन् ताहरी चित्तवृत्तिनामा अटवीमां अनेकनगरेंयुक्त महोटुंअंतरंगराज्यछे पणतेराज्यतो बलवानजे महामोहनामा लुटनारलोकोनो स्वामी तेणेतुजनेतथाताहरा हितवांछुजे चारित्रधर्मादिकोतेहने पराभवीने प्रकर्षपणे पोतेंग्रहणकर्युं तेवारें कर्मपरिणामनामेराजापण ताहराउपर प्रतिकूलहतो अनेहमणांतो ताहराउपर अनुकूलछे तेमज कालपरिणतिनामें तेहनोराणी तथा स्वभावनामेंप्रधान तथा भवितव्यतानामें अनादिकालनी जेताहरीस्त्री तेचारेताहराउपर अनुकूलपणुंधरेछे जोपूर्वेंपण एहिजचारजणनीसाथेंतुं मल्योतेवारें पणएतुजने पुण्योदयभलावी सुखोपार्जनकारीहता वलीजेदिवसथीतुं सदागमादिकसाथें मल्यो तिहांथीमांडीतो एचारेजण ताहाराउपरविशेषथी अनुकूलथयाछे माटेज पूर्वभवविषेतुजने स्वर्गनासुखदीधा वली आभवमां कनकोदरनेस्वप्नेंआवी ताहरापासें मदनमंजरीने मूकी अनेवली पुण्योदयपण शुभकार्यनेविषे कारणताधरेछे तेमाटेतेहनेपण प्रगटकरवाने अर्थें कर्मपरिणामादिकें कुलंधरने स्वप्नमांहे पांचमनुष्यदेखाड्या केमके नंदिवर्द्धननाभवमां कनकमंजरीनीप्राप्ति तेमज रिपुदारणना भवमां नरसुंदरीनीप्राप्ति वली वामदेवनाभवमां विमलमित्रनीप्राप्ति अने धनशेखरनाभवमां रत्नादिकनुंउपार्जन तथा हरिकुमरसाथें मित्रतापणुं वली घनवाहननाभवमां अकलंकनीसाथें मित्रता अने आजन्ममां मदनमंजरीनो समागम तथासंग्रामनेविषे जोपण विद्याधरो उन्मूलहतातोपण एनाप्रभावथकी सुंदरनम्रतावंतथया तथा एसीवाइबीजापण अंतरें अंतरेंजेजेसुखनाकारणोथयां तिहांसर्वत्रपुण्योदयज कारणभूतहतो पण तेंतो विवेकविकलपणेकरी पुण्योदयने विसारीने हिंसा तथा वैश्वानरके० क्रोध मृषावाद मान माया चोरी लोभ मैथुन मोह परिग्रहादिक महाअनर्थनाकरनार तेहनेज तेंकारणपणेमान्या.

हवेसांभलहे भद्रे हेअगृहीतसंकेता वलीएवामां मेंपुछ्युंजे हेभगवान जोप्रथमपण एपुण्योदय महारासन्मुखहतो तोशावास्ते विचित्रप्रकारनी विटंबनामने उप

जुगटुं आहेडो इत्यादिक सातेव्यसनसेव्या वली अत्यंतकठोर दंमेकरी समस्तप्रजालो कने पीडया इत्यादिकरीतें महाअनर्थनोकरनार मनेदेखीने महारोपुण्योदयनामा जेमित्रते महाराथीदूरथयो तेणेकरीमहाराउपर सर्वराजमंमल अने प्रजालोक वि रक्तथया तेथीएकदिवसें महारा प्रधानादिकें माहोमाहें विचारकरीने ढुंकुलनेकलंकनो करनारछुं एहवादोषनोमहाराउपर आरोपकरी मनेबंदीखानेनाख्युं अने महारापाटे महाराजाइ नीरदवाहननेथाप्यो.

पछेहुंबंदीखानामां पडयोथको नूखतृखायें पीड्योथको शोकमागमेंडुःख अनुनवी तेनवदवायोग्य गोलीनुंनाशथयेथके तिहांथीमरीने पापिष्ठनिवासनामा नगरना सातमांपाडेगयो तिहांतेंत्रीस सागरोपम सुधीमहाडुःखोनोगवीने तिहांथीनिक ळ्यो वलीनवितव्यतायें घुअड बिल्लाडो गरोली कानकीडादिक विचित्रप्रकारना हिं सकोनानवमां अनंतकालसुधी नचाव्यो.

एकदिवसें मोहादिकोकांइक क्षीणथयाथी नवितव्यतायें मने मानवावासनामा नगरना नरतनामेंपाडामां सांकेतपुरनामा नगरनेविषे आनंदनामा वाणीआनेघरें धनसुंदरीनामास्त्रीनी कुक्षीनेविषेमने पुत्रपणेउपजाव्यो तिहांमहारुंनाम अमृतोदर राख्युं पछेहुंअनुक्रमें यौवनअवस्थापाम्यो वलीतिहां सदागम महारेसन्मुखआव्यो तेहनावशथकी सुदर्शननामा साधुपासेंथी हुंनमस्कारादिकश्रुतसीख्यो तेवारपछि कां इक ड्व्यश्रावकपणुं आराधीने गुटिकानोक्षयथयेथके मरणपामिने विबुधालयना मा नगरेंदेवताथयो.

हवेतेविबुधालय नगरनेविषे नवनपति व्यंतर ज्योतिषी अने वैमानिक एचारनि वासनामें चारपामाळे तेमां पहेलानवनपतिनामे पामानाप्राणी दशप्रकारना अने बीजाव्यंतरनामे पामानाप्राणी आठप्रकारें त्रीजाज्योतिषिनामा पामानाप्राणी पांचप्र कारें चोथावैमानीकनामेपामानाजीव बेप्रकारनाछे तेमांहुंपहेलापामामां दोढपल्योप मनेआयुषें देवतापणेउपनुं वलीतेहांथी चवीने मानवावासनामें नगरें बंधुदत्तनामें वाणीआनेघरें प्रियदर्शनानामेस्त्रीनीकुक्षीयें पुत्रपणेउपनुं महारुंनाम बंधु पाडयुं यौवनअवस्थापामेथके सुंदरनामा मुनीनेपासेंथी ड्व्यसाधुपणोपामि तिहांथीमर णपामिने व्यंतरदेवतापणे उपनुं एरीतें अनंताकालसुधी अनंतामनुष्य देवता ति र्यंचादिकना नवकर्या तेमां किहांकसदागमपणुं किहांक ड्व्यश्रावकपणुं किहांकड् व्यसाधुपणुं तेणेकरीदेवतापणुं मनुष्यपणुंपाम्यो किहांकवली कुतीर्थि. पाखंडादिक मतोने सेवीने संसारमां घणानवन्रमण कर्या.

हारीअपेक्षाछे किंवानथी फरीआचार्यबोल्या हेराजन् सर्वकार्यनेविषे तुंहिजमुख्यप्रधानछो केमके ते कर्मपरिणामादिकोपण तारहीयोग्यताना वशथकीकामकरेछे तेमाटेसर्व शुनाशुनकार्यनोकरनार तोनवजंतुजछे एहवुं अमेकहियेंछैयें फरीमेंपुछ्युं हे स्वामि एटलाजकारणछेके कांइकबीजापण कारणछे.

तेवारेंगुरुबोल्या जेमकर्मपरिणामादिकचारछे तेमपांचमो नवजंतुपोते मली एहिजपांचकारणछे तथावलीबीजुंपण एकउत्कृष्टकारणछे तेसांजल मोक्षनगरें अनंतज्ञानादिकेंयुक्त परमऐश्वर्यताजावेंकरीशोजित एहवो सुस्थितनामाराजा चक्रवर्तीछे तेहनाअनेकरूपछे पणएकरूपपणे गवायछे तेमज बुद्ध विष्णु महेश्वर निःकलंजिन ब्रह्मादिक विचित्रप्रकारनानामेपण तेहनेजकहियेंछैयें.

जोपणएवीतरागछे माटेपोतें किहांपण रागकरतोनथी तेमज द्वेषपणकरतोनथी तोपणपोतें नवजंतुने एवीरीतें आज्ञाआपेछे केअहोनव्यो तमेचित्तवृत्तिनामाअटवीमां हेयवस्तुत्यजीने उपादेयवस्तुने अंगीकारकरी गोक्षीरपरेंउज्वलकरो तेमज मोहादिकशत्रुनो समागममूकीने आत्मानाहितकारकजे चारित्रधर्मादिक तेहनीसेवाकरो इत्यादिरूप हेय अनेउपादेय करीप्रगट एहवीजेआज्ञातेज सर्वप्राणीनें समस्तसुखदुःखनो कारणनूतथायछे केमके तेप्रजुनीआज्ञा आराधवाथी सर्वसुखनुंकारणथायछे अनेतेहनी आज्ञा विराधियेकी दुःखनीकरनारथायछे आज्ञाआराधियेकी मोक्षनेअर्थेथाय अने विराधियेकी नवनेअर्थेथायछे माटे द्वादशांगी लक्षणरूप आज्ञानो जेकोइप्राणी अक्षरमात्रापण विरोधकहेछे तेअनंताकालसुधी नवभ्रमणकरेछे.

हेराजन् तेंपणपूर्वें एद्वादशांगीनी आज्ञाविराधीछे तेहनावशथकीज घणाकष्टअनुनव्यां अनेन्नमणातो तुंतेहनी आराधनाने अनिमुखछो तेहथीतुजने एटलोसुखनो लेशथयो एरीतें आज्ञानुंस्वरूप सांजली संदेहरहितथको.

वलीमेंपुछ्युंहेनगवान जोहजीपणतमे मनेसुखनोलेश कहोछो तोशुंएथकीपण वधारेसुख जगतमांकोइहशे तेवारेंकेवलीबोल्याहेराजन् संसारमां कोइपणस्थानकेतेवुंसुखनथी अनेजे तें मनुष्य देवतादिकनानवमां तथावली आजन्ममां सुखअनुनव्यां तेसर्वेनेजेलाकरियें तोपणसदागमनी आज्ञाथीउपनुंजेसुख तेहनेअनंतमेंनागेपण एताहशंसुख योग्यथायनही पणतेसुखतो जेवारेंतुं क्षांत्यादिकदश कन्याओ परणीस तेवारेंमहाराकह्याविना पोतेंजजाणीलइश.

एहवामां कंदनामासुनियेंकह्युं हेनगवान तेदशकन्याओनानामसुंछे तेकहो तेवारें आचार्यकहेछे चित्तसौंदर्यनामानगरें शुनपरिणामनामेराजा तेहनी निप्रकंपता तथा

थेंसहित धर्मसांजलीने सम्यक्त तथा सदागम बेहुनेपाम्यो तिहांथी वलीदेवताप णुंपाम्यो देवतानोआयुक्षयेथयाथीवली कांचनपुरनगरें मनुष्यपणुंपाम्यो तिहां मोह अने परिग्रहते वृद्धिजावने पाम्या तथा सम्यक्त अने सदागम एबेहुदूरगया वलीहुं घणाजवसुधी संसारमां जम्यो तिहां सम्यक्दर्शन अने सदागम एबेहुमाहरापासें असंख्यातिवार आवीआवीने पाछागयां अनेकेवल एकलो सदागमतो अनंति वारआवीने पाछोगयो ते जिवारेंजिवारें सम्यक्त अने सदागमआवे तिवारें तिवारें मोहादिकदूरथाय अनेवली पुण्योदयपण प्रगटथाय तथा जेवारेंजेवारें मोहादिक बलवानथाय तेवारें तेवारें सम्यक्दर्शन तथा सदागमएबेहु दूरथाय अने पुण्योद यपण नाशपामें एरीतें अनंतकाललगण संसारसंबंधी सुखडुःखप्रतें अनुजविने.

एकदासमें सोपारकपुरनेविषे शालिजड्नीस्त्री कनकप्रजानीकुक्षीनेविषे हुंविज्जीष णनामे पुत्रपणेउपनुं अनुक्रमें यौवनअवस्थापाम्यो तेवारें कोइकआचार्यना वचन सांजलीने सम्यक्त अने सदागमबेहुपामि ड्व्यथकी साधुजावपणपाम्यो एटलामां वली मोहादिकप्रबलथया तेवारें सम्यक्दर्शनतो दूरगयो तेथीतीर्थंकरनी निंदादि कमहोटी अशाताओकरीने फरीअनंताजव संसारमांजम्यो.

एरीतें विचित्रप्रकारना जवेंकरीशुद्दिर अनेविखम एहवोसंसारीजीवनो व्रतांत सांजलीने अगृहीतसंकेता ते सम्यग्के० जलीरीतें लाधुंछेपरमार्थ माटे विस्मयवंत थका थंजाणाछे नेत्रोजेहना एहवीथयीरही एवखतें प्रज्ञानविशाला विचारकरवा लागीजे हाइतिखेदे एजवप्रपंचते महाविहामणोछे निश्चेंथकी डुःखेजीतवायोग्य ए हवाएमोहादिकोछे केमके नंदिवर्ध्दनादिकनेजवेंतो सम्यक्तदीठुंजनहतुं माटेमोहादि क अवश्यपीडाकरे पणएतो विशेषजे वैरोचनादिकनाजवमांतो सम्यक्तप्राप्तथयुं तो हेपणएमविटंबनाकरी तेमाटेएमोहादिकोनी शक्ति अचिंत्यछे इत्यादिकविचारमांबेठीछे तेहनेफरीजव्यपुरुषकहेछे जे हेमाताजी सुंआवीरीतें विस्मृतिजावपामेछे हवेआग लनुं संबंधकहुंछुंते सावधानथयीने सांजल तेवारें प्रज्ञाविशाला बोलीजे हेपुत्र हुंविस्मृतीजावपामतिनथी छुंतोएसंसारना स्वरूपनुंविचारवुं तेहनेविषे एकतानथयीछुं

एमसांजली फरीसंसारीजीवकहेछे सांजलहेजद्दे तेवारपछिहुं जद्दिलपुरनेविषे स्फटिकनामेराजानो विमलानंदनामे पुत्रथयो तेयौवनअवस्थामां सुप्रबुध्दनामा आचार्यनावचनेकरी सम्यक्त अने सदागमने उलखी में श्रावकनोधर्म ग्रहणकर्यो तिहांश्रावकनोधर्मपालीने गोलीनाप्रयोगेंकरी त्रीजादेवलोकेंदेवतापणे हुंउपनो ति हांपणसुजने सम्यक्त अने सदागमबेहुमल्या शाश्वताजिनमंदिरनी अर्चादिक ड्व्य

नवोजवानुंवर्जवुं तथापरमर्म अनेवाकुंबोलवुं इत्यादिकनेवर्जे अनेपरनेहितकारी प्र माणोपेतयथार्थकहे इत्यादिकप्रकारें सत्यतास्त्रीपरणवानो उपायजाणवो.

तथाजेपुरुष अकुटिलतापणुं आदरे अनेपरनेठगवानुंवर्जवुंकरे चित्तनिर्मलराखे सरलस्वनावआदरे तेपुरुष सरलतानामास्त्रीनेपरणे.

तेमजपरने पीडाकरेनही बीकणपणुंवर्जे परद्रोहनकरे परद्रव्यमां वांछानकरे तथाचोरीनामागविपाकचिंतवी माठीगतिमांपडवुं तेहथीजयपामिने चोरीनकरे इत्यादिकअचौर्यतास्त्रीने परणवानाउपायजाणवा.

तथा बाह्य अने अन्यंतर परिग्रहथी आत्मानेजूदोचिंतवे अर्थकामथीओसरे पोतानीआत्मानुजाव अनेपरपुद्गलादिकनोजाव एबेहुनाजेदजाणीने परपुद्गलादिकना जावनुंछांडवुंकरे एरीतेंमुक्तिनामास्त्रीनेप्राप्तिनोउपायजाणवो.

तेमजजेपुरुष सर्वस्त्रीओने मातासमानजाणेछे स्त्रीपशु पंमगादिकयुक्तस्थानमां वसेनही स्त्रीनीसाथे आलाप संलापकरेनही तथास्त्रीना मुख नयन स्तन साथल नि तंबादिक अवयवोनेनजूए पूर्वकालेंकरेला स्त्रीओसाथें सुखविलासनो स्मरणनक रे रससहितआहार तथा घणोआहारकरेनही शरीरनीशोजानकरे इत्यादिकगुणेस हितजेहोय तेपुरुषने ब्रह्मचर्यनामाजेस्त्री तेपोतेंजवरे.

तथाशरीरधन विषयादिकोने अनित्यतापणे अने अशुचीपणेचिंतवे तथापोतानुं एकत्वपणुंचिंतवे समस्तमावाविकल्पनो त्यागकरे तथा जेवस्तुजेवाप्रकारनीहोय तेव स्तुनातत्वनेतेजरीतेंजाणे एरीतें विद्यानामास्त्रीने परणवानोउपायजाणवो.

तेमजजेदुःखनाहेतुनूतजोगनो अनिलाषाजाणेछे तथाविचित्रप्रकारना चित्तसंता पअने अनर्थनुंकारणनूत तेविषयसुखनी तृष्णाछे मरणनुंकारणजन्मछे अने वियोगनुं कारणतेसंयोगछे एमजेजेवांछितपणे ग्रहियेंछैयें तेतेअनिष्टरूपजछे तेमाटेजेसंसारने विषे प्रवृत्तिछे तेदुःखनी कारणनूतजाणवी अनेजे संसारथी निवृत्तिनावछे तेसुख नोकारणनूतछे इत्यादिकजेपरिणामते निरीहतानामास्त्रीनी प्राप्तिनोउपायजाणवो.

एमजेनवजंतु जेवारेंएदशकन्याओपरणे तेवारेंज चारित्रधर्मराजानुं सैन्यबलवंत थाय तथामोहराजानुं सैन्यक्षयपामे वली एहिजउपायकरवाथी कर्मपरिणामराजा पण अनुकूलथाय इत्यादिकवातसांनलीने वलीकंदमुनियेंपुछयुं हेस्वामि एकन्या शुण धारणनामाराजा केटलाककालपछि परणसे तेवारेंगुरुबोल्या तमहिनापछे एकन्याओ परणसे तेसांनलीमेंकह्युं जे हे नगवानहुंतो हमणाजसंयम ग्रहणकरवानीवांछावंतछुं तोतमेशावास्ते एटलाकालनो विलंबकहोगो.

दिशायेंजोयी पणतेस्त्रीने किहां दीठीनही तेहथीहुंपणुं दुःखेपीडितथयो कुलंधरपण चिंतातुरथयोथको अमेबेहुजणा एकवृक्षनीचेंजइबेठा.

एटलामांएकस्त्री तिहांआवी आशीसआपी कुलंधरनेएकांते तेडीने कहेवालागीजे हेसुनग वैताढयपर्वतें गंधसमिद्धनामे नगरनोस्वामी कनकोदरनामाराजा विद्याधरोनो चक्रवर्त्ती तेहनीहुं कामलतानामेंस्त्रीछुं अमनेअनेक उपायकरेथके समस्तकला विलासना घरसरिखी एकमदनमंजरीनामें अमारीपुत्रीथइछे.

एकदिवसें तेकुमरीने उत्कृष्ट यौवनअवस्थामांदेखीने तेहनारूपसरिखो वरपामवानी चिंतायेंपीडितथको किहांपणयोग्यभर्त्तारने अणदेखतोथको राजायें स्वयंवर मंडपकरी सर्वविद्याधरोना राजाने एकठाकर्या तेसर्वराजाओने जूदाजूदाजोतांथका कोइपणराजाते कुमरीनाचित्तमां आकर्षथयोनही तेहथीतेकुमरी क्षीणथइथकी पुरुष द्वेषणीथइ सर्वराजाओपण अहोइति आश्चर्य अमेसर्वने एणेअवगण्या एमद्वेषधरताथका जेमआव्या तेमपाछा पोतपोतानेघेर जतारह्या तेवारेंकनकोदरराजातो वज्रेंकरीहणाणा पुरुषनीपरें विलखोथयो तेमजमनेपण उत्कृष्टदुःखउपनुं तेथीरोवालागी तेवारेंकुमरीनी वल्लभसखी लवलिकानामें हति ते आवीनेअमने कहेवालागीजे शावास्ते एटलोबधोखेदकरोछो हुंपोतेज एकुमरीनामननो अभिप्राय ग्रहणकरीस इत्यादिकवचने आश्वासनाकरी.

हवेतेजदिवसनीरात्रीनेविषेराजायें स्वप्नदीठुं तेमां बेपुरुष अने बेस्त्रीओ मलीचारेजणे आवीराजानेकह्युं केहेराजन् अमेचारजणचेलाथयीने महाभाग्यनानिधान सरिखी एहवीजे ताहरीपुत्री मदनमंजरीछे तेहनो वर निरधार्योछे माटे तुमारेकांइ आपुत्रीनावरनी सोचनाकरवीनही एहवोस्वप्नदेखवांथी राजाकांइक स्वस्थताने पाम्यो हवेएकदिवसें लवलिकानामेंसखियें मदनमंजरीनेपुछयुं जेहेसखी जो कोइपणपुरुषतुजने रुचतोनथी तोताहरोशो अभिप्रायछे तेवारेंकुमरीबोलीजे जेहनी साथें महारुंमन स्नेहपामें एहवोकोइ श्रेष्ठपुरुषहुंदेखतीनथी तेवोपुरुष जेवारें हुं जोइश तेवारें तेहनेपरणीस एमसांभली लवलिकायें मनेआवीकह्युं मेंवलीराजाने कह्युं तेवारेंराजायेंकह्योएमजथायो कुमरीपोतेज वरनेजोइलेसे.

तेवारपछि पितानाआदेशथी मदनमंजरी लवलिकासखीने सार्थेलेइ विद्यावलेकरी आकाशमार्गनी चालनारी अनेकनगरोने जोतीथकी गइकालें आउद्यानमां आवीहती तेवारेंताहरोमित्र एकुमरप्रतेदेखीने एनेतत्काल स्नेहनोउग्रतापणो प्रगटयो तथामिलवानी उत्कंठावृद्धिनावनेपामि वलीकामदेवेंपीडितकर्युं हृदयजेहनुं

वली सद्बोधें विवेकपर्वतउपररह्या जैनपुरनगरना वसनारा एह्वाशुभाशयनामा राजादिको जेचारित्रधर्मराजाना सैन्यनाछे तेसर्वमनेदेखाड्या अनुक्रमे तेहोनीसाथें माह्रेपरिचयथयो तेणेंकरी तेसर्वमने हितकारीथया एरीतें सद्बोधनी शिक्षायें प्रवर्त्तता मनेपांचमहिना वितिक्रम्या तेवारपछि योग्यतानेजोइ महाराउपर कर्मपरिणामादिको अनुकूलथया तेह्नीप्रेरणायेंकरी शुभपरिणामादिकराजायें क्षमादिक कन्याओ देवानेअर्थें लग्नलेवरावी निश्चेकर्युं.

एटलामां विषयाभिलाषनामा प्रधाने मोह्राजानेकह्युं कें हमणाअमने उद्यम करवानो अवसरछे माटेपगपसारी बेसीरहेवुं योग्यनथी केमके कर्मपरिणामादिकसर्व एकठाथइने भवजंतुने क्षमादिक कन्यापरणावेछे तेपरण्यापछितो एसमूलथी अमाराकुलने उन्मूलीनाखसे एह्वोसांभलीने कंपायमानथयोथको मोह्राजापोते कर्मपरिणामने सन्मुखजइ कहेवालागोजे हेभाइतुंगोत्रनेविषे वृद्धथइने आपणोशत्रुजे भवजंतुनामाछे तेह्नोपक्षपातकरी पोतानागोत्रनो क्षयकरावेछे एतुजने निश्चेंथीघटतुं नथी तेवारेंकर्मपरिणामेंकह्युंजे हेभाइसुंकरियें हमणातो भवजंतुते अणओलंगवायोग्य वीर्यवंतथयोछे माटेवखतविना विरोधकरवो युक्तनथी तोहमणातमें मौनपणेज रहो तेसांभली मोहादिकसर्व मौनपणे रह्या पछेहुंतो निरंतर सद्बोधनी शिक्षायेंकरी वृद्धिभावनेपामतो पोताना वीर्योल्लासेंकरी क्षमादिकदशकन्याओ परणीने पछे चारित्रधर्मनामा राजानी सेवाकरीसएह्वा विचारमां हुंतत्परथकोबेठोहुं.

एटलामां भवितव्यताना वशथी क्षणेकवार माहारासमीपथकी सद्बोधनामा प्रधान जूदोरह्यो तेवारेंमेंविचार्युंजे चारित्ररूपकष्टनिश्चेंथी दुःकरछे वलीआमनुष्यलोकनेविषे कामभोगनासुख तेदुःखेंत्यजवायोग्यछे तेमाटेहमणातो मदनमंजरीसाथेंज संसारीक भोगभोगवूं पछे चारित्रग्रह्णकरीस एह्वाविकल्पमां व्याकुलथुं एटलामांवली सद्बोधमित्रआव्युं तेणेमुजनेकह्युंजे हेमित्र सुंआवीरीतें माठाविचारो चिंतवेछे एतोपापरूपवेताल तेमाठामनोयोगरूप पिशाचादिकेंकरी समयपामीने ताह्रीसाथें क्षमादिककन्याना विवाहमां विघ्नकरेछे इत्यादिक शिक्षायें फरीमनेस्थिरकरी चित्तसमाधाननामामंडपमांआणीने सद्बोधेंमने चारित्रधर्मनामाराजा परिकरेंसहितदेखाड्यो अनेतेचारित्रधर्मादिकेंपण घणुंसत्कारेंसहित मनेबोलाव्युं.

तेवारेंमोहादिक नाशपाम्या माह्रीचित्तवृत्तिनामे अटवीशुद्धथइ वली सद्बोधें दशेकन्यापरणाववानो विवाहमहोत्सव प्रारंभ्यो तेमांपहेली आठप्रवचनमाताने निमंत्रणाकरीने मुजने सद्बोधेकह्युंजे हेमित्र प्रथमआ ईर्यासुमति पामेथके जैनध

थी अनेमोहादिको सर्वेद्दोजनेपाम्या तेवारपछि चारित्रधर्मेराजायें संद्बोधनामा प्र धाननेकह्युं के विद्यानामा कन्यानेलेश्तमें हमणा नवजंतुपासेजाओ एह्वुंसांन ली सद्बोधेंकह्युंजे हेस्वामि हमणापणनवजंतुनेपासें पुण्योदय अने शातानोउदय छे तेमाटें कालविलंबकरवुंयोग्यछे तेटलासुधी गृहस्थधर्म अनेतेह्नी गुणरक्षाना मास्त्री एवेहुस्त्रीनर्त्तारने एनवजंतुपासे मोकलीयें.

एह्वाप्रधानना वचनसांनलीने राजायें तेस्त्रीनर्त्तारने आदेशआप्युं तेवारें ते गृहस्थधर्मेनामापुरुष पोतानापरिवारजूत बारमनुष्यैंसहित महारापासेंआव्यो ते वारें कंदमुनीनामुखथी सम्यक्तछे मूलजेहनुं एह्वाबारव्रतरूप श्रावकनाधर्मने में अंगीकारकर्युं अने मदनमंजरी तथा कुलंधरपण सम्यक्तपाम्या.

पछेमें मुनिराजने स्वप्ननो नावार्थपुछ्यो तेवारें कंदमुनि कहेवालागाजे हेराजन् एस्वप्ननोअर्थ गंनीरछे माटे निर्मलाचार्यनामे केवली महारागुरुछे तेमनेपूछीनेहुंक हिश अथवातो जगतनेउपकारना करनार केवलीपण निश्चेंविहारकरतां इहांजआ वशें एह्वुंसांनली परिवारसहित हुंमहारेघरेंआव्यो कंदमुनिपण विहारकरीगया.

हवेमनेराजेंथापीने महारोपिता मधुवारणनामेंराजा परलोकेंपह्तोतो तेवारपछि हुं उत्कृष्टीराज्यलक्ष्मीने नोगवतोहतो पण सम्यक्त अने सदागमना सन्नावथकी शुद्धधर्म रूडीविधियेंपालुं एमकेटलाकदिवस वित्यापछे एकदिवसें अनेकसाधुसहित श्रीनिर्मलाचार्यकेवली नगरनाउद्यानें समोसर्या तेवारेंकल्याणनामा उद्यानपाल कें आचार्यनुंआववुं कहेथके हुंहर्षवंतथयीने तेह्नेलाखसोनामोरनुं दानआप्युं प छेहुंमहोटी रुद्धियेंसहित वांदवानेअर्थेंगयो पांचअनिगमपूर्वकेंसहित त्रणप्रदक्ष णाकरी गुरुनेवांद्यापछे यथायोग्यस्थानकें सर्वसन्नालोकबेठा तेवारें सुवर्णकमलेंबे ठा एह्वाश्री निर्मलाचार्यनामा केवलीतेणे देशनाआपवानोप्रारंनकर्यो.

हेनव्योतमेसांनलो आनवचक्रनामामगरमां जीवमात्रने धर्मविना बीजाकोइनो शरणनथी केमके जिहांजन्म तिहांनिश्चेंथी मरणपणछे वलीजिहां संयोगतिहां वि योगपणनिश्चेंहोय तथाजिहांसंपदा तिहांविपदापणहोय अने जिहांनोगहोय ति हांअवश्य रोगपणथाय तथाजे यौवनअवस्थाते जरायेंहणायलीजहोय वली हर्ष पणशोकेसहितहोय एटलेजिहांहर्ष तिहांशोकपण अवश्यआवे एमजगतमां प्रा णीमात्रजेह्नेजेह्ने सुखनाकारणपणेमानेछे तेह्जिसर्व परमार्थेजोतां दुःखनाकार णजछे तेमाटे एसंसारते सुखथीउपरांगेजाणवो तोजे पोतानाआत्मस्वनावनासुखें हर्षवंत एह्वाजे संसारथीपराङ्मुखथयेलापरमात्मा तथा उपशमादिकें युक्तहेह्था

णाकरी तेजववेदवायोग्य गोलीनेक्यें वलीबीजीगोलीने प्रयोगेकरी हुंपहेलाग्रैव्यक नेविषेगयो तिहांत्रेवीससागरोपमसुधी सुखअनुनवी तेहांथीचवीने सिंहपुरनगरनो म हेंड्नामेराजा तेनीवीणानामेराणीनीकुक्षिनेविषेपुत्रपणेउपनो यौवनअवस्थामां जा तिस्मरणनावशथकी सुघोषनामनाआचार्यपासे दीक्षालेइविधियें पालीने बीजा ग्रै व्यकनेविषे देवताथयो एम पांचवारग्रैव्यकने विषेजावुंआववुंकरीने तेवारपढी धात कीखंडनाजरतक्षेत्रमां शंखपुरनगरनो माहागिरिनामेराजानी नड्रानामेराणीनी कुक्षी नेविषेपुत्रपणेउपनो मातापिताए सिंह एहवुंमारुंनामआप्युं यौवनअवस्थामां धर्मबं धुनामेआचार्यनी देशनायेंचारित्रपाम्यो हुंथोडाकालमां चौदपुरवनण्यो उग्रक्रिया पात्रथयो गुरूयेंयोग्यताजाणीमने आचार्यपददीधुं पढीमाहारी कीर्त्तिसर्वस्थान केविस्तरी ठेकाणेठेकाणेमने बहुश्रुतजाणी माहारी लोकोस्तवनाकरे विचित्रप्र कारेंकरी मने पूजे पर्युपासनाकरे वस्त्रपात्रआहारादिक नक्तिकरे चतुर्विध संघमा हारेगुणेरीज्योथको अहोअज्ञानरूप अंधकारनेहरवामां सूर्यसमान सकलसाधु नागुणरूपरत्न तद्रूपसमुद्रतेएआचार्यछे इत्यादिकस्तुतियेंकरी माहारीस्तवनाकरे तेवार पढीमेंसमस्तकुत्सितवादीना अहंकारनोनाशकीधो अनेक महर्धिकोने प्रबोध वंतकर्या अनेकविधियेंजिनशासननी उन्नतिकीधी.

एवासमयनेविषेसांजलहे अगृहीतसंकेता माहारीमोहोटाइअणसहतीथकी ज वितव्यतायेंमोहादिकने कह्युंजे हमणाकोइकपण पराक्रमकरोतोघणुंसारुं केमके एसमयछे नहीतोजवजंतुतमने परिकरसहितउन्मूलीनाखशे इत्यादिकजवितव्यताना वचनोसांजलीमोहादिकोने उत्साहवध्यो तेथीपापोदयने आगलकरीमारेसामोचाल्या चारित्रधर्मादिकतो शत्रुनेउत्साहसहितदेखीने विलखाथया हवेविषयानिलाषना आ देशथकी मिथ्यात्व ज्ञानावर्णि मान कुद्धिगारव शातागारव रसगारव इत्यादिक मोह राजानामाणस मारीपासेंआव्या तेवारेंतोआर्त्तध्यान अने रौड्ध्याननामनाबेसुनटप णआव्या तेवारपढी तेमनी कृष्णलेश्या नीललेश्या कापोतलेश्यानामे त्रणदासीओप ण आवी एमधीरेधीरे मोहराजानो सर्वलशकरआवी मुजनेरोकीरह्युं तेवारपढी प्रम त्ततानामे नदीपणपूरेकरी ङ्ःखेतरवायोग्यथइ तेवारपढी विषयाजिलाषें चित्तव्याक्षे पादिक मंडपोने सज्जकर्या पढी हेनडेहुं माननावशथकी एहवोविचारुंके अहोमा हारुं पंडीतपणुं अहोमारुं गुणधारणपणुं हुंयुगप्रधानछुं समस्तगुणअनेज्ञानविद्या दिक कला अतिशयोमुजनेज आश्रितछे हुं पूर्वेपण जगतनेविषे उत्कृष्टसौनाग्यवं तराजाहतो अनेकनेमान्यहतो अनेहमणापणउत्कृष्ट माहात्मानीपदवीने पाम्योछुं ह

नी एमपुछवाथी आचार्येंकह्युंजे हेराजन् जोपण चित्तवृत्तिनामा अटवीनोस्वामीतुं हिजछो तोहेपण तिहांएक मोहराजानुंसैन्य अने बीजुं चारित्रधर्मराजानुं सैन्यएबे छे अनादिकालना माहोमांहे वैरभावेंसदाइंरहेछे तेहांवली कर्मपरिणामराजाते उमरूकमणिन्यायें बेहुपक्षमांहेवर्त्ते जेवारेंजेपक्ष बलवंतदेखे तेवारेंतेपक्षनेआसरे ते कर्मपरिणामराजानावली एकपुण्योदय अने बीजोपापोदय एबेप्रधानछे तेमांपापोदय ताहरासाथें उत्कृष्टवैरभावेंवहेछे अनेपुण्योदयतो ताहरा हितनोकरनारछे तेमांपापोदय तेअसंव्यवहारनगरथी मांडीने ताहरेपासेंजहतो पण जेवारें जेवारें ताहरामोहादिकवैरीनी प्रबलताहति तेवारें तेवारें तेपणतुजने अशरणदेखीने विटंबनाकरतोहतो,वली पुण्योदयतो जेवारें जेवारें मोहादिकोनो शिथिलपणुं अनेचारित्रधर्मादिकनो प्रबलतापणुं देखे तेवारेंतेवारें ते उल्लासपाम्योथको ताहरीपासेंरहे अने ताहरुंभलुंकरे अने पापोदयतेविलख्योथकोरहे पणअसंव्यवहारथी मांडी पापोदयते अनादिनुं ताहरीसाथेंजछे माटेतेहनुंरूपनदेखाड्युं अनेपुण्योदयते किवारेंक प्रगटेछेमाटे भविव्यतायेंदेखाड्यो तथा नंदिवर्द्धनादिकना भवमांपण भवितव्यता नित्यसहचारीहतीमाटे,तुजने पापनोउदयतोदेखाड्युंनही पणकदाचित् भवितव्यतायें पुण्योदयनीज मात्र अवगणनाकरी पण ताहराहितनाकरनारजे चारित्रधर्मादिक तेहने दूरकरीने मोहराजायें तहारी चित्तवृत्तिनामा अटवीनुंजेराजलइलीधुं इत्यादिक सर्वजेमाठाविलासथयाते सर्वपापोदयनुंज फलजाणजे.

वलीमेंपुछयुं हेस्वामि तोहमणा एमाठाआत्मानोधणी पापोदयते महाराथीदूरशी रीतेंगयो तेवारेंआचार्यबोल्या हेराजन् एपापोदय तेपोतानेस्वाधीननथी पराधीनछे एतो १कर्मपरिणाम २कालपरिणति ३स्वभावतथा ४भवितव्यता एचारनेवशछेवलीहमणाते चारेतहाराउपर सुप्रसन्नथयी पुण्योदयने ताहरापासेंमूकीने पापोदयनेदूरकीधोछे.

बीजुंवली नंदिवर्द्धनादिकोना भवमां विचक्षणाचार्यादिकनीसाथें जेसदागमादिक हतातेहनेंजेतें उलख्यानही तेपण एचारनाज प्रतिकूलपणाथी अने पापोदयनो सानिध्यपणोथयोतेथीजाणवुं तथा हमणाजे सदागमादिकसाथें ताहरोपरिचयथयो तेपणएचारनीज अनुकूलताथी अने पुण्योदयना सानिध्यपणाथीथयुंछे माटेहे राजा जेजेकांइ शुभकार्यनीपजे तेसर्व एहिजचार अथवा पांचमो पुण्योदयनी अनुकूलताथी रुडुंनीपजे तथाएहनीज प्रतिकूलताथी अशुभनीपजे.

एहवुंसांभलीने फरीमेंपुछयुं हेस्वामि ज्योतमेएरीतें शुभअशुभकार्यमां कर्मपरिणामादिकनेज कारणपणेकहोछो तेवारेंहुंतोकांइपण करनारनथयो तोशुंएमांकांइपण म

तुंनामथकी अने परमार्थथकीपण अगृहीतसंकेताहती वलीहमणातो तेपरमार्थे जाएयुं तेमाटेतुं नामथकीज अगृहीतसंकेताछो पण परमार्थेथीतोतुं विचक्षणाछो एहवाप्रकारें सर्वज्ञनीआज्ञानुंओलंघवुं तेविषे नवजंतुनाविपाकनेजोइ निर्मलआज्ञा पालवानेविषे पंमितपुरुषें रूडोयत्नकरवो.

इतिउपमिति नवप्रपंच कथारूप द्वारनेविषे आज्ञानोविराधवो अने श्रुतनामदादिकनो विपाकदेखामवारूप छठोअधिकारसंपूर्णथयो.

---

हवेसंसारीजीवकहेछे सांजलहे अगृहीतसंकेता माहरुंचोरनी अवस्थानुं स्वरूप तुजनेकहुंछुं तेमजहुं नवमांग्रैव्यकथकी तेनववेदवायोग्य गोलीनादेवाथकी जवित व्यतायें मुजने मानवावासनामा नगरेंमोकल्यो तिहां महाविदेहनामा चौवटामां सुकछानामाविजयें क्षेमपुरनगरें युगंधरनामाराजा तेहनी नलिनीनामाराणीनी कुक्षीनेविषे हुंपुत्रपणेआवी अवतर्यो तेहिजरात्रीनेविषे तेनलिनीराणियें हाथी वृषनादिक चौदसुपनदीठा मातापितायें तेहनाफलपुछवाथी सुप्रपाठकेंकह्युंजे तमारेघरे चक्रवर्तीपुत्रथसे इत्यादिक फलकह्युं तेसांजलीने माहरामातापिता आनंदपाम्या पछेगर्जकालपूरोथये हुंपुण्योदयेंकरी सहितजन्म्यो पितायें जन्ममहोत्सवकरी अनुसुंदर एहवुंमारुंनामदीधुं अनुक्रमें पांचधावमातायेंकरी लालतोपालतोथको हुं विद्याज्यास करवायोग्यथयो.

पछेकलाचार्यनीपासें हुंथोमाकालमां समस्तकलाओ सीख्यो अनुक्रमें यौवनअवस्थापाम्यो तेवारेंमाहरोपिता मरणपाम्यो पछेमहारा पितानापाटे बेसामवानारुं सामंतपुरुषें मुजनेराज्याजिषेक करवाने महोटोउत्सवकर्योतेसमयें आयुधशालामां चक्ररत्नप्रगटथयुं पछेतेचक्रनी उत्पत्तिनिमित्तें अठाइमहोत्सवकरीने हुंदिग्विजयकरवा निकल्यो छएखंमपृथ्वीसाधी अनुक्रमें चउदेरत्न नवनिधाननो अधिपतिथयो तेवारें खेचर अनेजूचर सर्वेराजायें जेलाथयी बारवर्षलगण चक्रिपदनो महोत्सवकर्यो एरीतेंअखंमपणे छखंमपृथ्वीना सुखने अनुजवता मुजने चौरासीलाखपूर्वअतिक्रम्या.

पछेवृद्धावस्थामां पूर्वेंसाधेलादेशोने फरीजोवानिकल्यो हुंलशकरेंसहित अनुक्रमें नानाप्रकारना देशोनेजोतोथको शंखपुरनगरने समीपेंआव्यो तेवारें सैन्यनेपछवामेमूकी थोमाकपरिवारें सहित चित्तरमननामा उद्याने कौतुकजोवानेअर्थेंआव्यो.

हवेहेनोली पूर्वें गुणधारणना जवमां महारोधर्माचार्यजे कंदनामामुनिहतो वली कुलंधरमहारोमित्र तथा मदनमंजरी महारीस्त्री एत्रणेनुवृत्तांत कहुंछुं ते सांजल.

चारुतानामे वैराग्यीछे तेहोनी अनुक्रमें एकक्षमा बीजीदयानामें बेकन्याओछे तेम
जवली उज्वलमानसनामानगरें शुद्धाभिप्रायनामे राजा तेहनी एकस्थिरता बी
जीधैर्यतानामे बेस्त्रीओनी अनुक्रमएकनम्रता बीजीसत्यतानामे बेकन्याओछे तेम
ज निर्मलचित्तनामानगरें श्रेष्ठाभिप्रायनामेराजा तेहनीएकशुद्धता बीजी पापभीरु
ता एबेस्त्रीओछे तेहनीअनुक्रमें एकसरलता बीजी अचौर्यतानामें बेकन्याओछे ते
मज शुभ्राचित्तनगरें सदाशयनामेराजा तेनी एकवरेण्यता बीजीप्राधान्यता तेहनी
अनुक्रमे एकब्रह्मरति बीजीमुक्ता एबेनामे बेकन्याओछे तेमज सम्यक्तनामा प्रधान
नी सुदृष्टीनामेस्त्री तेहनी विद्यानामेपुत्री तथाचारित्रधर्मराजानी विरतिनामेराणी
तेहनी निरीहतानामापुत्री एदशकन्यानामकह्या.

वलीकंदमुनियेंपुछ्युंजे हेभगवान एतमारीकहेली दशेकन्याओने एगुणधारणना
माराजाते किवारेंपरणसे तेवारेंआचार्यकहेछे हेमुनिजेवारें कर्मपरिणामनामाराजा
तेकालपरिणतिनामा पोतानीस्त्री तथास्वभावनामाप्रधाननीसाथें विचारकरी भवित
व्यतानी अनुज्ञाने ग्रहणकरी पुण्योदयने आगलकरी कन्यानामातापिताने अनुकूल
ताकरीते कन्याआपसे तेवारेंनिश्चेंपोतानीयोग्यताने आश्रयीने एराजातेकन्याओपर
णसे माटेजो एसगुरुनाअभ्यासेंकरी पोतानीयोग्यताने उपजावेतो कर्मपरिणामना
मा राजापण सर्वसामग्रीमेलवी एदशेकन्याओआपसे एहवुंसांभली कंदमुनिबोल्या
जे हेस्वामि तमारापसायथीज एराजायोग्यतापामसे तेमाटेकृपाकरीने जेमएराजा
तेकन्यापरणवाने योग्यथासे तेहनोउपायकहो हवेसांभलहेभद्र हेअगृहीतसंकेता
श्रीनिर्मलाचार्य तेहनोउपायकहेछे तेहुंएकाग्रचित्तें सांभलुंछुं.

जेपुरुष समस्तप्राणीनेविषे मैत्रतापणोविचारे अनेबीजानाकरेला पराभवसहन
करे उपसर्गसहेतोथको पणएमविचारेजे एमहाराकर्म निर्जराकरवानुं साह्यकरेछे परो
पकारचिंतवे परनेपराभवकरवा होयतेनिंदे मननेस्थिरतापणेकरीने मैत्रीभावनेधरें
तेपुरुषने क्षमास्त्रीते पोतानीमेलेज वांछावंतथयीने परणे.

वलीजेपुरुष परनेसंताप करतानथी तथा परोपकारकरेछे जेहवीपोतानीआत्मा
तेहनीपरें सर्वजीवोप्रतें देखेछे परनेदुःखीदेखीने पोतेंदुःखवंतथाय समताआदरे ते
पुरुषदयानामास्त्री परणवानेयोग्यथाय तोतेहनेपोतानीमेले दयास्त्रीआवीपरणे.

वलिजेपुरुष जातीमदआदेदेइने आठमदवर्जितपणुं आदरेछे तथाविनीतपणुं
मारवणनीपरें चित्तसुंकुमालतापणुं इत्यादिकउपायेंकरी नम्रतास्त्रीनेपरणे.

जेपुरुष परनाममर्मप्रकाशवाने तथा परनींनिंदाकरवाने शून्यचित्तराखे कठोरवच

हवेसांजलहेनोजी शंखपुरनगरनोस्वामी माहरोमामो श्रीगर्भनामाराजा तेहनी कमलिनीनामेस्त्री तेवलीमहानद्रानीमातानीबेहेनथाय तेस्त्रीनरतारें संतानपामवा नेअर्थे अनेकउपायोकरचा एअवसरें कुलंधरनोजीव घणाजवनेनमवेकरीने संतुष्टथ यी एहवीजवितव्यताना वशथकी कमलिनीना कुक्षीनेविषे पुत्रपणेअवतरचो तेहिज रात्रे कमलिनीयेंस्वप्नदीतुं जे कोइकसुंदरआकारवंतपुरुष महारामुखमां प्रवेशकरी ने पेटमांथयीनिकल्यो तेवारपछि कोइकनीसाथें जतोरह्यो पछेतेस्वप्ननो नावार्थपुछे थके राजाकहेछे हेदेवीतुजने पुत्रथासे पणतेबालकअवस्थामांज कोइकगुरुनाउप देशथी दीक्षालेसे एहवुंसांजलीने कमलिनीराजीथयी.

अनुक्रमेंगर्जवधतेथके त्रीजामहिनाथी मांमीने कमलिनीना मनमां गर्जना अनु जावथकी जेजेउत्तमउत्तमदोहला उपना तेतेसर्वेराजायें संपूर्णकरया पछे गर्जकालपू रणथये रूडेमुहूर्त्तेंपुत्रजन्मथयुं तेहनो महोत्सवकरी पुंमरीकएहवुंनामदीधुं.

एहवामां श्रीसमंतजड्नामा आचार्यने केवलज्ञान उपनुंछे ते चित्तरमनामा उद्यानेनेविषे समोसरचा तेवारें कोइकरीतें सुललितानहीजाणे तेवीरीतें महाजडा नामा प्रवर्त्तिनी वांदवानेअर्थेंआवी तेवामांसजामां कोइकें राजपुत्रनो जन्ममहो त्सवादिक वृत्तांतकह्यो तेवारेंकेवलीबोल्याजे एराजपुत्र लघुकर्मवंतछे माटेतुरतथोडा कालमांचारित्रव्रतग्रहणकरी सदागमने आराधसे इत्यादिकवातसांजली गुरूप्रतेनम स्कारकरी महाजडासाध्वी अपासरेआवी.

तेवामां सुललितापण चित्तरम उद्यानें कौतुकेंतत्परथकीगयी तेणेपण तेराज पुत्रनागुण वर्णवतायकां समंतजड्नामा गुरुनेदीठा वलीगुरुयेंकह्युं जेकर्मपरिणाम राजाअनेकालपरिणती राणियें अनुकूलथयीने एपुंमरीकने मनुष्यगतिनगरियें आ णयोछे तेमाटेएहनो जव्य पुरुषसुमतिएहवुंबीजुंनामपणकहियें एमहागुणवानथवानुं छे इत्यादिकसांजलीने सर्वसंघहर्षवंतथयो अनेसुललितातो तेहना जावार्थने अ णपामतिथकी चिंतवणाकरवालागीजेएतो शंखपुरनगरछे माटेआगुरुयें मनुष्यग तिनामा नगरकेमकह्युं तेमज एनगरनोश्रीगर्भनामेराजा अने कमलिनीनामेराणीछे ते हनेछेकाणे कर्मपरिणामराजा अने कालपरिणतिस्त्री एबेने एराजकुमरना पितामा तापणेगुरुयेंकेमकह्या वलीराजपुत्रनोपणजव्यपुरुषसुमति एहवुंअन्यथा बीजुंना मकेम गुरुयेंकह्युं वलीएगुरुनाविगुणने शीरीतेंजाणेछे

एरीतें सुललिता संदेहेपीडितथकी महाजडासाध्वी पासेआवीने तेहनुं कारण पुछवालागी तेवारे सुललिताने घणी मुग्धाजाणीने महाजडायें चिंतव्युंजे एहिजएह

तेवारेंकेवलीभगवानबोल्या हेराजा अनंतीवार तमेंपूर्वेंद्रव्यलिंगोआदस्त्या तोपण तेथीकांइ अर्थसिद्धिनथयी माटेअमाराकहेलामार्गेप्रमाणे हमणातमे गुणनोअभ्यास करो पछे योग्यताजोइनें चारित्रधर्मराजानो सद्बोधनामाप्रधान आवीनेपोतानीमेले तुजने विद्याकन्या परणावसे तेथीतमनेसर्वतत्वनोपरिज्ञानथसेतेणेकरी भावशुद्ध थयेथके सर्वदशेकन्याओतुजनेमलशे माटेहमणाकाल विलंबकरवुं तेहिजतुजने कह्या एकारीछे एहवुंगुरुनोवचन प्रमाणकरी गुरुनेवांदी परिवारसहितहुं महारेघरेंआव्यो.

हवेजेगुरुनोकह्योमार्गें तेणेकरीहुंगुणनो अभ्यासकरतोथको केटलाकदिवसवि तिक्रम्या एकदिवसें शेषथोडीरात्री रहेथके हुं गुरुनीकहेलीदेशनाने रुडेप्रकारेंविचा रुंछुं तिहांसद्बोधनामा प्रधानेंआवीने आस्तिक्यता तेनिश्चेंतत्वनुंजाणवुं तथा संवे ग उपशमादिक अनेकसुंदरीयेंशोभित विद्यानामा कन्यामनेपरणावी तेवारपछि प्र भातकालें गुरुने सन्मुखजइ नमस्कारकरीने धर्मदेशनासांभलुंछुं तेटलामां वली गुरुबोल्याजे हेराजन् गयादिवसें कर्मपरिणामादिकना अनुकूलपणाथकी तुंवि द्याकन्याप्रतें परण्यो तेसांभलीमेंपणकह्युं खरीवातछे माटेहेस्वामि तमारोप्रसाद तेहिज इहांकारणछे तेवारेंवलीकेवलीकहेछे हेराजन् एहवुंव्यतिकरकहुंछुं तेसांभल.

विद्यास्त्रीनेलेइने सद्बोधप्रधान ताहरेपासेंआवतोहतो वचमां ज्ञानावरणीनामा राजायें महोटुंयुद्धकर्युं पछेज्ञानावरणीने जीतीलीधायी तेणेमोहराजापासें आवीपो कारदीधी तेवारें क्रोधायमानथयोथको मोहराजापोतानुं सैन्यलेइने ताहरेसन्मुख आवतोहतो पणकर्मपरिणामराजानी अनुकूलतानहती तेथीचारित्रधर्मराजानो प राक्रमवध्यो माटेतेणेवचमांज मोहराजानुंसमस्तसैन्यने मथनकर्युं वली राग द्वेष अने पापोदयादिकना सुभटोनेप्रहारेंकरी जर्जरीतकस्या तेवारपछि निरविघ्नपणे तेवि द्यानामाकन्या परणी हमणाते मोहराजादिकसर्वे जीवितव्यने वांछता नासीने कोइक दिशायें छुपीरह्याछे तोपणतेमोहराजादिकछिद्रना जोनाराडुर्जनो कांइकआंतरोपा मीने तुजनेउपद्रवकरवाने अर्थेंआवसेपणते ताहरे सद्बोधप्रधानना वशथकी चा रित्रधर्मनुं सैन्यआगलकरीने नासपमाडवा इत्यादिक शिक्षाअवधारी देशना पूरीथयाथी गुरुनेनमिने हुंमाहरेघरेंआव्यो हवेमनेधर्ममांदृढकरीने पूर्णमासकल्प थयेथके निर्मलाचार्यनामाकेवली अन्यस्थानकें विहारकरीगया.

एकदिवसें सद्बोधमंत्रियें धर्मध्यान अनेशुक्लध्याननामा सुभटोमनेदेखाडया वली तेहनीपरिचर्यानीकरनारी तेजूलेस्या पद्मलेस्या अने शुक्ललेस्यानामे एत्रणस्त्रीओदे खाडी वलीमने कह्युंजे एहनीतुं निरंतरसेवाकरजे तेवारपछिमें तेहोनीसेवा आरंभी

एहवुंसांजलीतें कह्युंजे हेजगवन् एतोमनुष्यगतिनगरीनथीपण एतोशंखपुरछे वलीआ चोवटुंनथीपण चित्तरमननामा उद्यानछे तेमजइहांतो श्रीगर्जनामाराजा छे पणकर्मपरिणामनामा राजानथी तेमाटे तमे एमकेमकहोछो एहवुंकहेथके गुरुयेंकह्युंजे तुंतो अगृहीतसंकेताछो माटेएवचननो परमार्थजाणतिनथी.

वलीतें चिंतव्युं जेअहोजगवंते तो महारुंपण बीजुंनामकह्युंछे एम विस्मयनेपामिरही तेवारें महाजद्रायें विचार्युं जे कोइकमहापापीजीव नरकगतिनो जवावालो हशे तेहनुं एहवुंस्वरूप जगवतेंप्रकास्युं तेवारेंकरुणाकरीगुरुनो आदेशलेइने मुजनेप्रतिबोध करवानेअर्थें महाजद्रासाध्वी महारासमीपेंआवीने मुजनेकह्युं केअहोजद्रतुं सदागमनुं शरणकर जेथकी तुजने चोरीनाअपराधथी उपनीजे विटंबनाते थायनही अने विकस्वरपणुंपामें एहवुंकहिनेमुजने इहांआण्युं तेवारें हुंजगवंतने देखीने अणकहेवायोग्य आनंदनाबहुलपणाथकी मूर्छापाम्यो वली चैतन्यवंतथयो तेवारेंगुरुयेंकह्युं हेमहाजाग्यवंततुं कोइनोजयराखीसनही इत्यादिक वचनेकरी गुरुयेंमहारी आश्वासनाकरी तिवारेंदुष्टाशयादिक विटंबानानाकरनार ते मुजनेत्यजीने वेगलारह्या तेहथीहुंस्वस्थथयो.

तेवारेंतें माहरुंस्वरूप पुछ्युं तेयद्यपि सदागम अनेप्रज्ञाविशाला एबेहु महारुंस्वरूपजाणेछे तोपणमेंतुजने तथापुंमरीकने प्रतिबोधवानेअर्थें महारोमूलथी वृत्तांतकह्यो.

वलीसांजलहेजोली माहरुंअंतरंग चोरीपणानुंस्वरूपकहुंछुंतेमज हुंनवमा ग्रैव्यकथकी मुकह्नामा विजयनेविषे क्षेमपुरीनगरियें जुगंधरराजानी नलिनीराणीना कुंखेपुत्रपणे उपनुं तेवारें जवितव्यतायें मोहादिकनेजणाव्युं जे संसारीजीव हमणा सम्यक्त्वथकी जूदोथयोछे तेमाटेतमारो बलफोरववानो अवसरछे एहवुंसांजली मोहादिकेंमुजने बालपणाथकीज मांसादिकव्यसनमांप्रवर्त्ताव्योहतो वलीयौवनअवस्थामांतो चक्रवर्त्तिनीपदवीहती तेमांतो महाआरंज महापरिग्रहें करीविटाणोथको हिंसा क्रोध मृगयादिक व्यसनकरुं एरीतें महारी चित्तवृत्तिनामा अटवी मलिनथयी दुःखेंतरवायोग्य प्रमत्तनामानदीपूरेंजरीआवी एमअनुक्रमे सर्वमोहराजानुंलशकर महारीपासेंआव्युं अने चारित्रधर्मनामाराजानुंलशकर सर्व दूरथइगयुं तेवारें मोहराजायें फरीराजसचित्त अने तामसचित्तनामा नगरनुं स्थापनकर्युं.

पछेमोहराजानुं अविद्यामयशरीरते पुष्टथयुं अने पोतानापरिवारने कहेवाला गोजे अहोजाईयो आपणाजाग्योदयथी घणाकालें जवजंतु आपणेवशआव्योछे पूर्वेंआपणने एजवजंतुयें घणानिर्बलकर्याछे तेहजीसुधी वीसरतुंनथी तेमाटेहवे त

मेवालाने भूमिप्रमुखजीवानीशुद्धीतुं करवुंथायछे बीजीभाषासुमतिते वचनशुद्धीप्र तेकरेछे त्रीजीएषणासुमतियें अहारनीशुद्धिकरे चोथी आदानभंडपात्र निखेवणासु मतिते वस्त्रपात्रादिक प्रमार्जनादिकनी शुद्धिकरेछे पांचमी पारिठावणियासुमतिते मलमूत्रादिकनी परिठवणाकरवाने शीखावेछे छठीमनोगुप्तिते मननेरूडेप्रकारें राखी स्थिरकरेछे सातमीवचनगुप्तिते सावद्यवचनबोलवानुं निषेधकरेछे आठमीकायगुप्ति ते असंवरित अंगोपांगनी चेष्टानेनिषेधेछे एरीतें एआठप्रवचनमाताते जैननगरनी स्वामिनीछे माटेएहोनीतुं सेवाकर एमपहेलादिवसें आठेप्रवचनमाताओ सद्बोधेंमा हारापासेंयथाविधियेंपूजावी एम आठप्रवचनमातानेपूजी पछेउत्कृष्टवीर्यरूप कुंभने विषे धर्मध्यानरूपअग्नीबालीने तेजलेश्या पद्मलेश्या शुक्ललेश्यारूप कुलवंतस्त्रीयेंम ने स्नानअंगरागादिक संस्कारकर्युं तेमजसमस्तधर्मराजाना सैन्यनापुरुषोये मनेविवि धप्रकारें शोभावंतकर्यो एरीतेंअलंकृतथयेलो सुजने कुंभनेसन्मुखबेसाम्यो सद्बोधप्र धान पोतेंपुरोहितथयीने कर्मरूप लाकडानाखवाथी धर्मध्याननामें अग्निदीप्तवंतथ यो तेमांभावनारूपकडछीएटलेघृतहोमवानोसरवोलेइ अने कुवासनारूप यव तिला दिक आहुतिनाद्रव्यने होमतेथके पछेसदागमनामा ज्योतिषियेंकह्युं एहवुं वृषलग्न नो अंश आवेथके क्षमानामे कन्यासाथें माहरेपाणिग्रहणकराव्युं तेथीशुभपरिणा मादिक परिकरसर्वे हर्षवंतथया निःप्रकंपतादिक प्रमोदवंतथया मंडलप्रते भमा डया एमअनुक्रमे तेहिजलग्ननेविषे दयादिकसमग्र आठेकन्यापरणी पछिहुंतोतेस्त्री ओसहवर्त्तमान निजवीर्यनामे आसनउपरबेठो चारित्रधर्मादिक हर्षवंतथया हवेय थपि विद्यानामाकन्यानो मात्रपाणिग्रहण करेथकेज महामोहादिक प्रच्छननीपरेंथ याहता पणदग्धरज्जुसमानरह्यावली क्षमादिकना विवाहथकी तोलशकरेंसहित वैश्वा नरादिक तेपापोदयेंसहित प्रछन्नतापाम्या एटलेधृतिश्रद्धादिक तेपण मने आविमल्या पछे तेकन्याओनामिलापथी जेसुखतुंअनुभवथपतुं तेणेकरीपोतानुंज्ञान प्राप्तथयुं तेज्ञाननायोगे उत्कृष्टसुखना प्राग्भारेंकरीने श्रीगुरुनावचन अंगीकारकर्या.

हवेएकदिवसें श्रीनिर्मलाचार्यनामा केवलीआव्या तेहनेवांदवानेअर्थें हुंगयो ध र्मदेशनासांभली मेंव्रतलेवानी याचनाकरी गुरुयेंकह्युं हेराजन् जोपणक्षमादिकना वि वाहपछि भावथकीतुं साधुनासरिखोजछो तोपणलोकमां व्यवहारज बलवानछे मा टेहवे द्रव्यदीक्षाआपियें तेवारें पोतानापुत्रने राज्यआपी सातक्षेत्रेंधनखरची मदन मंजरी अनेकुलंधरादिक घणाभव्यलोकें सहित श्रीनिर्मलाचार्यनामा केवलीपासेंथी मेंदीक्षालीधी पछेहुंअनुक्रमें इग्यारअंगभणी यथाविधियें संयमपालीने अंतेसंलेष

वेंवृत्तांतदीगो वलीतेहिज शुभअध्यवसायना प्रबलताथकी अवधिज्ञानउपनुं तेह नाबलथकी गुणधारणना भवनीसीमांसुधी महारुंपण भवचरित्र एणेदीठुं तेवारें मनेकह्युंके हेराजन् तुजनेनिर्मलाचार्यनावचन अने क्षमादिककन्याना विवाहनुंसुख तथाग्रैव्यकादिकनासुख सांभलेछे केनही.

इत्यादिकवचनसांभली मनेपंडितवीर्योल्लास उपनो तेहनाअनुभवथकी मोहराज्ञाने पराभवकरी सम्यक्त अने सदागम एबेहु महारेसन्मुख आव्या तेवारें चित्तवृत्तिनामा अटवीमां बेहुसैन्यनुं युद्धथयुं पणमहारी प्रबलताथकी मोहराजाना सैन्यने वीर्येंरहितकरी चारित्रधर्मनामा राजा जयरूपलक्ष्मीपाम्यो तेहथीमने गुणधारणनाभवनी सीमालगण जातिस्मरणज्ञान प्रगटथयुं वलीविशेष शुभअध्यवसायना योगथी असंख्याता द्वीपसमुद्रना विषयजाणवारूप अवधिज्ञानउपनुं तेणे करीमें असंख्याताभवना प्रपंचदीठा वली सिंहाचार्यनाभवमां भणेलुंजे चवदपूर्वश्रुततें मने सांभलीआव्युं.

तथा निगोदथी मांमीने भवनोविस्तारजे निर्मलाचार्यें कह्योहतोते सर्वसांभर्यो पछेमने उत्कृष्टवैराग उपनुं तेथी गुरुनीकहेली चोरनीअवस्था साचीकरवाने अर्थें वैक्रियशक्तिनाबलथी चोरनुंस्वरूपकरी प्रज्ञाविशालानी साथेइहांआव्यो तेवारपछि तुजने अने पुंमरीकने प्रतिबोधवानेअर्थें गुरुयें महारामुखथीज महारो वृत्तांतकहेराव्यो छमहिनासुधी कहेवायोग्य एवृत्तांतहतो पण भगवंतना प्रसादथकी मेंत्रणपहोरमां हेलोलीएमाहरा अंतरंगनी चोरीनुंजेस्वरूप हतुंते ताहरा आगल कहिसंभलाव्युं

तेमजवली बहुलतायें सर्वसंसारीजीवोनेविषे पणहुंदेखुंछुं एरीतें संसारीजीवनो कहेलोवृत्तांत सांभलीने सुललिता भावितचित्तवंतथइ तेमजराजपुत्र पुंमरीकपण हर्षवंतथको फरीपुछवालागोजे हेआर्य हमणाताहरी चित्तवृत्तिनामा अटवीमां शोवृत्तांतछे तेवारें अनुसुंदरबोल्युं जेसांभलहे सुमति जेवारेंहुं सदागमनुं शरणकरीने संवेगेंपूर्योथको पोतानोवृत्तांत कहेवानेप्रवर्त्यो तेवारेंज चारित्रधर्मराजा पोतानो अवसरजाणीने सैन्यसहित महारीपासें आववाने प्रवर्त्यो तेथी सात्विकमानस नामानगरते आनंदवंतथयो वली विवेकनामापर्वत निर्मलथयो तथा जैनपुरनगरवस्युं वली चित्तसमाधानमंमपइत्यादिक स्थानको वृद्धिपाम्या अने महारादेखतांचारित्रधर्म अने मोहराजानो माहोमांहे महोटुंयुद्धथयुं पणसम्यक्त अने सद्बोधसहित महारा पराक्रमना अनुभावथकी चारित्रधर्मराजायें तेमोहराजाने सैन्यसहित वीर्यरहितकर्युं हमणा चारित्रधर्मराजा सर्वलशकरसहित माहारापासेरह्योछे द

त्यादिकुं शैलराजानेवशे माहारीआत्मस्तुतिकरवाने प्रवर्त्यो. पछीज्ञानावर्णीकर्म आ श्रितथयोथकोगर्वेकरी एकअर्थने बीजीरीतेकहुं जेमतेमविरुद्ध परूपणाकरुं.

एरीतेंप्रवर्त्तमानथकोहुंरह्यो पछेमिथ्यात्वना सान्निध्यथकी चउदपूर्वमाहेला ढहे लासाडाचारपूर्व मने मूलथीअर्थसहितविशरीगयां एटले . प्रमत्तनामानदीपूरेंसहित महारी चित्तवृति अटवियें वहेवालागी तेवारेंमें विचार्युंजे अहोइतिआश्चर्य जेजुवो तोखरा केवामहारा शिष्योछे तथामाहराश्रावकपण कहेवानक्तिवंतछे तेमज ऋद्धि गारवादिकना वशथकी वस्त्र पात्रउपधी शय्या आसनादिकना सुखनो गर्वकरवालागो तेमज रसगारवनावशथकी अहारादिकनी लोलताकरी आधाकर्मादिकदोष उपार्ज्या.

एहवाप्रकारनो मनेरहेतोथकोदेखीने चारित्रधर्मादिकतो महाराथी दूरथया तेथी यतिनालिंगने धरतोथकोपणहुं मिथ्यादृष्टिथयो तेवारें कर्मपरिणामादिक क्रोधवंत थयीने पापोदयनामेएकपुरुष आगलचालनारो महारीसाथेआपीने गोलीनाक्षयथ वाथी फरीमने एकेंद्रियनगरेंमोकल्यो तिहांवलीमने एकअत्यंतअबोध अनेबीजो ती व्रमोहोदयनामें बेहुमल्या तेणेकरी अनंताकालपर्यंत सूक्ष्मवनस्पत्यादिकमां नवितव्य तायें तथाआयुकर्मराजादिकेंमने अत्यंतविटंबनाकरी.

वलीअनुक्रमें बीजीगुटीकाना आपवाथी पंचेंद्रियपशुसंस्थाननामानगरें मुजने आण्युं तेवारपछि व्यंतरादिकनेविषेआण्युं तेवारपछि मनुष्यनोनवपामि सम्यक्तमूल ग्रहस्थनोधर्म आराधीने सौधर्मादिकदेवलोकोनेविषेगयो तेवारपछि किवारेंक अकर्म नूमिनेविषे युगलीयांपणे उपनुंवलीकर्मनूमिनेविषे मनुष्यपणेउपनुं तिहांअज्ञानना वशथकी विषनक्षणकरवुं पर्वतउपरथी जंपापातखावुं हाथरूपपात्रमां निक्षानुंलेवुं माघमहीनानुं स्नानकरवुं इत्यादिक कष्टोप्रतें अनुनवीने किल्बिषिओ देवताथयो.

वलीमनुष्यपणुंपामि तापसादिक अवस्थाप्रतेंसेवीने ज्योतिषिदेवताथयो वली मनुष्यपणे इव्यसाधुपणुंग्रहीने केवल क्रियानापालवाथकी नवमांग्रैव्यकसुधीग यो एमहेनोली सिंहाचार्यनानवमां अहंकारनाकरवाथकी अनेक्रियानी शिथिलता थकी हुंअनंतोसंसार नम्यो तेमांविचित्रप्रकारें डुःखनी परंपरा अनुनवी अनेजोते नवमां ज्ञाननोमद नकरयोहतो तोतेहिजनवें मोक्षेजात.

इत्यादिकवात सांनलीने अगृहीतसंकेताकहेछे के जो सिंहाचार्यनानवमां नि र्मलस्थिरपणे मोहराजानीआज्ञा पालीतमानथयी तेथीज एटलीकष्टनी परंपरानोग वी तेमाटेतेंतिहां जेजे ज्ञाननामदेंकरी सद्बोधनी आज्ञानेविराध्युं तेकामतेंरूडुंक र्युंनही तेवारें संसारीजीवकहेछे नद्रेनद्रे हेनोलीतेंजेकह्युंते रूडुंरूडुं तेमाटेपूर्वेंतो

धनकर्युं तेहनेपणकेम संजालतीनथी. इत्यादिक प्रचोरणावचनेकरी अनुसुंदरें वारंवार पूर्वें अनुजूतवृत्तांतनुं फरीफरी संजलाववेकरीने सुलजिताने प्रतिबोध कर्यो तेसांजलीने पुंडरीककुमरने जातिस्मरण ज्ञानउपनुं तेथीमूर्बापाम्यो तेवारें दुःखें व्यग्रचित्तवंत एहवा श्रीगर्जराजादिकें शीतलउपचारेकरीने सावधानकर्युं पछेतेकुम रबोल्यो हेपिता एसर्वसाचीवातछे हुंताहरापसायथी जातिस्मरण ज्ञानपाम्यो तेथी हुंपूर्वें कुलंधरनामा गुणधरनो मित्रहतो तिहांनिर्मलसूरिना वचनरूप अंशसांज लीने मैंव्रतग्रहणकर्यो तोहवेपण संसारबांमीने व्रतआदरुं एहवुंसांजलीने पुंमरीक नीमाता नलिनीराणीरोवालागी तेवारेंश्रीगर्जराजा कहेवालागोजे हेस्त्रीकारणविना शावास्तेरडेछे एतोप्रथम ताहराज स्वप्नने अनुसारेंकरी अमेएरीतेंजाण्युंछे तोतेस्वप्नने तुं केमसंजालतीनथी तेमाटेआपणे बेहुनेपण चारित्रव्रतलेवुं सारुंछे एमकहिनेते बेहुस्त्रीजर्तार संयमग्रहणकरवामां एकचित्तवंतथया.

हवेसुलजिता आंसुयेंकरिसहित नेत्रवंतथकी गुरुनेकहेछे हेजगवानमेंपूर्वें केह वुंडुःकर्म कर्युंहशे केमके सेकडागमें उपदेशेंपण मुजनेज्ञानोदयथतोनथी वलीवैरा गना संवेगजाव पणप्रबलथतोनथी तेवारें समंतजद्रसूरिनाकहेवाथी आगलज अनु सुंदरकहेछे हेजोली पूर्वेंतें मदनमंजरीनाजवमां दीक्षालेइने ज्ञाननाअभ्यासमां शिथलतापणुंकर्युंहतुं तेहनाविपाकथी इहांएरीतें दुर्बोधवंतथइछो तथावलीतेजवमां तुंपुरुषद्वेषणीहति तेमइहांपण नविपुरुषना संगनेइछतिनथी.

एहवुंसांजलीने सुलजिताखेदेसहितनेत्रथी आंसुमूकति अज्ञानने नाशकरवानो उपाय गुरुनेपुछवालागी तेवारें अनुसुंदरेंकह्युं हेराजपुत्री हमणातुजनेते कर्मक्षय रूपछे माटे विषादनेमूक अने सदागमनी जक्तिकर एहनी जक्तिज प्रायें सर्वप्रा णीओने तत्वज्ञाननो हेतुछे इत्यादिक वचनेकरी संवेगनीवृद्धीथयी अनेएहिजसदा गमछे एहवीबुद्धीयेंकरी जगवंतश्रीसमंतजद्रना पदकमलनेविषेपमीने कहेवालागी.

हेनाथ हुंहमणाअज्ञानरूप कादवमांबूडीछुं माटेमहारो उद्धारकरो उद्धारकरो एमघणीक जक्तिना प्रागजारवशथकी घणीककर्मेनी जालखपावी तेथीतेसुलजिताने गुरुनेपगेपडवाथकीज जातिस्मरण ज्ञानउपनुं तेहनाप्रजावथी साक्षात् मदनमंजरी इत्यादिकना कारणदीठुं तेवारें हर्षवंतथकी अनुसुंदरना पगकमलेपडीनेकहेछे हेतात तुंमहारोमहोटोजाइ तथागुरुछो माटेतातकह्युं तारावचननेविषे मुजनेनिश्चयथकी प्रतीतथइ केमकेजातिस्मरणना उपजवाथी साक्षात्मेंसर्व तमारुंकहेलुं वृत्तांतदीठुं माटेहमणाहुं संसाररूप बंदीखानाथी मूकाणीछुं जोपणहुंमूर्खहति तोपण एजगवाने

तिहांकंदमुनि नवितव्यंताना वशथकी नवचक्रनगरमां नमतो किहांक स्त्रीवेद उपार्जनकरी इहां सुकच्छनामा विजयनेविषे हरिपुरनगरें नीमरथनामाराजानी सुनद्रानामेराणीने कुंखे पुत्रीपणे अवतरीने तेहनापिता मातायें महानद्राएहवुंनाम दीधुं हवेमहानद्रानो वली समंतनद्रनामे महोटोनाइछे तेएकदिवसें सुघोषनामा आचार्यनी देशनासांनली वैराग्यपाम्योथको मातापितानी आज्ञालेइने व्रतअंगीकारकर्युं अनुक्रमें चउदपूर्वनणी गीतार्थथयो तेवारपछि योग्यतादेखीने गुरुयेंआचार्यपददीधुं पछे अनेकसाधुयें परिवर्योथको समंतनद्रनामाआचार्य अनेकप्राणीनाचित्तरूपपृथ्वीनेविषे बोधरूपबीजने वावतोथको पृथ्वीनातलनेविषे विहारकरतोफिरेछे हवेमहानद्रातो यौवनअवस्थापामिथकी गंधनामानगरना दिवाकरराजाने एनापितायें परणावी नवितव्यतानावशथकी तेदिवाकरराजा मरणपाम्यो.

तेवारें महानद्राघणाशोकेकरी आकुलथयी एहवामां समंतनद्रनामा आचार्यतिहांआव्या.तेणेपोतानी बहेनने शोकेपीडितजाणी देशनाआपी बोधपमाडी दीक्षाआपी अनुक्रमे इग्यारअंगनी नणनारीथयी तेवारेंगुरुयें प्रवर्त्तिनीनेपदेंथापी.

एकदिवसें अनेकसाध्वीओनासमूहें परवरीथकी विहारकरती रत्नपुरनगरेंआवी तिहांमगधसेननामेंराजा तेहनीसुमंगलानामाराणीनीकुक्षीयें नवितव्यतानावशथकी तेमदनमंजरीनोजीव पुत्रीपणेआवीउपनो मातापितायें सुललिता एहवुंनाम दीधुं अनुक्रमें यौवनअवस्थापामि पण विवाहनी वांछनाकरेनही केवल पुरुषद्वेषणीथइ पछेतेहना मातापिताबेहु चिंतायें पीडितथया तेवामां महानद्रासाध्वीनुं आववुंसांनलीने तेबेहुराजाराणी परिकरेसहित रूडीसुललितानामापुत्रीयेंसहित वांदवानेअर्थे गयां महानद्रासाध्वीयें धर्मनीदेशनाआपी.

हवेसुललिताते देशनानानावार्थने अणजाणतीथकीहति तोपणमहानद्राना दर्शनथीज स्नेहनुंप्रबलपणुंउपनुं तेहथी उपनुंजेसुख तेहनेविषेंज पोतानारुडा लोचनथाप्याछे पछे पोतानामातापिताने कहेवालागीजे तमेंआज्ञाआपोतो हुं प्रवर्त्तिनीना चरणनीसेवाकरुं तेसांनलीने सुमंगलानामाराणी तेपुत्रीनाविरहथकी रोवालागी तेवारें मगधसेनराजायें आश्वासनादेइने पुत्रीप्रतें महानद्रानेविषे स्नेहआसक्तजाणीने गृहस्थनेवेशेंज तेहने महानद्रासाध्वीपासेमूकी हवेमहानद्राते सुललितानेविविधप्रकारना उपदेशनीयुक्तियेंकरी धर्मनोउपदेश अंने धर्मनुंस्वरूपजणावे तोहिपणते नावार्थप्रतेंकांइजाणेनही एमअनुक्रमेंकरी महानद्रानेसाथें विविधप्रकारना नगरोजोतीथकी शंखपुरनगरेंआवी.

वि एकदिवसें समस्तअर्थने सारनूतपणुं जाणवानेअर्थे विनयसहित गुरुनेनमस्कारकरीने पुछ्युंजे हेजगवन् आगमरूपसमुद्रनो सारमुजनेकहो तेवारें आचार्यबोल्या हेआर्यजेध्यानयोग तेहिजसमस्तआगमोनो सारनूतपणुंछे केमके साधुने अनेश्रावकनाजेकांइमूलोत्तरगुणछे तेसर्व बाह्यक्रिया अनेध्यानयोगना फलनूतछे तेमाटे ध्यान तथाक्रियाना अंगनूतजेमूलोत्तरगुण तेणेकरी चैतन्यनी शुद्धिकरीने साधुयें ध्यानयोगसाधवो एहवुंसांजली पुंमरीकमुनिबोल्या.

योगनाअंगतेपूर्वेअज्ञान अवस्थामां पणहुंमोक्षमार्गनो कौतकीहतो माटेघणा कुतीर्थिने पुछेथके तेणेयथार्थ पोतानामततुं आलंबनकरी तत्वकह्युं हतुं.

तेमांएककहेछे के सर्वजगतनेहणीने पण बुद्धिकांइलेपातिनथी एटले जेमकादवथी आकाशलेपातोनथी तेनीपरें एआत्मा गमेएटली हिंसाकरेसमस्त जगतनेहणीनाखेतोपण पापेंकरीलेपातोनथी.

वलीकोइक एहवुंकहेछेजे जीवमात्रनेछेदीनेदी तथासेकडागमे पापोकरीनें पण एक विरूपाक्ष जेशिवतेहनुंस्मरणकरेथकेज तेप्राणी सर्वपापथीमुक्तथायछे.

वलीकोइकएमकहेछेजे अपवित्रहोय अथवा पवित्रहोय इत्यादिक पण सर्वअवस्थानेविषे प्रासथकांजे कमलसरिखानेत्रवंत एहवा श्रीजगवंतने समरेछे तेप्राणी बाह्यथी तथा अभ्यंतरथी पवित्रजजाणवा.

बीजावली पापनाशननामामंत्रनुं जापजपवुं तेहजपापनानाशनुंकरनारछेएमकहेछे केटलाकतो वायूनेजीतवुं पवननुंरोधवुं समाधीकरवी तेहनेज मोक्षसाधनकहेछे केटलाकवलीहृदयमांरह्युं जेहृदयकमल तेहनुंचिंतववुं तेनेज मोक्षनुंकारणमानेछे बीजावली रेचककुंनकादिकवायुनेजमोक्षनुं कारणजाणेछे तथाकेटलाक नादबिंदुचंद्रकला ज्योतिनाडी प्रणव शून्यादिकनुंध्यानकरवुं इत्यादिक योग्यपणेमुक्तिकहेछे एरीतें नानाप्रकारेंकरी ध्यानयोग वहेवानुंसारकहेछे पणएकजमोक्ष साधननेविषे अपर अपरजे जोगीछे तेहनावली ध्येयपणनानाप्रकारनाछे अनेसाधनतो सर्वएकमोक्षनुंजकहेछे एमह्योटोमने संशयछे एहवुंपुछेथके.

हवेआचार्यकहेछे हेजोलातुंतो सामान्यगीतार्थछो केमके जिनागमनुं रहस्य विशेषथकीजाणतोनथी माटेएसर्व परतीर्थिते खोटावैद्यजाणवा मात्रजिनराजरूप सद्वैद्यना पक्षनापकडनाराछे तेहनुंदृष्टांतकहुंछुं.

जेमएकनगरमां सर्वलोकरोगेकरीग्रस्तछे तेहांवली एकमह्योटोवैद्यछे तेदिव्यज्ञानवंत सर्ववैद्योना शास्त्रोनोउपजावनार समस्तरोगनोहरनार सर्वलोकोने उपकारनोक

ने प्रतिबोधकरवानो उपायछे पछे युक्तियेंकरी तेसर्वे वृत्तांतकह्यो वलीहेजद्रे जेतेस नामांव्याख्यानकरताथका सदागमनेदीगते पोतें नगवानछे एअतीत अनागत वर्त्तमान त्रणेकालना समग्रपदार्थनोजाणछे हुंपणतेहना प्रसादथीजाणुंछुं माटेतुं पण तेहनीसेवाकर जेथकीगुणनीवृद्धिथाय इत्यादिकवचने तेहने सदागमउपर स रागणीकरीने महान्नद्रासाध्वी तेहनेगुरुनीपासेतेडीआवी तेवार पछिसुललितायेंपण हर्षेकरी समंतन्नद्रनामा आचार्यनी पर्युपासनाकरवा प्रारंनी.

हवेपूर्णमास कल्पथये सदागमगुरु महान्नद्रानेकहेवालागाजे हेन्नद्रे तुंचालवामां क्षीणजंघाछो तेमाटेतुजने इहांजशंखपुरनगरेंरहेवुं केमके साध्वीयें आश्रितक्षेत्रमां बहुलतायें साधुनेरहेवुं योग्यनथी अप्रीत्यादिकदोषनेअणथवाथकी अमेआंहिथी विहारकरसुं वलीकालांतरें लानजाणी आवीसुं तिहांसुधीतुं जेते उपायकरी राज पुत्रनी सार्थेपरिचयकरीप्रतिबोधकरजे एहवुंकहिने आचार्य विहारकरिगया.

हवेमहान्नद्रासाध्वी पुंडरीकनामराजपुत्रने स्नेहेकरीसहितबोलावे अनेराजपुं त्रपण महान्नद्रानेदेखी हर्षवंतथाय एमकेटलेकदिवसें तेबालकसम्यक्प्रकारेंथयो तेहवोसमयजोइने समंतन्नद्रकेवली तिहांआव्या तेवारें महान्नद्रापणते राजपुत्रने सार्थेलेइ वांदवानेअर्थेंआवी अनेकह्युंके हेपुत्र आसदागमनामागुरुछे तेसांन्नली पुं मरिकेंकह्युं हेमाता एसदागमनेदेखी मनेमहोटो हर्षनोउदयथायछे माटेएगुरुनीपा सें हुंश्रुताभ्यासकरीस एमकही पछितेपुंडरीककुमर सामायिकादिक श्रुतन्नणवाला गो एरीतेंहेन्नद्रे एमहान्नद्राते कंदमुनीनोजीवजाणवो एतुंवली प्रज्ञाविशाला एह वुंबीजुंनाम गुरुकहेछे तथा तुंवली सुललिताते पूर्वेंमदनमंजरीनो जीवछोते तुं पर माथें अणजाणवाथकी अगृहीतसंकेता एहवुंताहरुंनाम गुरुकहेछे एवलीपुंडरीकना माराजपुत्र कुलंधरनोजीवतेहने नव्यपुरुष सुमति एहवुं बीजुंनाम गुरुकहेछे हवे महारीचोरीनी अवस्थानोवृत्तांत कहुंछुंतेसांन्नल.

आजेजइहां चित्तरमनामा उद्याने प्रासादनेआगल श्रीगुरु धर्मउपदेशआपेछे एट लामां हुंवनजोवानेअर्थें इहांआव्यो अने महाराजशकरनो कोलाहल शब्दथइरह्यो हतो तेवारें गुरुयें तुजने अने पुंमरीकने प्रतिबोधवानेअर्थें महान्नद्रानुं संबोधनकरी नेकह्युं के अहोप्रज्ञाविशाले आसंसारीजीवचोरछे तेहने चोरीनासुद्दासहित डुष्टा शयादिक राजानापुरुषेंबांधीने सर्वलोकनादेखतां मनुष्यगतिनगरीना महाविदेहरूप चउटामां नमावीने कर्मपरिणामनामे राजानीआज्ञायेंकरी पापीपिंजरनरकमां ना खवानेअर्थें विधकरवानी पृथ्वीयेंलइजायछे तेहनोए कोलाहलथायछे.

न अंगीकारकरेछे तेओनेकर्मरूपरोगथी निश्चेथकी मूकावबुंथायछे जेवलीअधन्यप णे कुतीर्थरूप खोटावैद्यनी सेवामांतत्परछे तेओने कर्मरूपरोगनो मूकावबुंथायनही केमके विपरीतआचरणथकी उलटीरोगनी वृद्धिथाय.

वलीअन्यतीर्थिनेविषेपण किहांक सांख्यादिकमत आस्तिकमां कर्मरूपरोगनेहल काइथवापणुं देखायछे केमके तेहनामतना ग्रंथगुंथवावाळामां सत्य संतोष क्षमा धृति आर्जवइत्यादिक सर्वज्ञना वचनतुंज माहात्म्यजाणवुं वलीतेहनापोतानाकल्पि त यज्ञ होम पशुवधादिक उपदेशोमां तत्परोनो कूटवचनपणोछे तेमांकर्मनुं हल वाथवापणुंनथी उलटीकर्मरूपरोगनी वृद्धिकरेछे एपरमार्थछे माटेजिनशासन तेहि ज कर्ममूकाववानुं कारणजाणवुं.

हवेजे सर्वज्ञरूप सद्वैद्यनावचनथी केवळविपरीतजछे एहवाजे चार्वाकादिक नास्तिकछे तेहनाआश्रयजातो एकांतथी कर्मरूपरोगनी वृद्धिनाकारणभूतजछे ते माटेहे महाभाग्यवंत सर्वशासनते वीतरागना कहेलावचनथीज निकळ्याछे तेमाटेए जिनशासनते सर्वमतव्यापककहियें एमछते जेकांइपण सत्य अहिंसा ब्रह्मचर्य शौच इंद्रियनिग्रह तथावलीजेकांइ निराशीभावें तप ज्ञान ध्यान देवगुरुनीभक्ति इ त्यादिक रूडापणाना स्वभाव परतीर्थिओमां देखायछे.

पणतेयाग होमादिकना उपदेशरूपवचनेकरी मिश्रितछे माटेरूडीसंगतिप्रतेपाम तानथी तेथीतेजूदाजदेखायछे तेमाटे जिहांतिहां सर्वदर्शनोमां पणभावथकी सर्व ज्ञनावचन आचरवाथीज मोक्षछे पणतेमां कोइपणदर्शननालिंगनुं कांइकारणनथी.

जेवलीसर्वज्ञनाकहेला ज्ञानथीविपरीत एहवामार्गआचारवंतछे अनेकहेछेकेअमे ध्यानीछैयें एवुंमानेछे तेतोबोलवामात्रज जाणवा पणविवेकीने आस्थाना करनार जा णवानही एहवुंजाणीने सर्वज्ञनावचनोमां जेकांइमनने निरोधकरनाराहेतुने देखाडना राजेउपाय तेसर्वस्वार्थसाधकजछे जेमएग्रंथनुंमूळकरनार सिद्धर्षिगणीयेंपोतेजकह्युंछे.

जेजिनशासनमां कहेलाभावतीर्थमां रह्याजेध्येयनाभेद तेकांइदूषीतथतानथी यतः सव्वपावाय मूलं डुवालसंगंजउसमक्कायं रयणारतुंभ्रखलुतो सव्वंसुदरंतंमि इति

वलीपुंडरीककहेछे हेभगवंत जेमआपणे जिनशासनने सर्वव्यापककहियेंछैयें ते मज अन्यतीर्थिपण पोतपोतानादर्शनने सर्वदर्शनव्यापि कहेछे किंवाभथीकहेता ए मपुछवाथी गुरुबोल्याजे हेआर्य जेसम्यक्दृष्टितेहिज भावथकी जैनदर्शननेजाणेछे तेथी मोहनामळथकी उपनीजे भेदरूपबुद्धिते पोतानीमेळेंज नाशपामेछे केमके स मस्त कलुषताभावेंरहित अढारदोषेरहित सर्वज्ञ सर्वदर्शी परमात्मा तेएकजसमर्थ

मारेहढ उद्यमेंएह्नीपठवाडेप्रवर्त्तवुं जेमएकिवारें चारित्रधर्मादिकोने स्वप्नमां पणदे खेनही एवीरीतेप्रवर्त्तजो पछिमोहराजानी आज्ञायेंकरीअनादिकालनुं मोहराजानुंरा जस्थिरकरवामाटे रागकेसरीप्रमुखें कर्मपरिणामराजानीजअसत्कर्म तथाअकुशल कर्मनीवर्गणाना समूहरूपद्रव्यनीचोरी महारेंहाथेकरावीने पछेतेरागकेसरीप्रमुखदुष्टा शयादिकें तेचोरेलुं द्रव्यनामुद्दासाथेंजमनेबांधीने कर्मपरिणामनामा राजानेजइदेखा डयुं तेवारें क्रोधवंतथयोथको कर्मपरिणामराजा कहेछेकेजूओजूओ हुंएनोकेटलोका लथयोपक्षपातकरुंछुं तोपणएमहारीज चोरीकरवाने प्रवर्त्त्यो माटे विटंबनापूर्वक एह नेवधकरवानी भूमियेंआणिने पापिपिंजरनगरमां नाखीयो इत्यादिकराजानोआदेशपा मिने मागदुष्टाशयादिक सुभटहर्षवंतथयीतेणेमुंजने कर्ममलरूप भस्मअंगेचोपडीने अने राजसगुणरूप सोनागेरुनाहाथहाथादेइने वली तामसगुणरूप शाहिनाति लककरी तथा रागनीपरंपरारूप कणेयरनाफूलनीमाला तेणेकरी महारागलाने शोभितकर्युं वली कुविकल्पपरूप शरावलानीमालायेंकरी महाराहृदयस्थलने विटंबना वंतकर्युं एरीतेंवधकरवासारुं मनेशोभावंतकरी हीणआचाररूपमहोटा गधेडानीपीठ उपर चढाव्यो तेवारपछि पापोनोउद्वेगरूप भांगेलोकूंडो मस्तकेदेइनेअकुशलकर्म रूप अपहरेलुंधन तेमहारे गलेबांधीने.

शब्दादिक त्रेवीसविषयरूप विस्तारवंत पडहवजावते कोलाहलादिक वाजित्रवा जतेथके बहिरंगरूप अंगलोकनेजोतेथके विवेकिपुरुषोने नंदवायोग्यथको साध्यके॰ मध्यमपुरुष तेहनेअनुकंपा दयाउपजावतोथको राजानापुरुषजे दुष्टाशयादिक चो कीदारेंविटाणोथको कषायरूप बालकें उपहास्यकरावतोथको माहरापोतानादेश ना दर्शनकरावनवानी वांछाना मीसथकी महाविदेहरूपहाटनीश्रेणीमां भमावीने जिहांलगएमुजने वधकरवानी भूमिने सन्मुखलेइ जवामांडयुं एटलामां हुंआस्थानकें आव्यो एटलेमहाभद्रापणगुरुपासेंआवी अनेहुंपणतेसमयें हाथीनाखंधाथीउतरीने राताअशोकवृक्षतलेंबेठोथको वननीशोभाजोउंछुं तेवारें महाभद्रा महारेनजरेंआवी एणेपण पूर्वस्नेहनावशथकी स्नेहसहित मुजनेजोयो मेंप्रणामकर्यो तेवारेंमहाभद्रा येंपण धर्मलाभरूप आशीरवाददीधो अनेकह्युंकेहे राजा एदुष्टाशयादिक राजपुरुषते कर्मपरिणामनामाराजाना आदेशथकी वधकरवाने शोभावंतकरी तुजने वधभूमियें लेइजायछे तेतुंकेम नथीजाणतो.

जिहांसुधीहुं महाभद्रानोकहेलो भावार्थविचारुंछुं एटलामांवली रुडीरीतें महारा जोवाथकी महाभद्रा जातिस्मरणज्ञानपामि तेवारेंतेणे कंदमुनीनाजवथी मांडीनेस

ग्योहो तेआचार्यपदतो जे उत्तमपुरुषहोयतेहनेजमिले अने तेहिजतेपदनो पारंगा मीथाय माटेतुजने नाववैद्यसरिखासाधुना संघेंआसयुंछे तेहनेरूडीरीतेंनिनावबुं इत्यादिक शीखामण कही नेवलीबीजा शिष्योनासमुदायनेपण कह्युंके हेनोलाउ तमोने संसाररूपसमुद्र तरवाने आआचार्यते वाहणसरिखाछे माटेएमनो संगकिवारेपण तमारेमूकवोनही कुलवंतिस्त्रीना न्यायनीपरें जोशेकमागमे निव्रछनाकरेतोपण एह नापगरूपमूलने किवारेंत्यजवुंनही.

इत्यादिक शिक्षाकहीने श्रीपुंडरीकनामासूरिते गुफामां निर्मलशिलाना तलाउप रहीने चौसरणादिकपूर्वकेंसहित पादोपगमनआदरी रूडाध्याननी धारणायेंकरी समग्रकर्मभजना समूहनेधोताथका क्षपकश्रेणी आरोहि केवलज्ञानउपजावी शैलेशीकरणरूप तलवारेंकरी समस्तकर्मप्रकृतिछेदीने परमपदनेपाम्या तेमजवली महाभद्रा तथा सुललिता एबेहुसाध्वीयें उग्रतपस्याकरी कर्मक्षयकरीने मोक्षपदप्रतें पाम्या वली श्रीगर्नराजातथा सुमंगलादिकसाधु तेपणचारित्र आराधी देवलोकेंगया.

हवे सुंघणुवखाणकरियें तिहांचित्तरमनामा उद्यानमां जेटला नव्यजीवें ए अनुसुंदरनुंचरित्र जोकौतुकेंकरीपण सांनल्युं तेसर्वेना मन संसारथी विरक्तथया ते वारपछि कोइक सर्वविरति कोइकदेशविरति केटलाकसम्यक्त केटलाकसंवेगपणुं पाम्या.

तेमजहेनव्यलोको तमेंपण यथाशक्तियें धर्मनोउद्यमकरीने एउपदेशनाश्रमने सफलकरवुं केमके बहुलतायें सर्वसंसारीजीवना वृत्तांतनुंकारण एअनुसुंदरसरिखुंज छे तोजेमएपुंडरीकने नाविकल्याणपणाथकी गुरुयें नव्यपुरुष सुमति एहवुंनामदीधुं तेमज बीजापण नाविकल्याणवंत एहवाजे नव्यजीवो तेहनानामजाणवा केमकेते नव्यपुरुषपणुं अने सुमतिपणुं अंगीकारकरेछे एरीतेंसदागमनुं प्रगटपणेकहेवुंछे

जेमवली महानद्रायें समंतनद्रनामा आचार्यनावचनेकरी तत्वनेजाणीआदरीने जाणथइ तेहथी तेहनुं प्रज्ञाविशालानाम सदागमेंकह्युं तेमबीजापण उत्तमप्राणी जे जिनराजनो सिद्धांतसांनली तत्वनेजाणे तेतो प्रथमथीज संसारथी विरक्तहोय तेहनेतत्वथकी प्रज्ञाविशालाजकहियें.

तथाजेम सुललिताने महानद्रासाथें पूर्वअभ्यासना स्नेहवशथकी संबंधउपनो ते गुणप्रगटकरवाने अर्थेंथयो तेमजबीजा नारीकर्मिजीवोनेपण सत्संगतेगुणप्राप्ति करवानेअर्थेंजथाय.

वलीजेम महानद्राने सुललिताने पुंडरीकने समंतनद्रनामा आचार्यना उपदेशथी सदागमनी नक्तिउपजावी तेमआजपण जेरूडासाधुहोयते परनाहितकरवा

वेढुं जैनलिंगग्रहणकरीने तेहनुंपोषणकरीस इत्यादिक अनुसुंदरें चोरीनुंस्वरूपक हिनेचोरनुंरूपउपसंहार्युं पछेदेवतानीकांतिसमान पोतानुंमूलरूप प्रगटकर्युं एट लामां ते अनुसुंदरनुं लशकरपण तिहांआवीपहोतुं एसर्वदेखीने पुंडरीकादिक विस्म यवंतथयाथका विचारवालागाजे अहोआपणे एहनेपूर्वें चोरजाणताहता पणए तो महोटीविस्तारवंत ऋद्धिनोधणी चक्रवर्त्तिसरिखोछे.

पछेअनुसुंदरें पोतानोपुत्र पुरंदरने राज्यदेइने तथावली राज्यनांजेचिन्हहतां तेप णदीधां श्रीजिनराजनीपूजाकरी चारित्रलेइने वलीसुललिताने प्रतिबोध आपवाला गोजे हेसुललिता मेंएटलोसंसारनोविस्तार तने कह्यो तोपण तुंहजीसुधी केम शून्यचित्तनीपरें देखायछे असंव्यवहारनामा नगरथीमांडी एकेंद्रिय तिर्यंचादिक न वोनेविषे माहरीअनुभवेली विटंबनासांभली तोपण केमसंवेगवैरागनेनथीपामति.

तेमज नंदिवर्द्धनादिकना भवमां हिंसा क्रोध मान माया चोरी लोभ मैथुन अने मोहपरिग्रहादिकना संगथीमने अनेकप्रकारना कष्टथया तेसांभलीपणतुं हजीतत्वने णतिनथी तो हेअगृहीतासंकेता तुंतो ताहरानामप्रमाणेज यथार्थछो.

वली बाल मंद जड अने अधम बालिशनास्पर्शेनेंद्री रसनेंद्री घ्राणेंद्री चक्षुइंद्री श्रोतेंद्रीना परवशपणानुं अधम फल तेमज मनिषीनाचरित्र तेमज विचक्षण नामाआचार्य बुद्धनामाआचार्य कोविदनामाआचार्यना चरित्रोनीदेशनासांभलीनें प णजो तत्वनाअर्थमां विकलछो तोमनुष्यपणो धारणकर्याछतांपण पशुसरिखीछो.

वलीचित्तवृत्तिनामा अटव्यादिकनुं स्वरूप मोहनासैन्यनुंस्वरूप भवचक्रनुंस्वरूप तथा सात्विक मानसनगर विवेकपर्वत जैनपुरनगर तथा चारित्रना सैन्यादिकनुं स्व रूपसांभलीने जोताहरुंचित्त भिनोनही तोतुंपथ्थरसरिखीदेखायछे.

वली कनकशेखर नरवाहन विमल हरिराजा अकलंक प्रमुखोनुं सुज्ञानतापणुं त था कोविदनामाआचार्यना छशिष्योना वैरागनाकारणो सांभलीनेपणजो संसारथकीछू टतीनथी तोतुंसर्वथा कोरडूंसरिखीदेखायछे तेमज जेकांइहुं पुण्योदयना साह्यथकी सु खपाम्यो जेकांइमने तथापापोदयनासाह्यथी दुःखनी प्राप्तिपाम्यो वलीसिंहसूरिनाभ वमां श्रुतनामदादिकेकरी सुस्थितराजानी आज्ञाविराधीने अनंताभव भमवारूप कष्ट नेपाम्यो तेसांभलीनेपण जोतुंप्रतिबोधपामतिनथी तोहवेकहेजे एथकीवधारे किहो ताहरे प्रतिबोध पामवानो उपायछे.

वलीहेसुललिता पूर्वेंगुणधारणनेभवेंतुंमहारी मदनमंजरीनामास्त्रीहती ते भव मांजतें श्रीनिर्मलाचार्यनी अमृतोपम देशनासांभलीहति वली तेनवेंदीक्षानुंआरा

नरती तद्रूपग्रंथमांथी महाराजेवा अल्पशक्तिवंतप्राणीना अनुग्रहनेअर्थे लेशमात्र उद्धारकरीने केवलवार्त्तारूपकथालखीछे जेमनी वाणीरूपमहोटी जलधाराना बिंदु मात्रथी नविप्राणीनाहृदयरूप क्यारामां मैत्र्यादिक सद्भावनारूपवेली नवपल्लवथा यछे अनेएकक्षणवारमां डुःखेकरीचिंतन करवायोग्य एहवा डुर्ध्यानरूप उम्रतानोजे तीव्रतापतेहनासमुदाय तेक्षीणथयीजायछे एमसंपूर्णदोषनोनाशकरनार एहवोजेश्री सिद्धर्षिगणिरूपअमृतनोमेघ तेसर्वत्र उत्कृष्टपणेवर्त्तेछे.

स्वस्तिश्रीर्गुणरागिणी च यदनुध्याना वृणीते स्वयं प्रोद्भूताद्भुतसाध्वसा इव जवाद्दूरं व्रजंत्यापदः॥यस्य ज्ञानमनंतवस्तुविषयं शक्रैश्च संस्तूयते श्रीमान् पार्श्वजिनः स वः प्रन वताद्भव्याब्धवार्त्तिच्छिदे॥१॥ वागासारजरेण यस्य सततं मैत्र्यादिसद्भावना वल्लयः पल्ल विता नवंति नविनां स्वांतालवालावनौ॥ डुर्ध्यानातपतीव्रतापपटली संक्षीयते च क्ष णात् श्रीसिद्धर्षिसुधाघनः स जयतान्निःशेषदोषापहः ॥ २ ॥ आकर्षं सुमतेर्वशीकृति मथ स्वर्गापवर्गश्रिया मुच्चाटं मदनादिडुष्टसुहृदां विद्वेषणं डुर्धियः॥स्तंभं डुर्गतिपाततो ऽधिकतरं मोहस्य संमूर्छतां वाङ्मंत्राः प्रथयंतु वः प्रतिदिनं सिद्धर्षिवक्रोद्भवाः ॥३॥

उपमिति नवप्रपंचग्रंथ तेप्रथम श्री सिद्धर्षिगणीयें १६००२ श्लोकसंख्या नो संस्कृतभाषामां रचेलोछे तेमांथीथोडुकभावार्थलेइने हंसरत्नमुनियें संस्कृतगद्य मांरच्युं तेनुंप्राकृतभाषांतर अमृतसागरगणियेंकर्युं तेनाउपरथी अमेप्रथमछापवा मांड्युं पणसवाचारफारम छपाइरह्यापछे हंसरत्नना करेलासंस्कृतगद्यसाथें मेलवी जोतां एमांकेटलोकसंबंध ओछोलिधेलो मालमपडवाथकी पाछिलीसर्वकथा हंसरत्न मुनिकृत संस्कृतगद्यउपरथी प्राकृतकरीछापीछे उतावलनेलीधे एनीभाषाबराबरसुध रीनथी तथा केटलेकठेकाणे करेकशनकरनारनीचूकथी अने नजरदोषथीन्हस्वदीर्घ अक्षरमात्राप्रमुखछापवामां फेरफारथयुंहसे ते सज्जन पुरुषोये सुधारीवांचवुं.

इतिश्रीउपमिति नवप्रपंचअंतर्गत

लेशमात्रकथावार्त्तिकरूपःसमाप्तः

अनेतमेंमुंजने उछरी एहवामां सुललितानामातापिता सुमंगलाअने मगधसेन ए बेस्त्रीनत्तीर परिवारेंसहित पुत्रीनेमिलवाने उत्सुकवंतथका आव्या.

तेवारें सुललितायें पोतानीमातापितापासेंथी व्रतलेवानी आज्ञामागी तेसांज लीने तेस्त्रीनत्तीरने शोकउपनो तेणेकरी आकुलथया तेहनेसुललितायें अनेकजा तिना उपदेशनाजेदेंकरीने तेबेहुनेप्रतिबोधपमाडी व्रतलेवानेउजमालकस्या तथापो तेपण व्रतलेवाने सन्मुखथइ वली श्रीगर्नेराजा मगधसेनराजा तेणेपण पोतपो तानुंराज्य अनुसुंदरचक्रवर्त्तिनापुत्र पुरंदरनेआप्यो तेवारपछि अनुसुंदरादिक साते जणाने महोटाउत्सवेंसहित श्रीसमंतनद्रनामासूरियें विधियेंसहित दीक्षादीधी वलीसंवेग तथा वैराग्यनीवृद्धिकरनार एहवीधर्मदेशनाआपी.

तेवारपछि गुरुप्रमुखसर्व मुनीओने नमस्कारकरीने मनुष्यदेवतादिक जेवीरीतें आव्याहता तेवीरीतें सहुपोतपोताने स्थानकेंगया एटलामां संध्यासमयथयो तेवा रें आवश्यकादिककार्यमां सर्वसाधुओ प्रवर्त्यातेसर्वसाधुओमां स्वाध्यायनाध्याननेवि षे अनुसुंदरमुनि अग्रेसरथइने ध्यानमांज मननेसींचतोथको तेहिजरात्रीयें उपशमश्रे णीयें चडीने उपशांतमोहगुणगणे पोतानुंआयु पूरणकरी उदारिकशरीररूप पांज रुंमूकीने सर्वार्थसिद्धविमाने तेंत्रीससागरोपमने आउपे देवतापणेउपनो तेवुंकारण जाणीने श्रमणसंघें तेहनाशरीरने बालवारूप संस्कारकस्यो मनुष्यदेवतायें ओछवकस्यो

हवेधर्माचार्यना स्नेहेंकरी सुललितानामा साध्वीनेशोकेंपीडाणी जोइनेगुरु येंकह्युं हेआर्यो महात्मापुरुषें शोककरवोनही एणेतो एकदिवसमात्र चारित्रपा लवाथी नरकेंजवायोग्य पापनेखपावीने सर्वार्थसिद्धिना सुखउपजाव्या वलीति हांथीचवीने पुष्करार्धना नरतक्षेत्रमां गंधारराजानी पद्मिनीराणीनो अमृतसागरना मा पुत्रथशे तेयौवनअवस्थामां विपुलाशयनामासूरिना वचनेकरीने सदागम तथा सम्यक्त्वादिकने ओलखी मातापितानी आज्ञालेइने जेरीतेंगुणधारणना नवमांकह्युंछे तेरीतें निरंतरक्षमादिकना विवाहमांअग्रेसरीनूत थकोऐश्वर्यवंत एहवी दीक्षाप्रतेपा मिनेनीयाणवर्जित तप अने संयमेंकरी सर्वकर्मनामलधोइ केवलज्ञानपामि मो क्षेजसे तेमाटेएहर्षनुंज कारणछे एहनुंमरणपणुंते सुकृतरूपकार्यनकरवुं जाणवुं.

इत्यादिकवचनेकरी सुललिता शोकनेमूकी पोतानाआत्मानी शुद्धीनेअर्थें छठअठ म दशम द्वादश रत्नावली मुक्तावली लघुसिंहनीक्रीडित नद्रादिकप्रतिमा चांद्रायण य वमध्य वज्रमध्य इत्यादिक घणाडुःखेकरी तपवायोग्य तपोनेतपतीथकी विचरवाला गी हवेपुंडरीकनामामुनीते ज्ञाननोअभ्यास करताथका अनुक्रमें गीतार्थथया तेवारप

अर्थ ॥ जगतनेआनंदनाकरनार वलीजेहनी अमृतसरिखीवाणीने हजीसुधी पं डितलोको सेवेछे अंगीकारकरेछे एहवा ज्ञातनंदनजेश्रीवीरजिन तेजयवंतावर्तो ५॥ एपांचेपरमेश्वरने तथा बीजापण जिनोने तथापोतानागुरुने नमस्कारकरीने अध्यात्मनो सारजेरहस्य तेप्रगटकरवाने हवेउद्यादकरुंछुं ॥ ६ ॥

शास्त्रात्परिचितां सम्यक् संप्रदायाच्च धीमतां ॥इहानुभवयोगाच्च प्रक्रियां कामपिब्रुवे ॥ ७ ॥ योगिनां प्रीतये पद्य मध्यात्मरसपेशलं ॥ भोगिनां भामिनीगीत संगीतकमयं यथा ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ घणाशास्त्रोथीभलीरीतेंपरिचिंतनकरीने वलीपंडितलोकोना संप्रदायथकी जेअध्यात्मशास्त्रनेविषे अनुभवयोग्यथयुंतेथकी कंकांइक संक्षेपमात्र प्रस्तावनाकरुं छुं ॥ ७ ॥ जेरीतेंभोगीपुरुषने स्त्रीनागीतसंगीत प्रियकारीलागेछे तेरीतें योगीश्वरपुरुषने प्रीतिनाअर्थें आ अध्यात्मरसेंकरीने मनोहरकारी एहवोपद्यबंधतायेंकरुंछुं॥८॥

कांताधरसुधास्वादा यूनां यज्जायते सुखं॥बिंदुः पार्श्वे तदध्यात्मशास्त्रस्वादसुखोदधेः ॥ ९ ॥ अध्यात्मशास्त्रसंभूत संतोषसुखशालिनः ॥ गणयंति न राजानं न श्रीदं नापि वासवम्॥१०॥

अर्थ ॥ स्त्रीनाअधररूपअमृतना स्वादथीजे जुवानपुरुषने सुखउपजेछे तेसुखनो स्वादतो अध्यात्मशास्त्रनास्वादनो जेसमुद्रछे तेनोएकबिंदुमात्र स्वादछे ॥ ९ ॥ जेप्राणीनेअध्यात्मशास्त्रथी मनोहर संतोषरूपसुख प्रगटथयुं तेप्राणी राजाने तथाधनदने अनेइंद्रसरिखानेपण लेखामांगणतानथी ॥ १० ॥

यः किलाशिक्षिताध्यात्मशास्त्रः पांडित्यमिच्छति ॥ उत्क्षिपत्यंगुलीपंगुः सस्वर्द्रुफललिप्सया ॥ ११ ॥ दंभपर्वतदंभोलिः सौहार्दांबुधिचंद्रमाः ॥ अध्यात्मशास्त्रमुत्ताल मोहजालवनानलः ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जेमकल्पवृक्षना फलनेलेवानी इच्छाये पांगलोपुरुष आंगलीउंचीकरेछे ते जेमव्यर्थछे तेमजेप्राणीनिश्चेंअध्यात्मशास्त्र नेपाम्यानथी अने आचार्यपंडितपणुं इच्छे तेपणव्यर्थछे ॥ ११ ॥ कपटरूप पर्वतनेभेदवाने वज्रसमान मैत्रताभावरूपसमुद्रनी वृद्धिकरवाने चंद्रमासमान एहवुं अध्यात्मशास्त्रते वृद्धिपामेलुंएहवुंजे मोहजालरुंवन तेहने बालवानेअर्थें दावानलसमानछे ॥ १२ ॥

रनार एहवोछतांपण तेहांनगरनालोक निर्द्धनपणाथकी तेहनावचनने अंगीकारक रतानथी वलीजेहनेकल्याणथवानुंछे तेहवालोकतेहनेअंगीकारकरेछे तेवैद्य वलीनि रंतर पोतानाशिष्यनेजणावेछे.

एकदिवसेंतेनगरमां कोइकप्रसंगथकी केटलाकधूर्ताराआव्या तेएते सद्वैद्यनुं कोइकलेशमात्र व्याख्यानसांभलीने तेहनाअंशमात्रें संतुष्टथका पोतामां पंमितप णोमानवालागा पछेतेमांथीकेटलाकधूर्त्तोये पोतानीपूजानेअर्थे तेअंशमात्रज्ञानने अनुसारें पोतेंपोतानी संहिताओरची वली केटलाकपोताना मनकल्पित बीजाव चननी रचनाकरी कोइकेंतो वली तेसद्वैद्यनाशास्त्रोनो अंशलेइने पोतानाकल्पित विरुद्ध वाक्यतेमांघणाजनाख्या अने संहिताओरची.

बीजाओयेंतो अतिपंमितताने‌अभिमानेकरी वली ते सद्वैद्यना वचनथी विप रीतजवचनगुंथ्या एमते चिकित्साना करवावालानेविषे नानाप्रकारनीरुचिवंत तेनग रनालोकतेहने तोतेखोटावैद्यमांथी कोइकज कोइकनाचित्तनेगमे बीजोगमेनही ते वारपछि प्रसिद्धतानेपाम्याथका तेसर्ववैद्योनीशालावंतथया वलीतेएपण सहुयें पो तपोतानाशिष्योने पोतपोतानी रचेली कल्पित संहिताउंजणावी वलीतेजणनारप ण वाचालपणाथकी लोकमांमहोटावैद्यनी प्रशंसानेपाम्या.

पछेतेमूल महावैद्यनेतो कोइकजनगरनोलोक उलखे एमछतापण तेहनेआश्र यासर्व लोकोना रोगने छेदवावास्ते तेहनीसंहितानाजणनारानी परंपराचाली.

तेमजवली कूटवैद्यजेथया तेहोनीरचेली संहिताओना जणवावालानीपरंपरापण चाली पणते सर्वोये असत्कल्पनाना मूलनेग्रहणकरनाराहता माटेआश्रयकरनार लो कोनेउलटीरोगवृद्धिकरवाने अर्थेथया तेमांपणवली तेहनाआश्रयला कोइकलोकने रोगनुंमूकाववुंपणथयुं ततोतेहोनी संहिताओमां गुंथेला सद्वैद्यनावचनना अनुभाव थकीजाणवा पणतेहोना पोतानाकल्पित विरुद्धवचनना अनुभावथकी जाणवानही.

तथाजेवली मावीबुद्धिनाधणीयें सर्वथा सद्वैद्यना वचनने विपरीततापणेज संहि ताओरचेलीहती तेहना आश्रयेंजे रोगीपुरुषलागा तेतोसर्वथाप्रकारें रोगनीवृद्धिनेज पाम्या तेरीतें इहांपण उपनयजाणवो जे आसंसाररूपनगरजाणवुं तेमां रोगीआ पुरुषते सर्वभवजंतुजाणवा अने सर्वज्ञरूपसद्वैद्य जाणवो सिद्धांतरूप संहिताओ जाणवी तेकर्मरूपरोगने हणनारछे.

अनेकुतीर्थरूप कूटवैद्यजाणवा तेहनाशास्त्रते कूटसंहिताओजाणवी तेमांथो माज जेकोइने कल्याणथवानुंहोय एहवाजे भव्यजीवोतेतो सर्वज्ञरूप सद्वैद्यनावच

जाणजेपुरुषछे तेतोअविकारीनेत्रनाधणी इंद्रियनाविकाररहितछे ॥ १९ ॥ अध्यात्म शास्त्ररूपजे हेमाचलपर्वत तेणेमथ्योजे आगमरूपसमुद्र तेथकीनिकल्या घणागुण रूपीयां जेरत्नतेतो विबुधजेपंडितलोकतेपामेछे ॥ २० ॥

रसोभोगावधिः कामे सद्भक्ष्ये भोजनावधिः॥ अध्यात्मशास्त्रसे-
वाया रसोनिरवधिः पुनः ॥ २१ ॥ कुतर्कग्रंथसर्वस्वगर्वज्वरवि-
कारिणी॥ एति दृग्निर्मलीभाव मध्यात्मग्रंथभेषजात् ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ कामनोजेरस तेभोगवतांसुधी मधुरछे भलांभोजननोजेरस तेजमवानी वखतसुधी मधुरपणेवर्त्तेछे पणअध्यात्मशास्त्रनीसेवानोजेरस तेतोनिरवधिछे केमके प्रारंभकालथीमांडीने सदाईवधतोजरसछे पणकिवारे विरसनथाय ॥ २१ ॥ कुतर्क शास्त्रना सर्वरहस्यनो जेअहंकारतेरूपीताव तेहनाविकारवाली थइएहवीजे दृष्टितेअ ध्यात्मशास्त्ररूप औषधनायोगथी निर्मलपणाने पामेछे ॥ २२ ॥

धनिनां पुत्रदारादि यथा संसारवृद्धये ॥ तथा पांडित्यदृप्तानां
शास्त्रमध्यात्मवर्जितं ॥२३॥ अध्येतव्यं तदध्यात्मशास्त्रं भाव्यं
पुनःपुनः॥ अनुष्ठेयस्तदर्थश्च देयोयोग्यस्य कस्यचित् ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ धनवंतजनने जेमपुत्रअनेस्त्री तेसंसारनीवृद्धीना कारणछे तेम अभि मानेभरायला पंडितलोकने अध्यात्मशास्त्रविना मात्रसंसारनी वृद्धीछे ॥ २३ ॥ तेमाटे अध्यात्मशास्त्रनेभणवुं वलीवारंवारहृदयनेविषेभाववुं एनाअर्थनुंवारंवार चिंतनकरवुं अनेजेपुरुषयोग्यहोय तेनेजशीखववुं पुस्तकआपवुं ॥ २४ ॥ एरीतें अध्यात्मशा स्त्रनामहात्म्यनो पहेलोअधिकार पुरोथयो.

---

भगवन् किं तदध्यात्मं यदित्थमुपवर्ण्यते॥शृणु वत्स यथाशास्त्रं
वर्णयामि पुरस्तव ॥ १ ॥ गतमोहाधिकाराणा मात्मानमधि
कृत्य या॥ प्रवर्तते क्रिया शुद्धा तदध्यात्मं जगुर्जिनाः ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवेशिष्येपुछ्युंके हेभगवंतअध्यात्म तेशुंछेकेजेनुंतमे आवुंवर्णन कीधुं त्यारेगुरुकहेछेके हेशिष्य शास्त्रमरियादायें तनेकहुंछुंतेसांभल ॥ १ ॥ जेमुनिराजनोमो हनो अधिकारनाशपाम्योछे अनेजेआत्माने आश्रीनेशुद्धक्रियायें अंतरआत्मानेविषे प्रवर्त्ते तेनुंनाम परमेश्वर अध्यात्मकहेछे ॥ २ ॥

छे एहवोपरमार्थजाणीने जेकोइ ब्रह्मा विष्णु शिव बुद्ध जिनादिकनानाममांहेला को इपणनामेंकरी ने तेहनेध्यावेछे तेपुरुषतेहिजनामना ध्यानेकरी सिद्धिनोकरनारथाय.

वलीजेणे परमात्मानुंस्वरूप जाण्युंनथी अने कदाग्रहमां प्रवेशकर्योछे तेहनेको इवारेंपण अर्थसिद्धिथायनही तेमज क्षमा मार्दव शौच तप संयम निर्लोभ सत्य ब्रह्म आर्जव अकिंचनरूप दशप्रकारनोधर्म तेकोइएकजनना बापनोनथी तथा वली इहांकोइनो संबंधनथी केवलजे एहनेजाणेछे सेवेछे तेहनोजएधर्मछे केमके लोक नीपण एहवीयुक्तिछे जे गंगानामानदीते कोइनाबापनीनथी एभावार्थजाणवो.

तेधर्म जैन अथवा वैष्णव अथवा बौद्ध अथवा ब्रह्मसंबंधी अथवा महादेव संबंधी इत्यादिक गमेतेकह्योपण तेतत्वार्थ जाण्याथीज प्रसन्नथायछे माटेजे पंडित होयते शब्दमात्रेंकरी धर्मजाणेनही जो अन्यतीर्थिओपण एरीतेंज देवनुंस्व रूप धर्मनुंस्वरूपजाणीने पोतानादर्शनने जोसर्वव्यापीकहेतो तेमांकांइविरोधतानथी अनेजो एपूर्वोक्तरीतथी अन्यथाजकहे तो कुग्रहग्रहणबुद्धियेंकरी जातिअंधसरिखो थयो ते विवादरूप अनर्थनुंजकारणथाय माटेतेहथी उदासी रहेवुंते रूडुंजाणवुं.

तेओनेजो छतिशक्तियें कोइकरीतें तत्वसमजावे तेहनेजरूडोपुरुषजाणवो केमके तत्वज्ञाननादानथी उपरांत बीजोकोइ महोटोउपकारनथी वीजुंवली हेमहाभाग्य वंत जेवारें सर्वनयनुंसमुद्ररूप एहवुंजे दृष्टिवादनामाअंग तेहमांथी सर्वनयदृष्टिवं तरूपनदी प्रतित्यकीदेखीस तेवारें समस्तताहरासंदेहजेछे तेपोतानीमेलेज नाशथ इजशे अने सर्वथकीउत्तम तेएकसर्वज्ञना शासननेज जाणीस इत्यादिक श्रीगुरुराज नाकहेलावचन तेणेकरी समस्तप्रकारेंतज्योछे संदेहनोसमूहजेणे एहवाश्रीपुंडरी कनामामुनि तेविशेषेंकरी सिद्धांतना अभ्यासमां तत्परथका अनुक्रमें द्वादशांगीना पारंगामी उत्कृष्टगीतार्थथया पछिसमंतनामाकेवलियें पुंडरीकमुनीने सर्वआगममां विशारदयोग्यजाणी गच्छनानायककरी पोते संलेषणाआदरी शरीररूपपंजरने मूकी मोक्षरूपमहोलने अंगीकारकर्यो.

हवेपुंडरीकसूरि अवधिज्ञानपाम्या पछेअनुक्रमें मनपर्यवज्ञानउपनुं तेणेकरी सू र्यनीपरें शासनरूपआकाशने प्रकाशकरतां ग्राम आकर नगरादिकनेविषे विचरवा लागा एरीतेंघणा कालसुधी लोकोने उपकारकरी जगतमां मोहरूप अंधकारनो ना शकरीने अनुक्रमे अधिकगुणवंत शिष्यनोसमूहनीपजावीने शेषथोडुंआयुषरहेथ के धनेश्वरनामासाधुने पोतानापाटेंथापी तेहनेकह्युंजेहे महाभाग्यवंत तें जिनरा जनो सिद्धांतजाण्यो छे माटेतुजनेधन्यछे वलीतुंअतिउत्तमएहवा आचार्यनापदनेपा

श्रावकतथा यतितेत्रणप्रकारना १ उपशमसमकेति २ क्षयोपशमसमकेति ३ क्षायकसमकेति तेअनंतानुबंधीनो अंशखपाव्युंछेजेणे ॥ ९ ॥ वलीजेणेदर्शनमोहनीय खपावीछे अथवा मोहनीयने उपशमावीछे एहवाजे उपशांतमोही तथा क्षपक श्रेणीने विषेवर्त्तेछे तथा जेणेमोहनोक्षय कर्योछेते संयोगीकेवली तथाअयोगी केवलीभगवंतजाणवा ॥ १० ॥

यथाक्रममनी प्रोक्ता असंख्यगुणनिर्जराः ॥ यतितव्यमतोध्या त्मवृद्धये कलयापि हि ॥ ११ ॥ ज्ञानं शुद्धं क्रिया शुद्धेत्यंशौद्वावि ह संगतौ ॥ चक्रे महारथस्येव पक्षाविव पतत्रिणः ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ एअनुक्रमेजेकह्या तेसघला एकएकथकी असंख्यातगुणीनिर्जराना करताछे एक कलायेकरीनेपण अध्यात्मनीवृद्धिने अर्थे उद्यमकरवो एहिजहेतुछे॥ ११ ॥ जेम रथनावेचक्रते रथनीसाथें संलग्नजछे तथा पक्षीनीबेपांखोते पक्षीनीसाथे संलग्नज छे तेमएक शुद्धज्ञान अनेबीजीशुद्धक्रिया एबेअंशते अध्यात्मनीसाथे संलग्नजछे १२

तत्पंचमगुणस्थाना दारभ्यैवैतदिच्छति ॥ निश्चयोव्यवहार स्तु पूर्वमप्युपचारतः ॥१३॥ चतुर्थेपि गुणस्थाने शुश्रूषा द्या क्रियोचिता॥ अप्राप्तस्वर्णभूषाणां रजताभरणं यथा ॥१४॥

अर्थ ॥ पूर्वेंतो निश्चयनय अने व्यवहारनयनो आरोपणमात्र उपचार थीछे पण पांचमांगुणगणाथी मांमीनेएनयइछेछे ॥ १३ ॥ अने चोथेगुणगणेपण शुश्रूषादिक क्रियाते उचितछे जेमकोइनेसोनाना घरेणानमलताहोय तेनेरुपाना मलेतेपण रुडांमनाय ॥ १४ ॥

अपुनर्बंधकस्यापि या क्रिया शमसंयुता ॥ चित्रा दर्शनभेदेन ध र्मविघ्नक्षयाय सा ॥१५॥ अशुद्धापि हि शुद्धायाः क्रियाहेतुः स दाशयात् ॥ ताम्रं रसानुवेधेन स्वर्णत्वमधिगच्छति ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ शमभावेकरीनेसहित विचित्रप्रकारना दर्शनभेदेकरीने अपुनर्बंधीजेचोथोगुणगणुंतेहनी जे क्रियातेजोपण धर्मनाविघ्नने करनारीछे ॥ १५ ॥ तोपण भलाआशयथकी अशुद्धक्रियाकरे तेपण शुद्धकेवाय जेम त्रांबुंजेछे तेनेगालीतेमां रसानुवेधकर्याथी रसायनमेलववाथी सोतुंथइजायछे ॥ १६ ॥

ने रक्तथका हलुकर्मि तथा नारकर्मि प्राणीने कोइकपणउपायेंकरीने जिनराजना आगमनी नक्तिनेअवश्यउपजावे.

वली अनुसुंदरें सुललिता तथा पुंडीरक एबेहुने संवेग उपजवानेअर्थें प्रपंचें सहित पोतानाजवचक्रमणनुं स्वरूपकह्युं तेबहुलतायें सर्वसंसारीजीवोने सरिखुंजबे.

जेम सुललिताते नारीकर्मिहतीतेथी पूर्वतत्वने अणजाणतिथकीहति माटेतेह ने अगृहीतसंकेताकहि अनेवलीतेणेज जेवारें सदागमनी शुश्रूषाशिथिलकरीनहीं तेवारेंतेहने सर्वसिध्धियर्थी तेमबीजापण नव्यप्राणी नारीकर्मिपणाथकी गुरुवचन ना तत्वने अणजाणताथकाहोयते गुरुनावचननो संकेतग्रहणकरीशकेनहीं माटेते वाजीवोने अगृहीतसंकेताजकहियें तथाजोवलीतेवाजीवोते सिध्धांतसांनल्यानो आ दरनमूके तो तत्वज्ञानने अवश्यपामेंज एमनिःसंशयपणेजाणवुं.

तेमाटेअहोनव्यो एकलोकस्थिति बीजीकालपरिणति त्रीजोकर्मपरिणाम चो थो स्वनाव अने पांचमीनवितव्यता तेपोतानी नव्यतादिक माहोमांहें अपेक्षायेंस हित कारणनाउदयथी उपनोएहवोजे नवोनोप्रपंचतेहनो परिपाकलाधो अने तेहना नाशनोकारक तेवली परमेश्वरनो अनुग्रहछे तेप्रतेंजाणीने तेमज वस्तुतत्वेंतो जिन राजनीआज्ञा आराधवाथीमोक्ष अने आज्ञाविराधवाथी संसारनीवृध्धिथाय एहवुंरु डीरीतेंजाणीने जिनराजनी आज्ञापालवाविषेज प्रवर्त्तवुं अनेजिनराजनी आज्ञाविरा धवापणानुं वर्जवुं तथा विषय कषायादिक अंतरंग परिवारनेजीतवा अतिआश्रवना द्वारनेरोंकवा इंद्रियनासमूहनो निग्रहकरवुं जेथकी समस्तकर्ममलना समूहनाशपा में अने क्षमागुणरूप कदंबप्रगटथाय तथाशीघ्रपणेवली नवदुःखनाक्षयथकी अनं तानंतसुखनुंघर एहवुंजेमोक्षपद तेप्रतेपामो.

माटेहेनव्यो एरीतें संसारनादुःखनाक्षयनो उपायरूप जेरूडुंतत्व जेहनोकोइवा रें नाशजथवानोनथी परमानंदनो जिहांऐक्यनावछे एहवामोक्षपदना रुडासाधनने आलसरूप कदाग्रहमूकीने उद्यमकरो जेथकी थोडाकालमांसर्वअर्थनी सिध्धिथाय.

इत्ययंहंसरत्नेन स्वल्पबुध्धिहितेछया॥उपमित्याकथोध्दारो लिलिखेलेशमात्रतः॥१॥

अर्थ ॥ एरीतेंश्री हंसरत्ननामामुनीतेणे अल्पबुध्धिवंतजीवोना हितनीइछायें उ पमितिप्रमाणनी कथानोउध्दार लेशमात्रलिख्यो.

एमअध्यात्मरूप अमृतनासमुद्र एहवाजेश्रीसिध्धर्षिगणी नामुखथीनिकली वैरा गअनेसंवेगादिरूपअनेक तरंगेकरी गहनगंनीर अनेअल्पशक्तिवंतजीवने दुःखेअव गाहवारूप एहवीजे उपमिति नवप्रपंचनामा समुद्रनीमर्यादारूप वेलाके॰पाणीनी

अर्थ ॥ अज्ञानीने आत्मशुद्धिनामे बीजीशुद्धिथाय तेलोकदृष्टिये पांचयम त्रण नियमप्रमुखपालेछे एबीजोभेद त्रीजोआत्मानुबंध तेकहिये जेशांतवृत्तीयेतत्वनुं संवेदनकरेचिंतनकरे ॥ २३ ॥ पेहेलीशुद्धिमां अज्ञाननीबहुलता घणीछे तेणेकरीने मोक्षना साधननेबाधकरे अनेतेनासद्भावथकी शुभाशयनोलेशमात्रहोय तोतेथी ज न्ममरणनी परंपराकांइत्रुटेनही एहवोजोगाभ्यासीपुरुषकहेछे ॥ २४ ॥

द्वितीया दोषहानिः स्या त्क्वचिन्मंडूकचूर्णवत्॥आत्यंतिकी तृती या तु गुरुलाघवचिंतया॥२५॥ अपि स्वरूपतः शुद्धा क्रिया त स्माद्विशुद्धिकृत्॥ मौनींद्रव्यवहारेण मार्गबीजं दृढादरात्॥२६॥

अर्थ ॥ आत्मशुद्धिनामे बीजाजोगथकी कांइकलवलेशमात्र दोषनीहानितो थाय पणपरंपरायें घणादोषथयेजाते डेडकानाचूर्णनीपेठे एकडेडकानो नाशथायपं ण तेथीबीजाघणा डेडकाउत्पन्नथाय त्रीजीशुद्धि आत्यंतिकछे तेथीकर्मनीहानिथा य केमकेतेगुरुताभाव अनेलघुताभावनी विचारणाकरवाथीप्रगटे एवीछे॥२५॥स्वरू पथकीजेक्रियाशुद्धछे तेजनिश्चयपणे आत्मानेविशुद्धतानी करनारीछे तेमाटेशुद्धक्रि याकरवी मुनींद्रजेपरमेश्वर तेणेबताव्योजे व्यवहारतेनुं सेवनकरवेकरीने घणाआदर सहित क्रियाकरेतो मार्गजेरत्नत्रयी तेनुंबीजप्रगटथायछे ॥ २६ ॥

गुर्वाज्ञापारतंत्र्येण द्रव्यदीक्षाग्रहादपि॥वीर्योल्लासक्रमात्प्राप्ता बहवः परमं पदं॥२७॥ अध्यात्माभ्यासकालेपि क्रिया काप्ये वमस्ति हि॥शुभौघसंज्ञानुगतं ज्ञानमप्यस्ति किंचन ॥२८॥

अर्थ॥ गुरुनीआज्ञाने आधीनरेहेवाथी द्रव्यदीक्षालीधीहोय तोपण वीर्योल्लासनी अनुक्रमेवृद्धिकरीने घणाजीव परमपदनें पाम्याछे ॥२७॥ एरीतेंअध्यात्मनाअभ्यास कालनेविषेपण क्रियाकांइक लेशमात्रनिश्चेंवर्तेंजछे अनेशुभकारी ओघसंज्ञाने सहचा रीपणे तिहांज्ञानपणकांइकवर्त्तेछे ॥ २८ ॥

अतोज्ञानक्रियारूप मध्यात्मं व्यवतिष्ठते ॥
एतत्प्रवर्द्धमानंस्यान्निर्दंभाचारशालिनां ॥ २९ ॥

अर्थ ॥ एजकारणमाटे ज्ञाननेक्रियारूप ते अध्यात्मपणुं वरतेछे जे ज्ञानक्रिया रूपतेअध्यात्मछे एजज्ञानक्रियानिर्दंभाचारेंकरीने मनोहरएहवोजे प्राणीतेनेविषे उ त्तरोत्तरवृद्धिनेपामेछे ॥ २९ ॥ एबीजो अध्यात्मनास्वरूपनो अधिकार संपूर्णथयो॥

॥ श्रीआदिनाथायनमः ॥

अथ

# श्रीयशोविजयजी उपाध्यायकृत अध्यात्मसार ग्रंथ अर्थसहित प्रारंभ करियेंछैयें

॥ श्लोक ॥

ऐंद्रश्रेणिनतः श्रीमान्नंदतान्नाभिनंदनः ॥ उद्दधार युगादौ यो जगदज्ञानपंकतः ॥ १ ॥ श्रीशांतिस्तांतिभिद्भूयाद्भविनां मृगलांछनः॥गावः कुवलयोल्लासं कुर्वते यस्य निर्मलाः॥२॥

अर्थ ॥ इंद्रसंबंधीजे श्रेणीतेणे नतके० नमस्कारकर्योछे अने अष्टमहाप्रातिहार्यरूपलक्ष्मीयेंकरीयुक्त तथा युगनेआदें जगतने अज्ञानरूप कादवमांथी उद्धारनाकरनार एहवाजे श्रीऋषभदेवभगवान तेजयवंतावर्त्तो॥१॥श्रीशांतिनाथ भगवंतते भव्यप्राणीओप्रतें संतापना भेदनाराथाओ मृगनुं लांछनछेजेने जेमचंद्रकिरण निर्मल थका कुमुदनीनेविकसितकरेछे तेमजेनीगावःके०वाणीते पृथ्वीनेविषे उल्लासकरेछे२

श्रीशैवेयं जिनं स्तौमि भुवनं यशसेव यः॥मारुतेन मुखोत्थेन पांचजन्यमपूपुरत्॥ ३ ॥जीयात् फणिफणप्रांत संक्रांततनुरेकदा ॥ उद्धर्तुमिव विश्वानि श्रीपार्श्वो बहुरूपभाक्॥ ४ ॥

अर्थ ॥ शिवाराणीनापुत्र श्रीनेमनाथजी तेमनेस्तवुंछुं जेभगवंतेपोताना यशेंकरीने जेम जगतनेभर्युंछे तेमजपोतानामुखथी प्रगटथोजेवायु तेणेकरीने पांचजन्य नामे शंखनेपूरीने तेनोनादकीधो ॥३॥ फणीके० शेषनागतेनी फणनाप्रांतजेमणीतेनेविषे संक्रम्युंजेशरीर तणेकरीने त्रणजगतनो उद्धारजजाणेकरताहोयनी एवाजे श्रीपार्श्वनाथबहुस्वरूपनाकर्त्ता तेजयवंतवर्त्तो ॥ ४ ॥

जगदानंदनः स्वामी जयति ज्ञातनंदनः ॥ उपजीवंति यद्वाच मद्यापि विबुधाः सुधाम् ॥५॥ एतानन्यानपि जिनान्नमस्कृत्य गुरूनपि॥अध्यात्मसारमधुना प्रकटीकर्तुमुत्सहे॥६॥

असतीनां यथा शीलमशीलस्यैव वृद्धये ॥ दंभेनाव्रतवृद्ध्यर्थं व्रतं वेषभृतां तथा ॥ ८ ॥ जानाना अपि दंभस्य स्फुरितं बालिशा जनाः ॥ तत्रैव धृतविश्वासाः प्रस्खलंति पदेपदे ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ जेमकुलटानारीनुंशील जेआचारते कुशीलनी वृद्धिनेअर्थेज होय तेमकपटेंवेषधरनार व्रतवंताने नवनीवृद्धिथाय तेअव्रतनी वृद्धिनेअर्थेंजथाय ॥ ८ ॥ कपटना विपाकनेजाणताथकांपण मूर्ख आज्ञानीप्राणीतेज कपटनेविषे विश्वास करताथका पगलेपगले खलनापामेछे ॥ ९ ॥

अहो मोहस्य माहात्म्यं दीक्षां भागवतीमपि॥दंभेन यद्विलुंपंति कज्जलेनेव रूपकं॥१०॥अब्जे हिमं तनौ रोगो वने वन्हिर्दिने निशा ॥ ग्रंथे मौर्ख्यं कलिः सौख्ये धर्म्मे दंभ उपप्लवः ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ अहोइतिखेदेजूउ मोहराजानोमहिमा जेभगवंतसंबंधीदीक्षातेपणजेम काजलेकरीने चित्रामणलुं लोपथायछे तेहनीपरे कपटेकरीने लोपीनाखेछे जेमकमलनेविषे हिम शरीरनेविषेरोग वननेविषेअग्नि दिवसनेविषेरात्री ग्रंथनेविषे मूर्खता सुखनेविषे क्लेश तेउपद्रवनाकरताछे तेमधर्मनेविषेकपट तेदुःखकर्त्ताछे ॥११

अतएव न योधर्तुं मूलोत्तरगुणानलं॥युक्ता सुश्राद्धता तस्य नतु दंभेन जीवनं ॥१२॥ परिहर्तुं न योलिंग मप्यलं दृढरागवान्॥ संविज्ञपाक्षिकः सस्या न्निर्दंभः साधुसेवकः ॥१३॥

अर्थ ॥ एहिजहेतुमाटे मूलगुणपंचमहाव्रत अनेउत्तरगुण करणसित्तरीप्रमुख धरवाने जेप्राणी समर्थनहोय तेणेश्रावकनाव्रतपालवा तेंयुक्तजछे पणकपटचारित्रे जीववुं तेरुडुंनथी॥१२॥ हवेजेप्राणी व्रतनेमूकवाने समर्थनथी केमके जेनेव्रतउपर दृढरागलाग्यो होय तेमूकीशकेनही तोतेनेसंविज्ञपक्ष अंगीकारकरवो श्रेष्ठछे केमके निरदंभीसाधुनी सेवनाकरवाथी घणोगुणथायछे ॥ १३ ॥

निर्दंभस्यावसन्नस्या प्यस्यशुद्धार्थभाषिणः॥ निर्जरां यतना दत्ते स्वल्पापि गुणरागिणः ॥१४॥ व्रतभारासहत्वं ये विदंतोप्यात्मनः स्फुटं ॥ दंभाद्यतिलमाख्यांति तेषां नामापि पाप्मने ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ निष्कपटीहोय शुद्धसिद्धांतना अर्थनाभाषकहोय तेगुणेकरीने ते

अध्वा धर्म्मस्य सुस्थः स्यात्पापचौरः पलायते ॥ अध्यात्मशा
स्त्रसौराज्ये न स्यात्कश्चिदुपप्लवः १३॥येषामध्यात्मशास्त्रार्थतत्वं
परिणतं हृदि ॥ कषायविषयावेशा क्लेशास्तेषां न कर्हिचित्॥१४॥

अर्थ ॥ अध्यात्मशास्त्रनो भलोराजप्रवर्ततेथके कशोएउपद्रव थायनही धर्मनो मार्गसुगमथाय अने पापरूपचोरटानासीजाए॥१३॥ जेप्राणीना हृदयनेविषे अध्यात्म शास्त्रनाअर्थनुं तत्वत छतुथयुंछे तेनेकषायरूपविषनावेगनो कलेशतेकदीएनथाय॥१४

निर्दयः कामचंडालः पंडितानपि पीडयेत् ॥ यदि नाध्यात्मशा
स्त्रार्थबोधयोधकृपा भवेत्॥ १५॥ विषवल्लिसमां तृष्णां वर्धमा
नां मनोवने ॥ अध्यात्मशास्त्रदात्रेण छिंदंतिपरमर्षयः ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ जोअध्यात्मशास्त्रना अर्थनाबोधनी कृपापंडितजेवाने पणनहोयतो निर्दयएवोजे कामरूपचंडाल तेपंडितनेपणपीडाकर्याविना रहेनही ॥१५॥ जेपरमऋषीश्वरछेते अध्यात्मशास्त्ररूप दातरडेकरीने मनरूपीवननेविषे वृद्धिपामती एहवी तृष्णारूप जेहेरनीवेली तेनेछेदीनाखेछे ॥ १६ ॥

वने वेश्म धनं दौस्थ्ये तेजो ध्वांते जलं मरौ॥दुरापमाप्यते धन्यैः
कलावध्यात्मवाङ्मयं ॥ १७ ॥ वेदान्यशास्त्रवित् क्लेशं रसमध्या
त्मशास्त्रवित् ॥ भाग्यभृद्भोगमाप्नोति वहते चंदनं खरः ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ जेमवननेविषेघर दरिद्रनेधन अंधारामांउद्योत तथा मरुदेशनेविषेजे पाणीतेदुःखेंपामवायोग्यछे तेमजेधन्यप्राणीहोयछे तेनेजअध्यात्मशास्त्र कलियुगनेविषे प्राप्तथायछे॥१७॥वेदनाजाणतथा बीजाशास्त्रना जाणनाराते क्लेशनाभोक्ताछे अनेरसनाभोक्ता तेअध्यात्मशास्त्रना जाणनाराछे तेएरसनोभोगतो जेभाग्यवंतहोय तेज पामे अनेजेगधेडोहोय तेतोमात्रचंदनना भारनेउपाडेएटलुज ॥ १८ ॥

भुजास्फालनहस्तास्यविकाराभिनयाः परे ॥ अध्यात्मशास्त्रवि
ज्ञास्तु॥ वदंत्यविकृतेक्षणाः॥१९॥अध्यात्मशास्त्रहेमाद्रिमथिता
दागमोदधेः॥ भूयांसि गुणरत्नानि प्राप्यंते विबुधैर्नकिम् ॥२०॥

अर्थ ॥ भुजानाआस्फोटकरवेकरीने वलीहाथने तथामुखनेविकारेकरीने इत्यादिकनाटिकना अभिनयेंकरवेकरीने भोगीपुरुषसुखकरीमानेछे अनेअध्यात्मशास्त्रना

दंजलेशोपि मल्ल्यादेः स्त्रीत्वानर्थनिबंधनं ॥
अतस्तत्परिहाराय यतितव्यं महात्मना ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ जेम मल्लीनाथजीने कपटनोलेशपण स्त्रीवेदनोकारणीकथयो माटे महानपुरुषें कपटतजवाने घणोयत्न करवो ॥ २२ ॥ इति श्रीअध्यात्मसार ग्रंथनेविषे दंजत्यागनामा त्रीजोअधिकार समाप्तथयो ॥

---

तदेवं निर्दंजाचरणपटुता चेतसि जवस्वरूपं संचिंत्य क्षण मपि समाधाय सुधिया ॥ इयं चिंताऽध्यात्मप्रसरसरसी तीरलहरी सतां वैराग्यादिप्रियपवनपीना सुखकृते ॥ १ ॥

अर्थ ॥ एटलामाटे निरदंजआचरणकरवाने हेचेतन तुं सावधानथा आत्मस्वरूपनुं चिंतनकर केमके क्षणमात्रपण सद्बुद्धिहृदयमांधरीने आत्मस्वरूपनीचिंता करवी तेहिज आत्मदिशारूप सरोवरनीलहरीछे तेशीतलताकरेएवीछे एहिजसज्जन लोकने वैराग्यदिशारूप पवनपूर्णपुष्टताकारीछे माटेते आत्मिकसुखनेअर्थेसाधवी १

इतः कामौर्वाग्निर्ज्वलति परितोडुःसह इतः पतंति ग्रावाणो विषयगिरिकूटाद्विघटिताः॥इतः क्रोधावर्तोविकृतितटिनी संगमकृतः समुद्रे संसारे तदिह न जयं कस्य जवति ॥२॥

अर्थ ॥ एकतरफकामरूप वडवानलनो अग्निबलीरह्योछे तेडुःखेसहनथाय एवोछे अने एकतरफ पंचप्रकारनाविषयरूप पर्वत तेहथीपमथाजे उन्मादरूपपथरा तेणेकरीजयंकर एकतरफ विकारदिशारूपनदीना संगमथकी क्रोधनाआवर्त्तपडथाछे एवोजेआसंसारसमुद्रतेनेविषे कहो कयाछेकाणे प्राणीनेजयनथी सर्वत्रजयजवर्त्तेछे.

प्रिया ज्वाला यत्रोद्वमति रतिसंतापतरला कटाक्षान् धूमौघान् कुवलयदलश्यामलरुचीन्॥ अथांगान्यंगारा कृतबहुविकाराश्च विषया दहंत्यस्मिन्वन्हौ जववपुषि शर्म क्व सुलजं ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ जेसंसारनेविषे रतिनासंतापेकरीने तरलाके० चपलएवीजे प्रियाके० जार्यातेकटुकज्वालावर्त्तेछे वली नीलकमलदलना सरखी जेनीकांतिछे एहवानेत्रनात्रिकोणमांथीजेजोवुं तेनुंनामकटाक्ष तेरूपधूमना समूहचालेछे तथास्त्रीनाअंगते

सामायिकंयथासर्वं चारित्रेष्वनुवृत्तिमत् ॥ अध्यात्मं सर्व
योगेषु तथानुगतमिष्यते॥३॥अपुनर्बंधकाद्याव द्गुणस्थानं
चतुर्दशं ॥ क्रमशुद्धिमती तावत् क्रियाध्यात्ममयी मता॥४॥

अर्थ ॥ सामाइकचारित्रजेम सर्वचारित्रनेविषे अनुगतकारणपणे वर्त्तेछे तेमस
र्वजोगनेविषे अध्यात्मपण सहचारीपणेवर्त्तेछे॥३॥अपुनर्बंधी जेचोथोगुणगणो त्यां
थीमांमीने चउदमां गुणगणालगें अनुक्रमेंजेआत्मानी विशुद्धता प्रगटथाय ते
सर्व अध्यात्मक्रियाजाणवी ॥ ४ ॥

आहारोपधिपूजर्द्धि गौरवप्रतिबंधतः॥ भवाभिनंदी यां कुर्यात्
क्रियां साध्यात्मवैरिणी॥५॥ क्षुद्रोलोभरतिर्दीनो मत्सरी भयवा
न् शठः ॥ अज्ञोभवाभिनंदीस्या न्निष्फलारंभसंगतः ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ अनेजेअहारोपधीनेअर्थें तथा पूजापामवानीऋद्धि तेनीगौरवतायें बं
धाणाथका भवाभिनंदीजे क्रियाकरेतेसर्व अध्यात्मक्रियानीवैरीणीजाणवी ॥ ५ ॥
१ क्षुद्रता २ लोभ ३ रति ४ दीनता ५ मत्सरीपणुं ६भय ७ शठता ८ अज्ञानता
एभवाभिनंदिपणाना संगथकीजेक्रियाकरे तेक्रियानोआरंभ निःफलथायछे ॥ ६ ॥

शांतोदांतः सदागुप्तो मोक्षार्थी विश्ववत्सलः॥निर्दंभां यां क्रियां
कुर्यात् साध्यात्मगुणवृद्धये ॥७॥ अतएव जनः पृछोत्पन्नसंज्ञः
पिपृछिषुः॥ साधुपार्श्वे जिगमिषु धर्म्मं पृछन् क्रियास्थितः ॥८॥

अर्थ ॥ १ शांतगुण २ दांतगुण ३ सदागुप्तइंद्रियपणुं ४ मोक्षार्थिपणुं ५ वि
श्वनुंवात्सल्यतापणुं इत्यादिकनिरदंभीपणेजेक्रियाकरे तेक्रिया अध्यात्मगुणनी वृद्धि
कर्त्ताथाय ॥७॥ तेमाटेजेनेतत्वपुछवानीसंज्ञा उपनीछे तथापिपृछिषुके० तत्वप्रतेहवे
पुछवाने सन्मुखथयोछे साधुनेपासे तत्वसांभलवानेअर्थें जवानुंशीलछेएम क्रियायोग
नेविषे रह्योथको धर्मनातत्वने पुछेछे ॥ ८ ॥

प्रतिपित्सुः सृजन् पूर्वं प्रतिपन्नश्च दर्शनं॥श्राद्धोयतिश्च त्रि
विधोऽनंतांशक्षपकस्तथा॥९॥ दृङ्मोहक्षपकोमोहशमकः
शांतमोहकः॥क्षपकः क्षीणमोहश्च जिनोऽयोगीच केवली॥१०॥

अर्थ ॥ एमतत्वनेअंगीकार करतोथकोजेने पूर्वेंप्रतिपन्नथयोछे सम्यक्तदर्शन एवा

सिद्दुःखजछे माटे जेप्राणीवारंवार सुखनेमदेजलाधका सुखमानेछे तेफोकटछे ए संसारतो केवल कपटरचनायें जर्योछे तेनेविषे विवेकीप्राणीयेंप्रीती करवीनही॥७॥

प्रियास्नेहोयस्मिन्निगमसदृशो यामिकजटोपमः स्वीयो
वर्गोधनमजिनवं बंधनमिव ॥ महामेध्यापूर्णं व्यसनबिल
संसर्गविषमं जवः कारागेहं तदिह न रतिः कापि विदुषां॥८॥

अर्थ ॥ स्त्रिनोस्नेहतेबेडीसमानछे बीजासगासंबंधीलोकते पोरियातसमानछे ध नसंपत्तीते नवाबंधनसरखीछे अनेमहा अमेध्येंकरीसहितछे सातप्रकारना व्यसनरूप बिलेंसहितछे टुंकामांकहियेंतोआसंसारते बंदिखानाजेवोछे माटेपंडितलोकने एवस्तु माहेली एकेवस्तुउपर रतिके० मरजीथतीनथी॥ ८॥

महाक्रोधोगृध्रोऽनुपरतिशृगाली च चपला॥ स्मरोलूकोयत्र
प्रकटकटुशब्दः प्रचरति॥प्रदीप्तः शोकाग्नि स्ततमपयशोज
स्म परितः श्मशानं संसारस्तदतिरमणीयत्वमिह किं ॥ ए॥

अर्थ ॥ जेपंडितलोकते आसंसारने स्मशानसरखोकहेछे केमके स्मशानमांरहेना रीचीजो सर्वसंसारमांछे तेकहीबतावेछे जेमस्मशानमां गिधपक्षीछे तेमसंसारमां म हाक्रोधते गीधपक्षीछे अरतिरूपथणीचपल शियालणीछे घुवडपक्षीरूप कामछेतेप्रग टपणे कडवाशब्दथी रुदनकरेछे देदीप्यमान शोकरूपी अग्निप्रज्वलेछे निरंतर अप यशरूप राखछे माटे संसारते स्मशानछे एमांरमणीक चीजकोइनथी ॥ ए ॥

धनाशा यच्छायाप्यति विषममूर्छा प्रणयिनी विलासोनारीणां
गुरुविकृतये यत्सुमरसः ॥ फलास्वादोयस्य प्रसरनरकव्या
धिनिवह स्तदास्था नो युक्ता जव विषतरावत्र सुधिया॥१०॥

अर्थ ॥ धननीजेइछा तेअतिशयविषयरूप विषममूर्छानी विस्तारनारीछे स्त्रीयोनो विलासते महाविकारकारी कुसमनोरसछे जेनाफलनोस्वाद विस्तारपामतोनर्कनीपिमा ना समूहतुल्यथाय एवुंसंसाररूप विषयवृक्षछे एनीहेठल विश्रामकरवोयुक्तनथी१०

क्वचित् प्राज्यं राज्यं क्वचन धनलेशोप्यसुलजः क्वचि ज्जातिस्फा
तिः क्वचिदपि च नीचत्वकुयशः ॥ क्वचिल्लावण्यश्रीरतिशयवती
कापि न वपुः स्वरूपं वैषम्यं रतिकरमिदं कस्य नुजवे ॥ ११॥

अतोमार्गप्रवेशाय व्रतं मिथ्यादृशामपि॥ द्रव्यसम्यक्त्वमारो
प्य ददते धीरबुद्धयः॥१७॥ योबुध्वा जवनैर्गुण्यं धीरः स्याद्व्रत
पालने ॥ सयोग्योजावजेदस्तु इर्लक्ष्योनोपयुज्यते ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ एहिजकारणमाटे धीरबुद्धिनाधणी रत्नत्रयनामार्गनेविषे पेसवाने मिथ्या
दृष्टीवालानेपण द्रव्यसमकितनो आरोपकरीने चारित्रआपेछे॥१७॥जेप्राणी संसारनुं
निर्गुणपणुं जाणीने व्रतपालवानेविषे धीरथाय तेप्राणी धर्मनेजोगजाणवो अनेअंत
रंगजावनो जेदतोडःखेकरीने समजायछे माटेतेउपयोगमांनकरवो ॥ १८ ॥

नोचेद्भावापरिज्ञाना त्सिद्ध्यसिद्धी पराहते॥ दीक्षाऽदानेन जव्या
नां मार्गोच्छेदः प्रसज्यते॥१९॥ अशुद्धानादरेन्यासा द्योगान्नो
दर्शनाद्यपि॥ सिद्धिर्नैसर्गिकी मुक्ता तदप्यभ्यासिकं यतः॥२०॥

अर्थ ॥ कदापिकोइक एमकहेसेजे जावजाण्याविना चारित्रदेवाथी सिद्धिअसिद्धि
सर्वहणाइजाय तेवारें जव्यनेपणदीक्षानआपवी केमके तेनेअंतरंगनी खबरनथी अने
एरीतें दीक्षानआपवाथी तो सम्यक्मार्गनो उछेदथाय ॥ १९ ॥ एमअशुद्धनोअना
दरकरे अने शुद्धजोगनोअन्यासनकरे त्यारेदर्शनजेसमकित तेपणशुद्धनथाय केमके
एकनिसर्ग समकितटालीनेशुद्धकरवुं तेपणअन्यासथीज थइशके ॥ २० ॥

शुद्धमार्गानुरागेणा शठानां यया तु शुद्धता॥गुणवत्परतंत्राणां
सा न क्वापि विहन्यते॥ २१ ॥ विषयात्मानुबंधैर्हि त्रिधा शु
द्धं यथोत्तरं॥ब्रुवतेकर्म्म तत्राद्य मुक्त्यर्थं पतनाद्यपि ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ शुद्धमार्गने अनुरागेकरीने अशठताजावेजे आत्मानी शुद्धताके० निर्म
लतायें गुणवंतप्राणीने आधीनथइने वरतेतो तेप्रवृत्ति कोइछेकाणे हणायनही॥२१॥
विषयेंकरीने आत्मायेकरीने अनेअनुबंधेकरीने एत्रणप्रकारनी विशुद्धिछे ते एकेकथी
निर्मलछे एत्रणेकर्मछे तेमां जेडखथी पोताना आत्माने मुकाववाने ऊंपापातप्रमुख
करे तेहनेविषयशुद्धिकहियें ॥ २२ ॥

अज्ञानिनां द्वितीयं तु लोकदृष्ट्या यमादिकं॥तृतीयं शांतवृत्त्या त
त्तत्वसंवेदनानुगं ॥२३॥ आद्या नाज्ञानबाहुल्या न्मोक्षबाधक
बाधनं ॥ सद्भावाशयलेशेनो चितं जन्म परे जगुः ॥ २४ ॥

पणेः पाणिंगृह्णात्यहह महति स्वार्थे इह यान् त्यजत्युच्चैर्लोकं
स्तृणवदघृणस्तानपरथा॥ विषं स्वांते वक्त्रेऽमृतमिति च विश्वा
सहतिकृद्भवादित्युद्वेगोयदि न गदितैःकिं तदधिकैः ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ एमस्वार्थने वशथइनेप्राणी चंडालनो हाथपकडी चालेछे अहोइतिखेदार्थ जेस्वार्थपणुंतेएहवुंछे वलीजेउत्तमकुलथी उपजेलातेहनेतजेछे अने तरणा जेवोनिरलज्जथइने हैयामांतो झेरजयुंहोय पणमोडे अमृतजेवुंमीठुंबोलेछे एवाअनेक प्रपंच स्वार्थमाटेप्राणीकरेछे नेविश्वासघातीथायछे एवाप्राणीआसंसारमांवसेछे ते जोइनेपण आसंसारथी जेहुंमनउद्वेगपामतुंनथी तेनेघणुंशुंकहियें ॥ १५ ॥

दृशां प्रांतैः कांतैः कलयति मुदं कोपकलितैरमीभिः खिन्नः
स्यादघनधननिधीनामपि गुणी ॥ उपायैस्तुत्याद्यैरपनय
ति रोषं कथमपीत्यहो मोहस्येयं भवभवनवैषम्यघटना॥१६॥

अर्थ ॥ स्त्रीनीदृष्टीना प्रांतके० खुणातेमनोहरछे माटेतेनाजोवाथी हर्षउपजेछे अने स्त्रीनीकोपयुक्तदृष्टीखराबछे माटेतेदेखीनेखेदउपजेछे तथाघणाधनवालापुरुष ने गुणीजनोस्तुतीआदीकरीरीजवेछे ने कष्टसहीनेतेमनोरोषउतारेछे एसघलुंमोहथ कीथायछे माटे जुओमोहरूपीराजानुं केवुंविषमतापणुंछे केजेतजवायोग्यछे तेनो आदरकरावेछे अने जेनोआदरकरवोजोइये तेनोत्यागकरावेछे ॥ १६ ॥

प्रिया प्रेक्षा पुत्रोविनय इह पुत्री गुणरति विंवेकाख्यस्तातः
परिणतिरनिंद्या च जननी॥ विशुद्धस्य स्वस्य स्फुरतिहि कु
टुंबं स्फुटमिदं भवे तन्नोदृष्टं तदपि बत संयोगसुखधीः॥१७॥

अर्थ ॥ जीवनेतत्वविचारणाकरवीतेस्त्रीछे. विनयकरवुंतेपुत्रछे गुणनेविषेजेरतिक रवीतेपुत्रीछे स्याद्वादपणेस्वपरविवेचनकरवुंतेपिताछे. अनिंद्याजेपारकीनिंदातजवीते आत्मानी माताछे एवुंजेअंतरंगकुटुंबछे तेतोजेवारें आत्माशुद्धथाय तेवारेंप्रगटरीतेंपे दाथाय पणतेनेजेपुरुषसंयोगीसुखमां मग्नथइरह्योछे तेतोक्यारेपणदेखतोनथी॥१७

पुरा प्रेमारंभे तदनु तदविच्छेदघटने तदुच्छेदे दुःखान्यथ क
ठिनचेता विषहते ॥ विपाकादापाकाहितकलशवत्तापबहु
लात् जनोयस्मिन्नस्मिन्क्वचिदपि सुखं हंत न भवे ॥ १८॥

दंभोमुक्तिलतावन्हि र्दंभोराहुःक्रियाविधौ ॥ दौर्भाग्यका
रणं दंभो दंभोध्यात्मसुखार्गला ॥ १ ॥ दंभोज्ञानाद्रिदं
भोलि र्दंभः कामानले हविः ॥ व्यसनानां सुहृद्दंभो
दंभश्चौरोव्रतश्रियः ॥ २ ॥ दंभेन व्रतमास्थाय योवांछति
परं पदं॥ लोहनावं समारुह्य सोब्धेः पारं यियासति ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ मुक्तिरूपवेलीने दहनकरवामां कपटतेअग्निसमानछे नेक्रियारूप चंद्रनेग्रा सकरवाने कपटतेराहुछे अनेकपटजदुर्भाग्यनुंकारणछे अध्यात्मसुखनेगलीजनार भुंग लीपणकपटजछे ॥ १ ॥ ज्ञानरूपपर्वतने तोडवानेकपटते वज्रसमानछे कामरूपी अग्नीनीवृद्धिकरवाने घृतजोइयेंतेपणकपटछे व्यसननोमित्र तेकपटछे अने व्रतरूप लक्ष्मीनो चोरपण दंभजछे॥ २॥कपटराखीव्रतनेविषेरही जेप्राणी परमपदजेमोक्ष ते नीवंछनाकरेछे तेप्राणीलोढानीनावमां बेसीसमुद्रतरवानी इछाराखेछेतेवोजाणवो॥ ३

किंव्रतेन तपोभिर्वा दंभश्चेन्न निराकृतः ॥ किमादर्शेन किं दीपै र्यद्यांध्यं न दृशोर्गतं ॥ ४ ॥ केशलोचधराशय्या भिक्षा ब्रह्मव्र तादिकं ॥ दंभेन दुष्यते सर्वं त्रासेनैव महामणिः ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ तेतपेंपणशुं तेव्रतेंपणशुं जोकपटदिशाने तजीनही तोतेसर्वेनिष्फलछे ते आरसीएपणशुं अनेदीवेपणशुं जोदृष्टीएअंधछेतोतेहनेसर्वेठेकाणेअंधकारजरेहसे ॥ ४ ॥ केशलोचकरवो भुमीउपरसयनकरवुं भिक्षामागवी शीलव्रतादिकपालवां ए सर्व धर्मकरणीमात्र कपटेकरीने दुखाइजायछे जेमसुंदरमणीहोय नेतेउपरएकदाग लागवाथी तेनीकांतिमंदथायछे तेहनीपरेंजाणवुं ॥ ५ ॥

सुत्यजं रसलांपट्यं सुत्यजं देहभूषणं ॥ सुत्यजाः काम भोगाद्या दुस्त्यजं दंभसेवनं॥ ६॥स्वदोषनिन्हवोलोक पूजा स्याद्गौरवं तथा॥इयतैव कदर्थ्यंते दंभेन बत बालिशाः॥ ७॥

अर्थ ॥ रसनुंलोलपीपणुं तेसुखेंतजीशकाय देहनीशोभापणसुखें तजीशकाय का मभोगादीनेपण सुखेंतजाय पणकपटनो त्यागकरवोघणुज विकटछे ॥ ६ ॥ पोता नादोषने ढांकीराखेतेथी लोकमांपूजनाथाय तथामोटाइथाय एदिजपूजाप्रमुखनी लालचमाटे पोतानाआत्माने मूर्खप्राणीकदर्थना उपजावेछे ॥ ७ ॥

प्रभाते संजाते भवति वितथा स्वापकलना द्विचंद्रज्ञानं वा
तिमिरविरहे निर्म्मलदृशां ॥ तथा मिथ्यारूपं स्फुरति विदि
ते तत्वविषये भवोयं साधूनामुपरतविकल्पः स्थिरधियां॥२२॥

अर्थ ॥ जेम प्रभातसमयस्वप्ननीरचना निष्फलथइजायछे जेमकोइनाआंखमां जाकलआवीहोय तेहनेआकाशमां बेचंद्रमाजासे पणनिर्मलदृष्टीथतां बेचंद्रमानुं भ्रांतिज्ञानमटीजायछे तेमसंसारथीन्याराराह्या एहवाजेस्थीरबुद्धिवाला तत्वज्ञानसम जेलासाधु तेनेआसंसारते मिथ्यारूपभासेछे ॥ २२ ॥

प्रियावाणीवीणाशयनतनुसंबाधनसुखै र्भवोयं पीयूषैर्घ
टितइति पूर्वं मतिरभूत् ॥ अकस्मादस्माकं परिकलितत
त्वोपनिषदामिदानीमेतस्मिन्न रतिरपितु स्वात्मनि रतिः॥२३॥

अर्थ॥स्त्रीनीवाणीयेंकरीने तथा विणानादेकरीने शय्यायेंकरीने वलीशरीरनेचोलवुं चापवुंतेणेकरीने जे सुखउपजेछे ते अमृतेकरीनेघुटेलुंहोयतेवुंछे एवुंपूर्वेबालकाले वर्त्ताहुंहतुं पण हवेसहसात्कारेंअमने तत्वदिशानारहस्यनी परिकलनाथइ जाणपणुं थयुं तेथीसंसारनेविषेतत्वरुचिवर्त्ततिनथी पणआत्मतत्वमांरुचिथइछे ॥ २३ ॥

दधानाः काठिन्यं निरवधिकमाविद्यकभवप्रपंचाः पांचाली
कुचकलशवन्नातिरतिदाः ॥ गलत्यज्ञानाभ्रे प्रसृमररुचावा
त्मनि विधौ चिदानंदस्यंदः सहजइति तेभ्योस्तु विरतिः॥२४॥

अर्थ ॥ संसारनासमस्तप्रपंच तेअतिशयकठिणताने धरताथकाछे माटे सुजने काष्ठअनेपाषाणनी पुतलीनास्तननीपेरे रतिकारीनथीलागता केमके अज्ञानरुंवाद लगलीगयुंछे अनेआत्मिकज्ञानरूप चंद्रोदयथयो तेथीसहजचिदानंदरसनी शीतलता प्रगटीतेणेकरी विषयतापनीअरतिमटीगइ ॥ २४ ॥

भवे या राज्यश्रीर्गजतुरगगोसंग्रहकृता न सा ज्ञानध्यानप्र
शमजनिता किं स्वमनसि॥ बहिर्याः प्रेयस्यः किमु मनसि ता ना
त्मरतय स्ततः स्वाधीनं कस्त्यजति सुखमिछत्यथ परं ॥२५॥

अर्थ ॥ संसारनेविषे हाथी घोडा बलद प्रमुखजेराजलक्ष्मीछे तेशुंअंतरंगआ त्मानेनथी ? अर्थात् छे ज्ञानहाथी ध्यानघोडा समतातेबलद एलक्ष्मीआत्मानीछे

सन्नाप्रमुखसाधुजो थोडीपणजतना करेछे तोपण तेगुणनारागीपणाथी वर्त्ततायका तेनेनिर्ज्जराथायछे ॥१४॥व्रतनोजारनथी उपमत्तो पोताथीएवुंजाएयाछता पणजेपोताना आत्माने प्रगटरीते कपटेकरीने यतीपणुंलरावेछे संयमीपणुं स्थापेछे तेलिंगीवुंनामलेतांपण पापथाय तोतेनीसेवनातो पापकारीथायज तेमांछुकेहेवुं॥ १५ ॥

कुर्वते ये न यतनां सम्यगालोचितामपि॥तैरहो यतिनाम्नैव दांभिकैर्वंच्यते जगत् ॥ १६ ॥ धर्मातिख्यातिलाभेन प्रच्छादितनिजाश्रवः॥तृणायमन्यते विश्वं हीनोपि धृतकैतवः ॥१७॥

अर्थ ॥ जेलिंगीभलीरीतें द्रव्यक्षेत्रकालनावजोइने यत्नथीकरता तेलिंगीयतिएवेनामेकरीनेकपटीथइ लोकनेवगताफरेछे॥१६॥जेहीनाचारीथको कपटनोधरनारो लिंगीहोय अनेतेयतिधर्मीछे एवीप्रसिद्धिथइहोय तेनालोभेकरीने तेणेपोताना आश्रवनेढांक्याहोय एहवाजे यतिते समग्रजगतते तृणतुल्यजाणेछे ॥ १७ ॥

आत्मोत्कर्षा त्ततोदंभा त्परेषां चापवादतः ॥ बध्नाति कठिनं कर्म्म बाधकं योगजन्मनः ॥१८॥ आत्मार्थिना ततस्त्याज्योदंभोऽनर्थनिबंधनं॥शुद्धिः स्यादृजुभूतस्येत्यागमे प्रतिपादितं॥१९॥

अर्थ॥पोतानाआत्मानी वडाइकरे घणुंकपटधरे अनेपारकाअवरणवादबोले तेणेकरीने कठिणकर्मबांधेछे तेवापुरुपोतेयोगीनाजन्मने बाधककरनाराछे तेशुद्धचारित्रने पामीशकेनही ॥ १८ ॥ माटेअनर्थनुंकारणजेकपट तेनेधर्मार्थिप्राणीयें तजवुं केमके आत्मानीशुद्धीतो सरलतानावेंथायछे एवुंआगमनेविपेकह्युंछे ॥ १९ ॥

जैनैर्नानुमतं किंचि न्निषिद्धं वा न सर्वथा॥ कार्यें भाव्यमदंभेने त्येषाज्ञा पारमेश्वरी॥२०॥ अध्यात्मरतचित्तानां दंभः स्वल्पोपि नोचितः॥ छिद्रलेशोपि पोतस्य सिंधुं लंघयतामिव ॥२१॥

अर्थ ॥ तीर्थंकरेंएकांतने आज्ञापणनथीकरी तेमसर्वथा निपेधपणनथीकीधो तोपणजेकार्यकरवुं तेकपटरहितकरवुं एहिजपरमेश्वरनी आज्ञाछे॥२०॥जेम वाहाणमां छिद्रनो लेशहोयतेपण समुद्र तरवामांयोग्यनही तेम अध्यात्मनेविपे जेनुंमनरंगाणुंछे तेनेजरापण कपटकरवुं तेयोग्यनथी ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ नवनुंस्वरूपजाणवाथकी संसारउपर द्वेषथयाथकी संसारनेनिर्गुणपणेदेख वाथकी शिघ्रपणे संसारना विछेदनोवैराग्य आत्मानेविषे प्रगटथाय ॥ १ ॥ विषयसुखनीसिद्धि निष्पत्तिप्राप्तितेवडे जेवैराग्यनुंवर्णनकरेछे तेनुंमतघटमानननथी जिहांसुधी अर्थके० द्रव्यछेतिहांसुधीविषयछे एवीप्रसिद्धिछे अर्थसत्वेविषयसत्वंइति.

अप्राप्तत्वभ्रमाडुच्चै रवाप्तेष्वप्यनंतशः॥ कामभोगेषु मूढानां समीहा नोपशाम्यति ॥३॥ विषयैः क्षीयते कामो नेंधनैरिव पावकः ॥ प्रत्युत प्रोल्लसच्छक्ति र्भूय एवोपवर्द्धते ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जेएमजाणेछे जेहुंकोइकाले संसारनेविषेआव्योजनथी जोअनंतिवारविषयसेव्याछे तेछतांआविषयनवापाम्यो एवोभ्रमजेनेउपजेछे एवाजेकामभोगने विषे मुंझाइरह्याछे तेनीअभिलाषानोनाशथतोजनथी ॥ ३ ॥ जेमइंधनेअग्निघटेनही पणउलटीवृद्धिजपामे तेमविषयसेवतां कामभोगपण कदापिक्षयपामेनही उलटी शक्तिउल्लासपामतीजाये वारंवारवधतीजजाए ॥ ४ ॥

सौम्यत्व मिव सिंहानां पन्नगानामिव क्षमा॥ विषयेषु प्रवृत्ता नां वैराग्यं खलु दुर्वचं ॥५॥ अकृत्वा विषयत्यागं योवैराग्यं दिधीर्षति ॥ अपथ्यमपरित्यज्य स रोगोछेदमिछति ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेमसिंहनेसोमपणुंनथी सर्पनेजेमशमतानथी तेमविषयमां जेप्रवर्त्या तेमने वैराग्यदोहिलोछे पणसुगमनथी ॥ ५ ॥ जेविषयनोत्यागकर्याविना चित्तमां वैराग्यनी धारणाकरेछे तेकुपथ्यतज्याविना रोगटालवानी इछाकरेएवुंछे ॥ ६ ॥

न चित्ते विषयासक्ते वैराग्यं स्थातुमप्यलं॥ अयोघन इवोत्तप्ते निपतन्बिंदुरंभसः॥७॥ यदींदुः स्यात् कुहूरात्रौ फलं यद्यव केशिनी॥ तदा विषयसंसर्गिचित्ते वैराग्यसंक्रमः ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जेम लोढानो घण तपोहोय तेपाणीनाबिंदुने शोषीजायछे तेमजेनुंचित्तविषयासक्तछे तेनाहृदयमां वैराग्यरहीशकतुं नथी ॥ ७ ॥ जो अमासनीरात्रीयें चंद्रउगे अने जोवांझीआवृक्षने फलआवे तोविषयीजीवना हृदयमां वैराग्यसंक्रमे॥८॥

भवहेतुषु तद्वेषा द्विषये ष्वप्रवृत्तितः॥ वैराग्यं स्यान्निराबाधं भवनैर्गुण्यदर्शनात् ॥ ९ ॥ चतुर्थेपि गुणस्थाने नन्वेवं तत् प्रसज्यते॥ युक्तं खलु प्रमातॄणां भवनैर्गुण्यदर्शनं ॥ १० ॥

अंगारासमानछे जेअंगवस्त्रघणाप्रकारना विकारप्रगटथायछे तेमाटेसंसाररूप अग्नीमां बलीरह्याजे प्राणीतेने नवमांपणसुखनथी तेमजशरीरमां पणकइजसुखनथी ॥३॥

गले दत्वा पाशं तनयवनितास्नेहघटितं निपीड्यंते यत्र प्र
कृतिकृपणाः प्राणिपशवः॥ नितांतं दुःखार्त्ता विषमविषयै
र्घातिकजटैर्भवः सूनास्थानं तदहह महासाध्वसकरं ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जेनागलानेविषेपुत्र तथा स्त्रीरूपस्नेहनोफांसो नखायोछे तेनास्नेहपाशमां पड्यातुछस्वनावनाधणी तेअतिशयपणे पीडापामेछे आकराविषयरूपजे घातकी सुनट तेणेकरीनेसंसारते खाटकीनुंस्थानकछे माटेहाहासंसारतेकेवलदुःखनुंमूलछे४॥

अविद्यायां रात्रौ चरति वहतो मूर्ध्नि विषमं कषायव्यालौघं
क्षिपति विषयास्थीनि च गले॥महादोषान् दंतान् प्रकटयति
वक्रस्मरमुखो न विश्वासार्होयं भवति भवनक्तंचर इति॥ ५ ॥

अर्थ ॥ अज्ञानदिशारूप रात्रिनोचालनार जेनामाथाउपर विषमकषायरूप सर्पनोसमूहरह्योछे जेनागलानेविषे विषयरूपहाडकांबांध्याछे जेमहोटादोषरूप दांतप्रगटकरेछे जेनुंमुख कामनीचेष्टाकरेछे एवोसंसाररूपीराक्षस तेविश्वासकरवानेयोग्यनथी.

जना लब्ध्वा धर्म्मद्रविणलवभिक्षां कथमपि प्रयांतोवामा
क्षीस्तनविषमदुर्गस्थितिकृताः॥ विलुप्यंते यस्यां कुसुमशर
भिल्लेन बलिना भवाटव्यां नास्यामुचितमसहायस्य गमनं॥६॥

अर्थ ॥ जेप्राणीधर्मरूपधनना लवलेशनेपाम्योछे तेणेभिक्षामागवाने एकला विचरवुंनही केमके नवाटवीनेविषे बलवत्तरभील एवोजेकाम तेस्त्रीनास्तनरूप विषयीकोटमांरहीने तेप्राणीमात्रना धर्मरूपधनने लुटीलीयेछे माटे सहायविना तेप्राणीयेंएकलुं विचरवुं (चालवुं) योग्यनथी ॥ ६ ॥

धनं मे गेहं मे मम सुतकलत्रादिकमतो विपर्यासादासादि
तविततदुःखा अपि मुहुः ॥ जना यस्मिन् मिथ्यासुखमद
भृतः कूटघटनामयोयं संसार स्तदिह न विवेकी प्रसजति॥७॥

अर्थ ॥ धन घर पुत्रने स्त्रीआदी सर्ववस्तुमारीछे एवाविपर्यासपणाथी विशेषप्र

लसमान देखतोथकोअनुद्वेगदिशामांवर्त्ते जेह्नेकामजोगमां उद्वेगनथी नेराग़पण नथी ते तेणेकरीतेमां तन्मयपणुंनकरे तेनिरविघ्नपणे यथायोग्येंमोक्षेंजजायछे॥१६॥

जोगान् स्वरूपतः पश्यं स्तथा मायादिकोपमान्॥भुंजानोपि ह्यसंगः सन् प्रयात्येव परं पदं॥१७॥जोगतत्वस्य तु पुन र्न ज्ञवोदधिलंघनं॥मायोदकदृढावेशा स्तेन यातीह कः पथा॥१८॥

अर्थ॥ जेप्राणी शब्दादिकजोगने परमार्थदिशायें जोतोथको इंद्रजालसमानजाणेते विषयादिकने जोगवतोपण तेमांलोपातोनथी तेनिश्चयपरमपदजे मोक्षतेनेपामेछे ॥१७॥अनेजेजवाजिनंदीप्राणी तेसंसारना जोगनेजतत्वकरीमानेछे तेप्राणीसंसारसमुद्रने उलंघीनशके केमके मायारूपउदकनाआवेशें तेप्राणीकुपंथनेविषेजायछे ॥१८॥

स तत्रैव जवोद्विग्नो यथा तिष्ठत्यसंशयं॥ मोक्षमार्गेपि हि तथा जोगजंबालमोहितः ॥ १९ ॥ धर्म्मशक्तिं न हंत्यत्र जोगयोगबलीयसीं॥ हंति दीपापहोवायु र्ज्वलंतं न दवानलं॥ २० ॥

अर्थ ॥ तेप्राणीजोगनो जंबालके० कलिमलतेणेमोहितथयोथको मोक्षमार्गना साधननेविषेपण जवोद्विग्नतापणेनिश्चयथकीरहेछे ॥ १९ ॥ धर्मनीसामर्थताने कामजोगनोसंयोग हणीशकतोनथी केमके धर्मनीसामर्थता घणीबलवत्तरछे दीपकसमानअल्प धर्मनेतोकदापि वायुसमानविषयओलवीनाखे पणजाज्वलमान दावानलसमानजे महाधर्मनीवासना तेनेवायुनडीशकतोनथी ॥ २० ॥

बध्यते बाढमासक्तो यथा श्लेष्मणि मक्षिका ॥ शुष्कगोलवद श्लिष्टो विषयेज्योन बध्यते ॥२१॥ बहुदोषनिरोधार्थ मनिवृत्तिरपि क्वचित्॥ निवृत्तिरिव नो दुष्टा योगानुजवशालिनां ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ जेम श्लेष्मनेविषे माखीलेपाइ फसाइजायछे तेम विषयनेविषे गाढपणे आसक्तथतां प्राणीबंधाइजायछे सुकीमृत्तिकानागोलामांजेम माखीफसातीनथी तेम आसक्तीरहितउदासीन एवाजेजीव तेविषयनेविषे बंधातानथी ॥ २१ ॥ जेम रोगनेकाढवाने औषधीनीजरूरछे तेमघणादूषणनो रोधकरवानेअर्थें क्वचितअनिवृत्तिपणेपण दुष्टनथी जेमकामजोगनी त्यागबुद्धिदुष्टनथी तेमअनुजवजोगेकरीने सहितजेवर्त्ते तेनेक्वचितमात्र अनिवृत्तिछे तेपण निवृत्तिनीपरेंज दुष्टनथी॥ २२ ॥

अर्थ ॥ कोइनेतोविस्तारवालुंराज्यछे कोइनेधननोलेशपण दोहेलोछे कोइनीउ त्तमजातीछे कोइनीनीचजातीछे कोइनेअपयशछे कोइनेलावण्यलीलानी लक्ष्मीघणीछे कोइनुंशरीरपण रुडुंनथी एवुंसंसारनुंस्वरूपविषमछे तेकोनेरतिकारीथाय ? ॥ ११॥

इद्दोद्दामः कामः खनति परिपंथी गुणमहीमविश्रामः पार्श्वे
स्थितकुपरिणामस्य कलहः॥ बिलात्यंतः क्रामन्मदफणभृ
तां पामरमतं वदामः किंनाम प्रकटभवधाम स्थितिसुखं॥१२॥

अर्थ॥ इद्दांउद्दामकामदिशाछे तेजपरिपंथीके० शत्रुछेतेगुणरूपजे महीके० पृथ्वीते नेखणेछे अनेपासेरह्योजे कुपरिणामते विश्रामलीधाविना निरंतर क्लेशकरेछे एक्लेश वडे खरडाया एवाजेप्राणी तेअष्टमदरूपसर्प तेणेकरीयुक्तछे एवुंपामरलोकने मानवा योग्य आसंसाररूपजेघर तेनुंशुंसुखकहियें ॥ १२ ॥

तृषार्त्ताःखिद्यंते विषयविवशा यत्र भविनः करालक्रोधार्का
द्धमसरसि शोषं गतवति ॥ स्मरस्वेदक्लेदग्लपितगुण
मेदस्यनुदिनं भवग्रीष्मे भीष्मे किमिह शरणं तापहरणं॥१३॥

अर्थ ॥ संसारनेविषे प्राणीमात्र पुजलनी तृष्णारूपतरसेकरीने पीडायाछे अने विषयनीआशायेंकरी परवशथयाछे एहवाप्राणीयो विहामणाक्रोधेंकरीपीडायछे केम केतेमनेमाटे शमतारूपसरोवरतो सुकाइगयुंछे अनेकामदिशारूपजे परस्वेद तेनीजे ग्लानता तेणेकरीनिरंतर गुणमेदाखरडायछे ज्यां एहवोविहामणो आसंसाररूपउस्न काल तेनातापनेहरे एवोकोइनथी ॥ १३ ॥

पिता माता भ्राता प्यभिलषितसिद्धावभिमतो गुणग्रामज्ञाता
न खलु धनदाता च धनवान्॥ जनाः स्वार्थस्फातावनिशमवदा
नाशयभृतः प्रमाता कः ख्याताविह भवसुखस्याशु रसिकः॥१४॥

अर्थ॥आसंसारनेविषे पितामातानेभ्राताके० भाइआदी तेसर्वेचिंतितअर्थनी अ भिलाषापुरे त्यांलगीअभिमतके० संमतकरीमाने तथागुणनासमूहनोजाण एहवो धनवंतप्राणीहोयतेपण कृपणपणेकरीने गुणीजनने धनदेइशकेनही एम सर्वप्राणी पोताना स्वार्थसाधनकरवाने सावधानपणेवर्त्तेछे पणपरमार्थथी वेगलावसेछे एवाभ वसुखना रसियाजेजीवतेहना स्वरूपनेकेहेवाने कोणसमर्थथइशके ॥ १२ ॥

बलेन प्रेर्यमाणानि करणानि वनेभवत्॥न जातु वशतां यांति प्रत्युतानर्थवृद्धये॥ २९॥ पश्यंति लज्जया नीचै र्दुर्ध्यानं च प्रयुंजते॥ आत्मानं धार्मिकाभासाः क्षिपंति नरकावटे॥३०॥

अर्थ ॥ बलात्कारेंप्रेरवाथकापण वननाहाथीनीपेठेइंद्रियो कदापिवशथतीनथी उलटीअनर्थनी वृद्धिकरनारीथायछे ॥ २९ ॥ लाजेकरीनीचुंजुएछे अनेमनमांदुष्ट्ध्यानधरेछे एवाधर्मधुताराप्राणीते पोतानाआत्माने नरकनाकूपमां नाखेछे ॥ ३० ॥

वंचनं करणानां तद्विरक्तः कर्तुमर्हति॥सद्भावविनियोगेन सदास्वान्यविभागवित्॥ ३१॥ प्रवृत्तेर्वा निवृत्तेर्वा न संकल्पो न च श्रमः॥विकारोहियते क्षाणामिति वैराग्यमद्भुतं॥३२॥

अर्थ ॥ शुभभावनेअर्पणकरीने सदास्वपरविवेचन ज्ञानयुक्त भावनावालाज्ञाता विरक्तप्राणी इंद्रियोनेठगवानेसमर्थथायछे पणबीजानथीथाता ॥ ३१ ॥ प्रवृत्तिनेविषे अथवा निवृत्तिनेविषे जेनेसंकल्पनथी अनेथाकपणनथी एवासमभावेंवर्तनारना सर्वविकारदूरथायछे अनेएवुंजनामअद्भुतवैराग्यपणछे ॥ ३२ ॥

दारुयंत्रस्थपांचाली नृत्यतुल्याः प्रवृत्तयः॥योगिनो नैव बाधायै ज्ञानिनो लोकवर्तिनः॥३३॥इयं च योगमायेति प्रकटं गीयते परैः॥ लोकानुग्रहहेतुत्वान्नास्यामपि च दूषणं ॥ ३४ ॥

अर्थ ॥ जेमकाष्ठनीपुतलीने दोरीनासंचारेंकरी नाचनारीनामाफकनाचती जोइयेंछयें पणतेनेकर्मबंधननथी तेमलौकिकव्यवहारनेविषें वर्तताज्ञानी जेयोगीश्वरपुरुषतेहनेसंसारनी प्रवृत्तिपीडाकरतीनथी॥ ३३ ॥ एवैराग्यदिशाने परदर्शनीजोगमायानेनामेप्रगटपणे बोलावेछे एपणलोकनेउपकारकरताछे एनेविषेदूषणनथी ॥ ३४ ॥

सिद्धांते श्रूयते चेयमपवादपदेष्वपि॥ मृगपर्षत्परित्रासनिरासफलसंगता ॥ ३५ ॥ औदासीन्यफले ज्ञाने परिपाकमुपेयुषि॥ चतुर्थेपि गुणस्थाने तद्वैराग्यं व्यवस्थितं ॥ ३६ ॥

अर्थ ॥ सिद्धांतमांपणसांभलीयेंछयेंके अपवादनेविषे मृगलासरखीपरखदानेपण निरासकरवी एजवृषभतुल्यगीतार्थनी शुद्धज्ञानदिशाजाणवी. ॥ ३५ ॥ परिपकथयथकी एवीजेज्ञानदिशाअने जेनुंफलउदासीनताछे तेथकीचोथेगुणस्थानके पणवैराग्यदिशा प्राप्तथायछे इतिवैराग्यसंभवाधिकारपंचम समाप्तः ॥ ३६ ॥

अर्थ ॥ प्रथमप्रेमकरताडुःखछे तेपछीतेनेनिश्चलपणेराखवाने पणघणुंडुःखछे व
लीतेप्रेमपात्रनो विछेदथायतो मरणथाय अथवाप्रेमत्रुटे त्यारेसडथीवधारे डुःखउप
जेनेते सहनकरवाने छातीधणीकठणराखवीपडे निमाडानापाकनेविषे आरोपितकर्यो
एवोजेघट तेनासरखीतापनी बहुलताछेज्यां तोएवोजे आसंसाररूप नीमाडोतिहांसु
खतो काइंजनथी समग्रडुःखमयजछे ॥ १७ ॥

मृगाक्षी दृग्बाणै रिहहि निहतंधर्म्मकटकं विलिप्ताहृद्देशा
इह च बहुलैरागरुधिरैः ॥ भ्रमंत्यूर्ध्वं क्रूरा व्यसनशतगृ
ध्राश्च तदियं महामोहक्षोणीरमणरणभूमिः खलु भवः॥१८॥

अर्थ ॥ आसंसारनेविषे धर्मराजाना कटकनेतोमृगनयनीना दृष्टीरूपीबाणेहणी
नाख्युंछे रागदिशारूपरुधीरवमे लोपाइगयाछे हृदयप्रदेशजेनाते उपर अनेकप्रकारना
मन तनसंबंधीकष्टरूपीगीधपक्षीयो भमीरह्याछे एवोमहामोहरूप क्षोणीरमणजे
राजा तेनीरणभूमीसमान आसंसारछे ॥ १८ ॥

हसंति क्रीडंति क्षणमथच खिद्यंति बहुधा रुदंति क्रंदति क्ष
णमपि विवादंविदधते ॥ पलायंते मोदं दधति परिनृत्यंति
विवशा भवे मोहोन्मादं कमपि तनुभाजः परिगताः ॥२०॥

अर्थ ॥ क्षणमांहसे क्षणमांक्रीडाकरे ( रमे ) क्षणमांखेदकरे क्षणमांबहुप्रकारें
रडे क्षणमांविलापकरे क्षणमांअनेकप्रकारनो विवादकरे क्षणमांनासीजाए क्षणमां
हर्षितथइ नाचवामांडे इत्यादीउन्मादसंसारनेविषे देहधारीप्राणीयोकरेछे तेसर्व
मोहराजानेआधीनथकाकरेछे ॥ २० ॥

अपूर्णा विद्येव प्रकटखलमैत्रीव कुनयः प्रणालीवा स्था
ने विधववनितायौवनमिव ॥ अनिष्णाते पत्यौ मृगदृशइव
स्नेहलहरी भवक्रीडाव्रीडा दहति हृदयं तात्त्विकदृशां॥२१॥

अर्थ ॥ असंपूर्णविद्याजेमपंडितने तेमज खलमाणसनीमित्राइ वलीराजसभामां
अन्यायनी प्रणालिका एटलेअन्यायनोमार्ग तथा विधवास्त्रीनुंयौवन वलीमूर्खभरतार
नेआगलस्त्रीनास्नेहनीलहरी तेजेमखेदनोपात्रथायछे तेमजसंसारनीक्रीडा जेलज्जा
मणीछे तेथी तत्वदर्शीप्राणीडुःखपामेछे ॥ २१ ॥

गृहेऽन्नमात्रदौर्लभ्यं लभ्यंते मोदका व्रते ॥ वैराग्यस्यायम र्थोहि दुःखगर्भस्य लक्षणं ॥ ७ ॥ कुशास्त्राभ्यासंसंभूत भव नैर्गुण्यदर्शनात् ॥ मोहगर्भं तु वैराग्यं मतं बालतपस्विनां॥ ८ ॥

अर्थ अहोघरमांतो पुरुअन्नपणनथीमलतुं नेदीक्षालीधायकी तोलाडुवामलेछे तेमाटेदीक्षालेवामां शुंदुःखछेएवुंजाणीने जेदीक्षालियेछेतेनुंनाम दुःखगर्भित वैराग्य जाणवुं ॥ ७ ॥ एरीतेंप्रथम दुःखगर्भितवैरागपणुंदेखाड्युं हवेमोहगर्भित वैराग्य कहेछे कुशास्त्रनाअभ्यासथी प्रगटयुंजेसंसारनुं निरगुणीपणुं तेथीमोहगर्भित वैराग्य थायछे तेबालतपस्वी प्रमुखजाणवा ॥ ८ ॥

सिद्धांत मुपजीव्यापि ये विरुद्धार्थभाषिणः ॥ तेषामप्येतदेवे ष्टं कुर्वता मपि दुष्करं ॥ ए ॥ संसारमोचकादीना मिवैतेषां न तात्विका ॥ शुभोपि परिणामोय ज्ञातानज्ञान रुचिस्थितिः १०

अर्थ॥ जेसिद्धांतनुंउपजीवन करीनेपण सूत्रविरोधि अर्थकेहेछे तेप्राणीजो दुष्कर करणीकरेछे तोपणतेनेएवोजजाणवो ॥ ए ॥ संसारना दुःखथीमूकाववाना हेतुथीजे मुसलमानते घोडाप्रमुखने दुःखीदेखी तेनेदुःखथी छोडववाने दयाभावेकरीमारीना खेछे तेपणशुभपरिणामनी बुद्धिराखेछे तेछतांपरमार्थेपापजछे तेममोहगर्भितने पर मार्थेजमेनही जोएनो परिणामशुभहोय तोपणपरमार्थे ज्ञाननीरुचिथायनही॥१०॥

अमीषां प्रशमोप्युच्चै र्दोषपोषाय केवलं॥अंतर्निलीनविषम ज्वरानुभवसन्निभः ॥ ११ ॥ कुशास्त्रार्थेषु दक्षत्वं शास्त्रा र्थेषु विपर्ययः ॥ स्वछंदता कुतर्कश्च गुणवत्संस्तवोज्झनं॥१२॥

अर्थ ॥ जेअंतरंगमां लीनथइरह्यो एहवोछाडवेदीज्वर दुःखदाइथायछे तेमएने पणजेप्रशमादिकगुण थायतेपण घणुकरीने केवलदूषणनणीजथाय पणगुणनणी न होजथाय केमकेअंतरंग मिथ्यात्वगयाविना वैराग्यतेदुःखदाइछे ॥ ११ ॥ कुशास्त्र नाअर्थने विषे डाह्याथाय नेशास्त्रनाविपरीत अर्थकरे स्वछंदपणेवरते कोइसाथेछद माराखेनही अनेगुणीनी प्रशंसानकरे ॥ १२ ॥

आत्मोकर्षः परद्रोहः कलहो दंभजीवनं॥ आश्रवाछादनं श क्त्युल्लंघने न क्रियादरः ॥ १३॥ गुणानुरागवैधुर्य मुपकारस्य विस्मृतिः॥ अनुबंधाद्यचिंता च प्रणिधानस्य विच्युतिः ॥१४॥

अनेतुंजो मनवडेबाह्यसार्थे प्रेमकरेछे तोपोतानाआत्मासार्थे रतीकेमकरतोनथी आत्मिकसुखतजीने पुद्गलिकसुखने कोणइछे एवोमूर्खकोणहोय॥ २५॥

पराधीनं शर्म्म क्षयि विषयकांक्षौघमलिनं नवे नीतेः स्थानं त
दपिकुमतिस्तत्र रमते॥ बुधास्तु स्वाधीने क्षयिणि करणौत्सुक्य
रहिते निलीनास्तिष्ठंति प्रगलितनयाध्यात्मिकसुखे॥ २६॥

अर्थ॥ पौद्गलिकसुखकेवुंछे एकतोपराधीनछे स्वनावेक्षयथवालायकछे विषयनी वंछनावडेमलीनछे एमसंसारनेविषेनयनास्थानपणाछे तेछताकुमतिनाधणी संसारमां रमेछे अनेपंडितलोकजेछे तेस्वाधीनसुखमांरमेछे तेसुखकेवुंछे केजेकोइकालेंक्षयपामे नही इंद्रियोनीउत्सुकतायेंरहितछे जेप्राणीआत्मज्ञानमां लयपाम्याथकाछेतेप्राणी सकलनयदिशा रहितथका परमानंदनेविषे मग्नपणेरहेछे॥ २६॥

तदेतद्भाषंते जगदनयदानं खलु नवस्वरूपानुध्यानं शमसु
खनिधानं कृतधिय॥ स्थिरीभूते ह्यस्मिन्विधुकिरणकर्पूरवि
मला यशःश्रीः प्रौढा स्याज्जिनसमयतत्वस्थितिविदां॥२७॥

अर्थ॥ आजगतप्रत्येंपंडितलोक एमकहेछे जेपोतानाआत्मनावना स्वरूपनुंचिंतनतेजशमताना सुखनुंकारणछे अनेजगतनेअनयदाननुं देवावालोछे जेणेकारकता नावेंबुद्धिकरीछे तेनेआत्मस्वरूपज्ञान स्थिरथयेथके चंद्रकिरणकर्पूरसरीखी उज्वल यशलक्ष्मीतेप्रौढपणे विस्तारपामे एवातत्वज्ञानी तेजिनेश्वरप्रणित सिद्धांतनातत्वनी मर्यादायेंवर्त्ते॥ २७॥ इतिनवस्वरूपचिंताधिकारःचतुर्थःसमाप्तः॥

इतिश्रीनयविजयगणिशिष्य श्रीयशोविजयेनविरचिते अध्यात्मसारप्रकरणे प्रथमः प्रबंधः॥१॥ सर्वश्लोक १०२ तेमां पेहलाना २४ बीजाना २९ त्रीजाना २२ तथा चोथाअधिकारना २७

नवस्वरूपविज्ञाना द्वेषान्नैर्गुण्यदृष्टिजात्॥ तदिछोछेदरू
पं प्राग् वैराग्यमुपजायते॥१॥ सिद्धा विषयसौख्यस्य वैराग्यं
वर्णयंति ये॥ मतं न युज्यते तेषां यावदर्थोप्रसिद्धितः॥ २॥

एनुंनाम निश्चयसमकितकहियें कारकसमकेतीनी एवीदृष्टिहोय एटलामाटे निश्चय नयनीरीतिके० प्रीतितेशुद्धचारित्रवंतनेजहोय ॥ २० ॥

बहिर्निर्वृत्तिमात्रं स्या श्चारित्र्या व्यावहारिकात् ॥ अंतःप्रवृत्तिः सारं तु सम्यक् प्रज्ञानमेव हि ॥२१॥ एकांते नहि षट्काय श्रद्धा नेपि न शुद्धता॥संपूर्णपर्ययालाभाद् यन्न याथात्म्यनिश्चयः॥२२॥

अर्थ ॥ बाह्यथीधन कण कंचन कामिनीप्रमुख बाह्यवस्तुनोज त्यागीथाय एव्यव हारचारित्रना पालवाथी तेप्राणीव्यवहार दृष्टियेंजचालेछे अनेजेने समकितसहित ज्ञाननी प्रवृत्तिहोय तेहनेजअंतरंग प्रवृत्तिनुं सारकहियें ॥ २१ ॥ समस्तनयनी वासनारहितथका एकांतेछकायनारिक्षानी श्रद्धाकरताथका समकितनीशुद्धता नके वाय पणसंपूर्णनयनीअपेक्षायें द्रव्यार्थिकपर्यायार्थिकनयना लाभविना यथार्थपणा नो लाभनहीजथाय माटेशुद्धनयनी अपेक्षायेंवर्त्तवुं ॥ २२ ॥

यावंतः पर्यया वाचां यावंतश्चार्थपर्यया: ॥ सांप्रता नागताती तास्तावद्द्रव्यं किलैककं ॥ २३ ॥ स्यात्सर्वमयमित्येव युक्तं स्व परपर्ययैः ॥ अनुवृत्तिकृतं सत्वं परत्वं व्यतिरेकजं ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ जेमजगतमांवर्त्तमान अनागत तथाअतिकालना जेटलाशब्दपर्याय वचन नाछे तथापदार्थनाजेटला अर्थपर्यायछे तेसर्वपर्यायनिश्चेंथी एकजद्रव्यछे ॥ २३ ॥ जेसत्वके० पदार्थते सर्वस्वपरपर्यायमयीहोय तेआवीरीतेंजे अनुवृत्तिसहचारी गु णपणेसत्वंके० स्वपणुजाणवुं अने परपणुते व्यतिरेकपणेकरीजाणवुं ॥ २४ ॥

ये नाम परपर्याया: स्वास्तिलायोगतोमता:॥ स्वकीया अप्यमी त्या ग स्वपर्यायविशेषणात् ॥ २५ ॥ अतादात्म्येपि संबधो व्यवहा रोपयोगतः ॥ तेषां सत्वं धनस्येव व्यज्यते सूक्ष्मया धिया ॥ २६ ॥

अर्थ॥जेटलापरपर्यायछे तेसर्वपोतानीआस्तिक्यताना अजोगथीजाणवा तेयद्यपि पोतानाछे तोपणगतभावेंछे अनेपोतानापर्यायतो सामान्यतापणेछे ॥ २५ ॥ परपर्याय जोपणतादात्म्यभावेंनथी तोपण व्यवहारनयना जोगथीतेहनो संबंधछे जेमधननोध णी अनेधनते जूदाजूदाछे तोपणसूक्ष्म बुद्धियेंविचारतां तेमनोसंबंधजणायछे ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ जवनी वृद्धिनाहेतुउपरजेनेद्वेषहोय विषयनेविषे जेनीप्रवृत्तिनहोय तेप्राणीने संसारनीनिर्गुणताना चिंतनथकी निराबाधपणे वैराग्यउपजे ॥ ए ॥ चोथागुणगाणानेविषेपण समकेतवंत ज्ञातापुरुषनिश्चयपणे संसारनीनिर्गुणताज जुएछेतो तेने वैराग्यनीप्राप्तिथायछे तेयुक्तजछे ॥ १० ॥

सत्यचारित्रमोहस्य महिमा कोप्ययं खलु ॥ यदन्यहेतुयोगे
पि फलायोगोत्र दृश्यते॥११॥दशाविशेषे तत्रापि नचेदं ना
स्ति सर्वथा॥स्वव्यापारहतासंगं तथा च स्तवभाषितं॥१२॥

अर्थ॥ चारित्र मोहनीनोमहिमा साचोजछे केमके निश्चेथकी अन्यजोगहेतुयेंपण फलनुं अयोग्यपणुं तेथकी जोवामां आवेछे ॥ ११ ॥ समकेतनीदिशाविशेषेंकरीने तेचोथेगुणगाणेपण सर्वथावैराग्यनजहोय एमनजाणवुं तिहांपणपोताना आत्मिक स्वभावनी रमणतायें कुसंगपणुंहणायछे एअर्थ वीतरागस्तोत्रनेविषे श्रीहेमाचार्य जीयें करेलोछेमाटे चोथेगुणगाणे वैराग्यपणुंहोय ॥ १२ ॥

यदा मरुन्नरेंद्रश्री स्त्वया नाथोपभुज्यते॥यत्र तत्र रतिर्नाम
विरक्तत्वं तदापि ते॥१३॥भवेच्छा यस्य विच्छिन्ना प्रवृत्तिः कर्म्म
भावजा ॥ रतिस्तस्य विरक्तस्य सर्वत्रशुभवेद्यतः ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ जेकालें देवतानाराजानीलक्ष्मी हेनाथतमेंभोगवी तिहांपणजिहांजिहां रतिमोहिनीउपजेते तमेकरीनथी त्यांपणतमेंविरक्तपणुजकर्युंछे पणरंगायानथी॥१३ माटे भवनीइच्छाजेहनेविच्छेदथायछे तेनेजेअवश्यवेदवायोग्य भावकर्मनी प्रवृत्तीप्रमुख जेविरक्तआत्मानेरतिपणुछे तेसर्वत्र शुभवेदनीजवर्त्तेछे. ॥ १४ ॥

अतश्चाक्षेपकज्ञानात् कांतायांभोगसंनिधौ॥ न शुद्धिप्रक्षयो
यस्मा द्धारिभद्रमिदं वचः॥ १५ ॥ मायाम्भस्तत्वतः पश्यन्ननु
द्विग्नस्ततोद्रुतं॥ तन्मध्ये न प्रयात्येव यथा व्याघातवर्जितः॥१६॥

अर्थ॥ एहिजकारणमाटे स्वरूपज्ञाननाअभ्यासेंकरी अथवा अन्यवस्तुयेंकरी अन्य वस्तुनुंपुरवुं तेक्षेपककेवाय तेक्षेपकपणुंजेनेनथी तेनुंनामअक्षेपककहियें एहवोअक्षेपकज्ञानवंत निश्चेभावनुंग्रहणकरनारो ते पुरुषजोकांता जेस्त्रीतेनाभोगनेसन्मुख प्रवर्त्ततोहोय तोपणतेहनी शुद्धिनोप्रकर्षेरीतें क्षयनथाय एटले ज्ञानशुद्धिते कर्मक्षयनुं कारणछे एवुंहरिभद्रसूरीनुंवचनछे ॥ १५ ॥ परमार्थदिशाथकी सर्वसंसारने इंद्रजा

अर्थ ॥ आगमनाअर्थनुं उपनयनजेथापवुं तेथकीप्राज्ञजे बुद्धिवंत तेनुंज्ञान स र्वव्यापकपणेप्रवर्त्ते कार्यादिकजेव्यवहारछे ततोनिश्चयपणें चित्रामणनीरेखासरिखोछे श्रेष्ठरूपकरवाने जेमआलेखकरे तेसरिखोव्यवहारछे अनेसमग्ररूपकरवा समानतेनि श्चयनयछे॥३३॥ तेमाटेएकांतनय अंगीकारकरीनेप्रवर्त्तनारा वैराग्यवंतनेपण कुग्रही कहिये तोबीजामात्र नामधरावनारहोय तेनीतोसीवार्ता एकनयवालोशास्त्रना अर्थ नोबाधककरता जाणवुंतेजोपण जैनाभासछे तोपण पापकारी जाणवो ॥ ३४ ॥

उत्सर्गे चापवादेपि व्यवहारेथ निश्चये॥ ज्ञाने कर्म्मणि वा
यं चे न्न तदा ज्ञानगर्भता॥३५॥ स्वागमेन्यागमार्थानां शत
स्येव परार्ध्यके॥तावताप्यबुधत्वं चे न्न तदाज्ञानगर्भता॥३६॥

अर्थ ॥ उत्सर्गमार्गमां अपवादमार्गमां व्यवहारमार्गमां निश्चयमार्गमां ज्ञानन यनेविषे अनेक्रियानयनेविषे जोकदाग्रहनथी तोतेनेज्ञानगर्भितपणुछे अनेतेज्ञानी पणछे ॥३५॥ स्वसिद्धांतनाजाणवाथी अन्यशास्त्रनुं जाणवुंते तेमांजसमाईजायछे जेमपरार्ध्यनामे उत्कृष्टगणितछे तेमांसोनुगणितपण समाइजायछे अनेतेटलो ज्ञा नपामिनेपण जोअज्ञानपणुरहेतो तेनेज्ञानगर्भिताबिलकुलनथी एमजाणवुं ॥३६॥

नयेषु स्वार्थसत्येषु मोघेषु परचालने ॥ माध्यस्थ्यं यदि नायातं
न तदा ज्ञानगर्भता ॥ ३७॥ आज्ञयागमिकार्थानां यौक्तिकानां
च युक्तितः॥ न स्थाने योजकत्वं चे न्न तदा ज्ञानगर्भता ॥ ३८ ॥

अर्थ ॥ पोतपोताना स्वार्थनेविषे सघलानयसत्यछे नेपरमार्थनी चालनानेविषे निष्फलछे अनेतेनयना विवादमांजो मध्यस्ततानआवी तोतेनेज्ञानगर्भताछेजनही ॥३७॥जेआज्ञाग्राह्यअर्थने आज्ञायें ग्रहेनही आगमप्रमाणेग्रहवायोग्यने आगमें ग्रहे नही अनेयुक्तिग्राह्यनेयुक्तीवडेग्रहेनही एमसहुने पोतपोतानेठेकाणे जोडीजाणेनही तोतेने ज्ञानगर्भिता मूलथीजनथी एमजाणवुं ॥ ३८ ॥

गीतार्थस्यैव वैराग्यं ज्ञानगर्भं ततः स्थितं ॥ उपचारादगीतस्या
प्यभीष्टं तस्य निष्ठया ॥ ३९ ॥ सूक्ष्मेक्षिका च माध्यस्थ्यं सर्वत्र
हितचिंतनं ॥ क्रियायामादरोभूयान् धर्मे लोकस्य योजनं॥४०॥

अर्थ ॥ उपरकह्या मुजबतो गीतार्थनेज ज्ञानगर्भितवैराग्यछे पणअज्ञानीनेन थी एमकह्युं तोपणतेनाउपचारथकी अगीतार्थने पणगीतार्थनीनिष्ठायें ज्ञानगर्भितवै

यस्मिन्निषेव्यमाणेपि यस्याशुद्धिः कदाचिन॥ तेनैव तस्य शुद्धिः स्यात् कदाचिदिति हि श्रुतिः ॥ २३ ॥ विषयाणां ततोबंध जनने नियमोस्ति न॥ अज्ञानिनां ततोबंधो ज्ञानिनां तु न कर्हिचित् ॥२४॥

अर्थ ॥ जेमशत्रुनी सेवनाकरनारोपुरुष दुःखीयोयइने कालांतरेसुखीथाय तेम कदापिं विषयनेसेवनारो कर्मेकरीने तेहिजविषयादिकथीशुद्धथाय एवीपण कोइकनी श्रुतीछे ॥२३॥ जेविषयतेएकांतेकर्मबंधनुंजकारणछे एवोएकांतनियमनथी पण जेअ ज्ञानीछे तेनेजकर्मबंधनु कारणछे पणजेतत्वज्ञानी समतारसमां मग्नछे तेनेनथी॥ २४॥

सेवते सेवमानोपि सवेमानो न सवते॥कोपि पारजनो न स्या द्यन्न् परजनानपि ॥२५॥ अतएव महापुण्यं विपाकोपहि तश्रिया॥ गर्भा दारभ्य वैराग्यं नोत्तमानां विहन्यते ॥२६॥

अर्थ ॥ केटलाकप्राणी विषयनेद्रव्यथी अणसेवताथका पणभावथी विषयनेसेवछे केटलाकप्राणी द्रव्यथीसेवछे पणभावथीनथीसेवता पारकीसेवनाकरतोथको पण तेहनो परमार्थपरप्रतेनदेतोथको एहवोजेज्ञानीते कर्ममयीजनथीथतो ॥ २५ ॥ एमाटेउत्तमपुरुषें महापुण्यविपाकनायोगें प्राप्तकरी एहवीजे तीर्थंकरादिकनीलक्ष्मी तेनेगर्भथकीमांमीनेपण वैराग्यधारात्रुटतीनथी. ॥ २६ ॥

विषयेभ्यः प्रशांताना मश्रांतं विमुखैः कृते॥करणैश्चारुवैरा ग्य मेषराजप थः किल ॥२७॥ स्वयं निवर्त्तमानैस्तै रनुदीर्णै रयंत्रितैः॥ तृप्ते ज्ञानवतां तस्मात्स्या दसावेकपदी मता॥२८॥

अर्थ ॥ जेहनेविषयथकी प्रशांतचित्तथयोछे अनेविश्रामरहित इंद्रियोनाविषयने विमुखकरवो तेणेकरीने मनोहरवैराग्यमार्गसेववानुंबने अनेविषयनोपणत्यागथायते तोनिश्चेयथकी वैराग्यदिशानो राजमार्गछे ॥ २७ ॥ अनेजेइच्छाविना सहेजेकोइकार णयोगे पोतेइंद्रियविकारथकीनिवर्त्तेछे पण प्रशांतनेअणउदीरवेकरीने अनियंत्रणा येंकरी एटलेइंद्रियनोनिरोध हजीकर्योनथी पणसहेजचारित्रप्रमुखना योगेंइंद्रियनि रोधथयोछे एहवातृप्तिवंत ज्ञानीपुरुषतेनुंवैराग्यते पूर्वोक्तराजमार्गनावैराग्यनी एक पदीछे एटलेएकदंडीछे जेमगाडाचालवानामार्गने तोमहोटोमार्गकहियें पणमाण सोनेपगेचालवानुंरस्तो न्हानोथायछे तेवुंतेवैराग्यपण न्हानोकहियें. ॥ २८ ॥

दिकनेविषे आसक्तिकरेनही जेविरक्तचित्तवालाते अविकारीथकाजहोय केमकेजेअ
ध्यात्मरूप अमृतधारानेविषे मज्जनकरताहोय तेहनेविषनीधारासुंकरनारछे अर्थात्
तेहनेकांइविषनीधारापीमाकरीशक्तिनथी ॥ २ ॥

सुविशालरसालमंजरी विचरत्कोकिलकाकलीभरैः ॥
किमु माद्यति योगिनां मनो निभृतानाहतनादसादरं ॥३॥

अर्थ ॥ जेयोगीश्वर अनहदनादेसहितछे तेनेयोगमारगेंकरीने सर्व देहरंध्रपुरी
ने अर्हंपद अथवा सोहंपद अथवाॐकारध्वनि मनमांधरेछे तेनोब्रह्मद्वारेजेनाद
उठेछे तेनुंनाम अनहदनाद कहियें तेणेकरीजेयुक्तछे तोतेवायोगीश्वरनुंमन नलीवि
स्तारवंती आंबानीमंजरीनेविषे विचरतीजे कोकिला तेना मनोहर शब्दसांभलीने
शुंमग्नथसे अर्थात्नहीजथसे ॥ ३ ॥

रमणीमृदुपाणिकंकण क्वणनाकर्णनपूर्णघूर्णना: ॥ अ
नुभूतनटीस्फुटीकृत प्रियसंगीतरता न योगिनः ॥ ४ ॥

अर्थ॥ स्त्रीनासुकोमल हाथमांरह्यांजेकंकण तेनोशब्दसांभलीने पूर्णपणे घुम्याछे
लोचन तेनीअनुभवनदिशारूप नाटककरनारीस्त्रीयें प्रियकारीसंगीतबंध कीधांतो
तेमां योगीश्वरनुंमन रंगायनही एटलेजोजायनही ॥ ४ ॥

स्खलनाय न शुद्धचेतसां ललनापंचमचारुघोलना ॥
यदियं समतापदावली मधुरालापरते न रोचते ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ स्त्रीनीपंचमरागनी घोलनाते समतापदनीश्रेणीना मधुरआलापनी रती
वालाशुद्धचेतनावंत जोगीनेरुचेनही एटलेशुद्धचेतनावंतने स्खलनाकारीनथाय ॥५॥

सततं क्षयि शुक्रशोणित प्रभवं रूपमपि प्रियं नहि ॥
अविनाशिनिसर्गनिर्म्मल प्रथमानस्वक रूपदर्शिनः ॥६॥

अर्थ ॥ अविनाशी सहजनिर्मल अनेविस्तारपामतुं एहवोजे पोतानुंस्वरूप तेह
नाजोनार योगीश्वरतेनेतोजेनुं निरंतर शीलक्षयथायछे अनेवीर्यरुधिरथी उपनुंएवुंजे
स्त्रीआदिकनुं रूपते प्रियकारीलागतुंनथी ॥ ६ ॥

परद्रव्यमपायसंकुलं विषयो यत्खलुचर्मचक्षुषः ॥
न हि रूपमिदं मुदे यथा निरपायानुभवैकगोचर ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जेवोनिरपायके० जेहनोनाशनथी एहवोअनुभवदिशाने जोवानोरसछे

तद्वैराग्यं स्मृतं दुःख मोहज्ञानान्वया त्रिधा ॥ तत्राद्यं विषयाप्रा
प्तेः संसारोद्वेगलक्षणं ॥ १ ॥ अत्रांगमनसोः खेदो ज्ञानमाप्याय
कं न यत् ॥ निजाभीप्सितलाभे च विनिपातोपि जायते ॥ २ ॥

अर्थ ॥ तेवैराग्यत्रणप्रकारनोछे दुःखगर्भित मोहगर्भित अने ज्ञानगर्भित तेमां प्रथमकह्योतेविषयादिकने नपामवाथकी संसारथीउद्वेगपामवानुं लक्षणछे माटेतेह नेदुःखगर्भितवैराग्यकहियें. ॥ १ ॥ देहसंबंधी मनसंबंधी जेखेदतेथीउपज्युं जेज्ञा नतेअव्यापकके० वृद्धिकारीनथाय आत्मानीपुष्टिकर्त्तानथाय केमके तेप्राणीपोता ने अभिलाषकरवायोग्य धनादिकवस्तुनेपामीने तापसादिपणुंछोमीने पाछुंग्रहस्थप णुंअंगीकारकरे ॥ २ ॥

दुःखाद्विरक्ताः प्रागेवे च्छंतिप्रत्यागतेः पदं॥ अधीराइव संग्रा
मे प्रविशंतो वनादिकं ॥ ३ ॥ शुष्कतर्कादिकं किंचि द्वैद्यका
दिक मप्यहो ॥ पठंति ते शमनदीं नतु सिद्धांतपद्धतिं ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ दुःखथकीजेवैराग्यपामेछे तेतोप्रथमथीज पाछाग्रहस्थावासनी इछाकरेछे जे दुःखटलेतो घरेजइये जेमअधीरपुरुष जेकायरते संग्रामनेविषे जतोथको वननी गलीमांजराइ बेसवानीइछाकरेछे तेहनीपरें ॥ ३ ॥ प्राणीयोवादविवाद करवाने शुष्कतर्क ग्रंथभणेछे आजीविकानेअर्थें वैद्यकप्रमुखना ग्रंथभणेछेपण शमतारसनी नदी एवी सिद्धांतनी जेपद्धति तेनभणतानथी ॥ ४ ॥

ग्रंथपल्लवबोधेन गर्वोष्माणं च बिभ्रति॥ तत्त्वांतं नैव गच्छंति
प्रशमामृतनिर्झरं ॥ ५ ॥ वेषमात्रभृतोप्येते गृहस्थान्नाति
शेरते ॥ नपूर्वोत्थायिनोयस्मा न्नापि पश्चान्निपातिनः ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेशमताअमृतना झरणनेपाम्यानथी तेग्रंथनापल्लवमात्रके० खंमखंम मात्रेंकरीने गर्वनीगरमीनेधरीनेज वर्त्तेछेपणतत्वना रहस्यने पामताजनथी ॥ ५ ॥ जेसाधुनावेषमात्रेंकरीने पोतानुं जीवितव्यपणुंराखेछे तेपणग्रहस्थतुल्यजछे पण ग्रहस्थथी न्यारानथी जेणेआगलउछाद धर्योनथी जेगुणपामिने पडवाइ पण थयानथी केमकेजे गुणपामीने तजेतेतोपडवाइकेवाय पणएतोकोइवारें पडवाइ पणथयानथी एहवाजे छे तेतोगुणनेपाम्याजनथी ॥ ६ ॥

मधुरं रसमाप्य निःपते ज्रसनातोरसलोभिनां जलं॥ परि
भाव्य विपाकसाध्वसं विरतानां तु ततोदृशोर्जलं ॥ १३॥

अर्थ ॥ एकअचरत जुवोके रसना लालचीजेप्राणी तेमधुररसने जोइने अथवा खाधानीवात सांजलीने केहेछेके मारामुखमांपाणीजरायछे एटलेजीजनथीपाणीपडेछे अनेसर्वविरतिजे मुनिराजते मांसादिकमधुररसखाधे आगलमाठाविपाकआवशे ते नाजयनेविचारी बेउआंखेपाणीआणेछे एटलेआंखमांथी आंसुपाडेछे ॥ १३ ॥

इह ये गुणपुष्पपूरिते धृतिपत्नीमुपगुह्य शेरते ॥ विमले सु
विकल्पतल्पके क बहिःस्पर्शरता भवंतु ते ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ इहांचरणकरणादिकजे गुणतेरूपफुलेंपुरीएवी निर्मलजे सुविकल्पके०म नकुशलतारूपशय्या तेहनेविषे संतोषरूपस्त्रीने आलिंगन देइनेसुएछे तेवामुनिराज ते बाह्यस्त्रीना स्पर्शविषेरतकेमथाय ॥ १४ ॥

हृदिनिर्वृतिमेव बिभ्रतां न मुदे चंदनलेपनाविधिः ॥
विमलत्वमुपेयुषां सदा सलिलस्नानकलापि निःफला॥१५॥

अर्थ ॥ हृदयनेविषे निवृत्ति सुखनेधरनारा जेप्राणी तेनेबावनाचंदनना लेपनी विधि तेहर्षआपतीनथी तथासदैवनिर्मलजावने धरताजेप्राणी तेनेजलस्नानविधि तेनिष्फलजाणवी ॥ १५ ॥

गणयंति जनुः स्वमर्थवत्सुरतोल्लाससुखेन भोगिनः ॥
मदनाहिविषोग्रमूर्छना मयतुल्यं तु तदेव योगिनः॥१६॥

अर्थ ॥ भोगीप्राणीस्त्रीसाथे विलाससंभोगना सुखेकरी जन्मारोसफलमानेछे अ ने योगीश्वरपुरुषतोमदनजेकाम तेनीचेष्टानेसर्पनाविषनी आकरीमूर्छातुल्यमानेछे१६

तदिमे विषयाः किलैहिका न मुदे केपि विरक्तचेतसां ॥ पर
लोकसुखेपि निःस्पृहाः परमानंदरसालसा अमी ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ वेरागीजीवने आजवमांहएोकसुखआपे एवाजेविषय तेनिश्चयथकीकांइप ण हर्षकारीनथी केमकेत्यागीप्राणीतोपरलोक जेस्वर्गादिकनासुख तेनेविषेपण निस्प हीछे तेतोमात्रमोक्षसुखनाजअभिलाषीछे ॥ १७ ॥

मदमोहविषादमत्सर ज्वरबाधाविधुराः सुरा अपि॥ विष
मिश्रितपायसान्नवत् सुखमेतेष्वपि नेति रम्यतां ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ जेपोतानीमोटाइकरे पारकोद्रोहकरे कलेशकजीआकरे कपटराखे पोता नापापढांके पोतानोसामर्थ्य उलंघीने क्रियानोउद्यमकरे तेआर्त्तध्यानीकेवाय॥ १३ ॥ वलीजेगुणीपुरुषोनो रागीनहोय बीजानाकरेलाउपकारने विसरीजाय तीव्रकर्मबंधनी चिंतासहितवर्त्ते अनेशुभअध्यात्मना अध्यवसाय रहितपणेवर्त्ते ॥ १४ ॥

श्रद्धा मृदुत्वमौद्धत्य माधुर्य्यमविवेकिता ॥ वैराग्यस्य द्वितीयस्य स्मृतेयं लक्षणावली ॥१५॥ ज्ञानगर्भं तु वैराग्यं सम्यक् तत्व परिच्छिदः ॥स्याद्वादिनः शिवोपायस्पर्शिन स्तत्वदर्शिनः ॥१६॥

अर्थ ॥ श्रद्धा मृदुता उद्धतता मधुरता अविवेकतापणु एमोहगर्भित वैराग्यनी परंपराजाणवी॥१५॥एरीतेंमोहगर्भितवैराग्यनुं स्वरूपकह्युं हवेज्ञानगर्भितवैराग्यनुंस्व रूपकहेछे जेसम्यक्रीतेंतत्वनीओळखाणकरे स्याद्वादद्दष्टियेंवर्त्ते मोक्षनुंचिंतनकरे मो क्षनाउपायनेफरसे अनेतत्वदिशा देखवानुंअर्थीथाय तेज्ञानगर्भितवैराग्यजाणवुं १६॥

मीमांसा मांसला यस्य स्वपरागमगोचरा ॥ बुद्धिः स्यात्तस्य वैरा ग्यं ज्ञानगर्भ मुदंचति ॥१७॥ न स्वान्यशास्त्रव्यापारे प्राधान्यं य स्य कर्मणि ॥ नासौ निश्चयसंशुद्धं सारं प्राप्नोति कर्म्मणः ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ जेहनोविचार पुष्टकारीहोय अनेस्वसिद्धांत तथापरसिद्धांतसंबंधी बुद्धि होय तेने वैराग्यनीवातकहियें अनेएवानेज ज्ञानगर्भित वैराग्यप्रगटथाय ॥ १७ ॥ जेनेस्वशास्त्र परशास्त्रना व्यापारनुं प्राधान्यपणुनथी तेमज क्रियानेविषेपण प्राधान्य तानथी तेनिश्चेंथकीक्रियानो निरमलसारभूतजेफल तेनेक्यारेपणपामेनही ॥ १८ ॥

सम्यक्त्वमौनयोः सूत्रे गतप्रत्यागते यतः ॥ नियमोदर्शित स्तस्मा त् सारं सम्यक्त्वमेव हि ॥ १९॥ अनाश्रवफलं ज्ञान मव्युत्थानम नाश्रवः ॥ सम्यक्त्वं तदभिव्यक्ति रत्येकत्वविनिश्चयः ॥ २० ॥

अर्थ॥जेसमकिततेमौनचारित्रकहियें अनेचारित्रते मौनसमकितकहियें एवुंश्री आचारांगमध्ये गतप्रत्यागतेकरीने कह्युंछे जंसम्मंतिपासहा तंमोणंतिपासहाजम्मो तेमाटे नियामकतापणुंजाणवुं सिझंतिचरणरहिया दंसणरहियानसिझंति इतिवच नात् तेमाटेसमकितते सारभूतजाणवुं ॥ १९ ॥ आश्रवनोत्याग तेज्ञाननुंफलछे अनेअनाश्रवनुंफल तेअव्युत्थान एटलेविषयमां उजमाळनथाय विषयनोत्यागीहोय

कलितातिशयोपि कोपि नो विबुधानां मदकृद्गुणव्रजः॥ अ
धिकं न विदंत्यमी यतोनिजभावे समुदंचति स्वतः ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ पंडितते कोइ मोटाअतिशयादिगुणना समूहेंसहितहोय तोपणमदकरे नही अनेतेथीकांइ अधिकतापणनगणे मात्रपोताना शुद्धस्वभावमांज आनंदपामे

हृदये न शिवेपि लुब्धता सदनुष्ठानमसंगमंगति ॥
पुरुषस्यदशेयमिष्यते सहजानंदतरंगसंगता ॥ २५॥

अर्थ ॥ पोतानाहृदयनेविषे मुक्तिसुखउपरपण लुब्धतानथी एकसद्अनुष्ठानरू प सहेजानंदना कल्लोलने मलतीअसंगानुष्ठानरूपपुरुषनी जेदशातेने वंछेछे पामेछे

इति यस्य महामतिर्भवे दिह वैराग्यविलासभृन्मनः ॥ उ
पयंति वरीतुमुच्चकै स्तमुदारप्रकृतिं यशःश्रियः ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ वैराग्यविलासीपुरुषने एवीबुद्धिउपजेछे नेतेवाउदारप्रकृतिवालाने य शरूपजेलक्ष्मी तेहर्षधरीने वरवानेइछेछे. इतिश्रीवैराग्य विषयाधिकारःसप्तमः ॥ २६ ॥

इतिमहोपाध्यायश्रीयशोविजयेनविरचिते अध्यात्मसारप्र करणेद्वितीयप्रबंधः संपूर्णः पांचमांअधिकारमांश्२६तथा छठामां४४अनेसातमांमां२६कुलमलिनेश्लोक॥१०६॥

निर्ममस्यैव वैराग्यं स्थिरत्वमवगाहते ॥ परित्यजेत्ततः प्राज्ञो
ममतामत्यनर्थदां ॥ १ ॥ विषयैः किं परित्यक्तै र्जागर्त्ति ममता
यदि ॥ त्यागात्कंचुकमात्रस्य भुजंगोनहि निर्विषः ॥ २ ॥

अर्थ ॥ ममतारहितप्राणीनेज वैराग्यस्थीरपणेरहेछे तेमाटे बुद्धिवंतप्राणीयें अ नर्थदायकजे ममतातेनेतजवी ॥ १ ॥ जेमसर्पकांचली काढवाथी विषरहितथतोन थी तेमजेनेममता जागेछे तेविषयने त्यागकरे तोपण त्यागीथतोनथी ॥ २ ॥

कष्टेन हि गुणग्रामं प्रगुणीकुरुते मुनिः॥ ममता राक्षसी सर्वं
भक्षयत्येकहेलया ॥ ३ ॥ जंतुकांतं पशूकृत्य भागविद्यौ
षधीबलात् ॥ उपायैर्बहुभिः पत्नी ममता क्रीडयत्यहो ॥ ४ ॥

पर्याया: स्युर्मुनेर्ज्ञान दृष्टिचारित्रगोचराः ॥ यथा भिन्ना अपि तथो पयोगाद्वस्तुनोह्यमी ॥ २७ ॥ नोचेद्भावसंबंधा न्वेषणे का गति र्भवेत् ॥ आधारप्रतियोगित्वे द्विष्टे न हि पृथग् द्वयोः॥२८॥

अर्थ॥ तेमअभिन्नपणे ज्ञाननातथा चारित्रसंबंधीपर्याय मुनीनेपण होय जोपण तेअभिन्नछे तोपणउपयोगपणेविचारतां निश्चयनयपोतपोतानाजछे पणव्यवहारेंएक आत्मानाछे एमकेवाय ॥२७॥ एमजोनकहियें अने अभावनासंबंधथी गवेषणाक रियेंतो केवीगतीथाय आधारांतरनिरूपकतानेभावें विचारतां द्विष्टेविनष्टेद्यात् ए टलेपृथक्भावताना द्वेषकरवाथी विणसेअने तेबेहुथीआत्माभिन्ननथी ॥ २८ ॥

स्वान्यपर्यायसंश्लेषात् सूत्रेप्येवं निदर्शितं ॥ सर्वमेकं विदन्वेद सर्वं ज्ञानं तथैककं ॥ २९ ॥ आसक्तिपाटवाभ्यास स्वकार्यादिभि राश्रयन् ॥ पर्यायमेकमप्यर्थं वेत्ति भावाद् बुधोऽखिलं ॥ ३० ॥

अर्थ ॥ स्वपर्यायअने परपर्यायना संबंधथी सूत्रनेविषे पणएमदेखाड्युंछे के सघ लुंएकताभावें जाणता एगेजाणइ इत्यादिक सघलुंज्ञानते संग्रहनयकरीएकजछे ॥२९ माटेचित्तनीआसक्तियें अने बुद्धिनीपाटवतायें अभ्यासकरवाथी पोताना कार्यपणादि कनेआश्रयतोथको पर्यायना एकअर्थनेजाणीनेपण बुधजेपंडित तेसर्वभावनेजाणे जेएगंजाणइ सेसव्वंजाणइ इतिवचनात् ॥ ३० ॥

अंतरा केवलज्ञानं प्रतिव्यक्ति न यद्यपि ॥ क्वापि ग्रहणमेकांश द्वारं चाति प्रसक्तिमत् ॥ ३१ ॥ अनेकांतागमश्रद्धा तथाप्यस्ख लिता सदा ॥ सम्यग्दृशस्तयैव स्यात् संपूर्णार्थविवेचनं ॥३२॥

अर्थ ॥ यद्यपिकेवलज्ञाननेविषे तोकांइपणप्रतिव्यक्तिनथी तोपणकोइठेकाणे एक अंशनुंज ग्रहणकर्युंछे नेकोइस्थानकें सर्वांशग्रहणकीधोछे॥३१॥ तोपणअनेकांत आ गमनी श्रद्धातेअस्खलितपणें सदाप्रवर्त्तेछे माटेअनेकांततापणोअंगीकारकरतांज स मकितपणुंछे तथाउत्सर्गअपवाद निश्चयव्यवहारतेनासंपूर्णअर्थनोनिश्चयथायछे३२

आगमार्थोपनयनाद् ज्ञानं प्राज्ञस्य सर्वगं ॥ कार्य्यादेर्व्यवहा रस्तु नियतोल्लेखशेखरः ॥ ३३ ॥ तदेकांतेन यः कश्चि द्विरक्तस्या पि कुग्रहः॥शास्त्रार्थबाधनात्सोयं जैनाभासस्य पापकृत् ॥ ३४॥

अर्थ ॥ पोतेएकलो धनमेलवीने ममत्वेंकरीने घणालोकने पुष्टिकरेछे पणपरज वमां आकरांनारकीनांदुःखआवसे तेवारेंएकलोजभोगवसे॥ ११॥जीवतोआंधलोनथी पणममतायेंकरी नास्तिकपदार्थने खरुंकरीमानेछे तेहनेमिथ्यादृष्टि अंधकहियें के मके तेनीचर्मचक्षुछे तोपणतेचक्षुयेंकरी आत्मिकअर्थने नथीदेखतो माटेएनेदेख तो पणआंधलोजजाणवो अनेजेजातिअंधतोछे पणज्ञानीनेसंयोगें आत्मार्थने जुए छे माटेएबेप्रकारना अंधमांघणोअंतरछे ॥ १२ ॥

प्राणाननित्यताध्यानात् प्रेमभूम्ना ततोधिकां॥ प्राणापहां प्रि यां मत्वा मोदते ममतावशः॥१३॥ कुंदान्यस्थीनि दशनान् मुखं श्लेष्मगृहं विधुं॥मांसग्रंथी कुचौ कुंभौ हेम्नोवेत्ति ममत्ववान्॥१४॥

अर्थ ॥ रागदिशायेंकरीने प्राणनेअनित्यमाने पणप्राणनी लेनारीजेस्त्री तेनेमम ताने वशथइ वल्लभजाणीने हर्षपामेछे ॥ १३ ॥ तेस्त्रीनादांतयद्यपि हाडकानाछे तोपणतेने कुंदफुलनी कलीनेजेवाजाणे अनेश्लेष्मजेलाल तेणेकरीभरेलु मुखहोय तेनेचंद्रतुल्यवखाणेछे अनेस्तनमांसनागंगछे तेनेसोनाना कलशसमान लेखेछे एवा तो सर्वममत्वनेलीधे थायछे ॥ १४ ॥

मनस्यन्यद्वचस्यन्यत् क्रियायामन्यदेव च॥यस्यास्तामपि लो लाक्षीं साध्वीं वेत्ति ममत्ववान्॥१५॥या रोपयत्यकार्येपि रागि णां प्राणसंशये॥दुर्वृत्तां स्त्रीं ममत्वांध स्तां मुग्धामेव मन्यते॥१६॥

अर्थ ॥ वलीतेस्त्रीकेवीछे जेनामनमांकोइकहोय अनेवचनमां वलीबीजो कोइक होय अनेभोगतोवली कोइत्रीजानी साथेजकरे एवीछे तेनेवैरागीपुरुषकहेछे जेएस्त्री थकी सर्वसखुं एटलेस्त्री सर्वथीछुडीगणेछे पणजेप्राणीममतावंतछे तेतोएवीचंचल नेत्रवालीस्त्रीने सतीमानेछे ॥ १५ ॥ स्त्रीपोतानारागी धणीनेमरणथाय एवांकाम भलावे अनेतेपण ममत्वेंआंधलोपुरुष तेकार्यकुटाइ पीटाइनेकरे वली स्त्रीव्यभिचा रणीहोय तोपणतेनेभोलीकरीमाने तेउपरएक दृष्टांतछे लालीकेतीबापडी अवला खेलमखेल ज्यांथीलाव्योलाकडी त्यांनीत्यांजइमेल ॥ १६ ॥

चर्माच्छादितमांसास्थि विण्मूत्रपिठरीष्वपि ॥ वनितासु ममत्वं य त्तन्ममत्वं विजृंभितं॥ १७ ॥ लालयन्बालकं तातेत्येवं ब्रूते ममत्ववान् ॥ वेत्ति च श्लेष्मणा पूर्णा मंगुलीममृतांचितां॥१८॥

राग्यछे ॥ ३९ ॥ तेमाटेसूक्ष्मदृष्टियें मध्यस्तपणुं अंगीकारकरीने अनेपरदूषण तजी नेवर्त्तवुं सर्वजगतनाजीवनुं हितचिंतववुं मैत्रीनावधरवो क्रियानेविषेघणो आदरक रवो उपयोगधरवो अनेधर्ममार्गमां लोकनेजोडवा एद्विजश्रेष्ठछे ॥ ४० ॥

चेष्टा परस्य वृत्तांते मूकांधबधिरोपम॥उत्साहः स्वगुणाभ्यासे दुःस्थस्येव धनार्जने ॥ ४१ ॥ मदनोन्मादवमनं मदसंमर्द मर्दनं ॥ असूयातंतुविच्छेद समतामृतमज्जनं ॥ ४२ ॥

अर्थ ॥ मुगाने तथाआंधलाने अनेबेहराने बोलवामां देखवामां अनेसांनलवामां इत्यादिकपरकावृत्तांतनेविषे जेणेचेष्टातजीछे अनेपोताना गुणनाअभ्यास करवामां जे उत्साहवंतछे जेमदरिद्रीधनकमाववानो उद्यमीहोयतेनीपरें उजमालथकोवर्त्ते ॥ ४१ ॥ कामनाउन्मादनुं वमनकरनारा मदनासमूहने टालनारा ईर्षारूपतंतुनातो डनारा अनेसमतारूपअमृत कुंडमांमज्जनकरनारा ॥ ४२ ॥

स्वनावान्नैव चलनं चिदानंदनयात्सदा॥वैराग्यस्य तृतीयस्य स्मृतेयं लक्षणावली ॥ ४३ ॥ ज्ञानगर्न्नमिहादेयं द्वयोस्तुस्वो पमर्दतः॥ उपयोगः कदाचित् स्या न्निजाध्यात्मप्रसादतः ॥४४॥

अर्थ ॥ तथाचिदानंदमयपणाना स्वनावथी सर्वदा चलायमाननहीं एहवावर्त्त नुकवंत जेहोय एत्रीजा ज्ञानगर्नित वैराग्यनागुणनी लक्षणावलीकही ॥ ४३ ॥ इहां ज्ञानगर्नितवैराग्यतेग्रहेवायोग्यछे अने मोहगर्नितवैराग्य तथा दुःखगर्नितवै राग्यनुं उपमर्दनकरीने पोतानाअध्यात्मनावनाप्रसादथकी कदाचित् ज्ञानगर्नित वैराग्यनो उपयोगथाय ॥ ४४ ॥ इतिश्रीवैराग्यनेदाधिकारः षष्ठःसमाप्तः

---

विषयेषु गुणेषु च द्विधा नुवि वैराग्यमिदं प्रवर्त्तते ॥ अपरं प्रथमं प्रकीर्तितं परमध्यात्मबुधैर्द्वितीयकं ॥ १ ॥

अर्थ ॥ पृथ्वीनेविषे विषयमांअने गुणमांएबेहुप्रकारे वैराग्यप्रवर्त्तेछे तेमांविषयवै राग्यतो अमुख्यपणेकह्युंछे बीजुंअध्यात्मनावयुक्तगुणवैराग्यतेमुख्यपणेजाणवुं॥१॥

विषयानुपलंनगोचरा अपि चानुश्रविकाविकारिणः ॥ न नवंति विरक्तचेसां विषधारेव सुधासु मज्जतां ॥ २ ॥

अर्थ॥जेविषयवैराग्यछेते प्राप्तिगोचरपणे वर्त्तेछे पणनिश्चेंथी ज्ञातापुरुषतेरूपरसा

अत एव हि जिज्ञासा विष्कंभति ममत्वधीः ॥ विचित्राभि
नयाक्रांतः संभ्रांत इव लक्ष्यते ॥२५॥ धृतो योगो न ममता
हता न समताऽऽहता॥ न च जिज्ञासितं तत्वं गतं जन्म निर
र्थकम् ॥ २६ ॥ जिज्ञासा च विवेकश्च ममतानाशकावुभौ॥
अतस्ताभ्यां निगृह्णीया देनामध्यात्मवैरिणीं ॥ २७ ॥

अर्थ ॥ एकारणमाटे तत्वजाणवानी इछायेंकरी ममतानीबुद्धिजेणेदबावीछे ते प्राणी विचित्रप्रकारनी नय गम भंग रचनायें व्याप्योथको संसारना सर्वपदार्थ ने संभ्रांतजाणे एटलेइंद्रजालवत्जाणे ॥ २५ ॥ जेणेजोगपणधर्योनही अनेममता पण हणीनही तथा समतापणआदरीनही वलीशास्त्रजाणवानी इछापणनकरी ते नोनरजन्मनिष्फलगयो एमजाणवुं ॥ २६ ॥ एकजाणवानीइछा एनेबीजोविवेक ए बेममताने नाशकरनाराछे तेमाटेएबेहुथकी ममतानो निग्रहकरवो कारणके ममता ते अध्यात्मनी दुश्मनछे ॥ २७ ॥ इतिममता त्यागाधिकार अष्टमसमाप्तः

---

त्यक्तायां ममतायां च समता प्रथते स्वतः ॥ स्फटिके गलितो
पाधौ यथा निर्मलतागुणः॥१॥प्रियाप्रियत्वयोर्यार्थै व्यवहार
स्य कल्पना॥निश्चयात्तद्व्युदासेन स्तैमित्ये समतोच्यते ॥२॥

अर्थ ॥ हवेसमता आववानो अधिकारकहेछे जेमफटकनेविषे उपाधिपणुंटले तेवारें निर्मलतापणुंवधेछे तेमजेवारें ममतानोत्यागथाय तेवारेंपोतानीमेलेज समताविस्तरे ॥ १ ॥ संसारनेविषेपोताने अर्थेकोइकामपडे तेवारें एमजाणेजेआमाहरो वहालोछे अनेआदुश्मनछे पणएसर्व व्यवहारकल्पनाछे निश्चयथकीतो तेव्यवहारनात्रोकरी मध्यस्थपणुंपामे तेवारेंज तेसमतावंत केहेवाय ॥ २ ॥

तेष्वेव द्विषतः पुंस स्तेष्वेवार्थेषु रज्यतः ॥ निश्चयात्किंचि दि
ष्टं वाऽनिष्टं वा नैव विद्यते॥३॥एकस्य विषयो यः स्या त्स्वाभिप्रा
येण पुष्टितः ॥ अन्यस्य द्वेष्यतामेति स एव मतिभेदतः ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ व्यवहारकल्पनावालोतो जेनेविषेद्वेषलावे तेनेजविषे पोतानाअर्थसाधनेकरी राजीथाय पणजोनिश्चयथकीविचारे तोएमांकांइ इष्टनथी तेमअनिष्टपणनथी

तेवो रूपते परपदार्थके ० बीजानेजोवायोग्यछे तथानाशवंतछे अनेचर्मचक्षुनो विषयछे एह्वो जेरूप तेजोवाथकीतेनोजेरसते निश्चयनयथकी हर्षकारीनथाय ॥ ७ ॥

रतिविभ्रमहास्यचेष्टिते ललनानामिह मोदते ऽबुधः ॥

सुकृताद्रिपविष्वमीषु नो विरतानां प्रसरंति दृष्टयः ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ रतिसुखनेदेखीने तथास्त्रीनानेत्रविभ्रमनी चेष्टायेंकरीने अबुध्धजेअज्ञानी प्राणी तेघणोहर्षपामेछे पणए विभ्रमविलासादिकतो सुकृतरूप पर्वतनेवज्रथइ जेवेए वाछे माटेयोगीश्वरनी दृष्टितेमांरमतीनथी ॥ ८ ॥

न मुदे मृगनाभिमल्लिका लवलीचंदनचंद्रसौरभं ॥ वि

दुषां निरुपाधिबाधित स्मरशीलेन सुगंधिवर्ष्मणां ॥ ए ॥

अर्थ॥ कस्तुरी मालतीनापुष्प लवलीके ० एलचीचंदनतथाचंद्रके ० कपुरनीसुगंधीते पंडितलोकोने मग्नकरतीनथी तेमनेतो निरुपाधिक अनुभवगोचर स्वरूपचिदानंदने विषेज मग्नपणुवर्त्तेछे पणरूपादिकनेविषेमग्नतापणु नथी ॥ ए ॥

उपयोगमुपेति यच्चिरं हरते यन्नविभावमारुतः ॥ न ततः

खलु शीलसौरभा दपरस्मिन्निह युज्यते रतिः ॥ १० ॥

अर्थ ॥ जे घणाकालसुधी उपयोगमांआवे जेनीसुगंधीने विभावदिशारूपवायु ह री शकतोनथी एवीजेशीलसुगंधीतेनेमूकी योगीश्वरनुं चित्तअन्यसुगंधीमां लोभातुंनथी

मधुरैर्न रसैरधीरता: क्व च नाध्यात्मसुधालिहां सतां ॥ अ

रसैः कुसुमैरिवालिनां प्रसरत्पद्मपरागमोदिनां ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ जेम विकस्वरथतां जे कमलतेना स्वाद सुगंधयुक्त रसेमग्नथया एवाजे भ्रमर ते निरस कुसुमउपररतीपामेनही तेम अध्यात्मरूप अमृतरसनाभोगी जेप्रा णी तेने बीजाशर्करादिक मधुररसनी अधीरजताउपजतीनथी गृधतापणुं करेनही

विषमायतिभिर्नु किं रसैः स्फुटमापातसुखैर्विकारिभिः ॥

नवमे नवमे रसे मनो यदि मग्नं सततविकारिणि ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जे आगल कडवा विपाकआपे एवामधुररसेशुंसारुं वलीप्रगटपणे राज्य ऋध्धि स्त्रीविषयादिक सुखपाम्याअनेतेपाछांजतांरहे तेथीविक्रियाप्रगटे तोतेवासुखथी शुंसारुं जोसदायअविकारी एवोपूर्णनवमोजेशांतरस तेनेविषे मनमग्नछे तो पूर्वेकह्यां एवारसेशुंफायदोथाय अर्थात्कांइजनही ॥ १२ ॥

करवाने समताआदरी एहवामुनीते. समतारूपपरमार्रहेताथका आजवनातथा आगलाकइकजवतेसर्व जवनावैरजावने टालीनाखेछे जेमनित्यपासेंवसताथका कुतरा अने मांजरीके० बलाडीतेमनावैरपण शमीजायछे तेहनीपरेंजाणवुं ॥११॥ कपटी वेशधारणकरवाथीशुंथाय तथाघणीतपस्यायेंपण शुंथाय वलीमौनधारी अतीतनीपेरें इंद्रियदमनकीधेशुंथाय अने व्रतधारणकरेपणशुंथाय मात्रएकसमताजे संसाररूपसमुद्रतरवामां नौकाजेवीछे तेनुंजसेवनकरवुंतेहिजश्रेष्ठछे ॥ १२ ॥

दूरे स्वर्गसुखं मुक्ति पदवी सा दवीयसी ॥ मनःसंनिहितं दृष्टं स्पष्टं तु समतासुखं ॥ १३ ॥ दृशोः स्मरविषं शुष्येत् क्रोधतापः क्षयं व्रजेत्॥औध्धत्यमलनाशः स्यात् शमतामृतमज्जनात्॥१४॥

अर्थ ॥ देवलोकनासुखतोदूरछे वलीमोक्षपदवीतेतोमोटीछे अनेजवस्थितीनेहाथछे तेवारे मननीपासे प्रगटपणेदेखीयें एवीसमतानुंसुखते सुंखोटुंछे ॥ १३ ॥ समतारूपअमृतकुंममां स्नानकरवानाप्रभावथी आंखथकी कंदर्परूपदर्पनुं विषसोषाइजायछे क्रोधरूपतापते नाशपामेंछे उद्धताइरूपीओमेल तेपणदूरकरे ॥ १४ ॥

जरामरणदावाग्नि ज्वालिते भवकानने ॥ सुखाय समतैकैव पीयूषघनवृष्टिवत् ॥ १५॥ आश्रित्य समतामेकां निर्वृता भरतादयः॥नहि कष्ट मनुष्ठानमभूत्तेषां तु किंचन ॥ १६ ॥

अर्थ॥जन्मजरामरणरूप दावानलेंकरीबलतुंएवुं संसाररूपवनखंड तेमांसमतानुं जेसुखछे तेअमृतनावरसादसरखुंजाणवुं ॥ १५ ॥ चित्रशालीमध्ये एकजसमताने अवलंबता भरतराजाआदि आठपाटकेवलपामिने सिद्धथया पण तेमने कष्टक्रियाकांइपण करवीपडीनही एहवीएसमताछे ॥ १६ ॥

अर्गला नरकद्वारे मोक्षमार्गस्य दीपिका ॥ समता गुणरत्नानां संग्रहे रोहणावनिः॥१७॥मोहाच्छादितनेत्राणा मात्मरूपमपश्यतां ॥ दिव्यांजनशलाकेव समता दोषनाशकृत् ॥१८॥

अर्थ ॥ वलीसमता तेनरकनेबारणे भोगलजेवीछे अनेमोक्षमार्गनीदीविछे वलीगुणरूपरत्नो संग्रहकरवाने रोहणाचलपर्वतनी भूमिकासरिखीछे ॥ १७ ॥ जेनानेत्र मोहवडेढंकायाछे अनेजेपोतानास्वरूपने जोइशकतानथी तेनेदिव्यअंजनआंजवाने समताते शलाकारूपछे अनेअज्ञाननापडलने छेदनारीछे ॥ १८ ॥

अर्थ॥ गर्वअज्ञानविषादअने मत्सरतेरूपज्ञावनी पीडायेंरहितएवाजे देवतातेहना जेविषयादिकसुख तेपणविषमिश्रितडुधपाकनाजोजननीपरें मनोहरकारीनथी॥ १७॥

रमणीविरहेण वन्हिना बहुबाष्पानिलदीपितेन यत् ॥ त्रिद
शैर्दिवि डुःखमाप्यते घटते तत्र कथं सुखस्थितिः॥ १ए ॥

अर्थ ॥ केमके स्त्रीनावियोगरूपअग्नी तेआंसुरूप वायरेकरी देदीप्यमानथयो एहवोजे शोकरूपअग्नी प्रगटथोतेथी स्वर्गनादेवतानेपण पीमाथायछे तेवारेंस्वर्गमां देवतानेपणसुखनीस्थितिछे एहवुं केमकहेवाय ॥ १ए ॥

प्रथमानविमानसंपदां च्यवनस्यापि दिवोविचिंतनात् ॥
हृदयं न हि यद्विदीर्यते घुसदां तत्कुलिशाणुनिर्मितं॥ २० ॥

अर्थ ॥ जेनेविमान संपदामोटीछे एवादेवतानेपण चवनवेलायेंजे डुःखप्रगटेछे तेडुःखथीदेवतानुं हृदयमात्रफाटतुंनथी तेनुंकारणजे तेमनोहृदयतेवज्रानापरमाणुयेंकरी उत्पन्नकरेलुंछे तेथीघणोकठणछे माटेजफाटतुंनथी ॥ २० ॥

विषयेषु रतिः शिवार्थिनो न गतिष्वस्ति किलाखिलास्वपि॥
घननंदनचंदनार्थिनो गिरिजूमिष्वपरद्रुमेष्विव॥ २१ ॥

अर्थ ॥ जेमनिबिड नंदनवनना चंदननाविलेपनवालाने परवतनीजूमियें अथवा बीजाकोइपणवृक्षेंरतिथातीनथी तेममोक्षार्थिने विषयउपर प्रीतिथतीनथी तेमजमनुष्य तथा स्वर्गप्रमुख समग्रगतिनेविषे पण प्रीतिथतीनथी ॥ २१ ॥

इति शुद्धमतिः स्थिरीकृता ऽपरवैराग्यरसस्ययोगिनः ॥
स्वगुणेषु वितृष्णतावहं परवैराग्यमपि प्रवर्त्तते ॥ २२॥

अर्थ ॥ एमविचारी शुद्धबुद्धिस्थिरकरीने जेनेबीजावैराग्यनो गुणप्रगटथोछे तेवा योगीने आत्मगुणनेवधारे एवीतृष्णातुं आगमरूप परमवैराग्यप्रगटथाय ॥ २२ ॥

विपुलर्द्धिपुलाकचारण प्रबलाशीविषमुख्यलब्धयः ॥
न मदाय विरक्तचेतसा मनुषंगोपनताः पलालवत् ॥२३॥

अर्थ ॥ विपुललब्धि पुलाकलब्धि चारणलब्धि महोटीआशीविषलब्धि प्रमुख अनेक लब्धिओजोपणउपजे तोपण तेवैरागीमुनीने अहंकारजणीथायनही मात्रए कमुक्तिसुखविना पलालना पुंजरूपतेमानेछे ॥ २३ ॥

पछी तेनामृतकार्यनोउत्सव पाथरणास्नानसूतक वगेरे करवानेजाणियेंएलोको दो ड़ादोडकरेछे एमसमजवुं ॥ २५ ॥ जेमउखरक्षेत्रमां बीजवाव्युं तेकष्टेफलेनही ते मएकसमतानेछोमी जेप्राणीकष्टक्रियाकरेछे तेनेरूडुंफल आगलमलतुंनथी ॥ २६ ॥

उपायः समतैवेका मुक्तेरन्यः क्रियाभरः॥ तत्तत्पुरुषभेदेन तस्या एव प्रसिद्धये ॥२७॥ दिङ्मात्रदर्शने शास्त्रव्यापारः स्यान्न दूरगः॥ अस्याः स्वानुभवः पारं सामर्थ्याख्योवगाहते॥२८॥

अर्थ ॥ मुक्तिनोउपायतो एकसमताछे बाकीक्रियाकष्ट सर्वआडंबरछे तेपुरुषने भेदेंकरी एटलेतपजप सर्वसमतानी प्रसिद्धिछे पुरुषभेदते गृहस्थ अने मुनीने शीलेछे एटले क्रियाकरवामां गृहस्थ तथामुनीनो व्यवहारजुदोछे पणतेबेउनीक्रिया समतार्थे वखाणवी एवीशास्त्रनीआज्ञाछे ॥२७॥ शास्त्रनाउपदेशतो जेमकोइआंगलीवडे मार्ग बतावे पणपोतेकांइसाथेंआवेनही तेमदिशिमात्रने बतावेएवाछे पण जेशास्त्रसांभलीने पोतानाअनुभवमांलावी पोतानेसामर्थ्यंकरी पंथअवगाहेतोजभवाटवीनोपारपामे॥२८

परस्मात् परमेषा य न्निगूढं तत्वमात्मनः ॥
तदध्यात्मप्रसादेन कार्योस्यामेव निर्भरः॥२९॥

अर्थ ॥ परपुद्गलादिक वस्तुतेआत्मानानथी अने देखवाथी आआत्मापरमपवि त्रछे आत्मानेविषेआत्मतत्व गुप्तछे माटेअध्यात्मने प्रसादेकरी समतानेविषे हर्षउ ल्लासकरवो ॥ २९ ॥ इतिसमताधिकार नवमसमाप्तः ॥

---

परिशुद्धमनुष्ठानं जायते समतान्वयात् ॥ कतकक्षोदसंक्रां तेः कलुषं सलिलं यथा ॥ १ ॥ विषं गरोऽननुष्ठानं तद्धेतुर मृतं परं ॥ गुरुसेवाद्यनुष्ठान मिति पंचविधं जगुः ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जेम कतकफलना चूर्णनेयोगें मोहलुंपाणिनिर्मलथायतेम समतानायो गथी शुद्धअनुष्ठानप्रगटथायछे ॥ १ ॥ विषयानुष्ठान गरलानुष्ठान अन्योनानुष्ठान तद्धेतुअनुष्ठानने अमृतानुष्ठान एपांचअनुष्ठान गुरुसेवादिक करणीमांकह्यांछे ॥ २॥

आहारोपधिपूजर्द्धि प्रभृत्याशंसया कृतं ॥ शीघ्रं सचित्तहं त्वा विषानुष्ठानमुच्यते॥ ३ ॥स्थावरं जंगमं चापि तत्क्षणं भक्षितं विषं॥ यथा हंति तथेदं सचित्तमैहिकभोगतः ॥४॥

अर्थ ॥ जेगुणसमूहनेमुनिराज घणीकष्टेकरीप्रगटकरेछे तेने ममतारूपराक्षसी एककोलीयेंखाइजायछे ॥ ३ ॥ केवुंआश्चर्यछेके स्त्रियाराज्यनीपेरे ममतारूपस्त्रीते जी वरूपजनचारिने पशुजेमर्कट तेरूपेंकरीने शीघ्रपणेअज्ञानरूप जडीबुटीनाबलथकी घ णेप्रकारेनचावीने रमाडेछे ॥ ४ ॥

एकः परभवे याति जायते चैकएव हि॥ ममतोऽेकतः सर्वं सं बंधं कल्पयत्यथ ॥ ५ ॥ व्याप्नोति महतींभूमिं वटबीजाद्य था वटः ॥ तथैकममताबीजा त्प्रपंचस्यापि कल्पना ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ एकलुंचेतन परभवेजायछे अनेएकलुंज आभवेंआवेछे पणममताने वश थइने रत्नादेवीनीपरें मिथ्यासगपण न्यातजातवगेरेनी कल्पनाकरेछे ॥ ५ ॥ जेमएक वडना बीजथकी घणीधरतीयें वडव्यापीनेविस्तारपामेछे तेमएकममताना बीजथकी घणाप्रपंचनी कल्पनाउठेछे ॥ ६ ॥

माता पिता मे भ्राता मे भगिनी वल्लभा च मे॥ पुत्राः सुता मे मि त्राणि ज्ञातयः संस्तुता श्च मे ॥ ७ ॥ इत्येवं ममताव्याधिं वर्द्धमा नं प्रतिक्षणं ॥ जनःशक्नोति नोछेत्तुं विना ज्ञानमहौषधं ॥८॥

अर्थ ॥ मातापिता भाइ बेन स्त्री एसर्वेमाहरांछे पुत्र पुत्री मित्र एपणमाहरांछे न्याति परिचित एमाहरांछे ॥ ७ ॥ एप्रकारेंममतारूपरोग दिवसेंदिवसें वधतोजायछे तेनेमटाडवाने कोइपणज्ञानरूप औषधविना समर्थथातोनथी ॥ ८ ॥

ममत्वेनैव निःशंक मारंभादौ प्रवर्त्तते ॥ कालाकालसमुछायी धनलोभेन धावति ॥९॥ स्वयं येषां च पोषाय खिद्यते ममता वशः ॥ इहामुत्र च ते न स्यु स्त्राणाय शरणाय वा ॥ १० ॥

अर्थ ॥ जेमवेलाकवेलाउठीने विप्रवेमासासोनुं लेवानेगयो तेनीपरेंएक ममता येंकरीनेनिःशंकपणे आरंभमांप्रवर्त्तेछे ममणसेठपरें धननेलोभेकरीदोडेछे ॥९॥ परभव मांइहांतुंकुटुंब शरणआधारनथी तोपणकुटुंबनेपोषवानी ममतामां खेदपामेछे॥१०॥

ममत्वेन बहून् लोकान् पुष्णात्येकोर्जितैर्धनैः ॥ सोढा नरक दुःखानां तीव्राणामेक एव तु॥११॥ममतांधोहि यन्नास्ति तत्प श्यति न पश्यति॥जात्यंधस्तु यदस्त्येत भेद इत्यनयोर्महान्॥१२॥

शुद्धस्यान्वेषणे तीर्थोच्छेदः स्यादिति वादिनां॥ लोकाचारादर श्रद्धा लोकसंज्ञेति गीयते ॥ ११ ॥ शिक्षितादिपदोपेत मप्या वश्यकमुच्यते॥द्रव्यतोभावनिर्मुक्त मशुद्धस्यतु का कथा॥१२॥

अर्थ ॥ जोअत्यंतशुद्धमार्ग खोळवाजइयेंतो तीर्थनोउच्छेदथाय माटेलोकना आचारउपरआदर श्रद्धाकरवो जेमचालेतेम चालवादीजे एहवावचनबोलता जेलौकिकआचारेंप्रवर्त्ते तेहुंनाम लोकसंज्ञाछे ॥ ११ ॥ अनेशिक्षाग्रहण आसेवन तथापद संपदायें सहित भावशून्यपणेजे आवश्यककरे तेपण द्रव्यआवश्यक कह्युंछे तोजे अशुद्धज करेतेनी तोशीवातकहियें ॥ १२ ॥

तीर्थोच्छेदभिया हंता विशुद्धस्यैव चादरे ॥ सूत्रक्रियाविलोपः स्या ङ्गतानुगतिकत्वतः॥१३॥धर्म्मोद्यतेन कर्तव्यं कृतं बहुभि रेव चेत्॥तदा मिथ्यादृशां धर्मो न त्याज्यः स्यात्कदाचन॥१४॥

अर्थ ॥ जेतीर्थनोउच्छेदथाय तेनाभयथी अशुद्धक्रियानेविषे गाडरीयाप्रवाहनी पेरेंगतानुगतिकपणें आदरकरतां कांइपरमार्थ जाणेनही अनेज्ञानक्रियानो नाशकरे॥१३ ॥ जेधर्मनाअर्थीथइने एमकहेसो केजेघणाजन करेतेआपणपण करवुं तोमिथ्यात्वताधर्मनापण घणासेवनारछे माटेतेपण कोइकालेछंडाशेनही एमठेखुं॥१४॥

तस्माद्गतानुगत्या यत् क्रियतेसूत्रवर्जितं ॥ उघतोलोकतो वा त दननुष्ठानमेव हि॥१५॥अकामनिर्जराकलं कायक्लेशा दिहोदितं॥सकामनिर्जरा तु स्यात् सोपयोगप्रवृत्तितः॥१६॥

अर्थ॥माटेसूत्रनीशैलीरहितपणे गतानुगतिकपणे उघसंज्ञायें अथवा लोकसंज्ञायें जेकरवुं तेनेअन्योन्यानुष्ठानकेवुं ॥१५॥ जेअज्ञानपणे कायकलेशकरे तेनेअकामनिर्जराकहेवी अने उपयोगसहित ज्ञानक्रियाकरवी तेहुंनामसकामनिर्जराछे ॥ १६ ॥

सदनुष्ठानरागेण तद्धेतुर्मार्गगामिनां॥एतच्च चरमावर्ते नो भोगादेर्विना भवेत्॥ १७॥ धर्मयौवनकालोयं भवबालद शापरा॥ अत्र स्यात्सत्क्रियारागो न्यत्र चासत्क्रियादरः॥१८॥

अर्थ ॥ मार्गानुसारीपुरुष शुद्धक्रियानुष्ठाननेरागेकरी जेकरेतें तद्धेतुअनुष्ठानकेवाय तेजेवारेंछेल्लुंपुद्गलपरावर्त्तरहे तेवारेंजेक्रियाकरे तेअनाउपयोगेनकरे माटेएअनु

अर्थ ॥ जेममत्वनी चेष्टाते धूलजीला सरखीछे तेनेवशथइरह्यो एवोजेपुरुषते हाडमांसविष्टामूत्रतथा चर्मथीमळेली हाडली जेवीस्त्रीउपरप्रेमकरेछे ममत्वधरेछे॥ १७ वलीममत्वेंकरीने पोतानापुत्रनेरमाडे तेवखतेतेनेबापबापकरीकहे अने तेबालकना हाथनीआंगलीयो श्लेष्मथीजरीहोय तेनेअमृतसमानजाणे ॥ १८ ॥

पंकार्द्रमपि निःशंका सुतमंकान्न मुंचति ॥ तदमेध्येपि मेध्यत्वं जा नात्यंबा ममत्वतः ॥ १ए ॥ मातापित्रादिसंबंधो नियतोपि म मत्वतः ॥ दृढभूमि भ्रमवतां नैयत्येनावभासते ॥ २० ॥

अर्थ ॥ मोहथकी बालकनीमाता पोतानाबालकने कादवेंभखोहोय तोपणनिः शंकपणे खोळामांथी मुकतीनथी वलीविष्टायेंअशुचिहोय तोपणतेबालकने तेनीमा ता मोहनावशथकी तेहनेपवित्रगणेछे ॥ १ए ॥ जेमधरती शाश्वतदृढछे पणधतुरा नाफलनक्षकरनार प्राणीनेफेरआवेछे त्यारेतेनेधरतीफरतीजणायछे तेममातापि तादिकनो संबंधसंसारमां अनादिनो शाश्वतछे पणमोहवडेमुग्धथएलोप्राणी एमकहेछे जे मातामरीगइ हवेकेमथशे शीरीतेंचालसे ॥ २० ॥

भिन्नाः प्रत्येकमात्मानो विभिन्नाः पुद्गला अपि॥ शून्यसंसर्ग इ त्येवं यः पश्यति स पश्यति॥२१॥ अहंताममते स्वत्व स्वीयत्वभ्र महेतुके॥ भेदज्ञानात्पलायेते रज्जुज्ञानादिवाहिभिः ॥ २२॥

अर्थ ॥ तेमप्रत्येकेंजीवपण जुदाजुदाछे अनेतेंकइगतीथीआव्या अनेकइगतियें जसे तेमजपुद्गलपणजुदाछे तथाशरीरनो संगपणशून्यछे एरीतेजेदेखेछे तेनेदेखतो जाणवो ॥२१॥ जेमदोरडानुं ज्ञानथये सर्पनीभीति नाशपामेछे तेमहुंअनेस्त्रीआदि क माहरीछेएवो ममत्वथायछे तेभ्रमहेतुछे तेभ्रमभेद ज्ञाननजरेंजोवाथी नाशपामे

किमेतदिति जिज्ञासा तत्वाभिज्ञानसंमुखी॥ व्यासंगमेव नोत्थातु दत्ते क्व ममतास्थितिः ॥ २३ ॥ प्रियार्थिनः प्रियाप्राप्तिं विना क्वा पि यथा रतिः॥न तथा तत्वजिज्ञासो स्तत्वप्राप्तिं विना क्वचित्॥२४॥

अर्थ ॥ एसंसारनोसंबंधशुंछे एमआत्मतत्वने सन्मुख ओळखवानी इच्छाथइ ए टलेममता तरतनाशपामे आत्मज्ञानीआगल ममताकिहांछेकाणेरहे॥२३॥ जेमका मीपुरुष स्त्रीनोअर्थीथयो तेस्त्रीपाम्याविना कोइपणठेकाणे रतिनपामे तेमतत्वनो जाण पुरुषपण तत्वपाम्याविना क्यांयेंरतिनपामे ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ सहजस्वभाविकजे भावधर्मछे तेतोचंदननी सुगंधसमानछे तेसहितजेअनुष्ठान क्रियाकरवी तेनुंनाम अमृतानुष्ठानछे ॥ २५ ॥ प्रभुनीआज्ञावडे मनशुद्धियें प्रवृत्ते अनेअत्यंतपणे संवेगगुणेसहितहोय तेनेगणधरादिक अमृतानुष्ठानकहेछे २६

शास्त्रार्थालोचनं सम्यक् प्रणिधानं च कर्म्मणि॥कालाद्यंगा
विपर्यासो मृतानुष्ठानलक्षणं॥२७॥ द्वयं हि सदनुष्ठानं त्रयम
त्रासदेवच ॥ तत्रापि चरमंश्रेष्ठं मोहोग्रविषनाशनात् ॥२८॥

अर्थ ॥ भलीरीतेंशास्त्रना अर्थनेविचारें क्रियामध्येवीर्यउल्लासधरे पंचमकालना दोषनगणे अथवाजेकालेजें उचित क्रियाहोयतेक्रियाकरे एलक्षणअमृतानुष्ठानना जाणवा ॥ २७ ॥ एपांचअनुष्टानमांछेला बेअनुष्ठानतेरुडांछे अनेप्रथमनात्रण अनुष्ठान ते रुडांनथी तेमांपणसर्वथा श्रेष्टतोअमृतानुष्ठान जाणवुं केमके मोहके० अज्ञान तेनुं आकरुंजेविषतेएअनुष्टान वडेनाशपामेछे ॥ २८ ॥

आदरः करणे प्रीति रविघ्नसंपदागमः ॥ जिज्ञासा तत्ज्ञसे
वा च सदनुष्ठानलक्षणं ॥२९॥ भेदैर्भिन्नं भवेदिछा प्रवृत्ति
स्थिरसिद्धिभिः॥चतुर्विधमिदं मोक्ष योजनाद्योगसंज्ञितं॥३०॥

अर्थ ॥ क्रियायेंआदरकरतांरागधरे तथाआगमने अतिमोटीसंपदानुमाने वली जाणवानीइछाकरे जाणनोसंगकरे एछुछक्रियानालक्षणछे ॥२९॥ तेनापण जुदाजुदा भेदछे १ इछा २ प्रवृत्ति ३ स्थिरता ४ सिद्धियोग एचारयोगमोक्षनेजोडे माटेयोगकहियें ३०

इछा तद्वत्कथाप्रीति र्युक्ता विपरिणामिनी॥ प्रवृत्तिः पालनं
सम्यक् सर्वत्रोपशमन्वित्तं ॥३१॥ सत्क्षयोपशमोत्कर्षाद
तिचारादिचिंतया॥रहितं तु स्थिरं सिद्धिः परेषामर्थसाधकं॥३२॥

अर्थ ॥ जेगुरुनोउपदेशसांभली गुरुउपर अनेकथाउपर परमप्रीतिधरे गुणपरणमे तेनेपहेलो इछायोगकहियें पछेगुरुनाकह्या प्रमाणेसमतायें सहितव्रतपाले क्रियायें सहितप्रवर्त्ते तेबीजोप्रवृत्तियोगकहियें ॥ ३१ ॥ जेरुडाक्षयोपशमना उत्कर्षथी अतिचारनलगाडे अने मनस्थिरपणेप्रवर्त्ते एत्रीजोस्थिरयोगकह्यो अनेनिरतिचारशुद्ध क्रियामांबीजा प्राणीनेभेलवीने तेनोपणअर्थसधावे तेचोथो सिद्धियोग जाणवो ॥३२

॥ ३ ॥ एकविषयजे एककार्यछेतेएकजणने पोतानीरुचीयेंपुष्टकारीछे अनेबीजाने तेथीज द्वेषउपजेछे एमतिकल्पनानाभेदछे एमजाणवुं ॥ ४ ॥

विकल्पकल्पितं तस्मा द्वयमेतन्न तात्विकं ॥ विकल्पोपरमे तस्य द्वित्वादिवदुपक्षयः ॥५॥ स्वप्रयोजनसंसिद्धिः स्वायत्ता भासते यदा ॥ बहिरर्थेषु संकल्प समुत्थानं तदा हतं ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ इष्टअनिष्टए विकल्पनीकल्पनाथकीछे एबेनेजरागद्वेषजाणवा पणएमां कांइ तत्वनथी जोमनथीविकल्पजाय तोरागद्वेष एबेहुदूरथाय॥५॥पोताना प्रयोजननीसिद्धि जेवारेंपोताने स्वाधीनथाय तेवारेंबाहारना अर्थसंकल्पनो उगवनाशपामे

लब्धे स्वभावे कंठस्थ स्वर्णन्यायाद्भ्रमक्षये ॥ रागद्वेषानुपस्थाने समता स्यादनाहता॥७॥ जगज्जीवेषु नो भाति द्वैविध्यं कर्मनिर्मितं॥यदा शुद्धनयस्थित्या तदा साम्यमनाहतं ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जेमकंठउपररहेलुं सुवर्ण साक्षातदेखायछे तेमस्वभाविकगुण पामेथके विभाविकभ्रमणादूरजाय तेवारें रागद्वेषउतीदूरथाय अनेसमताविशेषेंवधे ॥ ७ ॥ जगतनाजीवनेविषे कर्मनुंविचित्रपणुंछे माटेतेविभावपणुं सारुंनरतुंकेवानीरीतें जेवारेंन भासे तेवारेंशुद्धनयमां रह्योथको प्रबलसमतानेपामे ॥ ८ ॥

स्वगुणेभ्योपि कौटस्था देकत्वाध्यवसायतः ॥ आत्मारामं मनो यस्य तस्य साम्यमनुत्तरं ॥९॥ समतापरिपाके स्या द्विषयग्रहशून्यता॥यया विशदयोगानां वासीचंदनतुल्यता ॥ १० ॥

अर्थ ॥ पोतानागुणथकी पोतानोआत्मासाक्षीकरीने पोतानाएकशुद्धअध्यवसायथकी आत्मानेविषे जेनुंमनरमेछे तेनीसमताअनुत्तरकहियें ॥ ९ ॥ एमजेनेपाकीसमताथइ तेनोविषयरूपघरसुतुंथयुं एमजेमुनिनेनिर्मल समतायोगप्रगट्यो तेमुनीने वासलेंकरी कोइछेदे अथवा चंदनेकरीकोइपूजेतो बेहुतुल्यछे. ॥ १० ॥

किं स्तुमः समतां साधो या स्वार्थप्रगुणीकृता ॥ वैराणि नित्यवैराणा मपि हंत्युपतस्थुषां ॥११॥किं दंभेन तपोभिर्वा यमैश्च नियमैश्च किं ॥ एकैव समता सेव्या तरिः संसारवारिधौ॥१२॥

अर्थ ॥ एवा साधुनीसमतानी शीवखाणकरियें जेणेपोतानाआत्मानी सिद्धि

उचितमाचरणं शुभमिच्छतां प्रथमतोमनसः खलु शोधनं ॥
गदवतां ह्यकृते मलशोधने कमुपयोगमुपैतु रसायनं ॥ १ ॥

अर्थ ॥ अध्यात्मनी शुद्धिकरवामाटे प्रथमथीतो उचितपणे शुभआचरणनीइच्छाकरवानेमननी शुद्धताकरवी जेमरोगवंतप्राणी मलशोधनकरवाने रेचलीधाविना रसायनखायतो तेथीतेनेकांइगुणथायनही केमकेमलजाय तेवारपछिरसायणखाय तोगुणकरे तेमप्रथममनशुद्धिथइहोय तोजअध्यात्मनी शुद्धीथाय ॥ १ ॥

परजने प्रसभं किमु रज्यते द्विषति वा स्वमनोयदि निर्मलं ॥
विरहिणामरतेर्जगतोरते रपिच काविकृतिर्विमले विधौ ॥२॥

अर्थ ॥ हेचेतनजो तारुंमननिर्मलछे तो लोकताहराउपर रागधरसे अथवा द्वेष करसे तेयकीताहरे शुंबगाडथवानोछे जेमचंद्रमानिर्मलछे पणतेनाउदयथी विरही जीवो अथवाचोरलोकोने अरतिउपजेछे अनेजगतनाबीजाजीवोने तेथीआनंदथाय छे पणतेथीचंद्रमाने गुणअथवा अवगुणकांईजथतुंनथी ॥ २ ॥

रुचितमाकलयन्ननुपस्थितं स्वमनसैव हि शोचति मानवः ॥
उपनते स्मयमानमुखः पुनर्भवति तत्र परस्य किमुच्यतां ॥३॥

अर्थ ॥ रुडीवस्तुमनमांचिंतवी मनोरथकीधो अनेतेमनोरथ निपनोनही तेवारें तेप्राणीपोतानामनमां शोकधरेछे अनेजेवारें तेधारेलीवस्तुमलेछे तेवारें खुसीथायछे एहर्षशोकनोकरता आत्मानेएकमनजछे तो बीजायेंमहारुंशारुंनरसुंकर्युं एमसुंकहेवुं

चरणयोगघटान्प्रविलोठयन् शमरसं सकलं विकिरत्यधः ॥
चपल एष मनःकपिरुच्चकै रसवणिग् विदधातु मुनिस्तु किं ॥४॥

अर्थ ॥ जेमनतेमांकडाजेवुंछे केमकेतेचारित्रना योगरूपघृतनाघडाने उंधावालेछे तथासमतारूपीअमृतरसनाघडाने ढोलीनाखेछे एवुंएचपल मनते खरेखरुंवांदरुंछे तेनीआगलमुनिरूप रसवाणीजतुंकरनार वाणीउंबिचारोशुंकरे ॥ ४ ॥

सततकुट्टितसंयमभूतलो त्थितरजोनिकरैः प्रथयंस्तमः ॥
अतिदृढश्च मनस्तुरगोगुणै रपिनियंत्रित एष नतिष्ठति ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वलीमुनियेंचारित्रेंकरी कर्मरूपीधूलने दाबीनाखीहती पणमनरूपीघोडा यें नित्यकुटीकुटीने संयमरूपभूमीनोतलियुं उखेड्युं तेथीकलुषतारूप रजउडीते

क्षणं चेतः समाकृष्य समता यदि सेव्यते ॥ स्यात्तदा सुखम प्यस्य यद्वक्तुं नैव पार्यते॥१ए॥कुमारी न यथा वेत्ति सुखं दयित भोगजं॥ न जानाति तथा लोको योगिनां समतासुखं ॥२०॥

अर्थ ॥ जेप्राणी एकक्षणमात्र मननेखेचीने समतानेसेवे तोतेप्राणीने एहवुंसु खप्रगटे जेहनुंसुखेकहेताथकां पारआवेनही ॥१ए॥ जेमकुमारिका नरतारनासुखने जाणतीनथी तेम लोकोपणमुनिराजनी समतानासुखने जाणतानथी ॥ २० ॥

नतिस्तुत्यादिकाशंका शरस्तीव्रः स्वमर्म्मनृत् ॥ समतावर्मगुप्ता नां नार्त्तिकृत्सोपि जायते ॥ २१ ॥ प्रचितान्यपि कर्म्माणि जन्मनां कोटिकोटिनिः॥तमांसीव प्रना नानोः क्षिणोति समता क्षणात्॥२२॥

अर्थ ॥ जेणेसमतानुं बक्तरपेर्युंछे तेनेनमस्कार स्तुति पूजा लान्न परद्रव्यनी इछादिरूप जेपोतानाज मर्मनेलागनारा एहवाजेतीक्ष्णबाणो तेपीडाकरीशकतान थी॥२१॥ जेमसूर्यकिरणप्रकाशथी अंधकारनाशपामेछे तेमकोटीकोटी नवना प्राणी ना निवमसंचितजे पापकर्मछेते समतावडे एकक्षणमांनाशपामेछे ॥ २२ ॥

अन्यलिंगादिसिद्धाना माधारः समतैवहि ॥ रत्नत्रयफलप्राप्ते र्यया स्यान्नावजैनता ॥ २३ ॥ ज्ञानसाफल्यमेषैव नयस्थानाव तारिणः ॥ चंदनं वन्हिनेव स्यात् कुग्रहेणतु नस्म तत् ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ जेअन्यलिंगीसिद्धथया तेपण द्रव्यथी मोक्षफलसाधताथका रत्नत्रयना फलनीप्राप्तिवडे नावथीजैनपणुंपाम्या माटेतेअन्यलिंगीओनेपण समताते एकआधा रनूतहति॥२३॥ जोनयस्थानके उतारीजोइयेंतो एसमताजज्ञाननुंफलछे नेजेमज्ञा नवडेनवतापशमेछे तेमसमतारूपचंदनेकरी नवतापशमोजायछे पण कुग्रहके० क दाग्रहअज्ञानरूप अग्नीवमेतो समतारूपचंदनवली नस्मथायछे ॥ २४ ॥

चारित्रपुरुषप्राणाः समताख्या गता यदि ॥ जनानुधावनावेश स्तदा तन्मरणोत्सवः ॥ २५ ॥ संत्यज्य समतामेकां स्याद्यत्कष्ट मनुष्ठितं ॥ तदीप्सितकरं नैव बीजमुप्तमिवोषरे ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ आसंसारूपगामनेविषे सर्वलोक क्रयविक्रयकरता दोडादोडकरेछे तेसुंछे तेकहेछे केजेवारेंचारित्ररूपीपुरुष मरणपाम्यो तेवारें समतारूपीप्राणपण जतारह्या

मनसि लोलतरे विपरीततां वचननेत्रकरेंगितगोपना ॥
व्रजति धूर्त्ततया ह्यनया खिलं निबिमदंज्नपरैर्मुषितं जगत्॥ ११॥

अर्थ ॥ जोमनचपलछे तोवचनगुप्तिकरेतथानेत्रनेगोपवे इंगितआकारचेष्टाविना काउसग्गकरे तेसर्वविपरीतजाणवुं तेसर्वधूर्त्ततापणानेपामे अनेएवीरीतेंधूर्त्तपणे कपट क्रियानाकरनारा तेमोटाचोरछे तेजगतनेलुटनाराछे ॥ ११ ॥

मनसएव ततः परिशोधनं नियमतोविदधीत महामतिः ॥
इदमज्ञेषजसंवननं मुनेः परपुमर्थरतस्य शिवश्रियः॥१२॥

अर्थ ॥ तेमाटेमननेज्नलिरीतें निश्चयथकी शोधनकरे तेजपंडितनेमनोशुद्धिरूपचूर्णछे अनेपरमपुरुषार्थनेविषे राताजेमुनि तेनेमुक्तिस्त्रीने वशकरवानुं औषधछे॥१२

प्रवचनाब्जविलासरविप्रज्ञा प्रशमनीरतरंगतरंगिणी ॥
हृदयशुद्धिरुदीर्णमदज्वर प्रसरनाशविधौ परमौषधं ॥१३॥

अर्थ ॥ सिद्धांतरूपकमलने विकसितकरवाने मनशुद्धिते सूर्यकांतिरूपछे उपशमरूप जलकल्लोलवधारवाने मनशुद्धितेनदीरूपछे वलीपसरतोथको एहवो मदरूपजेताप तेनेटालवाने मनशुद्धितेपरमसुंदर जडीबुटीलुं औषधछे ॥ १३ ॥

अनुज्नवामृतकुंडमनुत्तर व्रतमरालविलासपयोजिनी ॥ स
कलकर्मकलंकविनाशिनी मनसएव हि शुद्धिरुदाहृता॥१४॥

अर्थ ॥ वलीमनशुद्धिते अनुज्नवनो मोटोअमृतकुंडछे तथाचारित्ररूपहंसने रमवाने कमलनीछे अनेसर्वकर्मकलंक हरवाने अग्निसमान मनशुद्धीनेकहीछे ॥ १४॥

प्रथमतो व्यवहारनयस्थितो ऽशुज्नविकल्पनिवृत्तिपरो ज्नवेत्॥
शुज्नविकल्पमयव्रतसेवया हरति कंटक एव हि कंटकं ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ प्रथमथी व्यवहारनयेरह्यो एहवोजेपुरुषते अशुज्नविकल्पनी निवृत्तिजे नाशकरवुं तेनेविषे तत्परथइने शुज्नविकल्पमयजेव्रत तेनीसेवाकरे तेथीअशुज्नपणुं टलीजाय जेमकांटावडे कांटोनीकलीजायछे तेनीपरें ॥ १५ ॥

विषमधीत्य पदानि शनैः शनै र्हरति मंत्रपदावधि मांत्रिकः ॥
ज्नवति देशनिवृत्तिरपि स्फुटा गुणकरी प्रथमं मनसस्तथा॥१६॥

अर्थ जेममंत्रवादीपुरुष मंत्रपदसमाप्तीसुधी मंत्रनाशब्द धीमेधीमे मनमांजणे पणसर्पनाविषनेटाले तेमजेदेशथी निवृत्तिकरेतेपणप्रगटपणेप्रथम मननेगुणकारीथाय

अर्थ ॥ मिष्टान्नभोजननी लालचें वस्त्रनीलालचें पूजानीलालचें दौलतनीइच्छायें जेतप जप कष्टक्रियाकरे तेक्रियापोताना शुभचित्तनीहणनारीछे एहुंनाम विषअनु ष्टानजाणवुं ॥३॥ स्थावरविषते सोमलजाणवुं अनेजंगमविषसर्पादिकनुंजाणवुं एबेड मांथी एकविषखाधाथी तरतमरेछे तेमभोगाभिलाषेंक्रियाकरवी तेशुभचित्तनेहणेछे ४

दिव्यभोगाभिलाषेण कालांतरपरिक्षयात् ॥ स्वादिष्टफल संपूर्त्ते गेरानुष्ठानमुच्यते ॥५॥ यथा कुद्रव्यसंयोगजनितं ग रसंज्ञितं ॥ विषं कालांतरे हंति तथेदमपि तत्वतः ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेदेवेंद्रादिकना सुखपरभवें पामवानीइच्छाकरी नेतपस्याकरेतेप्राणीकालां तरें नरकगतिपामे कष्टकरीने अणदीठाफलनीवांछाकरे तेनेगरलानुष्ठानकेवुं ॥ ५ ॥ जेमबंगडीचूर्णप्रमुखनिर्बलद्रव्यने संयोगेंप्रगटथतुंविष तेगरलनामाविषकहियेंते घणा दिवस कष्टपमाडीमारेछे तेमएपणतत्वथी नर्कफलनीप्राप्तिकरेछे ॥ ६ ॥

निषेधायानयोरेव विचित्रानर्थदायिनोः ॥ सर्वत्रैवानिदान त्वं जिनेंद्रैः प्रतिपादितं ॥ ७ ॥ प्रणिधानाद्यभावेन कर्म्मा नध्यवसायिनः ॥ संमूर्छिमप्रवृत्त्याभ मननुष्ठानमुच्यते ॥८॥

अर्थ ॥ अनेकप्रकारें महाअनर्थउपजावे एवाएपूर्वोक्तबेअनुष्ठाननो निषेधकरवाने समस्ततीर्थंकरें नियाणुंवर्जवानुंकह्युंछे ॥ ७॥ प्रणिधानादिकनेअभावें कर्मजेक्रियाते मां अध्यवसायरहितके० शून्यपणेसंमूर्छिमनीपरें शून्यमननी प्रवृत्तियें अथवा दे खादेखीयेंजे क्रियाकरे तेअन्योन्यानुष्ठानकहियें ॥ ८ ॥

ओघसंज्ञात्र सामान्यं ज्ञानरूपानिबंधनं॥लोकसंज्ञा च नि र्दोषसूत्रमार्गानपेक्षणी॥ ९ ॥ न लोकं नापि सूत्रंनो गुरु वाचमपेक्षते॥अनध्यवसितं किंचि त्कुरुते चौघसंज्ञया॥१०॥

अर्थ ॥ इहांसामान्यप्रकारें ज्ञानरूपनुंकारणनगवेषे तेओघसंज्ञा प्रवाहरूपकहियें तेथी निर्दोषिसूत्रनामार्गनीअपेक्षाविना लोकदेखादेखीयें क्रियाकरे अथवा उपयोग शून्यथकाजेक्रियाकरे तेअन्योनानुष्ठानछे॥९॥एटलेलोकनीरीतविना अने सूत्रनी तथा गुरूनावचननीअपेक्षाविना उपयोगशून्यपणे जेकांइकरवुं तेनुंनाम ओघसंज्ञाछे ॥१०॥

अर्थ ॥ जेणे मावविकल्पनी श्रेणीटालीछे अनेजेणेविशुद्धतानुं ग्रहणकीधुंछे ते मनोशुद्धिनेपामे अनेतेवली संतोषीपणानेपामिने तेपंडितपुरुष उज्वलयशरूपल क्ष्मी अथवा यशशोजानेपामे ॥२१॥ इतिमनशुद्धिनामा एकादशोधिकारः समाप्तः

इतिश्रीपंडित यशोविजयेन विरचितेअध्यात्मसारप्रकरणे तृतीयःप्रबंध ॥ २७ आठमाना २ए नवमाना ३ए दस माना २१ इग्यारमाना सर्वश्लोक ११७

मनशुद्धिश्च सम्यक्त्वे सत्येव परमार्थतः ॥ तद्विना मोहगर्जा सा प्रत्यपायानुबंधिनी ॥ १ ॥ सम्यक्त्वसहिता एव शुद्धा दानादि काः क्रिया. ॥ तासां मोक्षफले प्रोक्ता यदस्य सहकारिता ॥२॥

अर्थ ॥ एपूर्वेमनशुद्धिकही तेजोसमकितगुणहोयतो निश्चे मनशुद्धि केवाय प ण समकितविनाजे मनशुद्धिमाने तेमोहगर्जितहोय एटलेअज्ञान सहितहोय तेतो उलटीकष्टबंधन करनारीछे माटेहवेसमकेतनुं अधिकारकहेछे ॥ १ ॥ दानादिक क्रियापण समकितसहितहोय तोजशुद्धछे तेक्रिया मोक्षफललेवाने सहायकारकछे

कुर्वाणोपि क्रियां ज्ञाति धनभोगांस्त्यजन्नपि॥ दुःखस्पोरोददा नोपि नांधोजयति वैरिणं ॥३॥ कुर्वन्निर्वृतिमप्येवं कामभोगां स्त्यजन्नपि ॥ दुःखस्पोरोददानोपि मिथ्यादृष्टिर्न सिध्यति ॥४॥

अर्थ ॥ जेमआंधलो वैरीनेजीतीशकतोनथी तेमक्रियाकरेछे न्यातिधननो जोग तजेछे दुःखसहेछे कायानेकष्टआपेछे पणएसर्वे समकितविना व्यर्थजायछे ॥३॥ जोसंतोषधरे कामभोगछोडे कायानेकष्टआपे पणमिथ्यात्वीथको मुक्तीनेपामेनही४॥

कनीनिकेव नेत्रस्य कुसुमस्येव सौरभं ॥ सम्यक्त्वमुच्यते सारः सर्वेषां धर्मकर्मणां ॥५॥ तत्वश्रद्धानमेतच्च गदितं जिनशास ने ॥ सर्वे जीवा न हंतव्या सूत्रे तत्वमितीष्यते ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेमआंखमां कीकीसारभूतछे फूलमांसुगंध सारभूतछे तेमसर्वधर्मक्रिया

ष्ठानपणतेवारेंजहोय ॥ १७ ॥ ज्ञेलेपुजलपरावर्त्तजेवारें तद्धेतुअनुष्ठानप्रगटे तेवारेंए धर्मनोयौवनकाल प्रगटथो अनेसंसारमांबालदिशाहतितेमटिगइ एमजाणवुं-एअनु ष्ठानेशुद्धक्रियानोरागउपजेछेअनेपूर्वनात्रणअनुष्ठानेअशुद्धक्रियानोआदरउपजेछे।१८

भोगरागाद् यथा यूनो बालक्रीमाऽखिला ह्रिये ॥ धर्म्मयूनस्त
था धर्म्म रागेणासक्रियाह्रिये ॥ १९ ॥ चतुर्थं चरमावर्त्ते तस्मा
द्धर्म्मानुरागतः ॥ अनुष्ठानं विनिर्दिष्टं बीजादिकमसंगतं ॥२०॥

अर्थ ॥ जेमयुवानपुरुष भोगनोविलासी थायछे नेबालक्रीडाथी लजवायछे ते मधर्मयौवन कालवंतपुरुष धर्मनारागेंकरी अशुद्धक्रियाथी लजवायछे ॥ १९ ॥ तेमाटे तेधर्मनाअनुरागथी चरमपुजलपरावर्त्तजवली तद्धेतुनामेंचोथोअनुष्ठानकह्युंछे पणबी जादिकजेसमकित तेतो असंगके० अप्राप्तछे ॥ २० ॥

बीजं चेह जनान् दृष्ट्वा शुद्धानुष्ठानकारिणः ॥ बहुमानप्रशंसा
भ्यां चिकीर्षा शुद्धगोचरा ॥ २१ ॥ तस्याएवानुबंधश्चा कलंकः
कीर्त्यतेंऽकुरः ॥ तद्धत्वन्वेषणा चित्रा स्कंधकल्पाच वर्ण्यतां ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ इहांसमकेतरूपबीज तो तेवारेंथाय जेवारें शुद्धक्रियाकरतांप्राणीने दे खीने बहुमानप्रशंसाकरे अनेआगमविधिरागेंपोतेपण ज्ञानेशुद्धविधिगोचरहोय तेवा रेंसमकितउपजेछे ॥ २१ ॥ एतद्धेतुअनुष्ठाननोअनुबंधजे शुद्धप्रणमनते कलंकरहि तअंकुरकहियें अने तद्धेतुअनुष्ठाननी खोलकरवी तेनानाप्रकारनो स्कंधकहियें ॥ २२ ॥

प्रवृत्तिस्तेषु चित्रा च पत्रादिसदृशी मता ॥ पुष्पं च गुरुयो
गादि हेतुसंपत्तिलक्षणं ॥ २३ ॥ भावधर्म्मस्य संपत्ति र्या च
सद्देशनादिना ॥ फलं तदत्र विज्ञेयं नियमान्मोक्षसाधकं ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ तेमध्येप्रवृत्तवुंतेरूप विचित्रप्रकारनापानडा जाणवांअने सद्गुरुना योगवडे स्वर्गमांसुखसंपदापामवी तेरूपफूलजाणवा ॥ २३ ॥ जेवारेंगुरुपासें देशनासांभलीने भावधर्मरूप संपदापामे तेफलकहियें तेफलमोक्षसाधनरूपछे एमजाणवुं ॥ २४ ॥

सहजो भावधर्मोहि शुद्धचंदनगंधवत् ॥ एतद्गर्भमनुष्ठा
न ममृतं संप्रचक्ष्यते ॥ २५ ॥ जैनीमाज्ञां पुरस्कृत्य प्रवृत्तं चि
त्तशुद्धितः ॥ संवेगगर्भमत्यंत ममृतं तद्विदोविदुः ॥ २६ ॥

बतावेछे ॥ १३ ॥ दया सत्यवचन अचोरी बाह्यकल्पना अनेब्रह्मचर्य एपांचयम तथाअक्रोध सरलता शौच संतोष गुरुसेवा एपांचनियमजाणवा ॥ १४ ॥

संतोषो गुरुशुश्रूषा इत्येते दश कीर्तिताः॥निगद्यंते यमा सांख्यै रपिव्यासानुसारिभिः ॥ १५ ॥ अहिंसा सत्यमस्तैन्यं ब्रह्मच र्यं तुरीयकं ॥ पंचमो व्यवहारश्चेत्येते पंच यमाः स्मृताः ॥१६॥

अर्थ ॥ एदशधर्मदशाकेवाय हवेवेदव्यासना मतानुसारी सांख्यमतवालापणयम नियमएमकहेछे॥१५॥ दया सत्य अचोरी ब्रह्मचर्य व्यवहार एपांच यमजाणवा॥१६

अक्रोधो गुरुशुश्रुषा शौचमाहारलाघवं ॥ अप्रमाद श्च पंचेति नियमाः परिकीर्तिताः ॥ १७ ॥ बौद्धैःकुशलधर्माश्च दशेष्यंते य दुच्यते ॥ हिंसास्तेयान्यथाकामं पैशुन्यं परुषानृतं ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ अक्रोध गुरुसेवा शौच अल्पआहार अप्रमाद एपांचनियमकह्यांछे ॥ १७ ॥ अनेबौद्धदर्शनमांजेकुशलछे तेधर्मवाला पणदशप्रकारेंकहेछे तेमकहियेंछैयें हिंसा चोरी कंदर्प चाडी कठोरवचन अने जुठुंबोलवुं ॥ १८ ॥

संभिन्नालापव्यापाद मभिध्यादृग्विपर्ययं ॥ पापकर्मेति दश धा कायवाङ्मनसै स्त्यजेत् ॥१९॥ ब्रह्मादिपदवाच्यानि ता न्याहुर्वैदिकादयः॥अतः सर्वैकवाक्यता धर्मशास्त्रमदोर्थकं॥२०॥

अर्थ ॥ जेमतेमबकवुं मारवुं अब्रह्मसेववुं दृष्टिविपर्यास एदशप्रकारें पापकर्मते मन वचन अनेकाया एत्रणेयोगेंकरीत्यजवा ॥ १९ ॥ अने वैदिकादिकमतवालाजेछे तेपणब्रह्मादिपद बोलेछे जेसर्वत्रब्रह्मपदछे एथीएसर्वेधर्मवालाना एकवचनछे माटे सार्थकपणे सर्वेनेधर्मशास्त्रकहियें ॥ २० ॥

क्वचैतत्संभवोयुक्त इति चिंत्यं महात्मना॥शास्त्रं परीक्षमाणेना व्याकुलेनांतरात्मना ॥ २१ ॥ प्रमाणलक्षणादेस्तु नोपयोगो त्र कश्चन॥तन्निश्चये ऽनवस्थाना दन्यथार्थस्थिते र्यतः॥२२॥

अर्थ ॥ तेमाटेएसर्ववेदर्शननोसंभवकिहां छेकारणेछे एममोटा पुरुषेंचिंतववुं तेशा स्त्रनी परीक्षावालायें विचारवुं तेवलीअव्याकुलपणे अंतरात्मावडे विचारवुं ॥२१॥ इहांप्रमाणलक्षणादिकथकी कशोएउपयोग कार्यकारीनथी जिहांअन्यथा अर्थथपजे एटलेतेधर्मे जुदोपडजाय अनेधर्मतो एकस्वभावरूपछे ॥ २२ ॥

भेदा इमे विचित्राःस्युः क्षयोपशमभेदतः॥ श्रद्धाप्रीत्यादियो
गेन भव्यानां मार्गगामिनां॥३३॥अनुकंपा च निर्वेदः संवेगः
प्रशमस्तथा॥एतेषा मनुभावाः स्यु रिच्छादीनां यथाक्रमं॥३४॥

अर्थ ॥ एइच्छादिकयोगनावली विचित्रभेदछेते क्षयोपशमभावना भेदथीछे ते श्रद्धाप्रीतिप्रमुखयोगेंकरीने मुक्तिमार्गेपामनार भव्यजीवने होय ॥ ३३ ॥ १ करुणा २ वैराग्य ३ संवेग ४ उपशम एअनुक्रमे इच्छादिकनाचारप्रकारछे ॥ ३४ ॥

कायोत्सर्गादिसूत्राणां श्रद्धामेधादिभावतः॥ इच्छादियोग
साफल्यं देशसर्वव्रतस्पृशां ॥ ३५ ॥ गुडखंडादिमाधुर्यभेद
वत् पुरुषांतरे ॥भेदेपीच्छादिभावानां दोषोनार्थान्वयादिह॥३६॥

अर्थ ॥ कायोत्सर्गादिक आवश्यकसूत्रनुं श्रद्धापणुंजोभावथीथाय तोश्रावक तथासाधुने इच्छादिकयोग सफलथाय ॥ ३५ ॥ कोइनेगोलमीठोलागेछेअने कोइनेखांडमीठीलागेछे एरीतेंमीठासनास्वादमां जेमभिन्नताछे तेमजपुरुषोनी प्रकृतिभिन्नभिन्न माटे इच्छादिकयोगनाजेभाव तेनापणभेदछे तोपणतेमांकांइ दूषणनथी केमके जे मशर्करादिकनोमीठाश जुदोजुदोछे तोपणमिठाशपणानो अर्थएकजछे मिठासगमे तेनीहोयपण तेथी मिठाशपणानो अर्थसरेछे तेमज इच्छादिकयोगना जोपणभेदछे तोपणतेथकी अर्थजेफल तेएकजमलेछे माटेदूषणनथी एमजाणवुं ॥ ३६ ॥

येषां नेच्छादिलेशोपि तेषां लेतत्समर्प्पणे॥ स्फुटोमहामृषावाद इ
त्याचार्याः प्रचक्षते॥३७॥उन्मार्गोत्थापनं बाढ मसमंजसकारणे॥
भावनित्यमिदं तत्वं जनानैर्योगविंशिकां॥३८॥त्रिधा तत्सदनुष्ठान
मादेयं शुद्धचेतसा॥ज्ञात्वा समयसद्भावं लोकसंज्ञां विहाय च॥३९॥

अर्थ॥पणजेने शुद्धअनुष्ठानने विषे इच्छादियोगनो लेशपणनथी तेवाअयोग्यनरने जेइच्छादियोगआपे तेनेप्रगटमृषावादनुं पापलागेछे एवुंपूर्वाचार्यकेहेछे ॥ ३७ ॥जेअतिअसमंजस कारणछेतेनेविषे उन्मार्गस्थापनथायछे माटेयोगविंशिका ग्रंथना जाण पुरुषें एतत्वचिंतवीने सद्अनुष्ठानकरवुं एटलेजेमतेमकरियेंतो उन्मार्गेनुं स्थापनथइ जाय॥३८॥ माटेशुद्धचेतनायें मनवचनकायायेंकरीने सदनुष्ठानसेववा सिद्धांतना सद्भावजाणी लोकसंज्ञातजीने शुद्धक्रियाकरवी ॥३९॥ इतिसदनुष्ठानाधिकारदसम ॥

ग्रहण केमथाय वली संयोगवियोगादिकनी कल्पनापणकेमघटे ॥ ३०॥ एमसांजली ने कोइबोल्योके हरकोइकर्मथी पूर्वसंस्कारदिवाविना शरीरनोसंयोगथायछे तेनोउत्तर आपेछे एमजन्मनी उत्पत्तिते जीवनाव्यापारविना वेचणविनाथायनही इतिजावार्थ

कथंचिन्मूर्त्ततापैति विना वपुरसंक्रमान् ॥ व्यापारयोगतश्चैव यत्किंचित्तदिदं जगुः ॥३१॥ निःक्रियोऽसौ ततोहंति हन्यते वा न जातुचित् ॥ किंचित्केनचिदित्येवं न हिंसास्योपपद्यते ॥३२॥

अर्थ॥शरीरनेसंयोगेतो जीव कांइकरूपीपणुंपामेछे जोशरीरनो संक्रमनहोयतो जे कांइछे तेइहांकहेछे ॥ ३१ ॥ जेणेआत्मात्यागीकीधोछे तेएमकहेछेके आत्माक्रिया रहितछे माटेकोइनेहणतोनथी तेमकोइकालें कोइथीहणातोपणनथी एवुंजेनाचित्त मांछे तेहिंसानहीमाने ॥ ३२ ॥

अनित्यैकांतपक्षेपि हिंसादीनामसंजवः ॥ नाशहेतोरयोगेन क्षणिकत्वस्य साधनात् ॥ ३३ ॥ न च संतानजेदस्य जनकोहिं सकोजवेत् ॥ सांवृतत्वादजन्यत्वात् जावत्वनियतं हि तत् ॥ ३४ ॥

अर्थ ॥ एमएकांते अनित्यवादिनेपक्षें हिंसानथीमनाती केमके तेसर्वपदार्थ क्षणरूपमानेछे माटेआत्माक्षणमां नाशरूपछे तेपोतानीमेलेजमरेछे तेवारेंमारनार हेतुकोइनथी माटेहिंसानथीज ॥ ३३ ॥ पुत्रपुत्रीप्रमुखनो कोइबापनथी तेमकोइ मारनारपणनथी एजगत्सर्वक्षणिकजावनोनियमछे अनित्यछे माटेकोइ प्रगटकरना रनथी तेवारेंपिताकोनो अनेपुत्रकोनो ॥ ३४ ॥

नरादिःक्षणहेतुश्च सूकरादेर्न हिंसकः॥ सूकरांत्यक्षणेनैव व्यजिचारप्रसंगतः ॥ ३५ ॥ अनंतरक्षणोत्पादे बुधलुब्धकयोस्तुला ॥ नैवं तद्विरतिः क्वापि ततः शास्त्राद्यसंगतिः ॥ ३६ ॥

अर्थ ॥ मनुष्यक्षणमात्रछे अनेपछेसुअरनामरणने अंतकालनाक्षणमां तेमनुष्यनथी माटेसूअरने मारनारकोणछे एहवाबोलनारनेपणप्रसंगथी व्यजिचारआवे छे ॥३५॥ तथासूअरनेमार्युं अनेमरणनेवीजेसमयें ज्ञानीतथाआहेडी एवेसरिखाछे ते सूअरमरणपाम्युं तेएवेजणेजाण्युं माटेहवे एबेमांथीकोइने मारवानीमतिनथी ते माटे मारनारतथामरनार सर्वनीक्षणेक्षणे उत्पति तथा मरणछेपण कोइक्षणे कांइ विरतिनथी एमकहेछे एमतवालाना शास्त्रपणजूठांछे ॥ ३६ ॥

हनासमूहेंकरी अज्ञानरूपअंधकारथयो एवोअतिआकरो एमनरूपयोमोटो तेश्रुतरूपीदोरडेबंधायोछतो तोफानकरेछे पणसमोरहेतोनथी ॥ ५ ॥

जिनवचोघनसारमलिम्लुचः कुसुमसायकपावकदीपकः ॥
अहह कोपि मनःपवनो बली शुभमतिद्रुमसंततिभंगकृत्॥६॥

अर्थ ॥ एककौतुकजुवोके मनरूपीवायुमहाबलवानछे केमके रुडीबुद्धिरूपवृक्षने भांगीनाखेछे तथा जिनवचनरूप बरासनोचोरछे वली कंदर्परूपअग्नीनोदीपावनारछे ६

चरणगोपुरभंगपरः स्फुर त्समयबोधतरूनपि पातयन् ॥ भ्रम
ति यद्यतिमत्तमनोगजः क कुशलं शिवराजपथे तदा ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वलीमनरूपहाथीछे तेचारित्ररूपनगरना दरवाजाभांगतोथको पसरेछे सिद्धांतनाबोधरूपीवृक्षनेपण पाडतोथकोभमेछे एवोमदोन्मत्त मनरूपीहाथी दोमादोमकरेछे तेवारेंसाधुने मोक्षमार्गेंजतां कुशलतातेक्यांथीहोय ॥ ७ ॥

व्रततरून्प्रगुणीकुरुते जनो दहति दुष्टमनोदहनः पुनः ॥
ननु परिश्रम एष विशेषवान् क भविता सुगुणे पवनोदये ॥८॥

अर्थ ॥ जेसाधुछे तेव्रतरूपीवृक्षें फलीवाडीने चेतनज्ञानअमृतरसवडे सींचीने नवपल्लवकरेछे पणदुष्ट मनरूपजेअग्नितेवली वाडीनेबालीनाखेछे तोरुडागुणरूपवामीमां गुणरूपवायरानेउदयें मुनीनीमेनततेकेमकरीने सफलथाय ॥ ८ ॥

अनिगृहीतमना विदधत्परां न वपुषा वचसा च शुभक्रियां ॥
गुणमुपैति विराधनया नया बत दुरंतभवभ्रममंचति ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ एकमननो निग्रहकर्याविना वचनेतथाकायायें जेटलीशुभक्रियाकरे ते उपयोगशून्यतायें अविधियेंकरे अनेतेअविधिनोकरनारो तोअवश्यसूत्रनेविषेछकायनो विराधककह्योछे माटेतेगुणनकरे जेमनशून्ये क्रियाकरनारो तेविराधकछे माटेशून्यक्रियाकरतो विराधकपणे संसारनेविषेघणो भवभमसे ॥ ९ ॥

अनिगृहीतमनाः कुविकल्पतो नरकमृच्छति तंदुलमत्स्यवत् ॥
इयमभक्षणजा नहि जीर्णता ऽनुपनतार्थविकल्पकदर्थना॥१०॥

अर्थ॥मनवशकिधाविनाजे तपजपकरे वलिमनमां कुविकल्पघणाथाय तेथीतेतंदुलमत्स्यनापरें नरकेंपडे एकुविकल्पकरतोथको जो उपवासकरे तपकरेतेथीतेनेमात्र अजीर्णथाय केमकेअणपाम्याअर्थनो विकल्पकरे तेनीकदर्थनाअजीर्णनुंकारणछे

नाकर्मविपाकपण. तेनेजछे जोवैद्यनेऔषधकरतां दुष्टचित्तहोय तोतेऔषधशत्रुसरखुं थाय अनेतेवैद्यनेपणहिंसकपणुंलागे अनेजोवैद्यनुंमननिर्मलछे तोवैद्यनेहिंसकपणुं नलागे ॥ ४३ ॥ एवासद्गुरुना उपदेशसांभलवाथी हिंसानीनिवृत्तिप्रगटपणेथाय निर्मलचित्तना आशयनीवृद्धिथकी सोपक्रमीजे निकाचितबांधेलापाप तेनोनाशथायछे.

अपवर्गतरोर्बीजं मुख्या हिंसेयमुच्यते ॥ सत्यादीनि व्रतान्यत्र
जयंते पल्लवा नवाः ॥४५॥ अहिंसासंभवश्चेत्थं दृश्यतेऽत्रैव शा
सने ॥ अनुबंधादिसंशुद्धि रप्यत्रैवास्ति वास्तवी ॥ ४६ ॥

अर्थ ॥ जेअहिंसाते मोक्षरूपवृक्षनुंबीजकहियें अनेसत्यादिकजेव्रतछे तेमोक्षरूपवृक्षना नवपल्लवअंकुराछे.॥४५॥तेतोआजिनशासनमां जीवदयानो अहिंसकपणानुं संभवजोवामांआवेछे अनेवलीअनुबंधहिंसा तथा हेतुहिंसा अनेस्वरूपहिंसा एत्रणजातनीजे हिंसातेनीशुद्धि तेपणआजिनशासनमांज वसीरहीछे ॥ ४६ ॥

हिंसाया ज्ञानयोगेन सम्यग्दृष्टेर्महात्मनः ॥ तप्तलोहपदन्यास
तुल्याया नानुबंधनं ॥४७॥ सताम्यस्याश्च कस्याश्चिद् यतना भ
क्तिशालिनां ॥ अनुबंधोह्यहिंसाया जिनपूजादिकर्म्मणि ॥ ४८ ॥

अर्थ ॥ मोटाप्राणीजे सम्यक्दृष्टितेने ज्ञानयोगेंकरीवरतेछे पणअविरतें हिंसा लागेछे तेकेवीछे जेमतपाव्युंएवुंजेलोढुं तेउपरपगमुकीकोइचाले पणबलवानेजयें निशंकपणें पगठरावेनही तेमसमकेतिपण निशंकपणेहिंसानकरे अनेतेमाटेज नरकनोबंधपणकरेनही ॥ ४७ ॥ तेमरुडाजयणावंत जीवनेज्ञानयोगेंकरी जिनपूजाकरता अहिंसाजेदया तेनोअनुबंधछे केमकेएपूजातेपरंपरायें मूक्तिफलनी आपनारीछे

हिंसानुबंधिनी हिंसा मिथ्यादृष्टेस्तु दुर्मतेः॥ अज्ञानशक्तियोगे
न तस्याहिंसापि तादृशी॥४९॥ येन स्यान्निन्हवादीनां दिवि
षद्दुर्गतिः क्रमात् ॥ हिंसैव महती तिर्यङ् नरकादिभवांतरे॥५०॥

अर्थ ॥ पणनरकगतिनोबंधपडे एवीजेहिंसाते मिथ्यात्वीदुर्मतिनेहोय अज्ञाननेयोगेंकरी तेमिथ्यात्वीजो जीवदयापाले तोतेपण हिंसाजेवीजजाणवी॥ ४९ ॥ जेकारणमाटे निन्हवादिक जम्मालीप्रमुखेपण जीवदयापालीछे तोपणअज्ञानोदयनायोगें स्वर्गमांपण दुर्गतिपाम्याछे अनेढेमरूपछे माटेनिन्हवनीजे अहिंसाते परमार्थें हिंसानाजफलआपे केमके भवांतरें तेमने तिर्यंचनरकादिकनीगति प्रगटछे॥५०॥

स्फुटमसद्विषयव्यवसायतो लगति यत्र मनो ऽधिकसौष्ठवात् ॥
प्रतिकृतिः पदमात्मवदेव वा तदवलंबनमत्र शुभं मतं ॥ १७ ॥

अर्थ॥ जेदेखतोज नबलोअनेछुंडो एहवुंजेविषय तेनाव्यापारथी जेनरवुंचित्तवणी चतुराइथी जेवस्तुनेविषेलागे तेवस्तुआत्मानेसाथें जोडीये तेवारें तेनुंप्रतिबिंबनासे पणते आत्मधर्मनही तोपणअध्यात्मरीतें तेनुंजअवलंबन रुडुंकह्युंछे ॥ १७ ॥

तदनु काचन निश्चयकल्पना विगलितव्यवहारपदावधिः॥
न किमपीति विवेचनसंमुखी जवति सर्वनिवृत्तिसमाधये ॥१८॥

अर्थ ॥ पछीकांइक निश्चयकल्पनाथइ अने व्यवहारपदनीमर्यादागलितथयी एणो हुंनथिमेकोई एवीवेचणनेचेतनासन्मुखथयी तेवारें सर्वनिवृत्तिरूपसमाधिथाय॥१८॥

इह हि सर्ववहिर्विषयच्युतं हृदयमात्मनि केवलमागतं ॥
चरणदर्शनबोधपरंपरा परिचितं प्रसरत्यविकल्पकं॥१९॥

अर्थ ॥ जेवारें सर्व बाह्यविषयथीहृदयखस्युं तेवारेंपोताना आत्मानेविषे केवलएकज ज्ञान दर्शन चारित्रनाबोधनी परंपराजे आत्मकुटुंबछे तेनोमिलापते निर्विकल्पपणें पसरे ओलखाणथाय एमजाणवुं ॥ १९ ॥

तदिदमन्यडुपैत्यधुनापि नो नियतवस्तुविलास्यपि निश्चयात्॥
क्षणमसंगमुदेतिनिसर्गधी हतवहिर्ग्रहमंतरुदात्तता ॥ २० ॥

अर्थ ॥ निश्चयनयथकी एआत्माते खरीशुद्धवस्तुनो विलासीछे तेमाटे हमणा अन्यजे रागद्वेषादिजाव तेनेनपामे वलीक्षणमात्रपण जेपरपुजलादिकनोसंगनकरे एवी स्वजाविकबुद्धि जेनेथइ तेथीबाह्यजाव हण्यो अनेअंतरंग उत्कृष्टजावने पाम्यो॥२०॥

कृतकषायजयः सगजीरिम प्रकृतिशांत मुदात्तमुदारधीः ॥
समनुगृह्य मनोनुजवत्यहो गलितमोहतमः परमं महः ॥२१॥

अर्थ ॥ एहवोजेगंजीर स्वजाववालो जेणेकषायनो जयमेलव्योछे अनेजेनीबुद्धि मोटीछे अनेस्वजावें शांतछे तेजोसम्यक्प्रकारें मननोनिग्रहकरे तोतेथीमोहांधकारनेगालीने परम महातेजस्वीपणाने तेप्राणीजरुर अनुजव पामे ॥ २१ ॥

गलितदुष्टविकल्पपरंपरं धृतविशुद्धिमनो जवतीदृशं॥ धृतिमुपेत्य ततश्च महामतिः समधिगच्छति शुभयशःश्रियं ॥ २२ ॥

समता संवेग निर्वेद अनुकंपा एलक्षणो रुमीरीतें अविछिन्नपणे धरतांथकां सम कितजेछे तेस्थिरतापणानेपामे ॥ ५७ ॥ इतिसम्यक्ताधिकारः द्वादशसमाप्तः

---

मिथ्यात्वत्यागतः शुद्धं सम्यक्त्वं जायतेंऽगिनां॥अतस्तत्परिहारा य यतितव्यं महात्मना ॥१॥ नास्ति नित्यो न कर्त्ता च न भोक्ता त्मा न निर्वृतः॥तदुपायश्च नेत्याहु र्मिथ्यात्वस्य पदानि षट् ॥ २॥

अर्थ ॥ तेजेवारें मिथ्यातनोनाशथाय तेवारेंजीवने समकेतप्रगटे माटे मिथ्यात टालवानो रुडाप्राणीयें उद्यमकरवो ॥ १ ॥ आत्मानथी आत्मानित्यनथी कर्तानथी भोक्तानथी सिद्धनथी तेसिद्धताप्रगटकरवानो उपायनथी एछपदमिथ्यातनाछे ॥२॥

एतैर्यस्माद्भवेच्छुद्ध व्यवहारविलंघनं॥ अयमेव च मिथ्यात्व ध्वंसी सदुपदेशतः ॥ ३ ॥ नास्तित्वादिग्रहैर्नैवो पदेशोनोप देशकः॥ततः कस्योपकारः स्या त्संदेहादिव्युदासतः॥४॥

अर्थ ॥ एपदवडेकरी पूर्वाचार्यनाव्यवहार उलंघायछे लोपायछे एजमिथ्यात्वछे अनेतेसद्गुरुना उपदेशथकी नाशपामेछे ॥३॥ एछपदरूपीकुग्रहेनउच्छाथकां जेउपदे शआपे तेउपदेशनकहियें तेथीकोनेउपकारनथाय मिथ्यात्वीनाउपदेशेंसंदेहटलेनही

येषां निश्चयएवेष्टो व्यवहारस्तु संगतः॥ विप्राणां म्लेच्छभा षेव स्वार्थमात्रोपदेशनात् ॥५॥ यथा केवलमात्म नं जना नः श्रुतकेवली॥श्रुतेन निश्चयात्सर्वं श्रुतं च व्यवहारतः॥६॥

अर्थ ॥ जेमब्राह्मणने म्लेच्छभाषाबोलवानीमनाइछे माटेपोतानास्वार्थेजेटलीज बोले तेमजजेहने एकनिश्चयनयजइष्टछे तेहनेव्यवहारनयतो ब्राह्मणनेम्लेच्छनीभाषा नाउपदेशनीपरें स्वार्थवास्त संगतमात्रछे ॥ ५ ॥ जेमश्रुतकेवली व्यवहारथीश्रुतजाणे अनेसर्वनिश्चयनयवडे श्रुतज्ञानेकरीश्रुतकेवली केवलआत्मानेजाणे ॥ ६ ॥

निश्चयार्थोत्र नो साक्षा द्वक्तुं केनापि पार्यते ॥ व्यवहारो गु णद्वारा तदर्थावगमक्षयः॥७॥प्राधान्यं व्यवहारेचे त्तत्तेषां निश्चये कथं॥ परार्थस्वार्थते तुल्ये शब्दज्ञानात्मनो र्द्वयोः॥८॥

अर्थ ॥ इहांनिश्चयअर्थ प्रगटपणेकेवाने कोइसमर्थनथी देखीतोगुणप्रगटे तेह

मां समकितते सारभूतकह्युंछे ॥ ५ ॥ जिनशासननेविषे जेतत्वनीश्रद्धाकरवीतेहने समकितकह्युंछे अनेकोइपणजीवने हणवोनही तेनेसूत्रमां तत्वकह्युंछे ॥ ६ ॥

शुद्धोधर्मोयमित्येत द्धर्मरुच्यात्मकं स्थितं॥ शुद्धानामिदमन्या सां रुचीनामुपलक्षणं ॥ ७ ॥ अथवेदं यथातत्व माज्ञयैव तथा ऽखिलं ॥ नवानामपि तत्वाना मितिश्रद्धोदितार्थतः ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जेशुद्धधर्मते एधर्मरुचिनामा समकितनेज कहियें अनेएमध्ये उपलक्षणथी बीजीपणशुद्धपदार्थनीरुचिउपगटेछे ॥ ७ ॥ अथवाएसमकितते जेमप्रभुआज्ञारूप तत्वेंप्रगटेछे तेतत्वतोजीवादिकनवप्रकारेंछे तेनीजेश्रद्धा तेसमकितजाणवुं ॥ ८ ॥

इहैव प्रोच्यते शुद्धा ऽहिंसा वा तत्वमित्यतः ॥ सम्यक्त्वं दर्शितं सूत्र प्रामाण्योपगमात्मकं ॥ ९ ॥ शुद्धाऽहिंसोक्तितत्सूत्र प्रामाण्यं ततएव च ॥ अहिंसा शुद्धधीरेव मन्योन्याश्रयभीर्न तु ॥ १० ॥

अर्थ ॥ वलीइहां तत्वते अहिंसारूप शुद्धतत्वछे तेतत्वशुद्धाचारप्रमाणे विचारियें तेवारें आत्माने अभिन्नस्वरूपें समकितदेखाडयुंछे ॥ ९ ॥ अने शुद्धिअहिंसाकहीते सूत्रेंप्रमाणछे एबेहुनीमात्रवचनेजजुदाइछे तेमाटेएकअहिंसा तथाबीजीतत्वशुद्धि एबेहुने माहोमाहें मेलवतां दूषणनथी एकस्वरूपेंछे ॥ १० ॥

नैव यस्मादहिंसायां सर्वेषामेकवाक्यता ॥ तच्छुद्धतावबोधश्च संभवादिविचारणात् ॥ ११ ॥ यथा ऽहिंसादयः पंच व्रत धर्म यमादिभिः ॥ पदैः कुशलधर्माद्यैः कथ्यंते स्वस्वदर्शने ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ केमके अहिंसानेविषे सर्वनी एकवाक्यतानथी तोपणविचारीजोता शुद्धअवबोध जणायछे ॥ ११ ॥ जेमअहिंसादिक पांचव्रततेधर्मछे तेमसर्वपोतपोताना दर्शननेविषे कुशलथकाधर्मआदेदेइ यमादिकपदेंकरीने व्रतकहेछे ॥ १२ ॥

प्राहुर्भागवतास्तत्र व्रतोपव्रतपंचकान् ॥ यमांश्च नियमान् पाशुपतान् धर्मान् दशाभ्यधुः ॥ १३ ॥ अहिंसा सत्यवचन मस्तैन्यं वा प्यकल्पना ॥ ब्रह्मचर्यं तथा क्रोधो ह्यार्जवं शौचमेव च ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ तेमांभागवतवाला एमबोलेछे के पांचव्रतअने पांचउपव्रत मलीनेदसछे एमपाशुपतमतवाला दसप्रकारें धर्मदिशा मानेछे तेयमनियमादिक दस कही

अर्थ ॥ माटेआंजवमां पाम्याजेसुखजोग तेतजवानही अने अवताजवमां सुख पामसुं एवीवांछनकरवी केमके पंचनूतनुंपुतलुं बलीनेराखथशे एटलेपरजवनी इछा सर्वफोगटजशे ॥ १५ ॥ एरीतेंचार्वाक दर्शननुमतकह्युं पणएदर्शनखोटुंछे केमके प्रत्यक्षपणे संशयादिकजेगुण तेजीवनेछे माटेजीवप्रत्यक्ष अनेदपणेछे ॥ १६ ॥

नचाहंप्रत्ययादीनां शरीरस्यैव धर्म्मता ॥ नेत्रादिग्राह्यतापत्ते
र्नियतं गौरवादिवत् ॥ १७ ॥ शरीरस्यैव चात्मत्वे नानुभूतस्मृति
र्भवेत् ॥ बालत्वादिदशाभेदा त्तस्यैकस्यानवस्थितेः ॥ १८ ॥

अर्थ॥जेमकोइआदरआपे तेपणआत्माछे तेमअहंकारादिकप्रत्ययजेछे तेआत्माछे तेकांइशरीरनोधर्मनथी अहंकारादिनेत्रमांजणायछे तेदेखवारूपछे ॥१७॥ शरीरनेजो आत्माकहियें तोआत्माजडथयो तेवारेंपूर्वनी अनुजवेलीवात आत्माविनाकोनेसां जरेछे शरीरनेतोसांजरतुंनथी अने बाल यौवनतथावृद्धइत्यादिकजे शरीरनीदशाना जेदछे तेथीआत्मापण बलत्वादि दशावंतथायछे पणनिश्चेनयथी आत्मानीएकदिशा छे अने शरीरनीअवस्था एकनथी केमके अनवस्थितदोषनो प्रसंगछे माटे ॥ १८ ॥

नात्मांगं विगमेप्यस्य तल्लब्धानुस्मृतिर्यतः ॥ व्यये गृहगवाक्ष
स्य तल्लब्धार्थाधिगंतृवत् ॥ १९ ॥ न दोषकारणात्कार्ये वासना
संभ्रमाच्च न ॥ भ्रूणस्य स्मरणापत्ते रंबानुभवसंक्रमात् ॥ २० ॥

अर्थ॥शरीरनोतोनाशथाय अनेआत्मापरजवमांजाय पणजातिस्मरणेकरी पूर्वजन्मादिकनुं स्मरणछे जेमघरनागोखमांबेशीने नगरनापदार्थदीठा अने पछीतेगोखप डीगयो तोपणजोयानुं स्मरणजतुनथी॥ १९ ॥ कारणथकी बाल्यावस्थानी वासना ना संक्रमणथकी जेकार्यआत्माकरेछे तेकार्यनी जोस्मृतिनरही तोपण तेनेदूषण नथी जेममातायें पोतानाअनुभवना संक्रमणथकी बालकनेबोलवुं चालवुं सीख्युं होय तेनीबालकने स्मृतिनहोय तेहनीपरेंजाणवुं ॥ २० ॥

नोपादानादुपादेय वासना स्थैर्यदर्शने ॥ करादेरतथात्वेन यो
ग्यत्वात्परमाणुस्थितौ ॥ २१ ॥ मद्यांगेभ्यो मदव्यक्ति रपिनो मेल
कंविना॥ ज्ञानव्यक्तिस्तथा भाव्याऽन्यथा सा सर्वदा भवेत् ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ उपादाननायोगेंकरी स्थिरतानादर्शननेविषे उपादानवासनानहोय जेमहस्तादिकजेछेते उपादेयछे अने तेनुंउपादानते हस्तादिकनुं परमाणुछे माटे

प्रसिद्धानि प्रमाणानि व्यवहारश्च तत्कृतः ॥ प्रमाणलक्षणस्यो
क्तौ ज्ञायते न प्रयोजनं ॥२३॥ तत्रात्मा नित्यएवेति येषामेकांत
दर्शनं ॥ हिंसादयः कथं तेषां कथमप्यात्मनोव्ययात् ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ अनेचारप्रमाणतो प्रसिद्धछे व्यवहारपणतेजकरवोछे माटेप्रमाण तथा लक्षणनीयुक्तीविषे प्रयोजनजणातुंनथी ॥ २३ ॥ तेमध्येबेनयेंकरी आत्मानित्यजछे एवुंएकांतमतवालानुं कहेवुंछे तेनेमततेतोहिंसादिकनथी केमके आत्माअविनाशीछे तेकोइवारेंमरेनही अनेमरेनही तेवारेंहिंसापणशानी ॥ २४ ॥

मनोयोगविशेषस्य ध्वंसोमरणमात्मनः॥ हिंसा तच्चेन्न तत्तस्य
सिद्धंराधंसमाजतः॥२५॥ नैति बुद्धिगता दुःखो त्पादरूपेयमौ
चिती ॥ पुंसि भेदाग्रहात्तस्याः परमार्थोऽव्यवस्थितः॥ २६॥

अर्थ ॥ सघलेमरणे मनोयोगनाशपामेछे तेवारेंलोककहेछेके जीवमुवो पण आत्मातो मरतोनथी माटेतत्त्वथकी आत्मानीहिंसानथी एअर्थघटमानछे एमकहेछे ॥ २५ ॥ कोइजाणशेजे आगल दुःखउपजावानीजेबुद्धितेहनेहिंसाकहियें पणएवात योग्यनथी केमकेतमे बुद्धिनेतो पुरुषभेदआग्रहथकी आत्माथीभिन्नमानोछो तेथी पण आत्मानीहिंसानथइ केमकेपरमार्थें बुद्धिने आत्मासाथें व्यवस्थानथी ॥ २६ ॥

न च हिंसापदं नाशपर्यायं कथमप्यहो ॥ जीवस्यैकांतनित्यत्वे
नुभवाबाधकं भवेत् ॥ २७ ॥ शरीरेणापि संबंधो न तद्योगावि
वेचनात्॥विभुत्वेनैव संसारः कल्पितः स्यादसंशयं ॥ २८ ॥

अर्थ ॥ एकांतेनित्यपणे जीवनोनाशथवानोजे पर्याय तेहिंसापदकहेवाय तेहने अहोइति आश्चर्य अनुभवअबाधकपणेनहोयसुं होयजइतिकाकोक्ति ॥ २७ ॥ नित्यपणे शरीरेंकरीने पण संबंधनथी केमके तेनायोगनी वेहेंचणनथी माटेसंशयरहितपणें ईश्वरवरुकेंकरीनेज ईश्वरकर्त्ता इत्यादिकसंसारकल्पोछे ॥ २८ ॥

आत्मक्रियां विना च स्या न्मितानुग्रहणं कथं ॥ कथं संयोगभेदा
दि कल्पनाचापि युज्यते ॥ २९॥ अदृष्टाद्देहसंयोगः स्यादन्यत
रकर्म्मजः॥ इत्थं जन्मोपपत्तिश्चे न्न तद्योगविवेचनात् ॥ ३० ॥

अर्थ ॥ एकआत्मक्रियाविना एटले आत्माना व्यापारविना परिमितपरमाणुनुं

यें तोते असत्पदार्थनो निषेधदेखातुंनथी॥ २७॥ माटे संयोगसमवायसामान्य इत्या दिकपदार्थेनुंविशेषपणुं तेनास्तिकमतवाला निषेधकरेछे पणतेसर्वथानिषेधथायनही

शुद्धं व्युत्पत्तिमज्जीवपदं सार्थं घटादिवत्॥तदर्थस्य शरीरं नो पर्यायपदन्नेदतः ॥ २ए ॥ आत्मव्यवस्थितेस्त्याज्यं ततश्चार्वाकदर्शनं ॥ पापाः किलैतदालापाः सद्यापारविरोधिनः ॥ ३० ॥

अर्थ ॥ शामाटेशुद्धनिर्मलएवीव्युत्पत्ति तेजीवप्राणधारणे एवेअर्थेयुक्त एवुंजीव पदसार्थुंछे घटादिकनीपेरेछतुंछे पणनवानवा पर्यायना न्नेदथकी जीवनेमूलअर्थें शरीरनथी ॥ २ए ॥ एरीतें आत्मानुंस्थापनकरीने चार्वाकदर्शननेछांडवुं एदर्शनीसार्थे आलापकरवो तेपणपापरूपछे केमकेएसत्यवादीसार्थे विरोधकारकछे तेथीतजवुं ३०

ज्ञानक्षणावलीरूपो नित्योनात्मेति सौगताः ॥ क्रमाक्रमाभ्यां नित्यत्वे यूज्यतेर्थक्रिया न हि ॥३१॥ स्वन्नावहानितो ध्रौव्यं क्रमेणार्थक्रियाकृतौ॥अक्रमेण च तद्भावे युगपत्सर्वसंन्नवः॥३२॥

अर्थ ॥ हवेबौद्धमतवालाबोल्याके आत्माज्ञानरूपछे पणक्षण आवलीकाप्रमाणे स्थितिछे माटेआत्मानित्यनथी एटलेजीवते क्षणेकमांक्रोधकरे क्षणेकमांमानकरे एमन्निन्नअवस्थाथायछे एकअवस्थानित्यरेतीनथी परंपरायें क्रमअक्रमपणेजो नित्य आत्माकोइवेलायेंहोय तोअर्थक्रियाकलाप घटेनही माटेनित्यआत्मानथी ॥ ३१ ॥ एनोस्वन्नावहणाय तेवारेध्रुवपणुंपामे अनुक्रमे अर्थक्रिया आकृतिनेविषे अक्रमेकरीने तेन्नावनेविषे समकालेंविचारतां सर्वसंन्नवहोय माटेअमारोक्षणिकमतसाचोछयो

क्षणके तु नदोषोस्मिन् कुर्वद्रूपविशेषिते ॥ ध्रुवेक्षणेनुतृष्णाया निवृत्तेश्च गुणोमहान् ॥ ३३ ॥ मिथ्यात्ववृद्धिकृन्नूनं तदेतदपि दर्शनं ॥ क्षणिके कृतहानिर्य त्तथात्मन्यकृतागमः ॥ ३४ ॥

अर्थ ॥ वलीआक्षणिकमतमां दोषनथी केमके नवनवारूपकरेछे पणजेसमयें जेरूपहोय तेसमयेंतेरूपनालक्षणेकरीध्रुवछे तेमांतृष्णानो अनेनिवृत्तिनो मोटोगुणछे जेथीध्रुवतारूप महागुणपामियें एमबौद्धकहेछे ॥ ३३ ॥ एउपरथी खरेखरुं एदर्शन मिथ्यात्वनीवृद्धिकरनारुंछे केमकेआत्मानेक्षणिक माननारनासुकृतनीहाणीथायछे जो कदीपापनकरे तोपणछुगबोलवानुं पापतोपरन्नवेंजोगववुंपडे माटे अकृतागमकहियें ॥ ३४ ॥

घटतेन विनाऽहिंसां सत्यादीन्यपि तत्वतः॥एतस्यावृतिभूतानि तानि यद्भगवान् जगौ॥३७॥ मौनींद्रे च प्रवचने युज्यते सर्वमे व हि॥ नित्यानित्ये स्फुटं देहा भिन्नाभिन्ने तथात्मनि॥ ३८॥

अर्थ ॥ केमकेअहिंसाविना सत्यादिकधर्मपण घटेनहीं अनेसत्यादिक धर्मजेछे ते जीवदयारूपक्षेत्रनी वाडीछे एवुंकेवलीकहेछे ॥ ३७ ॥ जिनशासननेविषे तोएसर्वघट मानछे शरीरथी प्रगटपणेनित्यछे वलीअनित्यपणछे तेमज भिन्नाभिन्नपणुंछे तथा एकपणुंछे अनेअनेकपणुंपणछे वलीआत्मानेविषेपण तेमजकहेवुं ॥ ३८॥

आत्मा द्रव्यार्थतोनित्यः पर्यायार्थोविनश्वरः॥ हिनस्तिहन्यते तत्त त्फलान्यप्यधिगछति ॥ ३९ ॥ इहचानुभवः साक्षी व्यावृ त्यान्वयगोचरः॥ एकांतपक्षपातिन्यो युक्तयस्तु मिथोहताः॥४०॥

अर्थ ॥ आत्माद्रव्यार्थिकनयेंनित्यछे अनेपर्यायार्थिकनयें अनित्यछे एजीवकोइ नेहणेछे अथवा कोइएजीवनेहणेछे तेनाफलपरभवमां आत्माभोगवेछे ॥ ३९॥ए जैननेशीलें अन्वय अनेव्यतिरेक एबेगुणेसहित एवोजेअनुभव तेसाक्षीकरतांथका एकांतमतवालानी युक्तीओ मांहोमांहे हणाइजायछे ॥ ४० ॥

पीडाकर्तृत्वतोदेह व्यापत्या दुष्टभावतः॥ त्रिधा हिंसागमे प्रो क्ता न हीत्थमपहेतुका॥ ४१ ॥ हंतुर्जाग्रति को दोषो हिंसनी यस्य कर्म्मणि ॥ प्रसक्तिस्तदभावे चा न्यत्रापीति मुधावचः ॥४२॥

अर्थ ॥ पीडाकरवाथी देहपीडाथी दुष्टभावथी एवात्रणप्रकारनीहिंसा सिद्धांत मांकहीछे तेकांइजुठीनथी ॥ ४१ ॥ जेप्राणीनु स्वकृतकर्मनो उदयथयेथके मृत्युथ युं तोतेनाहणनारने शोदोषछे एटलेहिंसानथइ अनेजेहणाणो तेनाकर्मउदयआव्या तेतेणेभोगव्यातो तेमांशोहिंसाछे केमकेजेजीवने मरणनोउदयहालनथी तेनेमारियें तोपण तेकांइमरतोनथी माटेहिंसाकोइनीथतीनथी एवुंजेमानेछे तेमिथ्याछे ॥४२॥

हिंस्यकर्म्मविपाकेस्य दुष्टाशयनिमित्तता॥ हिंसकत्वं न तेने दंवैद्यस्य स्याद्रिपोरिव॥४३॥ इत्थं सदुपदेशादे स्तन्निवृत्ति रपि स्फुटा॥सोपक्रमस्य पापस्य नाशात्स्वाशयवृद्धितः॥४४॥

अर्थ ॥ केमकेजेप्राणीनामनमां दुष्टआशयनोनिमित्तछे तेनेएहिंसाछे अनेहिंसा

षे इक्षणनेविषेपण एटलेलोचननेविषेपण उपद्रवमाटे निवृत्तपणेप्रेमनजोइयें जे मग्राह्याकार ज्ञाननेविषेगुणछे तेमआदर्शनमांगुणनथी ॥ ४२ ॥

प्रत्युतानित्यभावे हि स्वतः क्षणजबुद्धिया ॥ हेलनादरतः सर्व क्रियाविफलता भवेत् ॥ ४३ ॥ तस्मादिदमपि त्याज्य मनित्यत्वस्य दर्शनं ॥नित्यसत्यचिदानंद पदसंसर्गमिच्छता ॥ ४४ ॥

अर्थ ॥ उलटोअनित्यभावनेविषेंपण पोताथी क्षणनीबुद्धियेंकरी हेतुनाअनादर थकीसघलीक्रिया निःफलथाय ॥ ४३ ॥ तेमाटेए अनित्यदर्शनपणछोडवुं सदैव नित्यसत्यपणे मुक्तिपदना संसर्गने इछताप्राणीयें जरूरत्यजवुं ॥ ४४ ॥

न कर्त्ता नापि भोक्तात्मा कापिलानां तु दर्शने ॥ जन्मधर्माश्रयो नायं प्रकृतिः परिणामिनी ॥ ४५ ॥ प्रथमः परिणामोस्या बुधिर्द्ध र्माष्टकाऽन्विता ॥ ततोहंकारतन्मात्रें द्रियभूतोदयः क्रमात् ॥४६॥

अर्थ ॥ हवेकपिलदर्शनवाला बोल्याके आत्माकरतानथी तेमभोक्तापणनथी आत्माप्रगटधर्माश्रय वालोनथी मायापरिणामवर्त्तेछे ॥ ४५ ॥ एमायानो प्रथमप रिणाम शुश्रूषा श्रवणंचैवग्रहणंइत्यादिक आठप्रकारनी बुद्धिरूपधर्मेंकरीसहितछे अथवातेथी अहंकारतन्मात्र इंद्रिय पांचभूतोदय एअनुक्रमेजाणवुं ॥ ४६ ॥

चिद्रूपपुरुषोबुद्धेः सिध्यै चैतन्यमानतः ॥ सिद्धिस्तस्या अविषया वच्छेदनियमाश्रितः ॥ ४७ ॥ हेतुलेषु प्रकृत्यर्थें द्रियाणामत्र निर्वृतिः ॥ दृष्टादृष्टविभागाश्च व्यासंगश्च न युज्यते ॥ ४८ ॥

अर्थ ॥ बुद्धिनीसिद्धिनेअर्थें आत्माचिद्रूपछे वलीचैतन्यछेतोपण निश्चयसहित अविछेदपणे तेबुद्धिनीजेसिद्धि तेअविषयीछे ॥ ४७ ॥ हेतुत्वेंकरी आत्मानेप्रकृतिअ र्थनेविषे इंद्रियोना निवृत्तिपणानो दीठाअणदिठाना विभागथी प्रसंगघटतोनथी ॥ ४८

स्वप्ने व्याघ्रादिसंकल्पा न्नरत्वानभिमानतः ॥ अहंकारश्च नियत व्यापारः परिकल्प्यते ॥ ४९ ॥ तन्मात्रादिक्रमस्तस्मा त्प्रपंचो त्पत्तिहेतवे ॥ इत्थंबुद्धिर्जगत्कर्त्री पुत्रषोन विकारभाक् ॥ ५० ॥

अर्थ ॥ जेमस्वप्ननेविषे व्याघ्रादिकना संकल्पथी अनेपुरुषार्थना निरभिमानथी अहंकारनेनिश्चें व्यापाररूपकल्पियेंछियें॥४९॥तेप्रपंचनी उत्पत्तिनाहेतुनेअर्थेतन्मात्रा दिकनो क्रमछे एरीतेंजगतनीकरनारी बुद्धिछेरेछे माटेविकारनोभजनारआत्मानथी

साधूनामप्रमत्तानां सा चाऽहिंसानुबंधिनी ॥ हिंसानुबंधवि
च्छेदा गुणोत्कर्षो यतस्ततः॥५१॥ मुग्धानामियमज्ञत्वात् सानुबं
धा न कर्हिचित्॥ज्ञानोद्रेकाप्रमादाभ्या मस्या यदनुबंधनं॥५२॥

अर्थ ॥ अप्रमत्तसाधु जेसातमांगुणगणावाला तेनेजेहिंसाछे तेअहिंसानुबंधीछे केमके हिंसानोअनुबंध विछेदथयाथकी जिहांतिहांथकी गुणनोउत्कर्षथायछे ५१ पण एअहिंसाते अज्ञानपणे भोलाप्राणीने कदापिकालें सुखदायकनथी एटलेएअनु बंधसहितनथाय पणअप्रमत्त साधुने ज्ञानसहितजेअहिंसा अथवाहिंसाते अनुबंधें अहिंसाजकहियें केमके एपरंपरायें मोक्षसुखनुंकारणछे माटे ॥ ५२ ॥

एकस्यामपि हिंसाया मुक्तं सुमहदंतरं ॥ भाववीर्यादिवैचित्र्या
दहिंसायां च तत्तथा ॥५३ ॥ सद्यः कालांतरे चैत द्विपाकेना
पि भिन्नता ॥ प्रतिपक्षांतरालेन तथा शक्तिनियोगतः ॥ ५४ ॥

अर्थ ॥ एकलीहिंसानेविषें पण जेममोटोअंतर देखाडयोछे तेमभाववीर्यना वैचित्रपणाथकी अहिंसानेविषेपण तेमजजाणवुं ॥५३॥ प्रतिपक्षपणे अंतरालेंकरी अथवातेशक्तिनेयोगेंकरी तत्काल अथवाकालांतरे एविपाकेकरीने पणभिन्नताछे५४

हिंसाप्युत्तरकालीन विशिष्टगुणसंक्रमात् ॥ त्यक्ताविध्यनुबंध
त्वा दहिंसैवातिभक्तितः॥ ५५ ॥ इत्थंभंगशतोपेता ऽहिंसा य
त्रोपवर्ण्यते॥ सर्वांशपरिशुद्धं त त्प्रमाणं जिनशासनं ॥५६॥

अर्थ ॥ जेहिंसाछे तेपणजो उत्तरकालें विशिष्टगुणप्रगटे तथाअविधिनो अनुबं ध तज्यायी एहेतुमाटे अत्यंतभक्तिथकी प्राणीने अहिंसारूपज फलदायकथायछे ॥ ५५ ॥ एरीतेंसेकडागमे भंगजालसहित जिहांअहिंसानेवर्णविये तेतोसर्वांशें शुद्ध एवुंजेजिनशासन तेमांजप्रमाणछे ॥ ५६ ॥

अर्थोयमपरोनर्थ इति निर्धारणं हृदि ॥ आस्तिक्यं परमं चिन्हं
सम्यक्त्वस्य जगुर्जिनाः ॥ ५७ ॥ शमसंवेगनिर्वेदा नुकंपाभिः
परिष्कृतं ॥ दधतामेतदच्छिन्नं सम्यक्त्वं स्थिरतां व्रजेत् ॥५८॥

अर्थ ॥ एहिंसा तेजअर्थछे अनेबीजासर्वेअनर्थछे एप्रकारेंजेना मनमांधारणाछे एहवी परमआस्ताप्रगटे तेआस्ताश्रद्धारूप समकितनुंचिन्हछे एवुंप्रभुयें कह्युंछे ५७

कृतिन्नोगौचबुद्धेश्चे द्वंधो मोक्षश्च नात्मनः॥ ततश्चात्मानमुद्दि
श्य कूटमेतद्यडुच्यते ॥ ५ए ॥ पंचविंशतितत्वज्ञो यत्रतत्रा
श्रमे रतः॥जटी मुंडी शिखी चापि मुच्यते नात्र संशयः॥६०॥

अर्थ ॥ जोकरवुंनोगववुं बुद्धिनेछे तोबंधमोक्षआत्मानेनथी तेपणबुद्धिनेजजोइयें माटेआत्मानेउद्देशीने नहीसमजवामांआवे एरीतेंकूटकरीकहेछे ॥५ए॥ पंचवीसतत्वनोजाणजेपुरुषछे ते कोइपणआश्रममांरतहोय एटलेजटाधरहोय अथवामुंकावे अथवाचोटीरखावे तोपणतेसंदेहविना संसारथीमुकाय एवुंकपिलमतवालाकहेछे

एतस्यचोपचारत्वे मोक्षशास्त्रं वृथाखिलं ॥ अन्यस्य हि विमो
क्षार्थे न कोप्यन्यः प्रवर्तते ॥६१॥ कापिलानां मते तस्मा दस्मि
न्नैवोचिता रतिः॥यत्रानुन्नवसंसिद्धः कर्ता न्नोक्ता च लुप्यते॥६२॥

अर्थ ॥ एरीतें एआत्मानेविषे मोक्षनेउपचरित्वपणें अंगीकारकरसे तेनुंसकल मोक्षशास्त्र फोगटथायछे केमकेकोइने मोक्षआपवा कोइबीजोप्रवर्तथायनही ॥६१॥ जिहांअनुन्नवसिद्ध आत्मानुकर्तापणुं तथानोक्तापणुलोपेछे एटलेमानतानथी तेमाटे एहवा कपिलनामतमां प्रीतिकरवीते ठीकनथी ॥ ६२ ॥

नास्तिनिर्वाणमित्याहु रात्मनः केप्यबंधतः ॥ प्राक्पश्चाद्युगप
द्वापि कर्म्मबंधाव्यवस्थितेः ॥६३॥ अनादिर्यदि संबंध इष्यते
जीवकर्मणोः॥तदानंत्यान्न मोक्षः स्या त्तदात्माकाशयोगवत्॥६४॥

अर्थ॥केटलाकअबंधमतवालाछे तेएमकहेछेके आत्माने मोक्षनिर्वाणनथीकेमके प्रथमकेअथवापछी समकालें आत्माने कर्मबंधनथी तोमुक्तिशेनीहोय ॥६३॥जोजीवने तथाकर्मने अनादिसंबंधमानियें तोआदिनही तिहांअंतपणकेमथाय माटेअनंतपणानाप्रसंगथी कोइकालेंमोक्षनथायजेमआत्माथके आकाशयोग कदापिन्निन्ननथाय

तदेतदत्यसंबद्धं यन्मिथोहेतुकार्ययोः ॥ संतानानादिता बीजां
कुरवत् देहकर्मणोः॥६५॥ कर्त्ता कर्मान्वितो देहे जीवः कर्मणिदेह
युक् ॥ क्रियाफलोपन्नुक्तत्वे दंमान्वितकुलालवत् ॥ ६६ ॥

अर्थ ॥ एहवुंबोलेछे एवचनपणजुठुंछे केमके कारणकार्यनेमाहोमांहे संबंधछे जेमपुत्रपौत्रादिकनो अनादिसंबंधथायछे तेबीजनाअंकुरानीपेरेंछे तेमजशरीरनेत

पद्वारें निश्चयअर्थनीप्राप्ति कृपरूपव्यवहारकेदेवाय ॥ ७ ॥ जेनेकेवळव्यवहारने विषेज प्रधानपणुछे तोतेनेनिश्चैनयमांकेमहोय वळीशब्दनयअने ज्ञाननयरूपप्राणी ने स्वअर्थनेपरअर्थ बेतुल्यछे जेशब्दतेव्यवहारछे अनेज्ञानतेनिश्चयछे ॥ ८ ॥

प्राधान्याद्व्यवहारस्य तत्समुच्छेदकारिणां ॥ मिथ्यात्वरूपतैते
षां पदानां परिकीर्त्तिता ॥ ए ॥ नास्त्येवात्मेति चार्वाकः प्र
त्यक्षानुपलंभतः॥अहंताव्यपदेशस्य शरीरेणोपपत्तितः॥१०॥

अर्थ ॥ जेव्यवहारनाप्रधानपणाथकी सर्वनोउच्छेदथाय तेवाप्राणीने मिथ्यातरूप उपदमां मिथ्यात्वनावथयो एमजाणवुं ॥ ए ॥ चार्वाकदर्शनवाळाकहेछे जेआत्मा नथी केमकेजो आत्माहोयतो प्रत्यक्षजणाय तेतोकांइजणातोनथी अने अहंकार एटलेआकार्यहुंकरुंबुंतेनोजे व्यपदेशछे तेतोशरीरें करीनेजणायछे ॥ १० ॥

मद्यांगेभ्योमद व्यक्तिः प्रत्येकमसती यथा॥मिलितेभ्योहि भूतेभ्यो
ज्ञानव्यक्तिस्तथा मता ॥११॥ राजरंकादि वैचित्र्य मपि नात्मबला
हितं ॥ स्वाभाविकस्य भेदस्य ग्रावादिष्वपि दर्शनात्॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जेममहुडातथापाणीप्रमुख मदिरानाअंगछे पणतेप्रत्येकमां मदिरानीश क्तिनथी जेवारेंभेगांमळे तेवारेंजशक्तिप्रगटे तेमपंचभूतभेगांमळेंतेवारें ज्ञानशक्तिप्रग टथायछे ॥ ११ ॥ जेमएकशल्याअथवा एककांकरोएसर्वे पथरानाभेदछे तेमआ राजाछे आरांकछे एवुंविचित्रपणुंतेआत्मानथी एतोस्वभावेंभेदपडयांछे ॥ १२ ॥

वाक्यैर्न गम्यते चात्मा परस्परविरोधिभिः॥ दृष्टवान्न च कोप्ये
नं प्रमाणं यद्वचोभवेत् ॥१३॥ आत्मानं परलोकं च क्रियां च वि
विधां वदन् ॥ भोगेभ्योभ्रंशयत्युच्चै र्लोकचित्तं प्रतारकः॥ १४ ॥

अर्थ ॥ वळीसर्वे मतवाळाना माहोमाहें विरोधीवचनहोवाथी आत्मानीप्रती तिनथीथती केमके कोइयेंआत्मादीठोनथी के जेथकी एकेनुंवचन प्रमाणथाय १३ आत्माने परलोकने अर्थें एमविचित्रप्रकारनीक्रियाकरावेछे एहवुंकहेनारा बीचाराळो कने सुखभोगथीभ्रष्टकरेछे एम जेलोकोनाचित्तने फेरवेछे तेधूर्त्तगुरुजाणवा ॥ १४ ॥

त्याज्यास्तन्नैहिकाः कामाः कार्या नानागतस्पृहा॥ भस्मीभूतेषु
भूतेषु वृथा प्रत्यागतिस्पृहा ॥ १५ ॥ तदेतद्दर्शनं मिथ्या जीवप्र
त्यक्ष एव यत् ॥ गुणानां संशयादीनां प्रत्यक्षाणामभेदतः॥१६॥

अमेएमकहेता नथीके सघलाजव्यजीवो सिद्धिपामे पणजेसिद्धिवरे तेनेनिश्चय ज व्यकहियें एअमारोमतछे ॥ ७२ ॥

ननु मोक्षेपि जन्यत्वा द्विनाशिनी जवस्थितिः ॥ नैव प्रध्वंसवत्त स्या निधनत्वव्यवस्थितेः ॥ ७३ ॥ आकाशस्येव वैविक्ता मुद्गरादे घटक्षये ॥ ज्ञानादेः कर्मणोनाशो नात्मनो जायते ऽधिकं ॥ ७४ ॥

अर्थ ॥ मोक्षनेविषे प्रगटथवापणुनथी माटेजव्यस्थिति नाशवंतीछे पणमो क्षमां अनंतपणानी स्थितिछे माटेमुक्तीनोनाशनथी ॥ ७३ ॥ जेममोगरेंकरी घडो जांग्यो अनेघमानेक्षयें आकाशछुटुथयुं पणवध्युंनही तेमज्ञानथी कर्मनोनाशथाय पण आत्माअधिकथायनही ॥ ७४ ॥

नच कर्माणुसंबंधा न्मुक्तस्यापि न मुक्तता ॥ योगानां बंधहेतूना मपुनर्जवसंजवात् ॥ ७५ ॥ सुखसत्तारतम्येन प्रकर्षस्यापि सं जवात् ॥ अनंतसुखसंवित्ति र्मोक्षः सिध्यति निर्जयः ॥ ७६ ॥

अर्थ ॥ जिहांमूलथीजकर्मपरमाणुनो संबंधनथी अनेजेमूकाणा तेनेकांइमुकाववा पणुनथी तथामिथ्यात अविरत कषाय योग एचारबंधहेतुनायोगछे तेतुं फरीथवापणुन थीतेहनेसिद्धिकहियें ॥ ७५ ॥ सुखनुंतारतम्य तथाज्ञाननीउत्कृष्टता प्रगटथयेथी एट लेअनंतसुखजाणवाथी निर्जयपणेजे सिद्धिवरे तेनुंनाममोक्षकहियें ॥ ७६ ॥

वचनं नास्तिकाजाना मात्मसत्तानिषेधकं ॥ भ्रांतानां तेन नादे यं परमार्थगवेषिणा ॥ ७७ ॥ न मोक्षोपायइत्याहु रपरे नास्तिको पमाः ॥ कार्यमस्ति न हेतुश्चे त्येषां तेषां कदर्थना ॥ ७८ ॥

अर्थ ॥ माटे नास्तिकमतवालाना वचन आत्मसत्ताना निषेधकछे तेभ्रमचित्तवा लायें आदरवानही अथवानास्तिकमतवालाना जयनावचनछे एमजाणीआदरवान ही जेपरमार्थनो गवेषकहोय तेणेछांमवा ॥ ७७ ॥ हवेवलीबीजा नास्तिकमतने मलताज मतवालाछे तेनुंकेवुं एमछे के मोक्षनोउपायनथी एटलेकार्यजेमोक्षतेतो छे पणतेनुंकारणजे उपाय तेनथी एममानेछे तेमनेपण विटंबनाछे ॥ ७८ ॥

अकस्मादेव जवती त्यलीकं नियतावधेः ॥ कदाचित्कस्य दृष्ट त्वा द्वजाषे तार्किकोप्यदः ॥ ७९ ॥ हेतुजूतनिषेधानां स्वानुपा ख्यविधिर्न च ॥ स्वजाववर्णना नैव मवधेर्नियतत्वतः ॥ ८० ॥

परमाणुरूप सूक्ष्मस्थितिमां स्थिरदर्शन नसंभवे ॥ २१ ॥ जेममदिरानाअंगथकी मदशक्तिप्रगटपणेनथी जेगेमलवेथायछे अथवापीधापछे आत्मानेसंयोगेंथायछे तेम ज्ञाननीप्रगटतापण आत्मानेयोगेंथायछे नहीतोसदाय एकलुं ज्ञानरह्युंजोइयें ॥२२॥

राजरंकादिवैचित्र्य मप्यात्मकृतकर्मजं ॥ सुखदुःखादिसंवित्ति विशेषो नान्यथा भवेत् ॥ २३ ॥ आगमाद्गम्यते चात्मा दृष्टेष्टा र्थाविरोधिनः ॥ तद्वक्ता सर्वविच्चैनं दृष्टवान्वीतकल्मषः ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ आराजाछे अने आरांकछे एवोजीवनेविचित्रभावउपजेछे एवीलोकवा णीछे तेसर्वपोताना कीधेलाकर्मथकी जाणवी सुखदुःखसर्वकर्मथकी प्रगटथायछे अन्यथाबीजुं विशेषकारणकांइनथी ॥ २३ ॥ जेदृष्टियेंदीठुं तेप्रत्यक्षप्रमाण अनेइष्टा र्थतेअनुमानप्रमाण तथा उपमाप्रमाण ते अनुमानमांभलेछे माटेएत्रणप्रमाणने अ विरोधिएहवुंजे आगमप्रमाण तेणेकरी आत्मानेजाण्योजायछे तेआगमतो जेनास र्वपापगयांछे एहवासर्वज्ञदेवें देखाड्युंछे ॥ २४ ॥

अभ्रांतानां च विफला नामुष्मिक्यः प्रवृत्तयः॥ परबंधनहेतोः कः स्वात्मानमवसादयेत् ॥२५॥ सिद्धिः स्यात्एवादिवद्व्यक्ता संशयादे व चात्मनः ॥ असौ खरविषाणादौ वस्तार्थविषयः पुनः ॥२६॥

अर्थ ॥ अभ्रांतजे ज्ञानीपुरुष तेनेहमणानीप्रवृत्तिते निःफलतानहोय माटे पर बंधननाहेतुयेंकरी पोतानीआत्माने कोणखेदमांनाखे ॥ २५ ॥ आत्मानीप्रगटपणे संशयथीसिद्धिछे एवीवाततोवगडामां जाडनाठुंठाजेवी देखाय पणसंशयकरताथका जेखरुंवृक्षते नजणाय तेमज संशयवडे आत्मानेनजाणियें अनेजेविपरीतअर्थें आ त्माने माने तेनेगधडाने शिंगडामाननारजेवुंसमजवो ॥ २६ ॥

अजीवइति शब्दस्य जीवसत्तानियंत्रिता ॥ असतोन निषेधोय त्संयोगादिनिषेधनात् ॥ २७ ॥ संयोगः समवायश्च सामान्यं च विशिष्टता ॥ निषिध्यते पदार्थानां तएव नतु सर्वथा ॥ २८ ॥

अर्थ ॥ अजीवशब्दमां जीवशब्दनीसत्तावलगेलीछे पणनिषेधअछतोछे जेथी ना स्तिकमतवाला संयोग समवाय अनेसामान्य तथा विशेषने निषेधेछे तेपणसर्वथा पणे वस्तुस्वरूपने निषेधिशकतानथी केमके संयोगसमवाय अने समान्यनही मा नवाथकी पणअजीवशब्दबोलवुं तेयद्यपिअजीवपदार्थसतछे तथापिशब्दअसत्मानि

तथाऽभव्यतयाक्षेपा द्गुणा न च न हेतवः॥अन्योन्य सहकारित्वात्
दंडचक्रभ्रमादिवत् ॥ ८७ ॥ ज्ञानदर्शनचारित्रा एयुपायास्त
भवक्षये॥अतन्निषेधकं वाक्यं त्याज्यं मिथ्यात्ववृद्धिकृत् ॥ ८८॥

अर्थ ॥ तेमभव्यपणानातिरस्कारथकी पुनर्हेतुभूत गुणनहोय केमके परस्पर सहकारीछे माटे दंडचक्रभ्रमणनीपेरें भव्यतापणे ज्ञानादिक गुणप्रगटथाय तेगुण मोक्षनाहेतुछे एउत्तरकह्योछे ॥ ८७ ॥ माटेसंसारनाक्षयरूपजेउपाय तेज्ञानदर्शन अनेचारित्रछे तेनोजेनिषेधकरे अने मिथ्यातनीवृद्धिकरे तेनुंवचनत्यागकरवुं ॥ ८८ ॥

मिथ्यात्वस्य पदान्येता न्युत्सृज्योत्तमधीधनः ॥
भावयेत्प्रातिलोम्येन सम्यक्त्वस्य पदानि षट् ॥८९॥

अर्थ ॥ एपूर्वेकह्याजे सर्वशास्त्रना मतवाद तेमिथ्यातनाठेकाणाछे तेनेछांमीने बुद्धिरूपधनतुं ग्रहणकरीने मिथ्यातनेप्रतिकूलपणेजे समकितना छपदछेतेनेभाववां ॥ ८९ ॥ इति मिथ्यात्वत्यागाधिकारः त्रयोदशःसमाप्तः

---

मिथ्यात्वदावानलनीरवाह मसद्ग्रहत्यागमुदाहरंति ॥
अतोरतिस्तत्र बुधैर्विधेया विशुद्धभावैः श्रुतसारवद्भिः॥१॥

अर्थ॥मिथ्यातरूप जेदावानल तेनेसमाववाने मेघसमान एहवोमिथ्यात्व कदाग्रहरूपप्रसारनो त्यागपंडितेंकह्योछे जेकदाग्रहनात्यागनेविषेरतिकरवी तेतोजेपंमितहोय वलीशुद्धताभाववालोहोय अनेसिद्धांतनासारनो जाणहोयतेमणेकदाग्रहने छांमवो

असद्ग्रहाग्निज्वलितं यदंतः क्व तत्र तत्वव्यवसायवल्लिः॥
प्रशांतिपुष्पाणि हितोपदेशं फलानि चान्यत्र गवेषयंतु॥२॥

अर्थ ॥ जेनुंअंतःकरण अछतापदार्थना कदाग्रहरूप अग्नियेंबल्युंछे तेनाहृदयमां तत्वव्यापाररूप वेलीकेमकरीउगे ? अनेसमतारूपफुल केमफुटे तथाहितउपदेशरूप फलक्यांथीहोय तेमाटे कदाग्रहनेतजीने बीजेठेकाणे तत्वनीखोल करवी ॥२॥

अधीत्य किंचिच्च निशम्य किंचि दसद्ग्रहात्पंडितमानिनोये॥
मुखं मुखं चुंबितमस्तु वाचो लीलारहस्यं तु न तैर्जगाहे॥ ३ ॥

अर्थ ॥ कांइकभणीने तथा कांइकशास्त्रसांभलीने आत्मानेपंडितपणुं मानता

एकद्रव्यान्वयाद्भावा वासनासंक्रमश्च न॥पौर्वापर्य्यं हि भावानां सर्वत्रातिप्रसक्तिमत् ॥ ३५ ॥ कुर्वद्रूपविशेषे च न प्रवृत्तिर्नवाऽनुमा ॥ अनिश्चयान्न वाध्यक्षं तथा चोदयतोजगौ ॥ ३६ ॥

अर्थ ॥ जेमएकद्रव्यनुं सापेक्षपणे एकभावनथी माटेवासनानुं संक्रमणनथाय अनेभावनुं पूर्वापरपणुसर्वत्रशक्तिरूपें परिणमेछे ॥ ३५ ॥ रूपविशेषकरताछतां प्रवृत्तिकरवी अथवा वारवीतेतोनही पणक्षणिकमतवालायेंतो अनिश्चयथकी आत्मा नेछदयथी क्षणिकपणुकह्युंछे ॥ ३६ ॥

न वैजात्यं विना तत् स्या न्नतस्मिन्ननुमा भवेत्॥विना तेन न तत्सिद्धिर्नाध्यक्षं निश्चयं विना ॥३७॥ एकतः प्रत्यभिज्ञानं क्षणिकत्वं च बाधते ॥ योऽहमन्वभवं सोऽहं स्मरामीत्यवधारणात् ॥ ३८ ॥

अर्थ ॥ विजातीविना तेनहोय एमांकांइअनुमान घटतुंनथी केमकेतेविना तेनी सिद्धिपणनथी निश्चयविना प्रत्यक्षज्ञानपणनथीयातुं ॥ ३७ ॥ तथाहुंआअनुभवुंछुं तेहुंसंभारुंछुं एअवधारणथकी आत्माने त्रैकालिक एकताज्ञान तेक्षणिकपणे बाधकारी थायछे ॥ ३८ ॥

नास्मिन्विषयबाधोयत् क्षणिकेपि यथैकता ॥ नानाज्ञानान्वये तद्वत् स्थिरे नानाक्षणान्वये ॥ ३९ ॥ नानाकार्यैक्यकरण स्वाभाव्ये च विरुध्यते॥ स्याद्वादसन्निवेशेन नित्यान्वर्थक्रिया न हि ४०

अर्थ ॥ एनित्यात्मानामतवडे विषयबाधकपणुं नहोय क्षणिकमतनेविषेपण एमजजेम ज्ञानान्वयें एकत्वतापणुछे तेमस्थिरआत्मानेविषे नानाक्षणनेसंयोगें एकताजाणवी ॥ ३९ ॥ बहुकार्यना एकीकरणस्वभावने अंगीकारकरेछते विरोधपडेछे अनेस्याद्वादशैली थापनाकरवाथी नित्यापेक्षपणे अर्थक्रिया विरोधपामतीनथी केमके बेहुनयें प्रकृतिअर्थ अनुसरेछेमाटे ॥ ४० ॥

नीलादावप्यतभेद शक्तयः सुवचाः कथं ॥ परेणापि हि नानैक स्वभावोपगमं विना ॥ ४१ ॥ ध्रुवे क्षणेपि न प्रेम निवृत्तमनुपप्लवात् ॥ ग्राह्याकारइव ज्ञाने गुणस्तन्मात्र दर्शने ॥ ४२ ॥

अर्थ ॥ नीलादिवर्णनेविषे भेदशक्तिनहोय एमसुखेकेम केवाय परपुजलवमेकरीनेपण एकस्वभावने टाल्याविना नानाविधपणु संभवेनही ॥ ४१ ॥ ध्रुवतापणानेवि

स्थालं स्वबुद्धिः सुगुरोश्च दातु रुपस्थिता काचन मोदकाली॥ अ
सद्ग्रहः कोपि गले ग्रहीत स्तथापि नोक्तुं न ददाति डुष्टः ॥ ए॥

अर्थ ॥ पोतानीबुद्धिरूप थालमांकांइक शुद्धज्ञानरूप मोदकने गुरु पीरसवाऊव्या पणकदाग्रहेंआवी गळुंपकड्युं तेथीजमायुनही एवोकदाग्रहडुष्टछे ॥ ए ॥

गुरुप्रसादिक्रियमाणमर्थं गृह्णाति नासद्ग्रहवांस्ततः किं ॥
द्राक्षा हि साक्षाडुपनीयमाना क्रमलेकः कंटकनुङ् न नुंक्ते॥१०॥

अर्थ ॥ जोगुरुप्रसन्नथइने अर्थउपदेशआपेछे तोपणकदाग्रहीपुरुष तेउपदेशनेग्रहतोनथी तेथीशुथयुं उपदेशतोकांइखोटोनथी एतोजेमप्रगटपणे मीठीद्राक्षऊंट आगळमुकियें तोपणतेनेतजीनेऊंट कांटानेखायछे ॥ १० ॥

असद्ग्रहात्पामरसंगतिं ये कुर्वंति तेषां न रतिर्बुधेषु ॥ वि
ष्ठासु पुष्टाः किल वायसा नो मिष्टान्ननिष्ठा प्रसन्नं नवंति॥११॥

अर्थ ॥ जेप्राणीकदाग्रहेंकरी मूर्खनीसंगतकरेछे तेनेपंमितनीसोबत गमतीनथी जेमकागडा विष्ठानाजोगीछे तेनेमधुरअहारनीइछाथतीनथी तेनीपेरें ॥ ११ ॥

नियोजयत्येव मतिं न युक्तौ युक्तिं नमो यः प्रसन्नं नियुक्ते॥अस
द्ग्रहादेव न कस्य हास्यो जले घटारोपणमादधानः ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जेमकोइमूर्ख नदीनाजळउपर घमोनरीनेमुके तेनेजोइने कोणहंशेनही केमके अगाधनिर्मळजळना विस्तारआगळ एकतुछमात्रजळेंनरेलोघडो तेशीगणती मांछे तेमगुरुनामुखथी शास्त्रयुक्तिसांनळीने तेमांपोतानी मतिजोडेनही अनेपोतानीयुक्तिवडे उलटुंबोले जेतमारीयुक्तीने नमस्कारहोजो एवाकदाग्रहीनेदेखी कोणहांसीनकरे इहां गुरुनोउपदेशतेनदीनाजळतुल्यछे तेनाआगळकदाग्रहीघट केमनिनें

असद्ग्रहो यस्य गतो न नाशं न दीयमानं श्रुतमस्य शस्यं॥न
नाम वैकल्पकलंकितस्य प्रौढा प्रदातुं घटते नृपश्रीः ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ जेमकोइघेलाआदमीने महोटीराज्यलक्ष्मी आपवीघटेनही तेमजेहनेकदाग्रहगयोनथी तेवाप्राणीने धर्मोपदेश आपवोयोग्यनथी ॥ १३ ॥

आमे घटे वारि घृतं यथा स धिनाशयेत्सं च घंट च सद्यः॥अस
द्ग्रहग्रस्तमतेस्तथैव श्रुतात्प्रदत्ताडुनयोर्विनाशः ॥ १४ ॥

पुरुषार्थोपरागौद्वौ व्यापरावेशएव च ॥ अत्रांशोवेद्म्यहं वस्तुं करोमीति च धीस्वतः ॥ ५१ ॥ चेतनोहं करोमीति बुद्धेर्नेदाग्रहात्मयः ॥ एतन्नाशे ऽनवच्छिन्नं चैतन्यं मोक्ष इष्यते ॥ ५२ ॥

अर्थ ॥ सर्वप्रवृत्तिव्यापारनेविषे एकपुरुषार्थअने बीजोउपराग एबेव्यापारजछेते तेवारें हुंअंशेंजाणुंछुं हुंवस्तुकरूंछुं एवीकदाग्रीबुद्धिथायछे ॥५१॥ हुंचेतनछुं हुंकरूंछुं एवोगर्वबुद्धिनाहेतुथी प्रगटेछे एवागर्वनोनाशकरी स्वभावेरहुं चैतन्यपणुमुक्तिनेपामेछे

कर्तृबुद्धिगते दुःख सुखे पुंस्युपचारतः ॥ नरनाथे यथा भृत्यगतौ जयपराजयौ ॥ ५३ ॥ कर्ता भोक्ता च नोतस्मा दात्मा नित्यो निरंजनः ॥ अध्यात्मादन्यथाबुद्धि स्तदाचोक्तं महात्मना ॥५४॥

अर्थ ॥ आत्मानेविषे दुःखसुखपामवुं एहवीकर्त्तापणानाबुद्धिजेथायछे तेउपचारथीछे जेमसेवकनोजय अथवा पराजयते राजाहोवाथीजणायछे ॥ ५३ ॥ इत्यादिकमाटे आत्माकर्त्ताभोक्तानथी पणनित्यनिरंजनछे अनेजेबुद्धिछेतेतो अध्यात्मथी जुदीछे एवुंमहात्माकपिलमुनियें कहेलुंछे ॥ ५४ ॥

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वथा ॥ अहंकारविमूढात्मा कर्त्ताहमिति मन्यते ॥ ५५ ॥ विचार्य्यमाणं नोचारु तदेतदपि दर्शनं ॥ कृतिचैतन्ययोर्व्यक्तं सामानाधिकरण्यतः ॥ ५६ ॥

अर्थ ॥ प्रकृतिनागुणेकरी क्रियमाणजेकर्म तेनोहुंकर्त्ताछुं एमसर्वप्रकारें अहंकारें मूढआत्मामानेछे ॥ ५५ ॥ एवोविचारकरेथी एदर्शनपणरूडुंनथी केमकेप्रगटबुद्धि प्रकृतिअनेचैतन्यनो सामानाधिकरणें विचारकरतांरूडुंनथीजणातु ॥ ५६ ॥

बुद्धिः कर्त्रीच भोक्त्रीच नित्याचेन्नास्ति निर्वृतिः ॥ अनित्या चेन्न संसारः प्राग्धर्मादेरयोगतः ॥ ५७ ॥ प्रकृतावेव धर्मादिस्वीकारे बुद्धिरेव का ॥ सुवचश्चघटादौस्या दीदृग् धर्म्मान्वयस्तथा ॥ ५८ ॥

अर्थ ॥ वलीतमेजो कर्ता भोक्तापणे बुद्धिमानशोपणजोतेबुद्धिनित्यछेतो मोक्ष नथी एटलेमोक्षतेरसेनही अनेजोबुद्धिने अनित्यमानशोतो पूर्वधर्मनाअयोग्यथकी संसारतेरहेनही ॥ ५७ ॥ प्रकृतिनेविषेधर्मादिकने अंगीकारकीधाथी बुद्धिनेशुंकेहवी जोइयें अनेघटादिकनेविषेएवाधर्मनो अन्वयतेसुखेकहेवो इतितर्कवादः ॥ ५८ ॥

अर्थ ॥ जेमकेजनुंवृक्षतेकंथेरादिक वृक्षनेसंगे कांटायेंकरीकोरायछे तेमजेप्राणीक दाग्रहीसार्थेनिजरीतें मित्राइकरेते अंतेडःखनाविपाक पामेछे ॥ १९ ॥

विद्या विवेको विनयो विशुद्धिः सिद्धांतवात्सल्य मुदारता च॥
असद्ग्रहाद्याति विनाशमेते गुणास्तृणानीव कणाद्दवाग्नेः॥ २० ॥

अर्थ ॥ जेमअग्नीथी घासनासमूह नस्मनूत थायछे तेमविद्याविनय विवेक शुद्धि अने सिद्धांतउपर वत्सलतापणु गंनीरता एसर्वे कदाग्रहथीनाश पामेछे॥२०॥

स्वार्थः प्रियो नो गुणवांस्तु कश्चि न्मूढेषु मैत्री न तु तत्ववित्सु॥असद्ग्रहापादितविभ्रमाणां स्थितिः किलासावधमाधमानां ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ जेकदाग्रहीनी सोबतेरह्या तेने स्वार्थप्रियनहीते प्राणीअवगुणवंत मूर्ख सार्थेमित्राइकरे अने पंडितसार्थे मित्राइकरेनही एवाकदाग्रहीनी सोबतेंरह्या जेअ धममाअधम नीचप्राणी तेहनीएस्थितिछे तेकही ॥ २१ ॥

इदंविदंस्तत्वमुदारबुद्धि रसद्ग्रहं यस्तृणवज्जहाति ॥ जहाति नैनं कुलजेव योषि द्गुणानुरक्ता दयिता यशःश्रीः॥२२॥

अर्थ ॥ एमजाणीने तत्वनेओलखनार मोटीबुद्धिवालाप्राणी कदाग्रहने तृणष त्नानीपेठेछांडें तेने जेम कुलवंतीस्त्री नरतारने त्यजतीनथी तेमगुणरागीएवीजे यश किर्त्ति रूप लक्ष्मीतद्रूपस्त्रीयो छांडतीनथी॥ २२ ॥ इतिकदाग्रहत्यागाधिकारचतुर्दश

इति महोपाध्याय श्रीयशोविजयगणि विरचितेअध्यात्मसार प्रकरणे चतुर्थःप्रबंधः बारमांअधिकारमां ५० तेरमां ना ७९ चउमाना २२ सर्वमली १६९ काव्यथया

असद्ग्रहव्ययाद्वांत मिथ्यात्वविषयीप्रुषः ॥ सम्यक्त्वशालिनो ध्यात्म शुद्धे योगः प्रसिद्ध्यति ॥ १ ॥ कर्मज्ञानविभेदेन स द्विधा तत्र चादिमः॥ आवश्यकादिविहितः क्रियारूपः प्रकीर्त्तितः॥२॥

अर्थ ॥ हवेकदाग्रहनानाशथी मिथ्यातरूपअंधकारनो विषयगयोछे जेमांथीएह वासमकेतेंकरी उज्वलअंतःकरणथयांछे जेहना एहवाजेप्राणी तेमने अध्यात्मनीशु

थाकर्मनोपणअनादिसंबंधछे ॥ ६५॥ कर्मसहितजीव कर्त्तापणेदेहमांरह्योछे एवुंजेकहे छेतेपणजुतुंछे जेमदंडसहितकुंजारनीपरें क्रियानोफलजोगवे तेपण असंबंधछेतेनीपरे

अनादिसंततेर्नाशः स्याद्बीजांकुरयोरिव ॥ कुकुम्यंम्मकयोः स्वर्ण मलयोरिव चीनयोः॥ ६७ ॥ नवेषु च व्यवस्थेयं संबंधोजीवकर्मणोः ॥ अनाद्यनंतो नव्यानां स्या दात्माकाशयोगवत् ॥ ६८ ॥

अर्थ ॥ तमेकह्योछोके अनादिसंतति नाशनथाय तेनोतोनाशथतो देखीयेंछयें जेमबीजवणसे अंकुरनथाय अने अंकुरानाशथये बीजनहीथाय कुकडीनाशथये ईंडुनाशपामे अनेईंमानोनाशथये कुकडीनाशपामे वलीअनादिनो सुवर्णथी मेलजुदो थायछे तेमआत्माथकी कर्मजुदाथायछे ॥ ६७ ॥ एरीतेंअनादिसंतति जीवकर्मनोजे संबंधते नाशथायछे तेनव्यजीवोआश्रयीछे अनेजेहने अनादिसंतति टलतीनथी तेअनव्यजीवो आश्रयीछे आत्मातोआकाशना योगनीपरेंछे ॥ ६८ ॥

द्रव्यनावे समानेपि जीवाजीवलनेदवत् ॥ जीवनावे समानेपि नव्यानव्यलयोर्निदा ॥ ६९ ॥ स्वानाविकं च नव्यलं कलशप्रागनावतः ॥ नाशकारणसाम्राज्याद्विनश्यन्न विरुध्यते ॥ ७० ॥

अर्थ ॥ जेमद्रव्यनीरीतें तोसर्वद्रव्य एकद्रव्यपणें तुल्यछे पणतेद्रव्यमां नेदकरियें तोजीवअजीवए बेथाय तेमज जीवपणेतो सर्वजीवसरिखाछे पणनेदकरतां नव्यतथाअनव्य एबेनेदथायछे ॥ ६९ ॥ जेमघटउत्पत्तिपेहेला माटीद्रव्यस्वनाविकपणेछे अनेमाटीनानाशथी घटप्रगटेछे तेविरुद्धनथी तेमस्वनाविकनव्यपणे कर्मनी अनादिसंततीनो नाशरूपकारणना सामर्थ्यथी परमात्मापणुप्रगटे तेपणविरुद्धनथी

नव्योछिदोन चैवं स्या त्तुर्वानंत्यान्ननोंशवत् ॥ प्रतिमादलवत् क्वापि फलनावेपि योगतः ॥ ७१ ॥ नैतद्वयंवदामोय नवः सर्वोपि सिध्यति ॥ यस्तु सिध्यति सोवश्यं नव्यएवेति नोमतं ॥ ७२॥

अर्थ ॥ एरीतेंनव्यपणानो उछेदनथाय मोटाअनंतपणाथकी आकाशनाअंश नीपरें घटआवे आकाशपणआवुं अनेघटनांगे आकाशखंडथयो पणआकाशकांइव धुंनही तेमकर्मनानाशथकी आत्माअधिकथतोनथी जेमकोइठेकाणे प्रतिमानादल नीपेरें प्रतिमादलपाषाणथी बिंबरूप फलउपजे तेममोक्षनुं उपजवुं थाय॥ ७१ ॥

नूतनेविषेकांइप्रयोजननथी ॥ ९ ॥ एटेकाणे अरतिनो अनेआनंदनो अवकाशनथी केमके ध्याननीस्थिरताथी तेक्रियानोविकल्पपण केमहोय ॥ १० ॥

देहनिर्वाहमात्रार्था यापि भिक्षाटनादिका॥क्रिया सा ज्ञानिनोसंगा नैव ध्यानविघा तनी ॥ ११ ॥ रत्नशिक्षादृगन्याहि तन्नियोजनदृग् यथा ॥ फलभेदात्तथा चारक्रियाप्यस्य विभिद्यते ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ देहनिर्वाहरूपें मुनीने गोचरीप्रमुखजे क्रियातेक्रिया ज्ञानीनीअसंगानुष्ठानथी ध्यानमांविघ्नकरेनही ॥ ११ ॥ रत्नमाणिकपरिक्षाना ग्रंथजुदा अनेनजरपरिक्षापणजुदी ग्रंथभणीने जेमनजरपरिक्षामांफल भेदथीप्रवर्त्तेछे तेमआचारक्रियापण फलभेदेंकरी भिन्नभिन्नछे एटले भेदवंतीछे ॥ १२ ॥

ध्यानार्था हि क्रिया सेयं प्रत्याहृत्य निजं मनः॥ प्रारब्धा जन्मसंकल्पा दात्म ज्ञानाय कल्पते ॥१३॥ स्थिरभूतमपि स्वांतं रजसा चलतां व्रजेत् ॥ प्रत्याहृत्य निगृह्णाति ज्ञानी यदिदमुच्यते ॥१४॥

अर्थ ॥ जोपोतानामनने पाछुंवालीने जन्मसंकल्पथीमांडीने आत्माज्ञानभणी कल्पियें तोतेक्रियाध्यानरूपछे ॥ १३ ॥ स्थिरथयेलुंजेमन तेपणरजोगुणेकरी चपलताने पामे तेहनेपाछुंवाली तेनोनिग्रहकरे तेनेज्ञानीकेहवो ॥ १४ ॥

शनैः शनैरुपरमे द्बुध्या धृतिगृहीतया ॥ आत्मसंस्थं मनः कृत्वा न किंचिदपि चिंतयेत् ॥ १५ ॥ यतोयतोनिःसरति मनश्चंचलमस्थिरं ॥ ततस्ततो नियम्यैत दात्मन्येव वशं नयेत् ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ हेअर्जुन मननेधीरेधीरेधीरजवडे अनेबुद्धिवडे स्थिरकरवुं पछेतेमनजेवारें आत्मानास्वरूपनेविषेजाय तेवारें काइबीजो चिंतनकरवानी जरूरनथी॥१५॥ मनचंचलनेअस्थिरछे तेनेज्यांज्यां जायत्यांत्यांथीपाछुंवालीने आत्मानेसाथें वशकरीराखवुं

अतएवादृढस्वांतः कुर्याच्छास्त्रादिना क्रियां ॥ सकलां विषयप्रत्या हरणाय महामतिः ॥ १७ ॥ श्रुत्वा पैशाचिकीं वार्तां कुलवध्वाश्च रक्षणं॥ नित्यसंयमयोगेषु व्यापृतात्मा भवेद्यतिः ॥ १८॥

अर्थ ॥ एमपरदर्शनमांपण कह्युंछे माटेजांसुधी मनस्थिरनहोय त्यांसुधी शास्त्रोक्तक्रिया जेटलीकरियें तेटलीसर्वसफलनथाय जेवारेंविषयत्याग थाय तेवारेंजसफ

अर्थ ॥ कोइकतो अणचिंतव्यो एकस्मातमोक्षथायछे एमकेहेछे एपणअजुतुंछे नियत अवधिमर्यादाजछे तेमाटीनापिंडथीघटनिपजेछे तेकदाचितदीठुंछे एमतेहनेता किंकशास्त्रवालाकहेछे जेअमुकवखतमांजपुरुंथाशे एवुंकांइनियमनथी ॥ ७९ ॥ हेतुनूतमोक्षनोनिषेधनथी पोतानोअनुपकथनीय एटलेपोतानेबोलवुंनही एहवीजेविधिते पणनथी अनेस्वजावबर्णनकरवुं स्तुतिकरवीतेनथी केमकेएसर्वेनीअवधिछे एटलेअवधियेंज मोक्षथाशे तेमाटेमोक्षनुं साधनकरवुंतेअजुतुंछेएमकेहेछे ॥ ८० ॥

नच सार्वत्रिकोमोक्षः संसारस्यापि दर्शनात् ॥ नचेदानीं न तद्व्यक्ति र्व्यंजकोहेतुरेव यत् ॥ ८१ ॥ मोक्षोपायोस्तु किंत्वस्य निश्चयो नेति चेन्मतं ॥तत्र रत्नत्रयस्येव तथा जावविनिश्चयात्॥ ८२ ॥

अर्थ ॥ सर्वत्रमोक्षनथी केमके जेहमणानथी तेनीप्रगटतापणनथी अनेसंसारतो प्रत्यक्षदेखायछे माटेजेहनोजेहेतुछे तेजप्रगटनथी तोतेहनोसंशयछे ॥ ८१ ॥ मोक्षनोउपायछे किंवानथी एवातनो निश्चयनथी माटेएमतपणअजुगोछे मोक्षनुहेतुतो रत्नत्रयनीपरें तेमजजावें निश्चयथीजाणियें ॥ ८२ ॥

नवकारणरागादि प्रतिपक्षमदः खलु ॥ तद्विपक्षस्य मोक्षस्य कारणं घटतेतरां ॥ ८३ ॥ अथ रत्नत्रयप्राप्तेः प्राक्कर्म्मलघुता यथा ॥ परतोपि तथैव स्या दिति किं तदपेक्षया ॥ ८४ ॥

अर्थ ॥ रत्नत्रयीजेछे तेसंसारना कारणजेरागादिक तेहनाशत्रुछे अनेसंसाररूप कार्यनोशत्रु मोक्षछे माटेमोक्षनुं कारणजे उपायतेघटेछे ॥ ८३ ॥ केमकेरत्नत्रयनी प्राप्तिथयाथकी पूर्वेजवनाकर्मनी जेवीलघुताथाय तोवीजाथकीपणतेमजथायएअपेक्षायें जोअवधिनथी तोपणअंथयुं ॥ ८४ ॥

नैवयत्पूर्वसेवातो मृद्वीतो साधनक्रिया ॥ सम्यक्त्वादिक्रिया तस्मात् ह्यैव शिवसाधने॥८५॥गुणाः प्राङ्मैवंत्युच्चै रथवा कर्म लाघवात्॥ तया जव्यतया तेषां कुतोपेक्षानिवारणं ॥ ८६ ॥

अर्थ ॥ जेपूर्वसेवाथकीते घचनाघोजनारूपथी ऋजुताथी साधनक्रियामंदरूप तेवीनहोय माटे समकेतादिकक्रिया तेमोक्षसाधनमांइछे ॥ ८५ ॥ अथवाकर्मना लघुतापणाथकी मोटाजेगुणतेप्रगटथायछे तेप्रकारें तेनीजव्यतापणेकरीने मोक्षछे पणमोक्षनीअपेक्षा वारीनथी इतिसंसङ्थः ॥ ८६ ॥

ज्ञानिनां कर्मयोगेन चित्तशुद्धि मुपेयुषां ॥ निरवद्य प्रवृत्तीनां ज्ञानयोगौचिती ततः ॥ २५ ॥ अतएव हि सुश्रद्धा चरणस्पर्शो नोत्तरं ॥ दुःपालश्रमणाचार ग्रहणं विहितं जिनैः ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ कर्मयोगेंकरीने मनशुद्धिपामेलाअने निर्दोषविहारी एहवाजेज्ञानी तेहने ज्ञानयोग मुख्यपणेसेववो उचितछे एवोवीतरागनोमतछे ॥ २५ ॥ एमाटेरूडीश्रद्धा येंदेशविरतिरूप चारित्रनो स्पर्शकीधापछे दुखेपालिसकियें एवामुनीनोआचार जेस र्वविरतिपणुंछेतेलेवो एटलेप्रभुयें पछेसंयमलेवुंकह्युंछे ॥ २६ ॥

एकोद्देशेन संवृत्तं कर्म यत्पौर्वभूमिकं॥दोषोछेदकरं त स्या द् ज्ञानयोगप्रवृद्धये॥२७॥अज्ञानिनां तु यत्कर्म न ततश्चि त्तशोधनं॥योगादेरतथाभावाद् म्लेछादिकृतकर्मवत्॥२८॥

अर्थ ॥ कोइएकदेशआश्रिने पूर्वभूमितेपूर्व भवरूपसंवृत्तपणे उद्देशीने एटलेदे शथकी जेपेहेलांवृत्तआदर्यां एहवीजेक्रिया तेपणदुःखने टालनारीछे वलीज्ञानयोग नीवृद्धिकर्त्ताथायछे ॥ २७ ॥ अनेंअज्ञाननीजेक्रिया तेचित्तशुद्धि करवानेअर्थें नही थाय केमकेतेहनेज्ञानयोगनो अभावछेमाटे म्लेछनाकरेला कार्यसरखीतेजाणवी

न च तत्कर्मयोगेपि फलं संकल्पवर्जनात्॥संन्यासो ब्रह्मबो धाद्वा सावद्यत्वा त्स्वरूपतः॥ २९॥ नोचेदित्थं भवेबुद्धि र्गोहिं सादेरपि स्फुटा ॥ श्येनाद्वावेद विहिता द्विशेषानुपलक्षणात्॥३०॥

अर्थ॥ तोतेवाकर्मयोगेपण फलनथी फलतोसंकल्पवर्जे तेवारेंजथायछे आत्मज्ञा नविना त्यागपणनथी अनेएनुस्वरूप सावद्यछे माटेब्रह्मजेज्ञान तेनाबोधथकी फ लप्रगटे ॥ २९ ॥ जोकदापिएमबुद्धिनहोय तेवारेंतो गोहिंसादिक थकीम्लेछादिक नेपण प्रगटशुद्धिहोय तथासिंचाणानावधथीवेदमां पशुयागकह्या तेथकीहिंसकक र्मनायोगें वेदीयाना अनेम्लेछना एकसरखांजलक्षणछे कांइविशेषनथी ॥ ३० ॥

सावद्यकर्म नो तस्मा दादेयं बुद्धिविह्लवात् ॥ कर्मोदयागते त स्मि न्नसंकल्पादबंधनं ॥ ३१ ॥ कर्माप्याचारतोज्ञात्वा मुक्ति भावो न हीयते॥तत्र संकल्पजोबंधो गीयते यत्परैरपि॥ ३२ ॥

अर्थ ॥ एटलामाटे बुद्धिनाविपर्यासपणाथी सावद्यकर्मआदरवुंनही अनेजोदैव योगें तेवाकर्मकरवानुंउदय आव्युं तेवारेतेकर्मकरवानुं जोसंकल्पनथी तोतेकर्मनुं

एवामूर्खकदाग्रहनाधरनारते पोतानुंमुखचुंबितजेवाचा तेनेमुखमाने पणतेमुखेंकरी लीलारूप रहस्यजेज्ञानते अवगाहेनही ॥ ३ ॥

असदग्रहोत्सर्पदतुच्छदर्पै र्बोधांशतांधीकृतमुग्धलोकैः ॥वि
भंविता हंत जडैर्वितंडा पांडित्यकंडूलतया त्रिलोकी ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जेनेकदाग्रहथकी घणोगर्वबध्योछे अनेस्वकल्पितज्ञानने अंगीकरी नइ कजीवोनेजेणे आंधलाकीधाछे एहवाजडप्राणीयें पंडिताइनी खरजेंकरीनेहंतइतिखेदे पाठुप्रहारेंथकी त्रणलोकने वितंडाके० म्हाकम्हामलेंविटंबनाकरीछे ॥ ४ ॥

विधोर्विवेकस्य न यत्रदृष्टि स्तमोघनं तत्ररविर्विलीनः ॥अ
शुक्लपक्षस्थितिरेषनून मसदग्रहा स्थूलमतिर्मनुष्यः ॥ ५ ॥

अर्थ॥ जेनाहृदयमां विवेकरूपचंद्रनी दृष्टीनथी तेथीघणोअंधकारछे अनेतत्त्वरूप सूर्य अस्तपाम्योछे तेथीतेकृष्णपक्षनी निशावत्स्थितिमांछेकेमकेतेने कदाग्रहेंछल्योछे

कुतर्कदात्रेण लुनाति तत्व वल्लीरसान्सिंचति दोषवृक्षं ॥ क्षि
पत्यधः स्वादुफलं शमाख्य मसदग्रहः कोपिकुहूविलासः॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेकदाग्रहीछेते कुविचाररूपदातरडेंकरी तत्वरूपवेलानेछेदेछे अनेपापरू पवृक्षनेपाणीपायेछे तथासमतारूपअमृतफलने हेठुंधुलमांनाखेछे एवोकोइ कदाग्रह रूप अमावास्यानी रात्रीनोविलासछे ॥ ६ ॥

असदग्रहग्रावमये हि चित्ते न क्वापि सद्भावरसप्रवेशः॥इ
हांकुरश्चित्तविशुद्धबोधः सिद्धांतवाचां वत कोपराधः ॥ ७॥

अर्थ ॥ तेकदाग्रहीमाणसनुं चितपत्थरजेवुंछे जेमपत्थरमांपाणीभेदेनही तेम जिनवाणीरूपरस तेकदाग्रहीमाणसमां प्रवेशकरेनही तेथीतेनाचित्तरूपवृक्षमां शुद्ध बोधरूप अंकुरप्रगटेनही तोतेमांसिद्धांतनावाणीनो शोवांक ॥ ७ ॥

व्रतानि चीर्णानि तपोपि तप्तं कृता प्रयत्नेन च पिंडशुद्धिः॥ अ
भूत्फलं यत्तुन निन्हवानां मसदग्रहस्यैव हि सोपराधः ॥८ ॥

अर्थ ॥ जोपंचमहाव्रतपाल्यां उग्रतपकीधां उद्यमेंकरी बेतालीसदोषरहित अहा रलीधो तेमछतापणजेनिन्हवादिक मुक्तीरूपफलनपाम्याते अपराधसर्व कदाग्रहनुंजछे

विषयादिकनेओलखीने तत्वथीलोकनास्वरूपनेजाणेछे ॥ ३९॥ तेअपूर्वअनुभवथी अनेज्ञानना आनंदमयविनोदथी महाज्योतिवंतथायअनेतेनापापज्ञानेकरीबलीजायछे ४०

तेजोलेश्याविवृद्धिर्या पर्यायक्रमवृद्धितः ॥ भाषिता भगवत्यादौ सेत्थंभूतस्य जायते॥४१॥ विषमेपि समेक्षी यः स ज्ञानी स च पंडितः ॥ जीवन्मुक्तः स्थिरं ब्रह्म तथाचोक्तं परैरपि ॥ ४२ ॥

अर्थ ॥ दीक्षापर्यायनीवृद्धिथी ज्ञानसुखनीवृद्धिथायछे एमभगवतीआदेदेइने सूत्रोमांकह्युंछे तेएवाप्राणीनेप्रगटथाय॥४१॥ विषमनेविषेजे समभावेंजुए तेवाज्ञानीनें पंडितकहियें वली जीवन्मुक्त अनेस्थिर तथाब्रह्मपणतेनेजकहियें ॥ ४२ ॥

विद्याविनयसंपन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि॥ शुनि चैव श्वपाके च पंडिताः समदर्शिनः ॥ ४३ ॥ इहैव तैर्जितः सर्गो येषांसाम्ये स्थितं मनः॥निर्दोषं हि समं ब्रह्म तस्मात् ब्रह्मणि ते स्थिताः॥४४॥

अर्थ ॥ तेमजपरदर्शनियेंपणकह्युंछेके हेअर्जुन विद्याविनयसहितजे ब्राह्मण जे गाय हाथी कुतरुं चंडाल एसर्वनेसमदृष्टियेंजुएछे तेनेपंडितकहियें ॥ ४३ ॥ एहवा जीवेंइहांबेठेथकेज जगतसृष्टीनेजीतीलइने तेनुंमनसमतापाम्युं तेनिर्दोषपणेसम्यक् जेआत्मस्वरूप तेनिर्दोषछे तेनेपाम्योतेब्रह्मज्ञानेरह्यो एमजाणवुं ॥ ४४ ॥

न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य नोद्विजे त्प्राप्य चाप्रियं ॥ स्थिरबुद्धिर संमूढो ब्रह्मविद्ब्रह्मणि स्थितः ॥ ४५ ॥ अर्वाग् दशायां दोषाय वैषम्ये सम्यदर्शनं॥निरपेक्ष मुनीनां तु रागद्वेषक्षयाय तत्॥४६॥

अर्थ॥जेरुडुंभलेदर्षनकरें अनेभुंडुंप्राप्तथयें शोकनधरे तेस्थिरबुद्धिवालो चतुरप्राणी ब्रह्मनोजाणते ब्रह्मज्ञानेरह्योछे एमजाणवुं॥४५॥हेठलीदशावालाने तोजेविषमने विषें समपणेजोवुं तेदोषनुंकारणछे अनेजेनिरापेक्षीमुनि तेनेतोविषमने समपणेजोवुं तेरागद्वेषनोक्षय करनारथायछे ॥ ४६ ॥

रागद्वेषक्षयादेति ज्ञानी विषयशून्यतां ॥ छिद्यते भिद्यते वा यं हन्यते वा न जातुचित् ॥ ४७ ॥ अनुस्मरतिनातीतं नैव कांक्षत्यनागतं ॥ शीतोष्णसुखदुःखेषु समो मानापमानयोः ॥ ४८ ॥

अर्थ ॥ रागद्वेषनाक्षयथी ज्ञानीमुनि विषयनीशून्यतापणाने पामेछे तेनेकोइछेदी

अर्थ ॥ जेमकाचाघडामां पाणीनरवाथी घडानो तेमजपाणीनोनाशथायछे तेमज कदाग्रहीमाणसने शास्त्र सीखवतांशास्त्रनो तेमजतेपोतानोबनेनोविनाशथायछे॥ १४

असद्ग्रहग्रस्तमते प्रदत्ते हितोपदेशं खलु यो विमूढः ॥ शुनी शरीरे स महोपकारी कस्तूरिकालेपनमादधाति ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ जेमविष्टायेंनखुंमुखदेखी कुतरीनेउपकारकरवा कस्तूरीनोलेपकरे तेमूर्खजाणवो तेमकदाग्रहीप्राणीने उपकारकरवाने हितउपदेशआपेते पणमूर्खजाणवो॥ १५॥

कष्टेन लब्धं विशदगमार्थं ददाति यो ऽसद्ग्रहदूषिताय॥स खिद्यतेयत्नशतोपनीतं बीजं वपन्नूषरभूमिदेशे ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ जेमघणाउद्यमे अनाजनाबीज भेगांकरी उखरजमीनमांवावे तेआगलजतांसदाय खेदपामेछे तेम पंडितप्राणी गुरूनोविनयकरी कष्टेंकरीनिर्मल आगमसिद्धांतनाअर्थने पाम्योहोय तेजो कदाग्रहेंकरी दुषीतप्राणीने तेहनो अर्थ शीखववानो उद्योगकरे तोतेपण अंतेखेद पामेछे ॥ १६ ॥

शृणोति शास्त्राणि गुरोस्तदाज्ञां करोति नासद्ग्रहवान् कदाचित्॥विवेचकत्वं मनुते च सारग्राही भुवि स्वस्य च चालनीवत् ॥१७॥

अर्थ ॥ जोगुरुपासेथीशास्त्रसांभले तोपणकदाग्रहीजेहोय ते कोइकालें ते गुरुनी आज्ञानमाने ते पोतानीमले पोतानेएहवुंमाने जेहुंज सर्वपदार्थनी बराबरवेचणकरुंछे पणतेतोजेम पृथ्वीमां चालणीमांथी चारीनेसारभूतवस्तु काहाडीलेइने बाकी असार धान्यरहेछे तेहनुं ते ग्राहीछे ॥ १७ ॥

दंभाय चातुर्य मधीयशास्त्र प्रतारणाय प्रतिभापटुत्वं ॥ गर्वाय धीरत्वमहोगुणाना मसद्ग्रहस्ते विपरीतसृष्टिः॥१८॥

अर्थ ॥ माटे अहोइतिआश्चर्य विधात्रायें कदाग्रहीमाणसमां विपरीतगुणसृज्याछे जेवादेवतेवीपात्री अनेमेघजलसर्पनामुखमां जेमविषतुल्यथयीजायछे एकेवतने विधात्रायें खरीपाडीछे केमके जे कदाग्रहीनी चतुराइतेकपटनेअर्थेथाय अने शास्त्र भणवुं ते मदनेअर्थेथयुं तथा बुद्धिमाहापण अने उपदेशतेलोकने ठगवानासाधननेअर्थेथयुंअने धैर्यपणु तेगर्वकरवानेअर्थेथयुं ॥ १८ ॥

असद्ग्रहस्थेन समं समंता त्सौहार्दभृदुःख मवैति तादृग्॥ उपैति यादृक्कदलीकुवृक्ष स्फुट त्रुटत्कंटककोटिकीर्णा॥१९॥

अर्थ ॥ वळीजेअध्यात्मजावने देखतोथको पूर्णजावने पामेलो अध्यात्मनी ठकुरा इने जोगवतोथको अन्यपदार्थने नथीजोतो॥५५॥एउपरकह्यो तेवल्कष्टज्ञानयोगछेए अध्यात्मग्रंथनेविषे वंध मोक्षपण जगवंतेनिश्चे आचारांगनालोकसार अध्ययने कह्युंछे

उपयोगैकसारत्वात् दाश्वसंमोहबोधनः ॥ मोक्षाप्ते युज्यते चैव तथाचोक्तं परैरपि ॥ ५७ ॥ तपस्विन्योधिको योगी ज्ञानिन्यो प्य धिकोमतः॥ कर्मिन्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी जवार्जुन ॥५८ ॥

अर्थ ॥ मोक्षप्राप्तिनेविषे उपरकहेलोज्ञानयोग घटेछे केमके शीघ्रपणे ज्ञानजागृत एहवोउपयोगजमात्र एकसारछे अनेअन्यदर्शनीएपण एमजकह्युंछे ॥ ५७ ॥ तपसीथी योगीअधिकछे ज्ञानीथी अने राजाथीपण योगीनेमोटोकह्योछे तेमाटे श्रीकृष्णे अनर्जुनेकह्युंछेके हेअर्जुन तुमेपणयोगीथायो ॥ ५८ ॥

समापत्तिरिहव्यक्त मात्मनः परमात्मनि ॥ अन्नेदोपासनारूप स्ततः श्रेष्ठतरोह्ययं ॥ ५९ ॥ उपासना जागवती सर्वेन्योपि ग रीयसी ॥ महापापक्षयकरी तथा चोक्तं परैरपि ॥ ६० ॥

अर्थ ॥ माटेइहां आत्मानीसमाप्तिप्रगटछे आत्मा तथा परमात्माए बेउनेविषे अन्नेदपणे सेवनरूपजेयोग तेजघणोजश्रेष्ठछे ॥ ५९ ॥ माटेसर्वथीमोटी अनेमोटा पापनेटालेएवीप्रजुनीसेवाछे अनेपरदर्शनीयेपण एवुंजकह्युंछे ॥ ६० ॥

योगिनामपि सर्वेषां सज्जतेनांतरात्मना ॥ श्रद्धावान् जजते यो मां स मे युक्ततमोमतः ॥६१॥ उपास्ते ज्ञानवान् देवं यो निरंज नमव्ययं ॥ स तु तन्मयतां याति ध्याननिर्धूतकल्मषः ॥ ६२ ॥

अर्थ ॥ सर्वयोगीमांपण अंतरआत्मायें नल्योएवो श्रद्धावंतप्राणी तोतेहनेकहियेंजेमुजनेसेवे तेमुजसरखोपुरुत्तमथाय एमश्रीकृष्णअर्जुननेकहेछे ॥६१॥ ज्ञानवंत निरंजन अने अविनाशीदेवजाणीने जेपुरुषमनेसेवेछे तेतन्मयिपणेथायछे अने जे योमहाराध्यानथी पापवालीनाख्याछे हेअर्जुन तेपुरुषमाहरारूपेंथायछे ॥ ६२ ॥

विशेषमप्यजानानो यः कुग्रहविवर्जितः ॥ सर्वज्ञं सेवते सोपि सामान्यं योगमास्थितः ॥ ६३ ॥ सर्वज्ञो मुख्य एकस्तत् प्रतिप त्तिश्च यावता ॥ सर्वेपि ते तमापन्ना मुख्यं सामान्यतो बुधाः ॥६४॥

द्धिथकीयोगप्रसिद्धरीतें प्रगटे ॥ १ ॥ तेयोगनावेजेदछे एककर्मयोग अनेबीजोज्ञान योग तेमांकर्मयोगते आवश्यकादिकजे क्रियाकरवीतेरूपकह्योछे ॥ २ ॥

शारीरस्पंदकर्मात्मा यदयं पुण्यलक्षणं ॥ कर्मातनोति सन्नो गात्कर्मयोगस्ततः स्मृतः ॥ ३ ॥ आवश्यकादिरागेण वात्स ल्याद्भगवद्गिरां॥प्राप्नोति स्वर्गसौख्यानि न याति परमं पदं॥४॥

अर्थ ॥ शरीरचेष्टारूप तेकर्मात्माकह्यिें एयोगपुण्यरूपछे तेरुडान्नोगथकी कर्म नेविस्तारेछे तेमाटेएनेकर्मयोगकह्यिें ॥ ३ ॥ आवश्यकादिकक्रियानेरागे तथाजिन वाणीने विलासेंकरीने स्वर्गनासुखनेपामे पणएयोगेंमुक्तिपदनेनपामे ॥ ४ ॥

ज्ञानयोगस्तपः शुद्ध मात्मरत्येकलक्षणं ॥ इंद्रियार्थोन्मनीन्ना वात्समोक्षसुखसाधकः ॥ ५ ॥ न परप्रतिबंधोस्मि न्नल्पोप्येका त्मवेदनात् ॥ शुन्नं कर्मापि नैवात्र व्याक्षेपायोपजायते ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ बीजोज्ञानयोगतेहनेकह्यिें जेतपशुद्धिपणे आत्मानेविषेरतिपामे तेएक लक्षण अने इंद्रियोनाविषयथीदूररहेवुं तेबीजुंएवालक्षणेयुक्तजेयोग तेनेपामेलोपुरुष तेमोक्षसुखनेसाधे ॥ ५ ॥ एकंआत्मज्ञानयोगना ज्ञानमां बीजोप्रतिबंधनथी अने जेकर्मथीमोक्षमांजतां वारलागे तेछान्नकर्मपणनथी ॥ ६ ॥

नह्यप्रमत्तसाधूनां क्रियाप्यावश्यकादिका ॥ नियता ध्यानशु द्धत्वा यदन्यैरप्यदः स्मृतं ॥ ७ ॥ यस्त्वात्मरतिरेव स्या दात्मतृ प्तश्च मानवः॥आत्मन्येव च संतुष्ट स्तस्य कार्यं न विद्यते ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ अप्रमत्तसाधुने आवश्यकप्रमुखजेक्रिया तेनोपण करवानेविषे प्रतिबंधन थी केमकेतेनेध्यानरूपशुद्धिछे माटे ॥ ७ ॥ वलीअन्यदर्शनमां पण श्रीकृस्नकहेछे के हेअर्जुन जेआत्मसुखमांतृप्तछे तेनेआत्मानेविषेज रतिछे अनेसंतोषछे जेआत्म सुखमां संतुष्टछेएहवोजेजीव तेहनेकोइपणकर्त्तव्यनथी ॥ ८ ॥

नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृते नेह कश्च ना॥न चास्य सर्वन्नूतेषु कश्चि दर्थव्यपाश्रयः ॥ ९ ॥ अवकाशो निषिद्धोस्मि न्नरत्यानंदयोर पि ॥ ध्यानावष्टंन्नतः क्वास्तु तत्क्रियाणां विकल्पनं ॥ १० ॥

अर्थ ॥ तेप्राणीनेकार्यकरवे अर्थनथी तेमजनकरवाथी खोटपणनथी तेहनेसर्व

विशेषस्यापरिज्ञानाद् युक्तीनां जातिवादिनः ॥ प्रायोविरोधत
श्चैव फलाभेदाच्च भावतः ॥ ७१ ॥ अविद्या क्लेशकर्मादि यतश्च
भवकारणं ॥ ततः प्रधानमेवैत त्संज्ञाभेदमुपागतं ॥ ७२ ॥

अर्थ ॥ केमकेजे विशेषनेनहिजाण्याथी उक्तियुक्तीनाजातिवचनथी अने प्रायेंविरोधथकी भावथीफलनोअभेदछे एहेतुमाटे ॥ ७१ ॥ जेअविद्या क्लेशअने कर्मइत्यादिकजे संसारनाकारणप्रगटे तेकेटलाएक दर्शनीओजूदाजूदाकहेछे एटलेकोइअविद्या कोइ क्लेश कोइकर्मएमसंज्ञायें करीभेदकहेछे पणएत्रणेप्रधानपणे एकजछे ॥ ७२ ॥

यस्यापि यो परोभेद श्चित्रोपाधिस्तथा तथा॥ गीयतेऽतीतहेतु
भ्यो धीमतां सोप्यपार्थकः ॥ ७३ ॥ ततःस्थानप्रयासोय यत्त
द्भेदनिरूपणं ॥ सामान्यमनुमानस्य यतश्च विषयोगतः॥७४॥

अर्थ ॥ एअविद्यादिकत्रणनावली बीजाभेद कल्पनायेंअनेकथायछे तेथीअनेकप्रकारनी उपाधिनीपजे तेमतेमजाणियेंजेहेतुनोअभावथायछे पणतेउपाधिभेद पंडितनेनिरर्थकछे एमजाणवुं ॥ ७३ ॥ तेथीआस्थाननोजेप्रयास तेभेदनुंनिरूपणकरवाने अनुमाननोविषय तेसामान्यजाणवो केमके ज्यांअनुमान प्रमाणकरियें त्यांसामान्यपणे उपयोगीहोयतेवारें अनुमानविषयनो अभावथाय ॥ ७४ ॥

संक्षिप्तरुचिजिज्ञासो र्विशेषान्न बलं बलं॥ चारिसंजीविनीचा
र ज्ञातादत्रोपयुज्यते ॥ ७५ ॥ जिज्ञासापि सतां न्याय्या यत्प
रेपि वदंत्यदः ॥जिज्ञासुरपि योगस्य शब्दब्रह्मातिवर्त्तते॥७६॥

अर्थ ॥ जेम संजीवनीनामाचारोजे घासबुटीतेने ओलखनारी एकमोटीस्त्रीयें ते बुटीनेयोगें बीजीनानीस्त्रीनाभर्तारने पशुअवस्थामांथी पुरुषबनाव्योतेम संक्षेपरूची वालो विशेषबलवानकेवारेंकेवाय जेवारेंतेनीप्रीति साचेसाचीहोय तेवारेंकहेवाय पणसाचीप्रीतीविनातुं विशेषबलतेबलमांनगणाय ॥७५॥ माटे एत्रणजेकामादियोगते नेविषे सत्पुरुषेंजाणपणुंराखवुं उचितछे परदर्शनीनुं केवुंपणएवुंजछे हेअर्जुन जेपुषज्ञानयोगनेजाणवाइछे तेपुरुषपरमात्मानी दिशानेपामेछे ॥ ७६ ॥

आर्तोजिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी चेति चतुर्विधाः॥उपासकास्त्रयस्त
त्र धन्या वस्तुविशेषतः ॥ ७७ ॥ ज्ञानी तु शांतविक्षेपो नित्यभ
क्तिर्विशिष्यते॥अत्यासन्नोह्यसौ भर्तु रंतरात्मा सदाशयः॥७८॥

लथाय माटेजेप्राणीमननेविषयथीवालवामां उजमालरहे तेमहामति वालाजाणवा ॥ १७ ॥ जेमएकशेठनोपुत्र देशांतरगयो तेनाघरनीसामेना एकवृक्षउपर एकभूतरे तो हतोतेवलपामि पुत्रनोरूपधारणकरी तेनीघरनी बायडीसाथेलाग्रुपड्यो एम करतांतेशेठनोदीकरो पोतानेघरेंआव्यो तेवारेंघरमां लडाइचालवालागी पछेराजदर बारें इनसाफनेवास्तेगया तिहांथी भूतनेघरमांथी काढवानुंकयुं पणतेभूतनिकल्यो नही नेकेवालाग्योकेहुं जवानोनथी हुंपणपुत्रछुं एवातसांभलीवहुने लाजलागी छे तेशेठेभूतने वैरीसाथें युद्धकरवानोकामभलाव्यो अनेवहुने घरनोधंधोभलाव्यो. ए रीतेंअनाचारटाल्यो अनेवहुनेराखी तेमसुनीयेंपण संयमनायोगें आत्मानेराखवो

या निश्चयैकलीनानां क्रिया नातिप्रयोजना ॥ व्यवहारदशास्था नां ता एवातिगुणावहाः ॥ १९ ॥ कर्मणोपि हि शुद्धस्य श्रद्धामेधा दियोगतः ॥ अक्षतं मुक्तिहेतुत्वं ज्ञानयोगानतिक्रमात् ॥ २० ॥

अर्थ ॥ जेनुंमननिश्चयमां लीनछे तेनेक्रियानुं प्रयोजननथी व्यवहारदशावाला ने क्रियाते अतिगुणकारीछे ॥ १९ ॥ शुभकर्मथीअने श्रद्धाबुद्धिनायोगथी अखंडप णे जोज्ञानयोगने उलंघेनहीतो तेहनेमुक्तिनोहेतु प्रगटथाय ॥ २० ॥

अभ्यासे सत्क्रियापेक्षा योगिनां चित्तशुद्धये ॥ ज्ञानपाके शमस्यै व यत्परैरप्यदः स्मृतं ॥ २१ ॥ आरुरुक्षो र्मुनेर्योगं कर्मकारण मु च्यते ॥ योगारूढस्य तस्यैव शमः कारण मुच्यते ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ जेरुडीक्रियानीअपेक्षायें अभ्यासकरेछेते योगीश्वरने चित्तशुद्धिनेअर्थें ज्ञान परिपक्ककरवाने उपशमकह्युंछे एमअन्यदर्शनीउं पणकहेछे ॥ २१ ॥ हेअर्जुन योग पामवानेइछताजेयोगीछे तेहनेकर्मतो एककारणछे जेवारेंसर्व संकल्पशमिजाय तेवा रेंतेनेज्ञानयोगी कहियें तेमाटेज्ञानारूढने समतातेजकारणछे ॥ २२ ॥

यदा हि नेंद्रियार्थेषु न कर्म्मस्वनुषज्यते ॥ सर्वसंकल्पसंन्यासी योगारूढ स्तदोच्यते ॥ २३ ॥ ज्ञानं क्रियाविहीनं न क्रिया वा ज्ञानवर्जिता ॥ गुणप्रधानभावेन दशाभेदः किलैनयोः ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ जेवारेंविषयथीविरमें कर्मनेविषे संलग्ननथाय जेवारेंसर्व संकल्पशमीजा य तेवारेंतेहने योगारूढकहियें ॥ २३ ॥ क्रियाविना ज्ञाननथी अनेज्ञानविना क्रि यानथी. एबेमांक्रियातेगौणछेअनेज्ञानतेमुख्यछे एवोएबेनो दिशीभेदकह्योछे ॥ २४ ॥

स्थिरमध्यवसानं य त्तध्यानं चित्तमस्थिरं ॥ ज्ञावना वा ध्यनुप्रे
क्षा चिंता वा त त्रिधा मतं॥१॥मुहूर्त्तांतर्नवेद्ध्यान मेकार्थे मन
सः स्थितिः ॥ बह्वर्थसंक्रमे दीर्घाप्यछिन्ना ध्यानसंततिः ॥ २ ॥

अर्थ ॥जेचित्तचपलछे पणतेचित्तनेजेस्थिरपणे चित्तनाअध्यवसायने प्रगटकरेतेवा रें तेनेध्यानयोगीकहियें एकज्ञावना बीजीअनुप्रेक्षा अनेत्रीजो चिंतानुध्यानएत्रणप्रकारें चित्तचपलथायछे ॥ १ ॥ अंतर्मुहूर्त्तंध्यानहोय पणजिहां एकठामें एकअर्थनेविषे घणाअर्थनुं संक्रमणथाय एवीमननी स्थितिहोय तिहांध्याननी अविछिन्नदीर्घपणे परंपराथाय तिहांकांइअंतर्मुहूर्तनो नियमनथी ॥ २ ॥

आर्त्तं रौद्रंच धर्म्मं च शुक्लं चेति चतुर्विधं॥ तत्स्याद्भेदाविह द्वौ
द्वौ कारणं ज्नवमोक्षयोः॥ ३ ॥ शब्दादीनामनिष्टानां वियोगा
संप्रयोगयोः॥ चिंतनं वेदनायाश्च व्याकुलत्वमुपेयुषः ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ आर्त्तरौद्रधर्मनेशुक्ल एचारध्यानना जेदछे तेमध्येप्रथमनाबेध्यानते संसारनाकारणीकछे अने पाछलाबेध्यानते मुक्तीनाकारणवाचीछे ॥ ३ ॥ तेमांप्रथम आर्त्तध्यानना चारज्नेदकहेछे प्रथमअनिष्टजेशब्दादिक तेनोवियोगवांछे केरखेअनिष्टनोसंयोगथने तेमअनिष्टमलजे पीडाथायतेनुं चिंतनकरेतेथीव्याकुलथाय ॥४॥

इष्टानां प्रणिधानं च संप्रयोगवियोगयोः ॥ निदानचिंतनं पाप
मार्त्तमिहं चतुर्विधं ॥ ५ ॥ कापोतनीलकृष्णानां लेश्यानामत्र
संज्नवः ॥ अनतिक्लिष्टज्नावानां कर्म्मणां परिणामतः ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ बीजोज्नेद इष्टनुंचिंतनकरे एटलेरखेइष्टवस्तुना संयोगनोवियोगथइजाय त्रीजोनियाणाकरे चोथुंरोगनाओषधनीचिंताकरे एचारआर्त्तध्याननाप्रकारछे ॥ ५ ॥ एमध्ये कापोत नील कृष्ण एत्रणलेश्यानोसंज्नवछे केमके जेमांअतिक्लिष्टज्नावनानथी कोइककर्मनीपरिणतीना परिणामेंकरी एत्रणलेश्यानोसंज्नवछे ॥ ६ ॥

क्रंदनं रुदनं प्रोच्चैः शोचनं परिदेवनं ॥ ताडनं लुंचनं चेति लिं
गान्यस्य विदुर्बुधाः ॥ ७ ॥ मोघं निंदन्निजं कृत्यं प्रशंसन् पर
संपदं ॥ विस्मितः प्रार्थयन्नेताः प्रसक्तश्चैव दुर्जनः ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ बकोरकरवो उंचेस्वरेरडवुं शोचनाकरवी नामदइनेरडवुं मारवुमाथाना

बंधनपणनथी॥३१॥ संसारिकक्रियानोजो आचारछे तोपणज्ञानीने मुक्तिभावनी हा णनथी केमकेसंकल्पथीबंधनछे एवुंअन्यदर्शनवालानुंपणकेवुंछेतेजुओआगलकहेछे

कर्मण्यकर्म यः पश्ये दकर्मणि च कर्म्म यः॥ स बुद्धिमान्मनुष्ये षु-स युक्तः कृतकर्म्मकृत्॥३३॥ कर्मण्य कर्मवा कर्म कर्म्मण्य स्मिन्नुन्ने अपि॥ नोन्ने वा न्नंगवैचित्र्या दकर्मण्यपि नो मते॥३४॥

अर्थ॥ जेकर्मनेविसर्जे अकर्मपणुदेखेछे अनेकर्मनथीकरतो अनेजाणेछे जेहुंकरुं छुं तेनेमाणसमां बुद्धिवंतकहियें तेकरवापणानाकर्मने अकरवापणुंदेखेछे ते पोतेपोता नेस्वरूपेंछे एमघणीनंगजाल प्रगटेछे॥३३॥ निःकर्ममार्गनेविषे नहीमान्युं तेअक रवुंथयुं अने अकरवापणेजेकरेछे तेनाबेनांगाछे एमकरवानाविचित्र नांगाछे॥३४॥

कर्म नैःकर्मवैषम्य मुदासीनो विन्नावयन्॥ज्ञानी न लिप्यते न्नोगैः पद्मपत्रमिवांन्नसा॥३५॥ पापाकरणमात्राद्धि न मौनं विचिकि त्सया॥ अनन्यपरमात्मा स्यात् ज्ञानयोगी न्नवेन्मुनिः॥३६॥

अर्थ॥ उदासीनावथालो विचित्रपणेंकर्मनुं विषमपणुचिंतवे जेमकमलपत्रजल मांलेपातुंनथी तेमज्ञानीपुरुष न्नोगमांलेपातोनथी॥३५॥ पापनकरवाथी कांइमुनि पणुआवतुनथी संशयरहितपणे पोतेजज्ञानयोगमय परमात्माथाय तेनेमुनिकहियें

विषयेषु न रागी वा द्वेषीवा मौनमश्नुते॥ समं रूपं विदंस्तेषु ज्ञानयोगी नलिप्यते॥३७॥ सततचिंतयायस्या न्निसमन्वा गता इमे॥ आत्मवान् ज्ञानवान्वेद धर्मब्रह्ममयोहि सः॥३८॥

अर्थ॥ विषयनेविषे जेनेरागनथी तेमद्वेषपणनथी तेनेमुनिकहियें मध्यस्थपणे रूपादिकनेजाणतो जेज्ञानीयोगीतेने लेपलागतोनथी॥३७॥ जेणेतत्वनीओलखा णवडे समताधारणकीधी तेनेज आत्मानीओलखाणथइ अनेतेजज्ञानी तथातेजध र्ममय तथाब्रह्ममयकेहेवाय॥३८॥

वैषम्यबीजमज्ञानं निघ्नंति ज्ञानयोगिनः॥ विषयांस्ते परिज्ञाय लोकं जानंति तत्वतः॥३९॥ इतश्चापूर्वविज्ञाना च्चिदानंदविनोद तः॥ ज्योतिष्मंतो न्नवंत्येते ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः॥४०॥

अर्थ॥ संसारनुंविषमबीज जेअज्ञानछे तेबीजनेज्ञानयोगीबालीनाखेछे तथा

अर्थ ॥ एप्रायें घणादोषनुंकारणछे नानाप्रकारना जीवनेमारवाना दोषेंकरी हिंसादिकर्मां प्रवृत्तिथाय पापकरीने खुशवक्तीपणुंमाने ॥ १५ ॥ निर्दयपणुं पश्चात्तापपणुं परआपदायें राजीपणुं अनेमद्वाविषयीपणुं एचिन्हेकरी एध्याननरकना दुःखनोआपनारोछे माटेएध्यानने छांडवो ॥ १६ ॥

अप्रशस्ते इमे ध्याने दुरंते चिरसंस्तुते ॥ प्रशस्तं तु कृताभ्यासो ध्यानमारोढुमर्हति॥१७॥ भावनादेशकाले च स्वासत्तालंबनक्रमात् ॥ ध्यातव्यध्यानानुप्रेक्षा लेश्यालिंगफलानि च॥१८॥

अर्थ ॥ एवांएबेध्यानते महानिर्बलछे एनोघणो परिचयकरियें तोतेथीकडवा विपाकप्रगटे माटेडाह्यापुरुषें अभ्यासकरतां उज्वलध्याने चढवोयोग्यछे ॥ १७ ॥ हवेधर्मध्यानकहेछे देशकालजोइने शुभभावनाकरवी पोतानीसत्ताना आलंबनना क्रमथी ध्येय ध्याता अनेध्याननी अनुप्रेक्षाते शुभलेश्याना चिन्हनुंफलछे ॥ १८ ॥

ज्ञात्वा धर्मं ततोध्याये चतस्र स्तत्र भावनाः॥ ज्ञानदर्शनचारित्र वैराग्याख्याः प्रकीर्तिताः॥१९॥ निश्चलत्वमसंमोहो निर्जरा पूर्वकर्मणां॥संगाशंसा भयोच्छेदः फलान्यासां यथाक्रमात्॥२०॥

अर्थ ॥ धर्मनेजाणीपछे ज्ञानभावना दर्शनभावना चारित्रभावना अने वैराग्यभावना एचारभावनाने धर्मजाणी ध्याववी ॥ १९ ॥ तेमां ज्ञानभावनाथी निश्चलपणुंथाय अनेदर्शनभावनाथी अमूढपणुंथाय वलीचारित्रभावनाथी पूर्वकर्मनीनिर्जराथाय अने वैराग्यभावनाथी क्रियादिकनोसंग तथा पुजलनीइहा अनेभयतेनोउच्छेदथाय एरीतेंएचारभावनाना फलजाणवा. ॥ २० ॥

स्थिरचित्तः किलैताभि र्याति ध्यानस्य योग्यतां॥ योग्यतैव हि नान्यस्य तथाचोक्तं परैरपि ॥२१॥ चंचलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवत् दृढं ॥ तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करं॥२२॥

अर्थ ॥ एभावनामां जेनुंचित्तस्थिरहोय तेनेध्यानमांस्थिरतारहे माटेतेप्राणी ध्याननी योग्यतापामे पणबीजोकोइनपामे तेमजपरदर्शनमांपणकह्युंछे तेकहेछे ॥ २१ ॥ अर्जुनपुछेछे हेकृष्ण मनतोचंचलछे अनेशत्रुना सैन्यसरखुंदृढछे तेमननो निग्रहहुंशीरीतेकरुं केमके पवननीपेठेमनदुष्कर अनेअग्राह्यछे ॥ २२ ॥

शकेनही कोइनेदीशकेनही कोइहणीशकेनही केमके तेपोतानो आत्माआत्मस्वरूपें मानेछे॥४७॥केमकेतेज्ञानीपुरुष गइवस्तुनेसंजारेनही अनेअनागतवस्तुनेइछेनही शी तअने उष्णतथासुख अनेदुःख वलीमानअनेअपमान एसर्वने समपणेमानेछे॥४८॥

जितेंद्रियो जितक्रोधो मानमायानुपद्रुतः॥ लोजसंस्पर्शरहितो वेदखेदविवर्जितः॥ ४९॥ संनिरुध्यात्मनात्मानं स्थितः स्वकृतकर्मजित्॥ हठप्रयत्नोपरतः सहजाचारसेवनात्॥ ५०॥

अर्थ॥जेक्रोधरहित तथा मानमायानाउपद्रवें रहित अने लोजनास्पर्शेरहित वेदो दयरहित खेदरहितजेहोय तेनेजितेंद्रिकहियें॥ ४९॥ तेआत्माएकरी आत्मानेरो धीरह्यो पोतानाकर्या कर्मनेजेदतो कदाग्रहथीविरम्यो स्वजाविकआचारने सेवतो॥५०

लोकसंज्ञाविनिर्मुक्तो मिथ्याचारप्रपंचहृत्॥ उल्लसत्कंमक स्थानः परेण परमाश्रितः॥५१॥श्रद्धावानाज्ञया युक्तः श स्त्रातीतोह्यशस्त्रवान्॥गतो दृष्टेषु निर्वेद मनिन्हुत पराक्रमः॥५२॥

अर्थ॥ लोकसंज्ञाथी मुकाणो मिथ्यात्वआचारनोटालनार योगस्थानकें उल्लसि तथयोछे एवोजेउत्कृष्टजावें आत्मानोआश्रितथयोछे॥ ५१॥ तथाश्रद्धावंत आज्ञा युक्त अने जावअध्यवसायरूपजे शस्त्र तेथीवेगलोरहेलो अनेबाह्यशस्त्रथीरहित देखइतापदार्थनेविषे वैराग्यवान वली बलवीर्यनेअणगोपवनार॥ ५२॥

निक्षिप्तदंमो ध्यानाग्नि दग्धपापेंधनव्रजः॥ प्रतिस्त्रोतोनुगत्वेन लोकोत्तरचरित्रभृत्॥ ५३॥ लब्धान्कामान्वहिः कुर्व न्नकुर्व न्बहुरुपतां॥स्फारीकुर्वन् परं चक्षु रपरं च निमीलयन्॥ ५४॥

अर्थ॥ अने त्रणदंडरहित जेणे ध्यानरूपअग्नीएकरी पापरूपकाष्ठनासमूहने बा ल्योछे जे सामेंप्रवाहे चालवेकरीने लोकोत्तरचरित्रनो धरनार॥ ५३॥ तथा विषय सुखपामीने तेसुखदूरकरनार तथा मायाकपट अनेक्रोधादिकने अणकरतोथको तेज्ञानचक्षुने विकस्वरकरतो अज्ञानरूप चक्षुने बंधकरतोथको॥ ५४॥

पश्यन्नंतर्गतान् जावान् पूर्णजावमुपागतः॥ भुंजानोध्यात्मसा म्राज्य मवशिष्टं नपश्यति॥५५॥ श्रेष्ठोहि ज्ञानयोगोय माध्यात्म न्येव यज्जगौ॥ बंधप्रमोक्षं जगवान् लोकसारे सुनिश्चितं॥ ५६॥

वाचना चैव पृच्छा च परावृत्त्यनुचिंतनं ॥ क्रिया चालंबनानीह स धर्मावश्यकानि च ॥ ३१ ॥ आरोहति दृढद्रव्या लंबनोविषमं पदं ॥ तथा रोहति स ध्यानं सूत्राद्यालंबनाश्रितः ॥ ३२ ॥

अर्थ ॥ वाचना पृछना परावर्त्तना अनेअनुप्रेक्षा एधर्मना आलंबन इहांकह्यां ते अवश्यकरणीछे ॥ ३१ ॥ जेप्राणी खरीवस्तुनो आलंबकछे तेप्राणी कठणतेकाणेप णजेमचढे तेमजेजैनसूत्रादिकनो जेआलंबकछे तेप्राणी रुडेध्यानेपण चढे ॥ ३२ ॥

आलंबनादरोभूत प्रत्यूहक्षययोगतः ॥ ध्यानाद्यारोहणभ्रंशो योगिनां नोपजायते ॥ ३३ ॥ मनोरोधादिको ध्यानप्रतिपत्ति क्रमो जिने ॥ शेषेषु तु यथायोग समाधानं प्रकीर्तितं ॥ ३४ ॥

अर्थ ॥ आलंबनना आदरथी प्रगटथोजे विघ्ननोक्षय तेनायोगथी ध्यानरूपपर्वत उपरचढतां योगीश्वरने भ्रष्टपणुं थतुंनथी ॥३३॥ योगनिरोधध्यानतो केवलीनेछे मन रोधकरण इत्यादि अनुक्रम जिनमतमांछे बाकी बीजादर्शनमांतो जेम नजरमांआवे तेमयोगनुंसमाधानकह्युंछे ॥ ३४ ॥

आज्ञापायविपाकानां संस्थानस्य च चिंतनात् ॥ धर्मध्यानोपयुक्तानां ध्यातव्यं स्याच्चतुर्विधं ॥३५॥नयभंगप्रमाणाढ्यां हेतूदाहरणान्वितां ॥ आज्ञां ध्याये ज्जिनेंद्राणा मप्रामाण्याकलंकितां ३६

अर्थ ॥ आज्ञा अपाय विपाक-अने संस्थान एचारभेदना चिंतनथकी धर्मध्यान वालायें धर्मध्यानकरवुं ॥ ३५ ॥ सातनय सप्तभंगी चारप्रमाणसहित तथाहेतु उदाहरणेसहित अनेअप्रमाणरूपदूषणेंरहितएवीजिनेश्वरनीआज्ञाध्याववीएप्रथमभेद

रागद्वेषकषायादि पीडितानां जनुष्मतां ॥ ऐहिकामुष्मिकांस्तांस्ता न्नानापायान्विचिंतयेत् ॥३७॥ ध्यायेत्कर्मविपाकं च तं तं योगानुभावजं ॥ प्रकृत्यादिचतुर्भेदं शुभाशुभविभागतः ॥३८॥

अर्थ ॥ जेजीव राग द्वेष कषायवडेपीडायाछे तेने आलोकने परलोकसंबंधीक ष्टतेवीजेपाडये चिंतवे ॥ ३७ ॥ जेयोगनाअनुभवथीथयुं अने प्रकृतिस्थिति रस प्रदेशनाबंधथी नीपनुं एहवोजेकर्मनोविपाक तेने शुभाशुभवेंहेचणथीध्यावे ॥३८॥

अर्थ ॥ जेविशेषनेअणजाणतोछे तोपणजे कदाग्रहेंरहितछे अनेजेसर्वज्ञनेसेवेछे तेपण सामान्ययोगे आश्रितछे ॥ ६३ ॥ सर्वप्रमाणमां एकसर्वज्ञतोमुख्यछे तेहनी सेवाना करनारजेटलाछे तेसर्वेतेद्विज सर्वज्ञनाजावनेपामे पणसर्वज्ञनुंमुख्यपणुं पंक्ति तो सामान्यथकीकहेछे ॥ ६४ ॥

न ज्ञायते विशेषस्तु सर्वथा सर्वदर्शिभिः ॥ अतो न ते तमापन्ना विशेष्य भुवि केचन ॥ ६५ ॥ सर्वज्ञप्रतिपत्त्यंशा तुल्यता सर्व योगिनां ॥ दूरासन्नादिभेदस्तु तद्भृत्यत्वं निहंति न ॥ ६६ ॥

अर्थ ॥ तेसर्वथाप्रकारें सर्वज्ञ सर्वदर्शीतेवडेपण विशेषतोजाणतोनथी तेथीते कोइ विशेषभूमिकाने पाम्यानथी एटले पृथ्वीमांकोइ विशेषजाणपणे सर्वज्ञपणुंपा म्यानथी ॥ ६५ ॥ सर्वज्ञपणानाजेप्रत्येक अंशछे तेसर्वेयोगीनेसरिखाछे माटेढुकडा अनेवेगलापणाना भेदथी तेहनुंसेवकपणुं कांइहणातुंनथी ॥ ६६ ॥

माध्यस्थ्यमवलंब्यैव देवतातिशयस्य हि ॥ सेवा सर्वै र्बुधैरिष्टा का लातीतोपि यज्जगौ ॥ ६७ ॥ अन्येषामप्ययं मार्गो मुक्ताविद्या दिवादिनां ॥ अभिधानादिभेदेन तत्त्वरीत्या व्यवस्थितः ॥ ६८ ॥

अर्थ ॥ माध्यस्थपणुं अवलंबीने एटलेदेवताना अतिशयनुं माध्यस्थपणुं धारी ने सर्वपंक्तितेंसेवामानीछे कालथी अतीतछे तोपणएमकहेछे ॥ ६७ ॥ बीजापणमु क्तवादीनो अनेअविद्यादिकवादी जेपरदर्शनी तेनोपण आमार्गछे एटले पूर्वेकह्योतेमा र्गछे जोपण नामादिकभेदेकरी कदापिजूदाछे तोपणतत्वरीतें जोतांएकजव्यवस्थाछे

मुक्तोबुद्धोर्हश्चापि य दैश्वर्येण समन्वितः ॥ तदीश्वरः स एव स्या त् संज्ञाभेदोत्र केवलं ॥ ६९ ॥ अनादिशुद्धइत्यादि र्योभेदो यस्य कल्प्यते ॥ तत्तत्तंत्रानुसारेण मन्ये सोपि निरर्थकः ॥ ७० ॥

अर्थ ॥ तेव्यवस्थाकहीदेखाडेछे कोइदर्शनी मुक्तिकेहेछे कोइबुद्धकहेछे कोइक अर्हंतकहेछे कोइकएश्वर्ययुक्त एटलेईश्वरकहेछे एसर्वेसर्वज्ञनीसंज्ञानाभेदछे बीजुंकांइ नथी ॥ ६९ ॥ तेमजवली अनादिशुद्धईश्वरछे इत्यादिकभेदजे परदर्शनीओकल्पेछे तेभेदसिद्धांतने अनुसारेविचारीयें तौमानवा पणनिरर्थकछे इतिभावः ॥ ७० ॥

अर्थ ॥ जेसमुद्र विविधजातिनाजेरोग तेनोजेसंबंध तेरूपीमत्स्य अने कायवायेंक री आकुळछे तथा जेमांचंचलता शून्यता अने गर्वतेरूपजेदोषतद्रूप महोटापर्वतछे एवो भवरूपसमुद्रनेचिंतवे ॥ ४५ ॥ हवेएवासमुद्रथीतरवानोउपाय तेसमकेतरूप दृढबंधनछेजिहां अने जेनेअढारहजार सिलांगरथरूपपाटीयां जडयाछे तथा तेजि हाज ज्ञानरूपचलावनार निर्यामकजेनाखवा तेणेसहितछे ॥ ४६ ॥

संवरास्ताश्रवछिद्रं गुप्तिगुप्तसमंततः ॥ आचारमंडपोद्दीप्ता प वादोत्सर्गभूद्वयं ॥४७॥असंख्यै र्दुर्धरैर्योधै र्दुःप्रधृष्यं सदाशये॥ सद्योगरूपस्तंभाग्र न्यस्ताध्यात्मसितांशुकं ॥ ४८ ॥

अर्थ ॥ वलीतेजिहाजनापाटीआनेविषेरह्याजे छिद्रोतेहनेसंवररूपीकीचक तद्रू पतेलवडेपुर्यांछे तथा मनोगुप्तिरूप गुप्तसुकानतेमार्गबतावेछे तेणेकरीतेवाहण समो चालेछे तथा आचाररूपमंडपेशोभतोथको वली तेवाहाणमांउत्सर्ग अने अपवादरू प बेजातनुंमालभरेलुंछे ॥ ४७॥ जेवाहणमां शुद्धअध्यवसायरूप घणाबलवंतसुभ टो तेराग द्वेषादिशत्रुने दुःप्रधृष्यछेएवोछे तथा भलोजेयोग तेरूपकुवजेथंभ तेनाउपर अध्यात्मरूप उज्वलसढखेंच्योछेजिहां ॥ ४८ ॥

तपोनुकूलपवनो द्भुतसंवेगवेगतः ॥ वैराग्यमार्गपतितं चा रित्रं वहनं श्रिताः ॥ ४९ ॥ सद्भावनाख्यमंजूषा न्यस्तसच्चि त्तरत्नतः ॥ यथा ऽविघ्नेन गछंति निर्वाणनगरं बुधाः ॥५०॥

अर्थ ॥ तेसमथी तपस्यारूप अनुकूल पवनप्रगटथोछे अने तेपवनेकरी संवेगगुण रूपवेगप्रगटथोछे तेणेकरी वैराग्यमार्गमां तेवाहाणचालतुंजायछे एहवुंचारित्ररूप जे वाहाणतेमांबेठाथका मुनिराजोते ॥ ४९ ॥ रुमीभावनारूप मंजूषामां शुभपणेशुभ चित्तरूपीरत्नस्थाप्युंछे जेणेएवामुनिनिर्विघ्नपणे मुक्तिरूपनगरनेपामेछे ॥ ५० ॥

यथा च मोह पल्लीशो लब्धव्यतिकरे सति॥संसारनाटकोछेदा शंकापंकाविले मुहुः ॥ ५१ ॥ सज्जीकृतस्वीयभटे नावं दुर्बुद्धि नामिकां ॥ श्रिते दुर्नीतिनौवृंद रूढशेषभटान्विते ॥ ५२ ॥

अर्थ ॥ एवातनीखबर चोरनोराजाजे मोहरूपिओपल्लीपति तेनेपडी तेवारेंते मोहजेचोरनोराजाछे तेणेविचार्युंजे रखेनेसंसाररूपनाटकनो उछेदथइजाय एवी शंकारूपजेकचरो तेमांजेपाणोथको ॥ ५१ ॥ तेमोहराजा पोतानासुभटोने सज्जक

अर्थ ॥ एकदुःखी बीजोजाणवानी इच्छावालो त्रीजोधननोअर्थी अने चोथोज्ञानी एचारप्रकारना हेअर्जुन मारासेवकोछे पणतेमध्ये एकधनार्थीविनाजे बीजात्रण जातना सेवकतेवस्तुतत्वनाजाणछे माटेधन्यछे वखाणवायोग्यछे ॥ ७७ ॥ एत्रणने धन्यकह्यातेमां पण जेनोविक्षेपशम्योछे अने नित्यभक्तिवंत एहवोज्ञानीपुरुषजे चो थो तेमोटोजाणवो तेज्ञानीअमारीपासे अत्यंतनजीकरहेछे माटेश्रेष्ठछे केमकेअंतरा त्मायेंवर्त्तेछे अनेतेनाआशयनिर्मलछे तेमाटे ॥ ७८ ॥

कर्मयोगविशुद्धस्तद् ज्ञाने युंजीत मानसं ॥अज्ञश्च श्रद्दधानश्च संशयानो विनश्यति॥ ७९ ॥निर्भयः स्थिरनासाग्र दत्तदृष्टि र्व्रते स्थितः ॥ सुखासनः प्रसन्नास्यो दिशश्चानवलोकयन् ॥ ८० ॥

अर्थ ॥ हेअर्जुन कर्मयोगें विशुद्धथको तेप्राणी ज्ञानमांपोतानुं मनजोडेछे अ नेहेअर्जुन एकमूर्खबीजो श्रद्धारहित अनेत्रीजो संशयजरेजोमाणस एत्रणेविनाश पामेछे ॥ ७९ ॥ निर्भय नाशिकानाअग्रभागनेविषे दृष्टिराखीने स्थिररहेनार तथा निरंतर व्रतमांरहेनार एहवोसुखआसनेबेठो वलीप्रसन्नमुखछे जेहनो अने एकदृष्टिरा खनार आढुंअवलुंनहीजोनार ॥ ८० ॥

देहमध्यशिरोग्रीव मवक्रं धारयन्बुधः ॥ दंतैरसंस्पृशन् दंतान् सुश्लिष्टाधरपल्लवः ॥ ८१ ॥ आर्त्तरौद्रे परित्यज्य धर्मे शुक्ले च दत्तधीः ॥ अप्रमत्तो रतो ध्याने ज्ञानयोगी भवेन्मुनिः ॥ ८२ ॥

अर्थ ॥ केड मस्तकअने कोटतेने पांसराधरतो एटले शरीरनी चपलाइवांकाइर हित एहवोडाह्यो दांतेकरीदांतने अणफरसतो एटले स्पर्शकरतोनथी अने जेनाहोठ पल्लवबेरुडीरीतेंमलेलाहोय ॥८१॥ तथा आर्त्तरौद्रध्यानछांडीने धर्मशुक्लध्यानमांबु द्धिदीधीछे अनेभावेंअप्रमत्तपणें ध्यानमांरतथको एवोजेमुनि तेनेज्ञानयोगीकेहेवो

कर्मयोगं समभ्यस्य ज्ञानयोगसमाहितः ॥
ध्यानयोगं समारुह्य मुक्तियोगं प्रपद्यते॥८३॥

अर्थ ॥ तेमुनिकर्मयोगनो अभ्यासकरी चढवानेअजमालथइ ज्ञानयोगरूपदोरडुं झालीसमाधिपणे ध्यानयोगनीशरणीयेंचडीने मुक्तियोगरूपमंदीरनेपामे ॥ ८३ ॥ इतियोगाधिकारः पंचदशमोसमाप्तः

तेनेपण धर्मराजायें हण्यो ॥ ५९ ॥ तेवारपछी साधुरूपी व्यवहारिया धर्मराजानो प्रसादजेपसाय तेथीकृतार्थथइ आनंदपामी सुखेपोतानो व्यापारकरताथया॥६०॥

विचिंतयेत्तथासर्वं धर्मध्याननिविष्टधीः ॥ इदृगन्यदपि न्यस्त मर्थजातं यदागमे ॥ ६१ ॥ मनसश्चेंद्रियाणां च जयाद्योनिर्वि कारधीः ॥ धर्मध्यानस्य स ध्याता शांतोदांतः प्रकीर्तितः ॥६२॥

अर्थ ॥ एरीतेंसर्वधारीलेवुं तेधर्मध्यानमां जेमुनिनीबुद्धिपेठीछे तेएएनेतथाएना जेवा बीजापणजेआगमसिद्धांतमां पदार्थना समूहस्थाप्याछे तेनुंचिंतनकरवुं ॥६१॥ जेमननो अनेइंद्रियनोजयकरीने निर्विकारबुद्धिवालो थयो तेनेधर्मध्याननोध्याताक ह्योछे वलीशांतदांतपणो पणतेहनेजहोय ॥ ६२ ॥

परैरपि यदिष्टं च स्थितप्रज्ञस्यलक्षणं॥घटते ह्यत्र तत्सर्वं तथा चेदं व्यवस्थितं॥६३॥प्रजहाति यदा कामान् सर्वान् पार्थ मनो गतान् ॥ आत्मन्येवात्मसंतुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥ ६४ ॥

अर्थ ॥ परदर्शनीपण स्थितप्रज्ञनुंलक्षण एमकहेछे अनेतेसर्वइहांघटेछे तेमजइ हांअवस्थितहोयतेजाणवुं ॥ ६३ ॥ हेअर्जुन जेवारेंकंदर्पनेछोडे अने मननासर्वका मनेत्यागी आत्मसंतोषीथइने आत्मानेविषेरहे तेप्राणीने तेवारेंस्थितप्रज्ञावंतकहियें

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहा ॥ वीतरागभयक्रोध स्थितधीर्मुनिरुच्यते ॥ ६५ ॥ यः सर्वत्रानभिस्नेह स्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभं ॥ नाभिनंदति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥६६॥

अर्थ ॥ जेहनेदुःखमां उद्वेगनथी अनेसुखनीइछानथी तथाजेहना राग भय अनेक्रोधगयाछे तेमुनिने स्थितबुद्धिवालो कहियें ॥ ६५ ॥ जेनेविषयउपर स्नेहन थी जेवुंतेवुं शुभअशुभ मलेतोपण रागद्वेषनथीहेअर्जुन तेनीबुद्धिरुडीछे एमजाणवुं

यदा संहरते चायं कूर्मोंगानीव सर्वशः॥ इंद्रियाणींद्रियार्थेभ्य स्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ६७ ॥ शांतोदांतो भवेदीदृ गात्माराम तया स्थितः॥ सिद्धस्य हि स्वभावोयः सैव साधकयोग्यता॥६८॥

अर्थ ॥ हेअर्जुन जेमकाचबो अंगनेसंहरी संकोचीराखे तेमइंद्रिओनेविषयथी पाछीवाले तेनीबुद्धिमोटीछे ॥ ६७ ॥ तेशांतगुणअने दांतगुणीहोय तेनेआत्माराम

वाजतोडवा इत्यादिकने पंडितआर्त्तध्यानना लक्षणकहेछे ॥ ७ ॥ असेमंदबुद्धिछैयें एमकहीने पोतानुंकार्यनिंदे असेशुंपालीशुं मुक्तिमार्गतोमोहोटोछे एमप्रशंसाकरे एम विस्मितथको लोकपासे मांगतोफरे इत्यादिकदुर्जननीरीतछे ॥ ८ ॥

प्रमत्तश्चेंद्रियार्थेषु गृद्धो धर्म्मपराङ्मुखः ॥ जिनोक्तमपुरस्कुर्व न्नार्त्तध्याने प्रवर्त्तते ॥ ए ॥ प्रमत्तांतगुणस्थानानुगमे तन्महात्म ना ॥ सर्वप्रमादमूलत्वा त्त्याज्यं तिर्य्यग्गतिप्रदं ॥ १० ॥

अर्थ ॥ जेप्रमादीहोय विषयमांलीनहोय धर्मथीवलटोहोय जिनवाणीनेगोपवे तेवोपुरुष आर्त्तध्यानमांप्रवर्त्ते ॥ ए ॥ माटेएध्यानउपला गुणगाणापामतांथकां प्रमा दमांपाडे अनेएध्यान छठागुणठाणालगेंरहे माटेमोटामुनियें सर्वप्रमादनुंमूल तथा तिर्यंचगतिपमाडे एवुंजाणीनेएध्याननेछोडवुं ॥ १० ॥

निर्दयं वधबंधादि चिंतनं निबिडक्रुधा ॥ पिशुनासत्यमिथ्या वाक् प्रणिधानं च मायया ॥ ११ ॥ चौर्य्यधीनिरपेक्षस्य तीव्रक्रो धानिलस्य च ॥ सर्वाभिशंकाकलुषं चित्तं च धनरक्षणे ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवेजेनिर्दयहोय जीवनोवध बंधनादिकचिंतवे आकरो क्रोधीहोय चाडी ओहोय जुठोबोले मिथ्यात्वनुं वचनबोले मायाकपटधरे ॥ ११ ॥ चोरीकरनार प रमार्थरहित क्रोधरूपअग्नियें धमधमतोरहे धनसंचयकरनार धनमेमाटीराखे पण शंकायेंमेलुमनराखनार एटलेरखेने कोइमारुंधनजुए अनेलेइजाय ॥ १२ ॥

एतत्सदोषकरण कारणानुमतिस्थिति ॥ देशाविरतिपर्यंतं रौ द्रध्यानं चतुर्विधं ॥ १३ ॥ कापोतनीलकृष्णानां लेश्यानामत्र संभवः ॥ अतिसंक्लिष्टरूपाणां कर्मणां परिणामतः ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एरीतेंएध्याननेकरवे करावचे अने अनुमोदवानीस्थितियें करीएध्यान दो षनुंकारणछे एध्यानचोथा अविरतिगुणठाणा अनेपांचमां देशविरति गुणठाणासुधी होयएरीतेंरौद्रध्यानना चारभेदकह्या ॥ १३ ॥ कापोत नीलअनेकृष्ण एत्रणलेश्यानो इहांसंभवछे एअति संक्लिष्टरूपजे कर्मतेनापरिणामथीहोयछे ॥ १४ ॥

उत्सन्न बहुदोषत्वं नानामरणदोषता ॥ हिंसादिषु प्रवृत्तिश्च कृ त्वाघं स्मयमानता॥१५॥ निर्दयत्वाननुशयौ बहुमानः परापदि॥ लिंगान्यत्रेत्यदोधीरै स्त्याज्यं नरकदुःखदं ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ अर्थ अक्षर अने योगएनाजेविचार तेनुंमाहोमाहें संक्रमण तेनुनाम पृथ क्त्व कहियें तेकेवुंछे केइव्यगुणअनेपर्याय तेमांगतिछे जेनीएवुंछे एपेहेलोनेद ॥ ७५ ॥ त्रणयोगें उपरम्या जेयोगी तेसाधुनेवितर्कादिक थोडाचंचलतरंगछे जेमां एहवोजे स मुद्र तेहोजनोजेजाव तेवी दशासरखुंछे ॥ ७६ ॥

एकत्वेन वितर्केण विचारेण च संयुतं॥ निर्वातस्य प्रदीपाभं
द्वितीयं त्वेकपर्ययः ॥७७॥ सूक्ष्मक्रियानिवृत्ताख्यं तृतीयं तु
जिनस्य तत्॥ अर्धरुद्धांगयोगश्च रुद्धयोगे द्वयस्य च॥ ७८॥

अर्थ ॥ एकत्ववितर्कविचारनामेजे बीजोपायो तेपवनरहितजे दीवो तेसरखो छे एबीजोपायोते एकपर्यायरूपछे ॥ ७७ ॥ सूक्ष्मक्रियानिवृत्तिनामे त्रीजोपायो ते केवलीनेहोय तेमांबादरजे काययोगतेने अर्धरुंध्योछे अने मन तथावचनएबेयो गनेसमस्तरुंधे तेवारें त्रीजोपायोध्यावे ॥ ७८ ॥

तुरीयं तु समुच्छिन्न क्रियमप्रतिपाति तत्॥ शैलवन्निःप्रकंपस्य
शैलेश्यं विश्ववेदिनः ॥ ७९॥ एतच्चतुर्विधं शुक्ल ध्यानमत्र द्व
योः फलं॥ आद्ययोः सुरलोकाप्ति रंत्ययोस्तु महोदयः॥८०॥

अर्थ ॥ हवेचोथापायामां क्रियाछेदीछे अनेपोतेंपर्वतनीपरें अप्रतिपातिथयोछे एहवो विश्ववेदी तेजगतना सर्वनावनो जाणजे केवली तेनिःप्रकंप पर्वतनीमाफक घनीनूतथयाते शैलेशीकरण करे ॥ ७९ ॥ एचारप्रकारनुं शुक्लध्यानछे तेनुंफल कहेछे इहांप्रथम बेपायामां जेकालकरेते स्वर्गगतिपामे अने उपरना बेपायामां कालकरवाथी मोक्षपामे ॥ ८० ॥

आश्रवापायसंसारा नुन्नावन्नवसंततीः॥ अर्थे विपरिणामं वा
नुपश्येच्छुक्लविश्रमे ॥ ८१ ॥ द्वयोः शुक्ला तृतीये च लेश्या सा
परमामता ॥ चतुर्थशुक्लन्नेदस्तु लेश्यातीतःप्रकीर्तितः॥ ८२॥

अर्थ ॥ शुक्लध्याननेविश्रामें आश्रवनोनाशदेखे संसारनास्वरूपने नवनीपरंपरा देखे अनेअन्यपदार्थे आत्मानुंविपरिणामपणुंजुए ॥ ८१ ॥ एशुक्लध्यानना प्रथमबे पायामां बेलेश्या तथात्रीजेपायेतो परमउत्कृष्ट शुक्ललेश्याकहिछे अने चोथोपायोजे छे तेतो लेश्यायेंरहितकह्योछे ॥ ८२ ॥

असंशयं महाबाहो मनोदुर्निग्रहं चलं॥अभ्यासेन च कौंतेय वै
राग्येण चगृह्यते ॥ ३३ ॥ असंयतात्मनो योगो दुःप्राप्य इति
मे मतिः ॥ वश्यात्मना तु यतता शक्योवाप्तुमुपायतः ॥ ३४ ॥

अर्थ ॥ श्रीकृष्णकहेछे हेमहाबाहोके० मोटीछेबाहुजेनी एवाहेअर्जुन खरेख रुंमनचपलछे तेनोनिग्रहकरवो तोकठणछे तोपणहेकुंतीनापुत्र हेअर्जुन अभ्यास अने वैराग्येंकरीने मनवशथाय एवुंछे. ॥ ३३ ॥ हेअर्जुन जेनेपोतानुं आत्मावश नथी एवोजेपुरुष तेनेध्यानयोगपामवो दुःकरछे एवीमारीमतिछे पणजेणेआत्माने वशकीधोछे तेनेउद्यमेंकरी अने अभ्यासेंकरी ध्यानयोगपामवो सुलभछे ॥ ३४ ॥

सदृशप्रत्ययावृत्या वैतृष्ण्याद्बहिरर्थतः॥ एतच्च युज्यते सर्वं भा
वनाभावितात्मनि ॥ ३५ ॥ स्त्रीपशुक्लीबदुःशील वर्जितस्थान
मागमे ॥ सदा यतीनामाज्ञप्तं ध्यानकाले विशेषतः ॥ ३६ ॥

अर्थ ॥ सरखोप्रत्ययजे विश्वासतेणेसहित अनेबाह्यपदार्थनी तृष्णायेंरहित तथा शुद्धभावनायेंभावितपुरुषने एआत्मावशकरवुं सर्वप्रकारेंघटेछे॥ ३५॥स्त्री पशु नपुंसक दुःशीलाइ रहित एहवीवस्तीमुनियें सेववी एमआगममां मुनिनेसदाय प्रभुएआज्ञा करीछे तेमांपण ध्यानवेलायेंतो विशेषपणे कहिछे एमजाणवुं॥ ३६ ॥

स्थिरयोगस्य तु ग्रामे विशेषः कानने वने॥ तेन यत्र समाधानं
स देशो ध्यायतो मतः॥ ३७ ॥ यत्रयोगसमाधानं कालोपीष्टः
स एव हि॥ दिनरात्रिक्षणादीनां ध्यानिनोनियमस्तु न ॥ ३८ ॥

अर्थ ॥ स्थिरयोगवालायें गाममां अने विशेषेकरीने वगडामां तथा वनमांजिहां चित्तसमाधानीमांरहे तेस्थानकेंध्यानकरवुं ॥ ३७ ॥ जेवखतयोगस्थिररहे तेकाल रुडोसमजवो पणध्यानवालाने दिवस अथवा रात्रीनो नियम नथी ॥ ३८ ॥

यैवावस्था जिता या तु न स्याद्ध्यानोपघातिनी॥ तया ध्यायेन्निष
ण्णो वा स्थितो वा शयितोथवा ॥ ३९॥ सर्वासु मुनयोदेशकाला
वस्थासु केवलं ॥प्राप्तास्तन्नियमो नासां नियता योगसुस्थिता॥३०

अर्थ ॥ ध्यानवंतमुनिने जेअवस्थायेंजेठेकाणे अने जेवेलायें ध्याननेविघातन लागे तेठेकाणे तेवेलायें तेरीतेंबेठा उभा अथवा सुताध्यानकरवुं ॥३९॥सर्वदेशकाल अवस्थानेविषेरह्याजे मुनितेनेकांइनियमनथी.केमकेतेनियतपणेयोगमांस्थिररह्याछे

या निशा सकलभूतगणानांध्यानिनो दिनमहोत्सव एषः ॥
यत्र जाग्रति च तेऽभिनिविष्टा ध्यानिनो भवति तत्र सुषुप्तिः॥३॥

अर्थ ॥ सर्वप्राणीने निद्रामांजे रात्रीजायछे तेध्यानदिशावालाने एरात्रीते जागृतमहोत्सवनो दिवसछे अनेसंसारीजीव विषयमांलीनथका जेवेलायेंजागेछे तेवेला ध्यानवालामुनिराजने शयनरूपछे ॥ ३ ॥

संप्लुतोदकइवांधुजलानां सर्वतः सफलकर्म्मकलानां ॥
सिद्धिरस्ति खलु यत्र तदच्चै ध्यानमेव परमार्थनिदानं॥४॥

अर्थ ॥ जेमअवडकुवानुं पाणी मोहोडुंरहेछे तेमजेमांसर्वथकी सकलकर्मनाफलनीसिद्धिएहवोजे ध्यानरूपघट जेजलमां रमतोहोय त्यांजलनिर्मलहोय माटेसकलक्रियाफलनी सिद्धिध्यानथीछे ध्यानतेपरम अर्थनुं कारणछे ॥ ४ ॥

बध्यते नहि कषायसमुत्थै र्मानसैर्नततभूपनमद्भिः ॥
अत्यनिष्टविषयै रपि दुःखै र्ध्यानवान्निभृतमात्मनि लीनः॥ ५ ॥

अर्थ ॥ जेध्यानवान पुरुषते कषायजनित मनेकरी बंधातोनथी तेहनेजोराजानीश्रेणी आवीनमस्कारकरेतोपणतेनुंचित्तडोहोलायनही अनेअनिष्टविषयनीप्राप्तिनादुःखेकरीपणनिश्चलपणु छोडेनहि तेनेंआत्मानेविषे लीनकहिये ॥ ५ ॥

स्पष्टदृष्टसुखसंभृतमिष्टं ध्यानमस्तु शिवशर्म गरिष्टं ॥ना
स्तिकस्तु निहतो यदि न स्या देवमादिनयवाङ्मयदंभात्॥६॥

अर्थ ॥ जेनेप्रगटदीठुं अनेमोक्षसुखेनलुं एवुंजेध्यान तेइष्टछे एटले मोक्षसुखथी पणध्यान मोटुंछे पणजिहांसुधी शास्त्रनादंडथकी नास्तिकभावने अतिशयपणे हण्योनथी तिहांसुधीनथी पणनास्तिकभावेंरहित जेज्ञानतेमोटुंछे ॥ ६ ॥

यत्र नार्कविधुतारक दीपज्योतिषां प्रसरतामवकाशः ॥ ध्यान
भिन्नतमसामुदितात्म ज्योतिषां तदपि भाति रहस्यं ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जेनीआगल स्वर्गेनुंतेज तथाचंद्रमा अनेतारानुंतेज वलीदीपकनातेजनो प्रकाशअल्पछे एवुंजेध्यान तेणेकरीने भेदाणुंछेअज्ञानरूप अंधकारजेप्राणीनो एहवा मुदितआत्मावालानुंतेज तेगुप्तपणे पणआत्मानेविषे शोभेछे ॥ ७ ॥

योजयत्यमितकालवियुक्तां प्रेयसीं शमरतिं त्वरितं यत् ॥
ध्यानमित्रमिदमेव मतं नः किंपरैर्जगति कृत्रिममित्रैः ॥ ८ ॥

उत्पादस्थितिभंगादि पर्यायैर्लक्षणैः पृथक्॥ भेदैर्नामादिभिर्लो
क संस्थानं चिंतयेद् भृतं ॥ ३ए॥ चिंतयेत्तत्र कर्तारं भोक्तारं नि
जकर्मणां ॥ अरूपमव्ययं जीव मुपयोगस्वलक्षणं ॥ ४० ॥

अर्थ ॥ उत्पाद व्यय अने ध्रुवकालतथाभंगादि पर्यायलक्षणेकरी जुदाजुदाभेदें नामस्थापना इव्यभावभेदेंकरी भेदउदराज्यलोकनुं संस्थानधारीनेचिंतवे ॥३ए॥ तिहांपोतानांकर्मनो कर्त्ताभोक्ता आत्माछे एमचिंतवें एजीवअरूपी अविनाशी अनेउ पयोगलक्षणेयुक्तछे एमचिंतवें ॥ ४० ॥

तत्कर्मजनितं जन्म जरामरणवारिणा ॥ पूर्णं मोहमहावर्त्त का
मौर्वानलभीषणं ॥ ४१॥ आशामहानिलापूर्ण कषायकलशो
च्छलत् ॥ असद्विकल्पकल्लोल चक्रं दधतमुध्धतं ॥ ४२ ॥

अर्थ ॥ हवेकर्मजनितरूप समुइवखाणेछे तेजन्मजरा अने मरणरूप जलें पूर्णभरयोछे तथा मोहरूपमोटा आवर्त्त तद्रूपभमरी अने कामरूपवडवानलें करीभ यंकर ॥ ४१ ॥ आशारूप प्रचंडवायुयें भरपूर कषायरूप चारकलशायेंयुक्त अने मा ठाविकल्परूपमहाउद्धत कल्लोलजिहांवछलेछे एवोभवसमुइ भयंकरछे ॥ ४२ ॥

हृदिस्रोतसिकावेला संपातडरतिक्रमं ॥ प्रार्थनावल्लिसंतानं
डुःपूरविषयोदरं ॥ ४३ ॥ अज्ञानडर्दिनं व्याप द्विद्युत्पातोभव
भयं ॥ कदाग्रहकुवातेन हृदयोत्कंपकारिणं ॥ ४४ ॥

अर्थ ॥ वलीतेसमुइमां मनमां श्रोतसिका एटलेजे हर्षतथाशोकनुंभरावबुं तेरूपवें लाएटलेभरतिकहियें माटे जोएमांपडयोतो पढीनिकलवुंघणुकठणछे अने याचनारूप सेवालनो समूहछे जेनेविषे तथाडुःखेपूर्णथाय एवोविषयरूप मध्यभागछेजेनुं ॥४३॥ जिहांअंधकारेव्याप्युं एवुंअज्ञानरूपवादलुंछे तथा जेमांआपदारूप वीजलीपडवानो भयछे अने कदाग्रहरूपपवन उपद्रवथयोछे तेणेकरीने देखताज्ञान नजरवालानुंतो हैयुंधुजेएहवो कर्म्मजनितसमुइविहांमणोछे ॥ ४४ ॥

विविधव्याधिसंबंध मत्स्यकछपसंकुलं ॥ चिंतयेच्च भवांभो
धि चलहोषाद्रिडर्गमं॥ ४५ ॥ तस्य संतरणोपायं सम्यक्त्व
दृढबंधनं॥ बहुशीलांगफलकं ज्ञाननिर्यामिकान्वितं ॥ ४६ ॥

तेमजलीनाअधरजेहोव तेमांपणजेरसनथी तेरसध्यानथीप्रगटयो अनेसंतोषथी वि स्तर्यो एहवोजेकोइकअपूर्वरस तेनेतोकोइक पंडितजजाणेछे ॥ १३ ॥

इत्यवेत्य मनसा परिपक्क ध्यानसंभवफले गरिमाणं ॥ तत्र य स्य रतिरेन मुपैति प्रौढधामभृतमाशु यशः श्रीः ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एप्रकारें मनेकरीनेपरिपक्कजे ध्यानतेथीप्रगटथुंजे फलतेहनेमोटाइपणे जाणीनेतेमांजेरतिपामे तेमहातेजवंत कांतिवानपुरुषछे अनेतेनेज यशलक्ष्मीवरशे ॥ १४ ॥ इतिश्रीध्यानस्तुत्यधिकारः सप्तदशःसमाप्तः

इतिश्रीमहोपाध्याय श्रीयशोविजयगणि विरचिते अध्यात्म सारप्रकरणे पंचमपरिछेदः तेमां पनरमांना ७३ सोल मांना ७६ अने सतरमाना १४ मलीने१ ७३ काव्यछे

आत्मध्यानफलं ध्यान मात्मज्ञानं च मुक्तिदं ॥ आत्मज्ञानाय तन्नित्यं यत्नः कार्यो महात्मना ॥ १ ॥ ज्ञाते ह्यात्मनि नो भूयो ज्ञातव्यमवशिष्यते॥अज्ञानं पुनरेतस्मिन् ज्ञानमन्यन्निरर्थकं॥२॥

अर्थ ॥ आत्माने ध्याननुंफलतेध्यानछे पणआत्मज्ञानहोय तेवारेंजतेनेमुक्ति आपे माटेज्ञानतेमोटुंछे तोमोटापुरुषें आत्मज्ञानभणी उद्यमकरवो ॥ १ ॥ जेणे आत्मानेजाण्यो तेनेफरीबीजुंकइजाणवानुंरह्युंनथी अनेजिहांसुधी आत्मानेजाण्यो नथी तिहांसुधी बीजुंसर्वजाण्युं तेनिरर्थकछे ॥ २ ॥

नवानामपि तत्वानां ज्ञानमात्मप्रसिद्धये ॥ येनाजीवादयो भावाः स्वभेदप्रतियोगिनः ॥ ३ ॥ श्रुतोह्यात्मपराभेदो नुभूतः संस्तुतो पि च ॥ निसर्गादुपदेशाद्वा वेत्ति भेदं तु कश्चन ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ नवेतत्वनुंपणजे जाणपणुंकरवुंछे तेपणआत्मज्ञान प्रगटकरवानेअर्थेछे कारणके अजीवादिकजेभाव तेपणआत्मज्ञानवडेशमायछे ॥ ३ ॥ पोतानोअनेपा रकोजेभेद तेहनेभेदरूपेंसांभल्यो अनुभव्यो परिचयथयोथको तेहजे अथवा उप देशथकी कोइकभेदनेजाण्यो ॥ ४ ॥

रीने दुर्बुद्धिनामे जेनावातेमां पोतेबेठोथको दुष्टाचाररूपबीजाजेनावछे तेमांवलीवी जायणासुनटोने बेसारीनेपोतें नवसमुद्रमांआव्यो ॥ ५२ ॥

आगच्छत्यथधर्मेश नटौघे रणमंमपं ॥ तत्वचिंतादिनाराच सज्जीनूते समाश्रिते ॥ ५३ ॥ मिथोलग्ने रणावेशे सम्यग् द र्शनमंत्रिणा ॥ मिथ्यात्वमंत्रिविषमा प्राप्यते चरमा दशा॥५४॥

अर्थ ॥ तेवखते धर्मराजाना सुनटोनाजेथोकते मोहनासैन्यनेजोइने रणमंडप नूमीमांआवी तत्वचिंताप्रमुखजे बाहणतेलेइने सज्जथयाथका ॥ ५३ ॥ तेपछीबेउ नोमाहोमाहें युद्धचालवालाग्युं तेमांसम्यग्दृष्टिजेप्रधान तेऐमिथ्यात्वप्रधाननेविष मचरमदशाके० मरणदशापमाडी एटले मृत्युप्रायकीधोछे ॥ ५४ ॥

लीलयैव निरुध्यंते कषायचरटाअपि ॥ प्रशमादिमहायोधैः शीलेन स्मरतस्करः ॥ ५५ ॥ हास्यादिषट्कलुंटाक वृंदं वैरा ग्यसेनया ॥ निजादयश्च ताड्यंते श्रुतयोगादिन्निर्नटैः ॥५६॥

अर्थ ॥ अने उपशमादिक महासुनटे लीलायेंकरीने कषायरूप चोरटानेरोक्या तथा शीलसुनटे कंदर्परूपचोरनेजीत्यो ॥ ५५ ॥ वैराग्यनीसेनायेंकरीने हास्यादिक जे छचोरतेने जीत्या अने ज्ञानयोगादिकजेसुनटो तेऐनिद्रादिकने मारीकाढ्या ५६॥

नटाभ्यां धर्मशुक्लाभ्या मार्त्तरौद्राभिधौ नटौ ॥ निग्रहेणेंद्रियाणां च जीयते चागसंयमः ॥ ५७ ॥ क्षयोपशमनश्चक्षु दर्शनावरणा दयः ॥ नश्यत्यशातसैन्यं च पुण्योदयपराक्रमात् ॥ ५८ ॥

अर्थ ॥ धर्मध्यानअनेशुक्लध्यान एबेसुनटें आर्त्तअने रौद्र एबेसुनटनेहण्या तथा पांचइंद्रियनानिग्रहरूपसुनटें जतावलेंकरी असंयमरूपसुनटनेजीत्यो ॥ ५७ ॥ दर्श नावर्णिना क्षयोपशमसुनटें चक्षुदर्शनावरणादिक योद्धाओनेमार्या वलीपुण्योद यनापराक्रमथी अशातारूपसैन्य नासीगयुं ॥ ५८ ॥

सद्वेषगजेंद्रेण रागकेसरिणा तथा ॥ सुतेनमोहनूपोपि धर्मनूपेन हन्यते ॥ ५९ ॥ ततः प्राप्तमहानंदा धर्म्मे नूपप्र सादतः ॥ यथाकृतार्था जायंते साधवो व्यवहारिणः ॥ ६० ॥

अर्थ ॥ हवे सेवटेद्वेषरूपहाथीयेंवेगो तथा रागरूपसिंहेंसहित एहवो मोहराजा

मन्यते व्यवहारस्तु भूतग्रामादि भेदतः ॥ जन्मादेश्च व्यवस्थातो मिथोनानात्वमात्मनां ॥ १३ ॥ नचैतन्निश्चये युक्तं भूतग्रामो य तो खिलः ॥ नामकर्मप्रकृतिजः स्वभावो नात्मनः पुनः ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ जीवसमूहनाभेदथी तथाबालजुवान वृद्ध एअवस्थावडेमाहोमांहे विचित्रपणुंजणायछे एमव्यवहारनयवालोमानेछे ॥ १३ ॥ पणएवातनिश्चयनयवालो मानतोनथी तेएमकेहेछेके एजीवनेसर्वअवस्था नामकर्मना स्वभावथीप्रगटेछे पणए आत्मानोमूलस्वभावनथी ॥ १४ ॥

जन्मादिकोपि नियतः परिणामोहि कर्मणां ॥ न च कर्मकृतोभेदः स्यादात्मन्यविकारिणि ॥ १५ ॥ आरोप्य केवलं कर्म कृतां विकृतिमात्मनि ॥ भ्रमंति भ्रष्टविज्ञानभीमे संसारसागरे ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ जन्मजरादिक परिणाम कर्मनेवशछे अनेआत्मातो अविकारीछे तेथी कर्मनोभेद आत्मानेसंभवेनही केमकेएआत्मस्वभावनही ॥ १५ ॥ जन्मजरादिक कर्मप्रकृतिछे अनेकर्मजनित भावनेकेवल आत्मानेविषे आरोपीने भ्रष्टज्ञानी भयंकरसंसारसमुद्रमां भमसे ॥ १६ ॥

उपाधिभेदजं भेदं वेतज्ञ स्फटिके यथा ॥ तथा कर्मकृतं भेद मात्मन्येवाभिमन्यते ॥ १७ ॥ उपाधिकर्मजो नास्ति व्यवहारा स्त्वकर्मणः ॥ इत्यागमवचो लुप्त मात्मवैरूप्यवादिनः ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ स्फटिकमां जेममूर्खप्राणी भेदमानेछे तेमउपाधिभेदें आत्मानेविषे प्रगटथोजे कर्मकृतभेदते एमानेछे ॥ १७ ॥ पोतानाव्यवहारथी कर्मजनित जेउपाधी ते नथीएममानता आत्मविरूपवादी आगमनुंवचन लोपेछे ॥ १८ ॥

एकक्षेत्रस्थितोप्येति नात्मा कर्मगुणान्वये ॥ यथा भव्यस्वभावत्वा शुद्धो धर्मास्तिकायवत् ॥ १९ ॥ यथा तैमिरकश्चंद्र मप्येकं मन्यतेद्विधा ॥ अनिश्चयकृतोन्माद स्तथात्मानमनेकधा ॥ २० ॥

अर्थ ॥ धर्मास्तिकायनीपरें एकक्षेत्रमां रह्योछेतोपण कर्मगुणनासंयोगने पामतो नथी एवोआत्मा रुडास्वभावथी शुद्धछे ॥ १९ ॥ जेमतिमिरकेण ग्रहणथेलो एक चंद्रनेबेचंद्रमानेछे तेमनिश्चयनयनी वातविनानोजे प्राणीते उन्मादममत्वेकरी आत्माने अनेकप्रकारें मानेछे ॥ २० ॥

वडे आत्मामांरह्यो कहियें सिद्धिनोस्वनावपण एवोजछे अने एवाजेहोयतेनेजसाध कतापणानी योग्यता कहियें ॥ ६८ ॥

ध्याता यमेव शुक्लस्याप्रमत्तः पादयोर्द्वयो॥ पूर्वविद् योग्ययोगी व केवली परयोस्तयोः ॥ ६९ ॥ अनित्यत्वाद्यनुप्रेक्षा ध्यानस्यो परमेपि हि॥ नावयेन्नित्य मत्रांतः प्राणाध्यानस्य ताःखलु॥७०॥

अर्थ ॥ एथणीशुक्ल ध्याननाबेपायानो अप्रमत्तथको ध्यावनारथाय पूर्वधरपणे योगीहोय अथवा अयोगीहोयपण केवलीपणेहोय पछेशेषबेपायाने ध्यावे ॥६९॥ ध्याननेविरामकालें अनित्यत्वादिनावना ग्रंमेनही विभ्रमरहितपणे नित्यनावनाना वे तेध्यानना प्राण जाणवा ॥ ७० ॥

तीव्रादिनेदनाजः स्युर्लेश्यस्तिस्त्र इहोत्तराः ॥ लिंगान्यत्राग मश्रद्धा विनयः सद्गुणस्तुतिः ॥७१॥ शीलसंयमयुक्तस्य ध्यायतोध र्ममुत्तमं ॥ स्वर्गप्राप्तिफलं प्राहुः प्रौढपुण्यानुबंधिनीं ॥ ७२ ॥

अर्थ ॥ इहांउत्तरजे पाछलीत्रणलेश्याउ एटले तेलो पद्म अने शुक्ल एत्रणलेश्या जेछे ते तीव्र तीव्रतर अनेतीव्रतम एत्रणनेदनीनजनारीछे तेनाएचिन्हछेजे आगमनी श्रद्धा विनय रुडागुणनीस्तवनाकरवी ॥ ७१ ॥ शील अने संयमयुक्तप्राणीने उत्तम धर्मध्यान ध्यातेथके तेहने स्वर्गप्राप्तिफलकह्युंछे तेमोटापुण्यानुबंधी पुण्यनेपामे॥७२॥

ध्यायेच्छुक्लमथक्षांति मृदुत्वाजीवमुक्तिनिः ॥ छद्मस्थोणौमनो धृत्वा व्यपनीय मनो जिनः ॥७३॥ सवितर्कं सविचारं सपृथ क्त्वं तदादिमं ॥ नानानयाश्रितं तत्र वितर्कपूर्वकश्रुतं ॥ ७४ ॥

अर्थ ॥ जेसमतापणे तथानिष्कपटपणे अनेजीवनमुक्तपणे एवीस्थितिराखीने शुक्लध्याननेध्यावे अनेछद्मस्थपणे आत्मामां मनधरीनेरहे तेवारेंरागद्वेषनेजीते॥७३॥ सपृथक्त्व सवितर्क सविचार तेमांआदनोजेसवितर्क एनामेशुक्लध्याननो पेहलोपायो तेनेनानाविध नयेसहित विचारपूर्वक श्रुतेंकरीध्याववुं ॥ ७४ ॥

अर्थव्यंजनयोगानां विचारोन्योन्यसंक्रमः॥ पृथक्त्वं द्रव्यप र्याय गुणांतरगतिः पुनः ॥ ७५ ॥ त्रियोगयोगिनः साधो र्वितर्का द्यन्वितं ह्यदः॥ ईषच्चलत्तरंगाऽब्धेः क्षोनानावदशानिनं॥७६॥

मध्याह्ने मृगतृष्णायां पयःपूरो यदेक्षते ॥ तथा संयोगजः सर्गो विवेकख्यातिविप्लवे ॥ २९ ॥ गंधर्वनगरादीनामंबरेऽमंबरो यथा ॥ तथा संयोगजः सर्वो विलासो वितथाकृतिः ॥ ३० ॥

अर्थ॥ जेममध्याह्ने मृगतृष्णावमें पृथ्वीउपर जलपूरदेखायछे तेमसंयोगेंउपनी जे सृष्टितेविवेकनी ख्यातीयेंनाशदेखायछे ॥ २९ ॥ जेमगंधर्व नगरवमेंआकाशें आमंबरजणाय तेमसंयोगेंप्रगटथाजे सर्वविलासते तेजुगछे ॥ ३० ॥

इतिशुद्धनयायत्त मेकत्वं प्राप्तमात्मनि ॥ अंशादिकल्पनाप्यस्य नेष्टा यत्पूर्णवादिनः ॥ ३१ ॥ एकआत्मेति सूत्रस्याप्ययमेवाशयोमतः॥ प्रत्यग्ज्योतिषमात्मानमाहुः शुद्धनयाः खलु॥३२

अर्थ ॥ एरीतेंशुद्धनयेंजे एकत्वपणुंथयुं तेआत्मानेविषे पाम्युंएनेअंशादिकनीजे कल्पनातेपूर्णवादिने वाहालीनथी ॥ ३१ ॥ सूत्रमांएगेआया एवोजेपाठछे तेएजआशयेंकह्योछे एकप्रगटज्योतिरूपजे आत्मातेजरूपछे एमशुद्धनयवालाकेहेछे ॥ ३२ ॥

प्रपंचसंचयक्लिष्टान्मायारूपाद्बिभेमि ते ॥ प्रसीद भगवन्नात्मन् शुद्धरूपं प्रकाशय ॥ ३३ ॥ देहेन सममेकत्वं मन्यते व्यवहारवित् ॥ कथंचिन्मूर्ततापत्ते र्वेदनादिसमुद्भवात् ॥ ३४ ॥

अर्थ ॥ निश्चयनयकहेछेके प्रपंचसंचयवडे संक्लिष्टएटले दुःखरूपएवुं जेएमायारूपछे तेथकी हेभगवन् हेआत्माहुं बीहुंछुं माटेप्रसन्नथाओ अनेशुद्धरूप प्रकाशकरो ॥ ३३ ॥ कोइकप्रकारेंरूपीपणुं पाम्योजे आत्मातेनेवेदनादिक उपजेछे माटे व्यवहारनयवालो शरीरसाथें आत्मानुंएकत्वपणुं मानेछे ॥ ३४ ॥

तन्निश्चयो न सहते यदमूर्त्तो न मूर्त्ततां ॥ अंशेनाप्यवगाहेत पावकः शीततामिव ॥ ३५ ॥ उष्णस्याग्नेर्यथा योगाद् घृतमुष्णमिति भ्रमः ॥ तथामूर्त्तांगसंबंधादात्मा मूर्त इति भ्रमः॥३६॥

अर्थ ॥ पणतेवातनिश्चयवालो सहीशकतोनथी जेमअग्निशीतलता पामतोनथी तेमजेअरूपीआत्माछे तेअंशेकरीनेपणरूपीपणाने पामतोनथी ॥ ३५ ॥ जेमबलताअग्निनेसंयोगें घृतउष्णथयुं एवोभ्रमछे तेमरूपीशरीरने संयोगें आत्मापणरूपीदीसेछे एपणभ्रमणाजदेखायछे ॥ ३६ ॥

लिंगं निर्मलयोगस्य शुक्लध्यानवतोऽवधः॥ असंमोहो विवेकश्च व्युत्सर्गश्चाभिधीयते ॥ ७३ ॥ अबंधाद्रुपसर्गेभ्यः कंपते न बिभेति च ॥ असंमोहान्न सूक्ष्मार्थे मायास्वपि च मुह्यति ॥ ७४॥

अर्थ ॥ शुक्लध्यानवालाने निर्मलयोगहोय तेनालक्षणकहेछे अहिंसकहोय मोहरहित विवेकीहोय अनेत्यागबुद्धियें युक्तहोय ॥ ७३ ॥ वलीअबंधीथयो माटे उपसर्गअनेपरिसह तेथीकंपेनही तथाबीहेपणनही एअहिंसकलक्षणहोय तथासूक्ष्मअर्थमांछे वलीमायामांमुझायनही एअसंमोहएटले मोहरहितनुं लक्षणकह्युं ॥ ७४ ॥

विवेकात्सर्वसंयोगा भिन्नमात्मानमीक्षते ॥ देहोपकरणासंगो व्युत्सर्गाज्जायते मुनिः ॥ ७५ ॥ एतद्ध्यानक्रमं शुद्धं मत्वा भगवदाज्ञया ॥ यः कुर्यादेतदाभ्यासं संपूर्णाध्यात्मविद्भवेत् ॥ ७६ ॥

अर्थ ॥ सर्वसंयोगथी आत्मानेजूदोदेखे एविवेकनुंलक्षणछे देहतथाउपगरणनीत्यागबुद्धियें असंगानुष्ठान वर्त्तेछे एव्युत्सर्गनुंलक्षणछे एचारलक्षण ६६मां श्लोकमांकह्याछे तेनोएअर्थविवरीने कह्यो एलक्षणेजेमुनिहोयते ज्ञानपणुपामे ॥ ७५ ॥ एरीतें ध्याननोजेअनुक्रम तेशुद्धरीतें जाणीनेप्रभुनी आज्ञाप्रमाणे एनो अभ्यास जेकरशे तेसंपूर्णआध्यात्म ज्ञानीथासे ॥ ७६ ॥ इतिध्यानाधिकारःषोडशः

---

यत्र गच्छति परं परिपाकं पाकशासनपदं तृणकल्पं ॥
स्वप्रकाशसुखबोधमयं त ध्यानमेव भवनाशिभजध्वं ॥ १ ॥

अर्थ ॥ माटेउत्कृष्ट परिपक्वध्यान पामेथके मुनिराजतेइंद्रनीपदवीनेपण तृणपलां बरोबरगणेमाटे जेथकी आत्माने प्रकाशकारी सुखेज्ञानप्रगटे एवुं संसारनुं नाशकरनारुंध्यानसेववुं ॥ १ ॥

आतुरैरपि जडै रपि साक्षात् सुत्यजा हि विषया ननु रागः॥
ध्यानवांस्तु परमद्य निदर्शी तृप्ति माप्य न तमृच्छति भूयः॥२॥

अर्थ ॥ कामातुरजेप्राणी तथाजडजेप्राणीतेपण प्रगटपणे विषयसुखने सुखेछांडे पणरागदिशा छांडवीदुर्घटछे अनेध्यानवंतमुनितो मात्र परमात्मानुजदर्शनीछेते तोध्यानमां तृप्तिपामिने फरीथीरागद्वेषने वांछेनही ॥ २ ॥

ज्ञानाख्या चेतना बोधः कर्म्माख्यद्विष्टरक्तता ॥ जंतोः कर्मफलाख्या सा वेदना व्यपदिश्यते॥४५॥ नात्मा तस्मादमूर्त्तत्वं चैतन्यं चातिवर्त्तते ॥ अतोदेहेन नैकत्वं तस्य मूर्त्तेन कर्हिचित् ॥४६॥

अर्थ ॥ ज्ञाननामे चेतनातेबोधछे अने कर्मनामेद्विष्टरक्तताछे तेवडेजीवने कर्मफलनामेवेदना व्यपदेशपामेछे ॥ ४५ ॥ तेमाटेअमूर्तिआत्माते चैतन्यपणाने उलंघेनही अनेमूर्तिमान देहसार्थेआत्माने कोइप्रकारें एकत्वपणुंछेजनही ॥ ४६ ॥

सन्निकृष्टान्मनोवाणी कर्मादेरपि पुद्गलात् ॥ विप्रकृष्टा धना देश्च ज्ञाव्यैवं भिन्नत्मनः ॥ ४७ ॥ पुद्गलानां गुणोमूर्त्तिं रात्मा ज्ञानगुणः पुनः ॥ पुद्गलेभ्य स्ततोभिन्न मात्मद्रव्यं जगुर्जिनाः ॥ ४८ ॥

अर्थ ॥ एरीतें कर्मवर्गणाना मनोवर्गणाना वचनवर्गणाना जेआत्मानेसमीपवर्ति एकत्वसंगतवर्ति एवातनधनादिक जेपुद्गलतेतोसर्वआत्माथी भिन्नके० दूरछे ॥ ४७ ॥ केमकेपुद्गलनोगुणतोमूर्तिमानछे अने आत्मातोज्ञानगुणमयछे माटेपुद्गलथी आत्मद्रव्यजुदुंछे एमप्रभुकहेछे ॥ ४८ ॥

धर्मस्य गतिहेतुत्वं गुणो ज्ञानं तथात्मनः॥धर्मास्तिकाया त्तभिन्न मात्मद्रव्यं जगुर्जिनाः॥ ४९॥ अधर्मे स्थितिहेतुत्वं गुणो ज्ञान गुणोऽसुमान्॥ततोधर्मास्तिकायान्य मात्मद्रव्यं जगुर्जिनाः५०

अर्थ ॥ धर्मास्तिकायनोगुण गतिहेतुछे अनेआत्मानोगुणज्ञानछे माटेधर्मास्तिकायथी आत्माजुदोछे एमप्रभुकहेछे ॥ ४९ ॥ अधर्मास्तिकायनोगुण स्थितिहेतुछे अने आत्मानोज्ञानगुणछे माटे अधर्मास्तिकायथी आत्मद्रव्यजुदुंछे एमप्रभुकहेछे ५०

अवगाहो गुणो व्योम्नो ज्ञानं खल्वात्मनोगुणः ॥ व्योमास्तिकायात्तभिन्न मात्मद्रव्यं जगुर्जिनाः॥५१॥ आत्म ज्ञानगुणः सिद्धः समयो वर्त्तनागुणः॥तभिन्नं समयद्रव्या दात्मद्रव्यं जगुर्जिनाः५२

अर्थ ॥ आकाशनोगुणअवगाहछे अनेआत्मानोगुणज्ञानछे माटे आकाशास्तिकायथीआत्मद्रव्य जुदुंछे एमप्रभुकहेछे ॥ ५१ ॥ आत्माज्ञानगुणेसिद्धछे काल वर्त्तनारूपछे माटेकालथी आत्मद्रव्यजुदुंछे एमप्रभुकहेछे ॥ ५२ ॥

अर्थ ॥ शमतारतिरूप स्त्रीनीसाथें प्राणीनेघणा कालथीवियोगहतो तेहुएक मां वियोगभांगीने संयोगमिलावें एहवोध्यानरूप परममित्रछे. तेध्यानमित्र अमा रेप्रमाणछे एमध्यान करनारप्राणी बोलेछे माटेसंसारमां कृत्रिम परमित्रथीसुंथाय तेकृत्रिममित्रोकरतांतो ध्यानमित्रघणुंश्रेष्ठछे ॥ ८ ॥

वारितस्मरबलातपचारे शीलशीतल सुगंधिनिवेशैः ॥
उल्लितप्रशमतल्पनिविष्टो ध्यानधाम्नि लभते सुखमात्मा ॥ए॥

अर्थ ॥ हवे ध्याननेरंगमंदिरनी उपमाआपेछे जिहांकामरूपतापनेटाल्योछे अने शीलरूप शीतलसुगंधीपसरीरहीछे तेवीबेठकनेविषे शमतारूपमोटीतलाइछे तेउपर आत्माबेगेथको पूर्णआनंदपामेछे एवुंध्यानरूपमंदिरछे ॥ ए ॥

शीलविष्टरदमोदकपीठं प्रातिहार्यशमतामधुपर्कैः ॥ ध्या
नधाम्नि भवति स्फुटमात्मा हुतपूतपरमातिथिपूजा ॥१०॥

अर्थ॥ध्यानमंदिरमां शीलरूपसिंहासने इंद्रियदमनरूप जलनोबाजोटछे अने श मतारूप पोलीओ तेएवाध्यानधरमां पवित्रपणे आत्मानेतेडीनेतेनी मधुपर्केक० प रोणागतकरेछे ॥ १० ॥

आत्मनो हि परमात्मनियोभूत् भेदबुद्धिकृतएव विवादः॥ध्या
नसंधिकृदमुंव्यपनीय द्रागभेदमनयोर्वितनोति ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ आत्मा अने परमात्मानेविषे जेभेदबुद्धिनोविवादहतो एटलेतेमांपंडित ना विवादरूपझगडाहता तेनेध्यानरूपसंधीपालें एटलेध्यानिपुरुषें तेविवादोनेटाल्यो अनेजलदीथी एबेउनुंअभेदपणुंकरीआप्युं ॥ ११ ॥

क्वामृतं विषभृते फणिलोके क्ष्वयिण्यपि विधौ त्रिदिवे वा ॥
क्वाप्सरो रतिमतां त्रिदशानां ध्यानएव तदिदं बुधसेव्यं ॥१२॥

अर्थ ॥ विषथकीभरेलोजे नागलोकतिहां अमृतक्यांथीहोय तेमदिनदिनक्षय पा मतोजेचंद्रमा तेमांअमृतकिहांथीहोय अनेदेवलोकमांअप्सरानायोगें राताजेदेवता तेमांपणअमृत किहांथीहोय माटेएमात्र ध्यानरूपअमृतसत्यछे तेनेजपंमितेसेववुं

गोस्तनीषु न सितासु सुधायां नापि नापि वनिताधरबिंबे॥ तं
रसं कमपि वेत्ति मनस्वी ध्यानसंभवधृतौ प्रयते यः ॥१३ ॥

अर्थ ॥ गायनास्तनमांजेरसनथी जेसाकरमांरसनथी अनेजेरसअमृतमांपणनथी

न ह्यायसस्य बंधस्य तपनीयमयस्य च॥ पारतंत्र्याविशेषेण फ
लभेदोस्ति कश्चन॥६१॥फलाभ्यां सुखडुःखाभ्यां न भेदः पुण्य
पापयोः॥ डुःखान्नभिद्यते हंत यतः पुण्यफलं सुखं॥ ६२॥

अर्थ॥ एकलोहनीबेमी अनेएकसुवर्णनीबेमी तेपणपरवशपणुंछे माटेविचारी येंतोफलभेदकांइनथी तेमअशुभकर्मते लोहनीबेडीअनेजे शुभकर्मते सुवर्णनीबेडी॥ ६१॥ सुखनाफल अने डुःखनाजेफलप्रगटेछे तेथीपुण्यपापमध्ये कांइभेदनथी जे थकीपुण्यसुखविलसे एपुण्यनुंफलछे तेपणडुःखरूपजछे॥ ६२॥

सर्वं पुण्यफलं डुःखं कर्मोदयकृतत्वतः॥ तत्र डुःखप्रतिकारे
विमूढानां सुखत्वधीः॥ ६३॥ परिणामाच्च तापाच्च संस्काराच्च
बुधैर्मतं॥ गुणवृत्तिविरोधाच्च डुःखं पुण्यभवं सुखं॥ ६४॥

अर्थ॥ माटेसर्वपुण्यनुंफल तेडुःखरूपछे केमकेएकर्मनाउदयथीथायछे माटेडुःखनाप्रतिकारनेविषे मूर्खनेसुखबुद्धिउपजेछे॥६३॥पंमितकहेछेके परिणामथी तथाताप थी अनेसंस्कारथी गुणवृत्तिविरोधी एहवुंजेपुण्यतेथीनीपनुंजेसुखतेडुःखप्रायछे॥६४

देहपुष्टे र्नरामर्त्य नायकानामपि स्फुटं॥ महाजपोषणस्येव
परिणामोतिदारुणः॥ ६५॥ जलुकाः सुखमानिन्यः पिबंत्यो
रुधिरं यथा॥ भुंजाना विषयान् यांति दशामंते ऽतिदारुणां॥६६॥

अर्थ॥ नरनेराजाने तथा इंद्रादिकनेपण जेसुखमांशरीरनीपुष्टिथायछे तेमोटाबोकडानीपेठेछे एकथाउत्तराध्यायनमां कहीछेतिहांथीजाणवी जेवारें वधथयो तेवारें परिणामेअतिडुःखछे॥ ६५॥ जेमजलोजोही पीतांथका सुखमानेछे तेमविषयनोगवतांथकाप्राणी सुखमानेछे पणतेथीअंतें मातीदशानेपामेछे॥ ६६॥

तीव्राग्निसंगसंशुष्य त्पयसामयसामिव॥यत्रौत्सूक्यात्सदाक्षा
णां तप्तता तत्र किं सुखं॥६७॥प्राक्पश्चाच्चारतिस्पर्शा त्पुटपाक
मुपेयुषि॥ इंद्रियाणंगेणे ताप व्यापएव न निर्वृतिः॥ ६८॥

अर्थ॥ आकरोअग्निमां बलतरायेंकरी लोहपाणीपीयेछे तेमज्यांसदा इंद्रिओनी उत्कंठाथीघणीज बलतरारहेछे त्यांशुंसुखछे॥ ६७॥ पेहेलांअथवापछे पणजेथकी अरतिउपजे तेनेअडकवाथी विपाकपामेथकें इंद्रियोना समूहमां ताप व्यापेपणसु

तदेकत्वपृथक्त्वाभ्या मात्मध्यानं हितावहं ॥ वृथैवाभिनिविष्टा
ना मन्यथा धीर्विडंबना ॥ ५ ॥ एक एव हि तत्रात्मा स्वभाव स
मवस्थितः ॥ ज्ञानदर्शनचारित्र लक्षणप्रतिपादितः ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ तेमाटेएकत्व पृथक्त्वेंकरी आत्मज्ञानहितकारीथाय नहीतो फोकटपणे करी मिथ्यात्वीनीबुद्धिविटंबनाछे ॥ ५ ॥ तिहांएकजआत्मा स्वभावपणेरह्योछे तेआत्मातोज्ञानदर्शन अने चारित्ररूपलक्षणेकह्योछे ॥ ६ ॥

प्रभानैर्मल्यशक्तीनां यथारत्नान्न भिन्नता ॥ ज्ञानदर्शनचारित्र
लक्षणानां तथात्मनः ॥ ७ ॥ आत्मनोलक्षणानां च व्यवहारो हि
भिन्नता ॥ षष्ठ्यादिव्यपदेशेन मन्यते न तु निश्चयः ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जेमरत्ननीकांति अने निर्मलता एबेउनीशक्तिकांइजुदीनथी तेमज्ञानदर्शन अने चारित्रलक्षणे जेआत्मातेकांइजुदोनथी ॥ ७ ॥ आत्मा अनेआत्मानुंलक्षण एबेव्यवहारेंजुदाछे तेषष्टीआदेदइ विभक्तीनेव्यपदेशेंकरीमानियें पणनिश्चयथीनही

घटस्य रूपमित्यत्र यथाभेदो विकल्पजः ॥ आत्मनश्च गुणानां
च तथा भेदो न तात्विकः ॥ ९ ॥ शुद्धं यदात्मनो रूपं निश्चये ना
नुभूयते ॥ व्यवहारो भिदाघारा नुभावयति तत्परं ॥ १० ॥

अर्थ ॥ जेमघटनुंरूपतेनोभेदते विकल्पमात्रछे तेमआत्माने अने गुणनेपरमार्थें भेदनथी ॥ ९ ॥ जेआत्मरूपशुद्धछे तेनिश्चयनयकरी अनुभवायछे अने व्यवहारवर्में परके० कायातेपणओळखायछे ॥ १० ॥

वस्तुतस्तु गुणानां तद्रूपं न स्वात्मनः पृथग् ॥ आत्मा स्यादन्यथा
नात्मा ज्ञानाद्यपि जडं भवेत् ॥ ११ ॥ चैतन्यपरसामान्या
त्सर्वेषा मेकता त्मनां ॥ निश्चिता कर्मजनिनो भेदः पुनरुपप्लवः ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ वस्तुभावेतोगुणनुं अने आत्मानुंरूपजुदुंनथी जोजुदुंकहीयेंतो आत्माछे तेअनात्माथाय ज्ञानादिकेंजडथाय ॥ ११ ॥ चैतन्यपरसामान्यपणे सर्वआत्मानी एकताछे अनेनिश्चयथी तोकर्मेंप्रगट्याजेभेद तेतोविटंबनारूपछे ॥ १२ ॥

पेंकरी चोथीदशामांशोजेछे ॥ ७५ ॥ जागताजीवने इंद्रियोनीसुखवृत्तिओ नानाप्र कारनीथायछे पणसामान्यजे चिदानंदस्वरूप तेनेतोसर्वदशामां सरखुंसुखछे ॥७६॥

स्फुलिंगनै र्यथा वन्हि दिंप्यते ताप्यते थवा ॥ नानुभूति पराभू ती तथैतान्भिः किलात्मनः ॥ ७७ ॥ साक्षिणः सुखरूपस्य सुषुप्तौ निरहंकृतेः ॥ यथा भानं तथा शुद्ध विवेके तदतिस्फुटं ॥ ७८ ॥

अर्थ ॥ तणखेंकरीनेजेम अग्नीदीपेनही तपायनही तेमअनुभवपराभवादिकें क रीने आत्मानेकइंनथी ॥ ७७ ॥ निद्रावस्थामांजेम सुखरूपनोसाखीजे आत्मातेने अहंकारेंरहितसुखनो भासनथायछे तेमशुद्धविवेकनेविषे तोप्रगटपणेसुखभासेछे ७८

तच्चिदानंदभावस्य भोक्तात्मा शुद्धनिश्चयात् ॥ अशुद्धनिश्च यात्कर्म्म कृतयोः सुखदुःखयोः ॥७९॥ कर्मणोपि च भोगस्य स्र गादेर्व्यवहारतः॥ नैगमादिव्यवस्थापि भावनीयाऽनया दिशा॥८०

अर्थ ॥ तेमाटेशुद्धनिश्चयनयथकी आत्माचिदानंदभावनोभोक्ताछे अनेअशुद्धनि श्चयनयथकीकर्मेंकर्यांजे सुखदुःखतेनोभोक्ताआत्माछे ॥ ७९ ॥ फुलनीशय्या तथा फुलनाभूषण प्रमुखनेविषेभोगकर्मनी व्यवहारथीप्रवृत्तिछे तेमनैगमादिकनयनी व्य वस्थापण आवीरीतें भावियेंतेनीचेंलख्याप्रमाणेछे. ॥ ८० ॥

कर्त्तापिशुद्ध भावाना मात्माशुद्धनयाद्विभुः ॥ प्रतीत्यवृत्तिं यशुद्ध क्षणानामेष मन्यते ॥ ८१ ॥ अनुपप्लवसाम्राज्ये विषभागपरि क्षये ॥ आत्मा शुद्धस्वभावानां जननाय प्रवर्त्तते ॥ ८२ ॥

अर्थ ॥ शुद्धभावनोकर्त्ता आत्माशुद्धनयथी समर्थछे जेवारेंशुद्धपरिणामीछे तेस मर्थवीर्यवृत्तिनेआश्रयीने शुद्धभावनोकर्त्ताछे एमशुद्धनयवालोमानेछे॥ ८१ ॥ उपद्र व अंतरायादिकेरहित साम्राज्यपणानेविषे दुष्टभावनोनाशथयेछते आत्माशुद्धस्व भाव प्रगटकरवाने प्रवर्त्तेछे ॥ ८२ ॥

चित्तमेव हि संसारो रागादिक्लेशवासितं ॥ तदेव तैर्विनिर्मुक्तं भ वांतइति कथ्यते ॥ ८३ ॥ यश्च चित्तक्षिणक्लिष्टो नासावात्मा विरोधतः ॥ अनन्यविकृतं रूप मित्यर्थलं ह्यदः पदं ॥ ८४ ॥

अर्थ ॥ जेरागादिक क्लेषवर्के चित्तवासितहोय तेसंसारकेवाय अने रागद्वेषथीमु

यथा नुभूयते ह्येकं स्वरूपास्तित्वमन्वयात् ॥ सादृश्यास्तित्व मप्येक मविरुद्धं तथात्मनां ॥ ३१ ॥ सदसद्वादपिशुनान् संगो प्य व्यवहारतः ॥ दर्शयत्येकतारत्नं सतां शुद्धनयः सुहृत् ॥ ३२ ॥

अर्थ ॥ जेमअन्वयथी एकस्वरूपास्तिपणाने अनुभवियेछइयें तेमसरखापणे जे विद्यमानपणुंछे तेथकीआत्माने एककहियें ॥ ३१ ॥ व्यवहारनयथी सद्असद्वा दरूपजे चाडियो तेनेछुपावीने शुद्धनयरूपजे मित्रछेतेएकतारूप रत्ननेदेखाडेछे॥३२॥

नृनारकादिपर्यायै रप्यं तन्नविनश्वरैः ॥ भिन्नैर्जहाति नैकत्व मात्मद्रव्यं सदान्वयि ॥ ३३ ॥ यथैकं हेमकेयूर कुंडलादि षु वर्त्तते ॥ नृनारकादिभावेषु तथात्मैको निरंजनः ॥ ३४ ॥

अर्थ॥नरनारकादि पर्यायजेउपजेछे अनेविणशेछे तेभिन्नपर्यायकांइरम्यनथी माटे तेपर्यायेंकरीने सदाअन्वयीजे शुद्धवंशीआत्मतत्व तेएकत्वपणाने छांडतुंनथी। ३३ जेमसुवर्णएकछे पणबाजुबंध कंठीकुंडलादिक पर्यायेंवर्त्तेछे तेमआत्माएकछे पणन रनारकादिकना भवेंकरीभिन्नछे पणआत्मातो एकनिरंजनछे ॥ ३४ ॥

कर्मणस्ते हि पर्याया नात्मनः शुद्धसाक्षिणः॥कर्मक्रिया स्वभावो य दात्मातु न स्वभाववान् ॥३५॥ नाणूनां कर्मणोवासौ भवस्व र्गः स्वभावजः ॥ एकैकविरहे भावा भवतत्वांतरं स्थितं ॥३६॥

अर्थ ॥ जेनरनारकादिकभव तेतो सर्वकर्मना पर्यायछे पणशुद्धसाक्षी निश्चयन येंआत्मपर्यायछे अनेकर्मक्रियारूपजे स्वभावतेकांइआत्मानो मूलस्वभावनथी आत्मा तो अज अविनाशीस्वस्वभावीछे ॥३५॥ कर्मनाजेपरमाणु आतेआसंसार स्वर्गस्वभा विक नथी एकेकउज्वलतानेविषे भावथकी नवतत्वमां रह्युंछे ॥ ३६ ॥

श्वेतद्रव्यकृतं श्वैत्यं भित्तिभागे यथा द्वयोः॥भात्यनंतभवत्सत्यं प्रपंचोपि तथेक्षतां ॥ ३७॥ यथास्वप्नावबुद्धोर्थो विबुद्धेन न दृ श्यते ॥ व्यवहारमतेस्वर्गो ज्ञानिना न तथेक्षते ॥ ३८ ॥

अर्थ ॥ जेमश्वेतद्रव्यें कीधेलुंजे चित्रामण तेबेभीतना भागमांशोभे तेमअनंतभ वसत्यतायें एप्रपंचनेजाणवुंछे ॥३७॥ जेमस्वप्नमां दीठेलोअर्थ जाग्यापछेदेखायनहीं तेमव्यवहारें स्वर्गादिकमार्ग श्रेष्ठछे पणनियतप्रमाणी ज्ञानीपुरुषने संसार भजणाय

ने प्रकाशेछे ॥ ९१ ॥ एम आत्माने स्वप्रकाश अने शाश्वत अंगीकार करीएनही अने परप्रकाश तथा कर्तृत्व सिद्धमानीए तो पूर्वेअनात्मपणुं अंगीकार करवुंपडशे केमके क्रियावडे उत्पन्नथएलापदार्थनुं पूर्वनुं रूप जुदुज होयछे एवोनियमछे एवी रीतेंआत्मानी उत्पत्तिनी पूर्वे आत्माने अनात्ममानवुं पडशे अने क्रियावडे आत्मानुं रूपांतरथाएछे एममानीएतो आत्मानी आवृत्ति अंगीकारकरवीपडशे आवृत्ति अंगीकारकरीएतो संसारविषयक हजारोकत्यरूप हेतुवडे हजारोरूप बदलाशे त्यारें पूर्वे पूर्वनुरूपअनात्म अने उत्तर उत्तरक्रियाजन्यरूप आत्मामानवुं पडशे अनेएम करवाथी छेवटें अनवस्था दोष प्राप्तथशे ॥ ९२ ॥

नये तेनेह नोकर्त्ता किंत्वात्मा शुद्धभावभृत् ॥ उपचारात्तु लोके षु तत्कर्तृत्वमपीष्यते ॥ ९३ ॥ उत्पत्तिमात्रं धर्माणां विशेषग्राहिणो जगुः ॥ अव्यक्तिरावृतेस्तेषां नाभावादिति का प्रमा ॥ ९४ ॥

अर्थ ॥ तेमाटेआनयनेविषे कर्त्तापणुंनथी केमके आत्माशुद्धभावनो धरनारछे अनेलोकमां उपचारथी तेनुंकर्तापणुकेहेछे ॥ ९३ ॥ विशेषग्राही जेज्ञानीपुरुषोछे तेपूर्वोक्तरीतें आत्माने क्रियासिद्ध मानतानथी किंतु आत्मानाधर्मोनी उत्पत्ति मानेछे आंही कोइने शंकाथशे केजेम आत्माअव्यक्तछे तेमआत्मानाधर्मपण अव्यक्तछे तोज्यारेआत्मानी उत्पत्ति मानतानथी त्यारेतेनाधर्मनी उत्पत्तिपण केममनाय तेनो समाधानजे केटलीएकअव्यक्त वस्तुओ आकाशनीपठे जेमनीतेमरहेछे अने केटलीएक रूपांतरने पामेछे आत्माशाश्वताव्यक्तछे अने तेनाधर्मअशाश्वताव्यक्तछे माटेतेओनी आवृत्तिथायछे केमके जेमआत्मानी अनावृत्तिमां घणाप्रमाणोछे तेमआत्माना धर्मनीआवृत्ति नथवामां कोइप्रमाणनथी तेथीआत्मानी पुनरावृत्ति थतीनथी पणआत्माना धर्मोनीपुनरावृत्तिथायछे एवुंसिद्धथयुं ॥ ९४ ॥

सत्वं च परसंताने नोपयुक्तं कथं च न ॥ संतानिनामनित्यत्वात्संतानोपि न च ध्रुवं ॥ ९५ ॥ व्योमाप्युत्पत्तिमत्तत्त दवगाहात्मना ततः ॥ नित्यता नात्मधर्माणां तद्दृष्टांतबलादपि ॥ ९६ ॥

अर्थ ॥ आत्मानुंउत्पत्तिरहितपणुं दृष्टांतवडेदृढकरेछे जेमपितापुत्ररूप परिवारनी उत्पत्तिमां पूर्वपूर्वपितारूप कारणथी उत्तरउत्तर पुत्ररूपकार्यनी उत्पत्तिथयाथी पितापणानोअभाव अनेपुत्रपणानोभाव थायछे एमशृंखलाचालतां जेमपिता

न रूप न रसो गंधो न न स्पर्शो न चाकृतिः॥ यस्य धर्मो न शब्दो वा तस्य का नाम मूर्त्तता ॥ ३७ ॥ दृशाद‌दृश्यं हृदाग्राह्यं वाचा मपि न गोचरः ॥ स्वप्रकाशं हि यद्रूपं तस्य का नाम मूर्त्तता॥३८॥

अर्थ ॥ केमकेरूप रस गंध स्पर्श अने संस्थान एटलावानाआत्मानेनथी एतो पुद्गलनेछे तेमजबाह्यधर्मपणनथी शब्दनथी तेवारेंआत्मानेशीरीतेंरूपीकहेवाय॥३७॥ वलीआत्मानजरेदेखाय एवोपणनथी मनथीग्रहेवाय एवोपणनथी तथावचने पणअगोचरछे जेनुंरूपपोताने प्रकाशेंछे पणबीजाने प्रकाशेंनथी तेनेरूपीकेमकेवाय

आत्मा सत्यश्चिदानंदः सूक्ष्मात्सूक्ष्मः परात्परः ॥ स्पृशत्यपि च मूर्त्तत्वं तथा चोक्तं परैरपि ॥ ३ए॥ इंद्रियाणि पराण्याहु रिंद्रियेन्यः परं मनः॥मनसोपि परा बुद्धि र्योबुद्धेः परमस्तु सः॥४०॥

अर्थ ॥ आत्मासत्यछे चिदानंदमयीछे सूक्ष्मथीपणसूक्ष्मछे उत्कृष्टमांउत्कृष्टछे ते मूर्तीपणुंकेमफरसे तेमजपरदर्शनमां ॥ ३ए ॥ श्रीकृष्णकहेछे हेअर्जुनशरीरमां इंद्रियोमोटीछे अनें इंद्रिओथीमनमोटुंछे मनकरतां बुद्धिमहोटीछे अनेतेथीआत्मामोटोछे

विकले हंत लोकेस्मि न्नमूर्ते मूर्तता भ्रमात् ॥ पश्यत्याश्चर्यवद् ज्ञानी वदत्याश्चर्यवद्वचः ॥ ४१ ॥ वेदना येन मूर्त्तत्वं निमित्ता स्फुटमात्मनः॥ पुद्गलानां तदापत्तेः किंत्वशुद्धस्वशक्तिजा ॥४२॥

अर्थ ॥ हंतइतिखेदे आविकललोकनेविषे अमूर्तिआत्मानेविषे मूर्तिपणानाभ्रम थकीजेज्ञानीपुरुषछे तेअचंबोदेखेछे अनेवचनपणअचंबानाबोलेछे ॥ ४१ ॥ जेमाटे जीवात्मानेमूर्तिनिमित्तवेदना प्रगटपणेछे एमजोमानिएतो पुद्गलनेवेदनाथइजोइयें तेमाटेएवेदनातो आत्माने अशुद्धशक्तिथी अनुजवथायछे ॥ ४२ ॥

अक्षद्वारा यथा ज्ञानं स्वयंपरिणमत्ययं ॥ तथेष्टानिष्टविषय स्पर्शद्वारेण वेदनां॥ ४३ ॥ विपाककालं प्राप्यासौ वेदना परिणामन्नाक्॥मूर्त्तं निमित्तमात्रं नो घटे दंमवदन्वयि ॥ ४४ ॥

अर्थ ॥ इंद्रिय द्वारेंकरी जेम ज्ञानदिशा पोतानीमेले परिणमेछे तेमइष्टअनिष्ट विषयस्पर्श द्वारेंकरी वेदनापरिणमेछे ॥ ४३ ॥ विपाककालपामीने आवेदनापरिणामने जेमआत्माजजेछे तेथी अमारेमतें मूर्तिपणुंतेनिमित्तमात्रथयुं अन्वयीके० सहचारीथयुं जेमघटनेविषें दंमसहचारीछे तेनीपेठेजाणवुं ॥ ४४ ॥

फलथतुंनथी तथापिपोतानेविषे रहेलुंजेकर्म तेपोतानाफलनेविषे प्रवर्त्ततुंनथी ॥ १०१ ॥ बीजाकोइने कोइमारतोनथी तेमकोइनेकोइ रक्षणकरतोनथी आयुकर्मनोनाश थायनही अनेमृत्युजीवन अन्यथाथायनही ॥ १०२ ॥

हिंसादयाविकल्पाभ्यां स्वमताभ्यां तु केवलं ॥फलं विचित्रमाप्नोति परापेक्षां विना पुमान् ॥१०३॥ शरीरी म्रीयतां मावा ध्रुवं हिंसा प्रमादिनः ॥ दयैव यत्नमानस्य बंधेपि प्राणिनां क्वचित् ॥ १०४ ॥

अर्थ ॥ हिंसाअने दयानीपणमात्र कल्पना करवीछे पोतानामतेकरी तोपरनी अपेक्षाथी पुरुषकेवल विचित्रफलने पामेछे ॥ १०३ ॥ जीवनोघातथाय अथवान थायतोपण जेप्रमादीजीवछे तेनेनिश्चयेंकरी हिंसाथायछे अनेजे दयावानप्राणीछे तेनाहाथे कदाचकोइजीवनी घातथइजाय तोपणतेने हिंसालागतीनथी ॥ १०४ ॥

परस्य युज्यते दानं हरणं वा न कस्यचित् ॥न धर्मसुखयोर्यत्ते कृतनाशादिदोषतः ॥ १०५ ॥भिन्नाभ्यां भक्तवित्तादि पुद्गलाभ्यां च ते कुतः ॥ स्वलापत्तिर्यतो दानं हरणं सलनाशनं॥१०६॥

अर्थ ॥ कोइबीजाने दानदेतोनथी अनेबीजानी पासेथीकोइकांइ हरणकरी लेतोनथी धर्मअनेसुखनेविषे पणदानतथा हरणनो संभवनथी केमके कृतनाशअने अकृतनोप्रसंग इत्यादिदोष प्राप्तथशे जेमदानकर्युं तेतुंनाशथाय तेनेकृतनाशकहेछे अनेजेबीजाने आप्युंनथी तेनुंहरणकरवुंते अकृतागम प्रसंगकहेवाय एवादोष आत्मातेविषे प्राप्तथशे ॥ १०५ ॥ केमकेभोजन तथाधनादिकजेपुद्गल तेतोआत्माथीभिन्नछे तोतेमांथ्यांथी पोतापणुंआव्युं माटेदानअनेहरणते पोताथीजनाशछे

कर्मोदयाच्च तद्दानं हरणं वा शरीरिणां ॥ पुरुषाणां प्रयासः क स्ततोपनमति स्वतः ॥१०७॥स्वागताभ्यां तु भावाभ्यां केवलं दानचौर्ययोः॥अनुग्रहोपघातौ स्तः परापेक्षा परस्य न॥१०८॥

अर्थ ॥ वलीतेदान अनेहरणप्राणीने कर्मनाउदयथकीछे त्यांपुरुषनेशोप्रयासछे तेतोपोतानीमेलेज उदयपामेछे॥ १०७ ॥पोतामांरह्या एवाजेदानअनेहरणना भाव तेणेकरीनेएकथी उपगारथाय बीजाथीउपघातथाय त्यांपरनीअपेक्षापरनेनही१०८

आत्मनस्त दजीवभ्यो विभिन्नत्वं व्यस्थितं॥व्यक्तिभेदेन वादेशा दजीवत्वमपीष्यते ॥ ५३ ॥ अजीवा जन्मिनः शुद्ध भावप्राणव्य पेक्षया ॥ सिद्धाश्च निर्मलज्ञाना द्रव्यप्राणव्यपेक्षया ॥ ५४ ॥

अर्थ॥एप्रमाणेअजीवथी आत्मानुजुदापणुं सत्यवस्तुं पणभेदेंकरी देशथकी अजीवपणुंपणवंछीयेछइयें॥ ५३ ॥जेमनिर्मलज्ञानवंतसिद्धने द्रव्यप्राणनी अपेक्षारहितपणे अजीवपणुंकहियें तेमशुद्धभावप्राणनीअपेक्षारहित जीवनेअजीवकहियेछैयें

इंद्रियाणि बलं श्वासो व्रुसो ह्यायु स्तथा परं॥द्रव्यप्राणाश्चतुर्भेदाः पर्यायाः पुद्गलाश्रिताः ॥ ५५॥ भिन्नास्ते ह्यात्मनोऽत्यंतं तदेतै र्नास्ति जीवनं ॥ज्ञानधैर्यसदाश्वास नित्यस्थितिविकारिभिः॥ ५६ ॥

अर्थ ॥ इंद्रिय बल श्वासअनेआयुष्य एरीतेंद्रव्यप्राण चारभेदेंछे एनापर्यायितो पुद्गलने आश्रीरह्याछे ॥ ५५ ॥ तेआत्माथी अत्यंतजुदाछे माटे एवरूँ कांइआत्मा नेजीववुंनथी एपर्यायितो ज्ञान धैर्य तेनास्वासनीजेकांइ नित्यस्थितितेणेकरी वर्जितछे

एतत्प्रकृतिभूताभिः शाश्वतीभिस्तु शक्तिभिः ॥जीवितात्मा स देत्येषा शुद्धद्रव्यनयस्थितिः॥५७॥जीवो जीवति न प्राणै र्विना तै रेव जीवति ॥ इदं चित्रचरित्रंको हंत पर्यनुयुज्यतां ॥ ५८ ॥

अर्थ ॥ एप्रकृतिरूप शाश्वतीशक्ति तेणेकरीने आत्मासदैवजीवेछे एशुद्धद्रव्यनय नीस्थितिजाणवी ॥ ५७ ॥ जीवकांइप्राणेकरीने जीवतोनथी एजीवतोप्राणविनाजीवेछे एअचंबानीवात विचित्रकारी चरित्रसांभली कोणनहरखें अनेएवातशुद्धनयें कोणनजोडे ॥ ५८ ॥

नात्मा पुण्यं नवा पाप मेते यत्पुद्गलात्मके॥आद्यबालशरीरस्यो पादानत्वेन कल्प्यते ॥५९ ॥ पुण्यं कर्म शुभं प्रोक्त मशुभं पाप मुच्यते ॥ तत्कथं तु शुभं जंतून् यत् पातयति जन्मनि ॥ ६० ॥

अर्थ ॥ आत्मापुण्यनही तेमपापपणनही केमके पुण्यनेपापतो पुद्गलरूपछे प्रथमबालकालें जेशरीरतेनेउपादानभावेंकल्पेछे ॥ ५९ ॥ जेशुभकर्म तेपुण्यकहियें अनेजेअशुभकर्मतेपापकहियें तेवारें तेशुभकर्मजेछे तेजीवनेसंसारमांकेमपाडेछे ॥६०

अन्योन्यानुगतानां का तदेतदिति वा भिदा॥यावच्चरमपर्यायं यथा पानीयदुग्धयोः ॥ ११७ ॥ नात्मनो विकृतिं दत्ते तदेषा नयकल्पना॥शुद्धस्य रजतस्यैव शुक्तिधर्मप्रकल्पना ॥ ११८॥

अर्थ ॥ परस्परमल्याएवाजेनय तेहनें एवोनिर्णययावत् चरमपर्यायछेपरंतुजातिजे इकेमजणाय जेमदुधअनेपाणीनासंयोगनीपरेंसंग्रहमाने नैगमने अनेनैगममाने संग्रहनेएबेनयमाहोमांहेंजलेछे एमव्यवहारपण जलेछे ॥ ११७ ॥ वलीशुद्धनयवालो वोलेछेजे आत्मानेविकारनथी आपतोएवीनैगम तथाव्यवहारनयनी कल्पनाछे केहेनी परें तेकहेछेजेमशुद्धरूपानेछिपनोधर्म कल्पेछेतेहनीपरें जाणवुं ॥ ११८ ॥

मुषितत्वं यथा पांथगतं पथ्युपचर्यते ॥ तथा पुद्गलकर्मस्था विक्रियात्मनि बालिशैः॥११९॥कृष्णशोणोपि चोपाधेर्नाशुद्धः स्फटिको यथा ॥ रक्तोद्विष्टस्तथैवात्मा संसर्गात्पुण्यपापयोः॥ १२० ॥

अर्थ ॥ जेमपंथीजनने लुंटतांलोककहेछेजे मार्गलुंटाणो एलोकवाक्यछे तेममूर्खप्राणी पुद्गलकर्ममांरही जेविक्रियाकरे तेआत्मानेविषे मानेछे ॥ ११९ ॥ जेमकालो अथवारातो स्फटिकछे तेउपाधिथीछे मातेतेथीतेने अशुद्धनकहियें तेमपुण्यपापना संयोगथी आत्मारागीद्वेषी कहेवायछे ॥ १२० ॥

सेयं नटकला तावद् यावद्विविधकल्पना॥ यद्रूपं कल्पनातीतं न तु पश्यत्यकल्पकः॥१२१॥कल्पनामोहितोजंतुः शुक्लं कृष्णं च पश्यति॥ तस्यां पुनर्विलीनाया मशुक्लं कृष्णमीक्षते ॥१२२॥

अर्थ ॥ जिहांसुधीविविध प्रकारनीकल्पनाहोय तिहांसुधीएसर्व नटकलारूपछे पणकल्पनायेंअतीतजेरूप तेनेतो जेअकल्पकहोय तेदेखे ॥ १२१ ॥ पणकल्पनायेंमुंझाणो जेजीव तेतो धोलानेकालुंदेखेअनेकालाने धोलुंदेखे अनेतेकल्पना जेवारेंजाय तेवारें तोकालानेकालुंजदेखे अनेधोलाने धोलुंजदेखे ॥ १२२ ॥

तद्ध्यानं सा स्तुतिर्भक्तिः सैवोक्ता परमात्मनः ॥ पुण्यपापविहीनस्य यद्रूपस्यानुचिंतनं ॥ १२३ ॥ शरीररूपलावण्य वप्रछत्रध्वजादिभिः॥वर्णितैर्वीतरागस्य वास्तवी नो पवर्णना॥१२४॥

अर्थ ॥ पुण्यपापरहित एहवाजेपरमात्माप्रभु तेनास्वरूपनुं चिंतववुं तेनेजध्यानकहियें अनेस्तुतिपणतेज तथाभक्तिपणतेजकहियें॥१२३॥पणशरीरनावर्णं रूपंकरीला

खनथाय एटले पेहेलाबांध्याजेकर्म तेजेवारें नोगववामांआवे तेवारेंपण अरतिलेइ नेजआवे अनेपछे तेकर्मों विपाकेपण, डुःखआपे ॥ ६७ ॥

सदा यत्र स्थितो द्वेषोल्लेखः स्वप्रतिपंथिषु ॥ सुखानुनवकाले पि तत्र तापहतं मनः ॥ ६ए॥ स्कंधात् स्कंधांतरारोपे नारस्येव न तत्वतः ॥ अक्षाल्हादेपि डुःखस्य संस्कारोपि निवर्त्तते ॥७०॥

अर्थ ॥ जेहनेसदैवशत्रुउपर द्वेषरह्योछे तेप्राणीजो घरमांसुखेंबेठोहोय तोपण तेहनेसुखनहोय तेमविषयसुखमां अनुनवकालेंपण जेहनोविषयना तापेकरीमन हणाणोछे तेहनेसुख क्यांथीहोय ॥ ६ए ॥ जेमएकखंनाउपरथी बीजाखंनाउपर नारलीधो पणतत्वथी नारउतर्योनही एमइंद्रियोनेआनंदे डुःखनोसंस्कारमटतोनथी

सुखं डुःखं च मोहश्च तिस्रोपि गुणवृत्तय ॥विरुद्धा अपि वर्त्तंते डुःखजात्यनतिक्रमात् ॥ ७१ ॥ क्रुद्धनागफणानोगो पमोनो गोनवोखिलः ॥ विलासश्चित्ररूपोपि नयहेतुर्विवेकिनां ॥ ७२ ॥

अर्थ ॥ सुखडुःखअनेमोह एत्रणे जोपणविरुद्धछे तोपणगुणवृत्तीयेवर्त्तेछे के मकेडुःखनीजातिने उलंघनकरीशकतानथीमाटे. गुणवर्त्तिरूपछे ॥ ७१ ॥ क्रोधी नागनीफणना विस्तारसरखो सर्वनोगविलासछे वलीतेनोगविलास यद्यपिविचित्ररू पछे तथापि विवेकीजनने तेनयनोहेतुछे ॥ ७२ ॥

इत्थमेकत्वमापन्नं फलतः पुण्यपापयोः॥मन्यते यो न मूढात्मा नां तस्तस्य नवोदधेः॥ ७३ ॥ डुःखैकरूपयोर्निन्न स्तेनात्मा पुण्य पापयोः ॥ शुद्धनिश्चयतः सत्य चिदानंदमयःसदा ॥ ७४ ॥

अर्थ ॥ एरीतें फलनीअपेक्षायें पुन्यपापनुं एकत्वपणुंठेराव्युं पणजेमूर्खनमानशे तेसंसारमांनटकशे अनेजेमानशेतेनवसागरतरीजशे ॥ ७३ ॥ पुन्यअनेपाप एबेहुए कसरखाडुःखरूपजछे.तेथकीआत्मानिन्नछे शुद्धनिश्चयनयथी सदासत्चिदानंदमयछे

तत् तुरीयदशाव्यंग रूपमावरणा व्ययात् ॥ नात्युष्णो द्योतशी लस्य घननाशाद्रवेरिव ॥ ७५ ॥ जायंते जाग्रतो ऽक्षेन्य श्चित्रा धिसुखवृत्तयः ॥ सामान्यं तु चिदानंद रूपं सर्वदशान्वयि ॥ ७६ ॥

अर्थ ॥ एवाततेचोथीदिशायें जाणवायोग्यछे जेमवर्षाकालमां मेघवरसीरह्या प छी वादलनाशथायछे अनेसूर्यप्रनाशोनेछे तेमव्यंगरूपविचित्र एहवोआवरणविशे

अर्थ ॥ आत्माज्ञानरूपछे माटेआत्माने आश्रवसंवरकोइनकहियें पणकर्मपुज्ञल तुंग्रहेवुं तथारोधवुंते आश्रवसंवरछे ॥ १३१ ॥ जेनावेंकरी स्वाधीनपणे कर्मपुज्ञलने आत्माग्रहेछेते मिथ्यात्वअविरति कषाय अनेयोगजेआश्रवतेणेकरीजाणवुं ॥ १३२॥

भावनाधर्मचारित्र परिषहजयादयः॥ आश्रवोछेदिनो धर्मा आ त्मनो भावसंवराः॥ १३३ ॥आश्रवः संवरो न स्या त्संवरश्चा श्रवः क्वचित्॥भवमोक्ष फलाभेदो न्यथा स्याद्धेतुसंकरात् १३४

अर्थ ॥ अनेभावनाधर्मजेंचारित्रछे जेथकी परिसहनोजयथायते एआश्रवनो उ छेदकधर्मछे एआत्माने भावसंवरकहियें जेआश्रवतेसंवरनथाय अनेजेसंवर ते आश्रवनथाय हेतुसंकर एवेजोकदापि एकरूपथाय तोसंसारअनेमोक्ष एवेनाफल प णएकथाय पणतेमांभेदरहेनही एटलेज्यांआश्रवेंकरीसंवरतुं संक्रमणथाय त्यांमोक्षफ लजाणवुं अनेज्यांसंवरेंकरी आश्रवतुंसंक्रमणथाय त्यांसंसारफलजाणवुं ॥ १३४ ॥

कर्माश्रवश्च संवरएवा त्रात्मा भिन्नै र्निजाशयैः॥करोति न परापेक्षा मलंभूष्णुः स्वतः सदा ॥१३५॥ निमित्तमात्रभूता तु हिंसाऽहिंसा दयोखिलाः॥ ये परप्राणिपर्याया न ते स्वफलहेतवः ॥ १३६॥

अर्थ॥आश्रवभावने संवरकरतोथकोजे पोतानीआत्माथीजूदांनथी एवाजे पोता नाआश्रय तेणेकरी परअपेक्षानकरे केमकेतेपोताथी सदायसमर्थछे॥३५॥जेहिंसाअ हिंसादिकसघला परप्राणिनापर्याय तेआत्माने निमित्तभूतछे पणपोतानेफलहेतुनथी

व्यवहारविमूढस्तु हेतूंस्तानेव मन्यते ॥ बाह्यक्रियारतस्वांत स्तत्वं गूढं न पश्यति ॥ १३७ ॥ हेतुत्वं प्रतिपद्यंते नैवेति नियम स्पृशः ॥ यावंत आश्रवाः प्रोक्ता स्तावंतोहि परिश्रवाः॥१३८॥

अर्थ ॥ व्यवहारमूढजेआत्मातेपरपर्यायने पोताना फलहेतुमानेछे माटेजेतुंम न बाह्यक्रियामांरक्तछे तेवाप्राणीगुप्ततत्वने देखतानथी ॥ १३७ ॥ जेहिंसादिक त थाअहिंसादिक परपर्यायहेतुपणुंछे तेनेपडिवजे अथवानथीपडवजेता एहवानिय म तेतोनिश्चयनाजेफरसनाराछे तेहनेजेटलाआश्रवछे तेटलासंवररूपथाय॥१३८॥

तस्मादनियतं रूपं बाह्यहेतुषु सर्वथा॥ नियतौ भाववैचित्र्या दात्मैवाश्रवसंवरौ ॥ १३९ ॥ अज्ञाता विषयासक्तो बध्यते विषयैस्तु सः॥ज्ञानाद्विमुच्यते चात्मा नतु शास्त्रादिपुद्गलात्१४०

काववुं तेनुंनाम मुक्तिछे एमजाणवुं ॥ ७३ ॥ रागद्वेषेंव्याप्यो जेमननोक्लिष्ट परिणाम छे तेकांइआत्मानोनथी आत्मातुंरूपतो सत्यार्थपणेअविकारीछे ॥ ७४ ॥

श्रुतवानुपयोगश्चे त्स्येतन्मिथ्या यथा वचः॥ तथात्मा शुद्धरूपश्चे त्स्येवं शब्दनया जगुः ॥७५॥ शुद्धपर्यायरूपस्त दात्मा शुद्धस्व जावकृत् ॥ प्रथमाप्रथमत्वादि जेदोप्येवं हि तात्त्विकः ॥ ७६॥

अर्थ ॥ जेम आत्मानुंउपयोग श्रुतवंतछे एखोटुंछे तेमशब्दनयवालाकहेछेके आत्माशुद्धरूपनथी एपणखोटुंछे ॥ ७५ ॥ शुद्धपर्यायरूप आत्मापूर्वपश्चातपणानो जे जेद तेपणे शुद्धस्वजावनोकर्त्ताछे एमतात्त्विकछे ॥ ७६ ॥

ये तु दिक्पटदेशीयाः शुद्धद्रव्यतयात्मनः ॥ शुद्धस्वजावकर्तृत्वं जगुस्ते पूर्वबुद्धयः ॥ ७७ ॥ द्रव्यास्तिकस्य प्रकृतिः शुद्धा संग्रह गोचरा ॥ येनोक्ता संमतौ श्रीमत्सिद्धसेनदिवाकरैः ॥ ७८ ॥

अर्थ ॥ दिगंबरएमकहेछेके शुद्धद्रव्यार्थें वलीजेमउपयोगविना श्रुतजाण्यो तेमुंपण शुद्धस्वजावनुं कर्त्तापणुंजतुंनथी केमकेतेतेने स्वजावेजपरिणमेछे एमअपूर्वबुद्धिनुं केवुंछे ॥ ७७॥ द्रव्यास्तिकनयनीजे शुद्धप्रकृतिछे तेसंग्रहनयउपरचाले केमकेसम्मति ग्रंथमां सिद्धसेनसूरियेंकह्युंछे ॥ ७८ ॥

तन्मते च न कर्तृत्वं जावानां सर्वदान्वयात् ॥ कूटस्थः केवलं तिष्ठ त्यात्मा साक्षित्वमाश्रितः ॥ ७९ ॥ कर्तुं व्याप्रियते नायमुदासी न इव स्थितः ॥ आकाशमिव पंकेन लिप्यते न च कर्मणा॥८०॥

अर्थ ॥ तेनेमते कर्त्तापणुंनथी केमकेसदैवजावनो अन्वयछे माटेकूटस्थकेवल निर्विक्रियजे आत्मा तेसाक्षीपणाने आश्रीनेरह्योछे ॥७९॥ करवानोव्यापार करतो नथी उदासीनीपठेरह्योछे जेमकूचरें आकाशलेपातुंनथी तेमकर्मेंआत्मा लेपातोनथी

स्वरूपं तु न कर्त्तव्यं ज्ञातव्यं केवलं स्वतः॥ दीपेन दीप्यते ज्योति र्नित्यपूर्वं विधीयते॥८१॥ अन्यथा प्रागनात्मा स्या त्स्वरूपा ननुवृत्तितः॥ जवहेतुसहस्रेणा प्यात्मता स्या दनात्मनः ॥८२॥

अर्थ ॥ पोतानारूपनेनवीनकरवुंनथी मात्रपोताना रूपनेंपोताथकीकेवल जाणी लेवुंछे जेमदीवेथी ज्योतिदीपेछे तेमनित्य शाश्वतआत्मा स्वप्रकाशहोवाथी पोतेपोता

अर्थ॥जेपूर्वेंकह्यो तपअनेसंयम स्वर्गहेतुछे तेपणउपचारेंकहियें सर्वेपरिणामेछे पण जेमघीबलेछेएउपचारेंछे पणअग्निबलेछे एखरुंछे॥१४७॥जेअंशेकरी आत्मा योग वर्त्तीथयो तेअंशेआश्रवकहियें अनेजेअंशेआत्माउपयोगी तेअंशेसंवरकहियें॥१४८

तेनासावंशविश्रांतौ बिभ्रदाश्रवसंवरौ॥ भात्यादर्श इव स्वच्छा स्वच्छभागद्वयः सदा ॥१४९॥ शुद्धैव ज्ञानधारा स्या त्सम्यक्त्व प्राप्त्यनंतरं ॥ हेतुभेदाद्विशेषे तु योगधारा प्रवर्त्तते ॥ १५० ॥

अर्थ ॥ तेमाटेआ अंशविश्रांतिनेविषे आश्रवसंवर धरेछे तेमांएकछे मलिन अ ने एकछेनिर्मल जेमआरिशाना पडवाडानो भागमलिनछे अने आगलोभागनिर्मलछे तेहनीपरें सदाय निर्मलमलिन एबेभागेंकरीआत्माशोभेछेआरिसानीपेरे॥१४९॥सम कितपाम्यापछी जेशुद्धज्ञानधाराप्रगटे तेहेतुभेदथकी विशेषेंकरी योगधाराप्रवर्त्तेछे॥

सम्यग्दृशो विशुद्धत्वं सर्वास्वपि दशास्वतः ॥ मृदुमध्यादिभाव स्तु क्रियावैचित्र्यतोभवेत्॥१५१॥यदा तु सर्वतः शुद्धि र्जायते धा रयोर्द्वयोः ॥ शैलेशीसंज्ञितस्थैर्या त्तदा स्यात्सर्वसंवरः॥१५२॥

अर्थ ॥ समकेतिने सर्वदशामां शुद्धपणुंछे एमाटे लघु मध्यम उत्तम एभावजे छे तेक्रियाविचित्रताथीछे ॥ १५१ ॥ जेवारेंसर्वथी मनवचनकायानायोग तथाउपयो गएबेधारानी शुद्धिथाय तेवारेंशैलेशीनामेस्थिरताथी सर्वसंवरहोय ॥ १५२ ॥

ततोर्वाग् यच्च यावच्च स्थिरत्वं तावदात्मनः॥संवरो योगचांचल्यं यावत्तावत्किलाश्रवः॥१५३॥निर्जरा कर्मणोत्सादो नात्मा ऽसौ कर्म्मपर्ययः ॥येन निर्जीयते कर्म स्वभावस्तात्मलक्षणं॥ १५४ ॥

अर्थ ॥ अनेतेथीपेहेलांहेठला गुणठाणेंतोजिहांसुधी आत्माने स्थिरतापणुंछे ति हांसुधीआत्माने संवरवर्त्तेछे अने जिहांसुधीयोगनीचंचलताछे तिहांसुधीनिश्चयेंथी जाणीयें जे आत्मानेआश्रवपणुंवर्त्तेछे एमयावत् शैलेशीकरण सुधीसमजवुं॥१५३॥ कर्मनुंजेशाडवुं तेनेनिर्जराकहियें पणआत्मापोतें कर्मपर्यायरूपनथी तेमाटे कर्मनिर्ज रियेंएवोजेस्वभाव तेआत्मानुंलक्षणछे ॥ १५४ ॥

तत्तपो द्वादशविधं शुद्धज्ञानसमन्वितं ॥ आत्मशक्तिसमुद्भानां चित्तवृत्तिनिरोधकृत् ॥ १५५ ॥ यत्र रोधः कषायाणां ब्रह्मध्यानं जिनस्य च॥ ज्ञातव्यं तत्तपः शुद्ध मवशिष्टं तु लंघनं ॥ १५६ ॥

नोनाश तेमपुत्रनो पणनाशथायछे तेमअनात्माथी आत्मानीउत्पत्तिरूप प्रवादथी पूर्वनोअभाव अनेउत्तरनो भावथतां पूर्वनीपठे उत्तरनानाशनो पणसंभव सिद्ध्था यछे एथीआत्मा अशाश्वत अनेनाशरूप ठरसे ॥ ए५ ॥ आकाशनादृष्टांतवडे आ त्मानुंअचलपणुं अनेआत्मानाधर्मोनु चलायमानपणुं सिद्धकरेछे जेमआकाशउत्प त्तिरहितछे तेथीतेनुंरूपांतर थतुंनथी तेमजआत्मापण उत्पत्तिरहित होवाथीतेनो रूपांतरथतुंनथी अनेआत्मानाधर्म उत्पत्तिवानछे तेथीतेनुं रूपांतरथायछे अंहीप ण आकाशनुंव्यतिरेकपणे दृष्टांतलेवुं जेवस्तुआकाशनीपेठे उत्पत्तिरहित नथीहोती तेनुंरूपांतर थायछे ॥ ए६ ॥

ऋजुसूत्रनयसूत्रः कर्तृतां तस्य मन्यते ॥स्वयं परिणमत्यात्मा यं यं भावं यदा यदा ॥ ए७ ॥ कर्तृत्वं परभावाना मसौ नाभ्युप गच्छति ॥ क्रियाद्वयं हि नैकस्य द्रव्यस्याभिमतं जिनैः ॥ ए८ ॥

अर्थ ॥ ज्यारेआत्मानु रूपांतरथतुंनथी त्यारेपरिणामवादनो उच्छेदथशे एवी आशंकाकरीनेतेनुं उत्तरकहेछे यद्यपिऋजुसूत्रनयवालो ज्यारेज्यारे जेजेभावनापरि णामने आत्मापामेछे त्यारेत्यारे तेतेभावरूप कर्मवडे परिणामरूप उत्पत्तिमानेछे ॥ ए७ ॥ तथापिआत्माने कर्तृत्वपणे बीजाभावनी प्राप्तिथतीनथी केमके एकद्र व्यमां बेक्रियासंभवेनही एवुंजिननुं अभिमतछे ॥ ए८ ॥

भूतिर्या हि क्रिया सैव स्यादेकद्रव्यसंततौ॥न साजात्यं विना च स्यात् परद्रव्यगुणेषु सा॥ एए॥ न चैवमन्यभावानां न चेत्क र्त्ता परोजनः॥ तदा हिंसादयादान हरणाय व्यवस्थितः॥१००॥

अर्थ ॥ भूतिएटले भावअनेक्रिया एबन्नेनोएक अर्थछेते एकद्रव्यसंततिनेविषे सामान्यविना नथाय अनेद्रव्यनागुणनेविषे पणनथाय केमकेकोइपण द्रव्य अपर भावनो कर्त्ताहोतोनथी ॥ एए ॥ एमजआत्मानेविषे अन्यभावनुं कर्तृत्वपणुंनथी त्यारेशिष्यपूछेछे के हिंसा दया दानवगैरेनी व्यवस्थाकेम रहेशे ॥ १०० ॥

सत्यं पराश्रयं न स्यात् फलं कस्यापि यद्यपि ॥ तथापि स्वगतं कर्म स्वफलं नाभिवर्त्तते॥१०१॥ हिनस्ति न परं कोपि निश्चया न्न च रक्षति॥न चायु कर्मणोनाशो मृतिजीवनमन्यथा ॥१०२॥

अर्थ ॥ त्यारेगुरुकहेछे यद्यपिए तारुंबोलवुं साचुंछे केमके कोइनेपण पराश्रयें

स्थितिश्रो तेस्थितिश्रोनिश्चेंथी क्षयथाय ॥ १६३ ॥ तेमाटेज्ञानमयी जेशुद्धतपतीते नेनिश्चयथी शुद्धनावनिर्जराथाय पणअज्ञानतपसीनेकांइनथाय ॥ १६४ ॥

बंधः कर्मात्मसंश्लेषो द्रव्यतः स चतुर्विधः ॥ तद्वेतध्यवसाया त्मा नावतस्तु प्रकीर्त्तितः॥१६५॥वेष्टयत्यात्मनात्मानं यथा सर्प स्तथा पुमान्॥तत्तनावैः परिणतो बध्नात्यात्मानमात्मना॥१६६॥

अर्थ ॥ कर्मनीसाथेंआत्मानुंजेमलवुं तेनेबंधकहियें तेबंधचारनेदेंछे तेहेतुअध्य वसायें आत्मानावथीकह्योछे ॥ १६५ ॥ जेमसर्पपोतानीमेळें पोतेविंटायछेतेमआ त्मापण तेतेनावें परिणम्योथको पोतेपोतानीमेळेज कर्मसायेंबंधायछे ॥ १६६ ॥

बध्नाति स्वं यथा कोश कारकीटःस्वतंतुनिः॥आत्मनः स्वगतैर्ना वैर्बंधने सोपमा स्मृता॥१६७॥जंतूनां सापराधानां बंधकारी न हीश्वरः ॥ तद्बंधकानवस्थाना दबंधस्याप्रवृत्तितः ॥ १६८ ॥

अर्थ ॥ जेमरेशमनोकीडो पोतानीलाळेकरी पोतेजबंधायछे तेमआत्मा पोताना रागादिपरिणामेकरी पोतेजबंधायछे एउपमाकही ॥ १६७ ॥ पणजेईश्वरकर्त्ताकहेछे तेवातनिषेधछे अपराधीजीवनेकांइ ईश्वरबंधकर्त्तानथी तेईश्वरबंधकर्त्तापणाना निषेध वाथकी अबंधनीय आत्मानेविषे अप्रवृत्तिछे एटलेस्वनावेज बंधनिवृत्तिआत्मानेछे पणईश्वरकर्त्तानथी ॥ १६८ ॥

तत्वाज्ञानं प्रवृत्यर्थे ज्ञानवन्नोदना ध्रुवा ॥ अबुद्धिपूर्वकार्येषु स्वप्नादौ तददर्शनात् ॥ १६९॥ तथा नव्यतया जंतु र्नोदितश्च प्रवर्त्तते ॥ बध्नन् पुण्यंच पापं च परिणामानुसरतः ॥ १७० ॥

अर्थ ॥ ज्ञानवंतनी जेप्रेरणाछे तेतत्वज्ञाननी प्रवृत्तिनेअर्थे ध्रुवछे केमकेस्वा प्नादिक जेअबुद्धिपूर्वक कार्यछेतेनेविषे ए ज्ञाननी प्रेरणाकांइ देखातीनथी तेमाटे ॥ १६९ ॥ तेमज प्राणीनव्यतायें प्रेर्योथको परिणामने अनुसारेंकरी पुण्यपापने वांधतोथको प्रवर्त्तेछे ॥ १७० ॥

शुद्धनिश्चयतः स्वात्मा न बद्धो बंधशंकया॥नयकंपादिकं किंतु रज्जावहिपतेरिव ॥ १७१ ॥ रोगस्थित्यनुसारेण प्रवृत्ती रोगि णो यथा ॥ नवस्थित्यनुसारेण तथा बंधोपि वर्ण्यते ॥ १७२ ॥

अर्थ ॥ शुद्धनिश्चयनयथकीतो आत्माबंधकछे पणनयकंपादिकेंकरी बंधनीशंका

परांश्रितानां भावानां कर्तृत्वाद्यभिमानतः ॥ कर्मणा बध्यतेऽज्ञा
नी ज्ञानवांस्तु न लिप्यते ॥१०९॥ कर्त्तैवमात्मनोपुण्य पापयो र
तिकर्मणोः ॥ रागद्वेषाशयानां तु कर्त्तेष्टानिष्टवस्तुषु ॥ ११० ॥

अर्थ ॥ परआश्रितजेभाव तेनोहुंकर्त्ताछुं एमअभिमानथीकहेवुं एवांकर्मेअज्ञानी बंधायछे पणज्ञानीतेवाकर्मे लेपातानाथी ॥ १०९ ॥ माटेआत्मातेपुण्यपापरूप कर्मेनोकर्त्ताछे राग द्वेषआशयनो कर्त्ताछे अनेइष्टअनिष्टवस्तुनेविषेपण आत्माकर्त्ताछे.

रज्यते द्वेष्टि चार्थेषु तत्तत्कार्यविकल्पतः ॥ आत्मा यदा तदा
कर्म भ्रमदात्मनि युज्यते ॥ १११ ॥ स्नेहाभ्यक्ततनौ रंगं रेणुना
श्लिष्यते यथा॥रागद्वेषानुविद्धस्य कर्मबंधस्तथा मतः॥११२॥

अर्थ ॥ जेवारेंतेतेकर्मनाविकल्पथी आत्मानें कोइपदार्थउपर रागदिशा अथवा द्वेषउपजेछे तेवारेंआत्मामां कर्मनोभ्रमजोडायछे ॥ १११ ॥ तेललगाडेलाशरीरें जेम रजनोलेपवलगेछे तेमरागीअनेद्वेषी आत्माने कर्मनोबंधविलगेछे ॥ ११२ ॥

आत्मा न व्यापृतस्तत्र रागद्वेषाशयं सृजन् ॥ तन्निमित्तोपन
म्रेषु कर्मोपादानकर्मसु ॥११३॥ लोहं स्वक्रिययाभ्येति भ्रामको
पलसंनिधौ॥यथा कर्म तथा चित्रं रक्तद्विष्टात्मसंनिधौ ॥११४॥

अर्थ॥तिहांआत्मापोते कोइक्रियाकरतोनथी पणराग द्वेषकरतोथको तेनिमित्तेपाम्या जेकर्म तेनानिमित्तेंकर्त्तापणुंकर्मछे पणतिहांआत्मातो राग द्वेषरूपकर्मनो मूकनारोछे एटले आत्माभावकर्मनो व्यापारवंतछे पणद्रव्यकर्मनोव्यापारवंतनथी ॥११३॥ जेमचमकपाषाणते लोहने आकर्षे तेणेकरीलोह पोतानीक्रियायें चमकपासेंआवीमजे तेमरागद्वेषीआत्मानीपासें कर्मआकर्षणेंआवीमजेछे ॥ ११४ ॥

वारि वर्षन् यथांभोदो धान्यवर्षीनिगद्यते॥भावकर्म सृजन्नात्मा
तथा पुद्गलकर्मकृत् ॥ ११५ ॥ नैगमव्यवहारौ तु ब्रूतः कर्मा
दिकर्तृतां ॥ व्यापारः फलपर्यंतः परिदृष्टो यदात्मनः ॥११६॥

अर्थ ॥ जेमपाणीवरसेछे तेलोकव्यवहारें धान्यवरसेछे एमकहियें तेमभावकर्म करतोथको आत्मापुद्गल कर्मनोकर्त्ताकहियें॥११५॥ नैगमव्यवहारनयवाला तो कर्मादिकनोकर्त्ताआत्माने मानेछे जेआत्मानो व्यापार तेफलपर्यंतदेखायछे ॥ ११६ ॥

अथवा ज्ञानवडे प्रकाशनेपाम्यो नहतो त्यांसुधी तमरूपअज्ञान अनेबंधवानथयो हतो पणअनुनवथयापछी आत्मानेविषे बंधनथी ॥ १७६ ॥

द्रव्यमोक्षः क्षयः कर्म्म द्रव्याणां नात्मलक्षणं ॥भावमोक्षस्तु तद्धेतु रात्मारत्नत्रयान्वयी॥१७७॥ ज्ञानदर्शनचारित्रै रात्मैक्यं लभते यदा॥कर्माणि कुपितानीव भवंत्याशु तदा पृथग्॥१७८॥

अर्थ॥जेद्रव्यकर्मनो क्षयतेद्रव्यमोक्षछे पणतेकांइआत्मानुंलक्षणनथी मात्रतेद्रव्य कर्मनोक्षयतेमोक्षनुं हेतुथायछे पणआत्मातोरत्नत्रय परिणतिरूपछे तेने द्रव्यकर्मनो क्षयतो उपचारथीमोक्षहेतुकहियें पणवस्तुथीतत्वबुद्धियेंकहेवायनही १७७ तेज्ञानद र्शनचारित्रएरत्नत्रयीवरेंकरीने जेवारेंआत्माएकनावपणानेपामेतेवारेंजेकर्महतांतेको इकसंसारीजीवजेम रीसाइनेघरमांथीजूदोनिकले तेमकर्मपणजीवथीजुदांनिकलीजाय

अतोरत्नत्रयं मोक्ष स्तदभावे कृतार्थता ॥ पाषंडिगणलिंगैश्च गृहलिंगैश्च कापि न ॥ १७९ ॥ पाषंडिगणलिंगेषु गृहलिंगेषु ये रताः ॥ न ते समयसारस्य ज्ञातारो बालबुद्धयः ॥ १८० ॥

अर्थ ॥ एमाटेजेरत्नत्रयी तेथीजमोक्षछे पणतेरत्नत्रयीनेअनावें पाखंडीसाधुनासमू हने तथापाखंडी ग्रहीलिंगीने कृतार्थपणुं कांइनथी ॥ १७९ ॥ माटेपाखंडीसाधुना समूहमां तथापाखंडीग्रहीलिंगीमां जेप्राणीरक्तछे तेहनेबालमतिवाला समजवा प णतेसिद्धांतनासार एटलेरहस्यना जाणनथी ॥ १८० ॥

भावलिंगरता येपु सर्वसारविदोहि ते ॥ लिंगस्था वा गृहस्था वा सिध्यंति धुतकल्मषाः ॥१८१॥ भावलिंगं हि मोक्षांगं द्रव्य लिंगमकारणं॥द्रव्यं नात्यंतिकं यस्मा न्नाप्येकांतिकमिष्यते१८२

अर्थ ॥ अनेजेप्राणी भावलिंगेंराताछे तेहनेसर्वसारना जाणकहियें तेवेषधारी साधुलिंगेंहोय अथवाग्रहस्थलिंगेंहोय तोपणपापकर्मधोइने मोक्षपामे ॥ १८१ ॥ के मकेजेभावलिंगते मोक्षनुंअंगछे अनेद्रव्यलिंगतोअकारणछे द्रव्यलिंगतेकांइ आत्यंति कनथी माटेजेभावलिंगीछे तेद्रव्यलिंगने एकांतेनथीइछता ॥ १८२ ॥

यथा जातदशालिंग मर्थाद्व्यभिचारि चेत् ॥ विपक्षबाधका भावात् तद्धेतुत्वे तु का प्रमा॥१८३॥वस्त्रावधारणेबाधेद्वाधिकात स्य तां विना ॥ धृतस्य न किमस्थाने करादेरिव बाधकं॥१८४॥

वर्णतायेंकरी समोसरणे अनेछत्रेकरीतथा इंद्रध्वजादिकेकरी जेपरमात्माने वखाण वा एहवीस्तुतिने वस्तुतत्वें करी साचीनकहियें ॥ १२४ ॥

व्यवहारस्तुतिः सेयं वीतरागात्मवर्त्तिनां॥ज्ञानादीनां गुणानां तु वर्णना निश्चयस्तुतिः॥ १२५ ॥ पुरादिवर्णनाद्राजा स्तुतः स्या दुपचारतः ॥ तत्वतः शौर्यगांभीर्य धैर्यादिगुणवर्णनात्॥१२६॥

अर्थ ॥ केमके एस्तुतितोव्यवहारेंछे पणजेमां वीतरागनांज्ञानादिकगुण प्रशंसवा तेहनेनिश्चयस्तुतिकहियें ॥ १२५ ॥ जेमदेशनगरादिकेंकरी राजावखाणवो एउपचा रेंस्तुतिजाणवी पणराजानुंबल गांभीर्यताधैर्यतानुंवर्णववुं तेनिश्चेंथीस्तुतिकहियें॥ १२६

मुख्योपचारधर्माणा मविभागेन या स्तुतिः॥न सा चित्तप्रसादा य कवित्वं कुकवेरिव ॥ १२७ ॥ अन्यथाभिनिवेशेन प्रत्युतान र्थकारिणी ॥ सुतीक्ष्णखड्गधारेव प्रमादेन करे धृता ॥ १२८ ॥

अर्थ॥जेमकोकशास्त्रना कविनीकविताइथी पंडितरीझेनही तेमबाह्यउपचार देखी वेहेचणविना नीजेस्तुतिकरियें तेथकी चित्तप्रसन्नथायनही॥ १२७॥जेपोतानेंहठ कदा ग्रहेंकरी मुख्यउपचारें स्तुतिकरी गुणमानेछे पणतेउलटी अनर्थकारीछे जेमप्रमादें करीहाथमांझालेली तरवारनीधार तेजोकदाचपडेतोउलटी अनर्थविघातकरेछे ते नीपरें तेस्तुतिपण अन्यथाजाणवी ॥ १२८ ॥

मणिप्रभामणिज्ञान न्यायेन शुभकल्पना ॥ वस्तुस्पर्शितया न्याय्या यावन्नान्यजनप्रथा ॥१२९॥ पुण्यपापविनिर्मुक्तं तत्वत स्त्वविकल्पकं ॥नित्यं ब्रह्म सदाध्येय मेषाशुद्धनयस्थितिः ॥१३०॥

अर्थ ॥ मणिरत्ननी कांतिदेखीने जेममणिनुंज्ञानके०ओलखाणथायछे एहष्टां ते शुभकल्पनायेंकरी आत्मानुंज्ञानहोयछे पछेवस्तुस्पर्शिकवडेकरी योग्यताथायछे प णजांसुधिनिरंजन प्रधानथीथयी त्यांसुधीकर्मछे ॥ १२९॥ माटेपुण्यपापरहितपणे त त्वथीनिर्विकल्पएवो शाश्वतोजे आत्मातेसदाथध्यावो एवीशुद्धनयनीस्थितिछे॥ १३०॥

आश्रवः संवरश्चापि नात्मा विज्ञानलक्षणः ॥ यत्कर्म पुद्गला दान रोधावाश्रवसंवरः ॥ १३१॥ आत्मा दत्ते तु यैर्भावैः स्वतंत्रः कर्मपुद्गलान्॥मिथ्यात्वाविरती योगाः कषयास्ते तदाश्रवाः॥१३२॥

॥ १८९ ॥ एहिजउत्कृष्टअध्यात्मछे एहिजअमृतोपमछे वलीएहिज परमज्ञानछे अने एहिजपरमयोगकह्योछे ॥ १८८ ॥

गुह्याद्गुह्यतरं तत्व मेतत्सूक्ष्मनयाश्रितं ॥ न देयं स्वल्पबुद्धि नां तद्धेतस्य विडंबिका ॥ १८१ ॥जनानामल्पबुद्धीनां नैतत्तत्वं हितावहं ॥ निर्बलानां क्षुधार्त्तानां भोजनं चक्रिणो यथा ॥१८२॥

अर्थ ॥ छानामांछानुं एतत्वछे माटेसूक्ष्मनयआश्रीने एतत्वअल्पबुद्धिने नसंभलाव वुं शामाटेकेजे अल्पमतिवाला तेएतत्वनाविटंबकछे ॥ १८१ ॥माटेअल्पबुद्धिवंत प्राणी ने एतत्वहितकरेनही जेमचक्रवर्तिनो खीरनुं भोजनते निर्बलजेक्षुधायेंपीड्या प्राणी होयतेनेपचेनही तेनीपरेंजाणवुं ॥ १८२ ॥

ज्ञानांशदुर्विदग्धानां तत्वमेतदनर्थकृत् ॥ अशुद्धमंत्रपाठस्य फणिरत्नग्रहो यथा ॥१८३॥ व्यवहारविनिष्णातो योज्ञीप्सति विनिश्चयं ॥ कासारतरणाशक्तः सागरं स तितीर्षति ॥१८४॥

अर्थ ॥ तेमखंडखंड पंडिताइयेंकरीने अथवल्याएहवा जेप्राणी तेनेएतत्व अन र्थकारीछे जेमअशुद्ध मंत्रनापाठवालो पुरुष सर्पनीमणिलेवाजाय तेतेनेअनर्थकारी थाय तेनीपरेंसमजवुं ॥ १८३ ॥ जेप्राणीव्यवहारनयमां कुशलनथी अनेनिश्चयनयने समजवाजाय तेप्राणीतलावने तरवामांअसमर्थछता समुद्रतरवा वांछेछे ॥ १८४ ॥

व्यवहारं विनिश्चित्य ततः शुद्धनयाश्रितः ॥
आत्मज्ञानरतोभूत्वा परमं साम्यमाश्रयेत्॥१८५॥

अर्थ ॥ व्यवहार अनेनिश्चेंकरी शुद्धनयनेआश्रीने आत्मज्ञाने रतथइ जेप्रवर्त्ते तेप्राणी परमपदनेपामे ॥ १८५ ॥ इतिआत्मनिश्चयाधिकारः अष्टादशसमाप्त

---

उत्सर्प्पद्व्यवहारनिश्चयकथाकल्लोलकोलाहल त्रस्यद्दुर्नयवादिक च्छपकुलं भ्रश्यत्कुपक्षाचलं ॥ उद्यद्युक्तिनदीप्रवेशसुभगं स्या द्वादमर्यादया युक्तं श्रीजिनशासनं जलनिधिं मुक्त्वा परं नाश्रये॥१॥

अर्थ ॥ हवेजिनशासनरूप रत्नाकरनीस्तुति करेछेतेमांप्रथम जिनशासनने समु द्रनीउपमाआपेछे तेजिनशासनरूपसमुद्र केवोछेतेकहेछे पसरतीएहवी व्यवहारत था निश्चयेंनयनीजेकथा तेरूपजेकल्लोल तेनोजेकोलाहल तेणेकरीने दुष्टजननयवा

अर्थ ॥ तेमाटे सर्वायबाह्यहेतुनेविषे अनियतरूपछे नियतिनेविषे नावना विचित्र पणाथकी आत्मातेज संवर आश्रवरूपछे ॥ १३९ ॥ जेअज्ञानीछे अने विषयासक्तछे तेहिजविषयमां बंधायछेते विषयतो आत्माने आत्मज्ञानथकी मूकाय पणशास्त्रा दिक पुद्गलथकी नमूकाय ॥ १४० ॥

शास्त्रं गुरोश्च विनयं क्रियामावश्यकानि च ॥ संवरांगतया प्रा हुर्व्यवहारविशारदाः ॥ १४१ ॥ विशिष्टा वाक्तनुस्वांतपुद्गला स्ते फलावहाः॥ये तु ज्ञानादयोन्नावाः संवरत्वं प्रयांति ते॥१४२॥

अर्थ ॥ शास्त्रजणवुं गुरुनोविनयकरवो तथाआवश्यकादिकक्रियाकरवी एनेव्यव हारमां विचक्षणपुरुषोये संवरनाअंगकह्यांछे ॥१४१॥ जेरुमामनवचनकायायेंकरी प्र वर्त्तवुं तेहनाजेपुद्गलतेफलदाइछे पणजेज्ञानादिकन्नावछे तेसंवरपणानेपामेछे॥१४२॥

ज्ञानादिन्नावयुक्तेषु शुन्नयोगेषु तद्गतं ॥ संवरत्वं समारोप्य स्मयंते व्यवहारिणः ॥ १४३ ॥ प्रशस्तरागयुक्तेषु चारित्रादिगु णेष्वपि ॥ शुन्नाश्रवत्वमारोप्य फलन्नेदं वदंति ते ॥ १४४ ॥

अर्थ ॥ ज्ञानादिकन्नावेंयुक्त एवाजेशुन्नयोगतेनेविषे तद्गतजेसंवरत्वतेनेआरोपीने व्यवहारें प्रवर्त्तकजेजीव तेहर्षपामेछे ॥ १४३ ॥ रुमारागेंयुक्त एवाजेचारित्रादिक गुणतेनेविषे पण शुन्नआश्रवपणुं आरोपीने फलन्नेदकहेछे ॥ १४४ ॥

न्नवनिर्वाणहेतूनां वस्तुतोन विपर्ययः ॥ अज्ञानादेव तद्भानं ज्ञानी तत्र न मुह्यति ॥१४५॥ तीर्थकृन्नामहेतुत्वं यत्सम्यक्त्वस्य वर्ण्यते ॥ यच्चाहारहेतुत्वं संयमस्यातिशायिनः ॥ १४६ ॥

अर्थ ॥ संसारतथामोक्षनोहेतु तेनेवस्तुतत्वें कांइविपर्यासनथी पणअज्ञाननायोग थकी तेजगायें विपर्यासपणुंथायछे पणतिहांज्ञानीपुरुष कांइमुंजातानथी ॥ १४५ ॥ जिननामकर्मनोहेतु जेसमकितने वर्णवीएछैयें तेपणउपचारेंकहेवायछे अनेआहार कशरीरनोहेतु जेअतिशयलब्धिवंत संयमिमुनि तेपणउपचारेंकहेवायछे ॥ १४६ ॥

तपःसंयमयोः स्वर्ग हेतुत्वं यच्च पूर्वयोः॥उपचारेण तद्युक्तं स्या द् घृतं दहतीतिवत् ॥१४७॥ येनांशेनात्मनोयोग स्तेनांशेना श्रवोमतः॥येनांशेनोपयोगस्तु तेनांशेनास्यसंवरः ॥ १४८ ॥

धारुं कृत्यथाय जेथकीमार्गेनिर्मलथायछे वलीचक्षुमांथी प्रमादरूपनिद्राजायछे तथा जेमसूर्योदयथी दिवस उग्योएमसिद्धथायछे तेमजैनागमना उदयथी प्रमाणनीसिद्धतारूपदिवसनीसिद्धताथायछे तेजाणियेंदिवसनेप्रारंभे लोकप्रजातेमंगलीकबोलेछे जेमसूर्यउदये लोकन्यायमार्गेचाले न्यायनावचनबोले तेमजैनसूर्यउदये नयतथा गमानीवाणीतें घणीरूडीरीतेप्रौढतापामेछे एवोएजिनशासनरूपियो सूर्य तेजयवंतोवर्त्तो

अध्यात्मामृतवर्षिभिः कुवलयोल्लासं विलासैर्गवां तापव्यापविनाशिभिर्वितनुते लब्धोदयोयः सदा॥तर्कस्थाणुशिरःस्थितः परिवृतः स्फारैर्नयैस्तारकैः सोयं श्रीजिनशासनामृतरुचिः कस्यैति नो रुच्यतां॥५॥

अर्थ ॥ हवेजिनशासनने चंद्रनीउपमाआपी वखाणेछे अध्यात्मरूप अमृतनो जेवरसाद तेणेकरीने कुवलयजेपृथ्वीरूपकमल तेनेविकस्वर करेछे एहवो वली गवांके० वाणीरूपकिरण तेनाविलासेंकरीने संसारना तापनोजेसमूह तेनोनाशकरेछे एहवो वली एचंद्रमाकेवोछे जेतर्कविचार रूपीयोजे महादेव तेनामस्तकेरह्योथको उदयपाम्योछे एवो वली दीप्ताजेनय तेरूपजेतारामंडल तेणेपरिवर्योथको फिरेछे एवोजिनागमचंद्र ते आजिनशासन रूपियोजेचंद्रमाते कोनेरुचिपणाने नउपजावे अपितु सर्वनेउपजावेज ॥ ५ ॥

बौद्धानामृजुसूत्रतो मतमभूद्वेदांतिनां संग्रहात्सांख्यानां तत एव नैगमनयाद् योगश्च वैशेषिकः॥शब्दब्रह्मविदोपि शब्दनयतः सर्वैर्नयैर्गुंफिता जैनी दृष्टिरितीह सारतरता प्रत्यक्षमुद्वीक्ष्यते ॥६॥

अर्थ ॥ जेनाअनेकनयमांथी एकेकानयग्रहणेकरीने एटले ऋजुसूत्रनयथी बौद्धनोमतप्रगट्यो अनेसंग्रहनयथी वेदांतिकनो मतप्रगट्यो तथासांख्यमतपण संग्रहनयथीजउपनो अनेनैगमनयथी योगमत अने वैशेषिकमत प्रगट्यो शब्दनयथकी मीमांसकदर्शन उपनुं अनेजैनशासनतो सर्वनयेकरीने गुंफितछे तेमाटेआ जिनशासनमां सारमांसारपणुं प्रत्यक्षपणे रुडीरीतेदेखीयें छैयें ॥ ६ ॥

ऊष्मा नार्कमपाकरोति दहनं नैव स्फुलिंगावली नाब्धिं सिंधुजलप्लवः सुरगिरिं ग्रावा न वाभ्यापतन्॥एवं सर्वनयैकभावगरिमस्थानं जिनेंद्रागमं तत्तद्दर्शनसंकथांशरचनारूपं न हंतुं क्षमाः॥ ७ ॥

अर्थ ॥ उकलाटजे बाफ तेनोजेताप तेसूर्यनेजीतीशकेनही अनेअग्निना कणि

अर्थ ॥ निर्जरानुंकारणते शुद्धज्ञानेसहित प्रगट्यो अने चित्तनी चंचलवृत्तिनेरो कतो एह्वो बारनेदेतपछे ॥१५५॥ जिहां प्रभुनाध्यानयुक्त कषायनोरोधछे. ब्रह्मच र्यनुंधरवुंछे तेशुद्धतपजाणवो एशिवाय बीजोतपतेमात्रलांघण करवा जेवोछे ॥१५६॥

बुभुक्षादेहकार्श्यं वा तपसो नास्ति लक्षणं॥ तितिक्षाब्रह्मगुप्त्या दिस्थानं ज्ञानं तु तद्वपुः ॥१५७॥ ज्ञानेन निपुणेनैक्यं प्राप्तं चं दनगंधवत्॥निर्जरामात्मनो दत्ते तपोनान्यादृशं क्वचित्॥१५८॥

अर्थ ॥ नुखेंमरवुं शरीरनेदुबलुंकरवुं एतपनुंलक्षणनथीपण जिहांज्ञानयुक्तपणे ब्रह्मचर्यनीगुप्तितथा तितिक्षाके०शांतिहोय एतपनुं स्वरूपछे॥१५७॥ जेज्ञानसाथे एक तानावनेपाम्यो एवोजेतपतेनेतपकहियें जेमचंदनसाथे गंध एकतानावनेपाम्योछे ते नीपरेंएतपते ज्ञानेयुक्तथकोआत्मानेनिर्जराफलआपे पण बीजीरीतें नआपे॥१५८॥

तपस्वी जिनन्नक्त्या च शासनोन्नासनोद्यया॥पुण्यं बध्नाति बहु लं मुच्यते तु गतस्पृहः॥१५९॥कर्मतापकरं ज्ञानं तपस्तन्नैव वेत्ति यः ॥ प्राप्नोतु स हतस्वांतो विपुलां निर्जरां कथं ॥१६०॥

अर्थ ॥ जेनिरासीनावेंतपनोकरनारो तपसीजिन तेज्ञानन्नक्तिएकरी शासननेदिपाव वेकरीघणुंपुण्यबांधे कर्मथीमुकाय ॥ १५९ ॥ कर्मनेतापवे एवुंज्ञानछे अनेतेज्ञानमां जेधणी तपनेनजाणे तेतपसीनिर्बुद्धिनोधणी विपुलनिर्जराकेमपामे ॥ १६० ॥

अज्ञानी तपसा जन्म कोटिन्निः कर्म यन्नयेत् ॥अंतं ज्ञानतपोयु क्त स्तत्क्षणेनैव संहरेत् ॥१६१॥ ज्ञानयोगस्तपः शुद्ध मित्याहु मुनिपुंगवाः॥तस्मान्निकाचितस्यापि कर्मणो युज्यते क्षयः १६२

अर्थ ॥ ज्ञानविनाएककोटि नवसुधी जेटलातपकरे तेतपमांजेटलांकर्मक्षय न थाय तेटलांकर्मोनेएकक्षणमां ज्ञानसहित तपेंकरीखपावे ॥१६१॥ माटेज्ञानयोगेंजे तपकरवोतेशुद्धछे एरीतेंप्रभुकहेछे केमकेतेतपथी निकाचितकर्मनो क्षयथायछे ॥१६२

यदिहापूर्वकरण श्रेणिःशुद्धा च जायते ॥ ध्रुवः स्थितिक्षयस्तत्र स्थितानां प्राच्यकर्मणां॥१६३॥ तस्माद् ज्ञानमयः शुद्ध स्तपस्वी न्नावनिर्जरा॥शुद्धनिश्चयतस्त्वेषा शुद्धाशुद्धस्य कापि न॥१६४॥

अर्थ ॥ जेतपथीइहांअपूर्वकरण श्रेणिशुद्धथाय वलिएथीपूर्वकर्मनी रहिजेकर्मनी

पण जिनमतमांनथी तेपदपदप्रत्यें जात्यंतरअर्थनी स्थितिछे माटे सामान्यअनेवि शेष जेवोपदार्थनुं यथार्थनिश्चय तात्पर्यअर्थतेने नजेछे माटेजिनमतमां संदेहरूप खीजोनथी ॥ १० ॥

यत्रानर्पितमादधाति गुणतां मुख्यं तु वस्त्वर्पितं तात्पर्यानवलंबने न तु नवेद्बोधः स्फुटं लौकिकः॥संपूर्णं त्ववनासते कृतधियां कृत्स्नाद्वि वक्षाक्रमात् तां लोकोत्तरनंगपद्धतिपदं स्याद्वादमुद्रां स्तुमः॥११॥

अर्थ ॥ जेस्याद्वादरूपजैनमुद्रातेमां केवोगुणछे के जेमांवस्तुने अनर्पणकरीछता पण तेवस्तुगुणतानेप्राप्तिथायछे अनेवस्तुअर्पणकरीछतांते मुख्यताजावनेपामेछे अने जेनातात्पर्यअर्थने अवलंबनेकरीने तोप्रगटपणे लौकिकबोधथायछे अनेसंपूर्णबो धतो समग्रविवक्षाना अनुक्रमथकी महानिपुणबुद्धिवालाने प्रकाशथायछे तेमाटेए लोकोत्तर नंगजालनुठेकाणुं एवीजेस्याद्वादशैलीरूपमुद्रा तेनेअमेस्तवियेंछैयें ॥ ११ ॥

आत्मीयानुनवाश्रयार्थविषयोप्युच्चै र्यदीयक्रमो म्लेछानामिव संस्कृतं तनुधियामाश्चर्यमोहावहः ॥ व्युत्पत्तिप्रतिपत्तिहेतुविततस्याद्वादवाग्गुंफितं तं जैनागममाकलय्य न वयं व्याक्षेपनाजः क्वचित्॥१२

अर्थ ॥ तेजैनागमकहेवुंछेजेमां पोताना आत्मानो अनुनवकरवाना आश्रयनो विषयछे एहवोउंचपणेकरीने जेहनोक्रमछे एटलेपरिपाटीछे अनेम्लेछनेजेम संस्कृतनाषा आश्चर्यकरनारी अनेमोहउपजावनारीछे तेनीपरें अल्पबुद्धिवालाने अचंबोपामी मुंजाववानुंस्थानकछे माटेजैनागमतो व्युत्पत्तिनुं निरूपण करनाराजे हेतुतेणेकरी विस्तीर्णएहवोजे स्याद्वादमार्गतेणेकरी रचेलुंएहवुं जैनागमछे तेनेपामीने महाराचित्तमां बीजोकोइपण व्याक्षेपपणुं किवारेंपणथतुंनथी ॥ १२ ॥

मूलं सर्ववचोगतस्य विदितं जैनेश्वरं शासनं तस्मादेव समुछितैर्नयमतैस्तस्यैव यत्खंडनं॥एतत्किंचन कौशलं कलिमलछन्नात्मनः स्वाश्रितां शाखांछेतुमिवोद्यतस्य कटुकोदर्काय तर्कार्थिनः ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ माटेसर्ववचनगतसमूहनुंजेमूल एहवुंएजिनशासनकह्युंछे एजिनशासन थकीज प्रगट्या एहवाजे नयनयना मत तेवामतेकरीनेज दुष्टप्राणी तेज जिनआगमनुं खंडनकरेछे तेपापिष्ठआत्माओनो आत्मापापरूपमेलेकरीढंकाणोछे एवादुष्टोनुंजेकांइ किंचितमात्र डाहापणपणुंछे तेजेमकोइकमूर्ख जेवृक्षनीमालें बेठोथको तेजमालकाप

रहेछे जेमदोरडुंदेखी सर्पनीशंकाउपजेछे तेनीपरेंजाणवुं ॥ १७१ ॥ रोगनीस्थितिने अनुसारेंरोगछेएटले जेदिवशेंशरीरउपनुंतेजदिवसथी सर्वरोगनीस्थितीओ शरीरमां उत्पन्नथयलीछे अर्थातशरीरकेवल रोगनीस्थितिरूपजछे पणतेरोगजेवारेंरोगीने कु पथ्यसेवेतेवारेंप्रगटथायछे तेवारेंरोगीपुरुषजेम रोगनीप्रवृत्तिगणेछे तेमजनवस्थितिने अनुसारे आत्माने बंधपणकहियेंछैयें ॥ १७२ ॥

दृढाज्ञानमयीशंका मेनामपनिनीषतः ॥ अध्यात्मशास्त्रमिच्छं ति श्रोतुं वैराग्यकांक्षिणः॥ १७३ ॥ दिशाप्रदर्शकं शाखा चंद्र न्यायेन तत्पुनः॥प्रत्यक्षविषयां शंकां न हि हंति परोक्षधीः १७४

अर्थ ॥ दृढअज्ञानमय एहवीजेशंका तेहनेटालवानेइछतो वैराग्यनो अभिलाषी थको अध्यात्मशास्त्र सांजलवानेइछेछे ॥१७३॥ जेमनिर्मलचक्षुछतां ग्रहणथेलाजेवी नजरथइजायतोतेणेकरी एकचंद्रनीपासे बीजोचंद्रदेखे एन्यायेंकरीजे अध्यात्मशास्त्र छे तेपणदिशिनुंदेखामनारछे पणपरोक्षबुद्धिकांइ प्रत्यक्षविषयनी आशंकाने टाली नशके एटलेअध्यात्मनोविषय प्रत्यक्षपणेनथी परोक्षपणेछे माटेस्वजावेंजे अध्यात्म शास्त्रछे तेपरोक्षबुद्धिछे पणअनुनवते साक्षात् प्रत्यक्षपणाने हणीनशके एटले आ त्मानुजविपुरुषो पोतानाअनुजवेंकरी आत्मानोप्रत्यक्षअनुजवकरेछे ॥ १७४ ॥

शंखश्वैत्यानुमानेपि दोषात्पीतत्वधीर्यथा॥शास्त्रज्ञानेपि मिथ्याधीः संस्काराद्बंधधीस्तथा॥१७५॥श्रुत्वा मत्वा मुहुः स्मृत्वा साक्षादनुभवं ति ये ॥ तत्वं न बंधधीस्तेषा मात्मबद्धः प्रकाश्यते ॥ १७६ ॥

अर्थ ॥ जेममधुरानारोगवंतपुरुष तेयद्यपिशंखने उज्वलोतोजाणेछे पणरोगेकरीते ने पीलावर्णनीबुद्धिथायछे तेमशास्त्रेंकरीआत्मानेनिर्मलतोजाणेछे पणमिथ्यात्वबुद्धि नासंस्कारथकी बंधरूपबुद्धिछे एटलेआत्मानेरागी द्वेषीबंधरूपजेदेखेछे तेअनुजवविना देखेछे एजावार्थछे॥१७५॥गुरुनामुखथी अध्यात्मशास्त्रनुं सांजलवुं तेनेश्रवणकेहेछे तेसांजलेलाविषयना अनुक्रमेपुनःपुनःअंतःकरणमां विचारकरवो तेनेमननकहेछे अ नेसांजलीनेविचारकरी संशयतथाविपर्ययजावरहित थइने उक्तअध्यात्मिक विषयरूप स्वात्मतत्व अंतर्वृत्तिकरीने जेसाक्षात् अनुजवकरवुं तेनेनिदिध्यासनकहेछे एवास्वा त्मज्ञाततत्व पुरुषनेबंधबुद्धि होतीनथी केमके बंधनेप्रकाशकरनारतोआत्मा पोतेंज छे तेअनुजवथयापछी अज्ञानरूपबंधनो आश्रयकेमकरे ज्यांसुधी आत्माअनुजव

शास्त्रोपदर्शितदशा गलितासद्ग्रहकषायकलुषाणां ॥
प्रियमनुभवैकवेद्यं रहस्यमाविर्भवति किमपि ॥ १ ॥
प्रथमाभ्यासविलासा दालिभृंगीव यत्क्षणाल्लीनं ॥ चं
चलतरुणीविभ्रमसमं सुतरलमनः कुरुते ॥ २ ॥

अर्थ ॥ शास्त्रेबतावीजेदशा तेणेकरीने गलीगइछे सारीनरिसी असद्ग्रहरूपक षायनी कलुषताजेहनी तेने प्रियएहवोजे एकअनुभव तेथीजणातुं एवुंजेरहस्य ते कांइकप्रगटथायछे ॥ १ ॥ प्रथमअभ्यासरूपी विलासनायोगेंकरीने जेप्राणीपूर्वोक्त कांइक रहस्यमां लीनथायछे अनेफरीचंचलपणेरहेछे जेमचंचलस्त्री पोतानाविलास नायोगेंकरी कांइकसुखमां लीनथायछे अनेपछे जेवीनेतेवी चंचलरहेछे तथाजेम की डानेभमरी ज्यारेचटकोभरावेछे त्यारेतेनाध्यानेकरीने तेतल्लीनथइजायछे अनेपछेजे वारेंभमरीपोतोना चटकानोउद्योगमुकीआपेछे तेवारेंतेसर्वभूलीजइ पोतानोमूलतुं स्वभाव धारणकरेछे तेनीपरे जाणीलेवुं ॥ २ ॥

सुविदितयोगैरिष्टं क्षिप्तं मूढं तथैव विक्षिप्तं॥ एकाग्रं च निरुद्धं चे
तः पंचप्रकारमिति ॥ ३ ॥ विषयेषु कल्पितेषु च पुरःस्थितेषु च
निवेशितं रजसा॥सुखदुःखयुग्बहिर्मुखमायातं क्षिप्तमिह चित्तं॥४॥

अर्थ ॥ योगज्ञानियें पांचभेदें मनकह्युंछे १ क्षिप्तमन २ मूढमन ३ तेमजविक्षिप्तमन ४ एकाग्रमन ५ निरुद्धमन एपांचप्रकारमननाछे ॥ ३ ॥ तेमांक्षिप्ततुंलक्षणकहे छे पोतानाचित्तनेसन्मुख कल्प्याजेविषय तेनेविषे रजोगुणेंकरीने थाप्युंजेमन अनेसु खतथादुःखयुक्त तेणेकरीयुक्त एवुंजेबहिर्मुखथयलुंचित्ततेने क्षिप्तएवुंमनकह्युंछे॥४॥

क्रोधादिभिर्नियमितं विरुद्धकृत्येषु यत्तमोनु भाग्॥कृत्याकृत्यविभा
गासंगतमेतन्मनोमूढं ॥ ५ ॥ सत्वोद्रेकापरिहतदुःखनिदानेषु सु
खनिदानेषु॥शब्दादिषु प्रवृत्तं तदेव चित्तं तु विक्षिप्तं ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेमांबहुलतायें तमोगुणहोय एटलेक्रोधसहित विरुद्धकामनेविषे तत्पर होय अने विवेकरहितपणे कृत्याकृत्यनी वहेंचणविना जे मन तेनेमूढमनकहीयें ॥५॥जेधैर्यनाबलथी दुःखनाकारणगणतोनथी शब्दादिकविषयमां रूपरसादिकनांका रणजाणी कठोरपणेंप्रवर्त्ते एवुंजेचित्ततेने विक्षिप्तमनकहियें ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ इहांकोइकहेछेजे नगनपणेमोक्षछे तेनेउत्तरकहेछे जोएअर्थथी वातख रीछेतो आत्मानेमोहबाधकछे तेमोहनोअनावथाशे अनेजोनगनपणे मोक्षहोयतो मोह टालवानुं शुंप्रमाण तेवारेंतोमोहटालवानी कांइजरूरनरहे॥ १७३ ॥वस्त्रक्ष णेएटले इक्षाविनापण जो वस्त्ररावतां मोक्षनीबाधकताछे तोइक्षाविनाजे करादिक एटले हाथप्रमुखअंगधरयाछे तेपणमोक्षना बाधकथाशे एटले दिगंबरलोककहेछेके वस्त्ररावबाथी मोक्षनीबाधकताछे तेहनेनिरुत्तरकर्या ॥ १७४ ॥

स्वरूपेण च वस्त्रं चे त्केवलज्ञानबाधकं॥ तदादिक्पटनीत्यैव तत्तदावरणं नवेत् ॥१७५॥ इत्थं केवलिनस्तेन मूर्ध्नि छिन्तेन के नचित् ॥ केवलित्वं पलायंते त्यहोकिमसमंजसं ॥ १७६ ॥

अर्थ ॥ जोपरमार्थथी जेवस्त्रछे तेहिजकेवलज्ञानने बाधकपणेहोयतो दिगंबरनी रीतें केवलज्ञानावरणीने ठेकाणे वस्त्रावरणी एमथवुंजोइयें तेवस्त्रावरणी कर्मदि गंबरीयो कहेतानथी एटलीएनीचूकछे॥१७५॥एरीतेंतो केवलिनेमाथे कोइकवस्त्रओ ढारुं तेवारेंकेवलज्ञानने नासीजवुंजोइयें पणकेवलीने वस्त्रओढाडतां केवलज्ञान नासीजायछे एमतोथतुंनथी माटे अहोइतिआश्चर्य सुंछतुंअसमंजस बोलोछो॥१७६

नावलिंगात्ततोमोक्षो निन्नलिंगेष्वपि ध्रुवः॥ कदाग्रहं विमुच्यै तन्नावनीयं मनस्विना॥१७७॥अशुद्धनयतो ह्यात्मा बंधोमुक्त इ तिस्थितिः ॥ न शुद्धनयतस्त्वेष बध्यते नापि मुच्यते॥१७८॥

अर्थ ॥ तेमाटे नावलिंगथीमोक्षछे वेषनोकांइनियमनथी कदापिद्रव्यथी अन्य लिंगीनोवेषहोय तोपणनिश्चेमोक्षछे माटेकदाग्रहछांमीने बुद्धिवंतपुरुषें एरीतेंविचारवुं ॥ १७७ ॥ अशुद्धनयथी आत्माबंधायछे अनेमुंजायपणछे पणशुद्धनयेतो एआत्मा बंधातोपणनथी अनेमुंजातोपणनथी ॥ १७८ ॥

अन्वयव्यतिरेकाभ्या मात्मतत्वविनिश्चयं॥ नवभ्योपि हि तत्वे भ्यः कुर्यादेवं विचक्षणः॥ १७९॥ इदं हि परमध्यात्म ममृतं ह्य दएव च॥ इदं हि परमं ज्ञानं योगोयं परमः स्मृतः ॥ १८० ॥

अर्थ ॥ अन्वयव्यतिरेकेंकरीने जेछतेतेछतुं तेहनेअन्वयकहियें अनेजेअछते तेअ छतुं तेहनेव्यतिरेककहियें तद्भावेतद्भावोअन्वयः तदभावेतदभावोव्यतिरेकः दंम घटदृष्टांतेनजाण्वं विचक्षणपुरुषे एरीतेंआत्मतत्वनो निश्चयनवतत्वेंकरीने करवो

नप्रतिमा रुडासिद्धांतनापद वचन अक्षर ते पुरुषविशेषजे बहुश्रुतगीतार्थमुनि हो यतेहने एत्रणआलंबन प्रत्येकह्यांछे ॥ १४ ॥

आलंबनैः प्रशस्तैः प्रायोभावः प्रशस्त एव यतः॥इति सालंबनयोगी मनः शुभालंबनं दध्यात् ॥ १५ ॥ सालंबनं क्षणमपि क्षणमपि कुर्या न्मनोनिरालंबं॥ इत्यनुभवपरिपाका दाकालं स्यान्निरालंबः॥ १६ ॥

अर्थ ॥ रुडेआलंबनेकरीने प्रायेंरूडोभावहोय माटेसालंबनयोगी जे रूडाजीव होय तेणेशुद्धआलंबन धरवुं ॥ १५ ॥ अनेकक्षणेकमां सालंबनमनकरे अनेकक्षणेक मां निरालंबनमनकरे एरीतेंअनुभवनापरिपाकथी तेप्राणीसदाय निरालंबनथाय

आलंब्यैकपदार्थं यदा न किंचिद्विचिंतयेदन्यत् ॥ अनुपनतेंधनव न्हिवदुपशांतं स्यात्तदा चेतः ॥ १७ ॥ शोकमदमदनमत्सरकलहक दाग्रहविषादवैराणि॥क्षीयंते शांतहृदामनुभव एवात्र साक्षात्तः ॥१८॥

अर्थ ॥ पछेएकपदार्थनेअवलंबीने जेवारेंबीजुंकांइ चिंतवेनही तेवारें जेमका ष्टविनानी अग्निउपशमेछे तेनीपरेंउपशांतपणुंपामे ॥ १७ ॥ माटेशोक गर्व का म मत्सर क्लेश हठ विषाद अनेवैर एटलावाना शमतावंतप्राणीनेनहोय एवातनो साक्षीइहां अनुभवछे ॥ १८ ॥

शांते मनसि ज्योतिः प्रकाशते शांतमात्मनः सहजं ॥भस्मीभवत्यवि द्या मोहध्वांतं विलयमेति ॥ १९ ॥ बाह्यात्मनोधिकारः शांतहृदामं तरात्मनां न स्यात्॥परमात्मानुध्येयः सन्निहितो ध्यानतो भवति॥२०॥

अर्थ ॥ शांतमननेविषे रहेताथका आत्मानोशांतस्वभाविक सहेजानंदरूप जे तेज छेते प्रगटथायतेवारें जेकुविद्याछेते राखथइजाय अनेमोहांधकार नाशपामे ॥१९॥ बाह्यथकी मननोजेअधिकार तेशांतपरिणामि अंतरआत्मावाला प्राणीने नहोय के मकेतेहने ध्येयरूपी जेपरमात्मा तेध्यानथी ढुकडोछेमाटे ॥ २० ॥

कायादिर्बहिरात्मा तदधिष्ठानांतरात्मतामेति ॥ गतनिःशेषोपाधिः परमात्मा कीर्तितस्तज्ज्ञैः ॥२१ ॥ विषयकषायावेशः सत्वाश्रद्धा गु णेषु च द्वेषः॥आत्माज्ञानं च यदा बाह्यात्मा स्यात्तदा व्यक्तः॥२२॥

अर्थ ॥ कायाअधिष्ठित जेबहिरात्मा तेनोअधिष्ठानजे अंतरात्माछे तेप्रतेंपामे अनेगइछेसमस्त उपाधिजेहने तेने ज्ञानियेंपरमात्मा कह्योछे ॥२१ ॥ जेनेविषयकषा

हिरूपीया काचवानोकुल जेनेविषे त्रासपामेछे एवोछे वलीजेमांथी कुमतिरूपियाप वैत तुटीगयाछेजागाछे वलीजेमांमोहोटी उक्तियुक्तिरूपिणी नदीओनो प्रवेशछे तेणे करीसुनग एटले मनोहरछेवली स्याद्वादशैली रूपमर्यादायेंयुक्तएवो जिनशासनरूप रत्नाकरजेसमुद्र तेनेतजीनेपरदर्शननेकोणसेवे ॥ १ ॥

पूर्णपुण्यनयप्रमाणरचनापुष्पैः सदास्थारसैस्तत्वज्ञानफलैः सदा विजयते स्याद्वादकल्पद्रुमः॥एतस्मात् पतितैः प्रवादकुसुमैः षड्दर्शनारामभू र्यः सौरभमुद्यमत्यभिमतैरध्यात्मवार्तालवैः॥२॥

अर्थ ॥ हवेएजिनमतने कल्पवृक्षकरीदेखाडेछे जेमांपूर्णपवित्रजे सातनय अने चारप्रमाण तेहनीजेरचना तेरूपिया फुलमांहेथी सदैव श्रद्धारूपरसेकरीने तत्वज्ञान रूपफल नीपनाछेजेमां एवोस्याद्वादनामाजे कल्पवृक्ष ते सदाजयवंतोवर्त्तो एकल्प वृक्षथी खरीपडयांजे प्रवादरूपिया फूल तेणेकरीने षड्दर्शनरूप वाडीनी जेधरतीते नवनवीअध्यात्मनी जेवार्ताओ तेनाजेलव तेणेकरीने भूयः कहेतांफरीने सुगंधप णाने प्रगटकरेछे ॥ २ ॥

चित्रोत्सर्गशुभापवादरचनासानुश्रियालंकृतः श्रद्धानंदनचंदनद्रुमनिभप्रज्ञोल्लसत्सौरभः॥भ्राम्यद्भिः परदर्शनग्रहगणैरासेव्यमानः सदा तर्कस्वर्णशिलोच्छ्रितो विजयते जैनागमो मंदरः॥३॥

अर्थ॥ हवेजिनशासनने मेरुपर्वतनी उपमाआपेछे नानाप्रकारनो उत्सर्गमार्ग अनेरुडोजे अपवादमार्ग तेनीरचनावंत रूपशिखर तेनीशोभायें शोभितछे वलीश्र द्धारूपनंदनवनमां चंदननोवृक्ष तेरूपजेबुद्धि तेथकीप्रगटीछे सुगंधजिहां एवोमेरुतु ल्यछे वलीएमेरुपर्वतनीपछवाडे भमताजे परदर्शनरूपीया ग्रहनासमूह तेणेकरी ने सदायसेवितछे तथातर्कजे शुद्धविचार तेरूपिणीसुवर्णशिला तेणेकरीनेउंचोछे एवो जैनागमरूपजेमेरु तेजयवंतोवर्त्तो ॥ ३ ॥

स्याद्दोषापगमस्तमांसि जगति क्षीयंत एव क्षणादध्वानोविशदीभवंति निबिमा निद्राहशोर्गच्छति॥यस्मिन्नभ्युदिते प्रमाणदिवसप्रारंभकल्याणीनी प्रौढत्वं नयगीर्दधाति स रविर्जैनागमो नंदतात् ४

अर्थ ॥ हवेजिनशासनने सूर्यनीउपमाआपी वखाणेछे जैनागमरूपसूर्यनाउद यथकी चोरीजारीइत्यादिदोषटले वलीजेथकी क्षणेकमां जगतनेविषें अज्ञानरूपअं

मोटामुनिनी नक्तिएकरीने तेहनीपदवीने पामशुं ॥ ३० ॥ थोडीपणजयणा कपट रहितथशे तोतेशुनअनुबंधकारीछे पणआत्माजावनीजेवेहेंचण तेअज्ञाननेटाळनारछे

सिद्धांततदंगानां शास्त्राणां यः सुपरिचयः शक्त्या॥ परमालंबनभू तो दर्शनपक्षोयमस्माकं ॥ ३१ ॥ विधिकथनं विधिरागो विधिमा र्गस्थापनं विधेरिच्छा॥अविधिनिषेधश्चेति प्रवचनभक्तिः प्रसिद्धांतः३२

अर्थ ॥ सिद्धांतनाअमेपक्षीछुं तेनाअंगजेशास्त्रतेनो शक्तिप्रमाणे अमारेपरिचय छे माटेपरमआलंबननूत एवोजेसमकितपक्ष तेअमारेरूडोछे ॥ ३१ ॥ शुद्धजाषवुं विधिशास्त्रनोरागकरवो शुद्धमार्गनुं स्थापनकरवुं विधिमार्गनीइछाराखवी अविधिटा ळवी अनेसिद्धांतनी नक्तिकरवी एअमारोसिद्धांतछे ॥ ३२ ॥

अध्यात्मभावनोज्ज्वलचेतोवृत्त्योचितं हितं कृत्यं ॥ पूर्णक्रियाभिलाष श्चेति द्वयमात्मशुद्धिकरः ॥ ३३ ॥ द्वयमिह शुभानुबंधः शक्यारंभश्च शुद्धपक्षश्च॥अहितो विपर्ययः पुनरित्यनुभवसंगतः पंथाः ॥ ३४ ॥

अर्थ ॥ अध्यात्मनी जावनायेंकरी उज्ज्वलएहवीजेचित्तवृत्तितेणेकरीने उचितकार्य करवुं तथाहितकारी करणीकरवी पूर्णक्रियाना विलासनोअभिलाषधरवो एअमारेआ त्मानी शुद्धिकारकछे एटलेएकअंतःकरणनी उज्ज्वलताजे शुद्धिकरवीते अनेबीजोआ द्यथीमांडीअंतपर्यंत पूर्णशुनक्रियाकरवानी अभिलाषा एबेवानाआत्मानी शुद्धिक रनाराछे ॥ ३३ ॥ तथाएककरवायोग्यआरंजते शक्यआरंजअने बीजोशुद्धपक्ष एबे वानाशुनानुबंधीछे एबेजेहनेप्रारंजकालेंसमर्थछे एमाजेनी शक्तिउद्यमअने शुद्धपरूप णोछे तेहनेतोहितकारीमाने अने एथीविपर्यासजेछे तेने अहितकारीमाने एवीरीतें अनुभवज्ञानने मळवानो एपंथछे एथीमिथ्यात्वटळे ॥ ३४ ॥

ये त्वनुभवाविनिश्चितमार्गाश्चारित्रपरिणतिभ्रष्टाः ॥ बाह्यक्रियया च रणाभिमानिनो ज्ञानिनो पि न ते॥३५॥लोकेषु बहिर्बुद्धिषु विपणिका नां बहिःक्रियासु रतिः॥श्रद्धां विना नचैताः सतां प्रमाणं यतोभिहितं३६

अर्थ ॥ जेहने अनुभवनो निश्चयनथी अनेनिश्चयमार्गनोजे चारित्रतेथीभ्रष्टछे त थाबाह्यक्रियानी आचरणाछे तेथीलोकमांउग्रविहारीथई आचारनोगर्वधरेछे तेनेज्ञा नीनकहिये ॥ ३५ ॥बाह्यदृष्टिवाळाजे मूर्खलोक ते तेने बाह्यक्रियावंतदेखी प्रीतिथरे

थातें दावानलने जीतीनशके तथासिंधुनदीनुंजल तेनोजेवेग तेलवणसमुद्रने वेलीन शके पक्करनाजेखंड तेमेरुपर्वतने द्वावीनशके एमसर्वनयना एकतानावनी मोहोटाइनुं स्थानक एह्वो तीर्थंकरनुजेआगम तेहने तेपरदर्शनीओ हणवानेसमर्थनही शामाटेजे ए जैनतेसर्वदर्शनीछे अनेतेदर्शनीयो जैननाएकेकअंशीछे ॥ ७ ॥

दुःसाध्यं परवादिनां परमतक्षेपं विनां स्वं मतं
तत्क्षेपे च कषायपंककलुषं चेतः समापद्यते ॥
सोयं निस्वनिधिग्रहव्यवसितो वेतालकोपक्रमो
नायं सर्वहितावहो जिनमते तत्वप्रसिध्यार्थिनां ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ परदर्शनीजेटलाछे तेएकएकनामतने खंड्याविना पोतानामतने थापी सकानथी ए मतमतनोजेकदाग्रह तेनोप्रक्षेपकरतां कषायरूपकादवेंकरीने मनमलिनथायछे एकदाग्रहनो व्यापारतेतो दरिद्रीनाघरनोनिधान हरवाने वेतालगयो तेप्रायजाणवो एउपक्रम सर्वजिनमतनेविषे हितकारीनथी माटे अर्थीजीवने ए जिनमत ते तत्वरूपें प्रसिद्धछे ॥ ८ ॥

वार्त्ताः संति सहस्रशः प्रतिमतं ज्ञानांशबंधक्रमाश्चेतस्तासु ततः प्रयाति नतमां लीनं जिनेंद्रागमे॥नोत्सर्पंति लताः कति प्रतिदिशं पुष्पैः पवित्रा मधौ ताभ्योनैति रतिं रसालकलिकारक्तस्तु पुंस्कोकिलः॥९॥

अर्थ॥जेहनोअनुक्रमज्ञाननेमात्रअंशेकरीनेबंधायोछे एहवीपरदर्शनीओनीवार्त्ताछे तेवामतममत्व हजारोगमेवर्त्तेछे पणतेवातोनेविषे माहारुंचित्तजातुंनथी शामाटेजेसिद्धांतोनेविषे माहारुंमनलीनछे माटेचैत्रमासें दिशोदिशेजेफूल तेणेकरीने पवित्र एहवीजेलता तेकेटलीकविकस्वरथाय फुले पणपुंस्कोकिलजे कोइल तेआंबानीमंजरी शुंरक्तएवोथको तेललताओनेविषेरतिनपामे तेनीपरें महारुंचित्तपण सिद्धांतरूप आंबानीमंजरियें रक्तथयोथको अन्यदर्शनरूप लतायोमां जातुंनथी ॥ ९ ॥

शब्दोवा मतिरर्थ एव वसु वा जातिः क्रिया वा गुणः शब्दार्थः किमिति स्थितिः प्रतिमतं संदेहशंकुर्यथा॥जैनेंद्रे तु मते न सा प्रतिपदं जात्यंतरार्थस्थितिः सामान्यं च विशेषमेव च यथा तात्पर्यमन्विच्छति १०॥

अर्थ ॥ आशब्दछे किंवा मतिछे केअर्थछे केगुणछे के वस्तुके०द्रव्यछे केजातिछे के क्रियाछे वलीएनो शब्दार्थकेमहसे एवोसंदेहरूपिओ खीलोते मतमतप्रत्येंरह्योछे

रमबोध तेमांरहेवुं सघलेस्थलें आगमसिद्धांतने आगलकरवुं कुविकल्पछांमवा जेमा गैंवृद्धचाले तेमार्गेंचालवुं ॥ ४४ ॥

साक्षात्कार्यंतत्वं चिद्रूपानंदमेडुरैर्नाव्यं ॥हितका
री ज्ञानवतामनुनववेद्यः प्रकारोऽयं ॥ ४५ ॥

अर्थ ॥ तत्वने प्रगटकरवुं ज्ञानरूपआनंदनरेंरहेवुं ज्ञानवंतने हितकारीथइने र हेवुं एअनुनववंतजीवोना प्रकारछे ॥ ४५ ॥ इतिअनुनवाधिकारः विंशतिमस्समाप्त २०

---

येषां कैरवकुंदवृंदशशनृत्कर्पूरशुभ्रागुणामालिन्यं व्यपनीय चे
तसि नृणां वैशद्यमातन्वते॥ संतः संतु मयि प्रसन्नमनस स्ते केपि
गौणीकृतः स्वार्थोमुख्यपरोपकारविधयोत्युत्रंखलैः किं खलैः ॥१॥

अर्थ ॥ चंद्रविकासीकमलनाफूलनोसमूह चंद्रमा कपूर एसरखाउज्वला जेहना गुणछेतथाजे मनुष्यनाचित्तनेविषे मलिनतापणुंटालीने निर्मलताउज्वलतापणाने वि स्तारेछे एवाजेसज्जन पुरुषोते माहाराउपर प्रसन्नमने सदैवरहेजो जेणेपोतानोअ र्थ गोणकर्योछे अनेजेनीमुख्यपणे परउपकारनी बुद्धिछे एवासज्जन जो माहाराउप रप्रसन्नछे तोउन्मत्तएवाखलजे डुर्जनलोक तेना अप्रसन्नतायें शुंथवानुंछे ॥ १ ॥

ग्रंथार्थान् प्रगुणीकरोति सुकविर्यत्नेन तेषां प्रथामातन्वंति कृपाक
टाक्षलहरीलावण्यतः सज्जनाः॥माकंदद्रुममंजरीं वितनुते चित्रां म
धुश्रीस्ततः सौनाग्यं प्रथयंति पंचमचमत्कारेण पुंस्कोकिलाः॥२॥

अर्थ ॥ रूमाजेकविछे तेअर्थानुपणिए नवाग्रंथरचे पणकृपानजरनीलेहरी तेनुंघर एवाजे सज्जन तेग्रंथनेवखाणीने विस्तारकरेछे तेउपरदृष्टांतकहेछे जेमवसंतलक्ष्मीजेछे तेआंबानीमंजरीना मनोहरपणाने प्रगटकरेछे पणपोताना पंचम रागनाचमत्कारेंक रीएटलेरागनोटहुको तेणेकरीनेकोयलजेछे तेमंजरीनुं सोनाग्यपणुंजगमांविस्तारेछे

दोषोल्लेखविषः खलाननबिलाडुद्गाय कोपाज्वलन् जिह्वाहि र्ननु
किं गुणान्गुणिनां वा स क्षयं प्रापयेत्॥तस्माच्चेत्प्रबल प्रनावनवनं
दिव्यौषधी सन्निधौ शास्त्रार्थप्रतिपद्विदां शुनहृदां कारुण्यपुण्यप्रथा३

अर्थ ॥ दोषना विस्ताररूपविषेंसहित एहवुं खलप्राणीना मुखरूपजे सर्पनुंघर ते थीउठीने कोपेंबलतोथको एवोडुर्जननीजीनरूपजे सर्प जेगुणिनागुणने ननुके० नि

थानेजजमालथाय तेथीकर्मवाविपाकपामे तेमतेकुविचारवालाने आगलकर्मवांफल प्रगटथशे ॥ १३ ॥

त्यक्त्वोन्मादं विभज्य वादरचनामाकर्ण्य कर्णामृतं सिद्धांतार्थरहस्य वित्क्वलभतामन्यत्र शास्त्रे रतिं ॥ यस्यां सर्वनया वसंति न पुनर्व्य स्तेषु तेष्वेव या मालायां मणयो लुठंति न पुनर्व्यस्तेषु तेष्वेव सा॥१४॥

अर्थ ॥ उन्मादेंकरीनेविवेचनालक्षणजे नयनोवाद तेहनीजे रचना तेजेणेतज्योछे एहवोथको वलीमाहोमाहें भगमोतजीने वली कानेअमृतरूप वाणीसांजलीने सिद्धांत नाअर्थ रहस्यनोजे जाणपुरुष तेबीजाशास्त्रनेविषे रतिकेमपामे अर्थातनजपामे जे जैनवाणिनेविषे सगलाएनय प्रवेशकरेछे पणतेजूदाजूदामतवालाना मतमां सर्वनय नथी तेथीजैनवाणीकांइतेमांरहेतिनथी शामाटेजेतेसर्वे व्यग्रचित्तवालाछेमाटेजैनमां सर्वे नयछे जेममालानेविषे सर्वमणकारमेछे पणछूटामणकपडयाहोय तेनेमालानक हियें अनेएकमणके सर्वेमणका समाणाएमपणनकहीए माटेतेमालासरखुंजैनमतछे

अन्योन्यप्रतिपक्षभावितथान् स्वस्वार्थसत्यान्नयानापेक्षाविषय ग्रहै विभजते माध्यस्थ्यमास्थाय यः॥ स्याद्वादे सुपथे निवेश्य हरते तेषां तु दिङ्मूढतां कुंदेंदुप्रतिमं यशोविजयिनस्तस्यैव संवर्द्धते १५

अर्थ ॥ एमएकबीजाने वैरभावेंकरी जूगजूगजेपोतपोतानाअर्थ तेनेसाचारकरता एवामतवालाजे दर्शनी तेपोतानानयनो विषयग्रहणकरी माध्यस्थपणानेस्वीकारी सारामागनोविभागकरावीनेजे स्याद्वादरूपउत्तममार्गनेविषेलोकनुं चित्तस्थापनकरा वीने जे माध्यस्थपणुं ग्रहणकरीतेमनीदिगमूढतानोनाशकरे तेविजयवंतप्राणी कुंदनुं फूल तथाचंद्रमासरखो उज्वलोजेजश तेणेकरीवृद्धिवंतोथाशे आंहीकवियेंपोता नुंनामपणसुचव्युंछे ॥ १५ ॥ इतिश्रीजैनमतस्तुत्यधिकार एकोनविंशतिसमाप्त ॥

इतिश्रीमहोपाध्याय श्रीयशोविजयगणिना विरचिता ध्यात्मसारप्रकरणेषष्ठप्रबंधः अढारमां अधिकारनाका व्य१९५तथा ओगणीसमांना१५मलीने २१०काव्यछे

पूर्णाध्यात्मपदार्थसार्थघटना चेतश्चमत्कारिणी मोहच्छन्नदशां नवे
त्तनुधियां नो पंडितानामिव ॥ काकुव्याकुलकामगर्वगहनप्रोद्दाम
वाक्चातुरी कामिन्याः प्रसभं प्रमोदयति न ग्राम्यान् विदग्धानिव ७

अर्थ ॥ जेमांपूर्णअध्यात्मपदार्थ तेसहितघटनाछे पण तेजेहनीदशाअज्ञानेंकरी
नें अवराणीछे एवाअल्पबुद्धिवालाना चित्तमांतोजेरीतें पंडितलोकआवाग्रंथथीरीज
पामे तेरीतनोचमत्कारनउपजावे तेहनोदृष्टांत जेमकामेव्यापीथकी अंतरंगमां
विषयसुखने इछतीथकी तथा बाह्यथी नयशोकधरतीथकी पुरुषनेवल्लभ हुंरू
पवती एमगर्वेंभरीथकी रुडीवचननीचतुराइ करनारएहवीजे चतुरस्त्रीहोयतेपण गा
मडीआमूर्खने रीजवीनशके पणपंडितनेतोआनंदपमाडे तेनीपेरेंजाणवुं ॥ ७ ॥

स्नात्वा सिद्धांतकुंडे विधुकरविशदाध्यात्मपानीयपूरैस्तापं
संसारदुःखं कलिकलुषमलं लोभतृष्णां च हित्वा जाता ये
शुद्धरूपाः शमदमशुचिताचंदनालिप्तगात्राः शीलालंका
रसाराः सकलगुणनिधीन्सज्जनांस्तान्नमामः ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ सिद्धांतरूपकुंडमां चंद्रसरखुंनिर्मल अध्यात्मरूपपाणीनापूरमांस्नानकरीने
भवदुःखरूपजेताप अने पापरूपजेताप तथालोभ तृष्णानेपणछांडीने यथाशुद्धरूपें
करी वलीसमतारूपइंद्रियदमनजे पवित्रतेरूपचंदनेकरी शरीरविलेपितछेजेनुं वलीशी
लरूपघरणेकरीशोभता सर्वगुणनानिधानएवाजे सज्जनतेनेहुंनमुंछुं ॥ ८ ॥

पाथोदः पद्यबंधे विपुलरसभरं वर्षति ग्रंथकर्त्ता प्रेम्णां
पुरैस्तु चेतःसर इह सुहृदां छाव्यते वेगवद्भिः ॥ त्रुटयंति
स्वांतबंधाः पुनरसमगुणद्वेषिणां दुर्जनानां चित्रं भावज्ञ
नेत्रात् प्रणयरसवशान्निःसरत्यश्रुनीरं ॥ ए ॥

अर्थ ॥ जेग्रंथकर्त्ता मेघसरखाछे तेपद्यबंधेकरीने बहुरसभरे वरसतांथका तेथी
प्रेमरूपपूरते सज्जननाचित्तरूप सरोवरमां वेगेकरीनेभरायछे वलीअसाधारणगुणना
द्वेषीजे दुर्जन तेनातोअंतःकरणना बंधतुटेछे अने एवाविचित्रकारीजेग्रंथ तेनाभाव
नाजाणजेपुरुषछे तेविनयेंप्रणित रसेंउज्वलाछे तेनानेत्रथी स्नेहरूपआंसुंकरेछे॥ए॥

अद्वेषादिगुणवतां नित्यं खेदादिषट्कपरिहारात् ॥ सदृशप्रत्ययसंगतमेकाग्रं चित्तमाम्नातं ॥ ७ ॥ उपरतविकल्पवृत्तिकमवग्रहादिक्रमच्युतं शुद्धं ॥ आत्मारामभुनीनां भवति निरुद्धं सदा चेतः ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ राग द्वेषादिकेंरहित जेगुणवंतपुरुषछे अनेसदाय खेदादिकनुंपरिहारकरनारजेपुरुष तेसदैवरागद्वेषटालवाथी जेनुंमनसर्वकार्यमां सरखुंमल्युंछे तेनेएकाग्रमनकहियें ॥ ७ ॥ जेनीविकल्पवृत्तिशांतथईछे वलीअवग्रहादिक्रमथी पाछुओसर्युंछे कष्टथीएहवुंशुद्धमन तेआत्मारामभुनीनुंजेअंतःकरणहोय तेनेनिरुद्धमनकहियें ॥ ८ ॥

न समाधावुपयोगं तिस्त्रश्चेतोदशा इह लभंते॥सत्वोत्कर्षात् स्थैर्याद्भवे समाधिसुखातिशयात् ॥ ९ ॥ योगारंभस्तु भवे द्विक्षिप्ते मनसि जातसानंदे॥क्षिप्ते मूढे वास्मिन् व्युत्थानं भवति नियमेन॥१०॥

अर्थ ॥ चित्तनीत्रणदशा तेआसमाधिमांकांइ उपयोग पामतीनथीतेवारें पणतेमां बेदिशातो सत्वोत्कर्षथकी तथास्थिरताथकी अनेसमाधिसुखना अतिशयथी उपयोगपामेछे ॥ ९ ॥ कदाचित्विक्षिप्तचित्तनेविषे योगसमाधिमां आनंदितहोय तो योगारंभसंभवे क्षिप्तमूढमनेतो योगनोविशेष विषयरूप उदयहोय ॥ १० ॥

विषयकषायनिवृत्तं योगेषु च संचरिष्णु विविधेषु ॥ गृहखेलद्बालोपममपि चलमिष्टं मनोभ्यासे॥११॥ वचनानुष्ठानगतं यातायातं च सातिचारमपि॥चेतो भ्यासदशायां गजांकुशन्यायतोऽदुष्टं॥१२॥

अर्थ ॥ विविधप्रकारना योगनेविषें फरतुं अनेविषयकषायें नथुं एवुंघरमांरमताबालकनीपेरे चपलजेमनतेअभ्यासेकरी रुडुंजाणवुं ॥ ११ ॥ वचनानुष्ठानमांरह्युं एवुंजातुंआवतुं अतिचारसहित मनहोयतोपण जोमनअभ्यासदशामां वर्त्ततोथको होयतो जेम हस्तिते अंकुशेंकरीरुंधाय तेदृष्टांते तेमनपणरुंधाय ॥ १२ ॥

ज्ञानविचाराभिमुखे यथा यथा भवति किमपिसानंदं॥अर्थैः प्रलोभ्य बाह्यै रनुगृह्णीयात्तथाचेतः ॥१३॥अभिरूपजिनप्रतिमां विशिष्टपदवाक्यवर्णरचनां च॥पुरुषविशेषादिकमप्यतएवालंबनं ब्रुवते॥१४॥

अर्थ ॥ ज्ञानविचारणानासुखथी जेमकांइक आनंदथाय एहवेबाह्यअर्थेकरी लोभावीने तेमांचित्तनेयोजावीराखीने ज्ञाननाविचारने सन्मुखकरीयें ॥ १३ ॥ रुडीजि

वानी दृष्टिरूप आगमनीज्वालानीश्रेणि तेणेकरी विकरालएवीपोतानी नजररूपअ ग्नि वलीतेडुर्जननाजेवचन तेजाणियें निंदारूप अगनीनी ज्वाला तेणेकरीघडेलीजी नातेवेद्दु अग्निनावचमां ग्रंथरूपघडो मूकीनेपाकोकरेछे अनेनीमाडानीराखथाय घटमूलपोसायछे ॥ १२ ॥

इक्षुद्राक्षारसौघः कविजनवचनं दुर्जनस्याग्नियंत्रान्ना
नाद्रव्यप्रयोगात्समुपचितगुणो मद्यतां याति सद्यः ॥
संतः पीत्वा यदुच्चैर्दधति हृदि मुदं घूर्णयंत्यक्षियुग्मं स्वैरं
हर्षप्रकर्षादपि च विदधते नृत्यगानप्रबंधं ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ शेलडीअने द्राषनारसनासमूह सरखुकवीतुंवचनछे पणडुर्जनरूपीयो अग्निनोजे यंत्रछे तेमध्येनानाप्रकारना द्रव्यनायोगथकी रुडीरीतें गुणपुष्टिने पामतुं ए हवुंकवीनुंजेवचनते ताजी मदिरापणानेपामेछे तेमदिरानेहर्षेकरी सज्जनपुरुषपानक रीने हृदयमांहर्षधरेछे तेथीबेआंखोघुमायमानथायछे स्वइछायें हर्षनाकल्लोलथी पण श्लोकनोभावार्थपामीने नाचेछे गायछे ॥ १३ ॥

नव्योस्माकं प्रबंधोप्यनणुगुणभृतां सज्जनानां प्रभावा
द्विख्यातः स्यादिति सुहितकरणविधौ प्रार्थनीया न किंनः॥
निष्णाताश्च स्वतस्ते रविरुचयइवांभोरुहाणां गुणाना
मुल्लासे पेक्षणीया न खलु पर रुचा क्वापि तेषांस्वभावः ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ अमारोग्रंथनवोछे तोपणमहागुणवंतजे सज्जन तेनाप्रभावथकी वि ख्यातथाजो एरीतेंरुडाहितनेअर्थें अमारे एसज्जनने प्रार्थनाकरवायोग्यनथीसुं अपितुछेज जेम कमलनागुणने उल्लासकरवाने सूर्यनाकिरणछे एम पोताथकीजे प्रविणछे एवातेसज्जननाजे स्वभावछे तेक्यांयेंपररुचिजणि निश्चेंउवेखवायोग्यनथी

यत्कीर्त्तिस्फूर्त्तिगानावहितसुरवधूवृंदकोलाहलेन प्रक्षु
ब्धस्वर्गसेतोः पतितजलभरैः क्षालितः शैत्यमेति ॥
अश्रांतभ्रांतकांतग्रहगणकिरणैस्तापवान् स्वर्णशैलो भ्रा
जंते ते मुनींद्रा नयविजयबुधाः सज्जनव्रातधुर्याः ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवेपोतानागुरुनो वर्णवकरेछे जेनीपसरतीजेकीर्त्ति तेनेगावाने सावधान

यत्नोप्रवेश होय तथा तत्वनीश्रद्धाहोय अनेगुणीउपर द्वेषधरे अनेजेने आत्मा तुंओलखाणनथी तेनेप्रगटपणे बहिरात्मा कहियें ॥ २२ ॥

तत्वश्रद्धाज्ञानं महाव्रतान्यप्रमादपरता च॥मोहजयश्च यदा स्यात् तदांतरात्मा नवेध्यक्तः॥२३॥ ज्ञानं केवलसंज्ञं योगनिरोधः समग्र कर्म्महतिः॥सिद्धिनिवासश्च यदा परमात्मा स्यात्तदा व्यक्तः॥२४॥

अर्थ ॥ जेनेतत्वनीश्रद्धाहोय ज्ञानपणुंहोय महाव्रतीपणुंहोय तथाअप्रमादीपणुंहोय एमकरतां जेवारेंमोहनेजीते तेवारेंतेनेप्रगटपणे अंतरात्माकहियें॥ २३ ॥ जिहांकेवलज्ञानहोय अने मनवचनकायाना योगनिरोधी आठकर्मक्षयकरी सिद्धमांवसे तेवारें तेनेप्रगटपणे परमात्माकहियें ॥ २४

आत्मानंतो गुणवृत्ति विविच्य यः प्रतिपदं विजानाति॥कुशलानुबंध युक्तः प्राप्नोति ब्रह्मभूयमसौ ॥ २५ ॥ ब्रह्मस्थो ब्रह्मज्ञो ब्रह्म प्राप्नो ति तत्र किंचित्रं ॥ ब्रह्मविदां वचसापि ब्रह्मविलासाननुनवामः ॥२६॥

अर्थ ॥ जेप्राणीआत्मानेअने गुणवृत्तिने माहोमांहेवेहेंचणकरीने ठेकाणेजोडे तेप्राणीकुशलानुबंधि पुन्यसहित मोक्षपदनेपामे ॥ २५ ॥ जेब्रह्ममांरह्यो ब्रह्मनो जाण तेब्रह्मनेपामे एमांशोअचंबोछे माटेब्रह्मवेत्तापुरुषजेज्ञानी तेनावचनेकरी ब्रह्म जेमोक्षविलासीसुख तेने अमे अनुनवियेंछियें ॥ २६ ॥

ब्रह्माध्ययनेषु मतं ब्रह्माष्टादशसहस्रपदनावः ॥ येनाप्तं तत् पूर्ण योगी स ब्रह्मणः परमः ॥२७॥ध्येयोयं सेव्योयं कार्या नक्तिः सुकृत धिया सैव॥ अस्मिन्गुरुत्वबुध्या सुतरः संसारसिंधुरपि ॥ २८ ॥

अर्थ ॥ ब्रह्मअध्ययननेविषे कह्युंछेके अढारहजार शिलांगरथेकरी जेब्रह्मचर्य नेपाम्युं तेनेपूर्णयोगीअनेपरम ब्रह्मकहियें॥ २७ ॥माटेएनेजध्यावो एहनीजपुण्यवंते नक्तिकरवी अनेएनेविषे मोटाइपणानी बुद्धिधरीयें तो संसारसमुद्रतरवोसहेलछे २८

अवलंबेच्छायोगं पूर्णाचारासहिष्णवश्च वयं ॥ नक्त्या परममुनी नां तदीयपदवीमनुसरामः॥२९॥अल्पापि यत्र यतना निर्दम्भा सा शुनानुबंधकरी॥ अज्ञानविषयं यत्तद्विवेचनं चात्मनावानां ॥३० ॥

अर्थ ॥ इच्छायोगतो अमारेनिर्बलछे पूरोआचारपणअमे पालीशकतानथी पण

## सूचना.

आ अध्यात्मसार नामनो ग्रंथ श्रीयशोविजयजी उपाध्याये संस्कृतभाषाना पद्यमां रच्योछे. ए वाक्यमां आ ग्रंथनुं नाम, तथा तेना रचनारनुं नाम, सांभळतां अथवा वांचतांज सुज्ञ जनोनां मनमां प्रसन्नतायुक्त उत्कृष्टभाव उत्पन्नथयाविना रहेशे नही; केमके ग्रंथना नामप्रमाणे ते शब्दनो अर्थ अध्यात्मनोसार थायछे; तेम ग्रंथना रचनारना नामप्रमाणे तेनो अर्थ यशनो विजयकरनार थायछे; एवन्ने नाम सार्थकछे, एम कह्याथी कांइपण बाधा आवशे नही. आ ग्रंथमां जेवी रीतें अध्यात्मविषयना प्रकारोनो समावेश कर्योछे, तेवी रीतें बीजे क्वचित स्थळेज दीठामां आवशे. उपाध्यायजीनुं पांडित्य, कविताशक्ति, समयसूचकता, पूर्वपक्षखंडनता, निजपक्षमंडनता, वाक्पटुत्व पदलालित्य, अर्थगौरव, रस, अने अलंकारसहित एमना रचेला हरेक ग्रंथमां विद्वत्ता जोतां कोइनेपण आश्चर्य उत्पन्न थयाविना रहेशे नही; केमके उपाध्यायजीए जेजे विषयोमां ग्रंथो रच्याछे, ते ते ग्रंथोमां एवी युक्तिओ करीछे के, तेना यथार्थ सूक्ष्मभावार्थने साधारण अभ्यासी मनुष्य समजी शके नही. तेम विद्वानोनी बुद्धि पण कांइक श्रमवडे जाणी शके; माटे एवुं अनुमान थायछे के, ए महापंडित हता एमां संशयनथी. तेमणे आध्यात्मविषयक जे आ ग्रंथ रच्योछे, तेनी उत्कृष्टतानुं वर्णन न करतां ए ग्रंथज सज्जनोनी सनमुख राखीए छैये ते वांचीने विचारी लेवुं एटले प्रत्यक्षप्रमाणवडे सिद्ध थशे. एवा ग्रंथनो यथार्थभाव टीकाविना समजवो महाकठिण पडेछे; तेथी टीकानो अमे घणो शोध कर्यो पण ते क्यांइ मळी आवी नही; ने टीका थइछे एवुं पण कोइ ठेकाणेथी सांभळवामां आव्युं नही, त्यारे ते प्रयत्न रहेवा दइने बालावबोध अथवा टबाविषे शोध करतां मात्र श्रीवीरविजयजीनो करेलो टबो मळी आव्यो; ते पण तेमणे पोतानी बुद्धि अनुसार साधारण करेलोछे. ए टबाउपरथी स्पष्ट दीठामां आवेछे के, अध्यात्म विषयविषे श्रीवीरविजयजीनो अभ्यास घणो थोडो हतो, तेथी यथार्थ मूलग्रंथनो भाव प्रदर्शित करी शक्या नथी ए मोटी दिलगिरीनी वात छे. पण ए टबाथी बीजो सारो टबो कोइ अमने मळ्यो नही, तेथी एमां कांइक सेजसाज अमारी मति अनुसार सुधारो करीने आ पुस्तकमां छाप्यो छे.

तेतो जेमकोइकवाणीयो बाह्यक्रियाणानो व्यापारकरतोदेखियें तेनीपरेंजाणवी माटे श्रद्धाविनानुं कशोयेप्रमाणनथी ॥ ३६ ॥

बालः पश्यति लिंगं मध्यमबुद्धिर्विचारयति वृत्तं॥आगमतत्वं तु बुधः परीक्षते सर्वयत्नेन॥ ३७॥ निंद्यो न कोपि लोके पापिष्ठेष्वपि भव स्थितिश्चिंत्या॥ पूजा गुणगरिमाढ्या धार्योरागो गुणलवेपि॥३८॥

अर्थ॥ माटेजेबालजीवहोयते वेषजुइने परीक्षाकरे तथा मध्यमजीवते आचरणा जोइपरीक्षाकरे अनेपंडिततोज्ञानतत्वदेखी परीक्षाकरे ॥ ३७ ॥ लोकनेविषे कोइनी निंदाकरियेंनही पापीनेविषे महोटी संसारनीस्थिति चिंतवियें जेगुणयुक्तपुरुषहोय तेनीपूजाकरीयें वडाइकरीयें तथाजेअल्पगुणीहोय तेनाउपर रागधरीयें॥ ३८ ॥

निश्चित्यागमतत्वं तस्माद्भुत्सृज्य लोकसंज्ञां च॥श्रद्धाविवेकसारं यतितव्यं योगिना नित्यं॥३९॥ ग्राह्यं हितमपि बाला दालापैर्दुर्जनस्य न द्वेष्यं॥ सत्या वाचः पराशापाशा इव संगमा ज्ञेयाः॥४०॥

अर्थ ॥ तथा आगमनोनिश्चयकरी लोकसंज्ञाछोडीने विवेकनुंसारजेश्रद्धा तेनेविषे योगीश्वरें सदायउद्यमकरवो ॥ ३९ ॥ बालकथकीपण आलापेकरीने हितनीवात लेवी दुर्जनउपर द्वेषनकरवो सत्यबोलवुं पारकीआशानेपाससरिखीजाणवी॥४०॥

स्तुत्या स्मयो न कार्यः कोपोपि च निंदया जनैः कृतया॥सेव्या धर्माचार्यास्तत्वं जिज्ञासनीयंच ॥ ४१ ॥ शौचं स्थैर्यमदंभो वैराग्यं चात्मनिग्रहः कार्यः ॥ दृश्या भवगतदोषा श्चिंत्यं देहादिवैरूप्यं ॥ ४२ ॥

अर्थ ॥ कोइवखाणेतो गर्वनकरवो कोइनिंदेतो कोपनकरवो धर्माचार्यनी सेवा करवी तत्वनेजाणवानी इछाराखवी॥ ४१ ॥ पवित्रपणुं स्थिरतापणुं अने निष्कपटपणुं आदरवुं तथावैरागधरवुं अनेमननेवश्यकरीराखवुं तथासंसारनादोषदेखवा वली देहनेविनाशीपणे चिंतववुं ॥ ४२ ॥

भक्तिर्भगवति धार्या सेव्योदेशः सदा विविक्तश्च॥स्थातव्यं सम्यक्त्वे विश्वास्योन प्रमादरिपुः ॥ ४३ ॥ ध्येयात्मबोधनिष्ठा सर्वत्रैवागमः पुरस्कार्यः॥ त्यक्तव्याः कुविकल्पा स्थेयं वृद्धानुवृत्या च ॥ ४४ ॥

अर्थ ॥ प्रभुउपरभक्तिधरवी पशुपंमकादिदोषरहित देशजेस्थानक तेसेववुं समकितदिशामांस्थिररहेवुं प्रमादरूपशत्रुनोविश्वासनकरवो ॥ ४३ ॥ ध्येयस्वरूपजे आ

अथवचनिकारूप तत्वानुबोध ग्रंथकहेछे तिहांप्रथम नवपदार्थना नामकहेछे गाथा ॥ जीवाजीवपुन्नपावो आसवोसंवरोतहा निज्जराबंधमोक्खोय नवतत्ताजिणे नणिया ॥ १ ॥ व्याख्या जीव अजीव पुण्य पाप आश्रव संवर निर्जरा बंध मोक्ष एनवपदार्थ श्रीतीर्थंकरेंकह्यां पणएनवपदार्थनी श्रीठाणांगसूत्रना बीजाठाणामां एकजीवरासी बीजी अजीवरासी एबेरासीकहिछे पणजेत्रीजीरासीकहे तेहने श्रीउववाइसूत्रमां नन्हवकह्योछे वली जीवमजीवंदव्वं इतिद्रव्यसंग्रह हवेए जीव तथा अजीव बेरासीमां नवपदार्थ केमसमावे तेविचारकहेछे प्रथमसामान्ये द्रव्यबेकहियेंछैयें अने विशेषशब्दमां छद्रव्यकह्यांछे तेसामान्यपदें बेद्रव्यमां छद्रव्यसमायछे तेहमांहे १ धर्म बीजोअधर्म त्रीजोआकाश चोथोकाल पांचमुंपुद्गल एपांचअजीवद्रव्यछे अनेएकजीवद्रव्यछे तेमांवलीपूर्वोक्त पांचअजीवद्रव्यना बेभेदछे एकअरूपी अजीवद्रव्य अने बीजोरूपी अजीवद्रव्यछे.

एकधर्म बीजोअधर्म त्रीजोआकाश चोथोकाल एचार अरूपी अजीवद्रव्यछे अने पांचमुं पुद्गलते रूपीअजीवद्रव्यछे तेरूपी पुद्गलद्रव्यना वली बेभेदछे एक चउफरसी रूपीपुद्गलद्रव्यछे अनेबीजो आठफरसीरूपी पुद्गलद्रव्यछे तेमां चउफरसी रूपीपुद्गलतो चक्षुइंद्रियवरें देखायनहीं अनेज्ञानवंतदेखे.

हवेतेचउफरसी पुद्गलकेटलाछे तेकहेछे आठकर्मना अढारपापस्थानकना कार्मणशरीरना मनवर्गणानापुद्गल तथा वचनवर्गणानापुद्गल ए सर्व प्रयोगसा चउफरसी रूपीपुद्गलजाणवा.

अनेआठफरसी रूपीपुद्गलजेछे तेमांकेटलाक दृष्टिगोचरमांआवे अने केटलाक दृष्टिगोचरमांनआवे एटले वायुकायनापुद्गल तथा अहारकशरीरना धुंधलाते विस्रसापुद्गल अने छप्रकारनीद्रव्यलेश्याना इत्यादिकवस्तु आठफरसीजेछे तेमाहेला जेपुद्गलनारवंधमां करकश अने नारीफरसना पुद्गलघणाहोय तथासुकुमालमृदुसुक्ष्माल अने हलकापुद्गल घणाहोय तेदृष्टिगोचरमांनआवे उपरांत उदारिकशरीरादिक प्रमुखसर्वना जेदिठामांआवेछे दृष्टिगोचरमांआवेछे एमाटे आठफरसीपुद्गल दृष्टिगोचरमां आवे पण अनेनहीपणआवे

अनेजीवद्रव्य अरूपीछे पणपुद्गलसाथेंमल्यो आकारवंतरूपीदेखायछे एरीतें षट्द्रव्यते बेरासीमां समायछे तेमज नवतत्वपण बेरासीमां समायछे केमके द्रव्यार्थिकनयेंकरी बेद्रव्यछे अनेपर्यायार्थिकनयेंकरी बेद्रव्यना नवपदार्थथायछे तेकहेछे

अर्थीक्रयपणाने नपमाडेसुं अपितुपमाडेज तेमाटे महाप्रनावनुंधर एहवोजे शास्त्र नोअर्थ तेनीप्राप्तिनाजाए जेसज्जन तेनीजेकरुणातेपुण्यवार्त्तारुपनीबुटी एटलेजडीते दिव्यऔषधीकहियें तेनेपासेरहेताथका तेने फेरचढेनही ॥ ३ ॥

उत्तानार्थगिरां स्वतोऽवगमान्निःसारतां मेनिरे गंभीरार्थसमर्थने बत खलाः काठिण्यदोषं ददुः॥तत्कोनाम गुणोस्तु कश्च सुकविः किंका व्यमित्यादिकां स्थित्युच्छेदमतिं हरंति नियतां दृष्टा व्यवस्थाः सतां ४

अर्थ ॥ दुर्जनमूर्खनीरीतओ तोजेवारें पोतानीमेलें पदवाचतां अर्थसुझे एवाअ ल्पार्थने सुगमपदजो अमेजोडीयें तोखलमाणसएमकहेछेजे कांइआग्रंथमां सारनथी एममाने वलीजोअमे गंभीरअर्थसहित पदबांधीएतो खलमाणस कहछेकेकठणप दबांध्याछे एनुंशुंअर्थकरियें एतोमुंगानीपारसीछे एवेग्रंथेकोइने गुणनथाय जे आगलबु द्धिविचारे एवाआजेकोणरुडाकविछे वलीसर्वनेभोगपडे एवांक्यांकाव्यछे एवुंदुर्जनबो लेमाटेएग्रंथमर्यादानी स्थितिनेउछेद करवानीमतिछे तेनंजेटाले कविनागुणनेजाणे एवाजेसज्जनपुरुष तेनीव्यवस्था रूडीदीठी ॥ ४ ॥

अध्यात्मामृतवर्षिणीमपि कथामापीय संतः सुखं गाहंते विषमुज्झि रंति तु खला वैषम्यमेतत्कुतः॥ नेदं चाद्भुतमिंदुदीधितिपिबाः पीता श्चकोरा भृशं किं न स्युर्बत चक्रवाकतरुणास्त्वत्यंतखेदातुराः॥ ५ ॥

अर्थ ॥ अध्यात्मरूप अमृतवृष्टि एवीवार्त्ता तेनोपानकरीने सज्जनपुरुषसुखमानेछे अनेजेखललोकछे तेएवीवाणीने विषमपदकहीने विषरूपप्रगटकरेछे एमां शुंआश्चर्य छे तेउपरदृष्टांतकहेछे जुओचंद्रकिरणनादर्शनथी अमृतपीने चकोरघणुंरीझपामेछे तोशुंचंद्रदेषीनेचकवो चकवीघणोखेदनथीपामता अपितुपामेजछे ॥ ५ ॥

किंचित्साम्यमवेक्ष्य ये विदधते काचेंद्रनीलाभिदां तेषां न प्रमदाव हा तनुधियां गूढा कवीनां कृतिः॥ये जानंति विशेषमप्यविषमे रेखो परेखांशतो वस्तुन्यस्तु सतामितः कृतधियां तेषां महानुत्सवः ॥६॥

अर्थ ॥ जेमकांइक सरखापणुंदेखीने काचमां अनेइंद्रनीलमणीमां अभेदरूपतें एकपणुंजाणे तेवाअल्पबुद्धिवालाने मोटाकविनी गूढअर्थनीरचना तेहर्षजणीनथा य जेप्राणीअविषमवस्तुनेविषे एकरेखा उपरेखा अर्धरेखाइत्यादिक अंशेंथकी वस्तुनेवि शेषपणेजाणेछे एवाकुशलबुद्धिवालासज्जनने एग्रंथनाजेभावछे तेमहाओछवरूपछे६

तोजुंडाजावनथी तेथीप्रत्यक्षदेखायछेजे एआठकर्म अनादिकालना जीवसाथें लागीनू तछे तेजकर्मने ग्रहणकरेछे जेमअग्नीना प्रयोगथी पाणीउन्नथायछे पणतेउन्नता नोकर्त्ताअग्निछे पणपाणीनथी तेमजजुंडाजावनो कर्त्ताकर्मछे पणजीवनथी तेमाटे एनोकर्त्ताकर्मछे एमओलखतां तथाकार्यना कारणदेखतां तोआश्रव अजीवतत्वमां समायछे पर्यायतत्वछे निश्चेनयदेखतांतो हेयपदार्थछे कर्मथीनीपनोछे परगुणछे ते माटेआश्रवने अजीवसद्दहणा धारवी.

वलीकोइक शुजयोगने संवरकहेछे तेपण सूत्रथीमिलतोनथी केमके इरियावि हि क्रियाते शुजयोगथीथायछे माटेयोगप्रत्ययछे तेपणआश्रवमांछे तथा पहेलागुण गणेशुजयोगछे पणसंवरनथीकह्योमाटे शुजयोगने संवरकहेवोतेपण सूत्रथीमलतु नथी तत्वकेवलिगम्यं

कोइक संवरनेजीवकहेतां आश्रवनेपण जीवठावेछे तेपणपक्षनीताणकरेछे के मके संवरतो अकंपअवस्थाछे योगनिरुंधनछे तेमांदेशथीजे योगनिरुंधणते देशसं वरछे अने सर्वथी जे योगनिरुंधनते सर्वसंवरछे अनेएसर्वजीवनो निजगुणछेधर्मत त्वछे माटेसंवर आश्रवएबेहु एकनीपर्यायनथी तेमांआश्रवते अजीवनीपर्यायछे अ नेसंवरते जीवपर्यायछे इति.

हवेजिनराजना वचनथी नवतत्वनी शुद्धसद्दहणाते सम्यक्तछे अनेकोइक एम पणकहेछे जे नवतत्वना जाणपणाथी संसारतरेनही तेपणसत्यछे पणतेजाणपणुं श्रीउत्तराध्ययनसूत्रनां अठवीसमां अध्ययनें एकसंक्षेपरुचि बीजीविस्ताररुचि एबेप्रकारेंकह्युंछे तेमांजेजीव प्रवचनशास्त्रनो अजाणछे पणमिथ्यात्वीना वचननी आसतानथी दृढपणेजिनवचननीआसताछे अने जेश्रीतीर्थंकरें तत्वकह्यातेहनेसत्य करीजाणेछे एहवानेजे नवतत्वनुंजाणपणुंछे तेसंक्षेपरुचिकहियें.

अनेजेणें नवतत्वने अनेकरीतें शास्त्रोक्त ओलख्याछे तेविस्ताररुची थी जाणप णुछे उक्तंच उतराध्ययने अठ्यावीसमें अध्ययने दवाणसवनावा सवप्पमाणेहि जसउवलद्धा ॥ सवाहिंनयविहिय विछाररुइत्तिनायवो ॥ १ ॥ इत्यादिक अनेकनांतेक हीछे तेएकेक तत्वउपर पचीसपचीसबोल चिंतव्याथी विस्ताररुचीनी सद्दहणाथा य तेपचीसबोलना नामकहेछे.

१ निश्चेथी २ व्यवहारथी ३ इव्यथी ४ जावथी ५ सामान्यथी ६ विशेषथी ७ना मनिक्षेपाथी ८ स्थापनानिक्षेपाथी ९ इव्यनिक्षेपाथी १० जावनिक्षेपाथी ११ इव्य थी १२ क्षेत्रथी १३ कालथी १४ जावथी एरीतेंइव्यादिकचारथी तथा १५ प्रत्यक्ष

उद्दामग्रंथजावप्रथनजवयशःसंचयः सत्कवीनां क्षीरा
ब्धिर्मथ्यते यः सहृदयविबुधैर्मेरुणा वर्णनेन ॥ एताहिंडी
रपिंडीजवति विधुरुचेर्मंडलं विप्रुषस्तास्ताराः कैलास
शैलादय इह दधते वीचिविक्षोजलीलां ॥ १० ॥

अर्थ ॥ रुडाकविनी उद्दामके०प्रौढएहवीजे ग्रंथनाजावनी रचनातेणेकरीनेउपनुं जेयशनोसमूहतेरूप क्षीरसमुद्र तेसज्जनपंमितें वर्णवरूपिए मेरुएकरीने मथ्यो तेथी प्रगटथुंजे फीण तेनोउज्ज्वलो चंद्रमाथयो वलीतेनेवलोवतांजे ग्राटाउमथा तेनातारा मंडलथयां तथा कैलासादिक पर्वतथया एरीतेंग्रंथनोजश लीलाएकरी पसर्यो ॥१०॥

काव्यं दृष्ट्वा कवीनां हृतममृत मिति स्वःसदा पानशंकी खेदं
धत्ते तु मूर्ध्नी मृडुतरहृदयः सज्जनो व्याधुतेन॥ज्ञाला सर्वो
पजोग्यं प्रसृमरमथ तत्कीर्त्तिपीयुषपूरं नित्यं रक्षापि
धाना नियतमतितरां मोदते च स्मितेन ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ कविनाकाव्यदेखीने अमृतहरायुं एमविचारीने देवताओ सदायअमृ तपीवानी शंकाधरतायका खेदधरेछे शामाटेजे मृडुसुकोमलछे हृदयजेहनुं एवाजे सज्जन तेमस्तकधूणावीकरीने जेसर्वनेउपजोग्यपणे पसरतुएवुं ते कवीनीकीर्त्तिरूप अमृतनुंपूर तथा जेनेनिरंतर रक्षारूप ढांकणुंअत्यंतपणे दीधुंछे तेनेजाणीने देखी ने हसीने हर्षपामेछे ॥ ११ ॥

निष्पाद्य श्लोककुंजं निपुणनयमृदा कुंजकाराः कवींद्रा
दार्ढ्यं चारोप्यतस्मिन्न किमपि परिचयात्सून्यराक्षार्कजा
सं ॥ पक्कं कुर्वंति बाढं गुणहरणमिति प्रज्वलद्दोषदृष्टि ज्वा
लामालाकराले खलजनवचनज्वालजिह्वे निवेश्य ॥१२॥

अर्थ॥रूडांनयरूपमाटीवर्ड कवीश्वररूपियांजे कुंजकारते श्लोकरूपघडो निपजा वे पछेजेमकुंजकारतेघटने परिचयते हाथेंफाली टपणेसमारीतमकेमूके तेमश्लोक घटने परिचय विचारीने पदअक्षर आघापाछाहोय तेनेसमारे एवीरीतें तमकेमूके पछेंपंडितनेदेखाडी परिपक्ककरे तेजाणेनीमामोदेखाडेछे हवेडुर्जनजाणेजे एपंमित छे तेथीमाहरा गुणहरणथशे एमबलतोथको पंडितनीजोडेली कलामां दोषकाढ

अध्यवसाय अशुद्धनथाय तेआश्रवनुं निश्चेंपणुंजाणवुं अनेजे मिथ्यात्व अविरत्यादि कषांचेना प्रवर्त्तना गुणथी कर्मग्रहणथाय ते आश्रवनुं व्यवहारपणुंजाणवुं.

हवेसंवरनो निश्चेंव्यवहारपणुं कहेछे जेआत्माना योगरुंधवेकरी स्थिरपरिणामथाय तेसंवरनुं निश्चेंपणु अनेपांचमहाव्रत्यादिकनेविषे प्रवर्त्तवुं ते व्यवहारसंवर.

हवेनिर्जरानुं निश्चव्यवहारकहेछे जेसम्यक्तभावेंकरी शुद्धयोगथी इछानिरोधकरवुं आशावांछारहित तपेंकरीने जीवनाप्रदेशथी कर्मपुद्गलनुंखिरवुं भरतचक्रवर्त्तिनीपरें तेनिश्चेंथीसकाम निर्जराजाणवी अनेबारभेदें तपनोकरवुं तेतपनीजे सम्यक्तसहित प्रवर्त्तनरूप करणीते व्यवहारसकाम निर्जराजाणवी.

अनेजे मिथ्यात्वसहित बालतपकरवुं पणतेमां प्रगटपणे आशावांछनहोय तामलितापसनीपरें तेनिश्चें अकामनिर्जराजाणवी एअकामनिर्जरानोकर्त्ता शुभयोगीछे पणशुद्धयोगीनथी केमके अंतरंगथी पुद्गलनमे गथोनथी आत्मानुं अनुभवरस चाख्योनथी पणसंसारथी उदासीनताथयीछे तेअकामनिर्जरानुं निश्चेंपणुजाणवुं अनेजे परवशपणे क्षुधतृषादिकनुं खमवुं तेव्यवहार अकामनिर्जराजाणवी एथीजीवप्रदेश उज्वलथाय पणतेनापरिणाम कर्मबंधहेतुजाणवा इति

हवेबंधनुं निश्चव्यवहारपणुंकहेछे जीवनाप्रदेशनेविषे जे पुद्गलबंधथयी प्रयोगसापणे परिणमिने सत्तापणेजीवनीसाथेंछे तेसमुच्चयजीवआश्री शुभ अशुभ अध्यवसायेंकरी जेशुभाशुभबंधतेनिश्चेंबंधजाणवुं तेमांपण सम्यक्तवंत व्रतनाधणीनो जे शुभ अध्यवसाय तेकर्मनिर्जरानुंकारणछे पणक्षेपगतलाकर्मजेरह्या तेशुभबंधजाणवो पण इहांबंधनुंहेतु सम्यक्तादिकनथीमाटे तेनेनिश्चेंबंधकहियें अनेतेशुभाशुभबंधथी आत्मा ना अध्यवसायपलटे तेअध्यवसायनुं प्रवर्त्तन तेणेकरीबंधजाणीयें जेममद्यपानी पुरुषने मद्यपानथी लहेरप्रवर्ते तेम गतिजात्यादिकें बंधनुंप्रवर्तवुं तेव्यवहारबंधजणायछे

हवेमोक्षनो निश्चेंव्यवहारपणुंकहेछे जीवनासर्वप्रदेशथी समस्तकर्मपुद्गलनुं मूकाववुं तेनिश्चेंमोक्षजाणवुं अनेसिद्धनेविषे प्रवर्तनरूप व्यवहारनथी अकम्मस्स ववहारो नविज्जइ तेनिश्चेंमोक्ष अनेजे ज्ञान दर्शन चारित्रादिमोक्षमार्ग तेमांहे प्रवर्तवुं ते व्यवहारमोक्षदेखायछे जोपणमोक्षने व्यवहारदेखातुंनथी तोपणज्ञानादिकनुं प्रवर्तनरूप तेव्यवहारपणुं संभवेछे तत्वसर्वज्ञज्ञेयं जिनवचन अनंतनयात्मकछे माहराजेवा मंदमतिजीवने समजवुंकठणछे ए नवपदार्थनुं निश्चेंव्यवहार कह्युं.

एनिश्चव्यवहारनुं लक्षणकहेछे जेपदार्थचिंतवियें तेपदार्थनुंजे अभ्यंतरगुण एटलेतेपदार्थनोनिजस्वभाव तेनिश्चेंजाणवुं जेमजीव सिद्धसमानछे तेअभ्यंतरगुणकहियें

एटलेस्वर्गेमां देवतानी अप्सराओजेछे तेश्रीनयविजयजीना गुणगायछे तेनागीतश ब्दना कोलाहलेंकरीने ज्ञोजनापामी एहवीजेस्वर्गेनदी तेनीपाजलागी तेथीपरघुंजे जल तेनासमूहेंकरी पखाल्योजेमेरुपर्वत तेणेकरीमेरूपर्वतपण शीतलतानेपाम्योछे नहितो अहर्नीश प्रदक्षणायेंनमताजे ग्रहमंमल तेनाकिरणेकरी तापवंतमेरुहतो तेहमणाशीतलथयोथको शोजेछे एवातेमुनींद्र श्रीनयविजयनामा पंमितजे सज्जन पुरुषोनासमूहमां वडेराहता ॥ १५ ॥

चक्रे प्रकरणमेतत्तत्पदसेवापरोयशोविजयः

अध्यात्मधृतरुचीना मिदमानंदावहं जवतु ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ तेनाचरणना सेवकउपाध्यायश्रीयशोविजयजी एप्रकरणकरताहवा तेअ ध्यात्मनेविषेजेणेरुचिधरीछे एवाप्राणीने रुचिसहित एप्रकरणआनंदसुखनुंआपनार होजोइति सज्जनस्तुतिअधिकार एकविंशतितमःसमाप्तः

इतिमहोपाध्याय श्रीकल्याणविजयगणि शिष्यमुख्यपंडित श्रीलाज विजयगणि शिष्यमुख्यपंमित श्रीजितविजयगणी तच्छिष्यमुख्य पंडित श्रीनयविजयगणी चरणकमलचंचरीकेण पंडितश्रीपद्म विजयगणिसहोदरेण पंडित श्रीयशोविजयेनविरचिते अ ध्यात्मसारप्रकरणे सप्तमप्रबंधःसमाप्तः सर्वकाव्य ६१

इति श्रीमत्तपागछे जट्टारकश्रीविजयसिंहसूरीश्वरशिष्यपंमित श्रीसत्यविजयगणि शिष्यपंडितश्रीकरपूरविजयगणि शिष्यपंडितश्रीक्षमाविजयगणि शिष्यपंडितश्रीयशो विजयगणि शिष्यपंडितश्रीशुजविजयगणि शिष्यपंमितश्रीवीरविजयगणिनिरध्यात्म सारग्रंथस्यवार्त्तिकरूपोमुनिकीर्त्तिविजयस्यानुग्रहाय अयंटबार्थःकृतःसंवत १८८१ चैत्रशुक्लपक्षेपूर्णिमायामितिश्रेय.

सर्वमूलकाव्य ९४३ नीसंख्यायेछे तेमां पेलाप्रबंधना १०२ बीजाप्रबंधना १०५ त्रीजाप्रबंधना ११३ चोथाप्रबंधना १६९ पांचमांप्रबंधना १०२ छगप्रबंधना २१० सातमांप्रबंधना ६१ सर्वमलीने ९४३

नते शुनयोगाश्रवतुंद्रव्य इति द्रव्याश्रवकह्युं. तथा मिथ्यात्व अविरतादिक पांचने उदयेंकरी जीवना जे नानाप्रकारना शुनाशुन अध्यवसायथाय तेनावाश्रवकहियें.

हवेसंवरना द्रव्यनावकहेछे जेदेशथकी योगनुंरुंधवुंते देशसंवरनोद्रव्य अने जे सर्वथी योगनुरुंधवुंते सर्वसंवरनोद्रव्य एमयोगनुंजेरुंधवुं ते संवरनोद्रव्यकहियें ए टलेयोगरुंधी नवाकर्मनबांधे ते संवरनुद्रव्य अनेयोगरुंधनथी जीवनीजे अकंपअव स्थाथाय स्थिरपरिणामपणेरहे ते नावसंवरकहियें तेमांपण देशथीअकंपअवस्था ते देशनावसंवर अनेसर्वथी अकंपमान शैलेसीअवस्थानोधरवोते सर्वनावसंवर.

हवेनिर्जरानो द्रव्यनावकहेछे जेजीवनाप्रदेशथी कर्मनोखिरवोते द्रव्यनिर्जराक हियें अने कर्मनाप्रदेशखिरवाथी आत्मानेजेजे निजगुणनी लब्धि प्रगटथाय एटले कर्मप्रकृति खिरवाथी जेज्ञानादिकगुणनी लब्धिनुंप्रगटथावुं आत्मानुंउज्वलपणुंप्र गटे तेने नावनिर्जराकहियें.

हवेबंधनाद्रव्यनावकहेछे जेप्रकृतिबंधादिकचारनीवर्गणा एकेकआत्माना प्रदेशउ पर रोलीनूतथयीरहीछे ते द्रव्यबंध अने ते द्रव्यबंधथी जीवना परिणाम गतिजा त्यादिपणे जेम अहंपुरुष अहंस्त्री इत्यादिकतेनावबंध जाणवुंइतिबंध.

हवेमोक्षना द्रव्यनावकहेछे जेसकलकर्मदलरूप मल कलंक आत्माथीगंडवुं अने कर्मवर्गणाथी आत्माने निन्नकरवुं जेम हेमथीमलशोधवो तेम कर्ममलरहि तथावुं तेद्रव्यमोक्ष अने कर्ममलखपाव्याथी अनंतचतुष्टयजे निजगुण स्वरूपते नावमोक्ष इति एरीतेद्रव्यनावथी नवतत्वकह्या तेद्रव्यनावनुं लक्षणकहेछे जेबा ह्यवस्तुतेद्रव्य तेद्रव्यथीजे वस्तुनोनिजस्वरूपते नावकहियें.

हवे सामान्यविशेषपणुंकहेछे तेमांप्रथम जीवनो सामान्यविशेषकहेछे जीव नुंसामान्यपणुंते जेम गणांगें एगेजीव इतिसामान्य अनेजीवाडविहा तसाथावरा तथा सिद्ध संसारी वलीजीवा तिविहा इछि पुरसा नपुंसगा तथा जीवचउविहा पं चविहा छविहाइ इत्यादिक जीवनेविशेषपणाथीजाणवुं ते जीवनोविशेष अनेनेदां तर संक्रमणमां जेजेवचनबोलियें तेतेवचन सामान्य विशेष श्रीअनुयोगद्धारें कह्युं जेमडविहाजीवा एवचन ते एगेजीवे एवचननुंविशेषपणुं जाणवुं अने डविहाजी वा तसाथावरा तेमां तसाएसामान्यशब्द अनेते तसा चउविहा बेइंदिया तेइंदिया चउरेंदिया पंचेंदिया एमकहेवुंते विशेषकहियें तेमज थावरएसामान्य अने थावरापं चविहा एमविवक्षाकरवीते विशेषजाणवुं एसामान्य विशेषनो घणोविस्तार श्रीअनु योगद्धारसूत्रथी जाणवो इहांग्रंथनोविस्तार घणोवधे माटे सामान्यपणेकह्युं.

॥ श्रीसर्वज्ञायनमः ॥

अथ

# श्रीतत्वानुबोधग्रंथ एटले नवतत्वपर पंचवीसबोल विचारवा आश्रयीसंक्षेपथी व्याख्यान लखियेछैयें

॥ दोहा ॥

सासणपतिश्रीवीरजिन त्रिभुवनदीपकजाण ॥ नवउदधीतारणतारण वाहण समनगवान ॥ १ ॥ चरणकमलयुगतेहना वंदेइंददिनेंद ॥ चंदनारिंदफनिंदसुर सेवे सुरनरवृंद ॥ २ ॥ तासुकृपातेंलह्या जीवअसंखसुज्ञान ॥ लहिशिवपदभवउदधितरि अजरअमरसुखथान ॥ ३ ॥ तसुमुखथीवाणीखरी जिमश्रावणवरसात ॥ अनंतनयात्मज्ञानथी भविजनदुःखमिटात ॥ ४ ॥ तेवाणीसद्गुरुमुखें जेभविहृदयधरंत ॥ स्वपरभेदविज्ञानरस अनुभवज्ञानलहंत ॥ ५ ॥ उत्तमनरभवपायकर शुद्ध सामग्रीपाय ॥ जोनसुणेजिनवचनरस अफलजमारोजाय ॥ ६ ॥ तेमाटेभविजीवकूं अवशउचितएकाज ॥ जिनबानीप्रथमहिश्रवण अनुक्रमग्यानसमाज ॥ ७ ॥ जिनवाणीकेश्रवणविन शुद्धसम्यक्नहोय ॥ सम्यक्विणआतमदरस चारित्रगुणनहिजोय ॥ ८ ॥ शुद्धसम्यक्साधनविना करणीफलशुभबंध ॥ सम्यक्रत्नसाधनथकी मिटेतिमिरसविधंध ॥ ९ ॥ सम्यक्तभेदजिनवचनमें भेदपर्यायविशेष ॥ पिणमुख्य दोयप्रकारहे ताकोभेदअलेख ॥ १० ॥ निश्चेअरुव्यवहारनय एदोनुंपरिमाण ॥ दधिमंथनेघृतकाढवा ॥ तेतान्यायपिछाण ॥ ११ ॥ देवधर्मगुरुआसता तजेकुदेवकुधर्मे ॥ एव्यवहारसम्यक्तकहि बाह्यधर्मनोमर्म ॥ १२ ॥ निश्चेसम्यक्तनोसही कारणछे व्यवहार ॥ एसमकितआराधता निश्चेपणअवधार ॥ १३ ॥ निश्चेसम्यक्जीवने पर परिणतिरसत्याग ॥ निजस्वभावमेंरमणता शिवसुखनोएभाग ॥ १४ ॥ वेदुसम्यक्त तदलहे समजेनवतत्वज्ञान ॥ नयनिक्षेपपरमाणसुं स्यादवादपरमाण ॥ १५ ॥ द्रव्य क्षेत्रगुणहीतणा कालभावविग्यान ॥ सामान्यविशेषसमजतें होयनयात्मग्यान ॥ १६ ॥

जीवपणुंदेखाडवुं ते स्थापनाअजीव जेजडरूपते अजीवद्रव्यपांचछे ते द्रव्यअजीव अनेजे धर्मद्रव्यप्रमुखना गतिसहाय स्थितिसहाय अवकाशगुण वर्त्तमानगुण पुद्गलना वर्णगंधादिकगुणते भावअजीव एटलेइहां पांचद्रव्यना सद्भावगुण तेसर्वे अजीवना भावजाणवा इतिअजीव.

हवेपुंण्यना चारनिक्षेपाकहेछे पुण्यएवुंनामते नामपुण्य अने अक्षरादिकें कपर्दिकादिकेंकरी स्थापियें ते स्थापनापुण्य अनेजे शुभकर्मप्रकृतिनीवर्गणा जीवनाप्रदेशनी साथें परिणमि तेद्रव्यपुण्यकहियें तथा पुन्यतेशुभकर्मप्रकृतिना उदयथी जीवआल्हादपणुंपामे शातापणे जीवने आनंदपणे परिणमेते भावपुण्यजाणवुं इति

हवेपापना चारनिक्षेपाकहेछे जेपापएवोनामकहेवुंते नामपाप अने अक्षरादिके कपर्दिकादिकेंकरी स्थापियेंते स्थापनापापकहियें तथाजे अशुभप्रकृतिनीवर्गणा द्रव्यकर्मपणेपरिणमे तेद्रव्यपापजाणवुं अने अशुभप्रकृतिना उदयथी जेविषवादपणेपरिणमे तेथीजीवना परिणामदूषितथाय दुःखपणे भावपरिणमें तेभावपाप.

हवेआश्रवना चारनिक्षेपाकहेछे प्रथमआश्रवएवुंनाम कहेवुंते नामाश्रव अनेजे अक्षर कपर्दिकादिक दशप्रकारें स्थापनाते स्थापनाश्रव तथा मिथ्यात्वादिकप्रकृति अप्रत्याख्यानीचतुष्क प्रकृतिआदिक मोहनी तथा नामकर्मनी प्रकृतिनाजेदल आत्मासाथें लोलीभूतथइरह्याछे तेमांहें कर्मरूपपुद्गल ग्रहणकरवानी शक्तिछे ते प्रयोगसापुद्गलने द्रव्याश्रवकहियें तथा आश्रववंतजीवना शरीरनेपण द्रव्यनिक्षेपें आश्रवनुंद्रव्यकहियें एरीतेद्रव्याश्रवना भेदघणाछे अने मिथ्यात्वादिक कर्मप्रकृतिनाउदयथी जेजीवनाभावपरिणमें तेभावने भावाश्रवकहियें इतिआश्रव.

हवेसंवरना चारनिक्षेपाकहेछे संवरएवुंनामकहेवुंते नामसंवर अने स्थापनासंवरते पूर्वेआश्रववत्जाणवुं तथा द्रव्यसंवरते सम्यक्तिदेशव्रतिआदिकविषे जीवना प्रदेशने कर्मप्रकृतीनुंजे आगमन तेनेनिरुंधवुं तेद्रव्यसंवरकहियें अनेजे आत्मानुं अकंपतापणुं देशथी तथा सर्वथीथाय तेनेभावसंवरकहियें इति.

हवेनिर्जराना चारनिक्षेपाकहेछे तेमां नाम तथा स्थापना एबेतोपूर्ववत्जाणवा अनेद्रव्यनिर्जराते जीवनाप्रदेशथी कर्मवर्गणानुं खिरवो तथाकर्मखपावे तेजीवनेपण द्रव्यनिर्जराकहियें तथाभावनिर्जराते आत्माउज्वलथाय तेथीलब्धिउपजे ज्ञानलब्धिक्षयोपशमलब्धि क्षायकलब्धि इत्यादिकप्रगटे तेसर्वेभावनिर्जराकहियें.

हवेबंधतत्वना चारनिक्षेपाकहेछे तेमांपणनाम तथा स्थापनातो पूर्ववत्जाणवां अनेजे कर्मवर्गणानादल आत्मासाथेंलागाछे तेद्रव्यबंध तथा तेद्रव्यबंधथी जी

जीवतत्वतो जीवद्रव्यछेज अने अजीवतत्व अजीवद्रव्यमां कह्योजछे शेषसात तत्वजेछे तेपर्यायार्थिकछे बेद्रव्यनापर्यायथी साततत्वनीपना तेबेप्रकारेंछे एकमु ख्यतायें बीजोगौणतायें तेआवीरीतेंजे.

पुण्य पाप बंध आश्रव एचारतत्व मुख्यतायें अजीवथी नीपनाछे केमकेएचारते कर्मथीनीपनाछे माटेकर्मतत्वछे अनेकर्मनेतो नगवतिमां चोफरसी रूपीपुद्गलकह्यो छे एन्यायें एचारतत्व अजीवतत्वमां समायछे अने प्रयोगसापुद्गलछे माटे व्यवहा रनयनी अपेक्षायें गौणतापणे जीवनापर्यायमां पणनलेछे तेथी पर्यायार्थिकनयें करी एनेपर्याय तत्वकहियें.

पणएचारतत्वनो निजस्वरूपविचारतां हेयपदार्थछे केमके कर्मवंतनेछे माटेपरगु णछे जीवनोगुणनथी कर्मनोगुणछे अनेजेकर्मनोगुण ते निश्चयनयथकी अजी वछे माटेएवीरीतेंज्ञान विचारतांतो अजीव पुन्य पाप आश्रव बंध एपांचतत्व अजी वरासीमां समायछे.

अने संवर निर्जरा मोक्ष एत्रण धर्मतत्वछे जीवनोगुणछे पणपरगुणनथी मा टेमुख्यतायें जीवनापर्यायछे परंतुपुद्गलने आत्माथी निन्नकरवानो स्वनावछे माटेसं ग्रहनयेंकरी पुद्गलना पर्यायमांपणनलेछे तेथीएत्रणे पर्यायतत्वजाणवा परंतुमुख्यप णेवस्तुनी ओलखाणकरतां धर्मतत्वछे निजगुणछे अरूपीछे तेनिश्चेनयनी अपेक्षायें जीवछे जीवनापर्यायछे तेमाटे एकजीव बीजोसंवर त्रीजोनिर्जरा चोथोमोक्ष एचा रजीवतत्वछे तेजीवतत्वमां समायछे इतिज्ञेयं.

हवेकोइक एकांतपक्षग्राही आश्रवने जीवकहेछे तेकहेनारपण अजाणदेखायछे पछेतो केवलीवचन सत्यछे पणसूत्रमांजोतांतो आश्रवनेजीवपणुं कहेवुं एमजणा तुंनथी जेकुहेतुलगाडी आश्रवनेजीवकहि नोलालोकोने नरमावेछे तेनीरीत कहेछे.

जीवनाजे अशुनन्नावते आश्रवछे एन्यायें आश्रवने जीवकहियें एमतेकहेछे पण ते जिनमार्गना नयात्मज्ञानना अजाण्यादेखायछे माटेपक्षपातमूकीने जिनमार्गनी शैलीनी उलखाणकरसो तो आश्रवते प्रत्यक्षअजीवना पर्यायमांनिलेछे तेनोविचा रएमछेजे आश्रवनोगुण कर्मग्रहणकह्योछे तेकर्मग्रहणतोजीवविना मात्रकर्मपुद्गल ज नवाकर्मने केमग्रहणकरीशके तेमजवलीअरूपीवस्तु रूपीवस्तुने पणग्रहणके मकरे तेतोअनादिकालनी कर्मवर्गणासाथेंछे तेकर्मवर्गणाथी जीवकर्मग्रहणकरेछे.

माटेजीवना नूंडान्नावनोकर्तापण कर्मजछे तेकर्मविनाजो जीवनानूंडान्नाव थता होयतो सिद्धनाजीवोनेपण नुंडान्नावथवाजोइयें पणसिद्धतो अकर्मकछे माटेतेना

आश्रवद्रव्यछे तथाक्षेत्रथी लोकाकाशप्रमाण आश्रवनुंक्षेत्रछे अनेकालथकी साइए सपज्जवसिए तथाभावथी जीवनाअध्यवसाय तेअरूपीने भावथीजाणवा.

संवरना द्रव्यथी अनंतासंवरद्रव्यछे केमके सिद्धनासर्वेजीवोमां निश्चेसंवरसंभवेछे ते क्षायकसम्यक्तनी अपेक्षायें सम्यक्ततेसंवरछे तेमाटे अनंताद्रव्यछे तथा सम्यक्तसंवरी असंख्याताजीवद्रव्यछे देशसंवरनी अपेक्षायेंपण असंख्याताद्रव्यछे वली व्यवहार चारित्रसंवरनीअपेक्षायें संख्याताजीवद्रव्यछे एसर्वेद्रव्यथी संवरजाणवुं अनेक्षेत्रथी त्रसनाडीप्रमाण संवरनोक्षेत्रछे तथा कालथी साइएसपज्जवसिए सिद्धनानिश्चेसंवरनी अपेक्षायें साइएअपज्जवसिए छे अने भावथी अरूपी इतिसंवर.

निर्जरी द्रव्यथीनिर्जराते जीवद्रव्य तथानिर्जरवा जेकर्मपुद्गल तेप्रकारांतरपणे परिणम्यानही तिहांलगण तेनिर्जरवापुद्गलने द्रव्यथीनिर्जराकहियें क्षेत्रथीजीवप्रमाण कालथी साइएसपज्जवसिए भावथीअरूपी तथा आत्माउज्वलपणेथाय ते.

बंधतत्वमां द्रव्यथीबंधते आठकर्मनीवर्गणानापुद्गल आत्मासाथें बंधथयाते द्रव्यथीबंधकहियें क्षेत्रथी असंख्यातप्रदेशावगाहीबंध कालथी साइएसपज्जवसिए अनेभावथीबंधरूप पुद्गलानुंसारभावथाय तेभावबंधकहियें इति.

मोक्षतत्व द्रव्यथीसिद्धक्षेत्रमां बिराजमान आत्माचिद्रूप अनंताद्रव्य अनेक्षेत्रथी एकसिद्धआश्रयीतो जघन्य एकहाथने आठअंगुल तथा मध्यम चारहाथने शोलअंगुल उत्कृष्ठ ३३३ धनुष्यने ३२ अंगुल क्षेत्रजाणवुं तथासर्वेसिद्धोनी अपेक्षायें पुस्तालीसलाखयोजनलांबो अने पहुलो तथा ३३३ धनुष्य अने ३२ अंगुल उंचो एटलोमोक्षक्षेत्रछे अनेकालथी साइएअपज्जवसिए तथामुक्तिक्षेत्रअपेक्षायें अणाइएअपज्जवसिए अनेजे ज्ञानदर्शनादिकगुण प्रगटथयाते भावथीमोक्षजाणवुं.

हवेनवेपदार्थमाहेला एकेकापदार्थनेविषे १ प्रत्यक्ष २ अनुमान ३ उपमा ४ आगम एचारचारप्रमाणकहेछे जेप्रत्यक्षआगल वस्तुदेखियें तेप्रत्यक्षप्रमाण अने अनुमानेकरी वस्तुनेजाणियें जेमधुमाडाथीअग्नि इत्यादिक अनेकहेतुयेंकरीजाणवुंते अनुमानप्रमाण अनेजेवस्तुने साधर्मिकवस्तुनी उपमाकरीजाणे जेमआसरोवर समुद्रसरिखोछे पाणीनुंबिंदु मोतीसरिखुं इत्यादिकउपमाप्रमाणजाणवुं पणउपमांबेप्रकारथीकहेवाय एकदेशोपमा बीजीसर्वोपमा तेमांदेशोपमाजेमपुरिससिहाणं पुरिसवरपुंडरियाणं पुरिसवरगंधहत्थिणं इत्यादिकदेशोपमा अनेबीजीसर्वोपमाते जेम संसारसायरेघोरे जेणंपडइउत्तरेः इत्यादिकसर्वोपमा अने आगमप्रमाणते जे इंद्रिय तथामनथी परोक्षवस्तु ने आगमनावचनथीजाणवी जेमदेशप्रदेशना भांगापरमाणुं त

प्रमाणथी १६ अनुमानप्रमाणथी १७ आगमप्रमाणथी १८ उपमाप्रमाणथी १९ नैगमनयथी २० संग्रहनयथी २१ व्यवहारनयथी २२ रुजुसूत्रनयथी २३ शब्दन यथी २४ समभिरूढनयथी २५ एवंभूतनयथी एरीतें एपचीसबोलते एकेकातत्त्व पर शीसीरीतें विचारियेंतेकहेछे तेमांथीप्रथमजीवादिकनवपदार्थना निश्चे व्यवहार एबेबोलकहेछे जीवनुंनिश्चेंपणुंते असंख्यात प्रदेशात्मक द्रव्य अनेककर्मकलंकरहित शुद्धोपयोगी सत्चिदानंदते निश्चेजीवजाणवा तेजीवजे सिद्धालयेंपहोता कर्मव्यव हारना अभावथी अकम्मस्स विवहारोनविज्जइ एमअनुयोगद्वारें अकर्मकमाटे सि द्धने व्यवहारनथी तेनेनिश्चेथीजीवकहियें.

अनेजे संसारीजीव चेतनावंत एकेंद्रीथीमांडीने पंचेंद्रियपर्यंत देहधारकजीवो पोतपोताना शरीरानुसारें आयुअवगाहनादिकमां प्रवर्त्ते ते व्यवहारजीव विवहर तित्तिव्यवहार एवचनेकरीजाणवुं.

हवेअजीवनो निश्चेव्यवहारपणुंकहेछे अजीवतत्त्वना पांचद्रव्यछे तेंपांचेनोजे अचेतनपणो तेनिश्चेनयथी जाणवुं अने धर्मास्तिकायमां गमनगुण तेव्यवहार अ धर्मास्तिकायमां स्थिरगुण तेव्यवहार वलीआकाशास्तिकायनो अवकाशगुण तेव्य वहार अने कालद्रव्यनुं पुद्गलपरावर्त्तन वर्त्तनागुणनुं प्रवर्त्तन जेप्रवर्त्तवोतें व्यवहा रनयजाणवो जेमअसंख्याता लोकाकाशमां अनंतिरात्रीगइ वर्त्तमानेएकजायछे अ नागतेंअनंतिजासे एहवीजे प्रवर्त्तनाते व्यवहारकालजाणवुं वलीपुद्गलनेविषे पांच वरण बेगंध पांचरस अनेआठफरस पांचसंस्थान इत्यादिकनुं ग्रहणगुण तेव्यवहा नयपुद्गलछे एअजीवनो निश्चेंव्यवहारनयकह्यो.

हवेपुंण्यतत्त्वनुं निश्चेव्यवहारपणुंकहेछे जीवनाप्रदेशनेविषेजे शुभपुद्गलनुंबंध तेशुभपणाने निश्चेनयथी पुण्यकहियें अने तेनो अनुभागजे भोगभोगववारूप प्रदे शनेविषेते पुण्यनुंव्यवहारनयजाणवुं.

हवेपापनुंनिश्चे व्यवहारकहेछे जेअदत्तदलनीवर्गणा एटले अविरतिने संयोगेंम ल्याजे कर्म तथा अव्रतिनेसंयोगें वर्त्तमानथका अशुभपुद्गलनोबंध तेनिश्चेंथी पापक हियें अनेपापवर्गणा उदयावलीमांआवे तद्रूप व्यवहारनुं जेप्रवर्तन तेव्यवहारपा पपणुंकहियें एरीतें पापनुं निश्चेव्यवहारपणुकह्युं.

हवेआश्रवनुं निश्चेंव्यवहारपणुंकहेछे मिथ्यात्व अव्रत प्रमाद विषय कषायना जे दल तेनारसेंकरी अरमासकंपमानथाय अनेते मिथ्यात्वादिकना रसेंकरी जीवना

आवेनही मिलणविखरण स्वजाव प्रत्यक्षदेखायछे तेप्रत्यक्षप्रमाण अनेअनुमानप्र माणथी नवजीर्णपणुं पलटणस्वजावपणुदेखीने जाणियें जे एपुज्जलछे तथाजीवपुज्ञ लने गतिसहाय स्थितिसहाय अवकाशदेवाना प्रमाणथी जाणियेंछैयेंजे एअजीव अरूपीनुंगुणछे जेमजीवपुज्जलने सकंपमानदेखीने अनुमानेथी धर्मद्रव्यनो स्वजावज णायछे अनेअकंपमानदेखीने अनुमानथी जाणियेंछैयें जे एअधर्मद्रव्यनो स्वजावछे तेमज जीवपुज्जलमाहोमांहे मल्यादेखीने अनुमानेजाणियेंछैयेंजे एआकाशद्रव्यनोस्व जावछे तेमजएकदुग्धनो वाटको किनारासुधीनरियें जेमांएकबुंदपणबीजुंदुध समा यनही एवोगसीनेजरियें पणतेमां साकरवाटीने नाखियें तो समाइजाय एआकाश नोगुण अनुमानेजणायछे एमअनुमान प्रमाणथी सर्वअजीवद्रव्य जाणाजायछे.

तथाउपमाप्रमाणते जेमइंद्रधनुष्य संध्याराग पलटेछे तेमपुज्जलनोरंग अ स्थिरछे पलटनस्वजावछे जेमगजकर्ण अथिरछे तेमपुज्जलपण अथिरछे इत्यादिक अनेकउपमायेंकरी पुज्जलनो स्वजावदेखायछे तेउपमाप्रमाणथी पुज्जलनुंस्वरूपजणा यछे पुज्जलनोरंगपलटथोदेखीने उपमाआपियेंते उपमाप्रमाणजाणवुं अनेचोथोआ गमप्रमाणते जेमअजीवना खंध देश प्रदेश तेचारद्रव्यनाकह्या अनेपांचमा पुज्जल द्रव्यमां परमाणुंआदि खंधप्रवर्त्तना द्रव्यगुणपर्यायनाकथन जेमसूत्रमां परुप्या व ली परमाणुनीअपेक्षायें एकवर्ण एकगंध एकरस बेस्पर्श अने परमाणुनीरासीमां पांचवर्ण बेगंध पांचरस चारफरस एसोलनापर्यायनी एकगुणथीमांमीने यावत् अनंतगुणपर्यंत व्याख्याकरवी तेनेआगमप्रमाणथी पुज्जलजाणियें.

पुज्जलनावर्णादिकनीपर्याय पुज्जलथीजिन्नजथी जेमसाकरद्रव्य अने साकरनो मी गोरसजिन्नजथी पणद्रव्यगुणपर्यायना व्याख्यानमां द्रव्यपर्याय वचनयोगथी जिन्न कहेवामांआवेछे जेमसाकरमीठी आंबलीखाटी एसंबंधवचनथी जिन्नदेखायछे पण आगम प्रमाणथी द्रव्यगुणपर्याय तेएकजवस्तुमांछे पण जूदाजूदानथी एआगमप्र माणनो विस्तारघणोछे तेनोअधिकार श्रीजगवतिसूत्रना वीसमांसतकमां जांगाक ह्याछे तिहांथीजोवुं आगमप्रमाणजाणवुं.

हवेधर्मास्तिकायना खंधदेशप्रदेशना द्रव्यगुणपर्याय आगममांकह्याछे जेमधर्म द्रव्यना एकप्रदेशमां अनंतिपर्यायछे केमके अनंताजीवपुंज्जलने गतिसहायआपेछे तेमांषट्गुणहाणीवृद्धिछे तथाउत्पादव्ययअनेध्रुवना पर्यायेंकरीसंयुक्तछे तेधर्मद्रव्य नो आगमप्रमाणजाणवुं एमजअधर्मद्रव्य स्थितिसहायकारीछे शेषधर्मद्रव्यवत्जा णवुं तेमजआकाशद्रव्य सदाअवकाशनुंदेवावालुंछे आकाशनो अरूपीपणुं अचेत

तेंनिश्चें अनेतेहिज वस्तुनोजेबाह्यप्रवर्त्तन तेनेव्यवहारकहियें तेव्यवहार शुभ तथाअशुभ भलीबेप्रकारेंछे अने शुद्धाशुद्धव्यवहारनो भेदआगल सातनयमांकहेसे.

हवेनवपदार्थना द्रव्यभावकहेछे तेमां प्रथमजीवनो द्रव्य असंख्यातप्रदेशात्मक तेद्रव्यजीवकहियें अनेजीवनोजे ज्ञान दर्शन चारित्र वीर्यते भावजीवकहियें पण द्रव्यविना भावजीवते भिन्ननथी द्रव्यजीवनोजेगुण तेभावजीव जेमशाकरमिश्रितद्रव्य तेनोमीठोस्वाद तेहनेजेमभावकहियें जेमशाकरथी मीठासपणुंभिन्ननथी तेमद्रव्यथी भावभिन्ननथी तेभावजीवनीगाथा श्रीउत्तराध्ययनना अठ्ठावीसमांअध्ययने कहीछे नाणंचदंसणंचेव चरितंचतवोतहा ॥ वीरियंउवउगोय एयंजीवस्सलकणं ॥ १ ॥ एभावथीजीवकह्यो एरीतेंजीवनोद्रव्यभावकह्यो

हवेअजीवना द्रव्यभावकहेछे तेअजीवद्रव्यपांचछे एकधर्म बीजोअधर्म त्रीजो आकाश चोथोकाल पांचमुपुद्गल एपांचद्रव्यनुं द्रव्यपणुं तेआवीरीतें जे धर्म अधर्म अने आकाश एत्रणद्रव्य ते एकेकछे तथाकालद्रव्यएकछे अने अनंतापण कालद्रव्यछे तथापुद्गलपण अनंताद्रव्यछे एपांचेअजीवद्रव्यनुं अचेतनपणुंछे तेद्रव्य अने भावथी चारद्रव्यअरूपी अनेएकपुद्गलद्रव्यरूपीछे एभावजाणवो तथाधर्मास्तिकायनो गतिसहाय गुणएमद्रव्यना निजस्वभावनेपण भावअजीवकहियें.

हवेपुण्यना द्रव्यभावकहेछे जेशुभयोगसाथें शुभपुद्गल चौफरसी प्रयोगशापणे परिणमिरह्याछे तेद्रव्यपुण्यकहियें अनेजे शुभपुद्गलनोरस जीवतथा शरीरनेपरिणमे तेवारेभोक्ता आल्हादपामे चित्तमांहर्षपामे शातामाने तेभावपुण्यकहियें.

हवेपापना द्रव्यभावकहेछे जेअशुभयोगसाथें अशुभपुद्गल चउफरसी प्रयोगशापणे परिणमिरह्याछे तेद्रव्यथीपापकहियें अनेजे अशुभपुद्गलनुं रस जीवतथा शरीरने परिणमे तेवारेजीव विषादपामें दुःखमाने तेभावपापकहियें जेद्रव्यतेपुद्गल अने भावते पुद्गलनारसजाणवा.

हवेआश्रवना द्रव्यभावकहेछे द्रव्याश्रवते १ मिथ्यात्वमोहनीयकर्मना दलिया ते मिथ्यात्व आश्रवनो व्यवहार मिथ्यात्वद्रव्याश्रव अने २ अप्रत्याख्यानिया कषायनादल तेव्यवहारद्रव्य अव्रतआश्रवकहियें ३ विषय तथाप्रत्याख्यानी कषायनादल तेद्रव्यप्रमादाश्रवकहियें ४ कषाय आश्रवनोदलते संज्वलनीकषायनादल ५ योगाश्रवनो तेद्रव्यनामकर्मथी नीपना जेमनवचनकायाना योगतेना प्रयोगशा पुद्गलनादल तेमांहेमोहनीयकर्मना दलमिले तेअशुभयोगाश्रवनुंद्रव्य ६ नामकर्मनाद

एनारकीनाडांव सरिखाडांवजोगवेछे एमकहियेंते उपमाप्रमाणेपाप अनुक
ज्ञो प्रकृति स्थिति अनुभाग अनेप्रदेशबंधते अशुभहोय एटलेपुण्यथी विपर्यय
लियाहोयते आगमप्रमाणे पापजाणवुं इति.

हवेआश्रवना चारप्रमाणकहेछे जेयोगनाव्यापारनुं सकंपमानपणुंते प्रत्यक्षप्र
माणे आश्रवकहियें वली अनुमानप्रमाणे अथागजावने आश्रवकहियें तथा जे
म तलावने गरनालो तथाहवेलीनेबारणो अने नावानेछिड वली गुरुनेनाको ए
चार उपमायें जीवनेआश्रवनुं आवतुंथाय तेउपमाप्रमाणे आश्रवकहियें तथा जे
अप्रत्याख्यानी क्रोध मान माया लोज एचारकषायना प्रमाणमली वृत्तरूपस्कंधथ
थीने आत्मानाएकेकप्रदेशें वर्गणा वलोटीछे तेवर्गणाने आगमप्रमाणे आश्रवकहियें

हवेसंवरना चारप्रमाणकहेछे प्रत्यक्षप्रमाणे संवरते योगनिरुंधनने कहियें ते
मांजे देशथीयोगनिरुंधनते देशसंवर तथासर्वथी योगनिरुंधनते सर्वसंवरकहियें इ
त्यादिकविस्तारघणोछे जेमजेमयोगव्यापार निरुंधनथाय तेमतेम सर्वसंवरगुणपुष्ट
थाय अनेजे सावद्ययोगनोत्यागते अनुमानप्रमाण संवर जेमहवेलीनो बारणोरुंध
वाथी माणसआवतां बंधथाय तेहृष्टांतें जीवनेयोगनिरुंधन करवाथी आवताक
र्मरोकाय जेमनावानोछिड्रुंध्याथी पाणीआवतुंबंधथाय तेमजीवने पच्चखाणक
री आश्रवनेरुंधे जेमतलावनी मोरीरुंधवाथी पाणीआवतोबंधथाय तेमजीवना यो
गव्यापार रुंधनकरवाथी कर्मनुंआवतुं बंधथईजाय जेमगुरुनोनाको रुंधवाथी मांहे
दोरोआवीशकेनहो तेमजीवना योगरुंधवाथी कर्मआवतारहे एमउपमाप्रमाण सं
वरकहियें तथाजेआत्मानुं स्थिरतापणुं अकंपपणुं योगव्यापाररहितपणुं देशथी अ
नेसर्वथी योगरुंधनपणोकरी आत्मानिश्चलपणोथाय आत्मापोतानागुणने संयुक्तथा
य तेआगमप्रमाणसंवर आत्मानेकहियें इति.

हवेनिर्जराना चारप्रमाणकहेछे जेबारजेदेंतपस्याकरीनेकर्मनुंछेदकरेतेप्रत्यक्षप्रमा
णे निर्जराकहियें अनेबारजेदेंतपस्याकरवाथी कर्मनादलियाखिरे तेथी आत्मानि
र्मलथाय तेनिर्मलपणायथकी ज्ञानदर्शनादिक निजगुणप्रगटे जेम मलिनवस्त्र खारप्रो
तथा अग्निनासंयोगें धोवाथी मलटालीने निर्मलथाय तेमजीवपण बारजेदें तपस्या
करीकर्मरूपमलनेटाली निर्मलथाय तथाजेम सुवर्णबीजीधातुना संयोगथी मलिनहो
य तेअग्नि टंकणखार कारीगरनासंयोगथी मेलटले तेमबारजेदें तपस्याकरवाथी
आत्मामांथी कर्मरूपमेलखिरे तथाजेम सूर्य अभ्रपटलथी ढांक्यो तेजहीण
थाय पणवायुना प्रयोगथी वादलांमिटीजाय तेवारें सूर्यनोतेजप्रगटथाय तेमए

हवेअजीवना सामान्यविशेषकहेछे जेम एगेअजीवे इतिसामान्य तेमज अजीवाड विहा तिविहा चउविहा पंचविहा इत्यादिकविशेषपणानो विस्तारजीवनीपरेंजाणवो.

हवेपुण्यनासामान्यविशेषकहेछे जेम एगेपुन्ने इतिसामान्य अने पुन्ननवविहा ए मकहेवुं इत्यादिकतेपुण्यनुं विशेषपणुंजाणवुं इतिपुण्यनुं सामान्य विशेषकह्युं.

हवेपापनुं सामान्यविशेषकहेछे जेम एगेपापेइतिसामान्य अने पावढारसगाणा इतिविशेष एटलेपापने एकप्रकारेंमात्रपाप एटलुंजकहेवुंते पापनुंसामान्यपणुं अने पाप अढारप्रकारेंबंधाय एमविस्तारसहित कहेवुंते पापनुंविशेषपणुंजाणवुं इति.

हवेआश्रवना सामान्य विशेषकहेछे श्रीठाणांगें एगेआस्सवेइतिसामान्य अने ठा णांगमांज पंचआस्सवदारा एमकह्युंछे ते आश्रवनुं विशेषपणुजाणवुं इतिः

हवेसंवरनुं सामान्य विशेषकहेछे एगेसंवरे इतिसामान्य अने पंचसंवरदारा एम कहेवुंते संवरनुं विशेषपणुंजाणवुं इति.

हवेनिर्जराना सामान्यविशेषकहेछे एगेनिज्जरें एसामान्य वचनजाणवुं अनेनिज्ज राअणेगविहा सकाम अकाम इत्यादिक विस्तारसहितकहेवुंते विशेषपणुजाणवुं.

हवेबंधना सामान्यविशेषकहेछे एगेबंधे इतिसामान्यवचने बंधजाणवुं अने बंधेच उविहे जेम पग्गइबंधे अठकम्म पगडीउंबंधे इत्यादिक वचने विशेषबंधजाणवुं.

हवेमोक्षना सामान्यविशेषकहेछे श्रीठाणांगें एगेमोरके इतिसामान्यें अने अठ कम्मपयडीउ खवंति इतिविशेषवचनेकरी बंधनुंविशेषपणुजाणवुं एसामान्यपणावि शेषपणानुं सुंलक्षण जेएकवचनमां घणावचन अंतरभूत समावेते सामान्य अनेजे भेदप्रकाशरूपवचन तेविशेषवचनजाणवुं एरीतें नवेंतत्वनुं सामान्य विशेषपणुंकह्युं.

हवेएकेकापदार्थमां नाम स्थापना द्रव्य अने भाव एचारचारनिक्षेपा लगाडवा नी रीतकहेछे तेमांप्रथम जीवनाचारनिक्षेपाकहेछे जेजीवएवुंनामते नामजीव जे मकोइवस्तुलावीने तेवुंजीवएवुंनाम कहेवुंते नामजीवजाणवुं तथा अजीववस्तुने जीवएवुंनामकहेवुं तेपण नामजीवजाणवुं अने स्थापनाजीवते चित्रामणादिकेंक रीस्थापियें तेस्थापनाजीव तथा जीव अथवा अजीववस्तुनेस्थापिने जीवकहेवुं ते पण स्थापनाजीवजाणवुं.

वलीद्रव्यजीवते द्रव्यमाहेलुं एकजीवद्रव्य असंख्यातप्रदेशात्मकरूप तेद्रव्य जीव तथाभावजीवते जेजीवना उदय उपशम क्षायक क्षयोपशम परिणामिक ए पांचभावपणे प्रवृत्ततेभावजीव एमजीवनाचारनिक्षेपाजाणवा.

हवेअजीवना चारनिक्षेपाकहेछे अजीवएवुंनामकहेवुं तेनामअजीव थापीनेअ

हवेआगमप्रमाणे बंधकहेछे जीवनाशुभाशुभ अध्यवसाय शुभाशुभयोग अशु
भध्यान शुभाशुभलेश्या शुभाशुभपरिणाम इत्यादिकथी बंधथायछे तेने आगमप्र
माणे बंधकहिये एरीतेबंधतत्वना चारप्रमाणकह्या.

हवेमोक्षना चारप्रमाणकहेछे तेमांजे देशथी उज्वलथईने सम्यक्ज्ञान दर्शना
दिक गुणप्रगटथाय अनेशुभप्रकृतिना स्वभावथी अशुभप्रकृतिना क्षयथी जीव
उत्तमपदजे तीर्थंकरादिकपदपामें तेनेप्रत्यक्षप्रमाणे मोक्षकहिये जेमघातिकर्मक्षय
थी निश्चेमोक्षछे तेप्रत्यक्षप्रमाणेमोक्षछे.

अने अनुमानप्रमाणथी दर्शनमोहनीयकर्मक्षयाथी तथा चारित्रमोहनीयकर्म
क्षयाथी मोक्षछे एरीतेंजेजाणवुं ते अनुमानप्रमाण मोक्षकहिये तथाउपमाप्रमा
णते जेम दग्धबीजने अंकुराउगेनही तथाजेम घृतसिंचवाथी अग्निमंदपणुंपामेनही
तेमकषायनाक्षयथी जीववीतरागपणाथी हायमान परिणामि नथाय इत्यादिकअने
करीतथी उपमाप्रमाणें मोक्षजाणियें अने आगमप्रमाणमोक्षते अनंतचतुष्टय प्र
गटथया जेमजेम अनुक्रमें सूत्रोक्तकर्मप्रकृतिखपावे तेमतेमजीवना निजगुणनीवृ
द्धिप्रगटे तेजेम प्रथममोहनीयकर्मनी मिथ्यात्वमोहनी खपावे पछे अनंतानुबंधिया
कषायनीचोकडीखपावे पछेमिश्रमोहनीखपावे पछेप्रत्याख्यानीयानी चोकडीखपावे
इत्यादिकमोहनीयकर्मनी प्रकृतिखपाव्यापछि ज्ञानावरणी दर्शनावरणी अंतरायकर्म
एरीतेंजेमजेम गुणस्थान मार्गणा गुणस्थानक्रमारोहथाय तेमतेमजीवने मोक्ष
थाय तेआगमप्रमाणे मोक्षजाणवो इति.

हवेएकेकपदार्थउपर सातनयकहेछे तेमांप्रथम नयनुंस्वरूपदेखाडेछे जेएकव
स्तुमांअनंतास्वभावछे तेअनंतास्वभावनीजे प्रकृतिस्वभावरूप वचनबोलवुं एटलेव
स्तुनाप्रत्येकप्रत्येक गुणपर्याय अवलंबीने जेवचनबोलवुं तेनेनयकहियें.

दृष्टांत जेमकोइकेपुरुषेंजे धान्यशाथीनीपजेछे तेवारें एकेंकह्यो उदकथी बीजेक
ह्योपृथ्वीथी त्रीजेकह्यो हलथी चोथेकह्योबलदथी पांचमेकह्योबीजथी छठेकह्यो ऋ
तुथी सातमेकह्योभाग्यथी एमसर्वेएकेक अंशग्राही शब्दबोल्या तेसर्वएकेकादेशेसत्यछे
पणसर्वदेशें सत्यनथी तेमएकनयनोपक्षते एकदेशवाचकछे अनेजेसातेनयने अनुसा
रेवचनबोलियें तेसर्वदेशें सत्यजाणवुं एरीतेंजे नयात्मज्ञानसमजवुं ते सम्यक्छे प
णजिहां एकनयनेअवलंबी खेचकरीरहेवुंते मिथ्यात्वछे एश्रीअनुयोगद्वारमांकह्युंछे

हवेएनयना मूलभेदछे तेमांएकव्यवहारनय बीजोनिश्चेनय तेमांव्यवहारनयना
वलीचारभेदछे एकनैगमनय बीजोसंग्रहनय त्रीजोव्यवहारनय चोथोऋजुसूत्रनय

वनाजावते कर्मनीअवस्थापणे परिणमें जेमद्रव्यमद्यपानथी जीवनेछाकचढे तेछा कसमान बंधजाणवो तेनेभावबंधकहियें इति.

हवेमोक्षना चारनिक्षेपाकहेछे तेमां नाममोक्ष तथा स्थापनामोक्षतो पूर्ववत् जाणवां अने निर्मलजीवते द्रव्यमोक्षजाणवुं वलीआत्माना निजगुणजेक्षायकज्ञान दर्शनते भावमोक्षजाणवुं इति एरीतेंनवपदार्थनेविषे चारनिक्षेपा संक्षेपथीकह्या जे जीवनुंव्याख्यान निक्षेपाथी वर्णनकरियें एटलेप्रथमनाम पछेस्थापना पछेतेवस्तुना द्रव्यबताविये पछेतेना निजगुणनो विवरोकहियें एमएकेकपदार्थ चारचारप्रकारें नि क्षेपियें तेनेनिक्षेपाकहियें केटलाकअन्यभेदथीपण निरूपाकहेछे तत्वसर्वज्ञगम्यं.

हवेनवपदार्थना द्रव्य क्षेत्र काल अने भावकहेछे तेमांप्रथम जीवद्रव्यनो द्र व्य क्षेत्र काल भावकहेछे जीवद्रव्य द्रव्यथीअनंताद्रव्यछे क्षेत्रथीलोकप्रमाण का लथीअनादिअनंतछे तेनापर्यायभेदथी चारभांगाथायछे भावथी अरूपीभाव ज्ञा नदर्शन चारित्र तप वीर्य उपयोगमयीछे इति.

हवेअजीवते द्रव्यथीसामान्यपदें पांचद्रव्यछे अनेविशेषपदें धर्म अधर्म आका श एत्रणएकेकद्रव्यछे अनेकालपुद्गलएबे अनंता अनंताद्रव्यछे अनेक्षेत्रथी चारद्र व्यलोकप्रमाणछे तथा पांचमुं आकाशद्रव्य लोकालोक प्रमाणछे कालथी अणाइए अपज्जवसिए अणाइएसपज्जवसिए एबेभांगा तथापर्यायापेक्षायें श्रेणीप्रतरापेक्षायें त्रीजोचोथोभांगोपणछे परंतु मुख्यव्यक्तव्यता कालथी अनादिअनंतछे तथा भावथी चारद्रव्यतो अरूपी अचेतन अक्रियभावपणेछे अने एकपुद्गलद्रव्य रूपी सवन्ने स गंधे सरसे सफासे अचेतन सक्रियभावछे इतिअजीव.

हवेपुन्यते द्रव्यथी पुद्गलद्रव्यछे तेसामान्यपदेतो एकद्रव्यछे अनेविशेषपदें अनं ताजीवोना पुण्यप्रकृतिनादल अन्योन्यछे एटलेजूदाजूदाछे तेमाटेअनंताजीवोना अनंतापुण्यद्रव्यछे तथापुण्यप्रकृतिनारस भिन्नभिन्नछे तेमाटेविशेषपदें अनंताद्रव्य छे अनेक्षेत्रथी एकजीवनीअपेक्षायें पुण्य असंख्यात प्रदेशीक्षेत्रावगाहीछे अनेसर्व जीवनी अपेक्षायें लोकाकाशप्रमाण क्षेत्रावगाहीपुण्यछे वली कालथी बंधनीस्थिति ने अपेक्षायें साइएसपज्जवसिए तथा भावथीरूपी चौफरसी शुभपरिणामी इति.

पापद्रव्यनेपण द्रव्यथी क्षेत्रथी कालथी तो पुण्यनीपरेंकहेवुं अनेभावथीरूपी पांचवर्णी बेगंध पांचरस तथाअशुभपरिणामी चारफरसकहेवुं इतिपापतत्व.

आश्रवने द्रव्यथी मिथ्यात्व अविरतप्रमाद कषाययोगनाजेदल जीवनीसाथेंछे जे नवाकर्मने आकर्षणकरेछे तेआश्रवनुंद्रव्यछे एमअनंताजीवोनी अपेक्षायें अनंता

हवेजीवादिक नवपदार्थने सातनयेकरी शीरीतेसद्दहिये इहांसप्तभंगीनो विस्ता
रते जाणवाथी सातेनयेकरी जीवबोलिये पणइहां एकनयनावचनकहेनारने बी
जानयवालो मानेनहीतो पणतेनेजूवोकहेनही केमके नयात्मकज्ञानतु एहिजस्वरूपछे
निजनिजनय पोतपोताने अभिप्रायेसत्यछे तेनोदृष्टांतकहियेछे जेमस्त्रीने कोइ
बेनमानेछे कोइदीकरीमानेछे कोइमातामानेछे कोइस्त्रीमानेछे इत्यादिकविकल्प सर्वे
स्त्रीमां सत्यछे केमके पुत्रनीअपेक्षायें मातापणछे अने भाइनीअपेक्षायें बेनपणछे
पितानीअपेक्षायें पुत्रीपणछे भर्तारनीअपेक्षायें नारीपणछे.

एमजजीवादिक नवपदार्थनेविषेपण निजनिजअभिप्राये प्रत्येकप्रत्येकजे विकल्प
सत्यछे तेनयजाणवा एसातनयना सातसोभेद श्रीअनुयोगद्वारसूत्रे परूप्याछे ते
जीवपदार्थने नयानुसारवचनमां अजीवजेपुद्गलछे तेने जीवकह्याछे तेकेवीरीतेजे श्रीठा
णांगे समयतिवा आवलियातिवा जीवातिवा अजीवातिवा पवुच्चति एरीते सम
आवलिकाप्रमुखने जीव अजीवकह्याछे तथा प्रयोगशा पुद्गलने जीवकहियेछे
एरीतेबोलनारना जे अभिप्राय तेहनीनिश्रायेंजे वचनछे ते नयअपेक्षायें वचनछे ते
येकरी सातनयेकरी जीवबोलायछे तेकहेछे.

हवेएसातनय जीवतत्वउपरकहेछे तेमां नैगमनयनिमतें पर्याय प्राणसहि
त शरीरछे तेप्रयोगशा पुद्गलछे तेशरीरावगाही धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आका
शास्तिकायना देशप्रदेशनेपण अवगाहीरह्याछे तेसर्वनोपिंडछे तेहनेजीवकही बोली
येछैयें जेआमनुष्यछे आदृष्यमानादिकछे तेजीवछे तेनैगमनयनो वचनछे जेएकअंश
ने संपूर्णवस्तुमाने तथाकारणनेकार्यमाने तेनैगमनयकहियें.

बीजोसंग्रहनयनेमतें असंख्यातप्रदेश अवगाहनावंतने जीवकहेछे इहांपण धर्म
अधर्म तथापुद्गलने जीवमांगणिलीधा पण एकआकाशटाल्यो आकाशना असंख्या
तप्रदेशें जीवरहेछे तेआकाशक्षेत्रोछे तेमांजीवछे एवचनेआकाशटाल्यो.

व्यवहारनयनामतें इंडियनीवासनाने जीवकहेछे पणमहोटा शरीरसंबंधी पुद्ग
ल तथा धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकाय टालीनाख्या पणइच्छजेवा इच्छयोग
जे मलप्रमुखतेसर्व पुद्गलास्तिकायछे पणजीवनो व्यवहारछे केमके वासनाजीवछे
तोछे जीवशरीरथी नीकल्यापछे तेपुद्गलो इंडियाकारतोछे पणजीववासनानथी माटे
इंडियविकारने व्यवहारनयजीवकहेछे पणनिश्चेथीतो पांचलेश्यायोगइंडियातेजीव
पोताराछे पणव्यवहारदेखीने जीवकहेवामांआवेछे तेव्यवहारनयजाणवु

था साधारणवनस्पतिनो विचारजाणवो तेआगमप्रमाण एरीतेंचारप्रमाणते एकेक पदार्थउपरजाणवानेकहेछे.

प्रत्यक्षजीवते चेतनालक्षणपणुं अने अनुमानप्रमाणते बाल युवान वृद्धपणेप्र वर्त्ते जेमदशवैकालिके चतुर्थाध्ययने अभिक्कंतं पडिक्कंतं संकुचियं पसारियं रूप नं त तसियं पलाइयं आगइ गई इत्यादिकत्रसजीवोने जाणवानां अनुमानकह्यांछे ते मज स्थावरना अनुमानपण श्रीआचारांगे प्रथमश्रुतस्कंधे शस्त्रपरिज्ञाअध्ययने व नस्पतिवृक्षादिकना जीवसद्दहवानेअर्थें अंकूरादिकथीलेइ अनुमानप्रमाण गणधरें बताव्या तेअनुमानप्रमाणथी जीवजाणियें तथाउपमाप्रमाण ते जीवअरूपीआका शवत् ग्रह्योनजाय जीवअनादिअनंत जेमधर्मइत्यादिक सास्वता तेमजीवपणसास्व ता इत्यादिक उपमायेंकरी जीवनुंछतापणुकहेवुं तेउपमाप्रमाण अनेवली उपमायें करी जीवनोछतापणुं अनादिपणुं हेतुयेंकरी दृढावियेंतेनीरीतकहेछे:

ईश्वरवादीकहेछे जीवनोकर्त्ता ईश्वरछे सयंभुणाकम्मेलोए इत्यादिकवचनेकरी जी वनोकर्त्ता ईश्वरकह्योछे एमकहेवाथी जिनवचननी विरुद्धतायइ केमके जिनराजें तो जीवनेअनादिकह्योछे माटेईश्वरवादीनेपुछवुंजेतमे ईश्वरकर्त्ताकह्योछो तोईश्वरनुं पणकर्ताकहेवुंजोसे अने ईश्वरनुकर्त्ताजो परिब्रह्मनीज्योति कहेसोतो परिब्रह्मनुंकर्त्ता पण कोइकजोइयें इत्यादिकवचनघणाछे तेलिखताग्रंथवधे माटेतेबीजाग्रंथोथीजा णिलेवा जेमपरिब्रह्मनी ज्योतिअनादिछे तेमजीवअपणनादिछे इत्यादिकउपमायेंक री जीवनुंसास्वतपणुंदेखाडवुं तेउपमाप्रमाणकहियें.

तथाउपमायेंकरी जीवनुंस्वरूपकह्युं जेमतिलमांतेल अने दुधमांघृत इक्षुमांर स तेमकायामांजीव इत्यादिकउपमायें जीवनुंछतापणुंकहेवुंते उपमांप्रमाणजाणवुं.

हवेजीवनुं आगमप्रमाणकहेछे जेमआगममां गणधरेंकह्युं कम्मकत्ताअयंजीवो कम्मछित्ताविजीवसुणेयव्वो अरूवीनिच्चअणाइउ अगुरुलहुगुणजीवाणं ॥ १ ॥ जी वकर्मनोकर्त्ताछे कर्मनोभोक्ताछे अरूपीछे नित्यछे अनादिछे अगुरुलघुगुणछे एरीतें जीवनांलक्षणकह्यां तेआगमप्रमाणथी जीवनुंस्वरूपजाणवुं तथाएकजीवनाप्रदेश जे आकाशप्रदेशमांअवगाह्या तेहांअनंताजीवना प्रदेशअवगाहे तथासाधारणवनस्प तिमां एकवालाग्रमात्रअंसमां अनंताजीवछे तेमएकशरीरमां अनंताजीवछे इत्या दिकआगमप्रमाणथी जीवनेसद्दहिये तेआगमप्रमाण जाणवुं इति.

हवेअजीवना चारप्रमाणकहेछे अजीवनुं प्रत्यक्षप्रमाण तोजडलक्षणथी जाणु जायछे तथा जीवथीविपरीत जडपुद्गलस्वभाव अनेवर्णगंधादिकदेखायछे पणद्दायमां

नालसभंग समनय अने वास्यमाणनाशाने धर्मास्तिकायकहे जे ज्ञातावस्तुनेमा
तेधर्मास्तिकायकहे एजरीतें धर्मास्तिकायनोपण अधर्मास्तिकायकहे
अनेआकाशास्तिकायने नैगमनय एकआकाशप्रदेशने आकाशास्तिकायनापण सातनयकेवा
संग्रहनय एगेलोए एगेअलोए एमकहेपण खंध देश प्रदेशनी विवक्षाकरेनहीं तथा
वहारनय ऊंचानिचा तथातिर्छालोकाकाश अनेअलोकाकाश इत्यादिकने अनेव्य
हेवली ऋजुसूत्रनये आकाशप्रदेशजे जीवपुद्गलने अवकाशआपे अनेतेमां जेगुण
हानीवृद्धिपरिणामरूपक्रियाकरे तेआकाशद्रव्यकहियें तथाशब्दनय अवगाहलक्षण
पोलाडने आकाशकहे अने समभिरूढनय आकाशनो विकाशगुण जीवपुद्गलनेको
तेआकाशएटले आधेयवस्तुने आकाशकहे अनेएवंभूतनयतो आकाशनाद्रव्यगुणप
र्याय व्यय ध्रुव उत्पादनाज्ञायकने आकाशद्रव्यकहे इति.

हवेकालद्रव्यउपर सातनयकहेछे तेमांनैगमनय समयनेकालकहे केमकेत्रणेका
लना समयनोगुणएकछेमाटे. तथासंग्रहनयनेमते समयादिकथीमांडी अवसर्पिणी
उत्सर्पिणीपर्यंत कालवर्तणा स्वभावरूपएकछे अनेव्यवहारनयथीकाल तेदिवस रात्री
पक्ष मास संवत्सर प्रमुख अढीद्वीपमांछे अनेअढीद्वीपथी बाहेरव्यवहारकालनथी के
मकेतिहांदिवसरात्रीनी संख्यानथी अनेअढीद्वीपमां दिवसरात्रीनी संख्याछेतेव्यवहा
रनयकाल जाणवो.

ऋजुसूत्रनयवर्त्तमान समयनेकालकहे केमके अतीतकालविनाशपाम्यो अने अ
नागतकाल आव्योनथी माटेवर्त्तमाननेकालकहे अने शब्दनय जीवअजीवउपर कालवर्त
तपर्यायरूपवर्तेछे तेनेकालकहे अने समभिरूढनय जीवपुद्गलनीस्थिति पूरणकरवा
नेसन्मुखथयोतेनेकालकहे एवंभूतनय कालना द्रव्यगुणपर्यायना ज्ञायकनेकालकहे.

हवेपुद्गलद्रव्यउपर सातनयकहेछे नैगमनयनेमते खंधनाएकगुणनी मुख्यताजेड
बोले जेमएकगुणा कालापुद्गलछे तिहां गंध रस स्पर्शपणछे परंतुएकअंतेकरीबो
लिये तेनैगमनय वलीसंग्रहनयनेमते एकपुद्गलछे एवुंबोलवुंते संग्रहनयनोवचनछे
जोपणपुद्गलद्रव्य अनंताछे तोपणसंग्रहनयना वचनमां एकपुद्गलद्रव्यबोलायछे अ
ने व्यवहारनयनामते एकविश्रसा बीजामिश्रसा त्रीजाप्रयोगसा ए बाह्यव्यवहार
खेते रीतेंकहे वलीऋजुसूत्रनय वर्त्तमानकाले पूरणगलनहोय तेनेपुद्गलकहे तथाश
ब्दनय पूरणगलननी क्रियानेपुद्गलकहे तथासमभिरूढनय पुद्गलनी षटगुणहानिवृ
द्धितेउत्पादव्यय ध्रुवमांछे तेनेपुद्गलकहे तेमज एवंभूतनयतो पुद्गलनास्वरूप स्वक्षेत्र
स्वकाल स्वभाव ना द्रव्यगुणपर्यायना ज्ञायकने उपयोगमाटे पुद्गलकहे इति.

नपणु अनंतपणु इत्यादिकआगमथीजाणियें तेआगमप्रमाणकहेवुं वलीकालद्रव्य नुंपण एमजअरूपी अचेतनपणु अनंतपणु अप्रदेशीपणुछे पणवस्तुने नवजीर्णथ वानुं साह्यकारीछे तेएकसमयमां अनंतिपर्यायछे केमकेतेहिजसमय अनंताजीव पुद्गलउपरवर्त्तेछे इत्यादिकविस्तारें अजीवनाभेद आगमप्रमाणथीकह्या इति.

हवेपुण्यना चारप्रमाणकहेछे जेमनोज्ञशब्द मनोज्ञरूप मनोज्ञगंध मनोज्ञरस मनोज्ञफरस मनसुख वचनसुख कायसुख एआठप्रकारनी सातावेदनीते प्रत्यक्षप्रमाणे पुण्यजाणवुं तथा अनुमानप्रमाणेतो ऋद्धि संपदा रूप बल जाति कुल ईश्वरता अधिकदेखीने अनुमानथीजाणियेंजे पूर्वेंएणेपुण्यघणाकर्यांछे जेम विपाक सूत्रें सुबाहुकुमरनो सौभाग्यदेखीने गौतमादिकसाधुयेंजाण्युंजे एकुमरेंपूर्वें महोटापुण्यकीधाछे तेपुण्यतुं अनुमानप्रमाणकहियें.

हवेपुण्यनो उपमाप्रमाणते जेमपुण्यवंतजीवनेपुण्यवंतनी उपमाआपियें तेउपमाप्रमाणथी पुण्यफलजणाय जेमउत्तराध्ययनना एकवीसमांअध्ययने पालाएकी लेईरम्मेदेवोदोगंदगोजहा तथा चंदोइवताराणं जरहोइवमणुयाणं इंदोइवदेवाणं एवीउपमा जेहनेआपियें तेनाअधिकपुण्यजाणियें इति.

हवेपुण्यनो आगमप्रमाणते शुभप्रकृतिने शुभयोगथीबांध्या पुण्यबंधथायछे जेम ठाणांगे चतुर्थस्थाने सुचिन्नाकमा सुचिन्नाफलाभवंति इत्यादिक आगमवचनथी शुभबंधने पुण्यकहियें तेआगमप्रमाण तथाआगमवचनथी पुण्यनाभेदजाणियें जेम पुण्यप्रकृति ते उंचगोत्र शुभवर्णादिक अनेस्थितपुण्यते दीर्घदेवायु मनुष्यायु वलीअनुभाग तेपुण्यनारसनीहानिवृद्धि जेमपाणीमां मिश्रीथोडीनाखे तोपाणीथोडोमिठोथाय अने घणीमिश्रीनाखे तोघणोमीठोथाय तेमपुण्यनापण अनुभाग तथारसमां षट्गुणहानिवृद्धिछे तेपुण्यप्रकृतिमां अनंतिपर्यायछे पुण्यरूपदलनी वर्गणा अनंतिछे जेमदेवायुतेपुण्यप्रकृतिछे पणतेमांकालापेक्षायें चौठाणवलियाछे माटेजेमजेम शुभयोगव्यापारनीवृद्धि तेमतेमपुण्यनीवृद्धि इत्यादिक आगमप्रमाणथी पुण्यजाणवुं तथापुण्यानुबंधीपुण्य जेमतीर्थंकरने अने पुण्यानुबंधीपाप हरीकेसीमुनिराजने पापानुबंधीपुण्य जेमगोशालाने तथाअनार्यराजाओप्रमुखने तथा पापानुबंधीपाप जेम नारकीमांभागभोछे इत्यादिकभेद पुण्यस्वरूपना आगमप्रमाणथीजाणियें.

हवेपापना चारप्रमाणकहेछे पापनाचारप्रमाणपुण्यथीविपरीतपणे जाणवा एटले जेजीव आठप्रकारनी अशाताभोगवतो देखायते प्रत्यक्षप्रमाणेपापजाणवुं कोइनेक ष्टदुःखभोगवतो देखीनेजाणेजे एणेपूर्वेंपापकीधांछे तेअनुमानप्रमाणेपाप तथा जे

त्वादिकचारकारणमांजे शुनाशुनयोगवर्त्ते तेनो व्यापारते शुनाशुनआश्रवछे अने एक
लोशुनयोगनोव्यापारते शुनाश्रवछे तथा एकलोअशुनयोगनोव्यापारतेअशुनाश्रवछे.

ऋजुसूत्रनयानुसारें जे वर्त्तमानकालें शुनअथवा अशुनयोगनो वर्त्तवो तेव्यव
हाराश्रव पणअतीत अनागतना अशुनयोगेंवर्त्तताने ऋजुसूत्रनयनी अपेक्षायें आ
श्रवकहेनही मात्र वर्त्तमानकालना योगव्यापारनेज आश्रवकहे इहांशिष्यप्रश्नकरेछे
जे मात्रयोगनाव्यापारनेज आश्रवकहियें तो मिथ्यात्व अव्रत प्रमाद अने कषाय
एचारआश्रवकहेवानो शोप्रयोजनछे तेनेगुरुउत्तरकहेछे जे मिथ्यात्वादिकचारआश्र
वजेछे ते तो निमित्तकारणछे अने मनवचनकायाना योगजेछे ते उपादानकारणछे
केमके मिथ्यात्व अव्रत प्रमाद अने कषायमां जेवोजेवोयोगनो व्यापारप्रवर्त्ते तेवोते
वोआश्रवकहियें तेथी आश्रवते योगद्वारेंजछे माटेमुख्यपणे योगनेजग्रहणकीधुंछे
पण एकला मिथ्यात्वादिकचारथीज जीवकर्मपणे पुजलोने आकर्षणकरीशकेनही
पणएमिथ्यात्वादिकचारेंमांहे योगनामलवाथी कर्मरूपपुजलनुं आकर्षणथायछे.

फरीशिष्यपुछेछेजे आत्मा योगद्वारें कर्मरूपपुजलने आकर्षेछे पणतेपुजलतो आ
त्माथी अंतरालवर्त्तियेंछे तेहने आकर्षेछे किंवानथीआकर्षतो तेवारेंगुरुकहेछे आ
त्माथी अंतरालवर्त्ति पुजलोने चिपटाइने खेंचवानीशक्तिनथी पणआत्मावगाही
पुजलपरमाणुछे तेहनें आकर्षिनेग्रहणकरेछे.

इहांप्रस्तावें लिखियेंछैयें एशुनाशुनयोगमां षड्गुणहानिवृद्धिछे जेशुनपणेवृद्धि
पामतायोगछे तेहांमुख्यतामां शुनयोगीछे पणअशुनयोगें मिश्रितछे एमज अशुन
योगनी वृद्धिपामता योगमां अशुनयोगनी मुख्यताछे पण शुनयोगेंमिश्रितछे इहां
जेमजेम शुनयोगना पर्यायघटेछे तेमतेम अशुनयोगनीवृद्धिथायछे तथाजेमजेम
अशुनयोगनी हानिथाय तेमतेम शुनयोगनी वृद्धिथाय एरीतें जिहांशुनाशुननी
हानिवृद्धिछे तिहां एकांतेशुनयोग अथवा एकांते अशुनयोगकिहांपणदेखातान
थी केवलीनेशुद्धयोगछे अने सकषाइने शुनयोगछे तेदीर्घद्दष्टियें विचारजो इहांकोइ
पूछेजे शुनाशुनबेहुयोगकेमटरे केमकेएकसमयमां बेयोगकह्यानथी तेसत्यछे मुख्य
तामांतोएकछे पणअंशनल्योछे तेगौणतापणेछे इहांहेतुघणाछे विधिनिषेधपणघणा
छे श्रीठाणांगनी टीकाकारेंपण त्रीजेठाणेफलाव्योछे तिहांमूलपाठमां तिविहेववसाए
धम्मिएववसाए अधम्मिएववसाए धम्माधम्मिएववसाए तथासुयगडांगमां अने
पन्नवणामांपण मिश्रयोगकह्याछे इमसर्वहियेंछैयें तत्वतोकेवलीवाक्यप्रमाणछे इत्या
दिकशुनाशुनयोगना व्यवहारने व्यवहारनयेंआश्रवकह्यो.

सारीजीवना पोताना अनंतागुणते कर्मरूपमेलथी ढंकाणाछे तेवारजेहनी तपस्या रूप वायुनाप्रयोगथी कर्मरूपमेलना पडलमटीजाय तेवारेंपोतानागुण प्रगटथाय इत्यादिक उपमायेंकरी उपमाप्रमाणे निर्ज्जराकहियें.

अनेजे निर्ज्जराथी ज्ञानदर्शन चारित्ररूप पोतानागुणनी वृद्धिथतिदेखाय तथा देवायुप्रमुखनुंपामवुं तेविकलेंद्रियादिकथी उज्वलपणुंपाम्युंकहेवाय एमनिर्ज्जराथी जेक्षयोपशम वृद्धिथाय तेअनुमानप्रमाणे निर्ज्जराजाणवी.

तथाजेपुद्गलनी आशावांछारहित इच्छानिरोधन तपकरे ते आत्माने उज्वलपणे सम्यक्तसहित सकामनिर्जराथाय ते आगमप्रमाण निर्जराकहियें इति.

हवेबंधतत्वनाचारप्रमाणकहेछे तेमांजे जीव अने पुद्गल खीरनीरनीपरें लोली भूतथयींरह्याछे जीव अजीव बेहुमल्या शरीराकार प्रयोगशा पुद्गलपरिणम्या देखा यछे तेप्रत्यक्षप्रमाण बंधकहियें.

तथातीर्थंकर गणधर केवलज्ञानी अने छद्मस्थ मुनिराजना उपदेशसांभले पण संशय व्यामोह भ्रम इत्यादिक अज्ञानजायनही तेथीअनुमाने जाणियेंजे एने मि थ्यात्वादिक कर्मप्रकृतिनोबंध अतिकठिनछे जेम ब्रह्मदत्त चक्रवर्त्तिने चित्तमुनीश्वरें कह्यो नियाणमसुहंकडं इतिवचनात् एम अनेक हेतुथी अनुमानप्रमाणे बंध जाणियें.

तथा सोलप्रकारथीआयु चारगतिनो बंध कह्योछे तेकत्यविना अनुमानथी गति मांजावो तेपणअनुमान प्रमाणेबंधजाणियें तथा नरकादिकना आव्याना लक्षण देखीने जाणियें इत्यादिक विस्तारथी अनुमानप्रमाणे बंधकहियें.

हवेउपमाप्रमाण बंधकहेछे प्रकृतिबंधते स्वभावरसनेन्यायें स्थितिबंधते कालम र्यादानेन्यायें अनुभागबंधते सुखदुःखविपाकपणानी षट्गुण हानिवृद्धि तेअनुभा गरसनी हानिवृद्धि जेमसेरपाणीमां अल्पमिश्रीनाखियें तो अल्पमधुरपणोथाय अ ने घणीमिश्रीनाखियें तो घणुंमधुरपणुंथाय तेमशुभकर्मनोरसपण तीव्रमंदपरिणा मनी हानिवृद्धिथी कर्मनारसनो तीव्रमंदपणुजणाय अनेअशुभकर्मना रसपण हा निवृद्धियुक्तछे तेआवीरीतें जेमसेरपाणीमां थोमोनिंबनाखियेंतो थोडोकटुकपणो थाय अने घणोनिंब नाखतां घणोकटुकपणुंथाय इत्यादिकहेतुथी अनुभागबंध र सजाणिजे अनेप्रदेशबंधते जीवनाएकेक प्रदेशउपरें अनंतिअनंति कर्मवर्गणारही छे जेमसोनारनीपासें जोडलजेथायछे तेनापटल परस्परमिलेलाहोय तेमन्यारापण होय तेमकर्मवर्गणाते जीवनाप्रदेशें प्रदेशेंसंघातेंरहे तेप्रदेशबंध कोइजीवने अल्प होय कोइजीवने बहुलहोय इतिप्रदेशबंध एउपमाप्रमाणबंधकह्यो.

बंधकहेछे संग्रहनयें मोहनीयने बंधकहे जेम रागबंधन द्वेषबंधन इत्यावश्यकवच
नात् तथाव्यवहारनय जीवनीसाथें पुजलनोसंयोग खीरनीरनीपरेंथाय तथा राग
द्वेषादिकबंधनमां संसारीजीवखुतोछे तेनेबंधकहे वली ऋजुसूत्रनयें मांसभक्षणादि
क तथा अशुभकार्यनेविषे वर्त्तताने बंधकहे जेमएजीव पोतानाकर्मोथी सुखदुःख
वेदेछे एमकहियेंते बंध अने शब्दनयें अज्ञानताथी ग्रथिलवत् व्यामोहपणाथी का
र्यांकार्यनेविचारे तेकर्मनोगुणछे तेनेबंधकहे इहांजीवविपाकी प्रकृतिनेबंधगण्यो व
ली समभिरूढनय आत्मानानिजगुणने ढांक्यां तेनेबंधकहे इहांघातिकर्म मुख्यता
मांगण्या अने एवंभूतनय ते आत्माना अशुद्ध अध्यवसायथी भावकर्मथी जेकर्म
नो संचयथयो तेनेबंधकहे इति.

हवेमोक्षतत्व उपर सातनयकहेछे सर्वमोक्षने व्यवहारनयी पणपर्यायार्थिकनयें
भेदप्रकाशरूप कहियेंछैयें नैगमनयानुसारेंजे गत्यादिकबंधनथकी छुटातेने मोक्षकहेछे
अने संग्रहनयजे पूर्वकृतकर्मथीछुटाथया अनेदेशथी उज्वलथया तेनेमोक्षकहे व
ली व्यवहारनयें परित्तसंसारी तथासम्यक्तिने मोक्षकहे ऋजुसूत्रनयवालो क्षपकश्रे
णीचढयाने मुक्तिकहेछे अने शब्दनय सयोगीकेवलीने मोक्षकहेछे समभिरूढनय शै
लेशीकरणगुणने मोक्षकहेछे एवंभूतनय सिद्धक्षेत्र पहोताने मोक्षकहेछे.

एरीतेंएकेकातत्वउपर पचीसबोल चिंतव्याथी शुभस्थानकें ध्यानथायछे इहांध
र्मध्याननुं तथाशुक्लध्यानना पहेलापायानुं अंशपणलेछे तेमाटे एपचीसबोलनी
शुद्धमनेकरी ओलखाणकरवी उचितछे एपचीसबोलनो विस्तारघणुकरीणछे तेम
छी हुंमंदमति अल्पबुद्धि आलसु हिनाचारीछतां कांइकलेशमात्र मार्गवताव्योछे
माटेबुद्धिवंतपुरुषोए शुद्धकरीलेवुं ज्ञातापुरुषो एग्रंथनेसुधारीने घणाभव्यजीवोने
शीखावशे संभलावशे तेथीज्ञानवृद्धिनो कारणथसे.

दोहा. क्रिडाजिमबालककरे पत्तुनगरकरआप ॥ तेविधहुंपणबालवत् कर्योग्रंथ
आलाप॥१॥जिनवाणीनास्वादनो मतकरजोकोइहास्य॥स्याद्वादनयशुद्धकरो एहमे
रीअरदास ॥ २ ॥ गुरुकारीगरसमकह्या गुणनिधिउपमाजोय ॥ श्रीहरजीमल्लिजी
दीपतां तासकृपासुजहोय ॥ ३ ॥ रत्नचंदशिष्यतेहनो शुद्धीयशअरदास ॥ एअने
कांतपक्षने बुद्धजनहीयेविमास ॥ ४ ॥

इतिश्रीनवतत्वउपरपचीसबोलचिंतववानोविचारसमाप्तः

एचारनय व्यवहारनाछे अने एकशब्दनय बीजोसमनिरूढनय त्रीजोएवंनूतनय ए त्रणनिश्चेनयछे माटेनिश्चेनानेदमां गणायछे वलीतेमां कोइकवचननी अपेक्षायें ऋजुसूत्रनयपण निश्चेनयमांनलेछे तेंपणजिनवचननी अपेक्षायेंलीधोछे हवेजेमां व स्तुनाद्रव्यनी मुख्यताप्रतिनासेछे तेनेव्यवहारनयकहियें अनेजेमां वस्तुनोनिजस्व नाव अन्यंतरगुण प्रतिनासेछे तेनिश्चेनयकहियें:

हवेव्यवहारबेकह्याछे एकशुद्धव्यवहार बीजोअविशुद्धव्यवहार तेव्यवहारतोजे वस्तुनो बाह्यप्रवर्त्तनरूप तेनेकहियें जेमविवहरतीति व्यवहार हवे वस्तुनोजेबाह्य प्रयोगशुनपणे प्रवर्त्तनरूप तेनेशुद्धव्यवहारकहियें तथाजे बाह्यप्रयोगनो अशुनप णेप्रवर्त्तनते अशुद्धव्यवहारकहियें एनोजाणपणुंयद्यपि अतिविस्तारपणेछे तथापि इहांअल्पपणे हेतुयेंकरीदेखाडियें छैयें.

जेमजीवद्रव्यएकवस्तुछे तेनुंबाह्यप्रवर्त्तन तेशरीरइंद्रिय तथा योगनाप्रवर्त्तन ने कहियेंछैयें तेमांशरीरथी पडिलेहणाप्रमुख शुनकार्यनुंजेकरवुं तेमवर्ततांथकां शुद्धव्यवहारकहियें अनेएज शरीरथीजे स्त्रियादिकनुं आलिंगन प्रमुखकरवुंते अशुद्धव्यवहारकहियें एवीजरीतें बीजीचक्षुप्रमुख इंद्रियोनो प्रयोगपणकहेवुं तेआ वीरीतेंजे शास्त्रश्रवण इर्यासुमतियेंवर्तवुं स्वाध्यायकरवुं शीततापादिक सहनकरवा तेशुद्धव्यवहार अने विकथाश्रवण नृत्यावलोकन तथासुगंधानुराग रसादिकनुंगृधी पणुं सेजादिकेंशयनकरवुं मैथुनादिकसेववा इत्यादिकसर्व अशुनव्यवहारछे एमज जे शुनअशुनयोगनुं प्रवर्त्तनते शुनाशुनव्यवहारछे पणइहां कारणनु कार्यनेविषे उ पचारछे तेमाटे शुद्धअशुद्धव्यवहारते शुनअशुनपणानेज वताव्योछे.

पणशुद्धव्यवहारतो वीतरागअवस्थानेछे तेपाछलात्रण पर्यायार्थिकनयछे ते मांसमायछे तत्वकेवलिगम्यं एवीजरीतें व्यवहारनयमांपण शुद्धअशुद्धपणुं देखा डयुंछे जेमशुद्धनैगम अनेअविशुद्धनैगम इत्यादिकविस्तारें कहेवुंजोइयेंपण अल्पबु द्धिने ग्रंथनुंगौरव समजवुंडुर्लननथाय तेमाटेसंक्षेपेंकह्युंछे.

इहांकोइपुछेजे वस्तुतो द्रव्यगुणपर्यायरूप त्रणप्रकारेंकहिछे पणनयाधिकारेंतो एकद्रव्यार्थिकनय अने बीजोपर्यायार्थिकनय कह्योछे पणत्रीजो गुणार्थिकनय के मकह्योनथी हवेगुरुउत्तरकहेछे जेजीवादिकपदार्थना द्रव्यगुणपर्यायत्रणकह्या अ नेनयमां द्रव्यपर्यायबेकह्या माटेसातनयमांजे पर्यायार्थिकनयछे तेहिजगुणार्थि कछे केमके पर्यायमां गुणअंतरनूतछेमाटे द्रव्यपर्याय बेजकह्या एरीतेंसातनयनो विस्तारें नेदविज्ञान नयचक्रग्रंथथीजाणवुं. इति.

याक तेह ॥ १८ ॥ रूपेके भ्रम सीपमें । ज्यूं जड करे प्रयास ॥ देहातम भ्रमतें न
यो । त्यूं तुज कूट अभ्यास ॥ १९ ॥ मिटै रजत भ्रम सीपमें । जन प्रवृत्ति जिम
नाहि । नरमें आतम भ्रम मिटै । त्यूं देहादिक मांहि ॥ २० ॥ फिरै अबोधे कंठ
गत । चामीकरके न्याय ॥ ज्ञान प्रकाशै सुगति तुज । सहज सिद्ध निरुपाय ॥ २१ ॥
याविन तूं सूतो सदा । योगे भोगे जेयि ॥ रूप अतींद्रिय तूंवतें । कही शकै कहु
केयि ॥ २२ ॥ देखै भाखै औ करै । ज्ञानी सबहि अचंभ ॥ व्यवहारे व्यवहारसूं
निश्चयमें थिर थंभ ॥ २३ ॥ जग जाणै उन्मत्त औ । ओ जाणे जग अंध ॥ ज्ञानी
कूं जगमें रह्यो । यूं नहि कोइ संबंध ॥ २४ ॥ या परगांही ज्ञानकी ।
व्यवहारै छुं कहाइ ॥ निर्विकल्प तुजरूपमें । द्विधा भाव न सहाइ ॥ २५ ॥
यूं बहिरातम छांडिके । अंतर आतम होइ ॥ परमातम मति भावई । जहां विकल्प
न कोइ ॥ २६ ॥ सो मैं या दृढ वासना । परमातम पद हेत ॥ इलिका भमरी ध्या
न गत । जिन मति जिनपद हेत ॥ २७ ॥ भारे भय पद सोइ है । जहँ जडकूंवी सा
स ॥ जिनसूं औ डरतो फिरै । सोइ अभय पद तास ॥ २८ ॥ इंद्रिय वृत्ति निरोध
करि । जो खिनु गलित विभाव ॥ देखै अंतर आतमा । सो परमातम भाव ॥ २९ ॥
देहादिकतें भिन्न में । मोथैं न्यारे तेहु ॥ परमातम पथ दीपिका । शुद्ध भावना
एहु ॥ ३० ॥ क्रिया कष्ट भी नहु लहै । भेद ज्ञान सुखवंत ॥ या बिन बहु विधि
तप करै । तौ भी नहि भव अंत ॥ ३१ ॥ अभिनिवेश पुद्गल विषय । ज्ञानीकूं
कहँ होत ॥ गुणको भी मद मिटगयो । प्रगटत सहज उद्योत ॥ ३२ ॥ धर्म क्षमादिक
भी मिटै । प्रगटत धर्म सँन्यास ॥ तौ कल्पित भव भावमें । क्यूं नहि होत उदास
॥ ३३ ॥ रज्जु अविद्या जनित अहि । मिटै रज्जुके ज्ञान ॥ आतमज्ञाने त्यूं मिटै । भाव
अबोध निदान ॥ ३४ ॥ धर्म अरूपी द्रव्यके । नहि रूपी परहेत ॥ अपरम गुन रावै न
ही । यूं ज्ञानी मति देत ॥ ३५ ॥ नैगम नयकी कल्पना । अपरम भाव विशेष ॥ परम
भावमें मगनता । अति विशुद्ध नय रेख ॥ ३६ ॥ रागादिक जब परिहरी । करै सहज गु
णखोज ॥ घटमें भी प्रगटै तदा । चिदानंदकी मोज ॥ ३७ ॥ रागादिक परिणामयुत । म
नहि अनंत सँसार ॥ तेहज रागादिक रहित । जानि परमपद सार ॥ ३८ ॥ भव प्रपंच म
न जालकी । बाजी झूठी मूल ॥ चार पांच दिन खुस लगै ॥ अंत धूलकी धूल ॥ ३९ ॥
मोह वागुरी जाल मन । तामें मृग मत होउ ॥ यामें जे मुनि नहि परै । ताकूं
असुख न कोउ ॥ ४० ॥ जब निज मन सनमुख हुए । चितै न पर गुणदोष ॥
तव बहुराइ लगाइये । ज्ञान ध्यान रस पोष ॥ ४१ ॥ अहंकार परमें धरत । न

ऋजुसूत्रनयनेमतें उपयोगने जीवकहेछे इहां इंद्रिय लेश्या तथायोगना व्यवहारी कपुद्गल सर्वटालीनाख्या पणशुद्ध अशुद्ध एबेउपयोगने जीवकहेछे तेमां अज्ञानउप योगते मिथ्यात्वमोहनीयकर्मनी वर्गणानाप्रयोगथीछे तेअज्ञानीपणुतोउदैकछे तेमाटे कर्मनोपरिणाम मिश्रितथी अज्ञानीपणु जीवनेछे तेअज्ञानतो अशुद्धउपयोगछे पण ऋजुसूत्रनयानुसार कर्मवर्गणाना दलनेअनुसारेंजे उपयोगछेते जीवमांगणीलीधोछे.

शब्दनयनेमते जिहांजीवशब्दनो अर्थमलेतेने जीवकहेछे जेम जीवंजीवितजीव स्सइ एटलेपूर्वेजीवतोहतो हमणाजीवेछे अनेआगलेजीवसे एहवोअर्थमले तेनेजी वकहेछे एणेद्रव्यआत्माने जीवसर्दह्यो पण तेजस कार्मणाना प्रयोगशा सूंक्ष्मपुद्ग लतेजीवने अनादिना संगीछे केमके अतीतकालें जीवनीसाथेंजरह्याछे तेनेपणजी वमां गणीलीधा तेशब्दनयजाणवुं.

समभिरूढनयनेमतें शुद्धसत्ताधारक निजगुणरमणरूप सम्यक्दृष्टिवंत अनुभव रसआस्वादितने जीवसर्दहे एटले क्षायकसम्यक्तिने जीवसर्दह्यो.

एवंभूतनयनेमतें सिद्धनेजीवकरी सर्दहे निश्चेंजीवते कर्मकलंकरहित परमात्मा रूपनिर्मलज्ञानदर्शनने जीवसर्दहे एरीतेंजीवनेसातनयेंकरी अपेक्षायेंकहियेंछैयें.

हवेअजीव सातनयेंकरीबोलीयेंछैयें तेमांनैगमनयानुसारें अजीवनाप्रदेशने अ जीवकहे ते अजीवना पांचप्रकारछे तेमांप्रथम धर्मास्तिकायना सातनयकहेछे इहां नैगमनयते कारणनेकार्यमाने तेथी धर्मद्रव्यना एकप्रदेशने धर्मास्तिकायमाने के मकेनैगमनयवालो एकअंसनेवस्तुमानेछे तेमाटे इहां धर्मास्तिकायना एकप्रदेशमां पण चलणसहायधर्मछे तेमसर्वधर्मास्तिकायमांपण चलणसहायधर्मछे माटेनैगम नय एकप्रदेशनेपण धर्मास्तिकायमाने.

संग्रहनयें धर्मास्तिकायनेप्रयोगें जडचेतनचलणधर्मछे तेएकजधर्मद्रव्यछे इहांदे शप्रदेशनीविवक्षाकरीनहीं तेसंग्रह वलीव्यवहारनयें चलणसहायधर्मद्रव्यथी जी वतथापुद्गलते गतिगमनकरेछे पणतेमां षड्गुणहानिवृद्धिछे तेधर्मद्रव्यनोव्यवहार छे तथाऋजुसूत्रनयनेमतें जीवपुद्गल जेवर्तमानकालें गतिगुणकरे तेनेधर्मद्रव्यकहे पणअतीतअनागतकालें विनाशथया तथानथीआव्या तेने ऋजुसूत्रलेखामांगणेन ही अनेशब्दनयनेमतें धर्मास्तिकायनागुंणने स्वभावने धर्मास्तिकायकहे इहांदेशप्रदेशा दिकने मानेनहीं एमस्वभावनीमुख्यतालेइनेकहे तेशब्दनयजाणवुं वलीसमभिरूढन यते गुंणनेप्रवर्त्ततादेखीने जाणेजेए धर्मास्तिकायनोगुणछे एमज्ञानादिकना उपयो गने धर्मद्रव्य माने तेसमभिरूढनयजाणवुं अने एवंभूतनयनेमतें धर्मास्तिकायद्रव्य

आगे दृढ अभ्यासतें। पञ्जर तृण अनुमान ॥ ६५ ॥ भिन्न देहतें भाविये। त्यूं
आपहिमें आप ॥ ज्यूं स्वपनहिमें नहि हुए। देहातम भ्रम ताप ॥ ६६ ॥ पुण्य
पाप व्रत अव्रते। सुगति दोउके त्याग ॥ अव्रतपरै व्रत भी तजै। तातें धरि शि
वराग ॥ ६७ ॥ परम भाव प्रापति लगै। व्रत धरि अव्रत छोडि ॥ परम भाव र
ति पायके। व्रत भी इनमें जोडि ॥ ६८ ॥ दहन समै ज्यूं तृण दही। त्यूं व्रत
अव्रत छेदि ॥ क्रियाशक्ति इनमें नही। जा गति निश्चय भेद ॥ ६९ ॥ व्रत गुण धारत
अव्रती। व्रती ज्ञान गुण होइ ॥ परमातमके ज्ञानतें। परम आतमा होइ
॥ ७० ॥ लिंगदेह आश्रित रहै। भवको कारण देह ॥ तातें भव छेदै नही। लिंग
पक्ष रत जेह ॥ ७१ ॥ जाति देह आश्रित रहै। भवको कारण देह ॥ तातें भव छे
दै नही। जाति पक्ष रति जेह ॥ ७२ ॥ जाति लिंगके पक्षमें। जिनकूं है दृढ राग॥
मोह जालमें सो परै। न लहै शिव सुख भाग॥ ७३ ॥ लिंग द्रव्य गुण आदरै।
निश्चय सुख व्यवहार ॥ बाह्य लिंग ह्व नय गती॥करै मूढ अविचार ॥ ७४ ॥ भाव
लिंग जातें भये। सिद्धा पनरस भेद ॥ तातें आतमकूं नही। लिंग न जाति न वे
द ॥ ७५ ॥ पंगु दृष्टि ज्यूं अंधमें। दृष्टि भेद नहु देत ॥ आतम दृष्टि शरीरमें। त्यूं
न धरे गुण हेत ॥ ७६ ॥ स्वप्न विकलतादिक दशा। भ्रम मानै व्यवहार ॥ निश्चय न
यमें दोष क्षय। विना सदा भ्रम चार ॥ ७७ ॥ छूटै नहि बहिरातमा। जागत भी प
ढि ग्रंथ ॥ छूटै भवथें अनुभवी। सुपन विकल निगरंथ ॥ ७८ ॥ पढी पार कहुँ
पावनो। मिटयो न मनको चार ॥ ज्यूं कोल्हूके बैलकूं। घरही कोस हजार ॥७९॥
जिहां बुद्धि थिर पुरुषकी। तहँ रुचि तहँ मन लीन ॥ आतममति आतम रुची।
कहौ कोन आधीन ॥ ८० ॥ सेवत पर परमातमा। लहै भविक तस रूप ॥ ब
तियां सेवत ज्योतिकूं। होवत ज्योति सरूप ॥ ८१ ॥ आप आपमें स्थित हुए।
तरुथें अगनि उद्योत ॥ सेवत आपहि आपकूं। त्यूं परमातम होत ॥ ८२ ॥ ए
हि परम पद भावियें। वचन अगोचर सार ॥ सहज ज्योति तो पाइयें। फिरि न
हि भव अवतार ॥ ८३ ॥ ज्ञानीकूं दुःख कछु नही। सहज सिद्ध निर्वाण ॥ सु
ख प्रकाश अनुभव भये। सबही ठौर कल्याण ॥ ८४ ॥ सुपन दृष्टि सुख नाशतें
ज्यूं दुःख न लहै लोक ॥ जागर दृष्ट विनष्टमें। त्यूं बुधकूं नहि शोक ॥८५॥ सुख
भावित दुःख पायकें। क्षय पावै जग ज्ञान ॥ न रहे सो बहु तापमें। कोमल फू
ल समान ॥ ८६ ॥ दुःख परितापैं न वि गलै। दुःख भावित मुनि ज्ञान ॥ वज्र
गलै नवि दहनमें। कंचनके अनुमान ॥ ८७ ॥ तातें दुःख सू भावियें। आप श

हवेपुण्यउपर सातनयकहेछे पुण्यरूपकार्यनो कारणते शुभपुद्गलनो संयोगछे जे मवस्त्रनूषण गज अश्वप्रमुख देखीनेजाणिये छैयेजे एजीवपुण्यवंतछे एटलीवस्तुएने स्वाधीनछे तेकारणने कार्यमानता नैगमनयनुंवचनजाणिये एशुनपुद्गलने पुण्यकहे.

संग्रहनयनेमतें शरीरादिकसुंदरहोय जात्यादिकउत्तमहोय उंचगोत्र शातावेदनी प्रमुख जेवर्गणाछे तेप्रयोगशा पुद्गलछे तेनेपुण्यमाने इहांजीवपुद्गल नेलागणीलीधा

व्यवहारनयनेमतें शारीरी मानसी सुखमांरमणछे अने आरोग्यता उत्कंठाप्रमुख जे अवस्थाओ धारेछे तेपुण्यप्रकृतिनो व्यवहारछे जे इंद्रियना मनोज्ञविषय पूरणकरतादेखाय तेनेव्यवहारनयनेमतें पुण्यकहियें.

ऋजुसूत्रनयानुसारें शुनकर्मना नोगवनारजीवने पुण्यकहियें जेम आजीव पुण्यने प्रनावें आवासुख नोगवेछे एदृष्टांतेजाणवुं एटलेएनेसंपूर्ण मनोज्ञवस्तुतेपुण्यने संयोगेंछे एजिहांजिहांजायछे तिहांतिहांएनेस्वयमेव सुखमलेछे एहवो एपुण्यवंतजीवछे एमजेकहेवुं तेऋजुसूत्रनयनुं वचनछे इहांजीवना कार्मणशरीरने पुण्यमानेछे.

शब्दनयानुसारें वर्त्तमानकालें सातानोगवताने पुण्यकहियें इहांकोइपुछेजे ऋजुसूत्रनय अने शब्दनयमां शोफेरछे तेनेकहेवुंजे ऋजुसूत्रनयवालो त्रणकालनासुखने पुण्यकहेछे अनेशब्दनयवालो वर्त्तमानकाल ग्राहीछे एटलेवर्त्तमान सुखने पुण्यकहेछे तेनुंदृष्टांत जेमचक्रवर्त्यादिक कोइपुण्यवंतजीव वर्त्तमानकालेंनिद्रामांसुतोछे पणअतीतकाले अनागतकालें सुखनुनोगवनारछे तेपुण्यवंतजीवसुतोछे एमऋजुसूत्रनयनुं बोलवुंछे अने शब्दनयग्राही पुरुषतोसुतेलाप्राणीने पुण्यवंतनकहे केमकेएनिद्राव्यापितछे तेनिद्रातो पापप्रकृतिछे तोएशोपुण्यनोगवेछे तेमाटेसुखनोगववाने वखतेंज तेने पुण्यवंत कहे एमशब्दनयनुं बोलवुंछे एनयपण सुखनोगववाने समयें आत्मा पुद्गलिकसुखथीसातामानेछे तेनेपुण्यकरिमानेछे.

समभिरूढनयनामतें पुण्यप्रकृति प्रयोगशापणे परिणमिने आनंदमांलीनथयोछे तेनेपुण्यकहे तथा एवंनूतनयनेमतें पुण्यनांनोक्ताने ज्ञायकने पुण्यकहियें

हवेपापउपर सातनयकहेछे पापनी सातेनयेंकरी वक्तव्यता पुण्यनीपरेंजाणवी पणएपापतेपुण्यनो प्रतिपक्षीछे माटेपापनी वक्तव्यता पुण्यथी विपर्यासपणेजाणवी.

हवेआश्रवउपर सातनयकहेछे नैगमनयानुसारें कर्मरूपपरिणमनयोगजे पुद्गल तेने आश्रवकहे वलीसंग्रहनय मिथ्यात्वादिककारणना पुद्गलप्रयोगशापणे परिणमनरूपदलने आश्रवकहेछे तथा व्यवहारनय अत्यागनावने आश्रवकहे एटले मिथ्यात्वादिकना उदयेंवर्त्तता अपच्चखाणने आश्रवकहे एव्यवहारनयानुसारें मिथ्या

सहज भावमें लीनता । उदासीनता भेद ॥ ६ ॥ ताको कारन अममता । तामें म
न विसराम ॥ करै साधु आनंद घन । होवत आतम राम ॥ ७ ॥ ममता थिर सुख
शाकिनी । निर्ममता सुख मूल ॥ ममता शिव प्रतिकूलहै । निरममता अनुकूल ॥ ८ ॥
ममता विष मूर्छित भये । अंतरंग गुण वृंद ॥ जागै भाव निरागता । लगत अमृ
तके बिंद ॥ ९ ॥ परिणति विषय विरागता । भव तरु मूल कुठार ॥ ता आगै
क्युं करि रहै । ममता बेलि प्रचार ॥ १० ॥ रहा मोहकी वासना । बुधकूं भी प्र
तिकूल ॥ याकेबलि श्रुत अंधता । अहंकारको मूल ॥ ११ ॥ मोह तिमिर मन
में जगै । याके उदय अभेद ॥ अंधकार परिणाम है । श्रुतके नामें तेह ॥ १२ ॥
करै मूढमति पुरुषकूं । श्रुत भी मद भय रोष ॥ ज्यूं रोगीकूं खीर घृत । सन्निपा
तको पोष ॥ १३ ॥ टालै दाह तृषा हरै । गालै ममता पंक ॥ लहरि भाव वैरा
गकी । ताकूं भजो निशंक ॥ १४ ॥ राग भुजंगम विष हरन । धारो मंत्र विवेक ॥
भव बन मूल उछेदकूं । विलसै याकी टेक ॥ १५ ॥ रवि दूजो तीजो नयन । अं
तर भावि प्रकाश ॥ करो धंध सब परिहरी । एक विवेक अभ्यास ॥ १६ ॥ प्रथम
पुष्करावर्त्तके । वरषत हरख विशाल ॥ द्वेष हुतास बुझाइये । चिंता जाल ज टा
ल ॥ १७ ॥ किनके वश भव वासना । होवै वैसा धूत ॥ मुनि भी जिनके वश
भये । हाव भाव अवधूत ॥ १८ ॥ जबलूं भवकी वासना । जगै मोह निदान ॥ तबलूं
रुचै न लोककूं । निर्मम भाव प्रधान ॥ १९ ॥ विषम ताप भव वासना । त्रिविध दोषको
जोर ॥ प्रगटे याकी प्रबलता । क्रोध कषाए घोर ॥ २० ॥ तातें दुष्ट कषायके । छेदै हित
निज चित्त ॥ धरौ एह शुभ भावना । सहज भावमें नित्त ॥ २१ ॥ सिद्ध औषधी इक क्षमा ।
ताको करो प्रयोग ॥ ज्युंमिटि जाए मोह घर । विषम क्रोध ज्वर रोग ॥ २२ ॥ चेतनकूं कोम
ल ललित । चिदानंदमय देह ॥ सूक भूक लुर जात हैं । क्रोध लूकतें तेह ॥ २३ ॥ क्षमा
सार चंदन रसै । सींचो चित्त पवित्त ॥ दया वेल मंडप तले । रहो लहौ सुख मित्त ॥ २४ ॥
याकों भासै समवधू । क्षमासहजमें जोर ॥ क्रोध योध क्युं करि करै । सो अप
नो बल सोर ॥ २५ ॥ देत खेद वर्जित क्षमा । खेद रहित सुख राज ॥ इनमें न
हि संदेहकछु । कारन सरिखो काज ॥ २६ ॥ पर्वत गर्व शिखर चड्यो । गुरुकूं
भी लघु रूप ॥ कहै तिहां अचरज किस्यो । कथन ज्ञान अनुरूप ॥ २७ ॥ आ
व शिखर गिरिराजके । तामें विमला लोक ॥ तौ प्रकाश सुख क्युं लहै । विषम
मान वश लोक ॥ २८ ॥ मान महिधर छेद तूं । कर मृदु ताप विघात ॥ ज्युं
सुख मारग शरलता । होवै चित विख्यात ॥ २९ ॥ मृडुता कोमल कमलथें । व

अने ऋजुसूत्रनयनामतें वर्त्तमानकालें पुण्याश्रवछे अथवा पापाश्रवछे तेमांमु ख्यतापणे योगव्यापारनीक्रियाने आश्रवकहियें.

शब्दनयें जेस्थानकथीआश्रवआवे तेनांठेकाणाने आश्रवकहे एजीवना मिथ्या त्वादिक परिणामने आश्रवकहे तथासमभिरूढनय कर्मग्रहणकरवानुंजे गुणछे ते ने आश्रवकहे अने एवंभूतनयतो आत्माना सकंपपणाने आश्रवकहे इहांग्रंथना गौरवपणाथी विस्तारसंकोचीलख्युंछे गीतार्थेसुधारसें एरीतें आश्रवनासातनयकह्या.

हवेसंवरउपर सातनयकहेछे नैगमनयनेमतेंजे शुभयोगते संवरनुंकारणछे मा टे नैगमनयकारणने कार्यमानेछे तेन्यायेंशुभयोगने संवरकहे अने संग्रहनयस म्यक्तादिक परिणामने संवरकहे वलीव्यवहारनयें चारित्रनाव्यवहारजे पांचम हाव्रत तेनेसंवरकहे तथाऋजुसूत्रनयवर्तमानकालें नवाकर्मनआवे तेनेसंवरकहे व ली शब्दनय सम्यक्तादिक पांचनेसंवरकहे तिहां शब्दनयपोषता चोथागुणगणे व र्तनारो जीव देशसंवरीछे केमके संवरनापर्यायमांछे तेमिथ्यात्वसहचारणी प्रकृती नोअनाश्रवछे अणग्रहवोछे तेन्यायेंकरी शब्दनयें संवरकह्यो तथासमभिरूढनयवा लो सम्यक्तादिक पांचसंवरेंकरी जे कर्मवर्गणायें अलिप्तपणोहोय अनेमिथ्यात्वादि क पांचकारणनी स्निग्धतामंदकरवी तथारुक्षपरिणामथी कर्मनीस्थितिनो अलिप्त पणो तेसमभिरूढनय संवरकह्यो अने एवंभूतनयनामतें शैलेशीअवस्था आत्मानो स्थैर्यरूप अकंपमानथावो एचउदमांगुणठाणानुं संवरजाणवो इहांआत्माने संवर कह्योछे जेमभगवतिना पहेलाशतकना नवमाउद्देशामां कालासवेसिय आयासंवर आयासंवरस्सअट्ठे इतिवचनात् एम आत्माना शैलेशीपणाने संवरकह्योऽतिसंवर.

हवेनिर्जराना सातनयकहेछे नैगमनय शुभयोगने निर्जराकहे संग्रहनय कर्मव र्गणाखिरे तेहनेनिर्जराकहे इहांअकामनिर्जरा तथा सकामनिर्जरा सर्वेगणीलीधी तथाव्यवहारनय बारभेदेंतपने निर्जराकहे केमकेतपते निर्जरानोव्यवहारछेमाटे व लीऋजुसूत्रनयें जेवर्त्तमानकालें शुभध्यानेकरी तपस्यामां प्रवर्तेछे तेनेनिर्जराकहे त था शब्दनयें तो ध्यानाग्निना प्रयोगथी कर्मरूपइंधणने बाले तेनेनिर्जराकहे इहांमु ख्यतायें शुभध्यानने निर्जराकहे केमके शुभध्यानथी निश्चेंकरीसकामपणे कर्मनिर्जरा थायछे अने समभिरूढनयेंजे आत्माना उज्वलपणाने सन्मुखथयो अनेशुक्लध्याना रूढथयो तेनेनिर्जराकहे इहांक्षिणमोहगुणठाणावर्त्तिनी प्रेरणाजाणवी तथा एवंभू तनयें सर्वकर्मकलंकरहित शुद्धात्माने निर्जराकहे इतिनिर्जरा.

हवेबंधतत्वना सातनयकहेछे नैगमनयनेमतें बंधनाकारण पच्चासीप्रकारेंछेतेने

कार ॥ ५२ ॥ ठगै कामके सुख गिनै । पाइ विषयकी भीख ॥ सहज रा
त नही । लगी न सद्गुरु सीख ॥ ५३ ॥ अप्रमाद पवि दंभर्थे । करी मोह
चूर ॥ ज्ञानी आतम पद लहै । चिदानंद भरपूर ॥ ५४ ॥ जाके राज विचार
अबला एक प्रधान ॥ सो चाहत है ज्ञान जय । कैसे काम अयान ॥ ५५
और भ्रांति मिटि जात है । प्रगटत ज्ञान उद्योत ॥ ज्ञानीकूं भी विषय भ्रम ।
दिशा मोह सम होत ॥ ५६ ॥ दाखै आप विलास करि । फूलेकूं भी साच ॥ इं
द्रजाल परें कामिनी । तासूं तूं मत राच ॥ ५७ ॥ हसित फूल पल्लव अधर ।
कुच फल कठिन विशाल ॥ प्रिया देखि मत राच तूं । या विष वेलि रसाल
॥ ५८ ॥ चरम मढित है कामिनी । भाजन मूत पुरीख ॥ काम कीट आकुल स
दा । परिहर सुनि गुरु सीख ॥ ५९ ॥ विषय तजै सो सब तजै । पातक दोष
वितान ॥ जलधि तरत नवि क्यूं तरै । तटिनी गंग समान ॥ ६० ॥ चाटै निज
लाला मिलित । शुष्क हाड ज्यूं श्वान ॥ तैसे राचै विषयमें । जड निज रुचि अ
नुमान ॥ ६१ ॥ भूखन बहुत बनावतें । चंदन चरचत देह ॥ वंचत आपहि आ
पकूं । जड धरि पुद्गल नेह ॥ ६२ ॥ दूर दमनके जय किये । इंद्रिय जन सुख हो
त ॥ तातें मनजय करनकूं । करौ विचार उद्योत ॥ ६३ ॥ विषय ग्रामकी सीममें ।
इछा चारि चरंत ॥ जिन आणा अंकुश करी । मन गज वश करो संत ॥ ६४ ॥ एक
भाव मन पौनको । झूठ कहै अंधकार ॥ यातें पवनहितें अधिक । होत चित्तको चा
र ॥ ६५ ॥ जामें राचै ताहिमें । विरचै करि चित चार ॥ इष्ट अनिष्ट न विषयको ।
यूं निश्चय निरधार ॥ ६६ ॥ केवल तामें करमको । राग द्वेषतें बंध ॥ परमें निज अ
भिमान धरि ॥ कहा फिरत हो अंध ॥ ६७ ॥ जैसें ललना ललितमें । भाव धरतु है
सार ॥ तैसे मैत्री प्रमुखमें । चित धरि करि सुविचार ॥ ६८ ॥ बाहिर बहुर कहा फिरै ।
आपहिमें हित देखि ॥ मृग तृषा सम विषयको । सुख सब जानि उवेखि ॥ ६९ ॥
प्रिय अप्रिय व्यवहार निज । रुचि रस साचौ नाहि ॥ अंगज वल्लभ सुत भयो । भूका
दिक नहि काहि ॥ ७० ॥ होवत सुख नृप रंककूं । नोबत सुनंत समान ॥ इक भो
गै इक नाहिसो । बढयो चित्त अभिमान ॥ ७१ ॥ भवको सुख संकल्प भव । कृत्रि
म जिसो कपूर ॥ रंजत है जन मुग्धकूं । वर्जित ज्ञान अंकूर ॥ ७२ ॥ गुन ममका
रन वस्तुको । सो वासना निमित्त ॥ मानै सुतमें सुत अधिक ॥ दौरत है हित चित्त
॥ ७३ ॥ मनकृत ममता झूठ है । नही वस्तु परजाय ॥ नहि तौ वस्तु बिकायथें । क्यूं
ममता मिटि जाय ॥ ७४ ॥ जन जनकी रुचि भिन्न है । भोजन कूर कपूर ॥

॥ श्रीजिनायनमः ॥

# अथ श्रीसमाधिशतक श्रीयशोविजय उपाध्यायजीकृत प्रारंभः

॥ दोहरा ॥

समरी भगवति भारती। प्रणमी जिन जग बंधु ॥ केवल आतम बोधको। करशूं सरस प्रबंध ॥ १ ॥ केवल आतम बोध है। परमारथ शिव पंथ ॥ तामें जिनकूं मगनता। सोइ भाव निगरंथ ॥ २ ॥ भोग ज्ञान ज्यूं बालको। बाह्य ज्ञानकी दौर ॥ तरुण भोग अनुभव जिस्यो। मगन भाव कछु और ॥ ३ ॥ आतम ज्ञाने मगन जो सो सब पुद्गल खेल ॥ इंद्रजाल करि लेखवै। मिलै न तहँ मन मेल ॥ ४ ॥ ज्ञान विना व्यवहारको। कहा बनावत नाच ॥ रत्न कहौ को काचकूं। अंत काच सो काच ॥ ५ ॥ राचै साचे ध्यानमें। जाचै विषय न कोइ ॥ नाचै माचै मुगति रस। आतमज्ञानी सोइ ॥ ६ ॥ बाहिर अंतर परम ए। आतम परिणति तीन ॥ देहादिक आतम भरम। बाहिरातम बहु दीन ॥ ७ ॥ चित्त दोष आतम भरम। अंतर आतम खेल ॥ अति निर्मल परमातमा। नाहि कर्मको भेल ॥ ८ ॥ नर देहादिक देखिके। आतम ज्ञाने हीन ॥ इंद्रिय बल बहिरातमा। अहंकार मन लीन ॥ ९ ॥ अलख निरंजन अकल गति। व्यापी रह्यो शरीर ॥ लखै सु ज्ञाने आतमा। खीर लीन ज्युं नीर ॥ १० ॥ अरि पुत्रादिक कल्पना। देहातम अभिमान ॥ निज पर तनु संबंध मति। ताको होत निदान ॥ ११ ॥ देहादिक आतम भ्रमी। कल्पै निज परभाव ॥ आतम ज्ञानी जग लहै। केवल शुद्ध स्वभाव ॥ १२ ॥ स्वपर विकल्पै वासना। होत अविद्या रूप ॥ तातें बहुरि विकल्पमय। भरम जाल अँध कूप ॥ १३ ॥ पुत्रादिककी कल्पना। देहातम भ्रम मूल ॥ ताकूं जड संपति कहै। हहा मोह प्रतिकूल ॥ १४ ॥ या भ्रम मति अब छांडि दौ। देखौ अंतर दृष्टि ॥ मोह दृष्टि जो छोडिये। प्रगटै निजगुण सृष्टि ॥ १५ ॥ रूपादिकको देखिवो। कहन कहावन कूट ॥ इंद्रिय जोगादिक बलें। ए सब लूटालूट ॥ १६ ॥ पर पद आतम द्रव्यकूं ॥ कहन सुनन कछु नाहि ॥ चिदानंद घन खेलही। निज पद तौ निजमांहि ॥ १७ ॥ ग्रहण अयोग्य ग्रहै नही। ग्रह्यो न छोडै भेद ॥ जानै सर्व स्वभावने। स्व पर प्रका

छूटी क्रिया । करै नथापै ज्ञान । क्रिया भ्रष्ट इक ज्ञान मति ॥ ठेदै क्रिया अपान ॥ ९९ ॥ ते दोनूंथें दूरि शिव । जे निज बल अनुसार ॥ मारग रुचि मारग गहै । सो शिव साधन हार ॥ १०० ॥ निवृत्ति ललनाकूं सहज । अचिरजकारी कोउ ॥ जो नहि याकूं रुचत है । याकूं देखे सोउ ॥ १०१ ॥ मन पारद मूर्छित भयो । समता औषधि आइ ॥ सहज वेध रस परम गुन । सो वन सिद्धि कमाइ ॥ १०२ ॥ बहुत ग्रंथ नय देखिके । महा पुरुषकृत सार ॥ विजय सिंह सूरी किउ । समता शतको हार ॥ १०३ ॥ जावत जाकूं तत्व मन । हो समतारसलीन ॥ ज्यूं प्रगटै तुक सहज सुख । अनुभवगम्य अहीन ॥ १०४ ॥ कवि यशविजय सुं सीखए । आप आपकूं हेत साम्यशतकउद्धारकरि । हेमविजयमुनिहेत ॥ १०५ ॥ इतिश्री समता शतक समाप्तः

## ॥ अथ श्री दिगपट चोराशी बोल प्रारंभः ॥

॥छप्पयछंद. सुगुण ज्ञान शुभ ध्यान, दान विधि धर्म प्रकाशक; सुघटमान परमान, आन जस सुगति अभ्यासक; कुमत वृंद तमकंद, चंद परि दंद निकासक; रुचि अमंद मकरंद, संत आनंद विकासक; जस वचन रुचिर गंभीर नय, दिगपट कपट कुवार सम; जिन वर्द्धमान सो वंदियें, विमल ज्योति पूरन परम.॥ १॥ कवित्त इकतीसा. सागरके आगे कहा गागरी धरैगी गर्व, खर्व कहा बेसरूके आगे अर्व इंदको; नाक वृछ आगे कहा आकको अंकूर गजै, सूर तेज आगे कहा राजै धाम चंदको; कामधेनु आगे कहा कूकरी करैगी मान, नृपतिके आगे कहा जोरहै पुलिंदको; ऐसे सरवंग शुद्ध ग्रंथ जो सितंबरको, ताके आगे कौन दर्प डुर्मतीके वृंदको २ दोहरा. पहिलुं दिग्पटसुं सुनै, बोल चुरासी फेर, सर्व विसंवादे भयो, अबतो बहुत अंधेर. ३ निन्हव थैं अधिको बुरो, कह्यो मिथ्याति सोइ; परिहरना अधिकार यह, आवश्यकमें जोइ. ४. खट शत नव वरखे भयो, तस मत जन्म मृग पास; सहस मल्ल दीक्षा लइ, आर्य कृष्ण गुरुपास. ५ राजमान्य तिणे अन्यदा, विहर्यो कंबल रत्न; मूर्छासेंती संग्रह्यो, कियो न संवर यत्न. ६ गुरुने कीने टूकनें, टले ज्युं मूर्छा दोष; आइ देखि मनमें धर्यो, तिनि तार्थे बहु रोष. ७ थविरकल्प खंडन कियो, बरन्यो जब जिन कल्प; नगन पंथ तिण आदर्यो, त्यजि सदगुरुके जल्प. ८ तस नगनी देखी नगन, बेसै दीनो बेस; चरन निषेधै नारिकूं, तब सो सुरि निरदेश. ९. जैन कहावै नामथें, तार्थे बढ्यो अंकू

लहै निज गुण गंध ॥ अहं ज्ञान निज गुण लगै । छुटै परहि संबंध ॥ ४२ ॥ अ
थी त्रिलिंगी पद लहै । सो नहि आतम रूप ॥ तौ पद करि क्यूं पाइए । अनुभव
गम्य स्वरूप ॥ ४३ ॥ आतम गुण अनुभवत भी । देहादिकतें भिन्न ॥ भूलै विभ्र
म वासना । जो रहि फिरै न खिन्न ॥ ४४ ॥ देखै सो चैतन नही । चेतन ना
हि दिखाय ॥ रोष तोष किनसूं करै । आपहि आप बुझाय ॥ ४५ ॥ त्याग ग्र
हण बाहिर करै । मूढ कुशल अति रंग ॥ बाहिर अंतर सिद्धकूं । नही त्याग
औ संग ॥ ४६ ॥ आतम ज्ञाने मन धरै । वचन काय रति छोडि ॥ तौ प्रगटै शु
भ वासना । गुण अनुभवकी जोडि ॥ ४७ ॥ योगारंभीकूं असुख । अंतर बाहिर सु
ख ॥ सिद्ध योगकूं सुख है । अंतर बाहिर दुःख ॥ ४८ ॥ सो कहिये सो पूछिये । तामें
धरिये रंग ॥ यातें मिटै अबोधता । बोधरूप व्है चंग ॥ ४९ ॥ नहि कछु इंद्रिय
विषयमें । चेतनकूं हितकार ॥ तोभी जन तामें रमै । अँधो मोह अंधार ॥ ५० ॥ मूढा
तमसूं तेप्रबल । मोहे छोभी शुद्धि ॥ जागत है ममता भरे । पुद्गलमें निज बुद्धि ॥
५१ ॥ ताकूं बोधन श्रम अफल । जाकूं नहि शुभ योग ॥ आप आपकूं बूझवै । निश्चय
अनुभव भोग ॥ ५२ ॥ परको किशो बुझावनो । तूं परग्रहण न लाग ॥ चाहै
जे में बूझवो । सो नहि तुझ गुण भाग ॥ ५३ ॥ जबलौं प्रानी निज मतें । ग्रहै
वचन मन काय ॥ तबलौं है संसार थिर । भेद ज्ञान मिटि जाय ॥ ५४ ॥
सूखम घन जीरन नवै । ज्यूं कपरे त्यूं देह ॥ तातें बुध मानै नही । अपनी परि
णति तेह ॥ ५५ ॥ जैसे नाश न आपको । होत वस्त्रको नाश ॥ तैसे तनुके नाश
तें । चेतन अचल अनाश ॥ ५६ ॥ जंगम जग थावर परें । जाकूं भासै नित्त ॥ सो
चाखै समता सुधा । अवर नही जड चित्त ॥ ५७ ॥ मुगति दूरि ताकूं नही । जाकूं
थिर संतोष ॥ दूर मुगति ताकूं सदा । जाकूं अविरति पोष ॥ ५८ ॥ होत व
चन मन चपलता । जनके संग निमित्त ॥ जन संगी होवै नही । तातें मुनि जग
मित्त ॥ ५९ ॥ बास नगर वनके विषे । मानै दुविध अबुद्ध ॥ आतम दरशीकूं वश
ति । केवल आतम शुद्ध ॥ ६० ॥ आप भावना देहमें । देहंतर गति हेत ॥ आप
बुद्धि जो आपमें । सो विदेहपद देत ॥ ६१ ॥ भवि शिव पद दे आपकूं । आपहि
सनमुख होइ ॥ तातें गुरु है आतमा । अपनो और न कोइ ॥ ६२ ॥ सोवत है
निज भावमें । जागै जे व्यवहार ॥ सूतो आतम भावमें । सदा स्वरूप अधार
॥ ६३ ॥ अंतर चेतन देखिके । बाहिर देह स्वभाव ॥ ताको अंतर ज्ञानतें । हो
इ अचल दृढ भाव ॥ ६४ ॥ भासै आतम ज्ञान धुरि । जग उनमत्त समान ॥

लिख्यो नकार; जो संसो उपजत नही, तो तुज भ्रमको भार. २६ जिनकूं इं
द्रिय विरहथें, तनु गत नहि सुख दुःख; कहै सु जीव विपाक तसु, उदो फलै
कुप रुख. २७ खाइक सुख जिनकूं कहै, केवल ज्ञान सरूप; वेदनीयके खय ग
ये, कुन गुन कहो पच्चु रूप. २८ उदय भाव खाइक गन्यो, जिनकूं प्रवचनसार; अ
कै तूल परें तो फिरे, क्रियारहित निरधार. २९ बठे उठे आसने, देवै प्रेरित देव
ऐसो है क्यूं कल्पना, छोडि न मिथ्या टेव. ३० केवलनाणे जो खगति, मननाणे
कछु होइ; करम विफल जो मोह बिनु, यश कीरति क्यूं जोइ. ३१ अतिशय भूख
अभावको, कहै सुगुरु कुल हीन; भाव अघाती क्यूं मिटै, घातीगए जो खीन. ३२
कवित्त इकतीसा. केवली आहार करे जागै अग्नि अंतरकी, वेदनी अहार शक्ति
ताकी नाही हीनता; हेतुके समाजतें घटै सुं काज साज शुद्ध, लाजै तहां आज
लुंक हानी कहा हीनता; अन्यथा न अष्ट वर्ष, बाल केवली विशाल; पूर्व कोटि
आउ पाल ताकूं वृद्धि खीनता; वृद्धि पोखदाइ भाइ वर्गणा कहांसु पाइ, ज्ञानथें
सु आइ तामें मुक्तिकी प्रवीणता. ३३ दोहरा. द्विक पट जिन बोलें नही, शि
रथे उठै नाद; किरिया बिनु घट ध्वनि परै, तामै कौन सवाद. ३४ कहै शिला
का पुरुषकूं, नही कबहुं नीहार; तपति लब्धि सबकूं नही, एहु अदृष्ट प्रकार.
३५ खल पुग्गल तिनकूं जलै, रस पुग्गल जलि जाइ; दोउ जलै तौ उदरमें, भस्म
क व्याधि उपाइ. ३६ तेनरु कंक गहनि कहै, उर कपोत परिनाम; ए आगमके
वचनमें, क्यूं न करो विसराम. ३७ कहै साधु अप्रमत्तकूं, नही अहार विहार;
स्वामी सिद्ध सिला भइ, जिहां न साधु प्रचार. ३८ बाहिर मानुष लेखके, गइहो
ई व्रत भंग; यूं कहते चारण बिना, क्यूं जलमें शिव संग. ३९ सोरठा. दो
इ घटीके फेर, केवल मानै भरतकूं; बडो मोहको घेर, भाव प्रधान गनै नही.
४० हरिगीत छंद. चारहुं निखेपे एक द्रव्यें, कहे श्रीजिन आगमें; ज्युं नाम थ
ट संवाय थापन, द्रव्य मूदगुन भावमें; यूं जीव द्रव्यह केवलादिक, गुनह द्रव्यत
भावतें; दुइ नियम पुग्गल द्रव्यको, तौ तंत नहि व्यभिचारतें. ४१ जो समय
सारे अंत्य धारे; सुगति लिंग न वेदतें; निश्चय प्रमानै व्यवहरइ तें, वस्तु गुन
गुनि भेदतें; अधिगम बिना सम्यक मानै, द्रव्य बिनु चारित नही; चारित बिना
कहै समकितै, शिव हुवें मति जो बही. ४२ सुर कोइ शिर परि वस्त्र डारै, जाय
केवल तौ घटी; जो द्रव्य बिनु केवल नही, तौ केवला वरणं पटी; जो भाव लिंग
प्रमान कीजै, भेद पनरहुं तौ घटै; सिद्धंति भाखै सिद्धके भर, तासु निंदक भव

क्ति अनुसार ॥ तौ दृढतर हुइ उल्लसे । ज्ञान चरण आचार ॥ ७७ ॥ रनमें ल रते सुजट ज्यूं । गिनै न बान प्रहार ॥ प्रभु रंजनके हेत त्यूं । ज्ञानी असुख प्र चार ॥ ७९ ॥ व्यापारी व्यापारमें । सुख करि माने दुःख ॥ क्रिया कष्ट सुखमेंगि णे । त्यूं वंछित मुनि सुख ॥ ८० ॥ क्रिया योग अन्यास हे । फल हे ज्ञानअबंध ॥ दोनूकूं ज्ञानी नजै । एक मतीतें अंध ॥ ८१ ॥ इछा शास्त्र समर्थना । त्रिविध यो ग है सार ॥ इछा निज शक्ती करी । विकल योग व्यवहार ॥ ८२ ॥ शास्त्र योग गुण ठाणको । पूरन विधि आचार ॥ पद अतीत अनुनव कह्यो । योग तृतीय वि चार ॥ ८३ ॥ रहे यथा बल योगमें ॥ गहे सकल नय सार ॥ नाव जैनता सो लहे । चहे न मिथ्या चार ॥ ८४ ॥ मारग अनुसारी क्रिया । ठेदै सो मतिहीन ॥ कपट क्रिया बल जग ठगै । सो नी नवजल मीन ॥ ८५ ॥ निज निज मतमें ल रि परै । नयवादी बहु रंग ॥ उदासीनता परिणमै । ज्ञानीकूं सरवंग ॥ ८६ ॥ दो उ लरै तिहां इक परै । देखनमें दुःख नाहि ॥ उदासीनता सुख सदन । पर प्रवृ त्ति दुःख ठांहि ॥ ८७ ॥ उदासीनता सुरलता । समता रस फल चाखि ॥ पर पेख नमें मत परे । निजमें गुण निज राखि ॥ ८८ ॥ उदासीनता ज्ञान फल । पर प्रवृत्ति हे मोह ॥ ज्ञन जानो सो आदरो । उदित विवेक प्ररोह ॥ ८९ ॥ दोधिक शतकें उधर्यु । तंत्र समाधि विचार ॥ धरो एह बुध कंठमें । नाव रतनको हा र ॥ १०० ॥ ज्ञान विमान चारित्र पवि । नंदन सहज समाध ॥ मुनि सुरपति समता संची । रंगे रमे अगाध ॥ १०१ ॥ कवि जश विजयें ए रच्यो । दोधिक शतक प्रमाण ॥ एह नाव जो मन धरे । सो पावे कल्याण ॥ १०२ ॥ इति समाधि तंत्र समाप्त.

---

## ॥ अथश्री यशोविजयजी उपाध्यायकृत समता शतक प्रारंजः ॥

दोहा ॥ समता गंगा मगनता । उदासीनता जात ॥ चिदानंद जयवंत हो । केवल नानु प्रनात ॥ १ ॥ सकल कलामें सार लय । रहो दूर थिति एह ॥ सकल योगमें नी सकल । लय दे ब्रह्म विदेह ॥ २ ॥ चिदानंद विधुकी कला । अमृत बीजअन पाय ॥ जानि केवल अनुनवी । किनही कही न जाय ॥ ३ ॥ तो नी आ श्रव तापके । उपशम करण निदान । बरपत हुं ताके बचन । अमृत बिंदु अनु मान ॥ ४ ॥ उदासीनता परिनयन । ज्ञान ध्यान रंग रोल ॥ अष्ट अंग मुनि यो गको । एही अमृत निचोल ॥ ५ ॥ अनासंग मति विषयमें । राग द्वेषको ठेद ॥

आगे पीछे देखिके, क्यूं नाषो नहि अज. ६३ वधू नइ वसुदेवकी, बहुतरि स
हस उदार; अधिक नयो कह चक्रिथें, यूं संसौ मत धार. ६४ बाहुबली ज्यूं अधि
क बल, नरतहिथें निरधार; सोनांगी वसुदेव ज्यूं, सबहीमें शिरदार. ६५ राज नं
माजी वीरको, कह्यो जमाई स्रुति; सो उत्थाप्यो कुमतथें, वीर कुमर कहि धुति.
६६ चंडरुद्रके शीशकूं, मानै केवल नांहि; जानै नहिं गंभै नदी, सो व्यवहार
उगांहि. ६७ चोविहार पचखान विनु, माने नहि उपवास; जानै नहि तिविहा
र नी, ढुब्बनको अभ्यास. ६८ परम क्रिया आगे करै, प्रथम क्रियाके त्याग; चप
ल विन्नुतें मूढ नर, नही बोधके लाग. ६९ कवित्त इकतीसा:—नाषाज्यूं मलेछकी
न नाषै विप्र वेद दाखै, ताके बोधके निमित्त नाषै सोउ पारसी; तैसे व्यवहारकूं न
शुद्धरंगी अंगी करै, लेवै शुद्ध साधवेकूं गया व्यवहारसी; ऐसे कहै कोउ ताकूं दुष्टताके
हेतु जानि, दुष्ट पुण्यतामें देखै, कल्पनाकी आरसी; ज्याही परगही ताकी लिंग सा
धन बिगाही, ज्ञानीकूं उगाही मानै क्यूं न जानै गारसी. ७० जैसे कोउ मंद
सत्व आपको ममत्व गहै, कहै में नवूं जो नव्य तत्व चक्रवर्त्तिको; खायो सो अ
घायो पैन पायो चैन तीव्रताथें, जायो न जुरायो आयो दायो ब्रंद आर्त्तिको; तैसे
शुद्धरंगी अंगी ताहीको प्रसंगी होत, मार्गको विनंगी होवै स्वान जन्म गर्त्तिको; ज
रै ताकूं शुद्ध नाव थाकूं योगको स्वनाव, वाह्य हेतुको प्रनाव पूगै मार्ग वर्त्तिको.
७१ दोहरा:— निश्चय नय पहिलूं कहै, पाछे ले व्यवहार; नाषाक्रम जानै न
ही, जैन मार्गकोसार. ७२ नही निश्चयमें शिष्यगुरु, क्रियाक्रियाफल योग; कर्त्ता
नहि नोक्ता नही; विफल सबै संयोग. ७३ तातें सो मिथ्यामती, जैनक्रिया प
रिहार; व्यवहारी सो समकिती, कहै नाष्य व्यवहार. ७४ जो नय पहिलूं परि
नमें, सोइ कहै हित होइ; निश्चय क्यूं धुरि परिनमें, सूखम मति करि जोइ. ७५
कवित्त इकतीसा:— ऊंची ऊंची बातकूं दिखावै नसिखावै मग्ग, अंतर्लूं तिरखावै
सो चखावै न सुवासिका; घोरेथें आरनै पै निवाहलूं जो थंनै न अचनै दंनको
विलंनै ताको सिद्धि आसिका; फूलसो अमूल शुद्ध निश्चयीको मूलपै सुगंधता
को जानै व्यवहार वृत्ति नासिका; खोजन अगम्म सोहै किरिया अलग्ग जो है,
पाग जैसे नग्नकूं विलज्जता प्रकाशिका. ७६ अडिल्लछंद.— द्रव्यारथ नय संगत
आपस्वनावमें; जे राचै सो माचै स्वसमय नावमें; पर्यायारथ नयमें जे रंगी रमै,
ते परसमयी नाखै प्रवचन सारमें. ७७ पक्षपात यूं एकहु नयमें जे करै; स्याद
वाद सरवंगी ते नवि चितधरै; एक पक्ष वेदको दूजो बुद्धको, खप्पर दोउमें

त्र सार अहँकार ॥ भेदत हैं इक पलकमें । अचिरज एह अपार ॥३०॥ विकशित माया बेलि घर । नव अटवीके बीच ॥ सोवत है नित मूढ नर । नयन ज्ञानके मीच ॥ ३१ ॥ कोमलता बाहिर धरत । करत वक्र गति चार ॥ माया सापिणि जग मंसै । ग्रसै सकल गुण सार ॥ ३२ ॥ ताके निग्रह करनकूं । करौ जुं चित विचार ॥ समरौ ऋजुता जंगुली । पाठ सिद्ध निरधार ॥ ३३ ॥ लोभ महा तरु शिर चढी । बढी जु तृषणा बेलि ॥ खेद कुसुम बिकशित भइ । फलै दुःख ऋतु मेलि ॥ ३४ ॥ आगर सबही दोषको । गुन धनको बम चोर ॥ व्यसन वेलिको कंद है । लोभ पास चिहुं ओर ॥ ३५ ॥ लोभ मेघ उन्नत भये ॥ पाप पंक बहु होत ॥ धर्म हंस रति नहु लहै । रहै न ज्ञान उद्योत ॥ ३६ ॥ कोव सयंभू रमनको ॥ जे नर पावै पार ॥ सोभी लोभ समुद्रको । लहै न मध्य प्रचार ॥ ३७ ॥ मन संतोष अग स्तिकूं । ताके शोष निमित्त ॥ नितु सेवौ जिनि सोकियो । निजजल अंजलि मित्त ॥३८॥ याकी लालच तूं फिरै । चिंतै तूं मममोल ॥ ता लालच मिटि जात घट । प्रगटै सुख रँग रोल ॥ ३९ ॥ धनमानत गिरि मृत्तिका । फिरत मूढ दुरध्यान ॥ अखय खजाणो ज्ञानको । लखै न सुख निदान ॥४०॥ होत न विजय कषायको। बिनु इंद्रिय वश कीन ॥ तातें इंद्रिय वश करै । साधु सहज गुण लीन ॥ ४१ ॥ आप काज पर सुख हरै । धरै न कोसूं प्रीति ॥ इंद्रिय दुर्जन परिहरै । वहै न धर्म न नीति ॥ ४२ ॥ अथवा दुर्जनथें बुरे । इह परभव दुःखकार ॥ इंद्रिय दुर्जन देतु है । इह भव दुख इकवार ॥ ४३ ॥ नयन फरस जनु तनु लगै । दहै दृष्टि विष साप ॥ तिनसूं भी पापी विषै । सुमरै करै सँताप ॥४४॥ इछाचारी विषयमें । फिरते इंद्रिय ग्राम ॥ वश कीजे पगमें धरी । यंत्र ज्ञान परिणाम ॥४५॥ उन मारग गामी अबश । इंद्रिय चपल तुरंग ॥ खैची नरग अरण्यमें । लेइ जाय निज संग ॥ ४६ ॥ जे निजीक है भ्रमरहित । आपहिमें सुख राज ॥ बाधत है ताकूं करन । आप अरथके काज ॥ ४७ ॥ अंतरंग रिपु कटक भट । सेनानी बलवंत ॥ इंद्रिय क्षणमें हरत है । श्रुत बल अतुल अनंत ॥ ४८ ॥ अनियत चंचल करण हय । पद प्रवाह रज पूर ॥ आशा छादक करतु है । तत्वदृष्टि बल दूर ॥ ४९ ॥ पंच बाण इंद्रिय करी । काम सुभट जग जीति ॥ सबके शिर पद देतु है । गणै न कोसू नीति ॥ ५० ॥ वीर पंच इंद्रिय लही । काम नृपति बलवंत ॥ करै न संख्या पूरणी । सुभट सेणिकी तंत ॥ ५१ ॥ दुःख सबहिं सुख विषयको । करम व्याधि प्रतिकार ॥ ताकूं मन्मथ सुख कहै । धूर्त जगत दुख

विहारी. ९७ प्रात समय प्रभुजी नृप कहई; समवसरन बैठे गुन अहई; पूरव
भव कहि अश्व प्रबोध्यो; तहां औरको चित्त न सोध्यो. ९८ प्रभुपासें अनशन
ले वाजी; भयो देव सहसार समाजी; सुवरनकी प्रतिमा तिन कीनी; अश्वमूर्ति ते
वक्र करि दीनी. ९९ नाम अश्व अवबोध कहायो; तेहु तीर्थ जगमांहि गवायो;
शत्रुंजय माहातममांही; भाव सुनो ए भव्य उछांही. १०० कुन गनधर इहां धारो
भाख्यो; फूलो आज सुगधने दाख्यो; आंखिक्त औखध काने बाहे; ताको कुन गहि
बांह निवाहे? १०१ सवैया तेइसाः— जंगम तिल्थ तुरंगम संगम, रंगम हानि धि
कारन जानी; ताकैं प्रयोजन योजन साठि निसाहिमें आय सु निर्मल ज्ञानी; अष्टमही
नृप कछ सुलछन, पावन कीनि सुधारवरिवानी; ताके नमो मुनिसुव्रतके पद संपद
कारन तारन प्रानी. १०२ दोहराः— महामंत्र नव पद कहै, कहै पंच पद आन;
गोमुटसारादिक धुरे, नव पद लिखे प्रमान. १०३ ज्यूं चूला बिनु श्रुत नही,
त्यूं न मुंढ नवकार; जो संखेपहि आदरो, जपहु एक उँकार. १०४ श्रुत सबही
में पंच पद, नव पद श्रुत महमंत; शुद्ध परंपर बुध लहै, ए जिन शासन तंत. १०५
चूला वर्ण बतीशकी, कहै सु सबहि अजान; अक्षर अक्षर कवचमें, कहै सु मंत्र
मान. १०६ नव अक्षर पदथें नही, तहां छंदको भंग; ऐसे बहु पद देखिई, आ
समांहि सुवंग. १०७ देव देव नर देव सब, अर्द्ध मागधी बाणि; भाखे सत्थारण
वचन, पंचम अंगें जाणि. १०८ और कहै जिन भाखही, सर्व मागधी वाणि;
तामें साखी कौन थो, कहा लाभ कह हाणि? १०९ दंत रहित जिन मानतें,
याको नहि कछु लाज; सो मानै नहि दाढ तस, पूजै जे सुरराज; ११० कहै जु
तंत्र समाधितें, जाति लिंग नहि हेत; चंडालादिक जातिकों, क्यूं नहि मुकति सं
केत; १११ गुणथानक प्रत्यय मिटै, नीच गोत्रकी लाज; दर्शन ज्ञान चरित्तको, स
बहूं तुल्य समाज; ११२ कौन जाति अधिकारिणी, नहि तौ कहौ प्रमान; ब्रह्म
जाति ब्रह्मणवदै, क्षत्रिय क्षत्रिय मान; ११३ त्राण नह। कुल जाति कछु, वि
द्याचरण विहीन; सूगडांगको वचन यह, क्यूं न करो मन लीन? ११४ करमजा
व प्रभुको रह्यो; नीच गोत्र अवशेष; तायें द्विज घरि अवतरै, तहां करै जम दे
ष. ११५ दोष नही दो तातको, क्षेत्र बीजके न्याय; शील भंग नहि मातकूं,
गर्भ न वीर्य कहाय. ११६ अन्न खात्र परिनाम है, पय तृणको परिनाम; द्रव्य
भिन्न पैं भिन्न गुन, गर्भ न वीरय नाम. ११७ करम भाव प्रभुकूं कहौ, जो
आवै तुम्ह लाज; सदा लिङ्ग तौ मानिलो, कहा जनमको काज. ११८ कथा

भोगवंतकूं जो रुचै । करभ करै सो दूर ॥ ७५ ॥ करभ हसै नृपभोगकूं । हसै कर भकूं भूप ॥ उदासीनता बिनु नही । दोनूंकूं रति रूप ॥ ७६ ॥ परमें राचै पर रुचि। निज रुचि निज गुणमांहि ॥ खेलै प्रभु आनंदघन । धरि समता गलि बांहि ॥ ७७ ॥ माया मय जगको कह्यो । जहां सबहि विस्तार ॥ ज्ञानीकूं होवत कहां । तहां शोक को चार ॥ ७८ ॥ शोचत नाहि अनित्य मति । होवत माल मलान ॥ भांडे भी शो चत भगै । धरत नित्य अभिमान ॥ ७९ ॥ कूट वासना मढितहै । आशा तंतु वितान ॥ छेदि ताकूं शुभ मती । कर धरि बोध कृपान ॥ ८० ॥ जननी मोह अंधारकी । माया रजनी कूर ॥ ज्ञान भानु आलोकतें । ताकों कीजे दूर ॥ ८१ ॥ उदासीनता मगनहुइ । अध्यातम रस कूप ॥ देखै नहि कबु और जब । तब देखे निज रूप ॥ ८२ ॥ आगे करी निसंगता । समता सेवत जेहु ॥ रमै परम आनंद रस । सत्य योगमें तेहु ॥ ८३ ॥ दंभहि भनित असंगता । इह भवके सुख देत ॥ दंभ रहीत निसंगतें । कौन दूर सुख देत ॥ ८४ ॥ मतहो संग निवृत्तकूं । प्रेम परम गतिपाइ ॥ ताको समता रंग पुनि कीनही कह्यो न जाइ ॥ ८५ तिसना विद्रुम वल्लि घन । विषय घुमर बहु जोर ॥ भीम भयंकर खेद जल । भव सायर चिहुं ओर ॥ ८६ ॥ चाहे ताको पार तौ । सज कर समता नाउ ॥ शील अंग दृढ पाटिए । सहस अढार बनाउ ॥ ८७ ॥ कूआ थंभ शुभ योग परि । बैठे मालिम ज्ञान ॥ अध्यातम सढ बलें चलै । संयम पवन प्रमान ॥ ८८ ॥ योगी जबहुं तप करै । खाइ झुरै तरु पात ॥ उदासीनता बिनु भ सम । हुतिमें सोभी जात ॥ ८९ ॥ बूटै भवके जालथें । जेनहो तप करि लोक ॥ सो भी मोहै काहुकूं । देत जनमकोशोक ॥ ९० ॥ विषय उपद्रव सब मिटयो । होवत सुख संतोष ॥ तातें विपयातीत है । देत शांत रस पोख ॥ ९१ ॥ बिनु लालच वश होत है । बसा बात यह साच ॥ यातें करे निरीहके । आगे सम रति नाच ॥ ९२ ॥ दे परिमल समता लता । वचन अगोचर सार ॥ नित्य बहिरि भो जिहां बसै । लह तु प्रेम महकार ॥ ९३ ॥ सेना राखस मोहकी । जीपै सुखै प्रबुद्ध ॥ ब्रह्म बानि कलेइके । समता अंतर शुद्ध ॥ ९४ ॥ कविमुख कल्पित अमृतके । रसमें मूझत कांहि ॥ भजो एक समता सुधा । रति धरि शिवपदमांहि ॥ ९५ ॥ योग ग्रंथ ज लनिधि मथो । मनकरि मेरु मथान ॥ समता अमृत पाइके । हो अनुभव रस जान ॥ ९६ ॥ उदासीन मति पुरुष जो । समता निधि शुभ वेष ॥ छोरत ताकूं क्रोध किधु । आपै कर्म असेष ॥ ९७ ॥ शुद्ध योग श्रद्धान धरि । नित्य करम को त्याग ॥ प्रथम करै जो मूढसो । उभय भ्रष्ट निरभाग ॥ ९८ ॥ क्रिया मूढ

कुपात्र कोउ कहै पात्रधारी नांहि, ठात्रसो पढ्यो है कोपैं गात्रहूं न मानही;
पाठधारी नाहि लब्धि पात्र और पात्रधारी, एह रीति नीति ज्ञाता सूत्रथैं प्रमान
ही; ग्लानकूं आहार दान पात्र बिनु कैसे होत, गृही पात्र भुंजै तौ ग्रहस्थ नाव
वनही; पाहुनेकी भक्ति युक्ति पात्रहीथै करै साधु, पिंडकी संशक्ति पात्र विना कै
से जानही. १४२ सवैया तेइसा:—शौचकै कारन राखै कमंडलु, पात्रकुँ छोरि कहा
गुन पायो; वीछिसि पींछि धरी त्यजि उपेकुं, औरसु मूढने वेष बनायो; तसलँथी
लग जोहि कमंडलु, पात्रलँथी लगि पात्रसुहायो; जैनको भूषन जैनको वेष है,
और धरे कह्व हाथमैं आयो. १४३ दोहरा.—बाल अग्र पुजन धरै, सुखि भाषत
हो दोष; धरो कमंडल पिछिका, कहा करौ कवसोष. १४४ उपधि सहित नडु
शुद्ध हैं, ज्यूं तंदुल तुषवंत; एकु पक्क मन शुद्धता, कहै भाव भगवंत, १४५ कहै
कोउ पचखानको, उपकरनैं व्है भंग; देहा ऽहारादिकविषे, तास न उचित प्रसंग.
१४६ रौद्रध्यान मूर्छा प्रमुख, सब सरिखे तहँ दोष; यतनासूं निर्दोषता, ए सुवचन
सत कोष. १४७ इत्यादिक चोभंगसूं, धरै न मूर्छा साधु; ए चोविह पचखानकौ,
एकहु अर्थ अगाधु. १४८ शुद्ध योग अपवादथैं, कह उपकरन सु मंद; उपचरि
ताऽनुपचरितमें, साधनतासममंद. १४९ मूर्छा बाह्य प्रवृत्तिमें, जो तुम कहो कुप
रक; भोजन त्यजि अनसनभजो, ऐसे होत सु दक. १५० ध्यानदीपको तैलजो,
भोजन करौ प्रमान; तौ निवात पद उपकरन, मानौ क्यूं न अजान. १५१ क
वित्त इकतीसा:— पापके ओढैया महा मोहमें पोढैया ठैया, दैया दैया करै देखि
साधुके वसनकूं; लिङ्के कढैया निंदाचर्मके मढैया माया मानके दढैया लागै लोक
से हसनकूं; अंगके पढैया गुण श्रेणिके चढैया शुद्ध शीलके दढैया कहै धर्म उ
छसनकूं; जूवके लढैया सत्य यंत्रके गढैया भैया वस्त्र पात्र हेत साचे काया भी
कसनकूं. १५२ दोहरा:— शीत त्राण कलके धरै, कंबल वर्षा त्राण; मुख वस्त्र
ते राखिये, जे संपातिम प्राण. १५३ सवसजानमें राखिये, चोल पट्टथें लाज
उचित धर्म आचारमें, नीलजकूं नहि लाज १५४ आठ भेद जिनकल्पके, एक
कहैं सो मूढ; नगन दिखावै सो त्यजै, वस्त्र नाहि ए गूढ १५५ और सिद्धांत उ
भिन्न है, इसो कुमतको नाच; पै संवाद विनाकहा, पावौ प्रकरन साच १५६ अब
सिद्धांत छु तुम कहै, पाठ दिखावो तास; जब प्रकरन तुम शुरु किये, तब जो हु
ते प्रगाश. १५७ हेमराज पाण्डे किये, बोल चुराशी फेर; या विधि हम भाषा व
चन, ताको मत किय जेर १५८ है दिकपटके वचनमें, और दोष शत साख; के

र; तनु मल ज्युं फुनि संतनै, कियो दूरियें दूर. १० नसमक ग्रह रज नसममय, तार्थे बेसर रूप; उठे नाम अध्यातमी, नरम जाल अंध कूप. ११ कवित्त इकतीसा. नोगके नीखारी अधिकारी नही ग्रंथनके, आपकी पथारीमें चलावें निंदा पारकी; खो जै नांति न्यारी न्यारी किरियाकूं दूरि मारी, कहे कोउ सीख सारी देवै गारी नारकी; फूठे मत नामधारी नांगकी खुमारीमें जो, लवै युक्ति नारी सोतो, कूटै नीति गा रकी; ऐसे हैं जुआरी अब मूढनके पट्टधारी, आरी आरी जानै बात लात जैसी टारकी १२ दोहरा पल्लवग्राही लोककूं, समुजावै कुन जान; कोमल करतुनघनघटा, ज्युं मुगसेल परवान. १३ दृष्टिराग मदमत्तकूं, जो देवै उव एस; सो कूकर मुखमें ठवै; आप कपूर अशेस. १४ शुष्क पयोधर नारि ज्यूं, निंदै कंचुककार; गूढ हेतु बुद्ध गम्य त्यूं, निदे ग्रंथगिमार. १५ ऐसे जडसूं संतकूं, घटै न वाद विचार; तो नी परके बोधकूं, कहियें बोल.उचार. १६ सांचेकूं फूगा कहे, फूठेकूं कहे साच; अनिनिवेश उनमत्तको, ऐसो बहु विधि नाच. १७ कवित्तइकतीसा तूटै अंतराय पंच रंचही न राग रोश, हास ठक्क काम कीनो अंचही न देखि ई; वंचना अज्ञानकी मिथ्यातको प्रपंच निंद, आश्रवको संच सो तो, मूलथें विलेखिई; एसें जो अगार दोष घाति कर्म नाव पोष ताको परिशोष याके ज्ञानमें वि शेखिई सोई शुद्ध नाम कोष घोषतें अनंत तोष, मोष मग्ग दाता त्राता देव देव ले खिई १८ उप्पयछंद॥ क्षुधा तृषा नय शोग, रोग जर मरण जनम मद; मोह खेद परसेद, निंद विषमय चिंता गद; रति विषाद ए दोष, कहे अष्टादश दिक पट; सो लोक तिनमांहि, नही गुण दूषण उदनट; जो नाव अघाती दोष हुइ, तौ जिनकू नर गति प्रमुख, दूखन अनंत विलगे रहे, शिव पद दूषक सुनि विमुख. १९ चौपइ॥ सप्तधा तु वर्जित जिन काया, परमौ दारिक कहे सु माया; निदा नही वैक्री परि ताकी; सं घयणादिक खंध विपाकी. २० परमौदारिक जो जिनवरकूं; तो मध्योदारिक ग णधरकूं; कहै कहा नहि कल्पन कारी; क्यूं औरनि सरखे गणधारी. २१ स प्तहु धातु गले जिनवरके; केते धातु गलै गनधरके; सप्त धातु जिण नाणें जावै; मन नाणें मुनि कहो कहाँ पावै. २२ जिन तनु थिति नो कर्माहा रें; कहै मूढ तेफूठ विचारें; औदारिक थिति कवलाहारें; दृष्टि हानि होइअन्य प्र कारें. २३ दोहरा ॥ कहै केवली कर्मकूं, दग्ध रज्जु सम मूढ; आगममति जा नै नही, जोआउ नाम हढ रूढ २४ तत्वारथ परिखह कहे, जिनकौ प्रगटइग्यार; ताको ,अरथ मरोरतें, क्यूं पामें नव पार. २५ सूत्रनमें परिखह कहे, वृत्तीं

विनय:तस्मैहितं ध्यायिनः ॥ लक्ष्मीस्तस्य वशा वशेव गुणिनां ब्रह्मांडसंस्थायिनीश्रीचिं
तामणिपार्श्वनाथमनिशं संस्तौति यो ध्यायति ॥१०॥ इतिजिनपतिपार्श्वःपार्श्वपार्श्वा
ख्ययक्षः प्रदलितडुरितौघःप्रीणितः प्राणिसंघः ॥ त्रिभुवनजनवांछितदानचिंतामणिकः
शिवपदतरुबीजं बोधबीजं ददातु ॥ ११ ॥ इतिश्रीचिंतामणिपार्श्वनाथजिनस्तोत्रंसं०

---

॥ श्रीमत्सद्गुरुभ्योनमः ॥ श्रियः संततेः कारकं श्रीजिनेशं महामोहभूजगायनाशे वि
नेशं ॥ नतं नाकिनिर्जेकिनिर्जीवनाथं स्तुवे देवचिंतामणिं पार्श्वनाथं ॥ १ ॥ महा
नागपारींड्वैश्वानराहि प्रवातांबुधीरोगसंदानदाहं ॥ जितानेकपक्षं त्रिविश्वैकनाथं
स्तुवे देव० ॥ २ ॥ क्षमापार्श्वसेनस्य वंशोऽवतंसं हतक्रोधशत्रुं च लक्ष्मीनिवासं ॥ जनानां
जरवंडस्फुटे पद्मनाथं स्तुवे देव० ॥ ३ ॥ सतांमोक्षपद्मप्रदानैकहेतुं महाक्रू
विच्छेदने धूमकेतुं ॥ कर्मेंद्रीवरालीननागांकनाथं स्तुवे देव० ॥ ४ ॥ सनीरांबुदश्या
मशिष्टांगकांतिं सुविस्तारितानिष्टपाशेषशांतिं ॥ गतान्यूनदोषं वरं मुक्तिनाथं स्तुवे
देव० ॥ ५ ॥ नरेंद्रादिवंद्यं सदालब्धयोगं निशारत्नकप्राननं त्यक्तशोकं ॥ कृपाजाज
नं विश्वदेवाधिनाथं स्तुवे देव० ॥ ६ ॥ जगत्तारकं दायकं सज्जनानां श्रियं वांछितार्थं
कं निर्धनानां ॥ सुरम्यस्य रुङ्निर्जिताब्जाधिनाथं स्तुवे देव० ॥ ७ ॥ कषायाग्निसंतप
णे वारिदाभं जरान्नीरुमातंगपंचास्यशोभं ॥ विडष्टाष्टकर्मौघरोगे पवित्रनाथं स्तुवे देव
चिंतामणिं पार्श्वनाथं ॥ ८ ॥ इत्येवं श्रीमद्वीरचंद्रशिष्यनामलूकचंद्रेण ॥ जयतु चिरं नू
तः पार्श्वजिनवरो विजितमदरागः ॥ ९ ॥ इतिश्रीमत्पार्श्वनाथस्तवनाष्टकं लिखितं.

इतिश्री प्रकरण रत्नाकर पुस्तके प्रथम भागः समाप्तः

अटै. ४३ थी लिंग सिद्ध कहै न कुमतें, तास चरण निवारए; जो संघ प्रवचन सारि चोविह, पढयो सो न विचारए; चोजेअ जोर्जिं अज्झिका करि, पंच होवैं अजकें; यूं संघ लोपै समय कोपै, कुमती न वर्थी सके. ४४ कवित्त इकतीसाः— पुण्यके कचोल रंग रोलके निचोल लोल, शीलथैं अमोल याकी जातिमें महासती; यामें जग तातनकी मात अवदात गात, नमै जाकूं इंद जाति नित्तही महीपती; दानके स्वजाव साचे, तपके प्रजाव जाचै, नही जावकाचे नाचे माचै साधु संगती; धर्म अवलंबिनी जो दोषकी विलंबिनी नितंबिनी है ऐसी ताकूं क्यूं न पंचमी ग तीः—४५दोहराः—मल्ली सो कुमरी कही, मल्ल सु कुमर कहाइ; पुरुष स्वरूपें देखिये, पुरुष स्वरूप न माइ. ४६ तित्थंकर थी वेदको, क्यूं एकनको बंध; गुन थानक आकर्ष थी, एहु हमारी संध. ४७ तित्थ प्रणाम प्रदक्षिणा, थानकी वरखि कहान; परहित करनी पुण्य फल, कपिल नृत्यको तान. ४८ दोहु कुमर जिनजी कहै, पंच कुम र कुन हेत; प्रिया पंचकी द्रौपदी, मानै नहि कुल केत. ४ए एकै घरि कनोजिमें, अगवीस गुनमूल; अंतराय कलपित कहै, ते सबही निरमूल. ५० कस्तुरी अ पवित्त कहै, वाद्य वजावैं कांहि; कहु कुंकुम कर्पूरकी, गति आवै मनमांहि. ५१ प्रतिमा नगन न सोहियें, पट जूखन पहिराइ; स्नात्र विलेपने धूप सुख, जगति हि हेतु कराइ. ५२ शिष्य करै ज्यूं जिन करै, तौ क्यूं दिरकत शीश; क्यूं बोल त केवल बिना, न विराधौ जगदीश. ५३ नगन दशा जिनवर धरै, नगन दिखा वै नांहि; अंबर हरि खंधे धरै, उचित जानि मनमांहि. ५४ अरिल्लछंदः— गौत म स्वामीगए, खंदककूं; मानै नहि मुनि जाइ, सुसनमुख जैनकूं; धर्मके कारन क्यूं अपवाद न मानही; ऐसिहि जांतिसुं होवत बीजाधानही. ५५ दोहरा. कोरे कहै जु थापना, प्रतिमा क्यूं न परवान; सद्भावा सद्भावतें, ताको द्विविध वखान. ५६ जिन विरहै जिन बिंबकी, ज्यूं थापना प्रमान; गुरुविरहै गुरुथापना, तैसे क रै सुजान. ५७ तैसी जगति न विमल गिरि, जैसी गढ गिरनार; तीरथ क्रम जा नै नही, को तस बोधन हार. ५८ शुन उपयोगी साधुकूं, शिष्य दिरक उवएश; ध्यान शुद्ध उपयोगमें, नहि अपवाद अशेश. ५ए काय खेद जो धर्ममें, सो ग्रहि धर्म प्रकार; ताकूं करत यती नही, जाखै प्रवचनसार. ६० ता परि हम यूं कहतु हैं, कह अपवादी साध; पंचम गुन थानक जजै, कै अधिकार हि बाध. ६१ प्रथम पक्ष अविरति नही, तौ व्रतको नहि जंग; द्वतिय पक्ष जो पाप है, तौ गृहिकूं क्यूं रंग ६२ हिंसा दोष स्वरूप जो, तोलूंपक मत रक्ष;

भेद न शुद्ध अशुद्धको. ७७ निज निज वचने सत्य, असत्य नयंतरें; सबही न
युहे सरखे वर्जित अंतरे; एक भाव निरधारै सो नहि पंथमें; सिद्ध सैन यूं भाखै
संमति ग्रंथमें. ७ए दोहराः—कहे स्वभाव विभावथै, गुनके दो परयाउ; भहे न
परिनति ड्व्यकी, जीव सिद्धके न्याउ. ७० गुन विभिन्न नहि ड्व्यथें, कुन ताके
पर्याय; सह भावी परयायको, गुन अभिधान कहाय. ७१ जो गुन त्रीजो भाव है
तौत्रीजो नय होइ; सो तौ प्रवचनमें नही, संमत साथें जोइ. ७२ नवही नय
नयचक्रमें, ड्व्यारथ मुख्यइठ; तत्वारथमें सात हैं, देवसेन कहा दिठ. ७३ तत्व
सात नवजोकहे, त्यूं नहि नयकी बात; एहु विभक्त विभाग है, सो तौ कारन जात
७४ जो हवर्थे नव नय कहो, गहत ड्व्य परयाय; अप्पियणप्पिय भेदथैं, एका
दश हुइजाय. ७५ जो संग्रह व्यवहारमें, अप्पियणप्पिय इठ; आदि अंत नय थो
कमें, अक्षव ड्व्य निविठ. ७६ उपनय नयको अंश है, कहे विभिन्न कुवंश; उ
प प्रमाण मानै नही, क्यूं प्रमाणको अंश. ७७ सवैया तेइसाः— काल अणूकुँ क
हे युँ असंख्य असंख्य प्रदेश अगाशहि लोके; मंदगती अणु संक्रम गम्य समै प
रयायकु ड्व्य विलोके; वस्तुविना थिर जन्म विनाशि समै परयाय सधै नहि थोके
सो तुँ न जानत काल सितंबर, यूं हि पुकारत दिकूपट फोके. ७० सूखम वर्त्तन रू
प समै सु तु, जीव, अजीवहिके परयाया; ताहिकें ड्व्य तु जीव अजीवहि, का
लकें ड्व्य अनंत कहाया; सूखम वर्त्तन हेतु जु चाहु तु, क्यूंगति हेतु न तैस सुहा
या? जो गति हेतु है एक साधारण, एकहि खंध समै तुल्ल पाया. ७ए सोरठा
गति थिति हैं जु विभाव, ताको हेतु विलोकिइं; वर्त्तन सर्व स्वभाव, बाह्य हेतु
ताको नही. ए० ज्यौ पक्षव गुन ड्व्य, त्रिविध अर्थ व्यवहारथैं; त्यौं कहियें ष
ट ड्व्य, पक्षव काल प्रमानथैं. ए१ काल ड्व्य कहुं एक, तहँ अनपेक्षित ड्
व्य नय; तत्वारथ सुविवेक; वृत्तिकार विगतें वदे. ए२ चौपाइः— जनम कल्यान
क समय सुहाया; मेरु अचल जिनवीर चलाया; यातो वात न मनमें आवै; मु
गधनकूं यूं कहि दिखलावै. ए३ देव बलें धरनी या कंपै; ताकूं शाश्वतकौन
नजंपै; देवबलें भावें जो सांसो; देववेवबल कहा विमासो? ए४ मुनिसुव्रतको गन
धर थोरो; एसो कहे सु जानै थोरो; बूजै नहि असमंजस बोलै; सो संतनमें तृ
णके तोलै; ए५ सदा सत्य सेतंबर बानी; तहां कहै मुनि सुव्रत ज्ञानी; प्रतिष्ठा
न पुरमांही आए; देव मिली मठ तीन बनाए. ए६ पूरव भवको मित्र प्रमा
न्यो; अश्वमेधसे वधकूं आन्यो; देख्यो अश्व तास उपकारी; रातिहिमें प्रभु चले

नक दो धरि किये, कल्यानक षट होत; सो दूषन हमकूं नही; तहँ दिन गणित उद्योत. ११ए सुरकृत कल्यानक नही, ऋषन्न राज अन्निषेक; वीर गर्न्न अपहार में, त्यूं न कल्यानक टेक. १२० नेगमेषिकी शकति है, रोम कूपमें गर्न्न; सं क्रम करतहि अपहरै, सो नहि मानत अर्न्न. १२१ कहें बाहुबल केवली, नम्यो ऋषन्नके पाय; बैगो देइ प्रदक्षिणा, कहा न कूठ बनाय. १२२ अप्रमत्तता है जहां, तहां न बंधन न्नाव; उचित प्रवृत्ति न ढारही, तौ न्नी जिन सदन्नाव. १२३ बींक न मानै वीरकूं, कर्म वेद्यको न्नाव; फरसनकूं दरसन कहै, सो तौ कु टिल स्वन्नाव. १२४ हरि हरिनी हरि वर्षके, युगल हरै सुर कोइ; मथुरा नगरी राज्य दिइ; करै देह लघु सोइ. १२५ दिव्य शक्ति तबथें न्नयो, हरिको वंश वि शाल; ऐसो अचरय न्नाव ए, होत अनंतहि काल. १२६ काल अनंत अनंत थें, युगल युगल अपहारि; शून्य होत हरि खेत यूं, दूषन कहै विचारि. १२७ तहां कहै सिद्धांत हम, जैसो युग अपहार; तैसो पूरन ताहिको, काल बहू निर धार. १२८ एक रूप अचरय नही, सदा कहै दश संख्य; काल अनंत अनंत थें, होत असंख्य असंख्य १२ए कहै चमरकी गति नही, शक्र लगैं निरधार; ताकूं कोप कृतांतको, न्नगवइ अंग विचार. १३० देशअनारयमें नही, वीर विहा र अशुद्ध; मनुषिणि देव न न्नोगवै, कहै सु वचन विरुद्ध. १३१ सुदि वैशाख दशमि दिने, वीर उपन्नो ज्ञान; श्रावन सुदि पडवा दिने; आपुन कियो वखा न. १३२ ढासठ दिन मौनी रहै, न्नाखै एम अजान; एकहु सन्ना अन्नाषितां, हम हैं वचन प्रमान. १३३ मौन अन्नावित जानिके, मानहु अधिक ढमास; ए क सन्ना तैसी कहत. क्यूं लागत तुम पास. १३४ तवैं देव जिन विचरिते; पा न-कमल पग हेठि; कहै न्नूमि परि गगनमें, ते देवनकी वेठि. १३५ पाउ धरै जहँ धरनि परि, तहां कमलको काज; कमल गगन ऊपरि चलै, कहा बन्यो ए साज. १३६ सोल सुपन जिनमातकूं, सोल कहैं सुर लोक; इंद्र मिलत सत मानही, ते सबही मत फोक. १३७ बदले अतिशय तीस चउ, कहै छु गुरु कुल रीति; तौ अदृश्य आहार विधि, दाखत पावै न्नीति. १३८ छुगति रहित जिनवर कहौ, बलि ढौंकत कुन हेत; चरम नीर घृत कुतपको, कौन दोष कहु ले त. १३ए मरुदेवी औ नान्निको; युगल धर्म नहि दोष; दशायु सनमुख धर्म की, करै धर्मको पोष. १४० सुर नर विहित विवाहको, जबलूं नहि व्यवहार प्रन्नुकूं न्नी तबलूं नही, युग्म धर्म अधिकार. १४१ कवित्त इकतीसाः— साधुकूं

तेकाले मारिये, ज्ञुंजत दधि उर माख. १५९ पंमित साचो सद्दहै, मूरख मिथ्या वंग; कहते सो आचार है, जन न त्यजै निज ढंग. १६० सत्य वचन जो सद्दहै, ग है साधुको संग; वाचक जस कह सो लहै, मंगल रंग अजंग १६१ इति श्री यशो विजयजीउपाध्यायकृत दिक्पट चोराशी बोल समाप्तः

---

॥ श्रीचिंतामणिपार्श्वनाथ जिनस्तोत्रं लिख्यते ॥

किं कर्पूरमयं सुधारसमयं किं चंद्ररोचिर्मयं किं लावण्यमयं महामणिमयं कारुण्य केलीमयं ॥ विश्वानंदमयं महोदयमयं शोजामयं चिन्मयं शुक्लध्यानमयं वपुर्जिनप तेर्नूयाद्भवालंबनं ॥ १ ॥ पातालं कलयन् धरां धवलयन्नाकाशमापूरयन् दिक्चक्रं क्र मयन् सुरासुरनयश्रेणीं च विस्मापयन् ॥ ब्रह्मांडं सुखयन् जलानि जलधेः फेनच्छलाल्लो लयन् श्रीचिंतामणिपार्श्वसंनवयशोहंसश्चिरं राजते ॥ २ ॥ पुण्यानां विपणिस्तमोदिन मणिः कामेनकुंनसृणि र्मोक्षे निःसरणिःसुरेंद्रकरणिर्ज्योतिःप्रनालारणिः॥दाने देवम णिर्नतोत्तमजनश्रेणीकृपासारणिर्विश्वानंदसुधाघृणिर्नवनिदे श्रीपार्श्वचिंतामणिः ॥३ श्रीचिंतामणिपार्श्वविश्वजनतासंजीवनं त्वं मया दृष्टस्तात ततः श्रियः समन्नवन्नाशक्र माच्चक्रिणः ॥ मुक्तिः क्रीमति हस्तयोर्बहुविधं सिद्धं मनोवांछितं दुर्दैवं दुरितं च दुर्दिन नयं कष्टं प्रणष्टं मम ॥ ४॥ यस्य प्रौढतमप्रतापतपनः प्रोद्दामधामा जगज्जंघालः कलि कालकेलिदलनो मोहांधविध्वंसकः ॥ नित्योद्योतपरं समस्तकमलाकेलीगृहं राजते स श्रीपार्श्वजिनो जने हितकृतौ चिंतामणिः पातु मां ॥५॥ विश्वव्यापि तमो हिनस्ति तर णिर्बालोपि कल्पांकुरो दारिद्र्याणि गजावलिं हरिशिशुः काष्ठानि वन्हेः कणः॥ पीयूषस्य लवोपि रोगनिवहं यद्वत्तथा ते विनो मूर्त्तिः स्फूर्तिमती सती त्रिजगतीकष्टानि हर्तुं क्ष मा ॥ ६ ॥ श्रीचिंतामणिमंत्रमोंकृतियुतं न्हींकारसाराश्रितं श्रीमर्हं नमिऊणपासक लितं त्रैलोक्यवश्यावहं ॥ द्वेधानूतविषापहं विषहरश्रेयःप्रनावास्पदं सोल्लासं वसु हां कितं जिनफुलिंगानंदनं देहिनं ॥७॥ न्हींश्रींकारवरं नमोक्षरपरं ध्यायंति ये योगिनो हृ त्पद्मे विनिवेश्यपार्श्वमधिपं चिंतामणीसंज्ञकं॥नाले वामजुजे च नाजिकरयोर्नूयो नुजे दक्षिणे पश्चादष्टदलेषु ते शिवपदं द्वित्रैर्नवैर्यांत्यहो॥८॥नो रोगा नैव शोका न कलहक लना नारिमारीप्रचाराः नैवांध्यं नासमाधि र्नेच दुरदुरिते दुष्टदारिद्र्यता नो ॥ नो शाकि न्योग्रहा नोन हरिकरिगणव्यालवेतालजाला जायंते पार्श्वचिंतामणिनतिवशतःप्राणि नांनक्तिनाजां॥९॥गीर्वाणद्रुमधेनुकुंनमणयः स्तस्यांगणैरंगीणो॥ देवांदानवमानवाःस